श्री सतगुरु ग्रन्थ साहिब

श्रीमज्जगद्गुरु श्री १००८ आचार्य गरीबदास साहिब जी महाराज कृत अमृतमयी वाणी मूल ग्रन्थ

परम पूज्य श्री १००८ श्री सत्गुरु देव ब्रह्म सागर जी भूरी वाले महराज के परम शिष्य पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी संत राम महराज जी के शुभ संकल्प अनुसार उनके उत्तराधिकारी परम शिष्य श्री १०८ श्री स्वामी चरनदास ब्रह्मचारी जी महाराज के आशीर्वाद से उनके चरणरज शिष्य स्वामी दर्शन दास ने सर्वजन सुखाय हेतु इसका डिजिटल स्वरुप में प्रकाशन करवाया है

प्रकाशक

BRAHAM SAGAR SANT CHARAN TRUST (Regd.)

SHRI RAM PUR DHAM, P.O. KALWAN,
TEH. ANANDPUR SAHIB, DISTT. ROPAR (PUNJAB)

दो शब्द

ब्रह्म सागर संत चरन ट्रस्ट श्री रामपुर धाम (जिला-रोपड़, पंजाब) द्वारा बनाई गयी बेबसाइट में सत् गुरु श्री गरीबदास साहिब जी की अनुभव वाणी का डिजिटल स्वरुप में पढ़ने वाले विद्वतजनों!

सत् साहेब....!

सत् गुरु श्री गरीबदास महराज जी की अमृतमयी वाणी को सत् गुरु श्री भूरीवाले ब्रह्मसागर महराज जी ने अपने जीवन काल में कई पुरातन ग्रन्थों को एकत्र करके पूर्णरुपेण से शोधकर अपने आज्ञाकारी परम शिष्य श्री स्वामी संत राम महराज जी को हाथ से लिखकर एक ग्रन्थ साहिब तैयार करने की आज्ञा दी। जिसको स्वामी संत राम महराज जी ने उनकी आज्ञानुसार एक वर्ष में लिखकर तैयार किया। इसी पाण्डुलिपि से मिलान करके, उन के पश्चात् उन के उत्तराधिकारी स्वामी चरन दास ब्रह्मचारी जी ने सन् १९९८ में श्री सत्गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाशन करवाया। अब सन् २०१३ में इसी प्रतिलिपि से मिलान करके इसे डिजिटल स्वरुप दिया गया है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को सरल एवं सुगम बना दिया है। जिसमें इण्टरनेट का योगदान सर्वविदित है, ई.बुक्स के बढ़ते प्रचलन के कारण ही इसे सर्वव्यापक बनाने हेतु हम ने इसका डिजिटल प्रकाशन कराया है ताकि इस दुर्लभ ग्रन्थ के भीतर छिपे रहस्यों से आज के पीड़ित मानव समाज को नई दिशा मिल सके और साथ-ही-साथ नये शोध विषयों का मार्ग भी प्रशस्त हो सके। आम जन के समझने हेतु हमने बानी का शब्द कोश भी तैयार करवाया है।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भूरीवालों के अवतार स्थान रामपुर धाम (जिला-रोपड़, पंजाब) में **श्री सत्गुरु गरीबदास इण्टरनेशनल रिसर्च इंस्टीट्युट** की स्थापना की गयी है। जो विद्वत् जन इस विषय पर शोध-कार्य करने के अभिलाषी हैं उनको यहाँ पर यथा सम्भव सभी प्रकार की सहायता प्रदान की जायेगी।

निवेदक
स्वामी दर्शनदास
अध्यक्ष ब्रह्मसागर संत चरण ट्रस्ट (रजि)
अवतार स्थान श्री रामपुर धाम, रोपड़-पंजाब (भारत)

श्री सतगुरु ग्रन्थ साहिब

श्रीमज्जगद्गुरु श्री १००८ आचार्य
गरीबदास साहिब जी महाराज
कृत अमृतमयी वाणी
मूल ग्रन्थ

सम्पादक एवं संयोजक
डॉ.आशीष कुमार पाण्डेय
एम.ए.(दर्शनशास्त्र)
पी–एच.डी.

लोकनाथ पब्लिकेशन

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

विषय सूची

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

श्री सतगुरु कबीर साहिब की वाणी

प्राक्कथन

हम अपनी विचार यात्रा का आरम्भ गीता के इस श्लोक से करना चाहते हैंः-

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युथानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणय साधुनाम विनाशय चः दुष्कृताम,
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भावामी युगे युगे।।

क्योंकि गीता ने अनेक महापुरुषों के जीवन को प्रभावित किया है जिनमें प्रमुखतः तिलक और गाँधी थे। जब मध्य कालीन भारत में मुस्लिम आक्रान्ताओं के आतंक और हिन्दू धर्म के भीतर अनेक कुरीतियों जैसे कि छुआछूत, ऊंच नींच और धार्मिक विद्वेष की भावना से सारा देश कराह रहा रहा था, उस समय अनेक महा पुरुषों का जन्म हुआ जिनमें नानकदेव जी, मलूक दास, मीरा बाई, पीपा जी और काशी के कबीर दास जी प्रमुख थे। कबीर दास जी ने किसी विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा तो ग्रहण नहीं कि लेकिन गुरु भक्ति, साधना और अपने सदगुणों के द्वारा साधना की सर्वोच्च शिखर को प्राप्त किया। आज जब कि हमारी पीढ़ियां साधनों की कमी का रोना रोती हैं और अपनी असफलता का दोष एक दूसरे पर मढ़ देती हैं, उन्हें एक बार अपने भीतर झांकना चाहिये कि कैसे तमाम विरोध को सहते हुये संत कबीर ने अपने ज्ञान की यात्रा को अनवरत जारी रखा। सिक्ख धर्म की पवित्र पुस्तक गुरुग्रंथ साहब में उनके गुरुओं द्वारा कबीर दास जी रचनाओं को प्रमुख स्थान दिया गया हैं।

सत्तरहवीं शताब्दी में मुगलों के शासन का अवसान आरम्भ हो चुका था उस समय उत्तर में हरियाणा के छुड़ानी साहब में कबीर दास के स्वरुप गरीबदासजी का अवतरण हुआ। उन्हों ने भी उनके ही कार्यों एवं विचारों को आगे बढ़ाते हुए इस पवित्र बानी की रचना की जैसा कि स्पष्ट हैः-

कबीर कलासैं ऊतरे, सो हरितन है जान।
गरीबदास तन धर कर, करत लोक कल्याण।।
कबीर कलासैं ऊतरे, गरीबदास जिहिं नाम।
हंसन तारन करणे, ता पद मम प्रणाम।।

गरीबदासजी ने सदैव ही सदाचार, ईश्वर भक्ति दीन दुःखी जनों के उद्धार पर बल दिया। आप जी ने भी बिना किसी उच्च

शिक्षा के ही अद्‌भुत शैली का प्रयोग कर जनकल्याण हेतु एक उच्च कोटि की बानी की रचना की। आप के समकालीन संतों की परम्परा में किसी भी संत ने इतने विस्तार से इस प्रकार की बानी रचना नहीं की, बानी ने न जाने कितने भटके मानवों को रास्ता दिखाया है, इसके प्रसंशा मानो सूरज को दीपक दिखाने के समान होगा। आज के वर्तमान परिवेश में बानी में छिपे रहस्यों की व्याख्या करने की आवश्यकता है, जिससे की आज के मानव को जीवन मूल्यों के प्रति पुनः जागरुकता हो जिससे वह सुखमय जीवन को प्राप्त हों।

श्री गरीब दास जी के जीवन इतिहास के बारें में काफी कुछ लिखा जा चुका है। लेकिन उनकी बानी के ऊपर अब तक मूल्यपरक शोध-कार्य सर्व प्रथम सन् १९७६ में डॉ. के. सी गुप्ताजी लुधियाना निवासी ने ही पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में किया था। जो पुस्तक के रुप में जिसका नाम (**श्री गरीब दास-हरियाणा' स संत ऑफ ह्यूमिनिटी**) प्रकाशित है, जिसे पढ़ने के बाद, मैं आप जी की प्रेरणा से और अवतार स्थान श्री रामपुर धाम की बेबसाइट देखकर मुझे अवतार स्थान आने का सौभाग्य मिला। आपजी की प्रेरणा से हमें लगा कि बानी में छिपे रहस्यों को लोकहित के लिए सर्व सुलभ करवाने का प्रयास करना चाहिए।

डॉ.आशीष कुमार पाण्डेय
akpvnsi@gmail.com

निवेदन

भारत भूमि सदैव योगी तपस्वियों ऋषियों मुनियों की तपस्थली एवं कर्म भूमि रही हैं यहां समय समय पर सर्व शक्तिमान की शक्ति का मानव रूप में अवतरण होता रहा है। पारब्रह्म की अवतरण शक्ति द्वारा सरगुण तथा निर्गुण दो धाराओं में प्रचार-प्रसार होता रहा है। निर्गुण धारा के आदि प्रवर्तक सन्त शिरोमणि पारब्रह्म प्रभु के पूर्ण अवतार श्री कबीर साहिब जी हुए, जो समय-समय पर अवतरित होकर जीवों को चिताते रहे। मानवता एवं हिन्दुत्व के महान् रक्षक श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज वि.स. १७६४ (१७०८ ई.) में ब्रह्म लोक को गमन कर गए। उससे ठीक नौ वर्ष पश्चात् वि.स. १७७४ (१७१७ ई.) में दिल्ली से ४५ किलो मीटर की दूरी पर ग्राम-छुडाणी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त में मंगलवार वैशाख पूर्णिमा के दिन ब्रह्म महूर्त में, सन्त शिरोमणि श्री कबीर साहिब के ही स्वरुप श्री गरीबदास जी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ। जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा है-

हम ही गुप्त गुहज गंभीरा। हम ही अविगत हमे कबीरा।।
यह सब खेल हमारे किये। हम से मिले सो निश्चय जीये।।
बन्दी छोड हमारा नामं। अजर अमर है अस्थिर ठामं।।

महाराज जी के पूज्य पिता जी का नाम बलराम जी तथा पूजनीय माता जी को सरस्वती रानी नाम से पुकारा जाता था। महाराज जी उत्तम क्षत्रिय (जाट) जाति में अवतरित हुए। आप जी की पावन अवतार स्थली छुडाणी धाम में प्रतिवर्ष तीन समागम होते हैं। एक फाल्गुन शुक्ला दशमी से द्वादशी तक, दूसरा भाद्रपद अमावस्या से शुक्ला द्वितीया तक तथा तीसरा आप के अवतार दिवस वैशाख पूर्णिमा को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। आप जी ने अपना ही स्वरूप श्री कबीर साहिब जी को प्रगट करके गुरु दीक्षा की मर्यादा को पूर्ण किया था। आप जी ने अपनी वाणी में कहा है- **स्वासा संग शास्त्र निक्सै, संख असंखौ भेला।**
दूजा कौन पढ़ावै है रे, आपै गुरु आपै चेला।।

महाराज जी ने अमृतमयी वाणी का उच्चारण वि.स. १७८७ (१७८७ ई०) से प्रारम्भ किया। कुछ समय के पश्चात् महाराज श्री की महिमा सुन कर राजस्थान से दादू पन्थी महात्मा श्री स्वामी गोपाल दास जी, महाराज के दर्शनार्थ छुडाणी धाम पहुंचे। महाराज श्री की वाणी सुनकर अति प्रभावित हुए और

महाराज श्री से लिपिबद्ध करने की आज्ञा मांगी। महाराज जी की स्वीकृति मिलने पर उन्होंने महाराज जी की अमृतमयी वाणी को उनके साथ रहकर उनके ब्रह्मलोक गमन करने तक लिपिबद्ध किया। महाराज श्री के ब्रह्मलोक गमन करने के पश्चात् उनके शिष्यों एवं पोते शिष्यों ने वाणी का संग्रह करके हस्त लिखित कई ग्रन्थ तैयार किए। छापे का ग्रन्थ सर्वप्रथम परम पूज्य स्वामी अजरानन्द जी रमता राम ने प्रथम संस्करण वि.स. १६८१ में (१६२४ ई.) में प्रकाशित करवाया। द्वितीय प्रकाशन वि.स. २०२१ (१६६४ ई.) में श्री राम निकेतन ट्रस्ट भूपतवाला हरिद्वार के संस्थापक श्री स्वामी धर्म स्नेही जी परमहंस द्वारा ग्रन्थ साहिब दो भागों में प्रकाशित करवाया गया। जिसका शोध कार्य श्री स्वामी श्याम सुंदर दास शास्त्री जी हरिद्वार तथा श्री स्वामी चेतन दास जी शास्त्री कैरों वालों के द्वारा किया गया। तृतीय प्रकाशन- श्री सतगुरु ब्रह्मसागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य स्वामी जगदीशवरानन्द जी के शिष्य महामहिम स्वामी स्वरूपा नन्द जी ने वि.स. २०३० (१६७३ ई.) में बड़े अक्षरों में श्री ग्रन्थ साहिब का प्रकाशन करवाया। चतुर्थ प्रकाशन : श्री स्वामी धर्म स्नेही जी ने वि.स. २०५३ (१६६३ ई.) में पुनः तृतीय संस्करण की प्रतिलिपि छपवाई। स्वामी अजरानन्द रमता राम जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ से दो वर्ष पश्चात् सतगुरु भूरी वाले ब्रह्मसागर जी के आदेश से कई प्रमाणित ग्रन्थो की सहायता से तथा सतगुरु भूरीवालों की सम्मति के अनुसार पूर्ण रूप से शोध कर उनके परम शिष्य स्वामी सन्तराम जी द्वारा एक हस्त लिखित ग्रन्थ तैयार किया गया। जिसके लिखने में लगभग एक वर्ष लगा। यह ग्रन्थ वि.स. १६८३ (१६२६ ई.) में सतगुरु भूरी वालो की तपस्थली कैलपुरी में रह कर भूरी वालों की उपस्थिति में स्वामी सन्तराम जी ने लिखा। महाराज भूरी वालों की ही आज्ञा से स्वामी सन्तराम जी ने दूसरा ग्रन्थ देहडू में रह कर हाथ से लिखा। इन दोनों ग्रन्थों में जो भी परिवर्तन, वाणी का समावेश तथा अक्षरों की शोध हुई, वह सतगुरु भूरी वाले ब्रह्मसागर जी की आज्ञा से और उनकी मौजूदगी में ही हुई। सतगुरु भूरी वाले इन्ही हस्तलिखित ग्रन्थों का अखण्ड पाठ करवाते थे। सतगुरु भूरी वालों के ब्रह्मलोक गमन करने के पश्चात् मेरे गुरुदेव स्वामी सन्तराम जी महाराज ने अपने इष्ट देव के अवतार स्थान की सेवा करने का संकल्प लिया। रामपुर जिला रोपड़ में रह कर लगभग २५ वर्ष तक तप किया और अवतार स्थान में छतरी साहिब का

निर्माण करवाया। स्वामी सन्त राम जी का संकल्प था कि सतगुरु भूरी वालों के द्वारा लिखवाये गये ग्रन्थ को छपवाया जाये। सो महान पुरुषों का किया हुआ संकल्प कभी अधूरा नही रहता। अतः गुरुदेव स्वामी सन्तराम जी का किया हुआ संकल्प उन्ही की कृपा से आज पूर्ण हुआ है।

प्रिय पाठक वृन्द !

''श्री सतगुरु ग्रन्थ साहिब'' प्रकाशित करवा कर आपको समर्पित किया गया है। इकसी शोध पूर्ण रूप से दो श्री ग्रन्थों को आधार मान कर की गई है। पहला आधार तो श्री सतगुरु भूरी वाले ब्रह्मसागर जी महाराज की उपस्थिति में और उनकी आज्ञा से, उन्ही की राय के अनुसार वि.स. १९८३ में कैलपुर स्वामी सन्तराम जी महाराज द्वारा लिखा गया हस्तलिखित ग्रन्थ है। दूसरा आधार सतगुरु भूरी वालों के आज्ञाकारी पोते शिष्य स्वामी स्वरूपानन्द जी नियायक (श्री जलूर धाम) द्वारा प्रकाशित श्री ग्रन्थ साहिब रखा गया है। इसके अतिरिक्त तीन पुरातन हस्त लिखित ग्रन्थों की सहायता ली गई है। जिनका विवरण इस प्रकार है १.पहला हस्त लिखित ग्रन्थ श्री गरीब दास जी के शिष्य पूर्ण दास जी हुए, पूर्ण दास जी के शिष्य श्री केवल दास जी ने सतगुरु गरीबदास जी के ब्रह्मलोक गमन के दस वर्ष पश्चात् वि.स.१८४५ में लिखा है। २. दूसरा हस्त लिखित ग्रन्थ वि.स. १८५६ में श्री स्वामी देवादास जी के शिष्य स्वामी विशन दास जी द्वारा लिखा गया है। ३.तीसरा हस्तलिखित ग्रन्थ वि.स. १८७३ में स्वामी मेहरदास जी के शिष्य स्वामी बूटा दास जी द्वारा लिखा गया है। इन तीनों हस्तलिखित ग्रन्थों को सतगुरु भूरी वालों के समय से ही जिल्द बांध कर सुरक्षित रखा गया है। इन तीनों ग्रन्थों से भी सहायता ली गई है। मुख्य रुप से सतगुरु भूरी वाले ब्रह्मसागर जी महाराज की आज्ञा से कैलपुरी में लिखा गया ग्रन्थ ही रखा है, तथा दूसरा मुख्य आधार श्री स्वामी स्वरुपानन्द जी द्वारा प्रकाशित ''श्री ग्रन्थ साहिब'' को रखा हैं जहां कहीं अंग भाग में साखियों की तालमेल की गई है, वह स्वामी सन्तराम जी महाराज के द्वारा हस्त लिखित ग्रन्थ साहिब के अनुसार ही की गई है। कुछ वाणी जो पूर्व प्रकाशनों में छूट गई थी, वह इस ''श्री सतगुरु ग्रन्थ साहिब'' में दे दी गई है। वही वाणी दी गई है जो सतगुरु भूरी वालों के द्वारा हस्त लिखित ग्रन्थ साहिब में दर्ज है। श्री सतगुरु कबीर साहिब जी की वाणी जो इस ''श्री सतगुरु गन्थ साहिब'' में दी गई है, वह सतगुरु भूरी वालों

के द्वारा हस्तलिखित ग्रन्थ से ली गई है और वे श्री कबीर साहिब जी के साखी ग्रन्थ जो कि काशी लहरतारा के पण्डित राघवदास जी साहेब द्वारा टीका सहित लिखा गया है, से मिलान किया गया है।

"श्री सतगुरु ग्रन्थ साहिब" की शोध में सतगुरु भूरी वालों के द्वारा हस्त लिखित ग्रन्थ साहिब की प्रतिलिपि की गई है जो कि बड़ी सावधानी से काम किया गया है फिर भी तुच्छ बुद्धि जीव होने के कारण त्रुटियां रह सकती है। अतः पहले तो बन्दी छोड कबीर साहेब जी, बन्दी छोड आचार्य गरीब दास जी, सतगुरु ब्रह्मसागर जी भूरी वालों के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि वे हर प्रकार की अनजाने में जो गलती हो गई है या रह गई है उसके लिए क्षमा करें और भेष भूषण सन्तो, विद्वानों, महापुरुषों से भी अशुद्धियों की क्षमा याचना करता हूँ। विद्वत् पाठक वृन्द से भी विनती करता हूँ कि वे अक्षरों की गलती को सुधार कर पाठ करें। श्री स्वामी जैयत राम जी महाराज श्री गरीबदास जी के पुत्र एवं शिष्य थे। महाराज श्री ने इन्हें अपने पैतृक गांव करौंथा जिला रोहतक (हरियाणा) की गद्दी पर बैठा दिया था। ये स्वतन्त्र प्रवृत्ति के फक्कड़द सन्त थे। इन्होंने जल्दी ही संन्यास धारण करके विरक्त हो कर भ्रमण करना शुरु कर दिया था। इन्होंने महत पुर, जिला-जालन्धर में इस नश्वर शरीर का त्याग किया जहाँ इनकी समाधि सुरक्षित है। श्री जैयत राम जी ने भी वाणी की रचना की है। इनकी वाणी को महाराज श्री की वाणी की चाबी कहा जाता है। इन्होंने अपने पिता एवं गुरु आचार्य गरीबदास जी महाराज की जीवनी पर भी प्रकाश डाला है। महामण्डलेश्वर श्री स्वामी दयालु दास जी महाराज गरीबदासी भेष के प्रथम प्रचारक हुए। इन्होंने भारत भूमि के विभिन्न भागों में अपनी शिष्य मण्डली के साथ भ्रमण करते हुए महाराज श्री की वाणी का प्रचार-प्रसार किया। ये आचार्य जी की वाणी को ही सर्वोपरि मानते थे। इनकी वाणी के प्रति अटूट श्रद्धा का उदाहरण स्वयं सिद्ध है कि ये ग्रन्थ साहिब को अपनी शिष्य मण्डली के साथ चलते हुए अपने सिर पर ले कर चलते थे। मेरे दादा गुरु श्री सतगुरु भूरी वाले ब्रह्मसागर जी महाराज जिनको बन्दी छोड श्री गरीबदास जी का ही अवतार माना जाता है। आपजी ने अवतार धारण करके पंजाब तथा हरियाणा प्रान्त में बन्दी छोड जी की अमृतमई वाणी का प्रचार करके तथा अपनी रुहानी शक्ति से जनता को प्रभावित करके श्री गरीबदास जी की वाणी तथा उनके अवतार स्थान छुड़ाणी से जोड़ा। आपजी ने गरीबदासी सम्प्रदाय में वाणी श्री

अखण्ड पाठों की परम्परा को जन्म दिया। श्री छुडाणी धाम में रहकर श्री छतरी साहिब की अत्यन्त सेवा करवाई। अपनी कृपा दृष्टि से अनेक जीवों का उद्धार किया। आपजी को वचन था, कि जो हमे प्रसन्न करना चाहता है, वह श्री छुडाणी धाम की सेवा करे। अब भी संगत सतगुरुों के वचन याद रख कर श्री छुडाणी धाम की बड़े प्रेम श्रद्धा से सेवा करती है।

श्री १००८ श्री सतगुरु भूरी वाले ब्रह्मसागर जी तथा उनके परम शिष्य श्री १०८ श्री स्वामी सन्त राम जी –रामपुर धाम

श्री श्री १००८ श्री बन्दी छोड गरीबदास जी महाराज ने अपनी चलाई हुई भक्ति की परम्परा को फिर से नया जीवन देने के लिए और भक्ति मार्ग से भटके हुए हँसों का उद्धार करने के लिए अपने ही स्वरूप श्री ब्रह्मसागर जी भूरी वालों को इस लोक में भेजकर संसारी जीवों पर दया कृपा की। सतगुरु ब्रह्मसागर जी महाराज का अवतार वि.सं. १६१६, भादों कृष्ण पक्ष अष्टमी वाले दिन रामपुर जिला रोपड़ (पंजाब) में हुआ था। आपजी ने अवतार धारण करके खास कर पंजाब की जनता के ऊपर महान कृपा की। बन्दी छोड श्री गरीबदास जी के भक्ति के संदेश को जन जन तक पहुँचाया। उनके परम पावन श्री छुडानी धाम में छतरी साहिब का जीर्ण उद्धार करके नये सिरे से निर्माण किया तथा बन्दी छोड जी की सुन्दर प्रतिमा बनवाकर छतरी साहिब में उसकी स्थापना की। महाराज जी पंजाब से संगत को ले जाकर छतरी साहिब की सेवा अपा खड़े होकर अपनी देख-रेख में करवाते थे। बन्दी छोड जी की अमृतमई वाणी को पूर्ण रूप से शोध कर लिखवाया तथा श्री ग्रन्थ साहिब का ४८ घन्टे तक अखण्ड जाप करवाने की मर्यादा को कायम किया। बन्दी छोड श्री गरीबदास जी की अमृत वाणी तथा धाम छुडानी को सर्वोपरि मानने का संगत को उपदेश दिया। पंजाब की धरती पर जगह जगह भोरे गुफाऐं बनवाकर अपने तपोबल से उन्हें पवित्र बना दिया जैसे कि कैलपुर, तलवंडी, भट्टीयां, रकवा, देहडू, बरनाला, चौंदा, लुधियाना आदि अनेक स्थान है, जिन्हे सतगुरु के चरणों की छोह प्राप्त हुई वही पवित्र धाम बन गये। ब्रह्मलोक जाने से पहले जिला संगरूर गांव जलूर की धरती को अपने चरणों के स्पर्श से पावन बना कर उसे श्री जलूर धाम की संज्ञा दी। इस प्रकार संगत का उपकार करते हुए ८५ वर्ष की आयु

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

में वि.सं. २००४ मगहर सूदी दसमी वाले दिन श्री जलूर धाम में जोती जोत समाये। उनके परम शिष्य स्वामी सन्त राम जी महाराज जिनके ऊपर सतगुरु भूरी वाले महाराज जी की महान कृपा था। उन्हीं की कृपा का सदका स्वामी सन्त राम जी को सतगुरु भूरी वालों के संग रह कर अन्दाजा २५ वर्ष तक उनके चरणों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। स्वामी जी छाया की तरह हमेशा संग रहकर सतगुरु जी की सेवा में हाजिर रहते थे। सतगुरु भूरी वालों की मौजूदगी में उनकी आज्ञा से स्वामी सन्त राम जी ने दो श्री ग्रन्थ साहिब अपने कर-कमलों द्वारा बड़ी सुन्दर लिखाई में पूर्ण रूप से शोध कर लिखे। कई रतन सागर तथा नित्य नियम के कई गुटके अपने कर-कमलों से लिखे जो अब भी रामपुर धाम में मौजूद है। सतगुरु भूरी वालों के ब्रह्मलोक जाने प्रयन्त स्वामी जी सदा उनकी सेवा में रहे। उसके पश्चात् सतगुरु के पावन अवतार स्थान रामपुर धाम की सेवा करने का संकल्प किया। फिर सारा जीवन अवतार धाम की सेवा में तथा तप साधना में ही व्यतीत किया। बन्दी छोड जी का वचन है :-

धन्य वह देश गाम प्रपट्टन, जनमे संत दयाल।

रामपुर धाम ही स्वामी सन्त राम जी महाराज का साधना-स्थल रहा। स्वामी जी ने अपने जीवन काल में कभी भी किसी डाक्टर से दवाई नहीं ली। कभी अस्पताल में नहीं गये कभी कोई शरीरिक कष्ट होता तो अपनी बनाई हुई देशी दवाई ही लेते थे। आपजी में मानसिक शान्ति का इतना भण्डार था कि कभी किसी ने उनको क्रोधित अवस्था में नहीं देखा। स्वामी जी आजीवन ब्रह्मचारी थे। लोभ कोसों दूर था कभी किसी वस्तु पदार्थ का संग्रह नहीं किया फिर मोह का तो बीज ही नास कर दिया था। स्वामी जी ने कभी भी अपने मुख से अपने जन्म गांव या परिवार, माता पिता भाई बन्धू किसी का नाम तक नहीं बताया। नम्रता इतनी थी कि अहंकार को क्षण मात्र भी ठहरने के लिए कोई स्थान न था। सतगुरु भूरी वाले महाराज जी के चरणों में अटूट प्रेम था। आप नित्य सन्ध्या आरती के पश्चात् सतगुरु भूरी वालों के चरणों में यही प्रार्थना करते हे :-

हाथ जोड़ विनती करूं, सुन गुरु कृपा निधान।
सतगुरु ब्रहासागर जी के, मैं चरण कमल का ध्यान।।
ध्यान धरे संकट कटे, दर्शन से दुख जाय।
सतगुरु ब्रह्मसागर जी के, मैं चरण कमल की छाय।।

सतगुरु ब्रहसागर जी के, मैं आगे करुं पुकार।
सन्त दास गुलाम की, पत्त रखियो बहुत संभार।।

जैसे सतगुरु भूरी वाले महराज जी ने ब्रह्मलोक जाने के समय आसन लगाकर योग अभ्याय के द्वारा शरीर का परित्याग किया था। स्वामी सन्त राम जी ने भी ठीक इसी प्रकार तन्दुरुस्त अवस्था में शाम को सन्ध्या आरती, इस मृत्युलोक में संगत के बीच बैठकर की और सुबह का नित्य नियम सतगुरु के अमर लोक में जाकर किया। आरती के पश्चात् भोजन किया और विश्राम करने के लिए आसन पर विराज गये। प्रातः दो बजे ब्रह्ममहूर्त में अपने कर-कमलों से देशी घी की जोत जगाई और सिद्ध-आसन की मुद्रा में बैठकर योग अभ्यास के द्वारा वि.सं. २०२६ फालगुन वदी त्रयोदशी (शिवरात्री) वाले दिन ब्रह्ममहूर्त में शरीर का परित्याग कर दिया। शरीर परित्याग के एक महीना पश्चात् मुझे तेजपुंज के शरीर में दर्शन दिये और बोले बच्चू! कबीर साहिब जी से लेकर जो मार्ग चलता आ रहा है हमने वही मार्ग अख्त्यार किया है अब हमें बन्दी छोड जी के चरणों में आनन्द प्राप्त हो रहा है जो कोई इस मार्ग को अपनायेगा हम उसको भी ऐसी ही आनन्द में ले जायंगे। आपजी का बन्दी छोड जी की वाणी के साथ बहुत प्रेम था। आज उसी प्रेम का सदका बन्दी छोड जी की कृपा से स्वामी सन्त राम जी महाराज के सत्-संकल्प की पूर्ति हुई है जो कि अब ''श्री सतगुरु ग्रन्थ साहिब'' छप कर संगत को उपलब्ध हो रहा है। संसार में महापुरुषों का जीवन संगत के उपकार के लिए ही होता है।

आपजी का शिष्य
संत अमर नाथ (रामपुर धाम)

प्रकाशक की गुरु प्रणाली

प्रथम सु आदाचार्य गरीबदास भये।
सन्तो! तिन के आगाड़ी स्वामी प्रेमदास आए हैं।।
गोविन्द दास के शिष्य स्वामी रतन दास आन भये।
तरन दास के शिष्य स्वामी मेहरदास सुहाये हैं।।
साहिब दास के शिष्य स्वामी ब्रह्मदास सुहाये हैं।।
साहिब दास के शिष्य स्वामी ब्रह्मदास आन भये।
पुनः दयानन्द जी आनन्द स्वरूप मानो।।
आगे भूरी वाले श्री ब्रह्म सागर जी मन भाये हैं।
तिन के तो शिष्य स्वामी सन्त राम शान्त रूप।
पुनः चरण दास जी के चरण केवल भयो है।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

सत पुरुष सत कबीर का अशांवतार

जगतगुरु आचार्य श्री गरीबदास जी महाराज

(सुप्रसिद्ध सन्त कवि एवं समाज सुधारक)

श्री महन्त दयासागर
(आचार्य गद्दीनसीन, छतरी साहिब, छुडानीधाम)

भारतवर्ष के ही नहीं अपितु विश्व के श्रेष्ठ धर्माचार्यो में श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जी का नाम सुप्रसिद्ध है। इन्ही से दीक्षित सतपुरुष स्वरूप श्री सतगुरु कबीर साहिब जी महाराज ने तत्कालीन समाज से पाखण्ड, मिथ्या ढकोसलों, प्रभु प्राप्ति हेतु ब्रह्म आडम्बरों, जात-पात एवं धर्म-सम्प्रदायों के सम्बन्ध में अपने विचार निर्भीक होकर प्रकट किये। समाज में व्याप्त हर प्रकार की बुराईयों को कथनी एवं करनी के द्वारा दूर करने का प्रयास किया। सतगुरु कबीर साहिब एक धार्मिक-आध्यात्मिक आन्दोलन के प्रणेता हुये जिस को उनके बाद जगतगुरु आचार्य श्री गरीब दास जी सदृश समाज सुधारक सन्तों ने आगे बढ़ाया। आचार्य श्री गरीबदास जी सन् १७१७ ई०, बैशाख पूर्णिमा के दिन ग्राम छुडानी, जिला झज्जर (तत्कालीन जि० रोहतक), हरियाणा प्रान्त में श्री बलराम जी (घनखड गौत्रीय क्षत्रिय जाट-किसान परिवार) के यहाँ माता श्री रानी जी के गर्भ से प्रकट हुये। मात्र दस-ग्यारक वर्ष की आयु में सतगुरु कबीर साहिब जी से सूक्ष्म मिलन (अर्न्तदशनीय) के द्वारा दीक्षित हुये और तभी से वाणी का उच्चारण प्रारम्भ किया जिसे समय समय पर दादू पन्थी विद्वान सन्त स्वामी गोपाल दास जी ने लेखनीबद्ध किया। जिस का प्रथम प्रकाशन स्वामी अजरानन्द जी रमता राम ने सन् १९२४ में बड़ोदा (गुजरात) से कराया। द्वितीय बार दो भागो में म०म० स्वामी धर्म स्नेही जी परमहंस ने सन् १९६४ में हरिद्वार से करवाया। हरिद्वार से ही म.म. स्वामी धर्म स्नेही जी ने चतुर्थ प्रकाशन सन् १९९६ में करवाया। पंचम और प्रस्तुत प्रकाशन सतगुरु भूरी वाले ब्रह्मसागर जी की कृपा से पूजनीय वाणी मर्मज्ञ स्वामी सन्त राम जी के परम शिष्य स्वामी चरण दास ब्रह्मचारी जी ने करवाकर अति पुनीत कार्य किया है। आचार्य श्री की प्रेरणा एवं अनुकम्पा के बिन इतना महान कार्य हो ही नहीं सकता अतः सर्वप्रथम मैं जगतगुरु आचार्य श्री गरीब दास जी को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ, तत्पश्चात् सतगुरु भूरी वाले और स्वामी सन्त जी को नमन करता हूँ। प्रस्तुत नवीनतम,

संशोधित संस्करण के प्रकाशन के लिये मैं स्वामी चरणदास ब्रह्मचारी जी को कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूँ जिन्होने अल्प समय में ही महान कार्य को कार्यान्वित किया। स्वामी ब्रह्मचारी जी मात्र प्रशंसा के ही पात्र नहीं अपितु वर्तमान सन्त समाज में एक आदर्श सन्त हैं जिनकी रहनी-सहनी, कथनी-करनी, इष्ट-निठा, सद्व्यवहार, सन्त सेवा, वाणी के प्रति श्रद्धा, छुडानी धाम के प्रति श्रद्धा, समाज के उपेक्षित एवं पीड़ित वर्ग की सहायता आदि सभी कुछ प्रशंसनीय हैं। मधुर, सरस मुखारबिन्द से आचार्य श्री की वाणी, शब्द, कथा सुनाकर श्रोतावर्ग को ब्रह्मचारी जी मोहित कर देते हैं। महाराज भूरी वालों के अवतार स्थान रामपुर धाम (जि० रोपड़, पंजाब) के कुशल संचालन के साथ-साथ एक पूर्ण योगी की तरह प्रातः अढ़ाई बजे उठकर भजन में सुरतिलीन करने वाले स्वामी चरणदास ब्रह्मचारी जी को समस्त गरीबदासी पंथ की ओर से वाणी-प्रकाशन के लिये शुभकामनायें इसी के साथ-साथ स्वामी ब्रह्मचारी जी के परम शिष्य स्वामी दर्शन दास जी और सतगुरु के प्रेमी मास्टर हर किशन गाँव लाठ, जिला सोनीपत (हरियाणा) के अथक श्रद्धायुक्त मानसिक व शारीरिक प्रयास का (वाणी-प्रकाशन के सन्दर्भ में) मैं शब्दों में वर्णन करूं तो शयद यह उनके प्रति अन्याय ही होगा। अतः उक्त दोनों माहनुभावों एवं तत्सम्बन्धित सन्तों-भक्तों को भी मैं साधुवाद देता हूं। पहाड़ी धीरज (जहां पर वाणी का अध्ययन-संशोधन-प्रकाशन हुआ) वाले परम श्रद्धालु भक्त लाल राधे श्यामजी फूलवाले एवं उनकी धर्मपत्नी भक्तिमति माया देवी द्वारा इस महान कार्य हेतु अथाह धन राशि, महीनों तक सत्कार पूर्ण आतिथ्य एवं शरीरिक सेवा की जो मिसाल कायम की है वह अभूतपूर्व एवं प्रशंसनीय है। कम्प्यूटर एवं प्रेस वालों का भी मैं धन्यवाद करता हूँ जिन्होने शब्द-सज्जा एवं मुद्रण के कार्य को प्रभावी ढंग से किया। अन्य सभी दानी सज्जनों एवं माताओं का भी अत्यंत आभारी हूँ। भारतवर्ष एक विश्वप्रसिद्ध अध्यात्मवादी, मानवतावादी प्राचीन देश है। जिसमें ऋषि, मुनी, योगी, ज्ञानी, तपस्वी, साधु-सन्तों, महापुरुषों, अवतारों, धर्मगुरुओं, जगदगुरुओं, वीर राजाओं-महाराजाओं की परम्परा, मान-मर्यादा, आदश चरित्र का उज्जवल इतिहास जुड़ा हुआ है। जहाँ ४ वेद, ६ शास्त्र, १८ पुराण, ११ प्रसिद्ध उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, रामायण, महाभारत, श्रीमद भगवतपुराण, गीता आदि ग्रन्थ अध्यात्म निधि उपलब्ध है। प्राचीन काल में भी भारतवर्ष विश्वगुरु का गौरव सम्मान प्राप्त करता रहा

है। साथ ही शिक्षा, चिकित्सा, अध्यात्मविधा, वास्तुकला, साहित्य, संगीत का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है। मनु भगवान की उक्ति है :-

एतद्‌देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं प्रथिव्यां सर्वमानवाः।।

कालांतर में भारतव'ा में विदेशी भा'ाा एवंम् धर्म संस्कृति का संक्रमण हुआ। जिसके फलस्वरूप भारतीय धर्म-संस्कृति, अध्यात्मवाद, समाजवाद को ग्रहण लग गया था। प्राचीन परंपराओं का सरंक्षण कठिन हो गया था। ऐसी विकट परिस्थितियों में सही दिशा देने के लिए श्री जगतगुरु शंकराचार्य, श्री माध्वाचार्य, श्री बल्लभाचार्य, श्री निम्बकाचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री रामानंदाचार्य, श्री सतगुरु कबीराचार्य जी, श्री सतगुरु नानक देव जी, श्रीचन्द्राचार्य जी आदि महापुरुषों का अवतार हुआ। श्री गरीबदासीय संप्रदाय के आदधर्मप्रवर्तक धर्माचार्य श्री गरीबदास जी महाराज का शुभ प्रदुर्भाव पूर्णिमा संवत् १७७४ (सन् १७१७) में हरियाणा प्रान्त जिला रोहतक (वर्तमान जिला झज्जर) के ग्राम छुडानी में हुआ। बाल्यकाल में ही आचार्य श्री सन्तों की संगत में रहकर श्री कबीर साहिब की वाणी का श्रवण कर बडे प्रभावित हुए और भगवान के साक्षात्कार के लिए साधना में तल्लीन हो गये। जिसके परिणाम स्वरुप श्री कबीर साहिब के रूप में श्रीकृष्ण के समान गऊ चराते समय स्वयं भगवान ने प्रकट होकर दर्शन दिये और स्वागत में गुरुदेव को गोदुग्ध पान कराया। जिनके कृपा कटाक्ष से ज्ञान के दिव्य नेत्र खुल गये और उन्होंने लोककल्याण के लिए स्तुतिपरक पद्यमय रचनाएं प्रारम्भ कर दी। जिससे जीवात्मा की एकता हो सके और सत्य वस्तु (तत्व वस्तु) की प्राप्ति हो सके।

संध्या आरती में आता है-

दास गरीब कबीर का चेरा।
सतलोक अमरापुरा डेरा।।

आचार्य श्री ने मानवों में एकता के लिये लिखा है :-

मुल्ला से पण्डित भये, पण्डित से भले मुल्ल।
गरीबदास तज बैर भाव, कीजे सुल्लमसुल्ल।।
कौम छतीसं है जगदीशं, ब्रह्मबीज एक बाडी।
जो हिन्दवानी सो मुसलमानी, पहरै एकै साड़ी।।

आचार्य श्री ने शुभ सात्विक आहार व्यवहार विचार की त्रिवेणी के सेवन पर बल दिया।

अहिंसा परमोधर्मः की महत्ता पर बल दिया-

मुसलमान को गाय भखी, हिन्दू खाया सूर,
गरीबदास दहूँ दीन से, राम रहीमा दूर।।

सत्संग की महिमा के बारे में –

सन्तों की संगत करैं, बड़भागी बड देव।
आपन तो संशय नहीं, और उतारैं खेव।।

साधु सन्तों के प्रति श्रद्धा के उदगार –

साधु माई बाप है, साधु भाई बन्ध।
साधु मिलावै राम से, काटें जम के फन्ध।।

ब्रह्म की व्यापकता के बारे में

हाड चाम की देह में, दूध स्तन सरवन्तं।
गरीबदास घट पिंड में, ऐसे हैं भगवन्त।।

जीवन के तीन धन आचार्य जी ने बताये हैं

धन संतो तो शील का, दूजा परम संतोषं।
ज्ञान रतन भाजन भरो, असल खजाना रोक।।

उक्त सभी सिद्धान्तों को जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठित करने के लिए श्री गरीबदास साधु समाज के युग प्रवर्तक महामहिम महामण्डलेश्वर स्वामी श्री दयालुदास जी ने आचार्य श्री की वाणी की कथा एवंम सत्संग का प्रचार प्रसार उतराखण्ड से दक्षिण सेतुबन्ध रामेश्वरम तक तथा पूर्व में काशी या जगन्नाथपुरी से पश्चिम में द्वारका पुरी तक तीर्थ यात्रा के माध्यम से किया। जिनकी मण्डली में से एक से एक विरक्त त्यागी तपस्वी एवं विद्वान ५०० महापुरुष के लगभग सदा रहते थें उन्होंने समाज में व्याप्त संक्रामक रोग सुरा सुन्दरी सेवन,अभ्क्ष्य-भक्षण, धूम्रपान से लाखों व्यकितयों को मुक्ति दिलाई। इसी प्रकार स्वामी दयालुदास जी महराज की समकक्षता में परम-विरक्त सन्त-शिरोमणि इष्टदेव एवं गुरुदेवनिष्ठ महामहिम स्वामी ब्रह्मसागर जी भूरीवाले एक ऋषि-सिद्धि संपन्न महापुरुष थे जिन्होंने वाणी के ग्रन्थ के अखण्ड पाठ की परम्परा श्रीमहन्त रामकिशन दास के समय में डाली। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि प्रान्तों के ग्राम-ग्राम में पद यात्रा कर अध्यात्म विद्या, इष्टनिष्ठा, गुरुनिष्ठा एवं साधुत्यागी जीवन का प्रचार किया। इन्हीं भूरीवालों की परम्परा में महामहिम स्वामी सन्तराम जी के शिष्य स्वामी चरणदास ब्रह्मचारी जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। जिन्होंने ब्रह्मलीन सिद्ध महापुरुष स्वामी ब्रह्मसागर जी की पावन जन्म-स्थली रामपुर धाम जिला रोपड़ (पंजाब) में भूरी वालों की प्रसिद्ध कुटिया का सुन्दर संचालन किया

हुआ है। ब्रह्मचारी जी छुडानी धाम छतरी साहिब की प्रगति में भी तन मन धन से सदा समर्पित रहते है। छतरी साहिब के वर्तमान श्रीमहंत दयासागर जी का हृदय से बडा सत्कार करते हैं। आचार्य श्री की वाणी ग्रन्थ का कई बार प्रकाशन हो चुका है। अब स्वामी ब्रह्मचारी जी ने आचार्य श्री की १८००० अमृतमयी वाणी ग्रन्थ साहिब एवं श्री कबीर साहिब की संक्षिप्त वाणी के पंचम प्रकाशन का शुभ संकल्प लिया हैं जिसमें श्रद्धालु सन्त सदगृहस्थ्पों को अखण्ड पाठ में और भी विशेष सुविधा मिल सकेगी। प्रकाशन व संशोधन कार्य में आचार्य गद्दीनशीन श्रीमहन्त दयासागर जी का विशेष सहयोग रहा है। अनेक हस्तलिखित ग्रन्थों के पाठान्तरों के संशाधन कार्य में तत्परतापूर्वक प्रयास स्वामी ब्रह्मचारी जी, श्रीमहन्त दयासागर जी एवम् स्वामी दशर्नदास जी का हार्दिक स्वागत करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ। साथ ही आशा करता हूँ कि इस प्रकाशन से सन्त-समाज, श्रद्धालु भक्त समाज का बड़ा उपकार होगा। धार्मिक आध्यात्मिक संस्कारों को प्रेरणा मिलेगी।

आभार

दरबार साहिब का डिजिटल स्वरुप प्रदान करने वालों में प्रमुख श्री कृपा सागर गुप्ता, प्रमोद शर्मा और टाइपिस्ट राजकुमार पटेल तथा प्रुफ सुधारने मे सभी मेरे सहयोगियों का हृदय से धन्यवाद देता हूँ तथा सबको शुभकामना देता हूँ।

स्वामी दर्शनदास
अध्यक्ष
ब्रह्मसागर संत चरण ट्रस्ट (रजि)

ॐ

सत साहिब अविगत कबीर। सत सुकृत नाम कबीर।।

अथ गुसांई **गरीबदास** साहिब जी की अमृतमयी वाणी

मंगलाचरण

गरीब, नमो नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्ह ही।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतों सरबस दीन्ह ही।।
सतगुरु साहिब संत सब, दण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुये, तिन कूँ जां कुरबान।।
निराकार निरबिषं, काल जाल भय भंजनं।
निरलेपं निज निरगुणं, अकल अनूप बेसुन्न धुनि।।
सोहं सुरति समापतं, सकल समाना निरति लै।
उजल हिरम्बर हरदमं, बेपरवाह अथाह है, वार पार नहीं मध्यतं।।
अनाहद मंत्र, सुख सलाहद मंत्र, अजोख मंत्र।
बेसुन्न मंत्र, निरबान मंत्र थीर है।।
आदि मंत्र, जुगादि मंत्र, अचल अभंगी मंत्र।
सदा सतसंगी मंत्र, ल्यौलीन मंत्र गहर गंभीर है।।
सोहं सुभान मंत्र, अगम अनराग मंत्र, निर्भय अडोल मंत्र।
निर्गुण निर्बन्ध मंत्र, निहचल मंत्र नेक है।।
गैबी गुलजार मंत्र, निर्भय निरधार मंत्र, सुमरत सुकृत मंत्र।
अगमी अवंच मंत्र, अदलि मंत्र अलेख है।।
फजलं फराक मंत्र, बिन रसना गुनलाप मंत्र, झिलमिल जहूर मंत्र।
सरबंग भरपूर मंत्र, सैलान मंत्र सार है।।
ररंकार गरक मंत्र, तेजपुंज परख मंत्र, अदली अबंध मंत्र।
अजपा निरसंध मंत्र, अविगत अनाहद मंत्र, दिल में दीदार है।।
बानी विनोद मंत्र, आनंद असोध मंत्र, खुरसी करार मंत्र।
अनभय उच्चार मंत्र, उजल मंत्र अलेख है।।
साहिब सतराम मंत्र, सांईं निहकाम मंत्र, पारख प्रकाश मंत्र।
हिरंबर हुलास मंत्र, मौले मलार मंत्र, पलक बीच खलक है।।

अथ गुरुदेव का अंग

गरीब, प्रपट्टन परलोक है, जहाँ अदली सतगुरु सार।
भक्ति हेत से ऊतरे, पाया हम दीदार।। १।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अललपंख की जात।
काया माया ना उहां, नहीं पिंड नहीं गात।। २।।

गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, उजल हिरंबर आदि।
भलका ज्ञान कमान का, घालत है सर सांधि।। ३।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुंन विदेशी आप।
रोम रोम प्रकाश है, दीन्हा अजपा जाप।। ४।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मगन किये मुसताक।
प्याला प्याया प्रेम का, गगन मंडल गरगाप।। ५।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सिंधु सुरति की सैन।
उर अंतर प्रकाशिया, अजब सुनाये बैन।। ६।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु की सैल।
बजर पौलि पट खोल कर, ले गया झीनी गैल।। ७।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के तीर।
सब संतन सिरताज है, सतगुरु अदल कबीर।। ८।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के मांहि।
शब्द सरूपी अंग है, पिंड प्राण नहीं छांहि।। ९।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, गलताना गुलजार।
वार पार कीमत नहीं, नहीं हलका नहीं भार।। १०।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के मंझ।
अंड्यौं आनंद पोष है, बैन सुनाये कुंज।। ११।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
पीतांबर ताखी धर्यो, बानी शब्द रिसाल।। १२।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
गमन किया परलोक से, अलल पंख की चाल।। १३।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
ज्ञान जोग अरु भक्ति सब, दीन्हीं नजर निहाल।। १४।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, बेपरवाह अबंध।
परमहंस पूर्ण पुरुष, रोम रोम रविचन्द।। १५।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, है जिन्दा जगदीश।
सुंन विदेशी मिल गया, छत्र मुकट है शीश।। १६।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, मधुरे बैन विनोद।
चार वेद षट् शास्त्र, कहां अठारा बोध।। १७।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, अचल विहंगम चाल।
हम अमरापुर ले गया, ज्ञान शब्द सर घाल।। १८।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तुरिया केरे तीर।
भगल बिद्या बानी कहै, छानै नीर अरु छीर।। १९।।
गरीब, जिन्दा जोगी जगतगुरु, मालिक मुरशद पीव।

काल कर्म लागै नहीं, नहीं शंका नहीं सीव।। २०।।
गरीब, जिन्दा जोगी जगतगुरु, मालिक मुरशद पीर।
दहूँ दीन झगरा मंड्या, पाया नहीं शरीर।। २१।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मालिक मुरशद पीर।
मार्‍या भलका भेद से, लगे ज्ञान के तीर।। २२।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज के अंग।
झिलमिल नूर जहूर है, रूप रेख नहीं रंग।। २३।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज की लोय।
तन मन अरपौं शीश कूँ, होनी होय सो होय।। २४।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बजर किवार।
अगम द्वीप कूँ ले गया, जहां ब्रह्म दरबार।। २५।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बजर कपाट।
अगम भूमि कूँ गम करी, उतरे औघट घाट।। २६।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मारी ग्यासी गैन।
रोम रोम में सालती, पलक नहीं है चैन।। २७।।
गरीब, सतगुरु भलका खैंच करि, लाया बान जु एक।
स्वास उभारे सालता, पड्या कलेजे छेक।। २८।।
गरीब, सतगुरु मार्‍या बान कसि, खैबर ग्यासी खैंच।
भरम कर्म सब जरि गये, लई कुबुधि सब ऐंच।। २९।।
गरीब, सतगुरु आये दया करि, ऐसे दीन दयाल।
बंदी छोड बिरद तास का, जठर अगनि प्रतिपाल।। ३०।।
गरीब, जठर अगनि से राखिया, प्याया अमृत षीर।
जुगन जुगन सतसंग है, समझ कुटन बेपीर।। ३१।।
गरीब, जूनी संकट मेटि है, औंधे मुख नहीं आय।
ऐसा सतगुरु सेईये, जम से लेइ छुड़ाय।। ३२।।
गरीब, जम जौरा जासें डरैं, धर्मराय के दूत।
चौदा कोट न चंप हीं, सुन सतगुरु की कूत।। ३३।।
गरीब, जम जौरा जासें डरैं, धर्मराय धर धीर।
ऐसा सतगुरु एक है, अदली अदल कबीर।। ३४।।
गरीब, जम जौरा जासें डरैं, मिटे कर्म के अंक।
कागज कीरे दरगह दई, चौदह कोटि न चंप।। ३५।।
गरीब, जम जौरा जासें डरैं, मिटे कर्म के लेख।
अदली अदल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।। ३६।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, पौंहच्या मंझि निदान।
नौका नाम चढ़ाय करि, पार किये प्रवान।। ३७।।

गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भवसागर के मांहि।
नौका नाम चढ़ाय करि, ले राखे निज ठांहि।। ३८।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भवसागर के बीच।
खेवट सब कूँ खेवता, क्या उत्तम क्या नीच।। ३६।।
गरीब, चौरासी की धार में, बहे जात हैं जीव।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ले परसाया पीव।। ४०।।
गरीब, लख चौरासी धार में, बहे जात हैं हंस।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अलख लखाया बंस।। ४१।।
गरीब, माया का रस पीय करि, फूटि गये दो नैंन।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, बास दिया सुख चैन।। ४२।।
गरीब, माया का रस पीय करि, हो गये डामा डोल।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान जोग दिया खोल।। ४३।।
गरीब, माया का रस पीय करि, हो गये भूत खईस।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भक्ति दई बख्शीश।। ४४।।
गरीब, माया का रस पीय करि, फूटि गये पट चार।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, लोयन संख उघार।। ४५।।
गरीब, माया का रस पीय करि, डूबि गये दोऊ दीन।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान जोग प्रवीन।। ४६।।
गरीब, माया का रस पीय करि, गये षट् दल गारत गोर।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, परगट लिये बहोर।। ४७।।
गरीब, सतगुरु कूँ क्या दीजिये, देने कूँ कछु नांहि।
संमन कूँ साका किया, सेऊ भेंट चढ़ांहि।। ४८।।
गरीब, सिर साटे की भक्ति है, और कछु नहीं बात।
सिर के साटे पाईये, अविगत अलख अनाथ।। ४६।।
गरीब, शीश तुम्हारा जायगा, करि सतगुरु कूँ दान।
मेरी मेरा छाड दे, यौं ही गोय मैदान।। ५०।।
गरीब, शीश तुम्हारा जायगा, करि सतगुरु की भेट।
नाम निरंतर लीजिये, जम की लगै न फेट।। ५१।।
गरीब, साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये साध।
ये तीनों अंग एक हैं, गति कछु अगम अगाध।। ५२।।
गरीब, साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये संत।
धरि धरि भेख विशाल अंग, खेलैं आदि रु अंत।। ५३।।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, बेग उतारै पार।
चौरासी भ्रम मेट हीं, आवा गवन निवार।। ५४।।
गरीब, अंधे गूंगे गुरु घनें, लंगड़े लोभी लाख।

साहिब से परचे नहीं, काबि बनावै साख।। ५५।।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, शब्द समाना होय।
भवसागर में डूबते, पार लंघावैं सोय।। ५६।।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, सोहं सिन्धु मिलाप।
तुरिया मध्य आसन करै, मेटै तीनों ताप।। ५७।।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का देश।
ऐसा सतगुरु सेईये, शब्द विज्ञाना नेश।। ५८।।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का धाम।
ऐसा सतगुरु सेईये, हंस करै निहकाम।। ५६।।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का लोक।
ऐसा सतगुरु सेईये, हंस पठावै मोख।। ६०।।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का दीप।
ऐसा सतगुरु सेईये, राखै संग सनीप।। ६१।।
गरीब, गगन मंडल गादी जहां, पारब्रह्म अस्थान।
सुन्नि शिखर के महल में, हंस करै विश्राम।। ६२।।
गरीब, सतगुरु पूर्ण ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम है, यामै मीन न मेख।। ६३।।
गरीब, सतगुरु आदि अनादि है, सतगुरु मध्य है मूल।
सतगुरु कूँ सिजदा करुँ, एक पलक नहीं भूल।। ६४।।
गरीब, पट्टन घाट लखाईया, अगम भूमि का भेद।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अष्ट कँवल दल छेद।। ६५।।
गरीब, पट्टन घाट लखाईया, अगम भूमि का भेव।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अष्ट कँवल दल सेव।। ६६।।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सतगुरु ले गया मोहि।
सिर साटे सौदा हुआ, अगली पिछली खोहि।। ६७।।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सतगुरु ले गया साथ।
जहां हीरे मानिक बिकैं, पारस लाग्या हाथ।। ६८।।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, है सतगुरु की हाट।
जहां हीरे मानिक बिकैं, सौदागर स्यूं साट।। ६६।।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सौदा है निज सार।
हम कूँ सतगुरु ले गया, औघट घाट उतार।। ७०।।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, प्रेम प्याले खूब।
जहां हम सतगुरु ले गया, मतवाला महबूब।। ७१।।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, मतवाले मस्तान।
हम कूँ सतगुरु ले गया, अमरा पुर अस्थान।। ७२।।

गरीब, बंकनाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।
मानसरोवर हंस हैं, बानी कोकिल कीर।। ७३।।
गरीब, बंकनाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।
जहां हम सतगुरु ले गया, चुवें अमीरस छीर।। ७४।।
गरीब, बंकनाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।
जहां हम सतगुरु ले गया, बंदी छोड कबीर।। ७५।।
गरीब, भँवर गुफा में बैठ करि, अमी महारस जोख।
ऐसा सतगुरु मिल गया, सौदा रोकम रोक।। ७६।।
गरीब, भँवर गुफा में बैठ करि, अमी महारस तोल।
ऐसा सतगुरु मिल गया, बजर पौलि दई खोल।। ७७।।
गरीब, भँवर गुफा में बैठ करि, अमी महारस जोख।
ऐसा सतगुरु मिल गया, ले गया हम परलोक।। ७८।।
गरीब, पिंड ब्रह्मंड से अगम है, न्यारी सिन्धु समाध।
ऐसा सतगुरु मिल गया, देख्या अगम अगाध।। ७९।।
गरीब, पिंड ब्रह्मंड से अगम है, न्यारी सिन्धु समाध।
ऐसा सतगुरु मिल गया, दिया अखै प्रसाद।। ८०।।
गरीब, औघट घाटी ऊतरे, सतगुरु के उपदेश।
पूर्ण पद प्रकासिया, ज्ञान जोग प्रवेश।। ८१।।
गरीब, सुंनि सरोवर हंस मन, न्हाया सतगुरु भेद।
सुरति निरति परचा भया, अष्ट कँवल दल छेद।। ८२।।
गरीब, सुंनि बेसुंनि से अगम है, पिंड ब्रह्मंड से न्यार।
शब्द समाना शब्द में, अविगत वार न पार।। ८३।।
गरीब, सतगुरु कूँ कुरबान जां, अजब लखाया देश।
पारब्रह्म प्रवान है, निरालंब निज नेश।। ८४।।
गरीब, सतगुरु सोहं नाम दे, गुज बीरज बिस्तार।
बिन सोहं सीझै नहीं, मूल मंत्र निज सार।। ८५।।
गरीब, सोहं सोहं धुन लगै, दरदबंद दिल मांहि।
सतगुरु परदा खोल हीं, परालोक ले जांहि।। ८६।।
गरीब, सोहं जाप अजाप है, बिन रसना होइ धुंनि।
चढ़े महल सुख सेज पर, जहां पाप नहीं पुंनि।। ८७।।
गरीब, सोहं जाप अजाप है, बिन रसना होइ धुंनि।
सतगुरु दीप सनीप हैं, नहीं बसती नहीं सुंनि।। ८८।।
गरीब, सुंनि बसती से रहित है, मूल मंत्र मन मांहि।
जहां हम सतगुरु ले गया, अगम भूमि सत ठांहि।। ८९।।
गरीब, मूल मंत्र निज नाव है, सुरति सिन्धु के तीर।

गैबी बानी अरस में, सुर नर धरैं न धीर।। ९०।।
गरीब, अजब नगर में ले गया, हम कूँ सतगुरु आन।
झलकै बिंब अगाध गति, सूते चादर तान।। ९१।।
गरीब, अगम अनाहद द्वीप है, अगम अनाहद लोक।
अगम अनाहद गवन है, अगम अनाहद मोख।। ९२।।
गरीब, सतगुरु पारस रूप हैं, हमरी लोहा जात।
पलक बीच कंचन करैं, पलटैं पिंड रु गात।। ९३।।
गरीब, हम तो लोहा कठिन हैं, सतगुरु बनै लुहार।
जुगन जुगन के मोरचे , तोड़ि घड़ैं घनसार।। ९४।।
गरीब, हम पशुवा जन जीव हैं, सतगुरु जाति भिरंग।
मुरदे से जिन्दा करैं, पलट धरत हैं अंग।। ९५।।
गरीब, सतगुरु सिकलीगर बने, यौह तन तेगा देह।
जुगन जुगन के मोरचे, खोवै भरम संदेह।। ९६।।
गरीब, सतगुरु कंद कपूर है, हमरी तुनका देह।
स्वांति सीप का मेल है, चन्द चकोरा नेह।। ९७।।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, बेग उधारै हंस।
भौसागर आवै नहीं, जौरा काल विधंस।। ९८।।
गरीब, पट्टन नगरी घर करै, गगन मंडल गैंनार।
अलल पंख ज्यूं संचरै, सतगुरु अधम उधार।। ९९।।
अलल पंख अनुराग है, सुंनि मंडल रहै थीर।
दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिले कबीर।। १००।।

अथ सुमिरन का अंग

गरीब, ऐसा अविगत राम है, आदि अंत नहीं कोय।
वार पार कीमत नहीं, अचल हिरंबर सोय।। १।।
गरीब, ऐसा अविगत राम है, अगम अगोचर नूर।
सुंन सनेही आदि है, सकल लोक भरपूर।। २।।
गरीब, ऐसा अविगत राम है, गुन इन्द्रिय से न्यार।
सुंन सनेही रमि रह्या, दिल अंदर दीदार।। ३।।
गरीब, ऐसा अविगत राम है, अपरम पार अल्लाह।
कादर कूँ कुरबान है, वार पार नहीं थाह।। ४।।
गरीब, ऐसा अविगत राम है, कादर आप करीम।
मीरां मालिक मेहरबान, रमता राम रहीम।। ५।।
गरीब, अलह अविगत राम है, बेचगूंन चित्त मांहि।
शब्द अतीत अगाध है, निर्गुण सरगुन नांहि।। ६।।

गरीब, अलह अविगत राम है, बेचगूंन निरबान।
मौले मालिक है सही, महल मढ़ी नहीं थान।। ७।।
गरीब, अलह अविगत राम है, निराधार आधार।
नाम निरंतर लीजिये, रोम रोम की लार।। ८।।
गरीब, अलह अविगत राम है, निरबानी निरबंध।
नाम निरंतर लीजिये, ध्यान चकोरा चंद।। ९।।
गरीब, अलह अविगत राम है, कीमत कही न जाय।
नाम निरंतर लीजिये, मुख से कह न सुनाय।। १०।।
गरीब, अलह अविगत राम है, निरबानी निरबंध।
नाम निरंतर लीजिये, ज्यूं हिल मिल मीन समंद।। ११।।
गरीब, दोऊ दीन मध्य एक है, अलह अलेख पिछान।
नाम निरंतर लीजिये, भक्ति हेत उर आन।। १२।।
गरीब, अष्ट कँवल दल राम है, बाहिर भीतर राम।
पिंड ब्रह्मंड में राम है, सकल ठौर सब ठाम।। १३।।
गरीब, सकल व्यापी सुंनि में, मन पवना गहि राख।
रोम रोम धुन होत है, सतगुरु बोलै साख।। १४।।
गरीब, मूल कँवल में राम है, स्वाद चक्र में राम।
नाभि कँवल में राम है, हृदय कँवल विश्राम।। १५।।
गरीब, कंठ कँवल में राम है, त्रिकुटि कँवल में राम।
सहंस कँवल दल राम है, सुंनि बसती सब ठाम।। १६।।
गरीब, अचल अभंगी राम है, गलताना दम लीन।
सुरति निरति के अंतरे, बाजै अनहद बीन।। १७।।
गरीब, राम कह्या तो क्या हुआ, उर में नहीं यकीन।
चोर मुसे घर लूट हीं, पांच पचीसौं तीन।। १८।।
गरीब, एक राम कहंते राम है, जिन के दिल हैं एक।
बाहिर भीतर रमि रह्या, पूर्ण ब्रह्म अलेख।। १९।।
गरीब, राम नाम निज सार है, मूल मंत्र मन मांहि।
पिंड ब्रह्मंड से रहित है, जननी जाया नांहि।। २०।।
गरीब, राम रटत नहीं ढील करि, हरदम नाम उचार।
अमी महारस पीजिये, यौह तत बारंबार।। २१।।
गरीब, कोटि गऊ जे दान दे, कोटि यज्ञ जौनार।
कोटि कूप तीरथ खनै, मिटै नहीं जम मार।। २२।।
गरीब, कोटिक तीरथ व्रत करि, कोटि गज करि दान।
कोटि अश्व बिपरौं दिये, मिटै न खैंचा तान।। २३।।
गरीब, पारवती के उर धर्या, अमर भई छिन मांहि।

शुकदेव की चौरासी मिटी, निरालंब निज नाम।। २४।।
गरीब, अगम अनाहद भूमि है, जहां नाम का दीप।
एक पलक बिछुरै नहीं, रहता नयनों बीच।। २५।।
गरीब, साहिब साहिब क्या करै, साहिब हैं परतीत।
भैंस सींग साहिब भया, पांडे गावै गीत।। २६।।
गरीब, राम सरीखे राम हैं, संत सरीखे संत।
नाम सरीखा नाम है, नहीं आदि नहीं अंत।। २७।।
गरीब, महिमा सुनि निज नाम की, गहे द्रौपदी चीर।
दुःशासन से पचि रहे, अंत न आया बीर।। २८।।
गरीब, सेतु बँध्या पाहन तिरे, गज पकड़े थे ग्राह।
गनिका चढ़ी विमान में, निर्गुण नाम मल्लाह।। २६।।
गरीब, बारद ढुरी कबीर कै, भक्ति हेत के काज।
सेऊ कूँ तो सिर दिया, बेच बंदगी नाज।। ३०।।
गरीब, कहां गोरख कहां दत्त थे, कहां शुकदेव कहां व्यास।
भक्ति हेत से जानिये, तीन लोक प्रकाश।। ३१।।
गरीब, कहां पीपा कहां नामदेव, कहां धन्ना बाजीद।
कहां रैदास कमाल थे, कहां थे फकर फरीद।। ३२।।
गरीब, कहां नानक दादू हुते, कहां ज्ञानी हरिदास।
कहां गोपीचंद भरथरी, ये सब सतगुरु पास।। ३३।।
गरीब, कहां जंगी चरपट हुते, कहां अधम सुलतान।
भक्ति हेत प्रगट भये, सतगुरु के परवान।। ३४।।
गरीब, कहां नारद प्रह्लाद थे, कहां अंगद कहा शेष।
कहां विभीषण ध्रुव हुते, भक्ति हिरंबर पेश।। ३५।।
गरीब, कहां जयदेव थे कपिल मुनि, कहां रामानंद साध।
कहां दुर्वासा कृष्ण थे, भक्ति आदि अनाद।। ३६।।
गरीब, कहां ब्रह्मा कहां वेद थे, कहां सनकादिक चार।
कहां शंभू कहां विष्णु थे, भक्ति हेत दीदार।। ३७।।
गरीब, ऐसा निर्मल नाम है, निर्मल करै शरीर।
और ज्ञान मंडलीक है, चकवे ज्ञान कबीर।। ३८।।
गरीब, राम नाम सदने पिया, बकरे के उपदेश।
अजामेल से ऊधरे, भक्ति बंदगी पेश।। ३६।।
गरीब, नाम जलंधर कूँ लिया, पारा ऋषि प्रवान।
धंनि सतगुरु दाता धनी, दई बंदगी दान।। ४०।।
गरीब, गगन मंडल में रहत है, अविनाशी आप अलेख।
जुगन जुगन सतसंग है, धरि धरि खेलै भेख।। ४१।।

गरीब, काया माया खंड है, खंड राज और पाट।
अमर नाम निज बंदगी, सतगुरु से भई साट।। ४२।।
गरीब, अमर अनाहद नाम है, निर्भय अपरंपार।
रहता रमता राम है, सतगुरु चरण जुहार।। ४३।।
गरीब, अविनाशी निश्चल सदा, करता कूँ कुरबान।
जाप अजपा जपत है, गगन मंडल धरि ध्यान।। ४४।।
गरीब, बिन रसना होय बंदगी, बिन चिसम्यों दीदार।
बिन श्रवण बानी सुनै, निर्मल तत्व निहार।। ४५।।
गरीब, मैं सौदागर नाम का, टांडे पड्या बहीर।
लदते लदते लादिया, बहुरि न फेरा बीर।। ४६।।
गरीब, नाम बिना क्या होत है, जप तप संयम ध्यान।
बाहरि भरमै मानवी, अभि अंतर में जान।। ४७।।
गरीब, उजल हिरंबर भक्ति है, उजल हिरंबर सेव।
उजल हिरंबर नाम है, उजल हिरंबर देव।। ४८।।
गरीब, नाम बिना निपजे नहीं, जप तप कर हैं कोटि।
लख चौरासी त्यार है, मूंड मुंडाया घोटि।। ४६।।
गरीब, नाम सिरोमणि सार है, सोहं सुरति लगाय।
ज्ञान गलीचे बैठि करि, सुंनि सरोवर न्हाय।। ५०।।
गरीब, मान सरोवर न्हाईये, हंस परमहंस का मेल।
बिना चुंच मोती चुगै, अगम अगोचर खेल।। ५१।।
गरीब, गगन मंडल में रमि रह्या, गलताना महबूब।
वार पार नहीं छेव है, अविचल मूरति खूब।। ५२।।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, जो नाम डिढावै।
भरमी गुरुवा मति मिलो, जो मूल गंवावै।। ५३।।
गरीब, सोहं सुरति लगाइ ले, गुण इन्द्रिय से बंच।
नाम लिया तब जानिये, मिटै सकल प्रपंच।। ५४।।
गरीब, नाम निश्चल निर्मला, अनंत लोक में गाज।
निर्गुण सरगुण क्या कहै, प्रगट्या संतौं काज।। ५५।।
गरीब, अविनाशी के नाम में, कौन नाम निज मूल।
सुरति निरति से खोजिले, बास बड़ी अक फूल।। ५६।।
गरीब, फूल सही सरगुण कह्या, निर्गुण गंध सुगंध।
मन माली के बाग में, भँवर रह्या कहां बंध।। ५७।।
गरीब, भँवर विलंब्या केतकी, सहंस कँवल दल मांहि।
जहाँ नाम निज नूर है, मन माया तहां नांहि।। ५८।।
गरीब, पंडित कोटि अनंत हैं, ज्ञानी कोटि अनंत।

श्रोता कोटि अनंत हैं, बिरले साधु संत।। ५९।।
गरीब, जिन मिलते सुख ऊपजै, मेटै कोटि उपाध।
भुवन चतुरदस ढूंढ़िये, परम सनेही साध।। ६०।।
गरीब, राम सरीखे साध है, साध सरीखे राम।
सतगुरु कूँ सिजदा करूँ, जिन दीन्हा निज नाम।। ६१।।
गरीब, भक्ति बंदगी जोग सब, ज्ञान ध्यान प्रतीत।
सुंन शिखर गढ़ में रहै, सतगुरु शब्द अतीत।। ६२।।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, पार उतारे हंस।
भक्ति मुक्ति की दाति से, मिल है सोहं बंस।। ६३।।
गरीब, सोहं बंस बखानिये, बिन दम देही जाप।
सुरति निरति से अगम है, ले समाधि गरगाप।। ६४।।
गरीब, सुरति निरति मन पवन परि, सोहं सोहं होय।
शिव मंत्र गौरिज कह्या, अमर भई है सोय।। ६५।।
गरीब, ररंकार तो धुनि लगै, सोहं सुरति समाय।
हद बेहद परि वास होय, बहुरि न आवै जाय।। ६६।।
गरीब, गुझ गायत्री नाम है, बिन रसना धुनि ध्यान।
महिमा सनकादिक लही, शिव शंकर बलिजांव।। ६७।।
गरीब, अजब महल बारीक है, अजब सुरति बारीक।
अजब निरति बारीक है, महल धसे बिन बीक।। ६८।।
गरीब, राम नाम के पटतरे, देवे कूँ नहीं और।
सो उदम ता दिन भये, अमर करी जद गौर।। ६९।।
गरीब, शुकदेव सुख में ऊपजे, राई सींग समोय।
नव नाथ अरु सिद्ध चौरासी, संगि उपजे थे दोय।। ७०।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, अविनाशी गहर गंभीर।
हदि जीवों से दूर हैं, बे हदियों के तीर।। ७१।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, बे कीमत करतार।
शेष सहंस फुनि रटत है, अजहुँ न पाया पार।। ७२।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है अपरंपार अथाह।
उर में कृतम ख्याल है, मौले अलख अलाह।। ७३।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, निर्भय निश्चल थीर।
अनहद नाद अखंड धुनि, तन मन नहीं शरीर।। ७४।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, बाजीगर भगवंत।
निरसंध निर्मल देखिया, वार पार नहीं अंत।। ७५।।
गरीब, पारब्रह्म बिन परख है, कीमत मोल न तोल।
बिना उजन अनराग है, बहुरंगी अनबोल।। ७६।।

गरीब, महिमा अविगत नाम की, जानत बिरले संत।
आठ बखत धुनि ध्यान है, मुनि जन रटैं अनंत।। ७७।।
गरीब, चन्द सूर पानी पवन, धरनी धौल अकाश।
पांच तत्त हाजरि खड़े, खिजमति दारब खवास।। ७८।।
गरीब, काल कर्म करै बंदगी, महाकाल अरदास।
मन माया अरु धर्मराय, सब सिर नाम उपास।। ७९।।
गरीब, काल डरै करतार से, मन माया का नाश।
चंदन अंग पलटे सबै, एक खाली रह गया बांस।। ८०।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अविगत अंत न जाय।
बाहिर भीतर एक है, सब घट रह्या समाय।। ८१।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी एक।
आदि अंत जाके नहीं, ज्यूं का त्यूं ही देख।। ८२।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी ऐंन।
महिमा कही न जात है, बोलै मधुरे बैन।। ८३।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी आदि।
सतगुरु महरम तास का, साखि भरत सब साध।। ८४।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी पीर।
चरण कमल हंसा रहे, हम हैं दामनगीर।। ८५।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी आप।
हद बेहद से अगम है, जपै अजपा जाप।। ८६ ।।
गरीब, ऐसा भगली जोगिया, जानत है सब खेल।
बीन बजावें मोहिनी, जुग जंत्र सब मेल।। ८७।।
गरीब, ब्रह्मादिक से मोहिया, मोहे शेष गणेश।
शंकर की ताड़ी लगी, अडिग समाधि हमेश।। ८८।।
गरीब, गण गंधर्व ज्ञानी गुनी, अजब नवेला नेह।
क्या महिमा कहुँ नाम की, मिट गये सकल संदेह।। ८९।।
गरीब, सुंन विदेशी बसि रह्या, हमरे नयनों मंझ।
अलख पलक में खलक है, सतगुरु शब्द समंझ।। ९०।।
गरीब, सुंन विदेशी बसि रह्या, हमरे हिरदे मांहि।
चन्द सूर ऊगे नहीं, निसि बासर तहां नांहि।। ९१।।
गरीब, सुंन विदेशी बसि रह्या, हमरे त्रिकुटी तीर।
संख पद्म छवि चांदनी, बानी कोकिल कीर।। ९२।।
गरीब, सुंन विदेशी बसि रह्या, सहंस कँवल दल बाग।
सोहं ध्यान समाधि धुनि, तरतीजन बैराग।। ९३।।
गरीब, सुमिरन तब ही जानिये, जब रोम रोम धुन होय।

कुंज कमल में बैठ कर, माला फेरे सोय।। ६४।।
गरीब, सुरति सुमरनी हाथ ले, निरति मिले निरबान।
ररंकार रमता लखै, असलि बंदगी ध्यान।। ६५।।
गरीब, अष्ट कँवल दल सुंन है, बाहिर भीतर सुंन।
रोम रोम में सुंन है, जहां काल की धुंन।। ६६।।
गरीब, तुमही सोहं सुरति हो, तुम ही मन और पौन।
इनमें दूसर कौन है, आवै जाय सो कौन।। ६७।।
गरीब, इन में दूसर कर्म है, बँधी अविद्या गांठ।
पांच पचीसौं ले गई, अपने अपने बांट।। ६८।।
गरीब, नाम बिना सूना नगर, पर्‍या सकल में शोर।
लूट न लूटी बंदगी, हो गया हंसा भोर।। ६९।।
गरीब, अगम निगम कूँ खोजिलै, बुद्धि विवेक विचार।
उदय अस्त का राज दे, तो बिना नाम बेगार।। १००।।
गरीब, ऐसा कौन अभागिया, करै भजन कूँ भंग।
लोहे से कंचन भया, पारस के सत्संग।। १०१।।
गरीब, पारस तुम्हरा नाम है, लोहा हमरी जात।
जड़ सेती जड़ पलटिया, तुम को केतिक बात।। १०२।।
गरीब, बिना भक्ति क्या होत है, ध्रुव कूँ पूछो जाहि।
सवा सेर अन्न पावते, अटल राज दिया ताहि।। १०३।।
गरीब, बिना भक्ति क्या होत है, भावै काशी करवत लेह।
मिटे नहीं मन बासना, बहु बिधि भरम संदेह।। १०४।।
गरीब, भक्ति बिना क्या होत है, भरमि रह्या संसार।
रत्ती कंचन पाया नहीं, रावण चलती बार।। १०५।।
गरीब, संगी सुदामा संत थे, दारिद्र का दरियाव।
कंचन महल बख्स दिये, तंदुल भेंट चढ़ाव।। १०६।।
गरीब, दो कौड़ी का जीव था, सैना जाति गुलाम।
भक्ति हेत गृह आइया, धर्‍या सरूप हजाम।। १०७।।
गरीब, नामा के बीठ्ठल भये, और कलंदर रूप।
गऊ जिवाई जगतगुरु, पादसाह जहां भूप।। १०८।।
गरीब, पीपा कूँ परचा हुवा, मिले भक्त भगवान।
सीता सुधि साबित रहै, द्वारामती निधान।। १०९।।
गरीब, धन्ना भक्त की धुनि लगी, बीज दिया जिन दान।
सूका खेत हरा हुवा, कांकर बोई जान।। ११०।।
गरीब, रैदास रंगीला रंग है, दिये जनेऊ तोड़।
जग जौनार चोले धरे, एक रैदास एक गौड़।। १११।।

गरीब, मांझी मरद कबीर है, जगत करै उपहास।
केशो बनजारा भया, भक्ति बढ़ाया दास।। ११२।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, सत सुकृत एक नाम।
सब हंसों का बंस है, सुंन बसती नहीं गाम।। ११३।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, सुरति निरति का नाह।
सोहं अंतर पैठ कर, सत सुकृत ल्यौ लाय।। ११४।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, बिना मूल का फूल।
ताकी गंध सुगंध है, जा कूँ पलक न भूल।। ११५।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, बिन बेली का कंद।
राम रसायन पीजिये, अविचल अति आनंद।। ११६।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, कोई एक जाने भेव।
गोपि गोसांईं गैब धुनि, जाकी कर ले सेव।। ११७।।
गरीब, सुरति लगै अरु मन लगै, लगै निरति धुनि ध्यान।
च्यार जुगन की बंदगी, एक पलक प्रवान।। ११८।।
गरीब, सुरति लगै अरु मन लगै, लगै निरति तिस ठौर।
शंकर बख्श्या मेहर करि, अमर भई जद गौर।। ११९।।
गरीब, सुरति लगै और मन लगै, लगै निरति तिस मांहि।
एक पलक तहां संचरै, कोटि पाप अघ जांहि।। १२०।।
गरीब, अविगत की अविगत कथा, अविगत है सब ख्याल।
अविगत सूं अविगत मिले, कर जोरे तब काल।। १२१।।
गरीब, अमर अनूपम आप है, और सकल सब खण्ड।
सूक्ष्म से सूक्ष्म सही, पूर्ण पद प्रचंड।। १२२।।
गरीब, अधम उधारन भक्ति है, अधम उधारन नांव।
अधम उधारन संत है, जिनकी मैं बलिजाँव।। १२३।।
गरीब, गज गनिका अरु भीलनी, शबरी प्रेम सहेत।
केते पतित उधारिया, सतगुरु गावै नेत।। १२४।।
गरीब, राम रसायन पीजिये, यौह औसरि यौह दाव।
फिर पीछे पछिताइगा, चला चली होय जाव।। १२५।।
गरीब, राम रसायन पीजिये, चोखा फूल चुवाय।
सुंनि सरोवर हंस मन, पीया प्रेम अघाय।। १२६।।
कहता दास गरीब है, बांदी जाम गुलाम।
तुमहो तैसी कीजियो, भक्ति हिरंबर नाम।। १२७।।

अथ बिरह का अंग

गरीब, बिरहा हम घर आईया, कही बिरह की बात।
बिरहनि से बानी कही, सूके पिंड अरु गात।। १।।
गरीब, सुनत उदासी हो गई, लगी बिरह की दाह।
बिरहा बेदनि मेटि है, हम बिरहे की चाह।। २।।
गरीब, जित से बिरहा आईया, कैसा है ओह देश।
उमगि उमगि आदर करूं, ल्याया शब्द संदेश।। ३।।
गरीब, बिरहा बादल प्रेम का, श्याम घटा घनघोर।
दामनि ही में गरज है, बिरहनि कठिन कठोर।। ४।।
गरीब, दाह लगी कैसे मिटै, खिमि खिमि होय उजास।
उनमनी से होय ऊंझना, बिरहनि अधिक उदास।। ५।।
गरीब, लोर उठै बरसे नहीं, सिखर तड़कै बीज।
हम कूँ बिरहा यौं कहै, चलि बिरहनि खेलों तीज।। ६।।
गरीब, झूलै सखी सुहेलियां, पड़े हिंडोले बाग।
हम तो झूलन ना चलै, हम बिरह से लाग।। ७।।
गरीब, घर घर मंगल गावहीं, घर घर पहिरै चीर।
हम घर बिरहा आईया, हम बहनिल ओह बीर।। ८।।
गरीब, बिरहा है ब्रह्मलोक का, भेज्या हमरे पीव।
पिता पुरुष दो साख हैं, मैं साहिब की धीव।। ९।।
गरीब, मैं भूली बन बाग में, देखे नाना ख्याल।
हमकूँ बिरहा यौं कहै, चलि सरवर की पाल।। १०।।
गरीब, बिरहे बंब बजाईया, पिंड ब्रह्मंड धमतान।
बिरहनि कोइला हो गई, जलि बुझि भई मसान।। ११।।
गरीब, बिरहा मारग कौन है, कौन पंथ कौन धाम।
कौन लोक मधि तेज है, मैं कर हूँ प्रणाम।। १२।।
गरीब, बिरहनि सूं बिरहा कहै, तेरा कौन हवाल।
अन्न पानी भोजन थके, न्हाना रहि गया ताल।। १३।।
गरीब, बिरहनि कर है बीनती, सुनि बिरहे मेरे बीर।
मुझ एक और अंदेश है, तूं बिरहा नहीं कबीर।। १४।।
गरीब, मैं बिरहा ब्रह्म कबीर हूँ, मै बिरहनि की ठौर।
बिरहे ही के बाग हैं, पान फूल फल मोर।। १५।।
गरीब, बिरहे का क्या बरन है, कौन रूप कौन रंग।
बैठ्या चित्त के चौंतरे, कहै अजब प्रसंग।। १६।।
गरीब, बारह बानी बिसतरै, नहीं तोल नहीं मोल।
कहै संदेशा सुरति सौं, मिल बिरहनि घूंघट खोल।। १७।।

गरीब, घट घूंघट की ओट में, बिरहनि करै विचार।
लेह पडौसन झूंपरा, छोडि चली घरबार।। १८।।
गरीब, काया नगरी काल है, बिरहा करै विचार।
चलि बिरहनि ब्रह्मलोक कूँ, मैं बिरहा लिनहार।। १९।।
गरीब, चालूंगी रहिसूँ नहीं, ढील करो दिन दोय।
ऊभ सरूपी छोडि सूँ, होनी होय सो होय।। २०।।
गरीब, ताला बेली लगी है, सुनि बिरहे के बैन।
परवस की कछु ना कहूँ, पलक नहीं है चैन।। २१।।
गरीब, चैन नहीं चित भंग है, तांने से घर जाय।
उहां चलौं तो चूक है, सुंन में रहूँ समाय।। २२।।
गरीब, विभिचारिनि की बीनती, सुनियो बिरहा बेग।
एते अवगुण कित धरौं, मेरे तन बाहो तेग।। २३।।
गरीब, बिरहनि स्यौं बिरहा कहै, सुनि बिरहनि मेरी भैन।
कर्म कुसंगति काट हूँ, निश्चय करि हूँ चैन।। २४।।
गरीब, गरज उठै घनघोर हीं, झड़ लागन का जोग।
बूठै स्वांति समुंद्र में, मिटै सीप का सोग।। २५।।
गरीब, जैसे चन्द चकोर है, ज्यूं चकवी चित होय।
बोलै दादुर गरज सुनि, बिरह लगी दिल सोय।। २६।।
गरीब, ज्यूं कुंजी कुरलात है, अण्डे पावै पोष।
ऐसे बिरहनि ध्यान धरि, उस बिरह के लोक।। २७।।
गरीब, पड़े पतंग बिथा भर्‌या, दिल दीपक दरियाव।
तन मन अरपै प्राण कूँ, भावैं सरबस जाव।। २८।।
गरीब, ज्यूं ओछे जल मीन है, बेंध्या नाद कुरंग।
कर्म करौल शिकार गहि, सन्मुख अरप्यो अंग।। २९।।
गरीब, पतियां लिख लिख भेज हूँ, बिरहे हाथ संदेश।
उत का उत्तर ना कह्या, कोई न आया पेश।। ३०।।
गरीब, मैं जोगिन जग ढूंढिया, नौखंड रामत कीन।
दरस बिना दुःख बहुत है, जैसे जल बिन मीन।। ३१।।
गरीब, मीन तलफै ताव से, ताला बेली तेज।
मैं प्यासी दीदार की, कब देखूंगी सेज।। ३२।।
गरीब, जोगन होय कर जग रमूं, रमता ल्याऊँ ढूंढि।
दिक्षा है दरबेस की, सतगुरु राखी मूंडि।। ३३।।
गरीब, मैं सतगुरु दिक्षा लई, मूंड मुंडाया घोट।
लगी उनमुनी अमरपुरि, खान पिवन नहीं छोट।। ३४।।
गरीब, मैं जोगन जग ढूंढिया, भेख धरे बहुरंग।

रावल कहीं न पाईया, डूबि मरूं जल गंग।। ३५।।
गरीब, डूबूं गंग तरंग में, मुझ देखै नहीं कोय।
रावल सूं कह बीनती, जे कोई पहुंची होय।। ३६।।
गरीब, डूबूंगी रहिसू नहीं, सुन रावल रघुबीर।
बिरद तुम्हारा लाजसी, हम कूँ लावो तीर।। ३७।।
गरीब, मैं बैरागनि बिरहनी, तुम्हरी रावल जात।
मैं घर जार्‍या आपना, सुन सुन तुम्हरी बात।। ३८।।
गरीब, बात सुनी ब्रह्मलोक की, कहते आवै लाज।
बिरहनि की पति तो रहै, मेरे रावल आवै आज।। ३९।।
गरीब, मैं सखियन में कहि दिया, मुझ भेंटे जगदीश।
पड़द पोस पति राखियौ, आवो बिसवे बीस।। ४०।।
गरीब, आवौ जब आनन्द होइ, मेटो संसा सोग।
कहै दुहागनि जगत सब, निन्दा कर हैं लोग।। ४१।।
गरीब, मैं चेरी चरणां रहूँ, दीजे अटल सुहाग।
गुन औगुन सब भूलियौ, मेटो दोश दुहाग।। ४२।।
गरीब, हमसी चेरी बहुत हैं, उस रावल के पास।
धोखे ही दम जायगा, निकस जात है स्वास।। ४३।।
गरीब, मैं विरहनि मारग खड़ी, बूझौं पीव का पंथ।
रावल के मुख की कहै, सो मेरा प्यारा संत।। ४४।।
गरीब, मुकति करो तो कीजियौ, एक पल द्यौह दीदार।
मैं देखौं जगदीश तुझ, फिर चौरासी डार।। ४५।।
गरीब, चौरासी के चोलने, पहिरे कोटि अनंत।
अगली पिछली भूलि हूँ, जो भेटे भगवंत।। ४६।।
गरीब, सिर देऊँ सूली चढूं, जलि हूँ अगनि अंगीठ।
सन्मुख साजन सूं मिलौं, कदे न फेरौं पीठ।। ४७।।
गरीब, मिटूं नहीं मर जान से, हमरै मुकति न चाह।
दे दीदार दया करो, सतगुरु बे परवाह।। ४८।।
गरीब, सतगुरु मार्‍या बान कसि, टूटि गई सब ठौर।
दरवाजे कूकूँ पर्‍या, कौन करै इब गौर।। ४९।।
गरीब, गौरि गोपि कर जात है, मिलै न पड़दा खोल।
और तुलै नहीं पालड़े, निज दीदार अमोल।। ५०।।
गरीब, मुकति मुहल्ला मालवे, चाहूँ राज न पाट।
इन्द्रलोक शिवलोक लग, इनकी करूं न साट।। ५१।।
गरीब, ब्रह्म विष्णु की पुरी लग, महत लोक पर लात।
हमकूँ बिरहा यौं कहै, आगे का है साथ।। ५२।।

गरीब,, खान पान में ना बँधू, राज रिद्धि सब रोग।
हमकूँ बिरहा यौं कहै, सकल सिरोमणि जोग।। ५३।।
गरीब, घर में खाने कूँ नहीं, फाका फकर फराक।
हमकूँ बिरहा यौं कहै, राज रिद्धि सब राख।। ५४।।
गरीब, बिरहे की बाड़ी खिली, उठि रही मकरंद।
पड़े पड़े प्रणाम हैं, छूटि गये सब बंध।। ५५।।
गरीब, बिरहा बारहमास है, रुतवंती के पास।
धरती नहीं बिवाडले, ऊपर दूर अकाश।। ५६।।
गरीब, बिरहा घट में विसतर्या, रोम रोम रस रीत।
बिरहनि का लेनिहार है, बहन भाई की प्रीत।। ५७।।
गरीब, सतगुरु मार्या बान कसि, निकसि गया है पार।
स्वास सिलहरा ले गया, यौह तन कौन आधार।। ५८।।
गरीब, नैंन बैंन और सैंन में, बिरहे ही की बीन।
जो मैं देखौं ढूंढि करि, तो पावै पांच न तीन।। ५९।।
गरीब, तीनि पांच प्रपंच है, पड़ि गये बिरहे फेट।
फेर कहीं पाये नहीं, सुंनि संपट धरे समेट।। ६०।।
गरीब, खेलै बिरहा एकला, और न दूजा कोय।
चित्त के अंदर चांदना, झलके झिलमिल लोय।। ६१।।
गरीब, पलक घड़ी और पहर में, ना जानो क्या होय।
हम कूँ बिरहा यौं कहै, सुरति शब्द में पोय।। ६२।।
गरीब, मैं बिरहा बैराट हूँ, तुझ कर हूँ बैराट।
अगम दीप कूँ ले चलूं, उतरौं औघट घाट।। ६३।।
गरीब, कहने का बैराट हूँ, निरमायल निज अंग।
पुष्प गंध से झीन हूँ, सुखदाई जल गंग।। ६४।।
गरीब, सतगुरु कूँ कुरबान जां, जो बिरहे का पीर।
गूंजे लोक अलोक सब, अचल दिगंबर थीर।। ६५।।
गरीब, मनमोहन मग में खड़ा, अटल अटारी देख।
शंख बिंब तहां झलक हीं, चलि उठ बिरहनि नेक।। ६६ ।।
गरीब, क्या ऊठौं अटकी परी, सुने अचल अनराग।
लेख लिखे करतार कूँ, हमरे मोटे भाग।। ६७।।
गरीब, दौं लागी दिल दीप में, कैसे बुझे अंदेश।
हाड चाम तन जरि गया, दीखत का है भेष।। ६८।।
गरीब, मन मथुरा तन द्वारका, जत जोग जगन्नाथ।
बिरहे की परवी लई, तब अठसठि तीरथ मात।। ६९।।
गरीब, इन्द्रदौन अधिकार है, हरिपैड़ी हरिद्वार।

एक विरहे की झाल में, अठसठि तीरथ लार।। ७०।।
गरीब, गंगासागर सेतुबंध, रामेश्वर की राह।
फलगू गया प्रयाग सब, काशी न्हाये माह।। ७१।।
गरीब, लोहागर पौहकर कहूँ, आये धोती धोय।
अठसठि तीरथ सब किये, बिरहे बिन क्या होय।। ७२।।
गरीब, बिरहे हम बिरमाईया, बेदन बंध लगाय।
बरसै धार अखंड से, झालरिया झड़ लाय।। ७३।।
गरीब, तपत बुझी जिब जानिये, धूमा निकसै धौल।
मौन रहूँ तो घर जलै, बिरहै घाली रौल।। ७४।।
गरीब, सतगुरु मार्‌या बान कसि, खूलि गये पट द्वार।
चला भँवर आकाश कूँ, छूटे सभी लगार।। ७५।।
गरीब, ज्यूं कदली कपूर कूँ, तुनका लिया उठाय।
ऐसे बिरहा ले गया, बिरहिनि अंग लगाय।। ७६।।
गरीब, दौं लागी दरियाव मधि, कौन बुझावै बूझ।
बिरहनि कहै संदेशड़े, बिरहे बिन नहीं दूज।। ७७।।
गरीब, बिरहा तो फूकै सही, बुझे नहीं वह आग।
कोटि जतन बिरहनि किये, प्रेम पवन से लाग।। ७८।।
गरीब, लगी लगाई आदि की, अब नहीं लागी आय।
बसै पड़ौसी गाम सब, बिरही आग न जाय।। ७९।।
गरीब, बिरहा तो बिकता नहीं, ना कहीं हाट दुकान।
एक सौदागर हम मिल्या, उन मुझ दीन्हा दान।। ८०।।
गरीब, सौदागर सतगुरु सही, वा बिरहे के बाग।
उत सेती एक आईया, जन्म पुरबली लाग।। ८१।।
गरीब, बिरहा बेदन सब हरै, काटै कोटि कलंक।
बिरहनि के हितकार से, उडि आया बिन पंख।। ८२।।
गरीब, बिन पंखी परलोक का, बिरहा ब्रह्म कहार।
सतगुरु भेज्या आईया, बिरहनि का लिनहार।। ८३।।
गरीब, लोक लाज कुल कांनि सब, छाडो बिरहनि बेग।
भला बुरा मत मानियौ, मेरा कहने ही का नेग।। ८४।।
गरीब, सिकल विकल सब दूर करि, चढ़िले ज्ञान हिंडोल।
या जग तेरा कोई नहीं, मिल घूंघट परदा खोल।। ८५।।
गरीब, गगन गरजि झर लागहीं, बरसै मेघ मलार।
बिरहनि भाहि बुझै नहीं, बिन तुम्हरे दीदार।। ८६।।
गरीब, दादुर मोर चकोर सब, करै पपीहे सैन।
बिना स्वांति नहीं शान्ति होइ, बिन दीदार न चैन।। ८७।।

गरीब, कोइल हंसा हेत करि, बानी रूप सरूप।
बरषा का आगम सही, जेठ तपै जे धूप।। ८८।।
गरीब, मैं तो अतुर बिरहनीं, लगी बिरह की पीर।
बैठन कूँ जागा नहीं, बिरहे ही कूँ भीर।। ८६।।
गरीब, सुनि बिरहे ब्रह्मलोक के, हम तुम एकै जात।
मैं बहनिल तूं बीर है, हम सूं कहि गुझ बात।। ६०।।
गरीब, पीव का कैसा देश है, भिंन भिंन कहिये भेद।
आनन्द पुरी बिलास का, हम कूँ बहुत उमेद।। ६१।।
गरीब, बोले बिरहा बिरहनी, छाडो आतुर छोह।
अमर अनाहद धाम में, ले चालूंगा तोह।। ६२।।
गरीब, जारि बारि कोइला करी, भसम उड़ी तन छार।
उस अविगत का आरता, कब होयगा दीदार।। ६३।।
गरीब, मोतियन थाल भराय हूँ, चित चंदन का चौक।
निसि वासर रोऊँ खड़ी, कदि मेटोगे औख।। ६४।।
गरीब, धूप दीप हम बहु दिये, करे अचार विचार।
मैं थाकी कहि दीजियौ, ना भेटे करतार।। ६५।।
गरीब, सेजड़ियां सूली भई, पलक न आवै नींद।
साहेब कूँ क्या दोष है, विषय बीज है सींध।। ६६।।
गरीब, तौं बिरहा जारी नहीं, अंतर रहि गई रेख।
फूकि फाकि धमि दीजिये, बीज बास नहीं देख।। ६७।।
गरीब, बीज रहे तो ऊगि है, विषय अंकुरा जार।
अंग बीच इच्छा रहै, जिन कूँ कित दीदार।। ६८।।
गरीब, बिरहा आया बाद करि, चढ़ी बिरह की धार।
रखवाले और खेत सुध, फूकि दई भ्रम बार।। ६६।।
गरीब, बीज जला इच्छा जली, जलि गये पांच किसान।
थानेदार अरु चौधरी, सुधि हाकिम भई हान।। १००।।
गरीब, बिटंब कुटंब सब जरि गये, जरे परोसी पूछि।
बिरहनि सौं बिरहा कहै, चलि बहनिल कर कूच।। १०१।।
गरीब, मैं अपंग अकला नहीं, ना दम का सूमार।
कहि बिरहे भगवंत कूँ, मुझ इतही दे दीदार।। १०२।।
गरीब, छूटी गंग सहंस मुखी, इला पिंगला तीर।
बिरहे की बारात में, चौरा ढार कबीर।। १०३।।
गरीब, घर घर बेले बाग हैं, छुटे फुहारे नीर।
बिरहनि बिरहा न्हात है, गंग जमुन के तीर।। १०४।।
गरीब, सुरति सगाई करत है, सतपुरुष के जाय।

अचल हिरंबर हेत से, ले है कंठ लगाय।। १०५।।
गरीब, हलदबान और लगन की, पतियां दई लिखाय।
सतपुरुष अविगत रहै, जहां बिरहा ले जाय।। १०६।।
गरीब, मन का मण्डप रोपिया, तत की तनी किनात।
ब्रह्मा कूँ चौरी रची, आये शंकर नाथ।। १०७।।
गरीब, बिसन बिलावल गावहीं, नारद पूरै नाद।
चिट्ठी चाले की फिरी, न्यौथारी सब साध।। १०८।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, मेर कुबेर भंडार।
इन्द्र सहित सब आईया, और सनकादिक चार।। १०९।।
गरीब, सहंस अठासी अष्ट दल, तेतीसौं तरबीत।
सिद्ध चौरासी आईया, नौऊँ नाथ अतीत।। ११०।।
गरीब, सुरनर मुनिजन सन्त सब, आये हैं न्यौथार।
भाव भक्ति से होत हैं, इनकी जीमन वार।। १११।।
गरीब, अनहद पुर बाजे बजे, सहनाई और भेरि।
ढोल दमांमे दुड़बड़ी, रणसिंघों की टेरि।। ११२।।
गरीब, अविगत दुलहा कंत है, चढ़िया बेग बरात।
इहां दुलहनि आनन्द में, जत का कंगन हाथ।। ११३।।
गरीब, आदि पुरुष का सेहरा, झलकै भानु अनंत।
बेग बराती आईया, पूछि नगर का पंथ।। ११४।।
गरीब, दया कलस मटके भरे, पानी प्रेम प्रीत।
दुलहनि मंगल गावहीं, आये दुलह मीत।। ११५।।
गरीब, छत्र सिंहासन श्वेत हैं, ढुरैं सुहंगम चौर।
जहां कबीर खवास है, भनकारत है भौर।। ११६।।
गरीब, लई बरात बुलाय करि, कर आरति अधिकार।
अनभै मालिन ऊतरी, गल डारी फुल माल।। ११७।।
गरीब, मोतियन चौक पुराईया, प्रेम पटा धर देख।
सुरति निरति कर आरता, अविगत कंत अलेख।। ११८।।
गरीब, न्यौछावर का सेहरा, सुरति निरति रहि ऐंन।
दुलहनि थी सो दंग भई, सुनि दुलहे के बैंन।। ११९।।
गरीब, रतनाले रंग नैंन हैं, मुकट बिराजै शीश।
हम घर साजन आईया, धन्य दुलहा जगदीश।। १२०।।
गरीब, सखी हंसे मुसकात है, को दुलहा का बाप।
इसके माइ न मौसियां, दुलहा आपे आप।। १२१।।
गरीब, दादी फुफी बाहरा, इसके जाति न गोत।
रहसि रहसि दोहे दिये, गालौं में भई ओत।। १२२।।

गरीब, जत की जीमन वार है, बुधि के बड़े बिलास।
नुकती नाम परोसिया, जीमै है साजन दास।। १२३।।
गरीब, लै के लड्डू खात है, जोरि जलेबी जोग।
पापड़ प्रीति प्रेम के, षट् रस भोजन भोग।। १२४।।
गरीब, दुलहनि दोहे देत हैं, मंगलचार उचार।
दुलहा ना मुसकात है, असंख्य भानु उजियार।। १२५।।
गरीब, चित्त अंदर चौरी रची, ज्ञान का ढोल बजंत।
ब्रह्मा साखा पढ़त है, बैठे सुरनर सन्त।। १२६।।
गरीब, फेरे दुलहे से लिये, मिलिया जोग वियोग।
अटल पुरुष दुलहा बर्या, धन्य सतगुरु संजोग।। १२७।।
गरीब, सतगुरु हमरी बीनती, धन्य बाबल बुद्धि दीन।
जोगा जोग जोड़ी बनी, अमर कंत प्रवीन।। १२८।।
गरीब, बिरहनि बिरहा ले गया, करता कार कहार।
चली सखी सतलोक कूँ, सतगुरु चरण जुहार।। १२९।।
गरीब, रंग महल पटरानियां, दीन्हा अटल सुहाग।
अमर कंत अनहद पुरी, धन्य दुलहनि बड़भाग।। १३०।।
गरीब, पी परसे के सुख कहूँ, अकह अनाहद बात।
जो परसे सो ही लहै, सतगुरु जेही दात।। १३१।।
गरीब, सेज सुरंगी पीव की, बैठे अविगत कन्त।
दुलहनि खेलै फाग सब, बारह मास बसन्त।। १३२।।
दुलहिन **दास गरीब** है, सब सखियन की दास।
अदली पुरुष कबीर कूँ, दीन्हा निश्चल बास।। १३३।।

अथ ज्ञान विरह का अंग

गरीब, बिरह अगनि और ज्ञान धुनि, दोन्यों संजम साल।
सतगुरु मार्या बान कसि, करक कलेजे भाल।। १।।
गरीब, भाल लगी सरजेह बिन, बिना कमान कसीस।
भलका धरि औजूद में, सतगुरु की बख्शीश।। २।।
गरीब, भाल लगी गुरु ज्ञान की, साले सांस उसांस।
अधरे भलका टूटिया, अस्थि त्वचा दर मांस।। ३।।
गरीब, भाल लगी भारी बनी, चित्त भंग कबहुँ न होय।
सन्मुख साबत झूझिये, कुल करनी सब खोय।। ४।।
गरीब, लाग्या भलका सांमहीं, ढही बुरज भै कोट।
सूरे शंक न मान हीं, सतगुरु घाली चोट।। ५।।
गरीब, बिरह अगनि अरु ज्ञान गति, लग्या बान गैंनार।

हम पैर पियादे पंथ सिर, है सतगुरु असवार।। ६।।
गरीब, नजर जोरि लघु खैंचिया, लागत दीरघ होय।
मार्‍या चित्त के चौक में, पुंज प्रगटी लोय।। ७।।
गरीब, बिरह पुंज की दौं लगी, दाझे चंदन बाग।
कौन बुझावे हे सखी, सतगुरु लाई आग।। ८।।
गरीब, अगनि लगी प्रचंड होइ, दहौं दिश प्रगटी आय।
जल गेरे नहीं बुझत है, दूनी प्रगटी लाय।। ९।।
गरीब, अगनि अगम झल जात है, बिना भूमि के लोर।
जाहि लगी सोई लखै, जाने कहां कठोर।। १०।।
गरीब, बिरह अगनि बन में लगी, पंखी उडें बिचार।
दहौं दिश जले समंद सर, कहां जाईये करतार।। ११।।
गरीब, दीरघ अगनि अनंत झल, झुकि झुकि झोले खाय।
पलक पलीते लगत हैं, हंसा देवै धाय।। १२।।
गरीब, कहि हंसा कहां जाईये, सरवर जले पहार।
सकल भुवन दर गवन करि, हंसा मानी हार।। १३।।
गरीब, अगनि लगी मग मूल में, दाझै पिंड अरु प्रान।
भसम खसम कूँ कर दिया, कछु न पाया जान।। १४।।
गरीब, बिरह अगनि पद पुंज है, तूं मति जानै आग।
जिन लाई तिनकै लगी, जाके मोटे भाग।। १५।।
गरीब, मनसा बाचा कर्मना, उमंग हुये अनराग।
आनंद घरे बंधावना, जहां लागी यह आग।। १६।।
गरीब, ज्ञान बिरह की गूदरी, होइ गई भसमा भूत।
नगन मगन निर्गुण कला, बौहरि न कातूं सूत।। १७।।
गरीब, चरखा जर्‍या चित्त फंखरी, चरमख ताकूं माल।
बेलन पींदा कातनी, सबही दीन्हें जाल।। १८।।
गरीब, कातनहारी भी जली, दुरमति देवर साथ।
कुकड़ी जल्या अटेरना, पूनी जलि गई हाथ।। १९।।
गरीब, कुमति कुबुधि सब जरि गई, मन मंकस और मांन।
हिरसि हवा सब जरि गई, लागी मंझ निदान।। २०।।
गरीब, काम क्रोध मद लोभ सब, हो गये ठीकम ठीक।
मैं तैं छार सब हो गई, ऐसी लागी डीक।। २१।।
गरीब, कुटल कलश सब जलि गये, आशा त्रिसना सूल।
खाखी जरि खीरा भया, बौहरि न ऊगै मूल।। २२।।
गरीब, फैंन पसारा सब जल्या, बिरह अगनि के तेज।
ममता माया प्रजली, बिरह अगनि की रेज।। २३।।

गरीब, मना मनी मनसा जली, मानसरोवर तीर।
किसके पिंड भराईये, बिरहा गहर गंभीर।। २४।।
गरीब, मान महात्तम सब जले, मगज मनी भसमन्त।
ऐसा बिरहा पुंज है, ना कछु आदि न अंत।। २५।।
गरीब, बिरहे बंब बजाईया, बिरहनि लीन्ही संग।
यौंह सतगुरु का हुकम है, फूकन ही पर रंग।। २६।।
गरीब, दौं लागी खलहल पर्‍या, जले कुटी दर हंस।
निरबासी निरबान पद, सो नहीं होत विधंस।। २७।।
गरीब, चल हंसा उस धाम चल, यौह बन हरियल काल।
खलक मुलक खलहल पड़े, कछू न रहसी हाल।। २८।।
गरीब, दीरघ मंदिर मालवै, सुखसागर सतलोक।
चल हंसा उस धाम चल, यहाँ निसि वासर धोख।। २९।।
गरीब, बिरह पुंज जहां प्रगटी, कैसे जानी जाय।
स्वास उसासों रोवना, हरदम हंका हाय।। ३०।।
गरीब, लगे पलीते बिरह के, रूंम रूंम चमकंत।
लाई सिरजनहार कूँ, याह नहीं अगनि बुझंत।। ३१।।
गरीब, ज्ञान बिरह गलतान है, तीजे भक्ति विलास।
चौथे जोग विवेक सब, लावनहारा पास।। ३२।।
गरीब, शील संतोष अरु शम दमा, दया दलक दिल मांहि।
जिनके खैबर काल का, हरगिज लागै नाहिं।। ३३।।
गरीब, नाम नगारा बजत है, तुरही तत्त सुभान।
मुरली मूल उच्चार है, अनहद नाद अमान।। ३४।।
गरीब, बिरह अगनि अरु ज्ञान का, अगर हेत मत सार।
जिस लागै तिस ले जलै, करि है छारम छार।। ३५।।
गरीब, बिरह अगनि का बान भरि, मार्‍या सतगुरु मोहि।
खैंचि कसीस कसीस करि, सतगुरु आन्या लोहि।। ३६।।
गरीब, बिरहा बानी बोलता, कुलाहल मन मांहि।
दिल दरपन दुरबीन गति, अछै बिरछ की छांहि।। ३७।।
गरीब, अछैबिरछ अस्थिर सदा, जै जै जै जन संत।
बिरहा दाझनि जोरि है, जुग जुग फूल फलंत।। ३८।।
गरीब, बिरहा सदा बिलास है, बिन बिरहे बड़सोग।
सप्तपुरी के राज लग, सबही दीरघ रोग।। ३९।।
गरीब, बिरहे जारे सो जरै, अगनि जरै सो कांच।
बौहरि बौहरि फिर आवना, शब्द समाना सांच।। ४०।।
गरीब, बिरहा ज्ञान पताल में, शिखर चिमक्या आय।

चौंहदिशि चंपा चांदना, चित्त से लागी लाय।। ४१।।
गरीब, अगनि अनाहद झड़त है, प्रेम पत्थर स्यौं लाग।
चित्त चखमख चमकंत है, इस विधि लागी आग।। ४२।।
गरीब, गूनी ज्ञान सिलगिया, चित्त चेतन चंमकाव।
खेड़ी खूब बिनान बुधि, ऐसे हुवा लगाव।। ४३।।
गरीब, अनहद रिंचक गुलझरी, परी चित्त के बीच।
बिरहा को नहीं बंच है, क्या उत्तम क्या नीच।। ४४।।
गरीब, अगनि अनाहद अरस की, लगी कँवल के मांहि।
जरि-वरि कोयला होत है, धूमा दीखै नांहि।। ४५।।
गरीब, धूमा निकसे अगनि का, यौह तो बिरहा साल।
गुलजारा गति गैव है, बाहर भीतर लाल।। ४६।।
गरीब, याह लाली है बिरह की, पीतरंग प्रवान।
निंबू कंदल अंग तन, जैसा नागर पान।। ४७।।
गरीब, कुरबानी जिस पुरुष की, जाका बिरहा बाज।
कोई न पंखी बन बसै, ऐसा साजा साज।। ४८।।
गरीब, सिकरा सुरति चिचांन चित्त, बिरह बान है हाथ।
ध्यान धनुष से मारि हूँ, तन तीतर पर घात।। ४६।।
गरीब, अन जोख्या सर खैंचि हूँ, बख्तर भलका फोर।
जहां लागे तहां प्रेमरस, भाल न चुभै कठोर।। ५०।।
गरीब, यौह घोड़ा गुरु ज्ञान का, दरियाई दिल मांहि।
केते पारख करत हैं, कीमत पाई नांहि।। ५१।।
गरीब, कड़ियाला कलधूत का, मौहरा मंजन सार।
पाखर है प्रतीत की, सतगुरु है असवार।। ५२।।
गरीब, जरीबाब झरपोस है, पीतांबर पहरांन।
घोड़ा दौरत देख ले, गगन मंडल मैदान।। ५३।।
गरीब, प्रेम पाइड़े लगे हैं, तत का तंग सुतंग।
दुमची दीरघ तास की, ताजी बरखत रंग।। ५४।।
गरीब, श्याम नैंन मुख लाल है, कान पीत दुम लील।
ताजी सिकल सुफेद है, आगे अनहद जील।। ५५।।
गरीब, सेत छत्र सिर मुकट है, शंख भुजा संगीत।
चौंर सुहंगम ढुरत है, अविगत अलख अतीत।। ५६।।
गरीब, संख कोस एक पलक में, ऐसा गवन करंत।
धरती और असमान बीच, दौड़े बिन ही पंथ।। ५७।।
गरीब, बिना पंथ पग धरत है, पिंड ब्रह्मंड से भिन्न।
ना घोड़ा घस खात है, भखे न दाना अन्न।। ५८।।

गरीब, अमीखीर रस भोगवे, मन इच्छा अस दौर।
कुल आगै मैदान दे, जिमी न लागै पौर।। ५१।।
यौह बिरहा बग छोड है, लै का जड्या लगाम।
जोग जुगति का जीन है, **दास गरीब** गुलाम।। ६०।।

अथ बिरह चितावनी का अंग

गरीब, बैराग नाम है त्याग का, पांच पचीसों मांहि।
जब लग संसा सर्प है, तब लग त्यागी नांहि।। १।।
गरीब, बैराग नाम है त्याग का, पांच पचीसों संग।
ऊपर की कंचली तजी, अंतर विषै भुवंग।। २।।
गरीब, असन बसन सब तजि गये, तजि गये गाम रु गेह।
मांहे संसा सूल है, दुरलभ तजना येह।। ३।।
गरीब, बाज कुही गति ज्ञान की, गगन गरज गरजंत।
छूटे सुंन अकास तैं, संसा सर्प भछंत।। ४।।
गरीब, नित ही जांमे नित मरै, संसा मांहि शरीर।
जिन का संसा मिट गया, सो पीरन् सिर पीर।। ५।।
गरीब, ज्ञान ध्यान दो सार हैं, तीजे तत्त अनूप।
चौथे मन लाग्या रहै, सो भूपन सिर भूप।। ६।।
गरीब, काशी करवत लेत है, आंन कटावै शीश।
बन बन भटका खात है, पावत ना जगदीश।। ७।।
गरीब, संसा तो संसार है, तन पर धारै भेख।
मरकब होंहि कुम्हार के, सन्यासी और सेख।। ८।।
गरीब, मन की झीनी ना तजी, दिल ही मांहि दलाल।
हरदम सौदा करत है, कर्म कुसंगति काल।। ६।।
गरीब, मन सेती खोटी घड़ै, तन से सुमरन कीन।
माला फेरे क्या हुवा, दुर कुटन बेदीन।। १०।।
गरीब, तन मन एक अजूद करि, सुरति निरति ल्यौ लाय।
बेड़ा पार समंद होय, जे एक पलक ठहराय।। ११।।
गरीब, दृष्टि पड़े सो फना है, धर अंबर कैलाश।
क्रितम बाजी झूठ है, सुरति समोवो स्वास।। १२।।
गरीब, सुरति स्वास कूँ एक करि, कुंजि किनारै लाय।
जाका नाम बैराग है, पांच पच्चीसों खाय।। १३।।
गरीब, पांच पचीसौं भून करि, बिरह अगनि तन जार।
सो अविनाशी ब्रह्म है, खेले अधर अधार।। १४।।
गरीब, त्रिकुटी आगे झूलता, बिनहीं बांस बरत।

अजर अमर आनंद पद, परखे सुरति निरत।। १५।।
गरीब, यह महिमा कासे कहूँ, नैनों मांही नूर।
पल पल में दीदार है, सुरति सिन्धु भरपूर।। १६।।
गरीब, झीना दरसै दास कूँ, पौहप रूप प्रवान।
बिन ही बेली गहबरे, है सो अकल अमान।। १७।।
गरीब, अकल अभूमी आदि है, जा का नाहीं अंत।
दिल ही अंदर देव है, निरमल निर्गुण तंत।। १८।।
गरीब, तन मन सेती दूर है, मांहे मंझ मिलाप।
तरुवर छाया बिरछ में, है सो आपे आप।। १९।।
गरीब, नौ तत्त के तो पांच हैं, पांच तत्त के आठ।
आठ तत्त का एक है, गुरु लखाई बाट।। २०।।
गरीब, चार पदारथ एक करि, सुरति निरति मन पौन।
असलि फकीरी जोग यौह, गगन मंडल कूँ गौन।। २१।।
गरीब, पंछी घाल्या आलना, तरुवर छाया देख।
गरभ जूंनि के कारने, मन में किया बिवेक।। २२।।
गरीब, जैसे पंछी बन रम्या, संझा ले बिसराम।
प्रात समै उठि जात है, सो कहिये निहकाम।। २३।।
गरीब, जाके नाद न बिंद है, घट मठ नहीं मुकाम।
गरीबदास सेवन करै, आदि अनादि राम।। २४।।

अथ पतिव्रता का अंग

गरीब, पतिव्रता तब जानिये, नाहीं आन उपाव।
एकै मन एकै दिशा, छाडै भक्ति न भाव।। १।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, नाहीं आन उपाव।
एकै मन एकै दिशा, दूजा नहीं लगाव।। २।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, मानै पीव की आंन।
दूजे से दावा नहीं, एकै दिशा ध्यान।। ३।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, मानै पीव की कांन।
पीव भावे सोई करे, बिन आज्ञा नहीं खांन।। ४।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, चरण कमल में ध्यान।
एक पलक भूलै नहीं, आठौं बखत अमान।। ५।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, जानै अपना पीव।
आंन ध्यान से रहत होय, चरण कमल में जीव।। ६।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, जानै अपना कंत।
आंन ध्यान से रहत होय, जो धार्‍या सो मंत।। ७।।

गरीब, पतिव्रता सोई लखो, जानै अपना कंत।
आंन ध्यान से रहत होय, गाहक मिलै अनंत।। ८।।
गरीब, पतिव्रता के बरत हैं, अपने पीव सूं हेत।
आंन उपासी बौह मिलै, जिनसे रहै संकेत।। ९।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, जाकै दिल नहीं और।
अपने पीव के चरण बिन, तीन लोक नहीं ठौर।। १०।।
गरीब, पतिव्रता के बरत में, कदे न परि है भंग।
उनका दुनिया क्या करै, जिनके भक्ति उमंग।। ११।।
गरीब, पतिव्रता परहेज है, आंन उपास अनीत।
अपने पीव के चरण की, छाडत ना प्रतीत।। १२।।
गरीब, पतिव्रता के बरत है, दूजा दोजिग दुंद।
अपने पीव के नाम में, चरण कमल रहै बंध।। १३।।
गरीब, पतिव्रता प्रसंग सुनि, जाका जासे नेह।
अपना पति छाडै नहीं, कोटि मिलै जे देव।। १४।।
गरीब, पतिव्रता प्रसंग सुनि, जाकी जासे लाग।
अपना पति छाडै नहीं, पूरबले बड़भाग।। १५।।
गरीब, पतिव्रता प्रसंग सुनि, जाकी जासे लाग।
अपना पति छाडै नहीं, ज्यूं चकमक में आग।। १६।।
गरीब, पतिव्रता के चरण की, सिर पर रज ले डार।
अठसठि तीरथ सब किये, गंगा न्हान किदार।। १७।।
गरीब, पतिव्रता के चरण की, सिर पर रज ले राख।
पतिव्रता पारब्रह्म है, सतगुरु बोलै साख।। १८।।
गरीब, पतिव्रता प्रणाम करि, पतिव्रता कूँ पूज।
पतिव्रता पारब्रह्म है, सतगुरु कूँ ले बूझ।। १९।।
गरीब, पतिव्रता प्रणाम करि, पतिव्रता कूँ धाय।
पतिव्रता दीदार करि, चौरासी नहीं जाय।। २०।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, कोटिक होंहि अचूक।
और दुनी किस काम की, जैसा सिंभल रूख।। २१।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, कोटिक मिलै कुटिल।
और दुनी किस काम की, जैसी पाहन सिल।। २२।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, धर अंबर धसकंत।
संत न छाडै संतता, कोटिक मिलै असंत।। २३।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, साखी चंदर सूर।
खेत चढ़े से जानिये, को कायर को सूर।। २४।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, साखी चंदर सूर।

खेत चढ़े से जानिये, किस के मुख पर नूर।। २५।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, जाका यौही सुभाव।
भक्ति हिरंबर उर धरै, भावै सरबस जाव।। २६।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, तन मन धन सब जाव।
नाम अभयपद उर धरै, छाडै भक्ति न भाव।। २७।।
गरीब, पतिव्रता चूकै नहीं, तन मन जावो शीश।
मोरध्वज अरपन किया, सिर साटे जगदीश।। २८।।
गरीब, पतिव्रता प्रहलाद है, और पतिव्रता कोइ।
चौरासी कठिन तिरासना, सिर पर बीती लोइ।। २६।।
गरीब, राम नाम छाड्या नहीं, अविगत अगम अगाध।
दाव न चूक्या चौपटे, पतिव्रता प्रहलाद।। ३०।।
गरीब, पतिव्रता ध्रुव जानिये, और पतिव्रता कौन।
उत्तानपाद का राज सब, छाड्या सकल अलौन।। ३१।।
गरीब, सोला सहंस सुहेलियां, छाडे मीर दिवान।
बलख बुखारा तजि गये, देख अधम सुलतान।। ३२।।
गरीब, सुलतानी प्रतिव्रत है, छाड्या बलख बुखार।
मन मंजन अविगत रते, सांईं का दीदार।। ३३।।
गरीब, गोरख तो पतिव्रत है, राख्या गुपता गोय।
त्रिलोकी आरम्भ सब, राख्या नाद समोय।। ३४।।
गरीब, जनक बिदेही जानियो, पतिव्रता का अंग।
द्वादस कोटि दफतरि चढ़े, जीत चले जम जंग।। ३५।।
गरीब, गोपीचंद अरु भरथरी, पतिव्रता हैं दोय।
गोरख से सतगुरु मिले, पत्थर पाहन ढोय।। ३६।।
गरीब, बारह बरस बिसंभरी, अलवर किला चिनाय।
सतगुरु शब्दौं बांधिया, अमर भये हैं ताहि।। ३७।।
गरीब, सतगुरु शब्द न उलंघिया, जो धारी सो धार।
कंचन के मटके भये, निसतरि गया कुम्हार।। ३८।।
गरीब, बाजीदा बैजार में, तरकस तोरि कमान।
सुत्र मुये कूँ देख करि, छाड्या सकल जहान।। ३६।।
गरीब, बाजीदा बिचर्‍या सही, सुत्र मुये के नालि।
चरण कमल छाडै नहीं, जीवैंगे कै कालि।। ४०।।
गरीब, बाजीदा बिचर्‍या सही, सुत्र मुये कूँ देख।
चरण कमल छाडै नहीं, मिल है अलख अलेख।। ४१।।

सवैया गेंद उछाल

बाजीद दुनी सेती बिचरया, कादर कुरबान संभारया है।
फंध टूटि गया जिब ऊंट मुवा, तहां पकरि पलान उतारया है।। ४२।।
अरवाह चली कहो कौन गली, धौरा पीरा अक कारा है।
कहीं पैर पियादा पालकियों, कहीं हसती का असवारा है।। ४३।।
सत खुद खुदाइ अलह लखिया, सब झूठा सकल पसारा है।
कपरे पारे तन से डारे, अब सत प्रणाम हमारा है।। ४४।।
बीबी रोवै चोली धोवै, तूं सुन भरतार हमारा है।
मैं ना मानूं मसतान भया, लाग्या निज निकट निवारा है।। ४५।।
उर में अविनाशी आप अलह, सतगुरु कूँ पार उतार्या है।
गहगल कंटक दुनिया दूती, यौंह डूबन के सा गारा है।। ४६।।
हम जान लिया जगदीश गुरु, जिन जंत्र महल समार्या है।
कुछ तोल न मोल नहीं जाका, देख्या नहीं हलका भारा है।। ४७।।
कछु रूप न रेख बिवेक लख्या, चाख्या नहीं मीठा खारा है।
गलतान समांन समाय रह्या, जो पिंड ब्रह्मंड से न्यारा है।। ४८।।
सुर संख समाधि लगाय रहे, देख्या एक अजब हजारा है।
कहै **दासगरीब** अजब दरिया, झिलमिल झिल वार न पारा है।। ४९।।

साखी

गरीब, पतिव्रता के संग है, पारब्रह्म जगदीश।
निराकार निज निरमला, है सो बिसवे बीस।। ५०।।
गरीब, सकल समाना एक में, एक समाना एक।
निश्चय होय तो पाईये, कहा धरत है भेख।। ५१।।
गरीब, पारब्रह्म की परख के, नैंन निरंतर नाल।
उर अंतर प्रकासिया, देख्या अविगत ख्याल।। ५२।।
गरीब, पारब्रह्म की जाति में, मिलती है सब जात।
सुंन सरोवर बिमल जल, अरस अनूपम रात।। ५३।।
गरीब, आदि अनाहद अगम है, पतिव्रता के पास।
सहंस इकीसौं अष्टदल, थीर करो दम स्वास।। ५४।।
गरीब, कित पंछी का खोज है, कहां मीन का पैर।
दिल दरिया में पैठि करि, देखो अविगत लहर।। ५५।।
गरीब, अलल पंख के लोक कूँ, जानत है नहीं कोय।
अलल पंख का चीकला, घर पावैगा सोय।। ५६।।
गरीब, सिकल बिकल संसार है, पतिव्रता दिल थीर।

अचल अनाहद अरस धुनि, डोलै नहीं शरीर।। ५७।।
गरीब, लोहा कंचन हो गया, मिल पारस सतसंग।
यौह मन पलटत है नहीं, साधों के प्रसंग।। ५८।।
गरीब, जुगन जुगन का कुटल है, जुगन जुगन का जिंद।
पतिव्रता सो जानिये, रहै मनोरथ बंध।। ५९।।
गरीब, बारह बानी ब्रह्म है, सहंस कला कलधूत।
पतिव्रता सो जानिये, राखै मन संजूत।। ६०।।
गरीब, ज्यूं मेहंदी के पान में, लाली रही समाय।
यों साहिब तन बीच है, खोज करो सत भाय।। ६१।।
गरीब, बिन दरिया दादुर जहां, बिन ही परबत मोर।
बिना स्वांति मोती जहां, बिन ही चंद चकोर।। ६२।।
गरीब, बिन बादल बिजली जहां, बिन घनहर गरजंत।
बिन बागों कोयल जहां, बिन ही फाग बसंत।। ६३।।
गरीब, बिन ही बेली पौहप है, बिना केतकी भौर।
बिन चिसम्यौं दीदार है, बिना दस्त जहां चौर।। ६४।।
गरीब, बिन ही आसन बैठना, बिन पग का जहां पंथ।
बिन ही द्वारे बोलना, समझे बिरला संत।। ६५।।
गरीब, बिन जिभ्या बानी पढ़े, बिनही अंग अनूप।
बिन मंदिर जहां पौढ़ना, अविगत सत्त सरूप।। ६६।।
गरीब, बिन ही धरती देहरा, जामें अविगत देव।
दृष्टि मुष्टि से रहत है, जाकी करि ले सेव।। ६७।।
गरीब, ज्यूं सुवा पिंजर बसै, खिड़की बंध लगाय।
दुरमति दिल अंदर रहै, मंजारी नहीं खाय।। ६८।।
गरीब, मारग बंक पिछान ले, उडन गडन दे छाड।
सुरति शब्द के संग है, दुरमति दिल से काढ।। ६९।।
गरीब, कौन कँवल में काल है, कौन कँवल में राम।
कौन कँवल में जीव है, कौन कँवल बिसराम।। ७०।।
गरीब, कंठ कँवल में काल है, सहंस कँवल दल राम।
हिरदे कँवल में जीव है, अष्ट कँवल बिसराम।। ७१।।
गरीब, कौन कँवल अनभै उठै, कौन कँवल घर थीर।
कौन कँवल से बोलिये, कौन कँवल जल नीर।। ७२।।
गरीब, मूल कँवल अनभै उठै, सहंस कँवल घर थीर।
कंठ कँवल से बोलिये, त्रिकुटि कँवल जल नीर।। ७३।।
गरीब, कहां बिंद की संधि है, कहां नाड़ी की नीम।
कहां बजरी का द्वार है, कहां अमरी की सीम।। ७४।।

गरीब, त्रिकुटि बिंद की संधि है, नाभी नाड़ी नीम।
गुदा कँवल बजरी कही, मूलहि अमरी सीम।। ७५।।
गरीब, कहां भँवर का बास है, कहां भँवर का बाग।
कौन भँवर का रूप है, कौन भँवर का राग।। ७६।।
गरीब, हिरदे भँवर का बास है, सहंस कँवल दल बाग।
उजल हिरंबर रूप है, अनहद अविगत राग।। ७७।।
गरीब, निस वासरि के जागने, हासिल बड़ा नरेश।
नाम बंदगी चित्त धरो, हाजरि रहना पेश।। ७८।।
गरीब, सुरति सिंहासन लाईये, निर्भय धूनी अखंड।
चित्रगुप्त पूछै नहीं, जम का मिट है दंड।। ७९।।
गरीब, ऐसा सुमरन कीजिये, रूंम रूंम धुनि ध्यान।
आठ बखत अधिकार करि, पतिव्रता सो जान।। ८०।।
गरीब, तारक मंत्र चित्त धरो, सुक्ष्म मंत्र सार।
अजपा जाप अनादि है, हंस उतरि हैं पार।। ८१।।
गरीब, अंजन मंजन कीजिये, कुल करनी कर दूर।
साहिब सेती हिलमिलो, रह्या सकल भरपूर।। ८२।।
गरीब, हरदम मुजरा कीजिये, यौह तत्त बारंबार।
कुबुधि कटे कांजी मिटे, घण नामी घनसार।। ८३।।
गरीब, अजब हजारा पौहप है, निहगंधी गलतान।
पांच तत्त नाहीं जहां, निरभय पद प्रवान।। ८४।।
नेस निरंतर रमि रह्या, प्रगट क्या दिखलाय।
दास गरीब गलतान पद, सहजे रह्या समाय।। ८५।।

अथ परचा का अंग

गरीब, तेजपुंज के महल हैं, तेजपुंज की सेज।
तेजपुंज के धाम हैं, तेजपुंज के देज।। १।।
गरीब, तेजपुंज ड्योढ़ी बनी, गिलम नूर गलतान।
तेजपुंज के चंद हैं, तेजपुंज के भान।। २।।
गरीब, तेजपुंज की दुलहनी, तेजपुंज के कंत।
तेजपुंज के दीप हैं, तेजपुंज के पंथ।। ३।।
गरीब, तेजपुंज पहरांन हैं, तेजपुंज की देह।
तेजपुंज की घटा है, तेजपुंज के मेह।। ४।।
गरीब, तेजपुंज की दामनी, तेजपुंज के लोर।
तेजपुंज की कुहक है, तेजपुंज के मोर।। ५।।
गरीब, तेजपुंज के बाग हैं, तेजपुंज के फूल।

तेजपुंज की सैल है, तेजपुंज की झूल।। ६।।
गरीब, तेजपुंज की नदी है, तेजपुंज के ताल।
तेजपुंज के हंस हैं, तेजपुंज मुकताल।। ७।।
गरीब, तेजपुंज की पीठ है, तेजपुंज बैजार।
तेजपुंज सौदा करै, तेजपुंज व्यौपार।। ८।।
गरीब, तेजपुंज के साह हैं, तेजपुंज के माल।
तेजपुंज के रतन हैं, तेजपुंज के लाल।। ६।।
गरीब, तेजपुंज की तुरी है, तेजपुंज असवार।
तेजपुंज के जीन हैं, तेजपुंज सिंगार।। १०।।
गरीब, तेजपुंज के अरथ हैं, तेजपुंज के बैल।
तेजपुंज तकिये लगे, तेजपुंज की सैल।। ११।।
गरीब, तेजपुंज के गुमट हैं, तेजपुंज छिड़काव।
तेजपुंज तपिया तपै, तेजपुंज अलाव।। १२।।
गरीब, तेजपुंज के कूप हैं, तेजपुंज के नीर।
तेजपुंज माली जहां, तेजपुंज के खीर।। १३।।
गरीब, तेजपुंज प्याले फिरें, तेजपुंज कलाल।
तेजपुंज की खुरदनी, तेजपुंज मतवाल।। १४।।
गरीब, तेजपुंज सीसी जहां, तेजपुंज खुमार।
तेजपुंज कूँ रटत है, तेजपुंज आधार।। १५।।
गरीब, तेजपुंज के तिलक हैं, तेजपुंज की छाप।
तेजपुंज के संख हैं, तेजपुंज के लाप।। १६।।
गरीब, तेजपुंज के तूर हैं, तेजपुंज के नाद।
तेजपुंज के गावने, तेजपुंज के साध।। १७।।
गरीब, तेजपुंज झालरि बजे, तेजपुंज की झांझ।
तेजपुंज मुरली बजे, निशि वासर और सांझ।। १८।।
गरीब, तेजपुंज की टाल है, तेजपुंज प्रसाद।
तेजपुंज चहँडोल है, अविगत अगम अगाध।। १६।।
गरीब, तेजपुंज के चौंर हैं, तेजपुंज खवास।
तेजपुंज साहिब सही, तेजपुंज निवास।। २०।।
गरीब, तेजपुंज के छत्र हैं , तेजपुंज की लोय।
तेजपुंज में मिल गये, तेजपुंज के होय।। २१।।
गरीब, तेजपुंज के चौक हैं, तेजपुंज मैदान।
तेजपुंज के गवन हैं, तेजपुंज सैलान।। २२।।
गरीब, तेजपुंज की सारंगी, तेजपुंज की बीन।
तेजपुंज मौहचंग बजें, सुनते हैं प्रवीन।। २३।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, तेजपुंज तारी लगी, तेजपुंज के रास।
तेजपुंज की दुलहनी, बहु विधि करै विलास।। २४।।
गरीब, तेजपुंज के तान हैं, तेजपुंज के छंद।
तेजपुंज धुमार है, सुनत छुटे हैं फंद।। २५।।
गरीब, तेजपुंज की डुगडुगी, भगल विद्या का खेल।
अगम अगोचर धाम है, सुरति निरति कूँ पेल।। २६।।
गरीब, तेजपुंज की ध्वजा है, तेजपुंज निशान।
पचरंग झंडे फरक हीं, त्रिकुटि के असथान।। २७।।
गरीब, तेजपुंज के लोक हैं, तेजपुंज के दीप।
तेजपुंज कूँ कहत हैं, तेजपुंज की सीख।। २८।।
गरीब, तेजपुंज के कीर्तन, तेजपुंज के नांच।
तेजपुंज मसाल हैं, तेजपुंज फल बांच।। २६।।
गरीब, तेजपुंज की दुड़बड़ी, तेजपुंज के ढोल।
तेजपुंज बरदंग बजें, गावै राग अमोल।। ३०।।
गरीब, तेजपुंज की आरती, तेजपुंज अधिकार।
तेजपुंज पंगति बनी, तेजपुंज जौनार।। ३१।।
गरीब, तेजपुंज चरखी छुटै, तेजपुंज की धूप।
तेजपुंज सुररें सुरति, अविगत धाम अनूप।। ३२।।
गरीब, तेजपुंज तरबीत है, तेजपुंज गुलाल।
तेजपुंज आबीर है, तेजपुंज सब ख्याल।। ३३।।
गरीब, तेजपुंज का सेहरा, तेजपुंज की माल।
तेजपुंज का तखत है, अविगत नजर निहाल।। ३४।।
गरीब, तेजपुंज की चांदनी, तेजपुंज झमकंत।
तेजपुंज निज नूर है, तेजपुंज नहीं अंत।। ३५।।
गरीब, संख कला जहां झिलमिले, अजब दिवाना देश।
पौहचेंगे सो जानि हैं, बिन पौंहचें नहीं पेश।। ३६।।
गरीब, बेगम पुर की बात है, अगर दीप परलोक।
देश दिवाना देखिया, शब्द बिलावल पोख।। ३७।।
गरीब, सुंन बेसुंन से अगम है, अविगत नगरी आद।
पिंड ब्रह्मंड से रहित हैं, भगल विद्या नट साध।। ३८।।
गरीब, झिलमिल ज्योती झिलक हीं, झिलमिल तेज अपार।
कोटि भांन प्रकाश है, रूंम रूंम की लार।। ३६।।
गरीब, वार पार नहीं पाईये, बिंबल रूप अनूप।
पट्टन घाटी ऊतरे, सतगुरु मेटी चूक।। ४०।।
गरीब, चौदा भुवन गवन करै, मिटे न जी की भ्रांत।

एक पलक पद में रहै, तो उपजी बाजी मांत।। ४१।।
गरीब, कोटि सरस्वती गावहीं, ब्रह्मा कोटि उचार।
शंकर कोटि सेवन करैं, अविगत के दरबार।। ४२।।
गरीब, कोटि शेष फुनि रटत हैं, नारद कोटि अनंत।
गौरिज कोटि गणेश हैं, कोई न पावै अंत।। ४३।।
गरीब, विष्णु कोटि अनंत है, इन्द्र खड़े फुनि लार।
लक्ष्मी कोटि अनंत हैं, कोटि कुबेर भंडार।। ४४।।
गरीब, अष्ठ सिधि कोटि अनंत हैं, नौ निधि कोटि बिलास।
सनकादिक कोटि अनंत हैं, सेव करैं निज दास।। ४५।।
गरीब, कहां कहूँ कछु अकह है, अवगति की गति नांहि।
कल्पवृक्ष कोटि अनंत हैं, कामधेनु पद मांहि।। ४६।।
गरीब, अनभै कोटि अनंत है, खड़ी रहै दरबार।
कहां कहूँ बहु पेखना, ना कहीं वार न पार।। ४७।।
गरीब, रिधि सिधि राग बिहाग है, मारग बंका बीन।
सिर के साटे पाईये, यौं सतगुरु कहि दीन।। ४८।।
गरीब, जै जै जै जगदीश तूं, जोग अनंत अनेक।
भक्ति मुक्ति के दास हैं, सतगुरु दाता एक।। ४६।।
गरीब, बंदी छोड कबीर हैं, सकल सिरोमणि सार।
अगह अगम अगाध के, पाये हम दीदार।। ५०।।
गरीब, झिलमिल दरिया दीप हैं, अमर पुरी प्रवान।
मन इच्छा मारग गये, हंसा बैठ विमान।। ५१।।
गरीब, सुरति निरति का पीव है, शब्द बिलास विनोद।
ऊँ सोहं से परै, तिस पद कूँ ले सोध।। ५२।।
गरीब, सत नगरी निरबान पद, पिंड ब्रह्मंड तहां नांहि।
सुंन सिखर में जगमगे, सकल ठौर सब मांहि।। ५३।।
गरीब, झिलमिल जोती जगमगै, नैंन बैंन विलास।
सतपुरुष सिर चौंर हैं, तखत कबीर खवास।। ५४।।
गरीब, ब्रह्म शब्द कूँ चीन्ह ले, खोजो दिल दरियाव।
मन मरजीवा ल्याइसी, माणिक लाल अथाह।। ५५।।
गरीब, निज मन जौहरी है जहां, परखे हीरे लाल।
सुखसागर में न्हात है, सुंन सरवर बिन पाल।। ५६।।
गरीब, बरसे स्वांती अखंड जित, मोती होंहि बिन सीप।
घटा बिना दांमनि खिमैं, ऐसा सतगुरु दीप।। ५७।।
गरीब, गरजे शब्द अखंड जित, बारह मास बिलास।
मेघ मालवे मुलक हैं, जहां बसते साधू दास।। ५८।।

गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, दूझे अमृत खीर।
सनकादिक पीवे जहां, सुखसागर के तीर।। ५९।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, दूझे धार अखंड।
तिहूँ लोक तिरपत भये, पूर्ण है नौखंड।। ६०।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, मन इच्छा फल देत।
कहा कहूँ कछु अकह है, उजल हिरंबर सेत।। ६१।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, दूझे अधर अनूप।
शंकर शेष सेवन करें, है सो सत्त सरूप।। ६२।।
गरीब, ऊँ सोहं कुंभ है, अमी खीर के माट।
भोगी मन मोहन जहां, संग गुजरिया आठ।। ६३।।
गरीब, सुंन सिखर में गाय है, बिन बछरे दे दूध।
बिन चारे दूझे सदा, लात चलावै कूद।। ६४।।
गरीब, सुंन सिखर में कामधेनु, बिन बछरे की माय।
औभ सदा आनंद है, अन व्यावर नहीं ब्याय।। ६५।।
गरीब, लै के खूंटे बंधि रही, सुरति निरति के हाथ।
मनोमई झरना झरै, सतगुरु जेही दात।। ६६।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, सहंस कँवल दल खेत।
जग कूँ चोढ़ा मारनी, संतों सेती हेत।। ६७।।
गरीब, अगम भूमि से आईया, सतगुरु दीन्ही दान।
ब्रह्मादिक से लोच हीं, अति मीठा रस पान।। ६८।।
गरीब, सुंन सिखर में गाय है, गोप गलत दुझंत।
तेतीसौं पाई नहीं, कोई सनकादिक बुझंत।। ६९।।
गरीब, सुंन सिखर में सुरहि है, बिना सार होइ लीन।
सार करै दूझे नहीं, दोझी कूँ ले पीन।। ७०।।
गरीब, कामधेन कल्पवृक्ष है, दूझे बारह मास।
मांखन निरमायल सदा, गुन इन्द्री कर है नाश।। ७१।।
गरीब, खाय न पीवे कामधेनु, कित से सरवै दूध।
बिन आकार अखंड गति, हाड चाम नहीं गूद।। ७२।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, श्रवत है बहु भांत।
सप्तपुरी सुख पालड़े, ब्रह्मंड इकीसौं मांत।। ७३।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष है, चिंतामनि नहीं मोल।
सब सुख स्वर्ग पताल के, ता सम तुलै न तोल।। ७४।।
गरीब, चिंतामनि चित्त में बसै, पलक न बिसरौं तोह।
सौंहगे से महंगा हुवा, पारस परस्या लोह।। ७५।।
गरीब, चिंतामनि चित्त चौक में, निर्भय निर्गुण गाय।

मोल तोल नहीं तास का, ना कहीं हाट बिकाय।। ७६ ।।
गरीब, कामधेनु कुरबान है, अविगत आनंद ख्याल।
सुरति सहत रस दूध दे, रहती नैनों नाल।। ७७ ।।
गरीब, कामधेनु के दूध को, पीवे बिरला कोय।
शीश कट्या मनसूर का, सन्मुख अरप्या सोय।। ७८ ।।
गरीब, अनलहक्क परिहक्क हुवा, मनसूर भया मसतान।
शीश कट्या तो क्या हुवा, दीदार दरस प्रवान।। ७६ ।।
गरीब, चिंत्तामनि कामधेनु है, बिन बेली का कंद।
अजर अमर अनूप फल, चाखेंगे निरबंध।। ८० ।।
गरीब, कामधेनु कारन कवन, आई हम दरबार।
मैं आजिज किस काम का, दयावंत दीदार।। ८१ ।।
गरीब, भौंरा लुबधी लालची, देख रह्या ललचाय।
असंख कोटि रवि झिलमिलें, वार पार नहीं थाह।। ८२ ।।
गरीब, असंख कोटि रवि झिलमिलें, असंख कोटि जहां चन्द।
इला पिंगला सुखमना, त्रिवैनी के संध।। ८३ ।।
गरीब, कालंद्री कुरबान है, नूर तेज की झाल।
मन मीनी खेले जहां, परे प्रेम के जाल।। ८४ ।।
गरीब, अगम अनाहद आदि है, सकल बियापी एक।
अष्ट कँवल दल रमि रह्या, नैनों मंझ अलेख।। ८५ ।।
गरीब, त्रिवैनी के तीर हैं, खूल्है सिंभू द्वार।
बिना श्रवण बानी सुनी, बिन चिसम्यौं दीदार।। ८६ ।।
गरीब, बिन रसना भोजन करै, बिन मुख पूरै नाद।
बिन कर झालर बाज हीं, गति कछु अगम अगाध।। ८७ ।।
गरीब, बाहर भीतर एक है, सकल ठौर सब ठाम।
उनमनि के घर दरस है, नहीं गाम नहीं नाम।। ८८ ।।
गरीब, रूंम रूंम झनकार है, तेजपुंज की लोय।
सुरति निरति दो मालिनी, माला फूल परोय।। ८६ ।।
गरीब, अजब अनाहद राग है, अजब अनाहद बैंन।
अजब अनाहद रास है, गूंजत है सब गैंन।। ६० ।।
गरीब, जगमग जोती झिलमिलै, हीरे लाल अनंत।
सौदागर सतगुरु जहां, खड़े पारखी संत।। ६१ ।।
गरीब, पारस पद प्रवान है, अडोल अबोल अछेद।
निरबानी निरसंध है, कोई जन जानै भेद।। ६२ ।।
गरीब, भगलीगर के भगल का, सतगुरु ल्याया भेव।
भरम करम सब मिट गये, जब परस्या दिल देव।। ६३ ।।

गरीब, लाल विशाल बिसंभरे, मुकट छत्र है शीश।
भगल विद्या बाजीगरी, है सो बिसवे बीस।। ९४।।
गरीब, अलख अलाह अथाह है, मौले मगन मुकंद।
द्वादस ऊपर आप है, देखो त्रिकुटी संध।। ९५।।
गरीब, सुंदर मूरति स्याम है, दो दल केरे तीर।
भौंरी उलटि लिलाट चढि, जहां चौंरा करै कबीर।। ९६।।
गरीब, परगट परचा है जहां, जो धारे सो देख।
सब गति पूरनब्रह्म है, परगट पीव अलेख।। ९७।।
गरीब, सूक्ष्म मूरति सोहना, बहुरंगी बिसतार।
एक शब्द में सब किया, ऐसा समरथ सार।। ९८।।
गरीब, कोटि गंग चरनौं सदा, परबी मुकता न्हान।
अठसठ तीरथ एक में, सुखसागर अस्नान।। ९९।।
गरीब, एक पलक पद में रहै, चार जुगन का जाप।
सुरति निरति सोहं जपे, वाह कछु झीनी लाप।। १००।।
गरीब, पानी से ही पातला, पौहप गंध का गात।
कहां जिग्यासा दीजिये, चेला पूछे बात।। १०१।।
गरीब, अविगत आनन्दी पुरुष, झंडा है मैदान।
नैंन मूंद के देख ले, जे तूं शिष्य सुजान।। १०२।।
गरीब, दो दल की घाटी जहां, सुई समाना द्वार।
सेत ध्वजा जहां फरक हीं, सिर साटे दीदार।। १०३।।
गरीब, सहंस कँवल दल बाग है, कोयल मोर चकोर।
मरता नहीं आवाज सुनि, ऐसा कठिन कठोर।। १०४।।
गरीब, प्याले जित खुरदनि फिरैं, चोखा फूल चवंत।
मतवालों का देश है, कोई साधु जन पीवंत।। १०५।।
गरीब, जहां कलाली हाट है, बिन जर प्याले पाख।
सिर के साटे मिलेगा, सतगुरु बोले साख।। १०६।।
गरीब, चोखा फूल चवंत है, मारग चल्या न जाय।
बेसुध खबर न देह की, ऐसा प्याला प्याय।। १०७।।
गरीब, कलाली की हाट पर, मतवालों की भीर।
राग सुनें प्याले पिवै, बेसुध खबर शरीर।। १०८।।
गरीब, ऐसा प्याला पीजिये, ज्यूं बहुरि न आवै।
मतवाला सोई सही, जो शीश चढ़ावै।। १०९।।
गरीब, अविगत अलह अलेख कूँ, नैनों में राखै।
पल पल में दीदार है, रस अमृत चाखै।। ११०।।
गरीब, गलताना फल गैब है, तरुवर मूल न फूल।

भक्ति हेत से पाईये, मनी मिले जे धूल।। १११।।
गरीब, लहम दरिया लह लीजिये, बिन बेड़े होय पार।
पैठे सुरति लिलाट चढ़ि, त्रिकुटी में दीदार।। ११२।।
गरीब, हिरदे माथे की एक करि, धर ले दसमें ध्यान।
जोग भक्ति और भेद सब, दुरबीन विहंगम ज्ञान।। ११३।।
गरीब, दहुँ संधि से न्यारा कहूँ, नहीं हिरदा नहीं नैंन।
दसमें ऊपर दीप है, जहां अजब विसालं बैंन।। ११४।।
गरीब, दहूँ से संधि न्यारी कहूँ, पिंड ब्रह्मंड अकार।
तीनों पड़दे खुलि गये, तो जहां तहां दीदार।। ११५।।
गरीब, सतगुरु कूँ क्या दीजिये, तन मन धन अरु शीश।
पिंड प्रान कुरबान करि, जिन भक्ति दई बख्शीश।। ११६।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, महिमा कही न जाय।
भुवन चतुरदस लोक सब, तिल में दिये दिखाय।। ११७।।
गरीब, तिल उनमान कपाट है, मेरूदंड की बाट।
पंथ परातम ले गया, ऊतरे औघट घाट।। ११८।।
गरीब, झीना मारग महल है, अति बारीक विचार।
सुख सलाहद सिंध है, मीनी खोज अधार।। ११९।।
गरीब, मुरजीवा पैठे तहां, गहरा सिन्धु अथाह।
मानिक ल्यावै परख करि, जे जानै सब दाव।। १२०।।
गरीब, नैनों आगे झिलमिलै, असंख पदम का तेज।
चक्र सुदर्शन पास है, बहुरंगी है सेज।। १२१।।
गरीब, सेत बरन ब्रह्म दर्श है, असंख पुंज झलकंत।
नासा अगरी नूर है, वार पार नहीं अंत।। १२२।।
गरीब, सरबदेशी साहिब मिल्या, झिलकै तार अनंत।
केसरिया करतार है, संग सनकादिक संत।। १२३।।
गरीब, निश्चल निर्गुण एक है, अदलि फजलि दरबार।
मन इच्छा फल तलब है, नहीं उहां दारमदार।। १२४।।
गरीब, ऐसा कादर देखिया, पीठ पेट नहीं द्वार।
नगरी बसती मठ नहीं, नहीं उहां घर बार।। १२५।।
गरीब, सुंन बसती से रहित है, देखी सिंध निहार।
ज्ञान ध्यान की गम नहीं, ना वहां जीत न हार।। १२६।।
गरीब, गलताना गैबी गलत, रिमझिम रिमझिम होय।
दसों दिशा दरहाल है, निर्गुण अविचल सोय।। १२७।।
गरीब, अखै अभै सुंन मंडली, गण गंधर्व नहीं ठाम।
निज निरबानी निरमला, पूर्ण रमता राम।। १२८।।

गरीब, सदा सजीवन अमर पद, नेस निरंतर मांह।
बाहर भीतर ब्रह्म है, जहां तहां सब ठांह।। १२६।।
गरीब, नूर महल बिन नीम है, पैडी नहीं मुंडेर।
ड्योढ़ी पड़दा ना वहां, बिन पग चढैं सुमेर।। १३०।।
गरीब, वहां एक गुमट अनूप है, लाल हिरंबर लोक।
अजब खूब खालिक जहां, मुकती मुहल्ला मोख।। १३१।।
गरीब, जहां एक गुमट अनूप है, बिछे गलीचे गैब।
मजलसि मतवाले महलि, जाति पाति नहीं ऐब।। १३२।।
गरीब, अजब तेज निज नूर है, अजब सैल सुख सिंध।
अचरज की कछु क्या कहूँ, टूटत देखे चंद।। १३३।।
गरीब, तारों की गिनती नहीं, चंद सूर टूटंत।
एक पलक के लोर में, मेघ धार बूठन्त।। १३४।।
गरीब, अजब खुरदनी ख्याल है, सुरति निरंतर जोर।
रूंम रूंम पल पीठि में, सूरज खिमै करोर।। १३५।।
गरीब, अकह अनाहद अदलि है, तहां वहां जोग बिजोग।
जम जौंरा जूंनी नहीं, काल कर्म नहीं सोग।। १३६।।
गरीब, दोजख भिस्त नहीं वहां, नहीं दुनी नहीं दीन।
काया माया ना उहां, पांच पचीस न तीन।। १३७।।
गरीब, सब गुण रहता राम है, सदके करूं शरीर।
खाने जाद खरीद है, मैं बलि जावौं पीर।। १३८।।
गरीब, अजब अजाती ऐन है, मारग पंथ न राहि।
कोटि जुगन की बाट थी, पल में दई दिखाहि।। १३९।।
गरीब, बेगमपुर ब्रह्मलोक है, नहीं कच्छ मच्छ कूरंभ।
तहां रमैया रमि रह्या, रचना रची आरम्भ।। १४०।।
गरीब, मन मालिक खालिक तूंहीं, सदके करूं जहान।
लोक अलोक न चाहिये, भक्ति हिरंबर दान।। १४१।।
गरीब, बिमल बिलावल भक्ति है, बिमल बिलावल नांव।
चरण कमल चूकूँ नहीं, मैं सदके बलिजांव।। १४२।।
गरीब, बिमल बिलावल ज्ञान है, बिमल बिलावल ध्यान।
बिमल बिलावल भक्ति है, मेटो आवा जान।। १४३।।
गरीब, बांदी जाम गुलाम की, सुन ले अरज अवाज।
यौह पाजी संग लीजियो, जिब लग तुम्हरा राज।। १४४।।
गरीब, परलौ कोटि अनंत है, धरनी अंबर धौल।
मैं दरबारी दर खड़ा, अचल तुम्हारी पौल।। १४५।।
गरीब, समरथ तूं जगदीश है, सतगुरु साहिब सार।

मैं शरणागत आईया, तूं है अधम उधार।। १४६।।
दास गरीब दरस रत्ते, सेत बरन कुरबान।
संख कला कलधूत है, अरस अनाहद ध्यान।। १४७।।

अथ रस का अंग

गरीब, रस मौले के महल में, ऊंचे अर्श दुकान।
जहां कलाली हाट है, अति मीठा रस पान।। १।।
गरीब, रस मौले के महल में, गगन झरोखा जोर।
पीवैं सूरे संत जन, कूर चले मुख मोर।। २।।
गरीब, रस मौले के महल में, मंडल अर्श झरंत।
जहां कलाली हाट है, चोखा फूल चवंत।। ३।।
गरीब, फूल चवै चिंतामनी, कलस बिना एक कुंभ।
सुरति सुराही फिरत है, देख्या अति अचंभ।। ४।।
गरीब, फूल चवै चिंतामनी, अरस पटन के घाट।
तन मन निश्चय अरपिये, कीजे सिर की साट।। ५।।
गरीब, फूल चवै चिंतामनी, प्याले कंद कपूर।
कायर कूँ कड़वा लगै, मीठा अमृत सूर।। ६।।
गरीब, फूल चवै चिंतामनी, औघट घाट अपंथ।
ज्ञानी ध्यानी ना लखै, फिर फिर गये अनंत।। ७।।
गरीब, बजर पौल ड्यौढ़ी लगी, अंदर अर्श दुकान।
मेहर दया से पाईये, सतगुरु देवे दान।। ८।।
गरीब, मगन मुहल्ला मस्तपुर, महवालों की भीर।
सुनते ही शस्त्र तजैं, कायर धरै न धीर।। ९।।
गरीब, रस का रासा समझि ले, सारंग बेधे प्रान।
शब्द कुलाहल होत है, गगन मंडल अस्थान।। १०।।
गरीब, यौह रस रासा समझि ले, पिंगुल सुरति लगाय।
बीसों बिसवे वस्तु है, पीवत है सत भाय।। ११।।
गरीब, असंख सूर मसतान हैं, कलाली दरबार।
बहुरि मिलै कहां प्रेम रस, सुकृत जन्म सुधार।। १२।।
गरीब, असंख सूर मसतान हैं, कलाली की हाट।
पुनरिप जन्म तुम्हार है, फेर कहां यौह घाट।। १३।।
गरीब, गगन कुंज गगने गुफा, गगन महल मन जाय।
चढ़ै तो चाखै प्रेम रस, पीवै अति अघाय।। १४।।
गरीब, ऊंची साखा सुंन फल, महुँवा मधुर अपूठ।
बीज बाकला है नहीं, प्रेम पियाले घूंट।। १५।।

गरीब, शिखर समन्दर संधि सर, जा मध्य हंसा न्हांहि।
कलाली कुल बंच है, हूंठ नगर गढ़ मांहि।। १६।।
गरीब, यह रस महंगे मोल का, पीवत है कोई एक।
ताहि बजर की चूल है, जम सिर मारै मेख।। १७।।
गरीब, नैंनों ही में बासना, प्रेम मगन के लोर।
घटा उठै गुरु ज्ञान की, गुंजै दादुर मोर।। १८।।
गरीब, प्रेम लहरि छानी नहीं, निरमल नासा दंत।
महकत मूल सुवासना, मिले पियारे कंत।। १९।।
गरीब, होठ कंठ मुख मंजना, भ्रिकुटी चंद लिलाट।
सो निश्चय पौंहचे सही, गये कलाली हाट।। २०।।
गरीब, शब्द सवाल में पूछि ले, प्रेम नगर की रीत।
बौह भोजन क्या करत है, एकै करके सीत।। २१।।
गरीब, पलक बिलंद अलील धुज, भौंह लागै बैराट।
सो तुम निश्चय जानियो, वे गये कलाली हाट।। २२।।
गरीब, हंस गवन मृगनैंन छवि, चलि हैं मधुरी चाल।
सो तुम निश्चय जानियौ, वे दरबार कलाल।। २३।।
गरीब, श्रवन सरोदा साधहीं, इला पिंगला फेर।
सुखमन के घर गवन है, सो लिये कलाली हेर।। २४।।
गरीब, नख सुफेद मध्य लाल रंग, कुंभक जेहा कंठ।
मेरु दंड सूधा किया, बंकनाल नहीं बंट।। २५।।
गरीब, कान कर्ण लघु तास के, दीरघ बुद्धि बिलंद।
अष्ट कँवल करुना मई, राग द्वेष निरदुन्द।। २६।।
गरीब, मूल संकोचन सुर पलट, बाय बिंद बसि कीन।
सो तुम निश्चय जानियो, वे सुंन सरवर के मीन।। २७।।
गरीब, ढूंढ़ी ब्यौम ऊरध खड़ी, चूतड़ चकला फेर।
सो तुम निश्चय जानियो, वे हंसा चढ़ै सुमेर।। २८।।
गरीब, कुंडी नाभि संकोचनी, ठोडी लाबन तुच्छ।
स्याह नैन संजम कला, ध्यान कुरंभं कच्छ।। २९।।
गरीब, तालु कंठ गुलाल रंग, रसना लंब सुलंब।
पीत पसावं परखि ले, जहां गड्या भक्ति रणखंभ।। ३०।।
गरीब, शीश कटोरी गिरद गति, तलुवे पावडियांह।
सो निश्चय तुम जानियो, वे बैठे नावरियांह।। ३१।।
गरीब, दस्त भुजा जंग जोर है, कूत बिसंभर नाम।
सो निश्चय तुम जानियो, वे पौंहचे उस धाम।। ३२।।
गरीब, चूची कँवल कुलाहलं, छाती छत्र फेर।

हिरदे नैन हदफ लगे, जो बैठे गढ़ मेर।। ३३।।
गरीब, मस्तक मुद्रा जीत है, षट्कर्मो से खेल।
चौरासी आसन करै, वे लहि हंसा कूँ बेल।। ३४।।
गरीब, प्रेम नगर में सो रहै, पलक न बाहर जांहि।
सो तुम निश्चय जानियों, वे अमी महारस खांहि।। ३५।।
गरीब, सूक्ष्महार विचार से, अनजुखता नहीं लेहि।
अमर करै अनभूत गति, शब्द संदेसा देहि।। ३६।।
गरीब, नौ सुर सेती सुनत है, रूंम रूंम में गाज।
सो तुम निश्चय जानियों, जहां भक्त बछल का राज।। ३७।।
गरीब, ररंकार रंग भीनिया, आनंदी अनराग।
राम रसायन पीवते, मिटे दिलों के दाग।। ३८।।
गरीब, बड़ बड़ करै सो भूत है, थोड़ा बोलै देव।
मान महत चाहै नहीं, ये लच्छन लखि लेव।। ३६।।
गरीब, दस इन्द्री लारै लगी, पचीसौं प्रभाव।
तीन गुनन सेवन करै, तुरिया पद में आव।। ४०।।
गरीब, प्रेम नगर की पीठि में, गरबाईयो मति कोय।
मनसूर देख सूली चढ्या, अनलहक्क कहि सोय।। ४१।।
गरीब, शीश कटे साबति रह्या, हाथ कटे हरि हेत।
मनसूर सदा मशहूर है, अजर अमर है खेत।। ४२।।
गरीब, प्याला पिया न प्रेम का, जूठी लब कूँ चाट।
ना जानौं क्या होयगा, जो गये कलाली हाट।। ४३।।
गरीब, अनलहक्क हरि से मिली, दूसरि रही न देह।
राम रसायन भर पिया, प्यालों के गुन येह।। ४४।।
गरीब, मनसूर मस्त क्यों होय गया, शरीर फांसि प्रवेश।
जापर नौबत यह हुई, कैसा है वह देश।। ४५।।
गरीब, जरि बरि कोइला होय गया, मतवाला मनसूर।
इश्क लगाया रब्ब से, प्रेम नगर घर दूर।। ४६।।
गरीब, कलाली के कलस की, लगी छींट मनसूर।
फूल फूल प्रवेश है, शब्द समाना नूर।। ४७।।
गरीब, ये रब्ब दी फुलबाड़ियां, फूल फूल कुमिलाइ।
प्रेम नगर दे प्रेम बिन, सबहीं बहि बहि जाइ।। ४८।।
गरीब, उजल कलाली उजल हटि, उजल प्याले पाख।
गगन दरीबे जाईये, प्रेम नगर में दाख।। ४६।।
गरीब, उजल सुराही उजल सर, उजल हंस प्रवीन।
प्रेम नगर में चालिये, ध्यान धरौ दुरबीन।। ५०।।

गरीब, उजल संगति गति उजल है, उजल भूमि बैराट।
राई मैल न संचरै, उस सरवर के घाट।। ५१।।
गरीब, पाक पियाले पाक हंस, पाके पीवन हार।
पाक कलाली फूल है, पाक महल मतवार।। ५२।।
गरीब, राम रसायन प्रेम रस, सोंहगा ही सर न्हान।
सौ बातन की एक है, शीश दीजिये दान।। ५३।।
गरीब, नगर नवेला बंक मग, संत सूर ठहराहि।
पौंहचे सो पारंग है, कायर गोते खाहि।। ५४।।
गरीब, बेड़े संख असंख्य हैं, नौका निरमल नाव।
सतगुरु खेवट खूब है, गरज पड़े तो आव।। ५५।।
गरीब, शीश काटि आगे धरै, ऊपर मचका पाव।
प्रेम नगर ऐसे गये, तेरी गरज पड़ै तो आव।। ५६।।
गरीब, प्रेम नगर पनघट पला, संख सुहेली संग।
देखत ही दिल चाव है, कदे न होय चित भंग।। ५७।।
गरीब, एक भरे एक भरि चली, एक भरने कूँ जाहि।
ऐसा औघट घाट है, संख सुहेली न्हाहि।। ५८।।
गरीब, संख सुहेली एक पीव, परसि परसि परवान।
लेह परवी परलोक की, सुंन सरोवन न्हान।। ५६।।
गरीब, मासा घटै न तिल बधै, विधना लिखे बजो लेख।
साचा सतगुरु मेट करि, ऊपर मारै मेख।। ६०।।
गरीब, प्रेम नगर के बाग में, परे हिंडोले पाख।
झूले संख सुहेलियां, चलि प्रेम नगर टुक झांक।। ६१।।
गरीब, बहुरि न निकसन होत है, प्रेम नगर वौह भीर।
खैर खुरदनी बटत हैं, अमी महारस खीर।। ६२।।
गरीब, पीताम्बर पट ओढ़हीं, सूहे हैं पहरान।
बाजे बजै असंख्य गति, अविगत नगर बअमान।। ६३।।
गरीब, संख वेदी चौंर चंपा, गगन मंडल धुनि सुनि।
हंस क्रीड़ा करत जहां, तहां संत बैठे हैं मुनि।। ६४।।
गरीब, कलश कलाली भरया है, एक रती नहीं खैंच।
केते अमली झुकि रहे, अमी महारस ऐंच।। ६५।।
गरीब, कलाली कुल मंडलनी, है कुल मंडल खूब।
प्याला दीजै प्रेम का, बारि खड़े महबूब।। ६६।।
गरीब, आशिक इश्क छौडे नहीं, लगे बिरह के बान।
कलाली दर घूम हीं, राखे सब का मान।। ६७।।
गरीब, राम रसायन रंग फल, जो पीवै तिस रंग।

रती मिल्या मनसूर कूँ, अनल हक्क सतसंग।। ६८।।
गरीब, एक रती रात्या फिरै, यही प्रेम की रीत।
प्रेम लग्या मनसूर कै, दुनिया गावै गीत।। ६९।।
गरीब, खुरासान काबुल किला, बगदाद बनारस एक।
बिलायत और बलख लग, हमहीं धारैं भेष।। ७०।।
गरीब, स्वर्ग पयाल रिसाल रस, हमहीं भये कलाल।
हमहि कलाली कुंभ हम, हमहीं हैं मतवाल।। ७१।।
गरीब, धंनि जिन्दा जगदीश तूं, सकल भेद प्रवेश।
महादेव मद ना छिकैं, पार न पावै शेष।। ७२।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु बिलास बुधि, कलाली कुलवंश।
प्याले पीवै प्रेम के, बैठे हाट हसंत।। ७३।।
गरीब, गोरख दत्त खुमार है, राम रसायन छाक।
ध्रुव का ध्यान अमान है, सुकदेव बोलै साख।। ७४।।
गरीब, प्रहलाद प्रेम निश्चय पिया, सुलतानी सत भाव।
एकै चोट सिधारिया, जिनै मिलन का चाव।। ७५।।
गरीब, गोपीचंद अरु भरथरी, जयदेव नामा नेह।
रंका बंका रंग है, दो मतवाले येह।। ७६।।
गरीब, सनकादिक सुरभेद ही, चारों चूरमचूर।
शेख फरीद सिरार है, बरषत हैं मुख नूर।। ७७।।
गरीब, नारद मुनि निर्गुण जड़ी, कुंभक ऋषि कलधूत।
जोगी जलंधर रस पिया, दुरबासा अवधूत।। ७८।।
गरीब, विश्वामित्र रस पिया, वसिष्ठ मुनि विधि साध।
कपिलदेव गलतान है, लागी सुंन समाधि।। ७९।।
गरीब, मारकंड अरु रूमी ऋषि, बकतालिक कागभुसंड।
इन्द्र ऋषि प्याले पिवै, प्रेम कला परचंड।। ८०।।
गरीब, गौरी और गणेश लग, सावित्री मन चाव।
लक्ष्मी लालच लगि रही, प्रेम खेलन का भाव।। ८१।।
गरीब, तेतीसौं करुणा करें, सहंस अठासी मान।
सिद्ध चौरासी चाव है, कलाली रस पान।। ८२।।
गरीब, अष्टावक्र रस पिया, नौ जोगेश्वर नेह।
कलाली की हाट परि, आवै सो सिर देह।। ८३।।
गरीब, जनक विदेही जगमगै, पीपा और रैदास।
कनक जनेऊ काढ़िया, पंडित भये उदास।। ८४।।
गरीब, बाजीद धन्ना संमन मंडे, कादर कला कमाल।
सेऊ का तो सिर कट्या, फेर चढ्या दरहाल।। ८५।।

गरीब, नानिक दादू दंग हैं, माधो और मलूक।
सूर कबीर सोंहगा किया, कदे न लागै भूख।। ८६।।
गरीब,, मीरांबाई रस पिया, कमाली कलि मांहि।
शबरी संजम कर रही, गनिक विमानौं जांहि।। ८७।।
गरीब, हरिचन्द रसिया प्रेम का, अजामेल अधिकार।
गनिका चढ़ी विमान में, अयुध्या सब लार।। ८८।।
गरीब, द्रोपद सुता के चीर कूँ, बढ़त न लागी बेर।
दुःशासन से पचि गये, पीतंबर असुमेर।। ८६।।
गरीब, पंडौ यज्ञ अश्वमेध में, बालनीक अधिकार।
संख पंचायन घुरत हैं, जै जै जै जौनार।। ६०।।
गरीब, बैलोचन के बलि भये, बेदी यज्ञ करंत।
आसन कंपे इन्द्र के, ऐसे बलि हैं संत।। ६१।।
गरीब, बावन होय बलि के गये, तीन पैंड सब कीन्ह।
बलि छलि इन्द्र कूँ दई, फेर बहुरि मुसकीन।। ६२।।
गरीब, बलि पठये पताल कूँ, ध्रुव कूँ सुरगहि राज।
संसा दोनों कूँ नहीं, भक्ति मुकति की लाज।। ६३।।
गरीब, विभीषण और मंदोदरी, नल नील दो संत।
अंगद पाइक हनुमान, किन्हें न पाये अंत।। ६४।।
गरीब, लछमन सीताराम सति, कला विसंभर आप।
अनंत अनाहद ख्याल है, जपि ले अजपा जाप।। ६५।।
गरीब, नरसीला नरहरि पिया, प्रेम रसायन पूर।
हुंडी झाली संत की, सन्मुख सदा हजूर।। ६६।।
गरीब, कलाली कारन कवन, सोफी मिलै न बूंद।
दरसे तत्त न निरमला, नहीं गगन में धूंध।। ६७।।
गरीब, अमली आनंद में रहै, निर्मल तत्त जुहार।
प्याले पीवै प्रेम के, बरषत नूर फुहार।। ६८।।
गरीब, आनंग मूरति ऐंन है, कुरबांना कुरबांन।
सूरत सुंदर पाख पद, देख्या अकल अमान।। ६६।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष पद, जो धारै सो होय।
जिन नैनों औह देखिया, सो क्यों न पीवो धोय।। १००।।
गरीब, कामधेनु क्रीला कलप, मन इच्छा फल फूल।
सुरति विसंभर होत है, एक पलक नहीं भूल।। १०१।।
अमली महल कबीर है, प्रेमी पारंग पार।
दास गरीब कुल मंडनं, अविगत सत्त जुहार।। १०२।।

अथ लाम्बी का अंग

गरीब, सतगुरु शाखा बेलड़ी, सुंन में गहबरियांह।
शब्द संदेशा दे गये, सतगुरु हम कहियांह।। १।।
गरीब, अगम अथाह अपार है, निरालंब निहअंछ।
वेद कतेबों ना चढ़े, बावन अक्षर बंच।। २।।
गरीब, बावन अक्षर मूल सर, बिना मूल सो मूल।
विज्ञान वस्तु बिसतार है, कहां मूल बिन फूल।। ३।।
गरीब, काया सरवर मूल है, मन हंसा बिन मूल।
विज्ञान ज्ञान अनहद कला, हदफ मूल बिन फूल।। ४।।
गरीब, बरखा से भीजै नहीं, गरमी ना कुम्हिलाहि।
सो वौह फूल महेसरी, रखियौ नैनों मांहि।। ५।।
गरीब, कहन सुनन की है नहीं, अरध उरध मध्य थांभ।
समझे शिष्य सयान बुधि, यौह तो अंग है लांब।। ६।।
गरीब, नाड़ी सकल सहस्रबंध, नाभि चक्र फेर।
इला पिंगला पांहुनी, आनि उलटि घर घेर।। ७।।
गरीब, एडी अनंग बिनंगना, पदम पीठ से लाय।
द्वादस अंगुल अगम सुर, उलटी पवन चढ़ाय।। ८।।
गरीब, शाला कर्म बताय द्यौं, जो बुझै सो बूझ।
कनक कलश आगे धर्‌या, फूल महेसर पूज।। ९।।
गरीब, फूल महेसर तुझि दिया, जा में हैं सब देव।
सतगुरु संत गन गंधर्व, सब का कहि सूं भेव।। १०।।
गरीब, भेव कहूँ सत मानि ले, संसा संकट जाय।
अविगत फूल महेसरी, रह्या अर्श में छाय।। ११।।
गरीब, काया कुंभ मध्य राम रस, मक्रतार पुल पंथ।
बारि खड़े सब लूटिये, पार जात है संत।। १२।।
गरीब, वार पार पावै नहीं, फिर काया ही मांहि।
मक्रतार पुल कहां है, जा मध्य साधु जांहि।। १३।।
गरीब, अछर धाम दम स्वास है, जाकूँ गहि ले चाल।
ऊठत बैठत साधि ले, रतन अमोली लाल।। १४।।
गरीब, मक्रतार मग कहत हूँ, सुनों संदेशा सैन।
पलक उलटि कर देख ले, अलल पंख गति गैन।। १५।।
गरीब, मक्रतार झीनी कला, अंत मींही मैदान।
देखे तो दीखै नहीं, लगी सुरति बरदवान।। १६।।
गरीब, सुंनि शिखर बरदवान है, जत सत सिंध जहाज।
ना तुझ से कछु होत है, सतगुरु ही कूँ लाज।। १७।।

गरीब, अगम गवन भगली कला, भगल विद्या नहीं पास।
जोरा तोरा है नहीं, किस विधि चढ़ो अकाश।। १८।।
गरीब, अरस अकाश अलील भुमि, बैठन को नहीं ठौर।
अविगत मजलसि महल बिन, देख और से और।। १६।।
गरीब, और कहूँ कछु और है, निरखि परखि परताय।
अंबर पर धरती धरी, शब्द मान सत भाय।। २०।।
गरीब, धरती ऊपर शेष है, शेष सहंस फुनि होत।
नीचे शेष बतावहीं, यह कछु भाख्या तोत।। २१।।
गरीब, क्या हमही बसै पताल में, नीचे सुरग विशेष।
लीलंबर लहरी कला, पृथ्वी ऊपरि देख।। २२।।
गरीब, उलट पुलट का ख्याल है, समझ न परही तोहि।
नीचे अम्बर सुरग भूमि, ऐसे दरस्या मोहि।। २३।।
गरीब, सतगुरु दोही सत कहूँ, या में चूक न रिंच।
हम देख्या सो साच है, और सकल प्रपंच।। २४।।
गरीब, और कहूँ एक और है, मान संदेशा मोर।
चंद सूर पृथ्वी नहीं, नहीं रजनी नहीं भोर।। २५।।
गरीब, ऊपरि मूल साखा तलै, गहबर फूलम फूल।
समाधान औह वृक्ष है, पड़े हिंडोले झूल।। २६।।
गरीब, बछरे कूँ सुरही जनी, दोझी मांघी मांहि।
छिन छिन बीच दुहावती, गोरस पी पी जांहि।। २७।।
ऊपर हसती तलै चहडोल, इस बानी का काढो मोल।
संख असरफी साखि बिकाहि, बानी हंसा ले ले जांहि।। २८।।
बानी का पाया नहीं मूल, करि हंसा चलने का सूल।
घर की ठौर बटोरा होहि, सतगुरु दोही कहि द्यौं तोहि।। २६।।
अगम पंथ का बुझौ भेव, मारग पाया न शुकदेव।
गोरख गुरवा शाखा मूल, अगम पंथ की निहचै भूल।। ३०।।
अगम पंथ मग कह्या **कबीर,** चौसठ जोगनि बावन बीर।
सुरति सुराही दीन्ही हाथ, लीजे गोरख सतगुरु दात।। ३१।।
गरीब, भूल्या सो भूल्या, अब समझना।
उर अंगूरी बाग लगाया, घालि नैंन में अंजना।। ३२।।
गरीब, अनंत किलोल उजन नहीं, एक आवै एक जांहि।
सतगुरु के दरबार में, केते बाटे खांहि।। ३३।।
गरीब, बलहीना बहु भारथी, असंख सुमेरु उडंत।
चौदह भुवन सुरग सब, कोई ना जानै अंत।। ३४।।
गरीब, अंत मंत उस कंत का, कोई ना जानै फेर।

आगे बहुते कथि गये, हम भी थाके हेर।। ३५।।
गरीब, हेरि हेरि सब हारिया, हिल मिल रहे हजूर।
सुंनि गगन गलियां बनी, निरख परख से दूर।। ३६।।
गरीब, तोल मोल नहीं माप है, मन मनसा के मांहि।
जैसे पौहप सुगंधि सुर, कीमत पाई नांहि।। ३७।।
गरीब, निर्गुण देवा हम लख्या, वार पार नहीं मध्य।
बिन बानै बिधना पुरुष, कहीं न पाई हद।। ३८।।
गरीब, हद बेहद किसकूँ कहो, औह तो अगम अथाह।
सब सौदा उस मंझ है, है शाहनपति शाह।। ३९।।
खिलखाना खूबी कला, अनंत विलास विनोद।
दास गरीब निधि नाम है, हम पारब्रह्म की गोद।। ४०।।

अथ जरना का अंग

गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं पृथ्वी तत्त थीर।
खोदे से कसकै नहीं, ऐसा बज्र शरीर।। १।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं अप तेज अनूप।
न्हावै धोवै थूक दे, तामस नहीं सरूप।। २।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं पौन तत्त परवान।
कुटिल बचन कोई कहो, मानै नहीं अमान।। ३।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं अग्नि तत्त में होय।
जो कुछ पड़ै सो सब जरै, बुरा न बाचै कोय।। ४।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं गगन तत्त गलतान।
बुरा भला बांचै नहीं, ता में सकल समान।। ५।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं तरुवर के तीर।
काटे चीरे कष्ट कूँ, तो भी मन है धीर।। ६।।
गरीब, वृक्ष नदी और साध जन, तिहुँवा एक सुभाव।
जल न्हावै फल वृक्ष दे, साध लखावै दाव।। ७।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं घनहर जल मेह।
सब ही ऊपर बरषता, ना दिल द्वेष स्नेह।। ८।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, जिनकी ल्यौं मैं दाद।
संग से कदे न बीछरूं, खेलौं आदि अनाद।। ९।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, जिनकी ल्यौं मैं दाद।
संग से कदे न बीछरूं, परम सनेही साध।। १०।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, जिनकी ल्यौं मैं दाद।

संग से कदे न बीछरूं, हरदम नाम अराध।। ११।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, सब अपने सिर लेय।
संग से कदे न बीछरूं, जो मुझ सरबस देय।। १२।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, जिन के हूँ मैं संग।
भक्ति पुरातम देत हूँ, चढ़त नवेला रंग।। १३।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, जिन के हूँ मैं साथ।
भक्ति पुरातम देत हूँ, पीड़ा लगे न गात।। १४।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, जिन के हूँ मैं तीर।
वज्र टूटते राखि हूँ, पीड़ा नहीं शरीर।। १५।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, सो साधू प्रवीन।
नाम रते निरबंध है, छाडै दोनूं दीन।। १६।।
गरीब, दीठी अन दीठी करै, सो साधू सिर पोस।
जो बीतै सो सिर धरै, देइ न काहूँ दोष।। १७।।
गरीब, दीठी कूँ कह देत है, जिन के दिल नहीं थीर।
जाके संग हम ना रहैं, सो कुटन बेपीर।। १८।।
गरीब, जरना जोगी जगतगुरु, जरना है जगदीश।
जरना आप अलेख है, राखौं अपने शीश।। १९।।
गरीब, जरना जोगी जगतगुरु, जरना अलह अलेख।
जरना कदे न डिगमिगै, जरना निश्चल देख।। २०।।
गरीब, जरना जोगी जगतगुरु, जरना आप करीम।
जरना हमरे उर बसै, जम नहीं चंपै सीम।। २१।।
गरीब, जरना जोगी जगतगुरु, जरना अलख अलाह।
जरना कूँ कुरबांन जां, जरना बे परवाह।। २२।।
गरीब, जरना जोगी जगतगुरु, जरना रमता राम।
जरना कूँ कुरबांन जां, जरना है निहकाम।। २३।।
गरीब, जरना पूर्ण ब्रह्म है, जरना कर्ता आप।
जो कछु लखै सो सब जरै, जरना है गरगाप।। २४।।
गरीब, जरै सो अखै निरंजन कहिये, जरै सकल में देव।
जरना जोगी गुरुमुखी, जरना अलख अभेव।। २५।।
गरीब, जरना जोगी जुग जुग जीवै, झरना परलौं जाय।
जरना जोगी जगतगुरु, पद में रहै समाय।। २६।।
गरीब, जरना जोगी जुग जुग जीवै, झरना परलौं होय।
जरना जोगी जगतगुरु, शब्द समाना सोय।। २७।।
गरीब, कसनी कसै कपूर ज्यूं, करनी करै करार।
जरना जोगी जगतगुरु, आप तिरै जग त्यार।। २८।।

गरीब, सिंह साध का एक मत, जीवत ही कूँ खाय।
यह जग मुरदफरोस है, पर द्वारै नहीं जाय।। २६।।
गरीब, सिंह साध का एक मत, भक्षन करै बिचार।
यह जग मुरदफरोस है, ना जांहि आंन द्वार।। ३०।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं अललपंख के अंग।
अंडा छुटै अकाश तैं, बहुरि मिलै सत्संग।। ३१।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं अललपंख के होय।
सतसंगति साबति रह्या, बिछरि गया दिन दोय।। ३२।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं चंदन के अंग।
मुख से कछु न कहत है, तन कूँ खात भुवंग।। ३३।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं पारस के होय।
लोहे से सोना करै, कहि न सुनावै कोय।। ३४।।
गरीब, ऐसी जरना चाहिये, ज्यूं पृथ्वी पति इंद।
मोती मुकता होत है, बूठे स्वांति समंद।। ३५।।
गरीब, जरना बिन जोगी अफल, वस्तु न लागै हाथ।
बिन जरना क्यों पाईये, भाट बकै प्रभात।। ३६ ।।
गरीब, कथनी से क्या होत है, करनी कारन मूल।
करनी कर जरना जरै, लगै पान फल फूल।। ३७।।
गरीब, कथनी में कथ है नहीं, करनी से रंग लाग।
करनी कर जरना जरै, सो जोगी बड़भाग।। ३८।।
गरीब, अनंत कोटि धुन होत है, अनंत कोटि झंनकार।
एती सुनि जरना जरै, सो जोगी करतार।। ३६।।
गरीब, अनंत कोटि धुन होत है, अनंत कोटि छवि रंग।
एती लख जरना जरै, सो साधू शब्द विहंग।। ४०।।
गरीब, अनंत कोटि बाजे बजैं, अनंत कोटि रवि तेज।
एती लख जरना जरै, सो साधू परसे सेज।। ४१।।
गरीब, साहिब से परचे भये, दुनिया बीच अदीन।
एती लख जरना जरै, सो साधू परबीन।। ४२।।
गरीब, साहिब से परचे भये, उस दरबार अबाद।
यहां न प्रगट होत है, परम सनेही साध।। ४३।।
गरीब, काछ बाछ प्रबन्ध है, सतवादी नर सूर।
साहिब के दरबार में, जिन मुख रहसी नूर।। ४४।।
गरीब, काछ बाछ कूँ कस रहै, सतवादी नर एक।
सांई के दरबार में, रहै जिन्हों की टेक।। ४५।।
गरीब, जरना साहिब संत है, जरना सतगुरु साच।

जरना पांचो तत्व है, ऐसी जरना काछ।। ४६।।
गरीब, जरै सो अविचल रहेगा, झरै सो परलौ मांहि।
जरना जोगी ना मरै, आवा गवन न जांहि।। ४७।।
गरीब, जरै सो निर्गुण नूर है, जरै जो निर्गुण तंत्त।
जरै सो साहिब आप है, जरै सो सत भगवंत।। ४८।।
गरीब, ज्ञान जोग कूँ सब जरै, जरै नाम निरधार।
अष्टसिधि नौनिधि कूँ जरै, आपे अधम उधार।। ४९।।
गरीब, भक्ति मुक्ति कूँ सब जरै, जरै जोग बैराग।
आपा ठहरावै नहीं, यौह मति पूर्ण भाग।। ५०।।
गरीब, दया धर्म सब कूँ जरै, जरै शील संतोष।
मनी कुफर व्यापै नहीं, पद मिल रहै अजोख।। ५१।।
गरीब, मुख से कहे सो सब जरै, श्रवण सुने सो सोय।
मन की धारन सब जरै, सो जन निश्चल होय।। ५२।।
गरीब, चार मुक्ति जरना जरै, भिसत बैकुंठ बिलास।
काया माया सब जरै, सो साधू निज दास।। ५३।।
गरीब, प्रपट्टन नगरी बसै, भेद न काहूँ देत।
कीड़ी कुंजर पोसता, अपना नाम न लेत।। ५४।।
गरीब, प्रपट्टन नगरी बसै, निराधार आधार।
लख चौरासी पोसता, ऐसी जरना सार।। ५५।।
गरीब, चौरासी भाने घड़े, खेलै खेल अनंत।
जाकी जरना देख कर, जे कोई साधे संत।। ५६।।
गरीब, चौरासी भाने घड़े, खेलै खेल अपार।
खान पान सब देत है, ऐसा समरथ सार।। ५७।।
गरीब, कहि न सुनावे और कूँ, जो कुछ करै सो लीन।
जाकी जरना देख करि, संत भये बेदीन।। ५८।।
गरीब, परचे कोटि अनंत है, अजमत कोटि अनंत।
कीमत कोटि अनंत है, जरना जोगी कंत।। ५९।।
गरीब, कच्छ मच्छ कूरंभ है, शेष धौल फुनि धार।
ब्रह्मंड कोटि अनंत हैं, रोम रोम की लार।। ६०।।
गरीब, येती लख जरना जरै, कारन कवन अलेख।
संत सूर जरना जरै, कोई हमरी जरना देख।। ६१।।
गरीब, धौल गगन गैनार है, वसुधा ब्रह्म विलास।
हमरी जरना देख करि, बुसत जरै कोई दास।। ६२।।
गरीब, निर्गुण सिरगुण सब कला, बहुरंगी बरियाम।
पिंड ब्रह्मंड पूर्ण पुरुष, अविगत रमता राम।। ६३।।

गरीब, अनंत कला कलधूत है, अनंत कला प्रवान।
ऐसी जरना तूं जरै, धंन कादर कुरबांन।। ६४।।
गरीब, सब जानत हैं जगतगुरु, कहि न सुनावै कोय।
ऐसी जरना तूं जरै, नहीं किसी से होय।। ६५।।
गरीब, जुगन जुगन के पाप सब, जुगन जुगन के मैल।
जानत है जगदीश तूं, जोर किये बदफैल।। ६६।।
गरीब, करमों कारण देख कर, मौन रहै मस्ताक।
तेरी जरना देख करि, संतों हासिल हाथ।। ६७।।
गरीब, जरना बड़ जाजुल है, जरना नाद समोइ।
ऐसी जरना तब जरै, जा तन शीश न होइ।। ६८।।
गरीब, जरना जरै सो जालिम जोगी, जरना जालिम जिंद।
जरना जरै सो आपै आपं, काल कर्म नहीं फंद।। ६९।।
गरीब, पड़दा कदे न पाड़िये, जे सिर बलै अंगीठ।
चाबक तोड़ौं चौपटे, गुनहगार की पीठ।। ७०।।
गरीब, पड़दा कदे न पाड़िये, जे सिर बलै अंगार।
चाबक तोड़ौं चौपटे, गुनहगार सिर भार।। ७१।।
गरीब, पड़दा कदे न पाड़िये, अपने ही सिर लेह।
चाबक तोड़ौं चौपटे, गुनहगार मुख खेह।। ७२।।
गरीब, पड़दा कदे न पाड़िये, जे सिर आई होइ।
चाबक तोड़ौं चौपटे, सार झड़ंता लोह।। ७३।।
गरीब, पड़दा कदे न पाड़िये, जे जाता हो शीश।
चाबक तोड़ौं चौपटे, हुकम सरे जगदीश।। ७४।।
गरीब, पड़दा कदे न पाड़िये, जे जाती हो जांन।
चाबक तोड़ौं चौपटे, नीर खीर कूँ छांन।। ७५।।
गरीब, येती जरना तब जरै, जब सतगुरु से होय भेंट।
बका बकाई करत हैं, जिन्हें दी गुरु फेट।। ७६।।
गरीब, जिनके अंतर लगन है, जोर कहेंगे राम।
बका बकाई करत है, आन झखे बेकाम।। ७७।।
गरीब, पृथ्वी का गुन लीजिये, औगुन उर नहीं धार।
जिनके दिल में एक है, दूजे कूँ दे डार।। ७८।।
गरीब, शब्द अनाहद जो रत्ते, दूजा नहीं उपाव।
सुंन मंडल में रमि रहे, ना जहां कर्म लगाव।। ७९।।
अनहद मंडल बाजहीं, बारह मास अचंभ।
दास गरीब कबीर कूँ, भक्ति दई आरंभ।। ८०।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

अथ हैरान का अंग

गरीब, शीश चरण बिन चलत है, बिना दस्त बख्शीश।
बिन ही रसना गावता, सो बसै हमारै शीश।। १।।
गरीब, सिर पर तो आकाश है, चरणों तलै जमीन।
जाका खोज लखाईये, कहां गया सिन्धु में मीन।। २।।
गरीब, सतगुरु खोज लखाईया, गुलजारा दिया हाथ।
अजर अमर विनसै नहीं, असंख जुगन जुग साथ।। ३।।
गरीब, ऊभा तिरछा है नहीं, बैठया नहीं विशाल।
मन इच्छा फल देत है, कहीं कोड़ी कहीं लाल।। ४।।
गरीब, अधर दुलीचा अधर घर, अधर बिंब बहु तेज।
अधर मुहल्ला लीजियै, अधर सिंहासन सेज।। ५।।
गरीब, आधी साखी सिर कटै, सारा शब्द न बूझिया।
अक्षर लाख पढ़े क्या होई, मालिक तख्त न सूझिया।। ६।।
गरीब, सुरति निरति लागी नहीं, मुख से जपिया राम।
दोजख धक्के खाहिंगे, बिना सुरति के काम।। ७।।
गरीब, आठ पहर आगे रहै, पलक बिछरि नहीं जाय।
ऐसी मूरति अजब है, तिल में रही समाय।। ८।।
गरीब, मन बुधि सेती अगम है, सुरति निरति नहीं जाय।
पिंड ब्रह्मंड से न्यार है, सो पद दियो लखाय।। ९।।
गरीब, सुंन समाना गगन में, गगन समाना सुंन।
पुंन समाना पाप में, पाप समाना पुंन।। १०।।
गरीब, पुंन पाप से रहित है, सो हंसा निहबीज।
परमहंस पूर्ण पुरुष, अविगत अलख अछीज।। ११।।
गरीब, पिंड प्राण नहीं तास के, दम देही नहीं सीन।
नाद बिंद आवै नहीं, पांच पच्चीस न तीन।। १२।।
गरीब, पदम झलकै सुंन में, बहुबानी विस्तार।
आड़ा पड़दा खुलि गया, बिन चिसम्यौं दीदार।। १३।।
गरीब, नैंन मूंदि कर देख ले, निर्गुण झलकी लोय।
सब गति मैं हैरान हूँ, एक कहूँ अक दोय।। १४।।
गरीब, नैंन मूंदि कर देख ले, निर्गुण झड़ का मूल।
बाहर भीतर जगमगै, बिन डांडी का फूल।। १५।।
गरीब, सोला कला सुभांन गति, जगमग जगमग होइ।
अनरागी पद परमहंस, राख्या सुरति समोइ।। १६।।
गरीब, सुरति निरति का बास कित, कहां महल विश्राम।
बिन डांडी का फूल कित, कित है अविगत राम।। १७।।

गरीब, तन के अंदर मन बसै, मन अंदर चित्त चोख।
सुरति निरति जहां मूल है, त्रिकुटि फूल अजोख।। १८।।
गरीब, चितघन चात्रक ज्यूं रटै, ध्यानं चन्द्र चकोर।
सो सूक्ष्म के महरमी, उड़े गुडी बिन डोर।। १६।।
गरीब, सूक्ष्म मूरति कौन है, कौन कहो बैराट।
विस्वरूप किस कूँ कहो, खोलो औघट घाट।। २०।।
गरीब, शेष शीश पर सुरति धरि, लघु मूरति जहां देख।
दीरघ के है शीश पर, लीलांबर जहां भेख ।। २१।।
गरीब, पीतांबर जहां परसि ले, शंख चक्र मुकताल।
भृगलता कुंडल कला, यौह सूक्ष्म का ख्याल।। २२।।
गरीब, लघु से दीरघ होत है, दीरघ से लघु फेर।
तिल में तालिब बसत है, सुई समान सुमेर।। २३।।
गरीब, चतुर्भुजी सूक्ष्म कला, सहंस भुजा बैराट।
कोटि भुजा विश्वरूप है, गुरु लखाई बाट।। २४।।
गरीब, परमानंद पद परसि ले, शंख भुजा सैलान।
तीनों मूरति खूब हैं, अविगत गति कुरबान।। २५।।
गरीब, भगल विद्या पावे नहीं, बिकट पंथ वह गैल।
सुर नर मुनि जन थकत हैं, संत करें जहां सैल।। २६।।
गरीब, छिन में चढ़े आकाश को, छिन में जाय पताल।
छिन छिन उर में देख ले, छिन में नैनों नाल।। २७।।
गरीब, आड़ा पड़दा खुलि गया, जहां चाहे तहां देख।
रुंड मुंड मौले खड़ा, जाके रूप न रेख।। २८।।
गरीब, अरस कुरस में गरक है, पांच तत्व गलतान।
सुंन गगन में रमि रह्या, नहीं जिमी असमान।। २६।।
गरीब, बाजे बजें असंख धुनि, लहरी लहर समंद।
बेचगूंन चिंतामनी, देखत है नहीं अंध।। ३०।।
गरीब, शब्द घटा घन गरज हीं, दिल दामनि दमकार।
बाहर भीतर देख ले, असंख कला झमकार।। ३१।।
गरीब, इसतें आगे क्या कहूँ, अकथ कथा अनराग।
कोटि सिद्धि आगे खड़ी, मुझ अधिका बैराग।। ३२।।
गरीब, लोक रचन एक सिद्धि है, सो ब्रह्मा कूँ दीन।
भक्ति हेत जान्या नहीं, यह सौदा क्या कीन।। ३३।।
गरीब, नव अवतार सरस कला, असुर सिंघारे आन।
भक्ति मुहल्ला मालवै, रह्या परेरा जांन।। ३४।।
गरीब, शंकर से सुरज्ञान हैं, प्रलय करैं प्रेत।

तीनों पदई खूब है, परसे लोक न सेत।। ३५।।
गरीब, सुर नर गन गंधर्व सबै, मुनिजन महल न जांहि।
सेत लोक नहीं पाईये, उलझे तीनों मांहि।। ३६।।
गरीब, चित्रगुप्त और धर्मराय, अर्धंगी ओंकार।
इन पांचों सिर पैर दे, जब पावै दीदार।। ३७।।
गरीब, सेत द्वीप सेत लोक है, सेत तख्त गुलजार।
सेत चौंर जहां होत है, सेत भँवर भनकार।। ३८।।
गरीब, रिमझिम रिमझिम रंग है, नूर जहूर खवास।
सतगुरु मिले कबीर से, जब पावै हंसा वास।। ३९।।
गरीब, शंख कला कूँ छाडि के, एक नाम से लाग।
शंख कला है नाम में, क्या गृही बैराग।। ४०।।
गरीब, नाम नाम सब को कहे, नाम न चीन्हें कोइ।
नाम बिहूना नाम है, निश्चय ही में जोइ।। ४१।।
गरीब, समाधान एक वृक्ष है, हदफ हिरंबर लील।
बांधे कमंद सुरति का, एक पलक नहीं ढील।। ४२।।
गरीब, सुरति सुहागनि सुंन में, हरदम पीव के पास।
जित चाहे तित ले चले, सुरति गुरु पीव दास।। ४३।।
गरीब, सुरति सिंहासन निर्मला, मलयागिरि मकरंद।
सुरति निरति के अंतरे, अविगत शब्द समंद।। ४४।।
गरीब, सुरति निरति दो हंसनी, मन हंसा मध्य मेल।
त्रिवैणी तट न्हात है, अगम अगोचर खेल।। ४५।।
गरीब, उजलि सरोवर उजल जल, उजल हंस तिस धाम।
उजल कुंज क्रीला करैं, सुख सागर विश्राम।। ४६।।
गरीब, सुखसागर की लहर में, हंसा रहें समाय।
अजर अमर धुनि आरती, अनहद नाद बजाय।। ४७।।
गरीब, गलताना गुलजार पद, शंख कला कलधूत।
मौला मगन मुरारि है, अनरागी अनभूत।। ४८।।
गरीब, सुख दुःख भुगतै जीव सो, लोकपाल लग जांन।
ओंकार अरु धर्मराय, वहां लग खैंचा तांन।। ४९।।
गरीब, सतपुरुष अनभूत है, सकल लोक सब ठाम।
एक पलक नहीं बिसरिये, रटिये आठों जाम।। ५०।।
गरीब, अचल बिसंभर वसि रह्या, ऊजड़ बसती मांहि।
हरि दरिया सूभर सदा, रिजमां खाली नांहि।। ५१।।
सब पदई का मूल है, सकल सिद्धि हैं तीर।
दास गरीब सतगुरुष भज, अविगत कला कबीर।। ५२।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

अथ लै का अंग

गरीब, लै लागी तब जानिये, जग से रहै उदास।
नाम रटै निरभय कला, हरदम हीरा स्वास।। १।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, जग से रहै उदास।
नाम रटै निरदुंद होय, अनहद पुर में बास।। २।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, हरदम नाम उचार।
एकै मन एकै दिशा, सांई के दरबार।। ३।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, हरदम नाम उचार।
एकै मन एकै दिशा, खड़ा रहै दरबार।। ४।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, हरदम नाम उचार।
धीरे धीरे होयगा, औह अलह दीदार।। ५।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, हरदम नाम हनोज।
बिकट पंथ पावै नहीं, मीनी के सा खोज।। ६।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, हरमद नाम हनोज।
मैं मेरी कूँ पटक दे, सिर से डारों बोझ।। ७।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, लै की लगे दुकान।
लै लंगर सौदा करै, छाड महातम मान।। ८।।
गरीब, लै लागी तब जानिये, लै की लगै दुकान।
बखत परै सौदा करै, कोठे डारै ज्ञान।। ९।।
गरीब, महंगा सस्ता देख ले, सौदा करै बिचार।
दुगने तिगुने चौगुने, करि है साहूकार।। १०।।
गरीब, महंगा सस्ता देख ले, सौदा करै समोय।
दुगने तिगुने चौगुने, कर ले जाता कोय।। ११।।
गरीब, पूँजी साहूकार की, बनजारा संसार।
पूंजी माल गवाईया, नाहक बहै बिगार।। १२।।
गरीब, ये प्रपट्टन ये गली, बहुरि न देखै आय।
सतगुरु स्यौं सौदा हुआ, भर ले माल अघाइ।। १३।।
गरीब, ये प्रपट्टन ये गली, बहुरि न देखै आय।
सतगुरु स्यौं सौदा हुवा, लीजै माल लदाय।। १४।।
गरीब, ये मुकती निज पीठ है, ये मुकते बैजार।
सतगुरु स्यौं सौदा भया, भर ले बालद लार।। १५।।
गरीब, राम नाम निज सार है, राम नाम निज मूल।
राम नाम सौदा करो, राम नाम नहीं भूल।। १६।।
गरीब, इस दुनिया में आय कर, इन चारों को बंध।
काम क्रोध छोह चूहरा, लोभ लपटिया अंध।। १७।।

गरीब, मोह मवासी पकरि ले, ममता का सिरताज।
दुरमति दामनगीर होय, निश्चल नगरी राज।। १८।।
गरीब, ज्ञान योग और भक्ति ले, शील संतोष समाधि।
लै लागी तब जानिये, छूटै सकल उपाधि।। १६।।
गरीब, ज्ञान योग और भक्ति ले, शील संतोष विवेक।
लै लागी तब जानिये, जिब दिल आवै एक।। २०।।
गरीब, गगन गरज भाठी चवै, हीरा घन टकसार।
लै लागी तब जानिये, उतरै नहीं खुमार।। २१।।
गरीब, गगन गरज भाठी झरै, चोखा फूल चवंत।
सिर के साटे पाईये, कोई साधू जन पीवंत।। २२।।
गरीब, गगन गरज घन बरष हीं, बाजैं दीरघ नाद।
अमरापुर आसन करै, जिनके मते अगाध।। २३।।
गरीब, गगन गरज घन बरष हीं, बाजै अनहद तूर।
लै लागी तब जानिये, सनमुख सदा हजूर।। २४।।
गरीब, गगन गरज घन बरष हीं, दामिनि खिमें अखंड।
दास गरीब कबीर है, सकल दीप नौ खंड।। २५।।

अथ निहकर्मी पतिव्रता का अंग

गरीब, निहकर्मी पतिव्रत सो, आन उपाव न मूल।
एक पुरुष से परसि है, पतिव्रता समतूल।। १।।
गरीब, निहकर्मी सो जानिये, एक पुरुष से रात।
निरदावै निर्बैरता, ना दूजे से बात।। २।।
गरीब, स्वाल सुखन किस कूँ कहै, पतिव्रता सो नार।
हुकम अदूल न मेट हीं, सो पतिव्रता पार।। ३।।
गरीब, घर आंगन इक सार है, बचन उलंघ न होय।
आन खसम से औलने, पतिव्रता है सोय।। ४।।
गरीब, आन खसम से हँसत है, चंडी चोर चुड़ैल।
जिनसे क्या घर बास है, घर में बसै घुड़ैल।। ५।।
गरीब, एक पुरुष अपना सही, दूजा आन अनीत।
अपने पीव से रातिये, और सिला सब भीत।। ६।।
गरीब, निहकर्मी घर में रहै, पतिव्रता सो नार।
आन पुरुष से प्रीतड़ी ना रखिये घरबार।। ७।।
गरीब, पतिव्रता सूनी नहीं, रखवाले हैं राम।
कल्पवृक्ष करुणामई, चौकी आठों जाम।। ८।।
गरीब, पतिव्रता पानी चली, पंनहीं नाहीं पाय।

वस्त्र अंग बिनंग है, आपै देत उढ़ाय।। ९।।
गरीब, पतिव्रता पग जिमी पर, जो जो धरि हैं पाव।
समरथ झाड़ू देत हैं, ना कांटा लगि जाव।। १०।।
गरीब, पतिव्रता भूखी रहै, वहां समरथ घर सोच।
ऐसे पति की स्त्री के, काल कर्म होंहि मोच।। ११।।
गरीब, पतिव्रता बतियां करै, आन पुरुष मुख जोड़।
साहिब बहुत रिसात है, पल में बैठे तोड़।। १२।।
गरीब, नैनों आन न देखही, श्रवन सुनै नहीं बैंन।
रसना से बोलै नहीं, सो पतिव्रता ऐंन।। १३।।
गरीब, अपने पिय के पलंग दरि, रहै जिमी से लाग।
सो पिय की सेजां चढ़ै जिन के मोटे भाग।। १४।।
गरीब, पतिव्रता रु सुहेलड़ी, सेवन अधिक अपार।
पतिव्रता भावै नहीं, चूंम चटक सिंगार।। १५।।
गरीब, सदा अलौनी रहति है, चंचल चपल न चाल।
चोरी धन नहीं खात है, मुसि ल्यावे कोई लाल।। १६।।
गरीब, लाल मुसै घर में धरै, सो पतिव्रता नांहि।
हक्क हलालं खात है, जो साहिब दर जांहि।। १७।।
गरीब, निंद्या विंद्या बादना, बैर विरोध बिकार।
चोरी जारी करत है, गये जमाना हार।। १८।।
गरीब, कुटल खलीलों किड़किड़ी, है कुत्ते का काम।
देख भुसै धन और का, कदे न निश्चय नाम।। १९।।
गरीब, पतिव्रता के ना उठै, भरम कर्म की सूल।
आन उपासी जलत है, परी जुगन जुग भूल।। २०।।
गरीब, पतिव्रता बर पाईया, पारब्रह्म सा कंत।
सब जग आन उपास है, पतिव्रता है संत।। २१।।
गरीब, संत सही पतिव्रत है, अडिग अधिक विश्वास।
तन मन धन सब अरप हीं, जिनकी होय क्यूं हांस।। २२।।
गरीब, संत दिवाने दरस के, जुग जुग भक्ति बिलास।
सदा राम दर रहत हैं, मन में मोटी आस।। २३।।
गरीब, राम करै सो होत है, अपने सिर नहीं लेह।
अपने सिर जो लेत है, तहां मुगदर परि हैं गेह।। २४।।
गरीब, रावण अपने सिर लई, विभीषण लई न कोइ।
दस मस्तक रावण कटे, वै लंकपति थे सोई।। २५।।
गरीब, औह राज विभीषण कूँ दीया, निरबानी निरबंच।
प्रहलाद भक्त पतिव्रत था, फूकें लगी न अंच।। २६।।

गरीब, हिरनाकुस मैं मैं करै, कोटि उनंचा राज।
ऐसे नरसिंह ले गया, ज्यूं तीतर नैं बाज।। २७।।
गरीब, उत्तानपाद के ध्रुव हुते, पंच बरष प्रवेश।
सुरगापुर आसन हुये, नारद मुनि उपदेश।। २८।।
गरीब, द्रौपदी के पतिव्रत था, निश्चय गहर गंभीर।
दुःशासन पल्लू गहे, जब हुये अनंतों चीर।। २९।।
गरीब, दुर्योधन बहकाईया, दुर्वासा दरवेश।
पंडौ जाई श्राप दे, होंहि छयमान नरेश।। ३०।।
गरीब, सहंस अठासी जोड़ि कर, दुर्वासा पड़े आय।
भिक्षा भोजन दीजिये, सुनि हो पंडौ राय।। ३१।।
गरीब, पांचों पंडौ सकुच करि, गये द्रौपदी पास।
सहंस अठासी दल परे, इनकी पुरवौ आश।। ३२।।
गरीब, द्रौपदी पंडौ से कहै, वे भक्तन के ईश।
कैसे पौंहचे यज्ञ में, दूर धाम जगदीश।। ३३।।
गरीब, पंडौ तो कर जोरि करि, द्रौपदी के आधीन।
ऋषि दुर्वासा श्राप दे, फिर हम होत कुलीन।। ३४।।
गरीब, सुन हो पंडौ बात सुन, सुन अर्जुन सहदेव।
धर्म युधिष्ठिर पूछि ल्यौ, मैं क्या जानौं भेव।। ३५।।
गरीब, भीम निकुल दो संत है, ये क्यों न लेहि बुलाय।
वे अर्जुन के अरथ में, सब दिन बैठे आय।। ३६।।
गरीब, सहदेव कहै द्रौपदी, मानो बचन विलास।
वे तुम्हरे संगीत है, हरदम तुमरे पास।। ३७।।
गरीब, सुन हो पंडौ बात सुन, वे अविनाशी दूर।
विकट पंथ द्वारामती, को जा कहै हजूर।। ३८।।
गरीब, अर्जुन कहै द्रौपदी, सुन अर्धंगी नार।
ऋषि दुर्वासा वज्र से, तुमही लेहु उबार।। ३९।।
गरीब, धर्म युधिष्ठिर फिर कहै, सुन तूं द्रौपदी देव।
हमरे तो तुम कृष्ण हो, अविगत अलख अभेव।। ४०।।
गरीब, भीम भारथी क्या कहै, बोले वचन कराल।
तुम नहीं जानों द्रौपदी, ये दुर्वासा है काल।। ४१।।
गरीब, नकुल करै प्रणाम, सुनों अर्धंगी नारी।
वे दुर्वासा देव गुरु, है कृष्णं मुरारी।। ४२।।
गरीब, मैं क्या जानौं भेव, निकुल क्यों नाक चढ़ावै।
वे भगतन के ईश, कहां मेरे मुजरे आवै।। ४३।।
गरीब, नाटी द्रौपदी दूर, पंडवौं किया अंदेशा।

कहो कहा इब होय, दूर नगर औह देशा।। ४४।।
गरीब, खैंचा तानी माहीं, सूरज के रथ छिपैंगे।
दुर्वासा दुरशीश देत, हम सबै खपैंगे।। ४५।।
गरीब, द्रौपदी हँसी विचार, पंड घर भई खुश्याली।
दुर्योधन सिखलाय, सकल याह सिन्या टाली।। ४६ ।।
गरीब, धर्म युधिष्ठिर यूं कहै, सुनों द्रौपदी तुम मोषा।
एक टोकने बीच, जीमहि तीनूं त्रिलोका।। ४७।।
गरीब, मैं पंच भरतारी नारि, निरंजन की हूँ दासी।
पंडौ के घर सोग, देख मुझ आई हांसी।। ४८।।
गरीब, मैं सूरज की सेव करी, कर जोरि बिनानं।
दिया बर्तन बकशीश, द्रौपदी लीजै दानं।। ४९।।
गरीब, जीमहि तीनों लोक, सकल सब सिन्या सारी।
गन गंधर्व सब देव, कृष्ण कुबेर भंडारी।। ५०।।
गरीब, जीमहि शंकर शेष, ब्रह्मा सरकादिक साथा।
नारद शारद संत, जीमहीं द्रौपदी के हाथा।। ५१।।
गरीब, जीमहि कुंता पंड, सकल रस दाति बिनानी।
हम लई रसोई जीमि, सुनौ एक पंड कहानी।। ५२।।
गरीब, इतने भोजन ना करूं, इतने जीमहि लोक।
मैं हूँ अभख अभाखनी, ठारा खूहनि सोख।। ५३।।
गरीब, फिर पंडौ कर जोरि, खड़े द्रौपदी के आगे।
मानों बचन हमार, नहीं तोरे पीता लागे।। ५४।।
गरीब, सुन देवी एक बात, कहूँ मैं तुमसे बानी।
तुम्हरे शब्दे टेर, आवैंगे सारंगपानी।। ५५।।
गरीब, द्रौपदी भई खुशाल, जगदगुरु समरथ स्वामी।
करो कल्पना दूर, विपत्ति कैरौं घर जामी।। ५६ ।।
गरीब, आव भक्त के ईश, महा देवन के देवा।
मुझ दासी की विपत्ति, निबारों निश्चय भेवा।। ५७।।
गरीब, उर में अराधन कीन्ह, द्रौपदी दिया संदेशा।
पतियां पहुंची जाय, दूर कर विपत्ति अंदेशा।। ५८।।
गरीब, शंख चक्र गदा पदम, मोहन बैजंती माला।
कानों कुण्डल भृगलता, आये धर रूप विसाला।। ५९।।
गरीब, पीतांबर पहराव, कौसतिमणि माथे साजे।
मुरली मदन मुरारि, नाद धुनि अनहद बाजे।। ६०।।
सेत कला संगीत, आये ईशन के ईशा।
मन मंदल अरथ विमान, जड़े लालन जगदीशा।। ६१।।

गरीब, असंख कला छवि भान, आये देखो बृजबाला।
पंडौ करें जुहार, अपने हैं मोटे ताला।। ६२।।
गरीब, एक पलक पल मांहि, गमन कीन्हा जगदीशं।
द्रौपदी मंगल चार, पंडौ धरि चरणों सीसं।। ६३।।
गरीब, कहो द्रौपदी बात, कहां है विपत्ति तुम्हारे।
तुम्हरी पतियां बेग, गई दरबार हमारे।। ६४।।
गरीब, कहां कहूँ जगदीश, सकल जानराय बिनांनी।
दुर्जोधन कूँ कुमति, दई दुर्बासा बानी।। ६५।।
गरीब, पंडौ घर प्रसाद, नहीं पावैगा तोही।
दीजो बेगि श्राप, तहां छयौ जांहि है सोई।। ६६।।
गरीब, दुर्वासा ऋषि देव, सहंस अठासी आये।
दीजै इन्हे प्रसाद, जानराय तोहि बुलाये।। ६७।।
गरीब, सुनत हंसे जगदीश, द्रौपदी हम क्या जानैं।
प्रथम करैं अहार, तिबे औरन कूँ मानैं।। ६८।।
गरीब, जिबै द्रौपदी मंदिर कलश, सब दिये दिखाई।
तुम देखो जगदीश, कहीं भोजन नहीं राई।। ६९।।
गरीब, ढूंढ द्रौपदी ढूंढ, कहीं भोजन का किनका।
पहली करौं अहार, पीछे मेटौं मुनि जन की तिरखा।। ७०।।
गरीब, जबै द्रौपदी देखि, टोकने पत्र पाया।
घोल पिया जगदीश, वहां मुनिजन अफराया।। ७१।।
गरीब, भीम भारथी जाहु, मुनीजन लेह बुलाई।
हुई रसोई त्यार, पलक नहीं ढील लगाई।। ७२।।
गरीब, भीम भारथी गये, ऋषिन सब लोटत फिरहीं।
दुर्वासा ऋषि देव, चलो तुम भोजन करहीं।। ७३।।
गरीब, पनवारे भये त्यार, रसोई ढील न कीजै।
ऋषि दुर्वासा देव, मंदिर पग हमरे दीजै।। ७४।।
गरीब, दुर्वासा भये क्रोध, भीम मैं जानी नाहीं।
तुम राखे जगदीश, शत्रु तुम्हरे छय जाहीं।। ७५।।
गरीब, दुर्वासा भये दयाल, भीम भलि भक्ति तुम्हारे।
धंनि द्रौपदी धंनि पंड, भोजन कीन्हे अतिभारे।। ७६।।
गरीब, धंनि अविनाशी पुरुष, कृष्ण कर्ता है सोई।
एक साग पत्र रसपान, सकल खुध्या सब खोई।। ७७।।
गरीब, तुम सदा रहौ संगीत, बचन दुर्वासा भाखै।
ठारा खूहनि गलत, तुमें अविनाशी राखै।। ७८।।
गरीब, यह दिक्षा ऋषि देव, चले जब किया पियाना।

प्रकम्या प्रणाम करी, जो हथिनापुरी अस्थाना।। ७६।।
गरीब, अंबरीष पतिव्रत, एकादश ज्ञान विचारा।
जहां दुर्वासा जाय, किया है मल्ल अखारा।। ८०।।
गरीब, अंबरीष अधिकार, मिले दुर्वासा जाई।
कीन्हा आदर भाव, शीश चरणों धरि भाई।। ८१।।
गरीब, धंनि हमरे बड़भाग, हमारे आये देवा।
करि तर्पण अस्नान, रसोई बिंजन मेवा।। ८२।।
गरीब, दुर्वासा अस्नान, करन की कीन्ही त्यारी।
वहां अवसर गया बीत, हुई जदि बरिया भारी।। ८३।।
गरीब, अंबरीष से आंट करी, दुर्वासा पाकी।
छाड एकादस बरत, गल्ल कछु ऐसे भाखी।। ८४।।
गरीब, ब्रह्मज्ञान गोहराइ, करूं अनभय से मेला।
तुरिया पद में बास, एकादस झूठा हेला।। ८५।।
गरीब, पद परसी अंबरीष, अनाहद राता डोलै।
ब्रह्म ज्ञान गलतान, ऋषिन से अधिका बोलै।। ८६।।
गरीब, असलि एकादस बरत, संयम कर ध्यान लगावै।
यह दुनिया की रीत, काहे निन्द्या करवावै।। ८७।।
गरीब, छाड एकादस बरत, वचन तूं मानि हमारा।
चक्र सुदर्शन शीश, काटि ले जात तुम्हारा।। ८८।।
गरीब, गुस्से हुये ऋषीश, लगी दुर्वासा तांई।
चक्र सुदर्शन हुकम किये, जब ढील न लाई।। ८९।।
गरीब, अंबरीष पग छूंहि, चले तब चक्र अपूठे।
खड़े हुये ऋषि देव, आसन दुर्वासा ऊठे।। ९०।।
गरीब, चक्र सुदर्शन बेग, मार करता ही आया।
ऋषि दुर्वासा भागि, तीन लोकन में धाया।। ९१।।
गरीब, किन्हे न राख्या स्यांम, भक्ति का द्रोही दारा।
अमरपुरी अस्थान, गये साहिब दरबारा।। ९२।।
गरीब, जहां बैठे विश्वनाथ, विसंभर कृष्ण मुरारी।
गण गंधर्व सुर संत, मजलसि है अधकी भारी।। ९३।।
गरीब, जहां ऋषि करी फिलाद, चक्र मोहि मारत आवै।
मैं आया तुम स्यांम, विसंभर नाथ छुटावै।। ९४।।
गरीब, बूझे विसंभर नाथ, चक्र क्यूं चोट चलाई।
क्या गुसताखी कीन्ह, कथा मोहि बेगि सुनाई।। ९५।।
गरीब, अंबरीष मृत लोक, बसै एक राजा सूचा।
करै एकादस बरत, ज्ञान कछु अधिका ऊंचा।। ९६।।

गरीब, हम कीन्हा ब्रह्मज्ञान, उन्हें सरगुण उपदेशा।
छाड एकादस बरत, कह्या हम लग्या अंदेशा।। ९७।।
गरीब, हम दीन्हा चक्र चलाइ, काटि सिर इसका लीजै।
औह चक्र पग छूहि, उलट कर दिगबिजै कीजै।। ९८।।
गरीब, हम भागे भय खाइ, चक्र छूटे गैनारा।
तीन लोक में गवन किये, राखे नहीं किन्हें अधारा।। ९९।।
गरीब, अब आये तुम स्यांम, जानराइ जानत सोई।
हम कूँ ल्यौ छिपाइ, चक्र मारै नहीं मोहि।। १००।।
गरीब, हँसे विसंभर नाथ, ऋषिन तूं ज्ञान ही हीना।
अंबरीष दरबार तुम्हों, क्यूं दिगबिजै कीना।। १०१।।
गरीब, अंबरीष रनधीर, सती सूरा सतवादी।
तुम दुर्वासा देव, फिरो ज्ञानन के बादी।। १०२।।
गरीब, निर्गुण सिरगुण भक्ति, सबै उनके हैं देवा।
उर में रहे छिपाइ, कहै कौनन से भेवा।। १०३।।
गरीब, वे राजा प्रवीन, ब्रह्मगति जानैं सारी।
पद परसी परलोक, भक्ति के हैं अधिकारी।। १०४।।
गरीब, अंबरीष अनराग, अनाहद राते ग्याता।
परमानंद प्रवीन, पुरुष से करते बाता।। १०५।।
गरीब, सील संतोष विवेक, दया दल साजै सैना।
चक्र सुदर्शन शीश बिराजै, बोलत मुख अमृत बैना।। १०६।।
गरीब, तुम ऋषि जावो बेगि, अंबरीष दरबारा।
दुंद बाद मिट जांहि, होत तुम्हरा निस्तारा।। १०७।।
गरीब, भक्ति द्रोह तुम कीन, कला जानी नहीं उनकी।
वे प्रबल प्रवीन, कमी नाहीं जहां गुण की।। १०८।।
गरीब, लीला अगम अगाध, साध है समरथ साचे।
अमरपुरी निति जांहि, अनाहद पुर कूँ काछे।। १०९।।
गरीब, तुम दुर्वासा दुंद दोष, मेटो सब मन के।
अंबरीष दरबार, ज्ञान देखो सनि सनि के।। ११०।।
गरीब, चरन कमल चित्त लाइ, पड़ौ उनके दरबारा।
वे कल्पवृक्ष सरूप, कर्म के मोचन हारा।। १११।।
गरीब, जब ऋषि चले बिचारि, चूक हमरी ही निकसी।
चक्र सुदर्शन गैल जान, अंबरीष हि बकसी।। ११२।।
गरीब, बोले राजा बैंन, सुनो दुर्वासा देवा।
ना कछु हमरे दोष, तुम्हारा तुमको लेवा।। ११३।।
गरीब, राजा द्यौह आसीस, पीठ पर हाथ लगावो।

चक्र सुदर्शन पकड़ि, धरो मेरे मस्तक लावौ।। ११४।।
गरीब, अंबरीष कूँ चक्र पकड़ि शीतल सिर कीना।
जब ऋषि दई अशीस, सही राजा प्रवीना।। ११५।।
गरीब, मोरध्वज पतिव्रत, जगि आरंभन कीना।
ताम्रध्वज कूँ राज तिलक, टीका सब दीना।। ११६।।
गरीब, देश देश के भूप, सकल आये जगि माहीं।
बाजैं बीना ताल, शंख धुनि गिनती नाहीं।। ११७।।
गरीब, गन गंधर्व ऋषिदेव, मुनीसर आये मांहीं।
केते राजा भूप, चले छत्रौं की छांहीं।। ११८।।
गरीब, सैना अनंत अपार, राग रंग बहुत बिलासा।
जहां बिसंभर नाथ, गये देखन तमासा।। ११९।।
गरीब, धरि योगी का रूप, बाग में उतरे आई।
रावल बने रंगील, सिंह माया उपजाई।। १२०।।
गरीब, सेली सिंगी नाद, बजावै बहु बिधि बाजा।
रावल कूँ सब देख, तमासे आये राजा।। १२१।।
गरीब, देश देश की मिहरी, मोतियन थाल चढ़ावै।
बहुरंगी अवधूत, पत्र नाहीं घलवावै।। १२२।।
गरीब, लड्डुवा पेड़े पान, मिठाई चढ़ै अपारा।
एक बाजे करताल, बीन सुर राग अपारा।। १२३।।
गरीब, मस्तक चढ़ी भभूति, जमीन बिछी मृगछाला।
अगर नाद सुर पूरि, रहे बहुरंगी बाला।। १२४।।
गरीब, चींदी गुदरी लाय, रहे जिन्दा जगदीशा।
हाथ डुगडुगी डाक, डौरुओं लगी कसीशा।। १२५।।
गरीब, नाचहि बहु विधि नाच, खेल कलधूत अपारा।
कोई न जाने भेव, लखै कोई लखने हारा।। १२६।।
गरीब, गूदरिया गलतान, गलीचे बैठत नांही।
सुर नर मुनि जन संत, सबै देखन कूँ जांही।। १२७।।
गरीब, धरि बहुरंगी रूप, कहां से आये जोगी।
सप्तपुरी के ताल, बजावैं सब रस भोगी।। १२८।।
गरीब, कानों मुंद्र बिलौर, गले में डारै सेली।
कमरि मुतंगा खैंचि, रहे हैं रावल खेली।। १२९।।
गरीब, मोरध्वज कूँ खबर हुई, ताम्रध्वज आये।
एक रावल उतरे बाग, तमासा अचरज ल्याये।। १३०।।
गरीब, मोतियन थाल भराय, चले राजा और रानी।
ताम्रध्वज लिया संग, सुनह रावल की बानी।। १३१।।

गरीब, मोरध्वज को लेट, करी प्रणाम दण्डौतं।
रे राजा अज्ञान, धरौ तुम शीश करौतं।। १३२।।
गरीब, हमरा सिंह शैतान, सही है मानुष खाना।
पलक ढील नहीं होय, करो तर्पण अस्नाना।। १३३।।
गरीब, सत लंघना है सिंह, सही तुम निश्चय माना।
अरपन कर दे देह, तुझे सुरगापुर जाना।। १३४।।
गरीब, हम रावल अवधूत, अकल के दुश्मन दाना।
कोई पकड़ि ल्यावै पलदार, सिंह हमरा नहीं खाना।। १३५।।
गरीब, ताम्रध्वज कूँ खाय, मोरध्वज याह मन मानी।
चौथे कूँ नहीं भखे, तीसरे खात है रानी।। १३६।।
गरीब, राजा अधिक उछाह, मोरध्वज मन में राता।
रानी राज अरु पाट, छाड ताम्रध्वज माता।। १३७।।
गरीब, पुत्र कहै सुन पिता, सुनों एक हमरी बानी।
मात पिता की सेव, कछु हम नांहि जानी।। १३८।।
गरीब, हम सिर धरो करौंत, देह तुम लेखे लागे।
पुत्र पिता में खैंचि, देख रानी अनुरागे।। १३९।।
गरीब, ताम्रध्वज कर राज, तिलक हम तुम कूँ दीन्हा।
हम सिर धरो करौंत, पिंड यौह अरपन कीन्हा।। १४०।।
गरीब, ताम्रध्वज भये तेज, पिता ऐसे नहीं कीजे।
सिंह भखेगा मोहि, पूछि रावल कूँ लीजे।। १४१।।
गरीब, रानी बोलै बैंन, सुनो तुम पुत्र अयानें।
बचन हमारा मेटि, नहीं सुरगापुरी जानें।। १४२।।
गरीब, मैं अर्धंगी नारि, मोरध्वज राजा मेरा।
पुत्र करो तुम राज, अमरपुर बहुर बसेरा।। १४३।।
गरीब, मैं अरपत हूँ पिण्ड, सिंह भक्षण कर ले रे।
सिर पर धरो करौंत, खैंच राजा तूं मेरे।। १४४।।
गरीब, मोरध्वज मुसकाय, कहै मुख अमृत बानी।
मेरे कुल कूँ लागै काट, धरौं आरा सिर रानी।। १४५।।
गरीब, रावल बोले बैन, सुनो रानी तुम राजा।
ताम्रध्वज द्यौ भेंट, सरहि सबहन के काजा।। १४६।।
गरीब, ताम्रध्वज अस्नान किया, छवि तिलक बनाये।
मात पिता प्रणाम, रावल कूँ शीश नवाये।। १४७।।
गरीब, सिर पर धर्या करौंत, खैंचि रानी और राजा।
कंठ कँवल ठहराय, अरथ कछु ऐसा साजा।। १४८।।
गरीब, बामें नैनों नीर, चल्या ताम्रध्वज तेरे।

सिंह भछन नहीं करै, काम कारज नहीं मेरे।। १४६।।
गरीब, ताम्रध्वज तकसीर, कल्पना कीन्ही मन में।
कछु तुम्हरे माया मोह, राजपाट और धन में।। १५०।।
गरीब, सप्तपुरी का राज, इन्द्र की पदवी तांई।
ना हमरे कछु इंच्छ, देख दिल पैठि गोसांईं।। १५१।।
गरीब, दहनी अंगवा खाय, बामी कछु काम न आवै।
ऐसे ढुरक्या नीर, रावल ताम्र समझावै।। १५२।।
गरीब, आरा उर में खैंचि, आनि राख्या है सोई।
छूटि गये है प्रान पुत्र, रानी नहीं रोई।। १५३।।
गरीब, यह ब्रह्मचारी सिंह, भक्षण करता नहीं काया।
हमतो कीन्ही हँसी, तुमों आरा सिर लाया।। १५४।।
गरीब, रावल चाले रूसि, नगर है शोक तुम्हारे।
देहूँ तोहि श्राप, कहा कीन्ही जौनारे।। १५५।।
गरीब, राजा रानी जाय परे, रावल के पाह्यों।
करना होय सो कीन्ह, कहा है हमरे चाह्यों।। १५६।।
गरीब, जिब जोगी मुसकाय, फेरि आसन पर आये।
धंनि राजा प्रवीन, ताम्रध्वज भेट चढ़ाये।। १५७।।
गरीब, आरा उर से काढ़ि, उठाये अपने हाथा।
धंनि ताम्रध्वज संत, तुम्हारी जननी माता।। १५८।।
गरीब, मांग मोरध्वज मांग, तुझे व्योमपति कर हूँ।
चक्र ध्वजी दिल साज, रीता सर सूभर भर हूँ।। १५६।।
गरीब, सुरग भिसत बैकुण्ठ, चलौ तुम अवचल कर हूँ।
चित्रगुप्त के लेख, मेट कर तह कर धरि हूँ।। १६०।।
गरीब, जूनी संकट काल, कर्म नेड़े नहीं आवै।
द्यौं मन अरथ विमान, जहां इच्छा तहां जावै।। १६१।।
गरीब, मन मानै सो मांग, परख जो आवै तेरी।
धरमराय दरबार, कटै बंधन की बेरी।। १६२।।
गरीब, कहै मोरध्वज सुनो, विसंभर नाथ बिनांनी।
दीजे भक्ति रु भाव, सदा संतन प्रवानी।। १६३।।
गरीब, चरण कमल में रहूँ, कहूँ अनभै पद बानी।
मैं भिक्षुक दरबार, नहीं कोई तुमसे दानी।। १६४।।
गरीब, भक्ति तिलक जब दिया, विसंभर नाथ बधाये।
जुगन जुगन सतसंग, मोरध्वज शीश नवाये।। १६५।।
गरीब, एक बलि राजा प्रबीन, जगि आरंभन कीन्हा।
देश देश के भूप, तहां जाय न्यौता दीन्हा।। १६६।।

गरीब, सैनापति अनेक, सही राजा कै आये।
धंनि नगरी धंनि देश, कूख जिस बलि जो जाये।। १६७।।
गरीब, सौमी जगि बिसतार, बलि कूँ किये बिलासा।
कंपे इंद्र अस्थान, गये जो विसंभर पासा।। १६८।।
गरीब, कीन्ही इन्द्र फिलादि, सुनो देवन के देवा।
बहत्तरि चौकड़ी राज, दिये तैं हम कूँ भेवा।। १६९।।
गरीब, एक मिरत लोक बलि बसै, जगि सौमी कूँ धाया।
डिगै इन्द्र अस्थान, कहो क्या कीजै राया।। १७०।।
गरीब, कहै विसंभर नाथ सुनों इन्द्रादिक बाता।
हम जावै जगि मांहि, दान ल्यौं अपने हाथा।। १७१।।
गरीब, बलि छलि इन्द्रहि द्यौं, वचन मेरा सत मानों।
हम भक्तन के ईश, बहुरि दूजा नहीं जानों।। १७२।।
गरीब, इन्द्र चले अस्थान, दई परिकम्या पासा।
धंनि देवन के देव, हमारी प्रवी आसा।। १७३।।
गरीब, बावन रूप अनूप, बिसंभर धरि कर धाये।
गमन किया मृत लोक, बली की नगरी आये।। १७४।।
गरीब, उतरे बाग मंझारि, सही बावन बिप धारी।
खबरदार कर खबर, पंडित एक पोल तुम्हारी।। १७५।।
गरीब, द्वादश तिलक बनाय, जनेऊ सोहै गाता।
बोले मधुरे बैंन, कहै कछु अटपटी बाता।। १७६।।
गरीब, है पंडित सुरज्ञान, सुरग से गंधर्व आया।
राजा से कहै दूत, जहां कछु परबल माया।। १७७।।
गरीब, अनंत वेद भागौति, शास्त्र संजम सूचा।
उजल अति अधिकार, रहनी करनी कछु ऊंचा।। १७८।।
गरीब, है पंडित प्रवीन, ज्ञान की चालै धारा।
जोगी सुर जगदीश, देख चल बाग मंझारा।। १७९।।
गरीब, त्रिकुटी तिलक लिलाट, सहंस दल कँवल उगाने।
कोई न सरबर कीन्ह, ज्ञान के फिरें दिवाने।। १८०।।
गरीब, अगर षौलि उर कीन, कला कलधूत बिनानी।
ऐसी दिगबिजै कीन्ह, छांनि है दूध अरु पानी।। १८१।।
गरीब, निहइच्छा निहगंध, वासना नाहीं जाकै।
बोले बचन रिसाल, अगम बेदी गति भाखै।। १८२।।
गरीब, मोहि लिये सब भूप, विचित्र ज्ञान सुनाया।
राजा स्यों कहै दूत, जिबै मैं तुम पै आया।। १८३।।
गरीब, मोह लिये सब भूप, विचित्र ज्ञान बिचारी।

उतरे बाग मंझार, पंडित बावन बिप धारी।। १८४।।
गरीब, बलि कूँ किया बिचार, सोरन के थाल मंगाये।
मोतियन सूभर ठेल, बिप्र की पूजा ल्याये।। १८५।।
गरीब, परिकम्या प्रणाम, चरनौं से शीश लगाये।
द्यौ पंडित बकशीश, जग पूर्ण हो जाये।। १८६।।
गरीब, बोले पंडित बैंन, सुनों राजा ब्रह्मज्ञानी।
कहा जगि से काम, नहीं हमरे मन मानी।। १८७।।
गरीब, जगि कीन्ह रसातल जांहि, सुनो तुम ध्रुव पद लीला।
मोक्ष बंदगी भक्ति, नाम तिस मांहि रसीला।। १८८।।
गरीब, ये है जम के जाल, काल कूँ घेरा दीना।
सौमी जगि नहीं कीन्ह, सुनो राजा प्रवीना।। १८९।।
गरीब, बोलत हैं बलि बैन, सुनों बावन बिप धारी।
इन्द्रपुरी का राज करूं, यह इच्छा म्हारी।। १९०।।
गरीब, सुन राजा प्रवीन, तुम्हैं तत्तवेता ज्ञानी।
राज रसातल जांहि, सुनों तुम हमरी बानी।। १९१।।
गरीब, फिर बोले बलि बैन, जगि आरम्भन कीन्ही।
मेटत होय अधर्म, हमारी होंहि है हीनी।। १९२।।
गरीब, लीजै पंडित दान, दया कर मंदिर चालो।
सुनि प्रवीना देव, जगि सौमी नहीं टालो।। १९३।।
गरीब, पंडित उठे रिसाय, बली तुम रस के भोगी।
हमरा वचन न मेट, हमै तत्तबेता जोगी।। १९४।।
गरीब, बलि कूँ किया जुहार, और अर्धंगी आई।
पंडित द्यौ आशीश, जगि पूर्ण होय जाई।। १९५।।
गरीब, हम पंडित प्रवीन, विचित्र ज्ञान बिचारी।
मन इच्छा कहि दीन, सुनो तुम बलि की नारी।। १९६।।
गरीब, बोलत है बलि बैंन, शीश चरणों सें लावै।
यह अवसर गुरु देव, बहुरि नहीं हम कूँ पावै।। १९७।।
गरीब, बोले वचन रिसाल, विप्र जो हुये दयाला।
हूँठ पैंड दे जिमी, जहां कुटियन मृगछाला।। १९८।।
गरीब, बोलत हे बलि बैन, सुनो बावन बिप धारी।
अरब खरब द्यौं द्रव्य, कहाँ है ब्योम भिखारी।। १९९।।
गरीब, बोलत है बलि बैन, सुनो बावन बिप धारी।
दल बादल गज ठाठ, रापति है हलके भारी।। २००।।
गरीब, मोती मुकता सार, हीरे बहु लाल अमोलं।
लेह पंडित प्रवीन, जड़े रतनों चहडोलं।। २०१।।

गरीब, मन के बेग बिमान, पलक पृथ्वी फिर आवै।
कहा हूँठ डिग व्योम, बिप्र तोकूँ समझावै।। २०२।।
गरीब, पीतंबर पहरांन, भोजन जो गंधर्व भाषै।
उड़गन सिद्धि अनंत, तोहि पलकन परि राषै।। २०३।।
गरीब, बोले बिप्र विलास, सुनों बलि हमरी बानी।
हम भिक्षुक कुल हीन, हमारे तुम हो दानी।। २०४।।
गरीब, दीजे व्योमी दान, जस त्रिलोकी रहसी।
हम आये तकि तोहे, बचन मेरा तूं सहसी।। २०५।।
गरीब, मापन लागा व्योम, बलि कूँ पैंड धरी है।
अर्धंगी जो नारि, तुम्हारे पास खरी है।। २०६।।
गरीब, बोलत बावन बैंन सुनो राजा रनधीरा।
तुम्हरी डिग किस काम, तुम्हारा बज्र शरीरा।। २०७।।
गरीब, माप बिप्र तूं माप, बचन तेरा को लोपे।
उलटी गति मति तोहि, बहुरि तूं होय है कोपे।। २०८।।
गरीब, उठे बिसंभर नाथ, व्योम एके डिग होई।
पंच लाख संग दूत, पकडि ल्यौ जाय न कोई।। २०६।।
गरीब, चरन शीश कूरंभ, महत पर दूजा धार्‍या।
जहां सनकादिक चार, चरनौदक चरन प्रछार्‍या।। २१०।।
गरीब, बधे विसंभर नाथ, कहो को सरबर कर है।
फिर बावन धर रूप, बली की मजलसि डर है।। २११।।
गरीब, जब बलि भये अधीन, देव हम भेव न जानी।
पंच लाख संग दूत, करी हम खैंचातानी।। २१२।।
गरीब, बलि तुम्हरे अनगिन सिद्धि, पकरि मैं क्यूं नहीं लीना।
पंच लाख लिपटाई, जगत में हांसी कीना।। २१३।।
गरीब, आधी पैंड का दण्ड, कहो क्या हम कूँ दीजै।
लेटि गये बलिराय, पीठ हमरी पग दीजै।। २१४।।
गरीब, हंसे विसंभर नाथ, बली पर भये दयाला।
मांगि मांगि बलि मांगि, तोरि हूँ जम के जाला।। २१५।।
गरीब, बचन लिये बलिराय, विसंभर नाथ बिनांनी।
बावन रूप सदीव, रहे दरवाजे जांनी।। २१६।।
गरीब, जुग जुग चरन जुहार, पास चरनामृत लेहूँ।
सदा सर्वदा संग, पलक पग बगल न देहूँ।। २१७।।
गरीब, कहै बिप्र बलि बात, सुनो संगीत हमारा।
इन्द्रपुरी का राज, तोहि लिख देहूँ सारा।। २१८।।
गरीब, बहत्तर चौकड़ी राज, इन्द्र सब भुगतने दीजे।

इन्द्र टरै सुरपति, चाल तब गादी लीजे।। २१९।।
गरीब, मोहि बचन नहीं डिगहि, डिगहि धरती आकाशा।
डिगहि चंद्र अरु सूर, डिगहि सुमेर कैलाशा।। २२०।।
गरीब, चल तुझ पठाऊँ पताल, रसातल राज कमावो।
इन्द्र टरै सुरपति, ताहि सुरगापुर जावो।। २२१।।
गरीब, कहै विसंभर नाथ, सुनो बलिराय संगीता।
सदा सर्वदा संग, सही तुम हमरे मीता।। २२२।।
गरीब, बोलत है बलि बैन, रसातल कैसा कहिये।
कौन ज्ञान को ध्यान, चाल गति कैसे लहिये।। २२३।।
गरीब, कहैं विसंभर नाथ, लाल भौमी है सारी।
पीताबंर पहरांन, सकल पुरुषा और नारी।। २२४।।
गरीब, कनक मंदिर और कलश, सकल छवि ऐसी सारी।
सेत वृक्ष फल फूल, नदी गूंजत है भारी।। २२५।।
गरीब, रतन जड़ाऊ मुनिछ, गलौंह मोतियन की माला।
अगर चंदन का लेप, अजब कछु रूप विसाला।। २२६।।
गरीब, नहीं दुंद नहीं बाद, सदा सतजुग तहां राखूं।
अजब नवेला लोक, चलो बलि साची भाखूं।। २२७।।
गरीब, बोलत है बलि बैन, विसंभर हमरे मीता।
मैं छाड़्या राज अरु पाट, हमे राखो संगीता।। २२८।।
गरीब, तुम अनंत लोक के राव, निरंजन निर्गुण स्वामी।
मोसे बलि पाताल गये, केते निज धामी।। २२९।।
गरीब, मैं जाना नहीं भेव, जगि जगदीश बनाई।
सुरपति करी फिलादि, मोहि राखो शरनाई।। २३०।।
गरीब, सौ जगि संकलप लीन, निरंजन नाथ भुलाये।
अब नहीं भरमूं देव, चरण हम तुम्हरे पाये।। २३१।।
गरीब, कहैं विसंभर नाथ, मरुत राजा एक सूरा।
लाख जगि का दान किया, बाजत जग तूरा।। २३२।।
गरीब, तिल तिल भौमी होम, जहां उगे और छिपि है।
ऐसा दूजा कौन, मरुत राजा को चंपि है।। २३३।।
गरीब, सौ योजन कूँ माप, भौमी चौबचा करते।
हीरे मोती लाल, ताहि ले सूभर भरते।। २३४।।
गरीब, ऐसी जगि आरंभ, सकल मुनि गंधर्व आवै।
इन्द्र खड़े दरबार, चरन नित शीश नवावै।। २३५।।
गरीब, सत्तर कोटि विमान, चढ़न के तोसैं बरनौं।
मन इच्छा उडि जाहि, हूँठ कोटि सावकरनौं।। २३६।।

गरीब, एक सोरन का थाल, एक सुर कूँ नित देते।
लागड़ गऊ सुबच्छ, बहुरि पग ताके लेते।। २३७।।
गरीब, स्वर्ण टका दे हाथ, सुरसरी न्हाते ऐसी।
मरुत राजा कूँ बूझ, बली तुम्हरी जगि कैसी।। २३८।।
गरीब, अंतर अजपा जाप, कँवल सातों सुर ज्ञानी।
त्रिवैणी के तीर, सहंस मुख गंग बहानी।। २३९।।
गरीब, सहंस मुखी एक कँवल, जहाँ आरंभन कर्ता।
मरुत राजा मृतुलोक, काहे भौमी पग धरता।। २४०।।
गरीब, गण गंधर्व की भीर, सही समरथ ततवेत्ता।
लाख लाख गज दिये, रापति जहां सेता।। २४१।।
गरीब, हूँठ कोटि संगीत, जहां सावकरन बिराजे।
कोई न चंपै सीम, नाद धुनि अनहद बाजे।। २४२।।
गरीब, सवा लाख हूरंभ, उर्वशी है अर्धंगी।
पंच कोटि सुर राग, सदा रहते सत्संगी।। २४३।।
गरीब, सैना अनंत अपार, दलों की गिनती नाहीं।
पंच पद्म मंडलीक, चले तिस छत्र की छांही।। २४४।।
गरीब, काम क्रोध मद लोभ, नहीं आसा है जाके।
बोलत वचन रसाल, बैंन बानी सुर भाषे।। २४५।।
गरीब, फरके ध्वजा निसान, ज्ञान का सागर सारा।
कामधेनु कल्पवृक्ष, सदा जिन के दरबारा।। २४६।।
गरीब, जोधा अनंत अपार, जहां रणधीर अलिल्यौं।
सामंत सतरह कोटि, नहीं मरुत राजा सम तुल्यौं।। २४७।।
गरीब, गैंडे चीते मिरग कुही, उड़ते बहु बाजा।
जीव हिंसा नहीं एक, ऐसे होते मरुत राजा।। २४८।।
गरीब, चंद्र सूर प्रणाम करन, नित जाकै आवैं।
भौमी और आकाश, चरन नित शीश नवावैं।। २४९।।
गरीब, थावर जंगम जीव, सकल जो करते बाता।
कोई नहीं समतुल्य, मरुत सा दूजा ज्ञाता।। २५०।।
गरीब, बोलत हे बलि बैन, सुनो नाथन के नाथा।
हम भूले सौ बार, रहौं अब तुमरे साथा।। २५१।।
गरीब, बलि तुझ पठाऊँ पताल, विश्वकर्मा बेगि बुलाऊँ।
कनक मंदिर कलधूत, पलक छिन मांहि रचाऊँ।। २५२।।
गरीब, जबै विसंभर नाथ, धारना धारी ऐसी।
विश्वकर्मा कूँ नीम, धरी जैसी की तैसी।। २५३।।
गरीब, बोलत है बलि बैन, सुनो निर्गुण निहकामी।

केते बलि पताल गये, पठाये हैं स्वामी।। २५४।।
गरीब, कहै विसंभर नाथ, सुनो बलि ऐसी क्यूं तुम बूझो।
हम तुमरे दरबार, चरन हमरे तुम पूजो।। २५५।।
गरीब, सदा सर्वदा संग, रहै संगीत सनेही।
उत्पत्ति परलौ खयाल, बूझ कर तूं क्या लेही।। २५६।।
गरीब, सुन देवन के देव, इच्छा मेटो तुम सारी।
केते गये बलि बैन, केते गये मरुत मुरारी।। २५७।।
गरीब, आदि अंत का भेव, सबै तूं जाननहारा।
बोलत है बलि बैन, कीन्ह हमरा निसतारा।। २५८।।
गरीब, कहै विसंभर नाथ, नहीं करना यह कीजे।
सुन कर पिछली बात, भौमि नांहीं पग दीजे।। २५९।।
गरीब, बोलत है बलि बैन, सुनो देवन के देवा।
अटकी मोहि जिहाज, कीजिये पारिंग खेवा।। २६०।।
गरीब, कहै विसंभर नाथ, सुनो बलि बैन मुरारी।
सुरपति गये अनंत, राज इच्छा जो धारी।। २६१।।
गरीब, नव करोड़ बलि बैन, आन हम मांड्या हाथा।
मापे तीन्यौं लोक, दूत लिपटे बहु गाता।। २६२।।
गरीब, अनंत कोटि बलि बैन, गये दुनिया के बहनें।
जहां हम मांड्या हाथ, ताहि अमरापुरी रहनें।। २६३।।
गरीब, कहै विसंभर नाथ, बावन हम रूप बनाया।
हूँठ पैंड के काज, बलि तोहि छलने आया।। २६४।।
गरीब, सुरपति करी फिलादि, सकल जो गंधर्व कांपे।
ताहि रसातल दीन्ह, इन्द्र फिर थिर कर थापे।। २६५।।
गरीब, कहै विसंभर नाथ, सुनहु बलि श्रवण काना।
मरुत गये दो लाख, अमरपुरि है अस्थाना।। २६६।।
गरीब, तीनौं पदई बूझि, रह्या क्यूं मौन दिवानें।
संख असंखौं राज गये, सब गलत समानें।। २६७।।
गरीब, जहां चलो बलि बैन, चरित्र तुम्हरा कीन्हा।
रतन जडाऊ मंदिर, जगि का दान जू दीन्हा।। २६८।।
गरीब, पाताल गये बलि बैन, विसंभर साथ शरीरा।
जहां गज मोतियन के हार, पदमनी गति मति धीरा।। २६९।।
गरीब, पीतांबर पहरांन, खुलासा संत अपारा।
जा मंदिरों बलि जाय, रूप कछु अधिक नियारा।। २७०।।
गरीब, चंदन चौका देह, मोतियन के थाल भराहीं।
बलि की आरति कीन्ह, सखी चाली गल बाहीं।। २७१।।

गरीब, धंनि धंनि जय जगदीश, पुरुष हम ऐसा पाया।
सब भूपन के भूप, बावन दरवाजे आया।। २७२।।
गरीब, दुलहनि बैठी घेरि, बावन चरनामृत लेही।
हंसे विसंभर नाथ, सकल विधि सब कूँ देही।। २७३।।
गरीब, बलि पठये पाताल, आप भी गये पताला।
भक्ति बछिल भगवान, संतन के दीन दयाला।। २७४।।
गरीब, दस जोजन में नगर, रूपे चौपड़ि बैजारा।
सहंस मुखी जहां गंग, हंस बानी विसतारा।। २७५।।
गरीब, सूरत नगरी नाम, तहां बलि बैन पठाये।
देश देश के भूप, तमासे गंधर्व आये।। २७६।।
गरीब, उजल बाग विलास, पंखेरू बोलत बानी।
धंनि बावन धंनि बलि, दरवाजे सारंगपानी।। २७७।।
गरीब, शब्द कुलाहल राग, भेरि सहनाई बाजै।
मुरली मदन मुरारि, तूर शंखा धुंनि छाजै।। २७८।।
गरीब, बोलत है बलि बैन, सुनों समरथ सरबंगी।
इक जगि का संकल्प दीन, सुनों तुम अचल अभंगी।। २७९।।
गरीब, कहे बिसंभर नाथ, जगि कीजे बेइच्छा।
मैं बावन तूं बलि, बहुरि कर हूँ प्रपंचा।। २८०।।
गरीब, जबै हंसे बलि बैन, विसंभर यह नहीं होईं।
तैं मन मनसा के बीज, जराइ दिये सब खोई।। २८१।।
गरीब, रचि बेदी जौनार, जगि का आरंभ कीन्हा।
त्रिलोकी के संत सब, बुलाई लिये प्रवीना।। २८२।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेष, जहां सनकादिक आये।
सुकदेव ध्रू प्रहलाद, जहां नारद मुनि धाये।। २८३।।
गरीब, दिगंबर गोरख दत्त, बसिष्ठ बेदीर बुलाये।
बिस्वामित्र जांनि, तांहि जगि में आये।। २८४।।
गरीब, सहस अठासी ऋषि, आये दुरबासा देवा।
आये कपिल मुनि व्यास, तेतीसौं कर हैं सेवा।। २८५।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष, जहां करनाम कबीरा।
अजर मुनींद्र नाम, जोग जीत मति के धीरा।। २८६।।
गरीब, बैलोचन के बलि, अगर बेदी रचि राखी।
सुर नर मुनिजन संत, चंद्र सूरज हैं साखी।। २८७।।
गरीब, सोरन मनि पदम अनंत, दिये बिप्रों के तांई।
रापति सेत संगीत, आये हैं जगि के मांही।। २८८।।
गरीब, गऊ कोटि कुरबांन, सुबच्छ समापति दीजे।

होम उचार बिचार, तहां बहु गंधर्व रीझे।। २८९।।
गरीब, इन्द्र खड़े कर जोर, कला कलधूत तुम्हारी।
तुम्हरे लोक अनंत, राखिये पति हमारी।। २९०।।
गरीब, सौमी जगि आरंभ, करी पूर्ण अविनाशी।
बहत्तर चौकड़ी जांहि, करूं सुरगापुर वासी।। २९१।।
गरीब, बजहि पंचायन संख, राज बलि बैन दिया है।
मन इच्छा सब मेटि, भक्ति का तिलक किया है।। २९२।।
गरीब, हरिचन्द हरि हेत, अयोध्या नगरी रहते।
सतजुग सिंध समाधि, वचन सब सत ही कहते।। २९३।।
गरीब, सुर नर मुनि जन देव, सकल मन नाहीं भाया।
सब मुनि करी फिलादि, सुनो तुम त्रिभुवनराया।। २९४।।
दोहाः– सत भाखे सत ही कहै, सत ही पूजा ध्यान।
सत ही शाला कर्म है, सत के चले विमान।। २९५।।
गरीब, सुर नर मुनि जन देव, फिलादि लगाई भारी।
सुनो विसंभर नाथ, हरिचंद है अधिकारी।। २९६।।
गरीब, कहैं विसंभर नाथ, सुनो क्या कीजे देवा।
वे हरिचंद सतशील, करत हैं सब की सेवा।। २९७।।
गरीब, हरिचन्द का पतिव्रत, टरै नहीं टार्‌या भाई।
वे सतबादी संत, रहैं हमरी शरनाई।। २९८।।
गरीब, बोलत हैं ऋषि देव, जात है हमरी पदई।
सुनो सहंसभुज नाथ, करत हम उनकी बदई।। २९९।।
गरीब, गन गंधर्व सब देव, सकल में ऊंचा को है।
लीजै ताहि बुलाइ, हरिचंद टारि सो दे है।। ३००।।
गरीब, नारद मुनि तूं सोधि, हरिचंद कूँ को टारै।
हरिचंद का सत टारि, पकड़ि ल्यावै दरबारै।। ३०१।।
गरीब, नारद मुनि ऋषि देव, कहै सुन त्रिभुवन नाथा।
हरिचंद सत नहीं जाय, तुमन से संग बिधाता।। ३०२।।
गरीब, बिस्वामित्र बूझि, ढील लावै नहीं कोई।
हरिचंद सत डिगाय, पकड़ि ल्यावत है सोई।। ३०३।।
गरीब, बिस्वामित्र याद किये, आये छिंन माहीं।
हरिचंद सत डिगाई, चलो मृतलोके जाहीं।। ३०४।।
गरीब, विस्वामित्र अरज करै, वै को दुःख दाई।
सुर नर मुनिजन देव, सबन कूँ चुगली खाई।। ३०५।।
गरीब, सबै कहैं ऋषि देव, हरिचन्द धौह डिगाईं।
बिस्वामित्र आनि, बीड़ा जो लिया उठाई।। ३०६।।

गरीब, आबिया ताबिया त्रास, दीजिये हमरे तांई।
पकड़ि ल्याऊँ हरिचंद, पलक उहां ढील न लाई।। ३०७।।
गरीब, जबै दई दो त्रास, कहैं भक्तन के ईशा।
हरिचंद सत डिगाई, लाईयो बिसवे बीसा।। ३०८।।
गरीब, बिस्वामित्र जबै, किया मृत लोक पियाना।
धारे रूप बराह, बाग मेल्या धिगताना।। ३०९।।
गरीब, माली करी फिलादि, गये राजा के आगे।
खोद्या बाग बराह, राजा सूता जब जागे।। ३१०।।
गरीब, सेना चढ़ी सिताब, नकीब पुकारे नीके।
राजा कर अस्नान, संजम सेवा और टीके।। ३११।।
गरीब, राजा पहरि पोशाक, अग्र के बान मंगवाये।
हरिचंद चढ़े शिकार, अनंत ताजी पिड़वाये।। ३१२।।
गरीब, निकल्या बाग बराह, चाल्या राजा के आगे।
दस योजन परि जाय, भये पंडित बितरागे।। ३१३।।
गरीब, राजा बूझे देव, इहां एक स्यावज आया।
दस योजन परि आनि, इहां उन बदन छिपाया।। ३१४।।
गरीब, खोदे वृक्षा बाग, सकल फूलन की बाड़ी।
सेना रहि गई दूर, हरिचंद गये अगाड़ी।। ३१५।।
गरीब, पंडित बोले बैंन, सुनो राजा रनधीरा।
तुम स्यावज की गैल हुये, लागी बहु पीरा।। ३१६।।
गरीब, तुम राजा हरिचंद, उदय और अस्त बिचाले।
करि तरपन अस्नान, बंदगी बरिया टाले।। ३१७।।
गरीब, राजा ताजी बांध, वृक्ष स्यौं तबहीं दीन्हा।
तन से कपड़े काढि, तटि अस्नान जू कीन्हा।। ३१८।।
गरीब, बिस्वामित्र बेगि, उपाई कन्या कुवारी।
तुम राजा हरिचंद, हमै हैं भिक्षक भिखारी।। ३१९।।
गरीब, बोले हरिचंद राव, चलो तुम अयोध्या नगरी।
हम जाते हैं पंथ, गले नीमा सिर पगरी।। ३२०।।
गरीब, सुन राजा हरिचंद, सबै छिंन भंगर काया।
दस योजन का पंथ, चले कदि अयोध्या राया।। ३२१।।
गरीब, बूझै हरिचंद राव, कहां कन्या वर स्वामी।
ढूंढो वर विधि साधि, बोले अयोध्या धामी।। ३२२।।
गरीब, इहां लड़का अस्नान करै, नदियों तट तीरा।
साहा राख्या सोधि, विलंब कीजै नहीं बीरा।। ३२३।।
गरीब, लड़का उग्रनंद नाम, कन्या दासी हरिबाई।

द्वादस वर्ष बितंत, जन्म गति हुई सगाई।। ३२४।।
गरीब, खूटी सूत पुराइ, अग्नि होत्र जब कीन्हा।
लड़का उग्रनंद नाम, बुलाइ जब फेरा दीन्हा।। ३२५।।
गरीब, राजा अब कुछ दीजै दान, कनाहल सुफल तुम्हारा।
कन्या वर आशीस, सही हरिचंद अधारा।। ३२६।।
गरीब, सात अशरफी दान दई, कन्या नाहीं कर मांड्या।
पंडित भया किरोध, राजा किन हीं तू डांड्या।। ३२७।।
गरीब, हरिचंद बोले बैंन, मिश्र यह लीजे घोरा।
अयोध्या माल अपार, यहां मैं लाया थोरा।। ३२८।।
गरीब, तन मन धन लिख देह, वहां ही चल कर लेहूँ।
वर कन्या मरि जाहि, तोहि मैं श्रापे देहूँ।। ३२९।।
गरीब, सतवादी हरिचंद, लिखत कुछ ढील न लाई।
तन मन धन सर्वस दिये, कन्या के तांई।। ३३०।।
गरीब, ऐसे छल बल कीन, छले राजा हरिचंदा।
बांधी मसक अड़ाइ, गले बिच डारे फंदा।। ३३१।।
गरीब, मिश्र भये असवार, राव आगे धरि लीना।
पंडित कूँ क्या दोष, मैं ही सर्वस लिख दीना।। ३३२।।
गरीब, सेना पहुंची आय, मिश्र कूँ मारन लागे।
राजा हारो बचन, दिये क्यूं दान अभागे।। ३३३।।
गरीब, देश देश के भूप, जलेब चलै हैं तेरी।
इनकूँ ल्यों मैं बांधि, सही तब जननी मेरी।। ३३४।।
गरीब, छत्रपती सब बांध लिये, घोर्यों से कूदे।
बाजे तबल निसान, परे राजा के मूंधे।। ३३५।।
गरीब, सेना में से दूत, गये रानी पै भागे।
पकड़े राजा रंक, भूप सब पायन लागे।। ३३६।।
गरीब, सतवादनी परवीन, तारालोचनि रानी।
ये छल बल कोई कीन, किये मेरे सारंगपानी।। ३३७।।
गरीब, उमटि अयोध्या जाय, सकल मन भया अंदेशा।
रानी पकड़या जूड़, अर्धंगी खूले केशा।। ३३८।।
गरीब, कसक्या नहीं शरीर, वज्र का हीया कीन्हा।
सत छत्री हरिचंद, जिन्हों लिख सर्वस दीन्हा।। ३३९।।
गरीब, आबिया ताबिया त्रास, पुरुष नारी परि छोड़ी।
ऐसे किया पसाव, रूई तेली ज्यूं लोढ़ी।। ३४०।।
गरीब, राजा रानी प्रान, निकसि चिसम्यौं में आये।
हारो हरिचंद बचन, हुये सरिकन के चाहे।। ३४१।।

गरीब, बोले रानी वचन, सुनों राजा प्रवानी।
जो तुम हारो बचन, परो नरकन की खानी।। ३४२।।
गरीब, कहां राज अरु पाट, वचन सा धन नहीं कोई।
हारे सरबस जाय, वचन कूँ राखि समोई।। ३४३।।
गरीब, दई आबिया त्रास, ताबिया प्रान उडाये।
सुन राजा हरिचंद, आनि रानी समझाये।। ३४४।।
गरीब, प्रान करत है दान, रानी पंडित सों बोलै।
सुन राजा हरिचंद, कबैं तुम्हरा चित डोलै।। ३४५।।
गरीब, कहां रहै कलि मांहि, वचन जो हारै राजा।
वे भक्तन के ईश, समारै सब विधि काजा।। ३४६।।
गरीब, सुन अर्धंगी नारि, तारालोचनि रानी।
प्रान मुक्ति होई जाहि, पीवे नहीं चरवा पानी।। ३४७।।
गरीब, मैं राजा हरिचंद, वचन हारूंगा नाहीं।
अनेक त्रास तूं देह, नहीं हमरे सत जाहीं।। ३४८।।
गरीब, तन मन लगी कसीश, प्रान नैनों से निकसे।
हरिचंद हारो वचन, जाहु छोड़े तुम बकसे।। ३४९।।
गरीब, निकसत प्रान जबान, रानी एक सैन करंती।
सुन राजा हरिचंद, चले हम एकै पंथी।। ३५०।।
गरीब, कंपे चौदह भुवन, त्रास ऐसी दिखलाई।
धर अंबर और धौल, शेष थरके हैं भाई।। ३५१।।
गरीब, सप्तपुरी में गाज, राज हरिचंद कूँ छोड्या।
हारे वचन न बैंन, सत्त पीतंबर ओढ्या।। ३५२।।
गरीब, रानी लई बुलाइ, छत्र की छाया नीचे।
देखत त्रिभुवन नाथ, अमी घट अंदर सीचे।। ३५३।।
गरीब, सौ सोरन दे भार, राज तेरे से न्यारा।
अजहुँ बकसि हूँ तोहि, फेर तूं बचन हमारा।। ३५४।।
गरीब, चल पंडित तूं बेचि ले, हम कूँ हाटया।
और नहीं कछु द्रव्य, करो इस तन की साट्या।। ३५५।।
गरीब, अयोध्या दई तलाक, तहां चौकी बिठलाई।
राजा रानी पकरि, बांधि काशी में ल्याई।। ३५६।।
गरीब, कोई सौ सोरन दे भार, तीन बंधुवा हैं मेरे।
पकरि बजार बजार, सकल काशी में फेरे।। ३५७।।
गरीब, एक पंडित प्रवीन, नाम जाका हरि हीरा।
वे निकसे अस्नान, देख कर कुंदन शरीरा।। ३५८।।
गरीब, कहो पंडित यह मोल, भांति कैसी विधि बेचे।

चोरों के ज्यूं पकड़ि रह्या, लाग्या क्या पेचे।। ३५६।।
गरीब, काशी उमटी आनि, सकल सब हुई इकठ्ठी।
बंधुवा ल्यौह छुड़ाइ, रूप ऐसा नहीं दीठी।। ३६०।।
गरीब, पंचास भार विसतार, लेह पंडित तोहि देहूँ।
इस अबला कूँ मोलि, कहै तो मैं ही लेहूँ।। ३६१।।
गरीब, मात पुत्र का संग, हीरा पंडित कूँ लीन्हा।
पंचास सोरन भार, तहां कागज लिख दीन्हा।। ३६२।।
गरीब, एक चूहरा मुरदफरोस, कालिया नाम कहावै।
ले है कफन उतार, घाट की चौकी जावै।। ३६३।।
गरीब, सवा रुपैया दंड, मुरदे के ऊपर लागै।
जो देवै नहीं दंड, कफन कूँ खोसण भागै।। ३६४।।
गरीब, हरीचंद लीन्हा मोल, कालिये जाय चुकाया।
पंचास भार दे ताहि, तिस कूँ घर ले आया।। ३६५।।
गरीब, जावो हरिया घाट, मुरदों का दंडन कीजे।
एक कौड़ी नहीं छूट, तुम्हारे संग से लीजे।। ३६६।।
गरीब, चले हरीचंद घाट, खान की कछु ना बूझी।
मुरदों का कर लेत, कर्म लिखी सो सूझी।। ३६७।।
गरीब, अन्न जल कछु ना खाइ, प्राण कूँ देत कसौटी।
निराधार आधार, कर्मना ऐसी औंठी।। ३६८।।
गरीब, बीत गये दस रोज, दर्द मान्या नहीं कोई।
गये कालिया घाट, गुलाम कहो विधि सोई।। ३६९।।
गरीब, अन्नपान कहां कीन्ह, शहर में आये नाहीं।
हमो न कीने याद, कहां तुम भोजन पाहीं।। ३७०।।
गरीब, हम तुम लीन्हे मोल, सरे बिकते बैजारा।
फिर हम पठये घाट, बजावैं हुकम तुम्हारा।। ३७१।।
गरीब, दीन्ही हाट बताइ, नगर काशी असथाना।
जो मांगे सो द्यौह, ताहि भोजन प्रवाना।। ३७२।।
गरीब, सतवादी नर संत, लिये सातू अधसेरी।
तामे दीजै घोल, खांड मिष्ठान्न पौसेरी।। ३७३।।
गरीब, आनंद सैन कुम्हार, बसै एक नगरी माहीं।
हरिचंद बर्तन लेन, चले तिस के घरि जाहीं।। ३७४।।
गरीब, सुन प्रजापति सुखन, हमारा तुम सुन लीजै।
एक बर्तन द्यौह मोहि, मोल ताका कहि दीजै।। ३७५।।
गरीब, आनंदसेन कुम्हार, कहें हरिचंद स्यौं बाता।
तुम पंथी कित जाहु, कहां है तुम्हरा साथा।। ३७६।।

गरीब, हम हैं मुरदफरोस, घाट के रहने हारे।
लिये कालिया मोल, भार पंचास दिया रे।। ३७७।।
गरीब, धेला बर्तन दीन, हरिचंद घाट सिधारे।
सातू घोले बैठ, माहि मिष्ठांन्न जु डारे।। ३७८।।
गरीब, एक पंडित आधीन, जाचंग्या आन करी है।
दुर्बल अति कंगाल, हमैं बहु भीर परी है।। ३७६।।
गरीब, हम क्षुधावंत कंगाल, हमारी तृषा मेटो।
सर्वस देहो उठाय, हरिचंद धरणी लेटो।। ३८०।।
गरीब, सर्वस दिया उठाइ, हरिचंद ढील न लाई।
जो चाहे सो होय, हमारा सत्त नहीं जाई।। ३८१।।
गरीब, फिर द्वादस दिन बीत गये, तब नगरी आया।
सातू सेर तुलाइ, तहां मिष्ठान्न घलाया।। ३८२।।
गरीब, फिर वहां पौंहचे घाट, सामग्री संजम लीना।
वे दुर्बल दरवेश, आनि जाचंग्या कीना।। ३८३।।
गरीब, सर्वस देहो उठाइ, भूख लागी अति भारी।
तुम दाता अबदाल, भिक्षुक मैं फिरौं भिखारी।। ३८४।।
गरीब, सर्वस दिया उठाइ, हरिचंद प्राण समोये।
लीला लिखी लिलाट, रहे मन मन्जन धोये।। ३८५।।
गरीब, पखवारा गया बीत, बहुर बनिया के आये।
सात सेर तुलवाइ लिये, सातू सुर ल्याये।। ३८६।।
गरीब, सवा सेर मिष्ठान्न, लिया बर्तन विधि सेती।
दुर्बल कूके आय, कहां हम कर हैं खेती।। ३८७।।
गरीब, आधा लीजै देव, बहुत हम भोजन ल्याये।
सर्वस दीजै मोहि, तुम्हारा विरद फलाये।। ३८८।।
गरीब, सर्वस दिया उठाइ, हरिचंद हरि के प्यारे।
जुग जुग बिरद फलंत, सही हम भिक्षुक थारे।। ३८६।।
गरीब, रानी चौका दीन, पंडित की है पनिहारी।
नित ही होय मिलाप, बोले नहीं पुरुष अरु नारी।। ३६०।।
गरीब, ऐसा बदन बिछोह, भई रानी बलहीनी।
मटका उठै न शीश, सुनो राजा प्रवीनी।। ३६१।।
गरीब, है रानी हदि तोहि, विप्र के बर्तन छूहूँ।
हम तो मुरद फरोश, वचन कूँ कैसे दूहूँ।। ३६२।।
गरीब, जल में पैठि उठाइ, शीश पर बर्तन लीजे।
सुन रानी प्रवीन, हांक ऐसे नहीं दीजे।। ३६३।।
गरीब, ये काशी के लोग, सुनत हैं हमरी बानी।

लहि पावै संसार, सही राजा अरु रानी।। ३९४।।
गरीब, रहियो बदन छिपाय, भेद पावे नहीं कोई।
समय जायगा बीत, वचन पलटन नहीं होई।। ३९५।।
गरीब, पंडित होम आचार करे, षट् करमहिं साधै।
लड़का जहां रोहताश, पौहप ल्यावै सुरराधै।। ३९६।।
गरीब, काशी नगर मंझार, राव रतनागर नामें।
ताहि पुत्र है एक, खिलावत आठौं जामें।। ३९७।।
गरीब, विस्वामित्र जाय, कला एक ऐसी कीन्ही।
धरि व्याघ्र का रूप, पुत्र जाय परछन लीन्ही।। ३९८।।
गरीब, तहां एक मढ़ी इकंत, जहां लेकर वह पार्‍या।
कूक्या राजद्वार, विप्र का रूप बिचार्‍या।। ३९९।।
गरीब, धर तक्षक का रूप, पौहप के मांहि समाया।
बाग गया रोहताश, तहां कर डंक लगाया।। ४००।।
गरीब, माली कूक्या आय, पंडित हीरा के आगै।
तक्षक डस्या रोहताश, पंडित तुम्हरा क्या लागै।। ४०१।।
गरीब, पंडित उठे सिताब, गये लरके के पासा।
रोवत भरि भरि नैंन, कौन हुई रोहताशा।। ४०२।।
गरीब, बोलै रानी बैंन, सुनो तुम पिता हमारे।
आवन जानै हंस, कहा है सोग तुम्हारे।। ४०३।।
गरीब, अगर पौहप की सिज्या, बनाय घाट पौंहचाया।
बोले मुरद फरोश, कर दीजे हम आया।। ४०४।।
गरीब, रानी बोलै वचन, सुनो राजा रखवाले।
यौह पुत्र रोहताश, करत हो ऐसे चाले।। ४०५।।
गरीब, हम हैं मुरद फरोश, कफन कूँ पार जु लेहूँ।
को पुत्र रोहताश, तुझे चल धक्के देहूँ।। ४०६।।
गरीब, सवा रुपैया दीन, धरो तुम हमरे हाथा।
नहीं लेहूँ कफन उतार, डारि हूँ उघरे गाता।। ४०७।।
गरीब, रानी बोलै राव, सुनो तुम पिछली बाता।
यौह कर बख़शो मोहि, नहीं कोई हमरे भ्राता।। ४०८।।
गरीब, खैंचि लिया जदि कफन, करी करुणा नहीं कोई।
जल में दिया बहाय, इहां संगी नहीं कोई।। ४०९।।
गरीब, झंखड़ दिया चलाय, घटा घनघोर उठाई।
रानी बदन छिपाय, बैठी मढ़ियन में जाई।। ४१०।।
गरीब, कूक्या राजद्वार, पुत्र तेरा बतलाऊँ।
एक डांइन बैठी खाय, चलो प्रगट दिखलाऊँ।। ४११।।

गरीब, रानी नींद उपाय, मढ़ी के मांहि सुलाई।
गोद डारि के अस्थि, राव कूँ ले दिखलाई।। ४१२।।
गरीब, धड़ तो लीन्हा खाय, देख पग शीश पड़े है।
डांइन मसक अडाय, दूत सिर घाट खड़े हैं।। ४१३।।
गरीब, कालिया लिया बुलाय, राव कोपै बहु भारी।
डांइन तोरो वेग, पुत्र खाये अधिकारी।। ४१४।।
गरीब, कालिया मिसरी सूत, दई हरिया के हाथा।
डांइन का सिर काट, गंग में डारो गाता।। ४१५।।
गरीब, घाली तेग अचांन, विसंभर कूँ कर थंभे।
परमानंद से प्रीत, गड़े सत के रणखंभे।। ४१६।।
गरीब, लीली धज नख लाल, श्याम है रूप मुरारी।
श्वेत छत्र सिर शीश, देखत है काशी सारी।। ४१७।।
गरीब, पकड़ि लिये कर हाथ, कला प्रगट धरि आये।
मांग हरिचंद मांग, विसंभर नाथ बढ़ाये।। ४१८।।
गरीब, बोले हरिचंद बैंन, विसंभर नाथ सुनावै।
करिये मोसे वचन, बहुरि फिर उलटि न जावै।। ४१९।।
गरीब, सतयुग द्वापर त्रेता, कलू आवैंगे काले।
चारों जुग अमान, संत नहीं होंहि दुखाले।। ४२०।।
गरीब, जो इच्छा सो मांग, मुक्ति परलोक पठाऊँ।
चिसमें पलक विमान, तोहि उर मांहि समाऊँ।। ४२१।।
गरीब, पिता कालिया मुक्ति, होत सूरौंह की सैना।
मुरद बहाये घाट, मुक्ति सब होंहि ऐना।। ४२२।।
गरीब, हीरा पंडित चलै, मुक्ति परलोके जाई।
ता बांदी स्यौं पुत्र, चढ़त विमान समाई।। ४२३।।
गरीब, अयोध्या काशी नगर, चले वैकुण्ठ विमाना।
अमरलोक ल्यौलीन, तहां अस्थिर अस्थाना।। ४२४।।
गरीब, हरिचंद चढ़े विमान, तारालोचनी रानी।
पुत्र चढ़े रोहताश, अमरपुरि है प्रवानी।। ४२५।।

अथ कलियुग के व्याख्यान

गरीब, कलियुग के व्याख्यान कहूँ, विधि सब ही जानं।
धरती बूंद न परे, सोख गगन्यौं असमानं।। १।।
गरीब, वृक्षा फल नहीं देह, नदी सूकंती शाषा।
मन का मन नहीं होइ, सुनों सतगुरु की भाषा।। २।।
गरीब, गगन घटा गरजंत, बूंद परि है ज्यूं ओसा।

अनादि पुरुष नहीं भेट, देत खड़ काजी चोसा।। ३।।
गरीब, कीकर आक बबूल, फूल लागहिंगे भारी।
ढाकौं पापड़ खात, सकल पुरुषा अरु नारी।। ४।।
गरीब, ऊभ सूक बड़ जांहि, पीपल लागत नहीं पाना।
सब हेड़ी नर होत, मांस भखि हैं ज्यूं श्वाना।। ५।।
गरीब, कूप सकल सोखंत, नहीं पोखर में पानी।
सूम सकल संसार, शंख मध्य एकै दानी।। ६।।
गरीब, कीरति जग ब्यौहार, रहत नहीं ऐके अंसा।
साबज सब ही खांहि, पंडित ज्ञानी बेधंसा।। ७।।
गरीब, नहीं तीरथ नहीं ताल, सकल परबी छिप जावैं।
पंडित व्याघर होंहि, कच्चा ही गोस्त खावैं।। ८।।
गरीब, ब्राह्मण के घर भाठी, दारू बकरे तलिये।
हिन्दू तुर्क न भिन्न, निवाले प्याले रलिये।। ६।।
गरीब, पंच भरतारी नारि, पतिव्रता नहीं कोई।
मूवे पुरुष नहीं शोग, डिगै घर आनंद होई।। १०।।
गरीब, ठगुवा सब संसार, छत्तीसौं कौम वितालं।
पैसा नहीं पावंत, होंहिंगे या विधि हालं।। ११।।
गरीब, साहूकार न कोई, उदय और अस्त बिचाले।
कृतघ्नी सब जीव, छिपे सतवादी लाले।। १२।।
गरीब, घर घर डौरू डाक, बजेंगे भोपा कूदे।
दरवाजे चिन देव, मांगैंगे तिस पै दूधे।। १३।।
गरीब, गाम दीवा नहीं होई, सुनों घोरारंभ बाता।
कौल वचन डूबंत, नहीं असनाई नाता।। १४।।
गरीब, सुन घोरारंभ भेव, कहूँ मैं भिन्न भिन्न तोसे।
नहीं गोत नहीं नात, बहन कहैंगे जोई से।। १५।।
गरीब, ऊंच नीच नहीं भिन्न, चलैगी सब मरजादं।
पारौसी धन चंपि, चोरी कर खाय हैं साधं।। १६।।
गरीब, कलियुग का मध्य कहूँ, मदन का सिक्का धरि हीं।
जिलाली जंग बांधि, बहुत विधि छल बल करहीं।। १७।।
गरीब, भेड़ गऊ की ठौर, गलों में बांधे हाडी।
नाहीं तन पर नूर, मुखौ पर मूंछ न दाढी।। १८।।
गरीब, घर घर पिंजर्यों काग, सूर चौक्यों में आवैं।
गदह्यों के परि फूल, कामिनी मंगल गावैं।। १६।।
गरीब, रीछों के असवार, चढ़ैंगे वाहन भारी।
घर घर कुत्ते सूर, मध्य कलयुग की ख्वारी।। २०।।

गरीब, लोहों के सिंडास, नाक पकरेंगे कूरा।
मुख में माटी डार, देत हैं इस विधि घूरा।। २१।।
गरीब, याह राज्यों की रीति, कहूँ मैं तोसे हंसा।
लोहा बर्तन धन, नहीं देखन कूँ कंसा।। २२।।
गरीब, तीन हाथ अंश खैंचि लेत, कलयुग धरती का।
ऊगे कोई न बीज, हाल कहि द्यौं पृथिवी का।। २३।।
गरीब, इन्द्रहि देत तलाक, छ्यानवैं कौटि न बूठे।
घोरारंभ घर मांहि, कलू कलियुग यों लूटे।। २४।।
गरीब, सब दर मांगे भीख, कोई दर भीख न घाले।
कलियुग धरि अवतार, नगर दानी पैमाले।। २५।।
गरीब, गुप्त लगावैं आग, चोर ठग दौरा दोरे।
उदय अस्त के बीच, नहीं पावे कोई गौरे।। २६।।
गरीब, ना कारूयों से नेह, क्षत्रिय सों छलबल कर है।
सतगुरु तीन तलाक, साध घर पग नहीं धर हैं।। २७।।
गरीब, गरजै घोरै बहुत, गदबदी घात चलावैं।
सतगुरु तीन तलाक, साध के निकट न जावैं।। २८।।
गरीब, यती सती नहीं कोई, कर्म के कांजी कीरा।
नहीं योग वैराग, न्हान जल नाहीं नीरा।। २९।।
गरीब, कलियुग का रणखेल, कहूँ मैं सब विधि भाई।
सूरत और गढ़ बीच, कहीं जल नीर न पाई।। ३०।।
गरीब, गंगा यमुना लीन, बहैंगी सुरग पतालं।
एक योजन विस्तार, उठेंगी पर्वत झालं।। ३१।।
गरीब, झंखड चलैं अपार, अरथ सूरजि के छिप हैं।
बन बोझै नहीं फूल, पृथ्वी ऐसे खपि हैं।। ३२।।
गरीब, सब सरबर जल सूखैं, सूखैं सब खाड़ी नदियां।
कलुकाल भयभीत, करैंगे बहु बिधि बदियां।। ३३।।
गरीब, सूरज तेज घटंत, चंद्रमा तारिक जैसा।
घोरारंभ की बात, देख जैसे का तैसा।। ३४।।
गरीब, करौं मुंदरा हाथ, कहैंगे साहूकारा।
पंचों में प्रतीति, ठगन के यह ब्यौहारा।। ३५।।
गरीब, थाथे बांस बजावै, कामिनी मंगल गावैं।
लोहा कूँडे शीश, नाचि बहु सांग दिखावैं।। ३६।।
गरीब, गदह्यों की ले लीद, द्वार सब चौका देवैं।
ना जल का प्रवेश, मुत्र का मैले भेवैं।। ३७।।
गरीब, मुरगे घर घर बार, कूकडू कूकर बोलैं।

बोक विसंभर नाथ, कामिनी नाचत डोलैं।। ३८।।
गरीब, गदह्यों के असवार, सिलहरे ढाल लगावैं।
ऐसी चढ़ै बरात, कलु बहु नाच नचावैं।। ३६।।
गरीब, चामौं के चहडोल, चरित्र कह द्यौं सारे।
झूलौं के सिर पोस, नीर पावैंगे खारे।। ४०।।
गरीब, सहंस किरण का तेज, उलट कर बहे अपूठा।
मिश्र मारैंगे बाट, शिकारी दगरे लूटा।। ४१।।
गरीब, वेश्या का विश्वास, जो शाला कर्म करैंगे।
नींब निमोली गेर, आक के फूल धरैंगे।। ४२।।
गरीब, कलियुग अंत की बात, सतयुग की आदि बखानौं।
विलसतिया नर नारि, पंच वर्ष प्रसूतहि जानौं।। ४३।।
गरीब, बीस वर्ष की उमर, पांच तिस माहीं खंडा।
काल कर्म अरु मीच, लगहिंगे सब सिर डंडा।। ४४।।
गरीब, धरती में बिल खोद, रहैंगे या विधि प्रानी।
नहीं मैंडी नहीं मंडप, सकल विधि साची जानी।। ४५।।
गरीब, खड़ वृक्षों के पान, भखैं जीव करैं अहारा।
चूहड़ों के घर न्याय, पंडित जहां जाहि पुकारा।। ४६।।
गरीब, षट् दर्शन सब भेष, होत गृही घर बासे।
अपनी नारी छाड, सकल वेश्या दरि जासे।। ४७।।
गरीब, सौ कोसन में गाम, उद्यान भयानक भारी।
रतनागर दरियाव, सूकि हैं सरवर सारी।। ४८।।
गरीब, पिण्डल के पहरांन, पिण्डलहि खाना खाहीं।
नहीं गाय नहीं बैल, ढूंढत सौ योजन जाहीं।। ४६।।
गरीब, नहीं वेद भागवत, कलम का लिख्या न मानहि।
बैजारी सब जीव, भक्ति निश्चय नहीं आनहि।। ५०।।
गरीब, फिर सतयुग के मांहि, आवैंगे हरिचंद राजा।
धरि दसमां अवतार, सारैंगे सब विधि काजा।। ५१।।
गरीब, एक सिंभला नगरी धाम, जहां नृपति निधि नामें।
पण्डित विष्णुदास, जहां अवतार सब सामें।। ५२।।
गरीब, सब सामग्री संत, बजत हैं अनहद डंका।
गरद चढ़े गैंनार, गगन में हनुमंत हंका।। ५३।।
गरीब, चढ़ते हनुमंत संत, जुगन जुग दास कहावैं।
अंगद अरु नल नील, फौजन के मौहरे धावैं।। ५४।।
गरीब, ध्रुव प्रहलाद शुकवेद, आवैंगे फौजा माहीं।
गोरख पूरै नाद, चलैंगे छत्र की छाहीं।। ५५।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, चढ़ै दिगंबर दत्त, सकल सनकादिक सैंना।
मुनिजन कोटि अनंत, सुनो ये साचे बैंना।। ५६।।
गरीब, विष्णु कोटि अनंत, चढ़ैंगे सहंस अठासी।
तेतीस कोटिक देव, चढ़ैं कैलासं वासी।। ५७।।
गरीब, चढ़ै नारद अरु व्यास, चढ़ै पाराशर ज्ञानी।
भीषम और बलि देव, द्रोणाचार्य प्रवानी।। ५८।।
गरीब, चढ़ि हैं पांचौं पंड, द्रौपदी दारुण माया।
ब्रह्मा वेद उचार, चढ़हिंगे त्रिभुवन राया।। ५९।।
गरीब, चढ़ै कपिल मुनि संग, सही निहकलंक औतारा।
दुरवासा और चुणक, चढ़ै फौजन सिरदारा।। ६०।।
गरीब, विश्वामित्र पास, चढ़ै वासिष्ठ विचारी।
सुरपति चढ़ै संगीत, चढ़ैं लक्ष्मण अनुसारी।। ६१।।
गरीब, चढ़ि हैं मेर कुबेर, वरुण की फौजां बंकी।
सौ करोड़ सावकरन, धर्म की ध्वजा फरंकी।। ६२।।
गरीब, चौदह कोटि जमदूत, चढ़ै धरमराय के आगै।
चित्रगुप्त चंहडौल, सकल की लेखनि दागै।। ६३।।
गरीब, महादेव के दूत, चढ़ै गण गंधर्व भारी।
कालभद्र किरत देव, चलैंगे फौज अगारी।। ६४।।
गरीब, उडगण तुरी असंख, जहां रापति रणधीरं।
सत्तरि पदम निशान, फरकते ध्वजा जु चीरं।। ६५।।
गरीब, तीस पदम रापति, पड़ी पाखर प्रवाना।
अस्सी अरब अलील, तुरा जल परकर जाना।। ६६।।
गरीब, साठ पदम पौनीक, चलैं हैं मन के बेगा।
ग्यारह अरब विशेष, पकरि हैं कर से तेगा।। ६७।।
गरीब, बावन लील कमंद, चढ़ै शंकर के साथा।
गौरिज और गणेश, लिये त्रिशूलं हाथा।। ६८।।
गरीब, सावित्री संगीत, ब्रह्मवेदी बहु बानी।
साठ सहंस बाल्खिल्य, सूरज के हैं अगवानी।। ६९।।
गरीब, चढ़ि हैं तारा चन्द्र, अष्ट कुली धर कंपी।
कच्छ मच्छ कूरंभ, शेष लग सब हीं चंपी।। ७०।।
गरीब, चढ़िया सागर सात, नदी नौ सै रणवासी।
लक्ष्मी और भगवान्, चढ़ै अमरापुर वासी।। ७१।।
गरीब, सही कलम ले शेष, धरणि पर भार न भारी।
न जानौं जगदीश, कहां कूँ है असवारी।। ७२।।
गरीब, बावन और बलिराय, चरण पग कीन्ह जुहारा।

चढ़े विभीषण भेव, सकल कंपे गैंनारा।। ७३।।
गरीब, नामा धन्ना बाजीद, सेऊ और संमन शूरा।
रंका बंका चढ़े, जहां मुख बरषत नूरा।। ७४।।
गरीब, पीपा और रैदास, पास चंहडोल बिठाये।
नानक दादू देव, सिरौं कलगी धरि आये।। ७५।।
गरीब, अष्टावक्र चढ़े, चढ़ै है जनक विदेही।
नौ योगीश्वर नाद, पूरहि हैं परम सनेही।। ७६।।
गरीब, चढ़े मछंदर नाथ, जलंधर जोगी आया।
भरथरी गोपीचंद, अधम सुलतान चढ़ाया।। ७७।।
गरीब, करै राबिया राग, भीलनी आगे नाचै।
करमाबाई कलस, कमाली बहु विधि काछै।। ७८।।
गरीब, मीरांबाई ख्याल, अनाहद गावत आई।
अगर खौलि तन काढि, संगि हैं सब ही बाई।। ७६।।
गरीब, पूल्ही पालिग पास, निरत करती है सोई।
बाजे झालरि झांझ, अनाहद अति धुनि होई।। ८०।।
गरीब, आये कागभुसंड, मारकंडे कर जोर्यौं।
रूंमी ऋषि संग पुत्र, ब्रह्मा के नाती कोर्यौं।। ८१।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष, खड़े हैं त्रिभुवन आगे।
कोटि सिध्दि प्रवीन, तहां सो चरणौं लागे।। ८२।।
गरीब, मांझी मुकट **कबीर,** श्वेत घोरे चढ़ि आया।
तहां विसंभर नाथ, शीश पर चौंर कराया।। ८३।।
गरीब, चौंरा ढार **कबीर,** कला निहकलंक गोसांईं।
अठारा हाथ का खड़ग, सत्ताइस ताड़ मनुसाई।। ८४।।
गरीब, चार मवक्कल पास, मुलक की खबर बतावैं।
दिगविजय करते जांहि, असुर कूँ बांधे लावैं।। ८५।।
गरीब, कंपे धरणी धौल, महत वैकुण्ठौं तांई।
निहकलंक अवतार, चढ़ै जगदीश गोसांईं।। ८६।।
गरीब, तीन करोड़ि मंडलीक, रहै सूरज रखवाले।
कौस्तुभ मणि है शीश, लाल रंगील दुमाले।। ८७।।
गरीब, सूरज उतने अरथ, आन पृथ्वी पग धारे।
निहकलंक अवतार, उहां कालंदर भारे।। ८८।।
गरीब, बाजे सिंगी नाद, अरस धुनि अविगत लीला।
सुर नर मुनि जन संत, राग रंग करत करीला।। ८६।।
गरीब, तीन पदम संगीत, सुखमनि बीना बाजै।
अजब नवेले नाच, उर्वशी मंदल गाजै।। ६०।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, सहनाई और भेरि, अजब रणसिंग्यौं टेरौं।
अधर कमंदौं चाल, हाक ऊंची सुमेरौं।। ९१।।
गरीब, झंझर बाजै बीन, राग सुर एकै लापं।
नौछावरि के हंस, जंग से नाहीं धापं।। ९२।।
गरीब, योजन एक मुकाम, अरस के देवं आये।
आसन अधर अमान, देख गैबी दल छाये।। ९३।।
गरीब, कालंदर के दूत, देख दल गैरति खाई।
पौंहचे बेग विमान, चढ़े हैं त्रिभुवनराई।। ९४।।
गरीब, कालंदर की देह, सहंस योजन विस्तारा।
सुंन शरीर विमांन, भुजा है अनंत अपारा।। ९५।।
गरीब, शक्ति सुंन शरीर, भुजा बहु डंड अजूनी।
अगनी चकरी बान, चलैं बिन करौं नमूनी।। ९६।।
गरीब, दांनै पदम पचास, रहैं चौकी नित चंपि हैं।
अस्सी पदम पिसाच, नहीं जिन के सिर नक हैं।। ९७।।
गरीब, तेरह अरब अलील, चढ़ै मंडलीक मुकेशी।
हदफ बांन हथियार, भिड़े दल गैब विदेशी।। ९८।।
गरीब, अठासी पदम प्रेत, सुरौं से भेड़ लगावैं।
नौ करोड़ दलवज्र, उड़हि असमान समावैं।। ९९।।
गरीब, नागदीप पर जंग, उदय से उरै बतावैं।
बावन कोटि पलीत, पिशाचौं आगे धावैं।। १००।।
गरीब, रावण सत्तरह कोटि, चलैं चहडोलौं आगै।
कुंभकर्ण अपार, शीष आकाशौं लागै।। १०१।।
गरीब, दे मुरली की टेर, पंचाइन शंख बजाया।
हंकारे हनुमंत, दलौं को भक्षण आया।। १०२।।
गरीब, पवन पुत्र प्रवेश, शरीर सुंन सहनांनी।
कोटि बज्र का बज्र, हांक धरती असमानी।। १०३।।
गरीब, स्वर्ग पताल समेत, करौं भक्षण सब सैना।
मोहि अरज जगदीश, सुनौ हनुमंत के बैंना।। १०४।।
गरीब, सुर नर मुनि जन संत, सुनो भगवंत के प्यारे।
मैं पौनीक अचंत, कालंदर सब दल मारे।। १०५।।
गरीब, शिखर हांक सुमेर, दलौं पर गूंजे पौनी।
कालंदर दल भक्षण करौं, विधना की हौनी।। १०६।।
गरीब, कूदे दल के बीच, हनू हंकार चलाई।
योजन लाख शरीर, घटा गरजंती आई।। १०७।।
गरीब, सैना चरबन कीन्ह, दूत भूत मंडलीका।

तोरे सबै पिशाच, भगवान भक्ति का टीका।। १०८।।
गरीब, बहुरि उलट बल कीन्ह, काल बलभद्र आये।
किरत देव कैलास, समांने अंग बधाये।। १०६।।
गरीब, अंनी मंडे झुझार, दलौं के दारन ठाढे।
कालभद्र किरतदेव, बहुत विधि लाडं लाडे।। ११०।।
गरीब, हनुमंत के मुख बाण लग्या, दल बीच गिराना।
कालभद्र कूँ पकरि, लिया कालंदर दाना।। १११।।
गरीब, कालंदर का नाक, जाड़ नीचे ही आया।
सोला पदम कमंद लगै, हनुमंत दल मांहि उठाया।। ११२।।
गरीब, हंकारे हनुमंत, शीश पर थाप लगाई।
नौ योजन विस्तार, धरनी में धंसिगे भाई।। ११३।।
गरीब, सत्तर पदम कमंद, हनू के आगे भागे।
लख योजन विसतार, कालंदर आये आगे।। ११४।।
गरीब, नागदीप में हानि, कालंदर गरक किया था।
उदय दीप अनसार, तहां सब घोलि पिया था।। ११५।।
गरीब, पकर्‍या करों सुमेरु, सप्तपुरी थरकाई।
महत लोक पर चक्र, कालंदर फेर्‍या जाई।। ११६।।
गरीब, गोरख पूर्‍या नाद, चुनक दुरवासा ऊठे।
इन्द्र अनंत करोड़, बाण दल सागर बूठे।। ११७।।
गरीब, कालभद्र किलकार, कमंद मारे दल भारी।
लक्ष्मण सुर संगीत, हुई उड़गण असवारी।। ११८।।
गरीब, अंगद और नल नील, चढ़े बलि बावन आये।
कालंदर का शीश, कमंद से दिया उड़ाये।। ११६।।
गरीब, मूरछागत हो पड़े, असुर की देह अपारा।
शक्ति सुंन शरीर, मरै नहीं खड़ग की धारा।। १२०।।
गरीब, पौंहचे असुर अनंत, पाताल से बाहर आये।
जाजरू दीप विकराल, शस्त्र संतों पै बाहे।। १२१।।
गरीब, लुटे शेष के कुंड, अमी के दौने हाथा।
चौकी दई उठाइ, सकल सुर कूके नाथा।। १२२।।
गरीब, लुटे बलि असथान, शेष सुर शंक्या खाई।
छूटहि बाण अनंत, भुवन सब कंपे भाई।। १२३।।
गरीब, शिशुमार चक्र कूँ खैंचि, रहे निहकलंक बिनांनी।
कालंदर का काल, दलों में किस कर जांनी।। १२४।।
गरीब, लक्ष्मण बांण चलंत, कालंदर उड़े अकासा।
मारे अनंत पिशाच, चोट चाली दुर्वासा।। १२५।।

गरीब, चौदह भुवन में भेड़, सुनो लक्ष्मण अनसारी।
गोरख नाद बाजाय, चुनक कोपे ब्रह्मचारी।। १२६।।
गरीब, अंगद और नल नील, हुवा फिर हनुमंत हाका।
लक्ष्मण बाण चढ़ाय, मार्‌या कालंदर भाखा।। १२७।।
गरीब, चिरंजीव होय जाहि, सबै दूतन की सैंना।
लागहि बाण अपार, हाथ अमियौं के दौंना।। १२८।।
गरीब, लुटे शेष के देश, हुये भय भारन भारी।
हनूमान हंकार, वज्र विधि आन जु मारी।। १२९।।
गरीब, कालंदर का काल, बतावो विधना मेरे।
मरे खड़ग नहीं बाण, बहुत विधि चकरौं घेरे।। १३०।।
गरीब, गूंजहि अनंत पिशाच, गगन किलकारी देवैं।
तीन करोड़ मंडलीक, सूरज का मौहरा लेवैं।। १३१।।
गरीब, भिडहि चंद्र और सूर, बाण छूटैं गैंनारा।
साठ सहंस वाल्खिल्य, बाणों के पूरनहारा।। १३२।।
गरीब, कासिब सुत कलधूत, कालंदर भेड़ लगाया।
रवि सुत है धर्मराय, दूत ले मौहरे आया।। १३३।।
गरीब, गोरख नाद बजाय, धरणि जहां दई धसाई।
चौदह कोटि जमदूत, भिड़े धर्मराय सहाई।। १३४।।
गरीब, नारद मुनि कूँ बूझ, लोक की खबरां लावे।
पार्वती प्रवीन, महादेव चौंर ढुरावे।। १३५।।
गरीब, द्रौपदी खप्पर है हाथ, निहकलंक कला है।
मस्तक बिंदा लाल, दलों हनुमंत मला है।। १३६।।
गरीब, सुन भक्तन के ईश, कहै शिव शंकर बानी।
कालंदर कूँ मार, चढ़ो तुम सारंगपानी।। १३७।।
गरीब, तप का फल हम दीन, किया तप हमरै भारी।
शिवपुर गण कालंदर, मरैं नहीं खड़ग अधारी।। १३८।।
गरीब, सत्तर लाख वर्ष बीत गये, तप ऐसा कीना।
मन इच्छा फल तहां, सही शिव शंकर दीना।। १३९।।
गरीब, ब्रह्म राक्षस कालंदर, मरै नहीं देवं बाना।
भँवर बसे लिलाट, सहंस योजन असमाना।। १४०।।
गरीब, लग्या श्राप सुर सोधि, ताहि असुरन बुद्धि आई।
निहकलंक अवतार धरै, असुरन बुद्धि जाई।। १४१।।
गरीब, निहकलंक के हाथ, मरै कालंदर दाना।
शिवपुर का गण बिचर गया, किन हूँ नहीं जाना।। १४२।।
गरीब, निहकलंक कलधूत, अग्र का बाण चढ़ाया।

योजन सहंस लिलाट, भँवर कूँ बेधे आया।। १४३।।
गरीब, कालंदर की देह गिरी, असुरन सब मारे।
दूत भूत पिशाच, सुरों के कारज सारे।। १४४।।
गरीब, उदय दीप अधिकार, सकल की शंका मेटी।
जहां पठये कागभुशंड, हरिचंद राजा सेती।। १४५।।
गरीब, ईशांन कूँट असताल, सुरों के बाजे बाजे।
जासी सकल कलंक, विधंस कलियुग के राजे।। १४६।।
गरीब, पश्चिम दिशा कूँ गमन, करैं निहकलंक गोसांई।
मान सरोवर भूमि, तहां पग धरणी लाई।। १४७।।
गरीब, सकल सुरन संगीत, बजैं पंचाइन नादं।
आदि अंत के संत, जहां सुर पूरेहि साधं।। १४८।।
गरीब, प्रथम पृथ्वी पलटि, काटि कलंक धरनी के।
जल जूनी सब जीव, मेटि हैं दोष वरन के।। १४६।।
गरीब, अग्निहोत्र इन्द्र लोक, वासना पौंहचे जाई।
धूमा होवै लीन, राज सतयुग का आई।। १५०।।
गरीब, वृक्षा फूल फलंत, नदी गहिबर गुंजारै।
दादुर मोर चकोर, हंस बानी विस्तारै।। १५१।।
गरीब, छ्यानवैं कोटि दल मेघ, सकल पृथ्वी पर बरषैं।
पृथ्वी उमंगि अनंत, संत कोई बीना निरखैं।। १५२।।
गरीब, होसी अन्न सुकाल, पौहप देवन की पूजा।
घर घर भक्ति विलास, आन मारग नहीं दूजा।। १५३।।
गरीब, हीरे मोती लाल, ऊजल रतनों की खांनी।
हंसा घर घर बार, कुलाहल राग बिनांनी।। १५४।।
गरीब, सकल सुरन संसार, कलू दीखै नहीं कोई।
लाख वर्ष की उमरि, तप गृहचार छुटाई।। १५५।।
गरीब, नौछावर के हंस, मान मद माया खाटी।
त्रिकुटी ध्यान कर्मकंड, बूझेंगे सतगुरु बाटी।। १५६।।
गरीब, दिल्ली मंडल दीप, बसेगा बहु बिधि नीका।
गोरख करसी राज, सतगुरु देसी टीका।। १५७।।
गरीब, गंग जमुन सुमेर, छुटेंहिगी नदियां नीकी।
सातौं सागर गाज, जीव शंका नहीं दीखी।। १५८।।
गरीब, शींगी नव लख टेर, पटन नगर बसैंगे।
सतगुरु बाचा साच, गोरख तखत हंसैंगे।। १५६।।
गरीब, पश्चिम पूरब राज, करैंगे सुरन संगूता।
नहीं कामिनि सो संग, तखत गोरख अवधूता।। १६०।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, बसै नगर असथान, तपसी तप के लोभी।
फूलों के सिर मुकट, करनी क्रिया अति शोभी।। १६१।।
गरीब, सुरह गऊ और संत, नहीं आशा नहीं इच्छा।
शुकदेव तखत दिवान, मेट हैं सब प्रपंचा।। १६२।।
गरीब, ध्रुव दरवेश ऊजीर, प्रहलाद पारिख सुर ज्ञानी।
सतगुरु दीना राज, अनंत मंडलीक बिनानी।। १६३।।
गरीब, विश्वामित्र कोतवाल, वासिष्ठ वेदी आरंभा।
ब्यास वचन प्रवान, गोरख राज के खंभा।। १६४।।
गरीब, लाख वर्ष का राज, करि हैं गोरख अवधूता।
चक्रवर्ती मंडलीक, फेर जिन के सिर टीका।। १६५।।
गरीब, शंख ताल ध्वज संत, ताहि गोरख का नाती।
आधा राज करंत, दान सतगुरु का दाती।। १६६।।
गरीब, अनंत कोटि मंडलीक, तखत प्रवाने जाहीं।
कोई न औटे राज, भिन्न तासे है भाई।। १६७।।
गरीब, भरथरि गोपीचंद, राज दिल्ली का करसी।
गोरख लाय समाधि, घाट छत्री के सरसी।। १६८।।
गरीब, ऐसी दिग्विजय कीन, कंपेंगे दारन राजा।
नौ लाख शींगी नाद, बाजैंगे अनहद बाजा।। १६९।।
गरीब, सुरपति सुनैं अवाज, बिगसेंगे गंधर्व ज्ञानी।
मोरध्वज कूँ राज, दीजै सतगुरु प्रवानी।। १७०।।
गरीब, मन वांछित कर राज, तन कूँ त्रास न देही।
लोकपाल रिछपाल, ताहि अपना कर लेही।। १७१।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश, धर्मराय सुरपति ध्यावैं।
बरन सकल विधि कीन, सतगुरु की वाचा आवै।। १७२।।
गरीब, सतगुरु भक्ति विलास, ब्रह्मगति जानैं सारी।
नव कोटि गति वर्ष, भुगतेंगे राज ब्रह्मचारी।। १७३।।
गरीब, अनगिन तपी अनंत, आवैंगे राज दरबारा।
जाचंग्या कर मांडि, दीजै पुत्री परिवारा।। १७४।।
गरीब, कला कुटीचर बांध, रहेंगे नारी संगा।
तन मन सब हर लीन, दीप ज्यूं परत पतंगा।। १७५।।
गरीब, सतयुग द्वापर बीत, त्रेता की आदि लगैगी।
तीनौं पहर्यों संत, सतगुरु की भक्ति जगैगी।। १७६।।
गरीब, बलि करिसी तप जोर, विसंभर नाथ बंधावैं।
बहत्तरि चौकड़ी बीत, ताहि सुरगापुरी जावैं।। १७७।।
गरीब, होसी सुरपति बलि, सुरौं कूँ शंका नाहीं।

चौदह भुवन विमान, बलि के पारखत जाहीं।। १७८।।
गरीब, जुग जुग धरि अवतार, आवेंगे त्रिभुवन स्वामी।
संतों सदा सहाय, पूरन प्रकाशत बानी।। १७६।।
गरीब, अधिदैव अधिभूत, अध्यात्म पाकर लीजै।
कलियुग मारिये काठि, बलि के फंदे दीजै।। १८०।।
गरीब, बलि कूँ दीजै राज, ताहि सुरगापति होई।
बहत्तरि चौकड़ी राज, इन्द्र का भुगतै सोई।। १८१।।
गरीब, सतयुग मांहि अभाड़, पहल त्रेतायुग धरसी।
द्वापर में हरि पाल, कलियुग में कीरति भरसी।। १८२।।
गरीब, बलि वेदी विश्राम, सुरपति समरथ दाता।
युग प्रवान एक यज्ञ, करेंगे आन विधाता।। १८३।।
गरीब, सकल भुवन के संत, रहेंगे बलि के लोका।
कलियुग गल तौंक जंजीर, मेटि हैं सब के दोषा।। १८४।।
गरीब, सतयुग सदा संगीत, रहैंगे बलि के द्वारे।
पारब्रह्म प्रवान, विसंभर धरि अवतारे।। १८५।।
गरीब, बलि जासी सतलोक, सुरपति की गादी छाड़ै।
केवल नाम **कबीर,** सुनत जम नाहीं डांडै।। १८६।।
गरीब, तत्तदरसी बलि बैन, सकल विधि सैना तिर हैं।
भक्ति मालवै नाम, हंसौ की पीरा हरि हैं।। १८७।।
गरीब, कौरव पाण्डव युद्ध किया, कलियुग की छाया।
भीषम के मुख बान लग्या, जहां द्रोण रिसाया।। १८८।।
गरीब, मारे कर्ण कशीश, बाण धरि पिण्ड लगाया।
बैठे मजलसि मांहि, द्रौपदी का चीर बढ़ाया।। १८६।।
गरीब, दुर्योधन कूँ जारि गया, कलियुग कुल खोया।
गये इकोतर वीर, कुण्ड दुर्योधन रोया।। १६०।।
गरीब, पांचौ पंड उबार, पांच अंड रजधानी।
चरण कमल के मांहि, राखि हैं सारंगपानी।। १६१।।
गरीब, पंडौं यज्ञ उपराज, छोड़्या है जग में बाजी।
उदय अस्त के बीच, जिनों बहु दिग्विजय साजी।। १६२।।
गरीब, पंडौं बैठ विमान, गये अमरापुरि मांही।
हिमालय की राह, पठाये सतगुरु सांईं।। १६३।।
गरीब, जहां छत्रपतियों का कुंड, पड़ै दुर्योधन राजा।
पंडौं के पगि लाग, सरैं सबहन के काजा।। १६४।।
गरीब, यह कलियुग की झाल, बहत है बहु विधि धारा।
पंड गये हैं ऊठ, देख कलियुग व्यवहारा।। १६५।।

गरीब, परीक्षित मुकट के मांहि, कलियुग मांखी होय आया।
तहां भींडी ऋषि देव, सर्प गल मांहि घलाया।। १९६।
गरीब, जब ऋषि दिया श्राप, परीक्षित तोहि सर्पहि डसियो।
कुष्टी काया अंग, नर्क में निश्चय बसियो।। १९७।।
गरीब, अमरपुरी शुकदेव, बसैं तत्तवेत्ता ज्ञानी।
पंडौं कल्पना कीन, तहां भगवान हि जानी।। १९८।।
गरीब, भींडी ऋषि दिया श्राप, परीक्षित कूँ तक्षक खाया।
अमरपुरी शुकदेव, विमानों बैठा आया।। १९९।।
गरीब, सात दिन भागवत सुनाई, शुक मुनि ज्ञानी।
परीक्षित पठये बैकुण्ठ, ऐसे हैं सतगुरु दानी।। २००।।
गरीब, परीक्षित बैठ विमांन, गये बैकुण्ठ सिधारे।
जहां पंडौं भगवान, अर्जुन कहे कारन सारे।। २०१।।
गरीब, एक माली बाड़ी बोय, गये हैं नगरहि माहीं।
हम आये उस पंथ, फलन की इच्छा आहीं।। २०२।।
गरीब, माली कूक सुनाय, सूंनी वाड़ी में पैठे।
तोड़े तीन तरबूज, बेलि दर टके बैठे।। २०३।।
गरीब, झीड़ी बन के मांहि, दई किलकार करारी।
यह ठगुवा कोई जाय, आवैं हैं मनुष्यों मारी।। २०४।।
गरीब, तरबूज्यों के शीश, हुये है प्रगट देखे।
कलयुग छलबल कीन्ह, सुनो तुम परीक्षित रेखे।। २०५।।
ब्रह्मलोक अस्थान, अनाहद संज्ञा सारं।
दास गरीब अनादि, देख अविगत दीदारं।। २०६।।

अथ चितावनी का अंग

गरीब, पानी की जल बूंद से, साज बनाया जीव।
अंदर बहुत अंदेश था, बाहर विसर्‌या पीव।। १।।
गरीब, पानी की जल बूंद से, साज बनाया सांच।
राखनहारे राखिया, जठराग्नि की आंच।। २।।
गरीब, पानी की जल बूंद से, साज बनाया सांच।
कौडी बदले जात है, कंचन साटे कांच।। ३।।
गरीब, पानी की जल बूंद से, साज बनाया सोध।
तूं जग में पंडित भया, पढ़्या अठारां बोध।। ४।।
गरीब, धरणीधर जान्या नहीं, कीन्हा कोटि जतन।
जल से साज बनाय करि, मानुष किया रतन।। ५।।
गरीब, धरणीधर जान्या नहीं, जिन सिरज्या जल बूंद।

गुलजारा दर्शे नहीं, चिसम्यौं फिर गई धूंध।। ६।।
गरीब, धरणीधर जान्या नहीं, जिन सिरजे जल बूंद।
नाड़ी सहंस समारि करि, लाया नख शिख गूंद।। ७।।
गरीब, धरणीधर जान्या नहीं, जिन सिरज्या तन साज।
चेत सकै तो चेतिये, बिगर जायेगा काज।। ८।।
गरीब, पानी की जल बूंद से, अजब बनाया ख्याल।
धरणीधर जान्या नहीं, आय पड़्या जम जाल।। ९।।
गरीब, ऊर्ध्वमुखी जदि रहै थे, तल सिर ऊपर पाव।
राखनहारे राखिया, जठराग्नि की लाव।। १०।।
गरीब, अस्थि चाम रग रोम सब, किसने कीन्हा गूद।
उदर बीच पोषण किया, बिन जननी के दूध।। ११।।
गरीब, तुंही तुंही तुतकार थी, जपता अजपा जाप।
बाहर आकर भरमिया, बहुत उठाये पाप।। १२।।
गरीब, तुंही तुंही तुतकार थी, ररंकार धुनि ध्यान।
जिन यौह साज बनाईया, जाकूँ लेहि पिछान।। १३।।
गरीब, औजूद उर्ध्वमुख जपै था, ररंकार धुनि धीर।
जा तालिब कूँ याद करि, जिन यौह धर्‌या शरीर।। १४।।
गरीब, औजूद उर्ध्वमुख जपै था, जूंनी जिन्द जिहांन।
बाहर मूल गंवाईयां, पूजत हैं पाषांण।। १५।।
गरीब, जठराग्नि से राखिया, ना सांईं गुण भूल।
औह साहिब दरहाल है, क्यों बोवत है शूल।। १६।।
गरीब, आध घड़ी की आध घड़ी, आध घड़ी की आध।
साधौं सेती गोष्ठी, जो कीजै सो लाभ।। १७।।
गरीब, पांव घड़ी तो याद कर, नीमा नाश न खोय।
सतगुरु हेला देत है, विषय शूल नहीं बोय।। १८।।
गरीब, अलख अलह कूँ याद कर, कादर कूँ कुरबांन।
सांई सेती तोड़ कर, रात्या अधम जिहांन।। १९।।
गरीब, अलफ अलह कूँ याद कर, जिन कीन्हा यौह साज।
उस साहिब कूँ याद कर, पाल्या जल बिन नाज।। २०।।
गरीब, संसारी में आन कर, कहा किया रे मूढ़।
सूवै सिंभल सेईया, लागे डोडे डूंड।। २१।।
गरीब, सूवै सिंभल सेईया, बारह वर्ष विसास।
अंत चोट खाली गई, डोडे बीच कपास।। २२।।
गरीब, सूवै सिंभल सेईया, ऐसी नर याह देह।
जम किंकर तुझ ले गये, मुख में देकर खेह।। २३।।

गरीब, आदि समय चेत्या नहीं, अंत समय अधिकार।
मध्य समय माया रत्ते, पाकरि लिये गंवार।। २४।।
गरीब, अंत समय बीतै घनी, तन मन धरै न धीर।
उस सांईं कूँ याद कर, जिन यौह धर्या शरीर।। २५।।
गरीब, धूंमे के सा धौलहर, बालू के सी भीत।
उस खाविंद कूँ याद कर, महल बनायो सीत।। २६।।
गरीब, धूमे के सा धौलहर, यौह बालू का साज।
उस खाविंद कूँ याद कर, साची गैब अवाज।। २७।।
गरीब, धूंमे के सा धौलहर, बालू जेहा भेव।
गैबी से गैबी मिलै, तो परसै दिल देव।। २८।।
गरीब, गैब अजाती पिण्ड में, जाका गैबी नाम।
सुंन सनेही जानिये, मढ़ी महल नहीं ठाम।। २९।।
गरीब, भक्ति हेत गृह बांधिया, माटी महल मसांन।
तैं साहिब जाना नहीं, भूल्या मूढ़ जिहांन।। ३०।।
गरीब, भक्ति हेत गृह बांधिया, घण नामी घट मांहि।
बिन सतगुरु की बंदगी, सांईं पावै नांहि।। ३१।।
गरीब, भक्ति हेत गृह बांधिया, घण नामी घट मांहि।
साधू जन सैंये बिना, सांई पावै नांहि।। ३२।।
गरीब, भक्ति हेत काया धरी, घण नामी घट बीच।
नीम लगै नहीं नालियर, भावैं परमल सींच।। ३३।।
गरीब, यौह माटी का महल है, जास्यूं कैसा नेह।
जे सांईं मिल जात है, तो नारायण देह।। ३४।।
गरीब, यौह माटी का महल है, खाख मिलेगा धूर।
सांईं के जाने बिना, गदहा कुत्ता सूर।। ३५।।
गरीब, यौह माटी का महल है, छार मिलै क्षण मांहि।
चार सख्स कांधे धरैं, मरहट कूँ ले जांहि।। ३६।।
गरीब, जारि बारि तन फूकिये, होगा हाहाकार।
चेति सकै तो चेतिये, सतगुरु कहैं पुकार।। ३७।।
गरीब, जारि बारि तन फूकिया, मरहट मण्डन मांड।
या तन की होरी बनी, मिटी न जम की डांड।। ३८।।
गरीब, जारि बारि तन फूकिया, मेटे खोज खलील।
तूं जाने मैं रहूँगा, इहां तो कछु न ढील।। ३९।।
गरीब, जारि बारि तन फूकिया, फोकट मिटै फिराक।
चेति सकै तो चेतिये, सतगुरु बोलै साषि।। ४०।।
गरीब, जारि बारि कोइला किया, होगया मरहट राख।

छाडे महल मंडेरियां, क्या क्रोड़ी ध्वज लाख।। ४१।।
गरीब, चढ़ि कर तुरा कुदावते, और पालकियौं फील।
ते नर जंगल जा बसे, जम कूँ फेर्या लील।। ४२।।
गरीब, अरब खरब लगि द्रव्य है, उदय अस्त बिच नाम।
बिन साहिब की बंदगी, डूब मुये दह मांहि।। ४३।।
गरीब, अरब खरब लगि द्रव्य है, रापति कोटि अनंत।
नाहक जग में आईया, जिन सेये नहीं संत।। ४४।।
गरीब, माया हुई तो क्या हुवा, भूलि रह्या नर भूत।
पिता कहेगा कौन कूँ, तूं वेश्वा का पूत।। ४५।।
गरीब, काया माया काल है, बिन साहिब के नांम।
चेति सकै तो चेतिये, बिन संतों नहीं ठांम।। ४६।।
गरीब, ऐसा अंजन आंजिये, सूझै त्रिभुवन राय।
कामधेनु और कल्पवृक्ष, घट ही मंझ लखाय।। ४७।।
गरीब, जूनी संकट मेटि हूँ, जे बिसरै नहीं मोहि।
जिन संसारी चित धरी, नहीं छुडाऊँ तोहि।। ४८।।
गरीब, लख चौरासी बंध ते, सतगुरु लेत छुड़ाय।
जे उर अंतर नाम होय, तो जूनी बहुरि न जाय।। ४६।।
गरीब, सब माया के ख्याल हैं, सब माया के चोज।
बिन सांईं की बंदगी, जंगल होयगा रोझ।। ५०।।
गरीब, महमूदी चौतार नर, खासे पहरे खूब।
अंत मसानौं जा बसे, बिना भक्ति महबूब।। ५१।।
गरीब, जूनी संकट मेटि हूँ, देहूँ निश्चल वास।
उर अंतर में राखि हूँ, जम की नहीं तिरास।। ५२।।
गरीब, जो जन हमरी शरनि है, जाका हूँ मैं दास।
भक्ति अनाहद बंदगी, अनंत लोक प्रकाश।। ५३।।
गरीब, बेमुख प्रानी जांहिगे, दोजग दुंद बहीर।
जाकूँ नर नहीं सुमरते, जिन यह घड़्या शरीर।। ५४।।
गरीब, या माटी के महल में, मगन भया क्यूं मूढ़।
करि साहिब की बंदगी, उस सांईं कूँ ढूंढ़।। ५५।।
गरीब, इस माटी के महल में, मन बांधी विष पोट।
अहरिन पर हीरा धर्या, ताहि सहै घण चोट।। ५६।।
गरीब, काचा हीरा क्रिच होय, नहीं सहै घण भार।
ऐसा यह मन होय रह्या, लेखा ले कर्तार।। ५७।।
गरीब, हीरा घण की चोट सहि, साचे कूँ नहीं आंच।
सो दरगह में क्या कहैं, जाके संग हैं पांच।। ५८।।

गरीब, चेत सकै तो चेतिये, सतगुरु हेला दीन।
बन बसती में ना रहे, ले जाता जम बीन।। ५६।।
गरीब, चेत सकै तो चेतिये, सतगुरु कह्या पुकार।
बिन भक्ति छुटै नहीं, बहु विधि जम की मार।। ६०।।
गरीब, संतों सेती ओलने, संसारी से नेह।
सो दरगह में मारिये, सिर में देकर खेह।। ६१।।
गरीब, भक्ति गरीबी बंदगी, संतो सेती हेत।
जिनके निश्चल वास है, आसन दीजै श्वेत।। ६२।।
गरीब, कुटिल वचन कूँ छाडि दे, मगज मनी कूँ मार।
सतगुरु हेला देत है, डूबैं काली धार।। ६३।।
गरीब, इस माटी के महल में, ना नर कीजै मोदि।
राव रंक सब चलहिंगे, आपै कूँ ले शोधि।। ६४।।
गरीब, मात पिता सुत बंधुवा, देखै कुल के लोग।
रे नर देखत फूकिये, करते हैं सब शोग।। ६५।।
गरीब, महल मुंडेरी नीम सब, चलै कौन की साथ।
कागा रौला हो रह्या, कछु न लाग्या हाथ।। ६६।।
गरीब, गलतानां गैबी चल्या, माटी पिंडप जोख।
आया सो पाया नहीं, अन आये कूँ रोक।। ६७।।
गरीब, यह मन मंजन कीजिये, रे नर बारंबार।
सांई से कर दोस्ती, बिसरि जांहि संसार।। ६८।।
गरीब, अंत समय की बात सुन, तेरा संगी कौन।
माटी में माटी मिलै, पवनहि मिल है पौन।। ६९।।
गरीब, ये बादर सब धुंध के, मन माया चितराम।
दीखै सो रहता नहीं, सप्तपुरी सब धाम।। ७०।।
गरीब, जन्म जन्म के मैल हैं, जन्म जन्म की घात।
जब नर तुझ सूझै नहीं, ले चालैं चार बरात।। ७१।।
गरीब, जाते कूँ नर जान दे, रहते कूँ ले राख।
सतशब्द उर ध्यान धरि, मुख से कूड़ न भाख।। ७२।।
गरीब, निर्वाणी के नाम से, हिल मिल रहना हंस।
उर में करिये आरती, कदे न बूडै वंश।। ७३।।
गरीब, पंखी उडै आकाश कूँ, कित कूँ कीन्हा गवन।
यह मन ऐसे जात है, जैसे उदबुद पवन।। ७४।।
गरीब, धन संचो तो संत का, और न तेरै काम।
अठसठि तीरथ जे करै, नाहीं संत समान।। ७५।।
गरीब, धन संचो तो शील का, दूजा परम संतोष।

ज्ञान रतन भंजन भरो, असलि खजाना रोक।। ७६।।
गरीब, दया धर्म दो मुकट हैं, बुद्धि विवेक विचार।
हरदम हाजर हूजिये, सौदा त्यारम त्यार।। ७७।।
गरीब, नाम अभय पद निर्मला, अटल अनूपम एक।
यौह सौदा सत कीजिये, बनजी बनज अलेख।। ७८।।
गरीब, यौह संजम सैलान करि, यौह मन यौह बैराग।
बन बसती कित ही रहो, लगे बिरह के दाग।। ७६।।
गरीब, राजिक नाम संभालिये, प्रपंची कूँ मोहि।
अंत बखत आनंद होंहि, अटल भक्ति द्यौं तोहि।। ८०।।
गरीब, जा घट भक्ति बिलास है, जा घट हीरा नाम।
सो राजा पृथ्वीपति, जा घर मुकते दाम।। ८१।।
गरीब, साहिब साहिब क्या करै, साहिब तेरे पास।
सहंस इकीसौं खोज ले, उलटि अपूठा श्वास।। ८२।।
गरीब, गगन मंडल में रमि रह्या, तेरा संगी सोय।
बाहर भरमें हांनि है, अंदर दीपक जोय।। ८३।।
गरीब, चित्त के अंदर चांदना, कोटि सूर शशी भान।
दिल के अंदर देहरा, काहे पूजि पाषाण।। ८४।।
गरीब, रतन रसायन नाम है, मुक्ता माल मंजीठ।
अंधे कूँ सूझै नहीं, आगै जलै अंगीठ।। ८५।।
गरीब, नाम बिना निबहैं नहीं, करनी करि हैं कोट।
संतो की संगति तजी, विष की बांधी पोट।। ८६।।
गरीब, झिल मिल दीपक तेज के, दशौं दिशा दरहाल।
सतगुरु की सेवा करैं, पावैं मुक्ता माल।। ८७।।
गरीब, लै का लाहा लीजिये, लै की भरिये लार।
लै की बनजी कीजिये, लै का साहूकार।। ८८।।
गरीब, रतन खजाना नाम है, माल अजोख अपार।
यौह सौदा सत कीजिये, दुगनें तिगनें चार।। ८६।।
गरीब, निर्गुण निरमल नाम है, अविगत नाम अबंच।
नाम रते सो धनपती, और सकल प्रपंच।। ६०।।
गरीब, ऐसा लाहा लीजिये, संत समागम सेव।
सतगुरु साहिब एक है, तीनूं अलख अभेव।। ६१।।
गरीब, चेत सकै तो चेतिये, कूकै संत सुमेर।
चौरासी कूँ जात है, फेरि सकै तो फेर।। ६२।।
गरीब, मन माया की डुगडुगी, बाजत है मृदंग।
चेत सकै तो चेतिये, जाना तुझे बिनंग।। ६३।।

गरीब, नंगा आया जगत में, नंगा ही तूं जाय।
बिच में ख्वाबी ख्याल है, मन माया भरमाय।। ६४।।
गरीब, फूक फाक फारिक किया, कहीं न पाया खोज।
चेत सकै तो चेतिये, ये माया के चोज।। ६५।।
गरीब, नैंना निरमल नूर के, बैंना वाणी सार।
आरति अंजन कीजिये, डारो सिर से भार।। ६६।।

अथ मन का अंग

गरीब, यौह मन गिरा आकाश तैं, फूट्या लाल रतन।
फिर उलटा मिलता नहीं, कीजै कोटि जतन।। १।।
गरीब, यौह मन गिरा आकाश तैं, फूट्या पारस लाल।
फिर उलटा मिलता नहीं, याका कौन हवाल।। २।।
गरीब, यौह मन गिरा आकाश तैं, फूट्या देख पदम।
फिर उलटा मिलता नहीं, रात्या फिरै अधम।। ३।।
गरीब, यौह मन गिरा आकश तैं, हो गया चकना चूर।
लख चौरासी मन बसी, गदहा कुत्ता सूर।। ४।।
गरीब, यौह मन गिरा आकाश तैं, हो गया धामाधूल।
लख चौरासी मन बसी, पारब्रह्म गया भूल।। ५।।
गरीब, यौह मन गिरा आकाश तैं, हो गया गारत गोर।
लख चौरासी मन बसी, पारब्रह्म से तोर।। ६।।
गरीब, यौह मन गिरा आकाश तैं, हो गया खंड बिहंड।
लख चौरासी मन बसी, जुगन जुगन यम डण्ड।। ७।।
गरीब, यौह मन गिरा आकाश तैं, माया कार गुलाम।
लख चौरासी मन बसी, भूल गया है राम।। ८।।
गरीब, एक मन के पांच हैं, पांच पांच के पांच।
ताता थेई हो रह्या, नाचै बहु विधि नाच।। ९।।
गरीब, एक मन का एक है, एकै मन अनेक।
एकै मन विसतार है, धारै नाना भेष।। १०।।
गरीब, यौह मन ब्रह्मा विष्णु है, यौह मन शंकर शेष।
यौह मन नारद जानियो, या मन कूँ आदेश।। ११।।
गरीब, यौह मन कर्ता आप है, यौह मन नव अवतार।
सुर असुरौं में खेलता, हरदम बारंबार।। १२।।
गरीब, यौह मन कंसा केशि है, यौह मन रावण राम।
यौह मन खेत्रपाल है, यौह मन पूजै धाम।। १३।।
गरीब, यौह मन हिरणाकुश भया, यौह मन है प्रहलाद।

यौह मन नृसिंह अवतर्या, खेलै आदि अनादि।। १४।।
गरीब, यौह मन तो चानौर है, यौह मन सहंस्रबाह।
यौह मन अंगद बालि है, या मन की नहीं थाह।। १५।।
गरीब, यौह मन नर नारी भया, यौह मन चकवै भूप।
यौह मन चौरासी पड्या, मन के नाना रूप।। १६।।
गरीब, यौह मन मैला ऊजला, यौह मन है हैरान।
यौह मन साधू सिद्ध है, यौह मन है शैतान।। १७।।
गरीब, यौह मन गहला जानिये, यौह मन प्रगट पीर।
यौह मन गैबी होत है, यौह मन धरै शरीर।। १८।।
गरीब, यौह मन ज्ञानी मूढ़ है, यौह मन चातुर चोर।
यौह मन अधिक मुलायमी, यौह मन बड़ा कठोर।। १९।।
गरीब, यौह मन हीरा लाल है, यौह मन पारस जान।
यौह मन कौडी हो गया, सांईं बिना पिछान।। २०।।
गरीब, मन ही कूँ मन मारता, मन ही करै सहाय।
मन ही कर्द चलावता, मनैं कसाई गाय।। २१।।
गरीब, मन ही राजा रंक है, मन ही आवै जाय।
मन ही अस्थिर हो रह्या, मन ही गोते खाय।। २२।।
गरीब, मन ही गोपी ग्वाल है, मनै यशोदा नंद।
मनै कन्हैया कृष्ण है, मन ही बांधै बंध।। २३।।
गरीब, मन ही चित्रगुप्त भया, मन ही है धर्मराय।
मन ही जम जौरा भया, मन ही कूँ मन खाय।। २४।।
गरीब, मन ही माया मूल है, फूट्या रतन अगाध।
फिर उलटा मिलता नहीं, यौह मन आदि अनादि।। २५।।
गरीब, मन ही मारै मन मरै, मन ही मरि मरि जाय।
मन की मनै बुझावता, मन ही लावै लाय।। २६।।
गरीब, मन ही मारै मन मरै, मन ही मुरद फरोस।
मन ही की स्तुति करै, मन ही कूँ फिर दोष।। २७।।
गरीब, मन ही मारै मन मरै, मन ही मुग्ध गंवार।
मन के आगे मन खड़ा, मन ही का लिनहार।। २८।।
गरीब, मन ही मारै मन मरै, मन ही रुंडक मुंड।
मन ही अस्थिर हो रह्या, मन भरमै नौ खंड।। २९।।
गरीब, मन ही मारै मन मरै, मन ही लेखा लेत।
मन ही करनी भुगतता, मन ही सब दण्ड देत।। ३०।।
गरीब, मन ही मोटा हो रह्या, मन मीहीं मुस्ताक।
मन महमूदी पहरता, मन ही लावै राख।। ३१।।

गरीब, मन ही घोड़े पर चढ़ै, मन ही चरवा दार।
मन ही बैठ्या पालकी, मन ही भया कहार।। ३२।।
गरीब, मन रैयत कृषान है, मन ही है पादशाह।
मन ही फौज वजीर है, मन की मोटी दाह।। ३३।।
गरीब, मन ही षट् दर्शन भया, मन ही दोनूं दीन।
मन छत्तीसौं कौंम है, पांच पचीसौं तीन।। ३४।।
गरीब, मन ही आरा सिर धरै, मन काशी लीन करौंत।
मन ही आजिज हो रह्या, मांगे मनै रसौंत।। ३५।।
गरीब, मन ही पंच अगनी तपै, मन ही डूंगर बास।
मन ही अन्नजल त्यागता, मन खड़ खावै घास।। ३६।।
गरीब, मन ही कायर हो रह्या, मन ही शूरा सिंह।
मन सतगुरु के खेति चढ़ि, जीते है रणजंग।। ३७।।
गरीब, मन ही मारग जात है, मन ही मारग भूल।
मन ही पौहप लगावता, मन ही बोवै शूल।। ३८।।
गरीब, मन बैरागी जोगिया, मन ही है गृहचार।
मन बीतरागा हो रह्या, मन भरमै संसार।। ३९।।
गरीब, मन ही आवा गमन में, मन ही अस्थिर होय।
मन ही सरगुण सृष्टि है, मन ही निर्गुण लोय।। ४०।।
गरीब, मन का मेला भरि रह्या, मन ही के बाजार।
मन ही बणजी करत है, मन ही साहूकार।। ४१।।
गरीब, मन ही सौदागर भया, मन ही बैठ्या हाटि।
मन पद पारख परखियां, मन ही करता साटि।। ४२।।
गरीब, मन ही सरगुण हो रह्या, मन ही निर्गुण नूर।
मन ही पूर्ण ब्रह्म है, मन ही कुत्ता सूर।। ४३।।
गरीब, मन ही बंगी बंग दे, मन ही पढ़ै नमाज।
मन ही रोजा करत है, मन चिड़िया मन बाज।। ४४।।
गरीब, मन ही कलमा पढ़त है, मन ही उधेड़ै खाल।
मन ही मछली हो रह्या, मन ही झींवर जाल।। ४५।।
गरीब, मन ही मुल्ला मुर्ग है, मन ही बकरी बोक।
मन ही काजी हो रह्या, सींक भरत है शोख।। ४६।।
गरीब, मन ही भिस्ती हो रह्या, मन ही दोजख दुंद।
मन कूँ सूझे लोक सब, मन ही कुट्टन अंध।। ४७।।
गरीब, मन ही अलह अलेख है, मन ही राम रहीम।
मन ही कादर आप है, मन ही है बहलीम।। ४८।।
गरीब, मन ही माया हो रह्या, मन ही काया काल।

मन ही जानि श्राप दे, मन ही करै निहाल।। ४६।।
गरीब, मन ही माली कूप है, मन ही माली बाग।
मन ही ज्ञाता हो रह्या, मन ही सुनता राग।। ५०।।
गरीब, मन ही बहरा गुंग है, मन ही अंधा ऊत।
मन सनकादिक हो रह्या, मन ही भैरव भूत।। ५१।।
गरीब, मन ही खित्रपाल है, मन ही देवी देव।
मन के आगे मन खड़ा, मन ही की कर सेव।। ५२।।
गरीब, मन ही दुर्गा हो रह्या, मन ही खित्रपाल।
भुवन चतुर्दश रमि रह्या, मन ही के सब ख्याल।। ५३।।
गरीब, मन ही घोड़ा ऊंट है, मन ही हस्ती जान।
मन ऊपर असवार है, मन ही है पीलवान।। ५४।।
गरीब, मन ही मोर चकोर है, मन ही सर्प भवंग।
मन ही कूँ मन डसत है, मन गारुड़ प्रसंग।। ५५।।
गरीब, मन ही देवी धाम है, मन ही पूजन जाय।
मन के मारे बह गये, यौह मन बड़ी बलाय।। ५६।।
गरीब, मन के मारे बन गये, बन तजि बसती हेत।
श्रृंगी ऋषि से पाकरे, यह मन हेला देत।। ५७।।
गरीब, मन के मारे बन गये, पारा ऋषि प्रवांन।
पुत्री से संजम किया, मन की खोटी बांन।। ५८।।
गरीब, मन के मारे बन गये, नारद से महमंत।
पूत बहत्तर मन किये, ऐसे पूरे संत।। ५६।।
गरीब, सुरपति का तो मन चल्या, गौतम ऋषि की नारि।
इन्द्र सहंस भग हो गये, लगी चंद्र मृगछारि।। ६०।।
गरीब, दुर्वासा का मन चल्या, तन मंजन बैराग।
मल्ल अखाड़ै मोहिया, सुने उर्वशी राग।। ६१।।
गरीब, ब्रह्मा का आसन डिग्या, और बड़ा कहो कौन।
मन के मारे मुनि गये, अनहोनी हरि हौंन।। ६२।।
गरीब, शंकर अडिग अडोल है, जाके मन की बूझि।
शंकर का पारा चल्या, हरदम मन से लूझि।। ६३।।
गरीब, विष्णु विसंभर मोहिया, पकरे हैं भगवान।
अनंत कला धरि अवतरे, मन की गई न बान।। ६४।।
गरीब, ज्यू राखै त्यूं ही रहै, मेरा क्या चारा।
खाने जाद गुलाम है, खरीद तुम्हारा।। ६५।।
गरीब, ज्यूं राखै त्यूं ही रहै, हम कूँ क्या कहिये।
खाने जाद गुलाम है, बांदी का लहिये।। ६६।।

गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, घालि रह्या है धूम।
प्रगट देता धाड़ि है, शंक न मानै गूम।। ६७।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, मरि मरि हुवा अजात।
मूयें पीछे उठि लग्या, घाली बहु विधि घात।। ६८।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, मरि मरि हुवा मशांन।
मूयें पीछे उठि लग्या, प्रगट्या फेर जिहांन।। ६९।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, मरि मरि हुवा मशांन।
मूयें पीछे उठि लग्या, मारे कसि कसि बाण।। ७०।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकारा, मरि मरि हुवा मशांन।
मूयें पीछे उठि लग्या, घालत है घमसांन।। ७१।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, रोज बिहंडै आय।
मैं तो लाऊँ बंदगी, पर द्वारे उठि जाय।। ७२।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, रोज बिहंडै आय।
साधु संगति भावै नहीं, सुनकर ज्ञान रिसाय।। ७३।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, रोज बिहंडै आय।
नेकी कदे न खाट हीं, बदी विधंस सुनाय।। ७४।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकरा, रोज बिहंडै आय।
प्रेम पियाला ना पीवै, पकरि हलाहल खाय।। ७५।।
गरीब, यौह मन मेरा मसकारा, माल बिराना लूटि।
हक्क हिसाबी ना चलै, दरगह किस विधि छूटि।। ७६।।
गरीब, यौह मन रापति हो रह्या, कुंजर के सा खेल।
आन अटक मानै नहीं, लंगर सांकल मेल।। ७७।।
गरीब यौह मन हसती फील है, रापति बड़ महमंत।
अगम निगम में खेलता, वार पार नहीं अंत।। ७८।।
गरीब, मन मुरजीवा ना भया, कैसे होय दीदार।
यह मन मोटा मुग्ध है, याका करो विचार।। ७९।।
गरीब, मन मींहीं कर पीसिये, ऊपर लावै आग।
तो भी चंचल ना रहै, निश दिन उठि उठि भाग।। ८०।।
गरीब, मन मानें घर जात है, मन त्यागे घर होय।
हंसि कर किन्हे न पाईया, जिन पाया तिन रोय।। ८१।।
गरीब, मन की खोटी बान है, उडि उडि जाइ अजात।
घेर घार कर आनिये, रहता दिवस न रात।। ८२।।
गरीब, मन की खोटी बान है, हर दम ऊलटा हेर।
नीचे ही कूँ जात है, चढ़ना शिखर सुमेर।। ८३।।
गरीब, मन की खोटी बान है, छल छिद्र बहु जोर।

हेर रहे हिरता नहीं, यौह मन चंचल चोर।। ८४।।
गरीब, मन की खोटी बान है, बारह बाट बिटंब।
अन देखा अज गैब का, हेरै बहुत कुटंब।। ८५।।
गरीब, मन की खोटी बान है, खारा मीठा होय।
कोटि यत्न कर भेईये, दिल का दाग न धोय।। ८६।।
गरीब, या दिल अंदर दाग है, धोये से नहीं जाय।
सतगुरु सिकलीगर मिलै, फिरे मुसकला मांहि।। ८७।।
गरीब, तोड़ ताड़ कर फिर घड़ै, दर्पण उज्जल कीन।
ऐसा सतगुरु जो मिलै, होय महल दुरबीन।। ८८।।
गरीब, जुगन जुगन के दाग हैं, मन के मैल विकार।
धोये से नहीं जात है, गंगा न्हाय किदार।। ८९।।
गरीब, जुगन जुगन के दाग हैं, मन के मैल मसंड।
न्हाये से नहीं जात है, अठसठि तीरथ दण्ड।। ९०।।
गरीब, मन का मींही महल है, निज मन कूँ टुक बूझ।
निजमन से निजमन मिलै, खाखी मन से लूझ।। ९१।।
गरीब, निज मन नीका निर्मला, खाखी मन शैतान।
कोटि यत्न कर राखिये, छाडत नाहीं बांन।। ९२।।
गरीब, काया मांही दोय मन, इन में कौन हमार।
को अमरापुरि जात है, को भरमै संसार।। ९३।।
गरीब, नूरी मन से मिल रहो, खाखी खारिज कीन।
ज्ञान शब्द से मारिये, पांच पचीसौं तीन।। ९४।।
गरीब, नूरी मन से मिल रहो, खाखी बड़ा बखील।
सतगुरु हेला देत हैं, क्यूँ कीजै शिष्य ढील।। ९५।।
गरीब, खाखी खारिज कीजिये, नूरी मन से नेह।
शब्द बाण सिर पर धरै, संतों के गुण येह।। ९६।।
गरीब, खाखी खेलै सब दिशा, नूरी निश्चल धाम।
शील संतोष विवके रख, जपि ले हरदम नाम।। ९७।।
गरीब, खाखी रोड़ा बाट का, नूरी निर्गुण नूर।
इस उस में बहु अतंरा, खाखी से रहो दूर।। ९८।।
गरीब, खाखी मन खेला भया, खाता है नित खेत।
नूरी रखवाला रखो, हटकै प्रेम से हेत।। ९९।।
रौह रौह रे मन मारौंगा, ज्ञान खड़ग सिंहारौंगा।
डामा डोल न हूजै रे, तुझ को निज धाम न सूझै रे।। १००।।
सतगुरु हेला देवै रे, तुझि भौसागर से खेवै रे।
चौरासी तुरत मिटावै रे, तुझि जम से आन छुडावै रे।। १०१।।

कह्या हमारा कीजै रे, सतगुरु कूँ सिर दीजै रे।
अब लेखै लेखा होई रे, यह बहुरि न मेला कोई रे।। १०२।।
शब्द हमारा मानों रे, अब नीर खीर कूँ छानों रे।
तूं बहज मुखी क्यों फिरता रे, इब माल बिराना हरता रे।। १०३।।
तूं गोला जाति गुलामा रे, तूं बिसर्‌या पूरन रामा रे।
अब डंड परै सिर तोही रे, तैं अगली पिछली खोई रे।। १०४।।
मन कृतघ्नी तू भड़वा रे, तुझे लागै साहिब कड़वा रे।
मन मारौंगा मैदाना रे, सतगुरु शमशेर समाना रे।। १०५।।
अरे मन टूक टूक कर नाखूं रे, तुझे कुंज गली में राखूं रे।
सिर काट हदीरा बांधौं रे, उलटा मेलों सर सांधौं रे।। १०६।।
अरे मैं तन मन काटि जलाऊँ रे, दीखै जहां आग लगाऊँ रे।
अरे मन अजब अलामा रे, तैं बहुत बिगारे कामा रे।। १०७।।
बैराट कदे नहीं ध्याया रे, तैं सरबस मूल गंवाया रे।
सब अंजन मंजन फोर्‌या रे, टुक तार न चिसमां जोर्‌या रे।। १०८।।
हैरान हिवांनी जाता रे, सिर पीटै ज्ञानी ज्ञाता रे।
हैरांन हिवांनी खेलै रे, सब अपने ही रंग मेलै रे।। १०९।।
हैरांन हिवांनी नाचै रे, कुछ ऊंच नीच नहीं बांचै रे।
हैरांन हिवांनी काला रे, जम मार करै बेहाला रे।। ११०।।
निरबंध निरंतर खेलै रे, सतगुरु तुझ आंन सकेलै रे।
गुलजार गली नहीं जाता रे, तूं विष के लड्डू खाता रे।। १११।।
तैं नौका नाव डबोई रे, मन खाखी भडुवा धौही रे।
मन मार बिहंडम करिसूं रे, सतगुरु साक्षी नहीं डरिसूं रे।। ११२।।
अरे चढ़ि खेत लरौं मैदाना रे, तुझ मारूँगा शैताना रे।
डिढ की ढाल बनाऊँ रे, तन तत्त की तेग चलाऊँ रे।। ११३।।
काम कटारी ऐंचू रे, धरि बान विहंगम खैंचू रे।
बुद्धि बंदूक चलाऊँ रे, मैं चित्त की चखमख लाऊँ रे।। ११४।।
मैं दम की दारू भरता रे, ले प्रेम पियाला जरता रे।
मैं गोला ज्ञान चलाऊँ रे, मैं चोट निशाने लाऊँ रे।। ११५।।
सैल शरे में लाऊँ रे, सतगुरु के लटका पाऊँ रे।
रे सुंन सिंजोइल पहर्‌या रे, यौह बुद्धि का बख्तर गहरा रे।। ११६।।
तूं चाल कहां लग चालै रे, तूं निश दिन हिरदे सालै रे।
मैं मारूंगा नहीं छाडूं रे, खाखी मन घर से काढूं रे।। ११७।।
तैं हाटि पटन सब लूट्‌या रे, तूं आठों गांठे झूठा रे।
तैं बसती नगर उजार्‌या रे, खाखी मन झूठा दारा रे।। ११८।।
तूं है मूलों का जाया रे, तूं अनंत जुगों नहीं धाया रे।

तूं लख चौरासी खेला रे, अब हो सतगुरु का चेला रे।। ११६।।
मन मारूंगा मैदानी रे, अब कर सूं धूमा धामी रे।
कोई खाखी मन कूँ हेरै रे, कोई बाहर जाता फेरै रे।। १२०।।
यौह बहुरंगी नहीं बोलै रे, यौह भुवन चतुर्दश डोलै रे।
यह आवत जात न दीखै रे, मन मानत नांही सीखै रे।। १२१।।
यह तीन लोक में फिरता रे, इस घेर रहे नहीं घिरता रे।
यह मन कहिये अक माया रे, इन बहुविधि दुंद मचाया रे।। १२२।।
यह माया चढ़ी अहेड़ै रे, हंसा चुनि खात निबेड़ै रे।
यह मन माया का गौंना रे, नर कनक कामिनी सौना रे।। १२३।।
यह क्या मींहीं क्या मोटी रे, नर जानों सब ही खोटी रे।
याह मन माया की जाली रे, याह निर्गुण सरगुण डाली रे।। १२४।।
चल सुखसागर ले जाऊँ रे, मन अग है देश दिखाऊँ रे।
कर सुख सागर अस्नाना रे, चलो देखो देश दिवाना रे।। १२५।।
चलि देखो देश हमारा रे, जहां कोटि पदम उजियारा रे।
चलि देखो देश हमारा रे, जहां तत्त शब्द झंनकारा रे।। १२६।।
चलि देखो देश हमारा रे, जहां उजल भँवर गुंजारा रे।
चलि देखो देश हमारा रे, जहां चौंर सुहंगम ढारा रे।। १२७।।
चलि देखो देश हमारा रे, जहां चंद्र सूर नहीं तारा रे।
चलि देखो देश हमारा रे, नहीं धर अंबर गैंनारा रे।। १२८।।
चलि देखो हमारा रे, जहां अनंत फूल गुलजारा रे।
चलि देखो देश हमारा रे, जहाँ भाठी चवै कलारा रे।। १२६।।
चलि देखो देश हमारा रे, जहां घूमत है मतवारा रे।
रे मन कीजे दारमदारा रे, तुझ ले छोड़ूं दरबारा रे।। १३०।।
फिर भवसागर नहीं आवै रे, सतगुरु सब नाच मिटावै रे।
चलि अजब नगर विश्रामा रे, तुम छाडो दहना बामा रे।। १३१।।
चलि देखो देश अमानी रे, जहां ना कछु पावक पानी रे।
चलि देखो देश अमानी रे, जहां झलकै बारह बानी रे।। १३२।।
चलि देखो देश अमानी रे, मैं सतगुरु पै कुरबानी रे।
चलि देखो देश बिलंदा रे, जहां बसैं कबीरा जिंदा रे।। १३३।।
चलि देखो देश आगाहा रे, जहां बसै कबीर जुलाहा रे।
चलि देखो देश अमोली रे, जहां बसै कबीरा कोली रे।। १३४।।
चलि देखो देश अमाना रे, जहां बुनै कबीरा ताना रे।
चलि अविगत नगर निवासा रे, नहीं मन माया का वासा रे।। १३५।।
चलि अक्षर धाम चलाऊँ रे, मैं अविगत पंथ लखाऊँ रे।
कर मंक्रतार पियाना रे, ज्यूं शब्दे शब्द समाना रे।। १३६।।

जहां झिलमिल दरिया नागर रे, जहां हंस रहैं सुखसागर रे।
जहां अनहद नाद बजंता रे, जाके कछु आदि न अंता रे।। १३७।।
जहां बाजे अनहद तूरा रे, चलि देखो अजब जहूरा रे।
चल सिंधै सिंध मिलाऊँ रे, भवसागर बहुर न आऊँ रे।। १३८।।
जहां अजब हिरंबर हीरा रे, जहां हंस रहे सुख तीरा रे।
जहां अजब हिरंबर हीरा रे, यम दंड नहीं दुख पीरा रे।। १३६।।
जहां अजब हिरंबर मेला रे, चलि हद बेहद पर खेला रे।
गुलजार गलीचा गादी रे, सुंन मंडल साध समाधी रे।। १४०।।
चलि मानसरोवर दरिया रे, सुख सागर मेला भरिया रे।
निहतंती नाद निरंजन रे, अविगत साहिब दुःख भंजन रे।। १४१।।
कादर कर्तार करीमा रे, जहां कुशल सही हम खीमा रे।
जहां शंख भानु प्रकाशा रे, जहां झिलमिल नूर निबासा रे।। १४२।।
है भगलीगर का जंत्र रे, साहिब है आप निरंतर रे।
सतगुरु मारग पाया रे, हम औघट घाट चढ़ाया रे।। १४३।।
त्रिवैणी के तीरा रे, मन पवन सुरति भये थीरा रे।
जहां निरत निरंतर खेलै रे, कोई सतगुरु पूरा पेलै रे।। १४४।।
जहां अडिग समाधि लगावै रे, सब पड़दा खोल दिखावै रे।
जहां शंख जुगन जुग थीरा रे, जहां निर्मल तत्त गहीरा रे।। १४५।।
मन औघट घाट पियाना रे, निर्भय निर्गुण निर्बाना रे।
नूर झिलमिला ज्योति रे, जहां झलकै माणिक मोती रे।। १४६।।
गरीब, मन का मारग बंक है, मन का मारग सीध।
मन सिंहासन चढ़ गया, मन महली मन बीध।। १४७।।
गरीब, मन ही माला फेरता, मन करता अस्नान।
मन ही पूजा आरती, मन ही धरता ध्यान।। १४८।।
गरीब, मन ही दामनगीर है, मन ही है शिरताज।
मन ही कांजी गेरता, मन ही सारै काज।। १४६।।
गरीब, मन मरदाना हो रह्या, मन कायर कंगाल।
मन ही साहूकार है, मन ही संचे माल।। १५०।।
गरीब, आदि अंत अनहद रते, जोग जुगति उर मांहि।
भजन गरीबी बंदगी, जिनकी मैं बलि जांहि।। १५१।।
गरीब, आदि अंत निर्बंध है, निर्बानी से नेह।
जिनका मन कहो क्या करै, धारे अंग न देह।। १५२।।
गरीब, आदि अंत निर्बंध है, निर्बानी सूं प्रीत।
जिनका मन कहो क्या करै, जो हो गये शब्द अतीत।। १५३।।
गरीब, आदि अंत निर्बंध है, निर्बानी से हेत।

जिनका मन कहो क्या करै, जो छाडत नांहीं खेत।। १५४।।
गरीब, सिकल विकल व्यापै नहीं, जो चाहे सो होय।
सिर साटे की बंदगी, मेला निर्गुण लोय।। १५५।।
गरीब, गायत्री कलमा पढ़ै, मन की बहु विधि मार।
हिरसि हिवानी मंझ है, किस विधि उतरैं पार।। १५६।।
गरीब, गायत्री कलमा पढ़ै, सूर गऊ नहीं बांच।
सरे रसातल जात हैं, है दोजख की आंच।। १५७।।
गरीब, मन की माया मेर है, मन त्यागे नहीं रिंच।
मन जीते सतगुरु मिलै, छाड सकल प्रपंच।। १५८।।
गरीब, मन की माया मेर है, मन जीते जग जीत।
मन ही मुक्ता हो गया, मन ही पड़दा भीत।। १५९।।
गरीब, मन के सकल उपंग हैं, मन के सकल तरंग।
मन ही अस्थिर हो रह्या, मन ही चंचल भंग।। १६०।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, कौड़ी नाल बिकाय।
बिन सतगुरु नहीं सूझता, ऐनक अर्श लगाय।। १६१।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, कौड़ी बदले खोय।
बिन सतगुरु नहीं सूझता, लखे हिरंबर लोय।। १६२।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, कौड़ी बदले सेर।
बिन सतगुरु नहीं सूझता, फेर्या जाये तो फेर।। १६३।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, कौड़ी बदले हीर।
बिन सतगुरु नहीं सूझता, सुन कुट्टन बे पीर।। १६४।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, ऐसा सौंहगा कीन्ह।
घर घर हाट बिकात है, सतगुरु साहिब चीन्ह।। १६५।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, कित आया कित जाय।
बिन सतगुरु नहीं सूझता, उलटा सिन्धु समाय।। १६६।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, कित से आया देख।
बिन सतगुरु सूझे नहीं, यौह मन आप अलेख।। १६७।।
गरीब, यौह मन महिंगे मोल का, कित से आया जान।
बिन सतगुरु सूझे नहीं, कह्या हमारा मान।। १६८।।
गरीब, यौह मन हंस हिरंबरी, कुत्ता कहिये काग।
यौह मन खर खारिज भया, यौह मन ले बैराग।। १६९।।
गरीब, परम हंस के धाम कूँ, गमन करै नहीं गैब।
कोटि पाप पल में झडैं, मिटैं सकल सब ऐब।। १७०।।
गरीब, परम हंस के धाम कूँ, गमन करैं निर्बंध।
कोटि पाप पल में झड़ैं, कटैं सकल सब फंद।। १७१।।

गरीब, मन ही अक्षर धाम है, मन ही मक्रतार।
मन ही सुरति निरति भया, मन ही वार अरु पार।। १७२।।
गरीब, मन ही आवत जात है, मन ही स्वासा सिंध।
मन मुक्ता महबूब है, मन ही पड़िया फंद।। १७३।।
गरीब, मन ही मारग में खड़ा, मन ही निश्चल धाम।
मन संसारी में रम्या, यौह त्रिगुण मन काम।। १७४।।
गरीब, शील संतोष विवेक कूँ, मन ही धरै चलाय।
मन ही अस्थिर हो रह्या, मन ही ज्ञान सुनाय।। १७५।।
गरीब, जेती मन की वासना, तेती मन की लार।
पूरा सतगुरु जो मिलै, सब गुण गेरै जार।। १७६।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, समझै नहीं विटंब।
औषधि अंदर ना लगै, घट में रोग अटंब।। १७७।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, अंदर वाद विवाद।
सिर जम डंडा खात है, कोटि मिलैं जो साध।। १७८।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, तजै न मन की बान।
मानुष तै पत्थर भला, चिणैं दिवाला थान।। १७९।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, तजै न मन के मैल।
सो मानुष नहीं देखिये, जाते नीका बैल।। १८०।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, तजै न मल के मैल।
जिस घाटी सतगुरु गये, वाह तो बंकी गैल।। १८१।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, तजै न मन की आंट।
जाका मुख नहीं देखिये, जासैं नीका नाट।। १८२।।
गरीब, पीठ लदै और हल चलै, गाड़ी गरूवा बैल।
जा मानुष तै पशु भला, नाटा सांडा खैल।। १८३।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, होनी होय सो होय।
कलम लिख्या सो मेट हीं, जा सतगुरु कूँ जोय।। १८४।।
गरीब, सतगुरु कूँ कुरबान जा, कर्म छुडाये कोट।
जो सतगुरु की निंदा करै, जम तोरेंगे होठ।। १८५।।
गरीब, अंक बंक बाजीगरी, सबै ख्याल खुलास।
मन चौरासी जाय था, अजब लखाया बास।। १८६।।
गरीब, मन ही बाघुल बाघनी, मन ही रीछा रोझ।
मन सतगुरु साधू भया, मन की मुद्रा खोज।। १८७।।
गरीब, सतगुरु मिलै तो क्या करै, मरकट गहरी मूठ।
कोटि यत्न जो कीजिये, नहीं अविद्या छूट।। १८८।।
गरीब, जा गल रस्सा कर्म का, घर घर द्वार फिरंत।

बाजीगर कै बस पर्‌या, सिर यम डंड सहंत।। १८६।।
सतगुरु आये रे भाई, सतगुरु आये रे भाई।
पर्वत से करता राई, पर्वत से करता राई।। १६०।।
बिरला जानत है कोई, बिरला जानत है कोई।
बाजीगर है निर्मोही, बाजीगर हे निर्मोही।। १६१।।
मन माया स्यों लरिया, मन माया स्यों लरिया।
शब्द समुंद्र है दरिया, शब्द समुंद्र है दरिया।। १६२।।
अचल बिहंगम है बानी, अचल बिहंगम है बानी।
निर्गुण बाजत सहदानी, निर्गुण बाजत सहदानी।। १६३।।
जंत्र जोर बजाया है, जंत्र जोर बजाया है।
सतगुरु अदली आया है, सतगुरु अदलीआया है।। १६४।।
निर्गुण बंध लगाऊँगा, निर्गुण बंध लगाऊँगा।
मन पै नहीं ठगाऊँगा, मन पै नहीं ठगाऊँगा।। १६५।।
चिंता चोर न चंपैगा, चिंता चोर न चंपैगा।
जौंरा काल न झंपैगा, जौंरा काल न झंपैगा।। १६६।।
चल सुंन मंडल की सैली, चल सुंन मंडल की सैली।
झीना मारग है गैली, झीना मारग है गैली।। १६७।।
तारिंग मंत्र देवौंगा, तारिंग मंत्र देवौंगा।
जन अपना कर लेऊँगा, जन अपना कर लेऊँगा।। १६८।।
सतगुरु घण नामी गाजै, सतगुरु घण नामी गाजै।
जाका अविचल है राजै, जाका अविचल है राजै।। १६६।।
मन कूँ निश्चल कर देही, मन कूँ निश्चल कर देही।
भवसागर हंसा खेई, भवसागर हंसा खेई।। २००।।
दास गरीब दिवाना है, **दास गरीब** दिवाना है।
सतगुरु कूँ कुरबाना है, सतगुरु कूँ कुरबाना है।। २०१।।

अथ सूक्ष्म मारग का अंग

गरीब, सूषिम मारग पंथ बिन, पौंहचत नहीं पपील।
निरख परख आवै नहीं, ज्यूं रागी की जील।। १।।
गरीब, सूषिम मारग सोधि ले, झीना पंथ अपार।
गवन कौन विधि कीजिये, खांडे जेही धार।। २।।
गरीब, धार अकारं दीखती, औह तो पंथ अदेख।
ये कौन मंडल को जाहिंगे, नाना वाणी भेष।। ३।।
गरीब, आगे की तो सुधि नहीं, पीछे रहे भुलाय।
झीना पंथ अनिन रंग, सूषिम लख्या न जाय।। ४।।

गरीब, सूषिम डंडी डगर है, रस्ता बड़ा बिलंद।
चिशम्यौं वाले जात हैं, उलट पड़ें सो अंध।। ५।।
गरीब, सूषिम दगड़ा सोधि ले, शून्य सलहली बाट।
बिन पग पंथी गवन गति, शुन्य महल बैराठ।। ६।।
गरीब, सूषिम मेला भर्या है, सूषिम सैल सुभान।
सूषित मारग हम गये, धन्य सतगुरु कुरबान।। ७।।
गरीब, योजन संख असंख हैं, नहीं आगा नहीं पीछ।
सूषिम मारग अगम है, चरण कमल रख शीश।। ८।।
गरीब, सूषिम बिछे बिछावने, सूषिम तकिये सेज।
सूषिम चौंरा होत हैं, सूषिम गादी भेज।। ६।।
गरीब, सूषिम मन अरु सुरति है, सूषिम निरति निशान।
सूषिम मारग तुझ कह्या, निरख परख प्रवान।। १०।।
गरीब, सूषिम पवन पलटि ले, जालंधर कूँ जोय।
अगरी मूरति अर्श में, सहज झिमक्का होय।। ११।।
गरीब, सूषिम दामनि खिमत है, सूषिम परत फुहार।
सूषिम हंसा जात है, सूषिम के दरबार।। १२।।
गरीब, सूषिम वाणी बोलता, सूषिम शब्द संदेश।
सूषिम स्यौं सूषिम मिल्या, कहा दिखावैं भेष।। १३।।
गरीब, सूषिम नगरी अमरपुर, सूषिम ही सब देश।
सुरति निरति से पाईये, ताहि रटत है शेष।। १५।।
गरीब, सहंस फुनौं से रटत है, दोय सहंस है जीभ।
रैरं रैरं सकल फुनि, सतगुरु मिले तबीब।। १६।।
गरीब, पद्‌म जड़े हैं फुनौं परि, कौसत मणि झमकंत।
शेष पार नहीं पाव ही, जाके आदि न अंत।। १७।।
गरीब, सकल देह में फुनि धरे, उर में जाप असंख।
सूषिम मारग अगम है, चढ़ो शेष के नंक।। १८।।
गरीब, शेष सरीखे शेष हैं, और न दूजा कोय।
ब्रह्मा विष्णु शिव संख है, पटतर नाहीं लोय।। १६।।
गरीब, भुजा विहंगम अगम गति, लीलंबर है लोक।
स्वर्ग रिसातल रटत है, ररंकार धुन पोष।। २०।।
गरीब, लख योजन में नयन है, ऐसी दीर्घ देह।
संख कला कुरबान गति, जिन्हौं न जान्या भेव।। २१।।
गरीब, दोय सहंस तो जीभ हैं, दोय सहंस है नैंन।
उर में चिश्म अनंत है, कहि समझाऊँ बैंन।। २२।।
गरीब, रतन संख है शीश परि, कहूँ शेष की सैल।

अचरज एक असंभ गति, धरती ऊपर बैल।। २३।।
गरीब, कच्छ मच्छ कूरंभ सब, चरण शेष के नाल।
अनंत लोक थंभे खड़ा, ऐसा अविगत ख्याल।। २४।।
गरीब, पदम पुरी है शेष परि, ताका कहूँ बयान।
संख सुरन तप करत हैं, बचन हमारा मान।। २५।।
गरीब, नौ करोड़ लग लपट हैं, उठत गंधि गलतान।
शिखर समाधी शुन्य घर, बैठे हंस अमान।। २६।।
गरीब, पद्म पुरी परि परसि ले, अंगासुर है लोक।
संख शूर घूमत सदा, नाम अमल पद पोष।। २७।।
गरीब, अंगासुर परि बसत है, अलख अलीलं श्याम।
संख कुंजि धुनि आरती, तिसतै आगे धाम।। २८।।
गरीब, च्यार वर्ण के च्यार पुर, नघ बेदी लखि लेह।
सूषिम मारग तुझ कह्या, शब्द संदेशा देह।। २९।।
गरीब, जा परि परमानंद हैं, अजब दिवाना देश।
उर अनादि संगीत सब, चरण कँवल में शेष।। ३०।।
गरीब, परमानंद पारब्रह्म है, पूरण पुरुष दयाल।
सतगुरु साहिब परसि ले, जम किंकर के साल।। ३१।।
सतगुरु कूँ कुरबान जां, शब्द संदेशा दीन।
परमानंद पारंग पद, दास गरीब ल्यौलीन।। ३२।।

अथ सूक्ष्म जन्म का अंग

गरीब, सूक्ष्म मनोरथ चलत हैं, पल पल मांहि विमान।
एक द्यौंस बहु जन्म है, लख चौरासी मान।। १।।
गरीब, सूक्ष्म मनोरथ चलत हैं, पल में सौ सौ बार।
तूं जानै नर देह है, बह्या जात है धार।। २।।
गरीब, सूक्ष्म मनोरथ चलत हैं, पल पल मांहि अनेक।
जहां जहां मन जात है, जेते ही धरि भेष।। ३।।
गरीब, अनेक जन्म दिन में धरै, सूक्ष्म लहरि शरीर।
नर से पशुवा होत है, कुबुद्धि कुटिल की भीर।। ४।।
गरीब, जहां जहां मन जात है, तन भी जात विशेष।
नर नारायण देह तजि, कीट पतंग अनेक।। ५।।
गरीब, सूक्ष्म लहरि अनंत हैं, मन माया के चोज।
जीव जन्म जानैं नहीं, हंसा बूझै खोज।। ६।।
गरीब, सूक्ष्म लहरि स्वर्ग कूँ, उठत असंख अपार।
यौह मन बोहित काग है, हिर फिर तन की लार।। ७।।

गरीब, सूक्ष्म लहरि पाताल कूँ, करता गवन अदीठ।
मन सौदागर बनज को, देखत हैं बौह पीठ।। ८।।
गरीब, दशौं दिशा कूँ उड़त है, चंचल मनवा चोर।
जे तूं शिष्य सुजान है, तो सूक्ष्म मन कूँ मोर।। ६।।
गरीब, राख अरश के गुमज में, त्रिवैणी के तीर।
अर्ध उर्ध शाला बनी, गंग मालवै नीर।। १०।।
गरीब, भृकुटि में लिपटाय दे, सहंस कँवल सूं बांधि।
जे तूं शिष्य सुजान है, तो निश बासर शर सांधि।। ११।।
गरीब, भृकुटि भौंरा गूंज हीं, जा पौहपन करि लीन।
फेर बहुरि निकसै नहीं, ज्यूं दरिया मध्य मीन।। १२।।
गरीब, यौह मन उड़गन उड़त है, लाख समुंद्रौं पार।
आवत जात दीखै नहीं, बहुरि वार का वार।। १३।।
गरीब, यौह मन उड़गन जात है, कोटि समुंद्रौं तीर।
याका पार न पाव हीं, बहु जोधा रणधीर।। १४।।
गरीब, यौह मन उड़गन जात है, संख समुंद्र उलंग।
बहु पारख ज्ञानी पचै, जानत नहीं उपंग।। १५।।
गरीब, मन मौले की जाति है, कोई न जाने भेव।
बड़ लोझा झूझार है, सब देवन पति देव।। १६।।
गरीब, मन ही मौला हो रह्या, अनगिन लोक उपाय।
सप्तपुरी के देव सब, बहु विधि नाच नचाय।। १७।।
गरीब, सूक्ष्म लहरि शरीर में, उठै अनंत अपार।
कित से आवत जात हैं, कहां पूनी कहां तार।। १८।।
गरीब, कौन मन कित रहत है, सतगुरु कहि समझाय।
पांच तत्त कूँ छाड कर, कौन तत्त कूँ जाय।। १६।।
गरीब, पांच तत्त मुकाम है, नौ तत्त का सैलान।
अनदेखी भूमि जात है, जहां नहीं शशि भान।। २०।।
गरीब, गरभै में सब गर्भ गति, उडगन उड़ै अचान।
आदि अंत भरमै सदा, भुगतैं चारों खान।। २१।।
गरीब, सकल जीव एक धार मन, शिव तै कौन बडेर।
पार्वती पत्नी छाडि कर, चंचल माया हेर।। २२।।
गरीब, शिव बिरंच कूँ बूझि ले, इस मन के सैलान।
सुरपति गौतम कै गया, अहिल्या भई पाषाण।। २३।।
गरीब, मन की लीला मन लखै, तन नहीं जानैं भेव।
नारदमुनि से पारखू, नारी ही करि देव।। २४।।
गरीब, भगवान समतुल कौन है, चौबीसौं अवतार।

मन की गति पाई नहीं, भरमें बारंबार।। २५।।
गरीब, सूक्ष्म मन गोरख छल्या, गुरु मछंदर नाथ।
शुकदेव पाराशर छले, ब्रह्मा पुत्री बाथ।। २६।।
गरीब, श्रृंगी ऋषि अयोध्या गये, सूक्ष्म मन के साथ।
वृक्षों अमृत लाय करि, पकर लिया सब साथ।। २७।।
गरीब, दुर्वासा से छल लिये, सूक्ष्म मन की मार।
उर्वशी दिया श्राप है, जादौं वचन सिंघार।। २८।।
गरीब, सूक्ष्म मन की सैल सब, पिंड ब्रह्मण्ड के मांहि।
काल चक्र कलि खा गया, कोई जानैं नांहि।। २९।।
गरीब, सूक्ष्म मन का मुलक है, बड़े बड़े बसत गिराह।
आगा पीछा है नहीं, ऐसा अगम अथाह।। ३०।।
गरीब, पिंगुल नलनी पर बसै, यौह मन सूक्ष्म शूल।
भरमत है चित्त राम में, गया अर्थ कूँ भूल।। ३१।।
गरीब, सूक्ष्म शाखा गहबरै, सूक्ष्म फूल फलन्त।
सकल लोक यौं जानियों, अवसर बीत चलंत।। ३२।।
गरीब, सूक्ष्म धरणि आकाश है, सूक्ष्म चंदा सूर।
सूक्ष्म नदी पहार हैं, सूक्ष्म धामा धूर।। ३३।।
गरीब, सूक्ष्म लोक अलोक हैं, सूक्ष्म फना फिराक।
एक घड़ै एक ऊतरै, ज्यूं कुम्हरा का चाक।। ३४।।
गरीब, सूक्ष्म चौरासी रची, सूक्ष्म उपावन हार।
मांहे सूक्ष्म काल है, बूडे काली धार।। ३५।।
गरीब, सूक्ष्म काली धार है, जेती लहर उठंत।
अनंत नदी बहनें बहैं, बिना पियारे कंत।। ३६।।
गरीब, मानस नहीं मशान है, दाने भूत खईश।
बूडे काली धार में, बिन सतगुरु बख्शीश।। ३७।।
गरीब, लोक तजत नहीं लाज है, सुनि सतगुरु की साख।
सूक्ष्म में रहना नहीं, दीन्ही तीन तलाक।। ३८।।
गरीब, एक सूक्ष्म साहिब सही, अचला थीर गंभीर।
सूक्ष्म मन कूँ पकरि ले, मिलै नीर में नीर।। ३९।।
गरीब, कौन रंग को रूप है, कौन कँवल प्रकाश।
सूक्ष्म मन कित रहत हैं, कौन धाम में बास।। ४०।।
गरीब, बिना रंग बिन रूप है, नौछावर का अंग।
उर अनरागी बसत है, अविगत रूप बिहंग।। ४१।।
गरीब, हिरदे कँवल में बास है, बारह बानी बंध।
सदा सर्वदा खेलता, मन हंसा निर्दुन्द।। ४२।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, गुण खलील जानैं नहीं, चींचड़ मुख नहीं दूध।
लख चौरासी यौं बंधी, सुर का बेला सूध।। ४३।।
गरीब, रुधिर पीवत निश बासरं, नहीं दूध की धार।
असुर कसर नहीं जात है, क्षीर समुद्र न्यार।। ४४।।
गरीब, सूक्ष्म मन सरिता बहै, ऊठत लहर असंख।
एक बहनें जग जात है, कहां राव कहां रंक।। ४५।।
गरीब, शंख बिलावल छाडि कर, बहैं कुबुध्दि की साथ।
खाली ही भटकत फिरै, कछु न लागै हाथ।। ४६।।
गरीब, कुबुध्दि कुटिल भावैं सदा, बिलाबल से बंच।
मन की गति पावै नहीं, रोप्या बहुत प्रपंच।। ४७।।
गरीब, सूक्ष्म ही मन पवन है, सूक्ष्म दुरमति दोष।
सूक्ष्म काया जात है, सूक्ष्म बिनसे लोक।। ४८।।
गरीब, सूक्ष्म में सूक्ष्म बसै, जिनके गाम न धाम।
निराकार कूँ निरख ले, अचल अभंगी राम।। ४९।।
गरीब, सुंनि सनेही सुरति में, बसैं सरोवर तीर।
गगन मंडल में रमि रह्या, बिन ही सरवर नीर।। ५०।।
गरीब, लाल रंग सो पीव का, पीतांबर पद हंस।
जित से सूक्ष्म आईया, मन मूरति सब अंश।। ५१।।
गरीब, सकल अंश एक वंश है, परमानंद प्रवान।
सुर असुरन दो खालसे, जुग जुग खैंचा तान।। ५२।।
सब घट सूक्ष्म मन बसै, उरझ्या नौ मन सूत।
गरीबदास साहिब रत्ते, सो जोगी अनुभूत।। ५३।।

अथ माया का अंग

गरीब, ऐसी माया मोहिनी, ब्रह्म सरीखा खेल।
सतगुरु शरणें ऊबरे, जाकी बंकी हेल।। १।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, मोह्या सकल जिहांन।
इस माया की जाड़ में, आये चतुर सुजांन।। २।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, ब्रह्म सरीखा राज।
और चढ़ै नहीं पालड़े, कहते आवै लाज।। ३।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, ब्रह्म सरीखा राज।
हंस चढ़ै नहीं पालड़े, अनंत लोक में गाज।। ४।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, ब्रह्म सरीखा तोल।
विष अंजन धर ऊतरी, पीये हंसा घोल।। ५।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, ब्रह्म सरीखा तोल।

ज्ञानी ध्यानी सब मुसे, खाय लिये अनभोल।। ६।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, दुश्मन गिनै न मीत।
आन अटक मानें नहीं, खाने ही से प्रीत।। ७।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, मोहे मोर चकोर।
पशु पंखी छाडै नहीं, बांधे विष की डोर।। ८।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, मोहि लिये सुर पंथ।
हाका करि करि ऊतरी, खेलन फाग बसंत।। ६।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, मोहि लिये सुर पंथ।
तीन लोक कूँ खा गई, धरि धरि रूप अनंत।। १०।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, छाडै हाड न गूद।
चार गोत हिंदू रखैं, मुसलमान कूँ दूध।। ११।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, छाडै हाड न गूद।
कोटि ज्ञान गुटकंत हैं, चालै अपनी सूध।। १२।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, मारे हेला देत।
कोटि ज्ञान गुटकंत हैं, सब अपना कर लेत।। १३।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, होरा होरी होय।
परसै सरबस जात हैं, ज्यूं दीप पतंगा लोय।। १४।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, होरा होरी हूर।
सतगुरु हेला देत हैं, या से रहियो दूर।। १५।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, मोह्या सब संसार।
स्वर्ग मृत्यु पाताल लग, डार्‍या विष का जाल।। १६।।
गरीब, ऐसी माया मोहिनी, मोह लिये सब लोक।
सुर नर मुनि जन खा लिये, दे दे वाचा पोष।। १७।।
गरीब, यौह माया मन मोहिनी, मंडन सब संसार।
कृष्ण विष्णु भगवान लग, सब माया की लार।। १८।।
गरीब, माया माया क्या करै, माया रावण राम।
मन माया हो बिस्तरी, माया के सब काम।। १६।।
गरीब, काया माया जानियों, माया के सब भोग।
माया की बाजी खड़ी, बहु विधि संसा शोग।। २०।।
गरीब, माया धरणि आकाश है, माया चंद्र सूर।
माया पानी पवन है, माया के सब तूर।। २१।।
गरीब, माया कच्छ रु मच्छ है, माया ही कूरंभ।
माया ही के धौल हैं, माया ही आरंभ।। २२।।
गरीब, माया ब्रह्मा विष्णु है, माया शंकर शेष।
पांच तत्त गुण तीन लग, माया ही प्रवेश।। २३।।

गरीब, माया ही के रंग है, माया ही के रूप।
माया ही के रंक हैं, माया ही के भूप।। २४।।
गरीब, माया ही धरणी धरा, माया ही के जाप।
माया मन का फेर है, माया ही के ताप।। २५।।
गरीब, माया ही के राज हैं, माया ही के पाट।
माया आदि रु अंत है, माया ही की साट।। २६।।
गरीब, माया के सब रंग हैं, माया के सब चोज।
माया हलकी फूल है, माया का सिर बोझ।। २७।।
गरीब, माया घोर अंधेर है, माया है प्रकाश।
माया नाचन ऊतरी, माया निश्चल वास।। २८।।
गरीब, माया घोर अंधेर है, माया ही उजियार।
माया ही की सृष्टि है, माया के आधार।। २९।।
गरीब, काया माया हो रही, जित लग खड़ा आकार।
आदि अंत लग जानियों चौबीसौं अवतार।। ३०।।
गरीब, ये माया के फूल हैं, जेते आवैं जांहि।
ऐसी निर्गुण बेलड़ी, सरगुण होय बिलांहि।। ३१।।
गरीब, ये माया के फूल हैं, जेते आवैं जांहि।
ऐसी निर्गुण बेलड़ी, सरगुण फल हैं मांहि।। ३२।।
गरीब, ये माया के फूल हैं, जेते धरैं शरीर।
सुर नर मुनि जन सब कहूँ, सिद्ध साधक और पीर।। ३३।।
गरीब, ये माया के फूल हैं, जेते धरैं शरीर।
इस बेली लाग्या नहीं, अदली अदल कबीर।। ३४।।
गरीब, जेते आवत जात हैं, सब माया के मांहि।
विरक्त एक कबीर है, जाकी सरबर नांहि।। ३५।।
गरीब, माया ही के फूल हैं, लागि लागि कुमलांहि।
ब्रह्मा विष्णु महेश लग, योनी आवै जांहि।। ३६।।
गरीब, अविगत से ऊँ भया, ऊँ से भया नाभ।
नाभि से कमला भया, ब्रह्मा का बैराग।। ३७।।
गरीब, ब्रह्मा सेती ऊपज्या, जेते हैं कलि मांहि।
तिहूँ देवा शाखा भये, अक्षय वृक्ष की छांहि।। ३८।।
गरीब, चित्रगुप्त माया बनें, माया है धर्मराय।
जो अविगत से ऊपज्या, सब माया के मांहि।। ३९।।
गरीब, माया ही कर्ता बनी, माया ही रघुनाथ।
माया के दीपक जलैं, माया ही की बाति।। ४०।।
गरीब, जोवनहार अतीत है, जो सब गुण रहिता।

अजर अमर अनूप पद, जो सतगुरु कहता।। ४१।।
गरीब, माया की बाजी रची, माया ही के फूल।
माया आदि अरु अंत है, लखिये माया मूल।। ४२।।
गरीब, अनंत लोक में खेलती, माया मंगल गाय।
शिव ब्रह्मादिक मोहिया, और कौन ठहराय।। ४३।।
गरीब, माया मन की मोहिनी, अंदर है हैरान।
नौ अवतार डुराईया, पकरि लिये भगवान।। ४४।।
गरीब, माया मन की मोहिनी, जग बहु विधि लूटै।
सतगुरु शरणें ऊबरें, देह धारि न छूटै।। ४५।।
गरीब, बाहर खारी कहत हैं, अंदर की मीठी।
सांईं के दरबार में, पकरैगी घीटी।। ४६।।
गरीब, बाहर खारी कहत हैं, अंदर है नीकी।
छाजन भोजन तास के, है संगनि जी की।। ४७।।
गरीब, बाहर खारी कहत हैं, अंदर सब लोडैं।
उलटे चिसमां अर्श कूँ, भ्रम मटकी फोड़ैं।। ४८।।
गरीब, बाहर खारी कहत हैं, अंदर सब लोड़ैं।
जो रिंचक पांने पड़ै, तो सब धरि जोड़ै।। ४९।।
गरीब, बाहर खारी कहत हैं, अंदर सब लोड़ैं।
वे तो सतगुरु संत हैं, माया से तोड़ैं।। ५०।।
गरीब, सहंस अठासी दीप में, माया की भुरकी।
ऐसा सतगुरु जो मिलै, सुधि ल्यावै धुरकी।। ५१।।
गरीब, सहंस अठासी दीप में, माया का मेला।
ब्रह्मा विष्णु महेश लग, हैं तीनूं चेला।। ५२।।
गरीब, स्वर्ग मृत्यु पाताल लग, सब ही हैं पाजी।
याह माया मुसकाय कै, सतगुरु से भाजी।। ५३।।
गरीब, संसारी की क्या कहूँ, मुनिवरसे ठेका।
चुंडित मुंडित खा लिये, सब द्वादश भेषा।। ५४।।
गरीब, कहीं कनक कहीं कामनी, कहीं भोजन कहीं भाव।
कहीं गुरु चेला हो रही, कीन्हा बहुत पसाव।। ५५।।
गरीब, कहीं कनक कहीं कामनी, कहीं भोजन कहीं भाव।
कहीं आदर सतकार है, खेले बहु विधि दाव।। ५६।।
गरीब, माया की महिमा कहूँ, सब ही माता एक।
खान पान प्रवान है, सब काहूँ को देत।। ५७।।
गरीब, माया की महिमा कहूँ, कनक कामनी काल।
जिन चंपी सो खा लिये, सिद्ध साधक बे हाल।। ५८।।

गरीब, माया की महिमा कहूँ, पढ़ि कर ठारा बोध।
संसारी की क्या कहूँ, मुनि जन खेलैं गोद।। ५६।।
गरीब, माया की महिमा कहूँ, पढ़े अठारा पुरान।
संसारी की क्या कहूँ, खाय लिये बड़ खांन।। ६०।।
गरीब, माया की महिमा कहूँ, नागिन कनक कवार।
पार ब्रह्म के तख्त हैं, फिर आई संसार।। ६१।।
गरीब, माया की महिमा कहूँ, ऐसी है निर्दुंद।
सहंस कला कुरबान जां, जैसा पूरन चंद।। ६२।।
गरीब, कहीं कहीं हीरा हो रही, कहीं मोती की माल।
कहीं कहीं पारस पदम है, कहीं अनूपम लाल।। ६३।।
गरीब, कहीं तुरंगम ताजियां, कहीं रापति कहीं फील।
कहीं सुत्र की जाति है, जग कै फेर्या लील।। ६४।।
गरीब, कहीं बेटा कहीं स्त्री, कहीं भाई भर्तार।
मोह ममता की डोरि में, बँध्या सब संसार।। ६५।।
गरीब, गंग तरंग तरावरी, बहु धार बहंती।
जोगनि कूँ प्रणाम है, माया महमंती।। ६६।।
गरीब, बहु मंदिर हीरा घनें, योधा अनंत अपार।
रावण रसातल कूँ गया, लगि माया की लार।। ६७।।
गरीब, माया मंगल गावती, जगत किया हैरान।
सवा लाख उपगार है, एक लाख नित खान।। ६८।।
गरीब, ऐसी दूती जोगनी, जगत किया बेरून।
आंन अटक मानै नहीं, माया चढ़ि रही खून।। ६९।।
गरीब, माया मंगल गावती, मालिक हो रही आप।
अगम निगम माया रती, पकर लिया सब साथ।। ७०।।
गरीब, माया सांची सूम कूँ, हेठा बोल्या सौंन।
तापर कीड़ा नर हुवा, धरै सर्प की जौंन।। ७१।।
गरीब, दानी कूँ नहीं देत है, राखै वर्ष करोर।
माया चाली सूम कै, बँधी सूम गलि डोर।। ७२।।
गरीब, याह माया मेहरी भई, गई सूम दरबार।
दानी के नहीं जात है, क्या कारण कर्तार।। ७३।।
गरीब, दानी कूँ तो देत हूँ, ज्ञान ध्यान विश्वास।
भक्ति गरीबी बंदगी, ज्यूं निपजै निज दास।। ७४।।
गरीब, शील संतोष विवेक द्यौं, दया धर्म कुल साज।
ज्ञानी गलताना रहै, ना ममता की दाझ।। ७५।।
गरीब, माया प्रत्यक्ष काल है, माया प्रत्यक्ष देव।

माया राजिक राम है, माया की कर सेव।। ७६।।
गरीब, घेरें घारें काल है, सांचे सरबस जाय।
ले डोबैगी तास कूँ, माया जीवत खाय।। ७७।।
गरीब, बगती में स्नान कर, आगे से नहीं हेर।
डूबे पंच परोसियों, चढ़ि जायगी मुंडेर।। ७८।।
गरीब, बगती में स्नान कर, आगे से नहीं रोक।
चलती कूँ तो चलन दे, हंसा पावै मोख।। ७९।।
गरीब, बगती में स्नान कर, आगे से नहीं रोक।
चलती कूँ तो चलन दे, निस्तरि जावैं लोक।। ८०।।
गरीब, बहती परबी न्हाईये, आगे से नहीं थांब।
हरदम लाहा लीजिये, सींच बगीचा आंब।। ८१।।
गरीब, सांचि बांचि कर क्या करैं, मुक्ता रहना संत।
भोजन जोगी लीजिये, याके बड़े बड़े दंत।। ८२।।
गरीब, सांचि बांचि कर क्या करै, मुक्ता रहना संत।
उदर समाती राखिये, सांचन वाले खंत।। ८३।।
गरीब, रावण का कुल बंस सुन, डूबि गया दह मांहि।
सांचत सांचत ना थक्या, पाया गाम न ठांहि।। ८४।।
गरीब, माया सांची सूम कूँ, लगी पाप की पीठ।
साधू नैंन न देखते, माया कऊवा बीट।। ८५।।
गरीब, कहां इन्द्र के धाम की, सब ही लागी लार।
अभय नाम उर में धर्या, संत उतर गये पार।। ८६।।
गरीब, याह माया रंगरेजनी, अपना ही रंग लाय।
ज्ञान योग समझै नहीं, ले जाय अपने राह।। ८७।।
गरीब, याह माया प्रपंचनी, बहुरंगी बटपार।
बाचा दे दे ले गई, डोबे काली धार।। ८८।।
गरीब, याह माया नग हो रही, याह माया गुलबीन।
याह माया अठ पंखडी, पांच पचीसौं तीन।। ८९।।
गरीब, अंदर डहके सो गये, बाहर रहे खुलास।
दीखत के बैरागिया, ज्यूं चंदन पै बास।। ९०।।
गरीब, गृहद्वार थोथे रहे, ऊंचा मन है मेर।
चंदन रंग लाग्या नहीं, यौह बैराग बखेर।। ९१।।
गरीब, माया महलौं चढ़ि गई, मारे मोटे मीर।
कोईक साधू बच गये, फूके छपर फकीर।। ९२।।
गरीब, माया महलौं चढ़ि गई, खाय लिये बड़खांन।
योधा मारे गरद करि, कोई न पाया जांन।। ९३।।

गरीब, याह माया हेड़ै चढ़ी, हेरि फेर कर खाय।
भाजन जाका ना भर्‍या धापी नहीं अघाय।। ९४।।
गरीब, माया त्यागी कौन है, सब माया के मांहि।
नाद बिन्दु मध्य तन धर्‍या, सबही परबी न्हांहि।। ९५।।
गरीब, माया सहंस्र धार है, माया त्रिगुण ताल।
माया ही के लोर हैं, माया ही की झाल।। ९६।।
गरीब, माया ही की लहरि है, माया ही के लोर।
माया ही में बँधि रहै, माया ही की डोर।। ९७।।
गरीब, एक माया दुःख भंजनी, एक माया दुःख मूल।
एक माया तो गंध है, एक माया है फूल।। ९८।।
गरीब, दान माया दुःख भंजनी, संचित है दुःख मूल।
अभि-अंतर की गंध है, दीखत की है फूल।। ९९।।
माया सरबस मान है, माया सरबस मध्य।
दास गरीब सतगुरु कहैं, रहना आसन सिद्ध।। १००।।

अथ चाणिक का अंग

गरीब, पारब्रह्म कूँ छाडि कर, पूजैं आन अनीत।
चेतन सेती ओलनें, जड़ सेती है प्रीत।। १।।
गरीब, पाहन सेती प्रीतड़ी, चेतन सेती दोष।
दोजख धारा जाहिंगे, कदी न पावैं मोख।। २।।
गरीब, पत्थर परमेश्वर कहैं, यौह जग अंधा बौर।
साहिब पर सेवा नहीं, पौंहचेंगे किस ठौर।। ३।।
गरीब, पत्थर परमेश्वर कहैं, बड़ा अंदेशा मोहि।
पारस से भेट्या नहीं, कैसे पलटे लोह।। ४।।
गरीब, पत्थर परमेश्वर कहैं, बड़ा अंदेशा मुझ।
सूली साकट दीजिये, कहि समझाऊँ तुझ।। ५।।
गरीब, जड़ का तो सेवन करैं, चेतन सेती भिन्न।
दोजख बहने बह गये, खोया राम रतन।। ६।।
गरीब, पत्थर पुजारी जीव हैं, ये कलियुग के लोग।
बान कुटिल छूटै नहीं, लाग्या दीरघ रोग।। ७।।
गरीब, पत्थर पुजारी जीव हैं, गही अविद्या गांठ।
धर्मराय की खाल से, दीन्ही जम कूँ बांट।। ८।।
गरीब, भेख चले हैं बहिश्त कूँ, पत्थर गांठी बांध।
जीवेंगे किस भेद से, विष के लड्डू सांध।। ९।।
गरीब, साधौं सेती मसकरी, चोरौं संग खुसाल।

कौड़ी गहि पल्लू बँधी, डार दिया नघ लाल।। १०।।
गरीब, साधौं की संगति नहीं, नहीं साहिब का जाप।
कहै गरीब कैसे बचैं, जिन कै तीनूं ताप।। ११।।
गरीब, साकट की संगति करैं, विडसौं को ब्यौसाहिं।
बूडे काली धार में, मूल समूले जांहि।। १२।।
गरीब, साकट से क्या प्रीतड़ी, कोयले जेहा रंग।
श्वान तजै नहीं हाड कूँ, सदा न्हवावों गंग।। १३।।
गरीब, साकट नगरी ना बसौं, हांना लगसी हंस।
प्रगट कहीं समझाय हूँ, चंदन के ढिग बंस।। १४।।
गरीब, चंदन बंसा बसत है, एकै बन मंझार।
साकट बंसा फूक ही, दोनूं जरि बरि छार।। १५।।
गरीब, साकट सेती साख क्या, रावण कंसा बूझ।
हिरणाकुश और बालि से, मारे प्रगटि गूंज।। १६।।
गरीब, लघु दीर्घ सब एक हैं, जिन की साकट जात।
दीपक कैसा चांदना, लाल लगै जो हाथ।। १७।।
गरीब, चतुराई चूल्हे परो, चारों वेद विटंव।
साकट सगा न भेटिये, आकों लगे न अंब।। १८।।
गरीब, साकट चारों वेद हैं, साकट द्वादश पंथ।
साकट पंडित पीर है, येही जम के दंत।। १९।।
गरीब, प्रथम तो दस नाम हैं, सन्यासी भगवान।
दारू बकरे खात हैं, निशवासर सुरापान।। २०।।
गरीब, चार संप्रदा देखिले, बावन द्वारों जाय।
भांग तमाखू खात हैं, पत्थर कंठ लगाय।। २१।।
गरीब, आदि जोग कूँ बूझि ले, सर्प पिटारे घाल।
फूंभी नाद बजाव हीं, याह साकट की चाल।। २२।।
गरीब, ये संतो के पंथ है, टुकड़े पानी चाहि।
जिन ये पंथ चलाईया, वे तो अगम अथाह।। २३।।
गरीब, गुरु गलत यों होत है, नानिक जेहे पंथ।
फिट जननी तिस संत की, साकट शिष्य करंत।। २४।।
गरीब, पंडित साकट कौन विधि, इसका निर्णय देहि।
तेरांहमी जीमत फिरैं, तूं कंठी मत लेहि।। २५।।
गरीब, पंडित साकट कौन विधि, इसका निर्णय देह।
सूतिक संच्या खात है, जिनके मौहंडे खेह।। २६।।
गरीब, पंडित साकट कौन विधि, इसका कहो बयान।
चौके कुत्ता जा बड्या, सो तो हुवा अपान।। २७।।

गरीब, पंडित साकट कौन विधि, जिसका कहो बयान।
कुबुद्धि कुटिल है कूकरी, सूतिक पातिक खान।। २८।।
गरीब, कहां गौड कहां गौड देश, कहां गायत्री जाप।
साखि बड़ौ की शोध करि, बंधे मोटे पाप।। २९।।
गरीब, गाल बजाये क्या हुवा, तुलसी डाल झरोर।
भूले भक्ति भगवंत की, पाहन से सिर फोर।। ३०।।
गरीब, द्वादश तिलक बनाय कर, नाचैं घर घर बार।
कनक जनेऊँ काढिया, सति रैदास चमार।। ३१।।
गरीब, तुलसी तोरे खूंन है, पत्थर गांठ न बांध।
साकट कूँ सूझै नहीं, जम कूँ राख्या फांध।। ३२।।
गरीब, निंदा नहीं निराठ है, सतगुरु साहीदार।
वचन हमारा मानियों, चारों वेद विचार।। ३३।।
गरीब, मुसलमान कूँ सूर है, और हिन्दू कूँ गाय।
सतगुरु साहीदार है, साकट जमपुर जाय।। ३४।।
गरीब, मुसलमान कूँ सूर है, और हिन्दू कूँ गाय।
सतगुरु साहीदार है, हम कहिया ढोल बजाय।। ३५।।
गरीब, नाद बिंद की सुधि नहीं, भरें भसौड़ी भूत।
साकट इस विधि जानिये, दे नौंता जमदूत।। ३६।।
गरीब, पंडित पाढा कीजिये, बन बर्या के रोझ।
सतगुरु साहीदार हैं, भूले निर्गुण खोज।। ३७।।
गरीब, पंडित कीजै बोकड़ा, निसवासर अरडाय।
जन्म पूरबला यों लख्या, विद्या छ्यानी नांहि।। ३८।।
गरीब, जन्म तीसरे श्वान हो, घर घर हांडी चाट।
गौड़ गलत कुत्ता भया, भूले निर्गुण बाट।। ३९।।
गरीब, फिर बेसां भडुवा हुवा, लिया पखावज हाथ।
सतगुरु दोही सत कहूँ, नाहीं दूजी बात।। ४०।।
गरीब, जन्म पंचमा तुझ कहूँ, कसाई कर दीन।
जल पीवत नहीं चड़स का, खाय गये सब सीन।। ४१।।
गरीब, जन्म षष्टमा तुझ कहूँ, भैरूं भये बिताल।
आंन उपासा पर जलें, बाजें डौरू थाल।। ४२।।
गरीब, सेवक भौंपा नाच ही, दुंद बाद बड़ रोग।
लिये चांमठी कूद हीं, घर घर संसा शोग।। ४३।।
गरीब, साकट फिर होय गदहरा, कुरड़ी कूड़ा खाय।
सप्त योनि कूँ भुगत करि, फेर रसातल जाय।। ४४।।
गरीब, मन इच्छा माला गले, सुघड़ सुमरनी हाथ।

यों उर में दुरमति बसै, जौड़ भेड. की कात।। ४५।।
गरीब, चातुर प्राणी चोर है, मूढ मुग्ध है ठोठ।
संतो के नहीं काम के, इन कूँ दे गल जोट।। ४६।।
गरीब, सुघड़ समूले जायेंगे, विद्या के बैजार।
शुत्र कीजिये भाट के, बंधे एक कतार।। ४७।।
गरीब, मन मरदी किस काम है, नाहीं भक्ति पसाव।
संतो की संगति नहीं, सो साकट सत भाव।। ४८।।
गरीब, साकट कै नहीं शील है, नाहीं ज्ञान विवेक।
साकट सब ही देश हैं, साधू जन कोई एक।। ४९।।
गरीब, कनफूका गुरुवा मिले, पीतल कूँ प्रणाम।
साहिब की नहीं बंदगी, पूजत हैं पाषाण।। ५०।।
गरीब, कनफूका गुरु काल है, जम किंकर के दूत।
गल में फांसी डार कर, पकर लीजिये भूत।। ५१।।
गरीब, झूठे गुरु कूँ मत मिलै, कऊवा चाल कुजान।
मानसरोवर बूझ ले, हंसों के अस्थान।। ५२।।
गरीब, हंस दिशा छांनी नहीं, बानी शब्द बिलास।
झूठे गुरु यों परखिये, पूजै ढाक पलास।। ५३।।
गरीब, लिंग बनावे गार का, बेल पत्र कूँ तोर।
याह शिव की पूजा नहीं, लागी मोटी खोर।। ५४।।
गरीब, सूक्ष्म वेद कूँ शिव पढ़ै, यौह अक्षर तूं बांच।
सुरति सुक्ष्म सूं लाईये, झांझि पीट मत नांच।। ५५।।
गरीब, सूक्ष्म वेद है पांचवां, जाको पढ़ै न कोय।
सूक्ष्म वेद संतों पढ्या, आवागमन न होय।। ५६।।
गरीब, सूक्ष्म सुहंगम एक है, नहीं अक्षर की भूल।
साकट कूँ नहीं ठौर है, पांडे बोवै शूल।। ५७।।
गरीब, बोवत शूल बबूल है, ज्ञानी गुरुवा पीर।
झूठे आठों गांठ हैं, यौह मन धरै न धीर।। ५८।।
गरीब, नैंन देख श्रवण सुनों, परख परीक्षा लेह।
कनफूका से मति मिलो, गल में फांसी देह।। ५९।।
गरीब, जनेऊ नहीं जन्म का, टीका काढे नाक।
कनफूका कऊवा बनें, खात मींड की साख।। ६०।।
गरीब, तागे तत्त पिछान क्या, भ्रम भीत बड़ ओट।
जुग जुग जंबक कीजिये, कीन्हे बहु विधि खोट।। ६१।।
गरीब, तेली बैल बिलाव होहि, मंजारी के पूत।
पकर ऊनरे खात हैं, धर्मराय के दूत।। ६२।।

गरीब, राज द्वारै जाय कर, बांचैं गरुड़ प्रेत।
साहिब की नहीं बन्दगी, सूक्या सारा खेत।। ६३।।
गरीब, राज द्वारै जाय कर, बांचै गरुड़ प्रेत।
साहिब का सुमरण नहीं, छूटेंगे किस हेत।। ६४।।
गरीब, पारायण करते फिरैं, घर घर बार गंवार।
जीव मुकित क्यों होहिंगे, आप नहीं दीदार।। ६५।।
गरीब, शुकदेव पारायण किया, परीक्षत चढ़े विमान।
सतगुरु साहीदार है, गये अमर अस्थान।। ६६।।
गरीब, पापी पंडित पीर क्या, डूबे लालच लोभ।
दोनू जमपुर जांहिगे, शुकदेव बाचा शोभ।। ६७।।
गरीब, शुकदेव शंकर पूछ ले, पूछो नारद व्यास।
सनकादिक चारौं कहैं, पंडित गये निराश।। ६८।।
गरीब, लैने ही की बान है, नाम न देही दान।
ऐसे साकट जानिये, योनि धरत हैं श्वान।। ६९।।
गरीब, पड़दे बीबी रहत है, ड्योढी लगती वार।
गात उघाड़े फिरत हैं, सो सुंनही बैजार।। ७०।।
गरीब, ये पड़दे की सुंदरी, सुनों संदेशा मोर।
गात उघाड़े फिरत हैं, करै सरायों शोर।। ७१।।
गरीब, नकबेसरि नक में बनी, पहरत हार हमेल।
सुंदरी से सुंनही बनी, सुनि साहिब के खेल।। ७२।।
गरीब, काजी कीरति जगत की, लिख लिख धरी अपार।
मुल्लां मुरगा कीजिये, गल कटसी सौ बार।। ७३।।
गरीब, हक्क हक्क मुल्लां कहै, काजी भरि है साख।
मसजिद में से पकरिये, सतगुरु तीन तलाक।। ७४।।
गरीब, काजी मुल्लां चोर हैं, शरै शरीकत जवाब।
जुगन जुगन छूटै नहीं, खाये जिन्हौं कबाब।। ७५।।
गरीब, काजी तसबी फेर करि, गुसल किया है बार।
अंदरून साबित नहीं, दरगह परसी मार।। ७६।।
गरीब, मुल्लां मूरति रब्ब दी, गल काटत नहीं शंक।
छुरा देत औजूद में, भनसी तोरी अंख।। ७७।।
गरीब, मुल्लां मुग्ध गंवार है, हक्क हक्क नहीं बोल।
बेहक्क करता जात है, तन सीने कूँ खोल।। ७८।।
गरीब, मुल्लां मगजी काढ करि, खाता कब्ब खलील।
तुरकाना दोजख गया, मुल्लां भरोसे भील।। ७९।।
गरीब, सैंदक छुरा न बाहिये, सुन काजी कंजूस।

कुफर छाड़ि कुरबान कहि, सिर धरि बेचो सूस।। ८०।।
गरीब, सरस निवाले खात हो, बकरी सीनां बैल।
चंद्र सूर दो साक्षी हैं, याह दोजख की गैल।। ८१।।
गरीब, शेख सैयद पठान सब, मुगल बिलोच विचार।
जो अपने सो और के, रब्ब की रूह न मार।। ८२।।
गरीब, अलह इनायत तुझ कहूँ, जी पर छुरी न बाह।
एकै रूह जिहान में, माटी मांस न खाह।। ८३।।
गरीब, राम रहीमा एक है, अलह अलख सब नूर।
सब घट सीना एक है, गऊ भखो भावे सूर।। ८४।।
गरीब, मुरद फरोसी मानवी, मूरति रब्ब की एक।
सकल रूह रब्ब कूँ घड़ी, जहां चाहे तहां देख।। ८५।।
गरीब, सब मौले की रूह हैं, रासा कहत रिसाय।
बदला कहीं न जायगा, कंठ छुरी नहीं बाहि।। ८६।।
गरीब, खबरदार तुझ कूँ कह्या, खाला का घर नांहि।
मौहंमद भिस्त न पौंहचिया, दोजख दर कूँ जांहि।। ८७।।
गरीब, खबरदार हो खेलिये, तजि हेडी हिलवान।
बदला बाचा बंध है, शब्द हमारा मान।। ८८।।
गरीब, एक जीव एक जाति है, एक प्राण एक पिंड।
ज्ञानी मुग्ध संभालियों, हेडा बचे न डंड।। ८९।।
गरीब, कुतुब गौस पैगंबरां, पीर फकीरां पीड़।
हेडा संचा खात है, दोजख में बहु भीड़।। ९०।।
गरीब, उद्र पाड़ तन भंजि है, दया नहीं दिल मांहि।
तिन का मुख नहीं देखिये, जो नर गोसत खांहि।। ९१।।
गरीब, तौबा लाख न खैंच ही, गुनहगार दरबार।
बदला कहीं न जायगा, रब्ब की रूह न मार।। ९२।।
गरीब, भगल पढ़्या तो क्या हुवा, खंड बिहंड शरीर।
मुजरा तख्त तुम्हार है, जम के तोर जंजीर।। ९३।।
गरीब, बहु जुग जिया तो क्या हुवा, रवि चंदा की आव।
घट में नाम न संचर्या, जम खेलत है दाव।। ९४।।
गरीब, भगल विद्या और सिद्धि सब, दीनी हंसा तोहि।
एकै अक्षर बाहरी, चल्या जन्म सब खोय।। ९५।।
गरीब, उडन गडन और गोप होय, लघु दीरघ होय देहि।
याह अजमति उर में धरैं, जिनके मौंहडे खेह।। ९६।।
गरीब, नाम अगम निर्वाण पद, सकल सिद्धि संजूत।
अनंत भगल जामें बसैं, मौले अविगत कूत।। ९७।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, ऐसा साहिब छाडि कर, लगै और की आस।
वैकुण्ठों गिनती नहीं, शंख सुमेर कैलाश।। ६८।।
गरीब, अरबी तुरकी पारसी, हिंदवानी पढ़ि यार।
इस में संसा है नहीं, याह जम की बेगार।। ६६।।
गरीब, गुटके उड़ै सो काग हैं, सिद्ध नहीं वह गध।
बिन सांईं की बंदगी, जुग जुग जमपुर बंध।। १००।।
गरीब, साके सिक बंधी भये, संतन जीमें बार।
बूड़े वंश विनाश होय, गये जमाना हार।। १०१।।
गरीब, शूर सुभट सावंत भये, रण झूझारे देह।
सब ही साकट नाम बिन, भक्ति नहीं प्रवेह।। १०२।।
गरीब, दानी दाता सूरमा, जोधा बहुत अनेक।
एक सांईं के नाम बिन, जम सिर मारै मेख।। १०३।।
गरीब, ज्ञानी ध्यानी बहुत हैं, कवि साखी प्रवीन।
एक सांईं की भक्ति बिन, बूडे दोनूं दीन।। १०४।।
गरीब, चातुर छैला बहुत हैं, रूपवंत कंगाल।
एक सांईं की भक्ति बिन, सब ही है पैमाल।। १०५।।
गरीब, ठग बाजीगर चोर हैं, बट मारै मग मांहि।
एक सांईं के नाम बिन, सबै रसातल जांहि।। १०६।।
गरीब, जे तप किया तो क्या हुवा, मनहि राज की आस।
एक सांईं की भक्ति बिन, होगा जमपुर बास।। १०७।।
गरीब, राजा हुवा तो क्या हुवा, दुनिया लूटम लूट।
एक सांईं की भक्ति बिन, गये रसातल ऊठ।। १०८।।
गरीब, माटी का कदह लिया, सिर कचकोल बनाय।
चौंने से नाशी फिरै, ज्यूं हरियाई गाय।। १०६।।
गरीब, राजद्वारे जाय कर, बहुत करत हैं डिंभ।
अंदर थोथे तास के, नहीं भक्ति आरंभ।। ११०।।
गरीब, सेली शींगी पहर कर, मृगछाला धरि शीष।
जमपुर निश्चय जांहिगे, बिसर गये जगदीश।। १११।।
गरीब, बाँध मुतंगा कमर कै, लंगर घालैं पाय।
कर के मेंहदी लेपि करि, दुनियां ठग ठग खाय।। ११२।।
गरीब, बैजारी भड़वे भये, पैसा लेही हाट।
जन्म पूरबले बैल थे, जिनकी मोटी टाट।। ११३।।
गरीब, चुंडित मुंडित भद्र भेख, सब ही भूले नाम।
साहिब की नहीं बंदगी, बसि हैं कौने गाम।। ११४।।
गरीब, गूदरिया भूले फिरैं, भूले नगर निराठ।

सुई समाना द्वार है, उतरैंगे किस घाट।। ११५।।
गरीब, पंच गिरासी लंघना, दूधा धारी भूत।
फलोहार लेवैं नहीं, बैठे चौकी दूत।। ११६।।
गरीब, पान मिठाई खात है, ये तो बगदे जीव।
कसर महोछ्यौं रह गई, कदी न धापे पीव।। ११७।।
गरीब, चौरासी आसन करैं, पान अपानं भेव।
जमपुर निश्चय जांहिगे, पूछि देख शुकदेव।। ११८।।
गरीब, मन में सलिता बहत है, भ्रम कर्म की भीर।
ऊपर बैरागी भये, अंदर नहीं फकीर।। ११६।।
गरीब, असतल बंध अलौंनियां, बसती मांगै चूंन।
जन्म पूरबले बैल होंहि, लदि हैं खारी नूंन।। १२०।।
गरीब, चौपटिया चेते नहीं, चेते नगर न भूप।
छाया झरने बह गये, पंच अग्नि दे धूप।। १२१।।
गरीब, उर्ध्वमुखी अंधे भये, सूझे व्यौम न पंथ।
सतगुरु संथ्या लीजिये, पार ऊतारैं संत।। १२२।।
गरीब, कनफाड़ा करना नहीं, चीरा दीना कान।
कहीं कहीं घाली काठ की, कहीं कहीं मुंद्र पाषान।। १२३।।
गरीब, बिंदा लाल सिंदूर का, भस्म रमावत अंग।
बिना नाम मुकता नहीं, सुन सतगुरु प्रसंग।। १२४।।
गरीब, अनरागी मिलते नहीं, रागी मिलैं अनेक।
सकल भाखसी में बंधे, नाना बानी भेख।। १२५।।
गरीब, जे जाग्या तो क्या हुवा, सूता पांव पसार।
जागे सूते कछु नहीं, बिना नाम आधार।। १२६।।
गरीब, जे गुल लगी तो क्या हुवा, लख्या न अविगत ख्याल।
बिन सतगुरु कीमत नहीं, पाया लाल इवाल।। १२७।।
गरीब, गुल चमकी तो क्या हुवा, चंपा खिले अपार।
माणिक की कीमत करै, सतगुरु साहूकार।। १२८।।
गरीब, धन पाया कंगाल कूँ, विलसि न जानैं रंक।
जे संचे तो सूम है, रावण बसै न लंक।। १२६।।
गरीब, गुल गंधर्व कोई लखत है, सनकादिक से संत।
हीरयों बिछे बिछावनें, वरषैं लाल अनंत।। १३०।।
गरीब, गुल शंकर कूँ भेद है, शिव की अमर समाधि।
गुल चमकी नारद लखी, देख्या अगम अगाध।। १३१।।
गरीब, पार्वती परचै भई, शुकदेव सुनिया कान।
चौरासी भय मिट गया, गुल चमकी जहां जान।। १३२।।

गरीब, ब्रह्मा विष्णु विलास पद, गुल चमकारा चाव।
धर्मराय अर्धंगी कला, शेष सहंस फुन भाव।। १३३।।
गरीब, सावित्री लक्ष्मी लगी, गुल की कली समान।
गोरख दत्त दिगंबरं, ये जानत प्रवान।। १३४।।
गरीब, ध्रुव प्रहलाद अरु नामदेव, भरथरि गोपीचंद।
समरथ कला कबीर है, गुल चमकी निर्द्वन्द।। १३५।।
गरीब, सुलतानी बाजीद है, पीपा धन्ना रैदास।
नानिक दादू कै लगी, गुल चमकी आकाश।। १३६।।
गरीब, अनंत संत गुल गंध है, गंधी जेही वास।
जा घट चमकी जानिये, हरदम पीवै श्वास।। १३७।।
गरीब, बाय बिंद की खाल में, मानिक वर्षा होय।
नघ रतनों के लोक हैं, मूंदि पलक दिल धोय।। १३८।।
गरीब, त्रिकुटी संजम सुरति करि, उलटा हदफ चढ़ाय।
सतगुरु दिक्षा देत हैं, ऐसे गुल चमकाय।। १३६।।
गरीब, तंबोली के पान रंग, है ड्यौढी दरबार।
कलकी खिड़की लग रही, ब्रह्मरंध्र के द्वार।। १४०।।
गरीब, आगे सिन्धु समुंद्र है, उठैं तरंग असंख।
जा ऊपर कर गवन है, मारग दुलह बंक।। १४१।।
गरीब, पद्म झिलमिलै तेज के, कोईक जन ठहराय।
मुरजीवा नग लहत है, सुंन सरोवर जांहि।। १४२।।
गरीब, झिलमिल रंगा लोक है, जी बुद्धि कूँ नहीं ठौर।
सनकादिक जहां संख है, बूझों शंकर गौर।। १४३।।
गरीब, परमानंद कूँ परस करि, उलटे फिरे कबीर।
चौरासी त्यारन तरन, तोरन जम जंजीर।। १४४।।
गरीब, संख सलहली सैल है, संख सलहला नूर।
सत्त लोक अमरापुरी, बाजैं अनहद तूर।। १४५।।
गरीब, भ्रम विधूसन तुझ कह्या, कर्म फांसि कटि जाय।
नभ से पवन उठाय करि, सुषमणि संधि समाय।। १४६।।
गरीब, संख कला नख पर लखौ, अजब दिवाना देश।
मन का मस्तक मूंडिये, कहा बधावै केश।। १४७।।
गरीब, संख सुराही फिरत है , संख कलाली गैल।
चल हंसा तूं देखि ले, ब्रह्मनगर की सैल।। १४८।।
गरीब, तिल ओल्हे पहार है, लावौ सुरति विशेष।
खिरकी खूल्हें खैर है, नहीं चौरासी देख।। १४६।।
गरीब, लग्या निवारा नाम का, सतगुरु संग मल्लाह।

हंसा बहुरि न भरमियों, यौह अवसर यौह दाव।। १५०।।
पिंड परे सरवर कहां, कहां जिहाज मल्लाह।
दास गरीब तोस्यौं कहै, साहिब स्यौं ल्यौ लाय।। १५१।।

अथ करनी बिना कथनी का अंग

गरीब, कथनी के शूरे घनें, कथैं अटंबर ज्ञान।
जम के द्वारे जांहिगे, शब्द हमारा मान।। १।।
गरीब, कथनी के शूरे घनें, कथैं अटंबर ज्ञान।
नाहीं परख प्रेम की, सो कथनी पाहन जान।। २।।
गरीब, कथनी के शूरे घनें, घर में कहते ज्ञान।
बाहर जवाब न आवहीं, लीद करैं मैदान।। ३।।
गरीब, कथनी के शूरे घनें, कथनी कथैं अनेक।
बहुत कथै क्या होत है, जानत नहीं विवेक।। ४।।
गरीब, कथनी के शूरे घनें, कथैं अटंबर साखि।
शंख सरै कूँ ना गये, क्या क्रौड़ी धज लाख।। ५।।
गरीब, कथनी कथी तो क्या हुआ, शब्द न चीन्हा चोर।
ऊपर दीखत साध है, भीतर कठिन कठोर।। ६।।
गरीब, कथनी के शूरे घनें, करनी किरका नांहि।
मुझे अंदेशा बहुत है, ये द्यौं कित कूँ जांहि।। ७।।
गरीब, कथनी से कारज नहीं, करनी क्रिया लोय।
शब्द सिंधु में मिल रहो, आगा पीछा खोय।। ८।।
गरीब, कथनी केला वृक्ष है, थोथा थूक विलोय।
जिस पैंडे सतगुरु गये, औह मग लीजे जोय।। ९।।
गरीब, कथनी तो कांसा भया, करनी दामनि बीज।
पलक तड़क्के ले गई, तो कथनी क्या चीज।। १०।।
गरीब, करनी बीजल ब्रह्म है, कथनी कांसा लोह।
पारस से भेटा भया, जब अंग पलटे दोय।। ११।।
गरीब, करनी कूँ कुरबान जां, कथनी कथे निह कूत।
करनी बानी ब्रह्म है, कथनी बकते भूत।। १२।।
गरीब, जा घर तो करनी नहीं, काहे खट्या खांहि।
कृति नहीं कृसान की, पर घर मांगन जांहि।। १३।।
गरीब, चाकर लगै चमार का, तो घर आवै दाम।
बिन करनी पावे नहीं, सतगुरु सांईं राम।। १४।।
गरीब, पंखे मांहि पवन है, कर करनी से हांक।
कूवा बैल सब साज होय, लाव चढ़ावो चाक।। १५।।

गरीब, म्हैंसी मही जब होत है, दूध रतन दे आंच।
कुंदन सोना ढूंढि हीं, भाठी घर में कांच।। १६ ।।
गरीब, पुरुष मिले प्रसूति होय, ज्यूं वर्षा से अन्न।
सतगुरु सांईं जदि मिलें, निश्चल जिन के मन।। १७ ।।
गरीब, वेसां के विश्वास है, पंडित थोथा भांड।
वेद पढ़े क्या होत है, रेत मिली है खांड।। १८ ।।
गरीब, चींटी होय सो चुगि चले, कुंजर लगे न हाथ।
चींटी सूक्ष्म चाल है, कुंजर मोटा गात।। १६ ।।
गरीब, ज्ञानी अभिमानी भये, कहने ही के नाद।
पंडित कूँ पावें नहीं, करनी करि हैं साध।। २० ।।
गरीब, बिना मथे क्या होत है, देखो दृष्टि पसार।
पानी से पाला करे, ऐसी करनी सार।। २१ ।।
गरीब, बीज बिनौला बोईये, मांहे फूल कपास।
चरखी मांहें मथन है, झीने कप्पड़ दास।। २२ ।।
गरीब, बीज बिना वृक्षा कहां, बाग बगीचे रौंस।
बिन बोये ऊगे कहां, तुझ मेवा की हौंस।। २३ ।।
गरीब, करनी काला सांप है, डरपत हैं सब देव।
जाकै मस्तक मणि बसै, ताते करिये सेव।। २४ ।।
गरीब, शीश भुवंगम मणि बसै, कोई न मौहड़े जाय।
तन मन दोनूं अरपि दे, मणि ल्यावे सत भाय।। २५ ।।
गरीब, मेले मांहि जाय कर, देखे बहुत उपंग।
संझ्या खाली घर गया, कछु न चाल्या संग।। २६ ।।
गरीब, ऐसे मेला जगत का, समझि बूझि ले हंस।
बिना बंदगी लुटेगा, तन मन होत विधंस।। २७ ।।
गरीब, देखत के चित्त राम है, कछु न चालै नाल।
धवनी मुरदा श्वास है, ज्यूं लुहार की खाल।। २८ ।।
गरीब, अहरनि खुड़का रहि गया, उठि गये लोह लुहार।
आरन अंगीठी क्या करैं, गये बजावन हार।। २६ ।।
गरीब, माटी का कुंभा बन्या, मथि कर धरी कुलाल।
चाक चढ़ाई हेत से, तागा फेर्या बाल।। ३० ।।
गरीब, फूकि पजावै धम दिया, अग्नि लगाई ऐंन।
कोरे बर्तन नीकलै, सुन करनी के बैंन।। ३१ ।।
गरीब, अंडा सेवत करत है, पंखेरू दे पोख।
ऐसे सांईं संत जन, पालत हैं सब लोक।। ३२ ।।
गरीब, बिन करनी क्या पाईये, बूझो विष्णु महेश।

ब्रह्मा कूँ बेदी रची, करनी ही उपदेश।। ३३।।
गरीब, शेष रसातल रटत है, सकल लोक सुभांन।
करनी ही से पाईये, इन्द्रापुर अस्थान।। ३४।।
गरीब, जप तप दोऊ जुगादि हैं, यौह करनी का मूल।
मध्य एक नाम अजोख है, काया केवड़ा फूल।। ३५।।
गरीब, कथनी का दम मैल है, करनी निर्मल नीर।
कथनी ही के कलश हैं, करनी करैं सो पीर।। ३६।।
गरीब, अरब खरब लग जोड़ कर, कछू न दीना दान।
सूम चढ़ै नहीं गवालीयर, होत नीच के श्वान।। ३७।।
गरीब, जुगन जुगन जिन संचिया, बांटी बरषा भाय।
दानी तो दरवेश है, हंसा नाम लगाय।। ३८।।
गरीब, कुल की करनी तजि दई, नहीं सतगुरु से मेल।
ज्ञान ध्यान घट में नहीं, जम ले जागा बेल।। ३९।।
गरीब, नौधा भक्ति न तास पै, दशधा से नहीं हेत।
खाली कीरति क्या करै, बीज न बोया खेत।। ४०।।
गरीब, बीज न बोया जानि करि, संगति करी न साध।
शील संतोष विवेक बिन, बँधे वाद विवाद।। ४१।।
गरीब, लाल रतन लखिया नहीं, गूलरि गटकी गंध।
बिन सतगुरु कहां चांदना, डूबि गया जग अंध।। ४२।।
गरीब, लाल कलंदर संत है, चोट सहैं घन शीश।
ओह तो मंहिगे मोल का, ये मिल हैं जगदीश।। ४३।।
गरीब, हीरा हीरा सब कहैं, हीरा हरि का नाम।
सब पत्थर पारब्रह्म बिन, संत सुधारैं काम।। ४४।।
गरीब, हरि से हीरा छाडि करि, और धरत हैं चित्त।
चौदा भुवन गवन करैं, कछु न लगि है हथ।। ४५।।
गरीब, करनी परमानंद है, करनी सतगुरु संत।
करनी कारज सिद्धि है, बूझि अगोचर पंथ।। ४६।।
गरीब, वक्ता वादी बहुत हैं, गदहे ज्यूं अरडांहि।
करनी करें सो मौन हैं, साखि बेचि नहीं खांहि।। ४७।।
गरीब, करनी के आरंभ हैं, करनी के सब धाम।
बिन करनी सब बीगड़े, हर किसे का काम।। ४८।।
गरीब, नादी वादी मूढ गति, बहुत मिलैंगे आय।
गुझ बीरज कहना नहीं, साखी शब्दी लाय।। ४९।।
गरीब, षट चक्रौं के चिहर बंध, मत पकडावै ढिग।
छल छिद्र जी करत हैं, यौह जग झूठा ठग।। ५०।।

गरीब, अष्ट कँवल दल गैब धुनि, हंसा सूता जग।
अंदर से कऊवा बने, ऊपर धौला बग।। ५१।।
गरीब, करनी नाक चढ़ाव हीं, कथनी कुंभा ठेल।
शूरों के मैदान में, कहां कायर लावै सेल।। ५२।।
गरीब, शूरों के मस्तक बहैं, सनमुख लेवैं घाव।
कायर खेति न चढ़ि सकैं, जननी छनि क्यों न जाव।। ५३।।
गरीब, गर्व रसातल ना गया, बिना भक्ति जो देह।
अहरी पहरी है नहीं, पूछ देख शुकदेव।। ५४।।
गरीब, सूरी सुंनही गदहरी, बौहत जनत हैं पूत।
भक्ति बिना किस काम के, नर नारायण दूत।। ५५।।
गरीब, शील संतोष विवेक बिन, दया न उर में रिंच।
देखत के नर देख ले, सौने के बर कंच।। ५६।।
गरीब, नर खर में धोखा नहीं, समझैं वचन न साखि।
कोटि जतन छांडे नहीं, जैसे ढूंढिया राखि।। ५७।।
गरीब, रेत छान संसार है, साधू गये उलंघ।
सतगुरु साखि न समझ हीं, हड्डी मार प्रसंग।। ५८।।
गरीब, यौह हड्डियों का लोक है, ढूंढै दृव्य हनोज।
भरमाये हैं बहुत विधि, लखै न सतगुरु खोज।। ५९।।
गरीब, हड्डियों सेती हेत क्या, छानैं बीनैं छूछि।
सतगुरु सत्त कबीर से, यहां से कर गये कूँच।। ६०।।
गरीब, शंखले सीप व्यौहार गति, नघ परखा कोई एक।
करनी रहनी कदर सुनि, कोट्यौं मध्ये देख।। ६१।।
गरीब, जाति जनम दोनौं गये, मिले न हरि के दास।
खुसर्यौं कूँ क्या ऐश है, सिज्या बंध खवास।। ६२।।
गरीब, खोजा नाजर नाम है, दरबारी अंदरून।
पादशाह सिज्या गये, खुसरे भुगतैं जूंन।। ६३।।
गरीब, खुसरा सब संसार है, पादशाह हैं संत।
सुखसागर से आनि कर, खेलै आदि रु अंत।। ६४।।
गरीब, कथनी में तो कथ नहीं, करनी कड़वी दिब्ब।
विष की फांकी फांकि हैं, जिनकूँ भेटे रब्ब।। ६५।।
गरीब, विष से अमृत होत है, जो करि जानैं कोय।
कथनी छाडि करनी करै, सो सांईं सरीखा होय।। ६६।।
सांईं के दरबार में, कमी काहे की हंस।
दास गरीब जन दरद बंद, जिस भेटे सतगुरु बंश।। ६७।।

अथ कथनी बिना करनी का अंग

गरीब, पढ़ना गुणना चातुरी, यह तो बात सुगम।
सत्य सुकृत और बंदगी, याह तो बात अगम।। १।।
गरीब, पढ़े गुणे पावैं नहीं, परमानंद से देव।
गनिका पढ़ी पुराण कदि, श्यौरी दिक्षा लेव।। २।।
गरीब, पढ़ना गुणना रोग है, उलझे दुनियां मांहि।
बावन अक्षर बँधि रहे, आगे की सुधि नांहि।। ३।।
गरीब, पढ़े गुणे पावैं नहीं, बिना अंग औजूद।
दामनि घटा न दरस ही, बिन ही बादल बूंद।। ४।।
गरीब, पढ़े गुणे दरसैं नहीं, अनपढ़ने से न्यार।
अगम अगोचर सिंध है, कैसे पावैं पार।। ५।।
गरीब, वेद बकहिं बादी सुनै, निरदुंदी नहीं नेह।
उर में निहचा नाम का, सतगुरु पूरा खेव।। ६।।
गरीब, वेद बिलंबे हदि में, वाह तो बे हदि ठौर।
बूझे महल न अर्थ गति, कहै और की और।। ७।।
गरीब, वेद कथैं चित चूक है, मन में मान मरोर।
कहिवत के तो पंडिता, होंहि तेली के ढोर।। ८।।
गरीब, आंख बँधी दीखै नहीं, चालै मारौ मार।
तेली के तो बैल को, घर ही कोस हजार।। ९।।
गरीब, दांय जुरी अज्ञान की, गहै गाहटा ठौर।
एक पैंड चाले नहीं, काढ़ै बड़ी बड़ी खौर।। १०।।
गरीब, कथनी अटंब अपार है, करनी नहीं सलेश।
ज्ञानी धक्के खाहिंगे, जम किंकर के पेश।। ११।।
गरीब, ज्ञान गली पहुँचे नहीं, कथनी भेरि बजाय।
ज्ञानी पंडित पिटहिंगे, दरगह दे सी धाहि।। १२।।
गरीब, च्यार वेद षट शास्त्र, पढ़े अठारह पुरान।
सतगुरु से भेटा नहीं, पंडित होसी श्वान।। १३।।
गरीब, च्यार वेद षट शास्त्र, पढ़े अठारह बोध।
खसम बांझ के होत है, बेटा नाहीं गोद।। १४।।
गरीब, वाह तो जगह निरंस है, जहां पुत्र की ठौर।
नागर बेल न फल लगे, गहबर पान बिजौर।। १५।।
गरीब, नाहीं फली फरांस के, बीज बकल के माहिं।
ज्ञानी पंडित नाम बिन, ऊगि ऊगि यौं जांहि।। १६।।
गरीब, चित्तघन में घूमे नहीं, नहीं शब्द की चोट।
ज्ञानी ज्ञानी सब कहैं, ज्ञानी ज्ञाता ठोट।। १७।।

गरीब, गहबर ज्ञान न बूझिया, उनमुनि लगी न ताड़।
यह ज्ञानी नहीं मूढ़ है, बांधे पत्थर पहाड़।। १८।।
गरीब, करनी ते कंपत सदा, कथनी होय कसूत।
बेटा गनिका के हुवा, किस का कहिये पूत।। १६।।
गरीब, ज्ञानी गुणी अरु पंडिता, थाके थूक विलोय।
लख योजन का चांदना, पृथ्वी ऊपर होय।। २०।।
गरीब, चंदा झलकैं गगन में, पृथ्वी ऊपर नूर।
उल्लू कूँ दीखै नहीं, द्यौंहदी ऊग्या सूर।। २१।।
गरीब, उल्लू रूपी जीव हैं, ज्ञानी गुणी गंवार।
चाले शुत्र सराय कूँ, बंधे एक कतार।। २२।।
गरीब, अंधे आगै अंध है, अंधे पीछै अंध।
नाम बिना गति ज्ञान क्या, परि हैं जम के फंध।। २३।।
गरीब, सौ करोरि गीता पढ़े, सौ करोड़ भागौति।
बिना बंदगी बाद है, बंचे काल न मौत।। २४।।
गरीब, घृत बसन्दर डारि करि, पंडित करि हैं हौम।
सुरौं बासना जात है, कहा काम है डौम।। २५।।
गरीब, सुमरन सेवा बंदगी, सब कोई जानत खूब।
बिन सतगुरु क्यौं पाईये, साहिब से महबूब।। २६।।
गरीब, सतगुरु साज्या होत है, साहिब के दरबार।
अगर चंदन खर पर लद्या, सो नहीं जानत सार।। २७।।
गरीब, कोरा कलश कुम्हार का, ऊपर चित्र अनूप।
वस्तु नहीं तिस मध्य है, जैसा जल बिन कूप।। २८।।
गरीब, पांच पच्चीसौं उलटि करि, मन के मध्य समाय।
मन को निज मन में रखै, तो साहिब नेड़ा पाय।। २६।।
गरीब, पांच तत्त नौ तत्त है, पच्चीसौं परवाह।
करनी कादिर की कहूँ, गगन मंडल ठहराह।। ३०।।
गरीब, दश इन्द्री का योग सुनि, पंच कर्म पंच ज्ञान।
कूरंभ पग संकोचना, यौह दस इन्द्री म्यांन।। ३१।।
गरीब, लहरि उठैं गुरु ज्ञान की, उजल संख प्रछाल।
कुंजर क्रिया समझ ले, काम कर्म पैमाल।। ३२।।
गरीब, लाख उपंगौ छाडि करि, चेतन मन को चेत।
लोभ लगाना लगि रह्या, रंग रेती से रेत।। ३३।।
गरीब, रंग रेती कूँ देख ले, जे तूं साध सुभट।
पंथ पुरातम ले चलौं, चलना औघट घट।। ३४।।
गरीब, सौ दम सुषमनि पीय करि, पीछै ताली लाय।

त्रिकुटी पाट सहंस खुलै, परमानंद परसाय।। ३५।।
गरीब, कुंभक कुंभा भरि लिया, रेचक राखि समोय।
दो दल केरे कँवल में, झलकैं परगट लोय।। ३६।।
गरीब, नजर बाज नघ को लहैं, मूल बंध बैराग।
अंतर गति राते नहीं, ऊपर कैसा त्याग।। ३७।।
गरीब, नौ समुंद्र से पार है, गुमज बहत्तर छाडि।
पिंड पंखी की गमि नहीं, पारा राखैं हाड।। ३८।।
गरीब, पाचौं मुद्रा परसि ले, कल अजरावर होय।
उनमुनि आसन अर्श में, पारा बिंद समोय।। ३९।।
गरीब, भीतर मुद्रा एक है, बाहर द्वारे पांच।
सुषमनि सुरति समोय करि, देखो अविगत नांच।। ४०।।
गरीब, खेचरी मुद्रा मध्य बहै, भूचरि सुष्मनि भूंचि।
पिंड ब्रह्मंड में एक होय, करै अगम कूँ कूंचि।। ४१।।
गरीब, चांचरी मुद्रा तुझि कहूँ, ज्यौं का त्यौं ही देख।
अगम नगर के संत सब, परसत सुधां अलेख।। ४२।।
गरीब, उनमुनि आगम तुझि कहूँ, झिलमिल किरण अनंत।
जासे अगम अगोचरी, सतगुरु जेहा पंथ।। ४३।।
गरीब, फरमाने पौंहचे नहीं, अकलबंद नहीं जांहि।
संख भगल का लोक है, पांचौं मुद्रा नांहि।। ४४।।
गरीब, पांचौं मुद्रा पिंड में, आगे बज्र शरीर।
बावन गंडे गंग हैं, खेवट जहां कबीर।। ४५।।
गरीब, पांचौं पार पचानवैं, जहां बज्र ताल की पौलि।
सहंस छ्यानवैं धाम हैं, जहां पीतंबर खौलि।। ४६।।
गरीब, नौ कहार डोली लगे, उडियां अर्श विमान।
उजियारा है पुरुष का, अविगत देश अमान।। ४७।।
गरीब, नाम अमल निर्गुण मई, निर्बाणी निरदुंद।
द्वादश उलटि समोय करि, पैठे सुषमनि सिंध।। ४८।।
गरीब, नाम रते छाने नहीं, अगर कँवल झनकार।
अष्ट कँवल ध्वनि होत हैं, रूंम रूंम उच्चार।। ४९।।
नाम निरंजन निरमला, पाक नूर निरबान।
दास गरीब दयाल कूँ, भक्ति दई है दान।। ५०।।

अथ कामी नर का अंग

गरीब, कामी कर्ता ना भजै, हिरदै शूल बबूल।
ज्ञान लहरि फीकी लगै, गये राम गुण भूल।। १।।
गरीब, कामी कमंद चढ़ै नहीं, हिरदै चंचल चोर।
जाका मुख नहीं देखिये, पापी कठिन कठोर।। २।।
गरीब, कामी कमंद चढ़ै नहीं, हिरदै चंचल चोर।
काला मौंहडा कीजिये, पत्थर से सिर फोर।। ३।।
गरीब, कामी तजै न कामना, सतगुरु हेला दीन।
जम किंकर ले जांहिगे, तांत रूई ज्यूं पीन।। ४।।
गरीब, कामी तजै न कामना, अंतर बसै कुजान।
साधु संगति भावै नहीं, जुगन जुगन का श्वान।। ५।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदै बसै कुजान।
कोटि कर्म सीझे नहीं, जमपुर जाय निदान।। ६।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदै लागी चाख।
जमपुर निश्चय जायगा, शुकदेव बोलैं शाख।। ७।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदै लगी लगार।
जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिलो हजार।। ८।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदै लागी चाख।
जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिल हैं लाख।। ९।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदै लागी खोर।
जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिलो करोर।। १०।।
गरीब, कामी तजै न कामना, पापी कुटिल चरब।
जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिलो अरब।। ११।।
गरीब, कामी तजै न कामना, पापी कुटिल चरब।
जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिलो खरब।। १२।।
गरीब, कामी तजै न कामना, पाप किये जाजुल।
जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिलो अलिल।। १३।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदा जाका बंक।
जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिलो असंख।। १४।।
गरीब, कामी तजै न कामना, सतगुरु मारी फेट।
जमपुर निश्चय जायगा, धर्मराय की भेट।। १५।।
गरीब, कामी तजै न कामना, काला मौंहडा तांहि।
जमपुर निश्चय जायगा, मौसी गिने न माय।। १६।।
गरीब, कामी तजै न कामना, खाता लड्डू बूर।
जमपुर निश्चय जायगा, जब लग चंदर सूर।। १७।।

गरीब, कामी तजै न कामना, काला मौंहडा तास।
जमपुर निश्चय जायगा, जब लग धरणि अकाश।। १८।।
गरीब, कामी तजै न कामना, ना हिरदै हरि हेत।
जमपुर निश्चय जायगा, सारे कुटंब समेत।। १६।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदै भक्ति न भाव।
सिरहाने तो जम खड़ा, लाय रह्या है दाव।। २०।।
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदा बग मंजार।
जमपुर निश्चय जायगा, डूब्या स्यौं परिवार।। २१।।
गरीब, कामी तजै न कामना, सतगुरु से नहीं साट।
मसक बांध जम ले गये, कुल कूँ लाया काट।। २२।।
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, जम किंकर की मान।
छाती तोरै देखते, होगी खैंचा तान।। २३।।
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, ऐसी नर की भोर।
मसक बांधि जम ले गये, गाडि दिया है घोर।। २४।।
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, कामी नर के भूख।
मसक बांधि जम ले गये, पिंज्जर दीन्हा फूक।। २५।।
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, पूजैं घोर मसीत।
मसक बांधि जम ले गये, नहीं छुटावैं भीत।। २६।।
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, देवल पूजन जाय।
मसक बांधि जम ले गये, जुगन जुगन डहकाय।। २७।।
गरीब, हमरी बानी ना सुनै, ना सतगुरु का भाव।
मसक बांधि जम ले गये, देकर बहुत संताव।। २८।।
गरीब, कामी केला वृक्ष है, अंदर से थोथा।
सतगुरु सतगुरु कहत है, ज्यूं पिंज्जर तोता।। २६।।
गरीब, अंदर भक्ति न भाव है, बहज मुखी बकि देत।
तोरि पींजरा ले गई, मारया हेला देत।। ३०।।
गरीब, कामी खित्तरपाल होय, भैरौं भूत विताल।
जुगन जुगन छूटै नहीं, जब लग स्वर्ग पताल।। ३१।।
गरीब, कामी खित्तरपाल हैं, भैरौं भूत खईस।
जुगन जुगन छूटै नहीं, डूब्या बिसवे बीस।। ३२।।
गरीब, कामी का गुरु कामिनी, हरदम बारंबार।
जुगन जुगन छूटै नहीं, डूब्या काली धार।। ३३।।
गरीब, कामी का गुरु कामिनी, जैसी मीठी खांड।
जोगनि जमपुर ले गई, मारे भड़वे भांड।। ३४।।
गरीब, कामी का गुरु कामिनी, जैसी मीठी खांड।

जोगनि जमपुर ले गई, मार परी और डांड।। ३५।।
गरीब, कामी का गुरु कामिनी, जैसी मीठी खांड।
जोगनि जमपुर ले गई, भली बिगूची रांड।। ३६।।
गरीब, कामी कीड़ा नरक का, अंतर नहीं विवेक।
जोगनि जमपुर ले गई, क्या जिन्दा क्या शेख।। ३७।।
गरीब, कामी कीड़ा नरक का, क्या बैराग सन्यास।
जोगनि जमपुर ले गई, बीती बहुत तिरास।। ३८।।
गरीब, कामी कीड़ा नरक का, क्या षट् दरशन भेष।
जोगनि जमपुर ले गई, टुक आपा भी देख।। ३९।।
गरीब, कामी कीड़ा नरक का, जा दिल नहीं अकीन।
जोगनि जमपुर ले गई, पकड़े दोनों दीन।। ४०।।
गरीब, कामी कीड़ा नरक का, क्या काजी क्या पंड।
जोगनि जमपुर ले गई, सब पर बीत्या डंड।। ४१।।
गरीब, साकट कै तो हरता करता, संतों कै तो दासी।
ज्ञानी कै तो धूमक धामा, पकर लिया जग फांसी।। ४२।।
गरीब, साकट कै तो हरता करता, संतों कै तो चेरी।
ज्ञानी कै तो दारम दारा, जग कूँ दे है लोरी।। ४३।।
गरीब, तीन लोक में नहीं अंघाई, अजब चरित्र तेरे।
सुर नर मुनिजन ज्ञानी ध्यानी, कीन्हें सकल मुजेरे।। ४४।।
गरीब, इन्द्र कै अर्धंगी नारी, भई उर्वशी हूरं।
तीन लोक में डंका डाकनि, मार लिये सब घूरं।। ४५।।
गरीब, लोकपाल तो लूट लिये हैं, नारद से मुनी ध्यानी।
पाराऋषि श्रृंगी ऋषि मोहे, सुनि ले अकथ कहानी।। ४६।।
गरीब, अजयपाल का किया अलूफा, पकरि मच्छंदर खाया।
कच्छ देश में गोरख पकरे, सतगुरु आंन छुटाया।। ४७।।
गरीब, गोपीचंद भरथरी होते, छाडि गये अर्धंगी।
शुकदेव आगे हुरंभा आई, हो नाची है नंगी।। ४८।।
गरीब, बोले शुकदेव सुनरी दूती, तूं हमरै क्यूं आई।
हमतो बाल जती बैरागी, तूं है हमरी माई।। ४९।।
गरीब, मैं तुमरी अर्धंगी नारी, तूं हमरा भर्तारं।
स्वर्ग लोक से हम चलि आई, देखो नाच सिंगारं।। ५०।।
गरीब, तुमरी नजर कुटिल है दूती, कड़वे नैंन कटारे।
माता का तो नाता राखौं, हम हैं पुत्र तुम्हारे।। ५१।।
गरीब, सुलतानी तज बलख बुखारा, सोला सहंस सहेली।
ठारा लाख तुरा जिन छाड्या, बंके बाग हवेली।। ५२।।

गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि बुरी बलाय।
नागनि सब जग डसि लिया, सतगुरु करै सहाय।। ५३।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि है विकराल।
नागनि सब जग डसि लिया, जीती गावै ख्याल।। ५४।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि है विकराल।
नागनि सब जग डसि लिया, तांहि भुवंगम चाल।। ५५।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि है विकराल।
नागनि सब जग डसि लिया, ना कुछ हाल हवाल।। ५६।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि बुरी बलाय।
नागनि सब जग डसि लिया, सतगुरु लिये छुटाय।। ५७।।
गरीब, ज्ञानी ध्यानी सब डसे, क्या दाता क्या सूंम।
सब जग घाणैं घालिया, बड़ी मचाई धूम।। ५८।।
गरीब, सब जग घाणैं घालिया, बड़ी मचाई रौल।
तपी उदासी ठगि लिये, ले छोडे जम पौल।। ५९।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, खाती है दरवेश।
विष्णु विसंभर से रत्ते, मोहे शंकर शेष।। ६०।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, सिर टौरा रवि चंद।
तेतीसौं देवा डसे, पकरि लिये हैं इन्द।। ६१।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि है महमंत।
ब्रह्मा आसन का डिग्या, कहा करेंगे पंथ।। ६२।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि है महमंत।
जीव बापरे की कौन चलावै, पकरि लिये भगवंत।। ६३।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि किये सिंघार।
अनाथ जीव की कौन चलावै, पकर लिये अवतार।। ६४।।
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि है महमंत।
सतगुरु के प्रताप से, उबरे कोईक संत।। ६५।।
बाघनि आई रे बघनी, बाघनि आई रे बघनी।
नागनि खाती है ठगनी, नागनि खाती है ठगनी।। ६६।।
मुनियर मोहे हैं दूती, मुनियर मोहे हैं दूती।
सतगुरु कै काली कूती, सतगुरु कै काली कूती।। ६७।।
इन्द्र कै तो पटरानी, इन्द्र कै तो पटरानी।
ब्रह्मा भरता है पानी, ब्रह्मा भरता है पानी।। ६८।।
शंकर पलकौं पर राखै, शंकर पलकौं पर राखै।
वृषभ पर चढ़ि कर हांकै, वृषभ पर चढ़ि कर हांकै।। ६९।।
विष्णु बिलावल बीना है, विष्णु बिलावल बीना है।

लक्ष्मी स्यूं ल्यौ लीना है, लक्ष्मी स्यूं ल्यौ लीना है।। ७०।।
त्रिगुण ताना है तूरा, त्रिगुण ताना है तूरा।
साधू निकसैंगे शूरा, साधू निकसैंगे शूरा।। ७१।।
याह मल मूत्र की काया, याह मल मूत्र की काया।
दुर्वासा गोता खाया, दुर्वासा गोता खाया।। ७२।।
डाकनि डांडे रे डोबै, डाकनि डांडे रे डोबै।
बैठी पास नहीं शोभै, बैठी पास नहीं शोभै।। ७३।।
माया सतगुरु सूं अटकी, माया सतगुरु सूं अटकी।
जोगनि हमरै क्यूं भटकी, जोगनि हमरै क्यूं भटकी।। ७४।।
हम तो भगलीगर जोगी, हम तो भगलीगर जोगी।
हम नहीं माया के भोगी, हम नहीं माया के भोगी।। ७५।।
तोमें झगरा है भारी, तोमें झगरा है भारी।
मारे बड़ छत्रधारी, मारे बड़ छत्रधारी।। ७६।।
सेवा करि सूं मैं नीकी, सेवा करि सूं मैं नीकी।
हम कूँ लागत है फीकी, हम कूँ लागत है फीकी।। ७७।।
हमरी सार नहीं जानी, हमरी सार नहीं जानी।
अरी तैं तो घालि दई घानी, अरी तैं तो घालि दई घानी।। ७८।।
चलती फिरती क्यूं नांही, चलती फिरती क्यूं नांही।
हम रहते अविगत पद मांही, हम रहते अविगत पद मांही।। ७९।।
अरी तूं गहली है गोली, अरी तूं गहली है गोली।
दाग लगावैगी चोली, दाग लगावैगी चोली।। ८०।।
मेरा अंजन है नूरी, मेरा अंजन है नूरी।
अंदर महकै कस्तूरी, अंदर महकै कस्तूरी।। ८१।।
तुम किसी राजा पै जावो, तुम किसी राजा पै जावो।
हमरे मन नांही भावो, हमरे मन नांही भावो।। ८२।।
मैं तो अर्धंगी दासी, मैं तो अर्धंगी दासी।
हम हैं अनहद पुर वासी, हम हैं अनहद पुर वासी।। ८३।।
हमरा अनहद में डेरा, हमरा अनहद में डेरा।
अंत न पावैगी मेरा, अंत न पावैगी मेरा।। ८४।।
हम तो आदि जुगादिन जी, हम तो आदि जुगादिन जी।
अरी तुझ माता कहूँ अक धी, अरी तुझ माता कहूँ अक धी।। ८५।।
अब मैं देऊँगी गारी, अब मैं देऊँगी गारी।
हम तो जोगी ब्रह्मचारी, हम तो जोगी ब्रह्मचारी।। ८६।।
आसन बंधूगी जिंदा, आसन बंधूगी जिंदा।
गल में डारौंगी फंदा, गल में डारौंगी फंदा।। ८७।।

आसन मुक्ता री माई, आसन मुक्ता री माई।
तीनूं लोक न अंघाई, तीनूं लोक न अंघाई।। ८८।।
हमरै द्वारै क्यूं रोवो, हमरै द्वारै क्यूं रोवो।
किसी राजा राणे कूँ जोवो, किसी राजा राणे कूँ जोवो।। ८६।।
हमरै भांग नहीं भूनी, हमरै भांग नहीं भूनी।
माया शीश कूटि रूंनी, माया शीश कूटि रूंनी।। ६०।।
तूं तो जोगनि है खंडी, तूं तो जोगनि है खंडी।
मोहरा फेरि चली लंडी, मौहरा फेरि चली लंडी।। ६१।।
हेला दीन्हा रे भाई, हेला दीन्हा रे भाई।
हंसा परसत ही खाई, हंसा परसत ही खाई।। ६२।।
गरीब, नारी लंगर कामिनी, बोलै मधुरे हेत।
फेट परै छोडै नहीं, क्या मगहर कुरूखेत।। ६३।।
गरीब, नारी लंगर कामिनी, बोलै मधुरे बोल।
फेट परै छोडै नहीं, काढै घूंघट झोल।। ६४।।
गरीब, नारी लंगर कामिनी, बोलै मधुरे बोल।
कोईक साधू ऊबरे, मुनिजन पीये घोल।। ६५।।
गरीब, नारी लंगर कामिनी, जामैं अनगिन खोट।
फांसी डारै बाहि कर, करै लाख में चोट।। ६६।।
गरीब, नारी लंगर कामिनी, बोलै मधुरे बैंन।
जाकूँ नहीं पतीजिये, घूंघट घट में सैंन।। ६७।।
गरीब, नारी लंगर कामिनी, बोलै मधुरे बैंन।
जाके पास न बैठिये, जाका कैसा दैंन।। ६८।।
गरीब, नारी नांहीं नाहरी, है जंगल का शेर।
बाहर भीतर मारि है, मुनि जन कीये जेर।। ६६।।
गरीब, नारी नांहीं नाहरी, है जंगल का शेर।
बाहर भीतर मारि है, खाय लिये घर घेर।। १००।।
गरीब, सतगुरु हेला देत हैं, सुनियों संत सुजान।
नारी पास न बैठिये, नारी आई खान।। १०१।।
गरीब, नैंनों काजर बाहि कर, खाय लिये हैं हंस।
हाथों मैंहदी लाय कर, डोबि दिये कुल वंश।। १०२।।
गरीब, उलटी मांग भराय करि, मंजन कर है गात।
मीठी बोलै मगन होय, लावै बौह विधि घात।। १०३।।
गरीब, पूत पूत कर खा गई, भाई बीरा होय।
खसम खसम कर पी गई, नारी विष की लोय।। १०४।।
गरीब, क्या बेटी क्या बहन है, क्या माता क्या जोय।

माया काली नागिनी, खाते होय सो होय।। १०५।।
गरीब, माया काली नागनी, अपने जाये खात।
कुंडली में छोडै नहीं, सौ बातौं की बात।। १०६।।
गरीब, कुंडली में से नीकले, गोरख दत्त कबीर।
शुकदे ध्रुव प्रहलाद से, रैदासा रणधीर।। १०७।।
गरीब, कुंडली में से नीकले, सुलतानी बाजीद।
गोपीचंद अरु भरथरी, लाई डाक फरीद।। १०८।।
गरीब, जनक विदेही ऊबरे, नागन बंधी डाढ।
नानक दादू ऊबरे, ले सतगुरु की आड।। १०९।।
गरीब, तीन लोक घाणी घली, चौदह भुवन विहंड।
माया नागनि खा लिये, सकल द्वीप नौ खंड।। ११०।।
गरीब, कामनि काली नागनी, देखत ही डसि खाय।
बोले से तप खंड होय, परसे सरबस जाय।। १११।।
गरीब, कामनि काली नागनी, मारत है भरि डंक।
सुर नर मुनिजन डसि लिये, खाये राव रू रंक।। ११२।।
गरीब, कामनि काली नागनी, मारत है भरि डंक।
शब्द गारडू जो मिले, जाकूँ कछु न शंक।। ११३।।
गरीब, नाग दमन कूँ नमत है, घालि पिटारे खेल।
साचा सतगुरु गारडू, लहरि न व्यापै पेल।। ११४।।
गरीब, कामनि करद करौंत है, आवत जाते खाय।
कष्ट बिहंडै देखते, दो धड़ करैं हलाय।। ११५।।
गरीब, कामनि करद करौंत है, नय नय लागत अंग।
मारै खैबर खैंचि करि, रहता कछु न ढंग।। ११६।।
गरीब, कामी कोयला हो गया, चढ़ै न दूजा रंग।
पर नारी स्यूं बंधि गया, कोटि कहो प्रसंग।। ११७।।
गरीब, पर नारी नहीं परसिये, मानों शब्द हमार।
भुवन चतुरदश तास पर, त्रिलोकी का भार।। ११८।।
गरीब, पर नारी नहीं परसिये, होगा हाल बेहाल।
पारस पूंजी जात है, कांकर साटै लाल।। ११९।।
गरीब, पर नारी नहीं परसिये, सुनों शब्द सलतंत।
धर्मराय के खंभ से, उर्धमुखी लटकंत।। १२०।।
गरीब, आवत मुख नहीं देखिये, जाती की नहीं पीठ।
क्या अपनी क्या और की, सब ही नारि अंगीठ।। १२१।।
गरीब, क्या अपनी क्या और की, सब का एकै मंत।
पारस पूंजी जात है, पारा बिंद खिसंत।। १२२।।

गरीब, क्या अपनी क्या और की, सब ही एकै नार।
पारस पूंजी जात है, खिसता बिंद संभार।। १२३।।
गरीब, बोलूंगा निर्पक्ष हो, जो चाहै सो होय।
क्या अपनी क्या और की, सब ही एकै जोय।। १२४।।
गरीब, बोलूंगा निर्पक्ष हो, जो चाहै सो होय।
घर घर दीपक जलत है, सब की एकै लोय।। १२५।।
गरीब, बोलूंगा निर्पक्ष हो, जो चाहै सो कीन।
क्या अपनी क्या और की, सब ही नारि मलीन।। १२६।।
गरीब, नारी नारी भेद है, एक मैली एक पाख।
जा उदर ध्रुव ऊपजे, जाकी भरिये साख।। १२७।।
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक मैली एक पाख।
जा उदर प्रहलाद थे, जाकूँ जोरौं हाथ।। १२८।।
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक उजल एक गंध।
जा माता प्रणाम है, जहां भरथरि गोपीचंद।। १२९।।
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक हीरा एक लाल।
दत्त गुसांईं अवतरे, अनसुईया के नाल।। १३०।।
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक रोझं एक हंस।
जनक विदेही अवतरे, धन्य माता कुल बंश।। १३१।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी बहु गुण भेव।
जा माता कुरबान है, जहां उपजे शुकदेव।। १३२।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी कंचन कूप।
नारी सेती ऊपजे, नामदेव से भूप।। १३३।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी भक्ति विलास।
नारी सेती ऊपजे, धन्ना भक्त रैदास।। १३४।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी कंचन सीध।
नारी सेती ऊपजे, बाजीदा अरु फरीद।। १३५।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी में बौह भांत।
नारी सेती ऊपजे, शीतलपुरी सुनाथ।। १३६।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी कूँ निरताय।
नारी सेती ऊपजे, रामानंद पंथ चलाय।। १३७।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी नर की खान।
नारी सेती ऊपजे, नानक पद परवान।। १३८।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी सरगुण बेल।
नारी सेती ऊपजे, दादू भक्त हमेल।। १३९।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी का प्रकाश।

नारी सेती ऊपजे, नारद मुनि से दास।। १४०।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी निर्गुण नेश।
नारी सेती ऊपजे, ब्रह्मा विष्णु महेश।। १४१।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी मूला माय।
ब्रह्म जोगनी आदि है, चरण कमल ल्यौ लाय।। १४२।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी माया मूल।
ब्रह्म जोगनी आदि है, विचरै बिन अस्थूल।। १४३।।
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी बिन क्या होय।
आदि माया ऊँकार है, देखो सुरति समोय।। १४४।।
शब्द स्वरूपी ऊतरे, सतगुरु सत्य कबीर।
दास गरीब दयाल हैं, डिगे बँधावैं धीर।। १४५।।

अथ सहज का अंग

गरीब, सहजे सतगुरु मिलैंगे, सहजे उपजे ज्ञान।
सहज खुमारी लगैगी, सहजे ही रसपान।। १।।
गरीब, सहजे ही सुर पलटि ले, सहजे बंधो मूल।
सहजे बाड़ी बोईये, सहजे लागैं फूल।। २।।
गरीब, कूवा गगन पताल मुख, द्वादश द्वार बहंत।
सतगुरु सरवर गैब गति, जल अंचवै कोई संत।। ३।।
गरीब, सहजे कूवा चलत है, लाव चड़स नहीं चाक।
बिन ही माली बैल बिन, हरहट हांका हाक।। ४।।
गरीब, सहजे क्यारी भरत है, सहजे बोलै राम।
सहजे बाग अंगूर फल, सहजे पावे धाम।। ५।।
गरीब, सहजे कोयल बोलती, पपीहे प्रवान।
दादुर मोर चकोर चित्त, सहजि उगै शशि भान।। ६।।
गरीब, सहजे क्रिया कीजिये, सहजे कँवल फिराय।
सहजे आसन बांध कर, त्रिवैणी तट न्हाय।। ७।।
गरीब, सहजे भाठी लाईये, सहजे रस की धार।
सहजे प्याला पीजिये, सहजे ज्योति अपार।। ८।।
गरीब, सहजे घटा उठंत हैं, सहजे बादल बंध।
सहजे दामनि खिमत है, सहजे सूभर सिंध।। ९।।
गरीब, सहजे वर्षा होत है, सहजे ऊगे बीज।
सहजे ही प्रवान फल, सहजे सतगुरु रीझ।। १०।।
गरीब, सहजे सुमिरन कीजिये, सहजे लगै समाध।
सहजे साहिब पाईये, सहजे भेटैं साध।। ११।।

गरीब, सहजे संगत कीजिये, सहजे चलिये बाट।
सहजे मूल उच्चार है, सहजे खुल्हैं कपाट।। १२।।
गरीब, सहजे सिद्ध प्रकाशिया, सहजे चलें विमान।
सहजे ज्ञान विवेक बुद्धि, सहजे दीजै दान।। १३।।
गरीब, सहजे सोहं जाप है, सहजे खैंच हदफ।
बावन अक्षर से परै, सतगुरु समझि हर्फ।। १४।।
गरीब, सहजे किलियं मूल धुनि, सहजे ॐ सार।
सहजे हरियं नाम है, सहजे नाद उच्चार।। १५।।
गरीब, सहजे संजम होत है, सहजे बाजै बीन।
सहजे जोग विजोग है, सहजे होना लीन।। १६।।
गरीब, सहजे साजन मिलत हैं, सहजे दुरजन जंग।
सहजे महल मिलाप है, सहजे बरषै रंग।। १७।।
गरीब, सहजे हंसा उड़त है, सहजे करै मुकाम।
सुखसागर सत लोक में, सहजे ही विश्राम।। १८।।
गरीब, सहजे नौका चलत है, सहजि बंधै बरदवान।
सहजि चप्पू चित्त लाईये, सहजे ही प्रवान।। १६।।
गरीब, सहजि शिला जहां जगमगै, सहजे वरषै नूर।
मल्ल अखारा महल में, कछै अप्सरा हूर।। २०।।
गरीब, ताल मृंदग उपंग धुनि, तंबूरे सुर बंध।
बजहि सारंगी सुंन में, सुरपति साधू इन्द।। २१।।
गरीब, झीने राग बिहाग सुर, सोलह संख बुलेल।
अर्थ अगोचर लाप सुन, देखो अविगत खेल।। २२।।
गरीब, सहजे बाजे बजत हैं, सहजे मंजन गात।
ऐसा अचरज देखिया, अछरोटी बिन हाथ।। २३।।
गरीब, सहजे संग्या लीजिये, सहजे होय प्रीत।
सहजे परसे परमगुरु, सहजे ध्यान उदीत।। २४।।
सहजे सलिता सुरति बंधि, सहजे चलना पंथ।
दास गरीब अगाध है, जाके आदि न अंत।। २५।।

अथ साच का अंग

गरीब, साचा सतगुरु जो मिले, तो हंसा पावै थीर।
झक झोले जूनी मिटै, मुरशद गहर गंभीर।। १।।
गरीब, साचे कूँ तो साच है, कूड़े कूँ है कूड़।
बैल होत कंगाल का, गल में पहिरै जूड़।। २।।
गरीब, साचे कूँ प्रणाम है, झूठे के सिर डंड।

ठौर नहीं तिहुँ लोक में, भरमत है नौ खंड।। ३।।
गरीब, साचे का सेवन करुं, झूठे को ल्यूं लूटि।
साच शब्द से यौं डरै, ज्यौं स्याने की मूठि।। ४।।
गरीब, साचे कूँ सिजदा करूं, झूठे झलकैं मांहि।
त्रिगुण अगनि जलत हैं, झूठे बहि बहि जांहि।। ५।।
गरीब, साचे का सुमरण करूं, झूठे द्यौं जंजाल।
साचा साहिब आप है, झूठ कपट सब काल।। ६।।
गरीब, साचे के चरणां लगूं, झूठे का ल्यौं शीश।
साच सकल में रहैगा, झूठ न बिसवे बीस।। ७।।
गरीब, साचे को सब सौंप द्यौं, भक्ति बंदगी नाम।
झूठा कपटी मारिये, हमरे कौने काम।। ८।।
गरीब, साचे को सुरगापुरी, झूठा दोजख मांहि।
चंद सूर की आयु लग, दोजख निकसे नांहि।। ९।।
गरीब, साचे शंकर रीझ हीं, ब्रह्मा जोड़ै प्रीत।
विष्णु करे प्रतिपाल हदि, सकल संत संगीत।। १०।।
गरीब, साहिब जिन के उर बसै, झूठ कपट नहीं अंग।
जिन का दरशन न्हान है, कहां परबी फिर गंग।। ११।।
गरीब, साचे से सन्मुख रहौ, झूठे से क्या नेह।
संख जुगन जुग परैगी, झूठे के मुख खेह।। १२।।
गरीब, झूठा सब संसार है, साचा है सो एक।
पारब्रह्म सत पुरुष पद, सब बसुधा की टेक।। १३।।
गरीब, साचे सांईं संत जन, झूठे हैं सब लोक।
मींडक मच्छी तड़फड़ै, ज्यौं ओछे जल जोक।। १४।।
गरीब, साचे सदा मसंद परि, उस चंगे दरबार।
झूठ्यौं के जूती पड़ैं, जम किंकर की मार।। १५।।
गरीब, झूठे कपटी जीव सब, साचे संत सुजान।
त्रिवाचा छूटै नहीं, झूठ्यौं नाक अरु कान।। १६।।
गरीब, साच्यौं के संग चालिये, झूठे संग नहीं जाय।
रावण मिलता है नहीं, विभीषण की बांहि।। १७।।
गरीब, विभीषण लंका दई, रावण कटि हैं मूंडि।
साचे साधू भँवर है, झूठे गोबर भूंड।। १८।।
गरीब, झूठा कंशा मारिया, फिर चानौर चमार।
रुकमणि कूँ ब्याहन गये, शीश कट्या शिशुपाल।। १९।।
गरीब, बालि सहंस्राबाहु से, मारे छाती तोर।
साचा जन प्रहलाद है, झूठी जरि गई होरि।। २०।।

गरीब, हिरणाकुश के उद्र कूँ, नख से गेर्‌या पारि।
निर्गुण से सरगुण भया, धरि नरसिंह अवतार।। २१।।
गरीब, द्रोपदी चीर बधाईयां, पीतंबर अटनाल।
दुःशासन से पचि गये, कौरव मांग्या ज्वाल।। २२।।
गरीब, दुरयोधन की मेदनी, हो गई खंड बिहंड।
द्रोणागिर भीष्म पिता, वचन नजर सिर डंड।। २३।।
गरीब, गज ग्राह उबारिया, पशू जूनि के संत।
दान मेर छाडी नहीं, कर्ण तुड़ाये दंत।। २४।।
गरीब, महाभारत के जंग में, पांच उबारे पंड।
जुगन जुगन की संतनी, घंटा ले रखि अंड।। २५।।
गरीब, साच्यौं के संगीत है, झूठ्यौं सेती दूर।
परमेश्वर करुणामई, रहे सकल घट पूर।। २६।।
गरीब, बालनीक बालेश्वरी, पूरि पंचायन नाद।
पंडौं जग अश्वमेध में, एकै पाया साध।। २७।।
गरीब, भेषों के लशकर फिरै, वाणी चोर कठोर।
सतगुरु धाम न पौंहच हीं, चोरासी के ढोर।। २८।।
गरीब, पारिंगत परचै नहीं, वाणी कहैं बनाय।
धर्मराय दरगह शरै, झूठा लीतर खाय।। २६।।
गरीब, कपटी कूँ भावै नहीं, भक्ति मुक्ति की रीति।
झूठा लंगर फिरत है, साधौं टोहत सीत।। ३०।।
गरीब, उर में नहीं यकीन है, झूठा लंगड़ा लाट।
साचे चढ़े विमान परि, झूठे मारे काठ।। ३१।।
गरीब, साचे सूरे संत है, मरदाने झूझार।
लाख दोष व्यापै नहीं, एक नाम की लार।। ३२।।
गरीब, सत्य सुकृत और बंदगी, जा उर ज्ञान विवेक।
साध रूप सांईं मिले, पूर्ण ब्रह्म अलेख।। ३३।।
गरीब, सत सुकृत संतोष सर, आधीनी अधिकार।
दया धर्म जिस उर बसै, सो सांईं दीदार।। ३४।।
गरीब, आदि अंत मध्य सत्य है, रिंचक झूठ जिहान।
कपटी जुग जुग कपट है, लख चौरासी खान।। ३५।।
गरीब, साचे कूँ शंका नहीं, झूठ्यों भय घर मांहि।
कोट किले क्या चिनत है, झूठा छूटै नांहि।। ३६।।
गरीब, सांई बिन कित ठौर है, सांईं बिन कित वास।
साच मिलैगा साच में, झूठे जांहि निराश।। ३७।।
गरीब, साच शक्ति नर हरि रची, झूठा रच्या जिहान।

झूठा सब संसार है, साचे साधू जान।। ३८।।
गरीब, सत्य सुकृत की बंदगी, सत्य सुकृत का जाप।
झूठा दोजख दीजिये, साचा आपै आप।। ३९।।
गरीब, साहिब सेती दोस्ती, संतों सेती प्यार।
जिन कूँ शंका है नहीं, धर्मराय दरबार।। ४०।।

अथ कुसंगत का अंग

गरीब, कँवल फूल मन भँवर है, कांटा कर्म कुसंग।
पांच विषय स्यों बंधि रह्या, कैसे लागै रंग।। १।।
गरीब, काया सरवर मीन मन, दशौं दिशा कूँ जाय।
विषय लहर दिल देह में, भक्ति न रिंच सुहाय।। २।।
गरीब, कुटिल वासना कँवल में, पावत नहीं मुराद।
मुरजीवा मन कूँ करै, जहां नघ अगम अगाध।। ३।।
गरीब, सुरही बंधी चमार कै, बाह्मन बोई भांग।
चंदन खर के लेपिये, कुंदन बदले रांग।। ४।।
गरीब, कर्म कटारी बांध करि, करैं भारथी जंग।
अपने सिर लेवै नहीं, प्रायश्चित सौंपे गंग।। ५।।
गरीब, तिरण तारणी बख्श दे, हमरे प्रायश्चित काट।
पारब्रह्म से औल्हने, परबी न्हावैं घाट।। ६।।
गरीब, बुगला हंसा एक सर, एकै रूप रिसाल।
औह सरवर मोती चुगै, वह मच्छी का काल।। ७।।
गरीब, सीपी पीवत है स्वांति कूँ, बचि है खारी नीर।
मांहे मोती नीपजै, करनी बंध शरीर।। ८।।
गरीब, नग फूट्या बिकता नहीं, सारा लीजै सोध।
हीरा पत्थर में बसै, धम घृती ले खोदि।। ९।।
गरीब, कदली मांहि कपूर है, गज मोती अंदरून।
चुंबक चिड़िया चुंच भरि, पैठे गज नाखून।। १०।।
गरीब, यह तो सत्संग तुझ कह्या, कुसंग कहूँ भयभीत।
स्वांति पड़ै जो सर्प मुख, कृतिया जहर अनीति।। ११।।
गरीब, भूमि पड़ै तैसा फलै, सुर की संगत कीन्ह।
नीचन मुख नहीं देखना, ना कोई मिलो कुलीन।। १२।।
गरीब, लोहे चुंबक प्रीतड़ी, दोनों जड़ जगदीश।
चेतन चेतन ना मिलैं, ल्हीस मिलत है ल्हीस।। १३।।
गरीब, रूमी वस्त्र अंतरा, लोहे पारस बीच।
च्यार जुगन मेला नहीं, रहते निकट नजीक।। १४।।

गरीब, ऐसे नीच न जान दे, साहिब के दरबार।
समझत नहीं अज्ञान बुधि, लगि रहे कर्म लगार।। १५।।
गरीब, कर्म भ्रम भारी लगे, मनसा चंचल चाव।
बुधि बेधे नहीं सुरति सर, महल न लगै लगाव।। १६।।
गरीब, पिंगुल घाटी ना लखी, हदफ न लगी कसीस।
यह दोनों प्रसिद्ध हैं, लाल झिमक्के शीश।। १७।।
गरीब, कौन कुसंगति ना लखे, आड़ा पड़दा खोलि।
यौह तन तालिब कूँ दिया, मांहें रतन अमोल।। १८।।
गरीब, गदहे मिसरी प्याईये, जाका यौही काल।
माखी घृत न्हवाईये, परसत ही पैमाल।। १९।।
गरीब, जवासा जल रोग है, ऊभ सूक बरसंत।
ओला अगनि एक सर, संसारी विच संत।। २०।।
गरीब, लौंग नालियर पान पद, मिरच मुनक्का दाख।
मांहि अरंड जो ऊगमैं, न्यारा न्यारा वाक।। २१।।
गरीब, अठिसठि तीरथ में मिली, देखो गंगा ज्ञान।
न्यारी धारा चलत है, गंगासागर जान।। २२।।
गरीब, सतगुरु संगति सार है, सकल कुसंग सब जीव।
पानी से निकसै नहीं, अनेक जतन कर घीव।। २३।।
गरीब, परमानंद से बीछर्या, यौह मन हंसा काग।
मुक्ति नहीं सतगुरु बिना, कहा छापे ले दाग।। २४।।
गरीब, कंबली के रंग ना चढ़ै, कोयला नहीं सुफेद।
सतगुरु बिन सीझे नहीं, कहाँ पढ़त है वेद।। २५।।
गरीब, कौड़ी बदले जात है, यौह मानिक नग हंस।
पाचों सेती बँध रह्या, जुग जुग होत विधंस।। २६।।
गरीब, पांच पच्चीस कुसंगनी, सुंनि सरवर नहीं न्हांय।
सतगुरु से मेला नहीं, यौं चौरासी जाय।। २७।।
गरीब, सतगुरु सूरति नगर से, आये हैं बड़काज।
कऊवा कदर न जान ही, हंसा चढ़ै जहाज।। २८।।
गरीब, कस्तूरी की वासना, मिरगा लेत सुवास।
निरखि परखि पावै नहीं, बहुरि ढंढोरे घास।। २९।।
गरीब, कस्तूरी महकंत है, साहिब हैं संबूह।
नौका चढ़ै न नाम की, अंधे डूबत कूह।। ३०।।

अथ संगत का अंग

गरीब, संगत कीजे साध की, संसारी भटकंत।
पिंजर सूवा पढ़त है, किस कूँ बूझै पंथ।। १।।
गरीब, सतगुरु की संगति भली, हंसा थीर मुकाम।
जुगन जुगन के बीछड़े, परसे लोक निधान।। २।।
गरीब, साधौं की संगति करै, बड़भागी बड़ देव।
आपन तो संशय नहीं, और उतारैं खेव।। ३।।
गरीब, संगत सुर की कीजिये, असुर आब है ओस।
बुद्धि भृष्टि सौ संग क्या, उलटा देहिं दोष।। ४।।
गरीब, संगति सुर की कीजिये, असुरन स्यों क्या हेत।
डाल मूल पावै नहीं, ज्यौं मूली का खेत।। ५।।
गरीब, संगति सुर की जोरि है, असुरन की है गंद।
सुर हैं सुरगा लोक के, असुर मलीनं जिंद।। ६।।
गरीब, संगति हुई तो क्या हुआ, हिरदे नहीं विवेक।
छलनी कंदा छानि हीं, कूकस राख्या देख।। ७।।
गरीब, सूवा सतगुरु कहत है, पिंजर पड़े प्रान।
खिड़की खुल्हैं उड़ गया, मंत्र न लाग्या कान।। ८।।
गरीब, अंतर हेत न प्रीति पद, सूवै ज्यौं संसार।
पिंजर खाली तास का, उड़ि गया बनौं मंझार।। ९।।
गरीब, सतगुरु दत्त दाता कहैं, बानी बड़ी बिलंद।
मुख बोले क्या होत है, अंतर हेत न अंध।। १०।।
गरीब, सुवटा खाली रहि गया, पार पहुँच्या नांहि।
राम राम प्रानी कहे, जम की नगरी जांहि।। ११।।
गरीब, सुवटा पढ़ै सुभान गति, अंतर नहीं उचार।
कुंजि कुरल अंड पोष हैं, कोस सहंस हजार।। १२।।
गरीब, कुंजि कुरल हरि हेत जपि, अलल पंख गैनार।
हिरदा शुद्ध शरीर सर, कच्छप दृष्टि निहार।। १३।।
गरीब, ऐसी संगति जो मिलै, तो सांईं से भेट।
ऊपरली बरबाद है, जम मारेगा फेट।। १४।।
गरीब, कुंजी कच्छिव अलल कूँ, किन समझाया ज्ञान।
आड़ा पड़दा है नहीं, हिरदे अंतर ध्यान।। १५।।
गरीब, बिन खैले गऊ ब्यात है, धर्म झाड़ी पशु त्याग।
गोरख कूँ सुधि ना पड़ी, कच्छ देश सुनि राग।। १६।।
गरीब, ऐसी संगत जो मिलै, भक्ति गर्भ प्रहलाद।
नारद से सतगुरु मिलै, तो सूझे अगम अगाध।। १७।।

गरीब, सुखदेव गर्भ जुगेसरं, ध्रुव का ध्यान अमान।
लाख बरस के बह गये, पंच बरस परवान।। १८।।
गरीब, जैसे मीन समुंद्र में, दसौं दिशा कूँ जाय।
हृदय कँवल में पैठि करि, जो खोजै सो पाय।। १६।।
गरीब, ज्यूं कुंजर सिर धुनत है, अगला जनम सुझंत।
अब के हेले नर करै, तो सेऊँ पूरे संत।। २०।।
गरीब, राज द्वारै बंधि करि, रापति रोवै काय।
पग जंजीर न डालिये, तो कजली बन कूँ जाय।। २१।।
गरीब, शीश महावत बसत है, अंकुश मोड़ समोड़।
वचन फिरत है पलक में, ना सांईं की लोड़।। २२।।
गरीब, ऐसा हाफिज फील है, रापति गयंद ज्ञान।
राजद्वारे बंधिया, बिन सांईं के ध्यान।। २३।।
गरीब, चढ़ै फुहारा अर्श कूँ, कूँची खेल सुघट।
बिन बेले जल स्वर्ग कूँ, भगल विद्या है नट।। २४।।
गरीब, सुंनि समुंद्र जो मन रहै, तो नहीं भरमै प्रान।
अर्श कुर्स से भिन्न है, देखो अकल अमान।। २५।।
गरीब, सुंनि सरोवर शिखर सर, सूभर तालम ताल।
मन मुरजीवा छोडिये, ल्यावै हीरे लाल।। २६।।
गरीब, सुंनि सरोवर सैल करि, गगनि उडाना मन।
अगम भूमि भूलै नहीं, ल्यावै राम रतन।। २७।।
गरीब, सुंनि सरोवर सैल करि, भूलै खोज न पंथ।
फेर उलटि हटि है नहीं, रापति जेहा दंत।। २८।।
गरीब, सती पुकारै शल चढ़ी, मुख बोलत है राम।
कौतुक देखन सो गये, जिन के तो सहकाम।। २६।।
गरीब, सती जलै और शल जलै, कौतुक देखनहार।
धाम जहां का तहां है, मेले रूप संसार।। ३०।।
गरीब, सती बौहर उपजै नहीं, घर जाने की प्रीति।
सती कहत है राम राम, कौतुक गावैं गीत।। ३१।।
गरीब, जनम पुरवला सूझ हीं, जरि है बारंबार।
विषै वासना उर बसै, तन की कर है छार।। ३२।।
गरीब, सती न शंका जलन की, काम लुब्ध घट बीच।
सकल सखी झूलन चली, जैसे सावन तीज।। ३३।।
गरीब, जनम इक्कीस जो संग जरै, तो सुरगापुर वास।
मन इच्छा फल पाव हीं, पुरुष संगीत निवास।। ३४।।
गरीब, नारी पुरुष प्रेम से, पैठे स्वर्ग निवास।

नब्बै करोड़ दिव्य वर्ष लग, पुरवत मन की आश।। ३५।।
गरीब, करनी भरनी भुगति करि, पैठत हैं मृतलोक।
बिना भक्ति भावै नहीं, सब संगति में दोष।। ३६।।
गरीब, तपी तपै तन कूँ दहैं, पांचौं इन्द्री साधि।
नहीं इच्छा दीदार की, भूले आदि अनादि।। ३७।।
गरीब, लाख बज्र कूँ झेलि करि, सूरे झूझैं खेत।
वादी जोगी हट करैं, चिनघी बरषै रेत।। ३८।।
गरीब, वादी जोगी बंधि रह्या, मन इच्छा बड़राज।
अंत बेर यौं मारिये, ज्यूं तीतर परि बाज।। ३९।।
गरीब, तन तो बांबई हो गया, मन की गई न बानि।
स्वर्ग पहुँचि दोजख गया, सतगुरु लग्या न कानि।। ४०।।
गरीब, तन की ताली लाव हीं, मनसा जलै मसाल।
राज पाय नरकौं परे, बंधी पोट जुबाल।। ४१।।
गरीब, पांचौं इन्द्री मन छठा, फिरता डामांडोल।
सप्तपुरी का राज तजि, लगे तपसी झोल।। ४२।।
गरीब, तप से थीर न होत है, यौह मन रंग्या राज।
साहिब की नहीं बंदगी, साज्या झूठा साज।। ४३।।
गरीब, तप तारी तन में लगी, परगन्यौं की तकशीस।
साहिब की नहीं बंदगी, सतगुरु ना बख्शीश।। ४४।।
गरीब, मन इच्छा निसतूक है, राज करन मन लोभ।
बहु विधि घट में कामना, ज्यूं वृक्षा पर गोभ।। ४५।।
गरीब, संगति कुसंगति अंतरा, एकसा ही मत जान।
जो सोवत हैं सेज पर, धरिये अंत मसान।। ४६।।
गरीब, परख प्रेम न आवहीं, ना कहीं हाटि जुखंत।
सौदा जब ही होत है, जब भेटैं सतगुरु संत।। ४७।।
गरीब, जैसे माता गर्भ कूँ, राखै जतन बनाय।
ठेस लगै तो छीन होय, ऐसे भक्ति दुराय।। ४८।।
गरीब, दम सुमार आधार रख, पलकौं मध्य विमान।
संतों की संगत करो, समझि बूझि गुरुज्ञान।। ४९।।
गरीब, इला पिंगुला शोधि करि, चढ़ि गिरबर कैलाश।
दो दल की घाटी जहां, भगल विद्या है दास।। ५०।।
गरीब, ब्रह्मरंध्र के द्वार कूँ, खोल्हत है कोई एक।
द्वारे से फिर जात हैं, ऐसे बहुत अनेक।। ५१।।
गरीब, संख भगल छल होत है, नग है परलै पार।
संगति सतगुरु की करै, जदि पावै दीदार।। ५२।।

गरीब, संसारी से साखि क्या, धूमर बरषा देख।
बौवै बीज न खेत हित, तो क्या काटै मेख।। ५३।।
गरीब, नाम रते निर्गुण कला, मानुष नहीं मुरारि।
ज्यौं पारस लोहा लगै, कटि है कर्म लगारि।। ५४।।

अथ असाध का अंग

गरीब, पहली परचे बोल हीं, पीछे निकसे जाति।
संगति छाडि असाध की, जिन सूं कैसा साथ।। १।।
गरीब, पहली परचे की कहै, अंत बेर डूबंत।
संगति छाडि असाध की, सतगुरु के ढिग पंथ।। २।।
गरीब, पहली बीजक कह दिया, तो पीछै क्या दीन।
थाह नहीं उस देश की, कहा करैंगे लीन।। ३।।
गरीब, पहली बीजक देत है, फेरि बतावत भुमि।
सो तो जान असाध है, नहीं महल की गमि।। ४।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं हाथ।
पृथ्वी डोबन ऊतरे, कहि कहि मीठी बात।। ५।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं पास।
दुनियां क्या परमोधिहीं, आपे चलै निरास।। ६।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं संग।
शूरा शस्त्र बाहरी, कैसे जीतैं जंग।। ७।।
गरीब, बीजक बिकता देख करि, हर कोई लेवै मोल।
कमठा कर में है नहीं, तो लागै कहां गिलोल।। ८।।
गरीब, बात कहत हैं पारि की, आप खड़े हैं वारि।
ओछे जल का बुदबुदा, छिन में होत सिंघार।। ६।।
गरीब, बात कहत हैं अगम की, सूझै निगम न नाद।
बिन ही देखे बकत हैं, च्यारों वेद असाध।। १०।।
गरीब, बात कहत हैं बित्त बिना, खाली करैं खरीद।
पैसे गांठी में नहीं, मूरख काहे गीध।। ११।।
गरीब, मोल करत हैं लाल का, अपनी गांठि न दाम।
सो तो जान असाध हैं, ऊजड़ भले न गाम।। १२।।
गरीब, लालौं की कीमत करैं, पैसा परखि न जांनि।
सो तो जांनि असाध हैं, आपा राख्या मानि।। १३।।
गरीब, औरों पंथ बताव हीं, आप न जानैं राह।
कागौं के मुख नालियर, सारा चूंच न मांहि।। १४।।
गरीब, क्या हंसा मोती चुगै, क्या लंघना सब साथ।

कंकर चूंच न चुगत है, मोती भक्षण गात।। १५।।
गरीब, सतवादी सांची कहैं, तंत मंत नहीं देह।
झूठा जुलमी बौह बकैं, जहां तहां है मेह।। १६।।
गरीब, झूठा जुलमी पड़त है, जम किंकर की झूल।
अंतर काती कलह रस, बोवै शूल बबूल।। १७।।
गरीब, थल पर मीन न संचरे, मुरगाई मरि जाय।
मुरजीवा थल पैठि करि, क्या खट्टै क्या खाय।। १८।।
गरीब, याह तो चाल असाध की, थल कूँ कहैं समंद।
बारू में विश्वास है, शब्द न चीन्है अंध।। १९।।
गरीब, बिन बर्तन एक वस्तु है, संग्रह संचन नांहि।
जाकी कीमत परखि है, सो व्यापक सब मांहि।। २०।।
गरीब, घरि आंगन नदियां बहैं, भटकैं देश विदेश।
सो तो जांनि असाध हैं, जिन कैसा उपदेश।। २१।।
गरीब, आंगन बेली गहबरी, फूल सघन गुलजार।
पत्तर तोरैं वृक्ष के, पाहन आगै डार।। २२।।
गरीब, सो तो जान असाध गति, बकैं बिरानी बोय।
पारोसी के चांदना, अपने घर क्या होय।। २३।।
गरीब, जैसें रत्न समुंद्र में, ऐसे तन में राम।
रण झूझैं सो मौंन हैं, कायर बकैं बेकाम।। २४।।
गरीब, दीपक लहर पतंग परि, जाय समूला मांहि।
ऐसे गति असाध की, कबहूँ समझैं नांहि।। २५।।

अथ साध का अंग

गरीब, साध साध सब एक हैं, कस्तूरी का अंग।
केसर कारण परखिये, चढ़त न दूजा रंग।। १।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, इनमें कुछ ना भांति।
निरबैरी निर्भय सदा, एक जाति एक पांति।। २।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, सिंधु समुंद्र थीर।
काई कर्म सिवाल सब, काढि दिये गुरु पीर।। ३।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, शब्द सिलहरा साज।
सदा अनाहद पुरि रहैं, सतगुरु दीन्हा राज।। ४।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, दूजा शब्द दलाल।
सौदा करें संभाल करि, भय मानैं जम काल।। ५।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, गगन गलीचै गेह।
अमर करैं भवजल तिरैं, मेटैं भ्रम संदेह।। ६।।

गरीब, साध साध सब एक हैं, सिंधु समंद के मीन।
दिल अन्दर दीदार है, ध्यान धरैं दुरबीन।। ७।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, सुंन पर्वत के मोर।
गरज सुनैं सुनि कुहक हीं, सुन अनहद घनघोर।। ८।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, मानसरोवर हंस।
मोती चुग मुक्ता भये, एक जाति कुल बंश।। ६।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, ज्यौं कोयल वन बाग।
वाणी बोलैं ब्रह्म की, शब्द कहैं अनराग।। १०।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, ज्यों कोयल बैंन विलास।
रिद्धि सिद्धि पांचौं ना रतै, परम सनेही दास।। ११।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, रूति रहे रणधीर।
पाखरिया सब ही भिड़ैं, मांझी मुकट कबीर।। १२।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, रूति रहे रणखेत।
मिश्री भलकै प्रेम की, सिर देने कूँ हेत।। १३।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, शूर खेत में संत।
लोझा पीठ न फेर हीं, सिर सतगुरु भगवंत।। १४।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, सब लोझों का साथ।
सतगुरु सावंत मुकट हैं, भक्ति मुक्ति की दात।। १५।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, खूब मंड्या रण जंग।
गोले छूटैं ज्ञान के, प्रेम कटारी अंग।। १६।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, खूब मंडे मैदान।
प्याला पीवै प्रेम का, साक्षी हैं शशि भान।। १७।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, कूटे कटक अनंत।
सप्तपुरी पर तेग है, सत अदली का पंथ।। १८।।
गरीब, पंथ पुरातम ले गया, औघट घाटि उतार।
सतगुरु एक कबीर हैं, दूजा नहीं अधार।। १६।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, सब सतगुरु के तीर।
शूर सुभट झूझैं सबै, मांझी कहौं कबीर।। २०।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, मंडे गगन मैदान।
अगम भूमि कूँ गमन करि, फरकै ध्वजा निशान।। २१।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, पाखरिया परवीन।
निश्चय पीठ न फेर हीं, सतगुरु के आकीन।। २२।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, मरदानें महबूब।
प्याले फिरैं प्रेम के, सुभट सूरमां खूब।। २३।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, अमल अनाहद खांहि।

जिन घर कैसी कुशल है, नित भिड़ने कूँ जांहि।। २४।।
गरीब, साध साध सब एक हैं, बँधी ज्ञान की तेग।
जिन कूँ ढील न चाहिये, भेड़ लगावैं बेग।। २५।।
गरीब, भिड़ जानौं सोई चलो, उस सतगुरु के खेत।
एक दिना सिर पड़ैगा, अंग मिलैगा रेत।। २६।।
गरीब, शीश पर्या तो क्या हुआ, रह्या मोरचे पांव।
जिन के दिल सादी सदा, वै क्यों चूकैं दाव।। २७।।
गरीब, मोह मवासा तोड़िया, ममता ऊपर मूठ।
जिन कूँ दुर्जन मारना, सो नहीं लूटैं लूट।। २८।।
गरीब, छोह छिकारे ज्यूं चल्या, हित हेड़ी हुआ गैल।
मारैगा छोडै नहीं, अगम शब्द की सैल।। २९।।
गरीब, लोभ लिया मैदान में, काम कटक कूँ काटि।
हम घर बटैं बधाईयां, पकरि लिये जब आठ।। ३०।।
गरीब, फौज कटी जब क्या रह्या, मारे चार अमीर।
पादशाह की पति नहीं, कटि गये खान वजीर।। ३१।।
गरीब, खाखी मन बादशाह है, सब ठगुवन का राव।
इस कूँ चौकस पकरियो, सिलेम किले में ल्याव।। ३२।।
गरीब, गढ़ तोड्या गुरु भेद से, चढ़ि गया महल विवेक।
शील सुरति चौकी रहै, और योद्धा बहुत अनेक।। ३३।।
गरीब, संतोष समाना सार है, ज्ञान गली के बीच।
खाखी मन छूटै नहीं, निकल जाय नहीं नीच।। ३४।।
गरीब, गगन दमामा बाजहीं, निर्गुण नौबत नाद।
सांसे का घर फूकियां, बटै अखै प्रसाद।। ३५।।
गरीब, सूर खेत सतगुरु खड़ा, मांझी मर्द अलेख।
जेते झूझे सब कहूँ, रही भक्त की टेक।। ३६।।
गरीब, पांच पचीसौं पकड़िया, ममता दुर्मति दोय।
तीनौं ऊपर तान है, वै छन्द समझै कोय।। ३७।।
गरीब, वै छन्द शंकर समझिया, पार्वती लिया पेख।
ब्रह्मादिक करैं बीनती, सनक सनन्दन देख।। ३८।।
गरीब, नारद मुनि से निरख ही, भगल बिलावल बीन।
चौबीसौं चितवत रहै, सहंस अठासी लीन।। ३९।।
गरीब, तेतीसौं मुनिवर खड़े, कर जोड़ै कुरबान।
सिद्ध चौरासी बंदगी, नौ नाथौं प्रवान।। ४०।।
गरीब, विष्णु विसंभर नाथ से, ध्यान धरत हैं ताहि।
खोज करै करतार का, वार पार नहीं थाहि।। ४१।।

गरीब, संतो की फुलमाल हैं, वरनौं वित अनुमान।
मैं सबहन का दास हूँ, करो बंदगी दान।। ४२।।
गरीब, सतवादी सब संत हैं, अपने अपने धाम।
आजिज की अरदास है, सब संतन प्रणाम।। ४३।।
गरीब, अरब अलिल असंख हैं, साधू सिन्धु समांहि।
मैं जानौं जेते कहूँ, सतगुरु पकरी बांहि।। ४४।।
गरीब, साधौं के लक्षण कहूँ, परमहंस प्रकाश।
ऐसे साधू जगत में, ज्यौं कमला मध्य बास।। ४५।।
गरीब, शीलवंत साचै मतै, बोलै मधुरे बैंन।
नजर निमानी नेक है, चढ़े रहे सुंन गैंन।। ४६।।
गरीब, मुक्ति मौहल्ला पीठ हैं, ज्ञान गलीचे गोप।
सिन्धु सरोवर न्हात है, परमात्म पद पोख।। ४७।।
गरीब, दया दुलीचे बैठना, बुद्धि की हाथ कमान।
ग्यासी घालै प्रेम की, जे कोई ओटै प्राण।। ४८।।
गरीब, बैठे अनहद तख्त पर, सुखमन ध्यान समोय।
सतगुरु साहिब एक है, कहन सुनन कूँ दोय।। ४६।।
गरीब, चित्त चात्रक ज्यूं रटत हैं, धरि हैं ध्यान चकोर।
ये लक्षण है साधु के, उठे ज्ञान के लोर।। ५०।।
गरीब, निष्कामी निर्बैरता, निःईच्छा निःगंध।
निर्बासी लक्षण कहूँ, साधू शब्द समंद।। ५१।।
गरीब, उलटि रहै संसार से, तर्क दुनी से दौन।
बनजारे की विनती, बैल चलै अक गौन।। ५२।।
गरीब, बैल गूनि इतही रहो, करो लदीना काहि।
सौदागर का साथ है, हमकूँ लेहि निबाहि।। ५३।।
गरीब, सौदागर सतगुरु कह्या, बैल गूनि बपदेश।
मन बनजारा बनज में, सतगुरु सुनो संदेश।। ५४।।
गरीब, बालदि लदी लदिनियां, हे हरि हे हरि होय।
जाका सौदा सार है, गुजर लगैं नहीं कोय।। ५५।।
गरीब, गुजर लगै तो क्या रहै, याह जग बहुत जगात।
पूंजी ही में हानि होय, तो क्या ले चालै साथ।। ५६।।
गरीब, हुंडी साहूकार की, दीन्ही हमरे हाथ।
हम कूँ मुसकल हो रहीं, तुम कूँ केतीक बात।। ५७।।
गरीब, हुंडी हाट पौंहचाईये, साहूकारा सार।
मध्य मिलावा तुंही है, तूंही वार तूंही पार।। ५८।।
गरीब, मैं बनजारा आदि का, सौदा करौं सुभान।

कस्तूरी बालदि भरी, पूरे होहि क हानि।। ५६।।
गरीब, दूने तिगने चौगुने, पूरे करैं अनेक।
हानि हुये भी मिलैंगे, जिन के दिल है एक।। ६०।।
गरीब, टोटा नफा संगीत है, सौदा करो निःशंक।
सिर पर साहूकार है, सत अविगत भगवंत।। ६१।।
गरीब, टोटा टार्‍या ना टरै, नफा निरंजन जानि।
कांटै ओस न ठाहरें, जब ऊगत है भांन।। ६२।।
गरीब, संत सलाई घालि हैं, मेटे पीड़ पराध।
जिन के चरण जुहारिये, परम सनेही साध।। ६३।।
गरीब, थोड़ा बोलै थिर रहै, कहै अगम की बात।
अनहदपुर में आरती, करते हैं दिन रात।। ६४।।
गरीब, संत सिलहरा बांध है, दृढ़ की ढाल बनाय।
तत की तेग तितारचा, चालै ऊजड़ राहि।। ६५।।
गरीब, संत शूर उजड़ चलैं, सिंह जिन्हौं की जाति।
पीछा फिर नहीं देखही, कोटि कहो कोई बात।। ६६।।
गरीब, साधू सरबस देत हैं, गोरख ग्यारह बेर।
सेऊ कूँ तो सिर दिया, देह पजावै गेर।। ६७।।
गरीब, बाजीद फरीदा संग थे, संत पाहुने जांहि।
उहां सतगुरु अचरज किया, शीश ताक धड़ नांहि।। ६८।।
गरीब, साधू सुंन में रहत हैं, ज्यूं अललपंख गैनार।
पड़ते पड़ते संभलें, उड़ि है सुरति अधार।। ६९।।
गरीब, साधू सुंन में रहत हैं, अलल पंख के लोक।
अंड पड़ै भौंरा उड़ै, जिन कूँ कैसा दोष।। ७०।।
गरीब, साधू सुंन में रहत हैं, अलल पंख की जाति।
इहां देखन कूँ देह है, वहां रहे शब्द सो राति।। ७१।।
गरीब, साधू शालिगराम हैं, पूजो परख पिछान।
आनन्द स्यों कर आरती, मत बाँधै पाषाण।। ७२।।
गरीब, साधू मिलैं सतगुरु मिलैं, कहैं अगम की बात।
साधौं ही के भेद से, पाये अविगत नाथ।। ७३।।
गरीब, साधू मिलैं सतगुरु मिलै, धोखा दिय उठाय।
गुझ बीरज मंत्र कह्या, आवा गवन मिटाय।। ७४।।
गरीब, साधू सरिता नीर हैं, काटै मैल मलीन।
डिंभ डरै आजिज रहै, निर्गुण जाति कुलीन।। ७५।।
गरीब, साधू साजन आदि के, सगे हमारे सोय।
साधू ढूंढन नीकलूँ, जे कोई साधू होय।। ७६।।

गरीब, साच बाच और काछ कूँ, जे कोई ल्यावै साधि।
जिन कूँ मैं सिर पर धरूं, सो अदलि अनाहद साध।। ७७।।
गरीब, परमहंस प्रवान हैं, साहिब कहूँ क संत।
इन में भेद रत्ती नहीं, कछु न कहिये अंत।। ७८।।
गरीब, साधू हमारे सब बड़े, अपनी अपनी ठौर।
जो निज महल लखावहीं, वै साधू कोई और।। ७६।।
गरीब, साधु हमारे सब बड़े, किसी न दीजै दोष।
ड्यौढ़ी अंदर ले गये, वै साधू सिर पोश।। ८०।।
गरीब, साधू हमारे सब बड़े, सब ही करैं बखान।
तीन लोक साका हुआ, मगहर मुवा जो जान।। ८१।।
गरीब, साधू हमारे सब बड़े, मगहर झगड़ा जीति।
चार दाग से रहित है, जाहूँ से प्रतीत।। ८२।।
गरीब, शाह सिकंदर कोपिया, जड़िया तौंक जंजीर।
गंगा मध्य गलतान है, डारे गहरे नीर।। ८३।।
गरीब, तौंक झड़े धरणी पड़े, अविनाशी के हेत।
राखनहारा राम है, जिस कूँ गावैं नेत।। ८४।।
गरीब, जगन्नाथ पंडा जल्या, अटका फूट्या आन।
पैर बुझाया पीड़ से, जिस कूँ सतगुरु जान।। ८५।।
गरीब, सो सतगुरु हम कूँ मिल्या, शब्द निरालंभ नूर।
ज्ञान उजागर गैब का, झिलमिल शब्द जहूर।। ८६।।
गरीब, अनरागी निश्चल सदा, सुन्दर मूरति श्याम।
रत्न उजागर ख्याल है, पूर्ण रमता राम।। ८७।।
गरीब, दूजा ओप न आप की, जेते सुरनर साध।
मुनियर सिद्ध सब देखिया, सतगुरु अगम अगाध।। ८८।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, चाल बिहंगम बीन।
सनकादिक पलडैं नहीं, शंकर ब्रह्मा तीन।। ८६।।
गरीब, तीनूं ऊपर तेज है, झलकें पुंज अनंत।
लोयन लख सूरज खिमें, दामनि दरवै दंत।। ६०।।
गरीब, सुंन कपाली झिलमिलै, भृकुटी गूंजै भौंर।
छत्र सिंहासन श्वेत है, ढुरैं सुहंगम चौंर।। ६१।।
गरीब, चित्त चंपा दर्पण सही, मुक्ति मुतंगा मूल।
सेली सरस सुभान है, सिर ताखी मुख मूल।। ६२।।
गरीब, वानी वचन रसाल रस, परमहंस हरि हेत।
लाल लिलाटं परखि ले, उज्जल हिरंबर सेत।। ६३।।
गरीब, जिस कूँ सतगुरु जानियों, ये लक्षण तहां देख।

दिल दर्पण दुरबीन है, मानो आप अलेख।। ९४।।
गरीब, अष्ट सिद्धि स्तुति करैं, नौ निद्धि पूरै नाद।
चौबीसौं चंपी करैं, सतगुरु अदली आद।। ९५।।
गरीब, तन गुल वास निवास है, मलागीर मकरंद।
पारस पद प्रवान है, सतगुरु शब्द समंद।। ९६।।
गरीब, सुरति निरति की सैल है, मन के गवन विलास।
जिंदा जाति अजाति है, ना दम देही श्वास।। ९७।।
गरीब, भौंह बिलावल खिल रहीं, पलक पट्टन की पीठ।
नौछावरि का सेहरा, अनभै ज्ञान अंगीठ।। ९८।।
गरीब, नासा अग्री निधि सबै, अकथ कथा कुरबान।
पांच तत्त तकिया बना, तीन करैं प्रणाम।। ९९।।
गरीब, अगम अनाहद गम नहीं, गायत्री गलतान।
सो हम कूँ सतगुरु कही, दिया अभय पद दान।। १००।।
गरीब, चित्त चीपी चौरंग है, क्षमा छालना छोत।
घोटा ज्ञान गुलाल है, प्यावत है मध घोट।। १०१।।
गरीब, अदली इस्म कबीर है, बिरद है बंदीछोड।
सतगुरु के सेवक सबै, पेसि न आवै होड।। १०२।।
गरीब, उलटी चाल अचिंत हैं, करें धरणि मध्य सैल।
अनंत साधु श्रघाल हीं, कोई न पौंहचे गैल।। १०३।।
गरीब, दिल दाना दरवेश है, सर्वंगी सब ठौर।
गुझ बीरज हम कूँ दिया, श्रबर ओप न और।। १०४।।
गरीब, पट्टन नगरी धाम है, गुमज मढी नहीं बाँध।
ज्ञान कमाना खैंच ही, मारत हैं शर साँध।। १०५।।
गरीब, बुद्धि बख्तर सत सिलहरा, गम ही हाथ गिलोल।
मारत हैं चित्त चौक में, पड़दा गेरै खोल।। १०६।।
गरीब, नजर चढैं सो ना बचै, नजरी नजर निहाल।
बेगमपुर में वास है, मेटत हैं जम साल।। १०७।।
गरीब, ले जांही आनंद घर, अगर दीप सत लोक।
औरन सबै उधार हैं, सतगुरु सौदा रोक।। १०८।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहे, सर्व कला सब जीत।
अमर अनाहद आदि है, सतगुरु शब्द अतीत।। १०९।।
गरीब, मिला मिलारी हो रही, यह मेला सब झूठ।
बाजीदा के शर लग्या, सतगुरु पाया ऊंट।। ११०।।
गरीब, तन घट धरि कर ऊतरे, काशी नगर मंझार।
दहूँ दीन झगरा मंड्या, षट् दल परी पुकार।। १११।।

गरीब, मारौ मारौ सब कहैं, शाह सिकंदर साथ।
बहुरि नहीं फिर आव हीं, देखी आत्मघात।। ११२।।
गरीब, संख कला साबित रह्या, परचे पूर्ण पीर।
अगम अनाहद खेल है, बंदी छोड कबीर।। ११३।।
गरीब, लक्षण सतगुरु के कहे, बंदीछोड का भेव।
जत जहाजं बैठिये, पार करैं सब खेव।। ११४।।
गरीब, बांदी जांम गुलाम है, खाने जाद खरीद।
आनंद पुर में ले गये, मिले दीद बरदीद।। ११५।।
गरीब, अरज अवाज अनाथ की, आजिज की अरदास।
आवन जावन मेटिया, दीन्हा निश्चल वास।। ११६।।
गरीब, कहां कहौं कछु अकह है, ना कछु कहने जोग।
राम रसायन रिद्धि सबै, भक्ति बिलावल भोग।। ११७।।
गरीब, मन इच्छा फल देत हैं, मन इच्छा बच नाम।
फल कारण जाचूँ नहीं, सर्व लोक सब ठाम।। ११८।।
गरीब, भक्ति बंदगी दीजिये, जुगन जुगन जगदीश।
उर में लखूं अलेख कूँ, अधर मुकट धरि शीश।। ११९।।
गरीब, मैं तनहां तकि आईया, तूं दाता अबदाल।
उर धारौं सोई फुरै, नाम बंदगी माल।। १२०।।
गरीब, लोक अलोक चाहूँ नहीं, इच्छा नहीं अचूक।
अदली आदि कबीर के, चरण कँवल की भूख।। १२१।।
गरीब, अविगत कूँ अदली कहो, अदली अविगत एक।
भक्ति हेत हितकार करि, चौले धरे अनेक।। १२२।।
बिरहा बिंबल ऊतर्‌या, ले गया कंठ लगाव।
दास गरीब असलां हुये, सतगुरु दीन्हा दाव।। १२३।।

अथ साधु महिमा का अंग

गरीब, धन्य जननी धन्य भूमि धन्य, धन्य नगरी धन्य देश।
धन्य करनी धन्य कुल धन्य, जहां साधू प्रवेश।। १।।
गरीब, जा उदर साधू बसै, सो उदर है पाक।
सनकादिक से उपज हीं, शुकदे बोले साखि।। २।।
गरीब, गंदा अंडा गरद मिल, पर्‌या वृक्ष की खोड।
शंकर तत्त सुनाईयां, पार्वती गई पौढि।। ३।।
गरीब, धन्य शंकर धन्य गौरिजां, धन्य शुकदे धन्य व्यास।
धन्य जननी शुकदेव की, द्वादश वर्ष विलास।। ४।।
गरीब, जहां साधू जन ऊतरे, तहां भक्ति का भेव।

गोरख उपजे ज्ञान से, भभूति दई महादेव।। ५।।
गरीब, सुईया अनसुईया मिले, तीनौं देवा ध्यान।
शब्द सरूपी ऊतरे, दत्तात्रे प्रवान।। ६।।
गरीब, संत सुरसरी चलत है, मारू देश बहंत।
बागड़ मंझि विलास होहि, नदी सुरसरी संत।। ७।।
गरीब, साध नदी दो अगम नग, इन समतुल नहीं और।
साध भक्ति के खंभ है, नदियां बिरछां मौर।। ८।।
गरीब, सांईं सरीखे संत हैं, यामें मीन न मेष।
पड़दा अंग अनादि है, बाहर भीतर एक।। ९।।
गरीब, सांईं सरीखे देख ले, पिरतावै जे कोय।
सप्त कोस जल चढ़ि गया, जहां साधू मुख धोय।। १०।।
गरीब, सकल मेदनी मर गई, शब्द न पूठा फेर।
सप्त कोस क्या बात है, डूबे मेर सुमेर।। ११।।
गरीब, ऐसे साधू संत जन, पारब्रह्म की जात।
सदा रत्ते हरि नाम स्यौं, अन्तर नाहीं घात।। १२।।
गरीब, साध अगाध अपार जन, परमानंद स्यौं प्रीति।
कहवत के तो संत है, अविगत अलख अतीत।। १३।।
गरीब, साध सगे हैं जगत में, संत सगाई साच।
साधू ढूंढन नीकलूं, वौह विधि काछूं काछ।। १४।।
गरीब, साध समुंद्र गगनि गति, शून्य समाने सोय।
परमानंद के परमहंस, एक कहूँ अक दोय।। १५।।
गरीब, साध समुंद्र लाल नघ, संत हीरौं की खानि।
सतगुरु वेदी बांच ही, सुनते ही परवानि।। १६।।
गरीब, महिमा कीजे संत की, तन मन धन सब देह।
सिर मांगै टाला नहीं, मोरध्वज लखि लेह।। १७।।
गरीब, संत सलहली सेज के, जिन में कैसी भिन्न।
साहिब सांईं ऊतरे, नाम धराया जन्न।। १८।।
गरीब, संत सलहली सेज के, जिन में कैसी भिन्न।
साहिब प्रगट संत हैं, जिन का एकै मन।। १९।।
गरीब, मोड़ अमोड़ं मगन है, हद बेहद में सैल।
साहिब साधू पाक है, उपजी बाजी मैल।। २०।।
गरीब, मैल मुल्क सब घोर है, बिन सांईं के नांय।
दुनियां अलग वियोग है, साधू साहिब मांहि।। २१।।
गरीब, माल मुल्क सब मैल है, पाक परम गुरु संत।
जिन से साहिब निकट है, तिन में कैसा अंत।। २२।।

गरीब, जिन में नाहीं अंतरा, अरस परस प्रवानि।
साहिब साधु एक है, दुनियां दूजी जानि।। २३।।
गरीब, संत समाना संत में, दुनियां है सो न्यार।
जिन में दूजी भिन्न क्या, राते सिरजन हार।। २४।।
गरीब, साध समुंद्र कमल गति, मांहे साईं गंध।
जिन में दूजी भिन्न क्या, सो साधू निर्बंध।। २५।।
गरीब, कमल न डूबै जल चढ़ै, मांहे मधुकर वास।
जैसे चंद्र कमोदनी, यौं सांईं जन दास।। २३।।
गरीब, नौ नेजे जो जल चढ़ै, कमल न भीजै गात।
मांहे ज्ञान सुगंधि सर, आदि अंत का साथ।। २७।।
गरीब, नौ नेजे जो जल चढैं, बूंद न लागे पांन।
ऐसे साधू अगम गति, संसारी प्रवान।। २८।।
गरीब, कमल पत्र की वासना, जाका कौन सरूप।
महके गंधि अपार गति, सूंघत बड़े बड़े भूप।। २६।।
गरीब, भूप संत साधू कहै, जुगन जुगन के राव।
सप्तपुरी नहीं वासना, जिन के भक्ति पसाव।। ३०।।
गरीब, मन मधुकर काया केवड़ा, महकत गंध अजोख।
हूँठ हाथ गढ़ अगम है, रचि राखे सब लोक।। ३१।।
गरीब, स्वर्ग सलेमाबाद है, त्रिवैणी के घाट।
आगे अगम अगाध गति, सरवर न्हांही आठ।। ३२।।
गरीब, संत सरोवर हंस हैं, भक्षण करैं विचार।
पौहप वासना ज्यौं रहै, राई रिंच न भार।। ३३।।
गरीब, खूंदेहि खैले दरिड़ देह, पाड़ै बेल समूल।
ऐसे भेष विटंब गति, बौहरि न ऊगै मूल।। ३४।।
गरीब, साध कमल मध्य वासना, ऐसा हलका अंग।
मैल मनोरथ ना रहै, निर्मल धारा गंग।। ३५।।
गरीब, साध संगति हरि भक्ति बिन, कोई न पावै पार।
निर्मल आदि अनादि है, गंदा सब संसार।। ३६।।
गरीब, साध साध सब को कहै, साध सुमति से जान।
कुमति कमावै जीव है, जैसे जल पाषाण।। ३७।।
गरीब, ज्यौं जल में पाषाण है, भीजत नाहीं अंग।
चखमख लागे अग्नि है, कहां करै सत्संग।। ३८।।
गरीब, गिरवर जोड़ बड़ेर हैं, माया के धनवंत।
रावण के ज्यौं लूटिये, जहां पाहुनड़े नहीं संत।। ३६।।
गरीब, जहां पाहुनड़े साधु जन, हरिचंद जेहा संत।

सो नगरी सूबस बसै, सतगुरु जिन्हौं अर्थ।। ४०।।
गरीब, जहां महिमा है संत की, चरण कमल से हेत।
जुगन जुगन उर में रखूं, ध्रू प्रहलाद संकेत।। ४१।।
गरीब, साधु सुरति के गैन में, बसें हजूर अमान।
जा घर निंद्या साध की, सो घर डूबे जान।। ४२।।
गरीब, लाख छल छिद्र मैं करूँ, अपने संतौं काज।
हिरणाकुश ज्यौं मारि हूँ, नरसिंह धरि हूँ साज।। ४३।।
गरीब, स्वर्ग पतालौं सकल में, है अनरागी राम।
नरसिंह होकर औतरे, प्रहलाद भक्त के काम।। ४४।।
गरीब, जहां जन की महिमा सुनौं, तहां मैं गवन करंत।
वे तो नगर अमान हैं, जहां मेरे प्यारे संत।। ४५।।
गरीब, साध साध सब को कहै, साध समुंद्रो तीर।
अविगत की गति को लखै, मिल गये नीर कबीर।। ४६।।
गरीब, नीर कबीर निरंजनं, अंजन धरै सो देह।
अंजन मंजन मांजिये, जब होवै परवेह।। ४७।।
गरीब, साध कहावन कठिन है, मग पर धरै न पांव।
सौंहगी संगति है नहीं, चढ़ो नाम की नांव।। ४८।।
गरीब, साध कहाया जगत में, परचे पड़े न प्राण।
जग शोभा जब होयगी, मिले अलख निरबान।। ४६।।
गरीब, शब्द मिलावा अंग रस, परसन है दीदार।
रूंम रूंम तारी लगी, झिल मिल किरण अपार।। ५०।।
गरीब, वरषैं किरण अवर्ण गति, रिम झिम रिम झिम रंग।
जो देखैं सोई कहै, अरस परस प्रसंग।। ५१।।
गरीब, संत सकल के मुकट हैं, सांईं साध समान।
बड़भागी वे हंस है, जहां संतौं नाल पिछान।। ५२।।

अथ साधु साक्षी भूत का अंग

गरीब, निर्मल अंग निराश मन, दूरहि से दीखंत।
साक्षी भूत पिछान ले, परखि नवेला कंत।। १।।
गरीब, उनमन अरसी पाख दिल, संग्रह संचन नांहि।
सो तो साक्षीभूत हैं, मानसरोवर न्हांहि।। २।।
गरीब, मगन रहैं मग चलत हैं, सोहं सुरति संदेश।
सो तो साक्षीभूत हैं, गलताना रहैं हमेश।। ३।।
गरीब, कुंदन जेहा ताव दे, मुचे नहीं मुचकाहि।
सो तो साक्षीभूत हैं, अनगिन ताव सहांहि।। ४।।

गरीब, खानी बानी ना बंधै, दीर्घ मंदिर नाद।
सो तो साक्षीभूत हैं, जहां बिलंबै साध।। ५।।
गरीब, पिंडल तन प्रवाह है, नजर निरंतर नैंन।
सो तो साक्षीभूत हैं, वसते तुरिया गैंन।। ६।।
गरीब, तुरिया ताना पूर हीं, पुरिया परम ज्ञान।
सो तो साक्षीभूत हैं गगन मंडल बंधान।। ७।।
गरीब, संकट सुरग न बसत है, पद सिंहासन सेव।
सो तो साक्षीभूत है, परसि रहै दिल देव।। ८।।
गरीब, सिकल विकल व्यापै नहीं, हौनी होय सो होय।
सो तो साक्षीभूत हैं, अजपा मोती पोय।। ९।।
गरीब, बग बिल्ली और श्वान खर, कऊवा बाजं चील।
ये संसारी शोख नर, चिसम्यौं फिरिया लील।। १०।।
गरीब, मूर्ति कूँ मूर्ति भखै, दया न व्यापै अंग।
हिरणाकुश पलटै नहीं, प्रहलादं सत्संग।। ११।।
गरीब, साक्षीभूत प्रहलाद है, नारद मुनि उपदेश।
सो तो नाम उर धरत है, जो महिमा गावै शेष।। १२।।
गरीब, अकल अलौने दीखते, सर्व अकल के मूल।
सो तो साक्षीभूत हैं, झूलैं अनहद झूल।। १३।।
गरीब, प्राण पुरुष के बाग में, अंगूरी बनराय।
सो तो साक्षीभूत हैं, औघट घाट सिचांहि।। १४।।
गरीब, सामग्री सोहं धुन, होम करत हजूर।
सो तो साक्षीभूत हैं, होमे घृत कपूर।। १५।।
गरीब, ब्रह्म अग्नि झल उठत हैं, तन में ताली तेज।
सुर तैसीसौं संग हैं, धूप दीप उमेज।। १६।।
गरीब, वर्षा अनहद ज्ञान की, अरस घटा गरजंत।
सो तो साक्षीभूत हैं, पारब्रह्म के संत।। १७।।
गरीब, छोटा बड़ा सब एक है, पद पारस का फेर।
लघु दीर्घ क्या देखिये, कंचन जाति सुमेर।। १८।।
गरीब, सकल संकोचन परख पद, अंगन रूतहि राज।
हरदम साहिब बंदगी, सतगुरु साज्या साज।। १९।।
गरीब, सुरति समानी नाम में, ज्यूं पानी में नौंन।
अरस परस एकै भये, जाति बतावै कौन।। २०।।
गरीब, उजल अपार अगाध गति, निर्गुण जड़ी अलेख।
निर्मल सार सुजीवनं, गगन मंडल चढ़ि देख।। २१।।
गरीब, श्रबेला दीखै नहीं, कित से बरषै नीर।

बादल घटा न दामिनी, बरषैं मोती हीर।। २२।।
गरीब, हीरे बरषैं अरस में, पलक पिटारे घाल।
लाल उलंके संत जन, सतगुरु अविगत माल।। २३।।
गरीब, मोती बादल बरषहीं, पलक पिटारे झांप।
गगन उमगि नघ बरस हीं, जाके तोल न मांप।। २४।।
गरीब, नगदी माल न संचही, खलक उधार उधार।
नौ लख बौडी आईया, सतगुरू के दरबार।। २५।।
गरीब, केसो बनजारा भया, बालद भरी विचार।
मन इच्छा पूर्ण करी, अविगत पुरुष अपार।। २६।।
गरीब, अर्थ धर्म काम मोक्षना, पूर्ण करैं शिताब।
मनसा के दाता सही, देवैं नहीं जबाब।। २७।।
गरीब, जैसी देखैं चाकरी, तां जुगताई देव।
मन इच्छा पूरें सबै, जानै कोई न भेव।। २८।।
गरीब, सर्वंगी समर्थ गति, ब्रिदबाना प्रतिपाल।
गज ग्राह करुणामई, तोरन जम के जाल।। २९।।
गरीब, सुघड़ सुघट समझना, मारग मालिक मांहि।
सो तो साक्षीभूत है, बहुरूयौं उलटै नांहि।। ३०।।

अथ विचार का अंग

गरीब, ज्ञान विचार न ऊपजै, क्या मुख बोलैं राम।
संख बजावैं बांबई, रत्ते न निर्गुण नाम।। १।।
गरीब, ज्ञान विचार विवेक बिन, क्यों दम तोरै श्वास।
कहा होत हरि नाम से, जे दिल ना विश्वास।। २।।
गरीब, ज्ञान विचार विवेक बिन, क्यों भौंकत हैं श्वान।
दश जोजन जल में रहै, भीजत ना पाषान।। ३।।
गरीब, ज्ञान विचार विवेक बिन, क्यों रींकत खर गीध।
कहा होत हरि नाम से, जो मन नाहीं सीध।। ४।।
गरीब, समझि विचारे बोलना, समझि विचारे चाल।
समझि विचारे जागना, समझि बिचारे ख्याल।। ५।।
गरीब, करैं विचार समझि करि, खोज बूझ का खेल।
बिना मथे निकसे नहीं, है तिल अंदर तेल।। ६।।
गरीब, जैसे तिल में तेल है, यौं काया मध्य राम।
कोल्हू में डारे बिना, तत्त नहीं सहकाम।। ७।।
गरीब, विचार नाम है समझ का, समझ न परी परख।
अकलमंद एकै घना, बिना अकल क्या लख।। ८।।

गरीब, पारख करै सो पीर हैं, बोलै समझ विचार।
नर सरूप नरहरि धर्‌या, अर्श कला करतार।। ९।।
गरीब, बिना विचारे क्या लहै, कस्तूरी भटकंत।
बिन बूझे नहीं पाईये, गाम डगर मग पंथ।। १०।।
गरीब, ज्ञान सफा के चौक में, जहां विचार विवेक।
कुटलाई जी बहुत हैं, निर्मल अंगा एक।। ११।।
गरीब, बिना विचारे भ्रम है, सुरपति सरीखा होय।
गौतम ऋषि गुरुवा बड़े, जाकी पत्नी जोय।। १२।।
गरीब, बिना बिचारे विचरता, बैरागी शुकदेव।
सप्तपुरी में गवन करि, ढूंढे जनक विदेह।। १३।।
गरीब, गोरख नाथ सुनाथ है, जंत्र मंत्र जोग।
सतगुरु मिले कबीर से, काटे दीर्घ रोग।। १४।।
गरीब, गंध्रप सैंन गदहा भया, पुत्रहि पिता श्राप।
बिना विचारे बैठना, सुने उर्वशी लाप।। १५।।
गरीब, दुर्वासा कूँ तप किया, चौरासी सहंस प्रवान।
इन्द्रलोक बंधे गये, भँवर कुचौं कूँ खान।। १६।।
गरीब, जादौं गये विचार बिन, भरमें छप्पन कोड़ि।
दुर्वासा से छल किया, लागी मोटी खोड़ि।। १७।।
गरीब, इजै बिजै थे पौलिया, विष्णु पौलि दरबान।
बिन विचार राक्षस भये, बड़ कलंक है मान।। १८।।
गरीब, रावण शिव का तप किया, दीन्हे शीश चढ़ाय।
दश मस्तक बीसौं भुजा, जो दीन्हा सो पाय।। १९।।
गरीब, लंक राज रावण दिया, खोस्या बिना विचार।
पलक बीच परलो भये, लंका के सिकदार।। २०।।
गरीब, सीता सतवंती सही, रामचंद्र की नार।
रावण दानें छलि लई, बिन ही ज्ञान विचार।। २१।।
गरीब, तीन वचन समझी नहीं, मेटि राम की कार।
समंद सेत बंध बांधि करि, हनुमंत लंक सिंघार।। २२।।
गरीब, पारासुर सेवन करै, कुटिल कला घट मांहि।
पुत्री स्यौं संजम किया, ज्ञान विचार्‌या नांहि।। २३।।
गरीब, उद्‌दालक के नासकेत, गये फूल बनराय।
पिता वचन जद मेटिया, तो जम नगरी जाय।। २४।।
गरीब, नारदमुनि निर्गुण कला, तत्तवेता तिहुँ लोक।
नर सेती नारी भई, यौह होना बड़ धोख।। २५।।
गरीब, पुत्र बहत्तर वाक छल, नर से नारी कीन।

मान डिंभ छूट्या नहीं, ततवेता मति हीन।। २६।।
गरीब, भृगु भ्रम में बहि गये, कीन्हा नहीं विचार।
त्रिभुवननाथ विसंभरं, लात घात करतार।। २७।।
गरीब, बिन विचार तन क्या धरै, कुटलाई पशु प्राण।
नाहीं सुरति शरीर की, ता घट कैसा ज्ञान।। २८।।
गरीब, गोपी लुटि गई कृष्ण की, अर्जुन सरीखे संग।
लख संधानी बाण करि, जीते बड़े बड़े जंग।। २९।।
गरीब, काब्यों गोपी लूटिया, अर्जुन चले न बाण।
होनी होय सो होत है, समझि बूझि यौह ज्ञान।। ३०।।

अथ पीव पिछान का अंग

गरीब, सुमर्थ शालिगराम कूँ, सेवत है कोई एक।
कंकर गांठी बांध ही, ऐसे बहुत अनेक।। १।।
गरीब, सुमर्थ शालिगराम कूँ, देखत है कोई संत।
सकल मांड में रमि रह्या, वार पार नहीं अंत।। २।।
गरीब, कंकर की कीर्ति करै, साहिब बेमुख जीव।
जाकूँ कहा रिझावहीं, नहीं शंक्या नहीं सीव।। ३।।
गरीब, कंकर काला नदी का, भाठा पूज्या आंन।
चंदन का अर्पण करैं, ना बोलैं पाषाण।। ४।।
गरीब, तो में तेरा पीव है, शालिगराम स्वरूप।
बोलन हारा जगतगुरु, निर्गुण तत्त अनूप।। ५।।
गरीब, घट घट शालिगराम है, आत्म तत्व विचार।
परमात्म पूरण पुरुष, आत्म तत्त से न्यार।। ६।।
गरीब, आत्म तत्त तो हंस है, परमात्म परमहंस।
गुरु चेला गलतान है, दहूँ का नहीं विधंस।। ७।।
गरीब, जुगन जुगन सत्संग है, घट मठ रहन हमार।
सकल सुंन में रमि रह्या, भांनण घड़न अपार।। ८।।
गरीब, शब्द सनेही संत जन, है पद के प्रवीन।
नहीं बिछोहा ब्रह्म से, सदा रहत हैं लीन।। ९।।
गरीब, पूरनमासी चंद ज्यूं, ग्रिद गता सब देश।
घटमठ मूर्ति है नहीं, या विधि पुरुष अलेख।। १०।।
गरीब, बाहर भीतर चन्द्र गति, जल बिम्बा प्रवान।
संपट में आवै नहीं, जाकूँ साहिब जान।। ११।।
गरीब, नैंन नाक मुख द्वार बिन, कथा करत कर्तार।
तत्तवेता तत्त कूँ लखै, बोलत सिरजनहार।। १२।।

गरीब, सकल भूमि बैराट में, सर्वंगी सब ठौर।
एक रमैया रमि रह्या, दूसर नाहीं और।। १३।।
गरीब, जल थल मढी मशान में, धरणि गगन घर एक।
सुंन बे सुंन में रमि रह्या, नहीं रूप नहीं रेख।। १४।।
गरीब, वर्ण अवर्ण अजूनि है, रक्त न पीत न श्याम।
सिंध सपेदस पूजि है, नहीं बसत है धाम।। १५।।
गरीब, ग्रिद मूर्ति घर आंगनैं, रुंड मुंड रस रंग।
पीठ पेट जाके नहीं, सुन सतगुरु प्रसंग।। १६।।
गरीब, मन इच्छा धारै कोई, जैसाई प्रकाश।
संख समुंद्र नाद में, मुरजीवा कोइ दास।। १७।।
गरीब, धनुष बांण जिस हाथ है, चतुर्भुजी खेलंत।
हमरा साहिब अगम है, जाकें भुजा अनंत।। १८।।
गरीब, यौही झरोखा दर्श का, अगम निगम की राह।
तिल अंदर तरबीत है, साहिब सिंध अथाह।। १९।।
गरीब, ब्रह्म झरोखे बैठ कर, पूरब पंथ निहार।
संख जुगन की बाट थी, पलक बीच दीदार।। २०।।
गरीब, सुमर्थ साहिब सत्त हैं, परमेश्वर प्रवान।
सतगुरु साज्या होत है, जे कोई समझे प्रान।। २१।।
गरीब, त्रिकुटी कँवल के पाट में, जड़ी किवाड़ी जोर।
भृकुटी भौंरा गूंजहीं, नाद अनाहद घोर।। २२।।
गरीब, पलक झुकैं सांई झुकै, घड़ी पलक बौह खेल।
आत्म और परमात्मा, जुगन जुगन का मेल।। २३।।
गरीब, नैनों मध्य निरंजना, उड़गन अर्थ विमान।
लगी जिहाज समुंद्र में, अरस बंधे बरदवान।। २४।।
गरीब, सौ संखौं का माल है, माणिक भरी जिहाज।
सतगुरु साहूकार है, जम की लागी साज।। २५।।
गरीब, साज लगी सत भाय है, लुटी जिहाज अनंत।
कोई एक साबत ले गये, ब्रह्म नगर के पंथ।। २६।।
गरीब, बारू बझी जिहाज है, खेबट नाहीं संग।
खंड विहंडा होयगी, चप्पू नहीं चित्त भंग।। २७।।
गरीब, माणिक लदे जिहाज में, कीमत करै न कोय।
सतगुरु समर्थ जौहरी, अजपा मोती पोय।। २८।।
गरीब, मुक्ता मोती अरस के, लद्या लदीना आन।
चौदह भुवन अटक नहीं, पचरंगे बरदवान।। २९।।
गरीब, पचरंगे बरदवान है, दरियाई झलकंत।

याह नौका डूबै नहीं, खेवट सतगुरु संत।। ३०।।
गरीब, एक नौका है चाम की, ठौर ठौर अटकंत।
दूजी नौका नूर की, विचरै लोक अनंत।। ३१।।
गरीब, अरस प्रेवा चलत है, मन पवना प्रवान।
सकल भुवन एक पलक में, हरदम राख अमान।। ३२।।
गरीब, मुकट समानी नावरी, दूजे उर के मांहि।
तीजे त्रिवैणी कला, छाया दीखै नांहि।। ३३।।
गरीब, अग्र नगर में जात है, दिन में सौ सौ बार।
सहंस गुणें गुरुज्ञान से, बनजी अगम अपार।। ३४।।
गरीब, सूरति नगरी से भरी, अगम नगर कूँ सैल।
सतगुरु दिल दुरबीन है, कदे न भूलौं गैल।। ३५।।
गरीब, लाल विसंभर नूर गति, प्रीतम का दरबार।
वहां उतारो नावरी, कस्तूरी घनसार।। ३६।।
गरीब, निर्बानी की कला कूँ, रखि पलकों दरम्यान।
झुक झुक झोले खात हैं, देखो दृष्टि अमान।। ३७।।
गरीब, पिंगुल बोध समझिले, हदफ अरस की बांच।
मदन मुरारी मिल रह्या, लाय बिरह की आंच।। ३८।।
गरीब, सकल सुघट सुहावना, सुंन विदेशी रूप।
संख किरण करुणामई, दम दरबानी जूप।। ३९।।
गरीब, सुरति पलै नघ तोलिये, माणिक दीन दुकान।
सतगुरु सूं भेटा हुये, पौंहचे पद प्रवान।। ४०।।
गरीब, दीन दुनी के दलक में, मंड्या खिलारी खेल।
बिन बार्या नहीं होत है, दीपक दीजै तेल।। ४१।।
गरीब, घट घट ज्योति प्रकाशियां, दम की बाती बार।
तत्त तेल सूभर भर्या, सतगुरु दीपक जार।। ४२।।
गरीब, पवन लगे से मंद होय, आंधी चलै बुझि जाय।
तेज बलै गुरुज्ञान से, सतगुरु जोया आय।। ४३।।
गरीब, जीव पीव एक संग हैं, दम ही मांहि दयाल।
ज्यूं कमला मध्य गंध है, छिपिया रूप रसाल।। ४४।।
गरीब, जीव पीव एक ठौर हैं, कमल निरंतर वास।
ज्यूं ओला गलि जात है, सूरज के प्रकाश।। ४५।।
गरीब, जीव पीव प्रवान हैं, जुग जुग संगति सेव।
सुंन गगन नहीं अंतरा, हंस परमहंस का भेव।। ४६।।
गरीब, मोर कहूंकैं मोर में, पपीहा प्रकाश।
कोयल कहुक सुनावही, वाणी शब्द निवास।। ४७।।

गरीब, पद में से दम ऊचरै, लीन होत फिर मांहि।
सूरज किरण एक है, जी पी दूसर नांहि।। ४८।।
गरीब, दम देही गति दोय है, जैसे सर्प भुवंग।
छाडि कांचली उठ चलै, बहुरि न पहरै अंग।। ४९।।
गरीब, श्वासा सुमरन सार है, संग्रह कीजे नाम।
जीव इच्छा मिट जात है, पीव रहै तिस धाम।। ५०।।

अथ अबहड का अंग

गरीब, अबहड बसै शरीर में, ज्यूं फूलन मध्य वास।
काया कुंजि कपूर मन, लीन करो दम श्वास।। १।।
गरीब, अन्दर अबहड आदि है, बाहर देख अडोल।
आकार भार नहीं तास के, ना कछु तोल न मोल।। २।।
गरीब, अबहड की कर आरती, अबहड का धर ध्यान।
अबहड साहिब आप है, अबहड पद परवान।। ३।।
गरीब, अबहड के अंजन नहीं, दीखत है दरहाल।
बाहर भीतर रमि रह्या, गैबी खेल विशाल।। ४।।
गरीब, अबहड अनहद में रहै, ज्यूं तरवर में छांहि।
चंद्र सूर प्रकाश ते, बाहर देखी ठांहि।। ५।।
गरीब, चंद्र सूर छिप जात हैं, अबहड तन में थीर।
घट मठ महल न तास के, ना तन देह शरीर।। ६।।
गरीब, अबहड अजर अमर सदा, मरि मरि जाय सु देह।
सुंन शिखर में छिप रह्या, ज्यूं बादल में मेह।। ७।।
गरीब, ज्यूं बादल जल नीर है, दीखै नहीं अदेख।
काया मध्य कुरबान है, अबहड आदि अलेख।। ८।।
गरीब, घृत दूध में रमि रह्या, यौं अबहड तन बीच।
घट घट पूरणब्रह्म है, क्या उत्तम क्या नीच।। ९।।
गरीब, अबहड अपरम पार है, अबहड आदि अनाद।
अबहड का सेवन करै, परम सनेही साध।। १०।।
गरीब, अबहड तो बेहड़ै नहीं, बिहड़ि जात हैं खोड।
अबहड का दीदार करि, रहे बहुरि नहीं लोड।। ११।।
गरीब, चरण पताल सिर शिखर है, मेरु डंड धर ध्यान।
अबहड का दीदार करि, शब्द हमारा मान।। १२।।
गरीब, दाहिनी भुजा न दरशि है, मित्र मरै कै बीर।
थरहर थरके राज भंग होय, कै दुःख पड़ै शरीर।। १३।।
गरीब, बामी भुजा न दरशि है, नारि मरै निस्तूक।

रक्त वर्ण जो देखिये, तो षष्ट मास तन सूक।। १४।।
गरीब, श्याम वर्ण जो देखिये, तो एक मास में हानि।
अबहड के लक्षण कहूँ, अपना तन नहीं जानि।। १५।।
गरीब, जे अबहड के सिर नहीं, तो मरसी तत्काल।
पांच सात दिन तीन में, पकरि लेत है काल।। १६।।
गरीब, उज्जल वर्ण सफेद है, तो जीवन की आश।
दम दम अबहड देखिये, तो पलटै काया श्वास।। १७।।
गरीब, अजर अमर चोला करै, आसन अधर अचंक।
नागफुनी कूँ उलटि ले, अगर ध्यान धर नंक।। १८।।
गरीब, पांच तत्त पर परसि ले, अविगत मूरति ऐंन।
उजल हिरंबर सेत गति, सुन अबहड के बैन।। १९।।
गरीब, सप्तपुरी में सिद्धि करै, मन के बेग विमान।
तन कदली कपूर है, अबहड के प्रवान।। २०।।
गरीब, भुवन चतुर्दश सैल कर, प्रगट गुप्ता गोय।
अबहड के प्रताप से, अमर देह तन होय।। २१।।
गरीब, हंस गवन परलोक कूँ, मिलै अंग बैराट।
वज्र शरीर समाधि सुधि, ऊतरे औघट घाट।। २२।।
गरीब, नैंन बैंन सुर शोधि ले, सुरति गवन कर लेह।
चोले धरे अनंत गति, अबहड के गुण येह।। २३।।
गरीब, रूंम रूंम में रमि रह्या, गावै शब्द सुभान।
इन चिसम्यौं से देखि ले, सुन ले अपने कान।। २४।।
गरीब, देखे सुने प्याले पिवै, प्रगट परचे तीन।
सुरति निरति मन मोहिया, भगलीगर की बीन।। २५।।
गरीब, देखे सुने सो कौन है, इसकूँ कर तहतीक।
अटल अटारी में बसै, अबहड हमरा मीत।। २६।।
गरीब, दुःख भंजन सुख देत है, निर्भय नाम अजोख।
अबहड कूँ कुरबान है, ले जाता परलोक।। २७।।
गरीब, अष्ट कँवल दल गैब धुनि, बाजे बजैं अपार।
त्रिकुटी संपट खुलि गये, दिल अंदर दीदार।। २८।।
गरीब, अर्श गुमज में हम चढ़े, बिन पैड़ी बिन पांव।
अबहड पद अनराग है, सतगुरु दीन्हा दाव।। २९।।
गरीब, अर्श गुमज में हम रहै, सुनो हमारी सैल।
ज्यूं गुटके मध्य गंग है, गूंनि समाना बैल।। ३०।।
गरीब, अर्श गुमज में धाम है, परमहंस का मेल।
चिसमें ऐनक अर्श में, उलटि कपाली खेल।। ३१।।

गरीब, अबहड आदि अनादि है, अबहड है गुलबीन।
अबहड कूँ तहतीक कर, अबहड में ल्यौलीन।। ३२।।
गरीब, अबहड राम रहीम है, अबहड आप खुदाय।
अबहड अलह अलेख है, अबहड अंग लगाय।। ३३।।
गरीब, अबहड मौले मूल है, अबहड साहिब आप।
अबहड कूँ प्रणाम कर, जपि ले अजपा जाप।। ३४।।
गरीब, गगन मंडल में घर करै, ना चैजारी नीम।
उलट पंथ का खेल है, ज्यूं जल पैरे मीन।। ३५।।
गरीब, गगन मंडल में घर करै, ना चैजारी नीम।
तालिब के तकिये बसौ, ना जम चंपै सीम।। ३६।।
गरीब, निर्वाणी निज नाम जप, अबहड अलह नूर।
शीश हमारे पर बसै, आठौं बख्त हजूर।। ३७।।
गरीब, अबहड नैनों में रम्या, ज्यूं काजल की रेख।
रोये सेती पाईये, गावन हार अनेक।। ३८।।
गरीब, कोई गावै कोई रोवता, कोई ज्ञानी गुण सार।
एक चुप चात्रक ज्यूं रटै, अजपा जाप उचार।। ३९।।
गरीब, एक समाधी लाव हीं, एक मौनी मसकंत।
घट घट हेला देत है, अबहड का दरकंत।। ४०।।
गरीब, मारग में सतगुरु मिल्या, अबहड ध्यान अमान।
पारस पूंजी पाईयां, सतगुरु के परवान।। ४१।।
गरीब, मारग में सतगुरु मिल्या, कही अगम की बात।
सुंदर मूर्ति गैब धुंन, देवा है बिन गात।। ४२।।
गरीब, आनंद हमरे घर घना, सतगुरु किये सुनाथ।
अबहड देवा हम लख्या, मिले घालि कर बाथ।। ४३।।
गरीब, अबहड पारस परसि ले, अबहड अंग अलील।
अबहड देवा सार है, ज्ञान जोग रख शील।। ४४।।
गरीब, ज्ञान जोग से गम पटे, शील संतोष समाधि।
अबहड का दीदार करि, मिट हैं कोटि उपाधि।। ४५।।
गरीब, तजो उलंघन मन कसो, दुर्मति दीन दुहाग।
सुरति निरति की सैल करि, सुनो जोग बैराग।। ४६।।
गरीब, अजरी बजरी बंध करि, षट् कँवलौं कूँ शोध।
बाहर जाता पकरिये, खाखी मन प्रमोध।। ४७।।
गरीब, कठिन कुटुंब घट बीच है, संसा शोक बलाय।
कोई साधु जन ऊबरे, सब जग लिया डुराय।। ४८।।
गरीब, कठिन कुटुंब घट बीच है, ल्यावो ल्यावो होय।

रहजन आकी बसत है, काम क्रोध अरु मोह।। ४६।।
गरीब, कठिन कुटुंब घट बीच है, मूढ नगर पस गाम।
लेवा लेई करत है, नहीं रटत है राम।। ५०।।
गरीब, अबहड अधम उधार है, अबहड मुक्ता मूल।
अबहड राजिक राम है, अबहड कूँ नहीं भूल।। ५१।।
गरीब, अबहड अंजन आंजिये, अबहड लीजे संग।
अबहड लखि अबहड हुये, सुन अबहड परसंग।। ५२।।
गरीब, अबहड में अबहड बसै, मूर्ति सुंन समान।
दृष्टि मुष्टि से रहित है, त्रिकुटी के अस्थान।। ५३।।
गरीब, अबहड में अबहड बसै, मूर्ति है महमंत।
त्रिकुटी आसन अर्श में, कोई जानत बिरला संत।। ५४।।
गरीब, ध्यान धरै प्रकाश होय, करि अबहड से हेत।
भौरी उलटि लिलाट चढ़ि, उज्जल मूर्ति सेत।। ५५।।
गरीब, मूर्ति अगम अगाध है, अपरमपार सुभांन।
दश दर ऊपर द्वीप है, जहां शब्द की खांन।। ५६।।
गरीब, अष्ट कँवल कलधूत है, हिरदे हरि की हाट।
बनजी कारन भेजिया, सौदागर से साट।। ५७।।
गरीब, जेती लहर समंद की, एती मन के मांहि।
साधू सोई जानिये, लहर तरंग समांहि।। ५८।।
गरीब, दिल दरिया के बीच में, यौह मन खेलै खेल।
मुरजीवा सो जानिये, नाव समुंद्र पेल।। ५९।।
गरीब, आठ सिद्ध नौ निधि है, मन की लहरि मलीन।
बिना बंदगी जो उठैं, सब ही जान कुलीन।। ६०।।
गरीब, निर्मल तत्त निज नाम है, निर्धारं आधार।
सनकादिक सुमिरन करैं, सांई के दरबार।। ६१।।
गरीब, अबहड रंग अभंग है, अबहड कूँ निरताय।
अबहड बिन बिहडै सबै, अबहड रह्या समाय।। ६२।।
गरीब, दिल दांनी दिल मंझ है, वार पार नहीं तीर।
अचल चलैगी धरतरी, अबहड गहर गंभीर।। ६३।।
गरीब, अबहड समरथ सार है, रुंड मुंड सब होय।
अबहड आदि अनादि है, सो बिहडे नहीं कोय।। ६४।।
गरीब, ज्ञान ध्यान और बंदगी, तन मन रख इकतार।
दया धर्म दिल राखिये, सांईं लेत उबार।। ६५।।
गरीब, जो अपने सो और के, एकै पीड़ पीछांन।
भूखै भोजन देत हैं, पौंहचैंगे प्रवान।। ६६।।

गरीब, परमारथ के कारनैं, संतौं धारी देह।
गोरख गुरुखा संत है, ग्यारह बेर बिकेह।। ६७।।
गरीब, अजर अमर अनहद रत्ते, दुनियां सूं क्या काम।
दीन गरीबी बंदगी, हरदम रटिये राम।। ६८।।
गरीब, साहिब के दरबार में, संत करत हैं केल।
हंस हिरंबर ऊधरे, परम ज्योति से खेल।। ६९।।
गरीब, सांईं के दरबार में, बाजैं दीरघ नाद।
भक्ति बिलावल बंदगी, बटै अखय प्रसाद।। ७०।।
गरीब, सांईं के दरबार में, बहु विधि भोग विलास।
निरवासी निर्गुण भये, काल कर्म का नाश।। ७१।।
गरीब, सांईं के दरबार में, बहु विधि भक्ति विनोद।
हरदम हाजर हूजिये, अष्ट कमल दल शोध।। ७२।।
गरीब, साहिब के दर हम गये, देख्या अजब अनूप।
निशवासर नहीं तास के, नहीं छाया नहीं धूप।। ७३।।
गरीब, साहिब के दर हम गये, देख्या झिल मिल तेज।
सुंन शिखर गढ़ पर चढ़े, भक्ति बंदगी रेज।। ७४।।
गरीब, साहिब के दर हम गये, देख्या झिल मिल कार।
सुंन शिखर गढ़ पद चढ़े, पारब्रह्म दीदार।। ७५।।

अथ निःइच्छा प्रणाम का अंग

गरीब, पद्मों की वर्षा सदा, पारस झर झर जांहि।
कंचन कला कपूर तन, उलटा नाद समांहि।। १।।
गरीब, उलटा नाद अगाध गति, चंद्र सूर कर एक।
सुषमण संपट खुल गये, साधू भये अलेख।। २।।
गरीब, वज्र पौर पर पौर है, तहां वहां दृष्टि लगाय।
नाभि कँवल में पवन रख, सोहं सुरति समाय।। ३।।
गरीब, पवन रूप तब घट भया, मिट्या अकार शरीर।
मजलिस में दीखै नहीं, सो पीरन सिर पीर।। ४।।
गरीब, हाड चाम की देह से, पारस रूपी होय।
पवन डंड जागे कला, द्वादस उलटि समोय।। ५।।
गरीब, सोला कला का चंद्रमा, ऊगे त्रिकुटी तीर।
खड़ग धार से ना मरै, जिन के वज्र शरीर।। ६।।
गरीब, पवन पलीता लाय कर, मदन मूंदि कर बैठ।
सुरति सुजीवन औषधि, द्वादश अंदर पैठ।। ७।।
गरीब, मूल बिना बेली फली, जाके फूल अनंत।

ऐसी अगम अगाध गति, बिन चिसम्यौं दीखंत।। ८।।
गरीब, रूंम रूंम में चिश्म है, इस्म अकलि के मांहि।
कोटि मुक्ति फल क्या करै, जब पद परसै नांहि।। ६।।
गरीब, इच्छा बीज न जरत है, त्रिलोकी तिस मांहि।
लख ब्रह्मण्ड नख बीच है, सो नहीं भटका खांहि।। १०।।
गरीब, इच्छा माया मूल है, निःइच्छा पद नेश।
राई सौ में भाय है, जाकूँ रटता शेष।। ११।।
गरीब, कछिव ध्यान कुमोदिनी, कुंजी मृगा नाद।
पतंग परेवा प्रेम रस, सतगुरु के प्रसाद।। १२।।
गरीब, इसमें अपना कुछ नहीं, जप तप करनी कीर।
हाडी ढूंढत नघ लह्या, रतन अमोली हीर।। १३।।
गरीब, नौ निश्चय पावै सही, चौदह चौकस चित्त।
एक दिन भेटा होयगा, सांईं तना अरथ।। १४।।
गरीब, हाली पाली बालदी, राजा प्रजा सेव।
हाडी में नघ पाईये, सांईं सरीखा देव।। १५।।
गरीब, सांई साहिब सत्त है, इस काया के तीर।
लोहे चुंबक प्रीति है, जासे खड़ा शरीर।। १६।।
गरीब, पवन परेवा पाट पर, मन हंसा बैठाय।
तापर रख सुरति हंसनी, सहज समाधि लगाय।। १७।।
गरीब, षट्कर्म पंच मुद्रा कहूँ, टाटिक ध्यान लगाय।
अक्षय वृक्ष की डाल पर, हंसा बैठो जाय।। १८।।
गरीब, अक्षय वृक्ष गहवरि रह्या, जाके फूल सलौंन।
सतगुरु भेटे बाहरी, हदफ लखै सो कौन।। १६।।
गरीब, सुरति स्वयंवर रचि रह्या, गगन मंडल के मांहि।
चिश्मा मस्तक बीच है, चरण कमल की छांहि।। २०।।
गरीब, मुद्रा मुक्ति विमान पद, असंभ असंच अलील।
दया धर्म और ज्ञान गति, ताहि कहा रणशील।। २१।।
गरीब, संतोष विवेक वजीर है, समता क्षमा खवास।
सप्त चिश्म खूलै तहां, सो देखै आकाश।। २२।।
गरीब, लोचन सहंस खुलैं तहां, सो देखै वैराट।
बिन पग गवन गगन करै, खूलै सहज कपाट।। २३।।
गरीब, लख लोचन पर कोट हैं, कोट्यों पर हैं संख।
अविगत गति हैरान है, कहां लखूं बेअंक।। २४।।
गरीब, सूरज सहंस एक पदम में, पदम सहंस एक रूंम।
रूंमों की गिनती नहीं, अविगत अलख हजूम।। २५।।

गरीब, संखौं गायन संख सुर, संखौं भेरी नाद।
संखौं अनभै गावही, असंख मुनिजन साध।। २६।।
गरीब, असंखों बाजे बजत हैं, असंखों ही सुरताल।
असंखों हंस हजूरि में, असंखों सरवर लाल।। २७।।
गरीब, असंखों ज्ञानी गुण कथें, असंखों मुनि समाध।
कीमत नहीं कर्तार की, देख्या अगम अगाध।। २८।।
गरीब, असंख लौर लहरी कला, दामनि संख असंख।
शब्द घोर गुंजार है, हंस उड़ैं बिन पंख।। २६।।
गरीब, बिन पानी वर्षा जहां, बिन दादुर गुंजार।
येह वपदेश न तहां है, लाय शब्द सूँ तार।। ३०।।
गरीब, संख असंखौं नदी हैं, संख असंखौं द्वीप।
मारै मुगदर काल सिर, सदगुरु बड़े हरीफ।। ३१।।
गरीब, तिल के ऊपर तिल धरै, जा तिल पर तिल और।
उस तिल पर तालिब बसै, जहां ध्यान धरै शिव गौर।। ३२।।
गरीब, ऋग यजु साम अथर्वण, चारौं वेद विटंब।
सुषम वेद शाला कर्म, ज्ञान भक्ति रणखंभ।। ३३।।
गरीब, कहां मूल का नाद है, कहां नाद की घोर।
ब्रह्मा विष्णु शिव कित बसैं, साख पूछि हूँ तोर।। ३४।।
गरीब, मन मूल का नाद है, शब्द नाद की घोर।
सतगुण तमगुण रजोगुण, त्रिदेवा दिल मोर।। ३५।।
गरीब, कौन बिंदु का सिन्धु है, कहां सिन्धु का साज।
कौन साज का रूप है, किस का अविचल राज।। ३६।।
गरीब, कंद बिंदु का सिंधु है, शब्द सिन्धु का साज।
तत्त साज का रूप है, अविगत अविचल राज।। ३७।।
गरीब, मोरा डूंगरि कुहूक हीं, कोयल बोलैं बाग।
मानसरोवर हंस धुंन, अनरागी अनुराग।। ३८।।
गरीब, संख कल्प करना करैं, धरै उर्ध्वमुख ध्यान।
सब ही विघ्न विनाश हौंहि, एक घड़ी प्रणाम।। ३६।।
गरीब, सौ प्रणाम बियामकर, आठ वख्त सुन येह।
सप्तपुरी में सैल होय, सुधां शरीरं देह।। ४०।।
गरीब, लख रापति का जोर जिस, अंगद और सुग्रीव।
हनुमंत हाका कर गये, मल्ल अखाड़े भीम।। ४१।।
गरीब, जैसे अलल अकाश तें, छूटैं ब्यौमी बाण।
सुरति भलका तीर करि, खैंचे ज्ञान कमान।। ४२।।
गरीब, मदन मूंद कर मन गहै, नागनि नाद समाय।

वज्र पौर खूलैं तवै, सीढ़ी सुंन लगाय।। ४३।।
गरीब, मन मनसा की लहरि सब, देवौं सिन्धु बहाय।
अमर कच्छ सौ जानिये, इच्छा बीज जराय।। ४४।।
गरीब, देखे अपने रूप को, नासाअग्री नेश।
आठ बखत रहना जहां, तहां बिराजै शेष।। ४५।।
गरीब, शेष सहंस मुख रटत है, द्वादश ऊपर धाम।
सूक्ष्म मूर्ति मसतपुर, जहां करो विश्राम।। ४६।।
गरीब, धनक चढ़ाये जगतगुरु, अष्टभुजा अस्थूल।
आवद आनंद अनंत फल, है मौले मखमूल।। ४७।।
गरीब, सिद्ध कला दुरबीन दर, चिसम्यौं चंद चकोर।
सूरज संखौ झिलमिलैं, लाय सुरति की डोर।। ४८।।
गरीब, आवध असतल के कहूँ, संख पदम प्रवेश।
चक्र सुदर्शन मुकट में, ऐसा है औह देश।। ४९।।
गरीब, संखौं अनभैं मालनी, संख बिरंच शिव संख।
संख विष्णु शाला कर्म, रहे शेष के नंक।। ५०।।
गरीब, सहंस भुजा सुर बंध है, नहीं पीठ नहीं पेट।
तन मन धन अर्पण करो, शीष चढाऊँ भेट।। ५१।।
गरीब, संख कला पल में पलटि, नाटिक नाद जहूर।
जहां माया चौरा करै, शब्द सिन्धु भरपूर।। ५२।।
गरीब, सिपति करौं क्या साहिबी, नाटिक नाद नरेश।
कर जोरे माया कहै, जै जै जै आदेश।। ५३।।
गरीब, जै जै जै तूं जगतगुरु, कादिर परमानंद।
संख धर्मराय ध्यान धरि, संख कुमेरं इन्द।। ५४।।
गरीब, संख सरस्वती लाप हीं, संखौं नारद व्यास।
संखौं शुकदे सिन्धु में, देख्या अनहद रास।। ५५।।
गरीब, धनक बान कुरबान गति, खैंचि रह्या झूझार।
अनंत लोक की मांड सब, एक रती नहीं भार।। ५६।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मण्ड है, रूंम रूंम की लार।
अपनी जानैं आप गति, कोई न पावै पार।। ५७।।
गरीब, जैसे जल के पाट पर, मुरगाई तिर जाय।
गोता मारै ज्ञान गति, पैरत है दरियाय।। ५८।।
गरीब, जाकी पंख न भीज है, जल का लेत जलूस।
नौका तिरै जिहाज जल, क्या पत्थर क्या फूस।। ५९।।
गरीब, बरदवान चप्पू लगे, बांस बली का खेल।
सुंन सरोवर हंस मन, गगन मंडल कूँ पेल।। ६०।।

गरीब, पल में परले पार है, पल में उरले तीर।
सुरति बर्दवान बांध कर, उतरे घाट हमीर।। ६१।।
गरीब, प्रपट्टन के धाम की, नहीं कीमत अनुमान।
कोटि सुंन पर सुंन है, कौन धरै तहां ध्यान।। ६२।।
गरीब, जो कोई मिले सो मिल रहे, केते कर हैं सैल।
हंस परेवा ब्रह्मगति, झीना मारग गैल।। ६३।।
गरीब, तिल तिल तेली जोरि करि, फेरै कोल्हू लाठ।
सब तिल का तत्त एक है, घानी आवै घाट।। ६४।।
गरीब, ऐसे तत्त जिन मथि लिया, काया कुदली कंद।
जिन का साज कपूर है, खेलत हैं निर्बंध।। ६५।।
गरीब, बिचरत अकल अभूमि में, लील पाट पर सैल।
घोरा ज्ञान गगन रमै, दुनिया कर है जैल।। ६६।।
गरीब, त्यागी तरकी जोगिया, जपी तपी बहु भेख।
खाली सब संसार है, राजा परजा शेख।। ६७।।
गरीब, निरमोही बाजैं सही, त्रिलोकी से मोह।
अंतर इच्छा राज की, कहां बस्या बन खोह।। ६८।।
गरीब, जैसे गंडिक गाम का, नग्न रहत सब देह।
जिन सांईं जान्या नहीं, जिन के मुहडे खेह।। ६९।।
गरीब, पानौं की ढोली लदी, खर नहीं भया खुसाल।
बाट बह्या कुरड़ी चरै, पाया रत्न इवाल।। ७०।।
गरीब, तन मन चकना चूर कर, फूकि दीया बेकाम।
गीदी गंडिक गदहरे, नहीं पौंहचैगे धाम।। ७१।।
गरीब, अंतर इच्छा राज की, बाहर बने फकीर।
मनसा मालिनी मुकट में, जम के परे जंजीर।। ७२।।
गरीब, जोगी भोगी को नहीं, इस दुनियां कलि मांहि।
दोहुँ दीन मध्य एक है, सो तो जान्या नांहि।। ७३।।
राजिक रमता राम की, रजा धरै जो शीष।
दास गरीब दर्श परस, जिस भेटे जगदीश।। ७४।।

अथ सरबंगी साक्षी का अंग

गरीब, कस्तूरी नाम कबीर है, बिन छेड़े महकंत।
आदि अंत की कहत हूँ, पटतर कोई न संत।। १।।
गरीब, चिदानंद चंदन कला, अविगत लहर उठंत।
बिन आकार अजोख पद, त्रिकुटी में दीखंत।। २।।

गरीब, त्रिकुटी भृकुटी मेटि दे, घट के घाट अनंत।
घट मठ से न्यारा रहै, जाका आदि न अंत।। ३।।
गरीब, नैनों मध्य निरखत रहै, अविगत नाम कबीर।
बेड़ा पार लगाय हों, सुरति सरोवर तीर।। ४।।
गरीब, सुरति सरोवर में धसे, कोईक साधू एक।
मक्रतार पर पग धरै, जाका नाम अलेख।। ५।।
गरीब, दो नैनों मध्य कँवल है, उजल हिरंबर धाम।
शेष सहंस फुंनि रटत हैं, जिनों न पाया राम।। ६।।
गरीब, सहंस अठासी ना गये, चौबीसौं परि चोख।
तेतीसौं पर तलब है, कोई बकरा कोई बोक।। ७।।
गरीब, सहंस अठासी आठ में, पचीसौं में पूछ।
ये तो अस्थिर हैं नहीं, किबे मुकाम किबे कूच।। ८।।
गरीब, दसमा तो दरियाव है, हिमालय का नीर।
बहुतक गोते खांहिगे, सतगुरु कहै कबीर।। ९।।
गरीब, याह माया हेड़े चढ़ी, खेलन उतरी फाग।
अदग गया सो कौन है, सब कूँ लाया दाग।। १०।।
गरीब, ना सतगुरु जननी जन्या, जाके माय न बाप।
पिंड ब्रह्मण्ड से रहित है, ना वहां तीनौं ताप।। ११।।
गरीब, शब्द संदेशा कहत हूँ, भिन्न भिन्न भेद विचार।
इस कूँ माया जानियों, नौ दसमा अवतार।। १२।।
गरीब, आवे जाय सो नारि है, पुरुष अचल अनराग।
इहां दुहागनि दोष है, वहां चरणौं बड़ भाग।। १३।।
गरीब, कृष्ण कन्हैया राम हैं, बलि बावन अवतार।
हिरणाकुश नरसिंह है, सब माया विस्तार।। १४।।
गरीब, औह तो अचल अनूप है, नाहीं देह शरीर।
कर्ता हो हो ऊतरे, माया के रघुवीर।। १५।।
गरीब, दोनों दल माया खड़ी, सुर असुरन के मांहि।
न्यारा पद निरवाण है, जाकी मैं बलि जांहि।। १६।।
गरीब, धरता कूँ कर्ता कहैं, बड़ा अंदेशा मोह।
पारस पद भेट्या नहीं, जिस कूँ कहिये लोह।। १७।।
गरीब, दर्श परस पद भेट ले, अरस अकाशी बोध।
झाल उठे सिन्धु सार में, ये माया केर विनोद।। १८।।
गरीब, लोक अलोकं द्वीप सब, पूर्ण पद प्रकाश।
धौल धरणि सब जांहिगे, थिर रहसी आकाश।। १९।।
गरीब, आकाश नाश में है नहीं, और सबै का नाश।

शब्द अतीत सुभांन है, तिथि बार न बारह मास।। २०।।
गरीब, उपजै खपै सो दूसरा, एक रहै सो एक।
षट् दर्शन माया खड़ी, धरि आई नाना भेष।। २१।।
गरीब, भेष बीच अभेष है, जाकूँ कहि जगदीश।
सतगुरु साहिब सिर रहै, राखौं अपने शीष।। २२।।
गरीब, लाल से हीरा भया, हीरे से भया मोत।
मोती से शीशा भया, जब बिसर्‌या जात अरु गोत।। २३।।
गरीब, सोने से चांदी भया, चांदी से भया रूप।
रूपे से शीशा भया, जान्या नहीं स्वरूप।। २४।।
गरीब, जस्त भया तांबा भया, यौह मन हो गया रांग।
शब्द महल जान्या नहीं, नाहक धार्‌या सांग।। २५।।
गरीब, पीतल से कांसा भया, कांसा से भया लोह।
लोहे से माटी भया, जब व्याप्या दिल द्रोह।। २६।।
गरीब, कौड़ी गिटी संख ले, दरियाऊँ की झाल।
इन बातों क्या पाईये, करि गुरु नजर निहाल।। २७।।
गरीब, नौ दरवाजे प्रगट हैं, चार कुलफ जड़ी अंग।
तिल अनुमान कपाट है, सहंस मुखी जहां गंग।। २८।।
गरीब, चौदहमें पुर की कहूँ, पंद्रामें पुर मेल।
सोलहमें पुर सिन्धु है, मानसरोवर खेल।। २९।।
गरीब, घट में सोग सिल सिला, सूतक बड़ा अंधेर।
ये दम गिनती के दिये, फेरि सकै तो फेर।। ३०।।
गरीब, यौह तन रोशन महल है, दस द्वारे की देह।
सतगुरु तो कूँ कहत हैं, शब्द संदेशा लेह।। ३१।।
गरीब, जित सेती दम ऊचरै, वही ठौर तूं खोज।
हंस लोक कूँ चालिये, वन मति भरमें रोझ।। ३२।।
गरीब, द्वादश अंगुल टूटता, उलटा सिन्धु समोय।
रंग महल कर रोशनी, दीपक बाती जोय।। ३३।।
गरीब, बांका पड़दा महल का, कोई न जाने भेव।
बिन सतगुरु क्यूं पाईये, अटकि रह्या शुकदेव।। ३४।।
गरीब, तोड़ि पींजरा ले गई, मंजारी मुस काल।
कृष्ण कन्हैया पर चली, बालि झीमर की भाल।। ३६।।
गरीब, मन की लखी तो क्या हुआ, मन में निज मन और।
निज मन में निर्वाण पद, जाकी ऊंची पौर।। ३७।।
पांच पचीसौं नौ नहीं, चौदह तीन न चार।
दोय नहीं जहां ध्यान धर, सतगुरु महल भंडार।। ३८।।

गरीब, निरख परख कर देख ले, झिलमिल झिलमिल नूर।
सरबंगी सब ठौर है, शब्द सिन्धु भरपूर।। ३६।।
गरीब, बांके पड़दे हम गये, सतगुरु के उपदेश।
शिव ब्रह्मादिक रटत हैं, पार न पावै शेष।। ४०।।
गरीब, नजर अनजर निनाम है, रसना धर्‍या न जाय।
श्रवण सुन्या सुभान सति, मौले बेप्रवाह।। ४१।।
गरीब, बेप्रवाह अथाह है, अगमी अगम अगाध।
दिल अंदर दीदार है, ले कोई बिरला साध।। ४२।।
गरीब, ब्रह्म बीज सो जानिये, जो ब्रह्म शब्द मिल जाय।
न्यारा रहै सो नाद में, भवजल गोते खाय।। ४३।।
गरीब, आदि अंत की कहूँगा, पिंड ब्रह्मण्ड नहीं दोय।
सुंनि सरुपी शब्द था, कृतम कित से होय।। ४४।।
गरीब, ब्रह्म चरण माया रहै, ज्यूं तरुवर में छांहि।
सांझ परी तब कित गई, ज्ञानी खोजैं तांहि।। ४५।।
गरीब, ज्यूं गुठली में आंब है, बटक बीज बड़ जांन।
सतगुरु के उपदेश तै, नीर क्षीर कूँ छांन।। ४६।।
गरीब, कच्छ मच्छ जदि ना होते, कूरंभ धौल न शेष।
शिव ब्रह्मादिक ना होते, था शब्द निरंतर नेश।। ४७।।
गरीब, शब्द सिन्धु में लोक है, ऐसा गहर गंभीर।
राम कहो साहिब कहो, सोहं सत्य कबीर।। ४८।।
गरीब, ब्रह्म कहो अविगत कहो, कर्ता कहो करीम।
कादिर बे प्रवाह है, रमता राम रहीम।। ४६।।
गरीब, मौले कहो मुरशद कहो, खालिक कहो खुदाय।
अलख कहो अल्लाह कहो, आवा गवन न जाय।। ५०।।
गरीब, मालिक कहो मीरां कहो, मिहरवान मुरार।
तुंही कहो तालिब कहो, है सो अपरंपार।। ५१।।
गरीब, पिदर कहो मादर कहो, सुंन संनेही जान।
उस खालिक में खलक है, जाकूँ लेह पहचान।। ५२।।
गरीब, सति कहो सतगुरु कहो, समर्थ कहो सलेश।
निर्भय कहो निर्गुण कहो, दावा बंध है नेश।। ५३।।
गरीब, वार पार मध्य तुंहीं है, पिंड ब्रह्मण्ड में एक।
नाम निनावे के धरे, ज्यूं का त्यूं ही देख।। ५४।।
गरीब, जै जगदीश जगतगुरु, जोगी जुगता सार।
तन मन अरपि चढ़ाईये, ऐसा अधम उधार।। ५५।।
गरीब, जै गोपाल डिंडोत करि, पैरी पर प्रणाम।

दुवा करो दिल पाक से, असलां असलि सलाम।। ५६।।
गरीब, कुल का खाविंद एक है, दूजा नहीं गंवार।
दोय कहैं सो दोजखी, पकर्या जाये दरबार।। ५७।।
गरीब, बिच की भींत सफा करो, भ्रम बुरज का कोट।
जिन याह भींत खड़ी करी, तिस के तोड़ूँ होठ।। ५८।।
गरीब, ग्यास कहो रोजा कहो, कहते नेम निवाज।
कहने ही में भेद है, रसोई में नाज।। ५६।।
गरीब, माला कहो तसबी कहौ, कहौ चौपाड़ि मसीत।
बिसमिल्ल कहो सतराम कहो, आकीन कहो प्रतीत।। ६०।।
गरीब, गायत्री कलमा कहो, वैकुण्ठ भिस्त नहीं दोय।
जाका दर्पण पाक है, ताका मेला होय।। ६१।।
गरीब, आंखि कहो चिसमें कहो, नाक कहो नासूत।
बांह कहो कर भुजा कहो, जोर कहो भावैं कूत।। ६२।।
गरीब, कान कहो श्रवण कहो, जीभ कहो जुबान।
काजी कहो पंडित कहो, एकै वेद कुरांन।। ६३।।
गरीब, सीना कहो गोश्त कहो, इन्द्री कहो अजूद।
घृत कहो रोगन कहो, एक गऊ का दूध।। ६४।।
गरीब, कोटि पाप अघ करत है, एक निंदत नहीं समान।
रावण निंदत राम का, सेतु बंध्या लंक हान।। ६५।।
गरीब, दस मस्तक रावण कटे, टूटी लंक बिलंक।
महरावण पाताल था, पारी भुज हनुमंत।। ६६।।
गरीब, अजामेल पापी हुते, वेश्या कामनि ख्याल।
ये तो चढ़े विमान में, निंदत मार्या बालि।। ६७।।
गरीब, कंश केश शिशुपाल कूँ, निंदा करी दिल खोल।
गैब चक्र सिर उड़ि गया, ज्यूं कमठे चली गिलोल।। ६८।।
गरीब, चानौंर सहस्रबाहु कूँ, निंदा करी दिन रात।
परशुराम फरशा चल्या, ज्यूं तरुवर झारे पात।। ६६।।
गरीब, प्रहलाद भक्ति स्तुति करी, हिरणाकुश निंदा नेह।
उदर पारि कर मारिया, निंदा के गुण येह।। ७०।।
गरीब, हरिचंद का तो सत रह्या, मोरध्वज भक्ति की टेक।
संमन के सतगुरु गये, शीश चढ़ाया भेट।। ७१।।
गरीब, सत्यवादी के चरण की, सिर पर डारैं धूर।
चौरासी निश्चय मिटे, पौंहचे तख्त हजूर।। ७२।।
गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै वीर।
चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।। ७३।।

गरीब, सत्यवादी किस कूँ कहो, को गुरु द्रोही जांन।
भिन्न भिन्न कहि दीजिये, नीर क्षीर कूँ छांन।। ७४।।
गरीब, सत्यवादी सत्त जनक हैं, बंधि दई जिन तोड़।
हमकूँ सतगुरु यौं कह्या, भ्रम मटकिया फोड़।। ७५।।
गरीब, भस्मागिर भस्में हुवा, गुरु द्रोही गुण मेट।
शिव कूँ बेग सिंघारिया, कुंभी कुण्ड मध्य लेट।। ७६।।
गरीब, सत्यवादी केते कहूँ, अरब असंख्यौं देख।
आप तिरैं जग त्यारि हैं, परसे पीव अलेख।। ७७।।
गरीब, गुरु द्रोही केते कहूँ, कर्म नेष्टा हीन।
असर असा सब जात है, यौं सतगुरु दिक्षा दीन।। ७८।।
गरीब, गुरु द्रोही गलि जाहिंगे, ज्यूं ओले का नीर।
सत्यवादी सब पर तपैं, सत निरवाण कबीर।। ७९।।
गरीब, देह कहो काया कहो, पारा कहो क बिंद।
नाला कहो नदियां कहो, तीरथ कहो समंद।। ८०।।
गरीब, घोड़ा कहो ताजी कहो, शुत्र कहो अक ऊंट।
द्रव्य कहो माया कहो, दिशा कहो भावैं खूंट।। ८१।।
गरीब, बाग कहो बारी कहो, पौहप कहो भावैं फूल।
सब घट गैबी गंध है, बेदाना मखमूल।। ८२।।
गरीब, हदि कहो बे हदि कहो, हद बेहद से न्यार।
चार वर्ण षट् आश्रम, छीपा तिरे चमार।। ८३।।
गरीब, नाम पदारथ सार है, जा घट भक्ति बिलास।
बन बसती में एकसा, चोर कहो भावैं दास।। ८४।।
गरीब, मान बड़ाई छाडि दे, करि दे कुफर खरीद।
सतगुरु मंझ दलाल हैं, देख दीद बरदीद।। ८५।।
गरीब, नैनों बीच नबी बसै, कलमां नहीं कुरान।
बिसमिल्ल नाहीं वासना, अलख अलह का थान।। ८६।।
गरीब, बंग विरोधी देत हैं, बहरा नहीं खुदाय।
बहिश्त शरे की आस है, पकरि पछारी गाय।। ८७।।
गरीब, काजी कजा जानैं नहीं, मुल्ला मिले न मूल।
बहिश्त शरे पौंहचे नहीं, बोवै शूल बबूल।। ८८।।
गरीब, बहिश्त शरे के पंथ में, मौहंमद दीनी धाहि।
और बड़ा को पीर है, मुझ ना दीदार अलाह।। ८९।।
गरीब, अर्श कुरस की सैल है, पड़दा पोसी पंथ।
पीर कबीर ख्वास हैं, सत शरे का संत।। ९०।।
गरीब, पंडित पतरा बांच कर, दीन्हा जगत डबोय।

पत्थर की पूजा करैं, ठाकुर एक कै दोय।। ९१।।
गरीब, पाती तोरे खून है, जड़ देवा नहीं खाय।
हम कूँ सतगुरु यौं कह्या, पूजा करै बलाय।। ९२।।
गरीब, महमंता सिर मुकट है, कोटि भानु कर्तार।
औह दाता जग मंगता, समर्थ सिरजन हार।। ९३।।
गरीब, पुरुष पुरातम पीव है, पीठ पेट नहीं द्वार।
हलका कहूँ तो यौं नहीं, भारी कहैं न भार।। ९४।।
गरीब, पुरुष कहे तो नारि है, नारि कहूँ तो पुरुष।
हिन्दू कहूँ तो वो नहीं, तुरक कहैं नहीं तुरक।। ९५।।
गरीब, मोल कहै अमोल है, अमोल कहै से मोल।
सब गति में हैरान हैं, सतगुरु पड़दा खोल।। ९६।।
गरीब, दीन कहै बेदीन है, बेदीन कहे से दीन।
अविनाशी आसन अचल, परम पुरुष प्रवीन।। ९७।।
गरीब, द्वन्द कहैं निर्द्वन्द है, निर्द्वन्द कहै से द्वन्द।
बंध कहै मुक्ता सही, मुक्ता कहूँ तो बंध।। ९८।।
गरीब, जोग जीत करनाम है, मुनिंद्र कहो कबीर।
बारह पंथ चलाईया, डिगे बँधावै धीर।। ९९।।
गरीब, सुलतानी के शर लग्या, बलख बुखारा त्याग।
जिन्दे के चोले मिले, दीना सत बैराग।। १००।।
गरीब, मौहंमद के मुरशद सही, कलमां रोजा दीन।
मुसलमान मानै नहीं, मौहंमद के आकीन।। १०१।।
गरीब, निरदावै निर्भय सही, दावाबंध भय मान।
मणी मवासा ना रह्या, चारौं जुग प्रवान।। १०२।।
गरीब, राज तबक चौदह सही, रापति कोटि असंख।
जा हिरदे नहीं नाम हैं, राव नहीं वे रंक।। १०३।।
गरीब, सब रावन पति राव है, जाके रूंम रूंम धुनि होय।
दम खाली नहीं नाम बिन, छत्रपती है सोय।। १०४।।
गरीब, जाका संपट खुलि गया, जिन देख्या वार अरु पार।
ब्रह्मज्ञानी उरझे फिरै, म्हैंस सींग दीदार।। १०५।।
गरीब, वार पार उत नहीं है, आदि अंत नहीं मध्य।
पूर्ण ब्रह्म विचारिये, निर्गुण निरमल शुद्ध।। १०६।।
गरीब, अजर अमर सत्य पुरुष है, सोहं सुकृत सीर।
बिन दम देह दयाल जी, जाका नाम कबीर।। १०७।।
गरीब, देखे सो कहता नहीं, कहता भया अदेख।
सुनते कूँ सूझैं नहीं, जाका नाम अलेख।। १०८।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, हम सुलतानी नानिक तारे, दादू कूँ उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांहि कबीर हुवा।। १०६।।
गरीब, बहुरंगी बरियाम है, मिल्या नीर में नीर।
गोरख के मस्तक तपै, अदली सत्य कबीर।। ११०।।
गरीब, कंकाली कर जोरि कहै, तन मन कर कुरबांन।
जगदे धड़ पर सिर चढ़्या, सतगुरु के प्रवान।। १११।।
गरीब, सुरजन कूँ सतगुरु मिले, मक्के मदीने मांहि।
चौसठ लाख का मेल था, दो बिन सबही जांहि।। ११२।।
गरीब, सुरजन अरजन ठाहरे, सतगुरु की प्रतीत।
सतगुरु इहां न बैठिये, यौह द्वारा है नीच।। ११३।।
गरीब, चिंडाली के चौक में, सतगुरु बैठे जाय।
चौंसठ लाख गारत गये, दो रहे सतगुरु पाय।। ११४।।
गरीब, ऊंच नीच में हम रहैं, हाड चाम की देह।
सुरजन अरजन समझियो, रखियो शब्द संनेह।। ११५।।
गरीब, ज्ञानी कूँ सत गुरु मिले, खोजी दीन्हा ताड़।
सिर पर सत्य कबीर हैं, उड़ी भ्रम की बाड़।। ११६।।
गरीब, दत्ता जीया कूँ मिले, दक्षिण बीच दयाल।
सूका खूंट हर्‍या हुवा, ऐसे नजर निहाल।। ११७।।
गरीब, नानक तो निर्भय किया, वाह गुरु सत जान।
अदली पुरुष पिछानियां, निर्गुण पद निर्वाण।। ११८।।
गरीब, अदली पुरुष कबीर हैं, सब सिर तपें लिलाट।
सौदा करो तो इत करो, चल सतगुरु की हाट।। ११९।।
गरीब, दादू कूँ सतगुरु मिले, दई पान की पीक।
बूढा बाबा जिस कहे, याह दादू की नहीं सीख।। १२०।।
गरीब, दादू के सिर पर सदा, अदली अदलि कबीर।
टक्कर मारी जद मिले, फिर सांभर के तीर।। १२१।।
गरीब, दादू ध्यान उलंघिया, तीन दिवस तीन रात।
आगे से आगे मिले, शब्द सनेही साथ।। १२२।।
गरीब, आसन अटल कबीर हैं, सब के सतगुरु एक।
ताजी कर असवारियां, संग चलेगी मेख।। १२३।।
गरीब, देही कूँ सतगुरु कहै, यौह सब दुंदर ज्ञान।
चार दाग आया नहीं, जिस कूँ सतगुरु जान।। १२४।।
गरीब, दादू का पिंजर पड़ा, और नानक की देह।
इन में सतगुरु कौनसा, हम कूँ बड़ा संदेह।। १२५।।
गरीब, नामा कूँ सतगुरु मिले, देवल दीन्हा फेर।

पिंडा तो इत ही रह्या, शब्द कह्या हम टेर।। १२६।।
गरीब, रैदास रसायन पीवते, चोले धरे अनंत।
चलती बेर पाये नहीं, धन्य सतगुरु भगवंत।। १२७।।
गरीब, खोडि पड़ी तो क्या हुआ, झूठी सबै पटीट।
पंखी उड्या अकाश कूँ, चलता कर गया बीट।। १२८।।
गरीब, तेजपुंज का तखत है, तेजपुंज की सेज।
तेजपुंज का कंत है, तेजपुंज का बेज।। १२९।।
गरीब, तेजपुंज की सैल है, तेजपुंज के धाम।
सेवक हैं तेजपुंज के, तेजपुंज के राम।। १३०।।
गरीब, अकार भार नहीं ठाहरे, निराकार मिल जाय।
चार जुग जे तन रहै, तो देह गिरै सत भाय।। १३१।।
गरीब, कृष्ण कन्हैया राम कूँ, जीव कहै कर्तार।
पिंड पर्या भगवान का, इन कूँ देख विचार।। १३२।।
गरीब, कच्छ मच्छ कूरंभ लग, शेष धौल कूँ देख।
इन की देहि नहीं रहै, सब वसुधा की टेक।। १३३।।
गरीब, यह जीवन सत सुफल है, जब लग राम रटंत।
देह खोरी कूँ जान दे, भ्रम परे हैं पंथ।। १३४।।
गरीब, गुड का सब मिष्ठान्न है, ईख अलह की जात।
बहु कीर्ति कर्तार की, कहां कहूँ उत्पात।। १३५।।
गरीब, रत्न दूध में सब सही, महीं छाछि और घीव।
पारब्रह्म सतवृक्ष हैं, फूल पान सब जीव।। १३६।।
गरीब, विष्णु विसंभर नाथ के, परचे कोटि अनंत।
भक्त वत्सल भगवान हैं, क्यूं निंदन है संत।। १३७।।
गरीब, नृसिंह हो के अवतरे, प्रहलाद भक्त के काज।
हिरणाकुश कूँ ले गया, ज्यूं तीतर नै बाज।। १३८।।
गरीब, नामा का देवल, फिर्या मुई जिवाई गाय।
पीड़ा मेटी संत की, छांन छिवाई आय।। १३९।।
गरीब, केशव बनराजा हुआ, कबीर भक्ति के हेत।
कांकर बोई जांन के, धन्ना भक्त के खेत।। १४०।।
गरीब, इहां कांकर से अन्न हुवा, वहां केशव से हुवा कबीर।
वार पार पावैं नहीं, गति कछु गहर गंभीर।। १४१।।
गरीब, कर्ता ऊपर चोट है, केते हैं कर्तार।
मूल लहै नहीं मूर्खा, गिनते हैं क्यौं डार।। १४२।।
गरीब, सतगुरु साहिब एक हैं, दूजा भ्रम विरोध।
सुंन संनेही शब्द है, अभि अंतर में खोज।। १४३।।

गरीब, यौह सतगुरु साहिब सही, माटी का गुण मेट।
सुरति निरति से परखि ले, पारब्रह्म कूँ भेट।। १४४।।
गरीब, गल घोटा गुरुवा घनें, फांसी देहिं अडाय।
द्वादश तिलक बनाय कर, जमपुर देहि धिकाय।। १४५।।
गरीब, झूठे गुरु का नाक ले, फिर श्रवण और नैंन।
सतगुरु बोले साख याह, दूर कर फोकट फैंन।। १४६।।
गरीब, झूठे गुरु कूँ झटकि देहि, शिष्य स्वामी कूँ फूक।
यामें दोष दया नहीं, शब्द कह्या हम कूक।। १४७।।
गरीब, आजिज से आजिज रहे, सब मेरन पर मेर।
साधू शब्द अतीत, हैं, शब्द कह्या हम टेर।। १४८।।
गरीब, सतगुरु सतगुरु क्या कहै, शब्द अतीत पिछान।
रूंम रूंम में तेज है, कोटि सूर शशि भान।। १४९।।
गरीब, सतगुरु सतगुरु क्या कहै, सतगुरु शब्द अतीत।
सतगुरु सोई जानिये, जहां गुण इन्द्री नहीं रीत।। १५०।।
गरीब, पीछे गई सो जान दे, लेह रहती कूँ राख।
उतनी लाव चढ़ाईये, करो अपूठी चाक।। १५१।।
गरीब, मूये बिन पावै नहीं, जीवत कैसा जोग।
चौरासी असान करै, मिटे न संसा शोग।। १५२।।
गरीब, पंच अग्नि पाखंड है, मौंनी तपैं आकाश।
झरनें बैठे क्या हुवा, जीमें पंच गिरास।। १५३।।
गरीब, दूधाधारी सिद्ध हैं, पान फूल फल खांहि।
घट में नाम न संचरै, बंधे जमपुर जांहि।। १५४।।
गरीब, चुंडित मुंडित भदरा, मौंनी महल न पाय।
धूंमर पान ठढेसरी, दोजख धक्के खांहि।। १५५।।
गरीब, जोग नहीं यौह रोग है, जब लग नाम न चीन्ह।
घर घर द्वारे भटकते, भेष बिना आकीन।। १५६।।
गरीब, भेष लिया तो क्या हुवा, जब लग नहीं विवेक।
तीन काल निपजे नहीं, मिटै कर्म नहीं रेख।। १५७।।
गरीब, उरध कपाली तपत हैं, तल सिर ऊपर पैर।
दम का खोज न जान हीं, कहां देह सूं बैर।। १५८।।
गरीब, याह देही सौंगही नहीं, महंगी रत्नों मोल।
जो जानें तो राम जप, नहीं कुलफ कपाट न खोल।। १५९।।
गरीब, पर्वत डूंगर क्यूं चढ़ो, बसती तजो न गाम।
बन बसती तें एकसा, जाके हिरदे राम।। १६०।।
गरीब, जल से सब कछु होत है, जल काहे से होय।

खोज करे कोई संत जन, जहां पुंजि प्रगटी लोय।। १६१।।
गरीब, सात धातु जल से भई, सातों अन्न अनाद।
लख चौरासी सकल सब, सुर नर मुनिजन साध।। १६२।।
गरीब, अविनाशी से प्रेम होय, प्रेम सहत होय नीर।
सकल सुंन सब गहबरे, पांचों तत्त खमीर।। १६३।।
गरीब, निर्गुण कला से कलप है, कलप भये तिहुँ देव।
तिहुँ देवा से जग भया, सतगुरु कहिया भेव।। १६४।।
गरीब, सतपुरुष निर्गुण कला, सरगुण कलप विनोद।
ॐ सोहं मध्य में, निःअक्षर कूँ शोध।। १६५।।
गरीब, कच्छव दृष्टी ध्यान धरि, कुंजी बैंन विलास।
सौ करोड रवि झिलमिलें, रूंम रूंम के पास।। १६६।।
गरीब, मीन मनोहर चाल है, रत्न सिन्धु से प्रीत।
द्वादश उलट सुमेर चढ़ि, यौह है ध्यान उदीत।। १६७।।
गरीब, सतपुरुष कूँ परसि ले, दिल अंदर दीदार।
सौ करोड़ रवि झिलमिलें, रूंम रूंम की लार।। १६८।।
गरीब, सतपुरुष निर्गुण हटी, सुनियों संत सुजान।
सतलोक कूँ परसि ले, जहां बैठे हंस अमान।। १६९।।
जल से कमल कमल से जल है, पांच तत्त का जोड़ा।
सतगुरु साषि समझ कर पूछो, पहली अहरन घड़ी क हथौड़ा।। १७०।।
गरीब, ऋग यजु साम अथर्वण नाहीं,ब्रह्मा वेद न बानी।
जल कमला दोनूं नहीं होते, पूछो पुरुष बिनानी।। १७१।।
गरीब, कहां सुंन की सेज, पवन के पंख कहां है।
कहां गगन का द्वार, भँवर किस कमल समा है।। १७२।।
गरीब, त्रिकुटी सुंन की सेज, पवन की पंख सुरति है।
ब्रह्मरंध्र गगन का द्वार, सहंस दल भँवर निरति है।। १७३।।
गरीब, गुड़ी अरस उड़ि जात है, फिर पृथ्वी पर लीन।
खैंचन हारा जान ही, घट बाजे अक बीन।। १७४।।
गरीब, सूक्ष्म रूप छिके रहैं, सो पैठे वैराट।
विश्वरूप में विस्तरे, उतरें औघट घाट।। १७५।।
गरीब, जैसे ब्यौमी जल बसै, गगन मंडल गैनार।
यौं सांईं तन बीच है, देखो दृष्टि उघार।। १७६।।
गरीब, बिना साढ साढू नहीं, सुनो सयानी लोय।
सारा बरसै भादुवा, कारज सिद्धि न होय।। १७७।।
गरीब, साध नदी और मेघ जल, कहीं कहीं है मौज।
निंदत पापी मारिये, जिन घर दौरे फौज।। १७८।।

दैंत दल दरमले असुर दल आसगे, मढ़ीं मसानो बेशंक फिरे।
जीवे जब लग जोख्यूँ नांही, मरे जब निःशंक मरे।। १७६।।
गरीब, चंद्र सूर की आव लग, जे तन रहै शरीर।
सतगुरु से भेटा नहीं, तो अंत कीर का कीर।। १८०।।
गरीब, एक पलक जुग जीवना, जे सतगुरु भेटा होय।
रूंम रूंम तारी लगे, सुरति सुंहगम पोय।। १८१।।
गरीब, मात पिता के बचन में, रहे पारब्रह्म का ध्यान।
हरदम साहिब याद रख, कोटि जग प्रवान।। १८२।।
गरीब, डेरे डांडे खुश रहो, खुसरे लहैं न मोख।
ध्रुव प्रहलाद उधरि गये, तो डेरे में क्या दोख।। १८३।।
गरीब, गाड़ी बाहो घर रहो, खेती करो खुशहाल।
सांईं सिर पर राखिये, तो सही भक्त हरलाल।। १८४।।
गरीब, माता होय सुनीति सी, पुत्र ध्रू दरवेश।
जा पद तारी लाईये, जिसकूँ रटता शेष।। १८५।।
गरीब, हिरणाकुश से पिता कूँ, कुटिल वचन नहीं बोल।
अपनी करनी पायसी, सांईं मोल न तोल।। १८६।।
गरीब, कलह जगाई केकई, भरत राज की इंच्छ।
सीता लक्ष्मण राम स्यौं, बहुत किया प्रपंच।। १८७।।
गरीब, दशरथ चौबारे चढ़ूया, राम वियोगी एक।
चौबारे से पग डिग्या, पड्या कलेजे छेक।। १८८।।
गरीब, सीता लक्ष्मण राम कूँ, देसोंटा क्यूं दीन।
ऐसे बिछुरे संग से, ज्यूं दरिया से मीन।। १८६।।
गरीब, सीता रावण ले गया, देख दई के काम।
देशोंटे में फिरत हैं, लक्ष्मण भाई राम।। १६०।।
गरीब, तेतीसौं हैं बंधि में, सीता लग्या श्राप।
कूदे लंक बिलंक कूँ, हनुमंत अजपा जाप।। १६१।।

अथ भेष का अंग

गरीब, माला मुक्ति न होत है, मुक्ति होत है नाम।
एकै अक्षर बाहरा, ऊजड़ भला न गाम।। १।।
गरीब, माला मुगद गंवार कूँ, गल में पहिर्या काट।
दगड़े दोजख के चल्या, लखी न सतगुरु हाट।। २।।
गरीब, माला पहरै मनमुखी, आगे जड़े कपाट।
सुंन डगरी साधू गये, अगम पंथ बैराट।। ३।।
गरीब, माला पहिरै मुगद नर, चौड़ा तिलक बनाय।

अविगत नगर न पौंहचहीं, काहे भेष बनाय।। ४।।
गरीब, माला मूरख पहिर हीं, कंठी बांधे सात।
जैसे मडा सिंगारिये, चंदन लेपे गात।। ५।।
गरीब, दोहरी माला पहिर हीं, कंठी बांधे बीस।
साहिब दर ना पौंहच हीं, ना भेटे जगदीश।। ६।।
गरीब, गल माला रूद्राक्ष की, द्वादस तिलक सिंगार।
दगड़े बोझा ढोव हीं, जम धरि है बेगार।। ७।।
गरीब, मूंड मुंडावै मूर्खा, करि हैं घोटम घोट।
बाहर भेष बनाव हीं, अंदर अनगिन खोट।। ८।।
गरीब, कंन पटिया कर कंकनं, संकल बांधे पाय।
औह मौला पावै नहीं, सत्तर भेष बनाय।। ९।।
गरीब, आकाशी मौनी मुखी, धूंमर पान ध्यान।
साहिब दर नहीं पौंहच हीं, फोकट भेष अलाम।। १०।।
गरीब, केले की कोपीन है, फूल पान फल खांहि।
नर का मुख नहीं देख हीं, बसती निकट न जांहि।। ११।।
गरीब, ये जंगल के रोझ हैं, मुनिछो बीधक जांहि।
निश दिन फिरै उजार में, साहिब भेटे नांहि।। १२।।
गरीब, छेक सहंस छेकि कर, मटके घालै नीर।
झरनें बैठे मानवी, कंपत बदन शरीर।। १३।।
गरीब, अंतर नाम न जाप है, सिर वरषावै नीर।
दोजख बहने बह गये, मच्छा वज्र शरीर।। १४।।
गरीब, माघ न्हात मथुरा पुरी, परसे अठसठि धाम।
अंतर गत चीन्हा नहीं, तीरथ कौने काम।। १५।।
गरीब, कपाली आसन करै, चरण ऊपर हूँ बांध।
बागुल कीजे बापुरे, झूलै वृक्षा फांध।। १६।।
गरीब, बागुल बागुल पाहुनी, कहां कीजे अधिकार।
उरधमुखी झूले सबै, वृक्षा मांहि हजार।। १७।।
गरीब, बागुल बीट मुखारविंद, संतो निंदा नेह।
ते विधना बागुल रची, मुख में डार्या खेह।। १८।।
गरीब, सब पंखी सूधे बसै, बागुल मूंधा शीश।
भेष सकल भूले फिरें, क्यूं भेटे जगदीश।। १९।।
गरीब, डूंगर आसन बांध कर, पर्वत गुफा बनाय।
यौं साहिब पावे नहीं, योजन एक चढ़ाय।। २०।।
गरीब, अंध गुरु अंध शिष्य हैं, अंध जगत दहूँ दीन।
षट दरशन सब गुंग हैं, सुनी न अनहद बीन।। २१।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, गूदरिया घर ना लखै, नगनी जांहि निराश।
सतगुरु के प्रताप से, अरस परस कोई दास।। २२।।
गरीब, भंगी भड़वे भूत हैं, ककड़ उड़त खलील।
मदिरा भखते भारती, रात्ते नाम न शील।। २३।।
गरीब, हुक्का हरदम पीव हीं, लाल मिलावे धूर।
इस में संसा है नहीं, जनम पीछले सूर।। २४।।
गरीब, मांस भखै बिलाव ज्यूं, बूझै वहिश्त बैकुण्ठ।
सातों कँवलों धूम घोट, चौकी बैठे कंठ।। २५।।
गरीब, ऐसे भेख बैराग हैं, मधहारी चंडूल।
जिन्हौं भक्ति भावे नहीं, अंदर शूल बबूल।। २६।।
गरीब, हरिहा गलि पाया बंधा, माने जिस की कांन।
कष्ट बंधा यौं भेष के, विद्या बाद लरांन।। २७।।
गरीब, भेष रसातल जात हैं, बिना बंदगी जीव।
घट में जाप न ऊचरै, क्यूं पावैंगे पीव।। २८।।
गरीब, मुगद नगद नहीं लेत हैं, नघ मौले है रोक।
उस दरबार उधार क्या, हुंडी शिकरै थोक।। २९।।
गरीब, बगदे जीव विनास होहिं, खलि खातेर खलील।
दाख मुनक्का छाडि कर, तोरै बन की पील।। ३०।।
गरीब, अंब अरंड लागै नहीं, भावै परमल भेव।
कुटिल जीव समझै नहीं, भावे समझावौ महादेव।। ३१।।
गरीब, भस्मागिर की वासना, पार्वती के मांहि।
अनरागी महादेव से, जासे समझे नांहि।। ३२।।
गरीब, शिव शंकर का तप किया, द्वादश वर्ष बिचार।
भस्मागिर खाली गये, महादेव दरबार।। ३३।।
गरीब, मांग मांग जब शिव कह्या, त्रिवाचा प्रवान।
भस्मागिर शिव से कहै, भस्मकड़ा दे दान।। ३४।।
गरीब, भस्मकड़ा शिव कूँ दिया, भोला नाथ महादेव।
गैल हुवा शिवनाथ की, विष्णु तहां छलि लेव।। ३५।।
गरीब, विष्णु भया संख लोचनी, शिव की गैल न जाय।
भस्मागिर भस्में किया, गंड हथ नांच नचाय।। ३६।।
गरीब, ऐसी जाकी वासना, कुटिल पंथ सब भेष।
बहे जात हैं धार में, बिनही ज्ञान विवेक।। ३७।।
गरीब, गुफा खोदि धरणी धसै, घट में नाम न सांच।
जम के बंधन बंधि रह्या, काछा झूठा काछ।। ३८।।
गरीब, शालिग समर्थ कूँ जपै, अविगत ध्यान धरंत।

चूक भई चेते नहीं, सबै नवेले पंथ।। ३९।।
गरीब, साहिब की शंका नहीं, सतगुरु से नहीं नेह।
संतों सूं सन्मुख नहीं, जिन के भीत न लेव।। ४०।।
गरीब, जड़ सूं चेतन लगि रह्या, कैसे होय प्रकाश।
परमानंद से प्रीत कर, पार उतारै दास।। ४१।।
गरीब, जड़ से जूंनी ना जगे, सेवैं बारमबार।
पारिंग होना चाहिये, तो कर सतगुरु दीदार।। ४२।।

अथ भ्रम विधूसन का अंग

गरीब, कण्ठी माला सुमरनी, सबै सिलसिला मेट।
कनफूका गुरुवा मिले, ज्यों जम मारी फेट।। १।।
गरीब, कण्ठी माला सुमरनी, पहरे से क्या होय।
ऊपर ढूंढा साध का, अंतर राख्या खोय।। २।।
गरीब, कण्ठी माला सुमरनी, जीवत मारे काट।
मूये कहो कित जांहिगे, हांकै जम की पाट।। ३।।
गरीब, कण्ठी माला सुमरनी, जग में पड़ै फिराक।
सतगुरु शब्द न मान हीं, लकड़ी सूं क्या साख।। ४।।
गरीब, कण्ठी माला सुमरनी, टीका टुण मुण टाल।
छापे तो छाती दिये, याह जम घाली घाल।। ५।।
गरीब, कनफूका गुरुवा मिले, जानै भाव न भेद।
जम के हिलकारे फिरैं, हाथों में लिये वेद।। ६।।
गरीब, हिलकारे तहतीक है, फांसी हंस विधंस।
सतगुरु साहिब साखि हैं, डोबत हैं कुल बंस।। ७।।
गरीब, कनफूका गुरु ना मिले, देहूँ तीन तलाक।
बड़ी फजर प्रणाम करि, जड़ में दे कर आक।। ८।।
गरीब, कनफूका गुरु बहुत हैं, अनगिन कोटि अनंत।
साधू होकर नाम ले, सो सत्यवादी संत।। ९।।
गरीब, कनफूका गुरु काल है, फांसी देहि अडाय।
मारत हैं मैदान में, छल बल बहुत बनाय।। १०।।
गरीब, कनफूका गुरु काल है, गुरु का धर्या स्वरूप।
यामें मीन न मेख है, जैसा सिंभल रूख।। ११।।
गरीब, कनफूका गुरु काल है, आये भेष बनाय।
तन पर द्वादश तिलक हैं, सब जग गया पिताय।। १२।।
गरीब, कनफूका गुरु कान में, मारी फूक बिटंब।
जैसे फूटी नाव में, डूब्या सकल कुटंब।। १३।।

गरीब, यह छ्यानवे पाखंड हैं, ज्यूं कोल्हू का फेर।
काजी पंडित बैल हैं, दरड़ि गंडीरी गेर।। १४।।
गरीब, रस कुस बहने बह गया, छोही दीन्ही फूक।
चौड़ हदीरा कर गये, कनफूका गुरु दूत।। १५।।
गरीब, कनफूका कथ नहीं है, धरैं बिटंब शरीर।
गांडू हसती लश्कर हनें, ना दुर्जन की पीर।। १६।।
गरीब, जड़ पाहन पूजा करैं, जड़ की बाजै टाल।
साक्षी सत्य कबीर है, याह पूजा घर घाल।। १७।।
गरीब, जड़ की बाजै झालरी, जड़ के बाजै संख।
जड़ आगे चेतन खड़ा, जोड़ि रह्या कर अंक।। १८।।
गरीब, पाती तोरै वृक्ष की, जड़ देवा नहीं खाय।
इसतें चौरासी भली, ऊंट अजा ले जाय।। १६।।
गरीब, भेड़ अजा सेवन करो, ये ठाकुर तहतीक।
जड़ आगे चेतन खड़ा, नाहक गावै गीत।। २०।।
गरीब, जड़ आगे जूनी खड़ा, जोड़ि रह्या कर शीश।
भ्रम पर्या भय नहीं है, भूलि रह्या जगदीश।। २१।।
गरीब, कान चिराये क्या हुवा, कर कंकन नहपाल।
मुंद्रा पहिरे क्या हुवा, सिर फोरेगा काल।। २२।।
गरीब, ऊंचे आसन बैठ कर, नीचे आसन जांहि।
भस्म रमावै छार तन, बंधी भिक्षा खांहि।। २३।।
गरीब, राज अंश कूँ खाय कर, गये रसातल भेष।
पीछे बंधे जाहिंगे, यामै मीन न मेष।। २४।।
गरीब, मौंन रह्या तो क्या हुवा, बोलै सैनों भेव।
मौनी वक्ता एक हैं, ना जान्या दिल देव।। २५।।
गरीब, सुचत ऊर्ध्व बाहू रहै, पंच अगनी दे पीठ।
ऐसे साहिब ना मिलैं, क्यूं तन फूकि अंगीठ।। २६।।
गरीब, मूंड मुंडाये क्या हुवा, लिया भेड कूँ भेष।
छठैं महिनें मूंडिये, ना जिस मिल्या अलेख।। २७।।
गरीब, जटा रखाये क्या हुवा, मुंडित भद्रा मूल।
दहूँ के बीच साहिब रह्या, गये नाम निज भूल।। २८।।
गरीब, सैली शींगी पहरि करि, फरवा लीना हाथ।
गदहा गायत्री पढ़ै, छार लगावै गात।। २६।।
गरीब, सन्यासी दस नाम हैं, शिव का धरि है ध्यान।
शिव के सिर पर और हैं, जाकूँ कर प्रणाम।। ३०।।
गरीब, ऊपर हंस हिरंबरी, भीतर बग मंझार।

इन बातों क्या पाईये, चल्या जमाना हार।। ३१।।
गरीब, काशीदास कसो इस तन कूँ, ज्यूं सरवै अमी शराब।
बेदाना फल दूर है, नून मिरच नहीं लाभ।। ३२।।
गरीब, जो जाने तो जानि ले, बहुरि न ऐसा दाव।
आगे पीछे की कहूँ, शब्द महल में आव।। ३३।।
गरीब, मन में मेर समेर हैं, मन में धरनि अकाश।
दुर्मति करै रसोईयां, चौदह भुवन गिरास।। ३४।।
गरीब, ऐसी मन की वृति है, इच्छा आवै जाय।
जा घट इच्छा है नहीं, सो साधु सत भाय।। ३५।।
गरीब, इच्छा सब जग लूटिया, इच्छा किनें न लूट।
बखतर तोड़े भ्रम के, ज्ञान शब्द की मूठ।। ३६।।
गरीब, सप्तपुरी पर सो तपै, जाके नाम अधार।
ऊंधे मुख नहीं आवहीं, आवा गवन निवार।। ३७।।
गरीब, इच्छा दासी जम की, खड़ी रहे दरबार।
पाप पुण्य दो वीर है, याह सत खसमी नार।। ३८।।
गरीब, खाकी मन भड़वा जहां, नकटी दुर्मति जोय।
सकल सभा है चोरटी, भक्ति कौन विधि होय।। ३९।।
गरीब, पांच नारि एक और है, संग पचीसौं पूत।
त्यागी क्यूं कर जानिये, येती है प्रसूत।। ४०।।
गरीब, कर करुवा कोपीन है, अंग लगावैं छार।
भेष लिये क्या होत है, सिर इच्छा बेगार।। ४१।।
गरीब, कर्म कुसंगति भूल है, लख चौरासी धार।
भवसागर में जात है, कर कुछ सोच विचार।। ४२।।
गरीब, परकिरती छाडै नहीं, मारग बंका बीर।
चौबीसौं पौंहचे नहीं, जहां आसन अटल कबीर।। ४३।।
गरीब, मन की खोटी बांन है, कुटिल बचन कर दूर।
सिर के साटे पाईये, सूली चढ़े मनसूर।। ४४।।
गरीब, भेष पड़े सो बहि गये, भवसागर के जीव।
चौरासी मिटती नहीं, बिना बंदगी पीव।। ४५।।
गरीब, भेष भाखसी जानियों, जामे रंग न लाग।
कोटि वर्ष जल में रहैं, चख मख तजै न आग।। ४६।।
गरीब, भेष भाखसी जानियों, ज्ञान बुद्धि नहीं जोग।
एक डंडी में बंधि गये, लग्या भेष का रोग।। ४७।।
गरीब, भेषों से भगवंत का, दूर महल दरबार।
ताजी कूँ पौंहचे नहीं, सुतकंन का असवार।। ४८।।

गरीब, भेष बंधे सो ना छूटैं, गही अविद्या गांठ।
साहिब दर पौंहचे नहीं, जम जौंरा ले बांट।। ४६।।
गरीब, भेष भलाई ना लहैं, धरैं सांग सुख नांहि।
जिस पैंडे सतगुरु गये, तिस पैंडे नहीं जांहि।। ५०।।
गरीब, भेष विटंबी मस्करे, भक्ति भाव हित नांहि।
धामा दे भिक्षा लई, घूर चूर कर खांहि।। ५१।।
गरीब, राजद्वार न जाईये, सुन चेला याह शीख।
खात भजन में भंग होय, रक्त स्वरूपी भीख।। ५२।।
गरीब, राजद्वार न जाईये, लागै मोटा पाप।
खात भजन में भंग होय, ज्यूं डंक मार्‍या सांप।। ५३।।
गरीब, डिंभ करें डूंगर चढ़ै, अंतर झीनी झूल।
जग जानें बंदगी करै, बोवै शूल बबूल।। ५४।।
गरीब, हिंदू हदीरे पूजहीं, मुसलं पूजें घोर।
दोऊ दीन धोखे पड़े, पापी कठिन कठोर।। ५५।।
गरीब, हिंदू तो देवल बंधे, मुसलं बंधे मसीत।
साहिब दर पौंहचे नहीं, चिणी भ्रम की भीत।। ५६।।
गरीब, षट दल दोनूं दीन की, भली विगूती बात।
मैं मेरी के कारनै, खाई जम की लात।। ५७।।
गरीब, षट दल होनूं दीन की, दरगह में नहीं साख।
बिना बंदगी भूत है, क्या कौड़ी धज लाख।। ५८।।
गरीब, षट दल दोनूं दीन का, दिल में दोष न धार।
सतगुरु का कोई एक है, जमका सब संसार।। ५६।।
गरीब, षट दल दोनूं दीन की, भई चौपटे चूक।
शीश पीट सुवा चल्या, सेया सिंभल रूख।। ६०।।
गरीब, घोर गुमज कूँ पूजते, दोनूं दीन गंवार।
पत्थर परमेश्वर कहै, बिसरे सिरजनहार।। ६१।।
गरीब, चौरासी में जात हैं, घोर कुण्ड नहीं छूट।
बिना बंदगी ना बचै, जुगन जुगन जम लूट।। ६२।।
गरीब, रिध्दि रसायन रोग सब, बिना भक्ति सब सूल।
भ्रम कर्म कंटक खड़े, यौही काल का मूल।। ६३।।
गरीब, अधम उधारन संग है, करि प्रतीत पिछान।
हिरदे माथे की गई, पूजै जड़ पाषाण।। ६४।।
गरीब, चेतन सेती ओलने, जड़ सेती है नेह।
नर साहिब की भक्ति बिन, तू धरि है जड़ देह।। ६५।।
गरीब, जड़ कूँ जूनी पूजता, जड़ जूनी नहीं हेत।

सो नर निश्चय कीजिये, बागड़ थल के प्रेत।। ६६।।
गरीब, कुटिल बिटंबी इष्ट है, बैठ्या फूटी नाव।
अधर धार मध्य भँवर है, डूबे सुधां मलाह।। ६७।।
गरीब, भूल गये जगदीश कूँ, पत्थर कूँ कहि राम।
यौह पाहन गल बांधिया, झूठा इष्ट बेकाम।। ६८।।
गरीब, पाहन खंभा प्रगटे, म्हैंस सींग सत भाव।
उनके दिल में एक थी, तुम्हरे दुबिध्या भाव।। ६९।।
गरीब, तापिया लोदिया कूँ मिले, जाके भक्ति न भाय।
साच मते कर करद है, बांधि ल्याया है ताहि।। ७०।।
गरीब, सकल रमैया रमि रह्या, बन बसती सब ठाम।
एक पाहन में क्या कहै, अष्टकुली सब धाम।। ७१।।
गरीब, जम का जहड्या जीव है, मन माया का पूत।
भाव भक्ति समझें नहीं, लगि गये भैरों भूत।। ७२।।
गरीब, मन माया के ख्याल में, भ्रम रह्या संसार।
जिस कूँ तू अपना कहै, सो तेरा नहीं गंवार।। ७३।।
गरीब, तन मन तेरा है नहीं, क्यूं कर होय संसार।
उलट अपूठी बहैगी, अपनी ही तरवार।। ७४।।
गरीब, तन मन तेरा है नहीं, धन जोबन सब झूठ।
खेत जिन्हों के हाथ है, जिन गही नाम की मूठ।। ७५।।
गरीब, जा दिन तन मन था नहीं, नहीं माया नहीं मूल।
बुद्धि वेली नहीं वासना, नहीं गंध नहीं फूल।। ७६।।
गरीब, ठीक ठिकाना नहीं था, नहीं हंस नहीं बंस।
मन माया काया नहीं, कित रहते परमहंस।। ७७।।
गरीब, कौन तुम्हारा लोक है, कौन तुम्हारी जात।
क्या ल्याये कहि दीजिये, कहा चलेगा साथ।। ७८।।
गरीब, सुंन मंडल सतलोक हैं, परमहंस है जात।
भक्ति ल्याये कहि दीन्ही, नाम चलैगा साथ।। ७९।।
गरीब, भवसागर के जीव कूँ, दीन्हा हम उपदेश।
उलट मुरीद बखान हीं, चालो हमरे देश।। ८०।।
गरीब, कुटिल बचन कूँ छाडि दे, कह्या हमारा मान।
महत लोक पर ले चलै, जहां नहीं शशि भान।। ८१।।
गरीब, जा दिन तेरे क्या हुता, जदि गर्भ बसेरा लीन।
ऊंधमुखी तन शीश था, नहीं दुनी जहां दीन।। ८२।।
गरीब, सुंन संपट में झूलता, जपता अजपा जाप।
शब्द संदेशा मान ले, अब क्यूं करता पाप।। ८३।।

गरीब, रुधिर लपेटा गात था, तन मन धरे न धीर।
उस साहिब कूँ याद कर, जिन जल से किया शरीर।। ८४।।
गरीब, रचनहार रचना रची, धन्य जगदीश दयाल।
तन मन सौंज समारि करि, दिया नाम बंदगी माल।। ८५।।
गरीब,रचनहार रचना रची, सुरति सिष्टि ल्यौ लीन।
एक शब्द में सब किया, पांच तत्त गुण तीन।। ८६।।
गरीब, कारीगर कर्तार है, सिरजे पिण्ड अरु प्राण।
भुवन चतुरदश लोक सब, धरे जिमी असमान।। ८७।।
गरीब, कारीगर कर्तार है, कित से संजम कीन।
अष्ट कँवल दल गैब गति, सुरति निरति दम लीन।। ८८।।
गरीब, कुटिल बचन कूँ छाड़ि दे,रचनहार कूँ जान।
उस कादिर कूँ याद कर, जिन तन मन दीन्हा दान।। ८९।।
गरीब, जठराग्नि से राखिया, भक्ति हेत के काज।
भूलि गया जगदीश कूँ, मन लोचत है राज।। ९०।।
गरीब, काहे कूँ कल्पत फिरै, करि सेवा निःकाम।
मन इच्छा फल देत हैं, परै धनी स्यौं काम।। ९१।।
गरीब, रहनी होय सो रहेगी, जानी होय सो जाय।
कलपै कारन कौन है, सतगुरु करैं सहाय।। ९२।।
गरीब, तेरा तुझ में है धनी, बाहर भ्रम न भूल।
अचल चलैगी धरतरी, करि चलने का सूल।। ९३।।
गरीब, जोवनहार अतीत है, पिण्ड प्राण सब साज।
अचल अलेख अनादि है, जाका निश्चल राज।। ९४।।
गरीब, पारब्रह्म कूँ सेय ले, मत पूजै पाषाण।
गांठ बंधै नहीं तास की, चीन्हों रमता राम।। ९५।।
गरीब, सो ठाकुर टांकी घड़्या, लगे हथोड़े शीश।
जिस कूँ हम पूजैं नहीं, पीतल का जगदीश।। ९६।।
गरीब, सो ठाकुर टांकी घड़्या हमरे दोष न भाव।
जड़ सेती चेतन भला, बाल भोग कूँ खाय।। ९७।।
गरीब, सो ठाकुर किस काम का, सेवक से नहीं बात।
नाच कूद सेवक मरै, बोलै दिवस न रात।। ९८।।
गरीब, यौह ठाकुर पूजूं नहीं, पत्थर पीतल धात।
इष्ट भृष्ट है तास का, जम घालत है घात।। ९९।।
गरीब, कूट काट आरण धम्यां, चेतन चीत्या अंग।
हमरा ठाकुर और है, सुनो शब्द प्रसंग।। १००।।
गरीब, कूट पीट आरण धम्यां, टांकी लागी अंग।

औह ठाकुर एक और है, चरण सहंस मुख गंग।। १०१।।
गरीब, पत्थर पीतल परखि ले, जड़ है जाका अंग।
बोलन हारा जगतगुरु, जुगन जुगन सतसंग।। १०२।।
गरीब, शालिगराम शिला नहीं, तेज पुंज निज नूर।
बिछरै नहीं बिसंभरं, सकल लोक भरपूर।। १०३।।
गरीब, सोहं शालिगराम है, बाल भोग नित खाय।
शून्य देवल में रहत है, संपट नहीं समाय।। १०४।।
गरीब, सोहं शालिगराम है, कीड़ी कुंजर एक।
च्यार बरण षट दर्शन से, न्यारा निश्चल देख।। १०५।।
अलख अनाहद अविगतं, **दास गरीब** दयाल।
शून्य सरोवर हंस मन, चुगि है मुकता लाल।। १०६।।

अथ मध्य का अंग

गरीब, मध्य मौले का मुलक है, जहां न जाता कोय।
जो परस्या सो क्या कहै, अचरज देख्या लोय।। १।।
गरीब, मध्य मौले सांईं बसै, कँवल निरंतर बास।
पातालों पूर्ण पुरुष, सुमरथ स्वर्ग निवास।। २।।
गरीब, मध्य मुरारी रम रह्या, मौज कहीं नहीं जाय।
व्यापक ब्रह्म विसंभरं, रहता दिल के भाय।। ३।।
गरीब, मध्य मौले का महल है, गगनि खुलासा ख्याल।
सब जग संसा शोक है, निरखि परखि नहीं लाल।। ४।।
गरीब, औघट घाटी अगम पंथ, अलल पंख का बास।
कोई न जाने जनम गति, करे पियाना दास।। ५।।
गरीब, औघट घाटी महल की, चिहर बंध है झीन।
ब्रह्म द्वारा सांकड़ा, नहीं पैठत मन मीन।। ६।।
गरीब, औघट घाटी महल की, ब्रह्म रंध्र है बांक।
सहंस मुखी सत गंग है, पंडित फूटी आंखि।। ७।।
गरीब, औघट घाटी अनंत मघ, आगै द्वारा एक।
ब्रह्मरंध्र धारा छुटै, बरषत आप अलेख।। ८।।
गरीब, औघट घाटी अर्श मठ, जहां अविगत का धाम।
ज्ञानी ज्ञाता ना लखै, कहां पंडित का काम।। ९।।
गरीब, घट में औघट घाट है, सुरति निशरनी लाय।
सतगुरु मिले तो पाईये, पंडित थाके गाय।। १०।।
गरीब, औघट घाटी अगमि दर, ऊंची भूमि बिचार।
केते पारिष फिर गये, पाया नहीं द्वार।। ११।।

गरीब, औघट घाटी मदन मुख, पूर्व पश्चिम घाट।
और कहो को पाय है, सनकादिक जोहे बाट।। १२।।
गरीब, सनकादिक सेवन करै, अविगत ब्रह्म द्वार।
गंग परे शिव शीश परि, चरण कमल परछार।। १३।।
गरीब, गंग छुटी सत लोक से, आई शिव के धाम।
सनक सनंदन तप करै, महत लोक निहकाम।। १४।।
गरीब, सीनां कुंभ कमंडलं, सनकादिक पर सेव।
चरण गया जदि बलि छले, गंग जटा महादेव।। १५।।
गरीब, शिव कूँ शीश निवाईयां, ढुर्‌या कमंडल नीर।
चरणोदक परिछाल करि, बैठे मुनिजन तीर।। १६।।
गरीब, औघट घाटी नाद सुर, कुंभ भरै भरपूर।
ब्रह्म द्वारा जदि खुलै, देखे नूर जहूर।। १७।।
गरीब, जिस दगड़े दुनियां गई, पंडित पीर अनंत।
सो हमरे किस काम का, पैर धरै नहीं संत।। १८।।
गरीब, दोजख दगड़ा दुनी का, पंडित खैंच मुहार।
भौसागर भुगते सदा, करम कुसंग बिगार।। १६।।
गरीब, जिस दगड़े पंडित गये, शेख सय्यद मुल्लान।
काजी कूप पड़ंत हैं, पढ़ि पढ़ि हर्फ कुरान।। २०।।
गरीब, उस पैंडे पग द्यौं नहीं, दोजख दगडा दूत।
औघट पंथ कबीर का, जहां हम धरिया सूत।। २१।।
गरीब, घट अंदर गुरु ज्ञान है, घट अंदर गुण मूल।
जहां कबीरा पंथ है, तहां बज्र की शूल।। २२।।
गरीब, शूलों ऊपरि फूल हैं, राय बेल महकंत।
औघट घाट कबीर का, कोई न जानै संत।। २३।।
गरीब, सुधि नहीं पिंड प्राण की, कथनी अगमि अगाध।
भाट कवि ज्यौं कहत हैं, उस दरगह नहीं दाद।। २४।।
गरीब, स्वर्ग निशरनी लगि रही, पंडित चढ़े न कोय।
कमंद चढ़े गुरु ज्ञान से, जा धड़ शीश न होय।। २५।।
गरीब, शुन्य सलहली सेज परि, सतगुरु सत्य कबीर।
कोटि कटक बौह भारथी, मुनिजन धरैं न धीर।। २६।।
गरीब, ताला बेली लगि रही, हम देखन का चाव।
पौंहचेंगे सो कहेंगे, योजन अनंत चढ़ाव।। २७।।
गरीब, सिखर समाधी सिखर घर, सिखर सरोवर न्हान।
मुनिजन महल न पाव हीं, संतों बाट असान।। २८।।
गरीब, परचे बोलै पीर है, अजमति आदर नेह।

नाम रत्तै सो और हैं, संत लक्षण नहीं येह।। २९।।
गरीब, नाम रत्ता अविगत मता, सोहं सुरति समूल।
जाके आगे वर्ष हीं, शुन्य सरोवर फूल।। ३०।।
गरीब, दोजख बहिश्त न वहां हैं, नहीं स्वर्ग नर्क संसार।
पिंड ब्रंह्मड दोऊ नहीं, येती सिंध से न्यार।। ३१।।
गरीब, केते पारिख जौहरी, खोजत भये हैरान।
भक्ति मौहला संतई, सतगुरु देवै दान।। ३२।।
गरीब, सतगुरु जाने सकल शुद्ध, फिर जानत हैं संत।
साहिब चाह्या होत है, अजर अमर धंनि कंत।। ३३।।
गरीब, अविगत की गति को लखै, गति की गति हैरान।
उपजे की कीमत नहीं, ऐसा खेल अमान।। ३४।।
गरीब, तन सीना कित से हुवा, रचनहार रघुबीर।
चार तत्त ताबे सही, जल तत्त आप शरीर।। ३५।।
गरीब, मन हंसा तन सरवरं, उड़ि उड़ि जो है धाम।
सूभर होय तहां संचरै, सूका कौने काम।। ३६।।
गरीब, स्वर्ग समूला सिंध सर, जापर लगी जिहाज।
जो बैठे सो पार है, सतगुरु साज्या साज।। ३७।।
गरीब, झीना सरवर झीन मग, झीना खेवनहार।
झीनी नौका नाम है, झीनें उतरै पार।। ३८।।
गरीब, मोटे मग नहीं पावहीं, सूझत है नहीं देश।
सुरति सुंदरी सिकलि करि , चरण कमल प्रवेश।। ३९।।
गरीब, बांका पड़दा बांक पुर, बांकी सुरति समोय।
पंडित घाट न पाव हीं, ज्ञान ध्यान सब खोय।। ४०।।

अथ सारग्राही का अंग

गरीब, साचा सतगुरु जो मिलै, साचा सेवक होय।
साचा जाके शर लगै, पार उतर है सोय।। १।।
गरीब, सत भाखे सत बोलते, सत ही सत बिहाय।
जो सतगुरु के संग चलै, पौंहचे बेपरवाह।। २।।
गरीब, सत का सुमिरन कीजिये, सत का धरिये ध्यान।
सत की माला फेरिये, सत के खान अरु पान।। ३।।
गरीब, सत का शालिग सेव रखि, सत की पूज पुजंत।
सत की पाती तोरिये, सत सुमरथ भगवंत।। ४।।
गरीब, सत का सुमिरन कीजिये, सत की सौज बनाय।
सत का अर्पण कीजिये, सत का घंट बजाय।। ५।।

गरीब, सत का चौका दीजिये, सत का कलशा कुंभ।
सत के जल हर न्हाईये, हर हर हर आरंभ।। ६।।
गरीब, सत की धोती कीजिये, सत का तिलक बनाय।
सत का चंदन चर्चिये, सत की खोलि चढ़ाय।। ७।।
गरीब, सत सुकृत प्रणाम करि, सत सुकृत संजोग।
सत सुकृत की आरती, सत सुकृत के भोग।। ८।।
गरीब, सत सुकृत मुंदरा पहरिये, सत सुकृत के जोग।
सत सुकृत सेली सुरति, कटै सकल सब रोग।। ६।।
गरीब, सत सुकृत की तूंबरी, सत सुकृत बैराग।
सत सुकृत की फाहुरी, सत सुकृत के दाग।। १०।।
गरीब, सत सुकृत की सुमरनी, सत सुकृत का साज।
सत सुकृत आसन बंधे, सत सुकृत का राज।। ११।।
गरीब, सत सुकृत धूनी तपे, सत सुकृत का शीन।
सत सुकृत मुरली बजे, सत सुकृत की बीन।। १२।।
गरीब, सत सुकृत जगि कीजिये, सत सुकृत भंडार।
सत सुकृत मेला भर्‌या, सत सुकृत जौंनार।। १३।।
गरीब, सत सुकृत की जटा रख, केश बधायन खूद।
माटी में मिल जायगा, माटी का औजूद।। १४।।
गरीब, सत सुकृत का बोलना, सत सुकृत से मौन।
सत सुकृत चर्चा करो, सत सुकृत कुछ होन।। १५।।
गरीब, सत सुकृत बाणी पढ़े, सत सुकृत समाधि।
सत सुकृत से मेल है, सत सुकृत आदि अनादि।। १६।।
गरीब, सत सुकृत ही दान है, सत सुकृत ही जाप।
सत सुकृत ही भजन है, सत सुकृत ही लाप।। १७।।
गरीब, सत सुकृत ही मुक्ति है, सत सुकृत दिल राख।
सत सुकृत कूँ समझि ले, सत सुकृत ही भाख।। १८।।
गरीब, सत सुकृत ही आप है, सत सुकृत ही जाप।
सत सुकृत में मिल रहो, सत सुकृत गरगाप।। १६।।
गरीब, सत सुकृत में बैठना, सत सुकृत ही ऊठ।
सत सुकृत निज माल है, सत सुकृत कूँ लूट।। २०।।
गरीब, सत सुकृत उर धरि लिया, जाके मोटे भाग।
सत सुकृत छाडे नहीं, जन्म पुरबली लाग।। २१।।
गरीब, सत सुकृत सौदा करो, सत सुकृत गहि लेह।
सत सुकृत नहीं छाडिये, याह माटी की देह।। २२।।
गरीब, सत सुकृत ही हंस है, सत सुकृत परमहंस।

सत सुकृत गहि राखिये, ना जहां होय विधंस।। २३।।
गरीब, सत सुकृत कूँ बीनती, सत सुकृत प्रणाम।
सत सुकृत जीवन मूल है, सत सुकृत कुरबान।। २४।।
गरीब, सत सुकृत से पाइये, नर नारायण देह।
सत सुकृत नहीं छाडिये, यह सौदा दर लेह।। २५।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, याह काया ब्रह्मादि।
सनकादिक से लोच हीं, नारद मुनि से साध।। २६।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, लोक दीप की बाट।
सत सुकृत नहीं छाडिये, सत सुकृत से साट।। २७।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, लोक दीप की राह।
यौह सौदा कर लीजिये, महंगा सोहंगा भाव।। २८।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, लोक दीप की राह।
सत सुकृत नहीं छाडिये, भावे सरबस जाव।। २९।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, लोक दीप की गैल।
सत सुकृत सौदे बिना, नर से कीजे बैल।। ३०।।
गरीब, सत सुकृत से पाइये, लोक दीप की गैल।
सत सुकृत नहीं छाडिये, ना नर कीजे बैल।। ३१।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, लोक दीप का पंथ।
सत सुकृत नहीं छाडिये, साधु पुकारैं संत।। ३२।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, लोक दीप का राज।
जो सत सुकृत उर धरैं, कदे न बिगरै काज।। ३३।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, मन इच्छा फल फूल।
जो सत सुकृत उर धरै, हंस बहिश्त में झूल।। ३४।।
गरीब, सत सुकृत से पाईये, जप तप ज्ञान अपार।
शील संतोष विवेक सब, सत सुकृत की लार।। ३५।।
गरीब, सत सुकृत से होत हैं, पांचौं का प्रबोध।
सत सुकृत जीवन मूल है, सत सुकृत कूँ शोध।। ३६।।
गरीब, सत सुकृत से होत है, यह मन चंचल लेश।
सत सुकृत नहीं छाडिये, यौह सत सुकृत उपदेश।। ३७।।
गरीब, सत सुकृत से होत है, दुर्मति दामनि गीर।
सत सुकृत नहीं छाडिये, सत सुकृत कर शीर।। ३८।।
गरीब, सत सुकृत से होत है, यौह मन चंचल थीर।
सत सुकृत नहीं छाडिये, सतगुरु कहैं कबीर।। ३९।।
गरीब, सत सुकृत से जात हैं, मन के कोटि विकार।
सत सुकृत नहीं छाडिये, सत सुकृत निज सार।। ४०।।

गरीब, सत सुकृत से पाईये, सर्व कला अवधूत।
सत सुकृत से डरत हैं, धर्मराय के दूत।। ४१।।
गरीब, सत सुकृत ही बंदगी, सत सुकृत ही ध्यान।
सत सुकृत गहि राखिये, सत सुकृत ही जान।। ४२।।
गरीब, सारे सार रहेगा संतो, जागा झूठ बिलाई।
आदि अंत मध्य मूल मिलावा, सत सत राम दुहाई।। ४३।।
गरीब, सारे सार रहेगा संतो, सार शब्द कूँ चीन्ह।
सत सुकृत से सौदा कीजे, रहे हंस ल्यौलीन।। ४४।।
गरीब, कलि विष कुशमल कौन है, कहां पाप की पीठ।
सारे सार रहेगा संतो, पड़सी झूठ अँगीठ।। ४५।।
गरीब, सारे सार समझि ले संतो, सारे सार बिचार।
सार शब्द उर धरि लिया, झूठ मिलाया छार।। ४६।।
गरीब, सार ग्राही संत हैं, जाके हिरदे सार।
सार शब्द में मिल रहै, दूजा नहीं लगार।। ४७।।
गरीब, सार ग्राही जो लखो, सो चीन्हेगा सार।
झूठ झटक सी चौपटे, रहै निरंतर धार।। ४८।।
गरीब, गण गंधर्व गिनती नहीं, सनकादिक नहीं संग।
तेतीसौं तकि मारिया, झूठ कपट प्रसंग।। ४९।।
गरीब, सार समुंद्र न्हाईये, झूठा मैल मलीन।
सारे सार रहेगा संतो, जायगा झूठ कुलीन।। ५०।।
गरीब, सारे नादू पूरता, सारे बाजैं तूर।
सार शब्द की मांड है, सार बिना सब धूर।। ५१।।
गरीब, सारे ब्रह्मा विष्णु हैं, सारे शंकर शेष।
सारे सनकादिक लखो, सार शब्द प्रवेश।। ५२।।
गरीब, सारे चंद्र सूर हैं, सारे धरणी धौल।
सारे कूरंभ कच्छ हैं, पड़ी झूठ की रौल।। ५३।।
गरीब, चंद्र सूर सब नूर हैं, नूर धरनि आकाश।
कच्छ मच्छ सब नूर हैं, नूर शेष कैलाश।। ५४।।
गरीब, जो बोले सो बिस्तर्या, घट घट नाना भांति।
सरगुण निर्गुण क्या कहै, एक जाति एक पांति।। ५५।।
गरीब, एक तत्त के पांच हैं, पांच तत्त के आठ।
आठ तत्त का एक है, चल सौदागर हाट।। ५६।।
गरीब, एक तत्त के नौ बने, नौ तत्त के चौबीस।
चौबीसौं का एक है, सुमरि शोध जगदीश।। ५७।।
गरीब, एक तत्त का सकल है, सकल तत्त का एक।

सो तो पूर्ण ब्रह्म है, तन धारै नहीं भेष।। ५८।।
गरीब, दस इन्द्री औजूद तन, सो तो कहिये जीव।
पांच पचीसौं रहित है, मेरा सांई पीव।। ५९।।
गरीब, बोलै डोलै रमत है, गुण इन्द्री की गैल।
सो तो कृत्रिम जीव है, धर्मराय की खैल।। ६०।।
गरीब, अचल अनाहद अरस में, है सो गहर गंभीर।
गुण इन्द्री से रहित है, ना तन धरै शरीर।। ६१।।
गरीब, नौ द्वारे प्रकाशियां, दसमें सूं ना भेव।
साचा सदगुरु जो मिलै, पार लंघावै खेव।। ६२।।
गरीब, दस द्वारे का देहरा, मध्य एक गुंमज अनूप।
जा के अंदर आरती, बैठे सत्त स्वरूप।। ६३।।
गरीब, दिल अंदर बैराग है, बाहर भेष न लेह।
गुझ बीरज जानें नहीं, छार लगावै देह।। ६४।।
गरीब, दिल अंदर नदिया बहै, दिल अंदर दरियाव।
दिल अंदर ही न्हात है, दिल अंदर प्रवाह।। ६५।।
गरीब, दिल अंदर ही दाग है, दिल अंदर ही मोख।
दिल अंदर प्रबी लहै, जिन कूँ कैसा दोष।। ६६।।
गरीब, दिल ही अंदर द्वारका, दिल अंदर हरिद्वार।
दिल में इन्द्र दौन हैं, दिल ही मांहि केदार।। ६७।।
गरीब, गंगा यमुना सरस्वती, दिल ही अंदर देख।
जगन्नाथ जगदीश हैं, पूर्ण ब्रह्म अलेख।। ६८।।
गरीब, जाता मन गहि राखिये, उलटि उलंघ समाय।
त्रिगुटी छाजे बैठ करि, लीजे महल चढ़ाय।। ६९।।
गरीब, जे मन गया तो जान दे, मनसा कूँ गहि लेह।
फिर घर द्वारे आयसी, दीखे पाकरि लेह।। ७०।।
गरीब, जे मन मंजन कीजिये, तो नहीं लगै लगार।
सैल करै तिहु लोक में, नहीं कर्म का भार।। ७१।।
गरीब, जित सेती मन आईया, जा दर उलट समाय।
अनंत लोक में खेलता, भूलि रह्या घर दाय।। ७२।।
गरीब, सारग्राही गलत है, जे दुःख परै अनंत।
तन मन धन सब जात हैं, बिसरै ना भगवंत।। ७३।।
गरीब, दूनें तीनें चौगुनें, ऐसा लाहा लाह।
टोटा घर ल्यावे नहीं, सामें बनजे शाह।। ७४।।
गरीब, दूनें तीनें चौगुनें, ऐसा लाहा होय।
टोटा घर ल्यावै नहीं, शाह कहावै सोय।। ७५।।

गरीब, दूनें तीनें चौगुनें, ऐसी बालदि लादि।
सारग्राही संत है, यौह सौदा है आदि।। ७६।।
गरीब, दूनें तीनें चौगुनें, याह बालदि भरि लेह।
सारग्राही जानिये, जो औरे लाहा देह।। ७७।।
गरीब, दूनें तीनें चौगुनें, याह बालदि भरि हांक।
सारग्राही जानियो, जो सतगुरु बोलै साख।। ७८।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, अदली साहूकार।
जुगन जुगन सौदा करे, बनजी बारंबार।। ७६।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, जिन के माल अजोख।
जत जिहाज उधार है, संतो सौदा रोक।। ८०।।
गरीब, मन माली के बाग में, अजब फूल गुलजार।
शील संतोष विवेक है, चौथा ज्ञान जुहार।। ८१।।
गरीब, मन माली के बाग में, देखे फूल सुरंग।
क्षमा अकीन डिढ लग रहै, कदे न होंहि अभंग।। ८२।।
गरीब, दया धर्म दो मूल हैं, ता फल फूल अनंत।
सारग्राही जानियें, डिगे आदि न अंत।। ८३।।
गरीब, मन माली के बाग में, अजब केवड़ा लील।
भक्ति हिरंबर जानिये, जा घट व्याप्या शील।। ८४।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, तन मन मंजन कीन।
कुबुद्धि कुटिल कूँ काटि हैं, रहे नाम रति लीन।। ८५।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, राखत है दिल पाख।
दुर्मति दूजी ना धरै, साहिब के गुण भाष।। ८६।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, निर्मल निश्चल ऐंन।
सुरति निरति से नाम ले, ऐसा सौदा गैंन।। ८७।।
गरीब, ब्रह्मादिक पावै नहीं, शंकर शेष गणेश।
ऐसा नीका नाम है, सार ग्राही पेश।। ८८।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, बसते अरस लिलाट।
महरमि सूं गुझ बंदगी, हदि के सूं नहीं साट।। ८६।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, बसते अरस अमांन।
बेहदि केसूं बंदगी, हदि के कूँ दे जांन।। ६०।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, बसते अरस अमांन।
बेहदि के सूं बंदगी, हदि के सेती आंन।। ६१।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, चीन्ह्या सार सुरंग।
बेहदि के तो लाल है, हदि के पर नहीं रंग।। ६२।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, चीन्ह्या सार सलेश।

बेहदि के सूं बंदगी, हदि के ना उपदेश।। ९३।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, सहदानी सहदान।
बेहदि के सूं बंदगी, हदि का मानस श्वान।। ९४।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, बाटत है बफरीद।
बिन चिसमौं दीदार करि, देख दीद बरदीद।। ९५।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, सिंध सुमरनी फेर।
मन की माला मुकट धर, ऐसा सुमिरन हेर।। ९६।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, शब्द सिंध सैलान।
गगन कुंज में आरती, देखत नहीं जिहांन।। ९७।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, करते जगि अश्वमेध।
पुराण अठारह कथत हैं, रटते चारौं वेद।। ९८।।
गरीब, सारग्राही संत हैं, निर्मल नजर अलेख।
तन मन से तारी लगी, बहुरि न धारैं भेष।। ९९।।
सारग्राही संत हैं, घालत हैं शर तीर।
दास गरीब की बंदगी, सतगुरु मिले कबीर।। १००।।

अथ उपदेश का अंग

गरीब, मूल कला उपदेश है, जे कोई समझे जीव।
बिन उपदेश न पाईये, अविगत सांईं पीव।। १।।
गरीब, नारद के उपदेश तैं, गौरज लागी ढिग।
जो करि है सो पाई है, क्या हंसा क्या बग।। २।।
गरीब, नारद के उपदेश तैं, गौरज लागी ढिग।
शंकर से सुर ज्ञान कूँ, भस्मागिरि लिये ठग।। ३।।
गरीब, अपनी करनी पाय है, कहां पिता कहां पूत।
हिरणाकुश तो हरि छले, प्रहलाद भक्त अनुभूत।। ४।।
गरीब, शुकदे के तो शर लग्या, गौरज देते ज्ञान।
संख सुमेद न पटतरे, एक नाम प्रवान।। ५।।
गरीब, बिन उपदेश अचंभ है, क्यूं जीवत हैं प्राण।
भक्ति बिना कहां ठौर है, नर नाहीं पाषाण।। ६।।
गरीब, बिन उपदेश अधम गति, कहां रावण की ठौर।
मूल मंदोदरि मिल रही, उर में अजपा शौर।। ७।।
गरीब, कण्टक जीव कुबुद्धिया, ना उपदेश लगंत।
सार शब्द सोभे नहीं, निंदे सांईं संत।। ८।।
गरीब, उपदेशी अनरागिया, जाके चरण जुहार।
नाम रते निर्मल कला, जा कै किसा लगार।। ९।।

गरीब, सरबस मूलं संग है, सरबस मूलं न्यार।
उपदेश कला ते पाईये, समर्थ सिरजनहार।। १०।।
गरीब, अविगत पूर्ण ब्रह्म का, अनमीता कर जाप।
सुरति सुंन में थीर करि, बिन रसना गुण लाप।। ११।।
गरीब, अगम कला उपदेश है, जे कोई होय मुरीद।
तीन रोज ज्ञानी छिके, वर्ष छत्तीस फरीद।। १२।।
गरीब, एकै सतगुरु सकल में, शब्द अतीत सलौन।
पीर मुरीदां दिल मिलें, ज्यूं पानी गलि लौंन।। १३।।
गरीब, पीर मुरीदां आशकी, पाख ध्यान प्रवेश।
गलत रहें गुरु ज्ञान में, रात्ते सदा हमेश।। १४।।
गरीब, पीर मुरीदां परख है, रंगे अगम पद रंग।
भर्माया भ्रमे नहीं, सतगुरु का सत्संग।। १५।।
गरीब, पीर मुरीदां सालिकां, राजिक के दरबार।
कसर नहीं जा बीच है, ज्यूं लोहा घन सार।। १६।।
गरीब, कूटि काटि सौ ताव दे, है खेरी का लोह।
मिहर मौहबति ना करे, जासे कैसा मोह।। १७।।
गरीब, कुटिलाई कूँ काटि करि, काढे घण के भाय।
सतगुरु सिकलीगर सही, देवै अनगिन ताव।। १८।।
गरीब, कूटि काटि एकट्ठा करै, अहरणि घण की चोट।
तोड़ि ताड़ फिर फिर घड़ै, काढत है सब खोट।। १६।।
गरीब, कूटत ही कसकै नहीं, देवै ताव अनंत।
मिश्री मांसो बिकत है, ऐसे ताईये संत।। २०।।
गरीब, सौ जातो के लोह कूँ, कुटि एकट्ठा कीन।
सतगुरु सिकलीगर दोऊ, ये जग में प्रवीन।। २१।।
गरीब, खेरे की मिश्री घड़ी, सहंस ताव कसीस।
जंती मांहि कर काढ़हीं, सो पूर्ण जगदीश।। २२।।
गरीब, सिकलीगर कूँ सिकल कर, पानी भल हल काढ।
लोहा नाम पलट करि, मिश्री भंजन हाड।। २३।।
गरीब, कुटिलाई कूँ कूट ही, ब्रह्म अग्नि का ताव।
अहरनि अनहद पर धरें, ज्ञान हथौड़ा लाव।। २४।।
गरीब, ऐसा सतगुरु जो मिलै, तो खेवा होय पार।
अरस परस प्रहलाद ज्यूं, पुनरपि जन्म निवार।। २५।।
गरीब, इला पिंगला उलटि करि, सुष्मणा धात जलाय।
सिंडासी सुर बंध करि, चित्त घन चोट लगाय।। २६।।
गरीब, यौह उपदेश अगम कला, तत्तवेत्ता सुर बंध।

धमनी ध्यान उलटि करि, मेला सुष्मणि सिंध।। २७।।
गरीब, सुष्मणि सुरति सिंधु घर, शब्द समाना पिण्ड।
मन इच्छा बिचरंत हैं, सकल द्वीप नौखंड।। २८।।
गरीब, ग्यारस बारसि त्रयोदशी, चौहशि चौका दीन।
पूनम परमानंद घर, जहां हंस कर लीन।। २९।।
गरीब, यौह निज व्रत बैराग है, वैष्णो धर्म विशेष।
परमहंस प्रणाम करि, परसो पुरुष अलेख।। ३०।।
गरीब, सतगुरु चिसम्यौं देख करि, मारग मुरशिद पीर।
सों करनी एक पलक में, नाव चलैं बिन नीर।। ३१।।
गरीब, सतगुरु नैनों निरखि करि, पारस पत्थरी मेल।
नजर झरोखें जोड़ ले, अणी अनाहद खेल।। ३२।।
गरीब, हाका हुकुम हजूर रहो, अणी जुड़ंता शूर।
कमंद कटारी से लड़ै, जदि मुख बरषे नूर।। ३३।।
गरीब, ब्रह्म दिशा हर दम रहै, हिरसि करै नहीं हैफ।
पद का पोसत पीव हीं, अमल अनाहद कैफ।। ३४।।
गरीब, अणी जुड़े झूंझार है, सावंत संत सुभट।
लावैं सेल शब्द सति, खूहणि जुड़ै अरठ।। ३५।।
गरीब, साके सिकबंधी सही, सतगुरु बारंबार।
अणी जुड़े मुचते नहीं, लाजे बिरद तुम्हार।। ३६।।
गरीब, उपदेशी अजपा जपें, नाम निरंतर मूल।
आज्ञा मांहि रहत हैं, शब्द न करै अदूल।। ३७।।
गरीब, उपदेशी महकंत हैं, कँवल खिलत हरि प्रीत।
संसा सोग न तास के, याह उपदेशी रीत।। ३८।।
गरीब, झीना तकिया झीना मन, झीन सिज्या वाह सैल।
सतगुरु के उपदेश ते, हंसा पावैं गैल।। ३९।।
गरीब, झीने भौंरा गूंजही, झीन पौहप मकरंद।
सतगुरु के उपदेश ते, हंसा लेत सुगंध।। ४०।।
गरीब, सालिग सिरजनहार कूँ, हर दम कर ले याद।
ज्ञान कंमठा गुरु दिया, घालत हैं शर सांध।। ४१।।
गरीब, सालिग सिरजनहार हैं, औह राजिक रहमान।
मीरां मालिक मिहरबांन, सुलताना सुलतान।। ४२।।
गरीब, पाख नूर भरपूर हैं, खालिक खेल अपार।
पिंड प्राण कूँ साजही, जै जै सिरजनहार।। ४३।।
गरीब, धन्य सांईं समर्थ तूं, जो चाहै सो कीन।
एक समुंद्र संख जीव, कोई हंसा कोई मीन।। ४४।।

गरीब, नाना वर्ण बनाईयां, लख चौरासी जात।
कर्म कलम से लिख दिया, लेखनि राखी हाथ।। ४५।।
गरीब, धन्य मौले रहमान तूं, कीन्हा अजब बिनान।
अलख पलख दर खलक है, बांध्या सकल बंधान।। ४६।।
गरीब, परमानंद की परख में, है सब सकल जिहांन।
कादर के कीमति सबे, अविगत बे अनुमान।। ४७।।
गरीब, नाम गाम की गंमि नहीं, भिस्ती सब संसार।
दोजख कोई न आसगे, सब चाहें दीदार।। ४८।।
गरीब, दीदार दीवाने देखहीं, इश्कबंद मुसकांहि।
जिन के सिर पर सांईंयां, वे नहीं मांगन जांहि।। ४६।।
गरीब, पलकौं अंदर झड़ लगे, रतनाले हैं नैंन।
पीर मुरीदां परख हैं, समझ बूझि याह सैंन।। ५०।।
गरीब, पाख प्रीतम जिन लख्या, उठत लहरि गुरु ज्ञान।
पूर्ण ब्रह्म प्रकाशियां, क्या उजियारा शशि भान।। ५१।।
गरीब, बेदाना निर्दुंदई, जान्या है जगदीश।
यह उपदेश समूल संग, सतगुरु की बक्शीश।। ५२।।

अथ विश्वास का अंग

गरीब, कहां पिंड कहां प्राण था, कहां इन्द्री मन मूल।
रचनहार कैसे रच्या, जाकूँ पलक न भूल।। १।।
गरीब, सिन्धु बिन्द का साज है, रचन हार प्रवीन।
आदि ॐ अर्धंगनी, सिरजे देवा तीन।। २।।
गरीब, निर्गुण सरगुण दो पखा, मात पिता का साज।
हारी जीती है नहीं, उसी पुरुष कूँ लाज।। ३।।
गरीब, जल की बूंद जमाय करि, साज बनाया सार।
जठराग्नि जलत है, ज्यूं रवि किरन हजार।। ४।।
गरीब, गोलाकार गर्भ बंध्या, रुंड मुंड गरदकार।
समाधान कूँ समझ करि, रचि काढ़े दस द्वार।। ५।।
गरीब, नैंन नाक मुख होठ कंठ, श्रवण समझना ज्ञान।
माटी का पुत्तला पलटि, जामे जोये प्राण।। ६।।
गरीब, त्वचा मांस हाडी गुदा, यौह कंदर्प का गात।
रचनहार विधना पुरुष, धात समोई सात।। ७।।
गरीब, नाडी नाद बंधान करि, जतन बनाया जोर।
धन्य मौले महबूब तूं, दस में अनहद घोर।। ८।।
गरीब, पिंजरा प्रीत बनाईयां, हाफिज सुवटा मांहि।

नौं दस मास उदर रख्या, अमीं महारस खांहि।। ९।।
गरीब, ऊंध शीश ऊर्धों चरण, याह पिछली तकसीर।
कुंभी नरक पठाईयां, जड़िया भ्रम जंजीर।। १०।।
गरीब, धर्मराय की खालसे, कुंभी नरक पड़ंत।
सतगुरु मिलें कबीर से, तो जम जंजीर झड़ंत।। ११।।
गरीब, जूनी संकट जठर गति, सकल पड़े हैं प्राण।
स्थावर जंगम जीव सब, कुंभी नरक पियान।। १२।।
गरीब, सुर नर गण गंधर्व सबै, खेलैं बारमबार।
निर्गुण पिता सरगुण महतारी, अद्या का अधिकार।। १३।।
गरीब, खांन पांन तुझि कूँ दिया, गर्भ कला अनुसार।
क्षीर समुंद्र अरस गति, पोषण प्राण अधार।। १४।।
गरीब, खांन पांन तुझ कूँ दिया, राजिक रिजक संगीत।
तुंही तुंही था गर्भ में, बाहरि दुनी से प्रीत।। १५।।
गरीब, दुनी दिवानी दोजखनी, कहां दुनी से नेह।
जाका तूं विश्वास रखि, जिन दीन्ही तुझ देह।। १६।।
गरीब, नर नारायण रूप हैं, तूं मत जानैं देह।
जे समझे तो समझिलै, खलक पलक में खेह।। १७।।
गरीब, करि विश्वास उजास होय, गर्भ मोचना हंस।
जूंनी संकट मेटि हूँ, बहुरि मिलाऊँ बंश।। १८।।
गरीब, ऊंध कपाली लटकता, औह दिन करिले याद।
जठरा सेती राखिया, ताहि पुरुष कर याद।। १९।।
गरीब, गुण मेटन गदह गति, येता भारथ बंध।
जुगन जुगन रिछपाल है, साखी सूरज चंद।। २०।।
गरीब, अमी महारस देत हैं, उदर बीच अनुपान।
तिस समर्थ की बंदगी, बिसर्या तूं शैतान।। २१।।
गरीब, घोर कुण्ड में घोट करि, लीनी साषि भराय।
सतगुरु साहिब बिसरिया, अब चालें कलि के भाय।। २२।।
गरीब, हैफ किया हरि नाम तजि, भ्रम परे कहीं और।
शुकदेव चौरासी परे, जूंनी भुगती गौरि।। २३।।
गरीब, कर्म बंधना मोक्ष करूं, नाम रटै जो प्राण।
जूंनी संकट ना परे, सतगुरु के प्रवान।। २४।।
गरीब, तन मलूक सूरति घड़ी, उपज्या हित के हेत।
समझ बूझ गुरु ज्ञान ले, बौहरि मिले हैं रेत।। २५।।
गरीब, सूरति मूर्ति सकल सब, अपने ही उनिहार।
साहिब कूँ बंदा किया, भूल्या बारंबार।। २६।।

गरीब, तुंही तुंही तूं करै था, उदर गर्भ के बीच।
अब तूं भूल्या बंदगी, जुग जुग भुगते मीच।। २७।।
गरीब, मृग तृष्णा तोकू लगी, भटकत है दिन रैंन।
थल का जल दीखंत है, एक पलक नहीं चैंन।। २८।।
गरीब, करि विश्वास अकीन रखि, धनी करै सो होय।
त्रिकुटी संजम ध्यान धरि, देख परम पद लोय।। २९।।
गरीब, प्रीत परमपद लाय ले, करि आकीन बिचार।
सो लटक्यों सिर दानवे, मौले के दरबार।। ३०।।
गरीब, संख जन्म की भूल कूँ, छिन में कर हैं छार।
दूजे की नहीं धारना, मौले का इकतार।। ३१।।
गरीब, दोजख बहिस्त बिसारि दे, उर में नाम उमेज।
निर्बानी कूँ निरखि ले, चलि सतगुरु की सेज।। ३२।।
गरीब, इश्क मुश्क मुश्कात रहो, नजर निरंजन नैंन।
पलकौं पारख लीजिये, समझ बूझ याह सैंन।। ३३।।
गरीब, पलक प्रीतम बसत है, असमानी अनुसार।
सतगुरु के उपदेश तैं, मौले का दीदार।। ३४।।
गरीब, पलक प्रीतम देख ले, पानी पवन से झीन।
ऐसे पद कूँ परखि ले, ज्यूं दरिया में मीन।। ३५।।

अथ बिक्रताई का अंग

गरीब, यौह जीव भूल्या ब्रह्म कूँ, बिक्रताई बकवाद।
आंन उपासा करत है, मिले न सतगुरु साध।। १।।
गरीब, हुजति हिरस हराम गति, बिक्रताई याह जान।
लाया तहां लागै नहीं, समझै नहीं हिवान।। २।।
गरीब, पटक शिला सिर फोर हीं, बकवादी बकरूह।
साहिब दर पौंहचे नहीं, खैंले झूठा जूह।। ३।।
गरीब, ज्यूं आरे की गाय हैं, बिन छेड़े अरड़ाय।
बिक्रताई नर मानवी, बिन ही ज्ञान डिडाय।। ४।।
गरीब, लहर समुंद्र की गिने, कछु न लागे हाथ।
मुरजीवा नघ ल्याव हीं, साहूकार है साथ।। ५।।
गरीब, फूटे नघ का मोल क्या, कौडी बदले जाय।
बिक्रताई नर मानवी, संतो देख रिसाय।। ६।।
गरीब, फूटे नघ कूँ क्या करे, मन फूट्या चित भंग।
साध मिलें क्या होत है, जिन के चढ़े न रंग।। ७।।
गरीब, ऊपर जोरि सिंदूख है, जरत बनात जलूस।

अंदर फूटा नघ धर्‌या बदले मिले न सूस।। ८।।
गरीब, सुघड सिंदूख बनाय करि, नघ फूटा धर दीन।
साध मिले क्या होते है, जे उर नहीं अकीन।। ९।।
गरीब, सिंदूख घड़ी है सुघड़ कूँ, नघ फूटा तिस मांहि।
सारा होय तब बिकत है, गाहक फिर फिर जांहि।। १०।।
गरीब, फूटे नघ कूँ जोड़ दे, सतगुरु साहूकार।
बारह बानी ब्रह्म गति, मन का मेट पसार।। ११।।
गरीब, बिक्रताई की वासना, नाना वर्ण उपंग।
सतगुरु साचा जौहरी, लेवैंगे सत्संग।। १२।।
गरीब, ज्यूं बारु छिन चमक हीं, येती मन की भ्रांत।
रेती सोधे जर करे, यह मन पावै स्वांत।। १३।।
गरीब, बिक्रताई रेती छना, ऐसा मन का ढंग।
सतगुरु मिल है जौहरी, करि है निर्मल अंग।। १४।।
गरीब, प्रवीना पद परख हीं, विक्रत सुनें न कान।
जिन का क्या प्रमोधिये, आपा राखा मान।। १५।।
गरीब, मोतियन माला लीजिये, वनचर के गलि घाल।
तोरे तागा जान करि, बिक्रताई की चाल।। १६।।
गरीब, बनचर कूँ बीना करे, ऐसा कलि में कौन।
बिक्रताई छूटै नहीं, फेरै चौदह भौन।। १७।।
गरीब, मोतियन माला तोर करि, रेति मिलाई धूर।
श्वान संगति नहीं लगत है, दीजे कंद कपूर।। १८।।
गरीब, हाडी चाबन श्वान गति, ऐसा मन का ख्याल।
संखलों की झोरी भरें, परषत नाहीं लाल।। १९।।
गरीब, जैसे कऊवा चोर चित, चंचल नैन नरेश।
लाख शब्द समझै नहीं, जिन कूँ क्या उपदेश।। २०।।
गरीब, गदहा गायत्री किसी, उल्लू नाहीं सूर।
बिक्रताई नर ना तजे, जे बरषावै नूर।। २१।।
गरीब, पसरे मन कूँ सिमट ले, करो एकटठा आंन।
जो चाहे सो देख ले, तोहि कला प्रवान।। २२।।
गरीब, मन पसर्‌या तिहूँ लोक में, नाना वर्ण खिलंत।
पसरे का पसर्‌या रह्या, धारे भेष अनंत।। २३।।
गरीब, यौह मन फूट्‌या ब्रह्म से, बहुरि मिल्या नहीं बाग।
ऐसे मन में बासना, जैसे चखमख आग।। २४।।
गरीब, यौह मन फूट्‌या ब्रह्म से, काछे बहुत बैराग।
जैसा का तैसा रह्या, ले ले छापे दाग।। २५।।

गरीब, यौह मन बगदी ऊंठ ज्यूं दशों दिशा कूँ जाय।
बिक्रताई छाडे नहीं, न्यौल जड़ीं जे पाय।। २६।।
गरीब, मन हस्ती महमंत है, विषय लहरि घूमंत।
आंन अटक माने नहीं, बिसर्‌या साहिब संत।। २७।।
गरीब, यौह मन भूल्या ब्रह्म कूँ, दुनिया देखन जाय।
चोरी में चित देत है, सुनि सुनि भक्ति रिसाय।। २८।।
गरीब, राम कहें राजी नहीं, लंगर शोख हठील।
साहिब दर बहु दोष हैं, भर्म्या फिरै खलील।। २९।।
गरीब, जन्म जन्म की बासना, हुई एकट्ठी आंन।
निर्मल कैसे होयगा, सतगुरु लगै न कान।। ३०।।
गरीब, जिस मंडल साधू नहीं, नदी नहीं गुंजार।
तज हंसा औह देशड़ा, जम की मोटी मार।। ३१।।
गरीब, बाग नहीं बेला नहीं, कूप न सरवर सिन्ध।
नगरी निश्चय त्यागिये, जम के पर हैं फंद।। ३२।।
गरीब, छह ऋतु बारह मास में, नहीं कुलाहल राग।
जेह नगरी क्या रहनि है, कोयल कूक न बाग।। ३३।।
गरीब, बाग नहीं बेला नहीं, नहीं नदी जिस देश।
वाह दुनियां कैसे बसें, जहां सन्त नहीं परवेश।। ३४।।
गरीब, तुरा न तीखा कूदना, पुरुष नहीं रणधीर।
नहीं पदमनी नगर में, यह मोटी तकसीर।। ३५।।
गरीब, नगरी नाद न बाजहीं, मेला मुलक न होय।
बिक्रताई की भूमि है, सतगुरु सांईं छोहि।। ३६।।
गरीब, यज्ञ नहीं जौंनार है, सदाव्रत नहीं शील।
जा मंडल क्या रहनि है, बसैं पर्बती भील।। ३७।।
गरीब, जती सती नहीं नगर में, दया धर्म की हांन।
बिक्रताई के जीव हैं, नगरी तजिये जान।। ३८।।
गरीब, हंस दिशा जहां मुनिछ हैं, ज्ञान बिबेक बिचार।
सतगुरु भाष्या समझ ले, यौह हमरा परिवार।। ३९।।
गरीब, क्षमा शील तिस नगर में, सत सुकृत संतोष।
चल हंसा तिस भूमि बस, जीवत मुक्ता मोख।। ४०।।
गरीब, मन माली तन केवड़ा, कूप उर्ध्व मुख मांहि।
सतगुरु मिले तो भोगवे, बेमुख खाली जांहि।। ४१।।
गरीब, ब्रह्मगता रस बावड़ी, औघट घाट बहंत।
अगम अगोचर भेद है, बिन हीं बैल चलंत।। ४२।।
गरीब, मन की मुद्रा मानवी, जानै सतगुरु मोहि।

करना होय सो कीजिये, कहि देता हूँ तोहि।। ४३।।
गरीब, पांच पचीसौं बांधि करि, निज मन में कर लीन।
मन की मुद्रा तुझ कहीं, सतगुरु दिक्षा दीन।। ४४।।
गरीब, बिक्रताई की वासना, सब ही भूनी जांहि।
लोभ लहरि का शहर तजि, बैठो हरि पद मांहि।। ४५।।
गरीब, ममता माया दुर्मति, संसा शोक बिहाय।
अनरागी के महल में, असतल बंध समाय।। ४६।।
गरीब, आशा तृष्णा कूकरी, खड़ी रहेगी बार।
बिक्रताई ऐसे मिटे, चंचल मन कूँ मार।। ४७।।
गरीब, चित्त में चिन्ता चूहरी, बुद्धि ब्रह्मनी सकुचाय।
निर्मल होय गुरुज्ञान से, औघट घाट न्हवाय।। ४८।।
गरीब, बिक्रताई के चोज सब, भंजन करो बयान।
शब्द अदूल न कीजिये, ज्यूं का त्यूंही मान।। ४९।।
गरीब, शंका डाईन साल सब, शूल शरीर मिटंत।
धोखा दुंदर जात सब, भेटे सतगुरु संत।। ५०।।
गरीब, बिक्रताई की धार सब, उलटि अपूठी मेल।
सुष्मण शंकल डारि करि, मन गयंद कूँ पेल।। ५१।।
गरीब, मन गयंद गुंजार ही, त्रिवैणी के तीर।
कटे नहीं सौ जतन से, परि गये प्रेम जंजीर।। ५२।।
गरीब, पवन पलीता लाय करि, गोला ज्ञान चलाय।
गज घूमें अंदर बंधे, बिक्रताई मिट जाय।। ५३।।
गरीब, रापति राता नाम से, मन गयंद गलतान।
कदली बन काया भई, बंध्या महल अमान।। ५४।।
गरीब, बहु हलक्यौं का संग तजि, मानसरोवर न्हाय।
बिक्रताई का बाग है, कजली बन मत जाय।। ५५।।
गरीब, मान सरोवर मगन सर, लाल कटन प्रवाह।
वार पार पावै नहीं, जा सर मलि मलि न्हाय।। ५६।।

अथ समर्थाई का अंग

गरीब, समर्थ सांईं जानराय, येता किया पसार।
लोक अलोक अलख में, धन्य तूं सिरजनहार।। १।।
गरीब, समर्थ मौले पीव तूं, बांध्या अरस बरत।
उपजी बाजी लोक सब, पलकों बीच अरथ।। २।।
गरीब, समर्थ मेरा सांईंयां, कुरबांनी कुरबांन।
बेचगूंन अविगत पुरुष, कित से रच्या जिहांन।। ३।।

गरीब, कच्छ मच्छ कूरंभ गति, शेष धौल धरि भार।
पानी पवना पर्वतं, रचि राखे गैंनार।। ४।।
गरीब, कित से मेर सुमेरु हैं, सप्तपुरी कैलाश।
येता भार उठाईयां, दम देही नहीं श्वास।। ५।।
गरीब, धरणि गगन कित से भई, कित से चन्दा सूर।
ठारह भार बिधना पुरुष, बीज जमाया धूर।। ६।।
गरीब, पलक घड़ी पहरा बंधै, निश बासर जुग बंध।
लख चौरासी खालसा, अजौं न समझे अंध।। ७।।
गरीब, रचनहार येता रच्या, समर्थ सांईं पाख।
जाति जन्म नाना वर्ण, विधि चौरासी लाख।। ८।।
गरीब, अनंत लोक की मांड में, खेले समर्थ आप।
नाना वर्ण सुभान गति, घट घट अजपा जाप।। ९।।
गरीब, एते मन कित से भये, मौले मगन मुरार।
भिन्न भिन्न कहि दीजिये, हमरा भ्रम निवार।। १०।।
गरीब, अविगत माया बिस्तरी, हुक्म धनी का खेल।
एक अनेक अनाद गति, उत्पत्ति प्रलय मेल।। ११।।
गरीब, मन मूर्ती मुक्ता रमे, खेले बारंबार।
मन हंसा तो अमर है, पिंडा जुग जुग छार।। १२।।
गरीब, मरण जीवन तो भ्रम है, बूझि बिचारो ज्ञान।
विष्णु महाभारत किया, हित्या एक न प्राण।। १३।।
गरीब, परशुराम फरसें हने, दिग्विजय बड़े बड़े भूप।
औह तो प्रलय है नहीं, अविगत तत्त स्वरूप।। १४।।
गरीब, राम धनुष के बाण से, रावण सिन्या शोष।
उलटि समाने ब्रह्म में, एक रती नहीं दोष।। १५।।
गरीब, बेमुख के सिर खूंन है, बदला कहीं न जाय।
मन इच्छा पूर्ण सबे, बान बालिया खाय।। १६।।
गरीब, पद परसी है परमगुरु, दुर्बासा दरवेश।
छप्पन कोटि प्रलय किये, साखि भरत है शेष।। १७।।
गरीब, समर्थ मेरा सांईंयां, येते लोक रचंत।
केते पारख पचि गये, पाई आदि न अंत।। १८।।
गरीब, केते पारिख जौहरी, ढूंढे वार अरु पार।
घटै बधै नहीं खंड होय, अविगत सिरजनहार।। १९।।
गरीब, समर्थ सिरजनहार के, केते नाम उपास।
गिनती कीमति है नहीं, खोजै साधू दास।। २०।।
गरीब, समर्थ मौले मिल रह्या, न्यारा पलक न होय।

कुल कुटुंब जाके नहीं, जननी जन्या न कोय।। २१।।
गरीब, अविगत मौले पुरुष तूं, पारब्रह्म प्रवान।
सब घट व्यापक सांईंयां, बूझो आत्मज्ञान।। २२।।
गरीब, निर्गुणमई निरंजना, पूर्ण ब्रह्म अलेख।
पारख कीमति करत है, पार न पावैं शेष।। २३।।
गरीब, कर्ता पुरुष प्राण पद, अविगत अपरंपार।
केते उत्पत्ति जात है, अजौं न मानी हार।। २४।।
गरीब, बंध्या मुक्ता है नहीं, हाजर नाजर देख।
समर्थ ऐसे जानिये, एक अनेकं पेख।। २५।।
गरीब, मौले तालिब सूं कही, सतगुरु सौ सौ बार।
दुनियां से क्या भिन्न है, भानन घड़न हमार।। २६।।
गरीब, तर्क दुनी से दूर दिल, संतों हिलमिल बैन।
अंखड़ियां रतनालिया, नैनों अंदर नैन।। २७।।
गरीब, सांई सतगुरु से कहे, दुनी दगा खेलंत।
ऐसे भिन्न कुटिल नरा, मिलहिं न सांईं संत।। २८।।
गरीब, प्राण गता पोषंत हूँ, राजिक रिजक हमेश।
कीड़ी कुंजर जीव सब, निर्गुण पुरुष नरेश।। २९।।
गरीब, सकल हमारी आत्मा, जेता उपज्या जीव।
बे मुख सेती भिन्न है, संतो प्रकट पीव।। ३०।।
गरीब, अविगत बानी आदि है, अंत सो अविगत जांन।
मध्य मौले महबूब तूं, कीमत लखै न प्रान।। ३१।।
गरीब, किस विधि राजी जगतगुरु, कहि समझावों मोहि।
अवगुण कौन दयाल जी, दुनिया तरकी तोहि।। ३२।।
गरीब, सांई मेरा मुझि कहै, अंतर गति की बात।
सांईं संत सलेश दिल, दुनियां तजे न घात।। ३३।।
गरीब, बाजी से राजी नहीं, संतों नालि खुशाल।
मल्ल अखाड़ा जीत हीं, जुगन जुगन के माल।। ३४।।
गरीब, परमानंद जिस उर बसै, बोलत हर दम बैंन।
संतों समर्थ मिल रह्या, उपजी बाजी फैंन।। ३५।।

अथ कुशब्द का अंग

गरीब, जैसे बाँबी सर्प है, विषे भुवंग मुख मांहि।
डसते ही पैमाल होय, बाँबी काटे नांहि।। १।।
गरीब, को बाँबी को सर्प है, सतगुरु अर्थ सुनाय।
कौन डसै को मरत है, धोखा दुंद बहाय।। २।।

गरीब, काया बाँबी जानियो, मन भुवंग डसि खाय।
विष चढ़े उतरे नहीं, काया मर मर जाय।। ३।।
गरीब, कुटिल बचन जादौं कह्या, दुर्वासा से आय।
मन भुवंग जहां डसि गया, छप्पन कोटि विहाय।। ४।।
गरीब, कुटिल कटारी तन लगे, तो नहीं जीवत प्राण।
कुशब्द कह्या शिशुपाल कूँ, सिर उड़ि गया अचांन।। ५।।
गरीब, तौसड़ धोबी कूँ हनी, वसुदेव पुत्री सात।
मल्ल अखाड़े मारिया, कंसा पटके गात।। ६।।
गरीब, कहां वसुदे कहां देवकी, कहां विसंभर नाथ।
प्रहलाद भक्त की पक्ष परि, हिरणाकुश काढ़ी आंत।। ७।।
गरीब, रामचन्द और लक्ष्मण, देशौंटे बन मांहि।
सुवर्ण मृग मारीच भया, बाड़ी खा खा जांहि।। ८।।
गरीब, सतवंती के कारनें, रावण रावल भेष।
कार उलंघी पुरुष की, राक्षस नगरी देख।। ६।।
गरीब, कहै मंदोदरी पुरुष सूं, सुनि हो रावण कंत।
अंगद चरण शिला फिरी, ऐसे जिनके संत।। १०।।
गरीब, पंच कोटि योधा शिला, रावण से रणधीर।
चरण फिराई चाक ज्यूं, सब देखत हैं बीर।। ११।।
गरीब, अंगद सेती युद्ध किया, पंच करोडि मंडलीक।
कहे मंदोदरी मान ले, रावण हमरी सीख।। १२।।
गरीब, नारी दारी दूतनी, तूं क्या जाने भेव।
बाना बिरद लजाय हूँ, मुझे मिले महादेव।। १३।।
गरीब, दस मस्तक मोकूँ दिये, बीस भुजा विस्तार।
कुंभकरण से वीर हैं, हम लंका सिकदार।। १४।।
गरीब, कहै मंदोदरी शिव छले, वे ईशन के ईश।
दस मस्तक मूंदे पड़े, तोरत हैं भुज बीस।। १५।।
गरीब, घर नारी नव जोवनी, सकल भुवन का राज।
सतवंती कूँ दे मिलो, सरे सकल बिधि काज।। १६।।
गरीब, ठारा पद्म संगीत हैं, हनुमंत रहें हजूर।
नौलख बाग उपारिया, वृक्षा सरल खजूर।। १७।।
गरीब, सात समुंद्र कूदि करि, आये बाग मंझार।
सीता देन संदेशड़ा, लंका कूँ गये जार।। १८।।
गरीब, समंद बंधेगा सेतबंध, सैना उतरे पार।
सुन हो पुरुष लंकेशरी, कहै मंदोदरी नार।। १६।।
गरीब, स्वर्ग पतालौं हांक है, ऐसे हनुमंत वीर।

लंक जराई आनि करि, किनें न धरिया धीर।। २०।।
गरीब, लंक जरै करुणा करै, खड़ी मंदोदरी नार।
आवैंगे रहसी नहीं, सतवंती भरतार।। २१।।
गरीब, ध्वजा फरके राम की, पचरंग झंडे लंब।
हम टूटी लंका सुनी, बार गडे रण खंभ।। २२।।
गरीब, ध्वजा फरके राम की, आये समंद उलंग।
सब सैना रावण खपी, मूंध मुहांने अंग।। २३।।
गरीब, अंगद शिला डिगाईया, हनुमंत फूकी लंक।
दो पायक इत भेजिया, ऐसे दल में संख।। २४।।
गरीब, नल नील दो संत हैं, कथा कहत हूँ तास।
अष्टकुली पर्वत तिरे, जैसे पौहपे बास।। २५।।
गरीब, लक्ष्मण जती जुगादि हैं, प्राण भयंकर तोहि।
लख योजन पर मारि हैं, बचन पलट नहीं मोहि।। २६ ।।
गरीब, पचिहारी पांयिन परी, सुनिहो कंत अजांन।
तोरी मजलिस असुर की, वाह मजलिस सुर ज्ञान।। २७।।
गरीब, विभीषण कूँ बूझि ले, बचन हमारा मांन।
सतवंती सूं साखि रखि, सिज्या पर नहीं आंन।। २८।।
गरीब, रावण बोले नारि से, सुन नारी मति हीन।
स्वर्ग बहिश्त बंधे परे, तेतीसौं बस कीन।। २९।।
गरीब, पवन बुहारी देत है, अग्नि रसोई मांड।
चन्द्र सूर्य चंपी करैं, अजो न समझी रांड।। ३०।।
गरीब, तेतीसौं हैं बंध में, मैं रावण रणधीर।
सब सुर हमरे बसि परे, ढूंढ़त हूँ दो वीर।। ३१।।
गरीब, दो बैरागिया बन बसैं, धनुष बान हैं हाथ।
मांसाहारी मस्करे, मृगा लावत घात।। ३२।।
गरीब, दस पदम रणधीर हैं, बीस पदम मंडलीक।
तीस पदम सावंत हैं, नारी देवे सीख।। ३३।।
गरीब, द्वादश पदम चक्र चलैं, बान वैकुण्ठों मार।
सप्तपुरी कूँ लूटि ल्यूं, क्या समझावै नार।। ३४।।
गरीब, लख पुत्र नहीं पीठ दे, नाती हैं सवा लाख।
महिरावण पाताल में, चौदह भुवन दहाक।। ३५।।

अथ अनभै का अंग

गरीब, साखी शब्द बनाय करि, अनभै करे उच्चार।
मुक्ति मौहल्ला दूर है, जम देगा बेगार।। १।।
गरीब, अनभै का घर अटपटा, अष्ट कँवल दल चीन्ह।
शब्द महोदधि सिंधु में, उलटि चले ज्यूं मीन।। २।।
गरीब, अनभै जहां से ऊचरे, बानी बिरहा ख्याल।
अगम निगम के अंतरे, बैठा नजर निहाल।। ३।।
गरीब, अनभै का घर अगम है, चलि बिरहे के बाग।
फूल फुहारे केतकी, भँवर रहे जहां लाग।। ४।।
गरीब, अनभै का घर अरस में, गैबी पड़े हिंडोल।
झूलें पांच सुहेलियां, सतगुरु पड़दा खोल।। ५।।
गरीब, अनभै का घर उनमुनी, बेगमपुर बैराट।
जन्म जीत जग रहति होय, चल सतगुरु की हाट।। ६।।
गरीब, अनभै अनहद एक है, एक तार एक तंत।
पिचकारी ले प्रेम की, खेले फाग बसंत।। ७।।
गरीब, मलयागिर चित चंदना, उडे गुलाल अबीर।
अविगत दुलहा कंत सिर, चौरा करे कबीर।। ८।।
गरीब, अनभै आसन अटल है, अमर सिंहासन थान।
जा घट अनभै ऊचरी, ता पर मैं कुरबांन।। ६।।
गरीब, सीखि समझ बिचार के, साखी शब्द न जोड़।
राम दुहाई सत्य कहूँ, गेरे जम सिर फोड़।। १०।।
गरीब, अनभै अलख निरंजना, अनभै सतगुरु साध।
अनभै अटल कबीर हैं, क्या अनभै से बाद।। ११।।
गरीब, अनभै अनभै सब कहैं, भै के सागर मांहि।
ऊवा बाई कथत हैं, जमपुर आवैं जांहि।। १२।।
गरीब, अनभैं कथी कबीर ने, अनभै कर दिये हंस।
देखा देखी जो कथैं, डूबि जात है बंस।। १३।।
गरीब, अनभै असली महल है, अगम दीप दरियाव।
साखी शब्दी बुदबुदा, नेस हुवा तो आव।। १४।।
गरीब, अनभै अनहद आदि है, वार पार नहीं कोय।
सतगुरु की कहनी कहूँ, जो ल्याया शब्द बिलोय।। १५।।
गरीब, अनभै आठ प्रकार की, दीपक एक मसाल।
एक धूप होय मिट गई, कौन शिरोमणि ख्याल।। १६।।
गरीब, एक दामनि पटबीजना, एक दर्पण शीश महल।
इन सातन पर और है, वह अनभै असलि अटल।। १७।।

गरीब, अनभै वह अनराग है, सुरति निरति के लोर।
गर्ज सुने सुन कुहक ही, बोले दादुर मोर।। १८।।
गरीब, अनभै बहुत अटंबरी, डोम भाट के गीत।
इन से माथा फूटि हैं, सुन मेरे मन मीत।। १६।।
गरीब, ये अनभै असलां नहीं, कामनि ख्याल खलील।
खुसा खुसाई हांनि होय, याह अनभै बन भील।। २०।।
गरीब, अनभै ऊपर भय किसा, भ्रम बिकार भसंम।
सतगुरु के प्रताप से, दूर कर दुनी इसंम।। २१।।
गरीब, अनभै अकल अनूप है, साहिब कहूँ क संत।
सतगुरु कहूँ क शिष्य कहूँ, ना अनभै का अंत।। २२।।
गरीब, अनभै अलख अलाह है, राम रहीम खुदाय।
अनभै ल्यौ अन भावती, बिलसो बहुत अघाय।। २३।।
गरीब, अनभै के पड़दे खुले, धारा छुटी असंख।
अगम दीप कूँ ले गई, भँवर उड़े बिन पंख।। २४।।
गरीब, अनभै के पड़दे खुले, धारा छुटी अनंत।
अनभै सुनि अनभै हुये, अनभै अविचल तंत।। २५।।
गरीब, अनभै फरसा प्रेम का, क्या ज्ञानी क्या ठोठ।
अनभै का गोला छुट्या, भीत किले ढहे कोट।। २६।।
गरीब, अनभै में आनंद है, सकल क्षेम कुशलात।
सतगुरु कूँ कुरबान जां, कही अनभै की बात।। २७।।
गरीब, अनभै आगम मुक्ति का, मारग पंथ पिछान।
अनभै मालनि ऊतरी, फूल माल की बान।। २८।।
गरीब, अनभै मालिन महल में, गूंदे हार हमेल।
लोक दीप ले जायगी, ये अनभै के खेल।। २६।।
गरीब, अनभै मालनि हम मिली, संग एक बिरहा बीर।
चलो बुलाये लोक कूँ, सतगुरु महल कबीर।। ३०।।
गरीब, अनभै मालनि मूल है, शिव बिरंचि के शीश।
किशन बिसन के उर बसै, अनभै बिसवे बीस।। ३१।।
गरीब, अनभै अधम उधार है, मुक्ति पदार्थ पाख।
जिस घट अनभै संचरी, क्या कौड़ी धज लाख।। ३२।।
गरीब, इंद्र अलील आगै खड़े, ब्रह्मा रहे कर जोर।
शंकर से सेवन करैं, अनभै लाये बहोर।। ३३।।
गरीब, अनभै का सत्य अमल है, लगी खुमारी नैन।
जा घट अनभै उचरै, ताहूँ के है चैन।। ३४।।
गरीब, अनभै बंकी सैल है, अनभै बंकी बाट।

अनभै के घर भै नहीं, अनभै सुनि बैराट।। ३५।।
गरीब, अनभै घर संसा नहीं, सूतक नहीं कलेश।
अनभै रतन उजागरं, धंन अनभै उपदेश।। ३६।।
गरीब, अनभै अविनाशी कहूँ, नाश कदे नहीं होय।
सो अनभै मस्तक धरी, गुप्ता राखी गोय।। ३७।।
गरीब, अनभै पद निःबीज है, और सकल सब बीज।
सकल लोक छीजे सबै, अनभै सदा अछीज।। ३८।।
गरीब, अनभै अटल अटारियां, ब्रह्म झरोखे नूर।
झिल मिल झिल मिल होत है, अनभै अरस जहूर।। ३६।।
गरीब, अनभै में अनहद घुरे, दस प्रकार प्रेम।
मींहीं तुतकारी सुनी, बिसर गये सब नेम।। ४०।।
गरीब, धन्य अनहद धरणी धरा, सिरजे स्वर्ग पताल।
सर्वंग अनभै बिस्तरी, पड़े प्रेम के जाल।। ४१।।
गरीब, अनभै घर आलस नहीं, नहीं कलह और कांक।
सूधा दगड़ा जमपुर गया, अनभै मारग बांक।। ४२।।
गरीब, अनभै कूँ अरदास है, कर जोरौं और शीश।
अनभै कूँ प्रणाम है, अनभै सत्य जगदीश।। ४३।।
गरीब, अनभै उज्जल हिरंबरं, मींहीं महल मुक्त।
अनभै घर आनंद सदा, अनभै सत्य अविगत।। ४४।।
गरीब, अनभै शिव योगी कथी, ब्रह्मा कथी बिलास।
सनक सनंदन कूँ कथी, नारद मुनि के पास।। ४५।।
गरीब, विष्णु विशंभर कूँ कथी, मुनिवर कथी बिचार।
सहंस अठ्ठासी कूँ कथी, अनभै सत्य भंडार।। ४६।।
गरीब, सिद्ध चौरासी कूँ कथी, तेतीसौं कथी बीन।
सुर नर मुनिवर कूँ कथी, अनभै सत्य ल्यौलीन।। ४७।।
गरीब, वसिष्ठ कपिल मुनि कूँ कथी, दुर्वासा धरे ध्यान।
शृंगीऋषि पारा कथी, जिन जैसा अनुमान।। ४८।।
गरीब, दत्त कथी गोरख कथी, सुखदेव ल्याया सोध।
ब्यास कथी भीष्म कथी, कहैं अठारह बोध।। ४६।।
गरीब, कृष्ण भगवान गीता कथी, भागौत नाम भगवंत।
वाह तो उतनी ही रही, वार पार नहीं अंत।। ५०।।
गरीब, रामानंद अनभै कथी, द्वादश नाम चलाया भेष।
बावन द्वार बैराग हैं, चार संप्रदा टेक।। ५१।।
गरीब, भरथरी गोपीचंद कथी, तरतीजन बैराग।
जलंधर गोरख गुरु मिले, मिटे दिलों के दाग।। ५२।।

गरीब, सुलतानी बाजीद नैं, अनभै कथी अगाध।
बलख बुखारा तजि गये, शब्द सनेही साध।। ५३।।
गरीब, बाजीद ऊंट उपदेश तैं, लई फकीरी बेग।
तरकस तोड्या तर्क कर, बौहरि न बांधी तेग।। ५४।।
गरीब, नानक दादू अनभै कथी, ले सतगुरु का खोज।
सतगुरु की गति अटपटी, शिष सलीते बोझ।। ५५।।
गरीब, अनभै चौरी चांदनी, ज्ञान मंडप गलतान।
अनभै कूँ अनभै किये, ना गिनती अनुमान।। ५६।।
गरीब, अनभै के अधिकार कूँ, और तुलै नहीं कोय।
अनभै शब्द अतीत है, हंसों सिंध समोय।। ५७।।
गरीब, अनभै कथी रैदास कूँ, मिल गये नीर कबीर।
मगहर बिच झगड़ा मंड्या पाया नहीं शरीर।। ५८।।
गरीब, याह अनभै बीबी कहौ, और बांदी की जात।
अनभै कूँ अनभै किये, पाया पिण्ड न गात।। ५६।।
गरीब, अनभै असल कबीर की, सब लोको पर गाज।
सतगुरु पीर कबीर हैं, सुनि ले शब्द अवाज।। ६०।।
गरीब, अविगत के चौंरा करै, कबीर पुरुष प्रतक्ष।
अनभै सेज बिछावहीं, प्रेम सुराही हथ।। ६१।।
गरीब, अनभै आप कबीर हैं, शिष्य स्वामी का भाव।
कोटि बज्र टूटै सही, चूकै कदे न दाव।। ६२।।
गरीब, सतगुरु अदली आदि है, जाका नाम कबीर।
सब साधू सेवा करें, अचल दिगंबर थीर।। ६३।।
गरीब, चरण कमल सब संत है, सर्व लोक के साध।
सब सिर तपै कबीर सत्य, गति कुछ अगम अगाध।। ६४।।
गरीब, मनसा वाचा कर्मना, करियों शब्द संनेह।
सतगुरु एक कबीर हैं, दूजा भ्रम संदेह।। ६५।।
गरीब, अनभै कूँ अस्थिर किये, परम संनेही हंस।
सब सतगुरु के नाद में, जेता आत्म अंस।। ६६।।
गरीब, धन्य सतगुरु धन्य लोक धन्य, धन्य अनभै प्रसंग।
मिटै नहीं माटी मिलै, ऐसा अविचल रंग।। ६७।।
गरीब, अनभै नवल सुहेलियां, रहती हमरे लोक।
निंदत के घर ना गई, संतो के घर पोष।। ६८।।
गरीब, अनभै आरति करत हूँ, सुन अरदास हमार।
मैं जानी जैसी कहीं, तूं अनभै अपरंपार।। ६६।।
ज्ञान जोग बुद्धि संचरै, नाम अभय पद सार।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

दास गरीब अचंभ पद, अनभै अधम उधार।। ७०।।

अथ अनभै निंदत का अंग

गरीब, अनभै निंदत सूर है, कुत्ता गदहा काग।
चार जनम जुग जुग धरै, निंदत बड़ा अभाग।। १।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, खाली करे कपाल।
संतों की माने नहीं, अपना ही घर घाल।। २।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, बोलै बचन कुटिल।
ओह जाने सरबरि करूं, नहीं संत समतुल।। ३।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, कहै और की और।
संतों का सीरी सही, पर चाल्या दक्खन पौर।। ४।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, तड़कै खुड़कै आय।
अनदेखी अज गैब की, कहै बनाय बनाय।। ५।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, सीरी बस्या पड़ौस।
गोला जाति गुलाम की, जाके पीर न गौस।। ६।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, खोटी कहै कराल।
डूबै नाव समूल सब, भरि निंद्या का माल।। ७।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, कुंभी नर्क पड़े।
निंदा तो मीठी लगै, जैसे दही बड़े।। ८।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, गुरु द्रोही का पूत।
और नहीं कुछ आसरा, एक निंद्या ही की कूत।। ९ ।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, पूजै देई धाम।
संतों का निश्चय नहीं, निंद्या आठों जाम।। १०।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, जुगन जुगन का चोर।
सतगुरु की निंदा करै, पापी कठिन कठोर।। ११।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, औह जायगा किस देश।
तीन काल कुंभी पड़े, साखी शंकर शेष।। १२।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, नहीं शब्द प्रतीत।
समझाये समझै नहीं, ऐसी ही कुछ रीत।। १३।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, लाज शरम कर दूर।
सतगुरु मेहर न चाहिये, ओटी जम की घूर।। १४।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, ना घट भक्ति बिलास।
चौरां सेती हिलमिलै, दुश्मन लागै दास।। १५।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, लिया कुबुद्धि ने लूट।
चौरां से राजी रजा, संतों से रह्या रूठ।। १६।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, भूल गया घर बार।

आधीन बचन से क्रोध होय, भिड़ने कूँ होशियार।। १७।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, समझै नहीं गंवार।
साहिब की निंदा करै, डूब्या काली धार।। १८।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, ना दिल शंका नीच।
बाज बुटेरी ले गया, यौं लेसी जम मीच।। १९।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, लूट लिया सत भाय।
सतगुरु मारग ना चल्या, निश्चय जमपुर जाय।। २०।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, नहीं शब्द उपदेश।
कुबध्यौं की गाडी भरी, लै का नहीं सलेश।। २१।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, भूल गया भगवंत।
संतों सेती शोक है, विह्ल दोजख पंथ।। २२।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, राटा रंभ खुशाल।
निश्चय जमपुर जायगा, याह दोजख की चाल।। २३।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, बारह मास खईश।
निंदा सेती नेह है, बिसर गया जगदीश।। २४।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, जाके ना गुरु पीर।
बगदे बाद बिबाद कूँ, भ्रम कर्म की खीर।। २५।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, जीमें निंद रसोई।
बूडे पांच परोसियां, निंदा ऐसी होई।। २६।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, समझे ना रघुबीर।
हम कूँ दोष न दीजिये, यौं सतगुरु कहैं कबीर।। २७।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, लग्या राज बड़रोग।
जुगन जुगन सत्संग है, समझै ज्ञान न जोग।। २८।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, डूबि गया तत्काल।
इस कूँ दोष न दीजिये, याह निंदत की चाल।। २९।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, निंदे नाम निशान।
जड़ सेती तारी लगी, पूजत है पाषाण।। ३०।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, पापी कठिन कठोर।
जाका मुख नहीं देखिये, ऐसा दुष्ट न और।। ३१।।
गरीब, निंदत भडुवा भूत है, जाके नहीं यकीन।
गुरुद्रोही कुल बूडि है, साखि भरत है तीन।। ३२।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश को, निंदत नहीं सुहाय।
गुरुद्रोही कूँ देखि कर, उठे बहुत रिसाय।। ३३।।
गरीब, निंदत नर्कहिं जायेगा, यामे नहीं संदेह।
राम दुहाई सत्य कहूँ, बहुत पड़ेगी खेह।। ३४।।

गरीब, निंदत नामाकूल है, मुरदफरोसी पास।
शब्द स्वाल समझै नहीं, उज्जड़ कूवे पास।। ३५।।
गरीब, निंदत बड़ा निर्भाग है, कर्म हीन है लेख।
साधु संत को रहन दे, निंदा करे अलेख।। ३६।।
गरीब, निंदत नकटा आदि का, नहीं श्रवण नहीं नैंन।
सुनै न सूझै तास कूँ, बकता फोकट फैंन।। ३७।।
गरीब, निंदत हम निरताईयां, जामें राम न अंस।
गुरु द्रोही औलाद है, जिस कुल रावण कंस।। ३८।।
गरीब, निंदत के निश्चय नहीं, भक्ति भाव नहीं टेक।
समझाया समझे नहीं, ज्ञानी मिलै अनेक।। ३६।।
गरीब, निंदत नेमी जो रहै, एक निंदा ही का नेम।
जाकूँ दोष न दीजिये, अरंड लगे नहीं सेम।। ४०।।
गरीब, निंदत नाले बहि गया, अंध घोर की धार।
गहरा समंद कुबुद्धि का, डूब्या स्यौं परिवार।। ४१।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, ज्यूं मथुरा का कंस।
कृष्ण कन्हैया कूँ हन्या, डूबि गया सब बंस।। ४२।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, ज्यूं चानौर चमार।
छाती तोड़ी कृष्ण कूँ, धूर उड़ाई छार।। ४३।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, सुन रावण की रीत।
दस मस्तक मूंधे पड़े, हरी बिरानी सीत।। ४४।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, सुनों सहस्रबाह।
फरसों भुजा उपाड़ियां, जैसे जल की गाह।। ४५।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, ज्यूं शिशुपाल चंदेर।
गैब चक्र सिर टूटिया, उड़त न लाई बेर।। ४६।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, ज्यूं हिरणाकुश रूह।
नरसिंह उदर बिदारिया, मारे दूह बरदूह।। ४७।।
गरीब, निंदत तुझ कूँ क्या कहूँ, कौन इसम है तोहि।
जुगन जुगन समझाईया, ना छूट्या गुरुद्रोह।। ४८।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, दुर्योधन से सीध।
ग्यारह खूहणि खपि गई, ना तन खाये गीध।। ४६।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, ज्यूं महिरावण बालि।
ऐसी तुझ पै होयगी, पिछली साखि संभालि।। ५०।।
गरीब, निंदत मेरा मित्र है, जरासिंध कूँ देख।
मारे हाल बिहाल कर, निंदत हने अनेक।। ५१।।
गरीब, निंदत मत निंद्या करै, भजि ले रमता राम।

निंदत मीठी निंद्रा, ज्यूं लोभी ने दाम।। ५२।।
गरीब, निंदत नाटा सांड है, और सुंनही का पूत।
कोयल कागा एक रंग, बोलन ही में ऊत।। ५३।।
गरीब, निंदत मैं तोसे कहूँ, समझ हमारे मीत।
राम नाम से बैर है, तो निंद्या से क्या प्रीत।। ५४।।
गरीब, निंदत तैं नेकी तजी, बदी बंधी सिर पोट।
समझाया समझै नहीं, दुर भड़वा मरद कहोट।। ५५।।
गरीब, निंदत नलनी का सूवा, तल सिर ऊपर पांव।
जो छूटे तो बूडि है, कुंडा ही दरियाव।। ५६।।
गरीब, निंदत तो कूँ कहत हूँ, चेत सकै तो चेत।
कहा घरों ले जाहिगा, चिड़ियां चुग गई खेत।। ५७।।
गरीब, निंदत नाव चढ़ाइ हूँ, दे निंद्या तूं छाड।
छोति परे डरनी लगे, तेरी गीदड़ के सी डाढ।। ५८।।
गरीब, निंदत नैम अचार है, निंद्या निधि की रास।
बहुत भांति समझाईयां, छौडे नहीं इलास।। ५९।।
गरीब, निंदत असलि इलास है, फिर दूजे कहो इलास।
इस निंदत से डर लगै, खोवै आस रु पास।। ६०।।
गरीब, निंदत नाजुक नाव है, तुझ ते चढ़ा न जाव।
सुरत सिंभल कर पकडिये, निंद्या कूवे लाव।। ६१।।
गरीब, निंदत निरमल तत्व है, नहीं द्वार नहीं बार।
चलि निंदत तुझि ले चलैं, निंद्या कूँ दे डार।। ६२।।
गरीब, सतगुरु कहें तो क्या करे, हमको दोष न दीन।
नाम सुनावे ना सुने, तुहीं ज्ञान बुद्धि हीन।। ६३।।
गरीब, निंदत नामा घालि हूँ, तेरे नाम का वीर।
जे निकले तो लाजि हूँ, निंद्या ही गुरु पीर।। ६४।।
गरीब, निंदत डूब्या चौपटे, गया रसातल राह।
चोटी पकड़ी चोर की, ले गया जम बड़गाह।। ६५।।
गरीब, निंदत बूड़्या जल बिना, भवसागर के कुंड।
जुगन जुगन का चोर है, मिटे नहीं जम डंड।। ६६।।
गरीब, निंदत जीवत मर गया, मरहट भया मसांन।
बिना भूमि का भूत है, जाका कह्या न मान।। ६७।।
गरीब, निंदत जीवत मर गया, हो गया डामाडोल।
तूं सनकादिक संत है, तो याके संग न बोल।। ६८।।
गरीब, निंदत जीवत मर गया, ज्यूं गणिका का पूत।
पिता कहेगा कौन कूँ, गया रसातल ऊत।। ६९।।

कहता **दास गरीब** है, निंदत निपजै नांहि।
बीसों बिसवे जायगा, लख चौरासी मांहि।। ७०।।

अथ काल का अंग

गरीब, काल काल सब को कहै, काल न चीन्हे कोय।
उपजी बाजी काल है, समझत नांहीं लोय।। १।।
गरीब, स्थावर जंगम काल है, जड़ चेतन सब काल।
काल काल कूँ खात है, सबै होत पयमाल।। २।।
गरीब, अष्टकुली सब काल है, ठारह गंडे काल।
काल काल में न्हात है, सबै काल का जाल।। ३।।
गरीब, सात समुंद्र काल है, व्योम धरणि सब द्वीप।
स्वांति बूंद भी काल है, मोती काल है सीप।। ४।।
गरीब, लख चौरासी काल है, उत्पत्ति आवै जाय।
आवन जान से रहित है, जिस कूँ काल न खाय।। ५।।
गरीब, कच्छ मच्छ कूरंभ लग, धौल धरणि आकाश।
पांच तत्त गुण तीन लग, सबै काल का बास।। ६।।
गरीब, चंद्र सूर दो काल हैं, पवन अग्नि और व्योम।
उपज्या सोई बिनश सी, सकल होत है होम।। ७।।
गरीब, तारायण सब काल हैं, सकल तेज बिनशंत।
पिंड ब्रह्मण्ड सब ढ़हत हैं, खाये काल हसंत।। ८।।
गरीब, घर की कामनि काल है, सकल कुटुंब परिवार।
बेटा बेटी काल हैं, फिरे काल की डार।। ९।।
गरीब, छाजन भोजन काल है, काल काल के पास।
काल काल भक्षण करै, काले काल ग्रास।। १०।।
गरीब, ससुरे शाले काल हैं, साढू समधी साख।
गोत नात सब काल हैं, सबहीं के मुख राख।। ११।।
गरीब, कौंम छतीसौं काल हैं, कहीं राजा कहीं रीत।
षट दर्शन सब काल हैं, भदरा भेष अतीत।। १२।।
गरीब, तन मन काया काल हैं, काल कर्म का मेल।
काल काल कूँ खात है, उत्पत्ति प्रलय खेल।। १३।।
गरीब, सुर असुरन सब काल हैं, गण गंधर्व सब देव।
सहंस अठासी काल हैं, करै कौन की सेव।। १४।।
गरीब, नौ चौबीसौं काल हैं, तेतीसौं तकसीश।
त्रिलोकी में काल है, तन मन भंजन शीश।। १५।।
गरीब, तीनूं देवा काल हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
भूले चूके समझियो, सब काहूँ उपदेश।। १६।।

गरीब, जंत्र मंत्र काल हैं, काल दीठ और मूंठ।
काया काल कुसंग हैं, नगर हाथ हैं हूँठ।। १७।।
गरीब, हस्ती घोड़े काल हैं, काल राज और पाट।
इन कूँ देख न भूलियो, दल बादल गज ठाट।। १८।।
गरीब, पृथ्वी पति चकवे गये, जिन के चक्र चलंत।
रावण सरीखे को गिनै, ऐसे गये अनंत।। १६।।
गरीब, कुंभकरण से अतिबली, रावण से रणधीर।
ठारह पदम परलौ करी, सुर असुरन की भीर।। २०।।
गरीब, भगवान सरीखा भारथी, और न दूसर कोय।
बान लगाया बालिया, पल में प्रलय होय।। २१।।
गरीब, छप्पन खूहनि क्षय करी, दुर्वासा भये काल।
होतबता थी सो हुई, बोले वचन कराल।। २२।।
गरीब, बहत्तरि खूहनि खा गया, चुणक ऋषीश्वर एक।
देह धरे जौंरा फिरे, सबै काल के भेष।। २३।।
गरीब, कपिल मुनि तो काल हैं, सघड़ रसातल कीन।
कैरों बूडे बंस सब, खूहनि ठारह दीन।। २४।।
गरीब, पंडौं परचे ऊबरे, भक्ति हेत हितकार।
घंटा तोर्या जांन करि, पांचौं अंड उबार।। २५।।
गरीब, दुःशासन से पचि गये, गहे द्रोपदी चीर।
पौंहचे समर्थ जानि करि, पीतंबर की भीर।। २६।।
गरीब, प्रहलाद भक्त सत्तयुग भये, राम नाम विश्वास।
बांधि मसक ले खंभ से, हिरणाकुश दई त्रास।। २७।।
गरीब, नृसिंह रूप धरि प्रगटे, जानराय जगदीश।
उदर फार प्रलय किया, महा भक्ति के ईश।। २८।।
गरीब, शुकदे चौरासी परे, यौनी संकट बीच।
सुख दुःख भुगते ही बनें, क्या उत्तम क्या नीच।। २६।।
गरीब, परमहंस बानी सुनी, शंकर गौरि का ज्ञान।
काटे फंदन काल के, फिर भरमें नहीं जिहान।। ३०।।
गरीब, अंबरीष शुकदे भये, उर में भक्ति विशाल।
टूटे बंधन मोह के, कंपे जौंरा काल।। ३१।।
गरीब, पांच वर्ष के ध्रुव हुते, उर में भक्ति समंद।
नारद मुनि सतगुरु मिले, लागी सुरति कमंद।। ३२।।
गरीब, अटल जो पदई ध्रुव मिली, मन इच्छा बैराग।
परमहंस अनहद रत्ते, सप्तपुरी का त्याग।। ३३।।
गरीब, मार्या डंडा काल के, भ्रम कर्म का नाश।

अमर भये अनराग से, बहुरि न भवजल बास।। ३४।।
गरीब, गोरख दत्त गलतान हैं, कर गये काल ग्रास।
औंधू सोहे औधि में, वहां दम देही नहीं श्वास।। ३५।।
गरीब, गोपीचंद रु भरथरी, अमर भये अनराग।
काया माया तजि गये, तरतीजन बैराग।। ३६।।
गरीब, हरिचंद जयदेव हुते, काल कर्म के मांहि।
गणिका चढ़ी विमान में, अचरज देख्या तांहि।। ३७।।
गरीब, हरिचंद तारालोचनी, और बेटा रौहतास।
जिन से काल कंपे खड़ा, कदे न आवै पास।। ३८।।
गरीब, जयदेव के कर कटि गये, तो न दई दुरशीष।
सत्यवादी साहिब रते, बसे काल के शीष।। ३६।।
गरीब, बकतालक जल में बसे, आदि अंत बहु जांहि।
द्वादश कोटि कृष्ण खड़े, जिन की गिनती नांहि।। ४०।।
गरीब, कंपे काल कर्म खड़े, बकतालक तप जोर।
उत्पत्ति प्रलय जात है, आगे लाख करोर।। ४१।।
गरीब, इन्द्र ऋषि तपसी कह्या, उत्पत्ति प्रलय भीर।
पलक पलक जुग होत है, ऐसे गहर गंभीर।। ४२।।
गरीब, कागभुसंड की भक्ति सुन, प्रलय पदम असंख।
वार पार नहीं पाईये, काल कर्म नहीं शंक।। ४३।।
गरीब, मारकण्डे जुग जुग तपे, रूमी ऋषि सत्संग।
अजर अमर चेला गुरु, निर्भय अचल अभंग।। ४४।।
गरीब, काल कसाई हँसत है, सर्व लोक कूँ खाय।
अंकुश निर्गुण नाम का, सतगुरु दर पकर्‍या जाय।। ४५।।
गरीब, पीपा और रैदास नामदेव, धन्ना भक्त बाजीद।
मार्‍या मुगदर काल के, होय रहै निःबीज।। ४६।।
गरीब, फिर जामे ऊगै नहीं, ऐसे मति के धीर।
जिन का काल कहां करे, सतगुरु मिले कबीर।। ४७।।
गरीब, काल जो पीसै पीसना, जौंरा है परिहार।
ये दो असलि मजूर हैं, सतगुरु के दरबार।। ४८।।
गरीब, काल डरे कर्तार से, जै जै जै जगदीश।
जौरा जोड़ी झाड़ती, पग रज डारै शीश।। ४६।।
गरीब, सुलतान अधम कूँ पूछि ले, अमर किये क्षण मांहि।
लाग्या भलका ज्ञान का, फिर नहीं आवै जांहि।। ५०।।
गरीब, अठारह लाख तुरा तज्या, पदमनी सोलां सहंस।
एक पलक में तजि गये, सो सतगुरु के हंस।। ५१।।

गरीब, एक रांडी ढांढी ना तजै, ये हैं कऊवा काग।
एक पलक में उठि गये, यह कछु पिछली लाग।। ५२।।
गरीब, काल खड़ा कर्तार दर, मुझे अंदेशा एक।
जिनकूँ मैं चंपौं नहीं, जिन उर नाम बिवेक।। ५३।।
गरीब, सदा सर्वदा संग रहै, और काया घट धार।
या कछु लीला अजब है, ना भरमें संसार।। ५४।।
गरीब, भक्ति मालवे मूल योह, जुग जुग ज्ञान विवेक।
कहन सुनन कूँ दोय हैं, जब मिलना तब एक।। ५५।।
गरीब, तत्त दर्शी का क्या मरे, मिल्या नूर में नूर।
खालिक बिन खाली नहीं, शब्द सिंधु भरपूर।। ५६।।
गरीब, सोलां संख से है परे, उरे सो उर के मांहि।
मरन जीवन की ठौर कित, बेमुख मर मर जांहि।। ५७।।
गरीब, पद परसी हैं पारब्रह्म, साध कहैंते कूर।
दीन दुनी फल देत हैं, परमानंद भरपूर।। ५८।।
गरीब, सर्व कला है काल की, प्रगट गुप्त कुलीन।
कहीं झींवर कहीं जाल है, कहीं मच्छा कहीं मीन।। ५९।।
गरीब, कहीं गऊ कहीं सूर है, कहीं हेडी हिलवांन।
तीन लोक में दिग्विजय, काल गहत है प्रान।। ६०।।
गरीब, कहीं हस्ती गैंडा बना, कहीं बघेरा बोक।
कनक कामिनी काल है, खाय लिये सब लोक।। ६१।।
गरीब, तूं जाने मैं जीवता, मुरदफरोसी भूत।
चौरासी जामैं मरै, गये रसातल ऊत।। ६२।।
गरीब, चौरासी की खाल से, जीव परे हैं आंन।
काल कसाई निरदलै, जुग जुग खैंचा तांन।। ६३।।
गरीब, योनी संकट जीव परे, उरध अधोगति मांहि।
शीश रसातल स्वर्ग पग, तो भी समझै नांहि।। ६४।।
गरीब, याह है जम की खालसे, खिलवत खाना खेल।
बाड़ी ले गये कुंजड़े, फल छूटै अनबेल।। ६५।।
गरीब, लोक रसातल जात हैं, लघु दीर्घ कहां देख।
दृष्टि पड़े सो दुंद है, सबै काल का भेष।। ६६।।
गरीब, पशु पंखी बनराय सब, क्या पर्वत पाषाण।
सर्व दिशा तो काल है, काल तुम्हारी जान।। ६७।।
गरीब, काल कर्म कर गहत है, ले जाता है तोहि।
बिन सतगुरु छूटे नहीं, नाम भरोसा मोहि।। ६८।।
गरीब, एक निरंजन काल है, एक निरंजन नाम।

उर में दोनों बसत हैं, एक महल एक धाम।। ६६।।
गरीब, सतगुरु मैं कुरबांन जां, काल निरंजन कौन।
काम क्रोध मद लोभ सब, काल निरंजन पौंन।। ७०।।
गरीब, मन माया मध्य काल है, जेती लहर उठंत।
कुटिल जीव समझे नहीं, पड़ते नरक हसंत।। ७१।।
गरीब, निःबीज निरंजन नाम है, शील संतोष बिवेक।
ज्ञान लहरि ऊठे सदा, निगुर्ण अंग अलेख।। ७२।।
गरीब, गुझ बीरज गलतान गति, ऐसा निर्गुण नाम।
हृदय कँवल में बसि रह्या, सतगुरु मैं बलि जांव।। ७३।।
गरीब, ररंकार धुनि होत है, तुंही तुंही तुतकार।
सुरति सुहंगम शोधि ले, रोम रोम गुंजार।। ७४।।
गरीब, अविगत अदली नाम हैं, संख कला मति धीर।
पलकौं अंदर चौंर कर, सतगुरु सत्य कबीर।। ७५।।
गरीब, रासा निर्गुण नाम का, कहि समझाया तोहि।
हरदम सुरति लगाईये, बहुरि दोष नहीं मोहि।। ७६।।
गरीब, काल मीच करुणा करै, जम किंकर प्यमाल।
मन माया कंपैं खड़े, अविगत दीन दयाल।। ७७।।
गरीब, भुवन चतुर्दश लोक सब, तुझे न शंका हंस।
अमर पुरुष है मुकट में, बेमुख होहि बिधंस।। ७८।।
गरीब, निश्चय में सब नाम हैं, रख निश्चय प्रतीत।
प्रगट तोहि लखाय हूँ, अविगत अलख अतीत।। ७६।।
गरीब, भानण घड़न दयाल तूं, सुमरत है सुलतान।
सत्संगति मोहि दीजिये, भक्ति बंदगी दान।। ८०।।
गरीब, जहां रहूँ तहां तुझ लहूँ, चित्त पर चिक न डार।
पलक पलक कर आरती, छिन छिन में दीदार।। ८१।।
गरीब, दिल देवा दिल में बसे, मुक्ति मुहल्ला नैंन।
गूंगे तेरी सैंनड़ी, को समझे ये बैंन।। ८२।।
गरीब, अगर डोरि का पंथ लखि, अगर डोरी की बाट।
अगर डोरी से बंधि रहो, जम की खाली हाट।। ८३।।
गरीब, अगर डोरि तो सुरति है, बाट बिहंगम सीध।
परमानंद दीदार हैं, देख दीद बरदीद।। ८४।।
गरीब, कोटि करम जहां पर जलै, कोटि काल पैमाल।
मन माया मूंधे पड़े, भक्ति बंदगी ख्याल।। ८५।।
गरीब, गुलजारा गलतान पद, त्रिकुटी संजम सेज।
कौस्तुभ मणि कस्तूरियां, संख झिलमिलै तेज।। ८६।।

गरीब, जगमग जगमग जगमगै, शीश चरण नहीं देह।
सुन्न वदेशी बसि रह्या, जा स्यौं लग्या सनेह।। ८७।।
गरीब, दुंदर धोखा सब गया, मिटी जनम की भ्रांत।
देवन पति देवा मिले, सब नाथन के नाथ।। ८८।।
गरीब, मनसूर सुखन सूली दिया, अनल हक्क कहि दीन।
बे अदबी बहु होत है, सुन सतगुरु प्रबीन।। ८९।।
गरीब, मरद गरद हो जात हैं, तूं हारी लिख देह।
हारी लिखे तो जीति है, संतौं के गुण येह।। ९०।।
गरीब, हारि लिखे हरि पाईये, जीते सरबस जाय।
ध्रुव कूँ हारी लिख दई, भेटे त्रिभुवन राय।। ९१।।
गरीब, हरि हीरा घट में बसै, अन्त न भरमे जीव।
खोज बूझ से पाईये, तोमे तेरा पीव।। ९२।।
गरीब, किलि किलि सबही मिट गई, बाजे दीर्घ नाद।
सौंहगे से मँहगा भया, बटै अक्षय प्रसाद।। ९३।।
गरीब, सांईं सरीखा हो गया, नहीं कौड़ी का जीव।
नाहक प्रलय जाय था, मिले परमगुरु पीव।। ९४।।
गरीब, इच्छा आशा मिट गई, योही काल का मूल।
नाद बिंद आवें नहीं, पड़ी परम पद झूल।। ९५।।
गरीब, झूलें पंच सुहेलियां, नौ तत्त नगर मंझार।
शब्द महल सेवन करो, जै जै जै कर्तार।। ९६।।
गरीब, खलक मुलक दीखे नहीं, ब्रह्म नूर भरपूर।
अजब तेज देवा पुरुष, सन्मुख सदा हजूर।। ९७।।
गरीब, शब्द सुजीवन निर्मला, बहुबानी अघनूस।
जम के सिर पर डंड है, काल धरे है सूस।। ९८।।
गरीब, काल काल तूं क्या करै, महाकाल मुरझाय।
ऐसा समर्थ पुरुष है, चरण कमल ल्यौ लाय।। ९९।।
गरीब, मंजन मूर्ति महल बिन, सुंन समानी सैंन।
अंदरूनी मौले लह्या, मिट गये फोकट फैंन।। १००।।
गरीब, तोल मोल नहीं माप है, संपट धर्या न जाय।
अविगत पुरुष अगाध है, उर में रह्या समाय।। १०१।।
अबिगत मंदल बाज हीं, चौंरा करै कबीर।
दास गरीब धुमार है, जहां बहु हंसों की भीर।। १०२।।

अथ सजीवन का अंग

गरीब, सुरति सजीवन सिंध घर, अजर अमर वह ठौर।
समाधान एक वृक्ष है, फल लागत बिन मौर।। १।।
गरीब, संख जुगन फूले फलैं, पंछी केलि करांहि।
शाखा तरुवर मूल बिन, नैनों नाल धरांहि।। २।।
गरीब, अनहद पद प्रकाशिया, पंख बिना प्रवेश।
चलि हंसा जहां जाईये, निर्भय अकल अदेश।। ३।।
गरीब, सुंन मंडल संजम करो, सुगल बिलाबल बीन।
अजर अमर घर शोधि ले, सुन हंसा प्रवीन।। ४।।
गरीब, जहां बारह मास बसंत ऋतु, गंध सुगंध सुवास।
मान सरोवर मुक्ति फल, जहां रहैं निज दास।। ५।।
गरीब, मान सरोवर सघन बन, कुंजि कुरल बहु भीर।
अगम अगोचर देश है, अस्तल बंध कबीर।। ६।।
गरीब, हंस कुंजि करीला करैं, मंजन महल सलेश।
सदा सजीवन संत जन, बहुरि न धारैं भेष।। ७।।
गरीब, संजम सेव समाधि सिध्दि, पलक बिछोहा नांहि।
नाद बिंद से रहित घर, अजर अमर वह ठांहि।। ८।।
गरीब, जहां बिन पंखी देवा बसैं, ऐसा है औह देश।
मन इच्छा उड़ि जात है, हरदम सैल हमेश।। ९।।
गरीब, संख जुगन जुग बिचरते, पलक बिछोहा नांहि।
पग धरणी धरते नहीं, बैठे निज घर मांहि।। १०।।
गरीब, निज घर में निज हंस हैं, मंदिर बड़ा खुलाश।
ऐसे दीर्घ वृक्ष हैं, फल लागत कैलाश।। ११।।
गरीब, नदी चलै नघ सुरों से, बारह मास झरंत।
सदा सजीवन मालवे, अगर मूल महकंत।। १२।।
गरीब, अगर मूल के फूल कूँ, हंसा देख हनोज।
जल बिंबा बूझै कोई, मीनी मंडल खोज।। १३।।
गरीब, अगर मूल का फूल है, संपट सुरति समोय।
निश बासर झंखड़ चलै, तो नहीं जाता खोय।। १४।।
गरीब, अगर मूल के फूल में, निज भौंरा भनकंत।
बरषै मेघ अरस घटा, दामनि शिखर खिमंत।। १५।।
गरीब, अगर मूल के फूल कूँ, पल पल सुरति निहार।
कोटि बज्र थांभे खड़ा, एक रती नहीं भार।। १६।।
गरीब, अगर मूल के फूल में, फूल रही राय बेल।
निर्द्वंदी देखे सदा, अगम आगोचर खेल।। १७।।

गरीब, अगर मूल के फूल में, फल एक कंद अजोख।
नैनों नासा अगर है, पारब्रह्म सा थोक।। १८।।
गरीब, अगर मूल के फूल में, वर्ण वर्ण के तेज।
झलकंता अविगत रता, सुई समाना बेझ।। १९।।
गरीब, अगर मूल के फूल में, पारस कणी पहार।
संख सिद्धि शाला पढ़े, बहु वेदी जौंनार।। २०।।
गरीब, अगर मूल माली बिना, सींचत नाहीं कोय।
अनंत काल सूका पड़े, तो नहीं निष्फल होय।। २१।।
गरीब, अगर मूल मस्ताक है, मंजन मूर्ति ऐंन।
कहै सुनै क्या होत है, देखे ही सुख चैंन।। २२।।
गरीब, अगर मूल मस्ताक है, मान सरोवर मांहि।
कोईक हंसा जात हैं, त्रिवैणी तट न्हांहि।। २३।।
गरीब, अगर मूल माला बनी, पहरि रहे हैं हंस।
सदा सजीवन अमर कछ, कदे न होय बिध्वंस।। २४।।
गरीब, अगर मूल के फूल पर, देखो हंस रिसाल।
वर्ण अवर्ण अनंत गति, तहां जगमगैं लाल।। २५।।
गरीब, अगर मूल के फूल पर, एक डांडी है सीध।
रतन अगम बहु पारखी, मोती अनंत अबीध।। २६।।
गरीब, अगर मूल के फूल पर, एक डांडी है बंक।
तिरछी शाखा जा रही, कोई न बेधे अंक।। २७।।
गरीब, रतनसिंधु शिशमार है, चक्र चरित्र लील।
भेष गवन कित जात है, पौंहचत नहीं पपील।। २८।।
गरीब, अगर मूल के फूल पर, पीतंबर पट खोल।
आगै निर्गुण नाह है, मौनी अमर अबोल।। २९।।
गरीब, अगर मूल के फूल में, फिर औंहटा ही आव।
कमंद सुरति का बांधि ले, सतगुरु दीन्हा दाव।। ३०।।
गरीब, अगर मूल के फूल कूँ, उर में आनि अचान।
फिरैं पियाले प्रेम के, पीवत हैं रसपान।। ३१।।
गरीब, अगर मूल बिनशै नही, उत्पति प्रलय जांहि।
प्रलय संख्य असंख्य है, वहां कछु गिनती नांहि।। ३२।।
गरीब, अक्षय वृक्ष की छांह में, हंस करत आनंद।
भोजन मन के भावते, बिलसे आनंद कंद।। ३३।।
गरीब, आनंदी औह देश है, सदा सजीवन संत।
अमर पुरुष देवा जहां, वहां कछु आदि न अंत।। ३४।।
गरीब, चल मौले के देश कूँ, छाडि मुलक की रीति।

सुंन मंडल में रहत है, अविगत अलख अतीत।। ३५।।
गरीब, गगन मंडल आसन किया, सूरत नगरी बास।
झीने जंत्र बाज हीं, सुंन मंडल में रास।। ३६।।
गरीब, बानी अजब अवाज है, मुरली मगन मुरार।
मोहन मंदल घुरत है, बीन बजै बिन तार।। ३७।।
गरीब, झालरि संख असंख धुंन, ताल तंबूरे झांझ।
बाजीगर कूँ देख ले, ऐसा अंजन आंज।। ३८।।
गरीब, बाजीगर बाजी रची, नटणी नाटिक कीन।
पीछे खोज न पाईये, आगे चलता मीन।। ३९।।
गरीब, तिहुँ देवा नाचे खड़े, गण गंधर्व गलतान।
नटणी खेल पसारिया, ना किसी देवै जान।। ४०।।
गरीब, सुरनर मुनिजन मोहिया, नाना रूप लगार।
लोक पाल लूटे सबै, शीश धरी बेगार।। ४१।।
गरीब, संत उलंघन कर गये नटणी नाटिक जीत।
काल कर्म लागै नहीं, सतगुरु की प्रतीत।। ४२।।
गरीब, नटणी चारा चरत है, भ्रम कर्म बहु ख्याल।
अमर पटा जिनका लिख्या, कहा करै तिस काल।। ४३।।
गरीब, जो मोले महबूब है, जिन का काल गुलाम।
नटणी चेरी हो रही, कारज बिन ही दाम।। ४४।।
गरीब, इश्क अलह का जिस लग्या, बेधि रह्या तन गात।
नाम अखंड प्रचंड धुंन, सांईं जेही दात।। ४५।।
गरीब, गुसल करै औजूद में, रोजा बंग निवाज।
तत की तसबी फेरते, मन मक्के दर हाज।। ४६।।
गरीब, हजि आगे हुजत किसी, काबे किसा कबाब।
सोफी कूँ सीनां किसा, अमली किसा शराब।। ४७।।
गरीब, बुद्धि भाठी जिन के चबै, सुरति सुराही पास।
नाम अमल माते सदा, जिन कूँ किसी पियास।। ४८।।
गरीब, कग कबाबं खात है, मदिरा भखै मलीन।
एक खूनी और जारई, इश्क तहां नहीं दीन।। ४९।।
गरीब, इश्क अलह उस रब्ब दा, संतौं ही दे नाल।
अमर पटे जिन दे लिखे, हैं लालौं दे लाल।। ५०।।
गरीब, दिल दर्पण जिन दे सदा, नहीं मोरचा मूल।
समाधान दे वृक्ष में, अगर मूल दे फूल।। ५१।।
गरीब, नौ टोडी पर जगमगै, सप्त पताल सुकथ।
परमहंस सो जानिये, बैठे ब्रह्म अर्थ।। ५२।।

गरीब, ब्रह्म अर्थ कैसे चले, जा का कैसा सोज।
ब्रह्मांड जामें अनंत हैं, यौ लखि मंत्र गोज।। ४३।।
गरीब, यौह गुझ बीरज अविगता, गति मति लखी न जाय।
उलटा सुलटा दौंह दिशा, चालै सुरति सुभाय।। ५४।।
गरीब, ना जल बूडे स्थल बुझे, अग्नि जलै नहीं तास।
पिंड ब्रह्मण्ड आवें नहीं, नाहीं धरणि आकाश।। ५५।।
गरीब, ब्रह्म अर्थ गैंनार गति, अलल पंख का हेत।
उहां से अंडा छूटि पर्‌या, कौने किया सुचेत।। ५६।।
गरीब, अलल पंखी सुंन में बसै, गगन मंडल गैंनार।
भूमंडल अंडा पर्‌या, बच्या किस उपकार।। ५७।।
गरीब, अलल पंख अलल पंखनी, नहीं दिया तिस पोष।
सुरति कमंद से जा मिल्या, बहुरि चढ्‌या उस लोक।। ५८।।
गरीब, अललपंख अनराग है, सुंन विदेशी बैंन।
अकलि अरस कूँ ले गई , अलल पंख गुझ गैंन।। ५६।।
गरीब, गुझ गायत्री पढ़त हैं, समझें सुनै न कोय।
गुझ गायत्री सो सुनै, जो गुझ गायत्री होय।। ६०।।
गरीब, जिकर फिकर मिट जात हैं, उपजे की नहीं पीर।
निर्द्वंदी दावा नहीं, भक्ति बंदगी शीर।। ६१।।
गरीब, नेम धर्म छाडे नहीं, शील व्रत सुरबंध।
दूरे से दीखंत है, निर्मल सुरति समंद।। ६२।।
गरीब, सिकल बिकल आवै नहीं, मिटे भ्रम के चोज।
एकै सुरति एकंग रस, नहीं उपजे का बोझ।। ६३।।
गरीब, सुरति चंबेली मिल रही, समाधांन निज मूल।
बिना पदम पग धरन कूँ, दीन दुनी सब शूल।। ६४।।
गरीब, लोकपाल लीला बज्र, कदे धरौं नहीं शीश।
तीन काल जाचौं नहीं, मोहि मिले जगदीश।। ६५।।
गरीब, और राज सब तुच्छ हैं, गुडियां गीड गिराव।
अग्नि लगै तिस बुद्धि को, जिन हृदय यौह भाव।। ६६।।
गरीब, लख चौरासी मिट गई, मैं तैं गई बिलाय।
सतगुरु संत सहिब रत्ते, बहुरि न करै पसाव।। ६७।।
गरीब, महमंता मस्तान पद, सुरति शब्द घनघोर।
संख पदम उजियार हैं, देख होत हैं भोर।। ६८।।
गरीब, शब्द संदेशा मान ले, शब्द हमारा रूप।
चिसम्यौं आगे चांदनी, बिन ही सूरज धूप।। ६६।।
गरीब, मैंन फैंन सब प्रजली, कुटुंब कटक सब रोग।

धन्य सतगुरु कुरबांन जां, अजर अमर दिया जोग।। ७०।।
गरीब, काल कर्म लावै नहीं, मार्या डंड ढबीर।
हलकी भारी उसै की, सतगुरु सत्य कबीर।। ७१।।
गरीब, अनंत लोक में गाज है, सब गाजौं सिर गाज।
सतगुरु के पानी भरै, धर्मराय का राज।। ७२।।
गरीब, चित्रगुप्त चांपी करें, चौदह मुनि दीवांन।
चौदह कोटि चरणौं पड़े, धर्मराय पकरै कांन।। ७३।।
गरीब, मनसा बाचा कर्मणा, बचन हमारा मान।
लीलंबर पर देख ले, पीतंबर अस्थान।। ७४।।
गरीब, परसि बिश्वंभर पास रहूँ, अनजाया अनभूत।
काल कर्म कीले पड़े, कहाँ करै जम दूत।। ७५।।
गरीब, पुरुष पुरातम यौही है, आया हित के हेत।
मन मोहन मौले खड़ा, छत्र सिंहासन श्वेत।। ७६।।
गरीब, बाजहि जंग जमाल जर, जिंद जूंनि नहीं देह।
पग पाइल नटणी नाचणी, सत्पुरुष की सेव।। ७७।।
गरीब, बाजहि जंग जमाल जर, परमानंद की प्रीत।
जिंदे के जंग जो सुनै, सो जीवत मुक्ति अतीत।। ७८।।
गरीब, संख सिद्धि बानी गुणहि, संख सरस्वती सेव।
ब्रह्मा संख असंख्य हैं, जय जय जय गुरुदेव।। ७९।।
गरीब, विष्णु संख बेदी पढ़ै, शंभू संख समांहि।
अजर अमर सत्पुरुष हैं, बैठे निज पद मांहि।। ८०।।
गरीब, गंग यमुन शुद्ध सरस्वती, त्रिवैणी मध्य ताल।
मानसरोवर न्हान है, चल सरवर की पाल।। ८१।।
गरीब, ऊंचा सरवर डूंघ बिन, रापति मल मल न्हांहि।
परबी बहुरि न पाईये, पंछी तिसाये जांहि।। ८२।।
गरीब, बेला गगन स्वर्ग सुध, नहीं वर्षा का नीर।
मन रापति जहां न्हात है, पंछी तिसाये कीर।। ८३।।
गरीब, मानसरोवर मलागीर, चंदन चरचि बिन गात।
परमहंस बालेसरी, अजब नवेला साथ।। ८४।।
गरीब, मानसरोवर घाट बौह, फलहारी जहां न्हांहि।
फल इच्छा बांचै नहीं, सो नहीं मेले जांहि।। ८५।।
गरीब, मुनि संख सुर रहत हैं, गुणी संख सुर ज्ञान।
जती संख सुर तहां हैं, जोगी संख सुजांन।। ८६।।
गरीब, साधु संख सेवन करैं, भक्ता संख विशेष।
धन्य मौले मस्तान तूं, जय जय जय आलेख।। ८७।।

गरीब, यौह पद पिंगुल पैर बिन, नहीं पीठ नहीं पेट।
शीश दसत जाकै नहीं, सतगुरु कूँ दिये भेट।। ८८।।
गरीब, कलाकंद निर्बंध शुद्ध, शील संतोष विवेक।
क्षमा बिछौने बिछि रहे, ना औह धारै भेख।। ८६।।
गरीब, नहीं जागै नहीं सोवता, नहीं औह गवन करंत।
नहीं खाता नहीं पीवता, नहीं औह पंथ चलंत।। ६०।।
गरीब, अगर बीज निःबीज है, सकल बीज का बीज।
सकल बीज सब जाहिंगे, अगर बीज नहीं छीज।। ६१।।
गरीब, अगर बीज जामै नहीं, जामै है सो बीज।
सावन सिंध सुहेलड़ी, खेलत हैं सब तीज।। ६२।।
गरीब, अलंकार सब तुझ कह्या, सुन ले शिष्य सुजान।
करनी रहनी रंग है, कथनी करियों दान।। ६३।।
गरीब, कथनी कथि कथि जग ठग्या, काये बिलोवै थूक।
उर अंतर रात्या नहीं, ज्यूं बांस बजाई फूक।। ६४।।
गरीब, कथनी कांसा काल है, बीज तड़क्के शीश।
संसे का सांमा नहीं, मरसी बिसवे बीस।। ६५।।
गरीब, तत्वदर्शी पारिंग है, परमेश्वर के साध।
पारब्रह्म से रति रहे, देख्या अगम अगाध।। ६६।।
गरीब, कथनी कंगण पहरि कर, कहा दिखावै मूढ।
करनी कल्प अमर कला, मन का मस्तक मूंड।। ६७।।
गरीब, मन माने घर जात है, उहां कछु बात न चीत।
करनी सिर दे लीजिये, कथनी मत ले सीत।। ६८।।
गरीब, यौह सकल जोग का जोग है, सकल भोग का भोग।
करनी से कर्ता मिलै, कथनी है सब रोग।। ६६।।
गरीब, शूर संगति चाहै नहीं, मरना है मैदान।
कायर कनखल जोड़ हीं, जम का लागै बाण।। १००।।
गरीब, अंजन मंजन कीजिये, करनी कहि द्यौं तोहि।
मूल कँवल कूँ शोधि ले, फिर आगे मग जोहि।। १०१।।
गरीब, चित्र पंखडी चैंन कर, किलियं शब्द जगाय।
नाभि तले दम देहरा, जामें भँवर समाय।। १०२।।
गरीब, जहा ऊँ शब्द उच्चार है, ब्रह्म कमंडल नाद।
जहां तूं सुरति समोय ले, तिस घर विद्या न वाद।। १०३।।
गरीब, नाभि कँवल निर्गुण हटी, हरियं शब्द सजीव।
याह करनी कस लीजिये, जो तुझ मिलना पीव।। १०४।।
गरीब, स्फटिक वर्ण हृदय हुसन, अजपा तारी नेश।

सोहं शब्द उच्चार है, कहा बधावै केश।। १०५।।
गरीब, कंठ कँवल करुणामई, यह मनसा का मूल।
बिन मुख बानी नाम धर, सुरति हिंडोले झूल।। १०६।।
गरीब, द्वादश पवन पलटि ले, नाभि तलै रखि नैंन।
तहां नागनी नीम धर, गगन गरजि है गैंन।। १०७।।
गरीब, इला पिंगला एक कर, सुष्मण भेरा बांधि।
जठराग्नि कूँ जीत ले, त्रिगुटी कूँ शर सांध।। १०८।।
गरीब, सर्पणि कला असंख्य हैं, पश्चिम उगाना सूर।
पूर्व चंद्र झलक हीं, सोलह कला सपूर।। १०९।।
गरीब, कच्छ कलां कूरंभ गति, अष्ट कँवल दल बेधि।
ब्रह्मरंद्र खिरकी लगीं, पवन पलट कर छेदि।। ११०।।
गरीब, सप्त सुरौं सिद्धि कीजिये, गोता मार पताल।
वज्र पौलि खुल्हैं सही, देख अगम नघ लाल।। १११।।
गरीब, सहंस पंखड़ी सेत भुज, कलंगी कला अनेक।
निश वासर नीझर झरै, जब चाहै तब देख।। ११२।।
गरीब, अधर मानसी गंग है, तापरि गंग अनंत।
भूलै भेष कहा फिरैं, यौह सतगुरु का पंथ।। ११३।।
गरीब, त्रिवैणी तीनों कला, राखी नाद समोय।
तन की क्रिया और है, यौह मन मंजन होय।। ११४।।
गरीब, सुरति कलाली हो रही, यौह मन भया कलाल।
भाठी चवै गगनि गुफा, घूमत है मतवाल।। ११५।।
गरीब, नक आगे है सरस्वती, अठारह गंडे गैब।
प्रगट गुप्त बहै सदा, बिन न्हाये बड़ ऐब।। ११६।।
गरीब, सिन्धु महोदधि गरजता, इन्द्र दवन अंदरूंन।
काया काशी जानियों, निर्गुण अलख निमूंन।। ११७।।
गरीब, बेनिमूंन की नावरी, बैठे हैं हम जाय।
अधर चलत नहीं डिगमिगै, केत्यौं दई दिखाय।। ११८।।
गरीब, अठसठि तीरथ नाम में, सकल जिमी असमान।
कदे न डूबै नावरी, शब्द संदेशा मान।। ११९।।
गरीब, पलक फिरंते जुग फिरै, सर्व लोक तिस ठौर।
ऐसी नौका नाम की, नाव चढ़ी तिस गौर।। १२०।।
गरीब, नौका निर्मल नूर की, जामें संत अपार।
एक पलक उहां बैठि करि, करि सब के दीदार।। १२१।।
गरीब, स्वर्ग बहिश्त से भिन्न हैं, वाह नौका निर्वाण।
अमर कच्छ जहां हंस है, पल पल परबी न्हान।। १२२।।

गरीब, सुखसागर की नांवरी, दुःख मोचन होय जांहि।
सकल शिरोमणि सैल हैं, परमहंस तहां न्हांहि।। १२३।।
गरीब, याह करनी कुरबांन है, मन मुद्रा ले साधि।
अमर पटा दरबार में, पावै हंसा दादि।। १२४।।
गरीब, सतगुरु सुरति हंमाय गति, जिस बेधे तिस पार।
आवन जांन कछु है नहीं, दिल अंदर दीदार।। १२५।।
गरीब, सतगुरु सुरति समुंद्र हैं, उठें किलोल अपार।
लोक बुदबुदे हो रहे, क्षणभंगुर संसार।। १२६।।
गरीब, सतगुरु सुरति समुंद्र हैं, उठे तरंग अनंत।
जल जूंनी जामें मरै, अमर पुरुष धन्य कंत।। १२७।।
गरीब, मुरजीवा मांहे बसै, नघ हीरा से नेह।
भय भंजन सत्पुरुष हैं, मुक्ताहल लखि लेह।। १२८।।
मुक्ताहल बिन मोल है, ना कहीं हाट बिकंत।
दासगरीब अनिन रंग, सुरति नाल जुखंत।। १२९।।

अथ समय संजोग का अंग

गरीब, समय आदि ऊँकार, समय शिव ब्रह्मा विष्णं।
समय शेष गणेश, समय है त्रिभुवन कृष्णं।। १।।
गरीब, समय धरणि और धौल, समय थंभे गैनारा।
समय चन्द्र और सूर, समय तारायण सारा।। २।।
गरीब, समय नाद और बिंद, समय पानी और पवना।
समय अग्नि अंगीठ, समय रचे चौदह भुवना।। ३।।
गरीब, सुर नर मुनि जन देव, समय हैं सहंस अठासी।
समय भये नौनाथ, समय है सिद्ध चौरासी।। ४।।
गरीब, सनक सनंदन च्यार, समय नारद और व्यासा।
समय भये शुकदेव, समय शिव ज्ञान प्रकाशा।। ५।।
गरीब, समय अमर भई गौरि, समय शिव तत्त सुनाया।
समय धर्‌या ध्रुव ध्यान, समय प्रहलाद चिताया।। ६।।
गरीब, समय छले बलिराय, समय त्रिलोकी मापी।
समय चौदहूँ रतन मथे, पृथ्वी सब कांपी।। ७।।
गरीब, समय परशुराम क्षत्री, निःक्षत्री माली थरप्या।
समय ही कागभुशंड, राम की लई परीक्षा।। ८।।
गरीब, समय कैकेई कंठ, नाद मुख चूस्या गूंठा।
समय हुये विषकंट, समय दशरथ बहु टूठा।। ९।।

गरीब, समय वाच त्रिबाच, कही दशरथ कूँ बानी।
समय भरत कूँ राज, देशौंटे सारंग पानी।। १०।।
गरीब, समय राम तप कीन, समय ही सीता हरिया।
समय सेतुबंध बांधि, समय सुर असुरन लरिया।। ११।।
गरीब, हंकारे हनुमंत, समय सजीवन ल्याये।
पाइक खानें जाद, समय दल आन जिवाये।। १२।।
गरीब, अंगद चरन सुभान, समय सुर शिला फिराई।
कंपे रावण भूप, सकल लंका थरराई।। १३।।
गरीब, लक्ष्मण बाण अमान, बेधिया रावण भौंरा।
समय पहुँचि आंन, देख अपना ये जौंरा।। १४।।
गरीब, अंगद और नल नील, हनूं पाइक सुग्रीवां।
जाम्बुवान बल जोर, समय भारत जंग कीना।। १५।।
गरीब, कुंभकर्ण सुख नींद, समय सोवै षट् मासा।
द्वादश दूत हजार, देत मुगदर की त्रासा।। १६।।
गरीब, सौ म्हैंसे भक्षण कीन्ह, सही सौ दारू मटके।
फजरि कलेवा होत, सिपहरी करते झटके।। १७।।
गरीब, महिरावण भुज पार, हनूं ल्याये मृत्यु लोका।
कुंभकर्ण कुल नाश, रह्या एक रती न धोखा।। १८।।
गरीब, तोरी लंक बिलंक, समय ही रावण मारे।
समय विभीषण राज, सुरौं के कारज सारे।। १९।।
गरीब, सुर तेतीसौं कोटि, समय सिर आनि छुटाये।
बजै पंचायन संख, विभीषण तिलक दिवाये।। २०।।
गरीब, समय मंदोदरी नारि, भई है बूढी तरुणं।
नौजोबन नघ फोर, भये हैं औरे वर्णं।। २१।।
गरीब, समय ही गोरख दत्त, भिड़े हैं चकरौं भाई।
गुण आपा नहीं मिट्या, सिद्धि जहां कला दिखाई।। २२।।
गरीब, समय धधीछं चक्र, तहां वृत्रासुर मार्या।
भस्मागिर हुए भस्म, समय शिव बहुत पुकार्या।। २३।।
गरीब, समय मोहनी रूप, धरे भगवान बिनानी।
भस्मागिर छौं कीन, किये हैं धूमा धामी।। २४।।
गरीब, कृष्ण गुरु कर्तार, समय दुर्वासा देवा।
इन्द्र उर्वशी छले, लहे नहीं पद के भेवा।। २५।।
गरीब, समय देख सुरपति, गये गौतम के द्वारे।
शिला अहिल्या होत, चंद्र लागी मृग छारे।। २६।।
गरीब, दोनों ही सुर संग, होत है होरा होरी।

समय गज और ग्राह, जुटे हैं जोरा जोरी।। २७।।
गरीब, हथियन हलके तोर, तहां वन चारा ल्यावै।
अपने कुल के काज, कुंजर कूँ आन खुवावै।। २८।।
गरीब, कीन्हा दस हजार वर्ष, युद्ध हठी हमीरं।
जानराय जगदीश, तमाशा देखैं तीरं।। २६।।
गरीब, भक्त वत्सल भगवान, गरुड वाहन पग धारे।
अर्ध नाम अधिकार, पलक में आनि उबारे।। ३०।।
गरीब, सुर पठये बैकुण्ठ, जुगन जुग तहां रहाई।
गोप हरी गोपाल, पूर है अलख गुसांईं।। ३१।।
गरीब, समय द्रौपदी न्हान गई, गंगा के तीरं।
अंधे कूँ कोपीन, पार कर दीन्हे चीरं।। ३२।।
गरीब, कौरव पांडव खिलस किया, तहां चौपड़ मांडी।
ल्यावौ द्रौपदी नारि, पकड़ि अर्जुन की रांडी।। ३३।।
गरीब, दुःशासन कूँ हुमक किया, जहां द्रौपदी आई।
नग्न करो इस नारि, सिज्या पर द्यौंह बिठाई।। ३४।।
गरीब, करुणामय दयाल, द्रौपदी टेर सुनाई।
जानराय जगदीश, अनंत जहां चीर बढ़ाई।। ३५।।
गरीब, दुःशासन दुदकारि, पकरि कर चीर उतारै।
हो गये अनंत अपार, तहां को परदा पारै।। ३६।।
गरीब, भीष्म द्रौणा कर्ण, दई नहीं आडी तीछी।
महाभारत के मांहि, ताहि ते तां पर बीती।। ३७।।
गरीब, विदुर बदी नहीं सुनी, द्रौपदी हमरी प्यारी।
मजलसि से उठ गये, रखी सांईं से यारी।। ३८।।
गरीब, महाभारत के बीच, भारथी कौन कहावै।
अर्जुन योधा भीम, समय सिर बाण चलावै।। ३६।।
गरीब, अर्जुन मारे बाण, पिता भीष्म की छाती।
बजै दुंदभी नाद, पृथ्वी हो गई राती।। ४०।।
गरीब, भीष्म पिता कूँ पात लग्या, सुनी द्रौपदी निंदा।
द्रौणाचार्य चूक परी, भूल्या है बंदा।। ४१।।
गरीब, कर्ण परे दल मांहि, दई के कारन है रे।
केशव कृष्ण करीम, अलख सांईं जय जय रे।। ४२।।
गरीब, महाभारत के मांहि, टटीहरी अंड उबारे।
भीष्म द्रौणा कर्ण, तीनि तकि बाणौं मारे।। ४३।।
गरीब, सौ बातौं की एक, भक्ति द्रौही नहीं छूटै।
अपने जन के काज, रापति घंटाला टूटै।। ४४।।

गरीब, हर दम हीरा नाम, जपै पंखेरू प्राणी।
दुर्योधन के भूल, बड़े राजा अभिमानी।। ४५।।
गरीब, ग्यारह सातर बीच, अंड राखे बिचाले।
चक्र सुदर्शन गैब, आनि लागे घंटाले।। ४६।।
गरीब, मौले मगन मुरारि, बाजि हैं मुरली भेरी।
अविगत अपरंपार, कौन गति जानैं तेरी।। ४७।।
गरीब, धन्य सतगुरु सुर ज्ञान, सरीकत हंस उबारे।
अर्जुन यमुना वृक्ष, जानि कर जड़ उद्धारे।। ४८।।
गरीब, समय सधी जदि आनि, इकोतर घाली घानी।
पंडौ कुल से बाद, जपै नहीं सारंग पानी।। ४६।।
गरीब, दुर्योधन जग मांहि, भारथी राजा पूरा।
को राखै शरणाय, काल सिर बाज्या तूरा।। ५०।।

अथ पामर प्राणी का अंग

गरीब, मारग पंथ पपील है, दूजा पंथी गैंन।
दोनों पद में लीन है, सुन सतगुरु की सैंन।। १।।
गरीब, पामर चाहे पालकी, यामै बैठो जाय।
आदि अविद्या घट भर्‌या, जप तप करै बलाय।। २।।
गरीब, जप तप सेती औलने, करनी करै न कूर।
पामर निश्चय कीजिये, श्वान गदहरा सूर।। ३।।
गरीब, पामर जीव सूं प्रीति क्या, जाका मुख नहीं देख।
कोटि कटक में पाईये, सत्यवादी कोई एक।। ४।।
गरीब, सत्यवादी तो संत हैं, पामर यौह संसार।
जुग जुग भटका खात है, चौरासी में डार।। ५।।
गरीब, पामर कोई न होत है, पारब्रह्म में लीन।
सत्यवादी कोट्यौं मिलै, ज्यों दरिया मध्य मीन।। ६।।
गरीब, सत्यवादी के साच है, पामर के है झूठ।
सुत्र नहीं मुख लाल होय, पान लदे जो ऊंट।। ७।।
गरीब, पामर पानी ना पीवै, अपने हाथ अपंग।
सत्यवादी कुल त्यारहीं, ज्यूं भागीरथ गंग।। ८।।
गरीब, पामर कूँ परचीति दे, जासूं नाहीं लाभ।
सत लंघना जो सिंह रहै, सो नहीं चर हैं डाभ।। ६।।
गरीब, पामर जीव संसार में, डोलै घर घर बार।
भेष बिझूका खात है, नाहक बहे बिगार।। १०।।

गरीब, जैसे वृक्ष उदांनि में, फल छाया जीव देव।
जाका दर्शन कीजिये, पामर से क्या लेव।। ११।।
गरीब, वृक्ष नदी निधि रूप है, भोजन दे भरपूर।
पामर से क्या लेत है, जो तप हीना कूर।। १२।।
गरीब, पामर पाला माह का, दिखे अंग न रेश।
धूप लगे बह जात है, जाकूँ क्या उपदेश।। १३।।
गरीब, पामर परवा पवन ज्यूं, रोगी आठौं जाम।
बिन सांईं की बंदगी, पामर है सब गाम।। १४।।
गरीब, सांई साहिब सकल में, क्या पामर प्रवीन।
प्रवीना तो परख है, पामर नहीं यकीन।। १५।।
गरीब, प्रवीन परमगुरु संत हैं, राम रत्ते रणधीर।
आदि अंत मध्य संत है, सब सिर तपै कबीर।। १६।।
गरीब, बनजारे के बैल परि, गूंनि लदै दिन रात।
सुंनखर चावल भरि रहे, कदे न खाया भात।। १७।।
गरीब, पामर नागनि का पुत्र, जन्मत भक्षण कीन।
कुंडली में सें जात है, सो जग को दुःख दीन।। १८।।
गरीब, बारू रेत रसायनं, प्रजापति प्रवान।
भांडे घड़े कुम्हार को, हुन्नर हेत पिछान।। १६।।
गरीब, बारू के मटके बनैं, जामे नीर हुतास।
किरका किरका जोरि करि, यौह दम जोया श्वास।। २०।।
गरीब, रब्ब राजिक जान्या नहीं, पामर कुंद बसीठ।
चौके के नहीं काम की, ज्यूं कुत्ते की बीठ।। २१।।
गरीब, तखड़ी पलड़े मिष्ट है, जोखै घृत अरु खांड।
एक रत्ती चाख्या नहीं, चूंन भर्‌या ज्यूं ग्रांड।। २२।।
गरीब, बर्तन भोजन रझत हैं, चाखै नहीं सलेश।
पामर के नहीं काम का, साईं का उपदेश।। २३।।
गरीब, ज्यूं माखी मधु सांचि है, जोरि जोरि रस बूंद।
तोरि तिहायत ले गया, पामर का मुख मूंद।। २४।।
गरीब, मधु की माखी मध भरी, हमरे देश सुकाल।
आया रसका ले गया, पकरि हलाई डाल।। २५।।
गरीब, रस के रसिया संत हैं, तोर्‌या मुक्ति महाल।
जुग जुग अस्थिर होत है, पाया शब्द रिसाल।। २६।।
गरीब, कऊवा मोती ना चुगै, हंस न मींडक भक्ष।
सो साहिब में मिलहिंगे, ध्यान धरत हैं कच्छ।। २७।।
गरीब, कच्छव ध्यान अलील रंग, हृदय हदफ हमेश।

ररंकार से रति रहे, जैसे रटता शेष।। २८।।
गरीब, पामर पनही खात है, जम किंकर के धाम।
सांनी हाल सलौन रस, यौह तो हमरा काम।। २९।।
गरीब, राजपाट गज ठाठ कूँ, पामर करे प्रीत।
करनी से मुख मोरि हैं, याह पामर की रीत।। ३०।।
गरीब, दाख न जंबक काम के, बनचर मोती माल।
हाडी कूँ छाडे नहीं, जो श्वान चढ़े सुखपाल।। ३१।।
गरीब, सकल वर्ण जल होत है, जो रंग रंगी देत।
बारह बानी पलट हैं, जो पद परसै सेत।। ३२।।
गरीब, पामर अलस अलौंन है, संत सलूने शूर।
साधौं के मुख तेज है, पामर के नहीं नूर।। ३३।।
गरीब, परमेश्वर तो पाख हैं, पाख साधु है संत।
नाम रत्ता अविगत मता, खेले आदि अरु अंत।। ३४।।
गरीब, महबूब मगन मौले रते, आशिक इश्क असील।
सब रंग सेती न्यार है, अविगत अलख अलील।। ३५।।

अथ पारख का अंग

गरीब, न्यौंली नाद सुभांन गति, लरै भुवंग हमेश।
जड़ी जानि जगदीश हैं, विष नहीं व्यापै शेष।। १।।
गरीब, हंस गवन करते नहीं, मानसरोवर छाडि।
कऊवा उड़ि उड़ि जात हैं, खाते मांसा हाड।। २।।
गरीब, मानसरोवर मुक्ति फल, मुक्ताहल के ढेर।
कऊवा आसन ना बंधै, जे भूमि दीन सुमेर।। ३।।
गरीब, कऊवा रूपी भेष है, ना प्रतीत यकीन।
अठसठि का फल मेट करि, भये दीन बेदीन।। ४।।
गरीब, हंस दिशा तो साध है, सरवर है सत्संग।
मुक्ताहल बानी चुगै, चढ़त नवेला रंग।। ५।।
गरीब, नर नाड़ी कूँ पकड़ि हैं, कर से गहै सुचेत।
निशां नफस में होत है, तब हंसा दरशै श्वेत।। ६।।
गरीब, दरस परस नहीं अंतरा, रूमी वस्त्र बीच।
पारस लोहा एक ढिग, पलटै नहीं अभीच।। ७।।
गरीब, ना स्वर नाद न देह दिल, तन मन नहीं मुकाम।
कौन महल हंसा गये, कहां लिया विश्राम।। ८।।
गरीब, च्यार मुक्ति बैकुंठ बट, सप्तपुरी सैलान।
आगे धाम कबीर का, हंस न पावै जान।। ९।।

गरीब, कलि विष कोयला कर्म है, चिनघी अग्नि पतंग।
अजामेल सदना तिरे, जर बर गये कुसंग।। १०।।
गरीब, मौन रहै मघ ना लहै, मारग बंकी बाट।
शून्य शिखर गढ़ सुरंग है, कर सतगुरु से साट।। ११।।
गरीब, पल सेती पल ना मिलै, भौंहि लगै नहीं भौंह।
बिच तकिया महबूब का, परमेश्वर की सौंह।। १२।।
गरीब, भौंहौं ऊपरि भँवर है, भौंरौं ऊपर हंस।
एकै जाति जिहान की, वही कन्हैया कंस।। १३।।
गरीब, तूंबा जल में बहि चल्या, बाहर भीतर नीर।
पानी से पाला भया, एक सिन्ध है तीर।। १४।।
गरीब, तन तूंबा शुन्य सिन्ध है, बाहर भीतर शून्य।
ज्ञान ध्यान की गमि करै, लगै धुंनि में धुंनि।। १५।।
गरीब, श्रवन चिशमें नाक मुख, तालू पर त्रिबैनि।
सुरति सहंस मुख गंग है, मध्य महोदधि ऐंन।। १६।।
गरीब, श्रवन चिशमें नाक मुख, तालू नहीं तलाव।
मन महोदधि है नहीं, अलख अलह दरियाव।। १७।।
गरीब, जैसे तार तंबूर का, घोर करै घर मांहि।
ऐसे घट में नाद है, बोलत पावै नांहि।। १८।।
गरीब, पिंड परे पक्षी उड्या, मन सूवा सति भाय।
तन त्रिगुण तीनों तजे, कहो कहां रहे समाय।। १९।।
गरीब, कुंडलनी में कुलफ है, तहां वहां मन का बास।
पिंड परै पावै नहीं, ज्यौं फूलन में वास।। २०।।
गरीब, नाभी नाद गुंजार है, हिरदे कँवल में वास।
कंठ कँवल वाणी कहै, त्रिकुटी कँवल प्रकाश।। २१।।
गरीब, रिंचक नाम निनाम है, सुरति निरति के मध्य।
हद्दी भूले हद्दि में, बेहद्दी बेहद्द।। २२।।
गरीब, सुरति सुई नाका निरख, तिल में तालिब तीर।
चौंसठ सिंध बहे जहां, पट्टण घाट हमीर।। २३।।
गरीब, नयनौं में जल कित बसै, आतम ताल समोय।
बिन बादल बरषै सदा, दिल दरिया कूँ धोय।। २४।।
गरीब, हिरदे हरि दरियाव है, नयन घटा बरषंत।
कारे धौरे बदरा, कोई साधु निरखंत।। २५।।
गरीब, लोर लहर ऊठै सदा, कारी घटा सुपेद।
ब्रह्मा अक्षर क्या लिखै, भीगे च्यारौं वेद।। २६।।
गरीब, कर कलम कागज नहीं, नहीं स्याही नहीं दवात।

बांझ पालणा भूल बुधि, पंडित खाली हाथ।। २७।।
गरीब, काया काशी मन मगहर, दहूँ के मध्य कबीर।
काशी तजि मगहर गया, पाया नहीं शरीर।। २८।।
गरीब, काया काशी मन मगहर, दौंह के बीच मुकाम।
जहां जुलहदी घर किया, आदि अंत विश्राम।। २९।।
गरीब, श्वेत वर्ण शुभ रंग है, नगरी अकल अमान।
तन मन की तो गमि नहीं, निज मन का अस्थान।। ३०।।
गरीब, निज मन ऊपर परम पद, राग रूप रघुवीर।
दूजे की तो गमि नहीं, तहां वहां महल कबीर।। ३१।।
गरीब, निज मन सेती मन हुवा, मन सेती तन देह।
देही से कुछ ना हुवा, नाहक लाई खेह।। ३२।।
गरीब, शुभ रंग से सब रंग हैं, जेते रंग जिहान।
काया माया कलप सब, सिरजी च्यारौं खान।। ३३।।
गरीब, बेरां साटै बेचियां, बैरागर सुलतान।
मालनि कूँ जान्यां नहीं, बे बुधि खैंचा तान।। ३४।।
गरीब, सेर बेर पलड़े चढ़े, एक पड्या भौं मांहि।
मालनि और सुलतान कूँ, हिलकारे ले जांहि।। ३५।।
गरीब, ढाई लाख की पावड़ी, एक पैसे के बेर।
देख अधम सुलतान कूँ, कैसी डारी मेर।। ३६।।
गरीब, नौ लख नानक नाद में, दस लख गोरख तीर।
लाख दत्त संगी सदा, चरणौं चरचि कबीर।। ३७।।
गरीब, नौलख नानक नाद में, दस लख गोरख पास।
अनंत संत पद में मिले, कोटि तिरे रैदास।। ३८।।
गरीब, रामानंद से लक्ष गुरु, त्यारे शिष्य के भाय।
चेलों की गिनती नहीं, पद में रहे समाय।। ३९।।
गरीब, खोजी खालिक से मिले, ज्ञानी के उपदेश।
सतगुरु पीर कबीर हैं, सब काहूँ उपदेश।। ४०।।
गरीब, दुरवासा और गरुड स्यौं, कीन्हा ज्ञान समोध।
अरब रमायण मुख कही, वालमीक कूँ सोध।। ४१।।
गरीब, फिर पंडौं की यज्ञ में, संख पंचायन टेर।
द्वादश कोटि पंडित जहां, पड़ी सभन की मेर।। ४२।।
गरीब, करी कृष्ण भगवान कूँ, चरणामृत स्यौं प्रीत।
संख पंचायन जब बज्या, लिया द्रोपदी सीत।। ४३।।
गरीब, द्वादश कोटि पंडित जहां, और ब्रह्मा विष्णु महेश।
चरण लिये जगदीश कूँ, जिस कूँ रटता शेष।। ४४।।

गरीब, बालनीक के बाल समि, नाहीं तीनौं लोक।
सुर नर मुनि जन कृष्ण सुधि, पंडौं पाई पोख।। ४५।।
गरीब, सौ करोरि बानी कही, पहिले चोले चाव।
दूजे चोले कृष्ण कूँ, लिये साध के पाव।। ४६।।
गरीब, कथा रमायण रस भरी, आगम अगम अगाध।
बालमीक के चरण कूँ, सब ही चरचैं साध।। ४७।।
गरीब, गरुड बोध बेदी रची, राम कृष्ण हैरान।
लंका पर धावा हुवा, जदि का कहूँ व्यान।। ४८।।
गरीब, उतपति परलौ जात हैं, अनंत कोटि ब्रह्मण्ड।
जोगजीत समझाईया, जिब उधरे कागभुसंड।। ४६।।
गरीब, वाशिष्ट विश्वामित्र से, आवैं जांहि अनेक।
कागभुसंड की पलक में, जो चाहे सो देख।। ५०।।
गरीब, ऐसे कागभुसंड हैं, जोगजीत के दास।
चरचा ज्ञान सुनाय कर, दीन्हा पद में वास।। ५१।।
गरीब, दुर्वासा और मुनिंद्र का, हुआ ज्ञान संवाद।
दत्त तत्व में मिल गये, जा घर विद्या न बाद।। ४२।।
गरीब, बहौर शमश तबरेज कूँ, समझाये मनसूर।
शिमली पर साका हुआ, पौंहचे तख्त हजूर।। ५३।।
गरीब, सिक बंधी सतगुरु सही, चकवे ज्ञान अमान।
शीश कट्या मनसूर का, फेर दिया जद दान।। ५४।।
गरीब, करनाम मिले सुलतान कूँ, बलख शहर बादशाह।
अठारह लाख तुरा तज्या, परसे अलख अलाह।। ५५।।
गरीब, सुलतानी मक्के गये, मक्का नहीं मुकाम।
गया रांड के लेन कूँ, कहै अधम सुलतान।। ५६।।
गरीब, राबिया परसी रब्ब स्यौं, मक्के की असवार।
तीन मजिल मक्का गया, बीबी के दीदार।। ५७।।
गरीब, फिर राबिया बंसरी बनी, मक्के चढ़ाया शीश।
सुलतान अधम चरणौं लगे, धंन सतगुरु जगदीश।। ५८।।
गरीब, बंसरी से वेश्वा बनी, शब्द सुनाया राग।
बहुरि कमाली पुत्री, जुग जुग त्याग बैराग।। ५६।।
गरीब, रांझा रब्ब का नूर है, हीरे चिश्म गुलाब।
धरणि अकाश नहीं जद होते, काजी नहीं किताब।। ६०।।
गरीब, चंद सूर जद पौन न पानी, रांझा हीर सही थे।
उत्पति प्रलय कोटि गई जद, तख्त खवास रही थे।। ६१।।
गरीब, हीर जलाली भई लुहारी, रोडे रंग लगाया।

काट कूट कर फूक दिया जद, फिर फिर अवतर आया।। ६२।।
गरीब, शब्द स्वरूपी रूप है, नहीं देह तन अंग।
जलाली के दरस का, युगन युगन सत्संग।। ६३।।
गरीब, मीरां बाई पद मिली, सतगुरु पीर कबीर।
देह छतां ल्यौ लीन है, पाया नहीं शरीर।। ६४।।
गरीब, पीपा धन्ना रैदास थे, सदन कसाई कौन।
अविगत पूर्ण ब्रह्म कूँ, कहा करी अनहौन।। ६५।।
गरीब, रंका बंका तिर गये, नामा छीपा नेह।
च्यार वर्ण षट आश्रम, जिन के मौंहडे खेह।। ६६।।
गरीब, बालनीक बैकुंठ परि, स्वर्ग लगाई लात।
संख पंचायन घुरत हैं, गण गंधर्व ऋषि मात।। ६७।।
गरीब, स्वर्ग लोक के देवता, किन्हें न पूर्‌या नाद।
सुपच सिंहासन बैठते, बाज्या अगम अगाध।। ६८।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि थे, सहदेव से सुर बीन।
सहंस अठासी देव में, कोई न पद में लीन।। ६९।।
गरीब, बाज्या संख स्वर्ग सुन्या, चौदह भुवन उचार।
तेतीसौं तत्त ना लह्या, किन्हें न पाया पार।। ७०।।
गरीब, च्यार वर्ण षट आश्रम, बिडरे दोनों दीन।
मुक्ति खेत कूँ छाडि करि, मगहर भये ल्यौ लीन।। ७१।।
गरीब, नौलख बोडी विसतरी, बटक बीज विस्तार।
केशो कल्प कबीर की, दूजा नहीं गंवार।। ७२।।
गरीब, मगहर मोती बरष हीं, बनारस कुछ भ्रान्ति।
कांसी पीतल क्या करै, जहां बरसै पारस स्वांति।। ७३।।
गरीब, मगहर मेला ब्रह्म स्यौं, बनारस बन भील।
ज्ञानी ध्यानी संग चले, निंद्या करैं कुचील।। ७४।।
गरीब, मुक्ति खेत कूँ तजि गये, मगहर में दीदार।
जुलहा चमरा चित बसैं, ऊंचा कुल धिक्कार।। ७५।।
गरीब, च्यार वर्ण षट आश्रम, कल्प करी दिल मांहि।
काशी तजि मगहर गये, ते नर मुक्ति न पांहि।। ७६।।
गरीब, भूमि भरोसे बूडि है, कल्पत है दहूँ दीन।
सब का सतगुरु कुल धनी, मगहर भये ल्यौलीन।। ७७।।
गरीब, काशी मरै सो भूत होय, मगहर मरै सो प्रेत।
ऊंची भूमि कबीर की, पौढ़े आसन श्वेत।। ७८।।
गरीब, काशी पुरी कसूर क्या, मगहर मुक्ति क्यों होय।
जुलहा शब्द अतीत थे, जाति वर्ण नहीं कोय।। ७९।।

गरीब, काशी पुरी कसूर यौह, मुक्ति होत सब जाति।
काशी तजि मगहर गये, लगी मुक्ति सिर लात।। ८०।।
गरीब, मुक्ति खेत मथुरा पुरी, कीन्हा कृष्ण किलोल।
कंश केशि चानौर से, फिरते डामांडोल।। ८१।।
गरीब, जगन्नाथ जगदीश कै, उर्ध्व मुखी है ग्यास।
मसक बंधी मन्दिर पड़ी, झूठी सकल उपास।। ८२।।
गरीब, एकादशी अजोग है, एकादश है सार।
द्वादश मध्य मिलाप है, साहिब का दीदार।। ८३।।
गरीब, माह महातम न्हात हैं, ब्रह्म महूरत मांहि।
काशी गया प्रयाग मध्य, सांई शरणा नांहि।। ८४।।
गरीब, कोटि जतन जीव करत हैं, दुविधा दुई न जाय।
साहिब का शरणा नहीं, चाले अपने भाय।। ८५।।
गरीब, जीव जिवासे ज्यौं जल्या, जल के मांही सूक।
सतगुरु पुरुष कबीर से, रहे अनंत जुग कूक।। ८६।।
गरीब, जीव जिवासे ज्यौं जल्या, जल से मान्या दोष।
सकल अविद्या विष भर्या, अग्नि परे तब पोष।। ८७।।
गरीब, राम रमे सो राम हैं, देव रमे सो देव।
भूतों रमे सो भूत हैं, सुनों संत सुर भेव।। ८८।।
गरीब, कली कली का रस लिया, भँवर कमल कूँ सोध।
ज्ञान गदहरे पर चढ़ै, पढ़े अठारह बोध।। ८९।।
गरीब, जैसी याह मकरंद है, कमल केतगी वास।
प्रान तजे हरि ना भजे, यौ जग गया निराश।। ९०।।
गरीब, मलागीर में गुण कहां, भुवंग लिपटे आय।
शीतल पून्यौं चन्द्र ज्यौं, तपति बुझावे तांहि।। ९१।।
गरीब, सजन सलौने संत हैं, आठौं कँवल समाधि।
दिल दरपन मन मुसकला, रिंचक नहीं उपाधि।। ९२।।
गरीब, श्वेत वर्ण शुभ रंग है, जहां लगाये नैंन।
दूजे की आशा नहीं, चढ़े रहत हैं गैंन।। ९३।।
गरीब, गैंन गगन में चढ़ि रहे, श्वेत भूमिका भीर।
सीप नहीं सायर नहीं, मोती बिन ही नीर।। ९४।।
गरीब, सुरति निशाना नैंन में, मन मंजन कर घोट।
निरति निरंतर लग रही, करै लाख में चोट।। ९५।।
गरीब, मुकर खुल्या मालिक मिल्या, नैंन बैंन विलास।
धरनि चलैं सेवन भलैं, चढ़े रहैं अकाश।। ९६।।
गरीब, जे कोई रमै सो गगनि में, धरणी धरै न पांव।

सब ही भूले भ्रम में, कहां रंक कहां राव।। ९७।।
गरीब, कमल कली दर चोज हैं, रिमझिम रिमझिम होय।
गगनि फुहारे छुटि रहे, तहां संत मुख धोय।। ९८।।
गरीब, यौह है पंथ कबीर का, स्वर्ग पतालों सैल।
अनंत कोटि कुल पंथ है, कोई न पावै गैल।। ९९।।
गरीब, त्रिलोकी का राज सब, जे जी कूँ कोई देय।
लाख बधाई क्या करै, नहीं नाम से नेह।। १००।।
गरीब, रतन जड़ाऊ मन्दिर है, लख योजन अस्थान।
साकट सगा न भेटिये, जे होय इन्द्र समान।। १०१।।
गरीब, संख कल्प जुग जीवना, तत्त न दरस्या रिंच।
देह सनीप अरु सकल सब, ज्ञान ध्यान प्रपंच।। १०२।।
गरीब, मारकंड की उम्र है, रब्ब से जुरया न तार।
पीबरत से खाली गये, साहिब के दरबार।। १०३।।
गरीब, कल्प करी करुणामई, सुपच दिया उपदेश।
सतगुरु गोरख नाथ गति, काल कर्म भये नेश।। १०४।।
गरीब, छिंन में उधरी सुपचनी, गौरि तिरी पल मांहि।
उभय महूरत षट दलीप, तिहूवां संसा नांहि।। १०५।।
गरीब, परीक्षत को शुकदे मिले,सात बार उद्धार।
दुर्वासा भगवान गुरु, लगे कुचौं की लार।। १०६।।
गरीब, अर्जुन जुमला वृक्ष थे, गीध व्याध कुल हीन।
गणिका चढ़ी बिवान में, षट दरशन मुसकीन।। १०७।।
गरीब, संख स्वर्ग से है परै, संख पतालौं सैल।
एता बड़ा इलाम है, इलफ सींग रज बैल।। १०८।।
गरीब, बावन बढ़्या सो देख ले, गज ग्राह उबरंत।
सुरति रूप सतगुरु भये, द्रोपति चीर बढ़ंत।। १०९।।
गरीब, जोति स्वरूपी झिलमिला, उधरे गज अरु ग्राह।
गगनि मंडल से ऊतरे, कीन्हा आनि सलाह।। ११०।।
गरीब, ररंकार मुख ऊचरै, गज भया बल हीन।
सर्व लोक सब ठौर है, अविगत अलख कुलीन।। १११।।
गरीब, सहंस अठासी छिक गये, साग पत्र किया भेट।
सब शाहन पति शाह है, साहिब जगतं सेठ।। ११२।।
गरीब, देही मांहि बिदेह है, साहिब सुरति स्वरूप।
अनंत लोक में रम रह्या, जाके रंग न रूप।। ११३।।
गरीब, लघु दीर्घ देवा पुरुष, जन जैसा उन्मान।
सतगुरु सोई जानिये, मुक्ति करत हैं प्राण।। ११४।।

गरीब, देह मुक्ति है कांचली, डारें जात भुवंग।
संख जुगन जग में रहो, जीव पीव एक संग।। ११५।।
गरीब, शिव का गण सेवन करैं, मुर्गलील तिस नाम।
ब्रह्मण्ड भक्षण करै, पल पल आठौं जाम।। ११६।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड का, भक्षण करै मुख हेठ।
किरंच नाम एक संत की, लगी तास कै फेट।। ११७।।
गरीब, जैसे हाली बीज धुनि, पंथी से बतलाय।
जामें खंड परे नहीं, मुख से बात सुनाय।। ११८।।
गरीब, नटवा की लै सुरति है, ढोल बोल बौह गाज।
कमंद चढ़े करुणामई, कबहुँ न बिगरे काज।। ११६।।
गरीब, ज्यौं धम घृती धात को, देवै तुरत बताय।
जाको हीरा दर्श है, जहां वहां टांकी लाय।। १२०।।
गरीब, कदली बीच कपूर है, ताहि लखै नहीं कोय।
पत्र घूंघची वर्ण है, तहां वहां लीजै जोय।। १२१।।
गरीब, गज मोती मस्तक रहै, घूमे फील हमेश।
खान पान चारा नहीं, सुनि सतगुरु उपदेश।। १२२।।
गरीब, जिनकी अजपा धुनि लगी, तिनका यौही हवाल।
सो रापति रघुवीर के, मस्तक जाकै लाल।। १२३।।
गरीब, सीप समुंद्र में रहै, बूठैं स्वांति समोय।
वहां गज मोती जदि भवै, जब चुंबक चिड़िया होय।। १२४।।
गरीब, चुंबक चिड़िया चुंच भरि, डारै नीर बिरोल।
जद गज मोती नीपजे, रतन भरे चहडोल।। १२५।।
गरीब, चुंबक तो सतगुरु कह्या, स्वांति शिष्य का रूप।
बिन सतगुरु निपजै नहीं, राव रंक और भूप।। १२६।।
गरीब, अधर सिंहासन गगनि में, बौहरंगी बरियाम।
जाका नाम कबीर है, कहां धरे से काम।। १२७।।
गरीब, धरिया से भी काम है, प्रहलाद भक्त कूँ बूझि।
नरसिंह उतर्‍या अर्श से, किन्हें न समझी गूझि।। १२८।।
गरीब, निराकार आकार होय, कीन्ही संत सहाय।
बालक वेदन जगतगुरु, जानत है सब माय।। १२६।।
गरीब, इस मौले के मुल्क में, दोनो दीन हमार।
एक बामें एक दाहिनें, बीच बसै करतार।। १३०।।
गरीब, करता आप अलेख है, अविनाशी अल्लाह।
राम रहीम करीम है, कीजो सुरति निगाह।। १३१।।
गरीब, सुरति रूप साहिब धनी, बसै सकल के मांहि।

अनंत कोटि ब्रह्मंड में, देखो सब हीं ठांहि।। १३२।।
गरीब, घट मठ महतत में बसै, अचरा चर ल्यौलीन।
च्यारि खानि में खेलता, औह अलह बेदीन।। १३३।।
गरीब, कौन गडै कौन फूकिये, च्यार्‍यौं दाग दगंत।
औह इन में आया नहीं, पूर्ण ब्रह्म बसंत।। १३४।।
गरीब, मात पिता जाके नहीं, नहीं पिंड नहीं प्राण।
यौह तो पूर्ण ब्रह्म है, औह तो पुरुष अमान।। १३५।।
गरीब, आतम और परमात्मा, एकै नूर जहूर।
बिच कर इयांई कर्म की, तातैं कहिये दूर।। १३६।।
गरीब, आतम पूर्ण ब्रह्म है, परमात्म परब्रह्म।
कल्प रूप कलि में पड्या, जासे लागे कर्म।। १३७।।
गरीब, कर्म लगे शिव विष्णु के, भरमें तीनों देव।
ब्रह्मा जुग छत्तीस लग, कछु न पाया भेव।। १३८।।
गरीब, शिव कूँ ऐसा वर दिया, अपने ही पर आय।
भाग फिरे तिहूँ लोक में, भस्मागिर लिये ताहि।। १३६।।
गरीब, विष्णु नाथ कूँ छल किया, मारे भसमां भूत।
रूप मोहिनी धरि लिया, बेग सिंघारे दूत।। १४०।।
गरीब, शिव कूँ बिन्दू जराईयां, कंदर्प कीया नाश।
फेर बौहर प्रकाशिया, ऐसी मन की वास।। १४१।।
गरीब, लाख लाख जुग तप किया, शिव कंदर्प के हेत।
काया माया छाड़ि करि, ध्यान कँवल शिव श्वेत।। १४२।।
गरीब, फूक्या बिंदु विधान से, बौहर न ऊगै बीज।
कला विश्वंभर नाथ की, कहां छिपाऊँ रीझ।। १४३।।
गरीब, पार्वती पत्नी पलक पर, त्रिलोकी का रूप।
ऐसी पत्नी छाडि कर, कहां चले शिव भूप।। १४४।।
गरीब, रूप मोहनी मोहिया, शिव से सुमरथ देव।
नारद मुनि से को गिनै, पूत बहत्तर सेव।। १४५।।
गरीब, यौह बीजक विस्तार है, मन की झाल किलोल।
पुत्री ब्रह्मा देख कर, हो गये डांमाडोल।। १४६।।
गरीब, देह तजी दुनियां तजी, शिव सिर मारी थाप।
ऐसे ब्रह्मा पिता के, काम लगाया पाप।। १४७।।
गरीब, फेर कल्प करुणा करी, ब्रह्मा पिता सुभान।
स्वर्ग समूल जिहांन में, यौह मन है शैतान।। १४८।।
गरीब, कृष्ण गोपिका भोग करि, फेर जती कहलाय।
याकी गति पाई नहीं, ऐसे त्रिभुवनराय।। १४६।।

गरीब, बाण लगाया बालिया, प्रभास क्षेत्र के मांहि।
स्यौं देसही स्वर्गाहिं गये, यहां कुछ बिछर्‌या नांहि।। १५०।।
गरीब, दुर्वासा कोपे तहां, समझ न आई नीच।
छप्पन कोटि जादौं कटे, मची रुधिर की कीच।। १५१।।
गरीब, गूदड़ गाभ बनाय कर, कीन्ही बहुत मजाक।
डरिये सांईं संत से, सुखदे बोलै साख।। १५२।।
गरीब, दस हजार पुत्र कटे, गोपी काव्यौं लूटि।
गनिका चढ़ी बिवान में, भाव भक्ति से छूटि।। १५३।।
गरीब, दुर्वासा काली शिला, वज्र बली तिहूँ लोक।
अमरीक दरबार में, तिन्ह भी खाया धोख।। १५४।।
गरीब, चक्र सुदर्शन शीश पर, अमरीक कूँ घालि।
तीन लोक भागे फिरे, ऐसी अविगत चाल।। १५५।।
गरीब, कल्प किसी नहीं कीजिये, जो चाहे सो होय।
दुर्वासा के छिपन कूँ, कहीं न पाई खोहि।। १५६।।
गरीब, स्वर्ग मृत पाताल में, चक्र सुदर्शन डीक।
दुर्वासा के चक्र से, जरे नहीं अमरीक।। १५७।।
गरीब, चक्र अपूठा फिर गया, चरण कमल कूँ छूह।
भक्ति विश्वंभर नाथ की, देख दूह बर दूह।। १५८।।
गरीब, कोटि वज्र कूँ फूक दे, चक्र सुदर्शन चूर।
भक्ति वत्सल भगवान से, रहै पैंड दस दूर।। १५९।।
गरीब, दुर्वासा के दहन कूँ, रत्ती न जग में फेट।
छप्पन कोटि जादौं गये, देख हेठ दर हेठ।। १६०।।
गरीब, साग पत्र से छिक गये, देख भक्ति की रीति।
जरै मरै नहीं तास ते, सतगुरु शब्द अतीत।। १६१।।
गरीब, अमरीक असलां असल, भक्ति मुक्ति का रूप।
निश वासर पद में रहै, जहां छाया नहीं धूप।। १६२।।
गरीब, राजा के जोगी गये, दुर्वासा ऋषि देव।
चक्र चलाया घूरि कर, नहीं लई ऋषि सेव।। १६३।।
गरीब, दुर्वासा के शीश कूँ, चाल्या चक्र अचान।
त्रिलोकी में तास गमि, कहीं न देऊँ जान।। १६४।।
गरीब, अमर लोक अमरापुरी, दुर्वासा चलि जाय।
तहां विश्वंभर नाथ को, कीन्ही देख सहाय।। १६५।।
गरीब, कृष्ण गुरु कसनी हुई, और बचैगा कौन।
तीन लोक भागे फिरे, भरमें चौदह भौन।। १६६।।
गरीब, भक्ति द्रोह न कीजिये, भक्ति द्रोह मम दोष।

शिव ब्रह्मा नारद मुनी, जिन्हे जरावैं ठोक।। १६७।।
गरीब, भक्ति द्रोह रावण किया, हिरंनाकुश हिरनांछि।
नारायण नरसिंह भये, मम भगता है साच।। १६८।।
गरीब, मम भगता मम रूप है, मम भगता मम प्राण।
पंड सताये कौरवां, दुर्योधन छयो मान।। १६९।।
गरीब, मम भगता मम प्राण है, मम भगता मम देह।
हिरनाकुश के उदर कूँ, पारत नहीं संदेह।। १७०।।
गरीब, मम भगता मम प्रिय है, नहीं दुनी से काम।
राजा प्रजा रीति सब, यह नहीं जानैं राम।। १७१।।
गरीब, मम भगता के कारने, रचे सकल भंडार।
बालनीक ब्रह्म लोक में, संख कला उदगार।। १७२।।
गरीब, रावण बनी बिहंडिया, मम द्रोही ममजार।
सीता सती कलंक क्या, पदम अठारह भार।। १७३।।
गरीब, मम द्रोही से ना बचूं, छलि बल हनूं प्राण।
बावन हो बलि के गये, रह्या दोहूँ का मान।। १७४।।
गरीब, मम द्रोही मम साल है, मेरे जन का दूत।
कोटि जुगन काटौं तिसे, करूं जंगल का भूत।। १७५।।
गरीब, खान पान पावै नहीं, जल तिरषा बौह अंत।
बस्ती में विचरैं नहीं, शूल फील गज दंत।। १७६।।
गरीब, मम द्रोही मम साल है, मारौं रज रज बीन।
भुवन सकल अरु लोक सब, करौं प्राण तिस क्षीण।। १७७।।
गरीब, ऊंध मुखी गर्भ वास में, हरदम बारमबार।
जूनि पिशाची तास कूँ, जब लग सृष्टि संघार।। १७८।।
गरीब, गर्भ जूनि में त्रास द्यौं, जब लग धरणी अकाश।
मारौं तुस तुस बीन कर, नहीं मिटै गर्भवास।। १७९।।
गरीब, प्राण निकंदू तास के, छ्यासी सृष्टि सिंजोग।
संत संतावन कल्प युग, ता सिर दीर्घ रोग।। १८०।।
गरीब, नारद ब्रह्मा सब सुनौं, और सनकादिक च्यार।
अठासी सहंस जलेब में, याह मति मूढ़ गँवार।। १८१।।
गरीब, चक्र चले अमरीक परि, मैं बख्शौं नहीं तोहि।
मम द्रोही तूं दूसरा, चरण कमल ऋषि जोहि।। १८२।।
गरीब, दुर्वासा बोले तहां, सुनो भक्ति के ईश।
स्वर्ग रिसातल लोक सब, तूं पूर्ण जगदीश।। १८३।।
गरीब, तुम्हरे दर छूटे नहीं, चक्र सुदर्शन चोट।
कहां खंदाओ ईश जी, बचौं कौन की ओट।। १८४।।

गरीब, अमरीक दरबार में, जाओं निर संदेह।
काल घटा पूठी पड़ै, मम द्रोही मुख खेह।। १८५।।
गरीब, दुर्वासा मृतलोक कूँ, तुम जाओं तत्काल।
ज्ञान ध्यान शस्त्र तजो, वाद विद्या जंजाल।। १८६।।
गरीब, जप तप करनी काल है, बिना भक्ति बंधान।
एक निहकेवल नाम है, सो देवेंगे दान।। १८७।।
गरीब, मान बड़ाई कूकरी, डिंभ डफान करंत।
जिन के उर में ना बसूं, जम छाती तोरंत।। १८८।।
गरीब, बनजारे के बैल ज्यौं, फिरैं देश परदेश।
जिन के संग न साथ हूँ, जगत दिखावैं भेष।। १८९।।
गरीब, आजिज मेरे आसरे, मैं आजिज के पास।
गैल गैल लाग्या फिरौं, जब लगि धरणी अकाश।। १९०।।
गरीब, नारद से साधू सती, अति ज्ञाता प्रवीन।
एक पलक में बह गये, मन में बाक मलीन।। १९१।।
गरीब, दुर्वासा अमरीक के, गये ज्ञान गुण डार।
चरण कमल शिक्षा लई, तुम ईश्वर प्राण उधार।। १९२।।
गरीब, बख्शो प्राण दया करो, पीठ लगाओ हाथ।
उर मेरे में ठंडि होय, शीतल कीजे गात।। १९३।।
गरीब, अमरीक महके तहां, बिहंसे बदन खुलास।
तुम ऋषि मेरे प्राण हो, मैं हूँ तुमरा दास।। १९४।।
गरीब, चक्र सुदर्शन शीश धरि, द्यौहि भक्ति की आन।
मैं चेरा चरणां रहूँ, बख्शो मेरे प्राण।। १९५।।
गरीब, चक्र सुदर्शन पकर करि, अमरीक बैठाय।
दुर्वासा पर मेहर करि, चलो भक्ति के भाय।। १९६।।
गरीब, गण गंधर्व और मुनीजन, तेतीसौं तत्व सार।
अपने जन के कारणै, उतरे बारमबार।। १९७।।
गरीब, अनंत कोटि औतार हैं, नौ चितवे बुधि नाश।
खालिक खेलै खलक में, छै ऋतु बारहमास।। १९८।।
गरीब, पीछे पीछे हरि फिरै, आगे संत सुजान।
संत करै सोई साच है, च्यारों जुग प्रवान।। १९९।।
गरीब, सांईं सरीखे साधु हैं, इन समतुल नहीं और।
संत करैं सो होत है, साहिब अपनी ठौर।। २००।।
गरीब, संतौं कारण सब रच्या, सकल जिमी असमान।
चंद सूर पानी पवन, यज्ञ तीर्थ और दान।। २०१।।
गरीब, ज्यौं बच्छा गऊ की नजर में, यौं साईं अरु संत।

हरिजन के पीछे फिरैं, भक्ति वत्सल भगवंत।। २०२।।
गरीब, धारी मेरे संत की, मुझ से मिटै न अंश।
बुरी भली बांचै नहीं, सोई हमरा वंश।। २०३।।
गरीब, संख जीव परलौ करे, संखौं उतपति ख्याल।
ऐसे सुमरथ संत है, एक खिसै नहीं बाल।। २०४।।
गरीब, गरजै इन्द्र अनन्त दल, बौह विधि वर्षा होय।
संख जीव परलौ करैं, संखौं उतपत्ति जोय।। २०५।।
गरीब, इच्छा कर मारै नहीं, बिन इच्छा मर जाय।
निःकामी निज संत हैं, जहां नहीं पाप लगाय।। २०६।।
गरीब, हद्दी तो छूटै नहीं, कीड़ी बदला दीन।
मुहमद की बेगम गुस्से, काट लई आस्तीन।। २०७।।
गरीब, वरषै तरकै डोब दे, त्यारै तीनूं लोक।
ऐसे हरिजन संत हैं, सौदा रोकम रोक।। २०८।।
गरीब, बहत्तरि खूहनि क्षय करी, चुणक ऋषीश्वर देख।
कपिल सिंघारे सघड़ के, पाप लाग्या नहीं एक।। २०६।।
गरीब, द्वादस कोटि निनानवैं, गोरख जनक विदेह।
यौं तयारैं यौं डोबिदे, यामें नहीं संदेह।। २१०।।
गरीब, बीसे में बिसरे नहीं, लागी जोर कसीस।
खंड बिहंडा हो गये, देखो कौंम छत्तीस।। २११।।
गरीब, सहजादे मांगत फिरे, दिल्ली के उमराव।
एक रोटी पाई नहीं, खाते नांन पुलाव।। २१२।।
गरीब, गंगा जमना पार कूँ, चली दुनी सब डोल।
रोटी साटे बिक गये, लड़के बालक मोल।। २१३।।
गरीब, इसतै आगै क्या कहूँ, बीती बौहत बिताड़।
बासमती भोजन करैं, जिन पाया नहीं पवाड़।। २१४।।
गरीब, खर पवाड़ नहीं खात हैं, मनुष्यों खाया तोड़।
सांगर टीटर भाखड़ी, लीन्हे वृक्ष झरोड़।। २१५।।
गरीब, कड़ा कुहिंदरा खा गये, झड़ा झोझरू झांड़।
इसतें आगै क्या कहूँ, रही न बोदी बाड़।। २१६।।
गरीब, फजल किया यौह दुख सुन्या, बरषे दीन दयाल।
आये इंद्र घोर कर, सूभर सरवर लाल।। २१७।।
गरीब, सातौं धात अरु सात अन्न, बरषाही के मांही।
मेहर मौज मौला करी, बद्दल पछांहें जांहि।। २१८।।
गरीब, बरषे इंद्र घनघोर कर, उतर्या हुकम हजूर।
खलक मुलक सब अवादान, ना कहीं होत कसूर।। २१९।।

गरीब, ये बीसे की बात हैं, लग्या ईकीसा ऐंन।
साढ़ महीना सुभ घड़ी, सातौं आठौं चैंन।। २२०।।
गरीब, साढ़ बदी बैठे गदी, इंद्र मुहला लीन।
लोकपाल लहरी कला, परसन देवा तीन।। २२१।।
गरीब, हुकम अरस तें उतरया, वरषे हरिजन संत।
रांडी के मांडी चढ़ी, बुढ़िया जामें दंत।। २२२।।
गरीब, तीन चार और पांच मन, हुवा अंन उजाल।
भीग्या गल्या सो दस मना, यौह खावो कंगाल।। २२३।।
गरीब, लांडी बूची लाड कर, संतौं के प्रताप।
सांगर टीट न पावते, इब खावैं मूंगरु भात।। २२४।।
गरीब, लांडी बूची लटकती, रूखौं ऊपर रूह।
केश बहांही खुस रहे, इब ओढत है सूह।। २२५।।
गरीब, आने का दस सेर अन्न, मिहनतीयां कूँ देह।
पिछले दिन नहीं याद हैं , तौबा कर के लेह।। २२६।।
गरीब, एक आने का सेर अन्न, लेते सबै मजूर।
देख दस गुणा बधि गया, समझि गदहरे सूर।। २२७।।
गरीब, जूलहौं ऊपर जुलम था, मरि गये डूंम डहाल।
कातन कूँ पाया नहीं, पर्या जो बीसाकाल।। २२८।।
गरीब, सासू साली माय क्या, बाप पूत बिछोह।
सकल कबीला तजि गये, ऐसा व्याप्या द्रोह।। २२९।।
गरीब, ऐसी बीती जगत में, जानै नहीं जिहांन।
कत्थ रु चूंना लाय करि, अब चाबन लग गये पान।। २३०।।
गरीब, पंडौं भारत में बचे, यौं राखे जन दास।
काल कुचालौं में रहे, नहीं खाये खड़ घास।। २३१।।
गरीब, एक तरफ छिन पलक है, एक और जुग जाय।
ऐसी माया राम की, नारद मुनि भरमाय।। २३२।।
गरीब, नहीं टोकनी आबटी, चूल्हे लगी न आंच।
आटा मांडत जुग गया, नाचे नारद नांच।। २३३।।
गरीब, एक पलक में जुग गया, जुग में पलक बिहाय।
ऐसी माया तास की, तासूं कहा बसाय।। २३४।।
गरीब, एक ब्रह्मा की रैन में, चौदह इंद्र जात।
जागै जब उत्पत्ति करै, ऐसी जिन की रात।। २३५।।
गरीब, ब्रह्मा कूँ पाई नहीं, उस तालिब की मोड़।
बच्छ चुराये नंद के, सुर नर ज्ञान घमोड़।। २३६।।
गरीब, शिव शंकर जानी नहीं, भूले कागभुसंड।

उड़े अर्श असमान हूँ, छाड कोट ब्रह्मंड।। २३७।।
गरीब, फिर मुख में मेला हुवा, उड़े फिरे चहूँ ओर।
दशौं दिशा विचरे फिरे, नहीं पेट कंकरोर।। २३८।।
गरीब, बौहरि चरण चांपी करी, आजिज भये अनाथ।
कलप सिछ पूर्ण हुई, तुम नाथन के नाथ।। २३९।।
गरीब, सकल जगत मुख में बसे, बन खंड नदी पहार।
अनंत कोटि ब्रह्मंड घट, रामचंद्र अवतार।। २४०।।
गरीब, तिसकी पत्नी ले गया, रावण राक्षस ऊत।
बल वचन अभिमान करि, एक लख संगि पूत।। २४१।।
गरीब, चढ़ि गया शब्द अकाश कूँ, जैसे गुडी उडंत।
शब्द मोड़ सोई लखै, चलै बिना मग पंथ।। २४२।।
गरीब, बैरागर की खानि कूँ, जो कोई लेवे चाहि।
बिना धनी की बंदगी, नगर लगो तिस भाहि।। २४३।।
गरीब, बैरागर वपदेश में, कोटि भांन छिप जांहि।
संख पदम उजियार है, बैठ्या त्रिकुटी मांहि।। २४४।।
गरीब, नैन झरोखे बीच है, नारायण निज रूप।
खलक पलक मूंदे नहीं, पड़े अंध गृह कूप।। २४५।।
गरीब, छूंहनि कोटि कटक दल, गज रापति बोह फील।
जिन्ह हिरदे सांईं नहीं, वै असल परबती भील।। २४६।।
गरीब, सावज भक्षण करत हैं, आत्मघाती प्राण।
दीखत के तो मनुष्य हैं, पिछले जंबक स्वांन।। २४७।।
गरीब, घर नारी नौ जोबनी, तास मंदोदरी नाम।
सौ झोटे रावण भखै, लंक राक्षसी गाम।। २४८।।
गरीब, कुंभकरण और मेघनाद, काली कंकण हाथ।
ऐसी कला कलंक यौह, अनगिन झोटे खात।। २४९।।
गरीब, काल मीच बंधे परे, चंद सूर कर जोर।
नाई सक्का चूहरे कै, खूंहनि सौ सौ करोर।। २५०।।
गरीब, सौ सौ पदम सबतरं, आठ कटक रणधीर।
आगे चौसठि जोगनी, पीछे बावन बीर।। २५१।।
गरीब, एते चलैं जलेब में, उस रावण की साथ।
चलती बेर न कोय संगि, हंस अकेला जात।। २५२।।
गरीब, कलबा भैरों किलकिलें, नाचै नगन प्रेत।
पदम अठारह मंडलीक, रावण मोहरे देत।। २५३।।
गरीब, सत्तरि पदम पिशाच हैं, शिव के कमंद उड़ंत।
बिन ही मुख किलकार हीं, दशौं दिशा बेअंत।। २५४।।

गरीब, अग्नि चकरी बान बौह, छूटत हैं बे मार।
चौदह भुवन गवन गति, नहीं दलौं सूंमार।। २५५।।
गरीब, जल होड़े और पवन बेग, उड़े अधर असमान।
पृथ्वी ऊपर सो चलैं, वे दल बे उनमान।। २५६।।
गरीब, चौदह अरब रापति सजे, पंदरह खरब खुरासान।
इंद्र वरुण कुबेर के, फरकत हैं निशान।। २५७।।
गरीब, सौ करोर भेरी बजैं, सौ करोर सुरताल।
सौ करोर गायन सजैं, सौ करोर नट ख्याल।। २५८।।
गरीब, सौ करोर ढोलक बजैं, सौ करोर मंजीर।
सौ करोर झंझर बजैं, तन मन धरै न धीर।। २५९।।
गरीब, सौ करोर पत्नी सजैं, सौ करोर सुर नाद।
सौ करोर संखा बजैं, लीला अगम अगाध।। २६०।।
गरीब, सौ करोर सावंत सजैं, सौ करोर तहां सूर।
ये रावण के तख्त की, चौकी रहै हजूर।। २६१।।
गरीब, योजन चार अकाश में, जहां रावण की सेज।
तहां राणी नौ जोबनी, हरदम रहै उमेज।। २६२।।
गरीब, एक सवा मन कंद्रप, रज बीरज ढलकंत।
नौ जोबनि से संग होय, रावण भोग करंत।। २६३।।
गरीब, लख दामनि का तेज तन, ऐसी पत्नी नार।
ल्याये सीता छल किया, गये जमाना हार।। २६४।।
गरीब, कलवा भैरों सेवहीं, बिसरि गये जगदीश।
उतरे राजा रामजी, तोरन कूँ भुज बीस।। २६५।।
गरीब, हनुमान अंगद बली, चढ़े संग सुग्रीव।
पदम अठारह प्रगटे, चंपी रावण सीम।। २६६।।
गरीब, सेतु बंध्या सिला तिरी, सैना उतरी पार।
रावण और रघुबीर की, बीच परी तहां रार।। २६७।।
गरीब, कूदैं अरस लंगूरीयां, सौ सौ योजन काल।
पकरै पीठ पिशाच की, तन बीरा मुख लाल।। २६८।।
गरीब, छुबकी लावैं लंक पर, कंगरै कंगरै नाच।
नाद बजत हैं दुंदई, महा परलौ लखि सांच।। २६९।।
गरीब, कोई तो शीश उछाल हीं, कोई समूचे खांहि।
ऐसा भारत होय रह्या, रावण लंका मांहि।। २७०।।
गरीब, कोई रापति के दंत गहि, फेरत हैं चहूँ ओर।
बहुरि जिमी से पटकि देहि, बीति रह्या अंध घोर।। २७१।।
गरीब, कोई सोरन के कलश ले, भागे जांहि अनंत।

पुरी लुटे चहूँ ओर से, फिटि हो रावण कंत।। २७२।।
गरीब, जहां रावण की सेज थी, कलश उतारे आंन।
बोले नारि मंदोदरी, देखो कंत सुजान।। २७३।।
गरीब, छुबकी लावै तिहरगति, उलटे चरणों सूध।
महाबली हनुमान कूँ, पिया अंजनी दूध।। २७४।।
गरीब, कोटि कटक फेटो परे, कोटि गाल गुंजार।
ऐसे हनुवंत बली की, सुरग सुनी किलकार।। २७५।।
गरीब, बांधौं लंक लंगूर कै, पटकौं फटक सुमेर।
डरौं बली रघुनाथ से, एक पलक नहीं बेर।। २७६।।
गरीब, बांधौं लंक लंगूर से, फैंकूँ सुरग समूल।
हुकम नहीं रघुनाथ का, छूटैं सूल बबूल।। २७७।।
गरीब, लंक बिलंक उड़ाय द्यौं, मैं पवनी हनुवंत।
लख योजन कूदौं अरस, सूध फाल बेअंत।। २७८।।
गरीब, पवन लगे दुनिया उड़े, अष्टकुली ज्यूं फूल।
जे गरजूं पौहमी फटै, रहूँ अरस में झूल।। २७९।।
गरीब, जे कूदौं गुंजार करि, धसकैं तीनूं लोक।
सुरग मृत्यु पाताल क्या, मुझ लागत हैं दोष।। २८०।।
गरीब, एक कूदे एक नाच हीं, एक सोवै एक न्हांहि।
एक आचार बिचार में, एक बिन मुख धोये खांहि।। २८१।।
गरीब, मुख जिनों के शेर गति, पीठ जिनों की फील।
तारी दे दे हँसत हैं, सौ सौ योजन डील।। २८२।।
गरीब, पर्वत कूदे उलट अंग, गाल करे गुंजार।
रीछ लंगूरी बंदरे, मुनिछ दोय दल धार।। २८३।।
गरीब, एक कोहके ज्यूं मोर घन, एक चमकै ज्यूं बीज।
ऐसी लीला लंक में, रावण बोया बीज।। २८४।।
गरीब, भेरी तूर बजाव हीं, बीना और सहनाय।
एक रतनों के गंज पर, बैठे आसन लाय।। २८५।।
गरीब, एक रापति दुंम फिराव हीं, बाहै लंका मांहि।
एक करै प्राणायाम विधि, पवन त्रिकुटी ठांहि।। २८६।।
गरीब, एक दानी दत्तब करै, एक खोसै गल घोट।
एक जरीबाब घीसत फिरै, एक सिर ढोवै पोट।। २८७।।
गरीब, क्रोड़ि क्रोड़ि के लाल थे, डारि समुंदर दीन।
कला दई रघुनाथ की, जिन कूँ चंपै मीन।। २८८।।
गरीब, लुटै लंक चहुँ ओर से, हाहाकार हमेश।
दल धाये श्री राम के, कंपे पृथ्वी शेष।। २८९।।

गरीब, पौंहची खेड पताल से, रावण के गढ़ मांहि।
षष्ट मास लंका लूटी, फिर दल पूठै जांहि।। २६०।।
गरीब, बंधे मोरचे मुनह पर, सिमटी लंक बिलंक।
नागदीप दाने सजे, जब दल मानी शंक।। २६१।।
गरीब, दई काल दाने सजे, सौ सौ योजन जाड़।
कानौं में पर्वत छिपे, मुख बावैं भंभाड़।। २६२।।
गरीब, शक्ति बांन समूल सर, दस दस योजन देह।
सूक्ष्म रूप छिन में करैं, बांन बरषें मेह।। २६३।।
गरीब, जंग पड्या जालिम मंडे, मेघनाथ टीकैत।
बांन वरषैं घन घटा, क्या लिख वाणी बैत।। २६४।।
गरीब, छूटैं बांन असमांन से, आठौं बख्त अटूट।
बंदर रीछ लंगूरियां, छाडि चले सब लूट।। २६५।।
गरीब, मेघनाद अगाध गति, तप तालिब का कीन।
शिव के शस्त्र संगि हैं, जोधा बल प्रवीन।। २६६।।
गरीब, जंग हुवा मैदान में, समंद लाल गुलाल।
सैना मुई समूल सब, भक्ष्ण जौंरा काल।। २६७।।
गरीब, महिरावण पाताल कूँ, ले गया लक्ष्मण बांधि।
राम अकेले रह गये, धनुष बाण शर सांधि।। २६८।।
गरीब, हनूं जिमी कूँ पार करि, जा पैठे पाताल।
महिरावण भुज बीनि कर, फिर आये तत्काल।। २६६।।
गरीब, लक्ष्मण लछ कला लिये, बिन आज्ञा नहीं चोट।
रामचन्द्र का हुकम होय, तो खूहनि परलौ कोटि।। ३००।।
गरीब, बजरंगी हनवंत सुनि, ल्याव सजीवन बेग।
द्रोणागिरि पर्वत जहां, गाजि चले घन मेघ।। ३०१।।
गरीब, द्रोण उचक्या पवन कूँ, सौ योजन भुज कीन।
बाण लगाया भरत कूँ, यौह राक्षस विष दीन।। ३०२।।
गरीब, राम राम कर कर परे, लग्या भरत का बाण।
द्रोणागिरि कर से छुटि, मोहि हिते किन प्राण।। ३०३।।
गरीब, हनुमान और भरत के, मिले नैंन नजीक।
बाण लग्या भुज मुनह परि, चल्या जाय नहीं बीक।। ३०४।।
गरीब, धनुष चढ़ाया भरत कूँ, जोड्या बाण कमान।
द्रौणागिरि हनमंत सुध, फैंक्यो लंक निदान।। ३०५।।
गरीब, हनुमान हंकार कर, कूदे कला अचान।
षट हजार जहां कोस दल, वहां जा परे अमान।। ३०६।।
गरीब, सैना जोई जंग भया, बजे दुंदई नाद।

लंका पर धावा हुवा, चढ़े मुनि जन साध।। ३०७।।
गरीब, कुंभकरण चंपी करै, दस हजार संग दूत।
सोवै तो षट मास लग, तास अकलि के ऊत।। ३०८।।
गरीब, जंग मंड्या जगदीश से, याह कहीं हुई न होय।
जाहूँ आगे तप किया, जासे पकड़्या लोह।। ३०९।।
गरीब, घेरि लंक चहूँ ओर से, हरिजन ढूके संत।
अंगद और सुग्रीव से, जांबबान बलवंत।। ३१०।।
गरीब, कुंभकरण और मेघनाद, चकरों तोरे शीश।
लाख पुत्र रावण कटे, जदि उठे भुज बीस।। ३११।।
गरीब, रावण राजा राम से, मंड्या जंग भल जोरि।
शूरे सावंत मंडलीक, क्षय हुये अनंत करोरि।। ३१२।।
गरीब, दस मस्तक रावण कटे, रत्ती न सोना मुख।
उस रावण की लंक में, त्रिलोकी का दुःख।। ३१३।।
गरीब, लाख पुत्र का पिता था, गया जगत में ऊत।
एकै पुत्र सुपुत्र है, देखो ध्रुव संजूत।। ३१४।।
गरीब, उड़गण अर्थ बिमान वौह, चढ़ते रापति सेत।
लाख पुत्र रावण गया, ज्यूं मूली का खेत।। ३१५।।
गरीब, माया की नदियां बहै, हीर्यों पड़ते भौर।
रावण राजा कित गये, जिन सिर ढुरते चौंर।। ३१६।।
गरीब, सर्व सोने की लंक में, लालों के व्यौपार।
हीरे माणिक यौं तुलें, जैसे बिकै जुवार।। ३१७।।
गरीब, हनुमान चौकी रहै, जब लग धरणि अकाश।
लंक बिभीषण कूँ दई, हरिजन हरि के दास।। ३१८।।
गरीब, जहां मंदोदरि तप करे, उस रावण की नारि।
नौ जोवन नघ ले लिये, महाबली दरबार।। ३१९।।
गरीब, तेतीसौं मुकता भये, सुर नर मुनिजन संत।
सीता मिली श्रीराम से, भक्त वत्सल भगवंत।। ३२०।।
गरीब, अनंत कोटि चकवे गये, उदय अस्त बिच राज।
मारा रावण राम नैं, ज्यूं तीतर पर बाज।। ३२१।।
गरीब, एक लाख अस्सी असलि, और सकल जिनाति।
मुहंमद का कलमां सरू, तबक चौदहूँ दाति।। ३२२।।
गरीब, कलम सकल बनराय की, जे कोई लिखवा होय।
अलह बैत वानी अलख, अंत न आवै कोय।। ३२३।।
गरीब, पौहमी की पट्टी करै, ऊपर लिखै हरफ।
सकल समुंद्र की मसि करै, लिख्या न जाय अलफ।। ३२४।।

गरीब, अली अलह में भेद क्या, एकै नूर जहूर।
मुहंमद की तो मदति पर, हो रहे चकनाचूर।। ३२५।।
गरीब, हस्ती घोड़ा मरद क्या, बली बजर क्यूं न होय।
अर्श कुरस बिचि ना बचै, अली तेग तत लोय।। ३२६।।
गरीब, सत्तरि कदम कटैं कटक, जे अली फिरावे तेग।
खड़ी करै असमान कूँ, तो सप्त सुरग पर बेग।। ३२७।।
गरीब, अली अलह का शेर है, सीना स्वाफ शरीर।
कृष्ण अली एकै कली, तीजी कला कबीर।। ३२८।।
गरीब, अलह वृक्ष अली पान है, झरि झरि परै अनंत।
कृष्ण कली दर कली है, अगम कबीरा पंथ।। ३२९।।
गरीब, अली अलीलौं हो गये, मुहंमद पदम पसाव।
कबीर एक का एक है, दूजा नहीं मिलाव।। ३३०।।
गरीब, जबराईल जुबांन पर, महकाईल मुकट।
असराफील कबलि दरै, अजाजील औघट।। ३३१।।
गरीब, च्यार मुवक्कल रब्ब दे, हैं घट घट अस्थान।
जा पर रब्ब दा तख्त है, जहां आप अलह रहमान।। ३३२।।
गरीब, नवी नाक मुहंमद मुख, मन मक्का महबूब।
चिसम इसम दरगाह दिल, देख खूब खुदि खूब।। ३३३।।
गरीब, चिसम इसम से जोरि कर, खैंचे दम दुरबीन।
कूरंभ नाद उदगार गति, परसै देवा तीन।। ३३४।।
गरीब, तिहूँ देवा दिल में बसैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
प्रथम इनकी वंदना, सुन सतगुरु उपदेश।। ३३५।।
गरीब, सुन सतगुरु उपदेश कूँ, कह समझाऊँ तोहि।
त्रिकुटी कँवल में पैठ के, उलटी पवन समोय।। ३३६।।
गरीब, उलटी पवन समोय करि, नाभ कँवल में आन।
नाभ कँवल में पैठ के, जहां वहां करो ध्यान।। ३३७।।
गरीब, वायु धनंजय बसि करै, जीतै पान अपान।
किरकल क्षुधा मिटाय कर, सहंस कँवल मुख ध्यान।। ३३८।।
गरीब, सहंस कँवल दल जगमगे, झिलमिल रंग अपार।
जहां शक्ति माया कला, धरमराय दरबार।। ३३९।।
गरीब, कोटि किरन जहां झिलमिलै, लीला अगम अगाध।
मानसरोवर मुक्ति फल, पावैं बिरले साध।। ३४०।।
गरीब, कैसे पावौं विधि कहो, दीजे मोहि बताय।
कल कूँची मोसे कहो, कौन पंथ को राह।। ३४१।।
गरीब, तिल जेहे उनमान हैं, बटक बीज विस्तार।

त्रिवैणी के घाट चढ़ि, देखो मुक्ति द्वार।। ३४२।।
गरीब, दो दल का जहां कँवल है, जहां वहां औघट घाट।
तिल प्रवान खिरकी लगी, सहजे खुलैं कपाट।। ३४३।।
गरीब, दो दल का जहां कँवल है, अगम द्वार बैराट।
मक्रतार डोरी गहौ, चलि सतगुरु की बाट।। ३४४।।
गरीब, चिसम इसम में मिल गया, इसम चिसम के मांहि।
करो बंदगी कौन की, वहां कछु परदा नांहि।। ३४५।।
गरीब, परदे पर परदा लग्या, ड्यौढ़ी तिहर तमाम।
पलक मूंदि अंदर धसै, निरखै आठौं जाम।। ३४६।।
गरीब, परदे पर परदा लग्या, भौडल दीपक ध्यान।
आंख नयन मुख मूंदि करि, देखो पुरुष अमांन।। ३४७।।
गरीब, देखो पुरुष अमांन कूँ, अंजन बिना अगाध।
औह तालिब तिल में बसै, परखै कोई जन साध।। ३४८।।
गरीब, बिन ही तन मन ध्यान धरि, सुरति निरति कर नेश।
सुरति कँवल लखि योजनं, निरति कँवल का देश।। ३४९।।
गरीब, बिन चरणों उस धाम चलि, सुरति अगम कूँ धाय।
निरति कँवल में पैठि के, तहां वहां रहो समाय।। ३५०।।
गरीब, तहां एक झांखी गैब में, तिस झांखी में द्वार।
तिस द्वार में देहरा, तहां वहां अनंत भंडार।। ३५१।।
गरीब, अनंत भंडार बुखार बौह, सरवर संख असंख।
अधर गगन में गैब घर, तहां वहां मारग बंक।। ३५२।।
गरीब, सुरति कँवल बंधान है, निरति कँवल निज मूल।
निरति कँवल के आगहीं, देखो बिन अस्थूल।। ३५३।।
गरीब, निरति कँवल पर निरति करि, तहां वहां चक्र अनंत।
घाट बाट पावै नहीं, द्वार बार नहीं पंथ।। ३५४।।
गरीब, तहां वहां झाखी और है, सुरज मुखी सुभान।
तहां ड्योढ़ी पड़दा लग्या, कोई न पावै जान।। ३५५।।
गरीब, कंगरे कंगरे कलश हैं, कलश कलश लखि सूर।
सूर सूर लखि चंद हैं, अवादांन भरपूर।। ३५६।।
गरीब, कंगरे कंगरे केवड़ा, लख लख फूल फलंत।
लख लख मोती मुक्ति फल, बूझैं बिरले संत।। ३५७।।
गरीब, नहीं कंगूरे हेम के, नहीं ये सूरज चंद।
पारस कंनी पहार हैं, अविगत परमानंद।। ३५८।।
गरीब, जगर मगर जोती करे, तहां राय बेलि चंबेल।
कमल केतकी खिल रहे, भँवर गूंजना खेल।। ३५९।।

गरीब, अविगत नगर निधान पुर, बंगले लाल किवार।
संख मुनि सिजदे करें, शिव ब्रह्मा सिकदार।। ३६०।।
गरीब, बिन मुख सारंग राग सुनि, बिन हीं तंती तार।
बिन सुर अलगोजे बजैं, नगर नाच धूमार।। ३६१।।
गरीब, संख असंखौं योजनं, चौपड़ि के बैजार।
कसक नहीं कसनी नहीं, गली गली सिकदार।। ३६२।।
गरीब, तरक नहीं तोरा नहीं, नहीं कसीस कबाब।
अमृत प्याले मध पीवै, भाठी चवै शराब।। ३६३।।
गरीब, मतवाले मस्तान पुर, गली गली गुलजार।
संख शराबी फिरत हैं, चलौ तास बैजार।। ३६४।।
गरीब, संख संख पत्नी नचैं, गावैं शब्द सुभान।
चंद्र बदन सूरज मुखी, नहीं वहां मान गुमान।। ३६५।।
गरीब, संख हिंडोले नूर नघ, झूलै संत हजूर।
तख्त धनी के पास करि, ऐसा मुलक जहूर।। ३६६।।
गरीब, नदी नाव नाले बगैं, छुटैं फुहारे सुंनि।
भरे हौद सरवर सदा, नहीं पाप नहीं पुंनि।। ३६७।।
गरीब, नहीं कोई भिक्षुक दान दे, नहीं हार व्यौहार।
नहीं कोई जामै मरै, ऐसा देश हमार।। ३६८।।
गरीब, बाजैं घंटा ताल घन, मंजीरे डफ झांझ।
मुरली मधुर सुहावनी, निश वासन नहीं सांझ।। ३६९।।
गरीब, दरवन दमामे बाजहीं, सहनाई अरु भेर।
संख तूर तुतकार हैं, हरदम सुनिये टेर।। ३७०।।
गरीब, बीन बिहंगम झमक हीं, तनक तंबूरे तीर।
राग खंड नहीं होत हैं, बंध्या रहै तसमीर।। ३७१।।
गरीब, ताल ख्याल सुर एक गति, राग छतीसौं बैंन।
सुनै सो सन्मुख शीश दे, बिना राग सब फैंन।। ३७२।।
गरीब, संख किरनि जहां झिलक हीं, संख पदम प्रकाश।
संख कला कलधूत हैं, जहां हमारा वास।। ३७३।।
गरीब, दीन दुनी की बात सुनि, हर्ष शोक बौह दुंद।
कहर मिहर दोनूं कला, कोई मुक्ता कोई बंध।। ३७४।।
गरीब, ध्रुव प्रहलाद अगाध गति, त्यारे अनंत करोर।
अभै जीव मुक्ता किये, जम जौंरा नहीं जोर।। ३७५।।
गरीब, संख पदम पारिंग किये, नहीं सृष्टि सुमार।
कलप करी कुरबान जां, रामचंद्र अवतार।। ३७६।।
गरीब, दिव्य रूप देही भई, करि सरजू अस्नान।

च्यार खान चितवन करी, उतरे अर्श विमान।। ३७७।।
गरीब, अयोध्या सुरग पुरी गई, सूर श्वान सुध ढोर।
गऊ गदहरा मनुष्य क्या, तिर गये तीतर मोर।। ३७८।।
गरीब, वृक्ष पहार उजारि के, तिर गये सुरग समूल।
रामचन्द्र अवतार से, कृष्णचन्द्र मुख मूल।। ३७६।।
गरीब, चौरासी बंधन कटे, कीनी कलप कबीर।
भुवन चतुर्दश लोक सब, टूटैं जम जंजीर।। ३८०।।
गरीब, सतगुरु का एक देश है, जे बस जानै कोय।
कागा से हंसा करूं, जात वर्ण कुल खोय।। ३८१।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मण्ड में, बंदी छोड कहाय।
सो तो एक कबीर हैं, जननी जन्या न माय।। ३८२।।
गरीब, सुरती रूप साहिब धनी, शब्द सिंध सब मांहि।
बाहर भीतर रमि रह्या, जहां तहां सब ठांहि।। ३८३।।
गरीब, झांकी देख कबीर की, नानक कीती वाहि।
वाहि शिषां के गल परी, कौन छुडावे ताहि।। ३८४।।
गरीब, रैदासा ढोर घसीटता, काशी नगर मंझार।
साचा सतगुरु मिल गया, जिब सिर से पड़ी बिगार।। ३८५।।
गरीब, जल थल पृथ्वी गगन में, बाहर भीतर एक।
पूर्णब्रह्म कबीर हैं, अविगत पुरुष अलेख।। ३८६।।
गरीब, सेवक होय कर ऊतरे, इस पृथ्वी के मांहि।
जीव उधारन जगतगुरु, बार बार बलि जांहि।। ३८७।।
गरीब, काशी पुरी कस्त किया, उतरे अधर आधार।
मोमन कूँ मुजरा हुवा, जंगल में दीदार।। ३८८।।
गरीब, कोटि किरण शशि भान सुधि, आसन अधर विमान।
परसत पूर्णब्रह्म कूँ, शीतल पिंड रु प्राण।। ३८६।।
गरीब, गोद लिया मुख चूम करि, हेम रूप झलकंत।
जगर मगर काया करै, दमकैं पदम अनंत।। ३६०।।
गरीब, काशी उमटी गुल भया, मोमन का घर घेर।
कोई कहे ब्रह्मा विष्णु हैं, कोई कहै इन्द्र कुबेर।। ३६१।।
गरीब, कोई कहै वरुण धर्मराय है, कोई कोई कहते ईश।
सोलह कला सुभांन गति, कोई कहै जगदीश।। ३६२।।
गरीब, भक्ति मुकित ले उतरे, मेटन तीनूं ताप।
मोमन के डेरा लिया, कहै कबीरा बाप।। ३६३।।
गरीब, दूध न पीवै न अन्न भखै, नहीं पलने झूलंत।
अधर अमानं ध्यान में, कँवल कला फूलंत।। ३६४।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, कोई कहै छल ईश्वर नहीं, कोई किन्नर कहलाय।
कोई कहै गण ईश का, ज्यूं ज्यूं मात रिसाय।। ३९५।।
गरीब, काशी में अचरज भया, गई जगत की नींद।
ऐसे दुल्हे उतरे, ज्यूं कन्या वर बींद।। ३९६।।
गरीब, खलक मुलक देखन गया, राजा प्रजा रीत।
जंबूदीप जिहांन में, ऊतरे शब्द अतीत।। ३९७।।
गरीब, दुनी कहै यौह देव है, देव कहत हैं ईश।
ईश कहै परब्रह्म है, पूर्ण बिसवे बीस।। ३९८।।
गरीब, काजी गये कुरांन ले, धरि लरके का नाम।
अक्षर अक्षर में फुरूया, धंनि कबीर बलि जांव।। ३९९।।
गरीब, सकल कुरांन कबीर हैं, हरफ लिखे जो लेख।
काशी के काजी कहैं, गई दीन की टेक।। ४००।।
गरीब, शिव उतरे शिवपुरी से, अविगत बदन विनोद।
महके कमल खुसी भये, लिया ईश कूँ गोद।। ४०१।।
गरीब, नजर नजर से मिल गई, किया ईश प्रणाम।
धंनि मोमन धंनि पूरना, धंनि काशी निःकाम।। ४०२।।
गरीब, सात बार चर्चा करी, बोले बालक बैंन।
शिव कूँ कर मस्तक धरूया, ल्या मोमन एक धैंन।। ४०३।।
गरीब, अनब्यावर कूँ दूहत है, दूध दिया तत्काल।
पीवो बालक ब्रह्म गति, तहां शिव भये दयाल।। ४०४।।
गरीब, षष्टमास के जदि भये, नित दहंनावर देह।
चरण चलें नित पुरी में, याह शिक्षा नित लेह।। ४०५।।
गरीब, भक्ति द्राविड़ देश थी, इहां नहीं एक रिंच।
ऊत भूत की ध्यावना, पाखंड और प्रपंच।। ४०६।।
गरीब, रामानंद आनंद में, काशी नगर मंझार।
देश द्राविड़ छाडि कर, आये पुरी विचार।। ४०७।।
गरीब, जोग जुगति प्राणायाम करि, जित्या सकल शरीर।
त्रिवैणी के घाट में, अटक रहे बलबीर।। ४०८।।
गरीब, तीरथ व्रत एकादशी, गंगोदक अस्नान।
पूजा विधि विधान से, सर्व कला सुर ज्ञान।। ४०९।।
गरीब, करै मानसी सेव नित, आत्म तत्व का ध्यान।
षट पूजा आरंभ गति, धूप दीप विधान।। ४१०।।
गरीब, चौदह सै चेले किये, काशी नगर मंझार।
च्यार संप्रदा चलत हैं, और बावन दरबार।। ४११।।
पंच वर्ष के जदि भये, काशी मंझ कबीर।

दास गरीब अजब कला, ज्ञान ध्यान गुणथीर।। ४१२।।
गुल भया काशी पुरी, अटपटे बैंन बिहंग।
दास गरीब गुनी थके, सुनि जुलहा प्रसंग।। ४१३।।
रामानंद अधिकार सुनि, जुलहा अक जगदीश।
दास गरीब बिलंब ना, ताहि नवावत शीश।। ४१४।।
रामानंद कूँ गुरु कहै, तन से नहीं मिलात।
दास गरीब दर्शन भये, पैंडे लगी जूं लात।। ४१५।।
पंथ चलत ठोकर लगी, राम नाम कहि दीन।
दास गरीब कसर नहीं, सीख लई प्रवीन।। ४१६।।
आड़ा पड़दा लाय कर, रामा नंद बूझंत।
दास गरीब कुलंग छवि, अधर डाक कूदंत।। ४१७।।
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाम।
दास गरीब अधीन गति, बोलत है बलि जांव।। ४१८।।
जाति हमारी जगतगुरु, परमेश्वर पद पंथ।
दास गरीब लिखत परै, नाम निरंजन कंत।। ४१९।।
रे बालक सुन दुर्बुद्धि, घट मठ तन आकार।
दास गरीब दरद लग्या, हो बोले सिरजनहार।। ४२०।।
तुम मोमन के पालवा, जुलहे के घर वास।
दास गरीब अज्ञान गति, ऐसा दृढ़ विश्वास।। ४२१।।
मान बड़ाई छाड़ि कर, बोलो बालक बैंन।
दास गरीब अधम मुखी, एता तुम घट फैंन।। ४२२।।
कलयुग क्षेत्रपाल हैं, क्या भैरौं क्या भूत।
दास गरीब दतब बिना, गया जगत सब ऊत।। ४२३।।
मनी मगज माया तजो, तजो मान गुमान।
दास गरीब सुबात कहि, नहीं पावौगे जान।। ४२४।।
ए बालक बुद्धि तोर गति, कूड़ी साखि न भांडि।
दास गरीब हदीस कर, नहीं लेबैंगे डांडि।। ४२५।।
शाह सिंकदर के बंधे, पग ऊपर तर शीश।
दास गरीब अज्ञान गति, तोर कह्या जगदीश।। ४२६।।
कान काटि बूचा करौं, नली भरत रे नीच।
दास गरीब जिहांन में, तुम सिर जौंरा मीच।। ४२७।।
मरत मरत बौह जुग गये, लखे न अस्थिर ठौर।
दास गरीब जिहांन में, तुम सा नीच न और।। ४२८।।
नाद बिंद की देह में, एता गर्ब न कीन।
दास गरीब पलक फना, जैसे बुद बुदा लीन।। ४२९।।

तर्क तलू से बोलते, रामानंद सुर ज्ञान।
दास गरीब कुजाति है, आखर नीच निदान।। ४३०।।
नीच मीच से ना डरे, काल कुहाड़ा शीश।
दास गरीब अदत हैं, तैं जु कह्या जगदीश।। ४३१।।
जड़िहौं हाथ हथौकड़ी, गल में तौंक जंजीर।
दास गरीब परख बिना, यह बानी गुन कीर।। ४३२।।
परख निरख नहीं तोर कूँ, नीच कुलीन कुजाति।
दास गरीब अकल बिना, तैं जु कही क्या बात।। ४३३।।
रे बालक नीची कला, तुम होय बोले ऊंच।
दास गरीब पलक घरी, खबर नहीं दम कूँच।। ४३४।।
महके बदन खुलास करि, सुनि स्वामी प्रवीन।
दास गरीब मनी मरे, मैं आजिज आधीन।। ४३५।।
मैं अविगत गति से परै, च्यार वेद से दूर।
दास गरीब दशौं दिशा, सकल सिंध भरपूर।। ४३६।।
सकल सिंध भरपूर हूँ, खालिक हमरा नाम।
दास गरीब अजाति हूँ, तैं जूं कह्या बलि जांव।। ४३७।।
जाति पाति मेरे नहीं, नहीं बस्ती नहीं गांम।
दास गरीब अनिन गति, नहीं हमारे नाम।। ४३८।।
नाद बिंद मेरे नहीं, नहीं गूदा नहीं गात।
दास गरीब शब्द सज्या, नहीं किसी का साथ।। ४३९।।
सब संगी बिछरूं नहीं, आदि अंत बहु जांहि।
दास गरीब सकल बसूं, बाहर भीतर मांहि।। ४४०।।
ए स्वामी मैं सृष्ट में, सृष्टि हमारे तीर।
दास गरीब अधर बसूं, अविगत सत्य कबीर।। ४४१।।
अनंत कोटि सलिता बहैं, अनंत कोटि गिरि ऊंच।
दास गरीब सदा रहूँ, नहीं हमारे कूँच।। ४४२।।
पौहमी धरणि अकाश में, मैं व्यापक सब ठौर।
दास गरीब न दूसरा, हम समतुल नहीं और।। ४४३।।
मैं माया मैं काल हूँ, मैं हंसा मैं वंस।
दास गरीब दयाल मैं, हम हीं करैं विध्वंस।। ४४४।।
ममता माया हम रची, काल जाल सब जीव।
दास गरीब प्राण पद, हम दासातन पीव।। ४४५।।
हम दासन के दास हैं, करता पुरुष करीम।
दास गरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम।। ४४६।।
सुनि रामानंद राम हम, मैं बावन नरसिंह।

दास गरीब कली कली, हम ही कृष्ण अभंग।। ४४७।।
हम लक्ष्मण हनुमंत हैं, हम रावण हम राम।
दास गरीब सती कला, सबै हमारे काम।। ४४८।।
हम मौला सब मुलक में, मुलक हमारे मांहि।
दास गरीब दयाल हम, हम दूसर कछु नांहि।। ४४६।।
ताना बाना बीन हूँ, पूर्ण पेटा सूत।
दास गरीब नली फिरै, दम खोजै अनभूत।। ४५०।।
दम खोजै देही तजै, श्वास श्वास गुंजार।
दास गरीब समोय ले, उलटि अपूठा तार।। ४५१।।
हम चरखा हम कातनी, हमहीं कातनहार।
दास गरीब तीजन पर्‍या, हम ताकूँ ततसार।। ४५२।।
हमहीं बाड़ी बनि बने, हमें बिनौला जाति।
दास गरीब चंद सूर हम, हम हीं दिवस अरु रात।। ४५३।।
हम हीं इंद्र कुबेर हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
दास गरीब धरम ध्वजा, धरणि रसातल शेष।। ४५४।।
हम हीं बरन बिनान है, हम हीं जम कुबेर।
दास गरीब हरि हीर हम, हम कंचन सुमेर।। ४५५।।
हम मोती मुक्ताहलं, हम दरिया दरवेश।
दास गरीब हम नित रहैं, हम उठि जात हमेश।। ४५६।।
हम हीं लाल गुलाल हैं, हम पारस पद सार।
दास गरीब अदालतं, हम राजा संसार।। ४५७।।
हम पानी हम पवन हैं, हम हीं धरणि अकाश।
दास गरीब तत्व पंच में, हम हीं शब्द निवास।। ४५८।।
हम सारिंग हम सुरति हैं, हम नलकी हम नाद।
दास गरीब नगन मगन, हम विरक्त हम साध।। ४५६।।
सुनि स्वामी सति भाख हूँ, झूठ न हमरै रिंच।
दास गरीब हम रूप बिन, और सकल प्रपंच।। ४६०।।
हम मुक्ता हम बंध हैं, हम ख्याली खुशहाल।
दास गरीब सब सृष्टि में, हम रोवत बेहाल।। ४६१।।
हम रोवत हैं सृष्टि कूँ, सृष्टि रोवती मोहि।
दास गरीब बिजोग कूँ, बूझै और न कोय।। ४६२।।
मैं बूझूं मै ही कहूँ, हम हीं किया बिजोग।
गरीब दास गलतान हम, शब्द हमारा भोग।। ४६३।।
च्यार रुकन में हम फिरैं, नहीं आवूं नहीं जांव।
गरीब दास गुरु भेद से, लखो हमारी ठांव।। ४६४।।

सुनि स्वामी शर घालि हूँ, वार पार फूटंत।
गरीब दास जीव अभय होय, काल कर्म छूटंत।। ४६५।।
सुनि स्वामी शर घालि हूँ, बिना धनुष बिन बांन।
गरीब दास अविचल सदा, करि हूँ हंस अमान।। ४६६।।
हम हीं संसा सूल हैं, गुण इंद्रिय मन नांच।
गरीब दास हम गरक हैं, हम भू आत्म पांच।। ४६७।।
सतगुण रजगुण तमगुणं, रज बीरज हम कीन।
गरीब दास सब सकल सिर, हमै दुनी हम दीन।। ४६८।।
हम भिक्षुक कंगाल कुल, हम दाता अबदाल।
गरीब दास मैं मांगि हूँ, मैं देऊँ नघ माल।। ४६९।।
माल ताल सरवर भरे, संख असंखौं गंज।
गरीब दास एक रती बिन, लेन न देऊं अंज।। ४७०।।
जेता अंजन आंजिये, चिसम्यौं में चमकंत।
गरीब दास हरि भक्ति बिन, माल बाल ज्यूं जंत।। ४७१।।
कनी धनी के पास हैं, धनी कनी नहीं देत।
गरीब दास बोये बिना, जिन के खाली खेत।। ४७२।।
खाली खेत जुगा जुगं, कई परलौ बीतंत।
गरीब दास जो देत हैं, सर सूभर निपजंत।। ४७३।।
खुल्या खजाना जरकसी, हीरे लाल हलूर।
दास गरीब गति को लखै, बाजै अनहद तूर।। ४७४।।
कटै खजाना जरकसी, लागी मुलक मुहीम।
दास गरीब तोपां छुटैं, ओटैं जोधा भीम।। ४७५।।
लगी मुहीम गनीम पर, काल कटक कुटंत।
दास गरीब निर्भय करूं, जो कोई नाम जपंत।। ४७६।।
सुनि स्वामी सेवन करूं, मानूं तुमरी शंक।
गरीब दास घाटी विषम, उतरे मारग बंक।। ४७७।।
मारग बंक अगाध गति, चलत चलत जुग जांहि।
गरीब दास घर अगम है, जहां कुछ धूप न छांहि।। ४७८।।
मैं बालक मैं वृद्ध हूँ, हम हैं ज्वान जमांन।
गरीब दास निज ब्रह्म हूँ, हम हीं चारौं खांन।। ४७९।।
गगन सुंन गुप्ता रहूँ, हम प्रगट प्रवाह।
गरीब दास घट घट बसूं, विकट हमारी राह।। ४८०।।
आवत जात न दीख हूँ, रहता सकल समीप।
गरीबदास जल तरंग हूँ, हम ही सायर सीप।। ४८१।।
मैं मुरजीवा आदि का, नघ माणिक ल्यावंत।

गरीबदास सर समंद में, गोता गैब लगंत।। ४८२।।
गोता लाऊँ स्वर्ग में, फिर पैठूँ पाताल।
गरीबदास ढूंढत फिरूं, हीरे माणिक लाल।। ४८३।।
इस दरिया कंकर बहुत, लाल कहीं कहीं ठाव।
गरीबदास माणिक चुगैं, हम मुरजीवा नाम।। ४८४।।
मुरजीवा माणिक चुगैं, कंकर पत्थर डार।
दासगरीब डोरी अगम, ऊतरौं शब्द अधार।। ४८५।।
बोलत रामानंद जी, हम घर बड़ा सुकाल।
गरीब दास पूजा करैं, मुकट फही जदि माल।। ४८६।।
सेवा करो संभाल कर, सुनि स्वामी सुर ज्ञान।
गरीबदास सिर मुकट धरि, माला अटकी जान।। ४८७।।
स्वामी घुंडी खोलि करि, फिर माला गल डार।
गरीबदास इस भजन कूँ, जानत है करतार।। ४८८।।
ड्योढी पड़दा दूर करि, लीया कंठ लगाय।
गरीबदास गुजरी बौहत, बदने बदन मिलाय।। ४८६।।
मन की पूजा तुम लखी, मुकट माल प्रवेश।
गरीबदास गति को लखै, कौन वर्ण क्या भेष।। ४६०।।
यह तो तुम शिक्षा दई, मानि लई मन मोर।
गरीबदास कोमल पुरुष, हमरा बदन कठोर।। ४६१।।
ए स्वामी तुम स्वर्ग की, छाडो आशा रीति।
गरीबदास तुम कारणैं, ऊतरे शब्दातीत।। ४६२।।
सुनि बच्चा मैं स्वर्ग की, कैसे छाडौं रीति।
गरीबदास गुदरी लगी, जनम जात है बीत।। ४६३।।
च्यार मुक्ति बैकुंठ में, जिन की मोरै चाह।
गरीबदास घर अगम की, कैसे पाऊँ थाह।। ४६४।।
हेम रूप जहां धरणि है, रतन जड़े बौह शोभ।
गरीबदास बैकुंठ कूँ, तन मन हमरा लोभ।। ४६५।।
संख चक्र गदा पदम हैं, मोहन मदन मुरारि।
गरीब दास मुरली बजै, सुरगलोक दरबारि।। ४६६।।
दूधौं की नदियां बगैं, सेत वृक्ष सुभान।
गरीबदास मंदल मुक्ति, सुरगापुर अस्थान।। ४६७।।
रतन जड़ाऊ मनुष्य हैं, गण गंधर्व सब देव।
गरीबदास उस धाम की, कैसे छाडूँ सेव।। ४६८।।
ऋग युज साम अथर्वणं, गावैं चारौं वेद।
गरीबदास घर अगम का, कैसे जानौं भेद।। ४६६।।

च्यार मुक्ति चितवन लगी, कैसे बंचू ताहि।
गरीबदास गुप्तार गति, हम कूँ द्यौ समझाय।। ५००।।
सुरग लोक बैकुंठ है, यासे परे न और।
गरीबदास षट शास्त्र, च्यार वेद की दौर।। ५०१।।
च्यार वेद गावै तिसैं, सुर नर मुनि मिलाप।
गरीबदास ध्रुव पौर जिस, मिट गये तीनूं ताप।। ५०२।।
प्रहलाद गये तिस लोक कूँ, सुरगा पुरी समूल।
गरीबदास हरि भक्ति की, मैं बंचत हूँ धूल।। ५०३।।
वृन्दावन खेले सोई, रज केसर समतूल।
गरीबदास उस मुक्ति कूँ, कैसे जाऊँ भूल।। ५०४।।
नारद ब्रह्मा जिस रटें, गावैं शेष गणेश।
गरीबदास बैकुंठ से, और परे को देश।। ५०५।।
सहंस अठासी जिस जपैं, और तेतीसौं सेव।
गरीबदास जासैं परे, और कौन है देव।। ५०६।।
सुनि स्वामी निज मूल गति, कहि समझाऊँ तोहि।
गरीबदास भगवान कूँ, राख्या जगत समोहि।। ५०७।।
तीनि लोक के जीव सब, विषय वास भरमाय।
गरीबदास हम कूँ जपै, तिस कूँ धाम दिखाय।। ५०८।।
जो देखैगा धाम कूँ, सो जानत है मुझ।
गरीबदास तोसे कहूँ, सुनि गायत्री गुझ।। ५०९।।
कृष्ण विष्णु भगवान कूँ, जहड़ायें हैं जीव।
गरीबदास त्रिलोक में, काल कर्म सिर शीव।। ५१०।।
सुनि स्वामी तोसे कहूँ, अगम दीप की सैल।
गरीबदास पूठे परे, पुस्तक लादे बैल।। ५११।।
पौहमी धरणि अकाश थंभ, चलसी चंदर सूर।
गरीबदास रज बीरज की, कहां रहैगी धूर।। ५१२।।
तारायण त्रिलोक सब, चलसी इन्द्र कुबेर।
गरीबदास सब जात हैं, सुरग पताल सुमेर।। ५१३।।
च्यार मुक्ति बैकुंठ बट, फनां हुआ कई बार।
गरीबदास अलप रूप मघ, क्या जाने संसार।। ५१४।।
कहो स्वामी कित रहोगे, चौदह भुवन बिहंड।
गरीबदास बीजक कह्या, चलत प्राण और पिंड।। ५१५।।
सुन स्वामी एक शक्ति है, अरधंगी ऊँकार।
गरीबदास बीजक तहां, अनंत लोक सिंघार।। ५१६।।
जैसे का तैसा रहै, परलौ फनां प्रान।

गरीबदास उस शक्ति कूँ, बार बार कुरबांन।। ५१७।।
कोटि इन्द्र ब्रह्मा जहां, कोटि कृष्ण कैलाश।
गरीबदास शिव कोटि हैं, करो कौन की आश।। ५१८।।
कोटि बिष्णु जहां बसत हैं, उस शक्ति के धाम।
गरीबदास गुल बौहत हैं, अलफ बस्त निहकाम।। ५१९।।
शिव शक्ति जासे हुए, अनंत कोटि अवतार।
गरीबदास उस अलफ कूँ, लखे सो होय करतार।। ५२०।।
अलफ हमारा रूप है, दम देही नहीं दंत।
गरीबदास गुल से परे, चलना है बिन पंथ।। ५२१।।
बिना पंथ उस कंत के, धाम चलन है मोर।
गरीबदास गमि ना किसी, संख सुरग पर डोर।। ५२२।।
संख सुरग पर हम बसैं, सुनि स्वामी यह सैंन।
गरीबदास हम अलफ हैं, यौह गुल फोकट फैंन।। ५२३।।
जो तैं कह्या सो मैं लह्या, बिन देखे नहीं धीज।
गरीबदास स्वामी कहैं, कहां अलफ वह बीज।। ५२४।।
अनंत कोटि ब्रह्माण्ड फनां, अनंत कोटि उदगार।
गरीबदास स्वामी कहैं, कहां अलफ दीदार।। ५२५।।
हद बेहद कहीं ना कहीं, ना कहीं थरपी ठौर।
गरीबदास निज ब्रह्म की, कौन धाम वह पौर।। ५२६।।
चल स्वामी सर पर चलैं, गंग तीर सुन ज्ञान।
गरीबदास बैकुंठ बट, कोटि कोटि घट ध्यान।। ५२७।।
तहां कोटि बैकुंठ हैं, नक सरवर संगीत।
गरीबदास स्वामी सुनो, जात अनन्त जुग बीत।। ५२८।।
प्राण पिंड पुर में धसौ, गये रामानंद कोटि।
गरीबदास सर सुरग में, रहो शब्द की ओट।। ५२९।।
तहां वहां चित चक्रित भया, देख फजल दरबार।
गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।। ५३०।।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि, भ्रम कर्म किये नाश।
गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दृढ़ विश्वास।। ५३१।।
सुंनि बेसुंन से तुम परै, उरै सो हमरै तीर।
गरीबदास सरबंग में, अविगत पुरुष कबीर।। ५३२।।
कोटि कोटि सिजदे करैं, कोटि कोटि प्रणाम।
गरीबदास अनहद अधर, हम परसे तुम धाम।। ५३३।।
सुनि स्वामी एक गल गुझ, तिल तारी पल जोरि।
गरीबदास सर गगन में, सूरज अनंत करोरि।। ५३४।।

सहर अमान अनन्त पुर, रिमझिम रिमझिम होय।
गरीबदास उस नगर का, मरम न जानैं कोय।। ५३५।।
सुनि स्वामी कैसे लखौ, कहि समझाऊँ तोहि।
गरीबदास बिन पर उड़ै, तन मन शीश न होय।। ५३६।।
रबनपुरी एक चक्र है, तहां धनंजय बाय।
गरीबदास जीते जनम, याकू लेत समाय।। ५३७।।
आसन पदम लगाय कर, भिरंग नाद को खैंचि।
गरीबदास अचवन करे, देवदत्त को ऐंचि।। ५३८।।
काली ऊनि कुलीन रंग, जाके दो फुन धार।
गरीबदास कूरंभ सिर, तास करे उदगार।। ५३६।।
चिस्में लाल गुलाल रंग, तीनि गिरह नभ पेच।
गरीबदास वह नागनी, हौंन न देवै रेच।। ५४०।।
कुंभक रेचक सब करै, ऊनि करत उदगार।
गरीबदास उस नागनी कूँ , जीतै सोई खिलार।। ५४१।।
कुंभ भरै रेचक करै, फिर टूटत हैं पौंन।
गरीबदास मंडल गगन, नहीं होत है रौंन।। ५४२।।
आगे घाटी बंद है, इला पिंगला दोय।
गरीबदास सुषमन खुलै, तास मिलावा होय।। ५४३।।
चंदा के घर सूर रखि, सूरज के घर चंद।
गरीबदास मधि महल है, तहां वहां अजब अनंद।। ५४४।।
त्रिवैणी का घाट है, गंग जमुन गुपतार।
गरीबदास परबी परखि, बहै सहंस मुख धार।। ५४५।।
मध्य किवारी ब्रह्म दर, वाह खोलत नहीं कोय।
गरीबदास सब जोग की, पैज पछोड़ी होय।। ५४६।।
आसन संपट सुधि करि, गुफा गिरद गति ढोल।
गरीबदास पल पालड़ै, हीरे माणिक तोल।। ५४७।।
प्राण अपान समान सुध, मंदाचल महकंत।
गरीबदास ठाढी बगै, तो दीपक बाति बुझंत।। ५४८।।
घंटा टूटै ताल भंग, संख न सुनिये टेर।
गरीबदास मुरली मुक्ति, सुनि चढ़ि हंस सुमेर।। ५४६।।
खूल्है खिरकी सहज धुनि, दम नहीं खैंचि अतीत।
गरीबदास एक सैंन है, तजि अनभय छंद गीत।। ५५०।।
धीरै धीरै डाटि हैं, सुरग चढ़ैंगे सोय।
गरीबदास पग पंथ बिन, ले राखौं जहां तोय।। ५५१।।
सुन स्वामी सीढ़ी बिना, चढ़ौ गगन कैलाश।

गरीबदास प्राणायाम तजि, नाहक तोरत श्वास।। ५५२।।
गली गली गलतान है, शहर सलेमा बाद।
गरीबदास पल बीच में, पूर्ण करौं मुराद।। ५५३।।
ज्यूं का त्यूं ही बैठ रहो, तजि आसन सब जोग।
गरीबदास पल बीच पद, सर्व सैल सब भोग।। ५५४।।
पनिग पलक नीचे करो, ता मुख सहंस शरीर।
गरीबदास सूक्ष्म अधरि, सूरति लाय सरतीर।। ५५५।।
सुनि स्वामी यह गति अगम, मनुष्य देव से दूर।
गरीबदास ब्रह्मा थके, किन्हे न पाया मूर।। ५५६।।
मूल डार जाके नहीं, है सो अनिन अरंग।
गरीबदास मजीठ चलि, ये सब लोक पतंग।। ५५७।।
सुतह सिधि प्रकाशिया, कहां अरघ अस्नान।
गरीबदास तप कोटि जुग, पचि हारे सुर ज्ञान।। ५५८।।
श्याम सेत नहीं लाल है, नांही पीत पसाव।
गरीबदास कासे कहूँ, चलै नीर बिन नाव।। ५५९।।
कोटि कोटि बैकुंठ हैं, कोटि कोटि शिव शेष।
गरीबदास उस धाम में, ब्रह्मा कोटि नरेश।। ५६०।।
अबादान अमान पुर, चलि स्वामी तहां चाल।
गरीबदास परलौ अनंत, बौहरि न झंपै काल।। ५६१।।
अमर चीर तहां पहरि है, अमर हंस सुख धाम।
गरीबदास भोजन अजर, चल स्वामी निजधाम।। ५६२।।
बोलत रामानंद जी, सुन कबीर करतार।
गरीबदास सब रूप में, तुम हीं बोलन हार।। ५६३।।
तुम साहिब तुम संत हो, तुम सतगुरु तुम हंस।
गरीबदास तुम रूप बिन, और न दूजा अंस।। ५६४।।
मैं भक्ता मुक्ता भया, किया कर्म कुंद नाश।
गरीबदास अविगत मिले, मेटी मन की बास।। ५६५।।
दोहूँ ठौर है एक तूं, भया एक से दोय।
गरीबदास हम कारणे, उतरे हैं मघ जोय।। ५६६।।
मैं नगदी बानी कहूँ, जिनसी राखी झांपि।
गरीबदास इस महल में, नाभ नासिका मापि।। ५६७।।
नाकी पर झांखी लगी, झांखी बीच द्वार।
गरीबदास उस महल चढ़ि, उतरे परले पार।। ५६८।।
गोष्ठी रामानंद से, काशी नगर मंझार।
गरीबदास जिंद पीर के, हम पाये दीदार।। ५६९।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

सुन स्वामी तोसे कहूँ, पूर्व जन्म की बात।
गरीबदास बीते तुझे, चेला आत्म घात।। ५७०।।
मुसलमान के दीन में, कुल पठान आवंत।
गरीबदास तो परि सजे, तनहि तेग धावंत।। ५७१।।
नबै बरस निदान है, सिष सैंदक शर घालि।
गरीबदास या साच है, लगे पदम में भालि।। ५७२।।
भालि लगे मिसरी बगे, सुन स्वामी यह साच।
गरीबदास पद में मिले, मेटे तन का नाच।। ५७३।।
बोले रामानंद जी, सुनों कबीर सुभान।
गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिंड अरु प्राण।। ५७४।।
काशी जोरा दीन का, काजी खिलस करंत।
गरीबदास उस सरे में, झगरे आन परंत।। ५७५।।
सुन काजी राजी नहीं, आपे अलह खुदाय।
गरीबदास किस हुकम से, पकर पछारी गाय।। ५७६।।
गऊ हमारी मात है, पीवत जिस का दूध।
गरीबदास काजी कुटिल, कतल किया औजूद।। ५७७।।
गऊ तुम्हारी अमां है, ता पर छुरी न बाहि।
गरीबदास घृत दूध कूँ, सब ही आत्म खांहि।। ५७८।।
ऐसा खाना खाईये, माता के नहीं पीर।
गरीबदास दरगह सरे, गल में पड़ै जंजीर।। ५७९।।
काजी पटक कुरान कूँ, ऊठि गये सिर पीट।
गरीबदास जुलहे कहीं, वानी अकल अदीठ।। ५८०।।
जुलहे दीन विगारिया, काजी आये फेर।
गरीबदास मुल्ला मुरग, अपनी अपनी बेर।। ५८१।।
मुरगे से मुल्लां भये, मुल्लां फेर मुरग।
गरीब दास दोजख धसे, पाया नहीं सुरग।। ५८२।।
काजी कलमां पढ़त है, बांचे फेर कुरांन।
गरीबदास इस जुल्म से, बूडे दहूँ जिहांन।। ५८३।।
दोनूं दीन दया करो, मानो वचन हमार।
गरीबदास गऊ सूर में, एकै बोलन हार।। ५८४।।
सूर गऊ में एक हैं, काजी खावो सूर।
गरीबदास हिंदू गऊ, दोऊ का एकै नूर।। ५८५।।
मुल्लां से पंडित भये, पंडित से भये मुल्ल।
गरीबदास तजि बैर भाव, कीजे सुल्लम सुल्ल।। ५८६।।
हिंदू झटके मार हीं, काजी करै हलाल।

गरीबदास दोऊ दीन का, होसी हाल बिहाल।। ५८७।।
बकरी कुकड़ी खा गये, गऊ गदहरा सूर।
गरीबदास उस भिस्त में, तुम से अलह दूर।। ५८८।।
घोड़े ऊँट अटक नहीं, तीतर क्या खरगोश।
गरीबदास दरगाह सरै, अलह है सौ कोस।। ५८९।।
भिस्त भिस्त तुम क्या करो, दोजख जरि हो अंच।
गरीबदास इस खून से, अलह नाहीं बंच।। ५९०।।
रब्ब की रूह पछारिये, खाते मोरे मोर।
गरीबदास उस नरक में, नहीं काजी कूँ ठौर।। ५९१।।
सुनि काजी बाजी लगी, जो जीते सो जाय।
गरीबदास उस नरक कूँ, बिन काजी को खाय।। ५९२।।
सुनि काजी बाजी लगी, पासा सन्मुख डार।
गरीबदास जुग बांधि ले, नहीं मरत हैं सार।। ५९३।।
सुनि काजी गदह गति, पान लदे खर पीठ।
गरीबदास उस वस्तु बिन, खाय गदहरा बीठ।। ५९४।।
मुल्ला कूँके बंग दे, सुनि काफर मुसटंड।
गरीबदास मुरगे सरै, खात गोल गिर्द अंड।। ५९५।।
सुनि मुल्ला मरदूद तूं, कुफर करै दिन रात।
गरीबदास हक बोलता, मारे जीव अनाथ।। ५९६।।
मुरगे सिर कलंगी हुती, चिसमें लाल चिलूल।
गरीबदास उस कली का, कहा गया वह फूल।। ५९७।।
सुनि मुल्ला माली अलह, फूल रूप संसार।
गरीबदास गति एक सब, पान फूल फल डार।। ५९८।।
करो नसीहत दूर लग, दरगह पड़िसी न्याव।
गरीबदास काजी कहै, करबै नांन पुलाव।। ५९९।।
काजी काढ़ि कतेब कूँ, जोर्या बड़ा हजूम।
गरीबदास गल काट हीं, काफर दे दे गूम।। ६००।।
मांस कटे घर घर बटे, रूह गई किस ठौर।
गरीबदास उस नरक में, होय काजी बड़ गौर।। ६०१।।
सुनि काजी कलिया किया, जाड़ स्वाद रे जिंद।
गरीबदास दरगाह में, पड़ै गले बिच फंद।। ६०२।।
बासमती चावल पकै, घृत खांड टुक डार।
गरीबदास कर बंदगी, कूड़े काम निवार।। ६०३।।
फुलके धोवा दाल कर, हलवा रोटी खाय।
गरीबदास काजी कहै, गूदा घृत न ताय।। ६०४।।

तीसौं रोजे खून कर, फिर तसबी ले हाथ।
गरीबदास दरगाह सरे, बौहत करी तैं घात।। ६०५।।
शाह सिकंदर के गये, काजी पटकि कुरांन।
गरीबदास उस जुलहदी पर, हो है खैंचातान।। ६०६।।
तेरा सरा उठा दिया, काजी बोले यौं।
गरीबदास पगड़ी पटकि, अलख अलाह मैं हौं।। ६०७।।
दश अहदी तलवां हुई, पकरि जुलहदी ल्याव।
गरीबदास उस कुटिन को, मारत नाही संकाव।। ६०८।।
अहदी ले गये बांधि कर, शाह सिकंदर पास।
गरीबदास काजी मुल्लां, पगरी बहैं अकाश।। ६०६।।
काजी पंच हजार हैं, मुल्ला पीटै शीश।
गरीबदास यौह जुलहदी, काफर बिसवे बीस।। ६१०।।
मिहर दया इस के नहीं, मट्टी मांस न खाय।
गरीबदास गूदा तलो, मोमन ल्यौह बुलाय।। ६११।।
मोमन बी पकरे गये, संग कबीरा माय।
गरीबदास उस सरे में, पकरि पछारी गाय।। ६१२।।
शाह सिकंदर बोलता, कहि कबीर तूं कौंन।
गरीबदास गुजरे नहीं, कैसे बैठ्या मौंन।। ६१३।।
हम हीं अलख अल्लाह हैं, कुतब गौस अरु पीर।
गरीबदास खालिक धनी, हमरा नाम कबीर।। ६१४।।
मैं कबीर सरबंग हूँ, सकल हमारी जाति।
गरीबदास पिंड प्राण में, जुगन जुगन संग साथ।। ६१५।।
गऊ पकरि बिसमिल करी, दरगह खंड अजूद।
गरीबदास उस गऊ का, पीवै जुलहा दूध।। ६१६।।
चुटकी तारी थाप दे, गऊ जिवाई बेग।
गरीबदास दूझन लगी, दूध भरी है देग।। ६१७।।
यौह परचा प्रथम भया, शाह सिकंदर पास।
गरीबदास काजी मुल्लां, हो गये बौहत उदास।। ६१८।।
काशी उमटी सब खड़ी, मोमन करी सलाम।
गरीबदास मुजरा करै, माता सिहर अलांम।। ६१६।।
ताना बाना ना बुनैं, अधरि चिसमें जोड़ंत।
गरीबदास बौह रूप धरि, मोर्‌या नहीं मुरंत।। ६२०।।
शाह सिकंदर देखि कर, बौहत भये मुसकीन।
गरीबदास गत शेर की, थरके दोनूं दीन।। ६२१।।
काजी मुल्लां उठि गये, शाह कदम जदि लीन।

गरीबदास उस जुलहदी की, ना कोई सरवर कीन।। ६२२।।
खड़े रहे ज्यूं खंभ गति, शाह सिकंदर लोटि।
गरीबदास जुलहा कहै, ल्याहो कित है गोठि।। ६२३।।
अगरम मगरग छाड़ि दे, मान हमारी सीख।
गरीबदास कहै शाह से, बंक डगर है लीक।। ६२४।।
काजी मुल्लां भगि गये, घातन पोतन लाद।
गरीबदास गति को लखै, जुलहा अगम अगाध।। ६२५।।
चले कबीर अस्थान कूँ, पालकीयों में बैठि।
गरीबदास काशी तजी, काजी मुल्लां ऐंठि।। ६२६।।
तोरा सरा सराय का, सूंने मंदिर तास।
गरीबदास उस शाह को, काजी आने पास।। ६२७।।
काजी मुल्लां यौं कहैं, कबले जहांपनाह।
गरीबदास उस जुलहदी कूँ, मारे मूंठि चलाय।। ६२८।।
शाहतकी एलम करे, मारे मूंठि अचांन।
गरीबदास उस जुलहदी के, आगे मरि गया श्वान।। ६२९।।
श्वान मुवा करुणा करी, पाकरि कान उठाय।
गरीबदास सुनि मूंठि तूं, शाहतकी कै जाय।। ६३०।।
जो धारै सोई लहै, मूंठि लगी सिर शीश।
गरीबदास शाहतकी तो, मरि गये बिसवे बीस।। ६३१।।
काजी मुल्ला फिर गये, शाह सिकंदर पास।
गरीबदास उस पीर की, मजल धरौ नैं ल्हाश।। ६३२।।
किन मार्‌या कैसे मुवा, कहि समझावो मोहि।
गरीबदास उस जुलहदी की, गरदन बाहो लोहे।। ६३३।।
फिर दूजे अहदी गये, पकरि मंगाया बेग।
गरीबदास माँ यौं कहैं, दूध भरी क्यों देग।। ६३४।।
काजी मुल्लां सब कहै, मार मार तूं मार।
गरीबदास उस जुलहदी की, गरदन पर तरवार।। ६३५।।
शाह सिकंदर कोपिया, नयन भये विकराल।
गरीबदास शाहतकी का, यौह जुलहदी काल।। ६३६।।
घोर खुदे पातिशाह जिदे, तैं मारी है मूंठि।
गरीबदास कुछ कसर कर, चले जुलहदी ऊठ।। ६३७।।
काजी मुल्लां बांह घती, लगी गर्दनी पांच।
गरीबदास काजी पर्‌या, निकल गई जहां कांच।। ६३८।।
मार्‌या तुक्का मुगल को, लग्या जुलहदी हीक।
गरीबदास वह मुगल उत, पर्‌या उलटि दो बीक।। ६३९।।

शाह सिकंदर उठि खड़े, कदम पोस कुरबांन।
गरीबदास मंजन महल, भृकुटी में शशि भान।। ६४०।।
बकसो मोरे प्रान को, तुम अलह की जाति।
गरीबदास शाहतकी कूँ, उठते केतीक बात।। ६४१।।
काजी चूतड़ पग लग्या, बैठया हो गया बेग।
गरीबदास उस मुगल के, तुके ही का नेग।। ६४२।।
काजी खिलस उठाय दे, तजि रोजे की रीत।
गरीबदास अल्लह भजो, समय जायगा बीत।। ६४३।।
काजी राजी क्यों हुवा, घती अलह की रूह।
गरीबदास छुटै नहीं, लेखा दूहबर दूह।। ६४४।।
सुनि मुल्लां तूं मिलेगा, उस दोजख के मांहि।
गरीबदास लख अर्ज कर, मुल्लां छुटै नांहि।। ६४५।।
लाख अर्ज मुलां करै, काजी कर है कोटि।
गरीबदास कैसे बचै, काफर खाते गोठि।। ६४६।।
लाख अर्ज मुल्लां करै, काजी कर है कोटि।
गरीबदास दरम्यान को, निकले पिछले खोटि।। ६४७।।
लाख अर्ज मुल्लां करै, काजी कर है कोड़ि।
गरीबदास अब को संगी, नहीं झोटे बकरे तोड़ि।। ६४८।।
कोटि अर्ज मुल्लां करै, काजी करै अरब।
गरीबदास ग्याभन कटी, निकल परे गरब।। ६४९।।
एक ममड़ी का खून है, एक बच्चे का ब्यांत।
गरीबदास कैसे बचे, खाय गये स्यों आंत।। ६५०।।
काजी पढ़े कुरांन क्या, मुझे अंदेशा और।
गरीबदास उस भिस्त में, नहीं सरे को ठौर।। ६५१।।
भिस्त भिस्त तूं क्या करै, दोंजख डूब्या दीन।
गरीबदास काजी मुल्लां, ब्राह्मण से भये तीन।। ६५२।।
ब्राह्मण हिन्दू देव हैं, मुल्लां मुसल का पीर।
गरीबदास उस भिस्त में, दोयों की तकसीर।। ६५३।।
एक काजी एक पण्डिता, डोबि दिये दहूँ दीन।
गरीबदास विधि भेद सुनि, खाते हिन्दू सीन।। ६५४।।
मुसलमान कूँ गाय भखी, हिन्दू खाया सूर।
गरीबदास दहूँ दीन से, राम रहीमा दूर।। ६५५।।
पंडित सिमटे पुरी के, काजी करी फिलाद।
गरीबदास दहूँ दीन की, जुलहे खोई दाद।। ६५६।।
च्यार वेद षट शास्त्र, काढे अठारह पुराण।

गरीबदास चर्चा करें, आ जुलहे शैतान।। ६५७।।
तूं जुलहा शैतान है, मोमन ल्याया सीत।
गरीबदास इस पुरी में, कौन तुम्हारा मीत।। ६५८।।
तूं एकलखोर एकला रहै, दूजा नहीं सुहाय।
गरीबदास काजी पंडित, मारे तुझे हराय।। ६५९।।
सुनि ब्रह्मा के वेद तूं, नीच जाति कुल हीन।
गरीबदास काजी पंडित, सिमटे दोनों दीन।। ६६०।।
च्यार वेद षट शास्त्र, अठारह पुराण की प्रीत।
गरीबदास पंडित कहैं, सुन जुलहे मेरे मीत।। ६६१।।
ज्ञान ध्यान अस्नान कर, सेवो सालिग्राम।
गरीबदास पंडित कहैं, सुन जुलहे बरियाम।। ६६२।।
बोले जुलहा अगम गति, सुन पंडित प्रवीन।
गरीबदास पत्थर पटकि, होना पद ल्यौ लीन।। ६६३।।
अनंत कोटि ब्रह्मा गये, अनंत कोटि गये वेद।
गरीबदास गति अगम है, कोई न जानैं भेद।। ६६४।।
अनंत कोटि सालिग गये, साथे सेवनहार।
गरीबदास वह अगम पंथ, जुलहे कूँ दीदार।। ६६५।।
काजी पंडित सब गये, शाह सिंकदर पास।
गरीबदास उस सरे में, सबकी बुद्धि का नाश।। ६६६।।
जुलहे और चमार को, भक्ति बिगारी मूल।
गरीबदास द्वै नीच हैं, करते भक्ति अदूल।। ६६७।।
हिन्दू से नहीं राम राम, मुसलमान सलाम।
गरीबदास दहूँ दीन बिच, ये द्वै जाति अलाम।। ६६८।।
उमटी काशी सब गई, षट दर्शन खलील।
गरीबदास द्वै नीच हैं, इन मारत क्या ढील।। ६६९।।
दंडी सन्यासी तहां, सिमटे हैं बैराग।
गरीबदास तहां कनफटा, भई सबन से लाग।। ६७०।।
एक उदासी बनखंडी, फूल पान फल भोग।
गरीबदास मारन चले, सब काशी के लोग।। ६७१।।
बीतराग बहरूपीया, जटा मुकट महिमंत।
गरीबदास दस दस पुरुष, भेड़ों के से जन्त।। ६७२।।
भस्म रमायें भुस भरें, भद्र मुंड कचकोल।
गरीबदास ऐसे सजे, हाथों मुगदर गोल।। ६७३।।
छोटी गर्दन पेट बड़े, नाक मुख सिर ढाल।
गरीबदास ऐसे सजे, काशी उमटी काल।। ६७४।।

काले मुहडे जिनों के, पग सांकल संकेत।
गरीबदास गलरी बौहत, कूदे जान प्रेत।। ६७५।।
गाल बजावैं बंब बंब, मस्तक तिलक सिंदूर।
गरीबदास को भंग भखे, कोई उड़ावे धूर।। ६७६।।
रत्नाले माथे करें, जैसे रापति फील।
गरीबदास अंधे बहुत, फेरैं चिसम्यौं लील।। ६७७।।
लीले चिसम्यौं अंधले, मुख बाबें खंजूस।
गरीबदास मारन चले, हाथों कूँचै फूस।। ६७८।।
जुलहे और चमार पर, हुई चढ़ाई जोर।
गरीबदास पत्थर लिये, मारे जुलहे तोर।। ६७९।।
तिलक तिलंगी बैल ज्यूं, सौ सौ सालिगराम।
गरीबदास चौकी बौहत, उस काशी के धाम।। ६८०।।
घर घर चौकी पत्थर पट, काली शिला सुपेद।
गरीबदास उस सौंज पर, धरि दिये चारौं वेद।। ६८१।।
ताल मंजीरे बजत हैं, कूदे दागड़ दुम।
गरीबदास खर पीठ हैं, नाक जिन्हों के सुम।। ६८२।।
पंडित और बैराग सब, हुवा इकट्ठा आंन।
गरीबदास एक गुल भया, चौकी धरी पषांन।। ६८३।।
एक पत्थर भूरी शिला, एक काली कुलीन।
गरीबदास एक गोल गिरद, एक लाम्बी लम्बीन।। ६८४।।
एक पीतल की मूरती, एक चांदी का चौक।
गरीबदास एक नाम बिन, सूंना है त्रिलोक।। ६८५।।
एक सोने का सालिंग, जरीबाब पहिरांन।
गरीबदास इस मनुष्य से, अकल बड़ी अक श्वांन।। ६८६।।
काशीपुरी के सालिंग, सबै सिमटे आय।
गरीबदास कुत्ता तहां, मूतै टांग उठाय।। ६८७।।
कुत्ता मुख में मूत है, कैसे सालिगराम।
गरीबदास जुलहा कहै, गई अकल किस गाम।। ६८८।।
धोय धाय नीके किये, फिर आये मारी धार।
गरीबदास उस पुरी में, जुलहा हंसै चमार।। ६८९।।
तीन बार मुख मूतिया, सालिग भये अशुद्ध।
गरीबदास चहूँ वेद में, रती न रिंचक बुद्धि।। ६९०।।
भ्रष्ट हुई काशी सबै, ठाकुर कुत्ता मूति।
गरीबदास पत्थर चलै, नागा मिसरी सूति।। ६९१।।
किलकारे दुदकार हीं, कूँदे कुतक फिराय।

गरीबदास दरगह तमाम, काशी उमटी आय।। ६९२।।
होम धूप और दीप कर, भेख रह्या सिर पीट।
गरीबदास विधि साधि कर, फूकें बौहत अंगीठ।। ६९३।।
काशी के पंडित लगे, कीना होम हजूंम।
गरीबदास उस पुरी में, परी अधिक सी धूंम।। ६९४।।
चौकी सालिगराम की, मसकी एक न तिल।
गरीबदास कहै पातशाह, षटदर्शन कुछ सिल।। ६९५।।
धूप दीप मंदे परे, होम सिराये भेख।
गरीबदास तहां जुलहदी की, साहिब राखै टेक।। ६९६।।
सजि कबीर रैदास तूं, कहै सिकंदर शाह।
गरीबदास तो भक्ति सच, लीजे सौज बुलाय।। ६९७।।
कहै कबीर सुनि पातशाह, सुनि हमरी अरदास।
गरीबदास कुल नीच के, क्यौं आवैं हरि पास।। ६९८।।
दीन वचन आधीन वन्त, बोलत मधुरे बैंन।
गरीबदास कुण्डल हिरद, चढ़े गगन गिरद गैंन।। ६९९।।
लिया पखावज तालसुर, तंबूरे झनकार।
गरीबदास गावन लगे, जुलहा और चमार।। ७००।।
दहने तो रैदास थे, बामी भुजा कबीर।
गरीबदास सुर बांधि कर, मिल्या राग तसमीर।। ७०१।।
रागरंग साहिब सुन्या, जहां उतरे तत्काल।
गरीबदास काशीपुरी, सौंज पगौं बिन चाल।। ७०२।।
सौंज चली बिन पगौं से, जुलहे लीनी गोद।
गरीबदास पंडित पटकि, चले अठारह बोध।। ७०३।।
जुलहे और चमार के, भक्ति गई किस हेत।
गरीबदास इन पंडितों का, रहि गया खाली खेत।। ७०४।।
खाली खेत कुहेत से, बीज बिना क्या होय।
गरीबदास एक नाम बिन, पैज पिछोड़ी तोय।। ७०५।।
पंडित गंडित कूकरा, हा हा करें हमेश।
गरीबदास हरि भक्ति बिन, क्यों पौंहचे उस देश।। ७०६।।
दुर्लभ देश कबीर का, राई ना ठहराय।
गरीबदास पत्थर शिला, ब्राह्मण लई उठाय।। ७०७।।
पत्थर शिला से ना भला, मिसर कसर तुझ मांहि।
गरीबदास एक नाम बिन, सब दोजख कूँ जांहि।। ७०८।।
जटा जूट और भद्र भेख, पैज पिछोड़ी हीन।
गरीबदास जुलहा सिरै, और रैदास कुलीन।। ७०९।।

तुम पण्डित किस भांति के, बोलत है रैदास।
गरीबदास हरि हेत से, कीन्हा यज्ञ उपास।। ७१०।।
यज्ञ दई रैदास कूँ, षटदर्शन बैठाय।
गरीबदास बिंजन बहुत, नाना भांति कराय।। ७११।।
चमरा पंडित जीम हीं, एक पत्तल के मांहि।
गरीबदास दीखे नहीं, कूद कूद पछतांहि।। ७१२।।
रैदास भये है सात सै, मूढ पंडित गल खोड़ि।
गरीबदास उस यज्ञ में, बैहरि रही नहीं लोड़ि।। ७१३।।
परे जनेऊ सात सै, काटी गल की फांस।
गरीबदास जहां कनक का, दिखलाया रैदास।। ७१४।।
सूत सवा मण टूटिया, काशी नगर मंझार।
गरीबदास रैदास के, कनक जनेऊ सार।। ७१५।।
पंडित शिष्य भये सात सै, उस काशी के मांहि।
गरीबदास कुलहीन के, भेष लगे सब पाय।। ७१६।।
मनसा वाचा कर्मणा, षटदर्शन खटकंत।
गरीबदास समझे नहीं, भरमें भेख फिरंत।। ७१७।।
सहज मते सतगुरु गये, शाह सिकंदर पास।
गरीबदास आसन दिया, संग तहां रैदास।। ७१८।।
पग ऊपरि जल डार कर, हो गये खड़े कबीर।
गरीबदास पंडा जर्‌या, तहां पर्‌या यौह नीर।। ७१९।।
जगन्नाथ जगदीश का, जरत बुझाया पंड।
गरीबदास हर हर करत, मिट्‌या कल्प सब दंड।। ७२०।।
शाह सिंकदर कूँ कह्या, कहा किया येह ख्याल।
गरीबदास गति को लखै, पंड बुझ्‌या तत्काल।। ७२१।।
तुरत ही पत्ती लिखाय कर, भेज्या सुत्र सवार।
गरीबदास पौंहचे तहां, पंथ लगे दस बार।। ७२२।।
जगन्नाथ के दर्स कर, दूत पूछ हैं पंड।
गरीबदास कैसे जर्‌या, कहो बिथा पग हंड।। ७२३।।
पंडा कहै सु दूत से, याह विधि दाझ्‌या पाय।
गरीबदास अटका फुट्‌या, बेग ही दिया सिराय।। ७२४।।
किन बुझाया मुझि कहो, सुनि पंडा यौह पांव।
गरीबदास साची कहो, ना कछु और मिलाव।। ७२५।।
पंड कहै सोई साच मानि, सुनों हो दूत मम वीर।
गरीबदास जहां खड़े थे, डार्‌या नीर कबीर।। ७२६।।
कहौ कबीर कहां बसत है, कौन जिन्हौं की जाति।

गरीबदास पंडा कहै, ज्यूं की त्यूं ही बात।। ७२७।।
वै कबीर काशी बसै, जाति जुलहदी तास।
गरीबदास दर्शन करैं, जगन्नाथ के दास।। ७२८।।
नित ही आवत जात है, जगन्नाथ दरबार।
गरीबदास उस जुलहदी कूँ, पंडा लिया उबार।। ६२६।।
पंडे कूँ पत्तीया लिखी, जो कछु हुई निदान।
गरीबदास बीती कही, लिख भेज्या फुरमान।। ७३०।।
आये काशी नगर में, दूत कहीं सति गल।
गरीबदास इस जुलहदी की, बड़ी मजल जाजुल।। ७३१।।
शाह सिकदर सुनि थके, याह अचरज अधिकार।
गरीबदास उस जुलहदी का, नित कर हैं दीदार।। ७३२।।
फिर गनिका के संग चले, शीशी भरी शराब।
गरीबदास उस पुरी में, जुलहा भया खराब।। ७३३।।
तारी बाजी पुरी में, भ्रष्ट जुलहदी नीच।
गरीबदास गनिका सजी, दहूँ संतौं के बीच।। ७३४।।
गावत बैंन विलास पद, गंगाजल पीवंत।
गरीबदास विह्ल भये, मतवाले घूमंत।। ७३५।।
भडुवा भडुवा सब कहैं, कोई न जानै खोज।
गरीबदास कबीर कर्म, बांटत सिर का बोझ।। ७३६।।
देखो गनिका संगि लई, कहते कौंम छत्तीस।
गरीबदास इस जुलहदी का, दर्शन आन हदीस।। ७३६।।
शाह सिकंदर कूँ सुनी, भ्रष्ट हुये दो संत।
गरीबदास च्यारों वर्ण, उठि लागे सब पंथ।। ७३८।।
च्यार वर्ण षट् आश्रम, दोनों दीन खुशाल।
गरीबदास हिंदू तुरक, पड़्या शहर गलि जाल।। ७३६।।
शाह सिकंदर के गये, सुनि कबले अरदास।
गरीबदास तलबां हूई, पकरे दोनो दास।। ७४०।।
कहो कबीर योह क्या किया, गनिका लीन्ही संग।
गरीबदास भूले भक्ति, पर्‍या भजन में भंग।। ७४१।।
सुनों सिकंदर बादसाह, हमरी अर्ज अवाज।
गरीबदास वह राखिसी, जिन यौह साज्या साज।। ७४२।।
जड़िया तौंक जंजीर गल, शाह सिंकदर आप।
गरीबदास पद लीन है, तारी अजपा जाप।। ७४३।।
हाथों जड़ी हथूकड़ी, पग बेड़ी पहिराय।
गरीबदास निधि गंग में, तहां दीन्हा छिटकाय।। ७४४।।

झड़ि गये तौंक जंजीर सब, लगे किनारे आये।
गरीबदास देखे खलक, स्यौं काजी बादसाह।। ७४५।।
नीचै नीचै गंग जल, ऊपर आसन थीर।
गरीबदास बूडे नहीं, बैठे अधर कबीर।। ७४६।।
यौह अचरज कैसा भया, देखे दोनों दीन।
गरीबदास काजी कहै, बांधि दिया जल सीन।। ७४७।।
गल में फांसी डार कर, बांधो शिला सुधार।
गरीबदास यौह जुलहदी, जब बूडे गंग धार।। ७४८।।
शिला धरी जब नाव में, बांधी गले कबीर।
गरीबदास फंद टूटि के, ना डूबे जल नीर।। ७४९।।
शिला चली शाह ओर को, देखत काशी ख्याल।
गरीबदास कबीर का, आसन अधर हमाल।। ७५०।।
तीर बाण गोले चले, तोप रहकल्यों शोर।
गरीबदास उस जुलहदी के, गई एक नहीं ओर।। ७५१।।
अधर धार गोले बहैं, जल के बीच गभाक।
गरीबदास उस जुलहदी पर, शस्त्र छूटें लाख।। ७५२।।
तोप रहकले सब चलें, तीर बाण कमान।
गरीबदास वह जुलहदी, जल पर रहै अमान।। ७५३।।
अधरि धार आपार गति, जल पर लगी समाधि।
गरीबदास निज ब्रह्म पद, खेलैं आदि अनादि।। ७५४।।
जुलम हुवा बूडे नहीं, शस्त्र लगे न बाण।
गरीबदास इब कौन गति, कैसे लीजे प्राण।। ७५५।।
लगी समाधि अगाध में, बिचरे काशी गंग।
गरीबदास किलोल सर, छूहैं चरण तरंग।। ७५६।।
च्यार पहर गोले बगे, धमी मुलक मैदान।
गरीबदास पोखर सूखें, रहे कबीर अमान।। ७५७।।
अपनी करनी सब करी, थाके दोनों दीन।
गरीबदास अब जुलहदी, पैठ गये जल मीन।। ७५८।।
डूब्या डूब्या सब कहै, हो गये गारत गोर।
गरीबदास कबले धनी, तुम आगे क्या जोर।। ७५९।।
आनंद मंगल होत है, बटें बधाई बेग।
गरीबदास उस जुलहदी पर, फिर गई रेती रेघ।। ७६०।।
हस्ती घोड़े चढ़त हैं, पान मिठाई चीर।
गरीबदास काशी खुसी, बूडे गंग कबीर।। ७६१।।
जावो घर रैदास के, हिलकारे हजूर।

गरीबदास खुसिया कहो, कहियो नहीं कसूर।। ७६२।।
झालरि ढोलक बजत हैं, गावै शब्द कबीर।
गरीबदास रैदास संगि, दोनों एक ही तीर।। ७६३।।
काजी पंडित सब गये, शाह सिंकदर ऊठ।
गरीबदास रैदास के, भेष गये जटजूट।। ७६४।।
कोठी कुठले सब झके, बासन टींडर गोल।
गरीबदास चमरा सुनों, कहां गये वह बोल।। ७६५।।
वे प्रगट पूर्ण पुरुष हैं, अविनाशी अल्लाह।
गरीबदास चमरा कहै, सुनों सिंकदर शाह।। ७६६।।
सूरज मुखी सुभान सर, खिले फूल गुलजार।
गरीबदास काजी पंडित, करता शाह पुकार।। ७६७।।
शाह सिंकदर फिर गये, उस गंगा के तीर।
गरीबदास फुलवाड़ियां, छुटैं फुहारे नीर।। ७६८।।
बैठ मल्लाह जिहाज में, गये धार के बीच।
गरीबदास हरि हरि करें, प्रेम फुहारे सींच।। ७६९।।
करी अर्ज मल्लाह तहां, दीन दुनी बादसाह।
गरीबदास आसन अधर, लगी समाधि जुलाह।। ७७०।।
भँवर फिरत हैं गंग जल, फूल उगानें कोटि।
गरीबदास तहां बंदगी, हरिजन हरि की ओट।। ७७१।।
संकल सीढ़ी लाय कर, उतरे तहां मल्लाह।
गरीबदास हम बंदगी, याद किये बादसाह।। ७७२।।
बैठ कबीर जिहाज में, आये गंगा घाट।
गरीबदास काशी थकी, हांडे बौह विधि बाट।। ७७३।।
खूनी हाथी मस्त है, पग बंधे जंजीर।
गरीबदास जहां डारिया, मसक बांधि कबीर।। ७७४।।
सिंह रूप साहिब धर्‍या, भागे उलटे फील।
गरीबदास नहीं समझती, याह दुनिया खलील।। ७७५।।
बने केहरी सिंह जित, चौंर शिखर असमान।
गरीबदास हस्ती लख्या, दीखे नहीं जिहान।। ७७६।।
कूटे शीश महावतं, अंकुश सिर गरगाप।
गरीबदास उलटा भगे, तारी दीजे थाप।। ७७७।।
भाले कोखों मारिये, चरखी छूटें लाख।
गरीबदास नहीं निकट जाय, किलकी देवे लाख।। ७७८।।
जैसी भक्ति कबीर की, ऐसी करै न कोय।
गरीबदास कुंजर थके, उलटे भागे रोय।। ७७९।।

दुम गोवै मूंडी धुनै, सैंन न समझै एक।
गरीबदास दीखे नहीं, आगे खड़ा अलेख।। ७८०।।
पीलवान देख्या तबै, खड़ा केहरी सिंघ।
गरीबदास आये तहां, धरि मौला बहु रंग।। ७८१।।
उतरे मौला अर्श तै, भाव भक्ति के हेत।
गरीबदास तब शाह लखे, श्याम पीठि मुख सेत।। ७८२।।
नयन गिरद कटोरियां, दुम बिलंद धरि शीश।
गरीबदास कबीर के, पास खड़े जगदीश।। ७८३।।
जंभाई अंगड़ाईयां, लम्बे भये दयाल।
गरीबदास उस शाह कूँ, मानौं दरश्या काल।। ७८४।।
कोटि चन्द्र शशि भान मुख, गिरद कुंडल दुम लील।
गरीबदास तहां ना टिके, भागि गये रनफील।। ७८५।।
नयन लाल भौंह पीत हैं, डूंगर नक पहार।
गरीबदास उस शाह कूँ, सिंह रूप दीदार।। ७८६।।
मस्तक शिखर स्वर्ग लग, दीरघ देह बिलंद।
गरीबदास हरि उतरे, काटन जन के फंद।। ७८७।।
गिरद नाभि निरभै कला, दुदकारे नहीं कोय।
गरीबदास त्रिलोक में, गाज तास की होय।। ७८८।।
ज्यूं नरसिंह प्रहलाद के, यूं वह नरसिंह एक।
गरीबदास हरि आईया, राखन जन की टेक।। ७८९।।
कंध कुहाड़ा घालि के, मस्तक लीना भार।
गरीबदास शाह यौं कहै, बकसौ इब की बार।। ७९०।।
तहां सिंह ल्यौलीन होय, परचा इबकी बार।
गरीबदास शाह यौं कहै, अल्लह दिया दीदार।। ७९१।।
सुन काशी के पण्डितो, काजी मुल्लां पीर।
गरीबदास इस चरण ल्यौह, अलह अलेख कबीर।। ७९२।।
यौह कबीर अल्लाह है, उतरे काशी धाम।
गरीबदास शाह यौं कहै, झगर मूये बे काम।। ७९३।।
काजी पंडित रूठिया, हम त्याग्या यौह देश।
गरीबदास षटदल कहैं, जादू सिहर हमेश।। ७९४।।
इन जादू जंतर किया, हस्ती दिया भगाय।
गरीबदास इत ना रहैं, काशी बिडरी जाय।। ७९५।।
काशी बिडरी दौंह दिसा, थांभन हारा एक।
गरीबदास कैसे थंभै, बिडरे बौहत अनेक।। ७९६।।
क्यूं बिडरी गडरी दुनीं, कथा कबीर समूल।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीबदास उस वृक्ष के, अनंत कोटि रंग फूल।। ७९७।।
बिडरे भेष विवेक तजि, छाडि चले सब सौंज।
गरीबदास दिल्ली आगरे, कोई दगरे सीरौज।। ७९८।।
कोई अयोध्या कूँ चले, कोई वृन्दावन सेव।
गरीबदास सूरत तकी, कोई रामेश्वर देव।। ७९९।।
सिमटि भेष इकट्ठा हुवा, काजी पंडित मांहि।
गरीबदास चिट्ठा फिर्‌या, जंबूदीप सब ठांहि।। ८००।।
मसलति करी मिलाप से, जीवन जन्म कछु नांहि।
गरीबदास मेला सही, भेष समेटे तांहि।। ८०१।।
सेतबंध रामेश्वरं, द्वारा गढ़ गिरनार।
गरीबदास मुलतान मग, आये भेष अपार।। ८०२।।
हरिद्वार बदरी विनोद, गंगा और किदार।
गरीबदास पूर्व सजे, ना कछु गिनति सुमार।। ८०३।।
अठारह लाख दफतर चढ़े, अस्तल बंध मुकाम।
गरीबदास अनाथ जीव, और केते उस धाम।। ८०४।।
बजैं नगारे नौबतां, तुरही और रनसींग।
गरीबदास झूलन लगे, उरधमुखी वौह पींघ।। ८०५।।
एक आक धतूरा चबत है, एक खावै खड़ घास।
गरीबदास एक उरध मुखी, एक जीमें पंच गिरास।। ८०६।।
एक विरक्त कंगाल हैं, एक ताजे तन देह।
गरीबदास महमूंदियां, एक तन लावै खेह।। ८०७।।
एक पंच अग्नि तपत है, एक झरनैं बैठंत।
गरीबदास एक उरधमुख, नाना विधि के पंथ।। ८०८।।
एक नगन कोपीनियां, इंद्री खैंचि बधाव।
गरीबदास ऐसे बहुत, गर्दन पर धरि पांव।। ८०९।।
एक कपाली करत हैं, ऊपर चरण अकाश।
गरीबदास एक जल सिज्या, नाना भांति उपास।। ८१०।।
एक बैठे ठाडेसरी, एक मौनी महमंत।
गरीबदास बड़बड़ करैं, ऐसे बहुत अनंत।। ८११।।
एक जिकरी जंजालिया, एक ज्ञानी धुनि वेद।
गरीबदास ऐसे बहुत, वृक्ष काट घर खेद।। ८१२।।
एक ऊंचै सुर गावहीं, राग बंध रस रीत।
गरीबदास ऐसे बहुत, आतुर बिना अतीत।। ८१३।।
एक भरड़े सिरड़े फिरै, एक ज्ञानी घनसार।
गरीबदास उस पुरी में, नहीं भेष सुमार।। ८१४।।

एक कमरि जंजीर कस, लोहे की कोपीन।
गरीबदास दिन रैंन सुध, पड़े रहैं बेदीन।। ८१५।।
एक मूंजौ के आड़बंधि, केलौं के लंगोट।
गरीबदास लंबी जटा, एक मुंडावैं घोट।। ८१६।।
एक रंगीले नाच हीं, करैं आचार विचार।
गरीबदास एक नगन हैं, एको खर का भार।। ८१७।।
एक धूंनी तापैं दिहुँ, सिंझ्या देह बुझाय।
गरीबदास ऐसे बहुत, अन्न जल कछु न खाय।। ८१८।।
एक मूंधे सूधे पड़े, आसन मोर अधार।
गरीबदास ऐसे बहुत, तिरते हैं जलधार।। ८१६।।
एक पलक मूंदे नहीं, एक मूंदे रहे हमेश।
गरीबदास न्यौली कर्म, एक त्राटिक ध्यान हमेश।। ८२०।।
एक बजर आसन करै, एक पदम प्रवीन।
गरीबदास एक कनफट्टा, एक बजावैं बीन।। ८२१।।
संख तूर झालर बजैं, रणसींगे घनघोर।
गरीबदास काशीपुरी, दल आये बड़ जोर।। ८२२।।
एक मकरी फिकरी बहुत, गलरी गाल बजंत।
गरीबदास तिन को गिनें, ऐसे अनगिन पंथ।। ८२३।।
एक हर हर हक्का करैं, एक मदारी सेख।
गरीबदास गुदरी लगी, आये भेष अलेख।। ८२४।।
एक चढ़े घोड्यौं फिरै, एक लड़ावैं फील।
गरीबदास कामी बहुत, एक राखत है शील।। ८२५।।
एक तन को धोवै नहीं, एक त्रिकाली न्हांहि।
गरीबदास एक सुचितं, एक ऊपर हों बांहि।। ८२६।।
एक नखी निरवाणीयां, एक खाखी हैं खुश।
गरीबदास पद ना लख्या, सब कूटत हैं तुश।। ८२७।।
तुश कूटैं और भुस भरैं, आये भेष अटंब।
गरीबदास नहीं बंदगी, तपी बहुत आरंभ।। ८२८।।
एक ठोडी कंठ लगाव हीं, आठ बखत नक ध्यान।
गरीबदास ऐसे बहुत, कथा छंद सुर ज्ञान।। ८२६।।
एक सौदागर भेष में, कस्तूरी व्यौपार।
गरीबदास केसर कनी, सिमट्या भेष अपार।। ८३०।।
एक तिलक धोती करै, दर्पन ध्यान ज्ञान।
गरीबदास एक अग्नि में, होमत है अन्नपान।। ८३१।।
भेष देख रैदास जी, गये कबीरा पास।

गरीबदास चमरा कहे, छूट्या काशी वास।। ८३२।।
विहँसे बदन कबीर तब, सुन रैदास चमार।
गरीबदास जुलहा कहै, लाय धनी से तार।। ८३३।।
लाय तार ल्यौलीन होय, रूप विहंगम मांहि।
गरीबदास जुलहा गया, अगम पुरी निज ठांहि।। ८३४।।
जहां बोडी संख असंख सुर, बनजारे और बैल।
गरीबदास अविगत पुरी, हुई काशी कूँ सैल।। ८३५।।
जरद सेत और हरे नघ, बोडी भरी अनंत।
गरीबदास ऐसे कह्या, ल्यौह कबीर भगवंत।। ८३६।।
औह खाकी खंजूस पुर, अन्नजल का अधिकार।
गरीबदास ऐसे कह्या, सुन तूं सिरजनहार।। ८३७।।
अनंत कोटि बालद सजी, तास लई नौ लाख।
गरीबदास केशो कला, एक पलक पुर झाँक।। ८३८।।
जहां कल्प ऐसी करी, चौपड़ के बैजार।
गरीबदास तंबू तने, पचरंग झंडे सार।। ८३६।।
खुल्या भंडारा गैब का, बिन चिट्ठी बिन नाम।
गरीबदास मुक्ता तुले, धन्य केशो बलि जाँव।। ८४०।।
झीनें झनवा तुलत हैं, बूरा घृत और दाल।
गरीबदास आटे अटक, लेवे मुक्ता माल।। ८४१।।
कस्तूरी पान मिठाईयां, लड्डू जलेब चंगेर।
गरीबदास नुकती निरख, भण्डारी कुबेर।। ८४२।।
बिना पकाया पकि रह्या, ऊतरे अर्श खमीर।
गरीबदास मेला सरू, जय जय होत कबीर।। ८४३।।
सकल संप्रदा त्रिपती, तीन दिवस जौंनार।
गरीबदास षट दर्शनं, सीधे गंज अपार।। ८४४।।
शाह सिकंदर कूँ सुनी, धंन कबीर बलि जाँव।
गरीबदास मेले चलो, मम हिरदे धरि पांव।। ८४५।।
कहै कबीर सुन शाह तूं, भेष अलाम गुलाम।
गरीबदास कैसे चलौं, मो गठरी नहीं दाम।। ८४६।।
नहीं काशी में शाह कोई, मोहि उधारा देत।
गरीबदास ताना तनूं, जिब कुंनबे सुधि लेत।। ८४७।।
मैं अधीन अंनकीट हूँ, उदर भरै नहीं मोहि।
गरीबदास माता दुखी, अरु मोमन हैं छोहि।। ८४८।।
ए कबीर तुम अलह हो, पलक बीच प्रवाह।
गरीबदास कर जोर करि, ऐसे कहता शाह।। ८४६।।

तुम दयाल दरवेश हो, धरि आये नर रूप।
गरीबदास ऐसे कहै, बादसाह जहां भूप।। ८५०।।
उठे कबीर कर्म किया, बरसे फूल अकाश।
गरीबदास मेले चले, चौंर करत रैदास।। ८५१।।
तीन एक चंहडोल में, रैदास शाह कबीर।
गरीबदास चौंरा करै, बादसाह बलबीर।। ८५२।।
मुकट मनोहर बांधि कर, चढ़े फील कबीर।
गरीबदास उस पुरी में, कोई न धर है धीर।। ८५३।।
केशव चले कबीर पै, कबीर कस्त क्यों कीन।
गरीबदास हसती चढ़े, मेला देखन तीन।। ८५४।।
चौपड़ के बैजार फिर, आये केशव पास।
गरीबदास कुरबान गति, क्या कहूँ विलास।। ८५५।।
पाट पिटंबर बिछ गये, ऊपर हीरे लाल।
गरीबदास साहिब धनी, ल्याये मुक्ता माल।। ८५६।।
केशव और कबीर का, तंबू मांहि मिलाप।
गरीबदास अठ पहर लग, गोष्ठी निज गरगाप।। ८५७।।
केशव कहत कबीर से, पूछत बातां बीन।
गरीबदास क्यूं ऊतरे, ऐसे मुलक मलीन।। ८५८।।
खान पान की इंछि जित, नाहीं अधरि विमान।
गरीबदास यौह लोक जीव, छाड्या मुलक अमान।। ८५९।।
सिकल बिकल इस लोक में, पाप पुण्य व्यौहार।
गरीबदास केशव कहै, कैसे रहन तुम्हार।। ८६०।।
नहीं अधरि सरवर तहां, नहीं अधरि कोई बाग।
गरीबदास केशव कहै, क्यों नहीं देते त्याग।। ८६१।।
नहीं फुहारे गगन में, नहीं मानसी गंग।
गरीबदास जग देख कर, हमरा चित मन भंग।। ८६२।।
नहीं नगर हैं नूर के, नहीं बगर तिस हीर।
गरीबदास केशव कहै, तुम क्यों रहै कबीर।। ८६३।।
कलंगी कला न मनुष्य के, देवंगना नहीं दीप।
गरीबदास केशव कहै, जहां सायर तहां सीप।। ८६४।।
नहीं तुरंगम अधर भूमि, नहीं रापति कोई सेत।
गरीबदास केशव कहै, खाली राखत खेत।। ८६५।।
धन्य कबीर कुरबांन जां, ऐसी रहनि तुम्हार।
गरीबदास केशव कहै, छाडि गीद संसार।। ८६६।।
धन्य कबीर कुरबान जां, पल पल चरण जुहार।

गरीबदास तैं क्यों तजे, हीरे लाल पहार।। ८६७।।
याह पौहमी है छार की, मुरद फरोशी पिंड।
गरीबदास केशव कहै, चरण धरे सिर डंड।। ८६८।।
मुरद कफन सब बिछ रहे, तापर मुरदे आँव।
गरीबदास केशव कहै, यहां नहीं धरिये पाँव।। ८६९।।
मुरद जिमी असमान है, मुरद चंद और सूर।
गरीबदास केशव कहै, मुरद बजावै तूर।। ८७०।।
मुरद नदी कुल वृक्ष है, मुरद पिण्ड अरु प्राण।
गरीबदास वह क्यों तजे, संख पदम शशि भान।। ८७१।।
सुनि कबीर इस धरणि पर, तुम नहीं धरियो पाव।
गरीबदास बोडी बहुत, यहां रहत सत भाव।। ८७२।।
गांडि भड़ूका खेल हीं, या जग भड़ुवे लोग।
गरीबदास रूचि मान हीं, इस कूँ थरपै भोग।। ८७३।।
नरक भरे तिस उदर हैं, रुधिर भरी सब देह।
गरीबदास केशव कहै, या मनुष्यौं मुख खेह।। ८७४।।
राम नाम कैसे फुरै, नरक नगीन शरीर।
गरीबदास केशव कहै, बिलंबे कहां कबीर।। ८७५।।
जूंनी संकट भुगत हीं, फिर जूंनी से संग।
गरीबदास केशव कहै, भाव भक्ति सब भंग।। ८७६।।
जूंनी संकट में परे, फिर जूंनी से भोग।
गरीबदास केशव कहै, मुरद भूत सब लोग।। ८७७।।
सौ योजन पर लगत है, या दुनियां की गंध।
गरीबदास केशव कहै, हाड चाम का फंद।। ८७८।।
हाड चाम के गाम सब, हाड चाम सब खान।
गरीबदास केशव कहै, हाड चाम का दाम।। ८७९।।
हाड चाम की गूदरी, हाड चाम का चोल।
गरीबदास केशव कहै, हाड चाम सिर खोल।। ८८०।।
हाड चाम का नाक है, हाड चाम का मुख।
गरीबदास केशव कहै, तज कबीर यौह रुख।। ८८१।।
हाथ इकीसौं आंत है, भरी नरक सब ठेल।
गरीबदास केशव कहै, खाटी करवी बेल।। ८८२।।
करवी करवा फल लगै, करवी करवा खाय।
गरीबदास केशव कहै, मीठा नाम निपाय।। ८८३।।
सुनि कबीर सुर भेद हूँ, केशव कसत करंत।
गरीबदास गंदे मनुष्य, मेला आंनि भरंत।। ८८४।।

विष्ठा जिन की देह में, मगन फिरै दिन रात।
गरीबदास केशव कहै, जिन सिर जम की घात।। ८८५।।
नरक अहारी मनुष्य हैं, सुन कबीर मम ज्ञान।
गरीबदास केशव कहै, कैसा ज्ञान अरु ध्यान।। ८८६।।
सुन कबीर मन भावने, तुमरी बात अगाध।
गरीबदास केशव कहै, तुम से तुम ही साध।। ८८७।।
नाद बिंद में बोय है, चलि है पान अपान।
गरीबदास केशव कहै, बिन ही दम सैलान।। ८८८।।
दम नहीं देही नहीं, नहीं जिमी असमान।
गरीबदास केशव कहै, जहां रहन अस्थान।। ८८९।।
हरे पीत मोती जहां, हीरे बदन सपेद।
गरीबदास केशव कहै, सुनों देश का भेद।। ८९०।।
लाल श्याम जहां रतन हैं, नहीं अंग आकार।
गरीबदास केशव कहै, चल कबीर परिवार।। ८९१।।
उर अमोघ जहां भजन है, केशव जहां रहंत।
गरीबदास केशव कहै, कोई कोई जन समझंत।। ८९२।।
उर अमोघ आसन अरस, उर अमोघ सर संध।
गरीबदास केशव कहै, सोई साध निर्बंध।। ८९३।।
सुनि केशव अब वंदना, कहै कबीर संदेश।
गरीबदास घट महल में हमरा ही प्रवेश।। ८९४।।
हम अमान अविगत पुरुष, चुंबक ज्यूं चमकार।
गरीबदास लोहा फिरै, हमरे अधर अधार।। ८९५।।
लोहे रूपी देह है, चुंबक रूपी प्राण।
गरीबदास दोऊ से बगल, शब्दातीत अमान।। ८९६।।
जब हम खेंचै प्राण को, दम मिलै दरियाव।
गरीबदास पिण्डा परे, सुंनि श्वास मिल जाव।। ८९७।।
सुंन हमारा रूप है, हम हैं सुंन से न्यार।
गरीबदास उस प्राण कूँ, हम हीं जोवनहार।। ८९८।।
हम जोवैं हम ऐंचि हैं, यौह सब ख्याल हमार।
गरीबदास अविगत अदल, फजल फूल दीदार।। ८९९।।
फूल रूप सब प्रान हैं, फूल फूल में गंध।
गरीबदास मम महल की, हम ही जानत सिंध।। ९००।।
पिण्ड पेड़ फल बीज हैं, पिण्ड बीज से होत।
गरीबदास जानै नहीं, माता दूझत सोत।। ९०१।।
बालक पीवै अति अघाय, माता दूधी धैंन।

गरीबदास उस नरक में, कहां रतन सुर सैंन।। ६०२।।।
हाड चाम की देहि में, दूध रतन सरवंत।
गरीबदास घट पिण्ड में, ऐसे हैं भगवंत।। ६०३।।
थन दूधी को पारि कर, जे कोई देखै दूध।
गरीबदास उस पिण्ड में, हाड चाम और गूद।। ६०४।।
हमरे ही उनिहार है, हमरा सिरजनहार।
गरीबदास विधि भेद सुन, उघरे मुक्ति द्वार।। ६०५।।
तन के अंदर मन बसै, मन में दिल दरियाव।
गरीबदास उस लहर से, न्यारा है प्रभाव।। ६०६।।
चित के बीच चबूतरा, तहां वहां रहनि हमार।
गरीबदास उस महल में, दूजा नहीं लगार।। ६०७।।
हिरदे की खिरकी खुल्है, ऐंनक मध्य अनरूप।
गरीबदास घट घट बसै, रहै गगन जल कूप।। ६०८।।
जल से गगन न भीज है, नहीं सुकावै धूप।
गरीबदास मम देश यौह, सुंन से न्यारा रूप।। ६०६।।
हम हैं सुंन सनेहीयां, सुन केशव करतार।
गरीबदास तुम चरण से, हम ऊतरे कई बार।। ६१०।।
जुग सत्तरि हम ज्ञान दे, जीव न समझ्या एक।
गरीबदास घर घर फिरे, धरै कबीरा भेष।। ६११।।
सत्तरि जुग सेवन किये, किन्हे न बूझी बात।
गरीबदास श्री कृष्ण के, भृगु लगाई लात।। ६१२।।
कल्प कोटि जुग बीतिया, हम आये तिस बेर।
गरीबदास केशव सुनों, देन भक्ति की टेर।। ६१३।।
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, हम पैठे कई बार।
गरीबदास घर घर सिज्या, मार मार कहै मार।। ६१४।।
हमरी जाति अपूर्वी, पूर्व रहनि हमार।
गरीबदास कैसे जुड़ै, पश्चिम के का तार।। ६१५।।
हम हैं पूर्व ठेठ के, उतरे औघट घाट।
गरीबदास जीव दक्षिण के, यौं नहीं मिलती साट।। ६१६।।
हम पूर्व के पूर्वी, उत्तर देश उतरंत।
गरीबदास जीव दक्षिण के, यौं नहीं संग चलंत।। ६१७।।
सकल जीव जुग कल्प कर, काटे जम जंजीर।
गरीबदास केशव सुनै, ऐसे कहै कबीर।। ६१८।।
फिर बाजी विधना रची, वै नहीं जीव आवंत।
गरीबदास सत्यलोक में, अमर पटा पावंत।। ६१६।।

अनंत कोटि बाजी तहां, रचे सकल ब्रह्मंड।
गरीबदास मैं क्या करूं, काल करत जीव खंड।। ६२०।।
कीलौं काल निकंद हूँ, जीव विध्वंस नहीं होय।
गरीबदास जुलहा कहै, शब्द न बूझे कोय।। ६२१।।
मनुष्य जीव क्या बात है, पशु पक्षी प्रवान।
गरीबदास जुलहा कहै, करि हूँ हंस अमान।। ६२२।।
मैं बनजारा आदि का, याही हमरी साट।
गरीबदास जीव अभय कर, बौहर न आवै बाट।। ६२३।।
एक गाडै जहा जारिये, यह नहीं मोहि सुहाय।
गरीबदास पद अभय में, देऊँ जीव मिलाय।। ६२४।।
सुन केशव साहिब धनी, मैं हूँ तुम्हरा दास।
गरीबदास तुम हुकम से, काटत जीव की फांस।। ६२५।।
मुझ आजिज की कल्प सुनि, तुम उतरे तत्काल।
गरीबदास जुलहा कहै, मग झीना पंथ बाल।। ६२६।।
नौलख बोडी ऊतरी, केशव कसत करंत।
गरीबदास मम कारणें, भक्ति रूप भगवंत।। ६२७।।
सुनि स्वामी साहिब धनी, करि हूँ अर्ज अनेक।
गरीबदास जुलहा कहै, पूर्ण कीन्हे भेष।। ६२८।।
कामधेनु कल्पवृक्ष तूं, मैं एक तुम्हरा फूल।
गरीबदास केशव धनी, सदा संग मखमूल।। ६२६।।
तुम से संगी संग हैं, हमरे कछू न चाह।
गरीबदास सतगुरु धनी, उतरे माल भराय।। ६३०।।
सुनि सतगुरु तोसे कहूँ, तुम हो दीन दयाल।
गरीबदास आधीन मैं, तुम साहिब अबदाल।। ६३१।।
पूर्ण ब्रह्म कृपा निधान, सुन केशव करतार।
गरीबदास मुझ दीन की, रखियो बहुत संभार।। ६३२।।
सुनि कबीर केशव कहै, जो कुछ करौ सो कीन।
गरीबदास मुखत्यार तुम, तुम ही दीन बेदीन।। ६३३।।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड को, त्यारत लगै न बार।
गरीबदास केशव कहै, तुम ही दारम दार।। ६३४।।
तुम ही दारम दार हो, यहां कल्प नहीं इंछ।
गरीबदास केशव कहै, तुमरे ही प्रपंच।। ६३५।।
तूं प्रपंची आदि का, अनंत लोक तुम त्यार।
गरीबदास केशव कहै, तुम कोली घनसार।। ६३६।।
अनंत लोक ताना तन्या, गूढी गांठि कूँ बीन।

गरीबदास केशव कहैं, तुम कोली प्रवीन।। ६३७।।
केशव चले जु धाम को, नौलख बोडी लीन।
गरीबदास बंधन किया, बाजत हैं सुर बीन।। ६३८।।
केशव और कबीर जित, मिलत भये तहां एक।
गरीबदास सत्यपुरुष में, सब ही समाना देख।। ६३६।।
बनजारे और बैल सब, केशव कला कमाल।
गरीबदास सत्यपुरुष में, लीन भये तत्काल।। ६४०।।
आवत जाते ना लखे, कौन धाम प्रकाश।
गरीबदास शाह बूझ हैं, कहां गये हरिदास।। ६४१।।
हरि में हरि के दास हैं, दासन के हरि पास।
गरीबदास पद अगम गति, शाह तकी उदास।। ६४२।।
चलो सिकंदर पातशाह, ढोढें दीन बहाय।
गरीबदास उस पीर के, तन मन लागी भाय।। ६४३।।
जेता शहर कबीर का, हमरे बौहत अनेक।
गरीबदास शाह तकी के, लगी जुबानं मेख।। ६४४।।
गुंग भया बोलै नहीं, नहीं जुबाब जुबान।
गरीबदास मार्‍या, पर्‍या, बिन शर करौं कमान।। ६४५।।
एता दोष धरै कहां, दग्ध जिमीं असमान।
गरीबदास सुनिये नहीं, गुंग द्वार मुख कान।। ६४६।।
चौपाईः–धरि जिंदे का रूप, सैल वृन्दावन कीनी।
तहां मिले धर्मदास, करत हैं बहुत आधीनी।। ६४७।।
बौहरंगी बरियाम, काम निहकामी सोई।
धरि सतगुरु का रूप, धनी उतरे हैं लोई।। ६४८।।
परम उजागर ज्ञान, ध्यान बौह रंगी बाना।
तहां मिले धर्मदास, अचार विचार दिवाना।। ६४६।।
कौन तुम्हारी जाति, कहां से आये स्वामी।
पूछै पुरुष **कबीर,** धनी साहिब निहकामी।। ६५०।।
हम वैष्णव वैराग, धर्म में सदा रहाई।
शूद्र न बैठे संग, कल्प ऐसी मन माहीं।। ६५१।।
दोहाः– सुन जिंदा मम धर्म कूँ, अधिक अचार विचार।
हमरी करनी जो करै, उतरै भवजल पार।। ६५२।।
बोले धनी **कबीर,** सुनों वैष्णव वैरागी।
कौन तुम्हारा नाम, गाम कहिये बड़भागी।। ६५३।।
कौन कौंम कुल जाति, कहां को गवन किया है।
कौन तुम्हारी रहसि, किन्हें तुम नाम दिया है।। ६५४।।

कौन तुम्हारा ज्ञान ध्यान, सुमरण है भाई।
कौन पुरुष की सेव, कहां समाधि लगाई।। ६५५।।
को आसन को गुफा, कै भ्रमत रहो सदाई।
शालिग सेवन कीन, बहुत अति भार उठाई।। ६५६।।
झोली झंडा धूप दीप, तुम अधिक अचारी।
बोले धनी **कबीर,** भेद कहियो ब्रह्मचारी।। ६५७।।

दोहाः- **हम कूँ पार लंघावही, परम उजागर रूप।**
जिंद कहै धर्मदास से, तुम हो मुक्ति स्वरूप।। ६५८।।

बांदौगढ़ है गाम, नाम धर्मदास कहीजै।
वैश्य कुली कुल जाति, शूद्र नहीं बात सुनीजै।। ६५९।।
सर्गुण ज्ञान स्वरूप, ध्यान सालिग की सेवा।
मलागीर छिरकंत, संत सब पूजै देवा।। ६६०।।
अठसठि तीरथ न्हांन, ध्यान कर कर हम आये।
पूजे शालिगराम, तिलक गलि माल चढ़ाये।। ६६१।।
धूप दीप अधिकार, आरती करैं हमेशा।
राम कृष्ण का जाप, रटत है शंकर शेषा।। ६६२।।
नेम धर्म से नेह, स्नेह दुनिया से नाहीं।
आरूढं वैराग, और की मानौं नाहीं।। ६६३।।

दोहाः- **सुनि जिंदे मम धर्म कूँ, वैष्णव रूप हमार।**
अठसठि तीरथ हम किये, चीन्ह्या सिरजनहार।। ६६४।।

बौले जिन्दा बैंन, कहां से शालिग आये।
को अठसठि का धाम, मुझे तत्काल बताये।। ६६५।।
राम कृष्ण कहां रहै, नगर औह कौन कहावै।
ये जड़वत हैं देव, तास क्यों घंट बजावै।। ६६६।।
सुनहि गुनहि नहीं बात, धात पत्थर के स्वामी।
कहां भरमें धर्मदास, चीन्ह निज पद निहकामी।। ६६७।।
आवत जात न कोय, अलख अविनाशी सांईं।
रहत सकल सरबंग, बोल है मुझ तुझ मांहीं।। ६६८।।
बोलत घट घट ब्रह्म, धर्म आदू नहीं जाना।
चिदानंद को चीन्ह, डारि पत्थर पाषाणा।। ६६९।।

दोहाः- **राम कृष्ण कोट्यौ गये, धनी एक का एक।**
जिंद कहै धर्मदास से, बूझो ज्ञान विवेक।। ६७०।।

बूझो ज्ञान विवेक, एक निज निश्चय आनं।
दूजा दोजिख जात, कहा पूजो पाषानं।। ६७१।।
शिला न शालिगराम, प्रतिमा पत्थर कहावै।

देख जरत है अग्नि, नदी जल बूडि न पावै।। ६७२।।
कूटि घड्या घनसार, लगी है टांकी जाकै।
चितर्‌या बदन बनाय, ऐसी पूजा को राखै।। ६७३।।
जल की बूँद जिहान, गर्भ में साज बनाया।
दस द्वारे की देह, नेह से मनुष्य कहाया।। ६७४।।
जठर अग्नि से राखि, सुनियौं साखि धर्मदासा।
तजि पत्थर पाषान, छाडि यह बोदी आशा।। ६७५।।

दोहाः– अनंत कोटि ब्रह्मांड रचि, सब तजि रहै नियार।
जिंद कहैं धर्मदास सूँ, जाका करो विचार।। ६७६।।

जाका करो विचार, सकल जिन सृष्टि रचाई।
वार पार नहीं कोय, बोलता सब घट मांहीं।। ६७७।।
अजर आदि अनादि, समाधि स्वरूप बखाना।
दम देही नहीं तास, अभय पद निर्गुण जान्या।। ६७८।।
सकल सुंनि प्रवान, समान रहे अनरागी।
तुम्हरी चीन्ह न परै, सुनों वैष्णव वैरागी।। ६७६।।
अलख अछेद अभेद, सकल जूनी से न्यारा।
बाहर भीतर ब्रह्म, आश्रम अधरि अधारा।। ६८०।।
अलख अबोल अडोल, संगि साथी नहीं कोई।
परलो कोटि अनंत, पलक में अनगिन होई।। ६८१।।

दोहाः– अजर अमर पद अभय है, अविगत आदि अनादि।
जिंद कहै धर्मदास से, जा घर विद्या न बाद।। ६८२।।

बोलत है धर्मदास, सुनों जिंदे मम वाणी।
कौन तुम्हरी जाति, कहां से आये प्राणी।। ६८३।।
ये अचरज की बात, कहीं तैं मोसे लीला।
नामा कै पीया दूध, पत्थर से करी करीला।। ६८४।।
नरसीला नित नाच, पत्थर के आगे रहते।
जाकी हूंडी झालि, सांवल जो शाह कहंते।। ६८५।।
पत्थर सेये रैदास, दूध जिन बेगि पिलाया।
सुनों जिंद जगदीश, कहां तुम ज्ञान सुनाया।। ६८६।।
परमेश्वर प्रवानि, पत्थर नहीं कहिये जिंदा।
नामा की छांनि छिवाई, दई देखो सर संधा।। ६८७।।

दोहाः– सरगुण सेवा सार है, निर्गुण से नहीं नेह।
सुन जिंदे जगदीश तूं, हम शिक्षा क्या देह।। ६८८।।

बौले जिंद **कबीर,** सुनो वाणी धर्मदासा।
हम खालिक हम खलक, सकल हमरा प्रकाशा।। ६८६।।

हम हीं चंद्र और सूर, हम ही पानी और पवना।
हम ही धरणि आकाश, रहै हम चौदह भुवना।। ६६०।।
हम पाहन पाषान, नदी सब रूप हमारा।
अचराचर चहुँ खानि, बनी विधि अठारह भारा।। ६६१।।
हम ही सृष्टि संयोग, वियोग किया बौह भाँती।
हम ही आदि अनादि, हमै अविगत के नाती।। ६६२।।
हम ही माया मूल, हम ही है ब्रह्म उजागर।
हम ही अधरि बसंत, हम ही है सुख के सागर।। ६६३।।
हम ही ब्रह्मा विष्णु, ईश है कला हमारी।
हम ही पद प्रवानि, कोट कल्प जुग तारी।। ६६४।।

दोहाः-हम साहिब सत्यपुरुष हैं, यह सब रूप हमार।
जिंद कहै धर्मदास से, शब्द सत्य घनसार।। ६६५।।

बोलत हैं धर्मदास, सुनों सर्वंगी देवा।
दीखत पिण्ड अरु प्राण, कहो तुम अलख अभेवा।। ६६६।।
नाद बिंद की देह, शरीर है प्राण तुम्हारे।
तुम बोलत बड़ बात, नहीं आवत दिल म्हारे।। ६६७।।
खान पान अस्थान, देह में बोलत दीशं।
कैसे अलख स्वरूप, भेद कहियो जगदीशं।। ६६८।।
कैसे चंद्र अरु सूर, नदी गिरिवर पाषाना।
कैसे पानी पवन, धरनि पृथ्वी असमाना।। ६६६।।
कैसे सृष्टि संयोग, वियोग करो किस भाँती।
कौन कला करतार, कौन विधि अविगत नाती।। १०००।।

दोहाः-कैसे घटि घटि रम रहे, किस विधि रहो नियार।
कैसे धरती पर चलो, कैसे अधर अधार।। १००१।।

बोलत जिंद अबंध, सकल घट साहिब सोई।
निरवानी निजरूप, सकल से न्यारा होई।। १००२।।
हम ही राम रहीम, करीम कर्म कर्तारा।
हम ही बांधे सेत, चढ़े संग पदम अठारा।। १००३।।
हम ही रावण राम, लंक पर करी चढ़ाई।
हम ही दस सिर मार, देवता बंधि छुटाई।। १००४।।
हम ही सीता सती, जती लक्ष्मण हनुमाना।
हम ही कल्प उठाय, करत हम ही क्षैमाना।। १००५।।
हम बावन बलि रूप, इन्द्र और वरुण कुबेरं।
हम ही है धर्मराय, अदलि कर सृष्टि सुमेंर।। १००६।।

दोहाः- बिंदे धरती पग धरौं, नादे सृष्टि संयोग।

पद अमान न्यारा रहूँ, इस विधि दुनी वियोग।। १००७।।
बोलत है धर्मदास, जिंद जननी को थारी।
कौन पिता प्रवेश, कौन गति रहनि अधारी।। १००८।।
क्यों उतरे कलि मांहि, कहो सब भेद विचारा।
तुम निज पूर्ण ब्रह्म, कहां अन्न पान अहारा।। १००९।।
कौन कुली कर्तार, कौन है वंश बिनांनी।
शब्द रुप सर्वंग, कहां से बोलत वाणी।। १०१०।।
कौन देह सनेह, नयन मुख नासा नेहा।
तुम दीखत हो मनुष्य, कौन विधि जिंद विदेहा।। १०११।।
कौन तुम्हारा धाम, नाम सुमिरन क्या कहिये।
तुम व्यापक कलि मांहि, कहो कहां साहिब रहिये।। १०१२।।
दोहाः–गगन शून्य में रमि रहे, व्यापक सब ही ठौर।
हृदय रहनि हमार है, फूल पान फल मौर।। १०१३।।
जिंद कहै धर्मदास, सुनो सतगुरु की वाणी।
हम ही संत सुजान, हम ही हैं सारंगपाणी।। १०१४।।
ऊँकार मम माय, तास के पुत्र कहावै।
परमात्म पद पिता, दहूँ के मधि रहावै।। १०१५।।
हम उतरे तुम काज, शून्य से किया पयाना।
शब्द रूप धरि देह, समझ वाणी सुर ज्ञाना।। १०१६।।
नहीं नाद नहीं बिंद, नहीं कुछ देह अकारं।
घुडिला ज्ञान अमान, हंस हुकमी असवारं।। १०१७।।
निरखि परखि कर देख, अंग हमरे नहीं काया।
हम उतरे तुम काज, नहीं कछु मोह न माया।। १०१८।।
दोहाः–गगन शून्य में धाम है, अविगत नगर नरेश।
अगम पंथ कोई ना लखै, खोजत शंकर शेष।। १०१९।।
बोलत है धर्मदास, सुनो सतगुरु सैलानी।
निरखि परखि से न्यार, भेद कछु अकल अमानी।। १०२०।।
सुन जिंदे जगदीश, शीश पग चरण तुम्हारे।
पौहमी आसन साज, कहौ तुम अधरि अधारे।। १०२१।।
जूनी जीव दम श्वास, उश्वास कहो क्यों स्वामी।
नहीं जो माया मोह, तो क्यों उतरे घननामी।। १०२२।।
तुम सुख सागर रूप, अनूप जो अधर रहाई।
नहीं पिंड नहीं प्राण, तो कित से बोलै गुसांईं।। १०२३।।
अन्नजल करो अहार, ब्यौहार ब्रह्म की बाता।
निराकार निर्मूल, तुमै दीखे तन गाता।। १०२४।।

दोहाः-सुंन गगन सतगुरु बसै, पृथ्वी आसन थीर।
धर्मदास धोखा दिलं, छानौ नीर अरु षीर।। १०१५।।

हम हैं शब्द स्वरूप, अनूप अनंत अजूनी।
हमरे पिण्ड अरु प्राण, हमें काया मधि मौनी।। १०२६।।
हमरे नाद और बिंद, सिन्ध सरवर सैलाना।
हम गृहचारी पुरुष, हम ही हैं सृष्टि अमाना।। १०२७।।
हम ही सकल सरूप, हम ही पुरुषा और नारी।
हम ही स्वर्ग पताल, ख्याल साहिब संसारी।। १०२८।।
फजल अदल अधिकार, भार हलके कूँ हलका।
छिन में छार उडंत, संत सूभर सर पलका।। १०२९।।
जो धारै सो होय, गोय मंत्र मुसकानी।
कहै जिंद जगदीश, सुनौं तुम धर्म निशानी।। १०३०।।

दोहाः-ना मैं जन्मू ना मरूं, नहीं आऊँ नहीं जांहि।
शब्द बिहंगम शून्य में, ना मेरे धूप न छांहि।। १०३१।।

रमैणी

बोले जिंद सुनो धर्मदासा, हमरे पिण्ड प्राण नहीं श्वासा।
गर्भ योनि में हम नहीं आये, मादर पिदर न जननी जायै।। १०३२।।
शब्द स्वरूपी रूपी हमारा, क्या दिखलावै अचार विचारा।
सत्तरि ब्राह्मण की है हत्या, जो चौका तुम देहो नित्या।। १०३३।।
ब्राह्मण सहंस हत्या जो होई, जल स्नान करत हो सोई।
चौके कर्म कीट मर जांहीं, सूक्ष्म जीव सो दरसैं नाहीं।। १०३४।।
हरी भांति पृथ्वी के रंगा, अनंत कोटि जीव उड़े बिहंगा।
तारक मंत्र कोटि जपाहीं, वाह जीव हत्या उतरे नाहीं।। १०३५।।
पृथ्वी ऊपर पग जो धारै, कोटि जीव एक दिन में मारै।
करै आरती संजम सेवा, या अपराध न उतरै देवा।। १०३६।।
ठाकुर घंटा पवन झकोरै, कोटि जीव सूक्ष्म सिर तोरै।
ताल मृदंग अरु झालन बाजै, कोटि जीव सूक्ष्म तहां साजै।। १०३७।।
धूप दीप और अर्पण अंगा, अनंत कोटि जीव जरै विहंगा।
ऐसे खूंनी ठाकुर थारे, जो दीदार करै को म्हारे।। १०३८।।
स्वामी सेवक बूडत बेरा, मार परै दरगह जम जेरा।
ऐसा ज्ञान अचंभ सुनाऊँ, पूजा अर्पण सबै छुडाऊँ।। १०३९।।
झाड़ा लंघी करत हमेशा, सूक्ष्म जीव होत है नेशा।
खान पान में दमन प्रानी, कैसे पावैं मुक्ति निशानी।। १०४०।।
कोटि जीव जल अचमन प्रानी, यामें शंक शुबा नहीं जानी।

कहो कैसें विधि करो अचारं, त्रिलोकी का तुम सिर भांर।। १०४१।।
रापति सूक्ष्म एक ही अंगा, अल्प जीव जूनी जत संगा।
यौह जत संग अभंगा होई, कहो अचार सधे कहां लोई।। १०४२।।
आत्म जीव हतै जो प्राणी, सो कहां पावै मुक्ति निशानीं।
उरध पींघ जो झूलै भेषा, जिन का कदे न सुलझै लेखा।। १०४३।।
दोहाः- ऐसा ज्ञान सुनाय हूँ, पौहमी धरै न पाँव।
गरीबदास जिंदा कहै, धर्मदास उर भाव।। १०४४।।
झरणे बैठ जलाबिंब धारा, संखौं जीव करत प्रतिहारा।
पंच अग्नि जो धूप ध्याना, जन्म तीसरे शूकर स्वाना।। १०४५।।
बजर दंड कर दम कूँ तोड़े, वहां तो जीव मरत हैं कोड़े।
निसवासर जो धूनी फूकै, तामैं जीव असंखौं सूकै।। १०४६।।
तीरथ बाट चले जो प्राणी, सो तो जन्म जन्म उरझानी।
जाय तीरथ पर कर है दानं, दान देत जीव मरै अरबानं।। १०४७।।
परबी लेन जात है दुनियां, हमारा ज्ञान किन्हे नहीं सुनियां।
गोते गोते पर है भारं, गंगा जमुना गया किदारं।। १०४८।।
लोहागिर पौहकर की आशा, अनंत कोटि जीव होत विनाशा।
पाती तोरि चढ़ावै अंधे, जिन के कदे न कटि है फंदे।। १०४९।।
गंगा काशी गया प्रयागू, बहुरि जाय द्वारा ले दागू।
हरि पैड़ी हरिद्वार हमेशा, ऐसा ज्ञान देत उपदेशा।। १०५०।।
जा गुरुवा की गरदन भारं, जो जीव भरमै अचार विचारं।
पिण्ड पिहोवै बहुतक जांहीं, बदरी बोध सुनों चित लांहीं।। १०५१।।
सरजू कर अस्नान हजूमं, अनंत कोटि जीव घाली घूमं।
पिण्ड प्रधान मुक्ति नहीं होई, भूत जूनि छूटत है लोई।। १०५२।।
दोहाः-भूत जूनि जहां छूटि है, पिण्ड प्रधान करंत।
गरीबदास जिंदा कहै, नहीं मिले भगवंत।। १०५३।।
जगन्नाथ जो दर्सन जाहीं, काली शिला भवन कै माहीं।
वह जगदीश न पावै किसही, जगन्नाथ जो घट घट बसही।। १०५४।।
गोमती और गोदावरी न्हाहीं, अठसठ तीरथ का फल पाहीं।
नहीं पूजे जिन संत सुजाना, जाके मिथ्या सब अस्नाना।। १०५५।।
कोटि यज्ञ अश्वमेध कराहीं, संत चरण रज नांहि तुलाहीं।
कोटि गऊ नित दान जु देहीं, एक पलक संतन परबी लेहीं।। १०५६।।
धूप दीप और योग जुगंता, कोटि ज्ञान क्यों कथहीं मिथ्या।
जिन जान्या नहीं पद का भेऊ, जाके संत न रहे बटेऊ।। १०५७।।
तीरथ ब्रत करै जो प्रानी, तिनकी छूटत है नहीं खानी।
चौदस नौमी द्वादस बरतं, जिन से जम जौंरा नहीं डरतं।। १०५८।।

करै एकादसी संजम सोई, करवा चौथ गदहरी होई।
आठैं सातैं करै कंदूरी, नीच चूहरे के घर सूरी।। १०५६।।
दोहाः-आन धर्म जो मन बसै, कोई करो नर नार।
गरीबदास जिंदा कहै, सो जासी जम द्वार।। १०६०।।
कहै जु करुवा चौथि कहानी, तास गदहरी निश्चय जानी।
दुर्गा देवी भैरव भूता, रात जगावै होय जो पूता।। १०६१।।
करै कड़ाही लपसी नारी, बूडे वंश ताहि घरबारी।
दुर्गा ध्यान परै तिस बगरं, ता संगति बूडे सब नगरं।। १०६२।।
ये सब हमरे ख्याल मुरारी, हम ही नाचै दे दे तारी।
हम ही भैरव खित्र खलीला, आदि अंत सब हमरी लीला।। १०६३।।
हम ही वैष्णव धर्म चलाया, हम ही तीरथ बरत बनाया।
हम ही जप तप संजम शाखा, हम ही चार वेद सत राखा।। १०६४।।
हम ही देवल धाम बनाये, हमै पुजारी पूजन आये।
हम ही नरसिंह हम ही पींर, हम ही तोरैं जम जंजीरं।। १०६५।।
हम ही राजा भूप कहावैं, हम ही माल भरन को जावैं।
हम ही कौंम छत्तीस बनाये, हम ही चार वर्ण सरसाये।। १०६६।।
दोहाः-सकल सृष्टि में रमि रहा, सकल जाति अजाति।
गरीबदास जिंदा कहै, ना मेरे दिवस न राति।। १०६७।।
ना मेरे आदि अंत नही मूलं, ना मेरे पिण्ड प्राण अस्थूलं।
ना मेरे गगन शून्य सैलाना, ना मेरे रचना आवन जाना।। १०६८।।
ना हम योगी ना हम भोगी, ना वीतरागी सृष्टि संयोगी।
नहीं मेरे पवन नहीं मेरे पानी, नहीं मेरे चंद्र सूर रजधानी।। १०६९।।
यौह रंग रास विलास हमारा, हमरी योनि सकल संसारा।
हम ज्ञानी हम चातुर चोरा, हम ही दस सिर का सिर फोर्‍या।। १०७०।।
हम ही ब्रह्मा वेद चुराये, हम बराह रूप धरि आये।
हम हिरणाकुश उदर बिहंडा, नृसिंह रूप गाज नौ खंडा।। १०७१।।
हम प्रहलाद अग्नि में डारे, हम हिरणाकुश उदर बिदारे।
हम प्रहलाद बांधिया खंभा, हम बलि बावन यज्ञ आरंभा।। १०७२।।
हम सुरपति का राज डिगाये, हम ही बलि के द्वारे आये।
हम ही त्रिलोकी सब मापी, तास डरे बलि तन मन कांपी।। १०७३।।
दोहाः-हम नादी वादी विथा, हम निर्गुण निज सार।
गरीबदास जिंदा कहै, सरगुण सृष्टि हमार।। १०७४।।
हम बाहरि हम भीतर बोलै, हम ही अनन्त लोक में डोलै।
हम गृहचारी हम ही उदासी, हम बैरागी हम ही सन्यासी।। १०७५।।
हम ही मुग्ध ज्ञान घनसारा, हम ही करत आचार विचारा।

हम हीं पूजा हम हीं सेवा, हम हीं पाती तोरत देवा।। १०७६।।
हम ही घंटा ताल बजावै, दोखा दोष और किस लावै।
हम ही जड़ जूनी जहड़ाये, हम ही चेतन हो कर आये।। १०७७।।
हम ज्ञानी हम मुग्ध मुवासी, हम ही ख्याल रच्या चौरासी।
हम ही काल कर्म करतारा, हम मारै हम रहै नियारा।। १०७८।।
हम ही दोष अदोष लगावै, हम हीं अनंत लोक भरमावै।
हम गाडन हम फूकन जाहीं, हम नहीं च्यार दाग में आहीं।। १०७९।।
हम रोवैं हम शोक संतापं, हम न मुये जपि अजपा जापं।
हम नहीं कर्मकांड व्यवहारा, हम नहीं पाहन पूज विधारा।। १०८०।।

दोहाः-जल थल जूनी जीव में, सब घट मोहि मुकाम।
च्यार वेद खोजत फिरै, हमरे नाम न गाम।। १०८१।।

हम नहीं नाश काल में आवै, हम नहीं चौहद भुवन रचावै।
कल्प करै एक माया मेरी, सो तो सत्यपुरुष की चेरी।। १०८२।।
ताकी कल्प शरू जो होई, अनंत लोक रचि ताना गोई।
अनंत कोट ब्रह्मांड कटाचं ऐसी कल्प करै मन साचं।। १०८३।।
अनंत कोटि शंकर और ब्रह्मा, नारद शारद और विश्वकर्मा।
कामधेनु कल्पवृक्ष कलावर, एक नाद जहां पंच मुंजाबर।। १०८४।।
छटा मन भैरव भरमाया, पांचौं गैल पच्चीस लगाया।
तास भारिजा लगी अनंतं, कैसे भेटें सतगुरु संतं।। १०८५।।
औह निज रूप निरंतर न्यारा, वस्तु अलप और बहुत पसारा।
वस्तु अलप नहीं पावै भाई, कोटिक ब्रह्मा गये बिलाई।। १०८६।।
कोटिक शंकर गये समूलं, कैसे पावै बिन अस्थूलं।
अधर विदेही अचल अभंगी, सब से न्यारा सब सत्संगी।। १०८७।।

दोहाः- बेचगून चिंतामनं, है निमूंन निर्बान।
गरीबदास जिंदा कहै, अविगत पद प्रवान।। १०८८।।

वेद कतेब न जाको पावै, अठारा पुराण कथा नित गावै।
नहीं वह पुरुष नहीं वह नारी, जाकौ खोज रहे त्रिपुरारी।। १०८९।।
शब्द स्वरूपी सब घट बोलै, प्रगट देख नहीं वह ओलै।
सनक सनंदन ब्रह्मा थाके, अनंत कोटि शंकर पढ़ि भाखे।। १०९०।।
निर्णय किन्हें न कीन्हा भाई, कोटि विष्णु गये दुनी रचाई।
कित से बीज पान फल मोरा, अनंत कोटि जहां बीज बिजौरा।। १०९१।।
वह निर्गुण निहबीज निशानी, अलफ रूप नित रहै अमानी।
कुडंल नाद मुकुट नहीं माला, पद बहुरंगी वर्ण विशाला।। १०९२।।
चतुर्भुजी नहीं अष्ट अनांद, सहंस भुजा कोई जानै साधं।
संख भुजा पर संख समूलं, जाका उर्ध विमानं झूलं।। १०९३।।

नारद शारद महिमा गावै, अलफ रूप कूँ सो नहीं पावे।
अलफ रूप है हमरा अंगा, जहां अनंत कोटि त्रिवैणी गंगा।। १०९४।।
दोहा :- सुरग नरक नहीं मृत्यु है, नहीं लोक बंधान।
गरीबदास जिंदा कहै, शब्द सत्य प्रमाण।। १०९५।।
शब्दे शब्द रहेगा भाई, दुनी सृष्टि सब परलौ जाई।
चलसी कच्छ मच्छ कूरंभा, चलसी धौल धरणि अठखंभा।। १०९६।।
चलसी सुरग पाताल समूलं, चलसी चंद सूर दो फूलं।
जे आरंभ चले धर्मदासा, पिण्ड प्राण चलसी घट श्वासा।। १०९७।।
चले भिस्त बैकुंठ विशालं, चलसी धर्मराय जमशालं।
पानी पवन पृथ्वी नासा, शब्द रहैगा सुनि धर्मदासा।। १०९८।।
इंद्र कुबेर वरुण धर्मराजा, ब्रह्मा विष्णु ईश चलि साजा।
चलै आदि माया ब्रह्मज्ञानी, हम न चलै जो पद प्रवानी।। १०९९।।
अक्षर रूप रहै नहीं कोई, जिन एती लीला रसमोई।
निह अक्षर है रूप हमारा, हम न चलै चलि है संसारा।। ११००।।
जल तरंग जल में मिल जाई, अविगति लहरि लीन पद झांई।
जिंद कहै सुनियों धर्मनागर, लहरि मिलत है सुख के सागर।। ११०१।।
लहरि बीनवौ बान वियोगं, पल पल रूप माया रस भोगं।
वह उदगार नेश होय जाई, सुखसागर में मिलै न भाई।। ११०२।।
दोहा :- अगम अनाहद अधर में, निराकार निज नेश।
गरीबदास जिंदा कहै, सुनों धर्म उपदेश।। ११०३।।
धर्मदास बोलत है वाणी, कौन रूप पद कहां निशानी।
तुम जो अकथ कहानी भाषी, तुमरे आगे तुमही साषी।। ११०४।।
यौह अचरज है लीला स्वामी, मैं नहीं जानत हूँ निजधामी।
कौन रूप पद का प्रवानं, दया करौ मुझ दीजे दानं।। ११०५।।
हम तो तीरथ ब्रत कराहीं, अगम धाम की कछु सुध नांहीं।
गर्भ जोनि में रहै भुलाई, पद प्रतीति नहीं मोहि आई।। ११०६।।
हम तुम दोयकै एकम एका, सुन जिंदा मोहि कहो विवेका।
गुण इन्द्री और प्राण समूलं, इनका कहो कहां अस्थूलं।। ११०७।।
तुम जो बटक बीज कहि दीन्हा, तुमरा ज्ञान हमों नहीं चीना।
हम को चीन्ह न परही जिंदा, कैसे मिटे प्राण दुख दुन्दा।। ११०८।।
ऐसी कल्प करौ गुरुराया, जैसे अंधरे लोचन पाया।
ज्यूं भूखे को भोजन भासै, क्षुध्या मिट है कल्प तिरासै।। ११०९।।
जैसे जल पीवत त्रिस जाई, प्राण सुखी होय तृप्ती पाई।
जैसे निर्धन कूँ धन पावैं, ऐसे सतगुरु कल्प मिटावै।। १११०।।
कैसे पिण्ड प्राण निस्तर हीं, यह गुण ख्याल परख नहीं परहीं।

तुम जो कहो हम पद प्रवानी, हम कैसे जानै सहनानी।। १११११।।
दोहा :- धर्म कहै सुन जिंद तुम, हम पाये दीदार।
गरीबदास नहीं कसर कुछ, उघरे मोक्ष द्वार।। १११२।।
तहां वहां लीन भये निरवाणी, मगन रूप साहिब सैलानी।
तहां वहां रोवत है धर्मनागर, कहां गये तुम सुख के सागर।। १११३।।
अधिक वियोग हुआ हम सेती, जैसे निर्धन की लुटी खेती।
कल्प करै और मन में रोवै, दसौं दिसा को तिस मग जोवै।। १११४।।
हम जाने तुम देह स्वरूपा, हमरी बुद्धि अंध गृह कूपा।
हम तो मनुष्य रुप तुम जान्या, सुन सतगुरु कहां कीन्ह पियाना।। १११५।।
बेग मिलो कर हूँ अपघाता, मैं नाहीं जीऊँ सुनों विधाता।
अगम ज्ञान कुछि मोहि सुनाया, मैं जीऊँ नहीं अविगत राया।। १११६।।
तुम सतगुरु अविगत अधिकारी, मैं नहीं जानी लीला थारी।
तुम अविगत अविनाशी सांईं, फिर मोकूँ कहां मिलो गोसांईं।। १११७।।
दोहा :- कमर कसी धर्मदास कूँ, पूर्व पंथ पयान।
गरीबदास रोवत चले, बांदोगढ़ अस्थान।। १११८।।
जा पौंहचे काशी अस्थाना, मोमन के घर बुनि है ताना।
षट् मास बीते जदि भाई, तहां धर्मदास यज्ञ उपराई।। १११९।।
बांदोगढ़ में यज्ञ आरंभा, तहां षट् दर्शन अधिक अचंभा।
यज्ञ मांहि जगदीश न आये, धर्मदास ढूंढत कल्पाये।। ११२०।।
अनंत भेष टुकड़े के आहारी, भेटे नहीं जिंद व्यौपारी।
तहां धर्मदास कल्प जब कीनं, पलक बीच भेटे प्रवीनं।। ११२१।।
औही जिंदे का बदन शरीरं, बैठे कदम वृक्ष के तीरं।
चरण लिये चिंतामणि पाई, अधिक हेत से कंठ लगाई।। ११२२।।
अजब कुलाहल बोलत वाणी, तुम धर्मदास करो प्रवानीं।
तुम आये बांदोगढ़ स्थाना, तुम कारण हम कीन्ह पयाना।। ११२३।।
अलल पंख ज्यूं मारग मोरा, ता मधि सुरति निरति का डोरा।
ऐसा अगम ज्ञान गोहराऊँ, धर्मदास पद पदहि समाऊँ।। ११२४।।
गुप्त कल्प तुम राखो मोरी, देऊँ मक्रतार की डोरी।
पद प्रवानि करूं धर्मदासा, गुप्त नाम हृदय प्रकाशा।। ११२५।।
हम काशी में रहै हमेशं, मोमन घर ताना प्रवेशं।
भक्ति भाव लोगन को देहीं, जो कोई हमरी सिख बुद्धि लेही।। ११२६।।
अजर करूं अनभै प्रकाशा, खोल कपाट दिये धर्मदासा।
पद विहंग निज मूल लखाया, सर्व लोक एकै दर्साया।। ११२७।।
खुले कपाट घाट घट मांही, संख किरण ज्योति झिलकाहीं।
सकल सृष्टि में देख्या जिंदा, जामन मरण कटे सब फंदा।। ११२८।।

दोहा :- जिंद कहै धर्मदास से, अभय दान तुझ दीन।
गरीबदास नहीं जूनि जग, हुये अभय पद लीन।। ११२६।।

चौपाईः-

चले कबीर मगहर के तांई, तहां वहां फूलन सेज बिछाई।
दोनों दीन अधिक परभाऊ, दोषी दुशमन और सब साऊ।। ११३०।।
तहां बिजली खां चले पठाना, बीर सिंह बघेला पद प्रवाना।
काशी उमटि चली मगहर कूँ, कोई न पावै तास डगर कूँ।। ११३१।।
वैरागी सन्यासी योगी, चले मगहर को शब्द वियोगी।
तीन रोज में पौंहचे जाई, तहां वहां सुमिरन राम खुदाई।। ११३२।।
दहूँ दीन है बाहां जोरी, शस्त्र बांधि लिये भर गोरी।
वै गाडै वै जारन कहीं, दोनू दीन अधिक ही फही।। ११३३।।
तहां कबीर कहीं एक भाषा, शस्त्र करै सो ताहीं तलाका।
शस्त्र करै सो हमरा द्रोही, जा की पैज पिछोड़ी होई।। ११३४।।
सुन बिजली खाँ बात हमारी, हम हैं शब्द रुप निराकारी।
बीर सिंह बघेला विनती कर हैं, हे सतगुरु तुम किस विधि मर है।। ११३५।।
तहां वहां चादर फूल बिछाये, सिज्या छाडी पदहि समाये।
दो चादर दहूँ दीन उठावैं, ताके मध्य कबीर न पावैं।। ११३६।।
तहां वहां अविगत फूल सुवासी, मगहर घोर और चौरा काशी।
अविगत रूप अलख निरवाणी, तहां वहां नीर क्षीर दीया छांनी।। ११३७।।

दोहा :- संख जुगन जुग जगत में, पद प्रवानि है न्यार।
गरीबदास कबीर हरि, अविगत अधरि अधार।। ११३८।।

साखी

गरीब, सील मांहि सर्व लोक हैं, ज्ञान ध्यान वैराग।
योग यज्ञ तप होम नेम, गंगा गया प्रयाग।। ११३९।।
गरीब, संतोष सुरग पाताल सब, और कहां मृत्यु लोक।
फिर पीछे कूँ क्या रहा, जब आया संतोष।। ११४०।।
गरीब, विवेक विहंगम अचल है, आया हृदय मांहि।
भक्ति मुक्ति और ज्ञान गति, फिर पीछै कछु नांहि।। ११४१।।
गरीब, दया सर्व का मूल हैं, क्षमा छिक्या जो होय।
त्रिलोकी को त्यार दे, नाम निरंजन गोय।। ११४२।।
गरीब, दस हजार रापति बली, कामदेव महमन्त।
ता सिर अंकुश शील का, तोरत गज के दंत।। ११४३।।
गरीब, क्रोध बली चंडाल है, बल रापति द्वादस सहंस।
एक पलक में डोबि दे, अनंत कोटि जीव हंस।। ११४४।।

गरीब, ता सिर अंकुश क्षमा का, मारै तुस तुस बीन।
त्रिलोकी से काढि दे, जे होय साधु प्रवीन।। ११४५।।
गरीब, लोभ सदा लहर्‌या रहै, त्रिलोकी में अंछ।
बल रापति बीस सहंस हैं, पलक पलक प्रपंच।। ११४६।।
गरीब, सिर अंकुश संतोष है, त्रिलोकी से काढि।
काटै कोटि कटक दल, संतोष तेग बड़ बाढ़।। ११४७।।
गरीब, मोह मुवासी मस्त है, बल रापति तीस सहंस।
त्रिलोकी परिवार है, जहां उपजै तहां वंश।। ११४८।।
गरीब, सिर अंकुश विवेक है, पूर्ण करै मुराद।
त्रिलोकी की वासना, ले विवेक सब साधि।। ११४६।।
गरीब, सरजू सिरजनहार है, जल न्हाये क्या होय।
भक्ति बली रघुनाथ की, नाम बीज दिल बोय।। ११५०।।
गरीब, ये वैरागर छिप रहे, हृदय कमल के मांहि।
नघ पत्थर एक ठौर हैं, बीनै जिस बलि जांहि।। ११५१।।
गरीब, मन को मुरजीवा करै, गोता दिल दरियाव।
माणिक भरे समुंद्र में, बाहिर लेकै आव।। ११५२।।
गरीब, वैरागर के गंज हैं, ऊंचे शून्य सुमेर।
ता पर आसन मार कर, सुन मुरली की टेर।। ११५३।।
गरीब, बाजे मुरली कौहक पद, बिना कण्ठ मुख द्वार।
आठ बखत सुनता रहै, सुनि अनहद झनकार।। ११५४।।
गरीब, उस मुरली की लहरि से, कहर जरै ज्यों घास।
आठ बखत पद में रहै, कोई जन हरि के दास।। ११५५।।
गरीब, मुरली मधुर अधर बजै, राग छत्तीसौं बैंन।
इत उत मुरली एक है, चरनां विसरी धैंन।। ११५६।।
गरीब, मुरली उरली विधि नहीं, बाजत है परलोक।
सर्व जीव अचराचरं, सुनि कर पाया पोष।। ११५७।।
गरीब, मुरली मदन मुरार मुख, बाजी नन्द द्वार।
सकल जीव ल्यौलीन गति, उधरे गोपी ग्वाल।। ११५८।।
गरीब, बाजत मुरली मुख बिना, सुनियत बिन ही कान।
स्वर्ग सलहली गर्ज धुन, अविगत पद निर्वाण।। ११५६।।
गरीब, मोहन की मुरली बजै, मोहन मुरली एक।
ताल ख्याल नहीं भंग होय, बाजे बजैं अनेक।। ११६०।।
गरीब, अनंत कोटि बाजे बजैं, ता मधि मुरली टेर।
रनसींगे सहनाईया, झालरि झांझर भेर।। ११६१।।
गरीब, बजै नफीरी शून्य में, घट मठ नहीं आकाश।

सो जन भिन्न भिन्न सुनत है, जो लीन करैं दम श्वास।। ११६२।।
गरीब, मुरली गगन गर्ज धुनि, जहां चन्द्र नहीं सूर।
नाद अगाध घुरे जहां, बाजत अनहद तूर।। ११६३।।
गरीब, तूर दूर नहीं निकट हैं, तन मन कर ले नेश।
मुरली के मोहे पड़े, ब्रह्मा शंकर शेष।। ११६४।।
गरीब, शेष सुनी शंकर सुनी, ब्रह्मा सुनी एक रिंच।
मन मोहन कूँ मोहिया, और भू आत्म पंच।। ११६५।।
गरीब, मुरली सरली सुरति सर, जिन सरवर तूं न्हाय।
अनंत कोटि तीरथ बगै, परवी द्यौं समझाय।। ११६६।।
गरीब, मुरली अगम अगाध गति, शिव विरंच सुर दीन।
उस मुरली की टेर सुन, नारद डारी बीन।। ११६७।।
गरीब, नारद शारद सब थके, सनक सनन्दन संत।
अनंत कोटि जुग कल्प क्या, बाजत हैं बेअंत।। ११६८।।
गरीब, मधुरी मूर्ति सोहनी, पीतांबर पहिरांन।
मुरली जाके मुख बजै, दर दिवाल गलतांन।। ११६९।।
गरीब, सूक्ष्म मूर्ति स्वर्ग में, छत्र सेत सिर शीश।
बाहर भीतर खेलता, वह अविगत जगदीश।। ११७०।।
गरीब, भिरंग नाद अगाध गति, राग रूप होय जात।
नूर नूर में मिल गया, पिण्ड प्राण सब गात।। ११७१।।
गरीब, उस मुरली की टेर सुनि, फेर धरत नहीं जूंनि।
आसन गगन औजूद बिन, विचरत शून्य बेसुंनि।। ११७२।।
गरीब, बिन शाखा फूले फलै, बिना मूल महकंत।
बिना घटा लखि दामनी, बिन बादल गरजंत।। ११७३।।
गरीब, दिल्ली अकबराबाद फिर, लाहौरा कूँ जात।
रोटी रोटी करत हैं, किन्हें न बूझी बात।। ११७४।।
गरीब, तिबरलंग तालिब मिले, एक रोटी की चाह।
जिंदा दुमें घेर हीं, तिबरलंग सुनि माय।। ११७५।।
गरीब, रोटी पोई प्रीत से, जल का टूठा हाथ।
जिंदे की पूजा करी, मात पुत्र दो साथ।। ११७६।।
गरीब, संकल काढी चीढ की, सन्मुख लाई सात।
लात धमूक्के लाय कर, जिंदा भया अजाति।। ११७७।।
गरीब, रोटी मोटी हो गई, साग पत्र विस्तार।
सहंस अठासी छिक गये, पंडो जगि जौंनार।। ११७८।।
गरीब, दुर्वासा पूठे परे, कौरव दीन शराप।
पंडो पद ल्यौलीन हैं, कौरव तीनौं ताप।। ११७९।।

गरीब, अठारह खूंहनि खपि गई, दुर्योधन बलवंत।
पंडौं संग समीप हैं, आदि अंत के संत।। ११८०।।
गरीब, तिबरलंग हुम्यौं रहै, मन में कछु न चाह।
मौज मेहर मौला करी, दीन्हा तख्त बैठाय।। ११८१।।
गरीब, हिंद जिंद सब ही दई, सेतबंध लग सीर।
गढ़गजनी ताबे करी, जिंदा इसम कबीर।। ११८२।।
गरीब, सात सहीसल नीसली, पीछै डिगमग ख्याल।
नौरंगजेब अरु तिबरलंग, इन पर नजरि निहाल।। ११८३।।
गरीब, अगले सतगुरु शेर थे, पिछले जंबुक गीद।
यामे भिन्न न भांति है, देख दीद बरदीद।। ११८४।।
गरीब, पिछला टांका रहि गया, उतर्या हुकम हजूम।
तिबरलंग कहो कौन है, आये मौलवी रूम।। ११८५।।
गरीब, गाडा अटक्या कीच में, ऊपर बैठे तुम।
बेलनहारा राम है, धोरी आप धर्म।। ११८६।।
गरीब, धर्म धसकत है नहीं, धसकैं तीनूं लोक।
खैरायत में खैर है, कीजे आत्म पोष।। ११८७।।
गरीब, धर्म बिना ऐसा नरा, जैसी बंझा रांड।
बिन दीन्हा पावै नहीं, चाटै चाकी ग्रांड।। ११८८।।
गरीब, साधु संत सेये नहीं, करी न अन्न की साट।
कुतका बैठया कमरि में, बिचतें पाटी राठ।। ११८९।।
गरीब, धर्म बिना धापै नहीं, यौह प्रानी प्रपंच।
आश बिरानी क्यूं करै, दीन्हा होय तो संच।। ११९०।।
गरीब, धर्म किया बलिराय कों, ठानी इकोतरि जगि।
तहां बावन अवतार धरि, लिये समूचे ठगि।। ११९१।।
गरीब, कंपे स्वर्ग समूल सब, ऐसी यज्ञ आरंभ।
आसन सुरपति के डिगे, पान अपानं संभ।। ११९२।।
गरीब, हवन किये हरि हेत से, जप तप संयम साध।
बलि के बावन आईया, देख्या अगम अगाध।। ११९३।।
गरीब, एक यज्ञ है धर्म की, दूजी यज्ञ है ज्ञान।
तीजी यज्ञ है हवन की, चौथी यज्ञ प्रणाम।। ११९४।।
गरीब, च्यार वेद का मूल सुनि, सुषम वेद संगीत।
बलि को ये चारौं करी, बावन उतरे प्रीति।। ११९५।।
गरीब, अमर किये आसन दिये, सिंहासन सुरपति।
ऐसी जगि जगदीश की, ताहि मानियौं सत्त।। ११९६।।
गरीब, दान किये देही मिलै, नर स्वरूप निरबान।

बूक बाकला देत हीं, चकवै भये निशान।। ११९७।।
गरीब, नाम सरीखा दान है, दान सरीखा नाम।
सुंनही को भोजन दिया, तीन छिके बलिजांव।। ११९८।।
गरीब, बुढ़िया और बाजीद जी, सुंनही के आनंद।
रोटी चारौं मुक्ति हैं, कटैं गले के फंद।। ११९९।।
गरीब, राजा की बांदी होती, रोटी देत हमेश।
चक्र भये हैं दहूँ दिसा, जीते जंग नरेश।। १२००।।
गरीब, इंद्र भये हैं धर्म से, यज्ञ हैं आदि जुगादि।
संख पंचायन जदि बजे, पंच गिरासी साध।। १२०१।।
गरीब, सुपच शंक सब करत हैं, नीच जाति बिश चूक।
पौहमी बिगसी स्वर्ग सब, खिले तो पर्वत रूख।। १२०२।।
गरीब, कंनि कंनि बाज्या सब सुन्या, पंच टेर क्यों दीन।
द्रौपदी के दुर्भाव हैं, तास भये मुसकीन।। १२०३।।
गरीब, करि द्रौपदी दिल मंजना, सुपच चरण पी धोय।
बाजे शंख सर्व कला, रहे अवाजं गोय।। १२०४।।
गरीब, द्रौपदी चरणामृत लिये, सुपच शंक नहीं कीन।
बाज्या शंख असंख धुनि, गण गंधर्व ल्यौलीन।। १२०५।।
गरीब, सुनी शंख की टेर जिन, हृदय भाव विश्वास।
जूनी संकट ना परै, होसी गर्भ न त्रास।। १२०६।।
गरीब, दान अभै पद अजर है, नहीं दुई दुर्भाव।
जगि करी बलिराय कूँ, बावन लिये बुलाव।। १२०७।।
गरीब, दिया दान दधीचि को, पांसू धनक ध्यान।
तेतीसौं कुरनसि करे, हो गये पद प्रवान।। १२०८।।
गरीब, दान वित्त समान हैं, टोपी कोपी टूक।
या से लघु क्या और है, साग पत्र गई भूख।। १२०९।।
गरीब, पीतांबर कूँ पाड़ कर, द्रौपदी दीन्ही लीर।
अंधे कूँ कोपीन कसि, धनी बधाये चीर।। १२१०।।
गरीब, देना जग में खूब है, दान ज्ञान प्रवेश।
ब्रह्मा कूँ तो यज्ञ करी, बतलाई है शेष।। १२११।।
गरीब, दान ज्ञान ब्रह्मा दिया, सकल सृष्टि के माहि।
सूंम डूंम मांगत फिरै, जिन कुछ दीन्हा नांहि।। १२१२।।
गरीब, दान ज्ञान प्रणाम करि, होम जो हरि के हेत।
यज्ञ पंचमी तुझ कहूँ, ध्यान कमल सुर सेत।। १२१३।।
गरीब, धर्म कर्म जगि कीजिये, कूवें बाय तलाव।
इच्छा अस्तल सुगल सुर, सो पृथ्वी का राव।। १२१४।।

गरीब, भूख्यां भोजन देत हैं, कर्म यज्ञ जौंनार।
सो गज फीलों चढ़त हैं, पालक कंध कहार।। १२१५।।
गरीब, कूवें बाय तलावड़ी, बाग बगीचे फूल।
इंद्रलोक गन कीजिये, परी हिंडोंलौं झूल।। १२१६।।
गरीब, जती सती इंद्री दमन, बिन इच्छा बाटंत।
कामधेनु कल्पवृक्ष पद, तास बार दूझंत।। १२१७।।
गरीब, स्वर्ग नंदिनी दर बंधै, बिन इच्छा जौंनार।
गण गंधर्व और मुनिजन, तीन लोक अधिकार।। १२१८।।
गरीब, पतिव्रता नारी घरों, आन पुरुष नहीं नेह।
अपने पति की बंदगी, दुर्लभ दर्सन येह।। १२१९।।
गरीब, माता मुक्ति सुनीति सी, मैनासी पुरकार।
फकर फरीद फिकर लग्या, कूप कल्प दीदार।। १२२०।।
गरीब, ऐसी जननी मात सत्य, पुत्र देत उपदेश।
सकल रांड व्याभिचारिणी, यौं भाखत हैं शेष।। १२२१।।
गरीब, समुंद्र तो नघ देत है, इन्द्र देत है स्वांति।
नारी पुत्र देत है, ध्रुव के सी लग मांति।। १२२२।।
गरीब, सात धात पृथ्वी दई, सात अन्न प्रवीन।
वृक्षा नदियौं फल दिये, यौ नर मूढ़ कुलीन।। १२२३।।
गरीब, जिन पुत्र नहीं जगि करी, पिण्ड प्रधान पुरान।
नाहक जग में अवतरे, जिन से नीका श्वान।। १२२४।।
गरीब, बिना धर्म क्या पाईये, चौदह भुवन विचार।
चमरा चूक्या चाकरी, स्वर्ग हूँ में बेगार।। १२२५।।
गरीब, स्वर्ग स्वर्ग सब जीव कहैं, स्वर्ग मांहि बड़ दुःख।
जहां चौरासी कुंड हैं, थंभ बलैं ज्यूं लुक।। १२२६।।
गरीब, कुंड पर्‌या निकसै नहीं, स्वर्ग न चितवन कीन।
धर्मराय के धाम में, मार अधिक बेदीन।। १२२७।।
गरीब, करि साहिब की बंदगी, सुमिरन कल्प कबीर।
जम के मस्तक पांव दे, जाय मिलै धर्मधीर।। १२२८।।
गरीब, धर्मधीर जहां पुरुष हैं, ताकी कल्प कबीर।
सकल प्रान में रमि रह्या, सब पीरन सिर पीर।। १२२९।।
गरीब, धर्म धजा फरकंत हैं, तीनौं लोक तलाक।
पापी चुनि चुनि मारिये, मुख में दे दे राख।। १२३०।।
गरीब, पापी के परदा नहीं, शिव पर कल्प करंत।
माता कूँ घरणी कहै, भस्मागिर भसमंत।। १२३१।।
गरीब, भसम हुये अप कल्प से, शिव कूँ कछु न कीन।

इस दुनियां संसार में, कर्म भये ल्यौलीन।। १२३२।।
गरीब, जिन्हौं दान दत्तब किया, तिन पाई सब रिद्ध।
बिना दान व्याघ्र भये, तास पजाबै गद्ध।। १२३३।।
गरीब, कर दीन्हे कुरबांन जां, नयन नाक मुख द्वार।
पीछे कुछ राख्या नहीं, नर माणिक अवतार।। १२३४।।
गरीब, दान दया दरवेश दिल, बैराट फटक जो दिल।
दानी ज्ञानी निपज हीं, सूंम सदा ज्यूं सिल।। १२३५।।
गरीब, सूंम सुसर से साख क्या, हनिये छाती तोर।
अस्सी गंज बांटे नहीं, कीन्हे गारत गोर।। १२३६।।
गरीब, हरिचंद ऐसी यज्ञ करी, राजपाट स्यूं देह।
संग ही तारा लोचनी, काशी नगर विकेह।। १२३७।।
गरीब, मरघट का मंगता किया, मुर्द पीर चिंडाल।
डायन तारा लोचनी, राजा पुत्र काल।। १२३८।।
गरीब, उस डायन कूँ तोरि है, हरिचंद हाथ खड्ग।
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, ऐसी और न यज्ञ।। १२३९।।
गरीब, मोरध्वज मेला किया, यज्ञ आये जगदीश।
ताम्रध्वज आरा धर्‌या, अर्पण कीन्हा शीश।। १२४०।।
गरीब, अंबरीष आनंद में, यज्ञ रूप सब अंग।
दुर्वासा कूँ दव नहीं, चक्र सुदर्सन संग।। १२४१।।
गरीब, राजा अधिक पुरूरवा, होम दई जिन देह।
तीन लोक साका भया, अमर अभय पद नेह।। १२४२।।
गरीब, मरुत यज्ञ अधकी करी, पृथ्वी सर्वस दान।
अनंत कोटि राजा गये, पद चीन्हत प्रवान।। १२४३।।
गरीब, नगर पुरी भदरावती, जोबनाथ का राज।
श्यामकर्ण जिस के बंध्या, खूंहनि अनगिन साज।। १२४४।।
गरीब, गये भीम जहां भारथी, श्याम कर्ण को लैंन।
भारथ कर घोरा लिया, तास यज्ञ तहां दैंन।। १२४५।।
गरीब, गोरख योग और यज्ञ करी, तत्तवेता तरबीत।
सतगुरु से भेटा भया, हो गये शब्दातीत।। १२४६।।
गरीब, सेऊ संमन यज्ञ करी, शीश भेंट कर दीन।
सतगुरु मिले कबीर से, शीश चढ़े फिर सीन।। १२४७।।
गरीब, कबीर यज्ञ जैसी करी, ऐसी करै न कोय।
नौलख बोडी बिस्तरी, केशव केशव होय।। १२४८।।
गरीब, यज्ञ करी रैदास कूँ, धरे सात सै रूप।
कनक जनेऊ काढिया, पातशाह जहां भूप।। १२४९।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, तुलाधार कूँ यज्ञ करी, नामदेव प्रवान।
पलरे में सब चढ़ि गये, ऊठ्या नहीं अमान।। १२५०।।
गरीब, पीपा तो पद में मिल्या, कीन्ही यज्ञ अनेक।
बुझ्या चंदोवा वेग ही, अविगत सत्य अलेख।। १२५१।।
गरीब, तिबरलंग तो यज्ञ करी, एक रोटी रस रीति।
बिन दीन्ही नहीं पाईये, दान ज्ञान से प्रीति।। १२५२।।

अथ शूरातन का अंग

गरीब, धौंसे बाजे ध्यान में, अनहद भई टकोर।
शूरे सावंत किलकिलैं, कायरियां मुख मोर।। १।।
गरीब, गगन गरजे धरहरे, पौहमी पंख पसार।
शूरे सन्मुख खेत में, सांईं के दरबार।। २।।
गरीब, गगन गरजे नाद भरि, दामनि लोर उठंत।
जैसे भर भादौं झड़ी, शूरे खेत जुटंत।। ३।।
गरीब, किलक पड़ी कलुवा जग्या, भैंरों भूमि बुहार।
योगनि खपर लिये खड़ी, जब चमकी तरवार।। ४।।
गरीब, बहैं बढाली तनों परि, शूर्यौं के नहीं शंक।
कायर भागे देख करि, छाडे खेत अचंक।। ५।।
गरीब, सार झड़ै लोहा लड़ै, शूरे कटैं हमीर।
चौसठि योगनि खेत में, उतरे बावन बीर।। ६।।
गरीब, शूरा खेत न छांड ही, मात पिता कुल लाज।
कायर चिड़िया ज्यूं उड़ै, जब वन देखै बाज।। ७।।
गरीब, माथौं से माथे मिले, मिले नैंन से नैंन।
छाती से छाती मिली, योगनि बोलै बैंन।। ८।।
गरीब, मिसरी माथौं पर बहै, केशरिया कम धज।
योगनि सिर पर डार है, शूर पगौं की रज।। ९।।
गरीब, फूल माल लिये खड़ी, षोंडश वर्ष की नार।
मंगल गावैं योगनी, जब चमकी तरवार।। १०।।
गरीब, इहां बधाई स्वर्ग सुख, गगन मंडल कूँ सैल।
दस हजार वर्षों विचरि, कहूँ न लागै मैल।। ११।।
गरीब, तन मन धरका खात है, पीठ फिरन कूँ जीव।
दौहूँ ठौर जागा नहीं, जब दिल आई शीव।। १२।।
गरीब, टाला परले ओर है, दुर्जन वचन विलास।
वार पार बाणौं बिंधे, जब दम रुकि है श्वास।। १३।।
गरीब, नासौं लग सरवर भरे, वचन बान गुंगान।

शूरों भिडनां योग है, जब तन देवै प्राण।। १४।।
गरीब, सिकबंधी साके करैं, सावंत शूर सुभान।
हया हली मीना तजैं, जिनके ध्यान अमान।। १५।।
गरीब, कायर कंकण बांध हीं, केसरिया कर लेह।
शूरा भिड़िक न बोल हीं, खेत चढ़ै सिर देह।। १६।।
गरीब, शूर सिंह और साधु को, कैसा पारख साथ।
दूजे को ठाहर नहीं, जिन के एकै बात।। १७।।
गरीब, शूरा बेध्या शूरतन, सिंह वचन पुरकार।
साधू राते राम सूं, कायर को दरकार।। १८।।
गरीब, साधु सती और शूरमा, जती सिंह प्रवीन।
इन पांचौं के एकता, और जगत कुलहीन।। १९।।
गरीब, उजन बंध आदर करैं, क्षमा दया दरबार।
शील संतोष विवेक मुख, जिनकै कैसी हार।। २०।।
गरीब, कम धज कूटैं कटक कूँ, मरदानें महमंत।
अविगत के दरबार में, लटका कर हैं संत।। २१।।
गरीब, चातुर चोर कठोर है, लंगड़े भडुवे लोग।
शूर संत कूँ ना लखै, लग्या राज बड़ रोग।। २२।।
गरीब, मुकित मोरचा ले रहै, साधु अगाध अमान।
शूरा सीढ़ी स्वर्ग की, चढ़ै तेग के तांन।। २३।।
गरीब, निर्गुण रासा रंग है, हेम भूमि परलोक।
पलकों चौंर ढुरावहीं, फिर क्या चाहै मोख।। २४।।
गरीब, नाद बिंद तन मन नहीं, नहीं पिंड नहीं प्राण।
झिलमिल झिलमिल होत है, एकै नूर सुभान।। २५।।
गरीब, शूरौं के तो सुगल है, रण खंभ गडे रंगील।
रापति कोटि कटक में, गरजि उठावै फील।। २६।।
गरीब, रावण राम है शूरमा, द्वादस वर्ष जुटंत।
प्रलय पल पल होत है, काटै नहीं कटंत।। २७।।
गरीब, मेघनाद से भारथी, चौदह तबक तिरास।
इन्द्र वरुण जम बांधिया, पौंहचे वासुकी पास।। २८।।
गरीब, शस्त्र विद्यासार है, तेतीसौं पर तेज।
पकरि कुबेर पौहपक लिया, शिव की सेवा रेज।। २९।।
गरीब, मेघनाद मग रोक कर, कूटे कटक अनन्त।
कूदे फांदे दलो में, कहां करै हनुमंत।। ३०।।
गरीब, रावण रण में शूर है, दूजे लक्ष्मण राम।
कुंभकर्ण करुणामयी, चलते वारै प्रान।। ३१।।

गरीब, अंगद आगम मुक्ति का, चरण शिला दई फेर।
पंच क्रोड़ि दानें जहां, फिरै शिला के फेर।। ३२।।
गरीब, अंगद और नल नील है, जाम्बवान जगदीश।
सारंग बाणौं बिधि गये, कहां करै अब ईश।। ३३।।
गरीब, त्रिलोकी में तन धरैं, चन्द्र सूर मुख मांहि।
ऐसे रघुवर राम हैं, जिन सूं कहा बसांहि।। ३४।।
गरीब, मुगद नरा जानैं नहीं, कला कलंदर खेल।
संख शूर सावंत खपे, पड़ी हेल सिर हेल।। ३५।।
गरीब, ऐसा शूरा कौन है, जैसा शूरा राम।
रावण मार्‍या खेत में, सबै सुधारे काम।। ३६।।
गरीब, सीता सती लक्ष्मण यती, रावण शूर सुभट।
जिनकी सरवर को करै, जिनके चरणौं अठ।। ३७।।
गरीब, सावंत शूर अनंत है, चकवे और मंडलीक।
नारि मंदोदरि पचि रही, एक न मानी सीख।। ३८।।
गरीब, किन्नर कमंद असंख्य थे, रावण के दल बीच।
बनचर चढ़े लंगूरिया, कोटि बहत्तरि रीछ।। ३९।।
गरीब, स्वर्ग भिस्त के देवता, आये रण कै मांहि।
दई लेख टलते नहीं, प्रलय होय होय जांहि।। ४०।।
गरीब, शूरे स्वर्ग पताल में, मृत्यु लोक लख कोट।
और शूर समान हैं, राम रावण की चोट।। ४१।।
गरीब, शूरे झूझै दसौं दिसा, शस्त्र विद्या बीन।
बलि का कुंडल ना उठ्या रावण भये अधीन।। ४२।।
गरीब, रावण गये युद्ध करन कूँ, सात समुंद्र फांद।
सहस्रबाहु की स्त्री, दीन्हा चरखे बांध।। ४३।।
गरीब, द्वादस वर्ष झूलैं तहां, संकट परे पिरांन।
दासी हांसी कर रही, फिर तहां दीन्हा जान।। ४४।।
गरीब, रावण अर्घ में आ गया, बालि करत स्नान।
दिया अडूसा कमरि में, शब्द लगाये ध्यान।। ४५।।
गरीब, ऐसा शूरा शर तले, रामचंद्र का तीर।
सात ताड़ में बेधिया, मारे हठी हमीर।। ४६।।
गरीब, बदला कहीं न जात है, चार जुगन के मांहि।
बालि सही भये बालिया, पदम बान लगि पांहि।। ४७।।
गरीब, नादी बादी पारखू, शूरे सुभट अनेक।
दानी ज्ञानी बहुत हैं, हरि भक्ता कोई एक।। ४८।।
गरीब, शूरा शूरा क्या करैं, शूरे संख असंख।

हरि भक्ता रज चरण की, धूर रमाऊँ नंक।। ४६।।
गरीब, धन्य शूरे की माय कूँ, जिन जाया रणधीर।
दासी भक्ता माय की, लाख जन्म तपतीर।। ५०।।
गरीब, हरि भक्ता की माय कूँ, तीन लोक कुरबान।
संत नहीं तिस लोक में, कारज कौन जिहान।। ५१।।
गरीब, हरि भक्ता उपजे बिना, तीनों लोक उदांन।
संगति साक्षीभूत हैं, मिसरी चाहै म्यांन।। ५२।।
गरीब, ध्रुव का ध्यान अमान है, माता के उपदेश।
नारद मुनि सतगुरु मिले, शब्द सिंधु प्रवेश।। ५३।।
गरीब, प्रहलाद भक्त परचै भया, हिरनाकुश के पास।
अमर कछ जुग जुग भये, सोहं दृढ़ विश्वास।। ५४।।
गरीब, शूर सती तो स्वर्ग में, पौंहचे बहुत अनेक।
फिर आये संसार में, धरि धरि नाना भेष।। ५५।।
गरीब, शूर सती तो स्वर्ग में, पौंहचे कोटि अनन्त।
झीना मारग मीन मग, उतरे साधु संत।। ५६।।
गरीब, बाजे तूरा ज्ञान का, सत का सेल उठाय।
मिसरी बांधौ शील की, दुर्जन मार्‌या जाय।। ५७।।
गरीब, काम कटारी पेश कसि, दृढ़ की ढाल समंझ।
धनक ध्यान दुरबीन धरि, दुर्जन शकै न गंज।। ५८।।
गरीब, बख्तर पहरि विवेक का, खैबर बाण विहंग।
खेत चढ़े खाली नहीं, चोट लगै जे तंग।। ५६।।
गरीब, बुद्धि की हाथ बन्दूक ले, चित्त चकमक चमकाय।
दम की दारू साज में, गुणी ज्ञान जगाय।। ६०।।
गरीब, सुरति शोकता लाईले, प्याला प्रेम प्रीत।
गोला गलत चलाय कै, बेध्या शब्द अतीत।। ६१।।
गरीब, शूरे जग में संत है, और न शूरा कोय।
अटल पट्‌टे की चाकरी, बहुरि न आवन होय।। ६२।।
गरीब, द्वादस कोटि से जंग है, जम के कटक कुलीन।
मुख तो जिन के शूर है, आदम देह वेदीन।। ६३।।
गरीब, चौहद कोटि भयंकरं, चौदह असलि दिवान।
चित्रगुप्त लिखदार है, कलम बंध प्रवान।। ६४।।
गरीब, धन्य जननी तिस संत की, जम की मोड़ै धाड़।
कुरबानी कूरबान जां, जम किंकर से राड़।। ६५।।
गरीब, मुरली बाजै मुक्ति फल, तुरही तूर असंख।
सहनाई और भेरी सुर, राम चढ़े ज्यूं लंक।। ६६।।

गरीब, झंझर बाजे बजत हैं, लहरि लफीरी लील।
बिरहा जाग्या गाज सुनि, आंनि पलान्या फील।। ६७।।
गरीब, घंटा बाजे दलौं में, महमंता घूंमत।
साधू जन शूरे कछै, तोरन जम के दंत।। ६८।।
गरीब, तिस जननी कुरबान है, जम पर बीड़ा खाय।
दुनियां रौले मरि गई, जिनको कथै बलाय।। ६९।।
गरीब, ऐसी तेग चलाईये, सप्तपुरी पर गाज।
अटल पट्टा जागीर होय, भक्त वत्सल का राज।। ७०।।
गरीब, जम किंकर की धाड़ि को, मारि लिये दहूँ दीन।
षट् दर्शन तो खा लिये, जैसे गूदा मीन।। ७१।।
गरीब, जम किंकर के जुलम को, जग में ओटै कौन।
शूरे सतगुरु संत हैं, कंपे चौदह भौंन।। ७२।।
गरीब, देश परगणे लूटि लें, करैं उचाल कुचाल।
चौदह तबक त्रास है, देखो जौंरा काल।। ७३।।
गरीब, धन्य जननी तिस संत की, जम पर बाहै बांन।
चंद्र सूर साक्षी जहां, गावै सकल जिहांन।। ७४।।
गरीब, जबर जंग और सतरि लाल, तोप रहकले तीर।
हसत नाल हथियार से, बिंधते नहीं शरीर।। ७५।।
गरीब, मौला बैठे मोरचे, देखे जन का भेड़।
जम तो द्वादस कोटि है, इहां एक नाम की खेड़।। ७६।।
गरीब, हर हर हर हर होत है, ररंकार उच्चार।
तुंही तुंही के बाण भरि, सत सुमिरन हथियार।। ७७।।
गरीब, नाम नगारा बाजिया, ध्वजा फरकी सेत।
पचरंग झंडे आ गडे, जब जम छाड्या खेत।। ७८।।
गरीब, ढोल दमांमें दुड़बड़ी, डफड़ी डंके लाय।
अलगोजे अनहद पुरी, बाजन लागे माय।। ७९।।
गरीब, मिसरी झलके सुंनि में, ज्यूं दामिनी दमके खाय।
बिना मूंठि की मार है, घायल होय होय जाय।। ८०।।
गरीब, घायल घूमैं खेत में, कोटयौं परे बिहंड।
सिर धड़ की क्या खबर है, देखे रुंडक मुंड।। ८१।।
गरीब, वाणी कारण जानिये, अजब रंगीला खेत।
क्रुंजी कुहके गगन में, उज्जल भौंरा सेत।। ८२।।
गरीब, कुंजड़ियां कुरलाईयां, कोयलड़ी कौहकंत।
मोरा मंदिर बोल हीं, बिन ही फाग बसंत।। ८३।।
गरीब, शंख झुझाऊँ बाजहीं, नौबत नगर हमार।

शीश कटैगा खेत में, जब पावै दीदार।। ८४।।
गरीब, दुंद दहे नहीं रोईये, देख ईद का चाँद।
ये शूरे किस काम के, जो झूझै जम धड़ बांध।। ८५।।
गरीब, धौंकल पड़ी ध्यान में, काम क्रोध दल सैंन।
लोभ मोह के लश्करं, एक पलीती चैंन।। ८६।।
गरीब, संगर सुरति बनाय करि, एक पलीती दाग।
नभ नगरी में पैठ करि, फिर गगन मंडल में जाग।। ८७।।
गरीब, जय जय जय जय होत है, खेत चढ़े खति हांन।
मिसरी मानस जित नहीं, ऐसा औह अस्थान।। ८८।।
गरीब, कुरली पड़ी करूर भूमि, जय जय जय जय होय।
अंबर गरजै ऋतु बिना, दामनि दमकै लोय।। ८९।।
गरीब, तारे टूटैं सुंन में, टूटैं सूरज चन्द।
शूरे झूझें खेत में, राड़ि पड़ी बिन दुंद।। ९०।।
गरीब, घोरारंभ असंभ गति, गुरज मार गुप्तार।
हौदे से हौदा मिल्या, परै फील असवार।। ९१।।
गरीब, पैर पियादा हूजिये, सुनि सतगुरु की सीख।
हारि जीत है आंगुलां, जे धरि उलटी बीक।। ९२।।
गरीब, उलटी बीक न चलिये, खेत चढ़े से सूर।
द्वादस उलटा खैंचिये, जब मुख रहसी नूर।। ९३।।
गरीब, आरा धरै करौत सिर, पूर्व जन्म के काज।
इन्द्री अस्तल झूठ पुर, धरि सतगुरु का साज।। ९४।।
गरीब, सांवत शक्ति न चाहिये, शूरों कैसा साथ।
सतियों कैसे मीहनें, दानी ऊपर हाथ।। ९५।।
गरीब, शूर सरे में जाय करि, नीका बोलै बोल।
भिड़े महावत काज किस, जो खाली चहंडोल।। ९६।।
गरीब, चिंतामणि चहंडोल है, पदम जड़ाऊ ऐंन।
बिन देखे क्या जानिये, देखे ही सुख चैंन।। ९७।।
गरीब, लख बर शूरा झूझ हीं, लख बर सावंत देह।
लख बर यती जिहांन में, जब सतगुरु संगति लेह।। ९८।।
गरीब, शिखर सुंनि में सैल है, पौहचेंगे सुर बंध।
शूरे सतगुरु संत हैं, लावैं सुरति कमंद।। ९९।।
गरीब, चिनघी चमकी चौहटे, चखमख चेतन लाग।
प्रेम पवन बारीक है, घट में प्रगटी आग।। १००।।
गरीब, अग्नि अनाहद प्रगटी, दसौं दिसा धमतान।
शूरे सावंत संत जन, तिहुवाँ एकै ध्यान।। १०१।।

गरीब, तिन गेरे तरकस बंधैं, दूजे ताने तीर।
लख संधानी बाण है, ज्यूं अर्जुन रणधीर।। १०२।।
गरीब, यती सती तो बहुत हैं, सावंत शूर अनेक।
कविता कोटि अनंत है, नाम रत्ता कोई एक।। १०३।।
गरीब, नाम रत्ता अविगत मता, अगम द्वीप दुरबीन।
खंड परे नहीं खेत में, सदा रहैं ल्यौलीन।। १०४।।
गरीब, साखी शब्दी जोड़ करि, साधु कहावैं कीर।
प्रेम मुहल्ले ना गये, दुर कुटन बे पीर।। १०५।।
गरीब, साखि बनाये सुख नहीं, दुःख दारिद्र काब।
चतुराई चूल्है परै, काशी पढ़े किताब।। १०६।।
गरीब, पंडित गंडित एक हैं, डोलै घर घर बार।
गली गली में फिरत हैं, जम की लिये बिगार।। १०७।।
गरीब, कुत्ता टुकड़े कूँ फिरै, ऊंच नीच नहीं भिन्न।
यौं पंडित भटकत फिरैं, खोये राम रतन।। १०८।।
गरीब, प्रेम गली के चौक में, पंडित गया न कोय।
ज्ञानी गुरुवा कूकरा, भुसतें होय सो होय।। १०६।।
गरीब, प्रेम नगर की पीठ में, बैठे संत सुजान।
अनभै चिसमां ऊगम्यां, ज्यूं त्रिलोकी भांन।। ११०।।
गरीब, एक ज्ञान हैं गुलसफा, सतगुरु शब्द समूल।
गुरु ज्ञान गशतंगरं, परी जुगन जुग भूल।। १११।।
गरीब, पोथी तो थोथी भई, थूक बिलोवै काहि।
चार वेद पंडित पढ़्या, औह अक्षर नहीं मांहि।। ११२।।
गरीब, औह अक्षर-निःअक्षरं, कलम लिख्या नहीं जाय।
पूछि व्यास शुकदेव कूँ, कथा कहत है काय।। ११३।।
गरीब, लाख लोग संगी चढ़ैं वर बिन कहा बरात।
नाम नहीं पुस्तक पढ़ै, कहा बनावैं बात।। ११४।।
गरीब, मुक्र देख रवि ऊगमें, चिसमें ऐंन अनादि।
नाम रत्ता सो जानिये, लागें सहज समाधि।। ११५।।
गरीब, जेते श्वास शरीर में, तेते नाम जपंत।
रूंम रूंम तारी लगै, जब जा पावै पंथ।। ११६।।
गरीब, मींहीं महल बारीक हैं, अजब सलहली सैल।
संख साधु पौंहचे जहां, सब सतगुरु की गैल।। ११७।।
गरीब, अपनी अपनी कहि गये, इस दुनिया के मांहि।
साहिब तेरी साहिबी, कोई जांनै नांहि।। ११८।।
गरीब, साहिब तेरी साहिबी, जानैं रिंच कबीर।

दूजे को ठाहर नहीं, संख कथैं रणधीर।। ११६।।
गरीब, कथनी कथि कथि सब गये, इस दुनियां के मांहि।
मुजरा महल कबीर का, कोइक भेष रिसांहि।। १२०।।
गरीब, गोरख से ज्ञानी घनें, शुकदेव यती जिहांन।
सीता सी बहु भार्या, संत दूर अस्थान।। १२१।।
गरीब, रावण से बहु भारथी, रामचन्द्र से रिप।
एक धनी के साधु बिन, खाली है सब सफ।। १२२।।
गरीब, खाली चारौं खान है, सूभर सांईं संत।
शब्द संदेशा कहत हूँ, नहीं मौले का अंत।। १२३।।
गरीब, मौला है सब मुलक में, जहां तहां देख दयाल।
शब्द संदेशा कहत हूँ, सांईं स्वर्ग पयाल।। १२४।।
गरीब, सब रतनौं सिर रतन हैं, सब लालौं सिरलाल।
सब खूबन सिर खूब है, सब मालौं सिर माल।। १२५।।
गरीब, सब ज्योति सिर ज्योति है, सब नूरौं सिर नूर।
सब रागौं सिर राग हैं, सब तूरौं सिर तूर।। १२६।।
गरीब, सब योगौं सिर योग है, सब भोगौं सिर भोग।
सब राजौं सिर राज है, भूली दुनिया लोग।। १२७।।
गरीब, सब हीरौं सिर हीर है, सब हंसन सिर हंस।
सब नामन सिर नाम है, सब बंसन सिर बंस।। १२८।।
गरीब, सब विष्णौं सिर विष्णु है, सब धर्मो सिर धर्म।
सब शिवन पर शिव तपे, सब ब्रह्मों सिर ब्रह्म।। १२९।।
गरीब, सब गामन सिर गाम है, सब देशन सिर देश।
सब नामन सिर नाम है, जाकूँ रटता शेष।। १३०।।
गरीब, सब वृक्षौं सिर वृक्ष है, सब फूलन सिर फूल।
सब देवन सिर देव है, अजब ध्यान मुख मूल।। १३१।।
गरीब, सब महलौं सिर महल है, सब कुंजौ सिर कुंज।
सब चौरों सिर चौर है, सब पुंज्यौं सिर पुंज।। १३२।।
गरीब, सब रिद्धियौं सिर रिद्धि है, सब सिद्धियौं सिर सिद्धि।
सब मिहरयौं सिर मिहर है, भ्रम उठावौ हदि।। १३३।।

अथ बिनती का अंग

गरीब, साहिब मेरी बिनती, सुनों गरीब निवाज।
जल की बूंद महल रच्या, भला बनाया साज।। १।।
गरीब, साहिब मेरी बिनती, सुनों अर्ज अवाज।
मादर पिदर करीम तूं, पुत्र पिता कूँ लाज।। २।।
गरीब, साहिब मेरी बिनती, कर जोरौं करतार।
तन मन धन कुरबान जां, दीजै मोहि दीदार।। ३।।
गरीब, पांच तत्त के महल में, नौ तत्त का एक और।
नौ तत्त के से अगम है, पारब्रह्म की पौर।। ४।।
गरीब, सुरति निरति मन पवन कूँ, करो इकतर यार।
द्वादस उलट समोय ले, दिल अन्दर दीदार।। ५।।
गरीब, च्यार पदारथ महल में, सुरति निरति मन पौन।
सिंभू द्वारा खूल्ह हीं, जब दरसें चौदह भौंन।। ६।।
गरीब, शील संतोष विवेक बुद्धि, दया धर्म एकतार।
अकल अकीन ईमान रखि, गहो बस्तु निज सार।। ७।।
गरीब, साहिब तेरी साहिबी, कैसे जानी जाय।
त्रिसरैंन से झींन है, नैंनों रह्या समाय।। ८।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, रचन हार जगदीश।
ऐसा सूक्ष्म रूप धरि, आनि बिराज्या शीश।। ९।।
गरीब, साहिब पुरुष करीम तूं, अविगत अपरमपार।
पल पल मांहैं बंदगी, निरधारौं आधार।। १०।।
गरीब, दरदबंद दरवेश तूं, दिल दाना महबूब।
अचल विश्वंभर बसि रह्या, सूरत मूरति खूब।। ११।।
गरीब, श्वास सुरति के मध्य है, न्यारा कदे न होय।
ऐसा साक्षीभूत है, सुरति निरन्तर जोय।। १२।।
गरीब, सुरति निरति से झीन है, जगन्नाथ जगदीश।
त्रिकुटी छाजे पुर रहै, है ईशन का ईश।। १३।।
गरीब, कोटि यज्ञ अश्वमेध करि, एक पलक धरि ध्यान।
षट दम केरी बंदगी, नहीं यज्ञ अनुमान।। १४।।
गरीब, जित सेती दम ऊचरे, सुरति तहांई लाय।
नाभी कुंडल नाद है, त्रिकुटी कँवल समाय।। १५।।
गरीब, अठसठि तीरथ भ्रमना, भटक मुवा संसार।
बारह वाणी ब्रह्म है, जाका करो विचार।। १६।।
गरीब, अठसठि तीरथ जाईये, मेले बड़ा मिलाय।
पत्थर पानी पूजते, कोई साध संत मिल जाय।। १७।।

गरीब, सनकादिक सेवन करै, शुकदेव बोलै साख।
कोटि ग्रन्थ का अर्थ है, सुरति ठिकानें राख।। १८।।
गरीब, साहिब तेरी साहिबी, कहां कहूँ करतार।
पलक पलक की पीठ में, पूर्ण ब्रह्म हमार।। १६।।
गरीब, एते करता कहां है, औह तो साहिब एक।
जैसे फूटी आरसी, टूक टूक में देख।। २०।।
गरीब, करौं बिनती बंदगी, साहिब पुरुष सुभांन।
संख असंखो वर्ण हैं, कैसे रच्या जिहांन।। २१।।
गरीब, साहिब तेरी साहिबी, समझ न परही मोहि।
येता रूप जिहांन जग, कैसे सिरज्या तोहि।। २२।।
गरीब, एक बीज एक बिंद है, एक महल एक द्वार।
चरण कमल कुरबान जां, सिरजे रूप अपार।। २३।।
गरीब, मौला जल से थल करै, थल से जल कर देत।
साहिब तेरी साहिबी, श्याम कहूँ अक सेत।। २४।।
गरीब, मालिक मीरां मिहरबान, सुनियों अर्ज अवाज।
पंजा राखो शीश पर, जम नहीं होत तिरास।। २५।।
गरीब, मादन पिदर प्रान तूं, साहिब समरथ आप।
रूंम रूंम धुनि होत है, शब्द सिंधु गरगाप।। २६।।
गरीब, मीरां मोपै मिहर कर, मैं आया तक श्याम।
समरथ तुमरे आसरे, बांदी जाम गुलाम।। २७।।
गरीब, तन मन धन जगदीश का, रती सुमेर समांन।
मिहर दया कर मुझ दिया, तन मन बारौं प्रान।। २८।।
गरीब, यह माया जगदीश की, अपनी कहै गंवार।
जमपुर धक्के खांहिगे, नाहक बहैं बिगार।। २६।।
गरीब, रावण के संग ना चली, लंक विभीषण दीन।
याह माया अपनी नहीं, सुनों संत प्रवीन।। ३०।।
गरीब, काया अपनी है नहीं, तो माया कित से होय।
चरण कमल में ध्यान रख, इन दोनों कूँ खोय।। ३१।।
गरीब, ये तो जांन अनित हैं, काया माया काल।
इन दोनों के मध्य है, सोहं शब्द रिसाल।। ३२।।
गरीब, ऊँ सोहं सार है, मूल फूल प्रवेश।
शिव ब्रह्मादिक रटत हैं, ध्यान धरत हैं शेष।। ३३।।
गरीब, मैं समरथ के आसरे, दम कदम करतार।
गफलत मेरी दूर कर, खड़ा रहूँ दरबार।। ३४।।
गरीब, सुनों पुरुष मेरी बिनती, साहिब दीन दयाल।

पतित उधारन सांईंयां, तुम हो नजर निहाल।। ३५।।
गरीब, अविनाशी के आसरे, अजरावर की श्याम।
अर्थ धर्म काम मोक्ष होंहि, समरथ राजा राम।। ३६।।
गरीब, समरथ का शरना लिया, ताहि न चंपै काल।
पारब्रह्म का ध्यान धरि, होत न बंका बाल।। ३७।।
गरीब, नाग दौंन निर्गुण जड़ी, ऐसा तुम्हरा नाम।
तक्षक तीछा पड़त है, हरदम जपि ले राम।। ३८।।
गरीब, आत्म इन्द्री कारने, मत भटकावै मोहि।
जगन्नाथ जगदीश गुरु, शरने आया तोहि।। ३९।।
गरीब, चरण कमल के ध्यान से, कोटि विघ्न टल जांहि।
राजा होवै लोक का, ताहि परे हुमा छांहि।। ४०।।
गरीब, हुमा छांह जा पर परै, पृथ्वी नाथ कहाय।
पशु पंछी आदम सुनास, मानुष परखे तांहि।। ४१।।
गरीब, दिव्य दृष्टि देवा दयाल, सतगुरु संत सुजांन।
त्रिलोकी के जीव कूँ, परखि लेत प्रवान।। ४२।।
गरीब, अगले पिछले जन्म कूँ, जानत है जगदीश।
रुण्ड माल शिव के गले, पहर रहे ज्यूं ईश।। ४३।।
गरीब, करुणामई करीम जप, अलह अलख का ध्यान।
सतपुरुष सुख सिंध में, जाय समाने प्रान।। ४४।।
गरीब, दम सुदम कूँ समझि ले, ऊठत बैठ अराध।
रिंचक ध्यान समान सुध, पूरन सकल मुराद।। ४५।।
गरीब, अर्ध नाम कुंजर जप्या, गज ग्राह भये पार।
उभय महूरत षट दलीप, ऐसा नाम उच्चार।। ४६।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मण्ड में, बटक बीज विस्तार।
सुरति स्वरूपी पुरुष हैं, तन मन धन सब वार।। ४७।।
गरीब, सुंनि सपेदा श्यांम है, भूर भद्र वैराट।
तिल प्रवानि में पैठ करि, उतरो औघट घाट।। ४८।।
गरीब, रतन अमोली फूल है, शिव साहिब के शीश।
जो रंग नाहीं सृष्टि में, देख्या बिसवे बीस।। ४९।।
गरीब, कोटि ध्यान असनान करि, कोटि योग वैराग।
कोटि कुटुंब गृह तजि गये, दरशत ना अनराग।। ५०।।
गरीब, राग रूप रघुबीर हैं, छांह धूप से न्यार।
संख सुरग पर सो तपै, कैसे होय दीदार।। ५१।।
गरीब, सतगुरु अरथ विमान दे, हिरदे बैठे आय।
जद वहां खूल्हें चादंनी, पल में देहि लखाय।। ५२।।

गरीब, सतगुरु के सदके करौ, अनंत कोटि ब्रह्मण्ड।
निर्गुण नाम निरंजना, मेटत हैं जमदण्ड।। ५३।।
गरीब, सतगुरु के सदके करौ, तन मन धन कुरबान।
दिल के अंदर देहरा, तहां मिले भगवान।। ५४।।
गरीब, दिल के अन्दर देहरा, जा देवल में देव।
हर दम साक्षीभूत है, करो तास की सेव।। ५५।।
गरीब, जल का महल बनाईयां, धंन सुमरथ सांईं।
कारीगर कुरबान जां, कुछ कीमत नांहीं।। ५६।।
गरीब, कोटि जतन कर राखिया, जठरा के मांही।
गर्भवास की बिनती, सुनि पुरुष गोसांईं।। ५७।।
गरीब, नैंने नाक मुख श्रवणं, ले साज बनाया।
दसत चरण चिन्तामणी, परि पूरन काया।। ५८।।
गरीब, कली कली कर जोडिया, नाड़ी निरबाना।
दस सहंस का बंध लाय, नाभी अस्थाना।। ५९।।
गरीब, तालू कंठ रु त्रिकुटी, रसना मुख मांहीं।
दाढ़ व दंत बनाईया, धंनि अलख गोसांईं।। ६०।।
गरीब, पलकौ के छज्जे बने, भौंह महल मंडेरे।
जै जै जै जगदीश तूं, धंनि साहिब मेरे।। ६१।।
गरीब, गूदा हाडी रुधिर में, ले संधि मिलाई।
ऊपर चाम लपेटि करि, नख रूंम बनाई।। ६२।।
गरीब, तलवे एडी आंगुली, पींडी प्रवाना।
गोडे जांघ बनाईयां, कादर कुरबाना।। ६३।।
गरीब, कमर करंक करीम कूँ, क्या जोड़ लगाया।
नस नाड़ी का बंध दे, गृह गांठि बंधाया।। ६४।।
गरीब, पेट पीठ पूर्ण किये, परमानन्द स्वामी।
भुजा खवे कुंहनी बनी, सुमरथ घण नामी।। ६५।।
गरीब, आंत उदर में राखि कर, क्या पड़दा कीन्हा।
एक द्वार दों देहरी, अन्न जल का सीना।। ६६।।
गरीब, अष्ट कँवल दल आरती, हरदम हरि होई।
नाभि कँवल में प्राणनाथ, राखे निरमोही।। ६७।।
गरीब, माया की भुरकी पड़ी, मारग नहीं पावै।
दस इन्द्री लारे लगीं, अब कौन छुटावैं।। ६८।।
गरीब, बड़वानल का द्वार है, नाभी के नीचे।
जे सतगुरु भेदी मिलै, तहां अमृत सींचे।। ६९।।
गरीब, जठर अग्नि जाकूँ कहै, जो खुध्या लावै।

जल से तृषा ना मिटै, कोई भेदी पावै।। ७०।।
गरीब, तीन पेच है कुंडलनी, नाभी के पासा।
जाके मुख से नीकसे, झल अग्नि अकाशा।। ७१।।
गरीब, मल मूत्र की कोथली, दो न्यारी कीन्हा।
दम का दगड़ा गगन कूँ, ऐसा प्रवीना।। ७२।।
गरीब, मन माया मौजूद है, काया गढ़ मांही।
बीच पुरंजन बसत है, सो पावै नांहीं।। ७३।।
गरीब, पांच भारजा आदि हैं, जाके संग डोलै।
तीन लोक कूँ खाय गई, मुख से नहीं बोलै।। ७४।।
गरीब, बड़ी कुसंगन सुपचनी, सुध बुध बिसरावै।
चिन्ता चेरी चूहरी, नित नाद बजावै।। ७५।।
गरीब, महा दलिद्र की गांठ बांधि, आगे धरि देवै।
तीन लोक की चिन्त कूँ, निश बासर सेवै।। ७६।।
गरीब, काम क्रोध रसिया जहां, मद मोह मवासी।
लोभ लंगर जहां बटत है, वहां बारह मासी।। ७७।।
गरीब, राग द्वेष रागी बड़े, नित गावै गीता।
हर्ष शोक हाजर खड़े, दो रहजन मीता।। ७८।।
गरीब, बीच पुरंजन बैठ कर, बहु नाच नचावै।
लोक परगनें बांट करि, बड़ दीक्षा द्यावै।। ७९।।
गरीब, आत्म सिर आरा धर्‌या, जोधा बहु ध्यावै।
कुबुद्धि कलाली जारनी, विष प्याला प्यावै।। ८०।।
गरीब, मनसा मालनि आय कर, नित सेज बिछावै।
तहां पुरंजन बैठ करि, नित भोग करावै।। ८१।।
गरीब, तीन लोक की मेदनी, सब हाजर होई।
मन रंगी के रंग में, रंग्या सब कोई।। ८२।।
गरीब, आसन असतल उठि गये, कुछ पिण्ड न प्राणा।
फेर पुरंजन आनि करि, घाल्या घमसाना।। ८३।।
गरीब, दुरमति दूती और है, एक दारुण माया।
जैसे कांजी दूध में, घृत खंड कराया।। ८४।।
गरीब, द्वादस कोटि कटक चढ़े, कुछ गिनती नांहीं।
लालच नीच नकीब है, जिन फौजां मांहीं।। ८५।।
गरीब, संसा शोग सराय में, सूतग दिन राती।
जीवत ही जूती परै, जम तोरै छाती।। ८६।।
गरीब, रहजन कोटि अनन्त हैं, काया गढ़ मांहीं।
ममता माया बिस्तरी, त्रिगुण तन मांहीं।। ८७।।

गरीब, बंकी फौज पुरंजना, कुछ पारं न पावै।
मन राजा के राज में, क्या भक्ति करावै।। ८८।।
गरीब, मन के मारे मुनि बहे, नारद से ज्ञानी।
श्रृंगी ऋषि पारासुरा, कीन्हे रजधानी।। ८९।।
गरीब, चढ़े पुरंजन इन्द्र पर, करि धाई धाई।
गौतम ऋषि की स्त्री, संग कीन्हा जाई।। ९०।।
गरीब, नारि अहिल्या स्यौं रत्ते, सुरपति से देवा।
इन्द्र सहंस भंग हो गये, कुछ लख्या न भेवा।। ९१।।
गरीब, दुर्वासा पकरे गये, सुरपति की नगरी।
नारि उर्वसी मोहिया, मन माया सगरी।। ९२।।
गरीब, जो जीते सो तुझ कहुँ, मन माया खाये।
शिव योगी भागे फिरे, ले मदन चुराये।। ९३।।
गरीब, जाके संग पुरंजनी, महमंती नारी।
गुरु मछन्द्र सिंघल द्वीप, कीन्हें घरबारी।। ९४।।
गरीब, ब्रह्मा का आसन डिग्या, कछु कही न जाई।
जहां पुरंजन आन कर, बड़ धूम मचाई।। ९५।।
गरीब, राजा एक पुरंजना, तिहूँ लोक बडेरा।
सुर नर मुनि जन सब डरैं, पकरै शमशेरा।। ९६।।
गरीब, तीन लोक ताखत किये, कछु रही न बाकी।
अबल बली वरियाम है, चन्द सूरज साखी।। ९७।।
गरीब, नौ अवतार पुरंजना, धरि आये देही।
औही रावण राघौ भये, मन माया येही।। ९८।।
गरीब, हनुमान और जामवन्त, नल नील कहावैं।
अंगद और सुग्रीव कूँ, रण मांहि जुटावै।। ९९।।
गरीब, तीन लोक घाणी घली, मन माया नांची।
कंश केस चानौर कूँ, शिशुपाल न बांची।। १००।।
गरीब, रावण महिरावण मुये, हिरणाकुश खाये।
संखासुर से दरमले, कहीं खोज न पाये।। १०१।।
गरीब, शूरे सावंत मंडलीक, चकवे सब खाये।
चुनकट होय कर चुग लिये, किन्हैं भेद न पाये।। १०२।।
गरीब, डरे पुरंजन एक से, जे जान्या जाई।
निज मन का आरंभ करि, सुरति ल्यौ लाई।। १०३।।
गरीब, शील संतोष विवेक बुद्धि, समता जब आवै।
दया धरम के चौंतरे, गुरु ज्ञान सुनावै।। १०४।।
गरीब, शील संतोष विवेक से, जाके दरवाना।

काम क्रोध भागे जबे, गढ़ देख्या सामा।। १०५।।
गरीब, लोभ मोह मारे परे, सैना सब भागी।
सतगुरु के प्रताप से, जब आतम जागी।। १०६।।
गरीब, पुरुष पुरंजन पकड़्या, गढ़ घेर्‍या जाई।
निज मन की फौजां धसी, काया गढ़ मांहीं।। १०७।।
गरीब, अकल अकीन ईमान रे, मनसा भई थीरं।
अजपा तारी धुंन लगी, जम कटे जंजीरं।। १०८।।
गरीब, खाखी मन पिंगल चढ़्या, प्रवान परेवा।
कोटि पदम की दामनी, गरजत बहु भेवा।। १०९।।
गरीब, प्रान अपान समान करि, सुरति ल्यौ लाई।
दौहबर कोट ढहाईयां, और तिहबर खांई।। ११०।।
गरीब, भ्रम बुरज भांने सबे, सोलह सुर धाई।
सतरह सुरति हंसनी, सब खबर्‍यां लाई।। १११।।
गरीब, चढ़्या विहंगम नाद भर, निर्गुण निर्वानी।
शिव साहिब के लिंग पर, गिरि गंगा आनी।। ११२।।
गरीब, मान तलाई मालवै, त्रिवैणी तालं।
गंगा जमना सरस्वती, जब छूटी दयालं।। ११३।।
गरीब, शिव साहिब के लिंग पर, त्रिवैणी बूठै।
कल विष कुसमल कट गये, सब बंधन छूटै।। ११४।।
गरीब, परा नन्दनी दूझहीं, दरबार हमारै।
अमृत की भाठी झरै, कल विष कूँ जारै।। ११५।।
गरीब, ब्रह्मरंद्र का घाट है, घठ मठ से न्यारा।
सुरति हंसनी चढ़ि गई, लखि पूर्व द्वारा।। ११६।।
गरीब, सतगुरु मेरा महरमी, काया धरि आया।
जिन माटी के महल में, निज ब्रह्म लखाया।। ११७।।
गरीब, बाहर भीतर एक है, पल जोड़ प्रानी।
हिरदे ही में देख ले, वाह अगम निशानी।। ११८।।
गरीब, सुंनि सलहला पंथ है, पद पारख लीजै।
जटा कुंडली जाईये, अमृत रस पीजै।। १११९।।
गरीब, जटा कुंडली पर बसै, सतगुरुष बिनानी।
जहां सुमरथ का तखत है, धुनि अनहद बानी।। १२०।।
गरीब, जहां वहां रहन कबीर की, निज मंदिर महली।
चढ़े सही गिर गिर परे, औह पंथ सलहली।। १२१।।
गरीब, पैड़ी पंथ न पग धरन, कैसे कर जाऊँ।
मिल्या रहे और ना मिले, कहां सुरति लगाऊँ।। १२२।।

गरीब, ऊंची भूमि अकाश मठ, जहां जाय न कोई।
सुरति निरति से अगम है, धुनि ध्यान समोई।। १२३।।
गरीब, दरश परस देवल धजा, फरकै दिन राती।
जोति अखंडित जगमगै, दीपक बिन बाती।। १२४।।
गरीब, नभ से न्यारा नूर है, झीने से झीना।
ज्ञान ध्यान की गम नहीं, परखै प्रवीना।। १२५।।
गरीब, संख कल्प जुग हो गये, जो टरै न टार्‌या।
खड्ग बांन बेधै नहीं, है अधर अधारा।। १२६।।
गरीब, भगल करै नांही डरै, बहु रूप बनावै।
बैरागर की खान कूँ, धम घिरती पावै।। १२७।।
गरीब, पत्थर में हीरा चलै, धम घिरती जानै।
लाख लोग पासे खड़े, दरसे पाषानैं।। १२८।।
गरीब, सात आवरण बेधि हैं, जो पावै हीरा।
काया में से उड़ चले, पलको के तीरा।। १२९।।
गरीब, उडगन हीरा गह लिया, सुरति घर आन्यां।
सेत धजा देवल खिमें, जहां कोटि निसानां।। १३०।।
गरीब, कँवल रूप करतार हैं, नैंनो के मांहीं।
सातों कँवल शरीर में, औह न्यारा सांईं।। १३१।।
गरीब, जागत सोवत है नहीं, कुछ खाय न पीवै।
चिरंजीव चिंतामणी, जो बहु जुग जीवै।। १३२।।
गरीब, काल कर्म आगे खड़े, लावै जित लागै।
भगली भगल उचार है, विद्या अनरागै।। १३३।।
गरीब, काल कर्म आगे खड़े, नित नाच कराहीं।
भगली भावे सो करै, जाकी गम नांहीं।। १३४।।
गरीब, पलक बीच पैमाल होय, सब पिण्ड ब्रह्मंडा।
अजब नवेली, मेदनीं, छिन में प्रचंडा।। १३५।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश से, कंपे दिन राती।
निरदावै सोई भये, जिस काल न खाती।। १३६।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड का, चरवन कर लेई।
महाकाल की जाड़ में, आवै सब कोई।। १३७।।
गरीब, काल डरै करतार से, कर बंधन जोड़ी।
संख असंखौ चल गये, शिव विष्णु करोड़ी।। १३८।।
अकाल पुरुष साहिब धनी, अविगत अविनाशी।
गरीबदास शरने लग्या, काटों जम फांसी।। १३९।।

अथ अकला का अंग

गरीब, एक अकलि की लार हैं, कोटि रिद्धि अरु सिद्धि।
अकलि बिहूने मानवी, ते नर मूर्ख गद्ध।। १।।
गरीब, एक अकलि की लार हैं, कोटि ज्ञान अरु ध्यान।
अकलि बिहूने मानवी, ते नर पशु समान।। २।।
गरीब, एक अकलि की लार हैं, सुरति निरति अरु मन।
बुद्धि विवेक विचार सब, शील संतोष रतन।। ३।।
गरीब, एक अकलि की लार हैं, दया धर्म अरु सेव।
अकलि बिना क्यूं पाईये, आदि निरंजन देव।। ४।।
गरीब, एक अकलि की लार हैं, सुर नर मुनि जन संत।
बलिहारी उस अकलि की, जासे पाये कंत।। ५।।
गरीब, एक अकलि की लार हैं, गीता पाठ पुराण।
कोटि रामायण क्या पढ़े, बूझो अकलि निदान।। ६।।
गरीब, एक अकलि के मांहि हैं चारों वेद विचार।
अकलि बिना पावे नहीं, समर्थ सिरजनहार।। ७।।
गरीब, अकलि अनाहद अधर है, सुंन में जाका धाम।
सुरति अनल में रोपिये, सुखसागर विश्राम।। ८।।
गरीब, सुरति अनल में लाय के, दोनूं पलक समोय।
आत्म और परमात्मा, इस विधि मेला होय।। ९।।
गरीब, अधर अनल में झूलता, अलख रूप अल्लाह।
बांस बली बिन चलत हैं, नौका निरति मल्लाह।। १०।।
गरीब, चित्त का चप्पू लाईये, बरदवान बुद्धि बांधि।
सेत ध्वजा जहां फरहरै, सुरति निरति शर सांधि।। ११।।
गरीब, आसन अनल लगाय ले, पिंड ब्रह्मण्ड कूँ छाड।
अकलि पाट पर बैठि कर, लाडो बहु विधि लाड।। १२।।
गरीब, जल साहिब जगदीश हैं, पौहमी अग्नि अरु पौंन।
गगन तत्त में सैल है, करते हरदम गौंन।। १३।।
गरीब, एक अकलि की लार हैं, तीनूं लोक नरेश।
शिव महरम तिस अकलि का, ब्रह्मा विष्णु अरु शेष।। १४।।
गरीब, एक अकलि की लार हैं, चौदह भुवन विनोद।
अकलि अनल में रहत है, जाकूँ ले तूं शोध।। १५।।
गरीब, अकलि छाडि नकली गहे, नहीं अनल में वास।
दीखत के तो मनुष्य हैं, ते नर ढाक पलास।। १६।।
गरीब, अकलि अकलि तूं क्या करै, अकलां कल्या न जाय।
जा हृदय औह आईया, है मादर पिदर अलाह।। १७।।

गरीब, अकलि अकलि तूं क्या करै, अकलि वृक्ष प्रवान।
एक अकलि के मांहि हैं, सकल जिमी असमान।। १८।।
गरीब, समाधान रखि सुरति में, निरति निरालंब नाद।
कोटि अकलि आगे चलै, जो सतगुरु हैं साध।। १९।।
गरीब, एक अकलि से रचे हैं, पिंड प्राण सब देह।
कोटि कला गुप्तार है, ऐसा पुरुष विदेह।। २०।।
गरीब, अकलि अनाहद आदि है, अकलि अनूपम आप।
अकलि बिना मिटते नहीं, ये नर तीनूं ताप।। २१।।
गरीब, ये गुण इन्द्रिय दमन कर, चंचल मन कूँ चेत।
अकलि बिहूने मानवी, जंगली भूत प्रेत।। २२।।
गरीब, ये गुण इन्द्रिय दमन कर, निश्चल मन से प्रीत।
अकलि अकलि कूँ जा मिले, ते नर शब्द अतीत।। २३।।
गरीब, अकलि अनल से ऊतरी, आई सतगुरु पास।
ताहि अकलि से रचे हैं, वैकुण्ठ और कैलाश।। २४।।
गरीब, ध्यान अनल में लाय कर, सुरति निरति शर सांधि।
जिब तीनों तागीर हो, पांच पचीसौं बांधि।। २५।।
गरीब, मनसा माया बिस्तरी, तीनूं लोक अंधेर।
यह मन खाखी खात है, निगले मेरु सुमेर।। २६।।
गरीब, मृग तृष्णा घट भ्रम है, ना कछु आथि न साथ।
अकलि बिना क्यूं पाईये, सांई जेही दात।। २७।।
गरीब, ऊपर रोगन चाम का, रुद्र मैल मलीन।
फनां सकल पैमाल हैं, परखै सो प्रवीन।। २८।।
गरीब, निरखि परिख कर देख ले, हाड चाम की देह।
बारू के सी भीत हैं, जल से बिनसे येह।। २९।।
गरीब, अकलि पुरुष आनन्द घन, जासे जोड़ो तार।
रतन अमोली सिध कला, तुम्हरा सिरजन हार।। ३०।।
गरीब, जगर मगर ज्योति करैं, अनल अनाहद ऐंन।
तकिया लखि महबूब का, गावै अनहद बैंन।। ३१।।
गरीब, ध्यान अनल में जोरि कर, त्रिकुटी छाजै आंनि।
हृदय कला कलधूत की, जाकूँ लेह पिछांनि।। ३२।।
गरीब, अकलि सकल से दूर है, संतों नाल सनीप।
मुरजीवा होय ल्याव हीं, दरिया मोती सीप।। ३३।।
गरीब, अकलि अलह साहिब धनी, चिदानन्द चित्त बीच।
अकलि लख्या रैदास कूँ, उत्तम हो गये नीच।। ३४।।
गरीब, निरबांनी निर्गुण पुरुष, सरगुण सकल शरीर।

जल ही से पारस बन्या, जल मोती जल हीर।। ३५।।
गरीब, ऊंचे नीचे कर्म हैं, ऊंच नीच नहीं कोय।
स्वांति गज मस्तक पर्‌या, जासे मोती होय।। ३६।।
गरीब, कदली में स्वांति पर्‌या, जाका भया कपूर।
दोई अंग काहे कहो, एकै जा का मूर।। ३७।।
गरीब, सर्प नाग तक्षिक के, मुख में बूठी स्वांति।
जहर क्रितीया हो गया, ऐसी घट की भ्रांति।। ३८।।
गरीब, भूंड गदहरा श्वान खर, काग नाग और चील।
कीड़ी कुंजर एक है, क्रितम ख्याल पपील।। ३९।।
गरीब, अकलि बिहूनें जीव जड़, वृक्ष भये पाषाण।
अकलि जहां जहां संचरी, वै ध्रुव प्रहलाद समान।। ४०।।
गरीब, ढेड भेड बिन अकलि है, चमरा और चंडाल।
कहै चूहरा तास कूँ, बिना अकलि सब काल।। ४१।।
गरीब, कृम कीट माखी भया, बिना भजन जगदीश।
अकलि पुरुष सुमिरन करौ, सौदा बिसवे बीस।। ४२।।
गरीब, नर से पशुवा होत हैं, पशुवा से नर फेर।
करि साहिब की बंदगी, बौहरयौं चढ़ै सुमेर।। ४३।।
गरीब, अनन्त कोटि राजा गये, चलत छत्र की छांह।
बिना धनी की बंदगी, संत न पकरैं बांह।। ४४।।
गरीब, गन्दा अंडा हो गया, देह मिटी मिल सीन।
अकलि पुरुष का नाद सुनि, बहुर भया प्रवीन।। ४५।।
गरीब, उड्‌या विहंगम रूप धरि, गर्भ योनि में वास।
शिव शंकर सिकरा बन्या, पीऊँ याका श्वास।। ४६।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश लग, भया समागम आनि।
चोर हमारा उदर में, हो रही खैंचा तान।। ४७।।
गरीब, व्यास व्यास की स्त्री, कर बंधन आधीन।
तिहूँ देवा दर्शन भये, भाग्य बड़े ल्यौ लीन।। ४८।।
गरीब, बोले व्यास उदास होय कैसा चोर दयाल।
कित से आया कौन है, मो से कहो हवाल।। ४९।।
गरीब, शिव बोलै वाणी कहै, भाखौं विधि संयोग।
दई चिरत देवा रचे, सुरति निरति संयोग।। ५०।।
गरीब, जन्म जूनि नहीं तास के, देह गरेह न नाद।
ब्रह्म तत्त हमरा सुन्या, तातैं वाद विवाद।। ५१।।
गरीब, कहै व्यास की स्त्री, सुनि ब्रह्मा विष्णु महेश।
यह पुत्र शुकदेव है, सुनियौं वचन संदेश।। ५२।।

गरीब, बोलत शुकदेव गर्भ में, सुनियों तीनौं देव।
लख चौरासी में परे, भिन्न भिन्न भाखौं भेव।। ५३।।
गरीब, कीट पतंग भवंग होय, जूनि धरी कई बार।
अनन्त कोटि जुग हो गये, जामन मरण हमार।। ५४।।
गरीब, द्वादस वर्ष पुगाय कर, बाहर आये देव।
ओलि नालि कमरां कसी, चले पंथ शुकदेव।। ५५।।
गरीब, व्यास कहै शुकदेव से, कहां चले चित्त भंग।
बोले बालक ब्रह्म गति, येता ही सत्संग।। ५६।।
गरीब, कोटि कल्प जुग जन्म की, समझ परी है मोहि।
कौन पिता को पुत्र है, कहि समझाऊँ तोहि।। ५७।।
गरीब, पांच तत्त तत्ते मिले, उड़े विहंगम रूप।
हुंकारा तब ही भर्या, बोले सत्य स्वरूप।। ५८।।
गरीब, गगन मंडल कूँ उडि गये, वैकुण्ठों किया वास।
तीन लोक विचरत फिरे, सोहं शब्द निवास।। ५९।।
गरीब, ऐसा जीव जिहांन में, मट्टी महल संजूत।
शंकर से सतगुरु मिलैं, पद पावे अनभूत।। ६०।।
गरीब, गर्व मणि पर मार है, जे शुकदेव सा होय।
जनक किये गुरु आंनि के, छूटे सकल द्रोह।। ६१।।
गरीब, अकल प्रेवा हंसनी, हृदय कँवल में हाट।
जगत भक्ति भावै नहीं, संत करत है साट।। ६२।।
गरीब, शील संतोष विवेक हैं, दया धर्म जिस मांहि।
ज्ञान ध्यान और योग सब, वैराग वस्तु की छांहि।। ६३।।
गरीब, समता क्षमा अकीन रखि भाव भक्ति विश्वास।
एक अकलि की लार हैं, येते जाके पास।। ६४।।
गरीब, अकलि अलेख अनादि है, पंछी रूप पिरान।
समाधान की डाल पर, बैठे चतुर सुजान।। ६५।।
गरीब, गहबर गंध सुगन्ध हैं, पानं पानं रवि रंग।
एक अकलि के पट परि, संखौ खड़े तुरंग।। ६६।।
गरीब, मरकब के ज्यूं लदत हैं, प्रानी जीव जिहान।
शीश कपाली बोझ धरि, दतब किया प्रवान।। ६७।।
गरीब, एक तुरंगम चढ़त है, हाथी फील पलान।
छूहनि बौह दल संग है, चौंर ढुरत है आन।। ६८।।
गरीब, पैर पियादे पालकी, एक चलैं छत्र की छांह।
सबै कहावै लश्करी, सब लश्कर के मांह।। ६९।।
गरीब, भठिहारे भाठी करै, दुबहारे कंगाल।

कहीं हीरे मोती तुलै, कहीं लालौं की पाल।। ७०।।
गरीब, न्यारे न्यारे कर्म है, न्यारी न्यारी जात।
को काहूँ का है नहीं, झूठा संगी साथ।। ७१।।
गरीब, ऋण संबंधी जुरे है, मादर पिदर भ्रात।
गृह द्वारा और स्त्री, आप आप कूँ जात।। ७२।।
गरीब, सतगुरु संगी संत हैं, पारब्रह्म की सेव।
राम नाम निर्गुण जड़ी, परस रहै दिल देव।। ७३।।
गरीब, श्वासा पारस प्राण पद, अनमीता नहीं तोल।
त्रिलोकी पलड़े चढ़ै, तो एक रती का मोल।। ७४।।
गरीब, श्वासा पारस प्राण पद, अनमीता नहीं जोख।
उलटा नाद समोय ले, ब्रह्म परायन मोख।। ७५।।
गरीब, नाभि कँवल से ऊचरे, नासा अग्री नाद।
द्वादस उलटि समोय ले, पूर्ण सकल मुराद।। ७६।।
गरीब, दम सूं दम कूँ शोधि ले, ऊँ सोहं सार।
उलटा गोता मारिये, दिल अन्दर दीदार।। ७७।।
गरीब, दम सूं दम कूँ शोधि कर, जपिये अजपा जाप।
प्राण पियाना करैगा, तो अनल बीच गरगाप।। ७८।।
गरीब, सोहं सुरति समूल सर, ऊँ आनन्द रूप।
श्वासा पारस परस ले, नहीं छाया नहीं धूप।। ७९।।
गरीब, भँवर बिहंगम उड़त है, त्रिकुटी छाजे तेज।
प्राण पुरुष परचे भया, लखि पारब्रह्म की सेज।। ८०।।
गरीब, इला पिंगला घाट दो, सुष्मणा सिन्धु समाय।
चार मुक्ति पानी भरैं, जो उस द्वारै जाय।। ८१।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड हैं, अनन्त कोटि घट देह।
सुष्मण सिन्धु मिलाप है, बाहर खाना खेह।। ८२।।
गरीब, दस हजार नाड़ी नशाँ, और बहत्तरि बीन।
ता मध्य एक सहंस है, इनमें को प्रवीन।। ८३।।
गरीब, नाड़ी नघ बत्तीस है, जामें नौं निर्वान।
इला पिंगला दोय है, सुष्मण मधि पिछान।। ८४।।
गरीब, ब्रह्मरन्ध्र का घाट है, तिल प्रवान प्रेख।
नैनों मांहि रमि रह्या, सुरमे के सी रेख।। ८५।।
गरीब, धोये से नहीं उतरै, न्हाये से नहीं जाय।
गोला ज्ञान भूभूति का, लीजै अंग रमाय।। ८६।।
गरीब, उडगन पंछी प्राण है, मानसरोवर न्हाय।
ताले से कूँची लगै, सतगुरु सिंध लखाय।। ८७।।

गरीब, बादर बादर चंद्र है, चंद्र चंद्र में सूर।
सूर सूर में मुकट है, दर्स झिलमिला नूर।। ८८।।
गरीब, ध्वजा पताके पत्र हे, पत्र पत्र प्रवीन।
तूंबा तार न तास के, बाजै बहु प्रवीन।। ८९।।
गरीब, मुरजीवा मारग लहै, ताहि कुलंगी चाल।
परबी न्हाना नित जहां, सरवर है बिन पाल।। ९०।।
गरीब, दसौं दिसा को घाट है, दसौं दिसा को बाट।
मन महरम महबूब है, सतगुरु कीन्ही साट।। ९१।।
गरीब, बूटी सिन्धु संजीवनी, जाकी ले मकरंद।
देखें निर्मल होत है, ऐसा सूंभर सिंध।। ९२।।
गरीब, एक रतन बहु पारखू, निरखि परखि प्रवान।
संख कमल फूलै जहां, हंस करैं स्नान।। ९३।।
गरीब, कालंद्री परि कलश है, गंग यमुन के तीर।
अनंत कोटि गोपी जहां, कृष्ण कन्हैया हीर।। ९४।।
गरीब, बीना ताल अगाध है, निश वासर गुंजार।
धुनि से धुनि लागी रहै, होत शब्द झंनकार।। ९५।।
गरीब, सुरति निरति लागी रहे, प्राण रटत रघुवीर।
दिल दाना दिल बीच है, बंध्या रहे तसमीर।। ९६।।
गरीब, नाद बिंद में सिन्धु है, सिन्धु सरोवर न्हान।
अनिल अलीलं दर्स है, निर्गुण पद निर्वाण।। ९७।।
गरीब, झालरि संख समोधनं, सुरति निरति पोषंत।
चिंतामणि से चांचरी, निरखि नवेला कंत।। ९८।।
गरीब, ब्रह्मादिक शिव ध्यान धरि, विष्णु करै प्रणाम।
बिन इच्छा कर बंदगी, अर्थ धर्म प्रवान।। ९९।।
सारिंग सुरति लगाई ले, पारिंग पिण्ड अरु प्राण।
गरीबदास पावै सही, निगुर्ण पद निर्वाण।। १००।।

अथ अचला का अंग

गरीब, पंजा दस्त कबीर का, सिर पर राखो हंस।
जम किंकर चंपै नहीं, उधरि जात है बंस।। १।।
गरीब, दर्दबंद दरवेश है, सतगुरु पुरुष कबीर।
नाम लिये बंधि छूटि है, टूटै जम जंजीर।। २।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर हैं, तीन लोक तत सार।
कोटि उनंचा पृथ्वी, चौदह भुवन उद्धार।। ३।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर हैं, तीन लोक तत सार।

दोई चार की क्या चलै, उधरे हंस अपार।। ४।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर हैं, चारौं युग प्रवान।
झूठे गुरुवा मर गये, हो गये भूत मशान।। ५।।
गरीब, झूठे गुरु के आसरे, कदे न उधरै जीव।
साचा पुरुष कबीर है, आदि परम गुरु पीव।। ६।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर का, विषम पंथ बैराट।
शिव सनकादिक धाव हीं, मुनि जन जोवै बाट।। ७।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर की, कोई न चलि हैं गैल।
बिना पंथ पग धरत हैं, गगन मंडल में सैल।। ८।।
गरीब, पग सेती दुनियां चलै, पंछी परौं उडान।
ऊंचा महल कबीर का, जहां नहीं जिमी असमान।। ९।।
गरीब, नीम मंडेर न महल के, नहीं घाट नहीं बाट।
ऊंचा तख्त कबीर का, कैसे कीजे साट।। १०।।
गरीब, संख स्वर्ग पर सैल है, संख स्वर्ग पर धाम।
ऐसा अचरज देखिया, बिना नीम का गाम।। ११।।
गरीब, बिना नीम के नगर में, बसते पुरुष कबीर।
शिव ब्रह्मादिक थकत हैं, कौन धरै जहां धीर।। १२।।
गरीब, लख लख योजन उड़त हैं, सुर नर मुनि जन संत।
ऊंचा धाम कबीर का, कोई न पावै अंत।। १३।।
गरीब, धावै सो पावै नहीं, उलट पंथ की चाल।
दिल ही अंदर दर्स हैं, योजन संख विशाल।। १४।।
गरीब, पर्वत लोका लोक सब, कच्छ मच्छ कूरंभ।
त्रिलोकी चरणौं उड़े, ऐसा पद आरम्भ।। १५।।
गरीब, जैसे अलल आकाश कूँ, रापति चरण लगाय।
ऐसे हरिजन हंस कूँ, ले चालत है ताहि।। १६।।
गरीब, नाम निरति संगर सरू, फरकै धजा निशान।
अनहद बाजे बाज ही, सतगुरु आब दिवान।। १७।।
गरीब, संगर रोप्या नाम का, बाजे अनहद नाद।
तोबा लाल कबीर की, छूटे आदि अनादि।। १८।।
गरीब, धर्मराय दरबार में, दई कबीर तलाक।
भूले चूके हंस कूँ, पकरो मतैं कजाक।। १९।।
गरीब, बोले पुरुष कबीर से, धर्मराय कर जोरि।
तुमरे हंस न चंपि हूँ, दोही लाख करोरि।। २०।।
गरीब, मद्यहारी जारी नरा, भांग तमाखू खांहि।
परदारा पर घर तकै, जिन कूँ ल्यौं अक नांहि।। २१।।

गरीब, धर्मराय बिनती करै, सुनियो पुरुष कबीर।
जिन कूँ निश्चय पकरि हूँ, जड़िहौं तौंक जंजीर।। २२।।
गरीब, चुंबक रूपी शब्द है, लोहे रूपी जीव।
परदे मांही भेटि हूँ, दर्स परस होय पीव।। २३।।
गरीब, चुंबक हमरा रूप है, लोहे रूपी प्राण।
धर्मराय बंधि मांहि से, हम ले उड़े अचान।। २४।।
गरीब, जा घट नौबत नाम की, जाकूँ पकरै कौन।
खाली कूँ छोड़ू नहीं, रीति जिन की जौंन।। २५।।
गरीब, कर जोरै बंदगी करै, चौदह मुनि दिवान।
सो तो मरकब कीजिये, बिना बंदगी ज्ञान।। २६।।
गरीब, कर्मो सेती रत्त हैं, मुख से कहैं कबीर।
जिन कूँ निश्चय मारि हौं, काढौं बल तकसीर।। २७।।
गरीब, कर्म भ्रम ब्रह्मंड के, पल में कर हूँ नेश।
जिन हमरी दोही दई, सो करो हमारी पेश।। २८।।
गरीब, शिव मंडल ब्रह्मा पुरी, जो विष्णु लोक में होय।
हमरे गुण भूले नहीं, तो आंनि छुटाऊँ तोहि।। २९।।
गरीब, कोटि बहत्तरि उर्वशी, धर्मराय की धीव।
सुर नर मुनि जन मोहिया, बिसरि जात हैं पीव।। ३०।।
गरीब, पीव को हंसा बिसरि हीं, हमरे तुम्हरे नांहि।
धर्मराय कहैं कबीर से, जिन कूँ सर्वस खांहि।। ३१।।
गरीब, साहिब पुरुष कबीर हैं, जूनि परे सो जीव।
लख चौरासी भ्रम हीं, काल जाल घट सीव।। ३२।।
गरीब, साहिब पुरुष कबीर कूँ, देह धरी नहीं कोय।
शब्द स्वरूपी रूप है, घट घट बोलै सोय।। ३३।।
गरीब, अनंत कोटि अवतार हैं, माया के गोविंद।
कर्ता होय होय अवतरै, बहुरि परे जग फंद।। ३४।।
गरीब, त्रिलोकी का राज है, ब्रह्मा विष्णु महेश।
ऊँचा धाम कबीर का, वाणी बिरह विदेश।। ३५।।
गरीब, पिंड ब्रह्मंड की गम नहीं, बुद्धि वाणी से न्यार।
चंद्र सूर पानी पवन, ये हैं शब्द आधार।। ३६।।
गरीब, कूरंभ ऊपर शेष हैं, शेष शीश पर धौल।
धौल धरतरी ले रह्या, परी ज्ञान की रौल।। ३७।।
गरीब, कूंरभ किस के आसरे, कौन शरण है शेष।
बटक बीज विस्तार है, कोई समझे ज्ञान नरेश।। ३८।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड का, एक रत्ती नहीं भार।

साहिब पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।। ३६।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड है, रूंम रूंम की लार।
परानन्दनी शकित है, जाके सृष्टि आधार।। ४०।।
गरीब, अयोध्या दसरथ ना हुते, नहीं रामचंद्र अवतार।
रावण गर्भ न जन्मिया, लंका का सिकदार।। ४१।।
गरीब, बालमीक की देह धरि, आये सतगुरु आप।
सौ करोड़ भोगल कह्या, मेटे तीनौं ताप।। ४२।।
गरीब, रंग रमायन राम का, कह्या विधि संयोग।
धन्य सतगुरु कुरबान जां, ज्ञान ध्यान सब योग।। ४३।।
गरीब, कोटि जुगन जुग पहल ही, ज्ञान सुनाया छंद।
लोक पक्ष की ना कहीं, शब्द कह्या निर्दुन्द।। ४४।।
गरीब, अगम संदेशा आदि है, होते सूर न चंद्र।
शिव विरंचि पतियां भये, बारू जेते इन्द्र।। ४५।।
गरीब, आदि अंत हमरै नहीं, मध्य मिलावा मूल।
ब्रह्मा ज्ञान सुनाईया, धरि पिंडा अस्थूल।। ४६।।
गरीब, ऊँ सोहं ना हुते, ब्रह्म शब्द सहनांन।
वाणी विमल आकाश में, जदि ब्रह्मा दीन्हा ज्ञान।। ४७।।
गरीब, ऊँ मंत्र आदि है, सोहं सुरति तार।
कोली कला पसारिया, धरि ब्रह्मा अवतार।। ४८।।
गरीब, सिन्धु शब्द में सैल करि, आये ब्रह्मा पास।
मंत्र नाम सुनाईया, चेरा कीन्हा दास।। ४६।।
गरीब, एक शब्द से सब रचे, ब्रह्मा विष्णु महेश।
कच्छ मच्छ कूरंभ गति, सहंस फुनी धुनि शेष।। ५०।।
गरीब, आद्या के अधिकार से, पहली ज्ञान हमार।
सत्य पुरुष के पास थे, अदली चौरा ढार।। ५१।।
गरीब, ऊँ मंत्र ऊचरे, सोहं सुरति पियान।
भुवन चतुर्दश लोक सब, बांधे सकल बंधान।। ५२।।
गरीब, क्षीर समुंद्र हम गये, शेष सुनाया नाम।
ररं राम अगाध धुनि, शेष सहंस बलिजांव।। ५३।।
गरीब, हम दाता दानी सरू, ब्रह्मा दीन्हा दान।
शब्द स्वरूपी ऊतरे, सत शब्द निर्बान।। ५४।।
गरीब, हम बैरागी ब्रह्म पद, सन्यासी महादेव।
सोहं मंत्र शिव दिया, सो करै हमारी सेव।। ५५।।
गरीब, सेत भूमिका हम गये, जहां विष्णु विश्वंभर नाथ।
हरिहं हीरा नाम दे, अष्ट कँवल दल स्वांति।। ५६।।

गरीब, आद्या हमरी बहन है, ब्रह्मा विष्णु शिव माय।
चौसठ जुग जब तप किया, धर्मराय लगे पाय।। ५७।।
गरीब, पुरुष लोक से गिर परे, आद्या और धर्मराय।
सतगुरु साक्षीभूत कूँ, नाम धर्या जमराय।। ५८।।
गरीब, सहंस अठासी द्वीप का, दीन्हा तोकूँ राज।
लख चौरासी जाति को, भक्षण करो विराज।। ५९।।
गरीब, खोखापुर में जीव है, बिना नाम प्रतीति।
जिन कूँ तुम भक्षण करो, लख चौरासी रीति।। ६०।।
गरीब, खोखापुर में काग है, कोई कोई हंस हमार।
जिन कूँ तुम नहीं चंपियौं, वै हैं शब्द आधार।। ६१।।
गरीब, धर्मराय रोवै शीश धुनि, खंड होई मम राज।
सहंस अठासी द्वीप में, ज्यूं सिकरा चिड़िया बाज।। ६२।।
गरीब, चौसठ जुग तुम तप किया, तेज पुंज की देह।
आद्या का भक्षण किया, तातैं खावो खेह।। ६३।।
गरीब, अनहद भौंरा भनक हीं, द्वादस उलटे प्राण।
जिन कूँ दंड नहीं दीजिये, मानि हमारी आण।। ६४।।
गरीब, पुरुष कहै धर्मराय से, आद्या सुनियों बैंन।
सहंस अठासी द्वीप में, तुम राज करो सुख चैंन।। ६५।।
गरीब, भग द्वारे भोगो सबै, सुर नर मुनि जन संत।
एक जीव छोडूं नहीं, मोहि पियारे कंत।। ६६।।
गरीब, भग ही द्वारे आव हीं, भग ही द्वारे जांहि।
तीन लोक भक्षण करो, आद्या हमरा नाम।। ६७।।
गरीब, सत्य पुरुष साहिब धनी, बोलै वचन विशाल।
भवसागर में गये हैं, हंस हमारे लाल।। ६८।।
गरीब, सौदागर सौदागरी, बनजी कारण जांहि।
तीन लोक की मांड में, बैठे निज पद मांहि।। ६९।।
गरीब, भग ही द्वारे आवहीं, भग ही द्वारै जांहि।
जैसे सीप समुंद्र में, मोती निपजै मांहि।। ७०।।
गरीब, खारा दरिया नीर है, खारी झाल समंद।
माहें मीठी स्वांति है, वास किया निर्दुन्द।। ७१।।
गरीब, जैसे लाल समुंद्र में, कर से गह्या न जाय।
मुरजीवा होय ल्याव हीं, मँहगै मोल बिकाय।। ७२।।
गरीब, एक रतन जानें बिना, संख रतन से प्रीत।
संख रतन किस काम के, बूझो शब्द उदीत।। ७३।।
गरीब, सूरज चन्दा रतन हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।

कच्छ मच्छ कूरंभ कलि, सहंस मुखी धुनि शेष।। ७४।।
गरीब, एक रतन से उपजे, आद्या और धर्मराय।
को भगनी को भार्या, क्या नारी क्या माय।। ७५।।
गरीब, कौस्तुभ मणि जल से भई, जल से ही विष होय।
जल से कागा हंस हैं, परखि लेत जन कोय।। ७६।।
गरीब, दासी ब्रह्मा विष्णु कै, शिव की जंघा जौंनि।
ऐसी रहनी जो रहै, जिनको भक्षै कौन।। ७७।।
गरीब, ज्यूं मकड़ी मुख तार है, पैठे स्वर्ग पताल।
ऐसे सोहं सुरति से, जीते जौरा काल।। ७८।।
गरीब, सुन्न गगन में चढ़त है, सोहं सुरति विमान।
भुवन चतुर्दश में रमैं, गगन मण्डल मैदान।। ७९।।
गरीब, मार्कण्ड रूमी ऋषि, गोरख कागभुसंड।
नारद आये जूनि में, फोरि गये ब्रह्मण्ड।। ८०।।
गरीब, वसिष्ठ विश्वा व्यास कूँ, सतगुरु दीन्हा नाम।
बहुरि उलटि बूझ्या नहीं, कौन तुम्हारा गाम।। ८१।।
गरीब, गोरख नाम सुनाईया, जब टूटे जम जाल।
चार जुग के योग कूँ, खाय जात है काल।। ८२।।
गरीब, दीन्हा नाम भुशंड कूँ, उर में आसन कीन।
कागा से हंसा भये, कऊवा चंचा मीन।। ८३।।
गरीब, लक्ष्मण लछि कला धरे, रामचंद्र के संग।
सेवक भये सुभान गति, जीते रावण जंग।। ८४।।
गरीब, लंका तोरी तेज से, धनक ध्यान हथियार।
दस मस्तक रावण कटे, मारे बड़ झुझार।। ८५।।
गरीब, सीता ॐ आदि है, लक्ष्मण भये कबीर।
तेतीसौं मुकलस किये, तोरे जम जंजीर।। ८६।।
गरीब, बंधि छूटाई आनि करि, बंदी छोड दयाल।
तेतीसौं के कारणे, उतरे हठी हमाल।। ८७।।
गरीब, ऋषभदेव के आईया, कबि नामे कर्तार।
नौ योगेश्वर में रम्या, जनक विदेह उधार।। ८८।।
गरीब, जनक विदेही जगतगुरु, धर्मराय की बंधि तोर।
शुकदेव कूँ दिक्षा दई, योग जुगति नहीं लोर।। ८९।।
गरीब, अंगद और सुग्रीव सति, हनुमान हितकार।
द्रोणागिरि कूँ ले उड्या, लक्ष्मण राम अधार।। ९०।।
गरीब, दुर्वासा और गरुड कूँ, दीन्हा ज्ञान अपार।
दृष्टि खुली निज ध्यान से, फिर नहीं लगै लगार।। ९१।।

गरीब, नारद सनकादिक सही, वज्र डण्ड वैराग।
योग जीत सतगुरु मिले, उपज्या अति अनुराग।। ९२।।
गरीब, बलदेव बली जब संग थे, कृष्णदेव के पास।
कंस पछारे आंनि कर, किया असुर का नाश।। ९३।।
गरीब, बछासुर बीना लख्या, मार्‌या मंगल रूप।
बलदेव बिलंब नाहीं किया, डारि दिया अंध कूप।। ९४।।
गरीब, मार्‌या बालि बिलोय करि, रामचन्द्र अवतार।
सात चौकड़ी जुग गये, बाला भार उतार।। ९५।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेध में, बालनीक की देह।
संख पंचायन बाजिया, राख्या नहीं संदेह।। ९६।।
गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सतगुरु पुरुष कबीर।
तीन लोक की मेदनी, सुर नर मुनि जन भीर।। ९७।।
गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सब देवन का देव।
कृष्णचन्द्र पग धोईया, करी तास की सेव।। ९८।।
गरीब, पांचौं पंडौं संग हैं, छठ्ठे कृष्ण मुरार।
चलिये हमरी यज्ञ में, समरथ सिरजनहार।। ९९।।
गरीब, सहंस अठासी ऋषि जहां, देवा तेतीस कोटि।
शंख न बाज्या तास ते, रहे चरण में लोटि।। १००।।
गरीब, पंडित द्वादस कोटि हैं, और चौरासी सिद्ध।
शंख न बाज्या तास ते, पिये मान का मध।। १०१।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेध में, सतगुरु किया पियान।
पांचों पंड़ौ संग चलै, और छठा भगवान।। १०२।।
गरीब, सुपच रूप को देख कर, द्रौपदी मानी शंक।
जानि गये जगदीश गुरु, बाजत नाहीं संख।। १०३।।
गरीब, छप्पन भोग संयोग करि, कीनें पंच गिरास।
द्रौपदी के दिल दुई हैं, नाहीं दृढ़ विश्वास।। १०४।।
गरीब, पांचौं पंडौं यज्ञ करी, कल्पवृक्ष की छांहि।
द्रौपदी का दिल बंक है, कण कण बाज्या नांहि।। १०५।।
गरीब, सुर नर मुनि जन यज्ञ में, त्रिलोकी के भूप।
सुपच यज्ञ में आईया, नित बेचत है सूप।। १०६।।
गरीब, छप्पन भोग न भोगिया, कीन्ह पंच गिरास।
खड़ी द्रौपदी उनमुनी, हरदम घालत श्वास।। १०७।।
गरीब, बोले कृष्ण महाबली, क्यूं बाज्या नहीं शंख।
जानराय जगदीश गुरु, काढत है बल बंक।। १०८।।
गरीब, द्रौपदी दिल कूँ साफ कर, चरण कमल ल्यौ लाय।

बालनीक के बाल सम, त्रिलोकी नहीं पाय।। १०९।।
गरीब, चरण कमल कूँ धोय करि, ले द्रोपदी प्रसाद।
अंतर सीना साफ होय, जरै सकल अपराध।। ११०।।
गरीब, बाज्या शंख सुभांन गति, कण कण भई अवाज।
स्वर्ग लोक वाणी सुनी, त्रिलोकी में गाज।। १११।।
गरीब, पंडु राजा पारिंग भये, टूटी जम की बंध।
बंदी छोड अनादि है, सतगुरु कृपा सिंधु।। ११२।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेध में, आये नजर निहाल।
जम राजा की बंधि में, खलहल पर्‌या कमाल।। ११३।।
गरीब, ब्रह्म परायण परम पद, सुपच रूप धरि आय।
बालनीक का नाम धरि, बंधि छुटाई जाय।। ११४।।
गरीब, ये ब्रिदबानें साज हीं, जुगन जुगन जगदीश।
तेतीस कोटि छुटाईया, जदि तोरे भुज बीस।। ११५।।
गरीब, हिरण्याक्षव पृथ्वी हरी, ले पैठे पाताल।
मारे रूप बराह धरि, जम किंकर के साल।। ११६।।
गरीब, हिरणाकुश कूँ तप किया, दस सहंस अधिकार।
ब्रह्म कमंडल छिड़किया, ब्रह्मा दिये दीदार।। ११७।।
गरीब, ब्रह्मरूह ही हम भये, जो मांगै सो लेह।
बोले दूत दयाल होय, मरण मिटै सो देह।। ११८।।
गरीब, अस्त्र शस्त्र ना मरौं, मरौं दिवस अन रैंन।
बाहर भीतर ना मरौं, याह दिक्षा सुख चैंन।। ११९।।
गरीब, हिरणाकुश कूँ तप किया, तप कर पाया राज।
राज तेज कर डुबिया, अंत बिगूत्या काज।। १२०।।
गरीब, प्रहलाद भक्त के कारणैं, धरि नृसिंह अवतार।
पार्‌या खंभा आनि करि, प्रगटी ज्योति अपार।। १२१।।
गरीब, हिरणाकुश के प्राण ले, पार्‌या उदर उदीत।
त्रिलोकी में गाज गति, मेटी सकल अनीति।। १२२।।
गरीब, ध्रुव का अटल पट्टा किया, वैकुण्ठ पौलि पर वास।
ऐसी भक्ति विनोद विधि, अविचल जुग जुग दास।। १२३।।
गरीब, बलि राजा कूँ यज्ञ करी, इन्द्र पुरी के काज।
बावन होकर ऊतरे, धर्‌या विप्र का साज।। १२४।।
गरीब, तीन पैंड पृथ्वी मपी, बलि को दीन्हा दांन।
त्रिलोकी सब ही लई, पीछे मूंध मुहांन।। १२५।।
गरीब, बलि कूँ राज पताल का, सुरपति रहे अमान।
करुणामई दयाल हैं, फरकैं ध्वजा निशान।। १२६।।

गरीब, अंबरीक के तेज से, दुर्वासा दबकंत।
तीन लोक भागे फिरे, ऐसी पदवी संत।। १२७।।
गरीब, भक्ति द्रोही ना बचैं, जो दुर्वासा से हौंहि।
खंड खंड कर मारि हूँ, परमेश्वर की सौंहि।। १२८।।
गरीब, दुर्वासा कैसें बचैं, अंबरीक के चोर।
कृष्णचंद्र बिच कर परे, चक्र सुदर्सन जोर।। १२६।।
गरीब, जोरा देख्या चक्र का, जब ऊठे जगदीश।
खंड खंड कर नाखि है, तोर बगावैं शीश।। १३०।।
गरीब, भक्ति द्रोह काहे किया, रे शठ मूढ गंवार।
चरण कमल तुम धो पीवो, अंबरीक दरबार।। १३१।।
गरीब, दुर्वासा पूठे फिरे, जाय किया प्रणाम।
अंबरीक स्थिर किये, चरण कमल का ध्यान।। १३२।।
गरीब, जय जय जय अंबरीक तूं, जय जय भक्ति विशेष।
तीन लोक की मांड में, रखी हमारी टेक।। १३३।।
गरीब, ताम्रध्वज अरु मोरध्वज, किया यज्ञ आरंभ।
रावल बन कर जित गये, धरिया रूप असंभ।। १३४।।
गरीब, परमात्म रावल भये, सतगुरु सिंह शरीर।
सत्त लंघना यौह शेर है, भक्षण कर बलवीर।। १३५।।
गरीब, ताम्रध्वज और मोरध्वज, रानी किया जुहार।
रावल भेट चढ़ाईये, यौह तन होसी छार।। १३६।।
गरीब, राजा रानी सूं कहै, सुन अबला मेरी बात।
मुझ होते तन देत हौ, तो लगै राज कूँ पात।। १३७।।
गरीब, मोरध्वज कर जोरि करि, ताहि नवाया शीश।
यौह तन भेट चढ़ाईये, करौं सिंह बख्शीश।। १३८।।
गरीब, ताम्रध्वज के शीश पर, आरा धरो करौंत।
रानी राजा खैंचि हैं, लेसी सिंह रसौंत।। १३६।।
गरीब, ताम्रध्वज के शीश पर, आरा दिया चलाय।
रानी राजा खैंचि हैं, कण्ठ कँवल ठहराय।। १४०।।
गरीब, अश्रुपात नैनों चले, अपावन भया शरीर।
हमरा सिंह न खात है, मन कूँ धरी न धीर।। १४१।।
गरीब, रूठे रावल उठ चले, तुम्हारा कच्चा हेत।
चरण कमल राजा लिये, रानी पुत्र समेत।। १४२।।
गरीब, रावल रीझे भक्ति पर, मांग मोरध्वज मांग।
उदय अस्त का राज द्यौं, ध्वजा फरकैं सांग।। १४३।।
गरीब, ताम्रध्वज समर्थ किये, छत्र फिराया शीश।

चरण कमल में राखियौं, सुनि साहिब जगदीश।। १४४।।
गरीब, पौहमी पति राजा करौं, बहुरि वैकुण्ठो वास।
रावल से राजा कहै, मोहि भक्ति की आश।। १४५।।
गरीब, मोक्ष मुक्ति राजा किये, काटे सकल कर्म।
मोरध्वज अस्थिर भये, मेटे सकल भ्रम।। १४६।।
गरीब, संमन कै सतगुरु गये, संग फरीद कमाल।
सत टोहन को ऊतरे, हो सतगुरुअबदाल।। १४७।।
गरीब, संमन नेकी पूछिया, अन्न का कहो विचार।
सतगुरु आये पाहुने, क्या दीजे जौंनार।। १४८।।
गरीब, नेकी संमन से कहै, अन्न नाहीं घर मोर।
सतगुरु के प्रसाद कूँ, घर ल्यावो कोई फोर।। १४९।।
गरीब, मांग्या मिलै न कर्ज दे, आनि बनी बहु भीर।
कहि नेकी क्या कीजिये, ल्या धरैं तुम्हारा चीर।। १५०।।
गरीब, धरने लायक चीर कित, पाट्या पटल मोहि।
संमन से नेकी कहै, चोरी जावो तोहि।। १५१।।
गरीब, सेऊ माता से कहै, चोरी खट्या खांहि।
माल बिराना मुसहरैं, जिन के सर्वस जांहि।। १५२।।
गरीब, माता पुत्र से कहै, सुनि सेऊ सुर ज्ञान।
या में नहीं अकाज है, चोरी कर दे दान।। १५३।।
गरीब, सतगुरु दीन्हा बैठना, आसन दिये बिछाय।
शेख फरीद कमाल कूँ लिये सुतार चढ़ाय।। १५४।।
गरीब, शब्द उचारै धुनि करै, सतगुरु आये आज।
संमन से नेकी कहै, घर में नाहीं नाज।। १५५।।
गरीब, सुनो शब्द चित्त लाय कर, हौनी होय सो होय।
सब विधि काज समार ही, चरण कमल चित्त पोय।। १५६।।
गरीब, सतगुरु आये पाहुनें, मिहमानी करि स्यांह।
सेऊ माता से कहै, शीश बेचि धरि स्यांह।। १५७।।
गरीब, सुनि रे पुत्र शिरोमणि, नेकी कहै निराठि।
सतगुरु आये पाहुनें, करो शीश की साटि।। १५८।।
गरीब, शेख फरीद कमाल कूँ, बोले वचन सुशील।
संमन से सतगुरु कहै, भोजन की क्या ढील।। १५९।।
गरीब, सतगुरु से संमन कहै, करो ध्यान असनान।
भोजन पाख षिलायस्यां, ऊगमते ही भान।। १६०।।
गरीब, अर्ध रात चोरी चले, सेऊ संमन साथ।
कुंभल दीन्हा जाय करि, नाज लग्या जहां हाथ।। १६१।।

गरीब, कुंभल में सेऊ बड़े, लाई बड़ी जु बेर।
हम तो फाके ही रहैं, तुम ल्याईयो तीनै सेर।। १६२।।
गरीब, तीन सेर अन्न बांधि कर, पहली दिया चलाय।
पीछे बनियां जागिया, सेऊ पकर्‌या आय।। १६३।।
गरीब, चोर चोर बनियां कहै, सेऊ पकरी मौंन।
ठाड्‌यो काहे बोलिये, तीन सेर लिया चौंन।। १६४।।
गरीब, बनिये रस्सा घालि कर, दिया खंभ से बांधि।
संमन डेरे ले गया, नेकी रोटी छांदि।। १६५।।
गरीब, करद लई एक हाथ में, उलटे चले संमन।
सेऊ टुक बतलाय ले, सूना पर्‌या भवन।। १६६।।
गरीब, बनियां से सेऊ कहै, बाहर हमरा बाप।
झूठी शाख न बोल हूँ, शीश चढ़त मोहि पाप।। १६७।।
गरीब, खंभा से पग बांधि दे, बाहर काढौं शीश।
दोय बात बतलाय ल्यौं, साक्षी हैं जगदीश।। १६८।।
गरीब, पिता शीश सिर काटि ले, सन्मुख करद चलाय।
ताक बीच धरि दीजियौं, बनिये पकरे पाय।। १६९।।
गरीब, संमन करद चलाईया, सन्मुख काट्‌या शीश।
काटत ही कसक्या नहीं, दृढ है बिसवे बीस।। १७०।।
गरीब, शीश काटि घर ले गया, ताख बीच धरि दीन।
नेकी करै रसोईयां, ज्ञान ध्यान प्रवीन।। १७१।।
गरीब, संमन तैं नेकी करी, सेऊ का सिर काट।
तन देही कित डारिया, फेरा करियो हाट।। १७२।।
गरीब, संमन से सतगुरु कहै, सेऊ आया नांहि।
देही तो शूली धरी, शीश ताक कै मांहि।। १७३।।
गरीब, संमन से सतगुरु कहै, नेकी मन आनन्द।
शीश काट घर में धर्‌या, मात पिता धन्य धन्य।। १७४।।
गरीब, सतगुरु से संमन कहै, सुनो फरीदा गल।
इब के सतगुरु आयसी, देसां शीश पहल।। १७५।।
गरीब, सतगुरु से नेकी कहै, सुनो फरीदा बात।
आधी भक्ति कमाईया, रहे पिता पुत्र नहीं साथ।। १७६।।
गरीब, भौंहो कर हूँ आरता, पलकौं चौंर ढुराय।
संमन से नेकी कहै, द्यौंह अपना शीश चढ़ाय।। १७७।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल से, सुनों फरीदा फेर।
संमन के घर साच है, इत मत लावो बेर।। १७८।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल से, सुनों फरीदा यार।

संमन के घर साच है, ये धरि हैं शीश उतार।। १७६।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल से, सुनों फरीदा बात।
संमन के घर साच है, शीश चढ़े स्यौं गात।। १८०।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल से, सुनों फरीदा सैंन।
संमन के घर साच है, ये बोलै आदू बैंन।। १८१।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल से, सुनों फरीदा ख्याल।
संमन के घर साच है, ये कीजे नजर निहाल।। १८२।।
गरीब , जेते अंबर तारियां, तेते अवगुण मोहि।
धड़ सूली सिर ताख में, सतगुरु तो नहीं बिसरौं तोहि।। १८३।।
गरीब, छह दौने परोसियां, सतगुरु पुरुष कबीर।
सेऊ बोले ताख में, मैं हूँ दामनगीर।। १८४।।
गरीब, आवो सेऊ जीम ल्यौ, यौह प्रसाद प्रेम।
शीश कटत हैं चोर के, साधौं के नित क्षेम।। १८५।।
गरीब, सेऊ धड़ पर सिर चढ़्या, बैठे पंगत मांहि।
नहीं घरहड़ा नाड़ि के, वह सेऊ अक नांहि।। १८६।।
गरीब, छप्पन भोग करै धनी, भये संमन कै ठाठ।
कहै कबीर कमाल से, चलो फरीदा बाट।। १८७।।
गरीब, अष्टसिद्धि नौनिद्धि आंगनैं, अन्न धन दिये अनन्त।
सेऊ संमन अमर कछ, नेकी पद बेअन्त।। १८८।।
गरीब, पातशाह नौशेरवा, अन्न धन नांहीं फेर।
अस्सी गंज ले पीर के, दिये खजाने गेर।। १८६।।
गरीब, अस्सी गंज कोयले भये, गरके जिन्द जमाल।
पातशाह नौशेरवे कूँ, दिखलाया है ख्याल।। १६०।।
गरीब, अस्सी गंज सतगुरु दिये, खैरायत नहीं एक।
पातशाह नौशेरवे कूँ, बाँटे अनन्त अनेक।। १६१।।
गरीब, बुगदाद बिलायत बलख लग, दिल्ली अकबराबाद।
पातशाह नौशेरवे कूँ, इत लग सरू मुराद।। १६२।।
गरीब, जिन्द जमाल खलील परि, कुफर पर्‍या है आंनि।
पातशाह नौशेरवे कूँ, सतगुरु भेटे जांनि।। १६३।।
गरीब, पंजा दस्त कबीर का, सिर पर अर्श अमान।
पातशाह नौशेरवे से, आनि भये सुलतान।। १६४।।
गरीब, अठारह लाख तुरा दिया, सोलह सहंस हुरंभ।
सतगुरु मिले शिकार में, मार्‍या बांन असंभ।। १६५।।
गरीब, अजब नवेली पदमनी, अजब नवेले भोग।
देख अधम सुलतान कूँ, कैसे लीन्हा योग।। १६६।।

गरीब, अजब नवेले महल है, अजब नवेली सेज।
अजब नवेली कामनी, कैसे टूट्या हेज।। १६७।।
गरीब, अजब नवेला तखत है, अजब नवेली फौज।
बंधन टूटे मोह के, भई सतगुरु की मौज।। १६८।।
गरीब, माल खजाने सब तजे, तजे राज अरु पाट।
सतगुरु से सौदा भया, करी कबीरा साट।। १६६।।
गरीब, गगन मंडल से ऊतरे, साहिब पुरुष कबीर।
चौला धर्या खवास का, तोरे जम जंजीर।। २००।।
गरीब, काटे बंधन मोह के, निर्भय भये निशंक।
अन हौनी हौनी करी, मेटि कर्म के अंक।। २०१।।
गरीब, कफनी ताखी पहरि कर, चले अधम सुलतान।
खलक मुलक रोवत रह्या, छाडे मीर दिवान।। २०२।।
गरीब, खुध्या लगी सुलतान कूँ, मालनि बेचे बेर।
ढाई लाख की पावड़ी, दई पलक में गेर।। २०३।।
गरीब, सेर बेर मालनि दिये, एक बेर की आश।
एक बेर के कारणै, बीती बहुत तिरास।। २०४।।
गरीब, दीन दुनी सब ही तजी, छाड्या बलख बुखार।
एक बेर के कारणै, घाल्या हाथ गंवार।। २०५।।
गरीब, या सुख से सुख संख गुन, ब्रह्म शब्द के मांहि।
सतगुरु मिलैं कबीर से, तो सतलोक ले जांहि।। २०६।।
गरीब, जैसे बादल गगन में, आंनि धरत हैं देह।
घटा गरज और दामनी, बरषन लाग्या मेह।। २०७।।
गरीब, कित सेती उदगार है, कहां होत है लीन।
घटा गरज और दामनी, कहां गये ये तीन।। २०८।।
गरीब, जैसे बादल गगन में, चलते हैं बिन पाय।
ऐसे पुरुष कबीर जी, सुंन में रहे समाय।। २०६।।
गरीब, जैसे बादल गगन में, चलै पौंन के तेज।
नूरे का पिण्डा धरै, नूर तखत है सेज।। २१०।।
गरीब, जैसे बादल गगन में, चलते हैं बिन पंथ।
रसना सब रस लेत है, स्वाद न जानैं दंत।। २११।।
गरीब, शठ संध्या क्या जानि हैं, दंत रूप तन देह।
रसना रूपी संत हैं, मेटैं सकल संदेह।। २१२।।
गरीब, ज्यूं के त्यूं ही कान हैं, बहिरा सुनै न नाद।
चिसम्यौं वाले अंध हैं, सूझे नहीं अगाध।। २१३।।
गरीब, एक हसती की पैडि में, सब जीवों की पैडि।

सार शब्द चीन्हे बिना, दुनियां घाले खैडि।। २१४।।
गरीब, आदू आदि कबीर है, चौदह भुवन विशाल।
हीरे मोती बहुत हैं, कबीर लालन सिर लाल।। २१५।।
गरीब, दहनैं दस्त दयाल के, फूल एक गुलजार।
छत्र ऊपर आय रह्या, झिलमिल रंग अपार।। २१६।।
गरीब, दसौं दिसा कूँ चरण हैं, दसौं दिसा कूँ शीश।
दसौं दिसा भुज दस्त हैं, है अविगत जगदीश।। २१७।।
गरीब, दसौं दिसा कूँ नैंन हैं, दसौं दिसा कूँ बैंन।
दसौं दिसा कूँ श्रवणं, अविगत मूरति ऐंन।। २१८।।
गरीब, रापति के सी देह है, चींटी के सी पैड़।
बिन सतगुरु सूझै नहीं तीन लोक में ऐड़।। २१९।।
गरीब, रापति के सा अंग है, चींटी के से पाँव।
बिन सतगुरु सूझे नहीं, तीन लोक फिर आव।। २२०।।
गरीब, रापति के से चरण हैं, चींटी के सा अंग।
आदि अन्त जाके नहीं, मूर्ति अचल अभंग।। २२१।।
गरीब, सुंन सलहला पंथ है, सुंन सलहला धाम।
सुंन सलहली सैल है, सुंन सलहला नाम।। २२२।।
गरीब, सुरति निरति से आगही, मन बुद्धि सेती दूर।
ऊँ सोहं मध्य हैं, रह्या सकल घट पूर।। २२३।।
गरीब, चंद्र सूर की खानि है, तारागण जिस मांहि।
पानी पवन और अग्नि मध्य, ये गुण तहां समांहि।। २२४।।
गरीब, दया धर्म और ज्ञान बुद्धि, क्षमा विवेक विचार।
अष्ट अनाहद बंदगी, शील भजन आधार।। २२५।।
गरीब, संतोष समाना सकल में, चलै न जाका मन।
अष्ट सिद्धि नौ निद्धि लार हैं, पाया राम रतन।। २२६।।
गरीब, ललो पतो की भक्ति है, तीन लोक जग मांहि।
तन मन धन अर्पण करैं, सो कहीं बिरले ठांहि।। २२७।।
गरीब, द्वादस तिलक बनाय कर, फांसी लीन्ही हाथ।
विष के लड्डू देत हैं, जीवौं ऊपर घात।। २२८।।
गरीब, नाना वर्णं भेष है, षट दर्शन के मांहि।
वचन हमारा मानियौं, ये पंथ रसातल जांहि।। २२९।।
गरीब, पंथौं परे सो बहि गये, हमरी बाट अपंथ।
शब्द हमारा मानियौं, सेवो सतगुरु संत।। २३०।।
गरीब, कै पूजो परब्रह्म कूँ, कै पूजो तिहूँ देव।
कै पूजो माया आदि कूँ, कै पूरा सतगुरु सेव।। २३१।।

गरीब, क्षेत्र पात्र बोईये, ज्यूं रीझै जगदीश।
खेत गदहरा खा गया, करि कामधेनु की रीस।। २३२।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अवश्मेध में, पंडित द्वादस क्रोड़ि।
बालनीक मुख बोवते, दीन्हा शंख घमोड़।। २३३।।
गरीब, सतगुरु संगति छाडि करि, कोटि जन्म तप कीन।
इन्द्रिय कर्म न मोक्ष होहि, जमराय के आधीन।। २३४।।
गरीब, छहूँ शास्त्र कण्ठ हैं, पढ़ि हैं च्यारौं वेद।
इन्द्रिय कर्म न थीर होहि, कोटि करो अश्वमेध।। २३५।।
दान करै सो भोग ही, लाग्या बहुत लगार।
च्यार वेद पंडित पढ़े, सिर पर धरी बिगार।। २३६।।
गरीब, दानी ज्ञानी बझि गये, बूडे भवजल मांहि।
तीन लोक की मांड में, फिर फिर आवैं जांहि।। २३७।।
गरीब, ज्यूं हरहट की माल में, करुवे लाग्या कर्म।
फेरा स्वर्ग पताल में, ऐसा दान धर्म।। २३८।।
गरीब, बिन इच्छा जो देत है, साहिब संतों नाल।
जाका फल बांचै नहीं, कंपे जौंरा काल।। २३६।।
गरीब, राम नाम मुख से कहै, कर से देवै दान।
जाका फल बांचै नहीं, जिन के उर में ज्ञान।। २४०।।
गरीब, बूक बाकला देय करि, प्राण दान कर दीन।
चकवै पृथ्वी पर भये, बहुरि दान तप छीन।। २४१।।
गरीब, अपने घट में बंदगी, करि देखो सब कोय।
शेष रसातल गगन ध्रू, सो क्यूं छाना होय।। २४२।।
गरीब, अपने घट में बंदगी, करिया ध्रुव प्रहलाद।
मारे काटे ना कटै, लीला अगम अगाध।। २४३।।
गरीब, सेर नाज की कल्प थी, अटल पट्टा लिख दीन।
सतगुरु साहिब की बंदगी, करै सोई प्रवीन।। २४४।।
गरीब, सेर नाज की कल्प थी, अमर कछ कर दीन।
ऐसा सतगुरु सेईये, खुल्हैं ध्यान दुरबीन।। २४५।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष निधि, है रसनां के तीर।
फिटरे मूर्ख मानवी, सेर नाज की भीर।। २४६।।
गरीब, कामधेनु कल्पवृक्ष कलि, है रसनां के मांहि।
तीन लोक का राज सब, चरण कमल की छांहि।। २४७।।
गरीब, इन्द्र वरुण कुबेर होई, ब्रह्मा विष्णु महेश।
करि साहिब की बंदगी, यामें नहीं अंदेश।। २४८।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मा भये, अनन्त कोटि भये ईश।

साहिब तेरी बंदगी, जीव होत जगदीश।। २४६।।
गरीब, सतगुरु दाता देव है, ज्ञान ध्यान वैराग।
जो नर लागै बंदगी, जिनके मोटे भाग।। २५०।।
गरीब, एक तो तारै पिंड कूँ, एक तारत हैं खंड।
एक तारै कुल अपना, एक तारै ब्रह्मण्ड।। २५१।।
गरीब, सिद्ध तारै पिंड आपना, साधु तारै खंड।
सो तो सतगुरु जानिये, जो तारै ब्रह्मण्ड।। २५२।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड की, कल्प करै दिल मांहि।
लख चौरासी पद मिले, बहुरि न आवैं जांहि।। २५३।।
गरीब, ऐसी ऊंची भक्ति है, ऐसा ऊंचा नाम।
जो नर लागै बंदगी, जिनकी मैं बलि जांव।। २५४।।
गरीब, साहिब से सुंनहा भया, भजन बंदगी छाडि।
सुंनहा भया चमार के, मुख में चाबै हाड।। २५५।।
गरीब, इहां लग नीचे कर्म हैं, उहां लग ऊंचा गाम।
सुंनहा साहिब होत हैं, बहुरि संभाले नाम।। २५६।।
गरीब, अपकीर्ति आनन्द घन, सुख सागर में वास।
सतगुरु दाता देत है, रे नर भक्ति निवास।। २५७।।
गरीब, बोहित नाम जिहाज है, इस में बैठो आय।
सतगुरु खेवट संग है, दे हैं पार लंघाय।। २५८।।
गरीब, नौका नाम जिहाज है, बैठो सन्त विचार।
सुरति निरति मन पवन का, खेवा होवै पार।। २५९।।
गरीब, राम रसायन बाहरा, कोटि रसायन कीन।
नाहक भटके मानवी, रे मूर्ख बुद्धि हीन।। २६०।।
गरीब, दासी पुत्र छाडि करि, जयदेव रामति कीन।
राजा पूज्या जांनि करि, मौहर असरफी दीन।। २६१।।
गरीब, एक वर्ष जयदेव रहे, राजा के अस्थान।
संत चले हैं नगर कूँ, पूजा करी निदान।। २६२।।
गरीब, छापे तिलक बनाय करि, ठग चाले हैं साथ।
गल में फांसी डार करि, काटे दोनूं हाथ।। २६३।।
गरीब, जयदेव डारे कूप में, लई मातरा मांगि।
बालदि उतरी आन करि, बनजार्यौं की दांगि।। २६४।।
गरीब, जयदेव काढ्या कूप से, नायक पूछी बात।
कहो जहां पहुंचाय दे, औषध लाई हाथ।। २६५।।
गरीब, जयदेव म्यानैं बैठ कर, गये नगर उस धाम।
राजा आगेई मिले, सुन्या संत का नाम।। २६६।।

गरीब, द्वादस वर्ष दया करी, बैठे बाग मंझार।
राजा रानी शिष्य भये, दीन्ही जग जौंनार।। २६७।।
गरीब, बीते द्वादस वर्ष जदि, परे तीन दुरभंछ।
वै ठग मांगत आईया, जयदेव दर्शन अंछ।। २६८।।
गरीब, जयदेव कूँ आदर किया, ठग बैठाये पास।
करै अधीनी बंदगी, वै ठग भये उदास।। २६९।।
गरीब, राजा से जयदेव कह्या, ये दो मित्र हमार।
इनकी पूजा कीजिये, ले अपना जन्म सुधार।। २७०।।
गरीब, एक वर्ष राखे तहां, छप्पन भोग खवाय।
चाले जब पूजा करी, दीन्हा माल लदाय।। २७१।।
गरीब, घोरे जोरे बहु दिये, थैली दीनी बीस।
जयदेव राजा पूजा करी, देते चले आशीश।। २७२।।
गरीब, संग बुलाये तोबची, दिये कुमैती साथ।
आनन्द मंगल बहु भये, चाले करते बात।। २७३।।
गरीब, हद सेती बाहर भये, कीन्हा ठगौं जुहार।
जयदेव तुमरा क्या लगै, हम से कहौ विचार।। २७४।।
गरीब, झूठे कपटी चोर ठग, कृतघ्नी कलि मांहि।
जयदेव की निन्दा करी, साहिब सोचे नांहि।। २७५।।
गरीब, रानी से खोटा किया, जयदेव पकरे आय।
जा दिन इस के कर कटे, हमौं छुटाया जाय।। २७६।।
गरीब, शिला छुटी असमान से, आये संपट बीच।
धरती में गारत गये, वै ठग दोनो नीच।। २७७।।
गरीब, जब जयदेव कूँ कर मले, हर हर किया हजूर।
दोनौं पंजे दस्त के, होय गये भरपूर।। २७८।।
गरीब, जयदेव से राजा कहै, कारण कौन अगाध।
विधि संयोग बताईयो, परम सनेही साध।। २७९।।
गरीब, साध शिला नीचे दबे, मित्र हामरे प्राण।
राजा से जयदेव कहै, बूझ हमारा ज्ञान।। २८०।।
गरीब, करुना सेती कर बंधे, प्रश्न कहौ दयाल।
वै दोनो गारत गये, शिला परी अबदाल।। २८१।।
गरीब, पूरबला संयोग कुछ, मैं जानत हूँ काहि।
मित्र हमारे मर गये, जयदेव दीनी धाहि।। २८२।।
गरीब, तेजपुंज के हो गये, जयदेव संत सुजान।
पिण्ड तुम्हारा नूर का, दरगह आब दिवान।। २८३।।
गरीब, चाकर चरवादार सब, आये राजा पास।

कैसे वै दोनूं मुये, हम से कहौ सुवास।। २८४।।
गरीब, स्वामी की निन्दा करी, काढे ऐब सबाब।
शिला परी अजगैब से, आया नहीं जुबाब।। २८५।।
गरीब, जयदेव से राजा कहै, कारण कौन दयाल।
बदन तुम्हारा नूर का, वै भक्षण किये काल।। २८६।।
गरीब, जयदेव राजा से कहै, लीला अगम अपार।
पूरबला संयोग कुछ, हुई जु होने हार।। २८७।।
गरीब, दरगह बीच निसाफ है, दम दम लेखा होय।
जयदेव के कर कट गये, जानत है सब कोय।। २८८।।
गरीब, जयदेव कूँ नाहीं कहीं, तीनूं लोक अवाज।
जरना ऊपर होत है, सबही पूर्ण काज।। २८९।।
गरीब, हाहा हूहू तप किया, दस सहंस दर हाल।
पौंहचे हैं वैकुण्ठ में, मांग्या बहुरि जुवाल।। २९०।।
गरीब, लघु दीर्घ को कहि सकै, मानत हैं सब शंक।
पौंहचे ब्रह्मा लोक में, उड़े पवन की पंख।। २९१।।
गरीब, ब्रह्मा कहै विचार करि, सुनियों पुत्र संदेश।
जावौ शिव के लोक कूँ, हौना पद में नेश।। २९२।।
गरीब, शिव मंडल पौंहचे सही, हाहा हूहू संत।
मन के बेगि विमान चढ़ि, आई तप की अंत।। २९३।।
गरीब, संखौं गण हर हर करैं, शिव की लगी समाधि।
हाहा हूहू खड़े हैं, मन में लिये उपाधि।। २९४।।
गरीब, शिव शंकर बोले तहां, सुनियों पुत्र अज्ञान।
विष्णु लोक में जाय कर, अर्पण करौ प्रान।। २९५।।
गरीब, विष्णु लोक में जाय करि, कीन्हा जाय संवाद।
कह्या विश्वंभर नाथ कूँ, छाडौ वाद विवाद।। २९६।।
गरीब, वरुण कुबेर धर्मराय कूँ, दीन्हा ज्ञान विवेक।
तप की इच्छा छाडि कर, चीन्हो शब्द अलेख।। २९७।।
गरीब, पौंहचे सुरपति लोक कूँ, इन्द्रपुरी के मांहि।
खिलस उठावौं बीच से, इन्द्र कहै बलि जांहि।। २९८।।
गरीब, इन्द्र सुरपति कूँ कह्या, सुनौं संत सुर ज्ञान।
मातंग तपसी रहत है, जा पै पूछो ध्यान।। २९९।।
गरीब, हाहा हूहू गये हैं, मातंग तपसी पास।
जाय किया प्रणाम जित, हम हैं तुम्हरे दास।। ३००।।
गरीब, आनंद घन में गरक हैं, सोहं सुरति समाध।
रापति गिराह ज्ञान गति, लीला अगम अगाध।। ३०१।।

गरीब, हाहा हूहू परै हैं, पृथ्वी ऊपर आय।
दस सहंस तप छीन है, चौरासी में जाय।। ३०२।।
गरीब, गज ग्राह बने जहां, बनखंड दरिया मांहि।
वर्ष सहंस युद्ध भया, निर्बल कोई नांहि।। ३०३।।
गरीब, पानी पीवन गज गया, पकर्‌या चरण ग्राह।
परी समुंद्र धूम बहु, जल दरिया बेथाह।। ३०४।।
गरीब, चारा निबर्‌या जदि थक्या, भया श्वास बल हीन।
ग्राह लिया जल लीह में, भया तहां आधीन।। ३०५।।
गरीब, नासां अंदर जल पर्‌या, टूटे स्वास शरीर।
रैरं राम अगाध धुंनि, सुमरे हैं रघुवीर।। ३०६।।
गरीब, प्राण पिण्ड के मांहि थे, साहिब समर्थ आप।
ररंकार धुंनि ऊचरे, मेटे तीनूं ताप।। ३०७।।
गरीब, तारा सा टूट्‌या जहां, गगन मंडल के मांहि।
गज अरु ग्राह उबारिया, धन्य समर्थ बलिजांव।। ३०८।।
गरीब, दिव्य रूप तन मन भया, दोनूं किया जुहार।
कमल नैंन नजरौं परे, भये दर्स दीदार।। ३०९।।
गरीब, पौंहचें सुरपति लोक कूँ, मातंग तपसी पास।
चरण कमल जाके लिये, हम हैं तुम्हरे दास।। ३१०।।
गरीब, अमर कछ आनंद पद, संख कल्प जुग थीर।
मातंग तपसी कूँ कह्या, टूटे जम जंजीर।। ३११।।
गरीब, अहूँ अग्नि में जरत हैं, सुर नर मुनि जन देव।
मैं मेरी के कारणै, चौरासी भुगतेव।। ३१२।।
गरीब, पूर्व जन्म पिछान ल्यो, भजन बंदगी साध।
पिछले ही तप से हुई, पूर्ण हंस मुराद।। ३१३।।
गरीब, अहूँ अग्नि सब जर बुझी, निर्मल भये शरीर।
चरण कमल के ध्यान से, संख कल्प जुग थीर।। ३१४।।
गरीब, गौतम ऋषि और इन्द्र का, एक दिन भया संवाद।
पर्वत लोका लोक की, प्रदक्षिणा आराध।। ३१५।।
गरीब, अहिल्या के बदन पर, देवा है आधीन।
पर्वत लोका लोक की, प्रदक्षिणा दोऊ दीन।। ३१६।।
गरीब, रापति इन्द्र पलानियां, पवन परेवा ध्यान।
गौतम ऋषि मन बेग से, पहली पौंहचे आन।। ३१७।।
गरीब, सुरपति इन्द्र देव की, पैज पिछोडी होय।
काम लुब्धि के कारणैं, अहिल्या मन मोहि।। ३१८।।
गरीब, गौतम ऋषि का रूप धरि, किया अहिल्या संग।

काम लुब्धि सुरपति ठग्या, गौतम ऋषि गये गंग।। ३१६।।
गरीब, गौतम ऋषि पूठे फिरे, आये है गृहद्वार।
इन्द्र सहंस भग हो गये, चंद्र लगी मृगछार।। ३२०।।
गरीब, अहिल्या पाहन भई, शिला संपट भया अंग।
पड़ौ समुंद्र घाट पर, मन चंचल भया भंग।। ३२१।।
गरीब, कहै अहिल्या पुरुष से, चरण कमल धरि ध्यान।
कौन समय अघ मोक्ष होहि, कहौ वचन प्रवान।। ३२२।।
गरीब, रामचंद्र अवतार धरि, आवैं अयोध्या मांहि।
चरण कमल की रज परै, सकल कर्म कटि जांहि।। ३२३।।
गरीब, एक समय ऐसी भई, आये विश्वभर नाथ।
कौशिल्या के जन्मिया, भई जगत में स्वांति।। ३२४।।
गरीब, रापति घोड़े दान दे, सुवर्ण भार अपार।
आनंद मंगल बहु भये, आये सिरजनहार।। ३२५।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश लग, नारद कागभुशंड।
आये हैं दीदार कूँ, पूर्ण ब्रह्म अखंड।। ३२६।।
गरीब, सुर नर मुनि जन देवता, गण गंधर्व गलतान।
आये दर्शन कारणैं, चरण कमल प्रवान।। ३२७।।
गरीब, वसिष्ठ विश्वामित्र कूँ, रामचंद्र धरि नाम।
ये धनी विश्वंभरनाथ हैं, सारैं सब ही काम।। ३२८।।
गरीब, भरत चितर लक्ष्मण भये, पृथ्वी हुई सुनाथ।
दृष्टि परी जगदीश की, भये असुर सब मात।। ३२६।।
गरीब, पृथ्वी की प्रदक्षिणा, राम रु लक्ष्मण दीन।
वसिष्ठ भये हैं सारथी, ज्ञान ध्यान प्रवीन।। ३३०।।
गरीब, यज्ञ आरंभ करी तहां, समटे तीनूं लोक।
परमात्म का दर्स करि, आत्म पावै पोष।। ३३१।।
गरीब, एक समय ऐसी सधी, गमन किया कर्तार।
चरण कमल की रज परी, अहिल्या दीदार।। ३३२।।
गरीब, गौतम ऋषि की स्त्री, भई देवांगना फेर।
चरण कमल की रज परी, काटे कर्म सुमेर।। ३३३।।
गरीब, नल कूँबर कूँ मद्य पिया, गये सरोवर न्हान।
भये दिवाने अमल में, खबर नहीं तन प्राण।। ३३४।।
गरीब, नारद मुनि आये तहां, देखे कर्म उपाधि।
अपलक्षण बहु करत हैं, देवा वाद विवाद।। ३३५।।
गरीब, नल कूँबर नग्न खड़े, वस्त्र नाहीं अंग।
संग तास देवांगना, देखत होय मन भंग।। ३३६।।

गरीब, लज्जा नाहीं लोक की, नल कूँबर बेदीन।
अकलि दई अकूप से, नारद मुनि प्रवीन।। ३३७।।
गरीब, भिस्ट हुये मद्य पीय करि, नारद की नहीं कान।
जड़ जूनी देही धरो, मृत्युलोक तजि प्राण।। ३३८।।
गरीब, छूटी देह शरीर तन, अर्जुन जुमला कीन।
वृक्ष भये हैं आनि करि, वृन्दावन में लीन।। ३३९।।
गरीब, काली दह पर ऊगिया, अर्जुन जुमला आय।
नारद मुनि के वचन की, समझ न आई ताहि।। ३४०।।
गरीब, अवगुन मानि अज्ञान गति, लग्या श्राप शरीर।
जड़ जूनी देही धरी, समझ न आई कीर।। ३४१।।
गरीब, किया हजूम कुबेर बहु, सब देवन के मांहि।
पुत्र गये हैं प्राण तजि, कल वृक्षौं की छांहि।। ३४२।।
गरीब, महाबली निर्वाण बुद्धि, नारद मुनि महमंत।
कौन कहै जिस जाय करि, करुणा करैं अनन्त।। ३४३।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश हैं, इन्द्र कुबेर वरुण।
लोक पाल सब ही कहैं, लरके तोहि शरण।। ३४४।।
गरीब, बोले नारद मुनि जहां, सुनियों पिता विशेष।
नल कूँबर तो जड़ भये, मेटा शब्द अलेख।। ३४५।।
गरीब, लीये कदम कुबेर कूँ, नारद मुनि के पाय।
कौन समय अघ मोक्ष होहि, हम कूँ द्यौह बताय।। ३४६।।
गरीब, नारद भये दयाल जब, सिर पर धरिया हाथ।
बे अदबी नहीं कीजिये, साहिब संतो साथ।। ३४७।।
गरीब, जुग प्रवान श्राप है, कल्प काल मुख मांहि।
जमराय के पुर जात हैं, बहुरि मिलावा नांहि।। ३४८।।
गरीब, आधीनी के पास हैं, पूर्ण ब्रह्म दयाल।
मान बड़ाई मारिये, बेअदबी सिर काल।। ३४९।।
गरीब, ऐसा काल महाबली, कंपै शंकर शेष।
ब्रह्मा विष्णु विश्वंभरं जाके पकरे केश।। ३५०।।
गरीब, महाकाल की निरति में, चूरन लख ब्रह्मण्ड।
तोहि पुत्र की क्या चलै, शिव ब्रह्मा सिर दण्ड।। ३५१।।
गरीब, कृष्णचंद्र अवतार धरि, भूमंडल में आय।
कंस केश चाणूर कूँ, मारेंगे सतभाय।। ३५२।।
गरीब, कालीदह में नाग है, पंछी होत भसंम।
दोपा चौपा क्या बचै, तक्षक ताहि इसंम।। ३५३।।
गरीब, यदु वंशी यादव कुली, वसुदेव पिता कहाय।

भक्ति हेत के कारणैं, आवैंगे रघुराय।। ३५४।।
गरीब, कालीदह में कूदि हैं, नृत्य करि हैं जगदीश।
सर्प जूनि छूटे तहां, आवैंगे जब ईश।। ३५५।।
गरीब, अर्जुन जुमला वृक्ष हैं, ऊभ सूक तन देह।
चतुरभुजी पाड़े तहां, मिट हैं सकल संदेह।। ३५६।।
गरीब, आवैंगे वैकुण्ठ कूँ, नल कूबर निर्बान।
अमर कछ ताकूँ करौं, मोहि वचन प्रवान।। ३५७।।
गरीब, सतगुरु शमस तबरेज कूँ, महजदि चरण लगाय।
मक्के से बगदाद में, पल में पौंहची जाय।। ३५८।।
गरीब, सतगुरु शमस तबरेज कूँ, धरी अली की देह।
फातम के भर्तार कूँ, मेटा नबी संदेह।। ३५९।।
गरीब, देह परी नहीं तास की, अली अलह की जात।
दसौं दिसा मक्का फिर्या, सुलतान अधम की साथ।। ३६०।।
गरीब, राबी कूँ सतगुरु मिले, दीन्हा अपना तेज।
ब्याही एक सहाब से, बीबी चढ़ी न सेज।। ३६१।।
गरीब, राबी मक्के कूँ चली, धर्या अलह का ध्यान।
कुत्ती एक प्यासी खड़ी, छुटे जात हैं प्राण।। ३६२।।
गरीब, केश उपारे शीश के, बाटी रस्सी बीन।
जाकै वस्त्र बांधि करि, जल काढ्या प्रवीन।। ३६३।।
गरीब, सुंनही कूँ पानी पिया, उतरी अर्श अवाज।
तीन मजल मक्का गया, बीबी तुम्हरे काज।। ३६४।।
गरीब, बीबी मक्के पर चढ़ी, राबी रंग अपार।
एक लाख अस्सी जहां, देखे सब संसार।। ३६५।।
गरीब, राबी पटरा घालि कर, किया जहां अस्नान।
एक लाख अस्सी बहे, मगर मले सुलतान।। ३६६।।
गरीब, सिमली कूँ सतगुरु मिले, संग भाई मनशूर।
प्याला उतर्या अर्श तैं, काटै कौन कसूर।। ३६७।।
गरीब, सिर काट्या मनशूर का, दोनूं भुजा समेत।
शूली चढ्या पुकारता, कदे न छाडौं खेत।। ३६८।।
गरीब, फूंकि फाकि कोयले किये, जल में दिया बहाय।
अनल हक्क कहता चल्या, छाड्या नहीं स्वभाव।। ३६९।।
गरीब, सतगुरु शमस तबरेज कूँ, बाटी धरिया हाथ।
सूरज कूसेकी जहां, तेजपुंज का गात।। ३७०।।
गरीब, हुकम बेज अल्लाह की, होती एक आवज।
सहंस वर्ष के अस्त कूँ, बहुरि संपूर्ण साज।। ३७१।।

गरीब, मुरदे कहां जिवावता, तुम भी मुरदौं मांहि।
जिंदे का दीदार कर, अगम अगोचर ठांहि।। ३७२।।
गरीब, लोहे से कंचन भया, कहां हुवा रे प्राण।
पारस से पारस हुवा, जो पारस प्रवान।। ३७३।।
गरीब, अमर कछ भूमि दूर है, याह सिद्धि झूठी जान।
मरण जीवन जहां हैं नहीं, निर्गुण पद निर्बान।। ३७४।।
गरीब, अस्त नहीं जहां उदय है, उदय नहीं जहां अस्त।
उदय अस्त के बीच है, अगम अगोचर वस्तु।। ३७५।।
गरीब, पाप नहीं जहां पुण्य है, पुण्य नहीं जहां पाप।
पुण्य पाप के मध्य है, साहिब आपे आप।। ३७६।।
गरीब, बंधन काटि सहाब के, कीन्हे मोक्ष मुक्त।
एक नाम शरना गहै, जानै सिद्धि अनित।। ३७७।।
गरीब, जीवन मरण जिहांन में, सहजे हैं व्यवहार।
याह पले नहीं बांधिये, सतगुरु कहैं विचार।। ३७८।।
गरीब, लाख कोस पर जा परे, छुबकी एक सहाब।
जाके संपट मिल गये, आया नहीं जुवाब।। ३७९।।
गरीब, पायड़ा एक जु पाव का, दीसे सदा हमेश।
सहंस वर्ष जहां हो गये, मेटै कौन अंदेश।। ३८०।।
गरीब, घोड़ा जोड़ा सेत है, सेते ताहि पलांन।
सतगुरु कूँ काढ़े जहां, दीन्हा अर्श विमान।। ३८१।।
गरीब, कौतूर पहारी पर चढ़्या, मूसा मांग दीदार।
आधा पर्वत जरि गया, आधा कंपे यार।। ३८२।।
गरीब, मूसा भाग्या तेज से, ऊपर हूँ करि हाथ।
पर्‍या झमक्का तेज का, मूठी बांधे जात।। ३८३।।
गरीब, कौतूर पहारी जरि गई, शुरमा भया पाषाण।
आधा पर्वत डिगमगै, याह लीला कुरबान।। ३८४।।
गरीब, मूसा भाग्या जहां से, जग में रामत कीन।
एक बंदा बैठा शिला पर, ध्यान धरे दुरबीन।। ३८५।।
गरीब, मूसें से मूसा कहै, एक गुरज गगन के मांहि।
मारि शिला से खैंच करि, यौह उपदेश कहांहि।। ३८६।।
गरीब, मूसे गुरज पकरि लई, संपट शिला के मार।
कोटि बहत्तर नीकले, मूसा तहां पुकार।। ३८७।।
गरीब, मूसे से मूसा कहै, सुन मूसे मेरे यार।
कौतूर पहारी से भगे, कोटि बहत्तर लार।। ३८८।।
गरीब, एक बंदा करता बंदगी, लिये छुहारा गोप।

मूसा चाल्या जाय था, जिन आपा दीन्हा ओप।। ३८९।।
गरीब, मूसा कहै सहाब सूं, कर मूठी क्यूं बांधि।
लगी टगटगी गगन कूँ, रह्या सुरति कूँ सांधि।। ३९०।।
गरीब, वर्ष सहंस हो गये, दरिया का नैं ध्यान।
दस्त छुहारा ले रह्या, मोहि न और समान।। ३९१।।
गरीब, दरिया में से नीकले, कोटि बहत्तर देव।
दस्त छुहारे हाथ में, पर्‌या ताहि मुख खेह।। ३९२।।
गरीब, एक बंदा करता बंदगी, अधर गगन एक पाय।
तीन कंगूरे नमैंगे, जदि ब्रह्म लोक कूँ जाय।। ३९३।।
गरीब, तीन कंगूरे अर्श के, झुकि आये तिस पास।
मोहि समान दूजा नहीं, चौदह भुवन विलास।। ३९४।।
गरीब, मणि मगज से भिन्न हैं, अहूँ चक्र की ओट।
अर्श कंगूरे झुकि रहे, मन माहीं है मोट।। ३९५।।
गरीब, चढ़ैं सही गिर गिर परैं, रपटे पैर अचान।
कोटि बहत्तर खड़े हैं, तुमसे मूढ़ अजान।। ३९६।।
गरीब, मूसा बिन पैंरो चढ़्या, अर्श कंगूरे मांहि।
कोटि बहत्तर खड़े औह पंथ पावत नांहि।। ३९७।।
गरीब, आधीनी की राह गहि, आजिज अकल अजात।
मूसा महलौं सो चढ़ै, सांईं जेही दात।। ३९८।।
गरीब, बांका पड़दा महल का, बांकी गढ़ की नीम।
लाय मुकाम मंडेर बिन, कोई न चंपै सीम।। ३९९।।
गरीब, सरल विकट मठ महल है, कर से गह्या न जाय।
नीम मंडेरिन है नहीं, कैसे चढ़िये माय।। ४००।।
गरीब, सरल सजीवन वृक्ष हैं, डाली पान न फूल।
गहबर गन्ध सुगन्ध है, दर्शत हैं बिन मूल।। ४०१।।
गरीब, ऊंचा आसन तास का, गिरि पर्वत चढ़ि देख।
नीचे से नीचे रमै, अकल अभूमि अलेख।। ४०२।।
गरीब, गाम गली दर ना चले, हाट पट्‌टन नहीं कोय।
आसन असतल है नहीं, निर्गुण पद निरमोहि।। ४०३।।
गरीब, विकट विहंगम बंकड़ा, फजल बौहत नहीं दण्ड।
एक पलक में रचत है, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड।। ४०४।।
गरीब, फजल फजल सब पुरुष का, अदलि कर्म सिर दण्ड।
चाकर चोरी करत हैं, यौह तन होवै खण्ड।। ४०५।।
गरीब, ऐसा हलका ब्रह्म है, त्रिसरैंन से झीन।
सो तोकूँ नहीं दर्सता, सुनों पुरुष की बीन।। ४०६।।

राग रूप रघुवीर है, मोहन जाका नाम।
मुरली मधुर बजावहीं, **गरीबदास** बलिजांव।। ४०७।।

अथ वैराग प्रकरण का अंग

गरीब, रूखे वृक्षे आसन कीजे, ना कहीं मांगन जावै।
आशा तृष्णा स्थिर होय जाकी सहजे चाल्या आवै।। १।।
गरीब, द्रुपद सुता के चीर बढ़ाये, बिन ही तूंबे काते।
साहिब सकल मनोरथ पूर्ण, तुम क्यूं मांगन जाते।। २।।
गरीब, नट पेरनां कांजर सांसी, मांगत हैं भटिहारे।
जाकी तारी लगी तत्त में, मोती देत उधारे।। ३।।
गरीब, बिन ही मांग्या देत चिदानंद, छाजन भोजन लोई।
छप्पन भोग संयोग सुरति से, आवैं नई रसोई।। ४।।
गरीब, नौ निधि बारह सिद्धि तास के, झूलैं अधर अधारे।
जो मांगै तो साहिब लाजै, समझौ हरि के प्यारे।। ५।।
गरीब, आपतै आवै सो रतन बराबरि, मांग्या आवै सो लोहा।
लक्षण नहीं योग के योगी, जाय बस्या बन खोहा।। ६।।
गरीब, मोक्ष मुकित कूँ मूंड मुंडाया, रह्या वारि का वारे।
अपना प्राण स्थिर नहीं कीन्हा, किस कूँ पार उतारे।। ७।।
गरीब, एक मांगै एक भिक्षा घालै, पामर खांहि प्रीत बिना।
शब्द हमारा बूझो भाई, समझ न परै अतीत बिना।। ८।।
गरीब, जिन के इन्द्रिय उदर नहीं हैं, तरुवर भी फल देवै।
नर तो घर घर मांगत डोलै, पारब्रह्म कूँ सेवै।। ९।।
गरीब, टूकां कारण फिरै कूकरा, सत्तर घर फिर आवै।
ये तो लक्षण नहीं साधु के, बाना बिरद लजावै।। १०।।
गरीब, केले की कोपीन बनावै, बन फल भोग लगावै।
सरिता का तो पानी पीवै, गृही द्वार न जावै।। ११।।
गरीब, तन हठ करि हैं मन हठ करि हैं, मनसा नांही डोलै।
जाकी सुरति शब्द स्यों लागी, दूसर से क्या बोलै।। १२।।
गरीब, घट में तरुवर घट में छाया, घट में फल प्रवाना।
घट में औघट घाट खेचरी, बूझो शब्द ठिकाना।। १३।।
गरीब, रूखा भूखा भिक्षा मांगै, घर घर फिरै उदासी।
सो भिक्षा क्यूं मांगन जावै, जिन के वृत्ति आकाशी।। १४।।
गरीब, रूखा भूखा भिक्षा मांगै, षट् कर्म नहीं जाके।
तंतू बीच लगावै तारी, ब्रह्मरंध्र के नाके।। १५।।
गरीब, प्रानंदनी कामधेनु है, दूझै बारह मासा।
जिन का व्रत भंग होय भाई, मांगन की करै आशा।। १६।।

गरीब, कामधेनु दूझै दिल अन्दर, ब्रह्म सुंन से आई।
गर्भ रह्या नहीं गति मति ऊंची, दूध देत बिन ब्याई।। १७।।
गरीब, तीन लोक में खलहल परि है, ऐसा योगी मांगै।
जाकी सुरति संपूरण पद में, कञ्चन होता रांगै।। १८।।
गरीब, पांचौ इन्द्रिय कसि करि बांधै, और छठा मन भाई।
जाके राजा पराधीन हैं, तीन लोक ठकुराई।। १६।।
गरीब, तंतू बीच लगी है तारी, मन बुद्धि अगम अगाहा।
रतन सिंधु नैंनों में झलकै, कंपे काल सुराहा।। २०।।
गरीब, कामधेनु चिन्तामणी जाकै, सो मांगै नहीं टूका।
आसन बंध योग है भाई, दर दर फिरै सो भूखा।। २१।।
गरीब, पारसनाम पदारथ जाकै, सो भूखा अक धाया।
भिक्षा कारण पराधीन होय, गृही द्वारै आया।। २२।।
गरीब, लोक पाल चरणौं के चेरे, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
इन्द्र सहित ध्रुव आगे नांचै, साखि भरत हैं शेषा।। २३।।
गरीब, जिनके आत्मज्ञान नहीं है, सो मांगै रे भाई।
चावल चून एकट्ठा करि कै, ब्याज बधावैं जाई।। २४।।
गरीब, जिनके आत्म ज्ञान ध्यान है, हंसौं के व्यौपारी।
धरिया का नहीं ध्यान धरत है, चीन्हा सुंन अधारी।। २५।।
गरीब, च्यार वेद की चाह मिटी है, षट्गुण ज्ञान जगावै।
जाप अजपा जपि कर योगी, गृही द्वार नहीं आवै।। २६।।
गरीब, गृही द्वारै गृह बहुत है, मांगी भीख न खावै।
कोटि पाप का मूल जहां है, तोकूँ कौन छुटावै।। २७।।
गरीब, चोरी जारी मिथ्या का बन, थोहर बीड़ा बिसारो।
ध्यान अध्यात्म छूटि जात है, नहीं गृही पग धारो।। २८।।
गरीब, ईश्वर पद से महरम नाहीं, गृही आंन उपासी।
जाकी भिक्षा संत न खावै, पड़ै काल की फांसी।। २६।।
गरीब, बहुत पित गृह हुये एकट्ठे, भोजन शुकलन तहियां।
जम की फांसी बिच जदि आया, कौन पकरि है बहियां।। ३०।।
गरीब, डूंम भाट बेसां सांसी का, पैसा जाकै आवै।
बिन ही बूझ्या जात रिसातल, नीच धांन जो खावै।। ३१।।
गरीब, नट पेरनां कांजर सांसी, ब्राह्मण बुरा कहावै।
कसाई डाकौत बराबरि, सब बनिया कै आवै।। ३२।।
गरीब, ब्राह्मण बनिया क्षत्री शूद्र, ये चारौं कुल ऊंचा।
इनके द्वार न जावै योगी, सो जत इंद्रित सूचा।। ३३।।
गरीब, राजा राज रसातल जाई, कौम छत्तीसौं डांडै।

सभै अपावन कहिये भाई, योगी किस घर हांडै।। ३४।।
गरीब, एक हलाई सहंस कसाई, पलड़ा बैसि बजावै।
कोठे मांहि नाज घालि करि, कोरा काल मनावै।। ३५।।
गरीब, क्षत्री के नित बकरे टूटै, मारत है हिलवाना।
योगी किसकै मांगन जावैं, सब ही जाति अलामा।। ३६।।
गरीब, आसन अधर बिहंगम होवै, पृथ्वी पग नहीं धारै।
राम रसायन निश दिन पीवै, आप तिरै कुल तारै।। ३७।।
गरीब, अन्न जल खुध्या तृषा मेटै, इन से रहै अपूठा।
तंतू बीच लगी है तारी, जिन पर सदगुरु टूठ्या।। ३८।।
गरीब, योगी जंगम शेख सेवड़ा ब्राह्मण और सन्यासी।
गुजराती ले गहन पितग्रह, भई अकलि बुद्धिनासी।। ३९।।
गरीब, सब से उत्तम बन फल कहिये, सरिता जल अधारं।
निर्मल योग संपूर्ण जाका, निर्गुण तत्त विचारं।। ४०।।
गरीब, जो मांगै सो भडुवा कहिये, दर दर फिरै अज्ञानी।
योगी योग संपूर्ण जाका, मांग न पीवै पानी।। ४१।।
गरीब, सौ की संग जमात चलावै, कोई पीसै कोई छांनै।
छप्पन भोग चले ही आवै, ऐसा बानिक बांनै।। ४२।।
गरीब, धर्‌या ढक्या होय हाजर नाजर, मौहर रुपैया पैसा।
ब्रह्म दण्ड से करै पवित्र, है जैसे का तैसा।। ४३।।
गरीब, एको को तो एकै दूभर, अपना पेट न भरता।
सहंस अठासी गये पंड कै, खुध्या तृषा हरता।। ४४।।
गरीब, लालों की तो नदी बहत है, हीरे मोती मुक्ता।
पारस परानंदनी द्वारे, समझ हमारा नुक्ता।। ४५।।
गरीब, ऐसा योगी मांगन जावै, लाजै बिरद अरु बाना।
तत्त दरसी का दर्सन दुर्लभ, तीन लोक कुरबाना।। ४६।।
गरीब, भिक्षुक तीनूं लोक हैं, दाता संत सुजान।
सप्तपुरी पर ध्रुव तपै, फरकैं ध्वजा निशान।। ४७।।
गरीब, भिक्षुक तीनूं लोक हैं, दाता संत दयाल।
गोरख जनक विदेही कूँ, आत्म नजर निहाल।। ४८।।
गरीब, शिव साहिब का तप किया, मिली भगीरथ गंग।
ऐसा समर्थ सेईये, सुनों शब्द प्रसंग।। ४९।।
गरीब, कदि नारद जमात चलाई, व्यास न टुकड़ा मांग्या।
वसिष्ठ विश्वामित्र ज्ञानी, शब्द बिहंगम जाग्या।। ५०।।
गरीब, सनक सनंदन संत कुंवारा, ब्रह्म पुत्र प्रवाना।
कहो कौन कै टुकड़ा मांग्या, देत अभय पद ज्ञाना।। ५१।।

गरीब, सप्त ऋषियौं की सेवा कर है, कौंता कारण कीन्हा।
छह मंत्र की दई मात्रा, पंड पुत्र प्रवीना।। ५२।।
गरीब, पंडु अंध और विदुर सारिखे, व्यास वचन से आये।
ब्रह्म तत्त से तारी लागी, मांग न टुकड़े खाये।। ५३।।
गरीब, नामदेव की छांनि छिवाई, देवल फेर दिखाया।
मूई गऊ तत्काल जिवाई, कदि मांग्या और खाया।। ५४।।
गरीब, कबीर पुरुष के बालद आई, नौलख बोडी लाहा।
केशव से बनजारे जाकै, दे है यज्ञ जुलाहा।। ५५।।
खान पान बस्ती से आया, हूँठ हाथ नहीं अंदर धस्या।
समझ बूझ नहीं परी धमोरू, किस कारण बन खंड बस्या।। ५६।।
व्यास पुत्र शुकदेव कूँ पूछो, जनक विदेही गुरु कीन्हा।
तरतीबर बैराग छाडि कर, गृही चरणौं सिर दीन्हा।। ५७।।
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष से, यह तो बस्ती मांहि रहैं।
नारद पुंडरीक और व्यासा, कागभुसंडा कथा कहैं।। ५८।।
बाहर भीतर भीतर बाहर, सुंन बस्ती में बसता है।
अकल अभूमी नजर न आया, कहां मुतंगा कसता है।। ५९।।
सेली शींगी जहरा मुहरा, गुदरी कै चींधी लाई।
दौहबर कोट ढाहि नहीं दीन्हा, अटी नहीं त्रिगुण खाई।। ६०।।
सुरति स्वरूपी नाद बजत हैं, निरति निरंतर नाचत हैं।
मात पिता जननी नहीं जाया, कहो भेष कदि काछत हैं।। ६१।।
गोरख जनक विदेही यौही है, ध्रुव प्रहलाद कबीर कला।
चिदानंद चेतन अविनाशी, काहे पूजै सुंन शिला।। ६२।।
सौ करोड़ मंडलीक तास के, शूरे सावंत दल मांहीं।
रावण राम नाम एकै है, समझ देख ले मन मांहीं।। ६३।।
जो समझै सो राम जपत हैं, अन समझै रावण रोवै।
गरीबदास याह चूक धरौं धुर, भूना बीज बहुरि बोवै।। ६४।।

अथ जम का अंग

गरीब, जम किंकर के धाम कूँ, सांईं ना ले जाय।
बड़ी भयंकर मार है, सतगुरु करैं सहाय।। १।।
गरीब, कारे कारे कंगरे, लीला जम का धाम।
जेते जामें जीव है, नहीं चैन विश्राम।। २।।
गरीब, है तांबे की धरतरी, चौरासी मध्य कुण्ड।
आदि अंत के जीव जित, होते रुण्डक मुण्ड।। ३।।
गरीब, चौरासी जहां कुण्ड हैं, खंभ अनंत अपार।

करनी भुगतैं आपनी, नाना विधि की मार।। ४।।
गरीब, चौदह कोटि भयंकरं, चौदह मुनि दिवान।
कोटि कोटि ताबे कीये, सांईं का फुरमांन।। ५।।
गरीब, रुधिर भरे जहां कुण्ड हैं, कुंभी जिन का नाम।
द्वारा है मुख लोट का, बड़ा भयंकर धाम।। ६।।
गरीब, सौ सौ योजन कुण्ड हैं, गिरद गता बहु भीर।
कोट्यों जीव उरासिये, कहीं न पावै थीर।। ७।।
गरीब, हाथ पैर जिन के नहीं, नहीं शीश मुख द्वार।
तलछू माछू होत है, परै गैब की मार।। ८।।
गरीब, लघु सी वाणी कहत हूँ, दीर्घ कही न जाय।
जम किंकर की मार से, सांई लेत छुटाय।। ९।।
गरीब, लीले जिन के होंठ हैं, कारी जिन की जीभ।
चिसमे जिन के लाल हैं, रक्त टपकै पीव।। १०।।
गरीब, सूर श्वान के मुख बने, धड़ तो जिन की देह।
दस्तों जिन के गुरज हैं, मारत निःसंदेह।। ११।।
गरीब, श्याम वर्ण शंका नहीं, दागड़ दुम खलील।
उरध चंच मुख काग का, चिसमें जिन के लील।। १२।।
गरीब, शक्ति स्वरूपी तन धरै, लघु दीर्घ होय जांहि।
बाहर भीतर मार है, तन कूँ बहु विधि खांहि।। १३।।
गरीब, कोटि कोटि की जोट है, कोटि कोटि एक संग।
एका ऐकी फिरत हैं, ऐसे भयंकर अंग।। १४।।

अथ निश्चय का अंग

गरीब, अपने दिल साधू नहीं, वाकूँ दरश्या साध।
म्हैंसि सींग से जानिये, गति कुछ अगम अगाध।। १।।
गरीब, उसके मन की फुरत है, अपने मन की नांहि।
गणका चढ़ी विमान में, अजामेल की बांह।। २।।
गरीब, तीन धात हैं पिता की, च्यार धात हैं माय।
शिष्य स्वामी इकसा मिलै, हंसा पौंहचे ठांहि।। ३।।
गरीब, निश्चय ऊपर नामदेव कूँ, पाहन दूध पिलाया।
म्हैंसि सींग में साहिब आये, नाम लपोचन पाया।। ४।।
गरीब, निश्चय ही से देवल फेर्या, पूजो क्यूं न पहारा।
नामदेव दरवाजे बैठ्या, पण्डित कूँ पछवारा।। ५।।
गरीब, निश्चय ही से गऊ जिवाई, निश्चय बछरा चुंघै।
देश दिसंतर भक्ति गई है, फिर क्यूं न ल्यावै भूंगै।। ६।।

गरीब, गोपीचन्द भरथरी योगी, निश्चय राज बिराजी।
निश्चय होय तो नेड़ा निपजै, क्या पंडित क्या काजी।। ७।।
गरीब, निश्चय सेऊ शीश चढ़ाया, चोरी संत सिधारे।
बनिया कूँ जहां पकरि लिया है, करदे शीश उतारे।। ८।।
गरीब, पिता संमन और माता नेकी, जिन के निश्चय भारी।
जहां कबीर कमाल फरीदा, भोजन की भई त्यारी।। ९।।
गरीब, सेऊ के धड़ परि शीश चढ़ाया, मीन मेष नहीं कोई।
हाजिर नाजिर मिले विश्वम्भर, ऐसा निश्चय होई।। १०।।
गरीब, तपिया के तो जक तक कीन्हा, लौदिया के घर आये।
ताड़ी घालि लिये परमेश्वर, निश्चय हाथ बंधाये।। ११।।
गरीब, निश्चय ऊपर बालदि आई, और केशव बनजारा।
नौलख बोडी लद्या लदीना, काशी नगर मंझारा।। १२।।
गरीब, निश्चय पंडा पाँव बुझाया, जगन्नाथ के मांहीं।
अटका फूटि पर्‌या पावन पर, सरद हुवा तन भाई।। १३।।
गरीब, काशी तजि कर मगहर पौंहचे, ऐसा निश्चय कहिये।
सतगुरु साखि समझ ले भाई, थीर पकरि थिर रहिये।। १४।।
गरीब, काशी मरै सो जाय मुक्ति को, मगहर गदहा होई।
पुरुष कबीर चले मगहर कूँ, ऐसा निश्चय जोई।। १५।।
गरीब, काशी के तो पण्डित कूँकै, मगहर मरो न भाई।
वाह तो पृथ्वी सूची नांही, तिरसंख पर्‌या बिललाई।। १६।।
गरीब, काशी तजि कर मगहर चाले, किया कबीर पियाना।
चद्‌दर फूल बिछे ही छाडे, शब्दे शब्द समांना।। १७।।
गरीब, मगहर में तो कबर बनाई, बिजली खांन पठाना।
काशी चौरा उड़गन भौंरा, दोनूं दीन दिवांना।। १८।।
गरीब, कनक जनेऊ कंध दिखाया, है रैदास रंगीला।
धरे सात सै अंग तास कूँ, ऐसी अदभूत लीला।। १९।।
गरीब, पीपा तो दरिया में कूदे, ऐसा निश्चय कहिये।
मिले विश्वम्भर नाथ तास कूँ, झूठी भक्ति न गहिये।। २०।।
गरीब, सैंना के घर साहिब आये, करी हजामत सेवा।
संतौं की तो श्रद्धा राखी, पार ब्रह्म निज देवा।। २१।।
गरीब, नरसीला की हुण्डी झाली, कागज शीश चढ़ाया।
धौती का तो व्याह भया जदि, भात भरन को आया।। २२।।
गरीब, त्रिलोचन के भया प्रितिया, ऐसी भक्ति कमाई।
संतों के तो नाल फिरत हैं, और तीनि लोक ठुकराई।। २३।।
गरीब, जीवन मूल विश्वम्भर साहिब, आत्म देव बिनांनी।

जहां जहां भीर परी संतन कूँ, छांन्या दूध रु पानी।। २४।।
गरीब, प्रहलाद भक्त कूँ दई कसौटी, चौरासी बरताया।
नरसिंघ रूप धरे नारायण, खंभ फारि कर आया।। २५।।
गरीब, ध्रुव का ध्यान अमांन अगोचर, डिगै न डोलै भाई।
सप्तपुरी परि तारी लागी, कोटि कल्प जुग जाई।। २६।।
गरीब, नारद पुंडरीक और व्यासा, गोरख जनक विदेही।
द्वादस कोटि बंधि जिन तोरी, भगता परम स्नेही।। २७।।
गरीब, सुलतांनी बाजीद फरीदा, दत्त तत्त गलतांना।
जदु राजा को नाम दिया जदि, शब्दे शब्द समांना।। २८।।
गरीब, कहा बखानौं कोटि निनानौं, राजा पारिंग कीन्हा।
अकलि अजीत उदीत अद्यात्म, गोरख से प्रवीना।। २९।।
गरीब, वसिष्ठ विश्वामित्र माते, मन माया जिन जीते।
कागभुसंड दंड नहीं जाके, अविगत आनंद चीते।। ३०।।
गरीब, रूमी ऋषि और मारकंड कूँ, ध्यान लगाया पद में।
अविनाशी से अर्श परस हैं, ध्यान लग्या अनहद में।। ३१।।
गरीब, मोरध्वज ताम्रध्वज राजा, अंबरीष अनरागी।
हरिचंद पद हाजर नाजर, मन से माया त्यागी।। ३२।।
गरीब, द्रुपद सुता के चीर बढ़ाये, पीतम्बर पहरांना।
अनंत भये कछू वार न पारा, दुःशासन हैरांना।। ३३।।
गरीब, पंडौ यज्ञ अश्वमेध में, सुपच बजाया संख।
द्रौपदी के दिल मेर थी, काढी मन की बंक।। ३४।।
गरीब, निश्चय ऊपर नाम क्या, कहां ध्यान कहां ज्ञान।
निश्चय खेत नपाईया, कांकर बोई जान।। ३५।।
गरीब, काम लुब्ध पाखंड रच्या, धरे विश्वंभर रूप।
ऐसा निश्चय चाहिये, मारे राजा भूप।। ३६।।
गरीब, शील संतोष विवेक बुद्धि, दया धरम इकतार।
बिन निश्चय पावै नहीं, साहिब का दीदार।। ३७।।
गरीब, सत बोलै सांची कहै, दिल में परै न बांकि।
मुश्की घोड़ा सेत होय, अकलि अकीनं झांकि।। ३८।।
गरीब, निश्चय गोकल गूजरी, बिन ही बेड़े पार।
पंडित के दिल दुई थी, गुरुवा रह गये वार।। ३९।।
गरीब, रैदास खवास कबीर का, युगन युगन सत्संग।
मीरा का मुजरा हुया, चढ़त नवेला रंग।। ४०।।
गरीब, रंग अभंग न भंग होय, रंगे जो तन मन श्वास।
गरीबदास मीरा मिले, पहल चोट रैदास।। ४१।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गरीब, राती माती नाम की, बांधि भक्तिरा मौर।
राम अमल छाकी रहै, धंन मीरा राठौर।। ४२।।
गरीब, ज्यूं मीरा राठौर कूँ, राखी नहीं उधार।
पकर्‍या लोहा ज्ञान का, कोट्यौं कटक सिंघार।। ४३।।
गरीब, मीरा हाथ सुतार था, पद गावै ल्यौं लाय।
पत्थर की थी प्रतिमा, जामें गई समाय।। ४४।।
गरीब, भवन तेग थी काठ की, जैसे चमक्या बींज।
ओटनहारा को नहीं, अविगत अलख अछीज।। ४५।।
गरीब, भवन गमन गगन्यूं किया, घोरे सूधां गुलाम।
स्यूं मिसरी साहिब मिले, बरछी लोह लगाम।। ४६।।
गरीब, उड़ि गया भवन अकास कूँ, हो गया पद में नेस।
घोड़े जोड़े स्यूं मिल्‍या, चरवादार अदेस।। ४७।।
गरीब, पूरन जांच्या आंनि करि, मंगत कियाद जुहार।
मो कूँ पारस दीजिये, दालिद्र बेडार।। ४८।।
गरीब, तुका पूरन दस्त में, शोच परी बड़ भीर।
धरती कूँ खोदन लग्या, मेटी जन की पीर।। ४९।।
गरीब, पारस ठहक्या आंनि कर, लगी तीर की भाल।
परसत ही सोना भया, कीन्हा काब निहाल।। ५०।।
गरीब, ऐसा निश्चय चाहिये, पारस पूरन हाथ।
जो रंगे सोई रंगे, सांई जेही दात।। ५१।।
गरीब, गगन मंडल हुंन बरषिया, तीन बेर तत सार।
सीता लक्ष्मण राम की, मध्य मूरत कर्तार।। ५२।।
गरीब, सो मूरति क्यू ं ना पूजहीं, पत्थर ढेला डारि।
सीता लक्ष्मण राम के, लीजे चरण जुहारि।। ५३।।
गरीब, ग्यारह रुद्रौं पर तपैं, द्वादस मध्य मिलाप।
सुक्ष्म मूरति से रत्ते, ब्रह्म शब्द गरगाप।। ५४।।
गरीब, कोडि धज किस काम का, सूम सकल है चाल।
अस्सी गंज बांटे नहीं, पर्‍या तास पर ज्याल।। ५५।।
गरीब, दिल दानी है तास का, सदा व्रत मन मांहि।
पृथ्वी पारस हो रही, हुंन बरषी जिस ठांहि।। ५६।।
गरीब, सूर गऊ को खात हैं, बिसमिल करैं हमेश।
दहूँ दीन दोजख गये, जम कूँ पकरे केश।। ५७।।
गरीब, करदी करद चलाव हीं, जीव जूंनि पर जाय।
नैंन बैंन से मिल रह्या, छाती परि दे पाय।। ५८।।
गरीब, यौह तो काफर कर्म है, धर्म नहीं यौह पाप।

दोही नबी रसूल की, डूबैंगे गरगाप।। ५९।।
गरीब, जीव हिंसा जो करत हैं, या आगे क्या पाप।
कंटक योनि जिहांन, में भेडिया सिंह और सांप।। ६०।।
गरीब, आत्म प्राण उधार हीं, ऐसा धर्म न और।
कोटि यज्ञ अश्वमेध फल, शब्द समाना भौंर।। ६१।।

अथ फुटकर साखी का अंग

गरीब, सतगुरु नाल बडाईयां, मन माने जिस देय।
नाम लपोचन मुक्ति के मोचन, म्हैंस सींग कूँ सेय।। १।।
गरीब, सिद्धों में गोरख बड़े, दत्त दिगंबर धीर।
भक्तों में नामा बड़े, तीनौं कला कबीर।। २।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश की, ओट कुशल सही होय।
गिरिजा और शुकदेव की, चौरासी दई खोय।। ३।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश की, ओट कुशल अवधूत।
गोरख से योगी बने, शिव कूँ दई वभूत।। ४।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश की, ओट कुशल अबदाल।
राजा कोटि निनानवें गोरख नजर निहाल।। ५।।
गरीब, शिव की सुरति विभूति से, गोरख उपजे जान।
राजा कोटि निनानवें, गोरख पद प्रवान।। ६।।
गरीब, गोरख तो चिंतामणि, शिव साहिब समरथ।
ब्रह्मा विष्णु महेश की, ओट कुशल अलबत्त।। ७।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश की, ओट कुशल अमान।
लंक सरीखा फुकिया, जाके पुत्र हुये हनुमांन।। ८।।
गरीब, गोरख भली बिचारिया, रहनी करनी रंग।
भस्मासुर रावण मुये, सीता गिरिजा संग।। ९।।
गरीब, चाखै विष की बेलड़ी, सेवै अमृत खीर।
रामचंद्र शिव न मुये, कौन कला रघुवीर।। १०।।
गरीब, कोटि कल्प इक निंद्रा, कोटि निंद्रा इक नींद।
नाहक देह तन क्यों धरूया, ज्यों बरात बिन बींद।। ११।।
गरीब, अधर आधार आगे रहे, नहीं आकार विकार।
सुरति निरति लागी रहे, ज्यों मकड़ी का तार।। १२।।
गरीब, अधराधार पिछानिया, अधराधार जिस मांहि।
सुरति निरति परचा भया, तब कुछ कहना नांहि।। १३।।
गरीब, परदे सात शरीर के, खुल्हें ध्यान दुरबीन।
ब्रह्म शब्द माते रहें, ज्यों दरिया मध्य मीन।। १४।।
गरीब, सातों पर्दियों से परे, ध्यान धरत हैं शेष।

बुद्धि वाणी से अगम है, मन गुण इन्द्रिय नेश।। १५।।
गरीब, बरसें हीरे लाल नघ, मोतियन की जहां खान।
शब्द जौहरी परख हैं, पारस पद प्रवान।। १६।।
गरीब, आत्म तत्त के रूप कूँ, जानत है कोई एक।
कोट्र्यों मध्ये को नहीं, अरबौं में कोई देख।। १७।।
गरीब, झिंग शब्द झंनकार है, दसमें दहनी ओर।
या में सुरति लाय ले, जैसे चंद चकोर।। १८।।
गरीब, भांडे घड़े कुलाल ने, ब्रह्मा घड्या मट।
सतगुरु भेटे बाहरी, दोनो चौड़ चपट।। १६।।
गरीब, कौन बार धरती धरी, पंडित कहो संदेश।
कूर्म का मुख कौन दिस, किस दिन जाया शेष।। २०।।
गरीब, को ब्रह्मा का पिता है, कौन विष्णु की माय।
शंकर का दादा कौन है, हम कूँ दियो बताय।। २१।।
गरीब, पढ़े पढ़ाये बह गये, अपढ़ उतर गये पार।
पंडित द्वादस कोटि में, बालनीक जयकार।। २२।।
गरीब, शंडामर्क जो शाल में, पढ़ाये प्रहलाद।
विद्या वाणी छाड कर, चीन्हे राम अगाध।। २३।।
गरीब, राग रूप सब तन भया, सुरति सुतार शरीर।
गरीबदास पत्थर फटे, जब सतगुरु मिले कबीर।। २४।।
गरीब, सतगुरु शब्द पाषाण है, जब लग बेधे नांहि।
भैंस सींग से प्रगटे, प्रहलाद भक्त शरणाय।। २५।।
गरीब, सबजा गुलजा फूल है, रतनाले रंग जोर।
अविगत कला कुसुम्भ रंग, सूरज चंद करोर।। २६।।
गरीब, इष्ट काष्ट में जर गया, देही देवल साथ।
इष्ट एक निज नाम का, जा स्यूं रहिये राच।। २७।।
गरीब, सतगुरु ने माला दई, स्वास सुरति से पोय।
हाथ जीभ हालै नहीं, इस विधि सुमिरन होय।। २८।।
गरीब, सांईं के दरबार में, गाहक कोटि अनंत।
चार बात की चाह है, ऋद्धि सिद्धि मान महंत।। २६।।
गरीब, सांईं के दरबार में, ऐसा कोई एक।
इन चारौं को छाड कर, चीन्हैं पुरुष अलेख।। ३०।।
गरीब, दुशमन दारुण दूत हैं, जम किंकर की धाड़।
ऐसा समरथ सेईये, एक अनेक बिडार।। ३१।।
गरीब, दुशमन दारुण दूत हैं, चौदह कटक करोर।
या का बाल न बंक है, ताकी समर्थ ओर।। ३२।।

गरीब, दुशमन दारुण दूत हैं, जम किंकर से जान।
एक पत्र फूटे नहीं, कोटि चलै जे बांन।। ३३।।
गरीब, जम किंकर की धाड़ कूँ, ध्यान धनुष से मोड़।
छूटे ग्यासी नाम की, भागे कटक करोर।। ३४।।
गरीब, भावा दावा दूर कर, सन्तन स्यौं कर प्रीत।
भवसारग तिर जात हैं, जीवत मुक्ति अतीत।। ३५।।
गरीब, सुन्दर फैंटा गहरही, मन में गूंथे ज्ञान।
मैं तोहि पूछूं नवल जी, फैंटा तजूं क प्रान।। ३६।।
गरीब, नाम पदारथ रतन मणी, चौदह लोक सुभान।
आगे पीछे क्या रहा, जब पाया पद निर्वाण।। ३७।।
गरीब, सोहं सुरति स्वरूप है, नाम न खण्डित होय।
निरत निरंतर नाम जप, मन का मनिया पोय।। ३८।।
गरीब, खाक चाट खालिक रटै, मोटे जिसके भाग।
करि साहिब की बंदगी, मोटा मन निर्भाग।। ३९।।
गरीब, बूढ़ा बूढ़ा क्या कहै, बूढ़ा सकल शरीर।
मन तरुणा तन बीच है, ज्यूं कृष्ण कन्हैया हीर।। ४०।।
गरीब, सौ करोड़ि संकल्प करै, जगि अश्वमेध अनादि।
जाकी सरवर ना तुलै, चरण कमल रज साध।। ४१।।

अथ आदि पुराण रतन योग

गरीब नमो नमो सत गुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्ह ही।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतौं सरबस दीन्ह ही।। १।।
ऊँकार अपार समूलं, नाद बिन्द बिन है अस्थूलं।
सत्यपुरुष कूँ सिरजी माया, शब्द स्वरूपी रूप बनाया।।
संख लोचनी संख ज्ञाना, आदि अनादि पुरुष ध्याना।
मन से सिरजी मनसा नारी, उपजी माया आदि कुमारी।।
अबला सुन्दरि नारि नरेशा, भग लिंग नाद नहीं प्रवेशा।
परानंदनी मूला माया, दारुण देवी सिरजी राया।।
कमल नयन कमलापति स्वामी, निरालंब निर्गुण निःकामी।
कमल नयन कमलापति माई, कोटि कला रवि चंद्र उगाई।।
अकल अलील सुरति से झीना, निरति रूप नाजिक प्रवीना।
लील का नाभि नाभि का कँवलं, जामै उचरत वाणी बिंबलं।।
मूल उचार होत तिस मांहीं, सर्व कला समर्थ पद सांई।
पिंगुल बैंन नयन मद नेहा, सुनों पिता सत्य पुरुष विदेहा।।
कौन काज कीन्हा मोहि अंगा, कहो पिता मोहि निज प्रसंगा।

कह्या पुरुष जदि वचन संभारी, कीर्ति लोक रचो संसारी।।
बोले पुत्री अति आधीना, कौन पुरुष हमरे संग दीन्हा।
रजगुण सत्तगुण तमोगुण संगी, क्षण में रच्या शब्द त्रिभंगी।।
गरीब, त्रिभंगी तीनूं कला, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सत्तगुण रजगुण तमोगुण घट घट में प्रवेश।। २।।
पुत्री मस्तक शीश नमाया, अंजन मंजन लेप चढ़ाया।
रहसी माया बदन विनोदं, ज्ञान ध्यान उपजे प्रमोदं।।
बटक बीज पिंडल बिसतारा, इन्द्रिय पांच पचीसौं लारा।
मन गुण कर्म सान सब दीन्हा, रजगुण सत्तगुण तमोगुण भीना।।
कमल नयन कमलापति रानी, चौदह भुवन भरैं जलपानी।
कल्प करी जदि मूला माया, ता पानी में अंड उपाया।।
झिलमिल किरण कमल प्रकाशा, कमला मांहि ब्रह्मा का बासा।
ऊँकार बीज उत्पाती, उपजे ब्रह्मा सत के नाती।।
दण्ड कमंडल ब्रह्मा ल्याये, जुग छत्तीस कमल भरमाये।
जुग छत्तीस धरैं जहां ध्याना, भँवर गुंज में भया दिवाना।।
तप तप ब्रह्मा वचन सुनाया, ब्रह्मरूह शिक्षा पद पाया।
किलिइं मूल मंत्र मन माला, ऊँशब्द रचे चित्रशाला।।
कच्छ मच्छ कूरंभ और शेषा, धौल धरणि कीन्हा प्रवेशा।
चंद्र सूर तारागण तेजं, लोक द्वीप फुलवारी सेजं।।
सिरजे ब्रह्मा विष्णु महेशा, ऊँकार किया प्रवेशा।
शेष नाल जदि ब्रह्मा आये, मंत्र भेद दिया गौहराये।।
गरीब, मूल मंत्र निज शब्द है, जाका यह बिस्तार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड हैं, रचे जु सिरजनहार।। ३।।
लख चौरासी रूप लखाया, ऐसा ध्यान धर्‍या मन माया।
किन्नर भूत पिसाचर दानें, सुर नर मुनि गण गंधर्व जानें।।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, एक शब्द से सकल उपाया।
शेषा नारायण पद परसैं, अचराचर हृदय में दरसैं।।
अष्टकुली पर्वत पाषाणा, अष्ट पदवी नाग बखाना।
नौ सै नदी नवासी नाला, अठारह भार रची बन माला।।
तीन कोटि तीर्थ गैंनारा, सुंन सागर का वार न पारा।
स्वर्ग मृत्यु पाताल बनाया, प्रथम पूज गणेश्वर राया।।
माता कहै सुनो रे पूता, तुम योगी तीनों अवधूता।
त्रिगुण रूप धर्‍या जदि माया, ब्रह्मा विष्णु महेश भुलाया।।
मो को बरो पुत्र त्रिपुरारी, मैं हूँ माया आदि कुमारी।
तीनौं पुत्र कहत हैं बाता, कौन पुरुष है तुम्हरा माता।।

रहनि गहनि जाकी बतलावो, सुन माता हम पिता लखावो।
बोले माया आदि कुमारी, हमरा वचन सुनो त्रिपुरारी।।
पृथ्वी ऊपर धरै न देही, गगन मंडल में पुरुष विदेही।
माता आदि ज्ञान गौहरावै, पिता तुम्हरी दृष्टि न आवै।।
गरीब, पिता पुरुष परमात्मा, निर्बाणी निःतंत्त।
पुरुष विदेही आदि है, नाम गाम नहीं पंथ।। ४।।
मैं अष्टंगी हूँ सतरूपा, अनंत कोटि गुण ज्ञान अनूपा।
ऊँ आदि बीज फल मोरा, सावित्री लक्ष्मी भई गौरा।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर बरिया, पुत्री पुरूष किये नरहरिया।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साथा, माताई का राख्या नाता।।
जाकूँ देख जगत सब भूला, एकै अग्नि एक ही चूल्हा।
अंधकार गुण दीया प्रेरी, सोई माता सोई चेरी।।
सत्यपुरुष निर्गुण निर्बाना, संख कल्प जुग योग ध्याना।
संख कल्प जुग गये बिहाई, ब्रह्म समाधि अखंड लगाई।।
अजर समाधि अमर अनरागी, अकल अजन्मा सब गुण त्यागी।
सर्वगुण रिद्धि के रासी, सत्य पुरुष अविगत अविनाशी।।
भोग संयोग करै नहीं कोई, अकल अचिंत पुरुष निर्मोही।
सकल भोग भोगे भगवंता, गुण इन्द्रिय से रहे निश्चिंता।।
आशा तृष्णा मोह न माया, तातैं शब्द अतीत कहाया।
गुणातीत इन्द्रिय नहीं जाकै, काम क्रोध कछु लोभ न राखै।।
गुणातीत इन्द्रिय अधिकारी, मोह ममता नहीं असतल धारी।
अष्टंगी का साजनहारा, साक्षीभूत होय नहीं न्यारा।।
गरीब, सूक्षम साक्षी भूत है, जाका यह विस्तार।
बटक बीज की मांड में, साहिब पुरुष हमार।। ५।।
मन माया से नौ तत्त होई, अपना बोया लुनैं सब कोई।
इन्द्रिय पांच तीन गुण तीरा, अष्टंगी का बन्या शरीरा।।
नौ तत्त का सब नाच नचावै, ब्रह्म बीज में मिलन न पावै।
साक्षीभूत संगीत स्याना, डोरी हंस बंध्या गल प्राणा।।
जीव जन्म जहां ले अवतारा, साक्षी भूत होय नहीं न्यारा।
अकल अजन्मा दृष्टि न मुष्टी, जाका रूप लखाऊँ गुष्टी।।
जाके चरण शेष नित सेवै, मांडमडी कूँ पल में खेवै।
अविगत बंका रूप मुरारी, ब्रह्मा विष्णु उठावै झारी।।
शिव जाकूँ प्रणाम प्रेखै, साक्षीभूत और नहीं देखै।
चौदह कोटि भुवन के मांहीं, साक्षी भूत रहै सब ठांहीं।।
अचराचर गल बंधन डोरी, साक्षीभूत अगम गति तोरी।

सुख का सागर साहिब मेरा, गगन मंडल में पुरुष का डेरा।।
गरीब, गगन मंडल में पुरुष है, दृष्टि मुष्टि से न्यार।
कोटि ज्ञान से भिन्न है, पंडित करो विचार।। ६।।
सेत वर्ण साहिब शुभ रंगा, जा में उठैं अनन्त तरंगा।
पांच तत्त के में नौ तत्त का, भेद लखावत हूँ सब गति का।।
नौ तत्त के में द्वादस देवा, इला पिंगला मध्य प्रेवा।
द्वादस मध्ये गुष्ट समाना, गुष्ट मांहि राई प्रवाना।।
राई बटक बीज सौ भागा, कैसे दृष्टि परे अनरागा।
सतगुरु मिलै तो अलख लखावै, अनरागी सिर चौंर ढुरावै।।
अकल बिलन्द बड़ी होय जाकी, सो खोलै अलमीना झांकी।
झांकी अन्दर झुक झुक आवै, स्वर्ग पताल चरण नहीं लावै।।
मृत्युलोक मूर्ति महमंता, हरदम खेलै फाग बसन्ता।
माता पिता न जननी जाया, सो अनभूत पुरुष हम पाया।।
जुगता नंद जुगति बहु जानें, जल अरु अग्नि रखी एक म्यानें।
पानी पवन बंध्या एक पेचा, दृष्टि न मुष्टि न राई रेचा।।
पृथ्वी का गुण गगन समाना, कोई न जाने रूप दिवाना।
लघु दीर्ष कुछ कह्या न जाई, सुन्न बेसुन्न में रह्या समाई।।
पांच तत्त का कमरि मुतंगा, चालै योगी चाल बिहंगा।।
गरीब, अगल बिहंगम रूप है, साहिब समर्थ आप।
पिंड ब्रह्मण्ड में रमि रह्या, जाका जपि ले जाप।। ७।।
जैसे गुडी उड़े सुन्न मांहीं, खेल खिलारी डोरि बंधाही।
असमानी उद्‌गार उडावै, मंदाचल से नीचा आवै।।
दहनें वामें चले अपूठा, प्रेम डाल ज्यूं बैठे सुवटा।
सुन्न सिखर में चढ़े प्रेरा, आसन अस्तल महल न डेरा।।
प्रेमी के घर पकर्‌या आवै, सुरति निरति का बान लगावै।
गगन मंडल में बिचरत नागा, छाजन भोजन से वितरागा।।
मारे बान मृगा मन घावै, तो घर बैठे आनि जगावै।।
गरीब, शब्द हमारा परखियो, और क्या परखो तन रीत।
अचराचर में रमि रह्या, अविगत शब्दातीत।। ८।।
संख पदम जाके नख की शोभा, सेत मुकट मेरा मन लोभ्या।
संखों किरण अवर्ण अजाती, संखों चंद्र संख भानुमाती।।
झिलमिल झिलमिल झिलमिल होई, अगम अगोचर व्यापक सोई।
संखों ध्वजा फरहरे सेतं, शेष सहंस मुख गावै नेतं।।
झंडे लंब सुलंब अमाना, पंच रंग पीत फरहरें निशाना।
बिन मुख शब्द अजब झंनकारा, संख नाद बीना सुन न्यारा।।

दादुर मोर भँवर भनकारा, अग्र चंदन मकरंद अपारा।
बाजत झालरि झांझ समूलं, संख वर्ण के अर्पित फूलं।।
गरीब, संख वर्ण के फूल हैं, गगन मंडल के मांहि।
दिव्य दृष्टि देखे सदा, जहां उहां धूप न छांहि।। ९।।
सहनाई और भेरि दमामें, संख वर्ण तुरही प्रणामें।
मुरली अधर मधुर महमंती, सुनियत राग शब्द निःतंती।।
वर्षत मेघ गरज घन घोरा, दामनि दमकै शब्द घमोरा।
कुंजी बैंन पपीहे बोलै, कोयल कहोंकै चित्त नहीं डोलै।।
रापति सेत तुरंग दरियाई, पीत पसाव चढ़े संत भाई।
कलगी संख सलहरे संखा, अर्थ पालकी है बेअंका।।
अर्श विमान अमान चलाही, चंद्र सूर पौहमी गम नांही।
सेत गुमट अमरापुर मांही, तहां वहां सोहं चौंर ढुराही।।
कमल रूप जहां कलश विराजें, घड़ियों घड़ि घंड़ावलि बाजें।
गोमुख गंग तरंग उठाहीं, लहरि लहरि बादल झड़लांही।।
जंबूफल जामन का बिरवा, जहां चलें सुरसरी गगन अधरवा।
बटक वृक्ष सुवृक्ष सुस्थाना, कमल पत्र महकें विधि नाना।।
फूल अजन्मा सम हम जान्या, जैसे तेज देख शशि भाना।
समाधान पद वृक्ष स्वरूपा, शीतल छाया छांह न धूपा।।
ऊर्ध्वमूल मध्य मधुरी शाखा, समाधान संतों पद भाखा।।
गरीब, समाधान एक वृक्ष है, दिव्य रूप दिल मांहि।
निर्गुण रूप निरंजना, बाहर भीतर नांहि।। १०।।
शंख चक्र गदा पदम प्रेखा, चरण कमल जाके ऊर्ध्व रेखा।
अंकुस रूप सरूप नरेशा, गंगा कोटि चरण प्रवेशा।।
बामें बछल लक्ष्मी राजे, भाल तिलक तिस मस्तक साजे।
भृगुलता जाकै सहनाना, मोर मुकट दर कुंडल काना।।
अर्धचंद्र षटकूँनी अर्शं, गगन मंडल में साधु दरसं।
संख असंख पुष्पों की माला, राग रंग होते चित्रशाला।।
तोल न मोल अडोल अबोलं, दरस्या हूँठ हाथ मध्य गोलं।
त्रिकुटी भृकुटी रूप विशालं, परमात्म पद त्रिबली तालं।।
आदि अनादि सदा संगाती, ज्योति अखंड दीप बिन बाती।
अचल बिहंगम टरे न टार्‍या, गुण इन्द्रिय से साहिब न्यारा।।
खड्‌ग चक्र शस्त्र नहीं छेदे, पावक जरे न जल तिस बेधे।
अकल अचिंत रूप है सोई, जाका नाश कदे ना होई।।
अकल अचिंत रूप भगवाना, सो साहिब हम नेरै जाना।
दूर दुराज रहै सब सेती, सुरति निरति गठ बंधन केती।।

सुरति निरति गठबंधन कीजे, तन मन धन सब अर्पण दीजे।
गरीब, तन मन धन सब अर्पिये, भक्ति मुक्ति के काज।
जिन के उर में बंदगी, कहां इन्द्र का राज।। ११।।
सुरति निरति गठबंधन जोरा, चढ़ो हंस पौनी पद घोरा।
सुरति निरति गठ बंधन ज्ञाना, भवसागर से हंस अमाना।।
सुरति निरति गठबंधन बीरी, समझ जुगति यह योग फकीरी।
मात पिता कुल तजे भ्राता, सुरति निरति संजम नहीं ज्ञाता।।
जीवत मन संग कर हैं मेला, तास गुरु हम ताके चेला।
जीवत मन से परचे होते, भवसागर खावै नही गोते।।
जीवत मन से परचे बोले, कुलफ कपाट महल के खोले।
जीवत मन संग कर हैं यारी, जाके आगे इन्द्र भिखारी।।
जीवत मन का कर विश्वासा, ताका कबू न होवे नाशा।
मूये मन की गिरह न खुल्हे, जीवत मन साहिब समतूले।।
रिंचक सुख और दुःख सुमेरं, कोई साधु जानै मन का फेरं।
चौदह कोटि भुवन फिर आवै, तो इस मन का फेर न पावै।।
पृथ्वीला प्रदक्षिणा देवा, तो इस मन का लखे न भेवा।
स्वर्गादिक में बैठे जाई, चौदह भुवन पलक फिर आई।।
सो तो मन के हाथ बिकाना, बहुरि भये हैं शूकर श्वाना।
कोटि कोटि तीर्थ जगि दाना, नहीं नहीं रे हरिनाम समाना।।
गरीब, तीर्थ यज्ञ जुग जुग करो, पावत नहीं जगदीश।
काशी करवत लेत है, जाय कटावै शीश।। १२।।
तीर्थ व्रत रु योग जुगादं, नाम बिना सब कूड़ समाधं।
कर्म कांड से पावे राजं, जन्म पुरबले बिगरे कांज।।
तप से राज राज से तेजं, पाट पटंबर भोगे सेजं।
तप से राज राज मध्य मानं, जन्म तीसरे शूकर श्वानं।।
कर्म कांड स्वर्गापुर वासा, घोर कुंड पर नरक निवासा।
गज तुरंग पालकी अर्था, नाम बिना सब दानं वृथा।।
तीर्थ व्रत दान पुण्य कीजै, चरण कमल कूँ संकल्प दीजै।
यह तो पराभक्ति बैरागा, गुणेन्द्रिय मन मनसा त्यागा।।
तन मन धन संकल्प कर देही, सो साधु है भक्ति सनेही।
संकल्प किया संख गुण होई, अकल अखंड बीज है सोई।।
सोई बीज भोग्या भगवाना, संकल्प किया द्रौपदी दाना।
तन्दुल सुदामा अर्पण कीन्हे, पल में पुरी राम रचि दीन्हे।।
दान पुण्य की करै न आशा, जो अरपे सो पुरुष निवासा।
सिकल विकल व्यापे नहीं कोई, साधु रहै चरण मुख गोई।।

मेर कुबेर और रोटी दाना, चरण कमल अर्पण कर प्राणा।।
गरीब, चरण कमल धुंन लाईये, हरदम बारंबार।
अर्थ धर्म काम मोक्ष होय, साहिब के दरबार।। १३।।
कोटि वज्र टूटंते राखा, जा साधु का बाल न बांका।
मुटरी बांधि रहै जो न्यारा, जाके पड़े शीश पैजारा।।
इच्छा रूप करे जो दाना, अपना बिरद लजावै बाना।
विद्या वेद पढ़े चित्त लाई, दरब धार बूडी पंडिताई।।
इतने पंडित आशा मांहीं, गुण गायत्री का बल नांही।
सूत पातक करै अहारा, पंडित जीमें यज्ञ जौंनारा।।
सुनो आदि सनकादिक धर्मा, सूतक पातक नीचे कर्मा।
सनक सनंदन बूझो भाई, नीचे कर्मो लागे काई।।
ऊंचे कर्मों कर्म कटाहीं, सो पंडित तुम जानों नाहीं।
जीव यज्ञ में होम कराहीं, सो वह यज्ञ काम किस आहीं।।
एक जीव अचरा चर मांही, शिव ब्रह्मा की पदवी तांही।
करि हैं पाप कहत है धर्मा, मनुष्य पकरि होम्या यज्ञ नरमा।।
अश्व वृषभ और अजा जराई, इनका पाप गिन्या नहीं राई।
बूझो ब्रह्मा विष्णु महेशा, अचराचर का कह्या अंदेशा।।
बूझो ब्रह्मा विष्णु महेशा, तिहूँ देवा का ना उपदेशा।।
गरीब, पंडित ज्ञानी बूडिया, कीन्हें जीव विधंस।
कीड़ी कुंजर आत्मा, सब घट एकै अंस।। १४।।
राजनीति काली का भक्षण, पंडित जीव घात अप लक्षण।
सुरापान मद्य मांसाहारी, गमन करे भोगे पर नारी।।
सत्तर जन्म कटत है शीशं, साक्षी साहिब है जगदीशं।
परद्वारा स्त्री का खोल्हे, सत्तर जन्म अंध होय डोले।।
मदिरा पीवै कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।
झोटे बकरे मुरगे तांईं, लेखा सब ही लेत गुसांईं।।
मृग मोर मारे महमंता, अचराचर है जीव अनंता।
जिह्वा स्वाद जो हिते प्राना, नीमा नाश गया हम जाना।।
तीतर लवा बुटेरी चिड़िया, खूंनी मारे बड़े अंगड़िया।
अदले बदले लेखे लेखा, समझ देख सुन ज्ञान विवेका।।
ज्यूं मुहंमद सिर विसमल लाई, जिह्वा स्वादी हते कसाई।
ऐसे पंडित जीव हिताना, राजा के सिर धर्‍या भयाना।।
अपनी छपरी बंधे न कोई, नगर अमान करे नर लोई।
कर्म शाल कर्मो की बाजी, भूलि रहै हैं पंडित काजी।।
गरीब, शब्द हमारा मानियो, और सुनते हो नर नारि।

जीव दया बिन कुफर है, चले जमाना हारि।। १५।।
आशा छाडे रहे निराशा, दम चूरण कर जीतै श्वासा।
मूल मंत्र गायत्री ॐ, श्वास श्वास मध्य सोहं सोहं।।
गरीब, सोहं मंत्र सार है, सुरति निरति से कीन।
खूल्हें अंध कपाट सब, होत दृष्टि दुरबीन।। १६।।
पिंड प्रधान करे हरषांहीं, अकल अपिंडी रीझै नांहीं।
देही जारि बारि कर छारा, अकल अपिंडी तन से न्यारा।।
तन की मोक्ष करे क्या होई, चंदन जारि बारि खग खोई।
पांच तत्त तन हो गई माटी, सतगुरु सेती भई न साटी।।
पांच तत्त का पड़े खंमीरा, नौ तत्त के का होय न थीरा।
लिंग शरीर मोक्ष नहीं भाई, आगे जाकर देह उठाई।।
संखो देह धरी तन जूनी, नौ तत्त के का बीज न भूनी।
मोक्ष मुक्ति का लख्या न भेवा, भरमे पुत्र व्यास शुकदेवा।।
सतगुरु मिल्या महादेव बंका, चौरासी की मिटी न शंका।
अठोतर जन्म गौरी भरमाई, शिव कूँ रुण्ड माल गल लाई।।
अर्ध शरीरी देवी गौरा, जिन का थीर भया नहीं भौरा।
नारद मुनि उपदेश बखाना, गिरिजा सुनों मोक्ष पद ज्ञाना।।
सुन हे देवी गौरा माई, अठसठ तीर्थ परबी न्हाई।
पिंड प्रधान किये कै बारी, खूल्ही नांही मुक्ति द्वारी।।
रुण्डमाल शिव के गल मांहीं, सो देवी तूं जानै नांही।।
गरीब, रुण्डमाल शिव के गले, गिरिजा के सिर शीश।
भक्ति दुराई देव कूँ, ना परस्या जगदीश।। १७।।
तुम्हरा देवी रूप विशाला, शिव तो पहरि रहे रुण्डमाला।
प्रलय संख असंखौं जाहीं, अमर कछ शिव कलि के मांही।।
अमर कछ शिव है अनरागी, तुम देवी गौरी दिल त्यागी।
मूल मन्त्र नहीं नाम सुनाया, तातें कल्प होय तेरी काया।।
महादेव देवन पति देवा, जाकी करी न गौरी सेवा।
कर बंधन करि शीश नमावो, तन मन अरपो शीश चढ़ावो।।
शिव हैं मोक्ष मुक्ति के दाता, तोसे भेद कहूँ गौरी माता।
चरण गहो चिंतामणि केरा, तातें प्राण अभय होय तेरा।।
कमल रूप देवी दिल कीन्हा, नारद मुनि उपदेशी चीन्हा।
जदि आये शिव मंगल अवधूता, देवी चरण लिये सतरूपा।।
चरण पकरि रोवत है बाला, मोरे शीश कीये रुण्ड माला।
मोसे भक्ति दुराई देवा, मैं जानी नहीं तुम्हरी सेवा।।
मो से भक्ति दुराई स्वामी, मो से भेद कहो निजधामी।

मैं अबला हूँ बाला भोरी, पार निबाहो हमरी डोरी।।
पूर्व जन्म की कथा सुनावो, मूल मन्त्र हम शिव गोहरावो।।
गरीब, मूल मन्त्र महबूब का, ईश सुनावो मोहि।
जुगन जुगन पातक कटे, छूटत हैं दिल द्रोही।। १८।।
भूलि रही भवसागर हम ही, मोक्ष मुक्ति के दाता तुम ही।
शीश पकरि सुन देवी बाता, को उपदेशी मिले विधाता।।
यह तो नांही ज्ञान तुम्हारा, हम सूं भेद कहो परवारा।
गिरिजा कहै सुनो शिव स्वामी, तारण तरण आदि घन नामी।।
नारद मुनि उपदेश समोधं, दीन्हा ज्ञान ध्यान प्रमोधं।
शिव समर्थ बोले हैं जब ही, गौरी ज्ञान सुनाया तब ही।।
कोटि कल्प प्रलय जुग बीती, ज्ञान ध्यान सब ही पर चीती।
तुमरा मन नारद मुनि फेर्‍या, सुनौं ज्ञान तुम गौरी मेरा।।
बन खंड चालो गौर दिवानी, पंछी सुनै न हमरी वाणी।
जब शिव कर से लाई तारी, उडि गये पंछी नर और नारी।।
जहां एक सूक्या तरुवर ताक्या, शिव कूँ आसन तहां वहां राख्या।
जहां एक गंद अंड तिस मांही, जिस जानत है समर्थ सांईं।।
जुग असंख कल्प भ्रमाया, पूर्व जन्म पिछला आया।
अब तुम सुनो गौरी मेरा ज्ञाना, आसन मुख कर कूँट ईशाना।।
आसन पदम लगावो गौरा, मेरु दण्ड सूधा कर भौरा।।
गरीब आसन पदम लगाइ करि, भँवर चढ़ावो सुंन।
अनहद नादू बाज हीं, जहां लगावो धुंन।। १९।।
चंद्र लगन में सुरति लगावो, सूरज सुर कूँ बंध खमावो।
गौरी आदि गणेश मनावो, किलिइं किलिइं ध्यान लगावो।।
प्रथम मूल कँवल कूँ जानों, चतुर पंखड़ी लाल बखानों।
दूजे स्वाद चक्र कूँ देखो, सेत वर्ण रंग सुरति विवेको।।
षष्ट पंखड़ी पीत प्रेवा, जहां बसत है कंदर्प देवा।
जहां वहां हरा हरी धुंन होई, तहां वहां नाम सुमरिये सोई।।
अब सुन नाभि कँवल सुरतालं, जामें ॐ मंत्र कमालं।
जहां वहां अष्ट पंखड़ी राजे, ब्रह्मा सावित्री जहां साजे।।
ऊपर मनसा कँवल मुरारी, जहां वहां विष्णुनाथ त्रिपुरारी।
जहां वहां लक्ष्मी शक्ति विराजे, तहां वहां हरिइं हरिइं साजे।।
अब सुन हृदय कँवल कमालं, जाहं वहां द्वादस दल का ख्यालं।
जहां वहां शिव शक्ति विराजे, सोहं नाद अनंत धुन गाजे।।
ऊपर षोडस कँवल समूला, जहां वहां नाम सिरीरंग तूला।
दो दल कँवल परेखो ध्याना, ब्रह्मरंध्र की घाटी जाना।।

बंकापुर बंकी है नगरी, घाट बाट कछु पंथ न डगरी।।
गरीब, घाट बाट नहीं तास के, अविगत नगर निधान।
सतगुरु के प्रताप से, कोई पौंहचे संत सुजान।। २०।।
त्रिकुटी ऊपर महल हमारा, योजन एक सहंस विस्तारा।
जामें बसै निरंजन योगी, खाय न पीवै सब रस भोगी।।
पराशक्ति जाकी है रानी, संख कल्प जुग अकलि निशानी।
जहां वहां बाजे अनहद नांद, शब्द न सवाल न विद्या न बादं।।
रास विलास होत तिस ठौरा, जहां तुम देखो देवी गौरा।
नौलख पातर मल्ल अखारा, कोटि उर्वशी करें सिंगारा।।
कोटि कोटि वैकुण्ठ विलासा, सो तुम गौरी देख तमासा।
एक सिंरग स्वर्ग कूँ जांही, वार पार कछु कीमति नांहीं।।
कोटि कोटि सूरजि प्रकाशा, सुष्मण द्वारे पीवो श्वासा।
तापर जटा कुंडली कहिये, सुन गौरी हम वाणी लहिये।।
पुंज रूप एक फुनि दरशाऊँ, जटा कुडली में ले जाऊँ।
जटा कुंडली धाम हमारा, संख पदम झिलमिल उजियारा।।
सोला संख सिरंग अपारा, जा पर एक कलश निरधारा।
जहां ब्रह्मा विष्णु न शंकर जाई, मूल ऊचार शब्द गोहराई।।
जहां नाग दौन बूटी विस्तारा। सुरति सुजीवन बड़ दरबारा।।
गरीब, सुरति सुजीवन लाईये, सिन्धु शब्द के मांहि।
जूनि संकट मोक्ष होहि, बहुरि न आवै जांहि।। २१।।
जा कँवला पर कँवल अनंता, जासे अगम शब्द महमंता।
सुनत शब्द ब्रह्मा होय जाई, लोक द्वीप ब्रह्मण्ड उपाई।।
जहां पुरुष पुरंजन बसें पुरातम, सुनो गौरीजा ज्ञान अध्यात्म।
अनंत कोटि जाके ब्रह्मा विष्णुं, मुरली मधुर बजावें कृष्णं।।
अनंत कोटि जाके अवतारा, जैसे गगन मंडल में तारा।
कीर्ति नाद भणौं अर्धंगी, अनंत कोटि है शंभू संगी।।
अनंत कोटि जाकै देवी दासी, सत्यपुरुष अविगत अविनाशी।
ब्रह्मानंद पद सुरति लगावो, अमर कछ पद पारस पावो।।
सुनें गुनें सूंघे और देखे, मूल उचारं करे विवेके।
कोटि तिमिर मिट है अंधियारा, सुनो गौरी तुम ज्ञान हमारा।।
निःसंदेह निरंतर ध्यावो, चौदह भुवन पलक फिर आवो।
परमहंस मंत्र प्रकाश्या, अंध तिमिर गिरिजा का नाश्या।।
सुरति शब्द में लागी डोरी, तातैं अमर कछ भई गौरी।
संख असंखौं जन्म पुरबले, गंध अंड तन काया भूले।।
योग संयोग मिले जदि आई। शिव गिरिजा कूँ कथा सुनाई।।

गरीब, कल्प करी शिव पुरुष कूँ, गौरी सुनाया ज्ञान।
आशा तृष्णा थिर हुई, अमर कछ प्रवान।। २२।।
सुनत ज्ञान अनभय पद वानी, अंड फूट चेतन भये प्रानी।
कोटि कोटि जनमों के कर्मा, दमन किये चिन्हे निजधर्मा।।
ऐसा ज्ञान अगम गोहराया, प्रजामी चेतन होय आया।
चेतन होय भर्या हुंकारा, शिव योगी मन मांहि संभार्या।।
गिरिजा भई ज्ञान गलताना, पंछी कौन वृक्ष गोहराना।
अजर नाम चीन्हा पद भारी, उड्या सुबटा पंख पसारी।।
शिव योगी जद भया चिचाना, पंछी सुन्या हमरा ज्ञाना।
ज्ञान का चोर जान नहीं पावै, पंखी तन तजि उदर समावै।।
ब्रह्मा विष्णु ध्यान धर आये, शिव योगी कूँ बेग बुलाये।
आनंद वचन कहै त्रिपुरारी, सुन हे वचन व्यास की नारी।।
इहां एक चोर हमारा आया, तुमरे उदर आन समाया।
माता बोले वाणी नीकी, हम कूँ खबर नहीं तन जीकी।।
द्वादस वर्ष रहे तन मांहीं, लगी समाधि ध्यान धुंन तांहीं।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, सुन पंछी तू ज्ञान प्रेवा।।
बाहर आव वचन सुन मोही, तुमरा नाश कबू ना होई।।
गरीब, शिव कूँ शुकदवे से कह्या, मानो वचन हमार।
उत्पत्ति प्रलय मेट हूँ, चरण कमल दीदार।। २३।।
बोले पंछी वचन उचारी, माता कूँ सुख दीनें भारी।
माता कहै पुत्र शुकदेवा, गर्भ जूनि मति आवो भेवा।।
बोले शुकदेव विह्ल वाणी, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दानी।
कोटि कोटि भुगति चौरासी, काटो फंद पुरुष अविनाशी।।
तिहूँ देवा जदि थंभी माया, गर्भ उदर से बाहर आया।
औलि नालि कसि कमरि मुतंगा, चाल्या शुकदेव वनखंड संगा।।
पुत्र पुत्र व्यास कर टेरे, माया मोह कछु नही ं मेरे।
कौन पुत्र को पिता कहावै, शब्द स्वरूप रहे निर्दावै।।
पांच तत्व गुण तीन समाना, पान पान में पद गलताना।
व्यास पुत्र से कीनें प्यारा, शुकदेव भर्या शब्द हंकारा।।
खोज न पाया व्यास गुसांई, कल्प करी उलटे घर आई।
आगे जाय भये प्रचंडा, जैसे नदी अठारह गंडा।।
सुरनर मुनि गण गंधर्व ज्ञानी, सब से ऊंचा हे अभिमानी।
अधर विमान चले मन रूपा, गर्भ योगेश्वर ज्ञान स्वरूपा।।
इन्द्रिय पांच पचीसों साधी, गर्भ योगेश्वर योगी वादी।।
गरीब, वादी योगी वाद करि, विचर्या तीनों लोक।

सतगुरु जनक विदेही बिन, पावत नांहीं मोक्ष।। २४।।
अहूँ व्याधि बंधन बहु भारी, शुकदेव जीत्या हूरंभा हारी।
अहूँ अग्नि हृदय प्रकाशा, ज्ञान ध्यान जरि है ज्यूं घासा।।
कोटि ज्ञान सुरपति सत्संगा, जाय अहिल्या कीन्हा संगा।
अहूँ अग्नि केते बौराये, शुकदेव योगी इन्द्र डिगाये।।
शुकदेव के तो मान घनेरा, सुरपति लुब्ध काम दल घेरा।
शुकदेव कल्प वृक्ष की छांहीं, जनक विदेही करे गुरु नांहीं।।
जनक बड़ा अक शुकदेव योगी, दस सहंस रानी रस भोगी।
शुकदेव बोले ज्ञान विवेका, हम स्त्री का मुख नहीं देखा।।
हम है गर्भ जोनि से न्यारा, ज्ञान खड्ग इन्द्रिय प्रहारा।
कैसे शीश नमाऊँ जाई, जनक विदेही राजा भाई।।
पुंडरीक नारदमुनि व्यासा, ब्रह्मा विष्णु महेश उपासा।
आसन आदर अति अधिकारा, शुकदेव सकल मांहि सिरदारा।।
चौदह भुवन फिरे पल मांहीं, शुकदेव सरबर दूजा नांहीं।
सुर तेतीसौं सहंस अठासी, शुकदेव की सब करैं खवासी।।
वसिष्ठ विश्वामित्र ज्ञानी, कागभुसंड कहो प्रवानी।।
गरीब, कागभुशण्डी ध्यान धरि, भये जु पद प्रवान।
आधीनी अधिकार बिन, शुकदेव मूढ अज्ञान।। २५।।
सनक सनंदन नारद भाई, शुकदेव ज्ञान बहुत समझाई।
नारद कूँ झीवर गुरु कीन्हा, कहां ज्ञान में हो गया हीना।।
बोले ब्रह्मा विष्णु महेशा, शुकदेव नांही ज्ञान प्रवेशा।
चीन्हा नहीं पुरुष अविनाशी, शुकदेव गर्भ योनि के वासी।।
जनक विदेही करो गुरु सोई, गर्भ योनि से छूटै तोही।
जनक विदेह गर्भ से न्यारा, शुकदेव गर्भ योनि अवतारा।।
योनि संकट देह कहाई, गर्भ योनि आगै है भाई।
योनि संकट देह कहावै, गर्भ योनि कोई बिरला पावै।।
गर्भ योनि है मान बड़ाई, सो शुकदेव तुम मांहि बसाई।
जनक विदेही करो दीदारा , तो तूं गर्भ योनि से न्यारा।।
पिंड ब्रह्मण्ड दोऊ हैं योनी, इच्छा बीज न शुकदेव भूंनी।
चौदह भुवन फिरे पल मांहीं, उड्या फिरे पंखी की नांई।।
तप का तेज ज्ञान अस्वारा, पाया नाहीं मुक्ति द्वारा।
शुकदेव ज्ञान ध्यान तप हीना, जब लग राजा गुरु नहीं कीन्हा।।
जैसे गंग अंग परछारे, तुमरी मोक्ष जनक के द्वारे।।
गरीब, राजा योगी जनक है, तीन लोक तत्त सार।
मिहर करै गुरुदेव जदि, शुकदेव उतरै पार।। २६।।

मान्या वचन कल्पना छाडी, शुकदेव लगी लगनि जदि गाढी।
शुकदेव छाडी मान बड़ाई, जनक विदेह किया गुरु जाई।।
बोलै जनक विदेही राजा, इन्द्रिय दमन करी किस काजा।
ब्रह्मानन्द पद मिल्या न तोकूँ, ऐसे दर्सत है सब मोकूँ।।
शुकदेव सुनों व्यास के पूता, इन्द्रिय लार लगी संजूता।
मन गुण इन्द्रिय कर्म न जाने, व्यास पुत्र तूं ज्ञान दिवाने।।
इन्द्रिय कर्म लगावो किसकै, जिह्वा लेप नहीं मधु रसकै।
नैन पटल में ईसर भागा, देखे सकल रूप अनरागा।।
नासाअग्री गंध सुगंधा, आत्म रूप पर्‌या गल फंदा।
श्रवण सुने वचन जो काना, बहरा कहां कहै विधि नाना।।
चिसमें अंध मंद हो जाई, ईश्वर पद में ज्योति समाई।
गुंग पिरानी कहै न बाता, जाके मुख रसनां और गाता।।
गंध सुगंध न व्यापै सोंही, जाके नासा ज्यूं की त्यूंही।
बांझ नारि के पुत्र न होई, बीज बिन्दु क्यूं खोवै लोई।।
चित्रकेतु राजा थे भाई, सौ करोर रानी परणाई।।
गरीब, सौ करोर रानी जहां, पुत्र न हुवा एक।
भाग्य बिना क्यूं पाईये, पूर्ण ब्रह्म अलेख।। २७।।
सौ करोर नहीं पुत्र निवासा, एक रांड से क्या घर बासा।
ईश्वरपद है भोगनहारा, भूल्या शुकदेव मूढ़ गंवारा।।
चार तत्त ज्यूं गगन निवासा, व्यापक सारे नभ आकाशा।
गगन शुन्य कछु लिप्त न होई, ऐसा ईश्वर पद है सोई।।
तुम खेलत कुछ बनज ज्ञाना, ईश्वर पद का नांहीं ध्याना।
जैसे चंदन सर्प लिपटाई, शीतल तन भया विष नहीं जाई।।
ऐसा योग कमाया पूता, कहां हुवा जो इन्द्रिय धूता।
सीप मांहि मोती मुक्ताहल, बाहर खारा नीर हलाहल।।
सार वस्तु तो अंदर लीनी, सुकच मीन कूँ दिक्षा दीनी।
सुकच मीन मिलता नहीं भाई, स्वांति सीप सब अहली जाई।।
सुकच मीन की टक्कर लागे, जब मोती सोहे गल धागे।
खारा नीर गंध हो जावै, दोपुड़ खुलै कौन चितावै।।
सुकच मीन सतगुरु जल मांही, स्वांति सीप का मेल कराही।
ऐसे सतगुरु मिलें जिज्ञासी, जदि पावै औह पद आविनाशी।।
नैंन सीप का बन्या बियाना, वरषें स्वांति सीप स्थाना।।
गरीब, जैसे स्वांति सीप मध्य, यौं साहिब में संत।
साहिब साधू एक हैं, ना इन में कछु अंत।। २८।।
सुकच मीन सतगुरु होय आया, जिन यह भेदी भेद बताया।

कर्म कुसंगति खारा नीरा, मोती खंड होत नघ हीरा।।
बैरागर धम घिरती पावै, चलता हीरा तुरत लखावै।
धम घिरती हीरा कूँ जानें, सतगुरु लावै चोट निशानें।।
नीर सिरहार नीर कूँ पावै, ऐसे सतगुरु पद दरसावै।
ज्यूं कस्तूरी मृगा भूला, भक्ति बिना गया योग समूला।।
भेदी मिले मृग मन घावै, तो कस्तूरी मांहें, पावै।
सुन रे मृगा कठिन कठोरा, काहे बाहर घास ढंढोरा।।
कुरंग मतंग पतंग भृंग सृंगा, इन्द्रिय एक ठग्यो तिस अंगा।
तुमरे संग पांचौं प्रकाशा, योग जुगति की झूठी आशा।।
नैंन पटल प्रकाश्या चिहरा, सो देखो मिहरी नहीं मिहरा।
सुन पूता शुकदेव बैजारी, किस कूँ कहो पुरुष और नारी।।
हाड चाम तन खाल खलीती, याह शुकदेव तुम माया जीती।
भग से बिंदु बिंदु से देही, चीन्हा नाहीं शब्द सनेही।।
जल में गगन गगन में जल है, थल में डहर डहर में थल है।।
गरीब, जल थल साक्षी एक है, डूंगर डहर दयाल।
दशौं दिशा कूँ दर्शनं, ना कहीं जौंरा काल।। २६।।
लिंग में भग और भग में लिंग है, मघ में काशी काशी में मघ है।
शिव में शक्ति शक्ति में शिव हैं, एक में एक और दो में नौ है।।
गरीब, दीन दुनी सुमिरण करें, जपै काल का नाम।
काल काल भक्षण करै, लख्या न अविगत धाम।। ३०।।
अगर फुलेल हमाम चढ़ाया, राजा जनक न्हान कूँ धाया।
दस सहंस में जो पटरानी, करै खवासी जलहर पानी।।
जरे अंगीठ बरे तिस नीचे, राजा रानी परिमल सींचे।
आवो गर्भ योगेश्वर योगी, हम राजा इंन्द्रिय रस भोगी।।
जो तुमरी देह अग्नि जरि जाई, तो झूठा शुकदेव योग कमाई।
मलागीर रानी तन लावै, अगर फुलेल हमाम न्हवावै।।
राजा राणी शब्द स्वरूपा, शुकदेव परे अंध गृहकूपा।
जब फुलेल लगावै अंगरी, हमरी जरि है काया सगरी।।
राजा बिहँस दई जदि तारी, हम अस्नान करावै नारी।
करि अस्नान तखत पर आये, शुकदेव परम ज्ञान गौहराये।।
अकल अचिंत शब्द निर्मोही, शुकदेव दरश भ्रम सब खोई।
सुतह सिद्धि आनन्द मन भाये, एक समय योगेश्वर आये।।
एक करी राजा प्रणामा, नौ योगेश्वर किया बियाना।।
गरीब, नौ योगेश्वर नमन करि, जनक नमाया शीश।
राजा बहु आनन्द घन, मिले जानि जगदीश।। ३१।।

सुन रे राजा जनक विदेही, नौ प्रणाम करो हरि सेई।
यह क्षण भंगुर देह हमारी, नौ प्रणाम करत होई बारी।।
एक अमोघ करी प्रणामा, नौ योगेश्वर दीन्हा ज्ञाना।
दई चक्र एक दारुण माया, जामे शुकदेव भ्रम भुलाया।।
सत्वगुण रजगुण तमोगुण राजं, तीन भुवन में पर्‍या सु दाझं।
काम क्रोध मद लोभ लगारं, पांचौं इन्द्रिय धूं धूं धारं।।
पच्चीसौं पर किरति प्रेवा, भवसागर के सतगुरु खेवा।
सकल बडेरा मोह मवासी, जाकी चेरी दुर्मति दासी।।
आशा तृष्णा नदी बहाई, सुर नर मुनि जन गंधर्व न्हांही।
संसा शोक रोग बड़ भारी, पुण्य पाप दोनूं दरबारी।।
आठ भाग हैं मन के भाई, अष्टंगी माया कहलाई।
इन्द्री पांच तीन गुण मेला, सब के ऊपर मन का खेला।।
कहाँ पढ़ो भागवत गीता, मन जीता जिन त्रिभुवन जीता।
मन जीते बिन झूठ ज्ञाना, चार वेद और अठारा पुराना।।
मन की कामनी मनसा नारी, तीन लोक किये सिरहारी।।
गरीब, तीन लोक प्रतिहार है, काम कंदला नारि।
नौ तत्त के का नाश करि, आवागमन निवारि।। ३२।।
ऊठै झाल काल के लोरा, गये मुनीश्वर गारत गोरा।
संखौं लहरि लहरि लहराहीं, कोट्यौं भँवर परैं तिस मांही।।
मन के ताबे है सब सैना, सतगुरु आंन सुनावै बैना।
बांस बली कछु लागत नाहीं, बड़े गिराह दूत घट मांहीं।।
मार मार होवै चहूँ ओरा, जहां उबारै सतगुरु मोरा।
यह तो दई चक्र दल भारी, बंकी फौज चढ़ै अस्वारी।।
द्वादस कोटि दूत दरहाला, जिन यह जगत किया पयमाला।
धर्मराय है बांका राजा, सहंस अठासी द्वीप बिराजा।।
दूत दूत की सैना न्यारी, चौदह मुनि दिवान भंडारीं।
हाथौं मुगदर और कर फांसी, धर्मराय राजा अविनाशी।।
स्वर्ग पताल राज तिस केरा, पुण्य पाप का करै निबेरा।
ऊर्ध्वमुखी चौंसठ जुग तापै, तांते धर्मराय ही थापै।।
संसै काल शरीर समाना, महाकाल बाहर अस्थाना।
महाकाल का वरणौं अंगा, नाग रूप है काल भुजंगा।।
गरीब, संसे खाई मेदिनी, महाकाल रह्या दूर।
पांचौ तत्त सिंघारि हैं, करि हैं चकनाचूर।। ३३।।
धौल धरणि और पानी पवना, आब खाख जरि आतश होना।।
गरीब, आब खाख जदि जरैगा,अंत समय की बार।

पांच तत्त का नाश होई, अग्नि पवन पिंड छार।। ३४।।
तास समय में लेत उबारी, ऐसा नाम अचिंत संभारी।
नित प्रलय में नित मर जाई, पिंड प्रलय में देह धराई।।
ब्रह्मण्ड परलो कहां समाना, बूझो हंसा ठौर ठिकाना।
सप्त कोटि योजन अस्थाना, येता जलाबिंब लहराना।।
सप्त कोटि नीचे गहराही, सतगुरु शब्द भेद सब ल्याही।
खूल्ह्या द्वार अग्नि प्रचण्डा, जलाबिंब सब कीने खंडा।।
अग्नि दाह जठरा प्रगटाई, रति रति कर जल जरि जाई।
अग्नि दाह मारुत उड़ाई, नभ अकाश रह्या जदि भाई।।
वहां लग महाकाल का जोरा, हंस उबारे सतगुरु मोरा।
नाग दौंन निज नाम कहावै, महाकाल जिस निकट न आवै।।
पटके शीश करै घमसाना, काल भुजंग कहां अस्थाना।
पांच तत्त का चरबन कीन्हा, महाकाल है कुटिल कुलीना।।
नागदौंन होवै तिस पासा, महाकाल नहीं देत त्रासा।
सूंघे नागदौंन मुरझाई, फन पटके और देत दुहाई।।
संख लहरि है विष असराला, सिर पर महाकाल का काला।।
गरीब, महा काल चूरण करै, सकल द्वीप नौ खण्ड।
विष लहरि व्यापै नहीं, अमर कछ तन पिंड।। ३५।।
उस साहिब से डरै घनेरा, फन पटकै आवैं नहीं नेरा।
जीवत शरण चरण कूँ सेवै, आप तरै औरन कूँ खेवै।।
काल भुंजग बड़ा महमंता, महाकाल के रूप अनंता।
सकल शिरोमणि रूप भुजंगा, दमन करत है सब का अंगा।।
पांच तत्त नौ तत्त का जार्‍या सूक्ष्म रूप रहत है न्यारा।
सूक्ष्म रूप अधर नभ राजे, कोटि कला तिस अंदर साजे।।
जाका साधू धरैं ध्याना, महाकाल जीतै प्रवाना।
भवसागर से करै निवेरा, पार लंघावै सतगुरु मेरा।।
सूक्ष्म कारण और स्थूलं, ये तीनूं हैं ब्रह्म समूलं।
सूक्ष्म कारण देह कहावै, साहिब से सतगुरु होइ आवै।।
शब्द अनंद घोर गरजाहीं, बादल घटा मेघ बरषाही।
बपु शरीर धरत है सांईं, साक्षीभूत सकल घट मांहीं।।
कच्छ मच्छ कूरंभ शरीरं, हरि बैराह भये बलबीरं।
नरसिंह रूप धर्‍या प्रवाना, मार लिया हिरणाकुश दाना।।
बावन होय गये बलि द्वारे, आदि अनादि कारज सारे।
हिरणाकछव बिहंड पृथ्वी ल्याये, खंभ बंधे प्रहलाद छूटाये।।
गरीब, नरसिंह जाका नाम है, अविगत पुरुष दयाल।

हिरणाकुश जिन मारिया, महाकाल का काल।। ३६।।
बावन रूप छले बलिराजा, पूर्ण कीन्हे जन के काजा।
ध्रुव स्वर्गा पुरी जाय विराजे, अटलपुरी वैकुण्ठो साजे।।
परशुराम प्रवान प्रेरं, क्षत्री मारि निःक्षत्री केरं।
रामचंद्र और लक्ष्मण आये, भरत चतर पृथ्वी पर धाये।।
जिन के नाम शिला तर जाई, जाकी नारी हरी रे भाई।
जाके हनुमान अधिकारी, पवन पुत्र बलवंत बहु भारी।।
जाके अंगद और सुग्रीमा, साजि चढ़े दल बादल खीमा।
जाके जाम्बवान बलवंता, रीछ अरु बंदर चढ़े अनंता।।
जाके नल और नील संगाती, सरवर बांधि लिये बहु साथी।
जा दिन अंगद शिला फिराई, रावण दूत सबै थे भाई।।
एकै दूत टर्या नहीं टार्या, रावण गर्व किया सो हार्या।
जाके पौंनी हनुमंत बंका, सो तो कूद्या लंक बिलंका।।
जिन तो नौलख बाग उपार्या, सो तो डारि दिया मंझधारा।
जिन तो सरबस लंक जराई, तेरी नजरि अजूं नहीं आई।।
आये कारे मुंख के बंदरा, सो तो डाक लगावै अधरा।।
गरीब, कूदे अधर अधार गति, सैना सहित रघुवीर।
रावण ऊपर साखती, सेतु बंध्या रणधीर।। ३७।।
आये बंदर रीछ विशाला, यह तो आई पर्वत माला।
आये सूर संत बहु रुंडा, ओछी बाजू लंब लंगूडा।।
अब तो कहै मंदोदरी रानी, तुम अब सुनो कंत अभिमानी।
जिन यह सायर बंधी बेरी, जाकी दे मिल सीता चेरी।।
अब बोलत है रावण राजा , सैना अनंत हमारे साजा।
वै तो बांधि ल्याऊँ दो भाई, सुनो मंदोदरि ईश दुहाई।।
सैना सारी समुंद्र डबोऊँ, रामचंद्र लक्ष्मण कूँ खोऊँ।
मोकूँ महादेव वर दीन्हा, चौदह भुवन लूट हम लीन्हा।।
इन्द्र कुबेर वरुण बांधि आन्या, धर्मराय ऊपर तलबाना।
सप्तपुरी पर तेग हमारी, क्या तूं जाने अबला नारी।।
वासुकी हमरी भेंट चढ़ाये, मेघनाद पुत्री वर ल्याये।
अब तुम सुनो कंत मति हीना, शिव योगी तुमको वर दीन्हा।।
वै शिव शंकर राम उपाये, जाकी महिमा कही न जाये।
बंदर भद्दर भूर मुख लीले, मस्तक रतनाले और पीले।।
जासे धौल धरणि धमकारा, जाकी स्वर्ग सुनी किलकारा।।
गरीब, ऐसे हनुमंत बीर है, वज्र दण्ड बरियाम।
मनसा वाचा कर्मणा, सेवक आठौं जाम।। ३८।।

गरीब, सकल समुंद्र की मसि करौं, कलम करौं बन बीन।
धरनी का कागज करौं, हरिगुन अगमी चीन्ह।। ३६।।
जिन यह बांध्या समुंद्र समूचा, रहनी करनी तोसे ऊंचा।
लंक सुमेर शिला फटकारे, ऐसे हनुमान किलकारे।।
जो मोहि आज्ञा करै राम राजा, तेरे बांधि ल्याऊँ सब साजा।
जासे धरणि धसम से धौलं, ऐसी हनुमंत घाली रौलं।।
अब तो लंक मँडी है राड़ी, महरावण की भुजा उपाड़ी।
दूत्र खंड खंड कर नाख्या, प्रथम हनुमान का साका।।
जहां वहां बाजै शंख अरु भेरी, लंका दशौं दिशा से घेरी।
रण संग्राम मंड्या बहु भारी, लंका लूट लई है सारी।।
जिन के शक्ति वज्र शरीरा, जिन कूँ बेधे बान न तीरा।
जहां वहां बोलै रीछ भुरारा, जहां चढ़ि धाये पदम अठारा।।
रामचंद्र और लक्ष्मण जोरी, जाकै रीछ बहत्तर कोरी।
जाकै मेघनाद बलवंता, जाकै संगी शूर अनंता।।
जाकै शस्त्र बान अपारा, जप तप करनी कीर्ति सारा।
जब वहां मेघनाद दल छूटे, जिन वे रामचन्द्र दल कूटे।।
छूटै अग्नि चक्री बाना, जिन सब सैना वेधे प्राणा।।
गरीब, नाग फांस में आ गये, सैना सुध रघुबीर।
तेतीस बंधि छुटाईया, टूटै जम जंजीर।। ४०।।
जिन वह सैना सकल सिंघारी, सुनरे हनुमान दरबारी।
अब तुम द्रोणागिरि को जावो, हनुमंत ढूंढि संजीवन ल्यावो।।
जहां वहां पवनि नंदन धाया, देखो कल्प करी राम राया।
द्रोणागिरी जहां लिये उठाई, हनुमंत बेगि संजीवन ल्याई।।
जदि वह सैना सकल संपोषी, खड़ी भई सारी त्रिलोकी।
जदि लंका ऊपरि दल धाये, दूजे नाग फांसि में आये।।
जदि वहां वाहन गरुड हंकारे, खाय लिये नागी दल सारे।
जदि वहां मिले विभीषण आई, जदि वहां लंक दई रामराई।।
अब छूटत हैं बान अमोघा, रावण मार लिया लंक शोगा।
जाकूँ मिल्या महादेव बंका, ताका टूट गया गढ़ लंका।।
अब तेतीसौं बंधि छुटाये, रामचंद्र सीता घर ल्याये।
बूझै गरुड भुशंड बियाना, मोसे कहो भेद विधि नाना।।
वचन सुशील दृष्टि अनुरागा, देवत की देह द्वार मुख कागा।
कलंगी तीन शीश तिस साजै, शब्द कुलाहल हरखि निवाजै।।
मधुकर बैंन सुनत हो शांति। कहो भुशंड याकी उत्पाति।।
गरीब, मधुकर बैंन विलास बौह, सुख सागर आनंद।

तहां वहां सुरति लाईले, सुनत कटै सब फंद।। ४१।।
श्रवण सुमरत वचन उमेदा, धातु रसायन सब तन बेधा।
वचन सुनत सुख होत आनंदा, भेद कहो निज परमानंदा।।
कमल कपोल मधुर बैंन तोरे, सुनते शब्द कटे पाप मोरे।
आदि अनादि कथा विस्तारा, मो को भेद कहो तत सारा।।
परमभेद कहो बहु भांति, मिटे हमारे मन की काती।
कौन देश को नगर निधाना, कहौ भुसंड आदि प्रवाना।।
कौन पिता को जननी जामा, कौन कुली कौन वंश बखाना।
अबरन वरण कला प्रवेशा, तुम्हरी महिमा कर है शेषा।।
जल स्वरूप कछु तरंग न तेजं, इन्द्रिय जीत चढ़े मन सेजं।
ब्रह्म निरूपण निर्गुण भेषा, कहौ भुशंड मोहि आदि संदेशा।।
चंद्र का तेज सूर्य की किरणा, जासे अधिका तुम्हरा बरणा।
कौन कला गति रूप सरूपा, तिमिर मेटि उजियारा धूपा।।
सुनो भुसंड तुम अकलि अनूपा, भेद कहों परमानंद जू का।
कहै भुसंड तुम सुनो खगेशा, तोसे भेद कहूँ प्रवेशा।।
संख कल्प जुग गये बिहाई, पूर्व जन्म की कथा सुनाई।।
गरीब, संख कल्प जुग हो गये, जामन मरन जिहांन।
जन्म पुरबाला तुझ कहौं, सुनो खगेश सुजान।। ४२।।
सुनो गरुड मोरा आदि संदेशा, भिन्न भिन्न भेद कहौं खगेशा।
संख जन्म पूर्व पयमाला, गये जो मिथ्या नहीं संभाला।।
अवधपुरी एक नगर निधाना, जहां अवतार धरे मोरे प्राना।
बीस वर्ष की उमर पुनीता, माता पिता भये काल सनीपा।।
पड़्या काल दुर्भिक्ष तहांई, पृथ्वी डोल गई रे भाई।
पड़्या काल दुर्भिक्ष अपारा, मनुष्य मनुष्य का करै अहारा।।
अन्न का नहीं आहार प्राणी, पड़्या काल दुर्भिक्ष अमानी।
अवधपुरी हम तजी खगेशा, ताहि समय गये मालु देशा।।
पुरी अवन्ती लीना बासा, जहां वहां नाहीं अन्न की त्रासा।
अन्न तो जहां पेट भर खाया, कहै भुसंड सुनो खगराया।।
पण्डित एक अवन्ती मांही, कथा करन शिव द्वारे जांही।
षट् मास हम संगति कीन्ही, बहुरि तास की दिक्षा लीनी।।
टहल करत तिस पंडित केरी, गुरु चेले का भाव घनेरी।
स्वामी करन गये अस्नाना, पूजा अर्पण धूप ध्याना।।
शिव पूजा पंडित अर्थावै, बेलि पत्र धरि लिंग बनावै।।
गरीब, शिव पूजा पंडित करै, जहां हम लिया निवास।
गुरु शिक्षा मन में करी, मिटी खगेश पियास।। ४३।।

तन मन अरपै फेरै माला, जाके ऊपर ईश दयाला।
पूजा करन दिवाले आये, जहां हम बैठे दर्शन पाये।।
जहां शिव कूँ मोहि दीया श्रापा, लाख वर्ष तुम जमपुरी राखा।
पंडित सुन्या वचन शिव केरा, ऊठि चरण लीन्हा गुरु केरा।।
पंडित शिव का ध्यान लगाया, कल्प करी बालक बौराया।
रे धरि बालक तूं शिव का ध्याना, तांतै बकसै तोरे प्राना।।
चार पहर पंडित कूँ बीते, बहुरि अवाज हुई मन चीते।
मोरा वचन न खाली जाई, जम के लोक चलो रे भाई।।
बहुरि धर्‌या पंडित तब ध्याना, बकसो साहिब याके प्राना।
सहंस वर्ष जद कीन्हा ठीका, वाणी अरस भई शिव लीका।।
बहुरि महादेव भये दयाला, जम का लोक भुगति तत्काला।
हमरे लाग्या संसा शोका, छूटी देह गये जम लोका।।
चंद रोज तत्कालं आये, शिव की दया गुरु अर्थाये।
जम हम कूँ नहीं दीन्ही त्रासा, भुगत्या नाहीं नरक निवासा।।
शिव स्वामी की दया अपारा, फिर हम आन लिये अवतारा।।
गरीब, जन्म धरे तत्काल जब, छूट गई मम देह।
गुरु शिव साहिब दया से, हो गये निरसंदेह।। ४४।।
योग ध्यान और नाम नरेशा, जप तप करनी मिट हैं अंदेशा।
प्राणायाम किया प्रनामा, स्वर्ग पुरी कूँ चले विमाना।।
लोमी ऋषि जहां कथा कराई, जहां हम प्रसंग पूछा जाई।
सरगुण कथा होत तिसबारी, हम तो निर्गुण के अधिकारी।।
सरगुण अर्थ हमो गौहराया, लोमष ऋषि प्रसंग बतलाया।
बहुरि समोध किया तिस बेरा, बैठे जाय निकट हम नेरा।।
सरगुण कथा बिना क्या गावैं, निर्गुण पद नजर्‌यों नहीं आवै।
जदि वहां बोले कागभुशंडा, दर्शा अदभुत रूप अखण्डा।।
सरगुण सकल नाश होई जाई, निर्गुण सदा रहो ल्यौलाई।
लोमष ऋषि प्रसंग विस्तारी, सुनों गरुड आदि कथा हमारी।।
बहुरि कह्या सरगुण प्रसंगा, शिव की जटा रहे ज्यूं गंगा।
तप कर के भागीरथ ल्याये, तिहूँ लोक कीर्ति दर्शाये।।
गुप्त वस्तु प्रगट दिखलाई, निगुर्ण सरगुण समझौ भाई।
वृक्ष बीज में है सब ठौरा, जब ऊगै तब दीखै मौरा।।
डाल पान सब नजर्‌यों आया, पंछी केल करत है छाया।।
गरीब, जैसे पंछी वृक्ष में, केलि करत दिन रैंन।
समाधान में सृष्टि है, वास लिया सुख चैंन।। ४५।।
फल पंछी नर करै आहारा, याह लीला सरगुण विस्तारा।

सरगुण भोग किये भगवाना, बहु विधि विलसे संत सुजाना।।
नली नालि में आवै जाई, सूत बिना धरि परे बगाई।
सूत सुरति पद पुंज लपेटा, सोई पूर्ण सोई पेटा।।
गरीब, दिल दरिया दुरबीन हैं, ऐंनक अकलि अनूप।
निर्गुण सरगुण एक है, सोहं सत स्वरूप।। ४६।।
कोई निर्गुण कोई सगुरण गावै, पूर्ण पेटा सूत कहावै।
बाजत शंख सुनी दम टेरा, वहां शंख अवाज क दम का फेरा।।
लोमष ऋषि प्रसंग सुनाया, दम बिन शंख अवाज न राया।
शंख शरीर पवन से गूंजै, आत्मज्ञानी पद कूँ बूझै।।
सर्गुण बिना न निर्गुण कामा, निर्गुण बिना न सर्गुण धामा।
बर्तन बिना वसतु कहां पावै, वसतु होई तो बर्तन आवै।।
बर्तन देही अंग शरीरा, वस्तु नाम हे सुरति गंभीरा।
मंदिर बिना दीपक किस काजा, दीपक हो तो मंदिर साजा।।
पुरुष बिना नारी किस कामा, नारि बिहूना पुरुष अलामा।
सर्गुण मंदल ताल अवाजा, पवन प्रेरे निर्गुण राजा।।
ज्यूं मुरजीवा नघ कूँ ल्यावै, लोहा कुंडल चड़स बनावै।।
गरीब, मुरजीवा मन कूँ करे, शब्द महोदधि मेल।
सिन्धु सरोवर पैठ करि, देखे अनहद खेल।। ४७।।
कहै लोमष ऋषि सुनो भुशंडा, जीव न पुष्ट होत बिन अंडा।
अंड बिना तो पिंड न होई, पिंड अंड का साक्षी सोई।।
हम नहीं समझ्या ज्ञान खगेशा, दीया श्राप हुवा प्रवेशा।
वचन कह्या जब हीं चिंडाला, कागा का मुख भया दयाला।।
दिया श्राप जुगा जुग केरा, गरुड देव आनंद मन मेरा।
तामस क्रोध नही हम कीन्हा, जब लोमष ऋषि दीक्षा दीन्हा।।
जब लोमष ऋषि ज्ञान सुनाया, सुनत ज्ञान चिंडाल कहाया।
जप तप करनी कीर्ति सारा, सुनो गरुड मेरे प्राण अधारा।।
कूँट ईशान करो प्रहारा, काग चंड के ल्यौ अवतारा।
सावित्री ब्रह्मा की दासी, पुत्री सेती ज्ञान विलासी।।
ब्रह्माणी हंसनी पिंडवाई, काग चंड के द्वारे आई।
ऋतुवंती हंसनी का पिंडा, भोग संयोग किया है चंडा।।
ब्रह्म लोक लीने अवतारा, कुटिल रूप हंसों की मारा।
माता जाय किया गुण सारा, ब्रह्माणी लग गई पुकारा।।
ब्रह्माणी जदि कल्प कराई, धरौं ध्यान पद में ल्यौं लाई।।
गरीब, क्षण में पद प्रवान हैं, सत्रह भ्राता लीन।
रहे खगेशा एक हम, सुख सागर ज्यूं मीन।। ४८।।

सत्रह लीन भये पद मांहीं, हम तो कल्पवृक्ष की छांहीं।
हम तो देह छता पद लीना, आदि अंत प्रलय कई बीना।।
जल करि है पृथ्वी सिंघारा, अग्नि करत है जल प्रहारा।
मारुत करत है अग्नि समोधं, पवन तत्त मध्य गगन बिनोदं।।
पांच तत्त निःतत्त से मेला, शब्द न सवाल गुरु नहीं चेला।
जद हम गरुड रहे गलताना, पद से भिन्न नहीं मोरे प्राणा।।
पद स्वरूप पूर्ण अनरागे, प्रलय अनंत गई हम आगे।
फिर उदगार होत निर्मूला, हमरा ज्यूं का त्यूं अस्थूला।।
ज्यूं स्वप्न सुषुप्ति जागृति योनी, ऐसे उत्पति प्रलय होनी।
देह छता प्रगट मर जाहीं, जागृति बार लगै नहीं काई।।
उत्पत्ति प्रलय खेल हमारा, पद में लीन सुधा तन सारा।
बूझौ गरुड सुनों अनभूता, कौन काज तुम देह संजूता।।
उत्पत्ति प्रलय तुम नहीं खंडा, कहै गरुड सुनों कागभुसंडा।
पांच तत्त जद प्रलय जांहीं, जहां मनोरथ हंस समांहीं।।
कहै भुशंड तुम सुनो खगेशा, शब्द सिन्धु दूर औह देशा।।

गरीब, दूर देश आनंद पद, अनमिल मिलन हमेश।
ब्रह्मादिक खोजत रहैं, ध्यावै शंकर शेष।। ४९।।

कहै गरुड सुन काग भुशंडा, नाना रूप कला प्रचण्डा।
सायर बांधि जो शिला तिराई, तेतीसौ की बंधि छुटाई।।
ये रघुवंशी राजा रामा, सकल मनोरथ पूर्ण कामा।
ये रघुवंशी राम कहाये, तो क्यूं नाग फांसि में आये।।
जो ये कर्ता आप मुरारी, सायर बांधि शिला क्यूं त्यारी।
कहै गरुड मोहि बड़ा अंदेशा, यह गुझ मंत्र कहो नरेशा।।
कौन राम कर्ता किस भांती, कहौ भुशंड याकी उत्पाती।
कहै भुशंड गरुड सुनि वाणी, इनकी गति मति हम नहीं जानी।।
राजा रामचंद्र अवतारा, दसरथ के आये कई बारा।
जाकी लीला गरुड सुनाऊँ, सुनो गरुड संक्षेप बताऊँ।।
जाकी लीला सुनियो बोधा, एक दिन नारद किया समोधा।
जा दिन सप्त वर्ष के बाला, वे तो खेलत हैं चित्रशाला।।
देख्या नारद कागभुसंडा, जाके कर में रोटी डण्डा।
जब वहां नारद कह्या विचारी, याकी ल्यौंह परीक्षा सारी।।
टुकड़ा खोसि उड़े असमाना, लोका लोक ऊपर कर जाना।।

गरीब, उड़े जु लोका लोक तजि, तीस कल्प कलधूत।
एक मुहूर्त पुरी में, सुनौं खगेशा दूत।। ५०।।

जो यौह कर तुमरे है शीशं, तो ये आदि पुरुष जगदीशं।

जो यौ खंड परे रे भाई, तो ये ईश्वर गति अधिकाई।।
जब हम गवन किया मन माना, तब हम विचरे कूँट ईशाना।
लोका लोक ऊपर कर धाये, सिर की दस्त बरोबर आये।।
जाके चरण देह तिस ठौरा, हमरा उड्या बिहंगम भौरा।
विचरे कोटि कोटि ब्रह्मण्डा, जाका हाथ भया प्रचंडा।।
जब हम उलटा गमन करांहीं, ताते आय गये मुख मांही।
देखा स्वर्ग पताल समूला, जाके तन अन्दर अस्थूला।।
देखे कोटि भानु रवि चंदा, घट में नदी अठारह गंडा।
देखी अठारह भार बनमाला, देखे सरवर सूभर ताला।।
कोट्यौं ब्रह्मा विष्णु महेशा, देखे नारद शारद शेषा।
कोट्यौं इन्द्र कुबेर और वरुणं, विचरे फिरे न आये शरणं।।
कोट्यौं रावण लंका धारी, कोट्यौं हनुमान बलकारी।
अब तूं बूझि ज्ञान की संथा, देखे तोसे गरुड अनंता।।
देखे मेघनाद घनघोरा, दामनि दमकत हैं चहूँ ओरा।
जाके मध्य धर्मराय राजा, देखे चित्रगुप्त कोटि साजा।।
गरीब, कोटि कोटि हैं धर्मराय, कोटि कोटि धर्मधीर।
कोटि कोटि चित्रगुप्त हैं, राम एक रघुबीर।। ५१।।
जाके काल मीच मुख मांहीं, जाके अनंत कोटि जमधांहीं।
देखे गण गंधर्व सुरज्ञानी, जाके उदर बीच चहूँ खानी।।
देखे कच्छ मच्छ कूरंभा, चौदह भुवन उदर अठखंभा।
जदि हम कल्प करी प्रवीना, सुनो गरुड मोरे प्राण अधीना।।
आये पुरी अयोध्या मांही, रामचंद्र और नारद पांही।
जदि चिंतामणि चरण जुहार्‌या, तोरी लीला अनंत अपारा।।
जहां तो एक मुहूर्त ध्याना, ब्रह्मा एक कल्प प्रवाना।
कागभुशंड और नारद ज्ञानी, ब्रह्मा लोक गये प्रवानी।।
जब हम बात कथा विस्तारी, ब्रह्मा एक कल्प अनुसारी।
इहां तो एक मुहूर्त होई, वहां तो कल्प गई रे लोई।।
कथा सुनि गरुड भये गलताना, कागभुसंड मेरे जीवन प्राणा।
आदि अनादि कथा विस्तारी, कोटि कोटि लीला घन सारी।।
सुनों गरुड जाकी योग माया, सुर नर मुनि जन सबै भुलाया।
एक समय ब्रह्मा त्रिपुरारी, कथा अनादि सब विस्तारी।।
सनक सनंदन संत कुमारा, आये बूझन ज्ञान तुम्हारा।।
गरीब, सनकादिक जहां बूझिया, ब्रह्मा सेती ज्ञान।
कौन इष्ट है तास का, किस का धरते ध्यान।। ५२।।
गरीब, कल्प करी करुणा मई, चर्चा करी न जाय।

हंस रूप साहिब धरे, सनकादिक के भाय।। ५३।।
सुनों पिता म्हारी अरज अनाथा, हम कूँ दीजे ज्ञान गुण साथा।
बोले सनक सनंदन भाई, कहो पिता किस ध्यान लगाई।।
को गायत्री मूल उचारा, कहो पिता किस रूप अधारा।
ब्रह्मा थकित भये तिस बेरा, पुत्र मान भंग किया मेरा।।
ब्रह्मा कल्प करी ध्यान लाये, हंस रूप नारायण आये।
जगमग जगमग हंस शरीरा, मगन भये सनकादिक थीरा।।
बिन ही बोले ज्ञान सुनाया, ब्रह्मा हंस रूप दर्साया।
ऐसे हैं त्रिपुरारि ब्रह्मा, जिन के लाई दिये तन कर्मा।।
एक समय पुत्री पिपासा, सो तो गई पुरुष की आशा।
भोग संजोग पुरुष प्रवाना, सुन्या सरस्वती आत्म ज्ञाना।।
फूल माल और हार सिंगारा, गई सरस्वती ब्रह्म दरबारा।
आगे ब्रह्मा आदि अनांद, ज्ञान ध्यान और कथा संवादं।।
औही ब्रह्मा जिन दर्स दिखाया, औही ब्रह्मा घेर्‌या योग माया।
सुर नर मुनि जन गंधर्व ज्ञानी, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दानी।।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, किया चरित्र योग जु माया।।
गरीब, ऐसी माया योग है, चित चक्रित कर देत।
सनक सनंदन दर्शिया, ऊजल मूर्ति सेत।। ५४।।
मार्कण्डेय लोमष ऋषि बीनां, कागभुशंड नारद प्रवीनां।
वसिष्ठ विश्वा और दुर्वासा, पाराशर पिपलादिक दासा।।
सनक सनंदन संत कुमारा, बैठे मजलसि बीच मंझारा।
बन्या सरस्वती कमल शरीरा, ब्रह्मा मन ढलक्या ज्यूं नीरा।।
ब्रह्मा बाथ भरी मुसकाई, शिव कूँ तो सिर थाप लगाई।
पंचमुखी त्रिपुरारी ब्रह्मा, जाकूँ बिगरत लग्या न लहमा।।
दई चक्र में ब्रह्मा आये, शिव कूँ ज्ञान आदि समझाये।
छाड छाड ब्रह्मा तूं देहा, मानों हमरा वचन सनेहा।।
ब्रह्मा योग ध्यान में आये, देह अनित करी पद पाये।
योग ध्यान से धरे शरीरा, ब्रह्मा ज्ञान ध्यान अस्थीरा।।
ब्रह्मा देह नहीं जो त्यागा, जाता ज्ञान ध्यान बैरागा।
धन्य धन्य ब्रह्मा वेद उचारी, योग और यज्ञ होम व्रत सारी।।
धन्य धन्य ब्रह्मा आदि अनादं, शिव से कीन्हा ज्ञान संवादं।
ज्ञान संवाद किया गलताना, यज्ञ और योग किये विधिनाना।।
दासातन जब शिव समझाया, आदि अनादि लीला ल्याया।।
गरीब, दासातन से दर्श है, सब का हूजेदास।
हनुमान का हेत ले, रामचन्द्र के पास।। ५५।।

कोटि कर्म जो तन लिपटाई, दासातन बिन कटे न भाई।
दासातन जो जीव के आवै, योनि जन्म न देह धरावैं।।
दास भाव शिव कहै समूला, सुन ब्रह्मा मेरा ज्ञान अतूला।
दास भाव जो हिरदे होई, ता पर वज्र परै नहीं कोई।।
दास भाव जो हिरदे मांहीं, कोटि वज्र टूटे नहीं तांहीं।
दास भाव ब्रह्मा तैं कीन्हा, हमरा वचन शीश धरि लीना।।
जप तप करनी कीर्ति करहीं, दास भाव बिन सब परहरहीं।
दास भाव है अगम अगाहा, दास भाव सा और ना लाहा।।
दास भाव कर है रघुनाथा, दास भाव सा और न नाता।
दास भाव कर हैं आदि सांईं, दास भाव से दुनी रचाई।।
दास भाव कर है जगदीशा, दासभाव छाडे दहशीशा।
दस मस्तक रावण कुरबाना, दास भाव का मर्म न जाना।।
दास भाव बिन लंका खोई, राज रसातल कुलहि बिगोई।
दास भाव बिन हार्या जन्मा, आशा तृष्णा रहि गई धनमां।।
सर्व सोने की लंका लोई, दास भाव बिन सर्वस खोई।।
गरीब, दास भाव बिन बहु गये, रावण से रणधीर।
लंक बिलंका लुट गई, जम के परे जंजीर।। ५६।।
दासातन हंसा कूँ खेऊँ, राज पाट वैकुण्ठा देऊँ।
दास दर्श परमानंद होई, बिन दासातन मिले न कोई।।
दासातन कीन्हा भगवाना, भृगुलता का उर में ध्याना।
विभीषण का भाग्य बडेरा, दासातन आया तिस नेरा।।
दासातन आया बिसवे बीसा, जाको लंक दई बख्सीसा।
ऐसा दासातन है भाई, लंक बख्सते वार न लाई।।
सकल मनोरथ पूर्ण कामा, समर्थ साहिब राजा रामा।
जाके दिल में है दुचिताई, दासातन आवै नहीं भाई।।
दासातन दर्श परस प्रवाना, तीन लोक नहीं तास समाना।
दासातन जो ध्रुव के आया, दिया राज वैकुण्ठ पठाया।।
दासातन प्रहलाद प्रीता, नरहिंस रूप धरे मोरे मीता।
दासातन नारद मुनि कीन्हा, अभय अनाहद परम पद लीना।।
मार्कण्डेय लोमष उपदेशा, दासातन कीन्हा है शेषा।
कागभुशंड दासन का दासा, जाका कबू न होवै नाशा।।
दास भाव राम धरि आये, सुर तेतीसौं बंध छुटाये।।
गरीब, दास भाव साहिब करै, सबहन की सुधि लेत।
त्रिलोक सब मेदिनी, सब कूँ भोजन देत।। ५७।।
दास भाव हनुमंत को कीन्हा, सो तो भेट राम की दीन्हा।

हुकमी हाजर रहत हजूरं, दासातन में नहीं कसूरं।।
जुगन जुगन सत्संगी चेरा, दासातन हनुमान बडेरा।
हनुमान सा दास न कोई, सुरनर मुनिजन गंर्धव जोई।।
हनुमंत लीला अगम अपारा, दासातन के भरे बुखारा।
हनुमान बजरंगी बाला, पौनी पाईक नजर निहाला।।
हनुमान पुरुषार्थ भारी, दासातन का है अधिकारी।
भरत अर्थ के है सौ मांहीं, दासातन की मैं बलिजांहीं।।
देखो तीन लोक के हंसा, चाहै राज पाट कुलबंसा।
देखो भरत राज नहीं चह्या, जीती आदि अनादि माया।।
पृथ्वी ऊपर आसन कीन्हा, पाट पटंबर सब तजि दीन्हा।
लक्ष्मण दासातन बहु भांती, देशौंटे में रहे अनाथी।।
राजा रामचन्द्र अवतारा, सीता तीन उलंगी कारा।
पतिव्रता चेरी सतवंती शब्द अदूल किया कुलवन्ती।।
राजा रामचन्द्र की कारा, सीता मेटि गई कई बारा।
रावण जोगिया होके आये, बहुरंग रावल रूप बनाये।।
वहां एक सीता बाड़ी बोई, विधना गति जाने नहीं कोई।।
गरीब, विधना की गति को लखै, अनहौनी कर दीन।
सीता रावण ले गया, याह तो बात कुलीन।। ५८।।
गरीब, तेतीसौं के कारणै, राम धरे अवतार।
रावण सीता ले गया, दर चौरासी बार।। ५६।।
सुवर्ण मृग बने मारीचा, बाड़ी नित तोरत है नीचा।
जाके लक्ष्मण से रखवारे, सीता रावण लंक मंझारे।।
जिन तो कीन्हा वचन अदूला, सीता बाग नौलखे झूला।
एक दिन देशौटे की बाता, रामचंद्र और लक्ष्मण भ्राता।।
जा दिन सीता बिछरि वियोगा, कल्प करत बहु संसा शोगा।
जा दिन शिव भेटे बन मांही, ब्रह्मा का तो वचन सुनांहीं।।
रामचंद्र के चरण जुहारे, पार ब्रह्म मुख वचन उचारे।
जहां वहां देखे देवी बाला, येतो दसरथ पुत्र दयाला।।
बाला देवी के दिल कांती, ये तो पारब्रह्म किस भांती।
मैं तो ब्रह्म परीक्षा लेहूँ, जुग जुग ध्यान धरौं बहु सेऊँ।।
जदि शिव बोले दीन दयाला, तुम मति जावो देवी बाला।
ये हें पारब्रह्म अविनाशी, इन की बिछुरि गई है दासी।।
देवी बाला किया अंदेशा, पारब्रह्म के कैसा खेसा।
देवी तुम लीला नहीं जानौं, अब तुम वचन हमारा मानौं।।
ये लीला है आदि अनादं, देवी मानौ वचन संवादं।।

गरीब, वचन हमारा मानि कर, पारब्रह्म धर ध्यान।
सत्यपुरुष साहिब धनी, ये हैं अकल अमान।। ६०।।
ये हैं पारब्रह्म प्रवाना, इनका मर्म न देवी जाना।
ऐसे खेल करे कई बारा, ये हैं पारब्रह्म अवतारा।।
शिव बोलत है वचन सुशीला, मैं तो जानौं याकी लीला।
देवी तुरत परीक्षा लीनी, सीता रूप धर्‍या प्रवीनी।।
नेति नेति कर वचन सुनाया, कहा देवी दक्ष पुत्री माया।
जदि आधीन भई मुसकानी, तुम हो पारब्रह्म प्रवानी।।
देवी चरण कमल शीश लाया, तुम अविनाशी अविगत राया।
मैं तो देवी बाला भोरी, गति मति जानी ना मैं तोरी।।
तुम साहिब देवन पति देवा, तातैं शिव कर हैं तुम सेवा।
आगे शिव योगी अनरागी, सीता रूप धर्‍या तब त्यागी।।
देवी जाई पहूंची बाला, आगे बैठे शंभु दयाला।
कहो देवी तुम ज्ञान संवादं, कैसे लई परीक्षा नादं।।
बोलत हे जब देवी दासी, परीक्षा नहीं लई अविनाशी।
जहां तब शिव कूँ कीन्हा त्यागा, शंकर दिल में दिया दुहागा।।
फिर कैलाश गये महादेवा, सहंस सत्तासी वर्षों सेवा,।।
गरीब, गिरिजा दिया दुहाग जद, दिल से दई उतार।
सतवंती की देह धर, देवी मात हमार।। ६१।।
देवी जानि गई शिव लीला, मन में दिया दुहाग करीला।
जद वहां समय सधी वहां आई, राजा दक्ष कूँ यज्ञ उपाई।।
राजा दक्ष अनादर कीन्हा, यज्ञ में शिव का भाग न दीन्हा।।
गरीब, शिव योगी में सर्व गति, रिद्धि सिद्धि मुक्ति द्वार।
तो दुनिया दोजख गई, शिव निन्दा संसार।। ६२।।
देवी गई दक्ष के पासा, अनादर सहित किया है नाशा।
देवी प्राण दान कर धाई, तातैं काल कल्प में आई।।
शिव कूँ दक्ष किया पैमाला, यज्ञ विधंस करी तत्काला।
राजा हिमाचल के द्वारा, देवी आनि लिया अवतारा।।
विधि संयोग दई के लेखा, नारद मुनि किया ज्ञान विवेका।
जन्म पत्रिका बांचि सुनाई, पार्वती के दर्शन पाई।।
उमा अनंग नाम तिस गौरा, गिरि पर्वत जहां गूंजै भौरा।
सात वर्ष की गौरि पठाई, तप जाजुल किया ध्यान लाई।।
सप्त ऋषिन जहां आये धाई, गिरिजा सेती ज्ञान सुनाई।
तुमरा भाग्य बडेरा बाला, वर बरिहो तुम दीन दयाला।।
पारब्रह्म अविगत अविनाशी, जिनके चरण कमल की दासी।

मंद वचन जदि ऋषि सुनाई, वै तो पिता हमारे सांई।।
गरीब, पारब्रह्म जगदीश हैं, अविगत पुरुष अलेख।
मैं तो पुत्री तास की, मम बर औरे देख।। ६३।।
शिव के भाग्य करो तप देवा, पिंड प्राण सब अर्पण सेवा।
हिमाचल के नारद आये, वर ढूंढन गुरु देव पठाये।।
शिव से नारद अर्ज गुजारी, टीका तिलक किया अधिकारी।
शिव योगी जदि भये दयाला, भई सगाई गिरिजा बाला।।
हिमाचल के नारद आये, हम कैलाश गये वर पाये।
महादेव देवन पति देवा, चौदह भुवन करै तिस सेवा।।
बोलत हिमाचल की नारी, खपरा जोगिया ढूंढि अनारी।
हिमाचल कूँ लग्न लिखाया, नारद शिव के पास पठाया।।
शिव तो नंदीश्वर अस्वारा, कसि बांघंबर लिया समारा।
देश देश के राजा रानें, हिमाचल के न्यौता दानें।।
शिव तो नगरी आनि पहुंठे, राजा रानी सब ही रूठे।
सर्प गले नागा निर्वानी, रुण्डमाल पहरे पहरानी।।
गिरिजा पतियां बेग पठाई, आदि अंत तुम्हारी शरणाई।
आये ब्रह्मा विष्णु मुरारी, इन्द्र कुबेर वरुण विधि भारी।।
आये धर्मराय धर्म के पूता, देखन शिव योगी अवधूता।।
गरीब, गिरिजा ब्याहन शिव चढ़े, नंदीश्वर अस्वार।
हिमाचल के नगर को, चलत न लाई बार।। ६४।।
सुर नर गण गंधर्व गलताना, राग छत्तीस होत विधि नाना।
कामधेनु कल्प वृक्ष पठाये, हिमाचल के द्वारे आये।।
छप्पन भोग बहुत विधि भोगे, सुर नर मुनिजन खुब अरोगे।
ब्रह्म कूँ जदि रचिया चौरी, महादेव कूँ ब्याही गौरी।।
संख कल्प जुग अमर अनादं, शंभू योगी ज्ञान संवादं।
पार्वती सी पत्नी जाके, शिव योगी कूँ काम भिलाषे।।
पार्वती सी पत्नी संगा, छले महादेव काम भुजंगा।
मोहिनी रूप धरे महमंता, छले महादेव ज्ञान अनंता।।
शिव योगी को कंदर्प जार्‌या, लाख जुगन जुग किया संहारा।
बहुरि लिया उद्‌गार उदारा, महादेव कूँ जीत्या पारा।।
जैसे अग्नि काष्ठ के मांहीं, है व्यापक पर दीखे नाहीं।
ऐसे कामदेव प्रचण्डा, व्यापक सकल द्वीप नौ खण्डा।।
एक समय भस्मासुर आये, वैकुण्ठ धाम कैलाशं पाये।
दस सहंस वर्ष तप कीन्हा, विंध्याचल पर्वत प्रवीना।।
उर्ध मुखी झूले शिव द्वारे, मिटे न दिल के दाग करारे।।

गरीब, भस्मासुर भस्मे हुवा, शिव साहिब दरबार।
तप जप कौने काम है, मन में कोट लगार।। ६५।।
जब देखी पार्वती पत्नी, मन मातंग थंभ्यो नहीं यत्नी।
शिव के द्वार लगाई सेवा, भस्मासुर कूँ छले महादेवा।।
चंचल भूत निहचल पासा, कामदेव व्यापे कैलाशा।
द्वादस वर्ष लगाई सेवा, कल्प करी जदि गिरिजा भेवा।।
ऐसे कुटिल जीव जग मांहीं, माता कूँ घरनी ठहरांहीं।
वह तो अर्धगी है स्यौ की, भस्मासुर की लागू ज्यौंकी।।
दस सहंस द्वादस जब जांहीं, भस्मासुर जब कल्प करांहीं।
कल्प करी गिरिजा मन मांनी, यह तो महादेव की रानी।।
दूर करो बधंन बैरागा, उमा कहै शिव चरणौं लागा।
रिध्दि सिध्दि मोक्ष मुक्ति के दाता, सुनरे योगी ज्ञान भ्राता।।
खूल्है चिसम उघरि गई तारी, गिरिजा वचन सुनाया भारी।
भस्मासुर कीनी प्रणामा, वचन बंध में शंकर आन्या।।
भस्म कड़ा भस्मासुर मांग्या, तुम दाता मैं भिक्षुक नांगा।
शिव अबदाल कड़ा पहराया, महादेव पै भस्मा धाया।।
शिव तो सूक्ष्म रूप उड़ाना, चौदह भुवन फिरे प्रवाना।।
गरीब, कर्ता गिरिजा रूप धरि, भस्मासुर छलि मार।
गंड हथ नाच नचाईया, समझ्या नहीं गंवार।। ६६।।
पारब्रह्म प्रकाशे देवा, गिरिजा रूप धर्‌या तन भेवा।
गंड हथ नाच नचो हम आगे, मैं रीझत हूँ ईश अनुरागे।।
भस्मासुर की मति हरि लीन्ही, भस्म किये पल में प्रबीनी।
चरण कमल का भरोसा भारी, महादेव की कल्प निवारी।।
जाकी जटा जूट में गंगा, जाका ध्यान सदा पचरंगा।
शिव तो रिध्दि सिध्दि दाता दानी, वै तो चारौं जुग प्रवानी।।
मारे कृतघ्नी कर्तारा, सो तो बूडि गये बहु धारा।
देखो सगड़ सुतां शिव सेवा, सो तो ल्याये गंगा रेवा।।
सेवो कृष्णचंद्र कर्तारा, सो तो जपिये बारंबारा।
कौरव पंडौ खेले बाजी, पल में हो गये राज बिराजी।।
दुर्योधन राजा महमंता, ग्यारह छूहनि कटक अनंता।
इकोतर बीर हमीर हठीला, जाकी अदभुत संग्या लीला।।
पंडौं पांच प्रीतम प्यारे, चित्त से कबू न होवै न्यारे।
दुर्योधन और शकुनी कराला, कर्ण बंधु कूँ बहु घर घाला।।
द्रौपदी न्हान चली है गंगा, सहंस सुहेली के सत्संगा।।
गरीब, नगन अंधरे कूँ दिये, द्रौपदी चीर उतार।

कोटि संहस्त्र हो गये, दुःशासन की बार।। ६७।।
द्रोपदी गंग किया अस्नाना, धूप दीप दे कीन्हा ध्याना।
अंधरे की कोपीन बहाई, ढूंढत बेर लगी रे भाई।।
औघट घाट द्रौपदी मेला, देख्या अंधरे का सब खेला।
चीर फार कोपीन बनाई, द्रौपदी अंधरे आगे ल्याई।।
एक तो बही गंग की धारा, दूजे और करी जहां त्यारा।
पांच सात कोपीन बहाई, द्रोपदी मुख से बोलत नाहीं।।
लकड़ी के जब दिया लपेटा, अंधरे सेती हो गई भेटा।
चीर फार पीतंबर डार्‍या, द्रौपदी चाली नगर मंझारा।।
दुःशासन योधा महमंता, दस सहंस रापति का अंता।
दुर्योधन राजा जहां बोले, द्रौपदी नग्न करो पट ओले।।
द्रौपदी तुंही तुंही कर टेरी, राखौ लाज मुरारी मेरी।
विदुर कहै ये बंधू थारा, एकै कुल एकै परिवारा।।
विदुर के मुख लग्या थपेरा, तूं तो पंडौ का है चेरा।
तूं तो है दासी का जाया, भीष्म द्रोण जहां मुसकाया।।
दुःशासन भरि हैं गल बांही, द्रौपदी ध्यान धर्‍या पद मांही।।
गरीब, द्रौपदी टेरी ध्यान धरि, सुनो पुरुष रघुबीर।
दुःशासन थाके जबै, अनंत कोटि भये चीर।। ६८।।
प्रियतम पूर्ण ब्रह्म बिनानी, मेरी लाज रखो प्रवानी।
गज ग्राह के तारन हारे, बिल्ली के सुत अग्नि उबारे।।
प्रहलाद भक्त किये प्रवाना, नरसिंह रूप धर्‍या विधि नाना।
गीध व्याध के तारन हारे, मैं बांदी हूँ पंच भर्तारे।।
द्रौपदी टेर सुनी प्रवाना, द्रौपदी है कैलाश समाना।
जैसे अडिग अडोलं खंभा, ध्यान धर्‍या है पिंड हुरंभा।।
तन देही से पासा डारी, पौंहचे सूक्ष्म रूप मुरारी।
द्रुपद सुता के चीर बढ़ाये, संख असंखौं पार न पाये।।
खैंचत खैंचत खैच कसीसा, सिर पर बैठे है जगदीशा।
शंख चीर पीतंबर झीने, द्रौपदी कारण साहिब कीने।।
संख चीर पीतंबर डारे, दुःशासन से योधा हारे।
रूक्मणि कर पकर्‍या मुसकाई, अनंत कहा मो कूँ समझाई।।
गरीब, मेरु डिगे पर्वत खिसे, सुर नर कंपे देव।
दुर्वासा ऋषि दमन कर, पंडौ कुल को लेव।। ६९।।
दुःशासन कूँ द्रौपदी पकरी, मेरी भक्ति सकल में सिखरी।
जो मेरी भक्ति पछौंड़ी होई, हमरा नाम न लेवै कोई।।
भीष्म द्रोण कर्ण कुल द्रोहा, पंडौं सेती पकर्‍या लोहा।।

गरीब, पंडौं सेती द्रोह करि, गये इकोतर बीर।
भीष्म द्रोण कर्ण के, शीश चढ़ी तकसीर।। ७०।।
दुर्योधन की संग्या कीन्हीं, वासदेव की कल्प न चीन्ही।
एक समय दुर्वासा आये, दुर्योधन कूँ खूब पढ़ाये।।
द्वादस वर्ष करी तप सेवा, छप्पन भोग खवाये मेवा।
दुर्वासा ऋषि भये दयाला, मांग मांग दुर्योधन बाला।।
वचन बंध कीन्हा दुर्वासा, पंडौं कुल का कीजे नाशा।
दुर्वासा जद शोच करांही, अवगुण बिना न मारे जांही।।
कै तुम वचन करो ऋषि पूठा, मैं दुर्वासा कर हूँ झूठा।
दुर्वासा ऋषि बोले वाणी, दुर्योधन राजा अभिमानी।।
पारब्रह्म के भक्त पियारे, मोसे पंडौं जांहि न मारे।
अनहौनी एक लीला ठानो, तेरी सेवा पर ये आनो।।
वे देशौटे बन खण्ड मांहीं, छप्पन भोग जुरन के नांहीं।
जद हम पंडौं दीन श्रापा, ऐसे वचन किये ऋषि लापा।।
दुर्वासा सैना ले आये, सहंस अठासी ऋषि जहां धाये।
भीम नकुल या सहदेव साजा, धर्म युधिष्ठर अर्जुन राजा।।
कौंता चेरी द्रौपदी दासी, दुर्वासा के चरण निवासी।।
गरीब, दुर्वासा दरवेश के, दिल में आया द्रोह।
दुर्योधन की सीख सुनि, कीन्हा जाई अबोह।। ७१।।
खान पान कछु करो विचारा, छप्पन भोग पाक होंहि त्यारा।
आज के बोये धान मंगावो, मानसरोवर का जल लावो।।
आज के बोये आंब अंगूरा, कामधेनु का दूध कपूरा।
यौह भोजन संजम विधि कीजे, जब दुर्वासा देवा रीझे।।
अनहोनी होनी सब होई, पारब्रह्म है पूर्ण सोई।
द्रौपदी कल्प करी मन मांहीं, याह गति अचरज पूर्ण सांईं।।
दूर देश द्वारका के वासी, कैसे पौंहचेंगे अविनाशी।
मोरे शब्द के प्रवीना, द्रौपदी अर्ज करे अधीना।।
मोरी विपत्ति निवारो स्वामी, द्रौपदी अर्ज करै घननामी।
सुरति रूप चिंतामणि आये, रतनौं जड़े विमान सवाये।।
शंख चक्र गदा पदम विराजे, छत्र सिहांसन मणि बहु साजे।
कँवल नयन कमला पति आये, द्रौपदी रहसि अंग न माये।।
पांचौं पंडौं कुन्ता माई, अविनाशी चरणौं चित्त लाई।
अब बोलत है शारंगपाणी, कैसे याद किये गौहरानी।।
चौदह कोटि भुवन के दानी, विपत्ति निवारो पुरुष बिनानी।
दुर्वासा कौरव सिखलाये, दुर्योधन के भेजे आये।।

गरीब, दुर्योधन के वंश कूँ, लग्या पात प्रभात।
दुर्वासा के वचन की, लगी अपूठी लात।। ७२।।
अब बोलत है कृष्ण मुरारी, मैं क्या जानौं विपत्ति तुम्हारी।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड के दाता, सब से ऊंचा तुम्हारा हाथा।।
प्रथम पूजा भेंट चढ़ावो, खान पान कछु मोको ल्यावो।
साग पत्र जद द्रौपदी आना, अबल बली पाया भगवाना।।
सहंस अठासी जदि अडकारे, छप्पन भोग किये ऋषि सारे।
भीमसैन ल्यावो दरहाला, छप्पन भोग करो तत्काला।।
भीमसैन पौंहचे प्रवाना, ऋषि दुर्वासा करो पियाना।
छप्पन भोग किये जहां त्यारा, दुर्वासा जीमौं जौंनारा।।
दुर्वासा ऋषि भये दयाला, भीमसैंन तुम मोटे ताला।
भीमसैंन तुमरे कोई आया, जिन ये छप्पन भोग बनाया।।
हमरे आये आप बिनानी, तुमरे शत्रु जांहि छौ मानी।
दुर्वासा ऋषि दीन्हा श्रापा, कौरव लागे तीनों तापा।।
ग्यारह खूहनि खारिज होई, कोई न छूटे भक्ति द्रोही।
ये गुण इंन्द्रिय अग्नि अपारा, जामे जरत सकल संसारा।।
राजा प्रजा पंडित ज्ञानी, इन्द्रिय कर्म लगे हैं प्राणी।
सुर नर मुनि गण गंधर्व तांई, इन्द्रिय कर्म लगे रे भाई।।
गरीब, इन्द्रिय के अधिकार तैं, बूडत तीनों लोक।
जिन इन्द्रिय प्रहेजिया, ते नर पावै मोख।। ७३।।
स्थावर जंगम योनि जिहांना, स्थिर नहीं नदी वृक्ष पाषाणा।
अचराचर में व्यापक बीना, कर्म लिख्या सो मस्तक दीन्हा।।
मात पिता संगी नहीं भ्राता, कुल कुटुंब सब झूठा नाता।
ऋण संबंध जुर्या एक ठाटा, अन्त समय ये बारा बाटा।।
एक देवा एक लेवा दूतं, कोई किसी का पिता न पूतं।
शत्रु मित्र गृह द्वारा नाती, कोई किसी का संग न साथी।।
कच्छ मच्छ कूरंभ चलाऊँ, चंद्र सूर है पंथ बटाऊँ।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, निश्चल ब्रह्म स चंचल माया।।
इन्द्र गये बारू सम बीना, आवै जाय सु काल चबीना।
चलि है ब्रह्मा विष्णु महेशा, सहंस फुनी चलि है आदि शेषा।।
मेरु सुमेरु चले कैलाशा, ध्रुव मंडल वैकुण्ठ बिनाशा।
इत लग टूटैं लोक बंधाना, सो सेवक हम निश्चय जाना।।
इत लग छाडे लोक बंधाना, जब हंसा होय पद प्रवाना।
संख कल्प जुग प्रलय जांही, सो हंसा नहीं देह धरांही।।
उपजै सो बिचरै निरदावै, भाव भक्ति जाके उर आवै।।

गरीब, भाव भक्ति कर बंदगी, निरवाणी से नेह।
तन मन शीश चढ़ाय हैं, संतौं लक्षण येह।। ७४।।
इच्छा रूपी भक्ति कराहीं, सो सुखसागर जाते नांहीं।
नाना वर्ण इच्छा घट मांहीं, सो तो निजपद पावत नांहीं।।
बहिस्त वैकुण्ठ थोथरी आशा, च्यार मुकित से रहे निराशा।
स्याह लोक स्याह नीप कहावै, स्याह जोज स्याह रूप बहावै।।
इत लग महाकाल की जय रे, यासे आगे निज पद है रे।
सोलह सुरति सतगुरु दरशावै, निज मन कूँ तो सुरति पावै।।
सोलह सुरति में लोक बंधाना, सत्रह सुरति में जाय समाना।
शील संतोष विवेक विचारं, सत्वगुण तमोगुण रजगुण सारं।।
दया धर्म और ज्ञान सरोहा, क्षमा अकीन पकरिये लोहा।
सुरति निरति सारंग मन पवना, ऊँ सोहं रचिया भवना।।
सुरति निरति से रच्या पसारा, सोई सुरति जान निज सारा।
सुरति निरति का लावो डोरा, अलल पंख धुंन मारग मोरा।।
सुरति आधार चढ़े उस धामा, गुण इन्द्रिय होवै निःकामा।
घाट बाट बंधौ दर कूँचा, सुरती रूप सकल से ऊंचा।।
कौन धाम से सुरती आई, मन पवन श्वास दम रही समाई।।
गरीब, सुरती सारंग रूप है, पदमें रहीं समाय।
जामें निरती कला है, अलल पंख धुंन लाय।। ७५।।
गरीब, सोलह सुरति की सृष्टि है, ब्रह्मा विष्णु महेश।
ऊँकार और धर्मराय, इन्द्र कुबेरं शेष।। ७६।।
गरीब, वर्ण विश्वम्भर विधि रची, एक बूंद जल साज।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड का, पुरुष गरीब निवाज।। ७७।।
च्यार पदारथ हैं अंकूरी, सुरति निरति मन पवन हजूरी।
गगन मंडल में शब्द सनेही, जानों हंसा साहिब येही।।
सकल शिरोमणि सबसे न्यारा, सत्यपुरुष अपने आधारा।
आनन्दघन पद अकल अमाना, सुख का सागर है निर्बाना।।
चिदानंद सबके चित्त मांही, बिन सतगुरु कछु दरशे नांही।
चिदानंद आनन्द अपारा, बिन कीमत सतपुरुष हमारा।।
सनक सनन्दन ब्रह्मा धावै, शेष सहंस मुख पार न पावै।
नारद शारद शुकदेव व्यासा, मार्कंडेय रूमी ऋषि दासा।।
कागभुसंड जपे करुणामा, शब्द अतीत भेष नहीं बाना।
लहणावत लेत है लाहा, बिन कीमत पद अगम अथाहा।।
सुरति नाल जोखत है मुनियां, पाहन पूजि मुई सब दुनिया।
संख स्वर्ग से ऊंचा है रे, संपट आवत है कैसे रे।।

सौ करोर दे यज्ञ आहूती, तो जागे नहीं दुनिया सूती।
कर्म काण्ड उरले व्यवहारा, नाम लग्या सो गुरु हमारा।।
निःकेवल निर्भय गुण गावै, कोटि यज्ञ फल चरणों लावै।।
गरीब, कोटि यज्ञ अश्वमेध से, नहीं होय दीदार।
आधीनी और बंदगी से, क्षण में उतरै पार।। ७८।।
एक हंस कूँ कहां उधारा, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड के त्यारा।
सतगुरु महिमा कही न जाई, रतन पदारथ दीन्हा आई।।
सतगुरु महिमा मैं क्या जानौं, साहिब का क्या ब्रिद बखानौं।
सतगुरु महिमा अगम अपारा, नारद शारद करै उचारा।।
सतगुरु की क्या भेट चढ़ाई, तन मन धन सौंहगा रे भाई।
सतगुरु की क्या भेट करीजे, तन मन धन सेती नहीं रीझे।।
वे सतगुरु साहिब दिल दाना, शीश चढ़ाय करौ कुरबांना।
शिव को रावण शीश चढ़ाये, अर्थ धर्म उनहूँ नहीं पाये।।
दस मस्तक रावण कूँ दीन्हे, अकल अभय पद उनहूँ न चीन्हे।
इच्छा रूपी शीश चढ़ाये, रावण मार मुंहे मुंह खाये।।
ध्रुव प्रहलाद शीश कदि दीन्हा, सुधां शीश अविचल पद लीन्हा।
पद की महिमा कही न जाई, तीन लोक में भक्ति भलाई।।
जे नारद से सतगुरु भेटे, त्रिलोकी की इच्छा मेटे।
साहिब से सतगुरु बनि आये, गर्भ योनि से हंस छुटाये।।
साहिब सतगुरु एकै अंगा, जला बिंब की अनंत तरंगा।।
गरीब, जलाबिंब ज्यूं विस्तर्या, साहिब घट घट मांहि।
लख चौरासी जाति में, खालिक है सब ठांहि।। ७६।।
जलाबिंब है साहिब साजा, लख चौरासी मध्य बिराजा।
साहिब सतगुरु शरणा लीजे, मन की छाडि अविद्या दीजै।।
इच्छा सी नहीं और अविद्या, कामिनी नारी खेलत अद्या।
जिन ये सकल जीव भ्रमाये, सतगुरु सौदागर होय आये।।
सतगुरु आंनि किया है साटा, हंस उतारे औघट घाटा।
भक्ति भाव का दिया संदेशा, जाके साक्षी शंकर शेषा।।
अकल अजीत परमपद पाया, सतगुरु ऐसा नाम सुनाया।
सत्तर पड़दे खुल्है समूला, ऐसा आदि ब्रह्म असथूला।।
सब गीता भागवत रामायण, रिंचक ध्यान होत पारायण।
कोटि ज्ञान से भिन्न विचारा, ध्यान धरै कोई धरने हारा।।
बंका पुर का मारग बांका, औह ब्रह्मरंध्र सुई का नाका।
संखौं खड़े बिना सिर तहियां, कोई न पकरे ताकी बंहियां।।
संखौं खड़े बिना सिर गाता, कोई न बूझै ताकी बाता।

संखौं शूरे सावंत योधा, किन्हे न चंचल मन प्रमोधा।।
संखौ गुणी मुनी महमंता, कोई न बूझै पद की संथ्या।।
गरीब, पद की संथ्या सार है, तीन लोक के मांहि।
सुरती डोरा लावहीं, तो बहुरि न आवै जांहि।। ८०।।
संखौ रागी राग उचारैं, मन मनसा कूँ कोई न मारे।
संखौं रागी गावैं रागा, परम पदारथ से नहीं लागा।।
संखौं मौनी मुद्रा धारी, पावत नाहीं अकल खुमारी।
संखौं तपी जपी और योगी, कोई न अमी महारस भोगी।।
संखौं उर्ध्वमुखी आकाशा, पावत नांही पदहि निवासा।
संखौं करै आचार विचारा, सो तो जांहि धर्म दरबारा।।
संखौं बहु विधि भेष बनावै, साक्षी भूत कोई नहीं पावै।
संखौं योगी योग जुगंता, पावत नांही पद की संथ्या।।
संखौं जती सती जरि जांहीं, सो पावै नहीं पद की छांहीं।
संखौं दानी भुगते दाना, पावत नांही पद निर्वाना।।
संख अश्वमेध खड़ी दरबारा, है कोई हम कूँ त्यारन हारा।
संखौं गंगा और किदारा, पदम पदारथ इनसे न्यारा।।
संखौं वेद पाठ धुनि होई, उस पद कूँ बांचै नहीं कोई।
तीरथ संख नदी बहु भांती, वा पद सेती कोई न राती।।
संखौं शालिग पूजनहारा, कोई न पावै पद दीदारा।।
गरीब, शालिग पूजि दुनिया मुई, प्रतिमा पानी लाग।
चेतन होय जड़ पूजहीं, फूटे जिन के भाग।। ८१।।
संखौं नेमी नेम करांहीं, भक्ति भाव बिरले उर आंहीं।
संखौं रिद्धि सिद्धि लैने हारे, औह पद बिरले अर्थ विचारे।।
राज करैं भवसागर कीरा, जिन कूँ मिलैं न मुरशद पीरा।
सत्यसुकृत हृदय में आवै, कोटि राज का तिलक धरावै।।
अनभय पाठ पढ़े जो हंसा, धन्य धन्य जिन के हैं कुलबंसा।
अष्ट कँवल दल नाम अधारा, धन्य धन्य जिनका है परिवारा।।
जिन जान्या साहिब निज धर्मा, सो पौंहचेंगे निज पद घरमा।
उस समर्थ का शरणा लैरे, चौदह भुवन कोटि जय जय रे।।
संख रंग रंगी के साजै, जिस घर अजब घड़ावलि बाजै।
सोहं मंत्र कल्प किदारा, अमर कछ होय पिंड तुम्हारा।।
ऊँ आदि अनादिं लीला, या मंत्र में अजब करीला।
सोहं सुरति लगै सहनांना, टूटे चौदह लोक बंधाना।।
राम नाम जपि कर थिर होई, ऊँसोहं मंत्र दोई।
बुद्धि विवेक से पावै मूलं, तातें मिट है संसा सूलं।।

दम सुदम का करै विचारा, सोहं सुरति झड़े घनसारा।।
गरीब, सोहं सुरति सुभांन है, जे कोई लावै तार।
पल में पारिंग होत है, अलमीना दीदार।। ८२।।
सहंस इकीसौं छै सौ जानैं, कुंभक रेचक उलटा तानैं।
इला पिंगला सुष्मण सारं, देखो दम दम में दीदारं।।
च्यार मुक्ति की करै न आशा, कोटि कोटि वैकुण्ठ विलासा।
अजरा बीज जरै घट मांहीं, सिंधु अवाज हंस प्रसाहीं।।
एक मुहूर्त जहां मन लावै, चौदह भुवन पलक फिर आवै।
दम का तार शब्द से जोड़ै, चढ़ै गगन कूँ तार न तोड़ै।।
सुरति हंसनी अनभय गावै, निरति निरालंब नाद बजावै।
श्वास गुंजार जहां से होई, उलटि अपूठा लावै कोई।।
परखै नाद स्वाद का मूलं, देवा दरशै बिन अस्थूलं।
चतुर्भुजी उड़गण अनरागी, अष्टभुजी दरशै बड़ भागी।।
सहंस भुजी संगीत हमारे, संख भुजा पद अधर अधारे।
रतन जोग रतनों की खानी, कोटि कोटि प्रसिद्ध बिनानी।।
संख पदम जहां झिलकैं ज्योती, अगहै गह्या न जाय अछोती।
नूर के मंदिर नूद के देवा, नूर के हंस करत हैं सेवा।।
नूर के नाद नूर के शंखा, नूर धाम अगमी गढ़ बंका।।
गरीब, अगमीगढ़ आनंद पुर, बिना निसरणी चाल।
अलल अकाशैं गमन कर, पारस झमकैं लाल।। ८३।।
सीढ़ी सुरंग लगे नहीं ताहीं, है न्यारा और माहीं का माहीं।
अजब सलहला पंथ प्रेवा, सतगुरु पार लंघावै खेवा।।
गगन मंडल में सुंनि अधारी, संखौ कल्प लगी जुग तारी।
अनंत कोटि जाके अवतारा, राम कृष्ण ठाडे दरबारा।।
ब्रह्मा विष्णु और शंकर योगी, अनंत कोटि रसिया रस भोगी।
परानंदनी नाद बजावै, तास पुरुष सिर चौंर ढुरावै।
ब्रह्मा विष्णु तास के नाती, अनंत कोटि अवतार भ्रांती।
आनंदघन पद मूल उचारा, जाय मिले सुखसागर धारा।।
आनंद घन अनहद पद राते, अमी महारस अमृत खाते।
आनंद घन पद अधर अधारा, देखो पल पल में दीदारा।।
झिलमिल रंगी रंग अपारा, है मांहीं पर दरशै न्यारा।
निर्गुण सरगुण संग समूलं, बिन डांडी का दरवै फूलं।।
दिल दुरबीन लगावौ ध्याना, जाकूँ दरवै फूल अमाना।
श्याम सुंदर है फूल सरूपा, भूर भदर जामें एक रूपा।।
सुरख सपेदा बहु रंग बीना, त्रिकुटी नाल बैठ कर चीन्हा।।

गरीब, त्रिकुटी में तालिब बसै, तांहि न चीन्है कोय।
अधर महल महबूब का, दर्शत झिलमिल लोय।। ८४।।
अकल अखंड राग धुनि बरवै, त्रिकुटी भृकुटी आगे दरवै।
बिन ही ध्यान धरे जो आवै, खालिक रूप खलक क्या पावै।।
अगर मूल महके एक वाणी, अनन्त कोटि बाजे सहदानी।
अगर मूल एक होत उचारा, संख भानु झिलमिल दरबारा।।
संख चंद्र चिंतामणि चीन्ह्या, निर्गुण नागा अति प्रवीना।
पारब्रह्म परमेश्वर पाया, निर्गुण नाम निरंजन राया।।
कोटि वज्र टूटंतै राख्या, ध्रुव प्रहलाद बाल नहीं बांका।
राम पुरुष का शरणा ले रे, तीन लोक में यश जै जै रे।।
कोटि रामायण गीता गावैं, अठारा पुराण पढ़ै चित्त लावै।
ऋग यजु साम अथर्वण पढ़िया, एक पैंड पंडित नहीं चढ़िया।।
नौ व्याकरण पढ़े क्या होई, तत्त रूप दर्श्या नहीं कोई।
तत्त रूप तालिब है मोरा, अधर बिहंगम लावो डोरा।।
दिव्य दृष्टि कूँ दर्सन होई, चौदह भुवन फिरौं क्यौं न कोई।
सतगुरु बिना सुरति नहीं लागै, जरै मरै कुल देही त्यागै।।
सतगुरु बतलावै ठौर ठिकाना, को मारे प्रवीन निशाना।।
गरीब, प्रवीण परम गुरु सूं रते, जैसे पानी लौंन।
साधू साहिब यौं मिलै, फिर नाम धरेगा कौंन।। ८५।।
दिल दरिया पैरे मन मीना, औघट घाट पंथ हम चीन्हा।
कामधेनु दूझै घट मांहीं, कल अजरावर होत गुसांईं।।
परानंदनी पारिख लीजे, राम रसायन दुहि दुहि पीजे।
जा घट राम रसायन बूठे, कलि विष कुश्मल बंधन छूटे।।
शाला कर्म सुरति से लावै, हृदये आत्म देव जगावै।
नाभि कँवल से नाम ऊचारे, द्वादस मध्ये सिन्धु गुंजारे।।
अकल देव जगमग एक ज्योती, हीरे मानिक मुक्ता मोती।
दसौं दिसां कूँ छुटे फुहारे, सिन्धु शब्द दसमें झंनकारे।।
नैंन बैंन वाणी में बाला, आगे अग्नि रू पीछे पाला।
जठराग्नि लंबका मारे, आप तिरे औरन कूँ तारे।।
दत्त देव में ध्यान लगावै, बाई धनंजै उलटि समावै।
क्रिकल खुध्या ताल कंठ भंगा, तालू ऊपर बूठे गंगा।।
सोलह खाई दस दरवाजा, जहां पुरंजन है मन राजा।
त्रिगुण ताल पखावज भेरी, निशवासर नाचत है चेरी।।
आनंदी घर का नहीं सुपना, खेल पुरंजन कर हैं अपना।।
गरीब, गुरुष पुरंजन मन बन्या, निज मन का नहीं ध्यान।

चौरासी चौले धरै, होता शूकर श्वान।। ८६।।
पट्टन घाट परम गुरु ध्याना, को बूझे औह देश दिवाना।
संख स्वर्ग से ऊंचा गाजे, चिदानंद का अविचल राजै।।
एक रसना महिमा क्या गावै, सहंस रसना शेष नित ध्यावै।
नारद शारद ब्रह्मा गावै, महादेव धुनि ध्यान लगावै।।
संख किरण झिलमिल झिलकंता, द्रवै देवा निगुर्ण कंता।
सतगुरु दाता है कलि मांहीं, प्राण उधारन उतरे सांईं।।
सतगुरु दाता दीन दयालं, जम किंकर के तोरै जालं।
सतगुरु दाता दया करांहीं, अगम द्वीप से सो चलि आंहीं।।
सतगुरु बिना पंथ नहीं पावै, सतगुरु मिले तो अलख लखावै।
सतगुरु साहिब एक शरीरा, सतगुरु बिना न लागै तीरा।।
सतगुरु बान बिहंगम मारै, सतगुरु भवसागर से तारै।
सतगुरु बिना न पावे पैंडा, हूँठ हाथ गढ़ लीजे कैंडा।।
सतगुरु दरदबंद दरवेशा, जो मन कर हैं दूर अंदेशा।
सतगुरु दरदबंद दरबारी, उतरे साहिब शुन्य अधारी।।
सतगुरु साहिब अंग न दूजा, ये सरगुण वे निर्गुण पूजा।।
गरीब, निर्गुण सरगुण एक है, दूजा भ्रम विकार।
निर्गुण साहिब आप है, सरगुण संत विचार।। ८७।।
सतगुरु साहिब अकल अलीलं, जाके पंथ न चढ़ै पपीलं।
सतगुरु की महिमा क्या गाऊँ, हर्ष हर्ष चरणौं चित्त लाऊँ।।
सतगुरु साहिब आदि अनादं, जाकूँ खोजत हैं सुर साधं।
जो सतगुरु के शरणे आवै, आनंद घन पद मांहि समावै।।
सतगुरु दया करै दिल फेरे, कोटि तिमिर मिट जांहि अंधेरे।
सतगुरु बंकनाल होय आये, शिव ब्रह्मादिक पार न पाये।।
सतगुरु बंकनाल बैराठा, सतगुरु उतरे औघट घाटा।
सतगुरु सार वस्तु बतलावै, पुरुष विदेही कूँ दरशावै।।
सतगुरु साहिब चुंबक रूपा, लगी टगटगी छांह न धूपा।
साहिब से सतगुरु बन आये, भाव भक्ति ले बिरद बधाये।।
सतगुरु सा दाता नहीं कोई, तारण तरण अधर मग जोईं।
सतगुरु परमधाम प्रवानी, सतगुरु ल्याये अगम निशानी।।
सतगुरु बिना सुरति नहीं पाटै, खेल मंड्या है सिर के साटै।
सतगुरु भक्ति मुकित के दानी, सतगुरु बिना न छूटे खानी।।
सतगुरु शाला कर्म बतावै, सतगुरु अगम द्वीप ले जावै।।
गरीब, अगम द्वीप की देहरी, है सो दिल ही मांहि।
बाहर भ्रम कर्म लगे, रहो समाधान की छांहि।। ८८।।

च्यार पदारथ उर में जोवै, सुरति निरति मन पवन समोवै।
शील संतोष विवेक बियाना, दया धर्म जिन उर में आना।।
सतगुरु अदलि बंध बैठावे, ऊजड़ नगरी बहुरि बसावै।
सतगुरु मुकित मालवे दानी, सतगुरु बिना न पलटै वाणी।।
सतगुरु भेदी भेद लखाई, कागा से हंसा होय जाई।
सूरति सकल मूल महमंता, सतगुरु बिना न पावै पंथा।।
सतगुरु अधर धार अधिकारी, सतगुरु खोल्हैं स्वर्ग द्वारी।
सतगुरु संख स्वर्ग से न्यारे, लिपैं छिपैं नहीं टरैं न टारे।।
सतगुरु सकल शून्य में खेलै, भवसागर से नौका पेलै।
सतगुरु बिना सकल सब अंधा, सतगुरु काटै जम के फंदा।।
सतगुरु जामन मरण मिटावैं, सतगुरु सुखसागर ले जावैं।
सतगुरु सुखसागर की सीरी, सतगुरु बिना न बंधै धीरी।।
सतगुरु सुखसागर के हँसा, सतगुरु मेटत हैं कुलवंसा।
सतगुरु नीर क्षीर कूँ छानैं, सतगुरु बैठे दर्स दिवानैं।।
अकल अलील अगम अनरागी, सतगुरु मिले तास बड़भागी।।
गरीब, सतगुरु मिले संदेह सब, छूटे भ्रम बिकार।
समर्थ का शरणा लिया, हम चाकर दरबार।। ८६।।
सतगुरु अगम भूमि से आये, कर्म काण्ड जीव बंध छुटाये।
सप्त भूमि का भय नहीं कोई, दशौं दिशा एकै मग जोई।।
सप्त सुंनि में बिचरन लागा, दिव्य दृष्टि देख्या अनरागा।
अकल अलील भूमिका भारी, सब सूरति से मूर्ति न्यारी।।
जा मूर्ति का कहूँ विवेका, सतगुरु बिना कौन कूँ देखा।
सिंधु शब्द से कैसे मिल हैं, बिन पग पंथी कैसे चलि हैं।।
मारग बिना चलन है तेरा, सतगुरु मेटे तिमिर अंधेरा।
अपने प्राण दान जो करहीं, तन मन धन सब अर्पण धरहीं।।
सतगुरु संख कला दरशावे, सतगुरु अर्श विमान बिठावै।
सतगुरु भवसागर के कोली, सतगुरु पार निबाहै डोली।।
सतगुरु मादर पिदर हमारे, भवसागर के तारनहारे।
सतगुरु सुन्दर रूप अपरा, सतगुरु तीन लोक से न्यारा।।
सतगुरु परम पदारथ पूरा, सतगुरु बिना न बाजै तूरा।
सतगुरु अवादान कर देवैं, सतगुरु राम रसायन भेवैं।।
सतगुरु पशु मानुष कर डारैं, सिद्धि देव कर ब्रह्म विचारैं।।
गरीब, ब्रह्म बिनानी होत है, सतगुरु शरणा लीन।
सूभर सोई जानिये, सब सेती आधीन।। ६०।।
सतगुरु जो चाहे सो कर हीं, चौदह कोटि दूत जम डर हीं।

ऊत भूत जम त्रास निवारै, चित्रगुप्त के कागज पारै।।
इच्छा बीज अचिंत करांही, निरवासीक परम पद पांही।
निराकार आकार न कोई, जाका नाम परमपद सोई।।
सुरति नाल चले सैलानी, सो वाह कहिये अगम निशानी।
आनंद घन इच्छा नहीं आशा, अनंत कोटि ब्रह्मण्ड निवासा।।
बाहर भीतर सकल शरीरा, उपत्ति खपति की ताहि न पीरा।
अधर अमान रहे बहुरंगी, आगे नाच करैं श्रीरंगी।।
संख कल्प जुग गये गंवारा, छाजन भोजन नहीं अहारा।
ग्रिदगता कुंडल कैलाशा, परम शिव योगी तहां निवासा।।
अनंत कोटि सूरज सुरमाला, परम शिव योगी दीनदयाला।
संख असंख चंद्रमा झलकैं, शिव योगी की उन्मुनी पलकैं।।
ब्रह्मा विष्णु खड़े शिव तहियां, ग्यारह रूद्र जोड़ि कर बंहियां।
अनंत कोटि औतार करीला, शिव योगी की अद्भुत लीला।।
कोटि सिद्धि कैलाश कलंद्र, अवगित लीला अविचल मंदिर।।
गरीब, अविचल मंदिर में बसै, सो नर छानें नांहि।
तीन लोक की मांड में, बहुरि न आवै जांहि।। ६१।।
अनंत कोटि गज फील प्रेवा, ताजी तुरंग निरंतर देवा।
अर्थ पालकी अर्श विमाना, अनहद बाजे दर सहदाना।।
मधुकर भौंर गुंज गुरु देवा, ता शिव योगी की कर सेवा।
निः संदेह निरंतर ध्यावो, गगन मंडल में सुरंग लगावो।।
पीतंबर पट श्याम स्वरूपा, चिदानंद भूपन सिर भूपा।
चितघन चिदानंद अविनाशी, सकल शिरोमणि सब गुण राशी।।
विश्वरूप विस्तार तुम्हारा, आदि न अंत वार नहीं पारा।
वासुदेव वसुधा के मांहीं, पाहन पूजि मुई दुनियांहीं।।
राम पुरुष देवन पति देवा, करो निरंतर जाकी सेवा।
मीरां मालिक मुरशद मेरा, गगन मंडल में जाका डेरा।।
सुख निधान है सुरति सनेहीं, प्रगट बोलै पुरुष विदेहीं।
निजानंद निर्गुण निःकामी, पूर्ण ब्रह्म परमगुरु स्वामी।।
सोहं सुरति निरति से सेवै, आप तरे औरन कूँ खेवै।
परमहंस वीर्य विस्तारा, ॐ मंत्र कीन्ह उचारा।।
सोहं सुरति लगावै तारी, काल बली से जाइ न टारी।।
गरीब, कालबली कलि खात है, संतौं को प्रणाम।
आदि अंत आदेश है, ताहि जपै निज नाम।। ६२।।
मन बुद्धि सेती अगम अगाहा, ब्रह्मा विष्णु न पावै थाहा।
बंक नाल की औघट घाटी, पंथ चलत है बारह बाटी।।

कित से रुधिर कहां से दूधं, कैसे पंडित कैसे शूदं।
किस कूँ कहते राम खुदाई, जाके नाम गाम नहीं भाई।।
हिंदू तुरक कहां से आया, एक द्वार सहनांन बनाया।
कौंम छत्तीस एक ही जाती, ब्रह्म बीज सबकी उत्पाती।।
करते तीरथ व्रत किदारं, कर्मकाण्ड आचार विचारं।
नाद बिंद सहनांन बनाया, बोलनहार कहां से आया।।
इच्छा रूपी सुरति सनेहीं, बोलनहार जगतगरु यहीं।
समर्थ पुरुष आदि अनरागी, तहां वहां सुरति लाय बड़ भागी।।
ब्रह्मरंद्र के खोल्हि कपाटा, तहां वहां चढिये पटट्न घाटा।
सोलह कला संपूर्ण साजै, पलक पहर छिन मांहि निवाजै।।
ऊंची भूमि रवानक हीरा, जहां बसै गुरु तालिब पीरा।
मुकित खेत कूँ कीन्ह जुहारं, सत्य पुरुष के कर दीदारं।।
विधि संयोग मिले हैं आई, नर नारायण देही पाई।।
गरीब, नर नारायण देह में, देखौ निज दीदार।
गरीबदास गलतान है, खूल्हें शिंभू द्वार।। ६३।।

अथ गणेश पुराण

गरीब, जो सुमरत सिद्धि होई, गण नायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई, पारस पद प्रवाना।। १।।
आदि गणेश मनाऊँ, गण नायक देवन देवा।
चरण कमल ल्यौ लाऊँ, आदि अंत करि हूँ सेवा।। २।।
परम शक्ति संगीतं, रिद्धि दाता सोई।
अविगत गुणह अतीतं, सत्यगुरुष निर्मोही।। ३।।
जगदंबा जगदीशं, मंगल रूप मुरारी।
तन मन अरपूं शीशं, भक्ति मुक्ति भंडारी।। ४।।
सुरनर मुनिजन ध्यावें, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
शेष सहंस मुख गावैं, पूजें आदि गणेशा।। ५।।
इन्द्र कुबेर सरीखा, वरुण धर्मराय ध्यावै।
समरथ जीवन जी का, मन इच्छा फल पावैं।। ६।।
तेतीस कोटि अधारा, ध्यावैं सहंस अठासी।
उतरे भवजल परा, कटि हैं जम की फांसी।। ७।।
कच्छ मच्छ कूरंभा, रवि शशि पानी पवना।
धौल धरणि आरंभा, सिरजे चौदह भुवना।। ८।।
वासुदेव कर्तारं, पांच तत्त गुण तीना।
गुण इन्द्रिय घट लारं, कर्म संगाती कीन्हा।। ९।।

स्थावर जंगम योनी, चार खानि का खेला।
कर्म सरीकति धूनी, नाद बिंद का मेला।। १०।।
गिरिवर नदी निवासा, अठारह भार बनमाला।
ऊँ सोहं श्वासा, कर्म कुसंगति काला।। ११।।
अगम अगोचर हीरा, शब्द सिंधु प्रवाना।
टूटे जम जंजीरा, देखत दर्श दिवाना।। १२।।
सुख सागर आनंदा, सुमरथ शब्द सनेही।
मेटत है दुःख दुंदा, पूर्ण ब्रह्म विदेही।। १३।।
गगन गरज घनघोरं, बिन बादल बरषंता।
बोलै दादुर मोरं, बारह मास बसंता।। १४।।
आनंद घन पद लीला, होता मूल उचारं।
सोहं सुरति रसीला, देखत दर्श दीदारं।। १५।।
बिन पग करत पियाना, बिन ही रसना गावै।
सुरति निरति धरि ध्याना, सतगुरु सिंध लखावै।। १६।।
जरद कँवल रतनाला, बहुरंगी बरियामं।
गगन मंडल चित्रशाला, खेलत है निहकामं।। १७।।
अलल पंख अनरागं, समरथ सुरति सनेही।
अगम योग बैरागं, सब गुण ज्ञान परेही।। १८।।
घाट बाट नहीं पावै, मारग पंथ न कोई।
लोक कौन विधि जावै, ज्ञान गांठि का खोई।। १६।।
ब्रह्मरंद्र का घाटा, अगमी गमन प्रेवा।
सहजे खुल्हैं कपाटा, सब देवन पति देवा।। २०।।
रिमझिम रंग अपारा, संख पदम झिलकांही।
शब्द होत झंनकारा, पुष्प गंध वर्षाहीं।। २१।।
सेत भँवर भनकारं, महकत गंध सुगंधा।
विकसत कला अपारं, नाद बिंद निर्दुन्दा।। २२।।
हंस सरोवर संखा, करत कुतूहल वाणी।
भँवर उड़त बिन पंखा, सुनत शब्द शहदानी।। २३।।
शालिग शिला प्रेरी, जिन पाया निज धामा।
को तोरै बन बेरी, याह पूजा बेकामा।। २४।।
द्रवन धूम दरबारा, ब्रह्मा संख असंखा।
विष्णु अनंत अपारा, शिव शंकर बहु बंका।। २५।।
माया मंगल गावै, नित उठि करत कवारं।
श्रीरंग सार झड़ंता, सत्य पुरुष आधारं।। २६।।
माया आदि भुजंगी, त्रिगुण रूप तिराजा।

तास नाम श्रीरंगी, धर्‍या पुरुष का साजा।। २७।।
कोटि कला अवतारा, श्री रंग खेलन आई।
पुरुष रह्या है न्यारा, जिन पाई जिन पाई।। २८।।
श्री रंग सुन्दर नारी, पुरुष रूप धरि भेषा।
जीव योनि में डारी, बूझो शंकर शेषा।। २६।।
अकल रूप कुलवन्ती, आदि पुरुष की चेरी।
घट घट नाद बसन्ती, रावल के ज्यूं फेरी।। ३०।।
नाचत ही नर मोहे, गावत छंद छबीली।
तीन लोक खाय खोये, एक पुरुष कूँ कीली।। ३१।।
संख कला धर खेलै, उस जिंदा की जिंदी।
नरैं रसातल मेलै, मस्तक दे दे बिंदी।। ३२।।
भग भोगी भगवाना, कोटि गये कर्तारा।
मारि लिये सुर ज्ञाना, धरि आई अवतारा।। ३३।।
इन्द्र कुबेर करौली, पकरि फंद में दीन्हे।
वरुण धर्मराय जौली, निज पद किने न चीन्हे।। ३४।।
औह पद अकल अकूरं, माया आदि अलामां।
सकल सिन्धु भरपूरं, नहीं धरत तन जामां।। ३५।।
आनन्द घन पद सोई, घट मठ महतत न्यारा।
देह धरै नहीं कोई, माया के अवतारा।। ३६।।
आनंद घन पद नीका, माया मान गुमाना।
माया का गुण फीका, औह पद रहत अमाना।। ३७।।
रिंचक रूप स्वरूपा, दीर्घ सेती न्यारा।
व्यापे छांह न धूपा, तांहि पुरुष करतारा।। ३८।।
कोटि ज्ञान से भिन्नं, लागत नहीं लगारा।
विचरत शुन्य बेशुन्यं, गुण इन्द्रिय से न्यारा।। ३६।।
मन पवन सुरति नहीं जाई, बुद्धि वाणी से आगै।
रहे मुनीश्वर ध्याई, संख कल्प जुग जागै।। ४१।।
तोरनि के सा फूलं, पल पल दृष्टि निहारी।
बिना देह अस्थूलं, संख कल्प जुग तारी।। ४१।।
रतन अमोली लालं, दमकत है दम मांहीं।
जा घर कर्म न कालं, ताका नाम गुसांई।। ४२।।
बैरागर बंगाली, पूर्व दिसा रहंता।
सो नघ नैंनौं मांहीं, सुरती नाल चलन्ता।। ४३।।
सुरति चलत नहीं दीसै, तांहि सुरति से झीना।
निरति पीसना पीसै, ज्यूं जल पैठत मीना।। ४४।।

कोक समुंद्र पढ़ाहीं, देह लक्षण सब पावै।
देह धरत नहीं सांईं, जाकूँ कौन बातवै।। ४५।।
सतगुरु सुरति सनेही, गमन करत बैराटा।
ताहि लक्षण लख लेही, उरते औघट घाटा।। ४६।।
अक्षर खंड दम देही, निःअक्षर पद न्यारा।
बूझो सुरति सनेही, ताका करो विचारा।। ४७।।
ऊँ सोहं मूलं, मध्य सलहली सूतं।
बिनशत यौह अस्थूलं, न्यारा पद अनभूतं।। ४८।।
ऊँ सोहं दालं, अंकड़ा बीज अंकूरं।
ऊगे कला कर्तारं, नाद बिन्द सुर पूरं।। ४९।।
वर्षत निर्मल ज्योति, सीप समुंद्र स्वांती।
बिना स्वांति कहां मोती, न्यारी न्यारी भांती।। ५०।।
ऊँ सोहं सीपं, स्वांति बिना क्या होई।
निपजत है दिल दीपं, स्वांती बूंद परोई।। ५१।।
रसना धर्‌या न जाई, नाम गाम नहीं जाकै।
ब्रह्मा रहे भुलाई, वेद कहां गुण भाषै।। ५२।।
पंडित कथे ज्ञाना, सौ कोटि रामायण गीता।
कहा पुरुष अस्थाना, लिख लिख कागज चीता।। ५३।।
चार वेद का मूलं, सूक्ष्म वेद है भाई।
सूक्ष्म वेद का फूलं, पंडित नजर न आई।। ५४।।
सुकच मीन होय संगी, स्वांती सिन्धु पठावै।
झूठी प्रीति इकंगी, सतगुरु शब्द मिलावै।। ५५।।
अकल अजन्मा झीना, बटक बीज सौ भागा।
ताहि लखैं प्रवीना, शब्द होत अनरागा।। ५६।।
सूक्ष्मवेद सत्संगी, जहां जाय तहां बांचै।
चारो वेद भुजंगी, पण्डित परिया खांचैं।। ५७।।
हिरण्यकश्यपु हिरण्याक्षं, कीन्हे दमन दयालं।
उतरे नरसिंह काछं, तोरन जम के जालं।। ५८।।
बावन रूप बिनानी, परशुराम प्रवेशा।
रामचन्द्र प्रवानी, हर दम रटो हमेशा।। ५९।।
रावण और शिशुपालं, कंस केश चानौरा।
कीन्हे हाल बिहालं, नाम गाम नहीं ठौरा।। ६०।।
कृष्ण चंद्र कर्तारं, पंडौं यज्ञ में आये।
गज और ग्राह उबारं, द्रौपदि चीर बढ़ाये।। ६१।।
बालनीक का बारं, और पंडित नहीं तूला।

द्वादस कोटि गमारं, पढ़े न अक्षर मूला।। ६२।।
ऊँ आदि अनादं, ॐ मन्त्र सारं।
ऊँ सुर नर साधं, ॐ तत्व विचारं।। ६३।।
शील संतोष विवेकं, क्षमा दया दिल होई।
ज्ञान विचार विशेषं, याह माला मन पोई।। ६४।।
धीरज धर्म ध्याना, समता सुरति समावै।
अकलि अकीन प्राना, बिन इच्छा गुण गावै।। ६५।।
मुकट क्रीट सहनाना, शंख चक्र परिवारे।
गदा पदम प्रवाना, ऐसे आवध धारे।। ६६।।
धनुष बाण भुज दण्डा, कुंडल माल विराजे।
भाल तिलक अखण्डा, घूंघर केसां साजै।। ६७।।
कर कंकरण कलधूतं, कमल नैंन निर्बाना।
सत्य पुरुष अनभूतं, साधू दर्स दिवाना।। ६८।।
पीतंबर पटराजे, मंद मंद मुसकाना।
त्रिकुटी कँवल विराजे, गगन मण्डल अस्थाना।। ६९।।
प्रबल रूप सरोहा, है सो जाति अजाती।
नहीं पाया नहीं खोया, कुल कुटुंब नहीं नाती।। ७०।।
जल से पारस होई, हीरा मोती लालं।
सप्त धात है सोई, है सब जल का ख्यालं।। ७१।।
सातौं अन्न अनूपा, भिन्न भेद नहीं भाषो।
उत्तम मध्यम स्वरूपा, एकै आत्म झाको।। ७२।।
मूल बिनौला बीनो, नाना भांति हजारा।
परमात्म पद चीन्हों, आत्म रूप अपारा।। ७३।।
एक बूंद का बाना, जामें कैसी छोती।
कौंम छत्तीसौं जाना, एक जाति एक गोती।। ७४।।
चार वर्ण कहलावैं, नाना वर्ण अनंता।
मूल वस्तु नहीं पावै, कहा ज्ञान की संथा।। ७५।।
मृग तृष्णा संसारा, क्रितम साच बखाने।
मृग जल नहीं आहारा, भटक मुवा धिकतानें।। ७६।।
समझ बूझ रे हंसा, जल पाषाण पिरोजं।
चीन्ह परम परद बंसा, भटक मुवा बन रोझं।। ७७।।
जल सागर पाषाणा, दसौं दिसा फिर आये।
उधरे नहीं प्राणा, लख चौरासी जाये।। ७८।।
सत्य सुकृत संगाती, छाडि दिया निज नामा।
देवल धामों जाती, भूलि गये औह धामा।। ७९।।

जीवन प्राण अधारा, है सो तुम्हारे संगी।
एक पलक नहीं न्यारा, अविगत अचल अभंगी।। ८०।।
दर्पण सुन्दरि देखी, कर पकर्‌या नहीं जाई।
समझे ज्ञान विवेकी, ऐसा रूप लखाई।। ८१।।
ज्यूं पानी मध्य पाला, युक्ति जमावै योगी।
दर्शत रूप विशाला, भटकत है भग भोगी।। ८२।।
चन्द्र सूर में लीना, सूर चन्द्र के मांहीं।
समझ ज्ञान प्रवीना, ये दो सिंध मिलांहीं।। ८३।।
कोटि ज्ञान क्यूं न गावैं, जब लग दम दुधारा।
सुष्मण सिन्धु न पावै, भटक मुवा संसारा।। ८४।।
नौ व्याकरण नरेशा, अठारह पुराण बखानै।
चारौं वेद अंदेशा, सुष्मण द्वार न जानैं।। ८५।।
षट शास्त्र संगीता, पढै बनारस जाई।
पंडित ज्ञानी रीता, औह अक्षर इहां नांहीं।। ८६।।
कोटि ज्ञान बकि मूवा, ब्रह्मरंद्र नहीं जाना।
जैसे सिंभल सूंवा, शीश ढोर पछिताना।। ८७।।
मरकट मूठी बांधी, छाडत नहीं अज्ञानी।
जोगिया फांसी सांधी, घर घर चाबी धानी।। ८८।।
श्वान पूछ हे बांकी, सूधी किस विधि होई।
द्वादस बरषैं राखी, बांस नालि में जोई।। ८९।।
मरकब चंदन लदाया, कुरड़ी कूड़ा खाई।
कहां वेद पढ़ि आया, कीमत जानी नाहीं।। ९०।।
ढोली पान सुपारी, मिर्च मुनक्का दाखं।
शुत्र लदे हैं भारी, खात वृक्ष की शाखं।। ९१।।
ऐसा पंडित ज्ञाना, लदे फिरै तन देही।
खाण्ड करत नहीं पाना, चाटैं बारू रेही।। ९२।।
कर्म काण्ड व्यवहारा, दीन्हा होय सो पावै।
नहीं प्राण निस्तारा, भवसागर में आवै।। ९३।।
निःकेवल निर्वाना, नाहीं यज्ञ जगोटा।
चरण कमल कुरबांना, नातर आवैं टोटा।। ९४।।
संख बिना सिर गाता, उस दरबार पुकारैं।
कोई न बूझे बाता, बहुरि पिण्ड तन धारैं।। ९५।।
संख पढ़त हैं ज्ञाना, सौ कोटि रामायण बांचै।
औह दरबार दिवाना, भवसागर में नाचैं।। ९६।।
संखौं बकता वाणी, विधि संयोग न साधैं।

संखौं खड़े अमानी, इच्छा रूप आराधैं।। १७।।
संखौं शूर झुंझारा, सांवत खड़े पुकारैं।
संखौं यज्ञ अश्वमेधा, है कोई सतगुरु तारैं।। ६८।।
जती सती और योगी, संखौं दानी देवा।
विरक्त और संयोगी, संख खड़े हैं लेवा।। ६६।।
संख विष्णु कर्तारा, ब्रह्मा संख खवासी।
संख महादेव ध्यावैं, शिव योगी कैलाशी।। १००।।
सुरपति संख समूलं, इन्द्र बारू सम बीना।
पावत ना निजमूलं, यौह सब काल चबीना।। १०१।।
अलसी फूल प्रेखा, तासे अलफ अंकूरं।
सुरति निरति मिल देखा, सकल सिंधु भरपूरं।। १०२।।
स्थावर जंगम योनी, बटक बीज बिस्तारा।
है त्रिसरैंन निमौनी, बाजी रचने हारा।। १०३।।
कोटि ज्ञान गुण गीता, पढ़ि आया रे पाधा।
साक्षी भूत संगीता, निःअक्षर नहीं लाधा।। १०४।।
अरब खरब और लिल्लं, पदमों मांहि न पावै।
संख मांहि समतूलं, सतगुरु मूल लखावै।। १०५।।
सकल मनोरथ कामा, पूर्ण हौहि प्राणी।
पावत है निजधामा, सुनत शब्द सहदानी।। १०६।।
सुख सागर की सीरी, आनंद घन बरषांही।
राजे लेत फकीरी, निजमूर्ति दरशांही।। १०७।।
सुख सागर की सैलं, पौंहचत नहीं पपीली।
पंडित लादे बैलं, गुरुवा ज्ञान बकीली।। १०८।।
मारग अलल अनादं, पौंहचत ना शुकदेवा।
संखौं में कोई साधं, जनक विदेही खेवा।। १०६।।
सेत मुकट महमंता, सेत छत्र जहां साजैं।
झलकैं पदम अनंता, अजब घड़ावलि बाजैं।। ११०।।
गोमुख गंग बहाहीं, हिरन गरब के पासा।
जहां सनकादिक न्हाहीं, हरदम परबी दासा।। १११।।
चंद्रगता गलताना, सूरज उभै अनूपा।
संख कला शशि भाना, सोहं सत्य स्वरूपा।। ११२।।
सेत सिंहासन तोरा, सेते कमल कंगूरा।
सेत बिहंगम डोरा, बांधे सतगुरु पूरा।। ११३।।
सेत कमल कलधूतं, सेते हंस हजारा।
सेत पुरुष अनभूतं, सेते देखन हारा।। ११४।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

सेत बीन जहां बाजें, सेते झालरि संखा।
सेत सेहरा साजे, आदि पुरुष गढ़ बंका।। ११५।।
बाजत झालरि घंटा, मुरली मधुर धुनि सारं।
अविगत अवचिल मंठा, अदल फजल दरबारं।। ११६।।
ताल पखावज बीना, बाजत नाद अनंता।
तूर झांझ डफ झीना, बिना बाट है पंथा।। ११७।।
अगर डोरि चढ़ धाये, गवन करत है हंसा।
सुरति कँवल में आये, छाडि जाति कुल बंसा।। ११८।।
निरति कँवल लखि लीजे, तापर करो पियाना।
डोरि बिहंगम लीजे, बिन पर हंस उडाना।। ११९।।
जहां अक्षय वृक्ष अस्थाना, दौंना मरुवा मौरे।
बूझि सुमेर ठिकाना, डोरि बिहंग चढ़ौरे।। १२०।।
नाभी नाद समाई, कूरंभ बाय विराजे।
पवन धनंजे पाई, दत्त देव धुनि गाजै।। १२१।।
सुरति सुहंगम श्वासा, सोलह की अगवाना।
अक्षय वृक्ष में वासा, सोलह सुरति बखाना।। १२२।।
मोह सुरति महमंता, काम सुरति है कालं।
मोहे जीव अरु जंता, कीन्हा हाल बिहालं।। १२३।।
काम सुरति कलि माहीं, जांमन अधिक जमाया।
ऊठत नहीं उठाहीं, लोभ सुरति बिरमाया।। १२४।।
क्रोध सुरति बुद्धि नाशा, परे जाल जग फंदा।
भुगते शोक अरु संसा, नैंनों वाले अंधा।। १२५।।
शोक सुरति संतापं, हर्ष सुरति घट घेर्‍या।
त्रिलोकी नहीं धापं, येता द्रव्य संकेर्‍या।। १२६।।
राग सुरति है रंगा, दोष सुरति पर दूजी।
दीपक परत पतंगा, बूडि गई सब पूंजी।। १२७।।
योग सुरति जुग बंधा, राज सुरति से राजी।
समझत नांही अंधा, पल में राज बिराजी।। १२८।।
मान सुरति मध पीया, खुल्हैं नहीं चिश्म तुम्हारा।
महत सुरति घट लीया, सुंनहा होत चमारा।। १२९।।
डिंभ सुरति डर लागे, कपट सुरति है कूड़ी।
कहा योग बैरागे, जानी सुरति न रूड़ी।। १३०।।
पाखण्ड सुरति पतिजाई, त्रिलोकी नहीं ठौरा।
सत्रह सुरती गाई, सोहं सुरती भौंरा।। १३१।।
सोलह सुरती त्यागै, सोहं सुरती नेहा।

सो हंसा जुग जागे, पावै पुरुष बिदेहा।। १३२।।

साखीः-गरीब, सोलह सुरती काल है, धमराय की फांस।
सत्रह सुरती कूँ लखे, ताका कबहुं न नाश।। १३३।।
अक्षय वृक्ष में बसत है, सोहं सुरति हनोज।
सो सुरती लखि लीजियो, डारो कृत्रिम बोझ।। १३४।।

रमैणीः-सोलह सुरती की अगवाना, सोहं सुरती मूल बखाना।
जे ते नाद नाभि के तीरा, सोहं सुरती मध्य शरीरा।। १३५।।
सोलह सुरती रमै बपु देशा, सोहं सुरती गावै शेषा।
ऊँ शब्दी मूल उचारा, सोहं सुरती रच्या पसारा।। १३६।।
सुन द्वादस का कहूँ बखाना, सोलह सुरती है दरबाना।
पांच पचीस तीन गुन तूरा, मन राजा संग रहै हजूरा।। १३७।।
तीन लोक जाकी ठकुराई, डिंभ पाखण्ड वजीर बनाई।
आशा तृष्णा ताहि खवासा, मनसा नारी से घर बासा।। १३८।।
पाप पुण्य जाके दरबाना, लोभ मोह दो हाकिम जाना।
कामदार जाके काम हजूरी, क्रोध रूप सब सैना पूरी।। १३९।।
ममता माया लेत इजारे, पकरि किसान सर्व से डारे।
दुर्मति खड़ी कुदृया पुकारै, आत्म जीव कूँ बहु विधि मारै।। १४०।।
कैसे टूटे ये बन्धाना, मन राजा कर है तलबाना।
अग्नि रूप है सैना सारी, आत्म जीव कूँ ल्यौह उबारी।। १४१।।
सुनो फिलाद देवन के देवा, तुम्है उतारो भवजल खेवा।
मैं समर्थ का चाकर चेरा, भवजल पार उतारो बेरा।। १४२।।
गरीबदास यह अरजी भाषै, जठराग्नि से सतगुरु राखै।।

अथ कर्म डण्ड मोक्ष पुराण

रे दुरमती दुराचारी। सठसंगी मूढ़ मुगधं। निष्ट धर्मं। जंबकी जाति सिंह शेरं। मरकबं मलागीरं। भाव अभाव न बञ्चते।। बलम वेदं भावई भारं। किरम कींट शिला पानं धोवते। नदीनायचः। राजानायचः। नारीनायचः। अग्नि नायचः। कलमली कालं। कला हीनं। मोक्ष मुद्रा जनांसती।। सुरहीनं गुदाभ्रिष्टं। सुरसरी सैना। बहे जातं। किंगायत्री ज्ञान ध्यानं। इन्द्र देवादि सुरपतं।। बारू बिरञ्च बहनां। कूरम्भ शेष विनाशती। जरजरी जुराभूतं। अनभूतेन बञ्चते। कर्म नदियां न्हात नादं। आत्म तत्त बियोगतं।। कृष्ण आदि कुबेर कालं। वर्ण अवर्णं लीलंत। कमपदं सः मही मेरं नदी नीर बिनाशंत। संख स्वर्ग समूल जांहि। पाताले न थिर चकं। चन्द सूरज गगन तारा। वैकुण्ठे न हर्षतं।। अजरबीजं नाद नेह। संखौं मध्य सुभानतं। कर्म कण्डौ दुनी भूली। इच्छा बीज अज्ञानतं। राज रेखा स्वर्ग शूली।

चौदह भुवन विनाशतं। पटल शोभा षप्ट मासं।। उजीर न होत कपाशिंत।। ब्रह्मवेदं नाद संगी। चिरंजीव जुहारतं। दम सुदम के मध्य मूरति। ज्ञानी ज्ञान विचारतं।। प्रणाम ध्यानं अस्नान ज्ञानं। यज्ञ अश्वमेधी फलै कोटि दानं। कटे कोटि कुश्मल। दर्श दिल हजारा। सोहं सुरति लाय वेदी उचारा।। आदि मूले सकलध्रं। पराशक्ति उजागरं। कोटि भानं सुकलामालं। भुजाडंड अनादि आंद। ता परे सुखद सागरं।। कोटि विष्णु विश्वंभ राजं। ब्रह्मवेत्ता कुलाल ख्यालं। शिव मुनिंद्र महादेवं। पुत्रबाला स बलन्तकारी।। कुलवंती स प्रानन्दनी। परम धीरं अजनम जाती। अजूनि जूनिं। बिलास रूपे विराजतं।। प्राशक्ति परम ज्ञानं। कला बीज विनोदनादं। ब्रह्मदण्ड स धारनं।। संख लोचन लिलाटधारा बिरञ्च वेदं स विद्यानंदं। पुष्पमाला कुलंगनी। कोटि ब्रह्मा धराधंर।। अग्र मूले निजानामी। कला सिंधु कलेवरं। पराधीनं स जन्मजाती। संख जुग जुगादतं।। जनूम नन्दनी सः महामाई। शिव बिरञ्च विष्णोदकं। महाबाला सः बाल रूपं। पुरुष भोगी न भारजा।। पुत्री सः पदमरूपं। पुष्प पारस अंगना। कोटि सिद्धि स्वरूप साजं। दर्श ध्यान दिवंगना। सावित्री लक्ष्मी गौरजं। त्रिगुणी तम्बोल मूलं। महामाई स वज्रडण्डी विराजतं।। ब्रह्माणी विष्णानी गौराणी कलाराजं। आधार धार उधारर्णी। विद्यानंदनी विनोद करणी। बारबारं स मंगला छंद उचारणी।। समोवेदी समाधानी। कला शुद्ध सुहागनांद। वैकुण्ठेः बिराजनी। योगानी वेदानी। निरदुंदी अरु दुंदानी।। कर्म कालं कलेवरं दूर करनी स महामाई पुरञ्जनी। विलास मूले अदालतं। असुर दमनं दया करनी। सुरौंचेरी चिरागनी।। निरञ्जनी निराकारी स ब्रह्मचेरी। ब्रह्मचेरी स ब्रह्माणी। ताल ख्यालं कमाल मौज गुजारनी। असन बसन योग भोगं। दुर्बुद्धि दुरावनी।। योगमाया जुगादि आंद। निंद्रा निरूपनी। च्यार खानी स परा अधीनं। सुर नर मुनिजन सोवहीं।। जागंत समोद सूरं। शिव मुनींद्र बीनवो। सनकादिक नारद भुसुण्ड व्यासा मारकण्ड लोमी ऋषिं।। वशिष्ठ विश्वामित्र कला धारं। पुण्डरीक पारासुरं। शिव विरञ्चि विष्णु शेषादिं। परशुराम बलिबावनं।। कपिल लक्ष्मण हनुमन्तं। अम्बरीष ध्रू प्रहलादं। बालमीक विलोकतं।। गोरख गोपीचंद भरथरी ध्रुव प्रहलाद सतजुग अचारजं। नामदेव कबीर कलिजुग अचारजं।। २८।।

अथ गायत्री

सतगुरुं शशिवरं सकलं वरधरं। चतुर्भुजं प्रसरं केसरं। वरधरं निराकारं निर्मलं। वासुदेव विश्वम्भरं।। निर्गुणं निरालंभं। कृपानिधानं।

चिदानंदं चितघनं। अचराचरं जल थलं विश्वरूपी विराजंत।। मोर मुकटं लीलकण्ठं। परब्रह्म पीतंबरं। मुकट माला कलाधारं। कंकनं श्वेत छत्रं। भालि तिलकं विराजतं।। कुण्डलं घूंघरं केशं। कंवल नैंनं निरंजनं। योगध्यानं जुगतानंदं। गुष्टानमंत्रं गर्व हरणं। भृगलता धारणं।। तीन चरण चिंतामणि वदनं। शेष समाधिनं। दसतं विलोक फूलं। कलंगी कलश विराजतं।। पुष्पमाला भँवर भुवनं। अनहद नाद तूर तंती। बीन बरदं सुरधरं। ताल ख्यालं सुरभरं।। शिरोमणि गौमुखी गंग। फटक मणी कौसतं। अलील चक्रं धुनष बानं। शंख चक्रं गदा पदमं।। चंद्रभानं अनंत तेजं। अमीखीर सुख सागरं। अछै वृक्षं समाधानं। उरधमूले स मधर शाखा। संख पुष्पं कलाधारं। जग मगं निजानामी। सिंध सुभर सागरं। पाताले स पादिका। स्वर्ग मुकट मनोहरं।। खड्ग चक्रं मूसलं। गदाधारनं षटकूँन चक्रं। तिरबली तालं अकुशरूप हिरंबरं। गरुड गामी निराकारं।। निर्मलं शील बानी विनोद नादं। गरजतं बिलास धुनिं। वज्र पिंड अखण्ड डण्डं। अनभूते अधारनं।। अधर धारं निराकारं। अकल मूलं ईश्वरं। परमानिधानं। महाबली कलंद्र।। १२।।

अथ मुक्ति मुद्रा

सत सुकृत नाम अविगति कबीर।। सतगुरं, शशिबरं।। परसरं, केसरं, वरधरं चतुर्भुजं।। निराकारं, निर्मलं।। निरबिषं, निरालम्भं।। बासुदेवं, विश्वंभरं।। अनादि आदं।। परब्रह्म प्राचीन्हं।। चिदानंदं, चितघनं।। चिंतामणि अलफ रूपं।। अलीलधुजं।। अवरण वरणं।। अजूनि जिंदं।। अजाति जातं।। अजर अमरं।। अधरधारं।। वज्र पिंजरं।। अकल मूलं।। संखभानं।। तेज धारं।। चंद्र साजं।। सलील सैलं।। अक्षय वृक्षं समाधानं।। ऊर्ध्व मूलं अगम शाखा।। त्रिशूल मालं।। अगर खौलं।। अरस पुष्पं।। ध्यान धूपं।। निरालंभं।। नरेशानं।। अजीत जीतं।। अटल गुमटं, शंख कलशं।। कलारूपं।। सिंधसाजं अचीन्ह चीन्हं।। अललध्यानं।। अनिन रूपं।। उरधरेखा।। अजन्म जामं।। सुरग श्रवरं।। कुण्ड कल्पं।। ऊँ अकाश बोधं।। विद्यानन्दं।। विधि कर्मं।। कुरम्भ साजं।। सकल भूतं।। कच्छ मच्छ बाराहबरनं।। चन्द सूरज पौन पानी।। धौल धरनं।। जरजरी भूतं।। सकल सैना निरविवेकं।। नरसिंह निराकारं।। कलाकल्पं।। बलिबावनं।। गिराह गजनं।। अधक ध्यावनं।। रंग रापति ररंकारं।। शेष रूपं।। अखण्ड मण्डलं।। सहंस शाखा अविचलं।। परशुराम।। रामचन्द्रं।। भरत चित्र लक्षमनं।। घटाघोरं शब्दनांद।। असुर चूरनं मरदनं।। हिरनाक्षि रावण बालिबीनं।। सहस्त्राबाहु शंखासुरं।।

बच्छासुर से दमन कीन्हे।। कंस केश मर्दनं।। शंख चक्रं गदा पदमं।। मोरमुकटं भृगलतं।। भाल तिलकं।। कलमली चाणूर चूरणं।। शिशुपाल शालं भंजनं।। किलि किली किलियं।। भद्रभूरं।। शंखदानें दमन दूतं।। पलकनाश बिलम्बनं।। कालभद्रं घोर कुण्डं।। धर्मराय धारनं।। शंखदूतं शालकर्म।। भक्ति भाव उबारणं।। आदि मूलं शंख पुष्पं।। ब्रह्मा विष्णु शिव साजतं।। अचराचरं देवदूतं।। लोकपालं गरुडगामी।। अनन्त वर्णं वृद्धबालं।। नागनागी गिराहगामी।। अष्टभुजी विशालतं बैराटमाली रघुवंशरामं।। हिरम्बरहीर मनोहरं।। मुकुन्दमाधो विलम्बनं।। विलाश रूपं।। गुष्टनादं।। सुसम वेदं।। ऋग यजु स्याम अथर्वनं।। च्यार खानी च्यार वानी।। ब्रह्मनादं उच्चरं।। कपिल मुनियं।। हिरन हेरं।। हराहीर विश्वम्भरं।। शिव शक्तिरूप कैलाशवासी कलन्द्रं।। सावित्री लक्ष्मी गौरि देवी गनेश पूजा बिलम्बनं।। नौग्रह साल सलील शंक्या।। कर्म भ्रम भञ्जनं।। लोकलोका पर्वतं।। पृथ्वीला प्रदक्षिणं।। पलकपारं निराधारं।। सेवनादरि गंजनं।। ब्रह्म नाद कपोल ढोलं।। सर्वमई समूल ध्यानं।। अमोघ सशस्त्र उरबसं।। धर्मधीरं कँवलनाभं।। कोटि जगि जुगा जुगं।। मूल कँवलं स्वाद चक्रं।। रवन पूरं रिछंकं।। उरकमालं उरध मूलं।। कण्ठ कंवलं संचतं।। त्रिकुटी तिरमाल तीरं।। सहंस कँवलं प्रसतं। प्रानन्दनी कामधेनं।। सेवनं कल्पवृक्षतं।। अगमपन्थ अमानध्यानं।। सुरति निरति समाधियं।। पांच इन्द्री मन विश्वम्भर नेस भगलं बादियं।। शंख कल्पं जुग जुगादं।। महाप्रलो अस्थिरं।। ब्रह्मडण्ड इन्द्रवज्रं।। शिव त्रिशूलं।। विष्णुचक्र सुदर्शनं।। पिण्ड प्राणं रूम रूमं।। शीश चरणं साजतं।। क्षीर समुंद्र शेषशायी।। सहंस साखा सीरतं।। पराज्ञानं पराध्यानं।। परमपदं परसतं।। अष्टसिद्धि नौनिधि नादं।। मुक्ति मोक्षं लभतं।। अगमदीप असंख कँवलं।। तेजपुञ्ज झलकतं।। अटल पुरुष अनादि आदिं।। बानी बिलोकं पुलकतं।। अचल धाम समूल समर्थ।। आदि अन्त आगोचरं।। संख तूर जहूर जोती।। अलल आसन जगमगं।। शंख झालर नाद बीना। भेरि तुरही बाजही।। मुरली मगन महबूब खूबं।। हाजिर हजूर निवाजही।। स्वर्ग सालं पदमपानं।। अनभूते भूत बसन्तानं।। धर्मशाला सुचेसाचं।। ध्यानधूपं नरेशानं।। अगम गमनं अजन्म जामं।। सहंस शाखा सेवनं।। गुष्ट मधरं कल्प रूपं।। मूले मूल मुकन्दानं।। पताले स चरण कँमलं। मध्य नाभि निरालंभं।। गगनि शून्यं शीश मुकटं।। संख भुजा बिश्वम्भराजं।। सेत छत्रं धरम धीरं।। मुकट मणि बैरागरं।। संख कल्पं जुगे जुगं।। अमर पद सुख

सागरं।। कोटि भानं आनन्दरूपं।। कनक धार कलन्द्रं।। शंख पुष्पं अक्षय वृक्षं।। समाधानं अजाहरं।। सकल शून्यं शैल शैलं।। अनभूत भीतर बाहिरं।। सतसुकृत अविगत कबीर।। ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ।। किलियं किलियं किलियं किलियं।। हरियं हरियं हरियं हरियं।। श्रीरं श्रीरं श्रीरं श्रीरं।। सोहं सोहं सोहं सोहं। सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं। अभयपद गायत्री पटल पढंते। अर्थ धर्म काम मोक्ष पूर्ण फल लभ्यते।। ४०।।

अथ मुक्ति छंद

पांन अपांन समानादं, मन इन्द्री फल अस्थिरं। नासाग्रे निरालम्भं, चीन्हते द्वादस दलं।। अगर मूले न मूर्छा, मूर्छा सः जीवजन्मं। जीवजन्मं सः भ्रम भूते, भ्रम भूते सः कर्म कालं, कर्मकालं सः बिनास्ती।। १।। हर हर हर हर उचार। शिव योगी गति अपार। महादेव कैलाश कुन्ज।। सुर नर मुनि जन, सिर करें पुन्ज। दास गरीब धर शिव का ध्यान। भक्ति मुक्ति जिन दीन्ही दान।। २।।

अथ सूरज गायत्री

उगमंत सूरं, वरषंत नूरं,
बाजंत तूरं। सकल लोक भरपूरं, काल कंटक दूरं।। १।।
सत्य सुकृत श्री सूरज बाला। जप तप संजम के रखवाला।। २।।
हाथ खड्ग गल पुष्प इकी माला। कानों कुंडल रूप विशाला।। ३।।
ऋद्धि सिद्धि दीजो कर प्रतिपाला। मोक्ष मुक्ति के तुमहि दयाला।। ४।।
हम पर सूरज होय कृपाला। दास गरीब चितावन वाला।। ५।।

अथ मूल मंत्र

निरंजन निरंजन निराकार भज रे,
ताता न सीरा राता न पीरा। धरौ ध्यान धीरा, रह्या आप थिर रे।। १।।
अडोलं अबोलं अछेदं अभेदं, परे से परे रे,
कहो कौन हेरे। अगम अथाह दरिया, गया तूं बिसरि रे।। २।।
बिना मूल मौला, जो काला न धौला,
सुरति सिंधु सैलं। करो दूर फैलं, भजो क्यों न हरि रे।। ३।।
पशू तूं पतंगम, भुवंगम विसासी, दई देह नर रे।
रटो राम रमता, रखो शील समता, करें तोहे अजर रे।। ४।।
अलख नूर मेला, गुरु कौन चेला, बजर काल डर रे।
शब्द में समाना, अमाना अजोखं, चलो क्यौं न घर रे।। ५।।
मूल मंत्र गौहराया, भेद किन्हैं विरले जन पाया।
पिण्ड ब्रह्मण्ड से सिंधि न्यारी, कुछ ऐसी ही धारना धारी।। ६।।
दिल अंदर दीदार, नहीं वार पार।

वज्र पौलि पट खोल्हि, नहीं तोल मोल।
शब्द सिन्धु झलकै, दास गरीब निज नूर पलकै।। ७।।

अथ अर्जनामा

सतगुरु मेहरबान कीजो सहाय।
जल थल सकल संगि मौले मलाह।। १।।
जल बूंद से साज कीन्हा निशान।
जठराग्नि बीच राखे अमान।। २।।
जठराग्नि बीच राखे सही।
अमृत अमी खीर प्याया मही।। ३।।
ना पैद से पैद कीन्हा है पिण्ड।
जामें भँवर अर्श कुर्सी है अण्ड।। ४।।
स्वासा सहंस धुनि शरीकत सरार।
वै कौल बिसरे जो कीन्हे करार।। ५।।
कुर्बान कुर्बान कुर्बान जांह।
भय के दरिया बीच पकरी है बांह।। ६।।
निःचल निराकार निर्गुण अनूप।
अस्थिर अनाहद सलाहद स्वरूप।। ७।।
रहता कुर्श के जो पड़दे अदेख।
है बेचगूनं नमूनं अलेख।। ८।।
खालिक खलक बीच हाजिर हजूर।
बाजे सुहंगम विहंगम जो तूर।। ९।।
मौले मुरारी अटारी जु लाल।
ता बीच साहिब सुभानं विशाल।। १०।।
खाने चरवादार बांदी का जाम।
लटका करौं मेरी लीजो सलाम।। ११।।
मौले साहिब मेरी मेटो नै शंक।
मोसे पतित तैं उधारे असंख।। १२।।
साहिब चिदानंद सतगुरु अलेख।
मोसे पतित तैं उधारे अनेक।। १३।।
अगहै अगम दीप ऊंचा सुमेर।
कैसे चढ़ौ जो फिरंगी है फेर।। १४।।
तुंही है तुंही है तुंही है सुभांन।
ना पैद से पैद कीन्हा जहान।। १५।।
तुंही है तुंही है तुंही है अजोख।
ना पैद से पैद कीन्हे हैं लोक।। १६।।

तुंही है तुंही है तुंही है हकीम।
ना पैद से पैद कीन्हा मुकीम।। १७।।
दुनिया दिवानी बेगानी विकार।
समझै न बूझै अनारी गंवार।। १८।।
साहिब दयावंत अविगत अपार।
सोहं सोहं भौंरा गुञ्जार।। १९।।
दुनियां बिलोमान होती हनोज।
करियो बे यारो परम हंस खोज।। २०।।
फना है फना है फना है लगार।
माटी मिलेगा जु करता सिंगार।। २१।।
हस्ती रु घोरा रु जोरा जहांन।
फना दीन दुनिया जिमीं आसमान।। २२।।
श्राजा न रैयत रहैगा न कोय।
रहैगा चिदानंद उपज्या न सोय।। २३।।
भाई भतीजे रु जोरू जमाल।
देखैंगे लड़के जु होगा हवाल।। २४।।
दादी रु फूफी बहन रोवैंगी रूह।
जम आनि पकरैगा दूह बरदूह।। २५।।
मौसी रु मामा अलामा जहांन।
शुकदे कूँ पूछो जु बिरकत प्रवान।। २६।।
हजार बार तोबाह जो खैंचे हदीस।
कहौ कौन मेटेगा जम की कसीस।। २७।।
काफर करदबंद खाते बकरीद।
जम की तलब कैसे होगी रसीद।। २८।।
मुरगी रु बकरी रु ढांढा रु ढोर।
खूनी भखै हैं शरे के जो चोर।। २९।।
चाकर चरवादार देखैं खवास।
जब आन बीतेगी जम की तरास।। ३०।।
करियो बे यारो कुछ चलने का सूल।
दरगह न पौंहचें नबी जो रसूल।। ३१।।
मुहम्मद नबी कूँ न पाया है राह।
अर्श पंथ बांका हे अगमी अगाह।। ३२।।
सरे की शरीकत तज्या है न दीन।
उलटा अपूठा पर्‌या है जमीन।। ३३।।
दोजख बहिश्त का जु देख्या है अंत।

जा बीच जमराय तोड़ें हैं दन्त।। ३४।।
दोजख बहिश्त का जु देख्या उनमान।
जा बीच जमराय काढ़ै जुबांन।। ३५।।
दोजख बहिश्त है जु बांकी उजाड़।
ता बीच जमराय तोड़ै है जाड़।। ३६।।
करियो बे यारो खजाना खरीद।
संगि ना चलै देखो दीद बरदीद।। ३७।।
संगि ना चलेगा सुई रु सुमेर।
काफर कुटन करते घेरा ही घेर।। ३८।।
झूठा करम कूर काफर कूँ जान।
अहरन की चोरी सुई का जु दान।। ३९।।
मूंजी मुजावर रु पापी परेत।
सूमों का सुसरा सांई स्यूं न हेत।। ४०।।
सतगुरु चिदानन्द अविगत अपार।
पाजी खानेजाद तुम्हरे अधार।। ४१।।
सतोगुन का सांमा जमईत जमाल।
देखै तमासा सब कुदरत कमाल।। ४२।।
शील के सरोवर में जु न्हांना हमेश।
प्रेम पद पारस का दीजे उपदेश।। ४३।।
बुधि का दे बखतर और पाखर प्रतीत।
सोहं जप माला भज अविगत अतीत।। ४४।।
बुधि की बन्दूक और दृढ की दे ढाल।
चित्त की तो चकमक भरि दारू द्रहाल।। ४५।।
पौन का पलीता और गोला गुलजार।
दो दल की खिरकी से उतरोगे पार।। ४६।।
ज्ञान की गादी समाधी गलतान।
दया के दुलीचे पर धरम के निशान।। ४७।।
द्वादश दल जीतन कूँ तत की तरवार।
अर्ध ऊर्ध तकिये बीच दुर्जन कूँ मार।। ४८।।
नाम की नौका कर मन कूँ मल्लाह।
चित का तो चप्पू सुरति से चलाय।। ४९।।
अर्श में जु आसन सिंहासन समोय।
उदित भान चन्द सूर संख कला जोय।। ५०।।
तत का तो तिलक करि ले गायत्री लाप।
शून्य शिखर गढ़ में तुम जपो अजपा जाप।। ५१।।

अठसठ का न्हाना त्रिवैनी के तीर।
सरबंगी साहिब भजि कायम क बीर।। ५२।।
मानसरोवर दरिया जहां चुगते हैं हंस।
लगै गैब गोता जहां भेंटे परमहंस।। ५३।।
अछै वृक्ष अर्श बीच फूल्या गुलजार।
अर्थ धर्म काम मोक्ष पाये दीदार।। ५४।।
पान पान विष्णु बैठे शिव विरंचि शेषा।
सतगुरु कुर्बान जाऊँ जो ऐसे उपदेशा।। ५५।।
सतगुरु चिदानन्द माया न मोह।
निर्गुण निरालम्ब जान्या है तोह।। ५६।।
कासे कहूँ भेद परवर दिगार।
जान्या हम जान्या है अविगत अपार।। ५७।।
अर्श बीच बैठ्या जो मारै गिलोल।
देखो बे यारो कुछ नहीं तोल मोल।। ५८।।
पीताम्बर पट में हे सूक्ष्म स्वरूप।
सुरति नाल चलता है छाया न धूप।। ५९।।
सतगुरु अवाजी निवाजी लिलाट।
सुनो अर्जनामा पट्टण के जु घाट।। ६०।।
ब्रह्म तेज ताली हमाली हजूर।
अगम पंथ पाया समाया जहूर।। ६१।।
सतगुरु शरीकत हकीकत जुबाब।
कहो कौन लेगा शरै में हिसाब।। ६२।।
मौले मेहरबान मालिक मुरार।
हीरा हीरम्बर तुंही वारि पार।। ६३।।
सतगुरु डिगम्बर विश्वभर दयाल।
पल में निवाजै जो नजरी निहाल।। ६४।।
अगम ज्ञान रासा खुलासा जु सैल।
पपीली न पहुंचै जु लादे हैं बैल।। ६५।।
कहता है **गरीबदास** छान्या है नीर खीर।
कुर्बान कुर्बान कायम कबीर।। ६६।।

अथ भक्ति माल शब्दी अर्जनामा

सतगुरु मेहरबान अविगत कबीर।
टूटे इसम नाल जम के जंजीर।। १।।
तीरथ व्रत यज्ञ करते अश्वमेध।

गुन ज्ञान पढ़ते शरू च्यारौं वेद।। २।।
अश्वमेध कोटं करै धर्म धीर।
अर्ध नाम रापति तिरे सुध शरीर।। ३।।
पापी अजामेल धरिया जो ध्यान।
गनिका चढ़ी जाय तुमरे बिवान।। ४।।
पापी अजामेल कौने अधार।
वैकुण्ठ वासी निवासी विचार।। ५।।
पापी अजामेल पीया शराब।
भांडी जगत बीच खाना खराब।। ६।।
ऐसे पतित की जो पकरी है बांह।
कामी अजामेल दीन्हा निबाह।। ७।।
भीलनी भलीं भांति बाजे निशान।
षट कर्म कीन्हे न ऐसी अजान।। ८।।
चरण की जो चेरी चिदानन्द ध्यान।
वैकुण्ठ वासी निवासी अमान।। ९।।
सदना शरीकत गला काट खाय।
सतगुरु छुटाई सुरह बन्ध गाय।। १०।।
सदना जगन्नाथ चाले जो राह।
दीन्हा बैरागनि मनारे चिनाय।। ११।।
ढहिया मनारा धनी के हुकम।
लागै लगारं जो संगति तुखम।। १२।।
सदना जगन्नाथ कीन्हा जुहार।
दीन्हा बिनानी धनी कूँ दीदार।। १३।।
माटी तुले नालि भाठा विटम्बं।
सदने किया आनि ऐसा आरम्भ।। १४।।
पाषांन धोवै दुनी कूँ जो देत।
शालिग शिला पांन सदना जो हेत।। १५।।
सदना कर्म काटि कीन्हा सुनाथ।
मोकूँ न भय है धनी जगन्नाथ।। १६।।
तपिया जो तप कीन्ह भेटे न राम।
परे लोदिया द्वार कीन्हा विश्राम।। १७।।
लोदी कहै सेर आटा जो लेह।
तपिया कहै मेरा मेटो सन्देह।। १८।।
धुंनही सुंनही बाबर लीन्हा विचार।
लोदी चले देखो खेलन शिकार।। १९।।

लाखौं जिनावर धनी का न ध्यान।
लोदी करद काढ़ि घातिक प्राण।। २०।।
आये विश्वंभर धनी जानराय।
मुकट शीश छतरं पदम है जो पाय।। २१।।
साहिब विश्वंभर धनी जगन्नाथं।
लोदी करद डारि पकर्या जु हाथ।। २२।।
आने विश्वंभर तपी के जु पास।
लोदी चरण बांधि डारी जु ल्हास।। २३।।
साहिब विश्वम्भर धनी तू दयाल।
राजी हुये देव लोदी के नाल।। २४।।
मुक्ति पिंड प्राणं अमानं अमान।
तपिया रु लोदी किये हैं प्रवान।। २५।।
आये साधु पाहुने जु गनिका के पास।
लीजे संत सीधा जु कीजै निवास।। २६।।
कुटिल धान्य तुम्हारा कहो कौन खाय।
बोले सुरति सन्त हमरे न चाह।। २७।।
लख द्रव्य लागै मुकट दर मुरारि।
सिर धरि जगन्नाथ कीजे जुहारि।। २८।।
वेश्या विश्वम्भर कियो है जु याद।
पूर्ण करो मेरी साहिब मुराद।। २९।।
मोतियों की झालरि और हीरों के चौक।
वेश्या घड़ाया मुकट ध्यान शौक।। ३०।।
चले सन्त वेश्या जगन्नाथ बाट।
आगू जु भेटे पण्डा जानि आठ।। ३१।।
हरि के दिवाले जु वेश्या विशाल।
कीन्ही जगन्नाथ पल में निहाल।। ३२।।
मुकट हाथ सेती लिया सिर निवाय।
वेश्या मदन छुटि पद में समाय।। ३३।।
चले सन्त वेश्या नगर के जु राह।
दीजे भण्डारा जौंनारा जिमाय।। ३४।।
घोड़ा हर्या एक तस्कर विचार।
बांध्या गली बीच हथाई चौपार।। ३५।।
राजा कुमैती घोरे गैल आय।
खोजी किया खोज घोरा दिखाया।। ३६।।
मुश्की पलटि अंग होता सुपेद।

घोरा बोही सकल जान्या है भेद।। ३७।।
घोरा उलट बेग बांध्या जु थान।
तस्कर दिया आन साचा ईमान।। ३८।।
सतगुरु कह्या एक साचा सुखन।
सकल भ्रम टूटे जो च्यारौं रुकन।। ३६।।
दूजे लई एक थैली उठाय।
सतगुरु बिनानी जु करते सहाय।। ४०।।
चौकी दरे की जु पकर्या है आन।
बोले जु तस्कर उगे हैं जु भान।। ४१।।
जहां से लई है जु थैली चुराय।
सुनौं यार मेरे जु देहौं बताय।। ४२।।
खबरदार तस्कर किया है तहां।
खबरि जाय कीन्ही जु थैली कहां।। ४३।।
भाग्या जु बनिया नंगे नग्न पांव।
रंगरेज कपड़ा सुपेदी चढ़ाव।। ४४।।
काजी शरे में मुचलके लिखाय।
कहो कौन सिक्का जु हम कूँ बताय।। ४५।।
मेरे रुपये अहद सनें ऐंन।
यौह तो सिक्का और बोल्या जुं फैन।। ४६।।
बनियां पकरि बांधि लिया जु डांडि।
हंसै चोर तस्कर लई बांधि पांडि।। ४७।।
ऐसा तमासा हुवा है अमोघ।
तस्कर कहैं शाह दिवाने है लोग।। ४८।।
तुरसी त्रकमांनि चलिये उजारि।
घर आनि फोर्या जो चोरों किरारि।। ४६।।
आई गश्त फेर भागे जो चोर।
तुरसी गिरह आन बरिया कठोर।। ५०।।
नर से भई नारि पलटे जो केश।
तुरसी कल्प कीन्ह मेट्या अन्देश।। ५१।।
उलटी गश्त आन कीन्हा हजूंम।
घर आन घेर्या परी है जो धूंम।। ५२।।
पकरे गये हैं जो तुरसी हजूर।
कहां चोर तस्कर जो निकल्या कसूर।। ५३।।
बेहोश गश्ती लग्या चोर दाव।
गया है जो तस्कर नजर कूँ चुराय।। ५४।।

आये हैं साधू नरसीला के पास।
हुण्डी करो नै नरसीला जो दास।। ५५।।
पांच सौ रुपये दीन्हे जो रोक।
करो बेग हुंडी द्वारा नाथ पोष।। ५६।।
सड़ सड़ लिखी बेग कागज मंगाय।
टीकै दिया शाह सांवल चढ़ाय।। ५७।।
द्वारा नगर बीच पौंहचे हैं संत।
पाया न सांवल लिया है जो अन्त।। ५८।।
द्वारा नगर के जो बोले बकाल।
नहीं शाह सांवल नरसीला घर घाल।। ५६।।
करी है करुणा अबरना आनन्द।
भये शाह सांवल जो साहिब गोबिंद।। ६०।।
चिलकी करारे हजारे हजार।
दीन्हे दुचंदं जो सांवल मुरार।। ६१।।
दोहरी कलम टांक बहियां बिनोद।
भये शाह सांवल नरसीला प्रमोध।। ६२।।
चौरै गिने बेग पल्ला बिछाय।
देखैं द्वारा नगर के सकल शाह।। ६३।।
खरचे खाये संतौं कीन्हे मुकाम।
द्वारा नगर बीच दीन्हे जो दाम।। ६४।।
सांवल शाह संतौं से कीन्हा बसेख।
नरसीला से बन्दगी हुन्डी द्यौं अनेक।। ६५।।
पहली नरसीला नैं दीन्हा भंडार।
पीछे सांवल शाह पौंहचे पुकार।। ६६।।
बेटी नरसीला की भेली चढ़ाय।
चालौ पिता तेरी ध्यौती का ब्याह।। ६७।।
मैं निर्धन भिखारी नहीं मेरै दाम।
आऊँगा बेटी मैं सुमरूंगा राम।। ६८।।
नरसीला खाली गये पल्ला झार।
आगे खरी एक समधनि उजार।। ६६।।
भ्राता आये हैं जो धी के पिता।
करुवै के घाल्या जो हमकूँ बता।। ७०।।
समधनि कहै सखियों में सुनाय।
दो भाठे घाले हैं करुवे पिताय।। ७१।।
नरसीला सुनि कर जो हुये आधीन।

लज्या राखो मेरे साहिब प्रवीन।। ७२।।
आये विश्वम्भर जो गाडे लदाय।
ल्याये माल मुक्ता जो कीन्ही सहाय।। ७३।।
सूहे जरीबाब मसरू अपार।
गहना सुनहरी और मोती हजार।। ७४।।
हीरे हरी भांति लाली सुरंग।
चाहै सु देवै छूटी धार गंग।। ७५।।
नगदी और जिनसी खजानें मौहर।
उतरे जरीबाब झीनी दौहर।। ७६।।
चुंनरी चिदानन्द ल्याये अनूप।
झालर किनारी जरीदर सरूप।। ७७।।
समधनि सुलखनी खरी है जो पास।
भरे भात नरसी जो हीरूयौं निवास।। ७८।।
घोरे तुरंगम दिये हैं जो दान।
अरथ बहल पालकी किये हैं कुर्बान।। ७९।।
कलंगी रु झब्बे सुनहरी हमेल।
हीरे जड़ाऊ मोती रंग रेल।। ८०।।
नरसी अरसी है समुंद्र में सीर।
गैबी खजानें अमानें जो चीर।। ८१।।
भाठे परे दोय धूं धूं धमाक।
देखें दुनी चिश्म खोलै जो आंख।। ८२।।
चांदी सोने के हैं भाठे जो दोय।
समधनि लिया मुख उलटाई गोय।। ८३।।
नामा पिता पंचौं लिये बुलाय।
पूजा करो हरि विठ्ठल राय।। ८४।।
हरि विठ्ठला की करै नामा सेव।
बोलत नाहीं पाषाण का देव।। ८५।।
दूध पिवो नैं गोबिन्देहि राय।
बिन पिये मेरा मन न पिताय।। ८६।।
नामा के दिल में जो देखी है सूध।
हरि बिठ्ठला आन पिया जो दूध।। ८७।।
माता पिता कहैं कैसा जुहार।
आये तत्कालं लगाई न बार।। ८८।।
नामा कहै सुनो माता पिताय।
हरि विठ्ठला दूध पीया जो धाय।। ८९।।

माता पिता देखैं नामा का नेह।
हरि विठ्ठला दूध कैसे पियेह।। ९०।।
दूध कटोरा लिया माता हाथ।
चाल्या पिता नामदेव की जो साथ।। ९१।।
दूध पिवोने गोविंदे गोपाल।
माता पिता भ्रम तोरो नैं जाल।। ९२।।
पाहन से परमेश्वर होय।
माता पिता खड़े देखैं जु दोय।। ९३।।
दोऊ कर पकर्‌या कटोरा कसीस।
दूध पिवै हरि बिठ्ठल ईश।। ९४।।
माता पिता का जु मेट्या सन्देह।
पिया दूध बिठ्ठल जु नामा संनेह।। ९५।।
गोकुल गाम की गुजरी गंवार।
गई दूध बेचन मथुरा नगर पार।। ९६।।
ज्ञानी गुनी पांडै ज्ञान समाध।
नाम ही नौका यौही मंत्र साध।। ९७।।
पांडे कूँ नाम सुनाया सरीत।
गुजरी के दिल में जो आई प्रतीत।। ९८।।
गुजरी नगर दूध बेच्या विचार।
नाम ही नौका मन में उच्चार।। ९९।।
बहुरि गई फेर पांडे के पास।
चालौ मिसर गाम तोरी मैं दास।। १००।।
पांडे कहै नाव आवै जो घाट।
स्वामी सेवक दोनूं चालैं जो बाट।। १०१।।
गुजरी कहै नाम नौका चढ़ो।
सुनौं मूढ़ पांडै तुम काहे पढ़ो।। १०२।।
पण्डित कहै नाम नौका कहां।
बेथाह जमुना हम इहां ही बहां।। १०३।।
गुजरी कहै नाम नौका नजीक।
दिल के दरिया बीच चलना न बीक।। १०४।।
गुजरी कहै नाम नौका बिवान।
पल्लू न भीज्या जो उतरी अमान।। १०५।।
गुजरी कहै नाम नौका कह्या।
पंडित गया बूडि पारे रह्या।। १०६।।
साहिब जुलहदी अलह का स्वरूप।

काशी नगर बीच आये अनूप।। १०७।।
जड़े तौक बेड़ी गले में जंजीर।
लोदी सिंकदर दई है जो पीर।। १०८।।
डार्‌या गंगा बीच दीन्हा डबोय।
राखनहार समर्थ झड़े तौक लोहि।। १०९।।
हाथी खूंनी बेग लीन्हा बुलाय।
मुश्क बांधि डार्‌या हाथी के जु पाय।। ११०।।
हाथी दर्श सिंह दर्शन दयाल।
कुरनिश करी देख बंका न बाल।। १११।।
पीलवान कूँ आन दीन्हा दीदार।
हाथी उलटि मोड़ लीन्हा सहार।। ११२।।
कहता सिकंदर ढुकावो जो फील।
करो बेगि तड़भड़ लगावो न ढील।। ११३।।
देख्या सिकंदर दिवाना जो सिंह।
आये चिदानंद कला कोटि रंग।। ११४।।
दुदकारि गूंजे चले भाग फील।
देख्या सिकंदर दर्श ध्यान लील।। ११५।।
चरण धोय पीये सिकंदर सिताब।
तुंही अर्श मक्का तुंही है किताब।। ११६।।
दिन एक दस में बुझ्या पंड पाय।
अटका पर्‌या फूट किन्ही सहाय।। ११७।।
बोले सिकंदर सिहर कौन कीन।
पौंहचे जगन्नाथ पंडा अधीन।। ११८।।
लोदी सिकंदर गया दूत पास।
कैसे बुझ्या पांव कहिये विलास।। ११९।।
अटका पर्‌या फूट सुनियों बसेख।
पहुंचे कबीरा जो साहिब अलेख।। १२०।।
जल हेम डार्‌या जो शीतल शरीर।
पहुंचे जगन्नाथ साहिब कबीर।। १२१।।
दिन एक दस में किया है अजाब।
भर्‌या है गंगोदक कहैं हैं शराब।। १२२।।
वेश्या बसै एक सुन्दर स्वरूप।
गये पीर मुरशद लई संग अनूप।। १२३।।
आशिक माशूक सतगुरु कबीर।
गलै बांह वेश्या धरे कौन धीर।। १२४।।

बाजी जो तारी अनारी डुबन्त।
गये भाग भांडी जु बेमुख अनन्त।। १२५।।
बावन लाख बानी जो दीन्ही डुबोय।
सुनी रामानन्द कूँ रह्या मुख गोय।। १२६।।
ऐसा सिहर कीन्ह काशी कलेश।
भागे अनन्तौं रह्या कौन पेश।। १२७।।
दुनियां तर्क मानि भई है उदास।
हाजिर रह्या एक चमरा जो पास।। १२८।।
सन्यासी उदासी बैरागी बिटंब।
पांडे पुकारैं जो कीन्हा अचंभ।। १२९।।
लाखौं फिलादी गये लोदी पाय।
शाह सिकंदर कूँ जो लिये बुलाय।। १३०।।
अहदी गये पकरि ल्याये जो बेग।
दीजै कोतवाली बाहो क्यौं न तेग।। १३१।।
झगरा पर्‍या है जो काशी मंझार।
भक्ति के द्रोही जुलहदी चमार।। १३२।।
षट दल दिया एक चिट्ठा जो फेर।
अठारह लाख दल कूँ लिया है जो घेर।। १३३।।
काने कुटीचर और अंधे अनंत।
जीमन चले हैं कबीरा के पंथ।। १३४।।
बोले कबीरा सुनो जो रैदास।
ल्यावो तंबूरा बरदंगी विलास।। १३५।।
बाज्या तंबूरा बरदंगी जो साज।
सुनी है धनी कूँ कबीरा अवाज।। १३६।।
नौलाख बोडी चली काशी धाम।
चढ़े रामराजा धर्‍या केशव नाम।। १३७।।
नौलाख बोडी ढुरी है जो आन।
अन्न धन्न अमीते किये हैं जो दान।। १३८।।
झाली रानी कूँ जो पाई है मोक्ष।
पांच सौ अशरफी चढ़ाई जो रोक।। १३९।।
रैदास कंठी गले बांधि दीन।
लागू भया है जो षट दल कुलीन।। १४०।।
रैदास पकरे गये हैं कबीर।
काशी सिहर कौन शोखी शरीर।। १४१।।
काशी सकल सौंज लीन्ही बुलाय।

शालिग शिला लाखौं चालै न पाय।। १४२।।
पंडित पढ़े पाठ करते जो सेव।
जुलहै बुलाये पत्थर के जो देव।। १४३।।
कनक का जनेऊ धर्‍या है जो ध्यान।
भये सात सै अंग रैदास जान।। १४४।।
टूटे जनेऊ सवा मन सूत।
पंडित भये शिष्य रैदास कूत।। १४५।।
त्रिलोक मांही जो बाजे निशान।
परे आनि पांडे जो मूधे मुहान।। १४६।।
चरण का भरोसा जो भारी अधार।
भई कौन लीला जुलहदी चमार।। १४७।।
पीपा प्रचई सुनौं हंस प्राण।
रहै गागरनि में नगर है निधान।। १४८।।
रामानंद दिक्षा लई है जो जाय।
धन माल घोरे दिये है लुटाय।। १४६।।
बैराग धारै सती सीता संग।
कूदे दरिया बीच रजपूत रंग।। १५०।।
सुवरण द्वारा दीप नगरी निधान।
पौंहचे पलक बीच कुर्बान ज्ञान।। १५१।।
भेटे कृष्ण देव साहिब मुरार।
चेरा चरण का जो तुमरे अधार।। १५२।।
देखे द्वारा नगर दर्शन दयाल।
रहे एक हफता नजर से निहाल।। १५३।।
ल्याये छाप पीपा जगत के जो मांहि।
त्रिलोक साका जो कुर्बान जांहि।। १५४।।
खाता पर्‍या एक गीहूँ आनि गर्‍ज।
सीता सती बेच दीन्ही जो संग।। १५५।।
पीपा दिया है जो सब ही लुटाय।
सीता सती शेर बाघनि बलाय।। १५६।।
आये बनजारे लैने कूँ जो बैल।
करी गाम हांसी पीपा की जु गैल।। १५७।।
पीपा रुपैये लिये हैं गिनाय।
तुरत चूंन चावल लिये हैं मंगाय।। १५८।।
पीपा भंडारा दिया है अमोघ।
जीमै बनजारे नगर के जु लोग।। १५६।।

पीपा तुम्हारे कहां है जु ढोर।
रजनी गई बीत हुवा जो भोर।। १६०।।
नागा सहस्त्रौं दीन्हे दिखाय।
खांडू हमारा जु लीजै चगुकाय।। १६१।।
दस बीस आंडू और विधया अनंत।
पीपा कहै मेरे साखी भवंत।। १६२।।
तेलन नगर बीच बेचै जु तेल।
मुख से कहो राम मीठी बलेल।। १६३।।
मुँख से कहू राम लागै जु पाप।
तेलन सुनाया पीपा उलटि जाप।। १६४।।
राम राम कहते मुये की जु साथ।
धरो पिंड बोझा मेर तन पाख।। १६५।।
तेलनि कहै तेरा कौन इसम।
पीपा कहै तेरा मरियो खसम।। १६६।।
तेलनि उलट बहुरि डेरे को जाय।
तेली मुवा देख दीन्ही जो धाय।। १६७।।
पीपा कहै बीबी बोलो जो राम।
मूये की संगि संगाती का काम।। १६८।।
पिंजरी लई बांधि उठावो सिताब।
पढ़ो राम हक्का और ल्यावो किताब।। १६९।।
जपै राम तेलनि और सारा कुटंब।
भई रांड छिंन में जो ऐसी हुरंभ।। १७०।।
राम नाम साचा और झूठा शरीर।
धरो घोर भीतर न्हवावो क्यूं न नीर।। १७१।।
तेलनि लिये हैं जु पीपा के पाव।
तेली दिये हैं जो पल में उठाव।। १७२।।
पीपा एक दिन में छुटे च्चार अंग।
बहुरि पाये फेर सीता के संग।। १७३।।
भक्ति माल शब्दी सुरति सिंध सैल।
निर्गुण निरालंभ चीन्हा अमैल।। १७४।।
हरदम हरी हेत हरि हरि हजूर।।
साहिब जगत ईश बरषंत नूरं।। १७५।।
दिलदार दिल बीच साहिब दयाल।
अगम और निगम खोज नजरी निहाल।। १७६।।
शब्द ब्रह्म छाके निरंतर निरोध।

पढ़े पुरान अठारह सकल सिद्धि बोध।। १७७।।
अगम धुनि ध्यानं अमानं अमान।
सूक्ष्म वेद साक्षी निरति पर बिवान।। १७८।।
सूक्ष्म वेद पढ़िये जो पूर्ण मुरादि।
कुसुम पर सूक्ष्म बांधि लागै सामाधि।। १७६।।
बिना पंथ चलना अधर में अधूत।
सुरति पर निरति है निरति पर संजूत।। १८०।।
उड़ै पौन प्राणं सुरति निरति पंख।
अकल देश चलना अक्षर है बे अंक।। १८१।।
है सो इलामं अलफ के जो मांहि।
अलफ और इलामं नहीं धूप छांहि।। १८२।।
सूक्ष्म से छिके हैं रखे हैं जो शीश।
मक्रतार धागा बिहागा जो ईश।। १८३।।
सूक्ष्म रूप सोहं अरु ॐ अनादि।
दहूँ बीच दीदार देख्या अगाध।। १८४।।
पटल में अटल है अटल कूँ जु देख।
सुरति नैंन नासा जो दर्श्या अलेख।। १८५।।
भुज संख कलंगी कला हैं अनंत।
कहते चतुर्भुज दिल की जो बंक।। १८६।।
चतुर्भुज चिदानंद सहंस भुज शरीर।
असंख भुज ताके परम गुरु जु पीर।। १८७।।
दो भुज उरे हैं परे हैं असंख।
निर्गुण और सर्गुण यौही है बेअंक।। १८८।।
बेअंक बाना समाना समूल।
अधर में मधर हैं बिना डाल फूल।। १८६।।
समाधान सुरती जो निरती निशान।
ब्रह्म बीज बानी अमानी अमान।। १६०।।
सुजीला सुजीवन सदा है सुनाथ।
जा रूप आगे सकल रूप मात।। १६१।।
अनंत कोटि तेजं उमेजं उमेज।
रंगी पुरुष की रंगीली जो सेज।। १६२।।
रवन पूर चक्र उठावै हमेश।
सौ कोटि योजन धरै ध्यान शेष।। १६३।।
शेषा सहंस नाद करते उचार।
सुनिये गगन बीच भौंरा गुंजार।। १६४।।

दादुर अर्श बीच बोलैं हमेश।
बिना ताल सरवर जो बानी प्रवेश।। १६५।।
कुंजी पपीहे कुहक नाद मोर।
कोयल कलारूप बिरहनि कठोर।। १६६।।
सुर ताल ख्यालं अजब राग ऐंन।
गगनि रास मंडल सुनैं क्यूं न बैंन।। १६७।।
अनहद अध्यात्म अजब रूप रंग।
पायल बजे हैं जिंदे पैर जंग।। १६८।।
मुरली मुक्ति रूप सुनिये सुभान।
दुनियां तरक कीन्ह तजते न प्राण।। १६६।।
बरदंग तंबूरे बजैं हैं रबाब।
अजब ख्याल खूबी सुने से सबाब।। २००।।
तन मन तरक कीन्ह झूठा जिहान।
मूर्ति अमूर्ति एक सूरति सुभान।। २०१।।
पारस परसि कर सोना होत लोह।
सुनो यार मेरे परम धाम जोह।। २०२।।
ब्रह्मण्ड पिंड खोज हाजिर हजूर।
निर्वाण निर्गुण निकट है न दूर।। २०३।।
ब्रह्मण्ड पिंड से जो न्यारा नरेश।
कल्प संख बबीते जो संगी हमेश।। २०४।।
सत पुरुष साहिब दया के जो मूल।
गरीबदास झूलैं समाधान झूल।। २०५।।

अथ त्रिभंगी छंद

रजनी नहीं भोरा रे। जहां तालिब मोरा रे।
धन्य चन्द्र चकोर रे। अनहद घन घोरा रे।
लै सुरती डोरा रे।। १।।
जहां झिलमिल ज्योती रे। तहां माणिक मोती रे।
नहीं पतरा पोथी रे। कुछ भिन्न न छोती रे।
कोई जाति न गोती रे।। २।।
निर्गुण निरबांनी रे। साहिब प्रवांनी रे।
मौला दिल दांनी रे। कादर कुरबांनी रे।
अनहद सहदांनी रे।। ३।।
टूटैं जम जंजीरा रे। पद गहर गंभीरा रे।
जहां झिलमिल हीरा रे। औह अस्थिर थीरा रे।

मैं दामनगीरा रे।। ४।।
जहां अजब जहूरा रे। दल संख कंगुरा रे।
जहां अनहद तूरा रे। वहां नाचैं हूरा रे।
कोई पौंहचे शूरा रे।। ५।।
अविगत अविनाशी रे। सब गुण का राशी रे।
अनहद पुर बासी रे। तट गंगा काशी रे।
हम हरदम न्हासी रे।। ६।।
निर्गुण निर्बाना रे। अनहद धुनि ध्याना रे।
पद सिंधु समाना रे। गैबी गलताना रे।
दोसत दिलदाना रे।। ७।।
कुछ भेष न पंथा रे। झिलमिल झलकंता रे।
जहां आदि न अंता रे। निज दर्श अनंता रे।
नित फाग बसंता रे।। ८।।
दम देह न काया रे। कुछ मोह न माया रे।
है त्रिभुवन राया रे। खोया नहीं पाया रे।
मूवा नहीं जाया रे।। ९।।
नहीं धरणि आकाशा रे। दम देह न श्वासा रे।
अनहद पुर वासा रे। है अधर निवासा रे।
कोई जानत दासा रे।। १०।।
एक तरुवर फूलं रे। शाखा नहीं मूलं रे।
जिस देख न भूलं रे। बिन तन अस्थूलं रे।
जहां हंसा झूंल रे।। ११।।
गिरिवर एक नंका रे। जहां लगे न टंका रे।
अगमी गढ बंका रे। जपि सोहं शंका रे।
धरि ध्यान उचंका रे।। १२।।
अगमी गढ़ आदू रे। तज वाद विवादू रे।
जहां अनहद नादू रे। पौंहचे कोई साधू रे।
जहां अकल अनादू रे।। १३।।
सुन तपिया नागा रे। क्या सेवा लाग्या रे।
सूता नहीं जाग्या रे। बिरहे वैरागा रे।
इन्द्री गुण त्यागा रे।। १४।।
निर्मल पद नीका रे। औह जीवन जीका रे।
सब गुण का टीका रे। मानों सति सीखा रे।
माया रंग फीका रे।। १५।।
सुनि अफलातूंना रे। यौह मंदिर सूंना रे।

यहां ईंट रु चूनां रे। यौह गूंनम गूनां रे।
धरि ध्यानं धूनां रे।। १६।।
सुनियो प्रसांगा रे। कीजै सत्संगा रे।
एक नाम अभंगा रे। जीतो जम जंगा रे।
सुनि नाद कुरंगा रे।। १७।।
कीजो इतबारा रे। झूठा संसारा रे।
उतरो भवपारा रे। शुन्य भँवर गुंजारा रे।
दादुर भंनकारा रे।। १८।।
यौह मान संदेशा रे। सतगुरु उपदेशा रे।
रटि शंकर शेषा रे। औह दुर्लभ देशा रे।
प्रथम पूज गणेशा रे।। १६।।
कह्या सो कीजै रे। अगमी गढ़ लीजै रे।
सुन कौन पतीजै रे। सिर साटै दीजै रे।
अमृत रस पीजै रे।। २०।।
जहां झिलमिल दरिया रे। उहां कर्म न क्रिया रे।
चेतन पद तुरिया रे। हम पाई पुरिया रे।
सुरती मन जुरिया रे।। २१।।
अनहद गरजंदा रे। दामनि चमकंदा रे।
बिन बादल बरषंदा रे। द्रवै गुलकंदा रे।
लखि सतगुरु जिंदा रे।। २२।।
योगी मतवाला रे। मठ अर्श दिवाला रे।
जहां कर्म न काला रे। लखि चित्रशाला रे।
जहां प्रेम पियाला रे।। २३।।
बहुरंगी गावै रे। सुनि शब्द सुनावै रे।
जहां ताल बजावै रे। कुछ दृष्टि न आवै रे।
मन सुरती पावै रे।। २४।।
कर अकलि अकीनां रे। यौह मारग झीनां रे।
पौंहचे प्रवीनां रे। होना पद लीनां रे।
जिस का तिस दीनां रे।। २५।।
दर गगनि फुहारा रे। जहां अमृत धारा रे।
झनकै झंनकारा रे। अनहद धूमारा रे।
गुल फूल हजारा रे।। २६।।
कर सिर का साटा रे। चढ़ि पट्टण घाटा रे।
है विषमी बाटा रे। जहां खुल्हैं कपाटा रे।
पकरै तब आठा रे।। २७।।

औह रूप अगाहा रे। कोई लखै न थाहा रे।
गहकाल सुराहा रे। पकर्‍या है बंधि जुलाहा रे।
सतगुरु कीन्हा निरबाहा रे।। २८।।
समर्थ कर्तारा रे। यौह बटक बीज बिस्तारा रे।
कोई जांनै जाननहारा रे। जिन सिर से बोझा डार्‍या रे।
जो उतर गये भव पारा रे।। २९।।
राग द्वेष नहीं करना रे। उस दरगह लेखा भरना रे।
क्या बूढा क्या तरुणा रे। साहिब सेती डरना रे।
जिन जल की बूंद निसरना रे।। ३०।।
समर्थ सत्संगी रे। साहिब अचल अभंगी रे।
जैसे कीट भृंगी रे। मारि जिवावे जंगी रे।
झूठी प्रीति इकंगी रे।। ३१।।
नाना वर्ण अनंता रे। अनंत कोटि जीव जंता रे।
खालिक सकल बसंता रे। बूझ ज्ञान की संथ्या रे।
भेष अभेषं पंथा रे।। ३२।।
तीर्थ नदी निवासा रे। चंद्र सूर कैलाशा रे।
ज्यूं कूरंभ घट श्वासा रे। स्थावर जंगम वासा रे।
च्यार खानि प्रकाशा रे।। ३३।।
कोई संगि न साथी रे। कुछ भिन्न न भांती रे।
कोई जाति न पाती रे। अनहद धुनि माती रे।
एकै जल स्वांती रे।। ३४।।
अलल पंख धुनि ध्यानां रे। उस मारग जानां रे।
बिन पंथ पियानां रे। जहां पिण्ड न प्राणां रे।
औह लोक अमानां रे।। ३५।।
क्या कोड़ी धुज लाखा रे। जिन पद नहीं झांक्या रे।
गैबी गुण भाषा रे। जहां ध्वजा पताका रे।
तरुवर बिन शाखा रे।। ३६।।
जहां काल न कूता रे। जम जाल न दूता रे।
सब जागत सूता रे। ये प्राणी भूता रे।
औह पद अनभूता रे।। ३७।।
बानिक नहीं बनता रे। कोई ज्ञान न गुनता रे।
निज शब्द न सुनता रे। लिये पाप रु पुनता रे।
ध्यानी जो धुनता रे।। ३८।।
देवन पति देवा रे। पाया निज भेवा रे।
कर ले तिस सेवा रे। भवसागर खेवा रे।

औह पुरुष प्रेवा रे।। ३६।।
झींना सा दरशै रे। ठ तकिया अरशै रे।
पद अजर अमर सै रे। निज मानिक बरषै रे।
कोई साधू परसै रे।। ४०।।
औह जूनि न धारै रे। दम देह उसारै ने।
जो कँवल हमारै रे। सो प्राण उधारै रे।
तन महल समारै रे।। ४१।।
अविगत व्यवहारी रे। जिन देह समारी रे।
याह धारनि धारी रे। सुन बिरह अजारी रे।
औह लटक बिहारी रे।। ४२।।
नेरे से नेरै रे। कहां दूर प्रेरै रे।
झूठा गुरु घेरै रे। आवै नहीं मेरै रे।
यहां होत अबेरै रे।। ४३।।
निज शब्द न सूझै रे। जड़ जूनी लूझै रे।
जो पाहन पूजै रे। कोइ महरम बूझै रे।
औह अमृत दूझै रे।। ४४।।
औह अमृत श्रवै रे। निज बानी ब्रवै रे।
चिशम्यौं बिन द्रवै रे। नारी नहीं नरवै रे।
जान्या जिन घरवै रे।। ४५।।
पूजै सो नांहीं रे। यौह झूठ बिलांहीं रे।
चेतन जड़ मांहीं रे। औह अलख गुसांई रे।
नजर्यौं नहीं आंहीं रे।। ४६।।
बांचो प्रवानां रे। औह देश दिवानां रे।
जहां भेष न बानां रे। अगमी असमानां रे।
जहां निरति निशाना रे।। ४७।।
मन मीहीं पीसं रे। मोटे नहीं दीसं रे।
साहिब जगदीशं रे। है बिसवे बीसं रे।
बैठे सिर सीसं रे।। ४८।।
टार्‌या नहीं टलता रे। ज्यूं दीपक जलता रे।
बिन चरणौं चलता रे। ज्यूं नौका सलिता रे।
बहुरंगी साहिब फलता रे।। ४६।।
औह रूप विशाला रे। कुछ बृद्ध न बाला रे।
जहां मुकट न माला रे। जोगिया अबदाला रे।
औह नजर निहाला रे।। ५०।।
कोई पारिख पावै रे। निज ध्यान लगावै रे।

जो अनत न जावै रे। निज पद दरशावै रे।
फिर जूनि न आवै रे।। ५१।।
निर्गुण निःकांमी रे। साहिब निज धांमी रे।
अविगत घण नांमी रे। है समर्थ स्वांमी रे।
रटि आठौं जांमी रे।। ५२।।
औह मानिक जरदा रे। नजर्यौं नहीं परदा रे।
चाहै सो करदा रे। सब पीरा हरदा रे।
रीते सर भरदा रे।। ५३।।
है अविगत माली रे। खालिक बिन नहीं खाली रे।
जो तोरत है जम जाली रे। साहिब सतगुरु अबदाली रे।
हरि मूल फूल फल डाली रे।। ५४।।
याह बात अनूठी रे। औह पंथ अपूठी रे।
यह दुनिया झूठी रे। याह जम की लूटी रे।
अमृत नहीं घूटी रे।। ५५।।
याह दुनिया दूती रे। निशवासर सूती रे।
यौ बात बिगूती रे। याह कारी कूती रे।
जम मारे जूती रे।। ५६।।
याह दुनिया अंधी रे। समझै नहीं खंधी रे।
याह जम पै बंधी रे। सुन शब्द अनंदी रे।
मेटै दुःख दुंदी रे।। ५७।।
बूझै कोई महली रे। याह दुनिया गहली रे।
फल मांगै पहली रे। सेवा नहीं सहली रे।
सुन दुनी रबैली रे।। ५८।।
जहां धर्मराय दरबाना रे। उस दरगह जाना रे।
काश्यप सुत भाना रे। लख किरण तपाना रे।
संगी दिल दाना रे।। ५६।।
निज ज्ञान विचारो रे। यौह जन्म जु हारो रे।
मन मनसा मारो रे। सिर बोझा डारो रे।
फिर देह न धारो रे।। ६०।।
लादन कूँ म्हैंसा रे। परखन कूँ पैसा रे।
दिखलाऊँ कैसा रे। जैसे कूँ तैसा रे।
साहिब नहीं नैसा रे।। ६१।।
छलनी नहीं सूपं रे। औह अजब अनूपं रे।
निज गंध स्वरूपं रे। छाया नहीं धूपं रे।
कुछ रेख न रूपं रे।। ६२।।

जो होय सो होनी रे। इन्द्री गुण भूनी रे।
निर्गुण निरजूनी रे। याह तापौ धूनी रे।
सुन बक्ता मौनी रे।। ६३।।
छाडौ मन धोखा रे। पृथ्वी तज लोका रे।
क्या मुक्ता मोखा रे। औह साहिब नोखा रे।
लखि नैंन झरोखा रे।। ६४।।
चीन्हौं निज धर्मा रे। बाहर क्यूं भर्म्या रे।
पैठो निज घरमां रे। पावत पद मार्मा रे।
काटो गुण कर्मा रे।। ६५।।
दर्पण दिल मांहीं रे। औह दरशत नांहीं रे।
सतगुरु बलि जांहीं रे। जिन मर्म बतांहीं रे।
निज भेद लखांहीं रे।। ६६।।
कर नेम निवाजा रे। सुनि अनहद बाजा रे।
सब पूर्ण काजा रे। जहां अविगत राजा रे।
सुनि अरश अवाजा रे।। ६७।।
पूर्ण पद मुक्ता रे। रोक्या नहीं रुकता रे।
समझो यौह नुक्ता रे। जोख्या नहीं जुख्ता रे।
झोके जहां झुकता रे।। ६८।।
हलुवे से हलुवा रे। कोई शीश न तलुवा रे।
पकरै को पलुवा रे। अंजरी का जलुवा रे।
डूंगर और थलुवा रे।। ६६।।
बान्या निज बानिक रे। औह रतन अमानिक रे।
उड़ि जाय अचानक रे। पकर्या गुरु ध्यानक रे।
आया है जानिक रे।। ७०।।
क्रितम नहीं इच्छयं रे। नटुवा प्रपंचं रे।
नटनी कल नंचं रे। शिव विष्णु विरंचं रे।
कूरंभ और कंछं रे।। ७१।।
एक नटणी नांचै रे। कुछ भिन्न न बांचै रे।
मन परिया खांचै रे। कुतरी घट पांचैं रे।
जहां त्रिगुण आंचै रे।। ७२।।
औह साहिब बौरा रे। कलंगी सिर टौरा रे।
सेवत शिव गौरा रे। जहां कँमलं धौरा रे।
तहां उजल भौंरा रे।। ७३।।
पावै कोई लोझा रे। मीनी मग खोजा रे।
डारौ सिर बोझा रे। धरि ध्यान हनोजा रे।

त्रिसरैण निपोजा रे।। ७४।।
मींहीं मकतूलं रे। कुछ डाल न मूलं रे।
संशय नहीं शूलं रे। दूल्ह सिर दूलं रे।
रत्नौं का फूलं रे।। ७५।।
शून्य मंडल साजै रे। घट मांहि बिराजै रे।
जहां नौबत बाजै रे। तेरा विरद न लाजै रे।
घट मठ में गाजै रे।। ७६।।
महत्तत्त में डेरा रे। शून्य गगन बसेरा रे।
जहाँ साहिब मेरा रे। यौह कीन्ह नबेरा रे।
यहां बहुरि न फेरा रे।। ७७।।
निर्बंध निरंजन रे। साहिब दुःख भंजन रे।
सेवै दर गंजन रे। तालिब तन मंजन रे।
मौला लुक अंजन रे।। ७८।।
निर्बंध निरंतर रे। औह आदि रु अंतर रे।
कुछ चलै न जंत्र रे। सोहं सत्य मंत्र रे।
जानै कोई संत्र रे।। ७९।।
है साहिब साचा रे। सेवों सत्य वाचा रे।
यौह सेवक काचा रे। दिखलावै आंचा रे।
मिटता नहीं नांचा रे।। ८०।।
पैठो दिल अंदर रे। चढ़ना ब्रह्मरंध्र रे।
तहां ऊंची कंदर रे। जहां नूर के मंदिर रे।
मूर्ति एक सुन्दर रे।। ८१।।
शिव शक्ति तुम्हारी रे। जहां शुन्य अधारी रे।
तहां आदि कंवारी रे। एक अजब अटारी रे।
तहां अनहद तारी रे।। ८२।।
हम दीन्हा हेला रे। जहां गुरु न चेला रे।
तहां पुरुष अकेला रे। अनहद धुनि मेला रे।
निज शब्द सकेला रे।। ८३।।
निर्बंध अबादी रे। जहां आदि अनादी रे।
तहां अवचल गादी रे। तहां शून्य समाधी रे।
सेवा गुण राधी रे।। ८४।।
निर्गुण निज कंता रे। मेटे दुःख चिन्ता रे।
ब्रह्मण्ड अनंता रे। जिस पलक बसंता रे।
समर्थ गुणवंता रे।। ८५।।
औह अकल अजन्मां रे। मालिक हे मनमां रे।

बस्ती और बनमां रे। गरजत है घनमां रे।
प्रगट है जनमां रे।। ८६।।
औह अबिगत मीता रे। जिन आंरभ कीता रे।
तूं परख प्रीता रे। सब छाडि अनीता रे।
भज नाम रु सीता रे।। ८७।।
घन हर गरजावे रे। सो हुण बरषावै रे।
गुण लहरि समावे रे। ज्यूं का त्यूं पावै रे।
सत गुरु दरशावै रे।। ८८।।
जिन धारनि धारी रे। सो बारं बारी रे।
औह पुरुष न नारी रे। है शुन्य अधारी रे।
कादिर परिवारी रे।। ८६।।
कुदरत जिन कीन्ही रे। औह कादिर चीन्ही रे।
तिस मारग मीनी रे। करनीसब कीन्ही रे।
अब पकरि अधीनी रे।। ६०।।
औह योगी जरनां रे। रीते सर भरनां रे।
शंका नहीं डरनां रे। असतल नहीं घरनां रे।
औह बसै अधरनां रे।। ६१।।
आसन नहीं अस्तल रे। कर्ता नहीं कसतल रे।
खंथ्या नहीं बस्तल रे। महंगा नहीं सस्तल रे।
महबूबं हसतल रे।। ६२।।
बिन पंख उड़ंता रे। नहीं देह धरंता रे।
मालिक गुणवंता रे। औह खलक बसंता रे।
मेटै दुःख चिन्ता रे।। ६३।।
घट मठ से न्यारा रे। महत्तत्त पसारा रे।
कुछ बिंदु न पारा रे। सिरजै संसारा रे।
अविगत कर्तारा रे।। ६४।।
औह अकल उजागर रे। है सुख का सागर रे।
वरषै बैरागर रे। है निर्गुण नागर रे।
घट सिंह रु बाघर रे।। ६५।।
जो सब गुण साजै रे। पल मांहिं निवाजै रे।
सब पूर्ण काजै रे। घट मठ में साजै रे।
दर नौबत बाजै रे।। ६६।।
मकरी मुख तारा रे। यौह कीन्ह विचारा रे।
सुन शब्द हमारा रे। चढ़ि शुन्य अधारा रे।
भज रैरंकारा रे।। ६७।।

रैरं धुनि राता रे। सोहं पद माता रे।
लखि आवत जाता रे। औह आदि विधाता रे।
धुंनि सिन्धु समाता रे।। ९८।।
शुन्य मंडल खेलै रे। नौका कूँ पेलै रे।
हंसा कूँ बेलै रे। छाडो गुण फैले रे।
जाका नां लै लै रे।। ९९।।
है आदि अनादं रे। जहां विद्या न बाद रे।
रघुवंशी जादं रे। आया गुण साधं रे।
कर दूर पराधं रे।। १००।।
निर्गुण निजसारा रे। मध्य माहीं अरु न्यारा रे।
दिल में दीदारा रे। निज रूप अपारा रे।
दर शुन्य पसारा रे।। १०१।।
गरीबदास दरवानी रे। तन मन कुरबानी रे।
धन्य सतगुरु दानी रे। लखि बारह बानी रे।
ध्वज श्वेत निशानी रे।। १०२।।

अथ मूल ज्ञान

मूलबंध है ज्ञान हमारा, निहचल नीम धरी निरधारा।
कच्छ मच्छ कूरंभ कमाला, त ा चक्र का रूप विशाला।। १।।
धौल धरणि रोप्या अठ खंभा, ता पर लोक अनंत असंभा।
मीन नाद शक्ति मध्य राखी, मूल उचार होत है साखी।। २।।
शेष शक्ति भुज डंड अपारा, जा पर सकल रचे गैनारा।
एक रती रचना का रासा, शेष शीष पर सब का वासा।। ३।।
मीन चक्र है पंथ पिरानां, ता पर देख गुदा अस्थानां।
मूल ज्ञान गुरु देव लखावा, रिधि सिधि कला गणेश्वर रावा।। ४।।
ब्रह्मा नाद वेद विधि भारी, बैठे ध्यान धरैं ब्रह्मचारी।
ऊँ मूल मुक्ति का रासा, तहां वहां लीन पवन कर श्वासा।। ५।
नाभि चक्र नरहरी विशेषा, हरियं हेतं कला अनेका।
संपुट सैलं ध्यान समाना, हरि नारायण है अस्थाना।। ६।।
शिवपुर सिंध समूलं सेवा, हिरदै कँवल बसै महादेवा।
सोहं नाम अजपा जापं, जासे मिट है तीनूं तापं।। ७।।
कंठ कंवल कुरबानी काया, तामें अनंत रूप छवि माया।
नौरंग नौतत्त आवै जाई, अष्ट कँवल मध्य खेलै खाई।। ८।।
पांचौं मुद्रा भिन्न भिन्न भाषौं, तामें मूलज्ञान मधि राखौं।
सुरति कँवल का बूझि ठिकाना, द्वादस पर हमरा अस्थाना।। ९।।

ऐसा मूल ज्ञान गौहराऊँ, आदि अंत का भेद लखाऊँ।
दरसै परसै हिल मिल खेलै, आप तिरै औरन कूँ बेलै।। १०।।
विकट पंथ अब सुनौ हमारा, दो पर्वत के मध्य है धारा।
तिल प्रमाण जहां लगी किवारी, हलके जांही सुधां अंबारी।। ११।।
विकट पंथ विकट है गैला, दो पर्वत के मध्य है सैला।
शिखर सुमेर शुन्य कैलाशा, अगम पुरी का सुनि ले रासा।। १२।।
तिल प्रमाण में है त्रिवैनी, पल पल परबी है सुख चैनी।
गंगा जमुना मध्य सुरसती, जुमल मसत जहां खेलैं कुश्ती।। १३।।
विकट सिंधु विकटे असनाना, ब्रह्मादिक सनकादिक ध्याना।
सोलह संख योजन पर दरिया, जहां त्रिवैणी नीझर झरिया।। १४।।
यह तो मांन तलाई भाई, ता परि सुरति निसरनी लाई।
ब्रह्मरंध्र बिकटी दरवाजा, बड़े बड़े जोधा मुचि हैं राजा।। १५।।
अगर डोरि है मारग बांका, इच्छा बीज जरै सब टांका।
जहां मानसरोवर विह्ली अंशा, बिना चुंच मोती चुगि हंसा।। १६।।
द्वादश ऊपर द्रवन दमांमे, अनहद नाद घुरैं बौह नामें।
राग अनंत कुलाहल बानी, निरखि परखि सुनियों दिलदानी।। १७।।
दादर दीप सुनों दरबेशा, अजब कुलाहल होत हमेशा।
सत्तर पदम योजन विस्तारा, भिन्न भिन्न भेद कहूँ अनुसारा।। १८।।
जहां चजुर्भुजी हंस हैं भाई, षट सूरज रवि किरण तपाई।
चोबा चंदन अग्र निवासा, मधुकर भौंरा गंध सुवासा।। १६।।
लील द्वीप लीलंबर बाना, जप तप करणी पर कुरबांना।
जहां हंस जुगता नर जांही, अष्ट भुजा तन छावर पांही।। २०।।
अस्सी पदम योजन प्रमाना, लीलंबर का यौह उनमाना।
द्वादश सूरज तेज शरीरा, जहां बैठे अचल मुनी ऋषि धीरा।। २१।।
संख चक्र मुक्ताल मुकेशी, षोडश पदम जड़े सिरपोशी।
भौंर गुंजार केतकी वासा, पिंड न प्राण नहीं दम श्वासा।। २२।।
सुनि पीतंबर लोक पियारे, षोडश भुजा हंस पग धारे।
कौस्तुभ मणि मुकटौं पर माला, ऐसा अदभुत रूप विशाला।। २३।।
तीस भानु उजियारा अंगा, मधुरी बानी चाल बिहंगा।
अगर गंध गुलजारा गातं, देखो सनक सनंदन साथं।। २४।।
सौ योजन पदम पीतंबर पुरी बखाना,तहां वाहं हंस रहे सुरज्ञाना।
बावन चक्र मुकट समूला, अदभुत रूप देख नहीं भूला।। २५।।
बाजे बजैं सुहंगम सेरी, तेजपुंज की नाचै चेरी।
नृत्य निरंतर है अनरागी, मूल ज्ञान चीन्हौं बड़ भागी।। २६।।
सूक्ष्म सैल गैल अति बांकी, ब्रह्मरंध्र की खूली झांकी।

अमर भूमि अमर वाह नगरी, चीन्हौं हंसा मारग अगरी।। २७।।
पदम पुरी अब पारिख लीजे, सुनि हंसा निज ज्ञान पतीजे।
सौ भुज के जहां हंस रहाई, अगम ज्ञान सुनि सुधि बिसराई।। २८।।
सत्तर भान तेज उजियारा, पदम पुरी हंसा गुलजारा।
बौह विधि रास विलास हुरंभा, अधर धार यह ज्ञान अचंभा।। २६।।
सहंस पदम योजन परमाना, एता पदम पुरी व्याख्याना।
बिरजा नदी बहै अति गहरी, पचरंग धारा अति बहु लहरी।। ३०।।
अगम द्वीप अगमा पुर बानी, सहंस भुजा जहां हंस बिनानी।
लाख चक्र छत्र की छाया, सौ रवि सूरज तेज सवाया।। ३१।।
अष्टसिधि नवनिधि आगै दासी, अनहद बाजे रास विलासी।
मलयागिरी मकरंद भयंकर, जिन से काल डरै जम कंकर।। ३२।।
लाख पदम योजन प्रवाना, अगर पुरी सुन मूल ठिकाना।
विनोद पुरी की विधि है भारी, जहां सकल मुनी ब्रह्मा त्रिपुरारी।। ३३।।
सहंस मुखी ब्रह्मा विस्तारा, दुर्गुन भुजा ज्ञान की धारा।
सौ सौ पदम मुकट मणि धारी, ऐसे ब्रह्मा अनंत विचारी।। ३४।।
सिज्या भूमि रतन बौह शोभै, गण गंधर्व का तन मन लोभै।
अगर खौलि शोभै अति नीकी, ज्ञान अमान न कागज लीकी।। ३५।।
आनन्द पुरी का सुन अधिकारा,जहां इंद्र अनंत ज्ञान धूमारा।
सौ सौ संग उर्वशी साजैं, अगर बाण भर मार निवाजैं।। ३६।।
सौ करोर कोयल अरु मोरं, एक उर्वशी राग घमोरं।
सप्त सुरौं भरि गावै ऊँची, योग युक्ति सब जानैं कूँची।। ३७।।
अमर कच्छ पातरि है पतनी, निर्गुण ज्ञान ध्यान में रतनी।
लख चंदा लख सूर समूला, ऐसे जिन के हैं अस्थूला।। ३८।।
नकबेसरि बिंदी उजियारी, दामिनी दंत नूर चमकारी।
अगर बान की घटा हमेलं, नौ सत हार बने पचमेलं।। ३६।।
सूरज किरण केश बहुरंगी, अधर नाच है चाल बिहंगी।
सत्तर गागर मुकट जहूरा, राग छत्तीस होत स्वर पूरा।। ४०।।
बीना ताल पखावज पकरी, अनहद पुर की गावै जिकरी।
अटपटा राग परख नहीं आवै, सुनैं गुनैं विह्वल होय जावै।। ४१।।
भौंह लिलाट पलक कुर्बाना, मारत फिरैं अगर के बाना।
घट गजीन तन देह न काया, जैसे रागी राग सुनाया।। ४२।।
मधुरी बीन बजै स्वर बीना, ज्यूं दरिया में पैठै मीना।
पंछी पीछै खोज न पावै, ऐसे सतगुरु तत्त लखावै।। ४३।।
ऊँचे स्वर से गावै बानी, गण गंधर्व होवै गलतानी।
जैसे अलल पंख का गवना, ऐसे हुरंभा गावत भुवना।। ४४।।

रज बीरज जिन के नहीं दोऊ, पेट पीठ तन अंग न कोऊ।
शब्द सुदम श्वास नहीं जाके, ऐसे हुरंभा बानी भाषे।। ४५।।
इन्द्र कोटि छवि बांहां जोरी, आनंदपुर में खेलै होरी।
कौस्तुभ मणि मुक्ताहल मुकटं, तेजपुंज के चौंरा विकटं।। ४६।।
बिन ही घोरी केशर बरषै, उड़त अबीर गुलाल को निरखै।
गूंजै भँवर अति मच्या कुतूहल, प्रेम पिचर की झीनी भूहल।। ४७।।
लाख पदम योजन परमाणा, आनंदपुर का यौह उनमाना।
अगर मालवे दीप सुनीजे, शंभू देव रहै दिल दीजै।। ४८।।
जहां जटा जूट मुनिवर महमंता,अनगिन देव तास नहीं अंता।
ऋद्धि मुक्ति भंडार भरे है, गंधर्व संख कर जोरि खरे हैं।। ४६।।
झूंमी पलक शब्द में तारी, परलौ संख गई झक मारी।
संखौं शंकर योग दिवाना, आगै कहा कहूँ उनमाना।। ५०।।
गौरिज संगि विराजै पतनी, शंभू योग ध्यान में रतनी।
कौस्तुभ मणि है सकल शरीरा, सहंस पदम तन जड़े खमीरा।। ५१।।
कोटि पदम योजन प्रवाना, अगर मालवै द्वीप दिवाना।
शिव संगीत रहैं ब्रह्म ज्ञानी, अमर समाधि युगां युग ध्यानी।। ५२।।
निर्गुण पुरी वैकुण्ठ बिनानी, जहां विष्णुनाथ बैठे प्रवानी।
पदम ही रूप पदम ही ध्यानं, लखि परकाश कोटि शशि भानं।। ५३।।
वैकुण्ठ विकट पंथ है भाई, घनहर गरजै बौह गति छाई।
स्फटिक वर्ण गुलजार गलीचा, प्रेम नगर में प्रेम की कीचा।। ५४।।
योजन अरब पदम प्रवाना, वैकुण्ठ नगर सुनों अस्थाना।
मस्तान पुरी है भिरंगी लोकं, देखा देखी सुरति सपोखं।। ५५।।
जहां द्वंद वाद चरचा नहीं बानी, अमर कच्छ जहां हंस बिनानी।
घूमत रहैं घुमान दिवाने, चरचा परचा कछू न जाने।। ५६।।
टग टगा पुरी टगाई रोपै, धूमा धामी कछु न कोपै।
स्वर्ग बहिश्त जिनके नहीं आसा, कंद कपूर लिया तन वासा।। ५७।।
गहि गहि बानी शब्द निवासा, परम तत्त झिलमिल प्रकाशा।
बिन ही बोले कह समझावे, इच्छा मेटै शब्द मिलावै।। ५८।।
बिन ही बानी करै बिलासा,जिनके अष्ट कँवल नहीं श्वासा।
गति मति जिनकी लखी न जाई, रुंड मुंड मौले गति सांईं।। ५६।।
खरब पदम योजन प्रवाना, मस्तान पुरी का यह उनमाना।
सौ करोर पुर शेष पर साजै, अमर अचल मंदला बाजै।। ६०।।
मक्रतार मारग कहलावै, स्वर्ग चढ़ै पतालौ धावै।
नीम नगर पर चिन सत महला,सतगुरु बिना न पावै गैला।। ६१।।
भेदी संगि मिलै दिल दानी, जदि याह पावै अकथ कहानी।

प्रथम अन्न जल संयम राखै,योग लक्षण सब सतगुरु भाषै।। ६२।।
क्रिया नेम गनेश बखानौं, धोती नेती कर अस्थानौं।
अजरी बजरी बंधै बाई, द्वादश खैंचि पताल समाई।। ६३।।
बामा चरण गुदा में लावै, आसन इन्द्री मूल समावै।
दहना ऊपर अस्थिर राखै, दो स्वर खैंच पतालौं दाखै।। ६४।।
मेर डण्ड कूँ राखै सूधा, जाका कँवल न होवै मूंधा।
दम का दगड़ा मंजन मांजे, शुन्य का सुरमा अंजन आंजे।। ६५।।
राम रसायन फूल चुवावै, इला पिंगला फेर चलावै।
सुषमणि सुरति लगावै ध्यानं, चंद्र सूर मूंदे शशि भानं।। ६६।।
दो मुख की नागनि गहि ल्यावै, मेर डण्ड कूँ उलटि बहावै।
अमीधार बरषा रस मूलं, नागनि का नीचे सिर झूलं।। ६७।।
काली ऊन काल का बाना, जठराग्नि जीति स्वर ज्ञाना।
काली ऊन धोय बिन पानी, पेचस खोल्है होय अमानी।। ६८।।
क्षुध्या तृषा ताहि न व्यापै, निद्रा नींद काल नहीं झांपै।
हिरदे अजपा जाप जगावै, जैसे शेष सहंस फुनि गावै।। ६९।।
किलियं ऊँ हरियं सोहं, गुझ गायत्री से दिल धोव।
तुंही तुंही ररंकार रटि रसना, ऐसे त्रिकुटी महल में धसना।। ७०।।
पलक मूंद कर पल नहीं लावै, बामा खैंचे दहने धावै।
नाद बिंद कूँ उलटि चलावै, त्रिवैनी भाठी श्रवावै।। ७१।।
पीवै अमृत लगै खुमारी, दो दल अंदर खुलै किवारी।
खैंचे बान गगन कूँ धावै, पैठि पताल शेष गहि ल्यावै।। ७२।।
कच्छ मच्छ कूरंभ उडानी, शेष गगन धरती तिर जानी।
अकल अंचभा मोहि अंदेशा, कौन युक्ति गहि ल्याये शेषा।। ७३।।
सतगुरु एता खेल दिखाया, बिन कुर अंबर पारी काया।
सुरति बान कमान चढ़ाई, घुडला ज्ञान पीड़ कर ल्याई।। ७४।।
दशौं दिशा कूदे मैदाना, चंद सूर एकै घर आना।
अगर मूल में फूल फुहारा, जहां वहां गंग सहंस मुख धारा।। ७५।।
नक सरवर पर गिरवर भारी, भौंर गुफा में लागी तारी।
अखंड मंडले करो पियाना, ता पर है योजन अस्थाना।। ७६।।
सुरति कँवल कूँ बूझि विचारो, ता आगे नीके पग धारो।
सुरति कँवल सतगुरु है भाई, जिन अक्षय वृक्ष की राह बताई।। ७७।।
समाधान में सुरति समोई, दौना मरुवा फूले दोई।
दौना मरुवा बाग मंझारा, फूल चमेली न्यारा न्यारा।। ७८।।
राय चमेली अगमी रासा, गगन मंडल में बाग अकाशा।
सूरज मुखी हजारा फूले, सुरति कमंद के बांधे झूले।। ७९।।

कमल केतकी बहु विधि मौरा, बिन पंखौं के सूंघै भौंरा।
हाल हजूर निकट है नेरा, देखो जन्म सिराय है तेरा।। ८०।।
दस लख पंथ शेष के आगे, पंथी को केहि दगरे लागे।
तीस पंथ टोडी हैं भाई, जैसे सरल खिजूर समाई।। ८१।।
मुक्ति पंथ का कहूँ संदेशा, जाका ध्यान धरत हैं शेषा।
अग्र डोरि एक मारग झीना, ता पर अक्षर धाम प्रवीना।। ८२।।
मक्रतार है मारग धीरा, अदली पुरुष खवास कबीरा।
जहां घाट बाट नहीं अलग अलहदा, सूक्ष्म रूप शेष सिर रहदा।। ८३।।
दोहा :-गरीब, लख योजन पर लख है, लख योजन पर लख।
सहंस इक्कीस अस्तलपुरी, कोई न चढ़ता सक्क।। ८४।।
चतुर्भुजी है रूप हमारा, अष्ट भुजी अनभय पद सारा।
सहंस भुजा सुर ज्ञानी गावै, मूल ज्ञान कोई बिरले पावै।। ८५।।
मुग्ध नरा क्या कहै कहानी, मूल ज्ञान की राह न जानी।
मूल ज्ञान ऐसा गोहराऊँ, सुरति कँवल धरि हदफ उड़ाऊँ।। ८६।।
सौ करोरि चक्र एक तनियां, कैसे ध्यान धरत हैं मुनियां।
सौ सौ करोर पदम प्रकाशा, अगम ध्यान कहां पावै रासा।। ८७।।
सौ सौ करोर संख सुर भेरी, अनभै मालनि गावै चेरी।
सौ सौ करोर पखावज बाजै, अदल निसाफ फजल घरि साजै।। ८८।।
सौ सौ कोटि मंजीरे महली, धुर की बात कहै कोई सैली।
सौ करोर मुरली मुख टेरा, एक मथुरा में आया चेरा।। ८९।।
राम कृष्ण सतगुरु सहजादे, भक्ति काज यौं भये पियादे।
सौ करोर झालर दरियाई, मुकित मंजीरे बाजै भाई।। ९०।।
द्रवन धूंम अगमी गढ़ बंका, सौ करोर मधुरा और मक्का।
संख भुजा सैलान शरीरा, सोहं वेदी रची कबीरा।। ९१।।
कहां पुरुष का कहूँ बयाना अक्षय वृक्ष हमरा अस्थाना।
संख पदम झिलमिल उजियारा, अमर कंद फल करैं अहारा।। ९२।।
दोहा :-गरीब, जै जै जै करुणामई, जै जै जै जगदीश।
जै जै जै तूं जतगुरु, पूर्ण बिसवे बीस।। ९३।।
संख भान कौसति मणि केरा, कहां बरणता बरणै चेरा।
जगर मगर झिलमिल बहु झयांहीं, घाट बाट कुछ पावै नाहीं।। ९४।।
परमानंद पुरुष की माया, अनंत लोक जिन नाच नचाया।
अविगत सबगत साजै तोही, डेरे बंध कहे निरमोही।। ९५।।
विधि संयोग न पावै कोई, जैसे का तैसा है सोई।
लघु दीरघ कछु कह्या न जाई, वृक्ष बीज में रह्या समाई।। ९६।।
मूल शुन्य कुरंभ बसेरा, स्वाद शुन्य ब्रह्मा का डेरा।

नाभि शुन्य में है नरहरी, मन मनसा दो दीपक धरी।। ६७।।
हृदय शुन्य शिव शक्ति सेवा, कंठ शुन्य का सुन ले भेवा।
नौ तत्त नाद रहै कंठ मांहीं, स्वप्न सुषुप्ति जागृत झयांहीं।। ६८।।
तुरिया पद की खबरि न पावै,जुगन जुगन जीव योनी आवै।
तुरिया शून्य में तालिब तोरा, तहां वहां हंसा लावो डोरा।। ६६।।
भँवर शून्य में भाठी सरवै, संख कला झिलमिल छबि दरवै।
कुलफ शून्य कलधूत विराजै, घट बिनसे महतत्व ही साजै।। १००।।
नौं आकार गये कहां भाई, तन छूटे मन कहां समाई।
ज्यूं सिंधु झाल भौंर और भौंरी, बुद बुद झाग फील बिलौरी।। १०१।।
काई अकारण भया शिवाला, नौ आकार बंध्या गुण पाला।
सिंध लहरि उतपति होय आवै, इनमें मृतक को कहलावै।। १०२।।
घट मठ मरै मुक्ति नहीं पावै, महतत्त चीन्हे शब्द समावै।
महतत्त मूलसार है भाई, तन छूटे मन तहां समाई।। १०३।।
महतत्त बाहरि भीतरि गाजैं, शिष्टाचार मध्य तिस साजै।
महतत्त मौला रूप मुरारी, वार पार नांहीं ब्रह्मचारी।। १०४।।
महतत्त मिलै तो मौला पावै, बिन महतत्त मौला हाथ न आवै।
महतत्त रूप शून्य है भाई, मौला तेजपुंज पद झूयांई।। १०५।।
महतत्त शून्य तखत है भाई, जा पर मौला आसन लाई।
मन माया महतत्त की खानी, उत्पत्ति परलौ है रजधानी।। १०६।।
नौ तत्त लिंग स्वरूप शरीरा,मन माया का यौही खमीरा।
कीड़ी कुंजर और औतारा, नौतत्त के का सकल पसारा।। १०७।।
नाद बिंदु और काया माया, नौ तत्त योनी संकट आया।
नौ तत्त बीज वृक्ष है मौला, अनंत लोक में दुंदर रौला।। १०८।।
सकल जूनि में नौ तत्त नागा, पांच तत्त का पहिरै बागा।
बीज वृक्ष का कह्या विचारा, समझै गुनी मुनी विधि भारा।। १०६।।
च्यार मुक्ति नौ तत्त है भाई, सप्तपुरी का राज कमाई।
स्वर्ग नरक वैकुंठ बिलासा, नौ तत्त के की झूठी आसा।। ११०।।
पांच तत्त नौ तत्त किस काजा, जिब लग लख्या न अविगत राजा।
अक्षय वृक्ष है धाम हमारा, सोहं वेदी मूल उचारा।। १११।।
मूल मक्रतार हम पाया, सहजे पिंड धरत हैं काया।
इच्छा बीज नहीं कछु आसा, युग युग खेलैं भक्ति विलासा।। ११२।।
मूल ज्ञान है अकथ कहानी, राज पाट झूठी रजधानी।
आदि अंत है अंत है मूल संदेशा, पूछो नारद शुकदे शेषा।। ११३।।
नीर क्षीर हम बहु विधि छान्या सतगुरु मिल्या कबीर दिवाना।
भगल विद्या हम कूँ बतलाई, अरश कुरस कुछ पड़दा नाहीं।। ११४।।

नैंन बैंन और सैंन शरीरा, आदि अंत और मध्य कबीरा।
जिंदा रूप जूनि नहीं धारै, त्रिकुटी आसन रहै हमारै।। ११५।।
छत्र श्वेत सेज गुलजारा, अविगत रूप वर्ण से न्यारा।
धरणि दुलीचे बैठे आई, ब्यौमी पैर अंग नहीं लाई।। ११६।।
गगन मंडल कूँ करे पयाना, जाय रहै अपने अस्थाना।
दम देवल में सुरति शरीरं, अक्षय वृक्ष मिल रह्या कबीरं।। ११७।।
नगद ज्ञान जिनसी सुनि भाई, बीज वृक्ष की थाह बताई।
सकल शून्य में ताना तानैं, नीर क्षीर कूँ या विधि छानैं।। ११८।।
अलख पलक में हैं सरबंगी, बाहिर भीतर अचल अभंगी।। ११६।।
दोहाः–गरीब, सुरति कँवल की डोरि पर, अक्षै वृक्ष विस्तार।
शेष सहंस मुख रटत हैं, शीश चक्र शिश मार।। १२०।।
रतन सिंधु रतनौं की खानी, चक्र सुदर्शन शंख समानी।। १२१।।
दोहाः–गरीब, गुण इंद्री अरु बीज विधि, कहि समुझाई तोहि।
पारस पद से परसते, कंचन होवै लोह।। १२२।।
जे तूं संत सुजान सयाना, अक्षय वृक्ष कूँ करो पियाना।
भिन्न भिन्न भेद तेहि से भाषा, ऊपर मूल तले कूँ शाखा।। १२३।।
भिन्न भिन्न भेद कहूँ गौहराई, दहुँ दिश दौंना मरुवा छाई।
कोटि भान एक फूल फुहारा, राय चमेली मध्य विस्तारा।। १२४।।
दौंना मरुवा दीर्घ देशा, सत्य कर मानों शब्द संदेशा।
सत्य वर्ग फूल गुलजारा नीके, आदि अंत हैं जीवन जीके।। १२५।।
लील चक्र लीली धज धारा, गगन मंडल छाये गैंनारा।
स्वर्ग समूल पुष्प बरषाहीं, दौंना मरुवा झुकि झुकि आहीं।। १२६।।
सुवर्ण कलश अर्श में साजे, सतगुरु मिलैं तो बेग निवाजैं।
बूठे की बाट बटाऊ जानै, जो कोई लावै चोट निशानै।। १२७।।
पक्षी खोज मीन मग मौला, रक्त न पीत न काला धौला।
अगम ध्यान धरि शुन्य में पैठे, अलल रूप सिद्ध आसन बैठे।। १२८।।
उनमुनि भौंरी भौंर उड़ावै, पक्षी खोज नजरि जब आवै।
मारग मीन मक्र मुखतारा, देखो हंसा रूप हमारा।। १२६।।
जित से बिछर्‍या तहां ले जाऊँ, उलट पंथ की राह लखाऊँ।। १३०।।
दोहाः– योनी संकट मेट हूँ, शब्द संदेशा दीन।
दासगरीब अमरपुरी, शब्द सिंध ल्यौलीन।। १३१।।

अथ ब्रह्म वेदी

ज्ञान सागर अति उजागर, निर्विकार निरंजनं।
ब्रह्म ज्ञानी महा ध्यानी, सत्य सुकृत दुख भंजनं।। १।।
मूल चक्र गणेश वासा, रक्त वर्ण जहां जानिये।
किलियं जाप कुलीन तज सब, शब्द हमारा मानिये।। २।।
स्वाद चक्र ब्रह्मादि वासा, जहां सावित्री ब्रह्मा रहै।
ॐ जाप जपंत हंसा, ज्ञान योग सतगुरु कहै।। ३।।
नाभ कँवल में विष्णु विश्वम्भर, जहां लक्ष्मी संग बास है।
हरियं जाप जपंत हंसा, जानत बिरला दास है।। ४।।
हिरदे कँवल महादेव देवं, सती पार्वती संग है।
सोहं जाप जपंत हंसा, ज्ञान योग भल रंग है।। ५।।
कंठ कँवल में बसै अविद्या, ज्ञान ध्यान बुद्धि नास हीं।
लील चक्र मध्य काल कर्मं, आवत दम कूँ फास हीं।। ६।।
त्रिकुटी कँवल परमहंस पूर्ण, सतगुरु समरथ आप हैं।
मन पवना सम सिंध मेलो, सुरति निरत का जाप हैं।। ७।।
सहंस कँवल दल आप साहिब, ज्यौं फूलन मध्य गंध है।
पूर रह्या जगदीश योगी, सत्य समरथ निरबंध है।। ८।।
मीनी खोज हनोज हरदम, उलटद पंथ की बाट है।
इला पिंगुला सुष्मण खोजो, चल हंसा औघट घाट है।। ९।।
ऐसा योग वियोग वरणौं, जो शंकर नैं चित्त धर्‌या।
कुंभक रेचक द्वादश पलटे, काल कर्म तिस तैं डर्‌या।। १०।।
शुन्य सिंहासन अमर आसन, अलख पुरुष निरबान है।
अति ल्यौलीन बेदीन मालिक, कादिर कूँ कुरबान है।। ११।।
है निरसिंध अबंध अविगत, कोटि वैकुण्ठ नख रूप है।
अपरम पार दीदार दर्शन, ऐसा अजब अनूप है।। १२।।
घुरै निशान अखंड धुनि सुनि, सोहं वेदी गाईये।
बाजे नाद अगाध अग हैं, जहां ले मन ठहराईये।। १३।।
सुरति निरति मन पवन पलटै, बंकनाल सम कीजिये।
श्रवै फूल असूल अस्थिर, अमीं महारस पीजिये।। १४।।
सप्तपुरी मेरडंड खोजो, मन मनसा गहि राखिये।
उड़ि है भँवर अकाश गवनं, पांच पचीसौं नाखिये।। १५।।
गगनि मंडल की सैल कर ले, बहुरि न ऐसा दाव है।
चल हंसा परलोक पठाऊँ, भवसागर नहीं आव है।। १६।।
कंद्रप जीत उदीत योगी, षट करमी यौह खेल है।
अनभय मालनि हार गूंदै, सुरति निरति का मेल है।। १७।।

सोहं जाप अथाप थरपै, त्रिकुटी संजम धुनि लगै।
मारसरोवर न्हान हंसा, गंग सहंस मुख जित बगै।। १८।।
कालंद्री कुरबान कादर, अविगत मूरति खूब है।
छत्र श्वेत विशाल लोयन, गलताना महबूब है।। १९।।
दिल अंदर दीदार दर्शन, बाहिर अंत न जाईये।
काया माया कहां बपरी, तन मन शीश चढ़ाईये।। २०।।
अविगत आदि जुगादि योगी, सत्य पुरुष ल्यौलीन है।
गगनि मंडल गलतान गैबी, जाति अजाति बेदीन है।। २१।।
सुखसागर रतनागर निर्भय, बिन मुख बानी गावही।
बिन अकार अजोख निर्मल, दृष्टि मुष्टि नहीं आवही।। २२।।
झिलमिल नूर जहूर जोती, कोटि पदम उजियार है।
उलटै नैंन बेसुंनि विस्तर, जहां तहां दीदार है।। २३।।
अष्ट कँवल दल सकल रमता, त्रिकुटी कँवल मध्य निरख हीं।
श्वेत धुजा शुन्य गुमट आगे, पंच रंग झंडे फरक हीं।। २४।।
शुन्य मंडल सत्य लोक चलिये, नौदर मूंद बेसुंनि है।
बिन चिशम्यौं एक बिंब देख्या, बिन श्रवन सुनि धुंन है।। २५।।
चरण कंवल में हंस रहते, बौहरंगी बरियाम है।
सूक्ष्म मूरति श्याम सूरति, अचल अभंगी राम है।। २६।।
नौ स्वर बंधि निशंक खेलो, दसमें दर मुख मूल है।
माली न कूप अनूप सजनी, बिन बेली का फूल है।। २७।।
स्वास उसास पवन कूँ पलटै, नाग फुनी कूँ भूंच है।
सुरति निरति का बांध बेरा, गगन मंडल कूँ कूँच है।। २८।।
सुनि ले योग वियोग हंसा, शब्द महल कूँ सिद्ध करो।
यौह गुरुज्ञान विज्ञान बानी, जीवत ही जग में मरो।। २९।।
उज्जल हिरंबर श्वेत भौरा, अक्षय वृक्ष सत्य बाग है।
जीतो काल विशाल सोहं, तरतीबर वैराग है।। ३०।।
मनसा नारी कर पनिहारी, खाखी मन जहां मालिया।
कुंभक काया बाग लगाया, फूले हैं फूल विशालिया।। ३१।।
कच्छ मच्छ कूरंभ धौलं, शेष सहंस फुनि गाव हीं।
नारदमुनि से रटैं निश दिन, ब्रह्मा पार न पाव हीं।। ३२।।
शंभु योग वियोग साध्या, अचल अडिग समाधि है।
अविगत की गति नहीं जानी, लीला अगम अगाध है।। ३३।।
सनकादिक और सिद्ध चौरासी, ध्यान धरत हैं तास का।
चौबीसौं अवतार जपत हैं, परमहंस प्रकाश का।। ३४।।
सहंस अठासी और तेतीसौं, सूरज चंद चिराग हैं।

धर अंबर धरनी धर रटते, अविगत अचल विहाग हैं।। ३५।।
सुरनर मुनिजन सिद्ध और साधक, पारब्रह्म कूँ रटत हैं।
घर घर मंगलचार चौरी, ज्ञान योग जहां बटत हैं।। ३६।।
चित्र गुप्त धर्मराय गावैं, आदि माया ऊँकार है।
कोटि सरस्वती लाप करत हैं, ऐसा ब्रह्म दरबार है।। ३७।।
कामधेनु कल्पवृक्ष जाकै, इन्द्र अनंत सुर भरत हैं।
पार्वती कर जोर लक्ष्मी, सावित्री शोभा करत हैं।। ३८।।
गंधर्व ज्ञानी और मुनि ध्यानी, पांचौं तत्त खवास हैं।
त्रिगुण तीन बौहरंग बाजी, कोई जन बिरले दास हैं।। ३९।।
ध्रू प्रहलाद अगाध अज्ञ हैं, जनक विदेही जोर हैं।
चले बिवान निदान बीत्या, धर्मराय की बंध तोर हैं।। ४०।।
गोरख दत्त जुगादि योगी, नाम जलंधर लीजिये।
भरथरि गोपीचंद सीझे, ऐसी दीक्षा दीजिये।। ४१।।
सुलतानी बाजीद फरीदा, पीपा परचे पाईया।
देवल फेर्या गोप गुसांई, नामा की छान छिवाईया।। ४२।।
छान छिवाई गऊ जिवाई, गनिका चढ़ी बिवान में।
सदना बकरे कूँ मत मारै, पौंहचे आन निदान में।। ४३।।
अजामेल से अधम उधारे, पतित पावन विरद तास है।
केशव आन भया बनजारा, षट दल कीन्ही हांस है।। ४४।।
धन्ना भक्त का खेत निपाया, माधो दई सिकलात है।
पंडा पाव बुझाया सतगुरु, जगन्नाथ की बात है।। ४५।।
भक्ति हेत केशव बनजारा, संग रैदास कमाल थे।
हे हरि हे हरि होती आई, गूंनि छई और पाल थे।। ४६।।
गैबी ख्याल विशाल सतगुरु, अचल दिगंबर थीर है।
भक्ति हेत काया धर आये, अविगत सत्य कबीर है।। ४७।।
नानक दादू अगम अगाधू, तिरी जिहाज खेवट सही।
सुख सागर के हंस आये, भक्ति हिरम्बर उर धरी।। ४८।।
कोटि भानु प्रकाश पूर्ण, रूंम रूंम की लार है।
अचल अभंगी हैं सति संगी, अविगत का दीदार है।। ४९।।
धन्य सतगुरु उपदेश देवा, चौरासी भ्रम मेट हीं।
तेज पुंज तन देह धरि करि, इस विधि हम कूँ भेट हीं।। ५०।।
शब्द निवास अकाश वाणी, यौह सतगुरु का रूप है।
चन्द सूर नहीं पवन पानी, ना जहां छाया धूप है।। ५१।।
रहता रमता राम साहिब, अविगत अलह अलेख है।
भूले पंथ विटंब वादी, कुल का खाविंद एक है।। ५२।।

रूंम रूमं में जाप जप ले, अष्ट कँवल दल मेल है।
सुरति निरति कूँ कँवल पठवौ, जहां दीपक बिन तेल है।। ५३।।
हरदम खोज हनोज हाजिर, त्रिवैणी के तीर हैं।
दास गरीब तबीब सतगुरु, बंदीछोड कबीर हैं।। ५४।।

अथ ब्रह्म कला

मूल कँवल कूँ दृढ़ कर बांधो, रक्त वर्ण रंग लागे।
चित्र फंखड़ी बसे गणेशा, किलियं शब्द बिहागे।। १।।
स्वाद चक्र ब्रह्मा का वासा, अष्ट फंखरी मेलं।
ऊँ जाप जपे निशि वासरि, ज्ञान बुद्धि का खेलं।। २।।
नाभ कँवल में विष्णु विश्वंभर, दस दल का जहां दीपं।
हरिपं जाप हिरंबर हीरा, लक्ष्मी सहित समीपं।। ३।।
हिरदै कँवल महादेव कहिये, द्वादश फंखरी देवं।
सोहं जाप सहंसर मेला, कोई जन जानै भेवं।। ४।।
सोलह फंखरी कण्ठ कँवल है, जहां अविद्या वासा।
काल चक्र आवत दम हेरे, नहीं ज्ञान प्रकाशा।। ५।।
त्रिकुटी कँवल तो दो दल बरनौं, परम हंस प्रवाना।
सुनि सतगुरु का धाम बताऊँ, मिटि है आवन जाना।। ६।।
गुझ बीरज एक मंत्र वरणौं, सुरति निरति का जापं।
कुंभक रेचक द्वादश पलटे, सो योगी है आपं।। ७।।
सहंस कँवल दल अगम अनाहद, हंस परमहंस का धामं।
मानसरोवर मुक्ता मोती, जहां करो विश्रामं।। ८।।
पवन डंड शुन्य चकरी मेलं, सुनि ले योग वियोगं।
कंद्रप जीत उदीत ध्यान धर, अमी महारस भोगं।। ६।।
मूल कँवल की मुद्रा बांधो, बटुवा बिटंब न लीजै।
गोला ज्ञान भभूति रमावो, सुषमण आसन कीजै।। १०।।
सहंस इकीसौं उलटि अपूठे, नौ ग्यारह परि द्वारं।
सोलह कला संपूर्ण दरसै, उनमन योग अपारं ।। ११।।
नाभ कँवल में पवन समानी, फिर दो दल की घाटी।
द्वादश अंगुल सीमी सिद्धा, सोलह अंगुल फाटी।। १२।।
जो हम कहैं करै जे कोई, मन धारै सो देखै।
लक्षण योग लखावै निर्गुण, बहुरि धरै नहीं भेषै।। १३।।
द्वादश उलटे सोलह सिंधं, बनि जल बिंब भियासा।
त्रिकुटी पैठि सहंस दल खोजै, झिलमिल नूर निवासा।। १४।।
मेरडंड का मारग बोलौं, बंक नालि दिखलाऊँ।

जौंरा काल नहीं जहां दोऊ, तहां हंस ले जाऊँ।। १५।।
मोष न दोष नहीं जहां हंसा, स्वर्ग बहिश्त नहीं साजा।
बेगमपुर की सैल कराऊँ, अविगत नगरी राजा।। १६।।
पांच पचीसौं तीन्यू जीतै, दस आठौं पर अटकै।
तेरह ऊपरि शूली गाडै, उरध कपाली लटकै।। १७।।
ऐसा योग वियोग बताऊँ, शंकर गोरख कीन्हा।
नागफुनी से काया पलटै, सो हम सतगुरु दीन्हा।। १८।।
जुमल मस्त कूँ द्वारे बांधै, आगे पड़ै न चारा।
अंकुस ज्ञान महावत राखै, ना होय पद से न्यारा।। १६।।
षट करमों से न्यारा अविचल, मुद्रा पांच पिछानै।
जाकै ऊपर शब्द महल है, अरशी तंबू तांनै।। २०।।
नौ दर मूंदि निरंतर खेलो, गंगन मंडल में डेरा।
याह रहनी से साहिब भेटै, जे मन साबित तेरा।। २१।।
उलटि कपाली शुन्य में ताली, बिन पग चरनौं चढ़ि है।
भगलीगर कूँ भय नहीं ब्यापै, भगल विद्या से उड़ि है।। २२।।
ब्रह्मण्ड इकीसौं और चौबीसौं, ये नहीं सिद्धा थीरं।
चौसठ योगनि मन की दासी, बंधि ले बावन बीरं।। २३।।
पकड़ि बिली कूँ उलटि तिली कूँ, कुत्ता निकटि न आवै।
शून्य शिखर की सैल करो रे, गंगन मंडल चढ़ि जावै।। २४।।
चित्त चक्रत चकचूंधरि बसती, सूझै दिवस न रातं।
संसा सर्प डसत है नगरी, भगल गारडु नाथं।। २५।।
गन गंधर्व सिद्ध मुनिवर खाये, नाग दौन निधि रंगी।
भगलीगर के मंत्र ऊबरे, अचल अमर सत्संगी।। २६।।
चौदह रतन मथौ मन माधो, याह करनी कसि लीजे।
महुवा नाम बिना बेली फल, अमृत प्याला पीजे।। २७।।
सर्प शीश पर दादुर बैठा, बुगले कूँ मीन चरावै।
चीते का मिरगा रखवाला, बरवै राग सुनावै।। २८।।
माखी की मकड़ी छुछिहारी, चींटी हसती खाया।
शारदूल सुसे से भाग्या, सतगुरु भेद लखया।। २६।।
सुरह गऊ वन सिंह चरावै, अजा भेड़िया मार्या।
तीतर कूँ तो बाज गिरास्या, किन्हें जन खोज विचार्या।। ३०।।
माखन महीं गुजरिया बेची, फोर दई तन मटकी।
मन मोहन मथुरा का वासी, राम रसायन अटकी।। ३१।।
यौह भू मंडल बारा भोरा, भेद कहूँ बृजबट की।
संख कन्हैया संख गोपिका, त्रिवैनी के तट की।। ३२।।

भूल परी भवसागर आई, मन रह्या मोहन मांहीं।
मुरली टेर सुनी दूलह की, दध मटकी फोर गवाहीं।। ३३।।
घरौं लरैगी सास सखी री, और ननदी को भैया।
कांठै खरी गुजरिया कूकै, ल्यारे मलहा नैया।। ३४।।
गहरा समंद बली नहीं लागै, कैसे ल्याऊँ नौका।
भँवर परत भै मानत हंसा, गहरा सरवर औखा।। ३५।।
मैं दधि बेचन गई सखी री, मन मोहन कूँ लूटी।
मुरली मधुर अधर धुनि मोही, सास नणद से छूटी।। ३६।।
दधि का मोल देत हैं हम कूँ, मटकी का नहीं लेखा।
तुम्हरै भी घर तांगा तुरसी, देख्या कान्हा देख्या।। ३७।।
शून्य शिखर में सूरति नगरी, जहां मुझ कान्ह बुलावै।
अजब रंगीला निर्गुण लीला, मधुरे बैंन सुनावै।। ३८।।
गगनि हमारे बाजे बाजै, नौ दस में पर ध्यानं।
मानसरोवर हंस हिरंबर, सुखसागर अस्नानं।। ३६।।
त्रतीजन पर तारी लागी, तन खोजे मन पाया।
बाय बिंद उलटि ब्रह्म ज्ञानी, निज मन घर में आया।। ४०।।
निज मन की है निरभै नगरी, संख कला शशि भाना।
दोजख बहिश्त नहीं जहां दोऊ, पाया पद निरबाना।। ४१।।
शून्य समाधि अगाध अगोचर, मुनिवर महल न पावैं।
शिव शंकर से द्वारे ठाढे, नेति नेति यश गावैं।। ४२।।
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, शेष सहंस फुनि गावै।
विष्णु बिश्वंभर भक्ति हिरंबर, ररंकार धुनि ध्यावै।। ४३।।
ररंकार निज मूल मंत्र है, जाप अजपा सोई।
मूल चक्र और सहंस कँवल दल, पूर रह्या निरमोही।। ४४।।
राम रहीम करीमा केशो, अलह अलेख अनाथा।
बाजीगर करतार विश्वंभर, जामें भिन्न न भांता।। ४५।।
बेचगूंनि चिन्तामणि स्वामी, मौले मगन मुरारी।
साहिब समरथ चोखा अमृत, रहता शून्य अधारी।। ४६।।
निर्गुण सरगुण दहूँ से न्यारा, गगन मंडल ग लतानं।
निर्गुण कहूँ तो गुण किन्ह कीने, सरगुण कहूँ तो हानं।। ४७।।
निर्गुण सरगुण से है न्यारा, शब्द अतीत अमोलं।
निर्गुण मन माया ब्रह्म ज्ञानी, सरगुण काया खोलं।। ४८।।
केते सुर नर मुनि जन अटके, धर निर्गुण का ध्यानं।
कथा कीर्तन गावन ध्यावन, निर्गुण सरगुण हानं।। ४६।।
मूल मंत्र का भेद लखाऊँ, जिन निर्गुण सर्गुण कीन्ह्या।

दोहूँ से न्यारा शब्द संनेही, सो किन्हे बिरले चीन्ह्या।। ५०।।
सूक्ष्म लीन निरंतर निर्भय, पूर्ण है सर्व देशं।
तोल मोल कीमत नहीं जाकी, ना कुछ वर्ण न भेषं।। ५१।।
निज गलतान अनूप अनाहद, दृष्टि मुष्टि से न्यारा।
अडोल अबोल अछेद अभेदं, ना हलका नहीं भारा।। ५२।।
अविगत नगरी पद निर्बानं, जहां हम ध्यान समोया।
दासगरीब कबीर मेहर से, पारस मिल पलट्या लोहा।। ५३।।

अथ पद हंसावली

परमात्म नेहा रे, हंसा मेरे देह विदेहा रे।
याह झूठी काया रे, हंसा मेरे भ्रम भुलाया रे।। १।।
यामै पांच ठगुवा रे, हंसा चल बाट बटुवा रे।
यामै त्रिगुण तानां रे, हंसा तूं भ्रम भुलाना रे।। २।।
यौह मन बौरा रे, हंसा मेरे डार सिंधौरा रे।
यामै पांच पचीसौं रे, हंसा मेरे नौ चौबीसौं रे।। ३।।
यौह भ्रम भदुवा रे, हंसा संग कौन के जऊवा रे।
याह काची काया रे, हंसा याह त्रिगुण माया रे।। ४।।
यौह खेल जुवारी रे, हंसा तैं बाजी हारी रे।
यौह जंत्र न पावै रे, हंसा मेरे मंत्र न ध्यावै रे।। ५।।
यौह काचा कुंभा रे, हंसा यामै हैं अठ खंभा रे।
मंत्र का चारा रे, हंसा यामै बहुत पसारा रे।। ६।।
दस सहंस जो नारी रे, हंसा यामैं सहंस विचारी रे।
बत्तीस बिलोका रे, हंसा यामैं नौ परलोका रे।। ७।।
जामैं तीन गवनियां रे, हंसा चीन्हौं सुष्मणियां रे।
यौह मांस का पिण्डा रे, हंसा यौह चतुर दल अंडा रे।। ८।।
यौह हाड का चोला रे, हंसा मेरे चाम का पोला रे।
यामें रग नस नादं रे, हंसा बहु वाद विवादं रे।। ९।।
यामें काम कसाई रे, हंसा मेरे करद चलाई रे।
मद मोह मुवासी रे, हंसा मेरे लोभ गिरासी रे।। १०।।
क्रोध कटुवा रे, हंसा इस भ्रम भुलऊवा रे।
बपदेश वियोगा रे, हंसा यौह झूठा भोगा रे।। ११।।
झूठा कुल कर्मा रे, हंसा बूझा निज धर्मा रे।
संसार दिवाना रे, हंसा यौह मृग जल जान्या रे।। १२।।
यौह जल के सा ओरा रे, हंसा तुम छोडो धोरा रे।
यामें रहनि तुम्हारी रे, हंसा चीन्हौं शुन्य अधारी रे।। १३।।
यौह काम का मंदला रे, हंसा मेरे चाम का संदला रे।

यौह जूनि का जामा रे, हंसा भूले हरि नामा रे।। १४।।
मन मकनां हसती रे, हंसा याह ऊजड़ बसती रे।
यामें कुलफ जड़ाई रे, हंसा मेरे सुरंग लगाई रे।। १५।।

दोहा :-गरीब, याह कल कूंची जानि ले, सतगुरु सैंन संभार।
घट में औघट घाट है, आवागवन निवार।। १६।।

सुनि मूल का थाना रे, हंसा है गणेश दिवाना रे।
जहां चतुर फंखरिया रे, हंसा मेरे लाल नगरिया रे।। १७।।
जहां स्वाद का सीना रे, हंसा जहां ब्रह्म आधीना रे।
सुन नाभि का नादं रे, हंसा जहां विष्णु अनादं रे।। १८।।
मन मनसा का वासा रे, हंसा हिरदे के पासा रे।
उर द्वादश पंखरी रे, हंसा खेलत मन मंकरी रे।। १६।।
सुन कण्ठ का रासा रे, हंसा त्रिभंग तमासा रे।
त्रिकुटी के छाजै रे, हंसा जहां नौबत बाजै रे।। २०।।
जहां नौलट घाटी रे, हंसा मेरे विषमी बाटी रे।
यौह मान संदेशा रे, हंसा मेरे सुन उपदेशा रे।। २१।।
यौह पंथ अपंथा रे, हंसा कोई चीन्हत संता रे।
यौह द्वार अमी का रे, हंसा सुन ज्ञान का टीका रे।। २२।।
यौह कंद का सीना रे, हंसा जानत प्रवीना रे।
अमीरस मीठा रे, हंसा कर दीठ अदीठा रे।। २३।।
याह खोल्हि किवारी रे, हंसा चल बह्म अटारी रे।
जहां छत्र सिंघासन रे, हंसा जहां अविचल आसन रे।। २४।।

दोहा :- उभै महूरति चीन्हियां, षट्र दलीप धर ध्यान।
सो राजा पद में मिले, पाया निश्चल थान।। २५।।

चल अजब नगरिया रे, हंसा मेरे प्रेम की पुरिया रे।
जहां श्वेत सिंघासन रे, हंसा मेरे अविलच आसन रे।। २६।।
जहां दोदल घाटी रे, हंसा मेरे बंकी बाटी रे।
लखि दिल दुरबीनां रे, हंसा यौह मारग झीनां रे।। २७।।
जहां सहंस कँवल दल रे, हंसा जोगिया से मिल चल रे।
जाका नाम निरंजन रे, अगमी दरिया दुःख भंजन रे।। २८।।
आगै संख कँवल दल रे, हंसा सुख सागर अविचल रे।
सुख सागर मेला रे, हंसा निज रूप नवेला रे।। २६।।
बहुरि न आवै रे, हंसा पद पदहि समावै रे।
पद सुष्मण श्वासा रे, हंसा परसे **गरीबदासा** रे।। ३०।।

दोहा :- पद परसे दरशे ब्रह्म, कला उगानी कोट।
गरीबदास सुख सिन्धु में, रहे अमानी लोट।। ३१।।

अथ सुषमणी संपट

निर्गुण कहूँ सही गुणवंता, शब्द समाना दरिया है।
अविगत अदली काया कुदली, धरणि दुलीचा धरिया है।। १।।
तंबू बने गगन असमाना, सूरज चंद चिरागी हैं।
तारायण फुलवारी चंपा, सति समर्थ अनरागी हैं।। २।।
ॐ कार ईश्वरी माया, नाद बिंद का दौना है।
औह तो अजर अमर अविनाशी, जहां कछु होन न होना है।। ३।।
पंच तत्त तीनों गुण तूरा, आपै सृष्टि संयोगी है।
खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अदली योगी है।। ४।।
शेष महेश गणेश रु ब्रह्मा, नारद शारद कीन्हा है।
नौ अवतारी कीर्ति धारी, नाद बिंद का सीना है।। ५।।
औह तो नाद बिंद नहीं आया, शब्द अतीत समाधी है।
वार पार कोई पावै नाहीं, अगमी अगम अगाधी है।। ६।।
लख चौरासी जीव ऊपनें, क्रितम ख्याल अंगूरा है।
सवा ऊपनें लाख खपनें, यौह तो बीज अंकूरा है।। ७।।
अठार भार वन माली उपाई, गिरवर नदी निवासा है।
क्रितम ख्याल कलंदर बाजी, भगली भगल तमासा है।। ८।।
भगलीगुरु भगल विधि खेलै, भगल विद्या प्रवाना है।
भगलीगर कूँ भगली पावै, हम भगलीगर जान्या है।। ९।।
धर्मराय कूँ राज दिया जो, अदली अदल निसाफा है।
करनी भरनी भुगते प्राणी, जाकूँ पुण्य न पापा है।। १०।।
बहिश्त वैकुण्ठ तुम्हौं ही सिरजे, सुख संजय सा कीन्हा है।
आठ सिद्धि नौ निधि निमानी, मन बुद्धि इच्छा दीन्हा है।। ११।।
महतलोक वैकुण्ठ बहिश्त के वासी, वै भी भवजल आवैं हैं।
शब्द बिहंगी अचल अभंगी, जाका भेद न पावैं हैं।। १२।।
हम तो दिल दरिया में पैठे, मन हमारा मीनी है।
भेद न पावै उलटि समावै, वाह तो रामत झींनी है।। १३।।
इन्द्र दौंन में उलटि समानें, शब्द महोदधि गाजे है।
झालर झांझ पखावज तूरा, अनहद नादू बाजें हैं।। १४।।
मुरली महल गगन मठ सुनिया, संख शुन्य प्रवेशा है।
बाजैं बीन बिहंगम बरवै,
कोटि कला छवि आगे द्रवै, यौह सतगुरु उपदेशा है।। १५।।
झिलमिल ज्योति माणिक मोती, मानसरोवर हंसा है।
गहर गंभीरा अस्थिर थीरा, यौह हंसौं का बंसा है।। १६।।

निर्गुण नेसा पद प्रवेशा, शब्द अतीत पिछान्या है।
चंपा झलकै अविगत अलखै, सतगुरु कूँ कुरबाना है।। १७।।
डिगै न डोलै संपट खोल्है, अनहद वाणी कहता है।
हरदम संगी अचल अभंगी, हाजर नाजर रहता है।। १८।।
रमता राम सकल सरवंगी,
बाजीगर बीना बहुरंगी, शुन्य शिखर में गावे है।
निर्गुण रासा पिण्ड न श्वासा, दृष्टि मुष्टि नहीं आवे है।। १९।।
दिल दरवानी सति सहदानी, शुन्य मंडली साचा है।
बाहर खोजे ब्रह्म न रोजै, तन में तीनों वाचा है।। २०।।
सत्य कर मानौ शब्द पिछानौ, यौह मुरजीवा मार्ग है।
अनभै दरिया धसि कर देखो, मक्रतार सा तारग है।। २१।।
झीना पंथ संत जहां उतरे, बिन पग पंथ पियाना है।
नैनों बिना नूर छवि दरवै,
रागी राग बिना मुख बरवै, शब्द सुन्या बिन काना है।। २२।।
औघट घटी विषमी बाटी, जहां त्रिवैणी ताला है।
मान तलाई देखो भाई, सुष्मण नाल पियाला है।। २३।।
इला पिंगला सुष्मण सूवा, गगनि मंडल में अमृत कूवा,
बाय बिहंगम पाई है। दिल दरवानी सुन ब्रह्मज्ञानी,
वहां तो दौहबर कोट और तिहबर खाई है।। २४।।
खाखी मन जहां जुलमी योधा, बंकी फौज कटक है बोदा,
कैसे कर गढ़ तोर्या है। द्वादश कोटि रहै तन आकी,
वेद कुरांन मदाही साखी, ऐसा गढ़ में जोरा है।। २५।।
नूरी मन निर्गुण निर्बानी,
दिल दरिया खोजो दरवानी, पांच पचीसौं आडा है।
शील संतोष विवेक ज्ञान मौहरे धरि, यौह फौजों का लाडा है।। २६।।
धीरज नेम क्षमा बुद्धि बख्तर, शुन्य सिंजोयल पहर्या है।
दृढ की ढाल तेग तत्त बांधो, जंग जीतन का पहरा है।। २७।।
दया दुलीचै डेरा डार्या,
फौजां मांहि नकीब पुकार्या, पचरंग झंडा निशाना है।
अनहद छाजे नौबत बाजे, गैबी नाद घुराना है।। २८।।
हुई चढ़ाई गढ़ पर भाई, जाय मुहल्ला लीता है।
चढ़े उजीर अमीर भिरन कूँ, प्रेम पियाला पीता है।। २९।।
शील उजीर संतोष दिवाना, विवेक सिपाही बीना है।
ज्ञान विहंगम गोला दाग्या, क्रोध मौहरा लीना है।। ३०।।
चालै ग्यासी अग्नि तिरासी, क्रोध कटक दल भारी है।

गुरजी ज्ञान ध्यान दरवेशा, गुप्ती चक्र कटारी है।। ३१।।
सफरजंग दबहुरंग मंड्या जो, जुलमी बाण गुंगाना है।
रण गढ़ लीया कोट ढहाया, गढ में ज्ञान धसाना है।। ३२।।
पकर्या क्रोध जोध बलवंता, संगी लश्कर भाग्या है।
थाना जाय दरीबे बैठ्या, गोला ज्ञानी दाग्या है।। ३३।।
चढ़े संतोष झोक सत महली, शुन्य सरोवर सेझा है।
जो जन आवै गलता पावै, लोभ लहरिया बेझा है।। ३४।।
मंड्या लोभ गोभ फुनि अनगिन, हटता नहीं हटाया है।
छूटे तरंग अंग कूँ चीरै, सत संतोषी आया है।। ३५।।
गढ़ कूँ घेर हेर चौतरफा, ममत मवासा तोर्या है।
अपना राज बिठाया विधि सौं, त्रिकुटी का पट खोल्ह्या है।। ३६।।
चढ़े शील संजम सैलानी,
नूरी मन का है दरवानी, दरवाजे चलि आया है।
कंदर्प सैंन गैंन दल गूंजै, काम कटक चढ़ि धाया है।। ३७।।
उपजै लहरि शहर में खलहल, मन मोहिनी भोगा है।
ज्ञान ध्यान गुण सब ही बिसरे, बहु विधि संसा सोगा है।। ३८।।
शीला फील जब गढ़ कूँ पेल्या, टूटि गया दरवाजा है।
पकर्या चोर जोर अति जुलमी, काम कटक दल भाग्या है।। ३९।।
मोह मवासी बड़ा गिरासी, लहरी लहरि तरंगा है।
चढ्या विवके अलेख साज धर, शूर खेत भल जंगा है।। ४०।।
उलटा मारि किले में दीन्हा, पलक रहन नहीं पाया है।
खाखी मन जद पाकर लीन्हा, अदली राज पठाया है।। ४१।।
फिरी दुहाई गढ़ में भाई, नौबत नाम नगारा है।
नूरी मन कूँ राज दीया जद,
किला फिरंगी अपना कीया, अविनाशी का प्यारा है।। ४२।।
हम गढ़ लिया निशान बजाई, अविगत नगर रोशनी भाई,
जहां सतगुरु का डेरा है। अदली अविगत,
पूर्ण ब्रह्म बिनानी सब घट, बहुरि न भवजल फेरा है।। ४३।।
जहां झलकैं बिंब सिंध शुन्य मांहीं, शंख पदम हम देख्या है।
ऐसा द्वीप समीप समुंद्र,
कोटि भानु जहां बिगसै चंद्र, जम का कागज छेक्या है।। ४४।।
फूले कमल बिंबल बिन पानी,
ब्रह्म लोक की सुनों निशानी, बिन बादल गरजंता है।
दामिनी खिमैं समै शुन्य मांहीं, महीं मेघ बरषंता है।। ४५।।
उज्जल भौंर केतगी बागा। गंध सुगंध बिहंगम रागा।

सप्त शुन्य पर लावो तारी। अधर डाक है चाल हमारी।। ४६।।
कोई ज्ञान अर्श पद बूझेगा। गुटके चढ़े बिहंगम अरशी,
अजर अमर बहुर ना मरसी, अर्श गुमट जिस सूझेगा।। ४७।।
दीप विज्ञाना पद निरबाना, गगनी गगन फुहारा है।
सत्य लोक से सतगुरु आये, सत्य कर मानों शब्द हमारा है।। ४८।।
अमर करै त्यारै भवसागर, संख जुगन जुग थीरा है।
कहता **दास गरीब** सही सत्त,
सार शब्द चीन्हों निर्गुण मत, सतगुरु मिल्या कबीरा है।। ४६।।

अथ ज्ञान तिलक

स्वामी कौन तुम्हारा पिता बोलिये, कौन तुम्हारी माई।
कौन तुम्हारी जाति बोलिये, कौन तुम्हारी दाई।। १।।
अवधू पद हमारा पिता बोलिये, मूला हमरी माई।
शून्य हमारी जाति बोलिये, दीन हमारी दाई।। २।।
स्वामी कौन तुम्हारा नाम बोलिये, कौन तुम्हारी नगरी।
कौन तुम्हारी सिकल बोलिये, कौन तुम्हारी अगरी।। ३।।
अवधू सति सुहंगम नाम बोलिये, शब्द हमारी नगरी।
सिद्धि हमारी सिकल बोलिये, अर्थ हमारी अगरी।। ४।।
स्वामी कौन तुम्हारा सरवर बोलिये, कौन तुम्हारा हंसा।
कौन तुम्हारी प्रबी बोलिये, कौन तुम्हारा बंसा।। ५।।
अवधू मानसरोवर सरवर बोलिये, मन हमारा हंसा।
परख हमारी प्रबी बोलिये, निर्बान हमारा बंसा।। ६।।
स्वामी कौन तुम्हारा ध्यान बोलिये, कहौ कौन अस्नानं।
कौन तुम्हारा जाप बोलिये, कौन तुम्हारा ज्ञानं।। ७।।
अवधू धुनि हमारा ध्यान बोलिये, अकल पाट अस्नानं।
अजपा हमरा जाप बोलिये, अनभै हमरे ज्ञानं।। ८।।
स्वामी कौन तुम्हारे तिलक बोलिये, कौन तुम्हारे छापं।
कौन तुम्हारे छन्द बोलिये, कौन तुम्हारे थापं।। ६।।
अवधू तत्त हमारे तलिक बोलिये, छाक हमारे छापं।
झीन हमारे छंद बोलिये, शब्द हमारे थापं।। १०।।
स्वमी कौन तुम्हारी बीन बोलिये, कौन तुम्हारे नादं।
कौन तुम्हारे तूर बोलिये, कौन दीप के साधं।। ११।।
अवधू बरवै हमरी बीन बोलिये, निरति हमारे नादं।
बिंबल हमारे तूर बोलिये, अगर द्वीप के साधं।। १२।।
स्वामी कौन तुम्हारी रहसि बोलिये, कौन तुम्हारी करनी।

कौन तुम्हारा आचार बोलिये, कौन तुम्हारी धरनी।। १३।।
अवधू राग हमारी रहसि बोलिये, कीर्ति हमरी करनी।
उजल विनोद आचार बोलिये, ध्यान हमारे धरनी।। १४।।
स्वामी कौन तुम्हारी चीपी बोलिये, कौन तुम्हारा फरवा।
कौन तुम्हारा चेला बोलिये, कौन तुम्हारा गुरुवा।। १५।।
अवधू चित्त हमारी चीपी बोलिये, फुनि हमारा फरवा।
हंस हिरंबर चेला बोलिये, परमहंस है गुरुवा।। १६।।
स्वामी कौन तुम्हारा भेष बोलिये, कौन तुम्हारा बाना।
कौन तुम्हारी सैल बोलिये, कहौ कौन प्रवाना।। १७।।
अवधू बुद्धि विवके भेष बोलिये, वाणी हमरे बाना।
अर्श विहंगम सैल बोलिये, प्रपट्टन प्रवाना।। १८।।
स्वामी कौन तुम्हारी धूप बोलिये, कौन तुम्हारे देवं।
कौन तुम्हारे गुगल बोलिये, कौन तुम्हारे सेवं।। १९।।
अवधू ध्यान हमारे धूप बोलिये, पारब्रह्म है देवं।
गम हमारा गुगल बोलिये, सुरति निरति पद सेवं।। २०।।
स्वामी कौन तुम्हारी रास बोलिये, कौन तुम्हारे रागी।
कौन तुम्हारी संप्रदा बोलिये, कौन द्वार वैरागी।। २१।।
अवधू अनहद हमरी रास बोलिये, राग अचल अनरागी।
संत हमारी संप्रदा बोलिये, ब्रह्म द्वार वैरागी।। २२।।
स्वामी कौन तुम्हारी मुद्रा बोलिये, कौन तुम्हारा मेला।
कौन तुम्हारा पाट बोलिये, कौन तुम्हारा सेला।। २३।।
अवधू उनमुन हमरी मुद्रा बोलिये, इला पिंगुला मेला।
निर्गुण हमरा पाट बोलिये, सरगुण हमरे सेला।। २४।।
स्वामी कौन तुम्हारी झांझ बोलिये, कौन तुम्हारे शंखा।
कौन तुम्हारे मृदंग बोलिये, कौन तुम्हारा डंका।। २५।।
अवधू झोक हमारी झांझ बोलिये, शील हमारे शंखा।
बुद्धि हमारी मृदंग बोलिये, दृढ हमारे डंका।। २६।।
स्वामी कौन तुम्हारा कूप बोलिये, कौन तुम्हारे माली।
कौन तुम्हारी कूल बोलिये, कौन तुम्हारी क्यारी।। २७।।
अवधू उरध हमारा कूप बोलिये, राम रमईया माली।
कँवल हमारी कूल बोलिये, हिरदा हमरी क्यारी।। २८।।
स्वामी कौन तुम्हारा बाग बोलिये, कौन तुम्हारा बेला।
कौन तुम्हारा भँवर बोलिये, कौन तुम्हारा खेला।। २९।।
अवधू अक्षय हमारा बाग बोलिये, सुष्मण हमरा बेला।
उजल हमारा भँवर बोलिये, कुंज हमारा खेला।। ३०।।

स्वामी कौन तुम्हारी कुलफ बोलिये, कौन तुम्हाना तारा।
कौन तुम्हारी पौलि बोलिये, कौन तुम्हारा द्वारा।। ३१।।
अवधू त्रिकुटी हमरी कुलफ बोलिये, शब्द सुष्मणा तारा।
वज्र हमारी पौलि बोलिये, इला पिंगला द्वारा।। ३२।।
स्वामी कौन तुम्हारा दरीबा बोलिये, कौन तुम्हारा दीपं।
कौन तुम्हारा मोती बोलिये, कौन तुम्हारे सीपं।। ३३।।
अवधू दम दरबान दरीबा बोलिये, सत्य लोक है दीपं।
स्वांति सुहंगम मोती बोलिये, सुख दुःख रहता सीपं।। ३४।।
स्वामी कौन तुम्हारी गुफा बोलिये, कौन तुम्हारा खाना।
कौन तुम्हारा अर्थ बोलिये, कौन तुम्हारा म्याना।। ३५।।
अवधू गगन हमारी गुफा बोलिये, अमी खीर रस खाना।
अनिन हमारा अर्थ बोलिये, मूल हमारा म्याना।। ३६।।
स्वामी कौन तुम्हारी शीशी बोलिये, कौन तुम्हारा प्याला।
कौन तुम्हारी भाठी बोलिये, कौन भेद मतवाला।। ३७।।
अवधू सुरति हमारी शीशी बोलिये, प्रेम हमारा प्याला।
गंग जमन दर भाठी बोलिये, नाम अमल मतवाला।। ३८।।
स्वामी कौन तुम्हारा चक्र बोलिये, कौन तुम्हारी नारी।
कौन तुम्हारा योग बोलिये, कौन तुम्हारी तारी।। ३९।।
अवधू मूल हमारा चक्र बोलिये, कंदर्प नेशा नारी।
उदीत हमारा योग बोलिये, अर्श अनाहद तारी।। ४०।।
स्वामी कै सौ तुम्हरे चक्र महली, कै लख पट्टण लोई।
केती करोड़ मेरु दण्ड कहिये, भेद कहो फुनि सोई।। ४१।।
अवधू तीन सौ साठ चक्र हैं महली, नौ लख पट्टण लोई।
अठारा करोड़ मेरु डण्ड कहिये, भेद कह्या फुनि सोई।। ४२।।
स्वामी कौन तुम्हारा बटुवा बोलिये, कौन तुम्हारी झोरी।
कौन तुम्हारा धागा बोलिये, कौन तुम्हारी डोरी।। ४३।।
अवधू बुद्धि हमारा बटुवा बोलिये, जुगति हमारी झोरी।
अक्षर धाम तो धागा बोलिये, मक्रतार है डोरी।। ४४।।
स्वामी कौन तुम्हारा देश बोलिये, कौन तुम्हारा पंथा।
कौन तुम्हारा मेखला बोलिये, कौन तुम्हारी कंथा।। ४५।।
अवधू दक्षिण हमरा देश बोलिये, उत्तर हमरा पंथा।
शुन्य हमारा मेखला बोलिये, गुन हमारी कंथा।। ४६।।
स्वामी कौन तुम्हारा शब्द बोलिये, कौन तुम्हारी वानी।
कौन तुम्हारा यज्ञ बोलिये, कौन तुम्हारे दानी।। ४७।।
अवधू अकल अतीत शब्द बोलिये, अपूर्व हमरे वानी।

उपदेश यज्ञ जौंनार बोलिये, सतगुरु हमरे दानी।। ४८।।
स्वामी कौन तुम्हारे कंद बोलिये, कौन तुम्हारी फेरी।
कौन तुम्हारी सिद्धि बोलिये, कौन तुम्हारी चेरी।। ४६।।
अवधू बिन्दु हमारे कंद बोलिये, ब्रह्मण्ड इकीसौं फेरी।
अचल हमारी सिद्धि बोलिये, माया महरै चेरी।। ५०।।
अजर अमर अकल है देव।
याह शब्दी का लहै भेव। सत्य पुरुष की करि हैं सेव।
आशा छाडै रहे निराश। सत्य पुरुष कर हैं प्रकाश।।
येता ज्ञान गुटका बूझन्त। जाकूँ तीनौं त्रिभुवन सूझन्त।
कुदली विज्ञान उचार।
सतगुरु मिले **कबीर, दासगरीब** दर्श दीदार।।

अथ ज्ञान परिचय

सतगुरु दीन दयाल दयाला। नजरी है नजर निहाला।। १।।
सतगुरु अगम भूमि से आये। निर्भय पद निज नाम सुनाये।। २।।
कर हंसा प्रतीति हमारी। सतगुरु त्यारै नर और नारी।। ३।।
कोई बेटा बाप रु भाई। कोई मात पिता कुल दाई।। ४।।
कोई काका कै नांय बोलै। कोई ताऊ से होये ओल्है।। ५।।
कोई मामा भाणिज भीना। जिसका तिस क्यूं नहीं दीना।। ६।।
कोई दादा पोता नाती। चलते कोई संग न साथी।। ७।।
कोई फूफसरा ननदोई। यौह ज्यूं का त्यूं ही होई।। ८।।
कहीं पीतासरा पति धारी। कहीं तायसरा बुझ ाारी।। ६।।
कहीं जेठ जिठानी खसमां। ये सबही हो गये भस्मां।। १०।।
कहीं भाभी देवर साली। इन नाते बड़ घर घाली।। ११।।
कहीं बहिन भांनिजी फूफी। याह फूटि गई भ्रम कूपी।। १२।।
कहीं बेटी बहू भई रे। समझैं नहीं अकलि गई रे।। १३।।
ये है दोजिख के लपकूँ। देखो गूलरि के गपकू।। १४।।
यौह नाता छारम छारा। बूडे दरिया वार न पारा।। १५।।
यौह चौरासी झक झोला। सब हो गये घोल मथोला।। १६।।
हम कारवान होय आये। महलौं पर ऊँट बताये।। १७।।
बोले पादशाह सुलतानां। तूं रहता कहां दिवानां।। १८।।
दूजै कासिद गवन किया रे। डेरा महल सराय लिया रे।। १६।।
जब हम महल सराय बताई। सुलतानी कूँ तावर आई।। २०।।
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढ़ी। ये बसैं सराय में गीदी।। २१।।
ऐसे ही तूं चलि जाई। यौं हम महल सराय बताई।। २२।।

अरे कोई कासिद कूँ गहि ल्यावै। इस पंडित खाने द्यावै।। २३।।
ऊठे पादशाह सुलताना। वहां कासिद गैब छिपाना।। २४।।
तीजे बांदी होय सेज बिछाई। तन तीन कोरड़े खाई।। २५।।
तब आया अनहद हांसा। सुलतानी गहे खवासा।। २६।।
मैं एक घड़ी सेजां सोई। तातैं मेरा यौह हवाल होई।। २७।।
जो सोवैं दिवस रु राता। तिन का क्या हाल विधाता।। २८।।
तब गैबी भये खवासा। सुलतानी हुये उदासा।। २६।।
यौह कौन छलावा भाई। याका कछु भेद न पाई।। ३०।।
चौथे योगी भये हम जिन्दा। लीन्हें तीन कुत्ते गलि फंदा।। ३१।।
दीन्ही हम सांकल डारी। सुलतानी चले बाग बाड़ी।। ३२।।
बोले पादशाह सुलताना। कहां से आये जिन्द दिवाना।। ३३।।
ये तीन कुत्ते क्या कीजे। इनमें से दोय हम कूँ दीजे।। ३४।।
अरे तेरे बाप दादा हैं भाई। इन बड़ बदफैल कमाई।। ३५।।
वहां लोह लंगर शीश लगाई। तब कुत्यौं धूम मचाई।। ३६।।
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढ़ी। तूं समझे क्यूं नहीं गीदी।। ३७।।
अब तुम तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढ़ने कूँ शूली।। ३८।।
योगी जिन्दा गैब भया रे। हम ना कछु भेद लह्या रे।। ३६।।
बोले पादशाह सुलताना। जहां खड़े अमीर दिवाना।। ४०।।
येह च्यार चरित्र बीते। हम ना कछु भेद न लीते।। ४१।।
वहां हम मार्‍या ज्ञान गिलोला। सुलतानी मुख नहीं बोला।। ४२।।
तब लगे ज्ञान के बाना। छाडी बेगम माल खजाना।। ४३।।
सुलतानी योग लिया रे। सतगुरु उपदेश दिया रे।। ४४।।
छाड्या अठारा लाख तुरा रे। जिस लागै माल बुरा रे।। ४५।।
छाडे गज गैंवर जल होड़ा। अब भये बाट के रोड़ा।। ४६।।
संग सोलह सहंस सुहेली। एक से एक अधिक नवेली।। ४७।।
छाडे हीरे हिरंबर लाला। सुलतानी मोटे ताला।। ४८।।
जिन लोक परगनां त्यागा। सुंनि शब्द अनाहद लाग्या।। ४६।।
पगड़ी की कौपीन बनाई। शालौं की अलफी लाई।। ५०।।
शीश किया मुंह कारा। सुलतानी तज्या बुखारा।। ५१।।
गण गंधर्व इन्द्र लरजे। धन्य माता पिता जिन सिरजे।। ५२।।
भया सप्तपुरी पर शाका। सुलतानी मारग बांका।। ५३।।
जिन पांचौं पकड़ि पछाड्या। इनका तो दे दिया बाड़ा।। ५४।।
सुंनि शब्द अनाहद राता। जहां काल कर्म नहीं जाता।। ५५।।
नहीं कच्छ मच्छ कुरंभा। जहां धौल धरणि नहीं थंभा।। ५६।।
नहीं चंद्र सूर जहां तारा। नहीं धौल गगन गैंनारा।। ५७।।

नहीं शेष महेश गणेशा। नहीं गौरा शारद भेषा।। ५८।।
जहां ब्रह्मा विष्णु न वाणी। नहीं नारद शारद जानी।। ५६।।
जहां नहीं रावण नहीं रामा। नहीं माया का विश्रामा।। ६०।।
जहां परशुराम नहीं परस्या। नहीं बलि बावन की चर्चा।। ६१।।
नहीं कंस कान्ह कर्तारा। नहीं गोपी ग्वाल पसारा।। ६२।।
यौह आवन जान बखेड़ा। यहां कौन बसावै खेड़ा।। ६३।।
जहां नौ दसमा नहीं भाई। दूजे कूँ ठाहर नांहीं।। ६४।।
जहां नहीं आचार विचारा। कोई शालिग पूजनहारा।। ६५।।
वेद कुरांन न पंडित काजी। जहां काल कर्म नहीं बाजी।। ६६।।
नहीं हिन्दू मुसलमाना। कुछ राम न दुवा सलामा।। ६७।।
जहां पाती पान न पूजा। कोई देव नहीं है दूजा।। ६८।।
जहां देवल धाम न देही। चीन्हो क्यूं ना शब्द संनेही।। ६६।।
नहीं पिण्ड प्राण जहां श्वासा। नहीं मेर कुमेर कैलाशा।। ७०।।
नहीं सत्ययुग द्वापर त्रेता। कहूँ कलियुग कारण केता।। ७१।।
यौह तो अंजन ज्ञान सफा रे। देखो दीदार नफा रे।। ७२।।
निःबीज निरंजन लोई। जल थल में रमता सोई।। ७३।।
है निर्भय निरगुण बीना। सोई शब्द अतीतं चीन्हा।। ७४।।
अडोल अबोध अनाथा। नहीं देख्या आवत जाता।। ७५।।
है अगम अनादह सिंधा। योगी निर्गुण निरबंधा।। ७६।।
कछु वार पार नहीं थाहं। सतगुरु सब शाहनपति शाहं।। ७७।।
उलटि पंथ खोज है मीना। सतगुरु भेद कहै गुरु बीना।। ७८।।
यौह सिंधु अथाह अनूपं। कछु ना छाया ना धूपं।। ७६।।
जहां गगन धुनि दरवानी। जहां बाजे सत्य सहिदानी।। ८०।।
सुलतान अधम जहां राता। तहां पिण्ड ब्रह्मण्ड नहीं गाता।। ८१।।
जहां निर्गुण नूर दिवाला। कछु न घर है खाला।। ८२।।
शीश चढ़ाय पग धरिया। यौह सुलतानी सौदा करिया।। ८३।।
सतगुरु जिन्दा योग दिया रे। सुलतानी अपना किया रे।। ८४।।
कहे **दास गरीब** गुरु पूरा। सतगुरु मिले कबीरा।। ८५।।

अथ हंस परमहंस की कथा

अदली योग झीनी वस्तु अचल अनरागी। जाका ध्यान धरो बड़ भागी।
बटक बीज का यौह विस्तारा, जासे उपज्या सकल पसारा।। १।।
सोहं शब्द हम जग में ल्याये। सार शब्द हम गुप्त छिपाये।।
ॐ सोहं मांड मँडी है। जा के ऊपर शब्द गढ़ी है।। २।।
बटक बीज है हमरे मांही। हम हैं बटक बीज की छांहीं।। ३।।

सोहं ब्रह्मा सोहं इन्द्र। सोहं हैं भगवानं चन्द्र।।
सोहं शंकर सोहं शेष। सोहं का सोहं उपदेश।। ४।।
सोहं चौबीसौं अवतार। सोहं का है सब परिवार।।
सोहं रावण सोहं राम। सोहं जपिये आठौं जाम।। ५।।
सोहं कंस केश चानौर। सोहं की है ऊंची पौर।।
सोहं दुर्योधन और पण्ड। सोहं अठारह खूहनि खण्ड।। ६।।
सोहं राजा चकवै रीति। सोहं की सोहं प्रतीति।।
सोहं है चौरासी सिद्ध। सोहं सूर गऊ गद्ध।। ७।।
सोहं सुरनर मुनिवर जान। सोहं का है सकल जिहान।।
सोहं का है मुनिवर मेल। ॐ सोहं का सब खेल।। ८।।
सोहं गोपी सोहं कान्ह। सोहं हंसा सब घट जान्ह।।
सोहं है सब कीट पतंग। सोहं चौरासी लख संग।। ९।।
सोहं चन्दा सोहं सूर। ॐ सोहं बाजैं तूर।।
सोहं कच्छ मच्छ कूरम्भ। ॐ सोहं सत आरम्भ।। १०।।
सोहं धर अम्बर आकाश। सोहं पांच तत्त का वास।।
सोहं सहंस अठासी दीप। सोहं मोती ॐ सीप।। ११।।
सोहं स्वांति बूंद प्रकाश। ॐ में सोहं का वास।।
ॐ चौदह भुवन विचार। ॐ में है सोहं तार।। १२।।
ॐ काया मर मर जाय। सोहं फिर फिर गोते खाय।।
ॐ मरै ॐ मारै। सोहं लख चौरासी फिरै।। १३।।
ॐ सोहं की सब बाजी। सोहं पण्डित सोहं काजी।
सोहं धर्मराय सत कहिये। सोहं चित्रगुप्त सो लहिये।। १४।।
सोहं आगे ॐ लेखा। सोहं गुप्त प्रगट सब देखा।।
धर्म सोहं तप कीन्हा भारी। पुरुष पृथ्वी दीन्ही सारी।। १५।।
सोहं राज अदल है भाई। ॐ उत्पत्ति प्रलय जाई।।
ॐ सोहं की है काया। सोहं जीव ॐ है माया।। १६।।
ॐ बहिश्त वैकुण्ठ सब साजे। जामें सोहं जाय बिराजे।।
ॐ बिनशे सोहं गिरै। ताते ॐ में को परै।। १७।।
सोहं सुरनर पण्डित ज्ञानी। सब घट ॐ की पहरानी।।
ॐ आदि मूल है भाई। सोहं वास मध्य ठहराई।। १८।।
विनशे फूल वासना जीवै ऐसे ज्ञान विहंगम पीवै।।
अलल पंख ज्यूं करै विचारा। उलटा जाय मिलै परिवारा।। १९।।
सार शब्द से सोहं खिर्या। तातें लख चौरासी फिर्या।।
मध्य ॐ की है एक टाटी। हंस बिछोरै बारह बाटी।। २०।।
सोहं गदह हो हो जाई। सोहं इन्द्र हुये बहुराई।।

सोहं रामचंद्र अवतारा। सोहं आन भये नौ बारा।। २१।।
सोहं लक्ष्मण सोहं सीता। सोहं कीन्हा सोहं मीता।।
सोहं मन ॐ है देही। दोहूँ से न्यारा शब्द संनेही।। २२।।
सोहं नारी सोहं पुरुषा। सोहं हिन्दू सोहं तुरका।।
सोहं कौम छत्तीसौं जाती। ॐ सोहं की उत्पाती।। २३।।
सप्त अण्ड लग सोहं साजे। जा पर सार शब्द धुनि गाजे।।
सोहं जल थल महियाल मेला। सोहं गुरुवा सोहं चेला।। २४।।
एक सोहं ॐ धरि पूज्या। सार शब्द का भेद न बूझ्या।।
सोहं चतुर्भुजी एक कर्ता। सोहं ॐ चोले धरता।। २५।।
ॐ नाना रूप विचारी। सोहं ॐ की है तारी।।
सोहं अक्षर खण्ड है भाई। निःअक्षर का भेद न पाई।। २६।।
सोहं में थे ध्रुव प्रहलादा। ॐ सोहं वाद विवादा।।
सोहं गोरख सोहं दत्त। ॐ सोहं मध्य है सत्त।। २७।।
सोहं जनक विदेही सेवा। पीछै जान्या पद का भेवा।।
सोहं शुकदेव कूँ गुरु कीन्हा। पीछे सार शब्द सत चीन्हा।। २८।।
पीबरत कूँ सोहं सत जान्या। ॐ मांहीं रहे विमाना।।
ग्यारह अरब किया तप हंसा। चीन्हे नहीं शब्द परम हंसा।। ३९।।
रामानन्द ॐ की आशा। ताते खण्डी सोहं श्वासा।।
सप्त अंग धरवाई देही। जब जा पाये शब्द संनेहीं।। ३०।।
नामा छीपी ॐ तारी। पीछे सोहं भेद विचारी।।
सार शब्द पाया जदि लोई। आवागवन बहुर ना होई।। ३१।।
सोहं सुलतानी प्रवाना। सोहं बाजीदा दरवाना।।
सोहं सूजा सैंन जपंते। सोहं पीपा धन्ना लखंते।। ३२।।
सोहं बालनीक रैदासा। सोहं ॐ पर शब्द निवासा।।
सोहं तार शब्द धुनि लागी। आवा गवन मिटी अनरागी।। ३३।।
सोहं भरथरि गोपीचंदा। सोहं ऊपर अजब अनंदा।।
आनंदी सौं लाग्या नेहा। बहुर न हंसा धर हैं देहा।। ३४।।
अजामेल गणिका से त्यारे। होते अघ पापौं सिर भारे।।
सदाना जाति कसाई खूनी। सत्गुरु तार पलट्या पूनी।। ३५।।
दुर्वासा सोहं संग राते। तातैं इन्द्रपुरी सुर जाते।।
अनंत लोक सोंह का ताना। धर्मराय एक हाकिम आना।। ३६।।
माया आदि निरञ्जन भाई। अपने जाये आपे खाई।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला। ॐ सोहं का है मेला।। ३७।।
शिखर शुन्य में धर्म अन्यायी। जिन शक्ति डायन महल पठाई।।
लाख ग्रासै नित उठि दूती। माया आदि तख्त की कूती।। ३८।।

सवा लाख घड़िये नित भांडे। हंसा उत्पत्ति प्रलय डांडे।।
ये तीनौं चेला बट पारी। सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।। ३९।।
खोखापुर में जीव बंधाये। स्वप्ना बहिश्त वैकुण्ठ बनाये।।
यौह हरहट का कूवा लोई।। या गल बंध्या है सब कोई।। ४०।।
कीड़ी कुञ्जर और अवतारा। हरहट डोरि बंधे कई बारा।।
अरब अलिल इन्द्र हैं भाई। हरहट डोरि बंधे सब आई।। ४१।।
शेष महेश गणेश अरु तांई। हरहट डोरि बंधे सब आंई।।
शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा। हरहट डोरि बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या। हरहट डोरि कहूँ सुनि लेखा।। ४२।।
चतुर्भुजी भगवान कहावैं। हरहट डोरि बंधे सब आवै।।
यौह है खोखा पुर का कूवा। यामें पर्‌या सो निश्चय मूवा।। ४३।।
सुनियों सुरति सुहगंम डोरी। चलिये हंसा पुरुष किशोरी।।
सोहं पर अदली का डेरा। सत्य पुरुष है साहिब मेरा।। ४४।।
बांधौ मूल सुरति कूँ शोधौं। खांमो पारा पवन अरोधौ।।
पट्टन घाट लखाऊँ हंसा। जित है अदली सतगुरु बंसा।। ४५।।
मेरु डण्ड सूधा कर बैठो। त्रिकुटी कँवल में निश्चय पैठो।।
इला पिंगुला नली भराई। सुष्मण बैठ उनासे आई।। ४६।।
ज्ञान का राछ ध्यान की तुरिया। ऐसे सोहं धागा जुरिया।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड अदली का ताना। जाका नाम कबीर दिवाना।। ४७।।
धर्मराय मारत है बाटा। कोई एक हंस उतर गये घाटा।।
वज्र पौर का खोल्हो तारा। चलि देखो हंसा दीप हमारा।। ४८।।
जहां ॐ कार निरंजन नांहीं। ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जांहीं।।
जहां कर्ता नहीं जान भगवाना। काया माया पिण्ड न प्राना।। ४९।।
पांच तत्व तीनों गुण नांहीं। जौंरा काल दीप नहीं जांहीं।।
अमर करुं सत्य लोक पठाऊँ। तातैं बन्दीछोड कहाऊँ।। ५०।।
हम ही सतगुरुष दरवानी। मेटूं उत्पत्ति आवा जानी।।
संख जुगन का लेखा ल्याऊँ। अविगत हुकम अदलि पैठाऊँ।। ५१।।
जो कोई कह्या हमारा मानैं सार शब्द कूँ निश्चय आनै।।
हम ही शब्द शब्द की खानी। हम अविगत अदली प्रवानी।। ५२।।
हमरे अनदह बाजे बाजे। हमरे किये सबे कुछ साजे।।
हम ही दिल दरिया हैं भाई। हम ही बून्द सिन्धु घर छाई।। ५३।।
हम ही लहरि तरंग उठावैं। हम ही प्रगट हम छिप जावैं।।
हम ही गुप्त गुहज गम्भीरा। हम ही अविगत हमैं कबीरा।। ५४।।
हम ही मुरजीवा मैदानी। हम ही शब्द महोदधि वाणी।।
हम ही गरजैं हम ही बरषैं। हम ही कुलफ जड़ैं हम निरखैं।। ५५।।

हम ही कूँची हम ही ताला। हम हीं मानिक हीरे लाला।।
हम ही सराफ जौहरी कहियां। हमरै हाथ लेखनि सब बहियां।। ५६।।
हम ही कोतवाल है काजी। हम ही भगल गुरु हैं बाजी।।
ये सब खेल हमारे कीये। हमसे मिले सो निश्चय जीये।। ५७।।
हम ही अदली जिन्दा योगी। हम ही अमी महारस भोगी।।
हम ही पीवैं हम ही प्यावैं। हम ही भाठी आंनि चुवावैं।। ५८।।
हमैं कलाली हम ही प्याला। हम ही सोफी हम मतवाला।।
हम ही खीर खुरदनी ल्याये। हम ही आन कलाल कहाये।। ५६।।
हम ही आनि चुवाई भाठी। हम ही उतरे औघट घाटी।।
हमरा भेद न जानै कोई। हम ही सत्य शब्द निर्मोही।। ६०।।
ऐसी अदली दीप हमारा। कोटि वैकुण्ठ रूंम की लारा।।
संख पदम एक फुनि पर साजैं। जहा अदली सत्य कबीर बिराजैं।। ६१।।
जहां कोटिक विष्णु खड़े कर जोरैं। कोटिक शम्भू माथा मोरैं।।
जहां संखों ब्रह्मा वेद उचारी। कोटि कन्हैया रास विचारी।। ६२।।
बाजे अधर मधुर धुनि बाजै। जहां अविगत अदली तख्त बिराजै।।
परमहंस पूर्ण परिवारा। अदली अमर किये तत सारा।। ६३।।
गगन मण्डल में हमरी सैली। मक्रतार की झीनी गैली।।
प्रलय संख सुहगंम सूवा। केते कर्ता हो हो मूवा।। ६४।।
हम हैं अमर अचल अनरागी। शब्द महल में तारी लगी।।
दास गरीब हुकम का हेला। हम अविगत अदली का चेला।। ६५।।

अथ भगल वाणी

भगलीगर कूँ भगल बनाया, भगली भगल तमासा है।
भगलीगर कूँ भगली पावै, जाके पिण्ड न श्वासा है।। १।।
मैं तो भगलीगर का चेला, भगल विद्या हम जानी है।
भगल दीप से हम चल आये, सुनि ल्यो भगल निशानी है।। २।।
तेतीसां कूँ तकि कर मारूं, चौरासी कूँ चोरूं।
माहदेव कै मुंद्रा घालूं, सिर ब्रह्मा का फोरूं।। ३।।
चौबीसां कूँ चूक न जाऊँ, नौ कूँ निश्चय मारूं।
पैठ पताल वासुकि नाथूं, वैकुण्ठ गरुड़ हंकारूं।। ४।।
बाँबी उलटि सर्पणी खासा, बान पारधी मार्‌या।
देखो भगल विद्या की वाणी, ऐसा ज्ञान विचार्‌या।। ५।।
आठौं का तो अटका फोरूं, छै का छीका बांधूं।
चारौं कूँ तो चाक चढ़ाऊँ, कूवटे रस्सी सांधूं।। ६।।
दोयां कूँ तो दक्खन भेजूं, एक रखूं रखवाला।

तीनौं कूँ तो सूली द्यौंगा, जम का मुँह कर काला।। ७।।
पांचौं कूँ तो पाठ पढ़ाऊँ, पचीसौं प्रमोधूं।
ऐसा रमूं शब्द के सेझे, नौ खण्ड रामत सोधूं।। ८।।
सातौं का तो संपट मूंदूं, ग्यरह गंग न्हवाऊँ।
बारह कूँ तो बिरहा द्यौंगा, तेरह तत सुनाऊँ।। ६।।
चौदह की तो चद्दर खोसूं, पंद्रह कूँ प्रवाना।
सोलह की तो सुलह करूंगा, सतरह कूँ सैलाना।। १०।।
अठराह की तो ठेक लगाऊँ, उन्नीसौं धड़वाई।
बीसौं का तो बनज करूंगा, पूंजी राखि सवाई।। ११।।
इक्कीसां कूँ अकलि पढाऊँ, बाईसां कूँ बेलूं।
तेईसां कूँ तांन सुनाऊँ, नौ खण्ड रामत खेलूं।। १२।।
छब्बीसां की छार उड़ाऊँ, सताईसां कूँ सोखूं।
अठाईयां का आटा कीन्हा, उनतीसां कूँ पोषूं।। १३।।
तीसौं कूँ तो ताताबेली, इक्कतीसौं एक ताना।
संपट खोलि शुन्य में खेलूं, अनंत लोक सैलाना।। १४।।
बत्तीसां की बाति करूंगा, चौत्तीसां का दीवा।
पैंतीसां का तेल चुवाऊँ, अरसी कोन्हू लीया।। १५।।
छत्तीसां की छोई काढौं, सैंतीसौं का बहना।
अठतीसां कूँ अटल करूंगा, भगली भेद न कहना।। १६।।
काया नगरी दस दरवाजे, उनतानलीसौं ताला।
चोखा फूल चुवाऊँ शुन्य में, चालीसौं कर प्याला।। १७।।
चौंसठ का तो पत्र फोरूं, बावन कूँ बांधि ल्याऊँ।
एक लाख अस्सी कूँ रोकूँ, ऐसा खेल दिखाऊँ।। १८।।
पीर पैगंबर कुतब औलिया, सुरनर मुनिजन ज्ञानी।
येतां कूँ तो राह न पाया, जम कै बंधे प्राणी।। १६।।
धर्मराय की धूमा धामी, जम पर जंग चलाऊँ।
जौरा कूँ तो जान न द्यौंगा, बांधि अदलि घर ल्याऊँ।। २०।।
काल अकाल दोहूं कूँ मोसूं, महाकाल सिर मूंडूं।
मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूँ ढूंढूं।। २१।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुनि चुनि खाई।
ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।। २२।।
सहंस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मूला डोरी।
एत्यां में जम का तलबाना, चलिये पुरुष किशोरी।। २३।
मूला का तो माथा दागूं, सति की मौहर करूंगा।
पुरुष दीप कूँ हंस चलाऊँ दरा न रोकन द्यौंगा।। २४।।

हम तो बंदीछोड कहावां, धर्मराय है चकवे।
सत्य लोक की सिकल सुनावां, वाणी हमरी अखवे।। २५।।
सायर साखि समुंद्र पीऊँ, मेरु दण्ड पर बोलूं।
कच्छ कूरंभ धौल धर, धरनी पलड़ै तोलूं।। २६।।
नौ लख पट्टन ऊपर खेलूं, शाहदरे कूँ रोकूं।
द्वादश कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।। २७।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी।
खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।। २८।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चलि आये।
पांचौ पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।। २९।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये।
इन पांचौं प्रपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।। ३०।।
हम जुगन जुगन के योगी जुगता, जुगन जुगन रस भोगी।
आनन्दी है दीप हमारा, ना जहां संसा सोगी।। ३१।।
हम हैं शब्द शब्द हम मांहीं। हम से भिन्न और कुछ नांही।
शब्द अतीत हमारी जाति, सकल हमारी सैला।
ऐसा खेल विहंगम खेलूं भगलीगर का चेला।। ३२।।
सोलह संख शुन्य पर तकिया, शुन्य हमारी सैली।
गगन हमारी ज्ञान गूदरी, ब्रह्म नगर की गैली।। ३३।।
अजर अमर है अस्थिर थीर, अगाध अनाहद।
अडोल अबोल, अलील असील, सुख सलाहद।। ३४।।
अथाह अलिल, अजूनि अशुन्य अतीत।
अपार अधार उचार, विचार सुजीत।। ३५।।
अलेख अदेख अभेष नरेख।
नेश नामूनि बेचून बेजून, समून अलेख।। ३६।।
सुकीम सुभान सुजान, अजान अजोख।
अथक अभख निःशंक, अलख निरोख।। ३७।।
अजाति बेजाति कुलात, नहीं संग साथ अतुल।
सुजीव सुनाथ अनाथ, सनीप महल।। ३८।।
उजास निवास बिलास खुलास सुलास, श्वास न पिण्ड।
हिरंभ असम्भ अचंभ अखम्भ, नहीं जम दण्ड।। ३९।।
अकाल अजाल निराल, विशाल हकीम।
जिन्द न बिन्द न सिंध, अचंद रहीम।। ४०।।
निसंच निबंच निअंछ, निसूत लिलाठ।
अनूप अरूप अभूप अभंग, नहीं पंथ बाट।। ४१।।

अदत अकथ अपंथ, सुकथ सही।
योग न भोग न शोग न रोग नहीं।। ४२।।
बिनंग विनोद अशोध, अजोध अचाह।
श्वास न वास हुलास अकाश अलाह।। ४३।।
नाम न गाम न ठाम, नहीं पलजांम बिलंद।
ज्ञान न ध्यान न मान न बिहान, नहीं दुःख दुंद।। ४४।।
दयाल रिसाल निहाल, दलाल मिले अदली।
अमर अजीत अतीत, प्रतीत दीन्ही गदली।। ४५।।
नकील अकील उजील, महल मंजीठ।
खुरजी बनजी निरजी, निर्भय मिल्या लागी सत्यपीठ।। ४६।।
ऊदीन बेदीन खुदीन, सुबीन मंगल मेला।
समंद अबिंध अतोल अमोल लहो चेला।। ४७।।
नूर जहूर नहीं नर दूर, रह्या घट पूर, चंपा झलकै।
चौंरा भौंरा अदली सौरा, नहीं जम जौंरा, मूंदौ पलकै।। ४८।।
अगर अघनेश सुनौं उपदेश, रहै नित पेश,
अमर परदेश दिखाऊँगा। शुन्य संपट सार अजब झंनकार,
महल धूमार मिले प्रवार, सत्य लो ले जाऊँगा।। ४९।।
जहां सिद्धि चौबीस अमर जगदीश विराजै शीश,
सत्य बिसवे बीस अगमरासी। बिरहा वाणी सतगुरु दानी,
है प्रवानी सुनि सहिदानी, दास गरीब जहां वासी।। ५०।।

अथ कृष्ण स्तोत्र

हरि हरि हरि हरि पारब्रह्म परमेश्वरं। पुरुषोत्तम परमानन्द नन्दं। आनन्द कन्दं यशोदा नन्दं।। १।। श्री गोविन्द दीना नाथ, दुःख भन्जनं। भक्त वत्सल जग वन्दनं जग जीवनं।। २।। जगन्नाथं काटन दुःख द्वन्द फंदनं। करुणामई कमल नैंनं, कृपा सिंधं।। ३।। सर्व चेतनं पूर्ण कर्तार किशोरं। गुणनिधानं गोकल चन्दं। मधुसूदनं मदन मोहनं। मुरलीधर सर्व सोहनं।। ४।। मेघ श्याम मूर्ति मन भावनं। माधौ मुकन्द रामरूपं। राधावरं गोवर्धनं कर पर धरं रंगनाथं।। हृषी केशं। गुन गावत भयौ आनन्दं।। ५।। जन दास गरीब जस सुनि सुनि। लागि रही अंतरि धुनि। वासुदेव वनमाली। बृजपति प्रभु दीन बन्धू।। ६।।

अथ विज्ञान स्तोत्र

ॐशब्दो स्वरूपी अनादो अगादो, चलेमान बाजी जो उपज्या पसारा। निहचल निराकार, निर्गुण अपारा।। १।। उदासी अकासी निवासी, अलंकार आया। रूपो न रेखो न धूपो न छाया।। २।। थानो न मानो न ज्ञानो न ध्यानो। लिखता न बकता न रखता न वेदो पुरानो।। ३।। तालो न ख्यालो न मालो न मेला। उपजे न विनसे न गुरुवा न चेला।। ४।। काया न छाया न माया न मूलं। शाखा न वृक्षो न पतरो न फूलं।। ५।। वृद्धो न बाला विशाला न पीतं। निहचल निराकार रहता प्रीतम।। ६।। कर्मो न भर्मो न शंका न डरनी। लेखा अलेखा न करनी न भरनी।। ७।। जीवो न सीवो न कालो न जालो। जौंरा न जूनी न जम का न सालो।। ८।। देवी न दुर्गा न भैंरों न भूता। मसानी भवानी प्रानी न दूता।। ९।। धामो न द्वारा भंडारा पसारा न जाती। देवा न सेवा न पूजा न पाती।। १०।। शेषो महेशो गणेशो न गौरा। हंसा न बंसा न कमला न भौंरा।। ११।। ब्रह्मा न वेदो न विष्णौं न बांनी। निर्गुण निरालंब रहता बिनांनी।। १२।। कंछो न मंछो न धौलो न धरनी। स्वर्गो न मृतो पतालो न वरनी।। १३।। नादो न बिंदो न पवनो न पानी। अचल तत्त रहता निरालंब जानी।। १४।। कर्मो न धर्मो न पापो न पुन्यं शुन्यं न बसती न बसती न शुन्यं।। १५।। माला सुहंगम बिहंगम अपारी। अचल तत्तथीरं जु हलका न भारी।। १६।। नादू न तूरा न मुरली न शंखा। अभय तत्त अग है अजब देश बंका।। १७।। खाटा न मीठा न फीका न खारी। हिंदू न तुरका न पुरुषा न नारी।। १८।। खावै न पीवै न सोवै न जागै। निरंतर निराशा अचल तत्त रागै।। १९।। मौंनी न वक्ता न कथता न ज्ञानं। जापो न थापो न धरता न ध्यानं।। २०।। लेवै न देवै न खेवै न खेवा। हारै न जीतै निराकार देवा।। २१।। सेली न सींगी न मुंद्रा न कानं। करुवा न फरुवा न भेषो न बानं।। २२।। ऐसा तत्त झीना पुष्प गन्ध गलता। उठे न बैठे नहीं पंथ चलता।। २३।। कुरांनो पुरांनो नहीं साखि चर्चा। मारै न त्यारै नहीं प्राण परचा।। २४।। स्वांतो न सीपो न हंसा न मोती। अगम नूर अगहै सु झलकंत जोती।। २५।। निराकार निर्गुण निरंतर निराला। नहीं शुन्य शकित नहीं प्रेम प्याला।। २६।। सकल संग रहता सकल से नियारा। नहीं आदि अंतो अनूपो अपारा।। २७।। आवै न जावै न ध्यावै न कोहं। ऐसा तत्त चीन्हो निरालंब सोहं।। २८।। गलत नूर गैबी असंख कोटि किरणं। नाचै न काछै नहीं भेष वरणं।। २९।। थीरो गंभीरो

न इंच्छ्या अचाहीं। माता न पित्रो न बंधू न भाई।। ३०।। गावै न ध्यावै नहीं सो जमाती। मेला न चेला नहीं संग साथी।। ३१।। निरसंध नीका सकल है अवाजी। रहै ब्रह्म बीना बिलोवान बाजी।। ३२।। बाजी भंडारा पसारा न रहसी। अनुराग मेला महल भेद लहसी।। ३३।। महल भेद पाया चिताया अपारा। परम शुन्य मेला जु सत्य लोक म्हारा।। ३४।। सत्त लोक चलिये बिरह अग्नि जलिये, जलै सो निमांना। जैसे नून पानी मिला यौं बिनांनी, परम धाम जान्या।। ३५।। परम धाम पाया समाया सलेसं। गुलजार गैबी जो निहतंत नेशं।। ३६।। आशा न वासा निराशा निहकामी। अगम से अगम है जु सत्य लोक धामी।। ३७।। निरसंध नूरं जहूरं मिलाया। जहां का तहां है जु खोया न पाया।। ३८।। सप्त अंड तोरी अक्षर धाम डोरी, मक्रतार झीला। बोलै न डोलै अलल पंख हेला, ऐसा तत चीन्ह्या।। ३६।। खाखी न नूरी न सुरता न निरता। अधरि नांच नांचे बिना बांस बरता।। ४०।। गुदरी न धागा विहागा न खंथा। मांगै न सांगै नहीं भेष पंथा।। ४१।। खथ्या न संथ्या न सांचे न बांचे, जु रहता निराशा। रमता न भमता न हरषों उदासा।। ४२।। अगम रास रासी बिलासी अपारी। धोती न पोथी नहीं सो अचारी।। ४३।। अचारी विचारी भंडारी न महता। डेरा न भेरा सकल सुधि लहता।। ४४।। नहीं मृगछाला गले नाद माला, जो धूंमी न धामां। जांचै न द्वारा अखारा भंडारा न सामां।। ४५।। नहीं गोत नाती अजाती अनाथा। पढ़ावै गुनावै समांने समाता।। ४६।। गुलजार गैबी गलत है सृष्टि में, सकल सिंधि थीरं। बन्दी छोड जान्य पिछान्या, जु अदली कबीरं।। ४७।। नैंनो न बैंनो न सैंनो न सीख्या। नजरि में अजर है जु गुरु भेद दीख्या।। ४८।। दीख्या दिखाया सकल में समाया, जु गुरु भेद महली। मिले पाख दरिया अटल पीव बरिया, सकल रूह गहली।। ४६।।

दोहा :- गरीब, बिनांनी विज्ञान स्तोत्र, नेश निरन्तर थीर।
अविगत महल अगाध है, जहां तखत खवास कबीर।। ५०।।

सोहं हँसा हेरि ले, सुरति समागम कीन।
दासगरीब महल मिले, अनरागी ल्यौलीन।। ५१।।

अथ शिव स्तोत्र

महादेव देवं कैलाश वासी। जटा जूट गंगा चरण कोटि काशी।। १।। वृषभ बैल बाहन सकल शाह शाहन, उनमुनी अमोघं। उमा संगि पत्नी शंभू राजा योगं।। २।। अहो आदि माया सु देवी भवानी। पुत्र स्वामी कार्तिक गणेशो अमानी।। ३।। कल्प संख बीते उमा गौरि माई। बाबू महादेव निरालम्ब ध्याई।। ४।। निरालम्ब योगी अहो नाथ नाथा। आदिं अनादिं तुंही पिद्र माता।। ५।। कैलाश वासी महादेव देवं। मनोकामना सिद्धि शिवनाथ सेवं।। ६।। मौले मगन शम्भु निरबांन रूपं। बजर काछ कोपीन सत्यं स्वरूपं।। ७।। इन्द्री दमन दूत पैमाल कीना। अमर शम्भु योगी अकल पद अकीना।। ८।। घोरं अघोरं पचीसौं सकेला। अहो शम्भु योगी सु निर्गुण नवेला।। ६।। महाकाल कालं दयालं दयालं। तुंही धर्म धीरं सु नजरी निहालं।। १०।। कँवल कण्ठ लीलं अहो गरड़ गामी। गले रुण्डमाला परम शुन्य धामी।। ११।। घटाघोर श्यामं तुंही भूर भद्रं। अहो भूत नाथा उठावै उपद्रं।। १२।। सुरताल ख्यालं मस्त दर दिवालं, गुंजार भौंरा। उमा संगि साजै दस्त शीश चौंरा।। १३।। बाजंत कानूंन सहनाई भेरी। नाचै दिवंगना हुरंभा सु चेरी।। १४।। बाजंत बीना मधुर ताल शंखा। योगी महादेव शिवनाथ बंका।। १५।। मुरली मुक्ति रूप गरजंत सिंधं। परमहंस ध्यानं हँसै मंद मंदं।। १६।। बीना ताल बाजै, मुकट चंद्र साजे, नंदी सुर पलानां। सूरज कला कोटि त्रिशूल बानां।। १७।। झलकै बैरागर उजागर अमोलं। अजब राग रांग सो होते किलोलं।। १८।। हीरे हिरंबर कनी द्वार लालं। पदम पौरि पारस रचे मठ कमालं।। १६।। झलकंत मंदरं, कला कोटि चन्द्रं, कलवृक्ष कामा। परानंदनी द्वार पूरन सहनांना।। २०।। गुलाबास चंदन कमल शंख फूले। बरनं अबरनं समाधान झूले।। २१।। पानं अपानं उद्यानं बियानं समानं समाई। जीती धनंजै सो दत्त देव बाई।। २२।। आशा न तृष्णा न ममता न माया। निरालंब योगी कल्प कीन्ह काया।। २३।। मदन काम जारे, सकल दूत मारे, सो योगी बियोगी। आदिं अनांद महादेव सिंयोगी।। २४।। पदम कोटि झिलकै सुनों निधि निवासा। निरालंब योगी सु अठ सिधि बिलासा।। २५।। अनंत कोटि गण संगि भूता न भूतं। कमंद संख साजै जु सैना संजूतं।। २६।। आहो ब्रह्म ज्ञानी अमानी अनांद। कटैं कोटि कुश्मल जपैं संत सांध।। २७।। तुंही ब्रह्मा विष्णु तुंही मारकंडे। तुंही नाथ नारद तुंही है अखंडे।। २८।। तुंही आदि माया तुंही योग जुगता। तुंही शंभु योगी तुंही विष्णु भगता।। २६।।

तुंही डाल मूलं समाधान सारं। कल्प कोटि परलौ गई हैं अपारं।। ३०।। खपर खीर मुद्रा अमी पान पानं। चाबै धतूरा जो शंभू दिवानं।। ३१।। गले नाग बाघं अमोघं अरागं, अधर धार धारं। अहो शंभु योगी मुकित के द्वारं।। ३२।। अहो मौंन मौंनी तुंही ब्रह्म बकता। तुंही जाप थापं तुंही रूप लखता।। ३३।। चिश्म तीनि साजं, निरालंब राजं, अगम धाम सारं। ऐसे शंभु योगी, अभै पद उचारं।। ३४।। अहो ब्रह्म बीना अभै तत्त चीन्ह्या, निरालंब सोई। महादेव देवं, अजूंनी अभेवं, सो मुद्रा समोई।। ३५।।

दोहा :- संख कल्प जुग जुग अटल, अजर अमर शिव शंभु।
गरीबदास गलतान है, अविगत पद आरंभ।। ३६।।

ॐ ॐ ॐ ॐ त्रिमाल मूलं, निरबांन सोई,
अहो मूल माया, मनो काम करनी।
कला संख साजै बरनौं अबरनी।। ३७।।
भगल ख्याल साजं, रचे लोक माया।
परमानन्द ध्यानं, तुंही देव राया।। ३८।।

अथ शिव की आरती

हरि नागेशा हरि भूतेशा,
उज्जल उत्तम लांवन, क्रपन दीप हर हर जै महादेव,
भजि शंभु साहिब ॐकारा। गंग बहै जट बौह धारा।। १।।
रिद्धि सिद्धि के दाता दानी। सिर चौंर करै गौरिज रानी।। २।।
कार्तिक स्वामि गणेश गता। धन्य धन्य शंभु आगाध मता।। ३।।
वृषभ बैल बाहन जाका। त्रिशूलं है त्रिशाखा।। ४।।
डौरूला अनहद बाजे। सेव करैं संखौं राजै।। ५।।
चंद्र लिलाट दिपै देवा। गण गंधर्व कर हैं सेवा।। ६।।
सर्प गले गति रुण्ड माला। संगि तपै गौरिज बाला।। ७।।
रुण्ड मालारमता रामं। गौरिज पठई है निज धांम।। ८।।
अगर नाद पद निर्मोही। हरि शुन्य सिला शंभू सोई।। ९।।
शुकदेव सिंध समोईला। पद अमर सुनें भ्रम खोईला।। १०।।
शिव द्वारा तपै एक नारीला। पद गोरख नाद उचारीला।। ११।।
जटाजूट योगी जुगता। तन लाय रहे भसमी भूता।। १२।।
को जानैं शंभू लीला। शिव आक धतूरे चाबीला।। १३।।
दांमनि दंत खिमैं धारा। घनघोर घटा घन हर कारा।। १४।।
रिमिझिमि रंग अजब रंगी। धन्य धन्य शंभू, जै जै शंभू,
तूं त्रिभंगी।। १५।।

चौथा पद प्रकाशीला। शिव तुरिया पद के बासीला।। १६।।
पुरिया पद में प्रवाना। शिव दरश परस उनमन ध्याना।। १७।।
अगर अलील अलल मोरा। अगम निगम शिव का डोरा।। १८।।
कुण्डल नाभि कँवल काया। धन्य शिव योगी जीती माया।। १६।।
अगर मालवै मन मनी। बाजे बाजैं निज सहदानी।। २०।।
कौस्तुभमणि कुरबांन कला।
धन्य धन्य शंभू, जै जै शंभू, तूं अबल बला।। २१।।
तीन शिचम तन साजीला। कोटि जुगां एक पल में जाईला।। २२।।
आसन अजर बजर तेरा। गगन मण्डल शंभू डेरा।। २३।।
धन्य धन्य शंभू शिव कैलाशी। जहां कोटि चरण गंगा काशी।। २४।।
कोटि कर्म कुश्मल धोई। हरि नीलकण्ठ शिव निर्मोही।। २५।।
पीतंबर गति गरुड धजा। बाघम्बर तन खूब सज्या।। २६।।
सींगी नाद बजै नीका। राग बिरह जीवन जीका।। २७।।
अलगोजे तुरही नादू। जहां ध्यान धरै संखौं साधू।। २८।।
ताल मृदंग बजैं बीनां। मुरली की गति अति झीनां।। २६।।
भसम भूत भैरों ध्यावैं। कोटि कोटि गंधर्व गावैं।। ३०।।
सेवत हैं दानें दूता। धन्य धन्य शंभू, जै जै शंभू, तूं अनभूता।। ३१।।
इन्द्र कुबेर वरुण ध्यावैं। सनकादिक नारद गावैं।। ३२।।
ब्रह्मा विष्णु हैं अंग तेरा। तेतीसौं नांचै चेरा।। ३३।।
सुर नर मुनि गण गंधर्व मेला। तीनि लोक शिव का चेला।। ३४।।
खपर खीर मुंद्रा माया। तीनि लोक शंभू गाया।। ३५।।
रिध्दि सिध्दि का दाता पूरा। जहां कोटि कला बाजैं तूरा।। ३६।।
बेल पत्र बाला रीझै। लिंग पूजा शिव की कीजै।। ३७।।
बीज बिंद शिव निहकामी। यौं लिंग पूजा है निज धामी।। ३८।।
निरालंब निरबांनीला। शिव तन मन धन कुरबानीला।। ३६।।
अष्ट सिध्दि नव निधि दासीला।
शिव अनभय पद प्रकाशीला।। ४०।।
सुरति सुहंगम सैलानी। शिव जुगन जुगन दाता दानी।। ४१।।
मोक्ष मुकित पद महमंता। शिव भक्ति मुकित शाखा संथ्या।। ४२।।
अक्षय वृक्ष पद नागीला। शिव समाधान अनरागीला।। ४३।।
शंख तूर हैं दरबानी। जहां ध्यान धरें शिव सैलांनी।। ४४।।
शंख पदम उजियारीला। जहां शिव योगी पद तारीला।। ४५।।
गरीबदास कुरंबानी जाँव। शिव जुगन जुगन जपि अजपा नाम।। ४६।।

अथ अन्नदेव की बड़ी आरती

आरती अन्नदेव तुम्हारी। सुरनर मुनिजन अन्न के हारी।। १।।
तेतीस कोटि करत हैं आशा। अन्न जल संयम पूर्ण श्वासा।। २।।
अनंत कोटि वैष्णव धुनि गावैं। अन्न पुरुष का भोग लगावैं।। ३।।
वाशिष्ठ विश्वामित्र व्यासा। अन्नदेव की कर हैं आशा।। ४।।
मारकण्ड लोमष ऋषि लाहा। अन्नदेव का बड़ा उमाहा।। ५।।
पुण्डरीक पाराशर परसैं। अन्नदेव कूँ नित उठि चरचैं।। ६।।
शेष महेश गणेशर गौरा। अन्नदेव कूँ पावे भौंरा।। ७।।
सिंभु मुनि पीबरत उतांनं। ध्रुव प्रहलाद अन्न कुरबांनं।। ८।।
कागभुशंड अन्न की आशा। पुरुष विदेही शब्द निवासा।। ९।।
चौसठ योगनि बावन बीरा। अन्न कूँ पावैं नाम कबीरा।। १०।।
अन्न भोगैं बाजीद फरीदा। अन्न बिन कमल न होवै सीधा।। ११।।
जदि सुंनही कूँ भोजन दीन्हा। दीदार हुये बाजीद अकीना।। १२।।
जल प्रकाश चरण का चेरा। अन्न देव सब मांहि बडेरा।। १३।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तांई। अन्न की महिमा करत गुसांईं।। १४।।
ऊँ सोहं अन्न का रासा। अन्न खाये बिन खण्ड है श्वासा।। १५।।
अन्नदेव सबहन से ऊंचा। सकल जूनि में अन्न ही सूचा।। १६।।
अन्न ही काया अन्न की माया। अन्न ही सर्व लोक में राया।। १७।।
अन्न ही दाता अन्न ही भुगता। सर्व लोक में अन्न ही जुगता।। १८।।
अन्न ही माता अन्न ही पिता। अन्न ही मेटत है सब विथा।। १९।।
अन्न ही प्राण पुरुष आधारं। अन्न से खूल्हें ब्रह्मद्वारं।। २०।।
अन्न ही आत्म जीव संगाती। अन्न ही पूजा अन्न ही पाती।। २१।।
अन्न की कथा कीर्तन लीला। अन्न ही की सब होत करीला।। २२।।
अन्न देव तूं बड़ा दयालं। अन्न से टूटै जम के जालं।। २३।।
अन्न देव कुरबांनी जाऊँ। अन्न की महिमा कहां लग गाऊँ।। २४।।
अन्न कूँ सनक सनंदन पावैं। अन्न कूँ नारद मुनि से ध्यावैं।। २५।।
अन्न कूँ मार्कण्ड से भोग। अन्न बिन फीका है सब योगं।। २६।।
अन्न कूँ दुर्वासा प्रमोधैं। अन्न कूँ सहंस अठासी सोधैं।। २७।।
अन्न तो कृष्णदेव कूँ पाया। तीन लोक भये त्रिपति राया।। २८।।
अन्न बिन कंपैं चौदह भुवनं। अन्न बिन एक पलक नहीं गमनं।। २९।।
अन्न का स्वर्ग लोक में झण्डा। अन्न है पूर्ण नौऊँ खण्डा।। ३०।।
अन्न खाये से आनंद होई। अन्न बिन चौदह लोक बिगोई।। ३१।।
अन्न की आशा इन्द्र करहीं। छयानवैं कोटि मेघ रस झरहीं।। ३२।।
अन्न जल संयम करै कुमेरं। अन्न कूँ भोगैं वरुण सुमेरं।। ३३।।
अन्न की इच्छा करैं धर्मराया। अन्न बिन तृप्त होय नहीं काया।। ३४।।

अन्न की महिमा अगम अपारा। अन्न हे प्राण पुरुष आधारा।। ३५।।
अन्न है राजिक राम सरीखा। सर्व देव दे अन्न कै टीका।। ३६।।
लाख यज्ञ जो मरुत करांही। तीन लोक तिस चरण बंधाही।। ३७।।
कनक पत्र दे दान सुराही। बिंजन भोजन रुचि रुचि खांही।। ३८।।
मरुत राजा गये साहिब धामं। देखो अन्नदेव के कामं।। ३६।।
ब्रह्मा कूँ यज्ञ दान चलाया। तीन लोक में प्रगट राया।। ४०।।
स्वर्ग मृत्यु पताल विशेषं। अन्न दान समतुल नहीं लेखं।। ४१।।
अन्न पुरुष साहिब अविनाशी। तोरे दर्श कट हैं जम फांसी।। ४२।।
षट् दलीप दई जगि जौंनारा। उभै महूरति पद गुप्तारा।। ४३।।
सौ अश्वमेध यज्ञ बिलराया। जाके द्वारे बावन आया।। ४४।।
तीन लोक त्रिपैण्ड करांही। बलि कूँ छलि पाताल पठांही।। ४५।।
यज्ञ का दान रह्या नहीं छाना। बलि द्वारे बावन निर्वाना।। ४६।।
अन्नदेव तूं अलख दयालं। तोरे पलडै तुलैं न लालं।। ४७।।
अन्नदेव तूं जगमग ज्योती। तोरे पलड़े तुलै न मोती।। ४८।।
क्षुधा तृषा मेटै पीरा। तौरे पलड़ै तुलै न हीरा।। ४६।।
बैरागर किस काम न आवै। अन्नदेव तो सब मन भावै।। ५०।।
बैरागर है पत्थर भारी। अन्नदेव तूं आप मुरारी।। ५१।।
कनक अशरफी रोक रुपईया। अन्न बिना क्यूं जीवे दईया।। ५२।।
सात धातु का पीर अनादं। अन्न पुरुष कीजे प्रसादं।। ५३।।
घोड़ा जोड़ा जब ही भावै। अन्न पुरुष प्रसाद लगावै।। ५४।।
पोथी पतरा विद्या ज्ञानं। अन्न पुरुष बिन कैसा ध्यानं।। ५५।।
ब्याह काज होवै किस भांती। अन्नदेव के गोत्र नाती।। ५६।।
अन्नदेव का सकल पसारा। अन्न बिन नाहीं यज्ञ जौंनारा।। ५७।।
अन्न समान देव नहीं दूजा। साहिब चरण कमल की पूजा।। ५८।।
अन्न के बाजत हैं सब तूरा। अन्न का तीनों लोक जहूरा।। ५६।।
सौंधा झनवा नरमा नूरी। बासमती बीनों कस्तूरी।। ६०।।
सक्कर चीनी कमल कमोदं। इसता माली का प्रमोधं।। ६१।।
सुनखर जीरा राम कहावै। धौलू धारा सब मन भावै।। ६२।।
कली जुवाहर झीना जोती। साठी बगड़ि रु मूंजी होती।। ६३।।
सरसुख दास पत्र परबीना। यौह चावल रासा धर दीना।। ६४।।
गेहूँ कणक उभै दरबारा। दावद खानी लाल पियारा।। ६५।।
जौं और जई कहावैं दोई। राजा कनक छत्रपति सोई।। ६६।।
मोठ मूंग चौंले की फलियां। ज्यूं चंपे कै लागी कलियां।। ६७।।
एक हरी एक काली मूंगा। सूवा पंखी बन के लूंगा।। ६८।।
जगन्नाथ की जाति जवारं। अलाप्री और मघा विचारं।। ६६।।

बलम बाकूसी तीजी बरनौं। चौथी बासमती दिल धरनौं।। ७०।।
काले उड़द चलाका भाई। जिनकूँ तिलक दिया रघुराई।। ७१।।
उड़दी का अधिकार अनूपा। जाका तीमन होत स्वरूपा।। ७२।।
लंबे मुख बाजरिया वानी। जाका भोजन करै प्राणी।। ७३।।
मकई मक्का दो प्रबीनां। पड़दें की बीबी रस भीनां।। ७४।।
मटर मसूर और चीनां कोदौं। मंडुवा कंगनी सब ही शोधौं।। ७५।।
कूरी सामक खड़ खैराती। ये हैं अन्नदेव के नाती।। ७६।।
चणा चक्रवर्ती है सेठं। कोठे सदा संपूरन लेटं।। ७७।।
छत्तीसौं बिंजन कहलावैं। आत्मदेवा भोग लगावैं।। ७८।।
अब रस गोरस का सुनों बियाना। खीर खाण्ड साहिब दरबाना।। ७९।।
मोहन भोग मानसी पूजा। मेवा मिसरी का है कूजा।। ८०।।
लड्डू जलेबी लाड कचौरी। खुरमे भोगैं आत्म बौरी।। ८१।।
दही बड़े नुकती प्रसादं। पूरी मांडे आदि अनादं।। ८२।।
धोवा दाल मुनक्का दाखं। गिरी छुहारे मेवा भाखं।। ८३।।
निमक नून और घृत कहावै। दूध दही तो सब मन भावै।। ८४।।
शक्कर गुड़ की होत पंजीरी। मांहि जमायन घालैं पीरी।। ८५।।
जीरा हींग मिरच होंहि लाला। जब यौह कहिये अजब मसाला।। ८६।।
छाहि छकनिया चिन्तामणी। गोरस पिया त्रिभुवन धणी।। ८७।।
पापड़ बीनि मसाले मारे। छत्तीसौं बिंजन अधिकारे।। ८८।।
सहत आंब नींबू नौरंगी। बदरी बेरं तूत सिरंगी।। ८९।।
येता भोग भुगावै कोई। परमात्म के चढ़ै रसोई।। ९०।।
दास गरीब अन्न की महिमा। तीन लोक में जाका रहमा।। ९१।।

अथ अन्नदेव की छोटी आरती

आरती अन्न देव तुम्हारी। जासे काया पलै हमारी।।
रोटी आदि रु रोटी अन्त। रोटी ही कूँ गावैं संत।। १।।
रोटी मध्य सिद्धि सब साध। रोटी देवा अगम अगाध।।
रोटी ही के बाजैं तूर। रोटी अनंत लोक भरपूर।। २।।
रोटी ही के राटारंभं रोटी ही के हैं रण खंभ।।
रावण मांगन गया चूंन। तांते लंक भई बेरूंन।। ३।।
मांडी बाजी खेलैं जूवा। रोटी ही पर कैरों पांडौं मूवा।।
रोटी पूजा आत्मदेव। रोटी ही परमात्म सेवं।। ४।।
रोटी ही के हैं सब रंग। रोटी बिना न जीतै जंग।।
रोटी मांगी गोरखनाथ। रोटी बिना न चलै जमात।। ५।।
रोटी कृष्ण देव कूँ पाई। सहंस अठासी की क्षुधा मिटाई।।

तंदुल बिप्र कूँ दीये देख। रची सुदामा पुरी अलेख।। ६।।
आधीन विदुर के भोजन पाई। कैरों बूडे मान बड़ाई।।
मान बड़ाई से हैं दूर। आजिज के हैं सदा हजूर।। ७।।
बूक बाकले दिये विचार। भये चकवे कई एक बार।।
बीठ्ठल हो कर रोटी पाई। नाम देव की कला बधाई।। ८।।
धन्ना भक्त कूँ दीया बीज। जाका खेत निपाया रीझ।।
द्रुपद सुता कूँ दीये लीर। जाके अनंत बधाये चीर।। ९।।
रोटी चार भारिजा घालीं नरसीला की हुण्डी झाली।।
सावल साह सदा का सही। जाकी हुंडी तत पर लई।। १०।।
जड़ कूँ दूध पिलाया जान। पूजा खाय गये पाषाण।।
बलि कूँ यज्ञ रची अवश्मेध। बावन होकर आये उमेद।। ११।।
तीन पैंड यज्ञ दीया दान। बावन कूँ बलि छले निदान।।
नित बुनि कपड़ा देते भाई। जाके नौ लख बालदि आई।। १२।।
अविगत केशव नाम कबीर। तांते टूटैं जम जंजीर।।
रोटी तिबरलंग कूँ दीनी। तांते सात पादशाही लीनी।। १३।।
रोटी ही के राज रु पाट। रोटी ही के हैं गज ठाठ।।
रोटी माता रोटी पिता। रोटी काटै सब ही बिथा।। १४।।
दासगरीब कहै दरवेशा। रोटी बांटो सदा हमेशा।। १५।।

अथ आदि माया की आरती

ॐ आदि मूल महतारी। सोहं पिता शंख भुजधारी।।
कृतम किया पुरुष आरंभा। नीचे नीम शकित कूरंभा।। १।।
नाभि कँवल तिहूँ देवा आये। ब्रह्मा विष्णु महेश उपाये।।
युग छत्तीस कल्प जहां जांही। नाभि कँवल की खबर न पाई।। २।।
ॐ माया आदि कुमारी। तीनों देव रचे त्रिपुरारी।।
कोटि किरण ऐसा तिस अंगा। ब्रह्मा पूछत है प्रसंगा।। ३।।
हे माता तूं आदि कुमारी। कौन पुरुष किस की तूं नारी।।
बोलै माया आदि अनादं। मात पुत्र का ज्ञान संबादं।। ४।।
संख कल्प युग बीते भाई। जा दिन की हम कथा सुनाई।।
पुरुष पुरातम साहिब सेवा। जाकी कल्प भये तिहूँ देवा।। ५।।
ज्ञान ध्यान के पूरे पूता। आपा खोजि चीन्ह अवधूता।।
मेरे जूंनि जन्म नहीं काया। मैं हूँ आदि पुरुष की माया।। ६।।
शब्द स्वरूपी रूप नवेला। हमरे हुकम भये तिहूँ चेला।।
मैं माया महमंत अनादं। हम ही सेती सिद्ध और साधं।। ७।।
अलख पुरुष अविनाशी योगी। आदि अनादिं है रस भोगी।।

अधर अधार रहै निर्बानी। संख कल्प युग गये बिहांनी।। ८।।
खान पान इच्छा नहीं आशा। गगन मंडल में जाका वासा।।
आसन असतल ना मठ मेला। जाके संग गुरु नहीं चेला।। ९।।
अनन्य रूप नारायण स्वामी। अचल अडोल रहत निज धामी।।
संख भुजा और संखौं किरणं। अविगत साहिब अविचल वरणं।। १०।।
जाकी महिमा कही न जाई। गुण गावत हूँ तिल समाराई।।
संख किरण झिलमिल झलकंता। मैं दिखलाऊँ साहिब कंता।। ११।।
नगन मगन मौनी महबूबं। देखो सूरति मूरति खूबं।।
कोटि गंग चरणों की धारा। कँवल कँवल दर छूटैं फुहारा।। १२।।
जैसा नाभि कँवल यौह चीन्हा। ऐसे शंख कँवल प्रवीना।।
नाभि कँवल में ब्रह्मा विष्णं। शम्भू योग करत हे असनं।। १३।।
बौह माया काहे दिखलाऊँ। सुन पुत्र लघु कथा सनाऊँ।।
मैं हूँ आदि पुरुष की चेरी। बचन बंध हो खुल्हैं अंधेरी।। १४।।
कँवल नैंन नारायण स्वमी। घट घट बोले अन्तर्यामी।।
जाकी महिमा क्या विस्तारूं। खेलत है सो अधर अधारूं।। १५।।
संख ध्वजा फरकत फरकानी। पचरंग झण्डे आदि निशानी।।
तंबू श्वेत सकल सुर सैंना। माया बोलत है निज बैंना।। १६।।
लाल अटारी पुरुष कनाता। यौं ब्रह्मा से भाख्र्या माता।।
वचन विनोद कहे नहीं जांहीं। वै सुख विलसे ता बलि जांहीं।। १७।।
सुनो पुत्र एक गुप्त कहानी। निज गायत्री बोलै वाणी।।
ॐ आदि जुगादि जुगादं। सुनौं पुत्र यौह निज प्रसादं।। १८।।
ॐ मूल मंत्र प्रकाशा। देख्या ब्रह्मा अजब तमासा।।
सैना संख गगन गैंनारा। ब्रह्मा विष्णु वार नहीं पारा।। १९।।
करि पुत्र यौह दीठ अदीठा। जाके परे ब्रह्म रस मीठा।।
कली कली ब्रह्मा त्रिपुरारी। संखौं मूर्ति पल में धारी।। २०।।
झीना पंथ कंत कुरबाना। जदि ब्रह्मा कूँ धरे ध्याना।।
अधर अवाज हुई तिस बारी। ध्यान धरे ब्रह्मा त्रिपुरारी।। २१।।
तपो तपो कर वचन सुनाया। लोक रचो बल मेरी माया।।
कौन पुरुष तुम्हारा क्या नामं। आसन असतल कहिये धामं।। २२।।
गह गह रूप हुई एक वाणी। सकल चक्र खूल्हे ब्रह्म ज्ञानी।।
लील अलील वर्ण नहीं भेषा। ब्रह्मा के मन भया अंदेशा।। २३।।
मगन रूप निर्बानी नादं। वाणी बोले अ गम अगाधं।।
खीर समुंद्र जावो ब्रह्मा। मानों बचन सुनों निज धर्मा।। २४।।
यहां का आगम वहां जा पावो। शेषा रूप चरण ल्यौ लावो।।
माता के रहो आज्ञाकारी। सेवो आदि पुरुष बनवारी।। २५।।

जद ब्रह्मा गये क्षीर समुंद्रं। फटि गये भ्रूम कर्म के बद्रं।।
चरण कँवल की महिमा गाई। शेष सहंस फुनि कथा सुनाई।। २६।।
सकल रूप एक फरद फराका। लख चौरासी बोलत भाषा।।
आये ब्रह्मा जननी पासा। त्रिभंगी तन कीन्ह तमासा।। २७।।
सुनि पुत्र एक कथा हमारी। ब्रह्मा विष्णु महेश भंडारी।।
मैं नागनि नारायण दासी। अपने जाये आप ही खासी।। २८।।
भक्षण करूँ गर्भ गति जूंनी। उलटा तार समोऊँ पूंनी।।
मोकूँ बरो हुकम कर दीन्हा। आदि पुरुष कूँ यौह बर दीन्हा।। २९।।
सुनि त्रिपुरारी कीन्ह अंदेशा। हे माता यौह जीवन नेशा।।
माता नारि पुत्र की होई। हे जननी यौह कहां अघ धोई।। ३०।।
त्रिभंगी है रूप हमारा। यौह बाहन मेटो बिस्तारा।।
ब्रह्मा विष्णु ईश हैं बौरा। सावित्री लक्ष्मी भई गौरा।। ३१।।
यौह त्रिभंगी रूप दिखाया। ब्रह्मा विष्णु ईश भरमाया।।
ब्याह कर्म कीया त्रिपुरारी। शाखा लेत आदि महतारी।। ३२।।
ॐ शब्द मांड एक मांडी। यौह प्रपंच किया एक रांडी।।
ऐसी कल्प करो अवधूता। माँ के खसम क माँ के पूता।। ३३।।
बौले शिव शंकर सैलानी। सुन माता एक आदि कहानी।।
शब्दै आदि रु शब्दै अंतं। शब्दैं मध्य मूल निज तंतं।। ३४।।
शब्दै मादर शब्दै पिदरं। शब्दै पुत्र रचे हैं अधरं।।
हम चेला हैं शब्द स्वरूपा। काहे परैं अंध गृह कूपा।। ३५।।
यौह भग भोग मथन महमंता। या रस के हैं बड़े बड़े दंता।।
जो भोगै सो भग में आवै। सुनि माता क्या ज्ञान सुनावै।। ३६।।
बोलै माता बचन विनोंद। सुनि पुत्र एक ज्ञान समोधं।।
ऐसा मूल मंत्र गौहराऊँ। भग भोगत पद पदै समाऊँ।। ३७।।
हे माता याह साच कहानी। तुम हो आदि पुरुष की रानी।।
तुम माता वै पिता हमारे। भोगी जन्म कर्म सब हारे।। ३८।।
सुनि जननी यौह संग बिगूता। पैठत खसम निकसते पूता।।
कैसे मुनिजन संग्रह करहीं। काल कर्म से देवा डरहीं।। ३९।।
काल कर्म नहीं लागे छोती। ॐ गायत्री पढ़ि पोथी।।
ऐसा बनज करूं नहीं माता। भग भोगे कछु भिन्न न भांता।। ४०।।
शंख कल्प कैलास तपूंगा। सुनि माता मैं तोहि जपूंगा।।
हे माता यौह बहु विधि भारा। कली कली पर रूप तुम्हारा।। ४१।।
भग भोगैं सो भग में आवैं। जूंनी जीव मोक्ष नहीं पावैं।।
शिव शंकर यौह ज्ञान सुनाया। शंख कल्प युग राखूं काया।। ४२।।
जैसा आऊँ तैसा जाऊँ। सुनि माता पद पदहिं समाऊँ।।

रीझी आदि पुरुष की माया। धन्य शंकर सैलानी राया।। ४३।।
रचे कच्छ मच्छ कुरंभा। धौल धरणि शाखा अठ खंभा।।
गिरिवर मेरु और सागर सिरजे। अष्टकुली धरणी में दरजे।। ४४।।
चन्द्र सूर तारायण तेजं। लोका लोक अधर पर सेजं।।
सप्तपुरी वैकुण्ठ बिलासा। इन्द्र कुबेर वरुण प्रकाशा।। ४५।।
चौदह कोटि दूत धर्मराय। चित्रगुप्त की लेखनि आया।।
अठार भार बन माल बिनानी। च्यार अण्ड की च्यारों खानी।। ४६।।
गण गंधर्व एक मुनियर मेला। सहंस अठासी नाद सकेला।।
तेतीस कोटि देव की संज्ञा। सिद्ध चोरासी शब्द बिहंगा।। ४७।।
पांच तत्त का कीन्ह पसारा। पिण्ड ब्रह्मण्ड रचे कर्तारा।।
सकल जूनि जल थल सिरजाही। ब्रह्मा विष्णु महेश उपाही।। ४४।।
नाद बिन्दु का सकल पसारा। यौह बावन अक्षर विस्तारा।।
निःअक्षर सो गोप रहाई। निश्चल पुरुष निरञ्जन सांईं।। ४६।।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड समूलं। चरण कँवल में सब अस्थूलं।।
ॐ सोहं सार संदेशा। मानों सतगुरु का उपदेशा।। ४०।।
यौही मादर यौही पिदर प्राणी। यौही आदि यौही अंत निदानी।।
यौही मध्य प्रसिद्ध अजूनी। जप तप संजम ध्यान की धूंनी।। ५१।।
राजा पाट गज ठाठ फकीरी। बिना बंदगी झूठी चीरी।।
क्या जारा क्या प्रजा होई। धणी भक्ति बिन जन्म बिगोई।। ५२।।
दास गरीब नाम एक नीका। योग यज्ञ जप तप का टीका।। ५३।।

अथ माया का ग्रन्थ

ब्रह्म जोगिनी जालिम दूती। सुर नर मुनि जन खाय बिगूती।।
दोनूं दीन चले दे धाही। षट दर्शन की ठौर नर पाई।। १।।
पंडित पकड़ि चौपटे लीन्हें। काजी के सिर बोझे दीन्हें।।
कुतब गौस सब गलत गुजारी। मारे मुल्लां बंग पुकारी।। २।।
पीर मैगम्बर राहि चलाये। गुरजौं मारि त्रिगुण डहकाये।।
जालिम योगनि ऐसा कीन्हा। मुहंमद का सब मजहब छींना।। ३।।
नेम नमाज करैं थे रोजा। जिनके कहीं न पाये खोजा।।
मारे विरक्त ब्रह्म आचारी। धाम पुजाये सिर धरि खारी।। ४।।
जिन सिर जटा बहुत थी लम्बी। मारे नागा मुनियर बंबी।।
चुंडित मुंडित सबै सिंघारे। जो धूमी पांच लगावत हारे।। ५।।
उर्ध्व मुखी मारे बहु मौनी। भवसागर आये फिर जूंनी।।
मारे बनखण्डी निरवानी। सिर धरि शीश ढुवाये पानी।। ६।।
ज्ञानी गुणी मुनी बहु मोहे। दौंह पाटौं बिच मीहीं झोये।।

मारे विरक्त ब्रह्म ज्ञानी। बहुरि परे हैं चारौं खानी।। ७।।
ऊदासी मारे निर्मोही। पकड़ि चौपटे धोवटि धोई।।
उनमन रहते रखते काया। जिन कूँ धक्के दीन्हें माया।। ८।।
त्रिकाली करते अस्नाना। ते नर कीनें शूकर श्वाना।।
जो नर अंग लगावत छारा। ते आने त्रिगुण व्यवहारा।। ९।।
मारे च्यारौं वयेद बकंता। जो नर अठारह पुराण कथंता।।
जिनके कानौं मुंद्रा भरी। ते योगनि कीन्हे घरबारी।। १०।।
सींगी नाद राखते फरुवा। ते योगनि कूँ कीनें भडुवा।।
शुन्य मंडल में रखते ताली। जिन कूँ योगनि ल्याई जाली।। ११।।
नखी निराशा रहते योगी। ते नर कीन्हें पकड़ि संयोगी।।
जिन चौरासी आसन कीनें। ते नर पकड़ि फैंखड़े दीनें।। १२।।
दूती दुर्मति नकटी दारी। मारे योगी ब्रह्म खिलारी।।
जो वज्र कसौटी रखते देहा। जिनके सिर पर डारी खेहा।। १३।।
जती सती सब गलत किये हैं रहते सहते सबै लिये हैं।।
मारे शेख भेष बैरागी। सूते भेष योगनी जागी।। १४।।
मारे मुनियर गल दे फांसीं जो गीता पढ़ि आये काशी।।
अंधे बहरे राह चलाये। गलत किये सो बहुरि न आये।। १५।।
इन्द्री जीत रीति कर डारे। जिनके मौंहडे कीने कारे।।
चुंडित मुंडित गुफा अधारी। जिन कूँ योगनि लागी प्यारी।। १६।।
नांगा नग्न रहैं बन मांही। सो दोजिख की राह चलांही।।
बन बसती के सब ही मारे। धर्मराय की नगरी डारे।। १७।।
गये रसातल राह न पाये। जम की जाली जीव बंधाये।।
पंथी पंथ न पावै कोऊ। दुरलभ देश दूर घर भेऊ।। १८।।
मारे भेष विवेक भुलाने। सबै जोगिनी सेवक ठांनें।।
चौदह लोक पड़े जम जाला। दुर्मति योगनि रूप विशाला।। १९।।
तीन लोक जिन चुनि चुनि खाये। चौदह तबक सबै डहकाये।।
ब्रह्मंड इकीसौं शोर सराबा। मुगदर मार गुरजि बहुराबा।। २०।।
कौंम छत्तीस रीति सब दुनियां। योगनि छत्रपती बड़ हनियां।।
अनाथ जीव की कौन चलावै। योद्धा भूप लिये बड़दावै।। २१।।
होते दुर्योधन से राजा। जिस घर घुरते अनगिन बाजा।।
होते वीर इकोतर भाई। ग्यारह क्षूहनि की ठुकराई।। २२।।
चौसठ योगनि बावन बीरा। जिनके खप्पर भरे न थीरा।।
पंडौं डोबे पकर हिमाले। अठारह क्षूहनि खाई काले।। २३।।
चकवै छत्रपती बहु साजा। जिनके उदय अस्त बिच राजा।।
ब्रह्म जोगिनी सब डहकाये। जिनके गाम ठाम नहीं पाये।। २४।।

हिरनाकुश थे राम सरीखा। जिन अपना नाम चलाया टीका।।
वैसे जम जौंरा नें लूटे। उदर बिनाश किये घट फूटे।। २५।।
मथुरापुरी राज थे कंसा। जिन के कहीं न पाये बंसा।।
सहस्राबाह गाह ज्यूं डोबे। फरश्यौं मारि रक्त तन झोबे।। २६।।
जरासंध बहु जोर जमाये। पकड़ि टांग तन चीर बगाये।।
बालि काल कूँ दिया झपेटा। चानौरा से मारे फैटा।। २७।।
रावण छत्रपती थे राजा। सुरनर मुनिजन जिस घर साजा।।
योधा जुलमी बहु विधि आकी। कोटि तेतीस बंधि थे जाकी।। २८।।
कुंभकर्ण से होते बीरा। सवा लाख नाती संगि थीरा।।
एक लख पूत दूत संग भारी। सात समुंद्र लंका धारी।। २६।।
उटपट किये लंक जदि लूटी। दस खप्पर रावण के फुटी।।
कृष्ण गुरु दुर्वासा लूटे। मनसा भँवर कुचौं पर छूटे।। ३०।।
श्रृंगी ऋषि कूँ सार चबाये। नारद पूत बहत्तर जाये।।
कामदेव दगदे बहु गाता। पारा ऋषि पुत्री संग राता।। ३१।।
उद्दालक मुनि ऐसा कीन्हा। जिन योगनि संग संगम कीन्हा।।
रामचंद्र होते अवतारी। जिनकी दूत्र ले गया नारी।। ३२।।
दुर्मति दूती बहुत बढ़ाई। सुर असुरन की राडि मंडाई।।
जिन इन्द्रपुरी के असतल लूटे। गुरजौं मारि रसातल कूटे।। ३३।।
गुरु मछंदर लूटे लोई। रस कुस पीया डारी छोई।।
कच्छ देश में गोरख हेरे। हम संग सिद्धा लीजै फेरे।। ३४।।
गोरख कहै सुनो री दूती। हम योगी निर्गुण अवधूती।।
हम योगी जुगता ब्रह्मज्ञानी। पूर्ण ब्रह्म अलख निर्बानी।। ३५।।
गुरुवा की तो छार उड़ाई। तुम चेला किस रहो सहाई।।
दगधौं गात धातु कूँ सोखूं। नौलह घाटी पारा रोकूँ।। ३६।।
उलटा बिन्दु चलाऊँ पारा। हम योगी पूर्ण कर्तारा।।
यज्ञ रची जदि पंडौ राजा। नौ नाथौं नहीं नादू बाज्या।। ३७।।
चौरासी सिद्ध रिद्धि सब मोहे। पूर्ण ब्रह्म ध्यान नहीं जोहे।।
कोटि तेतीस यज्ञ के मांही। सुरनर मुनिजन गिनती नांही।। ३८।।
छप्पन कोटि जहां थे जादौं। जिनसैं नांही बाजे नादौं।।
अरबौं बकता वेद उचारी। ना भई यज्ञ संपूर्ण सारी।। ३६।।
षट् दर्शन की गिनती नांही। अनाथ जीव जीमैं बहु मांहीं।।
सुरनर मुनिजन तपा सन्यासी। दण्डी विरक्त बहुत उदासी।। ४०।।
कामधेनु कल्प वृक्ष ही ल्याये। तीन लोक के सुरनर आये।।
पांचौं पांडव कृष्ण शरीरा। जिन से यज्ञ भई नहीं थीरा।। ४१।।
एक बालनीक नीचे कुल साधू। जिन शंख पञ्चायन पूरे नादू।।

ये और गिनो माया के पूता। ब्रह्म योगनी सब ही धूता।। ४२।।
चंद्र सूर के केतक साई। जिन आगे ये बड़े गदाई।।
नूरी दीपक धरे चिरागा। काल कर्म जिन कूँ उठि लागा।। ४३।।
नूरी अंग बिनशि है भाई। माटी के किस गिनती मांही।।
ऐसे भ्रम न भुलो लोई। उनकी ओट न उबरै कोई।। ४४।।
यादव छप्पन कोटि सिंघार। करी ठगौरी छिंन में मारे।।
पांच तत्त त्रिगुण की पूनी। आये ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जूनी।। ४५।।
अठ सिध्दि नौ निधि मन के पोये। जा पर ब्रह्मा विष्णु महेश्वर रोये।।
नौ अवतार पार ना पाये। ब्रह्म जोगिनी सब डहकाये।। ४६।।
कृष्ण विष्णु कन्हवां भगवाना। ब्रह्म जोगिनी संग खिलाना।।
चौदह लोक रसातल कूटे। कोई गुरु मुख साधू बिरले छूटे।। ४७।।
जम किंकर के धाम नरेशा। षट दर्शन के बंधे केशा।।
विष्णुपुरी लुटि है विधि भारी। जहां चंदा बदनी कामिनी नारी।। ४८।।
भोग बिलास करैं जहां प्राणी। बहुरि परैं हैं चारौं खानी।।
शिवपुर लुटैं कुटैं बहु भांती। जम किंकर तोड़त है छाती।। ४९।।
ब्रह्म पुरी में शोक संतापं। जहां हम देखे बहुत विलापं।।
कुबेरपुरी में जौंरा कालं। जहां जोगिनी गावैं ख्यालं।। ५०।।
जम की नगरी बहु विधि जोरा। जम किंकर गुरज्यों सिर फोरा।।
वरुण नगर में नांचै बीरं। जहां कोई जीव न देखे थीरं।। ५१।।
लोक पाल में लूट परी है। जोगिनी फांसी लिये खरी है।।
स्वर्ग वैकुण्ठ मठ सब लूटे। बहिश्त बीच थे सो नहीं छूटे।। ५२।।
ब्रह्मण्ड इकीसौं आग लगी है। कृतिम बाजी सबै ठगी है।।
सप्त पुरी में सूतक देखा। ब्रह्म जोगिनी का सब लेखा।। ५३।।
स्वर्ग मृत्यु पातालं लूटे। नाद बिन्दू धरि सब ही कूटे।।
तीन लोक की गुदरी लूटी। कबीर गुंसाईं माया कूटी।। ५४।।
बहिश्त वैकुण्ठ न छूटै कोई। तांते चीन्हो शब्द निर्मोही।।
शब्द अतीत शुन्य मन लाया। तातैं अखय अभय पद पाया।। ५५।।
गंदी गिलगसि सबै उठाई। बहुरि न भवजल आवैं भाई।।
उत्पत्ति प्रलय फरदी मेटौं। शुन्य मंडल सत्य सहिब भेटौं।। ५६।।
इच्छा रूप धरै ना काया। निःतंती अनरागी पाया।।
दास गरीब कहैं नर लोई। तातैं बहुरि न आवन होई।। ५७।।

अथ कौम छत्तीस का ग्रन्थ

ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पिछानै। सोहं हंसा सब घट जानै।।
काजी सो जो कजा नबेड़ै। मुरगी बकरी करे न हेड़ै।। १।।

मुल्लां सो जो मूल मिलावै। दिल महरम दिल बीच दिखावै।।
कुतब सोई जाकै नहीं कतरा। एक अलह की वाणी बितरा।। २।।
गौस सोई जो गुस्सा न राखै। निस वासर जो कूड़ न भाषै।।
पीर सोई जो परचे बोलै। कुलफ कपाट जड़े दर खोलै।। ३।।
शेख सोई जो शकित त्यागै। शिव पुरि थानैं सेवा लागै।।
पंडित सोई जो पिंड की जानैं। हदि कूँ छाडि अगम पुर ठानैं।। ४।।
बैरागी सो जो बिरहै राता। ब्रह्म अग्नि में होमै गाता।।
सन्यासी सो जो सिन्ध मिलावै। जूनी जीव जन्म नहीं आवै।। ५।।
वैष्णो सो जो बिस्तरि जाई। पूजा पाती सबै उठाई।।
जती सो जो जाति न पेखै। सब घट एके आत्म देखै।। ६।।
जैनी सो जो जाल न आवै। जम की गुरजि शीश नहीं खावै।।
नागा सो जो नाद समोवै। शुन्य मंडल रंग धागा पोवै।। ७।।
निरवानी सो जो निरगुण चीन्हैं। पांच तत्त की गुदरी बीनैं।।
बिरही सो जो बिरह बेध्या। पांचौं मारि किले से खेद्या।। ८।।
विरक्त सो जो बितरै माया। शुन्य मंडल में आसन लाया।।
उदासी सो जो उदर न आवै। ना जम जाली जीव बंधावै।। ९।।
फकीर सोई जो फोकट त्यागै। शुन्य मंडल में मोहरा जागै।।
मौनी सो जो मन कूँ मारै। सोहं हंसा भवजल त्यारै।। १०।।
योगी सो जो निश दिन जागै। शुन्य मंडल में शब्द बिहागै।।
मुंडित सोई जो मन कूँमूंडै। इस गुदरी में साहिब ढूंढै।। ११।।
अतीत सोई जो आतुन मेटै। शिव नगरी में साहिब भेटै।।
जंगम सो जो जन्म न आवै। परम धाम सत्यलोक सिधावै।। १२।।
जिलाली सो जो जालै काया। पांच पचीसौं ठोक जलाया।।
कैदौं सो जो कादर देखै। चिश्म्यौं नूर जहूरा पेखै।। १३।।
मदारी सो जो मद सौं राता। राम रसायन पीवत छाक्या।
कैफी सो जो काफै रहै। पांचौ इन्द्री निग्रह गहै।। १४।।
अमली सो जो अलखै राता। जीव जोति में रहै न भाँता।।
भंगी सो जो भाव डिढावै। भक्ति मुक्ति की राह बतावै।। १५।।
हिंदू सो जो हदि कूँ तोरै। परम धाम सौं चिश्में जोरै।।
मुसला सोजो मसजिद नहीं पूजै। राम रहीम एक कर बूझै।। १६।।
तुरक सोई जो पांचौं तरकै। अलह नूर में पांचौ गरकै।।
दरवेश सोई जो दूतर मारै। अनहद सींगी शुन्य आधारै।। १७।।
शेख सोई जो सुख ना सोवै। औघट घाटी चिश्में जोवै।।
मुल्लां सो जो मूल मिलावै। अगम निगम का भेद बतावै।। १८।।
गृही सो जिन गृह पिछान्या। परम पुरुष घट अंदर जान्या।।

शूद्र सोई जो सब की जानै। आदि अंत का भेद बखानै।। १६।।
बक्ता सो जो वाद न कर है। आवत जाती मनसा हरि है।।
ज्ञानी सो जो सब गुण राता। निर्गुण झड़की कहसी बाता।। २०।।
चेतन सो जो चेतै वानी। बिंदे शब्द अकल प्रवानी।।
अकला सो जो आखिर नहीं होई। मिलै शब्द में आपा खोई।। २१।।
नीच सोई जो नांच मिटावै। चोला धरि बहुरि नहीं आवै।।
ऊंच सोई जो ऐंचे खीरा।। बहुरि न आवे भवजल तीरा।। २२।।
गूंगा सो जो गलत अजाती। शुन्य मंडल में दीपक बाती।।
बहरा सो जो बिरक न सुनही। शुन्य मंडल में लावे धुनि ही।। २३।।
अंधा सो जो अन्दर खेलै। खाखी मन शुन्य मंडल पेलै।।
चर्म दृष्टि सो जो चूक न जावै। ऊंच नीच की भिन्न उठावै।। २४।।
दिव्य दृष्टि सो जो दाव लगावै। ब्रह्म दृष्टि नैनौं में ल्यावै।।
भेष सोई जो भिक्षा त्यागै। अविगत नगरी भिक्षा लागै।। २५।।
जाट सोई जो पांचौं झटकै। खाखी मन सूं निशदिन अटकै।।
बनिया सो जो बनजी जावै। ब्रह्म लोक से लार भरावै।। २६।।
अहीर सोई हीरा पेखै। रतन अमोली सुंनि में देखै।।
रहबारी सो जो रब्ब कूँ पावै। खाखी मन कूँ मार उठावै।।
कायत सो जो कतरा मेटै। निःसंदेह निरंजन भेटै।। २७।।
खतरी सो जो खत कूँ पाड़ै। धर्मराय की मेटै राड़ै।।
धोबी सो जो धोवै काया। प्रपट्टन की शिला समाया।। २८।।
नाई सो निज नूर मसाला। दस्त चिराग दर्श उजियाला।।
तेली सो जो तेल चुवावै। शुन्य मंडल में दीप जलावै।। २६।।
कोली सो जो काल न खाई। तानैं पूर रहै ल्यौलाई।।
जुलहा सो जो जुरा न झूलै। निशवासर अनराग न भूलै।। ३०।।
गूजर सो जो गुझ की पावै। घट की दुविधा मारि उठावै।।
सुनार सोई जो शुन्य में खेलै। दुविधा दुर्मति घट से पेलै।। ३१।।
लुहार सोई जो लोभ विसारै। नो तत्त के कूँ खड्ग सिंघारै।।
माली सो जो माल उपावै। काया बाड़ी बाग निपावै।। ३२।।
छीपी सो जिस छाक हनौजं। ब्रह्म देश के जानैं खोजं।।
दरजी सो जो मन कूँ दरजै। काती काल कतरनी सिरजै।। ३३।।
झींवर सो जो सब गुण झालै। पकड़ि मसंडा त्रिगुण टालै।।
सक्का सो जो पलक न सोवै। भिश्ती होकर सब मल धोवै।। ३४।।
गंधी सो जो कंदर्प साधै। इच्छा रूप न बाद बिवादै।।
पंसारी सो जो परसूया आनैं। हिरदे कँवल में सम कर ठानैं।। ३५।।
बादी सो जो बदरे से नांचै। तिहरी साधि अमरपुर काछै।।

नट सोई जो नाटिक जीतै। निर्गुण खेल अमरपुर चीतै।। ३६।।
खाती सो जो खेत न छाडै। पांच पचीसौं निश दिन बाढै।।
चमार सोई जो चीरे चलता, उलटि अपूठा मेलै गलता।। ३७।।
चूहड़ा सो जो चूक न जाई। पकड़े मुरगा हितै बिलाई।।
सांसी सो जो मेटै संसा। शुन्य मंडल में करि है वासा।। ३८।।
बावरी सो जो बावर संधै। मृगा एक जुक्ति से फंधै।।
ओड़ सोई जो आड़ मिटावै। पांच पचीसौं गलत समावै।। ३६।।
हलवाई सो जो हलवै बोलै। थंभै पवन अर्थ नहीं डोलै।।
बजाज सोई जो बजरी बांधै। उलटी पवन गगन कूँ सांधै।। ४०।।
कलाल सोई जो सब कल जानै। मद की भाठी भेद बखानैं।।
गुजराती सो जो गुजर मिटावै। तीन जगाती बहुरि न लावै।। ४१।।
डण्डी सो जो डाक न मारै। ब्रह्म योगिनी खड्ग सिंघारै।।
डूंम सोई जो डूंगर जावै। अनभै काव्य अरश में गावै।। ४२।।
भाट सोई जो भटिक संभालै। उलटै भ्रम कर्म सब जालै।।
मीणा सो जो मिणि मिणि खाई, अल्प अहारी सिद्धा भाई।। ४३।।
मणियार सोई जो मणि कूँ पेखै। काया कंचन मुक्ताहल देखै।।
शूरा सो द्वादश सुर बंधै। उलटै पवन गगन कूँ संधै।।
छतरी सो जो सत नहीं छाडै। काम क्रोध कूँ निस दिन बाढ़ै।। ४४।।
कायर सो जो करल लगावै। परम शुन्य में ध्यान समावै।।
निंदत सो जो नौ निधि त्यागै। अठ सिद्धि चेरी चरणौं लागै।। ४५।।
चुगल सोई जो चुन चुन मारै। काया दूत्र सबै सिंघारै।।
कसाई सो जो कसै कसौटी। करि ततबीर बनावै गौठी।। ४६।।
पठान सोई जो पाठ न मारै। सब घट एकै रूह विचारै।।
सैयद सो जो सिदक सबूरी। मुरगी बकरी हिते न सूरी।। ४७।।
कौम छतीसौं नाहीं खाली। सब घट एकै पूर्ण माली।।
जन दास गरीब कहे दिल मांहीं। सरबंगी देखो सब ठांहीं।। ४८।।

अथ तर्क वेदी

पांडे वेद पढ़े क्या होई।
घट अंदर की खबर न जानैं, दौरा लूटैं तोही।। १।।
एकै गुदरी एकै धागा, पांच तत्त रंग भीना बागा।
हाड चाम का सकल पसारा, सब घट एकै बोलन हारा।। २।।
भ्रम भेद भूलो मति कोऊ, सब घट एके गूदा लोहू।
भग द्वारै सब आवैं जांही, ऊंच नीच कहां भिन्न बताहीं।। ३।।
उदर बीच कहां पोथी पाना, शालिग शिला नहीं अस्थाना।

ना था पांडे कंध जनेऊ, बहु विधि भूले बाट बटेऊ।। ४।।
दर्पण धोती तिलक न होता, ऊर्ध्व मुखी भवजल में गोता।
तहां नेम आचार नहीं था भाई, तातैं समझि शब्द ल्यौ लाई।। ५।।
गीता गायत्री नहीं होती, कागज कलम न पत्रा पोथी।
निःसंदेह देव नहीं दूजा, ना जहां पत्थर पानी पूजा।। ६।।
कण्ठी माला ना मृग छाला, ना चंदन के छापे।
पत्थर पूजैं पद नहीं बूझैं, पूर्ण ब्रह्म न लापे।। ७।।
शुद्र ब्रह्मनी जाया भाई, तुम्हारा शूद्र शरीरं।
बाहर आंनि भये ब्रह्मचारी, न्हाते बहुजल नीरं।। ८।।
बहुजल नीरं गहर गंभीरं, सूतक पातक जीमें।
भवजल आनि परे है भाई, घोर कुण्ड फिर नीमें।। ९।।
क्रिया से कारज नहीं सरता, भक्ति भाव से दुःखे।
घीव बसंदर दे दे पांडे, होम बहुत से फूके।। १०।।
होम हनोज किये निशि वासर, जीव हिते बहु दगदे।
ऊत भूत की पूजा खाई, भोजन बहु विधि बगदे।। ११।।
देवी के तुम दास कहावो, मशानी मन माला।
चण्डी का दिल चाव रखत हो, इत होसी मुंह काला।। १२।।
दुर्गा कै ले मुरगा दौरे, चण्डी कै ले बकरा।
बहुत कफीक शरै में होंगे, छाती दीजै लकरा।। १३।।
सेढ़ शीतला गदहा मांगै, याह कौन अविद्या पांडे।
आगे की तो आगै होगी, इत ही जम कूँ डांडे।। १४।।
भैरव आगै भोपा बैठ्या, क्षेत्र पाल करूरी।
कुल का पुरोहित पोथी बांचै, कीजै बेग कंदूरी।। १५।।
करौ कंदूरी भोजन पूरी, खीर खाण्ड षट् मासा।
घर में शोर चोर जम लूटै, यौह जग अजब तमाशा।। १६।।
अजब तमाशा संतो दीठा, सतगुरु दृष्टि उघारी।
क्षेत्रपाल काल होय लाग्या, भूत भये ब्रह्मचारी।। १७।।
ये ब्रह्मचारी करैं अग्यारी, मुरदे ऊपर खांही।
तेंरामी का तार न काढ्या, कारज जीमन तांही।। १८।।
जा दिन हंसा करै पियाना, कौन धाम कूँ जाई।
जिस काया में रहता हंसा, सो तो ठोक जराई।। १९।।
ठोक जराई छार उड़ाई, किस की मुक्ति करोगे।
कौन भ्रमणा भूले पाण्डे, काके पिण्ड भरोगे।। २०।।
पांच तत्त की गुदरी फूकी, डीक जली सब दीठी।
अंध घोर में भूले भाई, झूठी मुक्ति बसीठी।। २१।।

आवत जाता नजर न आया, गैबी खेल खिलारी।
बाजीगर के जंत्र मांहीं, भूलि रहे ब्रह्मचारी।। २२।।
बहु विधि भूले अर्थ न खूल्हे, अनर्थ सेती राते।
परम धाम की बाट न पाई, ऐसे भवजल जाते।। २३।।
भवजल जाते दोजिख राते, फिरि फिरि आवैं जूंनी।
काया माया थिर नहीं भाई, पांच तत्त की पूंनी।। २४।।
पूंनी विनशै धागा निकसै, सो धागा कहां समाना।
उस गैबी का मार्ग चीन्हौं, त्यगो वेद पुराना।। २५।।
वेद पुराना जगत बंधाना, जमपुर गोते खाई।
झूठा ज्ञान ध्यान कहां लागै, बाद विद्या चतुराई।। २६।।
निःसंदेह देह कूँ खोजो, सोहं सन्धि मिलाई।
मानसरोवर हंसा राते, मोती चुनि चुनि खाई।। २७।।
काल कल्पना दूर निवारो, आवा गमन न होई।
राम रसायन से दिल भाग्या, यौह जग पीवै छोई।। २८।।
पत्थर पानी भ्रम कहानी, पूजि मुई सब बाजी।
वेद कुराना बंदत खाना, मिरधे पंडित काजी।। २९।।
पंडित काजी डोबी, बाजी दोनूं दीन अनाथा।
बहिश्त वैकुण्ठ राह नहीं पाया, देख्या दोजिख जाता।। ३०।।
जाकूँ बहिश्त वैकुण्ठ कहत हो, सो स्वप्ने की झांही।
असंख्य जीव वैकुण्ठां राते, पर जूनी छूटै नांही।। ३१।।
बहिश्त वैकुण्ठ हमौं भी देख्या, हमरा दिल नहीं लाग्या।
शुन्य मण्डल कूँ किया पयाना, काल कर्म सब भाग्य।। ३२।।
बहिश्त बीच है बड़ा भराहर, जम के हाथौं फांसी।
जौंरा काल ख्याल तहां गावै, देखी गुरजि तिरासी।। ३३।।
गुरजि तिरासी बहुत उदासी, संतो न स्वर्ग भावै।
उत्पत्ति प्रलय फरदी मेटौं, बहुरि नहीं डहकावैं।। ३४।।
जो पांडे बहु पाठ पढ़ंते, देखे जम की जाली।
भैरव कूँ रक्षा नहीं कीन्ही, क्षेत्रपाल रखवाली।। ३५।।
ऊत भूत की पूजा खाई, करुवा चौथ कहानी।
देवी तुम्हरी छोटी पुत्री, जेठी धीव मशांनी।। ३६।।
सेढ़ शीतला शाख रखत हो, चण्डी तुम्हरी माई।
क्षेत्रपाल है पिता तुम्हारा, भैरव भूता भाई।। ३७।।
राहु केतु से बहु विधि राते, नौ ग्रह सेती नेहा।
फोकट ख्याल माल बहु लूटे, अंत पड़ी मुँह खेहा।। ३८।।
धरि शिव लिंगा बहु विधि रंगा, गाल बजावैं गहले।

लिंग पूजि शिव साहिब मिल हैं, तो पूजो क्यूं नहीं खैले।। ३६।।
कदि शंकर कूँ सेवा मांडी, मुंडित भये आचारी।
लाय अंगीठ काष्ट कदि फूके, घीव बसंदर जारी।। ४०।।
कदि सनकादिक पत्थर पूजे, अठसठ तीरथ न्हाये।
चंदन काठ घसी कदि पत्थरी, कदि द्वादश तिलक बनाये।। ४१।।
कदि ब्रह्मा कूँ छापे लीन्हें, द्वारामती नरेशा।
कदि पत्थर कूँ पान खुवाये, जटा बधाये केशा।। ४२।।
शेष गणेश गंग कदि न्हाये, कदि गायत्री लापी।
धूंमी घालि दिये कदि धामें, पीठ कौन दिन तापी।। ४३।।
कदि नारद मुनि नाद बजाया, शंखा झालरि पीटी।
होम आचार कौन दिन कीन्हें, चंदन चरच्या घींटी।। ४४।।
कदि ध्रुव प्रहलाद द्वारिका न्हाये, कदि वृन्दावन फेरी।
इन्द्र दौंन किये अस्नाना, गंगा सागर बेरी।। ४५।।
कदि गोरख ने गुरजि चलाई, तेग चक्र कदि बांधे।
दत्तत्रेय तीर कदि घाले, बाण कौन दिन सांधे।। ४६।।
बालनीक कदि ग्यारस राखी, शालिग पत्थर धोके।
देवल धाम हदीरे पूजे, भाठे किस दिन पोषे।। ४७।।
जनक जती कहौ किस दिन रहिया, शुकदेव कदि स्वर शोधे।
सैंना सिंधु कौन दिन न्हाये, नामा पुस्तक रोधे।। ४८।।
अजामेल कदि आरती कीन्ही, पीपा पतरे बांचे।
सदना गलि कदि रहे जनेऊँ, झांझ पीटि कदि नांचे।। ४६।।
रैदास आकाश रहे कदि मौंनी, धन्ना धूप कदि बैठै।
नीर कबीर रहे कदि झरणैं, जला बिंब में पैठे।। ५०।।
मुहम्मद नें कदि महजदि पूजी, बाजीद ईद कदि खाधी।
सुलतानी कदि पांनी पूजे, छाडि तख्त गये गादी।। ५१।।
मछंदर माह कौन दिन न्हाये, जलंधर कर कदि सूके।
गोपीचंद भरथरी होते, चूल्हे किस दिन फूके।। ५२।।
नानक ने कदि नास लई है, ककड़ पोसत घोटे।
सूजा पींघ घालि कदि झूले, लीन्हें धूंमरि झोटे।। ५३।।
सम्मन नें कदि ब्राह्मण पूजे, कदि सेऊँ लाई सेवा।
रंका बंका कदि रण मंडे, चीन्हें निर्गुण देवा।। ५४।।
मोरध्वज कदि मंद्रा पहरी, हरिचन्द हाट उगाही।
अंगद नें कदि आगम लीन्हा, तिथ बार बतलाई।। ५५।।
कपिल मुनी कदि माला फेरी, रामानन्द रण झूझे।
दुर्वासा कदि खासा पहर्या, पांचौं इन्द्री लूझे।। ५६।।

तुलसीदास ल्हैस कदि बांधी, फरीद न फरसी घाली।
शीतल पुरी तुरी पर चढ़ि कर, पाखर किस दिन डाली।। ५७।।
दादू किस दिन नादू लीन्हा, सुन्दर खेले सारी।
कदि रज्जव राजा प्रमोधे, खूल्ही दृष्टि अपारी।। ५८।।
साधू किस दिन सिद्धि में राते, कदि बखना बनज चलाया।
बनवारी कदि जारी कीन्ही, कदि त्रिगुण डहकाया।। ५६।।
मसकीन दीन कदी रसोई, कहौ कदि करि नगर चिताये।
टीला किस दिन टाल बजाई, घर घर भोजन खाये।। ६०।।
गरीबदास कदि रास मण्डल कर, जग में दीनी फेरी।
दादू आदू सतगुरु मिलिया, जिनकी औंडी सेरी।। ६१।।
भेषौं सेती भक्ति निराली, साध सांग नहीं भावै।
भेष अभेष सकल घट साहिब, बसती तजि बन जावै।। ६२।।
संख असंख्यौं साधु मिलें हैं, साहिब में ल्यौलीना।
शब्दातीत रते रंग भीना, शुन्य मण्डल घर कीन्हा।। ६३।।
बन बसती के सबही सीझे, जिन घट भक्ति पठाई।
बिना भक्ति जो भेष धरत हैं, महल न पौंहचे भाई।। ६४।।
षट दर्शन दोहूँ दीन दिवानें, भूले भेष अनंता।
शब्दातीत महल नहीं पाया, औघट घाटी पंथा।। ६५।।
निर्गुण झड़का झीना मारग, निहतंती अनरागी।
सतगुरु मिलै महल सुधि ल्यावै, सो साधु बड़भागी।। ६६।।
औंधे कँवल जगत सब भई, खबर नहीं उस घर की।
सप्त शुन्य पर सेवन कीजै, जहां सेजां निर्गुण वर की।। ६७।।
अलल पंख अनुराग कहीजै, शब्द बिहंगम सोई।
दास गरीब मिले सो पद में, बहुरि न आवन होई।। ६८।।

अथ एकता उपजनि का ग्रन्थ

अवधू हम तो प्रपट्टन के वासी।
तीरथ जांहि न देवल पूजौं, ना वृंदावन काशी।। १।।
ऐसा दर्पण मंझि हमारे, हम दर्पण के मांही।
ऐंनक दरिया चिशमें जोये, नूर निरंतर झांही।। २।।
रहनी रहै सो रोगी होई, करनी करै सो कामी।
रहनी करनी से हम न्यारे, ना सेवक ना स्वामी।। ३।।
इन्द्री कसता सोई कसाई, जग में बहै सो बौरा।
ऐसा खेल बिहंगम हमरा, जीतो जम किंकर जौरा।। ४।।
ठाकुर तो हम ठोक जराये, हरि की हाट उठाई।

राम रहीम मजूरी कर है, उस दरगह में भाई।। ५।।
शेष महेश गणेशर पूजैं, पत्थर पानी ध्यावैं।
रामचंद्र दशरथ के पूता, से कर्ता ठहरावैं।। ६।।
एक न कर्ता दोय न कर्ता, नौ ठहराये भाई।
दशमा भी दुंदर में मिल सी, सत्य कबीर दुहाई।। ७।।
अयोध्या दशरथ दोऊ नहीं थे, तब रामचंद्र कहां होते।
सुर असुरन की राड़ मँडी है, त्रिगुण दीन्हे गोते।। ८।।
जदि जन्में नहीं रामचन्द्र राजा, तब क्या रटती बाजी।
वेद कुरांन नहीं जदि होते, तो क्या पढ़ते पंडित काजी।। ९।।
शेष महेश गणेश न सिरजे, गौरा नहीं गंवारा।
ब्रह्मा सावित्री नहीं होते, तब कहां थे पुराण अठारा।। १०।।
कृष्ण विष्णु कन्हवां भगवाना, नौ अवतार नवेला।
नाद बिंदु में खेलन आये, आखिर फोकट मेला।। ११।।
होती सोलह सहंस गोपिका, राधा संग पटरानी।
कहां गये वे कन्हवा खेलत, जाकी कहो निशानी।। १२।।
धरती अंबर पावक पानी, चंद्र सूर भी जासी।
मेरु कुमेर चलैंगी बाजी, रहै एक अविनाशी।। १३।।
ॐ सोहं ना जदि होते, ना अनभय हाटि उचारं।
मूल न फूल न तरुवर शाखा, कित से कीन्ह पसारं।। १४।।
पांच तत्त आरंभ न होते, ना थी त्रिगुण ताखी।
अष्ट योग आसन नहीं होते, तब कौन ज्ञान पद भाखी।। १५।।
काया माया सूरति मूर्ति, चिहरा सिकल न सूवा।
कौन भेद बाजीगर कीन्हा, हंसा कित से हूवा।। १६।।
एक पूर्ण ब्रह्म बिनानी बीना, माया उपजी जासे।
ॐ मूला इस्म जोगिनी, कर में मुगदर फांसे।। १७।।
जिन ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जाये, तीन पूत की माई।
जा के उदर नाद में आये, उलटी वाह प्रनाई।। १८।।
त्रिगुण रूप धर्या है योगनी, भ्रम भुलानें योगी।
निरालंब निर्गुण के जाती, कीन्हें बेग संयोगी।। १९।।
कृत्रिम ख्याल तबक सब सिरजे, कच्छ मच्छ जब नीमें।
पांच तत्त की गुदरी कीन्ही, ब्रह्मा चोले सीमे।। २०।।
एक बनावै एक खपावै एक करै प्रतिपालं।
शब्दातीत सकल से न्यारा, यौह सब त्रिगुण ख्यालं।। २१।।
धरती अंबर धौल बनाये, सिरजे लोक अनंता।
लख चौरासी जाति ऊपनी, चाले अनगिन पंथा।। २२।।

च्यारे खानी च्यारे बानी, ॐ सोहं बोलै।
शब्दातीत शुन्य का वासी, निश्चल अचल न डोलै।। २३।।
पांच तत्त की गुदरी बिनसै, कोई राखै जुगता योगी।
ब्रह्म अग्नि में चोला हूमैं, सो असली ब्रह्म वियोगी।। २४।।
पांच बाई के बंध लगावै, उर में पवन समेटै।
त्रिकुटी सन्धि शुन्य सुर पूरै, तो अविचल मूर्ति भेटै।। २५।।
शुन्य मंडल में कामधेनु है, पीवत हैं रस भोगी।
हदि के जीव हदीरे पूजैं, पत्थर सेवैं रोगी।। २६।।
नौ नाथां सिर नादू पूरूं, चौरासी कूँ त्यारौं,
तेतीसां शिर ताल बजाऊँ, खेलौं शुन्य अपारौं।। २७।।
धर्मराय सूं दावा बांधौं, जम का दण्ड मिटाऊँ।
भवसागर से नौका पेलौं, हंसा सत्य लोक पठाऊँ।। २८।।
ज्ञान हमारा घुडला कहिये, जीन अजब गुलजारा।
हुकमी आये हुकम पठाये, हंस भये अस्वारा।। २९।।
हमरी बोली पूर्व पंथी, है सो जाति अजाती।
शालिग शिला नहीं हम धोकैं, ना सो पूजा पाती।। ३०।।
ना हम काजी पंडित मुल्लां, ना हम हिन्दू तुरका।
ना हम कुतब गौस औलिया, भेद लखाऊँ धुरका।। ३१।।
रोजा नेम नमाज न जाना, ना कोई तसबीह माला।
गीता गायत्री ना पढ़ते, ना आसन मृग छाला।। ३२।।
द्वादश तिलक नहीं हम कर हैं, दर्पण ध्यान न धोती।
कागज कलम नहीं कोई हमरै, ना पत्रा ना पोथी।। ३३।।
ना हम जंगम शेख सेवड़े, ना कोई तपा सन्यासी।
उनमुन रहां अनाहद राते, परम शुन्य के बासी।। ३४।।
अमर लोक से हम चलि आये, शब्द हमारा मेला।
जन दास गरीब कहैं रे संतो, यौह जग दीखै हेला।। ३५।।

अथ भ्रम खण्डन ग्रन्थ

वेद भेद करि बंध लगाया, कीर्ति कीन्ह उचारं।
मनसा नाथ मनोरथ पुरवन, जाका वार न पारं।। १।।
विष्णु बंग विवेक बिनानी, है सो अलख निवारं।
गोरख दत्त कबीर भरथरी, शुकदेव ध्रुव प्रहलादं।। २।।
शेषनाग कूँ पार न पाया, जो रटना रटै अगाधं।
जिन नौ अवतार निरंतर रोपे, रहिया अलख निरालं।
जूनी जाय न संकट आवै, ब्यापै जरा न कालं।। ३।।

निराकार निज सार जगतगुरु, है सो अलक विवेकी।
मूर्ति मंजन अकल निरंजन, सूरति बरल्यौ देखी।। ४।।
अनहद नाद निरंतर पूरे, ब्रवै बैंनी बाजे।
सो घर अगम निगम से न्यारा, शुन्य सेहरा साजे।। ५।।
बाजे तूर तेज के तकिये, ऐसा शब्द निवासं।
गहरी गरज अगोचर वाणी, परम शून्य प्रकाशं।। ६।।
षट् दर्शन पाखण्ड छ्यानवैं, कीर्ति कर्म भुलाया।
हम जिस कर्ता का जाप जपैं, सो नाद बिन्दु नहीं आया।। ७।।
नाद बिन्दु से वस्तु अगोचर, निर्बीजं निःकामं।
ज्योति स्वरूप अनुपम देख्या, अकल महल अस्थानं।। ८।।
नाद बिन्दु से रहिता स्वामी, है सो साहिब मेरा।
अष्टसिद्धि नौ निधि छाडि कर, बांध निरति का भेरा।। ६।।
अष्ट सिद्धि में ब्रह्मा भूले, नौ निधि शंकर योगी।
माया मूल गलत कर पीसे, सबी सूर संयोगी।। १०।।
काया माया दोहूँ थिर नाहीं, थिर नहीं धरणि आकाशा।
चंद्र सूर तारायण थिर नाहीं, झूठा सकल तमाशा।। ११।।
चंद्र सूर तारायण थिर नाहीं, नौ सै नदी बिहानी।
पत्थर पूज पदारथ बिसरे, झूठे सकल कहानी।। १२।।
गोपीचंदन तिलक करैं, काया प्रछालैं सलता।
माला पहरे मुक्ति होय तो, सब पिण्ड काठ में जलता।। १३।।
पौहप कली का भेद बखानैं, भौंरा निज स्वरूपं।
भूंड भेद गोबर का जानैं, खोदै धरणी कूपं।। १४।।
साधु भँवर भूंड हैं पांडे, वस्तु भेद नहीं पाया।
अंजन मांहि निरजंन खोया, राते अलख ईश्वरी माया।। १५।।
जहां केते ब्रह्मा वेद बखानें, शंकर सूर सयानें।
केते भक्ति भाव में बेधे, लगे तंत इकतानें।। १६।।
तंत न विनशै मंत न विनशै, फुनि गगन विनशि नहीं जाई।
चौदह तबक छार की चीपी, बाजी धुंध रचाई।। १७।।
इस बाजी कूँ देख भुलानैं, ब्रह्मा शंकर सोई।
मौड़ बंध माया कूँ मारे, दुनिया कहां फरोई।। १८।।
गगन मंडल में भाठी श्रवै, उनमुनि के घर प्याला।
सतगुरु मिले तो भेद लखावै, खोल्हे निर्गुण ताला।। १६।।
ताला खोलि महल में पैठे, अगम निगम लखि लीया।
अमृत नूर सहत रस प्याला, साचे सतगुरु दीया।। २०।।
सूतक ही में ब्रह्मा खेलै, सूतक नौ अवतारा।

सूतक ही में शंकर सेवा, किस विधि उतरो पारा।। २१।।
सूतक आया सूतक जाया, सूतक गर्भ निवासं।
सूतक ही में मृतक मेला, कहो कहां प्रकाशं।। २२।।
सूतक ही में सेवा पूजा, सूतक ही में लापं।
सूतक ही में सुरति तुम्हारी, सूतक ही में जापं।। २३।।
सतगुरु मिलै तो सूतक भागै, बिन सतगुरु सुध नाहीं।
ऐसा सतगुरु संग हमारे, पलक बिछरि नहीं जाहीं।। २४।।
गोरख योगी गरक ज्ञाना, मारि मछंदर लीया।
पारा ऋषि का चल्या सरोवर, को माया संग जीया।। २५।।
बाहर घर घर ही में बाहर, पूछो नारद त्रिकाली।
श्रृंगी ऋषि कूँ सार चुवाया, ममता, मूलं माली।। २६।।
बन में मन मन ही में बन है, कहो कहां डेरा लीजै।
अजरावर घर करो पियाना,यहां तो छिंन छिंन चोला छीजै।। २७।।
जा दिन बिन्द अबिंद न विद्या, ता दिन का कहो हवालं।
जा दिन कहां पत्थर की पूजा, कौंन बजावै टालं।। २८।।
जा दिन बिन्दु उदर में विद्या, ता दिन की कहौ पूजा।
वे सदा सनीप बिछरि कदि जांही, कहो कौन दिन दूजा।। २९।।
जा दिन नौ मास उदर में रहिया, भ्रम कर्म से न्यारा।
जूनी अंतर जाप जपे था, पूर्ण ब्रह्म उचारा।। ३०।।
बाहर आया भ्रम भुलाया, पत्थर साहिब कर सेया।
ज्यूं सूवै सिंभल फल सेया, यौह ऐसा पत्थर देवा।। ३१।।
जाकी पूजा कर रे भाई,
अजरावर तकिये ल्यौ लाई, जित से हंसा आया।
परम गुरु का भेद न जान्या, क्या पत्थर ठाकुर ठहराया।। ३२।।
पत्थर पूजैं पत्थर सूझैं, पत्थर कूँ शीश नवावैं।
वारैं फैरैं पत्थर ऊपर, पांच भूआत्म खावैं।। ३३।।
जाकै अहरनि लगी हथौड़े घड़िया, टांकी चीत बनाया।
है पत्थर की झूठी पूजा, यौं सतगुरु फुरमाया।। ३४।।
रमता राम धाम दिल अंदर, शब्दातीत समाना।
दास गरीब कहै रे साधो, यौह पद बिरले जान्या।। ३५।।

अथ शब्दी

सुरति सरोवर है। मन हंस है। निरति निर्बान है। निज मन नेश हैं राम कैसा है? राम जैसे कूँ तैसा है। राम रंगीला है। राम रक्त न पीला है। बारह बानी से अलहदा है। दृष्टि परै सो बहदा है।

निर्गुण सरगुण दो धारा है। आदि राम तो न्यारा है। दुरबीन सफा है। मंजन ऐंनक नफा है। कैसे मंजन ऐंनक नफा है? क्रोध की कुरड़ी पर न चढ़ै। मोह का कागज न पढ़ै। काम की कटारी न बांधै। लोभ की लार न सांधै। मनी की मुटकी कूँ फोरैं। कुबुद्धि का खजाना न जोरै। कुफर का संग न करै। शोक कूँ घर में न धरै। हिरसि कूँ उठावै। बिहलिया मन कूँ नहीं ल्यावै। अकलि के ऊजू से मंजन करै। और कूँ उपदेश दे और आप तिरै। सो वाह आरसी कहां है। अर्ध उर्ध के मध्य है। अर्ध कौन कूँ कहिये? और उर्ध्व कौन कूँ कहिये? अर्ध इंगुला पिंगुला कहिये, हिरदा हिरम्बर उर्ध कहिये। इन दोनों के मध्य एक नूर की ऐंनक है। उस ऐंनक का नाम दुरबीन है। दुरबीन क्यौं कर है? जो उस ऐंनक कूँ हिरदे कँवल में ठहरावै। कच्छ कुरंभ शेष धौल पृथ्वी दरशै। कैसे कर दरशै? जैसें आयनें में मूर्ति दरशै। उनचास कोटि की बातां कहै। पिण्ड ब्रह्मण्ड का सकल भेद भिन्न भिन्न कर लहै। अनभै उजागर तिस के संचरै। कैसे कर सचरै? पराबानी के तांई ल्यावै। पश्यंती मन भावै। मध्य मुक्ति सिद्धि बैखरी कहि सुनावै। याह तो पिण्ड ब्रह्मण्ड की ऐंनक है। उस ऐंनक कूँ सुरति के विमान पर ठहरावै। उर्ध से ले कर अर्ध पर धरै। अर्ध के चौक में एक झण्डा है। सो कैसा झण्डा है? पचरंग पिछान है। उस झण्डे के आगे एक चौतरा है। उस चौतरे पर सतगुरु का चेला बैठ्या है। जो कुछ दिया है सो वहां मौंसर है। आगै बड़ी बड़ी सैल है। वाहं इस के तांई चोसा चहियेगा। चौतरे से दहनी तरफ मुदफर मड़ी है। उस मुदफर मढ़ी में माया का वासा है। चौतरे के बामी तरफ करमों का फरसा है। सुमेर के पुर पर चढ़ना है। सुमेर के पुर का सुई के सा नाका है। उस नाके से परली तरफ सतगुरु खड़ा है। जत की जिहाज पर बैठा है। सत्यवादी हंसा कूँ त्यारैं है। उरली तरफ सतगुरु का चेला है। परली तरफ सतगुरु है। चेले का नाम क्या है? सहज संतोष है। इसम कमाल है। सतगुरु का नाम क्या है? कबीर कुर्श है। ऐंनक में अविगत का दर्श है। उस नाके उतर्या सो फिर नहीं आवता। वहां का गिर्या फिर नहीं जाता। उस दरबार में अलिल अलिल दामिनियौं का चमत्कार है। दामिनियौं के तड़ाके के मारे कोटि कोटि प्राणी गिरे हैं। यह इक्कीसवैं ब्रह्मण्ड की बातां हैं। कालीदह का पड़्या उलटा आवै है। सुरति के विमान पर बैठ्या हुवा पार उतरै हैं। सो वहां से कौन कौन गिरे हैं ?

रमैणी :– श्रृंगी ऋषि का पात्र फूट्या, पार ऋषि माया नैं लूट्या।

भींडी ऋषि ज्यूं भेड बिहंडा, बहुरि नहीं वहां पाया झण्डा।। १।।
दुर्वासा का ध्यान डिगाया, शंख लोचनी कूँ बिरमाया।
चौबीसौं उतरे नहीं घाटी, विषम पंथ है झीनी बाटी।। २।।
सहंस अठासी ठेका खाया, सिद्ध चौरासी उलटा आया।
सनक सनंदन ध्यान लगाया, लोक दीप तिनहूँ नहीं पाया।। ३।।
नारद मुनि से केते बरणौं, जो उबरे सधे सतगुरु शरणौं।
तेतीसौं तरबीत बताई, मेरु दण्ड की बाट न पाई।। ४।।
गोरख योगी सिद्धि में भूल्या, टूणै टांमण हांडे फूल्या।
जंत्र मंत्र योग न भाई, काल चक्र जम जौंरा खाई।। ५।।
काल चक्र से लेहूं उबारी, आवो गोरख शरणि हमारी।
मैं गोरख सबहन का गुरुवा, तुम्हारा शब्द लगै है करुवा।। ६।।
करुवा लगै सो मीठा होई, हमरे शब्द पतीजै सोई।
अमर करुं सत्य लोक पठाऊँ, दिल दरिया में दरश दिखाऊँ।। ७।।
ज्ञान का घोटा चित्त की चीपी, मन की मुद्रा गोरख सीखी।
सतगुरु के शरणागत रहिये, दास गरीब नाम निज गहिये।। ८।।
शब्द सिन्धु द्वादश पंथ का दरा, यौह ले गोरख हिरदे कँवल में धर्‍या।
ऐसी गोरख ऐंनक उलटी, जब ले सिद्धा काया पलटी।। ९।।
काया पलटि भया निर्बानं, जब गोरख भया सो पद प्रवानं।
सतगुरु कबीर और गोरख चेला, चौदह भुवन में रमै अकेला।। १०।।
पलटै तो पलटै, उलटै तो उलटै।
पलटै तो कैसे पलटै? जैसे निनांणवै कोटि राजा पलटे।
उलटै तो कैसे कर उलटै? जैसे गोदावरी का मेला उलट्या।। ११।।
धूंधलिया चेले ने चौरासी पटण मूंधे मारे।
जिन के चेले ऐसे चरित्र करैं, गुरु क्या जानौं क्या करैं।। १२।।
कबीर कर्तार गोरख तूं गोय रखि, इस निरबान पद के तांई।
ब्रह्मा का वेद, विष्णु की मूर्ति, और शिव का अस्थान।
ये तीनों उपासना इस पद में जान।। १३।।

साखी :- साधु कहो सतगुरु कहौ, साहिब कहो अवतार।
गरीब चहुँवा में पद एक है, सत्य निर्गुण निज सार।। १४।।

शब्दीः-प्रथम तो हमारा पंथ बांका। दूसरे तो हमारा अंत बांका। तीसरे तो हमारा गांम बांका। चौथे तो हमारा नाम बांका। पांचमें तो हमारा परिवार बांका। षष्टमें तो हमारा दीदार बांका। पंथ क्यौं कर बांका? जहां बिन पग की सैल है, ऐसे कर बांका। अंत क्यौं कर बांका? जहां वार पार मध्य नहीं है, ऐसे कर बांका। गांव क्यों कर बांका? बिना नीम का नगर है, ऐसे कर बांका। नाम क्यौं कर

बांका? बिन रसना उच्चार बिन श्रवण झंनकार सुनिये है, ऐसे कर बांका। परिवार कैसे कर बांका? अनंत कोटि सनकादिक मजलसि में बैठे हैं, संसार की दृष्टि नहीं आवैं है, ऐसे कर बांका। दीदार कैसे कर बांका? निरालंब निर्गुण पद बिना चिश्म्यौं दीखे है, ऐसे कर बांका। इस शब्द कूँ खोजि कर शब्द में पैठे, सो महामुनि निरंजन कहिये। यौह शब्द ही सतगुरु है, लह्या जाय तो लहिये। सिर के साटे हाथ आवैगा। इस के खोजे से, फिर उर्ध मुखी गर्भ बास में नहीं जावैगा। लख चौरासी मिटैगी। निश्चय कर जानियौं। सत्य अदली कबीर कहै हैं। गुलाम **गरीबदास** के सिर पर रहैं हैं।

अथ अंदरुनी रासा फूल माल

अवधू मन का मुतंगा। सुरति की सेली। निरति का नादं। पवन का फरुवा। अडिग आड़ बंध। कुदली कौपीन। ज्ञान का गोला। भ्रम भभूति रमावनी।। १।। मूल मंद्रा सुहंगम माला। गुट कंठी मधि मृग छाला। चित्त की चीपी। ज्ञान का घोटा। भाव की भंग प्यावनी।। २।। दिल की दारू। पद का पोसत। बुद्धि की भाठी। सिन्ध की शीशी। क्षमा का छालना। प्रेम का प्याला। पीवैगा सिद्ध कोई।। ३।। ध्यान की धूनी। पीक की फाहवरी। चित्त की चीपी। बुद्धि की बीन। तत्त का तूर अरश में ध्यान धरि लोई।। ४।। सार की सींगी नेशता लूंगी। शुन्य सिंदूर। झीन का जंत्र। परख का पाट। शक्ति की सेज। सीन का साँथरा। गुझ गायत्री लापनी।। ५।। छंद का छापा। तत्त का तीर्थ। सीन शंखा। आनंद आरती। रिद्धि की रसोई। तत्त तिलक। अजपा जाप थापनी।। ६।। जिंद का जनेऊ। पत्त की पोथीं सोहं शास्त्र। भेद का वेद। पिण्ड पुराण। कथ की कथा। कहो ब्रह्मज्ञानी।। ७।। गुपती गोफिया। गम की गिलोल। चित्त का चक्र। शील सिंजोयल। बुद्धि का बख्तर। खेल मैदानी।। ८।। डिढ की ढाल। बुद्धि की बन्दूक। मुसकला मिश्री। कुरश की कटारी। बिहंगम बान। मेहर का चोसा। दया जौंनार दीजे।। ९।। अरश की आरसी। नेम का नहेरना। कथ की काती। असत का उसतरा। पित की पथरीं युक्ति की जंजीर। बिंदना घूघंरू साधि लीजे।। १०।। मुरजीवा रासा। अक्षर धाम की डोरी। मक्रतार का पयाना। महोदधि गाजै। नाम पदारथ। अर्ध उर्ध सराफा नूरी मन जौहरी। परखि लाल नेशा।। ११।। निधि बेली पान। छोति का छुहारा। दध की दाख। नूर का नालियर। मदन की मिर्च। लै की लौंग। सतगुरु संदेशा।। १२।। दिगंबर डूंगरी। मेरुदण्ड मैदान। गगनी फुहारा। त्रिकुटी दरीबा। पटन घाट। इला पिंगुला द्वारा। सुष्मणा सिंधु देख।। १३।।

कला की कलंगी। कीर्ति का कंगन। धीरज का ध्यान। कछ की काछ। लै का लंगोट। मदन का सिक्का। फरद का फरुवा। आकीन की राह पेखि।। १४।। दर्दबंद दरवेश। बेदर्द कसाई।। बेहिरसि औलिया। हिरसि हैवांन। गुस्सा शैतान। क्रोध रूह काला। बंदगी उजाला। दुर्मति बिसमला। सिदक सबूरी राखिये।। १५।। अजूनि का जामा। नेश का बागा। अलील का टोप। गुजनी ताखी। शुन्य सरोवर अमृत पानी। अमी खीर चाखिये।। १६।। चौंर का चंपा परख पदम। मुक्ति परलोक। मुदफर मढ़ी। प्रीति की पादिका। हेत हरिद्वार। काया काशी कला कबीर। शब्द निरवाण परिख ले।। १७।। पुष्कर प्रेम। जगन्नाथ जगदीश। द्वारिका दरा कांची करीम। बद्रीनाथ विलाश। आनंद इन्द्र दौंन। सुहगंम सेतुबंध बांधि ले।। १८।। आकाशी गुटका विलासी बोध। अमरकन्द फिरंगी। किला औघट बाट झीनी गैल। मन मुरीद। तन साईद उतर पार।। १६।। मनी नेश दिल का दीन। मुसलमान हिन्दू पिछांन। शरै हिसाब करनी जुवाब करदनी पेश। आवादानी केस बोझ डार।। २०।। गुदनी गिजा हुकमी सजा। हलीमी हेत। मजलि मिलाप दरा बंध। वनज हूलास। फुनी फिराक कर्म कूकड़ी। निर्गुण सरगुण टेरन आदि।। २१।। चित्तराम चरखा। अष्ठदल फंखडी। मुलतान की माल। पूर्ण पर्वती। चरमख सुघट। कर्म बिनौंला। कीर्ति कर्तार। लख चौरासी फंध। साचा सतगुरु हेरि उतारै पार।। २२।। हक्क हलाल बेहक्क हराम। शोक सिल सिला। मगरूरी गंध। मगज कुफर। आधीनी असल। अबै तबै गुंड खुधी खलील।। २३।। जिंद जूंनि। मेहर सफा। कहर खफा। आधीनी असलि। कलमां कुरांन। रोजा रबांन। नमाज नेक अलह पिछांन।। २४।। कतेबां कुर्श। कादर दर्श नेकी पिछांन। बंदगी सुभांन। सुरति खुलास। शरीकति तिरास। मन मक्का अदलि काबा।। २५।। अरस नूर। इल्लिल्लाह ईद। पीरां मुरीद। हीदम बकरीद। इल्म अल्लाह। मुरशिद सलाह। गुनाह कबाब। सबूरी शराब। वजू अजाति।। २६।। गऊ में बिहंगम रब्बानी जो सूर है बेचगूंन। अलखी अल्लाह जान। निर्भय निमूंन।। २७।। काजी सुदंम। मुल्लां हूरंभ। हकदम हनौंज। अग्र बंध खोज राजिक रहीम। अकला करीम। अंदरूंनी औजूद। खुरसी पियाला है मिले मौजूद।। २८।। हकदम हिरंबर, हनौज हिनौंज। पकड़ि पीर पैण्डा, करो दम खोज। दम दीन दरगह, शरै कूँ नमाज। हुकमी हुकम नेश, चीन्हों अवाज।। २६।। येता अंदरूंनी रासा, परखि पीर पूरा। मनी कूँ मार, कुफर कूँ पीस। दास गरीब मिले जगदीश।। ३०।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

अथ काया बेली

काया मांहें हंसा जान, काया मांहें निहचल थान।
काया मांहें सहिब संत, काया मांहें है भगवंत।। १।।
काया मांहें माया मूल, काया मांहें बिन अस्थूल।
काया मांहें सूक्ष्म रूप, काया मांहें उर्ध कूप।। २।।
काया मांहें बाड़ी बाग, काया मांहें निज बैराग।
काया मांहें माली ऐंन, काया मांहें है सुख चैंन।। ३।।
काया मांहें सहंस्र धार, काया मांहें छुटे फुहार।
काया मांहें है कर्तार, काया मांहें अपरम पार।। ४।।
काया मांहें बसे अलेख, काया मांहें धारे भेष।
काया मांहें हेला देत, काया मांहें पौहपं श्वेत।। ५।।
काया मांहें गैब अवाज, काया मांहें सतगुरु राज।
काया मांहें करि ले सेव, काया मांहें, पाया देव।। ६।।
काया मांहें शब्द अतीत, काया मांहें कर प्रतीत।
काया मांहें शलिग्राम, काया मांहें है निःकाम।। ७।।
काया मांहें पाती तोर, काया मांहें हाले डोर।
काया मांहें पूजा खेल, काया मांहें बाती तेल।। ८।।
काया मांहें दीजै धूप, काया मांहें अजब अनूप।
काया मांहें अलख अभेव, काया मांहें गूगल खेव।। ९।।
काया मांहें मंजन मूल, काया मांहें देख न भूल।
काया मांहें दीनानाथ, काया मांहें भिन्न न भांति।। १०।।
काया मांहें बाजैं टाल, काया मांहें शब्द रिसाल।
काया मांहें बाजैं झांझ, काया मांहें मंजन मांज।। ११।।
काया मांहें जंत्र योग, काया मांहें है बड़ भोग।
काया मांहें देता बंग, काया मांहें है सत्संग।। १२।।
काया मांहें नेम नमाज, काया मांहें चिड़िया बाज।
काया मांहें होय हलाल, काया मांहें गैबी ख्याल।। १३।।
काया मांहें रोजा रंग, काया मांहें मुरगी अंड।
काया मांहें कर्द त्रास, काया मांहें गऊ विनाश।। १४।।
काया मांहें सीक सलाई, काया मांहें बसै इलाही।
काया मांहें कादिर आप, काया मांहें जपिये जाप।। १५।।
काया मांहें बसै करीम, काया मांहें अलख रहीम।
काया मांहें मुनियर मेल, काया मांहें अविगत खेल।। १६।।
काया मांहें है लाहूत, काया मांहें हे मलकूत।
काया मांहें निज नासूत, काया मांहें है जबरूत।। १७।।

काया मांहें मुहिइब दीन, काया मांहें अशरा फील।
काया मांहें अजाजील, काया मांहें जबराईल।। १८।।
काया मांहें पण्डित पीर, काया मांहें ज्ञान गहीर।
काया मांहें चारौं वेद, काया मांहें पाया भेद।। १९।।
काया मांहें ठारा पुराण, काया मांहें है भगवान।
काया मांहें हिलमिल शुन्य, काया मांहे पाप रु पुण्य।। २०।।
काया मांहें योगा योग, काया मांहें वाणी भोग।

साखी :- गरीब, काया मांहें लोक सब, सतगुरु दिये दिखाय।
औघट घाटी ऊतरे, शब्दे रहैं समाय।। २२।।

काया मांहें बिरहा नाद, काया मांहें अगम अगाध।
काया मांहें बाजै बीन, काया मांहें है प्रवीन।। २३।।
काया मांहें बाजैं शंख, काया मांहें निर्गुण अंक।
काया मांहें देवा तीन, काया मांहें है ल्यौलीन।। २४।।
काया मांहें पांचौं बास, काया मांहें अजब निवास।
काया मांहें मारग बंक, काया मांहें उदबुद शंक।। २५।।
काया मांहें मेरा मेर, काया मांहें घेरा घेर।
काया मांहें गगनी गैल, काया मांहें कर ले सैल।। २६।।
काया मांहें मौहकम बास, काया मांहें शब्द निवास।
काया मांहें वज्र पौर, काया मांहें गूंजैं भौंर।। २७।।
काया मांहें त्रिवैणी तीर, काया मांहें अमृत नीर।
काया मांहें गंग तरंग, काया मांहें उठैं उमंग।। २८।।
काया मांहें चौसठ सिंध, काया मांहें अति आनन्द।
काया मांहें प्रबी न्हान, काया मांहें कर अस्नान।। २९।।
काया मांहें श्रवर तीर, काया मांहें गहर गंभीर।
काया मांहें सागर सात, काया मांहें अविगत नाथ।। ३०।।
काया मांहें हीरे लाल, काया मांहें मुक्ता माल।
काया मांहें पारस थान, काया मांहें लोहा जान।। ३१।।
काया मांहें दक्षिण पौल, काया में जम घालै रौल।
काया मांहें पश्चिम द्वार, काया मांहें करो विचार।। ३२।।
काया मांहें पूरब पंथ, काया मांहें आदि रु अंत।
काया मांहें उत्तर घाट, काया मांहें कर ले साट।। ३३।।
काया मांहें मारग झीन, काया मांहें है दुरबीन।
काया मांहें औघट घाट, काया मांहें विषमी बाट।। ३४।।
काया मांहें पिंगुल बैंन, काया मांहें हे कामधेनु।
काया मांहें शिखर सुमेर, काया मांहें मन का फेर।। ३५।।

काया माहें मनसा नारी, काया माहें है घर बारी।
काया माहें है बितराग, काया माहें गया पिराग।। ३६।।
काया माहें इन्द्र दौंन, काया माहें पानी पौंन।
काया माहें जगन्नाथ, काया माहें संग न साथ।। ३७।।
काया में रामेश्वर राह, काया माहें अगम अगाह।
काया माहें पिण्ड भराय, काया माहें मुकित कराय।। ३८।।
काया माहें काशी जान, काया माहें पद निर्बान।
काया माहें पुष्कर पंथ, काया में लोहागर संत।। ३६।।
काया में द्वारा दरवेश, हरि की पैड़ी न्हान हमेश।
काया माहें बदरी बोध, काया माहें अठसठि शोध।। ४०।।
काया माहें मोर चकोर, काया माहें घन हर घोर।
काया माहें लूटैं लार, काया माहें बाजैं सार।। ४१।।
काया माहें कठिन कठोर, काया माहें पड़ता शोर।
काया माहें पान ढिंढोली, काया माहें बुनता कोली।। ४२।।

साखी :- गरीब काया माहें महल है, सतगुरु कूँची हाथ।
दया करें तो पाईये, सांईं जेही दात।। ४३।।

काया माहें अति हैरान, काया माहें है प्रवान।
काया माहें मुरद फरोश, काया माहें दीजे दोष।। ४४।।
काया माहें मरि मरि जाय, काया माहें उलटि समाय।
काया माहें उठैं तरंग, काया माहें सुनि प्रसंग।। ४५।।
काया माहें जीते जंग, काया माहें लागे रंग।
काया माहें जिन्दा जूनि, काया माहें हे बे शून्य।। ४६।।
काया माहें भरे भंडार, काया माहें है जौंनार।
काया माहें कुदली कन्द, काया माहें लागै बंध।। ४७।।
काया माहें हिरसि हैवान, काया माहें पांचौं खान।
काया माहें शूरा खेत, काया माहें आपा रेत।। ४८।।
काया माहें शीश चढ़ाव, काया माहें भक्ति रु भाव।
काया माहें शीश चढ़ाय, काया माहें अंग लगाय।। ४६।।
काया माहें दीजै धाहि, काया माहें गोते खाय।
काया माहें रोवै रोज, काया माहें मीनी खोज।। ५०।।
काया माहें पद झनकार, काया माहें है दीदार।
काया माहें बाजैं तूर, काया माहें झिलमिल नूर।। ५१।।
काया माहें अजब विनोद, काया माहें लीजै शोध।
काया माहें वज्री बंध, काया माहें उलटि सर संधि।। ५२।।
काया माहें हे परलोक, काया माहें मुक्ता मोष।

काया मांहें चवता फूल, काया मांहें है मख मूल।। ५३।।
काया मांहें अजब धुनिकार, काया मांहें अखंडित धार।
काया मांहें रिमझिम होय, काया मांहें धोबटि धोय।। ५४।।
काया मांहें अजब दुकान, काया मांहें अमर अस्थान।
काया मांहें सतगुरु साध, काया मांहें आदि अनादि।। ५५।।
काया मांहें मुरली टेर, काया मांहें बाजैं भेर।
काया मांहें कूँजी बैंन, काया मांहें पाया चैंन।। ५६।।
काया मांहें कच्छब ध्यान, काया मांहे आवा जान।
काया मांहें अनभै हाट, काया मांहे शुन्य बैराट।। ५७।।
काया मांहें बाजी खेल, क काया मांहें मुक्ता मेल।
काया मांहें बाजैं बीन, काया मांहें रहता लीन।। ५८।।
काया मांहें हिरबंर हेत, काया मांहें छत्र श्वेत।
काया मांहें ढुरते चौंर, काया मांहें उज्जल भौंर।। ५९।।
काया मांहें गैबी रास, काया मांहें बिचरें दास।
काया मांहें लगै समाध, काया मांहें पावे दाद।। ६०।।
काया मांहें झिलमिल तेज, काया मांहे नूरी सेज।
काया मांहें झिलमिल नूर, काया मांहें है भरपूर।। ६१।।
काया मांहें राग बसंत, काया मांहें दुलह कंत।
काया मांहें उड़े अबीर, काया मांहें निश्चल थीर।। ६२।।
काया मांहें उड़े गुलाल, काया मांहें नजरि निहाल।
काया मांहें निश्चल राज, काया मांहें अक्षय प्रसाद।। ६३।।
काया मांहें प्याले पाख, काया मांहें नूरी ताख।
काया मांहें चोखा फूल, काया मांहें पींघू झूल।। ६४।।

साखी :- काया मांहें दीप सब, सतगुरु सिन्धु समाध।
दास गरीब निश्चय भये, देख्या अगम अगाध।। ६५।।

काया मांहें अजब हिंडोल, काया मांहें है चंहडोल।
काया मांहें ब्रह्म दरबार, काया मांहें अजब धूमार।। ६६।।
काया मांहें शंकर शेष, काया मांहें है उपदेश।
काया मांहें नारद इन्द, काया मांहें हे निर्द्वदं।। ६७।।
काया में तेतीसौं देव, काया मांहें कर ले सेव।
काया मांहें नौ अवतार, काया मांहें बारम्बार।। ६८।।
काया मांहें आवा गौंन, काया मांहें चौदह भौंन।
काया मांहें तीनौं लोक, काया मांहें पाई मोख।। ६९।।
काया मांहें है ब्रह्मण्ड, काया मांहें लागै दण्ड।
काया मांहें ब्रह्मा बीन, काया मांहें देवा तीन।। ७०।।

काया मांहें चारौं वाणी, काया मांहें चौरा खानी।
काया मांहें है धर्म राय, काया मांहें आवै जाय।। ७१।।
काया माहें चौरासी साल, काया मांहें जौरा काल।
काया मांहें जूनी योग, काया मांहें बाढ़े रोग।। ७२।।
काया मांहें सातौं अंड, काया मांहें लागै दण्ड।
काया मांहें शुन्य बे शुन्य, काया मांहें लागै धुंनि।। ७३।।
काया मांहें मधुकर बास, काया मांहें है कमलास।
काया मांहें है वैकुण्ठ, काया मांहें अविचल मंठ।। ७४।।
काया मांहें बहिश्त जहूर, काया मांहें चन्द्र सूर।
काया मांहें नौ लख तारे, काया मांहें गगन गैनारे।। ७५।।
काया मांहें परवत सिंधु, काया मांहें मुक्ता फंध।
काया मांहें चढ़ गैनार, काया मांहें ठारह भार।। ७६।।
काया मांहें बूठें स्वांति, काया मांहें सतगुरु दाति।
काया मांहें कुदली दीप, काया मांहें मोती सीप।। ७७।।
काया मांहें कर ब्यौपार, काया मांहें अजब बहार।
काया मांहें मेघ मलार, काया में दामनि चमकार।। ७८।।
काया मांहें अक्षर धाम, काया मांहें है निःकाम।
काया मांहें जत्त जिहाज, काया मांहें अजब अवाज।। ७९।।
काया मांहें खेबट जान, काया मांहें है बर्दवान।
काया मांहें मक्रतार, काया मांहें उतरैं पार।। ८०।।
काया मांहें गुमट अनूप, काया मांहें निर्गुण रूप।
काया मांहें हिलमिल हेत, काया मांहें भँवरा श्वेत।। ८१।।
काया मांहें खूल्है कपाट, काया मांहें पट्टन घाट।
काया मांहें नगर निधान, काया मांहें शहर अमान।। ८२।।
काया मांहें कादिर कुंज, काया मांहें तेज रु पुंज।
काया मांहें झिलमिल रंग, काया मांहें पलटै अंग।। ८३।।
काया मांहें तख्त रिसाल, काया मांहें रूप विशाल।
काया मांहें मंजिल मुकाम, काया मांहें है विश्राम।। ८४।।
काया मांहें अविगत आप, काया मांहें अजपा जाप।। ८५।।
साखी :- काया मांहें कुलफ है, सतगुरु दीन्ही खोल।
दास गरीब अलख लख्या, ना कछु तोल न मोल।। ८६।।

अथ षट् दर्शन घमोड बहदा

षट् दर्शन षट् भेष कहावैं, बहु विधि धूंधू धार मचावैं।
तीरथ व्रत करैं तरबीता, वेद पुराण पढ़त है गीता।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १।।
चार संप्रदा बावयन द्वारे, जिन्हौं नहीं निज नाम विचारे।
माला घालि हूये हैं मुकता, षट् दल ऊवा बाई बकता।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २।।
बैरागी बैराग न जानैं, बिन सतगुरु नहीं चोट निशानैं।
बारह बाट बिटंब बिलौरी, षट् दर्शन में भक्ति ठगौरी।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ३।।
सन्यासी दस नाम कहावैं, शिव शिव करैं न संशय जावैं।
निहबानी निहकछ निसारा, भूल गये हैं ब्रह्म द्वारा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ४।।
सुन सन्यासी कुल कर्म नाशी, भगवैं प्यौंदी भूले द्यौंहदी।
छल छिद्र की भक्ति न कीजे, आगै जुवाब कहौ क्या दीजै।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ५।।
भ्रम कर्म भैंरों कूँ पूजैं, सत्य शब्द साहिब नहीं सूझैं।
माला मुकटी ककड़ हुकटी, बांना गौडी भांग भसौड़ी।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ६।।
जती जलाली पद बिन खाली, नाम न रत्ता घोरी घत्ता।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ७।।
मढ़ी बसंता ओढै खंथा, बनफल खावैं नगर न जावैं।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ८।।
जंगम जैनी फोकट फैनी, नाम न चीन्हा गुरु गुन हीना।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ९।।
गलरी जिन्दा मस्तक बिन्दा, गूगल खेवैं जंत्र सेवैं।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १०।।
आकी दौरा बांधि बटौरा, धूमा धामी कैसे स्वामी।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। ११।।
नग्न निराशा तन कूँ त्रासा, पशु प्राणी श्वान समानी।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १२।।
इन्द्री चीरा घालि जंजीरा, घूंघर बाजैं मूढ़ न लाजैं।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १३।।
धूमी धामा करते सांमा, मांडि अखाड़ा रोपैं बाड़ा।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १४।।

हाथौं करुवा काँधे फरुवा, खौलि बनावैं सिद्ध कहावैं।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १५।।
जटा जलंधम भूले अंधम, तन बैरागी छापा दागी।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १६।।
वेद पुराणी कथा कहानी, पढ़ि भूले अर्थ न खूले।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १७।।
भूले योगी रिद्धि के रोगी, कान चिरावैं भस्म रमावैं।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १८।।
तोरैं पाती आत्म घाती, मूढ़ अनारी जढ़ से तारी।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। १६।।
ताल मंजीरा मन नहीं थीरा, बहु विधि नाचैं नाम न बांचैं।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २०।।
ये उरध बांही भूले सांईं, धूमर पाना भेद न जाना।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २१।।
तपा आकाशी बारह मासी, मौंनी पीठी पंच अंगीठी।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २२।।
सरवर मांहीं झरणैं न्हांहीं, बुद्धि के बौरा ले गई जौंरा।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २३।।
कन्द कपाली अंदर खाली, बाहर सिद्धा ये हैं गद्धा।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २४।।
चौरासी की चाल न चलिये अरदावा काहे कूँ दलिये।
मींहीं पीस मनी कूँ मारो, मगज कुफर का बोझा डारो।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २५।।
लंगर लोभी ऊपर शोभी, अदंर करुवा भांडी भरुवा।
यौह बी बहदा है, कहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २६।।
भेष अटंबर डाग दिगंबर लावैं चींधी सुरति न सींधी।
यौह बी बहदा है, बदहे से भेद अलहदा, यौ बी बहदा।। २७।।
मति के बौरा करते डौरा, योग न जानी भूले प्राणीं।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।। २८।।
उज्ज्ल हिरंबर चीन्ह विश्वंभर, दास गरीबं शब्द तबीबं।
याह साक्षी सुरति सलहदा है।। २६।।

अथ बहदे का ग्रन्थ

बैरागी सन्यासी भरुवे, चूतर छार लगावै हैं।
पांचौ रांड पचीसौं लरके, धूं धूं धार मचावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १।।
कण्ठी माला और मृग छाला, सिर पर जटा रखावैं हैं।
ढोलक ताल झालरी पीटैं, ताना री री गावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २।।
तन के योगी मन के भोगी, गूलर पेट पड़ावैं है।
गुझ बीरज का मर्म न जान्या, भद्दर भेष बनावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३।।
करुवा और कौपीन लिये जो, बन खण्ड गुफा बनावैं है।
खुध्या कूती घट में दूती, गृही द्वारे जावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४।।
खाखी और निर्बानी नागा, सिद्ध जमात चलावैं हैं।
रणसींगे तुरही तुतकारा, गागड़ भांग घुटावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५।।
काशी गया प्रयाग महोदधि, जगन्नाथ कूँ जावैं हैं।
लौहागर और पुष्कर परसे, द्वारा दाग दगावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६।।
तीर तुपक तरवार कटारी, जम धड़ जोर बंधावैं है।
हरि पैड़ी हरि हेत न जान्या, वहां जाय तेग चलावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ७।।
काटे शीश नहीं दिल करुणा, जग में साध कहावैं है।
जो नर जाके दर्शन जांहीं, तिस कूँ भी नरक पठावैं है।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ८।।
संपट शिला कूँ साहिब कहते, चेतनसार चलावैं हैं।
अंधा जगत पुजारी जाका, दुनिया के मन भावै हैं।।

यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ८।।
पारख लीजे शब्द पतीजे, शालिग शिला पुजावैं हैं।
तुलसी तोरि मरोरैं मूरख, जड़ पर फूल चढ़ावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १०।।
जैसे कुत्ता शहर सराय का, परकम्या दे आवै है।
ऋतुवंती सुंनही के पीछै, गंडिक गैले जावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ११।।
ककड़ भांग तमाखू पीवैं, बकरे काटि तलावे हैं।
सन्यासी शंकर कूँ भूले, बंब महादे ध्यावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १२।।
ये दस नाम दया नहीं जानै, गेरू कपड़ रंगावैं हैं।
पार ब्रह्म से परचे नांहीं, शिव करता ठहरावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १३।।
धूमर पान आकाश मौंनी मुख, सुच्चित आसन लावैं हैं।
या तप सेती राजा होई, द्वंद धार बह जावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १४।।
सन्यासी उदासी बाला, रूखड़िया कहलावैं हैं।
आत्म तत्त का मर्म न जानैं, शुन्य में पवन चढ़ावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १५।।
झरणैं बैठ तपैं पंच अग्नी, उरध मुख झूल झुलावैं हैं।
ज्ञानी पुरुषा निकट न जावैं, मूरख रीझ रिझावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १६।।
आसन करै कपाली ताली, ऊपर चरण हलावैं हैं।
अजपा सेती मरहम नाहीं, सब दम खाली जावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १७।।
चार संप्रदा बावन द्वारे, बैरागी अब आवैं हैं।

कूड़े भेष काल का बाना, संतौं देख रिसावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १८।।
लाये घात मंजारी बैठी, बिल्ली मूसे खावे हैं।
बग मीनी का ध्यान धरैं, जम किंकर आन डुरावैं है।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। १६।।
कोथलियों में हाथ धसोरैं, माला गुप्त फिरावैं हैं।
मन मणके का फेर न जानैं, साहिब दर नहीं जावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २०।।
त्रिकाली अस्नान करैं, फिर द्वादश तिलक बनावैं हैं।
जल के मच्छा मुकित न होई, निश दिन प्रवी न्हावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २१।।
स्याह लोक स्याह नीप स्याह जोज हैं, स्याह रूप कहलावैं हैं।
चार मुकित से महरम नांहीं, आगे की क्या पावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २२।।
एती सौंज बखाने मुरशिद, सो सतगुरु कहलावैं हैं।
कनफूका गुरु कलुवा भैंरों, सो हम कूँ नहीं भावैं हैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २३।।
मौनी मूर्ति घड़ी ठठेरे, कैसे आई हिरदे तेरे।
अहरनि पीटि हथौड़े घड़िया, जा ऊपर घन सारा झड़िया।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २४।।
पत्थर पीत्तल से करै नेहा, भूल गये नारायण देहा।
आत्म तत्त का मर्म न जाना, पूजत फिरते जड़ पाषाणा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २५।।
काले मुख का पत्थर गोली, याह मूर्ति तुम से नहीं बोली।
खान पान कूँ पाती तोरै, मोहन भोग आपही लोरै।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २६।।

तीरथ व्रतौं फिरैं खुलासा, ज्यूं पानी गल जात पतासा।
औह तालिब सुपने नहीं आया, अष्ट कँवल खोजी नहीं काया।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २७।।
सात धातु का पिंजर पिण्डा, जामें सकल दीप नौ खण्डा।
हरदम दम जगाया नांहीं, तातैं लख चौरासी जांहीं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २८।।
कार्तिक मास महातम न्हावैं, गया पिरागौं पिण्ड भरावैं।
रसनां राम रट्या नहीं कोई, अगली पिछली सब ही खोई।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। २९।।
पाण्डे पाठ पढ़ैं बहु भांती, ये हैं जम किंकर के नाती।
सूतक पातक जीमन जांही, सात जन्म शूकर के पांही।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३०।।
पहरि जनेऊ फूले फाले, ब्राह्मण होकर बहु घर घाले।
ऊजड खेड़े झोटा मार्‌या, तातैं ब्राह्मण का मुँह कारा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३१।।
ये हैं भैंरों भूत बिताला, पहरें रुद्राक्षों की माला।
चंदन चीते तिलक बनावें, बैठे गड़गड़ गाल बजावें।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३२।।
ऋग यजु साम अथर्वण भाषैं, लादैं बैल अरु टट्टू हाकैं।
खर की जूनि धरोगे देही, भूलि गये हो शब्द सनेही।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३३।।
सांना मुरका प्रहलाद बंधाया, भक्ति हेत पांडे नहीं पाया।
हिरणाकुश छाती तुरवाई, ब्राह्मण बाना कर्म कसाई।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३४।।
रावण ब्राह्मण बौह तप कीन्हा, महादेव की दिक्षा लीन्हा।
रामचंद्र की सीता हरिया, दस मस्तक मूंध मुहानैं परिया।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।

बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३५।।
भृगलता भगवान के मारी, जुगन जुगन यौं भये भिखारी।
यौह देखो ऐसी हुई न होई, जुगन जुगन ब्राह्मण गुरु द्रोही।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३६।।
विश्वामित्र सुनि विस्तारा, सौ पुत्र वशिष्ठ के मारा।
राजा ऋषि से बहुत रिसाये, ब्रह्म ऋषि से रीझ रिझाये।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३७।।
हरिचंद सतयुग में थे राजा, जिन के कौन बिगारैं काजा।
विश्वामित्र दई त्रासी, हरिचंद बाँधि बिकाये काशी।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३८।।
हाथ सुमरनी पेट कतरणी, गलि में माला तिलक निसरणी।
विष के लड्डू भक्त कहावै, दगर्‌यौं बैठे फांसी लावैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ३६।।
जूनी जीव उद्यानि खसोटे, आत्मघात करैं गल घोटें।
जीव की दया दर्द नहीं आवै, ब्राह्मण होकर क्रद चलावै।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४०।।
पोखर पीवत गऊ खिदावै, हिलकारे होय गाम फुकावैं।
ब्राह्मण बाघ भेड़िया होई, सुरह गऊ का पीवैं लोही।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४१।।
आदि अंत ब्राह्मण हिलकारे, जुगन जुगन इन्हौं जुलम गुजारे।
ब्राह्मण होकर कूदै फांधैं, कोरा नाज कड़कड़ा रांधैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४२।।
बीस हाथ से परैं उचंका, ये हैं दानें राक्षस लंका।
मरने से डरते नहीं डायन, पांह सेर का करै लगायन।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४३।।
काचा पाका फूकैं फांकैं, गल्हड़ खांहि रु झुल झुल झांकैं।
पेट पपोलैं चोटी रोलैं, अढ़कारैं और ठाढ़ौं बोलैं।।

यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४४।।
मुसलमान मदारी रौला, भूमि गये हैं मुरशिद मौला।
मूसल मस्त फिरावैं पीरा, पग में लंगर लोह जंजीरा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४५।।
ये जलाली खाली खेलैं। कूकत फिरैं अजांन रबेलैं।
माथा चीरैं चोट लगावैं, मीढ़यौं के ज्यूं मगज भिड़ावैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४६।।
किल किल किल किल करै खलीला, ये हैं बन खंडौं के भीला।
मकर फकीरी तन का सिक्का, जिन्ह कूँ लगै गैब का धक्का।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४७।।
सिर कोरा कचकोल बनावैं, जाके ऊपर भस्म रमावैं।
मृगछाला आसन बिस्तारा, भटकत फिरैं अजांन गंवारा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४८।।
फूंभी नाद सपेले घोरी, बाना भेष धरे हैं थोरी।
घर घर नाग नचावैं काले, जिन्ह के वज्र न खूल्हैं ताले।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ४६।।
ऊँचै आसन कान चिरावैं, बिल्लौरी मुंद्रा पहरावैं।
सेली सींगी भगवा भेषा, जिनकूँ गृही कहैं आदेशा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५०।।
विरक्त कहै रक्त बौहु राखै, नाना वर्ण ब्यंजना भाखैं।
सात धातु सांचै अनसारा, जिनकूँ विरक्त कहै गंवारा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५१।।
रुंड मुंड कछु भेष न बाना, ताहि न हिन्दू मुसलमाना।
सर्वंगी कहलावै सोई, दीन दुनी में भ्रिष्ट होई।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५२।।
सूर जंगली खाते हिन्दू, भूलि गये बहु बाना भौंदू।

हरी बराह धरे अवतारा, जिन कूँ भक्षण करैं गंवारा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५३।।
हक्क हक्क करत हैं हक्का, तीसौ रोजे साबित रक्खा।
सांझ परी जब मुरगी मारी, उस दरगह में होगी ख्वारी।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५४।।
काजी खलक मुलक कूँ देखो, सब घट एके बाना पेखो।
गऊ विनाशैं आदम खोरा, काजी मुल्लां गारत गोरा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५५।।
मुसलमान ईमानं कीजे, परद्वारे गलि छुरी न दीजे।
भोजन छाडि रुधिर क्यों खाई, दया बिना दरवेश कसाई।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५६।।
मुख मूंदे और झूठा खावैं, आब दस्त लेवै नहीं न्हावैं।
घोरी पिण्ड जैन सब धर्मा, भूलि गये सांईं घट घरमा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५७।।
जैनी योग वियोगं साध्या, भूलि गये उस अगम अगाधा।
बिना बंदगी झूठा रिसका, वैश्या पुत्र कहावै किसका।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५८।।
जैनी जीव दया बौह बाना, कर्ता कर्म कहैं अज्ञाना।
जा तत्त सेती येता होई, परमानन्द लख्या नहीं कोई।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ५९।।
काया माया सकल अमिथ्या, याह तो सही ज्ञान की संथ्या।
पारब्रह्म जान्या नहीं नेरा, बिना बंदगी सकल बखेरा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६०।।
मुख मूंदे हैं मुरद फरोसी, जिन से साहिब हैं सौ कोसी।
ररंकार रंगी नहीं रसना, जिनकी कैसे मिटि है तृष्णा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६१।।

जती सेवड़े जैनी जानो, सकल ढूंढिया रूप बखानो।
पारब्रह्म की नांहीं आशा, ये चौबीसौं जांहि निराशा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६२।।
चित्र विचित्र पतरा पोथी, बिना बंदगी है सब थोथी।
जंत्र मंत्र धात बंदगा, बिना नाम झूठा सत्संगा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६३।।
ज्ञान विचित्र योग अपारा, सर्व लक्षण सब से शिरदारा।
ऋग यजु साम अथर्वण भाषैं, जामे नाम मूल नहीं राखैं।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६४।।
सकल शुन्य में साहिब मौला, रक्त न पीत न काला धौला।
औह निर्बानी नजर न आया, योग ज्ञान का रीझ रिझाया।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६५।।
जैनी जुलम गुलम यौह गैला, जैसे है तेली का बैला।
घर ही कोश पचास पियारा, यौं भूलि गये साहिब दरबारा।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६६।।
जैनी जनम जुवा ज्यौं हारौ, पांचौं इन्द्री कसि कसि मारौ।
मन मूर्ति का मर्म न जान्या, तातैं जन्म जन्म हौंहि श्वाना।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६७।।
जैनी जल थल पुरुष बिराजे, जाकी सकल घड़ावलि बाजे।
घट घट में निर्गुण निरवानी, जैनी जाकी सार न जानी।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६८।।
काया माया पिण्ड रु प्राना, जामें बसै अलह रहिमांना।
दास गरीब मिहर से पाईये, देवल धाम न भटका खाईये।।
यौह बी बहदा है, बहदे से भेद अलहदा, यौह बी बहदा।
बहदा क्यौं जान्या, हम सतगुरु भेटे यौं जान्या।। ६९।।

अथ मूल उपदेश ग्रन्थ

प्रथम मूल कँवल कूँ बंधि, सुनों सतगुरु सहिदाना।
षट् दल कँवल अरोध, पवन द्वादश प्रवाना।। १।।
जूनी जन्म सुधार, मेटि इच्छा निःकामा।
स्वर्ग द्वारा मोक्ष, खुल्हत हैं बिन ही दामा।। २।।
दम सु दम के बीच, अलफ पद है दरवाना।
क्रिकल क्षुधा खोय, सही पंडित सुर ज्ञाना।। ३।।
दत्त देव कूँ बंधि, बांच हमरा परवाना।
प्रान अपान उद्यान, बियाना समान समाना।
यौह पढ़ने का मूल, समझि ले मात्रा कांना।। ४।।
गरीब, सुष्मणि सिंध समोय ले, तहां नहीं घाट अघाट है।
बंक नाल की राह में, तहां अमृत का गिरास है।। ५।।
इला पिंगुला दोय तीसरी सुष्मण सूची।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड, पिंड की ताला कूँची।। ६।।
वज्र दण्ड एक पवन, लगे कैसे तन में तारी।
सिद्ध साधक रहे भूल, अन मनसा मालनि मारी।। ७।।
काम क्रोध मद लोभ, लहरि ऊठै पचरंगी।
यौह मन अकल अजीत, सबल माया श्रीरंगी।। ८।।
लख बीछू की झाल, एक मनसा का कांटा।
शिष्य स्वामी लिये खाय, जीव जम जौंरा बांटा।। ९।।
गरीब, शंखौं गुरु गरद में मिले, पाया शब्द न सिंध।
सतगुरु कूँ सिजदा करूं, लख्या अगम नघ चंद।। १०।।
देह खेह तन छार, पिंड का कहाँ भरोसा।
यौह जग जीव जिहान, जानि ज्यों कांटे ओसा।। ११।।
गई चीज सो गई, रही बी सो चलि जासी।
मूर्ति सूरति बदन सकल सब खाख मिलासी।। १२।।
चलैं कच्छ और मच्छ, चलैंगे धौल और धरनी।
चंद्र सूर भी जांहि, कर्म काया और करनी।। १३।।
चलैंहि बहिश्त वैकुण्ठ, मन माया के चोजा।
पांच तत्त गुण तीन, न पाये राई खोजा।। १४।।
रैन दिवस में गैब, दिवस रजनी के मांही।
अलंत कोटि ब्रह्मण्ड, दिपेंगे पद परछांही।। १५।।
अचला पद अनादि, आदि जाकी नहीं कोई।
अटल पुरुष अलेख, भेष धारै नहीं सोई।। १६।।
गरीब, आया है संसार में, ताला कहा मजूसरा।

वस्तु वणज पाये बिना, भेष धरै सो दूसरा।। १७।।
शब्द सिन्धु कूँ जांन, मान अब मोर संदेशा।
ब्रह्मा विष्णु महेश, आये हैं नारद शेषा।। १८।।
मन मनसा के बीज, कहां इन्द्री की खानी।
दीजे मोहि बताय, परम गुरु देवा दानी।। १९।।
संख कल्प जुग गये, कहीं पाई नहीं ठौरा।
खोज बुझ बहु कीन्ह, मिटी नहीं दौरम दौरा।। २०।।
ये प्रपंच अनादि, आदि के होते आये।
मन बुद्धि इन्द्री मूल, कहो ये किनहूँ जाये।। २१।।
गरीब, कोटि कोटि कृमि कीट हैं, एक माखी के मूत्र में।
कोटि कोटि ब्रह्मण्ड हैं, एक पिंड के सूत्र में।। २२।।
बिन ही भोग संयोग, कल्पना करत अपारा।
कोटि कोटि ब्रह्मण्ड, रचे मनसा की लारा।। २३।।
इच्छा बीज न जर्‌या जरत हैं पिंड ब्रह्मण्डा।
मन माया महमंत, लग्या काया सिर डण्डा।। २४।।
कलश फूटि जो गया, धरणि जल मिल्या समूचा।
कबहूँ इन्द्र कुबेर, किबे भये कालू बूचा।। २५।।
गरीब, राजा प्रजा जगत में, दर दर डोलत सब फिरे।
सतगुरु दीन दयाल कूँ, खोटे से कीन्हें खरे।। २६।।
यौह मन जम का रूप, मने हैं धर्मराय ध्यानी।
मनहीं आवे जाय, मने भुगते चहूँ खानी।। २७।।
मने रचे प्रपंच, मने मन खाय लिया है।
मन हीं दूत्र भूत, मने मन लाग जिया है।। २८।।
गरीब, मन निज मन का भेद सुन, शब्द सिंधु की जात।
नाद बिंदु की सृष्टि है, कौन पिता को मात।। २९।।
गरीब, मन माया निज मन पिता, कीन्हा नहीं संयोग।
सुरति स्वरूपी होत है, नाना वर्णं भोग।। ३०।।

अथ अलफ नामा

अलख अपार अलील अगोचर, निरवानी निरधारं।
कृपा सिंधु करीम पुरुष तूं, है हाजर कर्तारं।। १।।
दीन दयाल दया के सागर, दिल अंदर दीदारं।
बेचगूंन चिंतामणि साहिब, है सो वार न पारं।। २।।
अकल करीम पुरुष अविनाशी, रमता राम कहावै।
बाहर भीतर भीतर बाहर, खेलत है निरदावै।। ३।।

मालिक मीरां मौला साहिब, मुरशिद पीर हमारा।
सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण, अनंत कोटि अवतारा।। ४।।
अलफ इलाम करीमा कादिर, है कुदरत के मांहीं।
स्थावर जंगम जून जिहाना, सब घट व्यापक सांईं।। ५।।
निरजूनी निरलेप निरञ्जन, मंजन मूर्ति मीत।
खालिक खलक खलक में खालिक, सोहं शब्द अतीतं।। ६।।
दम दरून दरवेश दयालं, पारिख लीजे सोई।
उड़गन भँवर बिहंगम मेला, त्रिकुटी कँवल समोई।। ७।।
अरश कुरश में व्यापक देवा, पूर रह्या जगदीशं।
दृष्टि मुष्टि से अगम आगोचर, देख्या बिसवे बीसं।। ८।।
हाजिर नाजिर उड़गन हीरा, हरदम है हैरानं।
कर्ता पुरुष करीम विशंभर, चरण कमल में ध्यानं।। ९।।
सुरति निरति से अगम अगोचर, बुद्धि वाणी से न्यारा।
शुन्य बे शुन्य में व्यापक बीना, विचरे अधर अधारा।। १०।।
अकल पुरुष साहिब अविनाशी, गुण अतीत घण नामी।
समर्थ साहिब सकल व्यापी, चिदानंद निज धामी।। ११।।
निःअक्षर निर्बान निरंतर, शीत घाम से न्यारा।
आसन असतल पिण्ड न प्राणा, दिल अंदर दीदारा।। १२।।
पारस नाथ पुरुष परमेश्वर, धनी दयाल हमारे।
निश्चल अचल अडोल अबोलं, कर्म भ्रम सब जारे।। १३।।
राम रहीम करीमा केशव, अलह पुरुष अविनाशी।
मैं समर्थ का सेवक हूँ, जो काटै जम की फांसी।। १४।।
दमैं स्याह दिल बीच दयालं, सौदा कर ले भाई।
गंज बख्श कर्तार पुरुष है, धोवो दिल की स्याही।। १५।।
हिरस खुदी कादिर नहीं भावै, सफा करो दिल अपना।
अनभै आनंद रूप पुरुष है, जाप अजपा जपना।। १६।।
अलफ अतीत अजूनी योगी, जुगतानंद कहावै।
अजर अलीलं आदि अनादं, बिन ही चरणौं धावै।। १७।।
सुन्दर श्याम शरीर न जाके, अविगत पुरुष विदेही।
सुख का सागर रतन अमोली, है सो सुरति सनेही।। १८।।
कौन इस्म नाम गाम, कादिर रहिमाना।
बजै नाद अकल आदि, पेख्या खिल खाना।। १९।।
पवन बंध सुरति सिंधु, निरती निर्बाना।
अकल मूल गगन फूल, पाया परवाना।। २०।।
बजैं तूर दर जहूर, चिश्म सिंधु मीना।

अजब तान धरो ध्यान, दरश नूर झीना।। २१।।
दम दरून बेचगूंन, पैठो दिल दरिया।
खालिक सर्वंग मांहि, दर्शत है धूप छांहि, सूभर सर भरिया।। २२।।
नांही जहां कर्म काल, मूरति राजिक रिसाल, दर्श में दिवाना।
सूक्ष्म मूरति अजाति, नांही जहां दिवस रात, चंद्र सूर भाना।। २३।।
गुण अतीत सर्व जीत, हारै नहीं कोई।
प्राचीन दिन अकीन, समझि बूझि लोई।। २४।।
बिना मूल अजब फूल, द्रवै दरवेशा।
ब्रह्मा लौं ब्रह्म कर्म, यौह तो है आदि धर्म, ध्यान धरै शेषा।। २५।।

अथ सर्व लक्षणा ग्रन्थ

उत्तम कुल कर्तार दे, द्वादश भूषण संग।
रूप द्रव्य दे दया करि, ज्ञान भजन सत्संग।। १।।
शील संतोष विवेक दे, क्षमा दया एकतार।
भाव भक्ति बैराग दे, नाम निरालम्ब सार।। २।।
योग युक्ति जगदीश दे, सूक्ष्म ध्यान दयाल।
अकलि अकीन अजन्म जति,
अष्ट सिद्धि नौ निधि ख्याल।। ३।।
स्वर्ग नरक बांचै नहीं, मोक्ष बंधन से दूर।
बड़ी गरीबी जगत में, संत चरण रज धूर।। ४।।
जीवत मुक्ता सो कहौ, आशा तृष्णा खण्ड।
मन के जीते जीत है, क्यों भरमैं ब्रह्मण्ड।। ५।।
शाला कर्म शरीर में, सतगुरु दिया लखाय।
गरीबदास गलतान पद, नहीं आवैं नहीं जाय।। ६।।
चौरासी की चाल क्या, मो सेती सुनि लेह।
चोरी जारी करत हैं, जाके मौंहडे खेह।। ७।।
काम क्रोध मद लोभ लट, छुटी रहे विकराल।
क्रोध कसाई उर बसै, कुशब्द छुरा घर घाल।। ८।।
हर्ष शोक हैं श्वान गति, संसा सर्प शरीर।
राग द्वेष बड़ रोग हैं, जम के परे जंजीर।। ९।।
आशा तृष्णा नदी में, डूबे तीनौं लोक।
मनसा माया बिस्तरी, आत्म आत्म दोष।। १०।।
एक शत्रु एक मित्र है, भूल पड़ी रे प्राण।
जम की नगरी जाहिगा, शब्द हमारा मान।। ११।।
निंद्या बिंद्या छाडि दे, संतों सूं कर प्रीत।

भवसागर तिर जात है, जीवत मुक्ति अतीत।। १२।।
जे तेरे उपजै नहीं, तो शब्द साखि सुनि लेह।
साक्षीभूत संगीत है, जासे लावो नेह।। १३।।
स्वर्ग सात असमान पर, भटकत है मन मूढ़।
खालिक तो खोया नहीं, इसी महल में ढूंढ़।। १४।।
कर्म भ्रम भारी लगे, संसा सूल बबूल।
डाली पांनौं डोलते, परसत नांही मूल।। १५।।
श्वासा ही में सार पद, पद में श्वासा सार।
दम देही का खोज कर, आवागवन निवार।। १६।।
बिन सतगुरु पावै नहीं, खालिक खोज विचार।
चौरासी जग जात है, चीन्हत नांहीं सार।। १७।।
मरद गर्द में मिल गये, रावण से रणधीर।
कंस केश चाणूर से, हिरणाकुश बलबीर।। १८।।
तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धर लेत।
गरीबदास हरि नाम बिन, खाली परसी खेत।। १९।।

अथ बिलास बोध

महल की खबर लखि भाई क, छाडो ज्ञान चतुराई।
बाई बिन्द कूँ, कर ठौर, फूले केतकी दर मौर।। १।।
कमल उलटि हंसा जोय, पट्टन घाट धोबटि धोय।
परी है प्रेम की फांसी क, मनुवा गगन के वासी।। २।।
लगी है उनमुनी तारी क, झिलमिल नूर गुलजारी।
बाजैं गगन मंडल तूर, दामिनी दरश झिलमिल नूर।। ३।।
कूरंभ कच्छ मच्छा धौल, तापर शेष की है पौल।
ब्रह्मा वेद की ध्वनि होय, विश्वंभर विष्णु चीन्हौ सोय।। ४।।
दरशै नील कण्ठ कैलाश, ता पर देख शिव का बास।
सुरनर मुनी जन मैदान, सनकादिक धरत हैं ध्यान।। ५।।
आसन अमर गुटका बंध, मेला सुष्मणा घर सिंध।
बामां गुदा में दे जान, तातैं उलटि पांन अपांन।। ६।।
दहना वज्र ऊपर राख, मन कूँ ले चढ़ावौ चाक।
कूवा कंकरी कैलाश, डोरी बिना भरते दास।। ७।।
द्वादश पवन परचे फरे, हंसा चढ़ो शिखर सुमेर।
लै की लाव है भाई, सलाई शील की लाई।। ८।।
मरुवे हैं मुलायम मेल, प्रेम की पाटि ऊपर खेल।
गाडो गूडरी गलतांन, धुरां धरि ध्यान का प्रवान।। ९।।

चंद्र सूर हैं दो बैल, गगनी गगन कूँ कर सैल।
कीली कुलफ जूड़ि जूहारि, गम की गौंन मैहनै ढारि।। १०।।
चित्त का चड़स दिल दरियाव, बारा नूर का भरि ल्याव।
बाइ बिहंगमी बेला क, क्यारी भरत है चेला।। ११।।
अर्शी बाग है नूरी क, मेवा अजब अंगूरीं।
अमर फल आदि है अनादि, जहां कोई खाहिं बिरले साध।। १२।।
झंडा त्रिकुटी के तीर, चौसठ सिन्धु सरोवर नीर।
ऊंचा मेरु पर्वत जान, सूरन ऊग्या पश्चिम भान।। १३।।
चंदा झिल मिला झंमकार, देखो उलटि पूरब द्वार।
तारे तंतनी उजियार, देखो त्रिकुटी चमकार।। १४।।
दामिनी खिमैं है उजियार, छ्यानवैं कोटि मेघ मलार।
बादल बिना ऊठैं लोर, कोयल कुहुकते हैं मोर।। १५।।
शीशी प्रेम के प्याले क, पीवै संत मतवाले।
प्याले खुरदनी है खीर, हंसा मान सरोवर तीर।। १६।।
चलि हंसा कलाली कुंज, झलकै जेत नूरी पुंज।
अमली अमल में हैरांन, सोफी नहीं पावैं जांन।। १७।।
चवता फूल जित चोखा क, पीवत हंस होंहि मोखा।
जलाबिंब नूर की धारा, जहां है नाम नवारा।। १८।।
बेड़े पड़े कोटि अनंत, साधु पार उजरैं संत।
बरदवानं अकाशी बांध, चिल्ला खैंच उलटा सांध।। १६।।
भौंहों की चढ़ी है कमान, निशाना रोप्या हे मैदान।
बेझे विलंब ना कीजे क, ग्यासी खैंचि कसि लीजे।। २०।।
रतनागर चक्र की ओट, बेझे लगत नांही चोट।
चकरी खोल्हि ले खिड़की, बटक सा बीज है बटकी।। २१।।
खूल्ही पवन से चक्री, अनाहद लगी है जिकरी।
चंपा चांदनी शिंभ द्वार, खूल्हे वज्र पौल किवार।। २२।।
दो दल कँवल की घाटी क, उघरी वज्र की टाटी।
अक्षर धाम का धागा क, पौंहचे हंस वीतरागा।। २३।।
मक्रतार मैंदाना क, अगमी अगम कूँ जाना।
बिन पग पंथ है भाई, खबरदार, उलटियो नांही।। २४।।
शंकर शेष पौंहचे नांहि, ब्रह्मा विष्णु कहो कित जांहि।
शुन्य में करै को सैली क, बंकी बाट है गैली।। २५।।
गाजै शब्द सिन्धु आवाज, अदली अदलि सतगुरु राज।
गवनी गवन है बारी क, शुन्य में गुमट अटारी।। २६।।
बिलावल बंग है अरसी क, महली महल हैं सरसी।

कंगूरे झिलमिले झांई, निरालंब नूर है सांईं।। २७।।
कंगूरे नूर के नीके क, चौदह तबक हैं फीके।
दुंद न दोष दरिया पाख, सतगुरु कहैं चेला साख।। २८।।
सलहली सैल है गादी, कला नट तिहरि ज्यूं साधी।
डिगे तो पड़े चकनाचूर, नीचे धर्मराय की हूर।। २६।।
हिरंबर हेत हिल मिल शुन्य, कर्म न धर्म पाप न पुण्य।
हीरे झिलमिला झमकंत, लाल अमोली दूलह कंत।। ३०।।
गुलजारी गली बैजार, सतगुरु का तहां व्यौपार।
सराफा है सही सतलोक, पारस लाल हैं अनजोख।। ३१।।
मोती झिलमिलै झमकार, ऐसा सिन्धु वार न पार।
कंद कपूर की टोडी क, बालद भरैं हैं बौडी।। ३२।।
मेर कुबेर है भंडार, अगमी अगम वार न पार।
कोटि वैकुण्ठ पाठ पुरांन, यज्ञ अश्वमेध सतगुरु दांन।। ३३।।
संखौं मुक्ति चंपी चूर, आगे मल्ल अखारा हूर।
योगी जोगिया ध्यानी क, वाणी पढ़ै ब्रह्म ज्ञानी।। ३४।।
मौनी बीतरागा संत, वहां कोई वार पार न अंत।
मेला भर्या है बरियाम, सौदा करैं हैं निःकाम।। ३५।।
गलीचे गगनि में हैं गैब, वहां नहीं जाति पायत ऐब।
अजाति हैं अनाहद रास, सतगुरु का निश्चल वास।। ३६।।
बिलौरी सेज है सोहं, चंपी करत है ॐ।
फुहारे छुटत हैं गगनी क, बेले बाग हैं रंगनी।। ३७।।
असमानी अलंकारी क, गूंजैं भँवर भणकारी।
अविगत गुमट है गलतान, फरके श्वेत ध्वजा निशान।। ३८।।
गैबी है विमान बिहंग, सैली सैल कर बिन अंग।
अविगत आप है राजा क, अनहद घुरैं हैं बाजा।। ३६।।
शब्द अतीत शुन्य समाधि, अगमी अगम आदि अनादि।
असंखौं चौंर है चंपा क, सतगुरु देश है बंका।। ४०।।
जके लाल है कुड़ता क, अरशी अरश में उड़ता।
ताखी नूर का चेहरा, समाना अजब है गहरा।। ४१।।
मुतंगा शुन्य की सेली क, सींगी अजब धुनि मेली।
गावै आप अनहद बैंन, हंसा मुक्ति पावैं चैंन।। ४२।।
परम हंसा बिहंगम बीन, योगी आप है ल्यौलीन।
जरदम चोलना बौह रंग, अरशी कुरस में है गंग।। ४३।।
नूरी नूर का मेला क, पिंड ब्रह्मण्ड बिन खेला।
अविगत शहर है बांका क, गवन है सुई का नाका।। ४४।।

सराफा अदलि उरदू शाह, कोई एक जांहि बंकी राह।
करि शुन्य शहर की शोधी, असंखौं शाह है मोदी।। ४५।।
संखौं सरस्वती स्वर बंध, रागी राग अति आनंद।
गायन है गुलाम अलीन, सनकादिक जहां बेदीन।। ४६।।
गधर्व मुनिजन महबूब, सिद्ध समाधि साधू खूब।
बाजे बजैं अनंत अपार, मेले मचि रही धूमार।। ४७।।
पखावज राग है ल्यौलीन, मृंदग शारंगी स्वर बीन।
ढोलक दुड़बड़ी दरहाल, रागी राग बंधै ख्याल।। ४८।।
तंबूरे तूर हैं नादू क, सुन कर बिचरते साधू।
टामक धरि नगारे घोर, शत सहनाईयां हैं जोर।। ४९।।
बाजै शंख झालर टाल, मुचंग बांसरी विशाल।
भेरि बिहंगम तुरही सार, रन शींग्यौं मची धूमार।। ५०।।
अलगोजे अलंकारी क, बाजैं घूघरु भारी।
ता पर शब्द की ध्वनि होय, बचन अतीत समर्थ सोय।। ५१।।
दोहूँ दिश दीप है दरहाल, वाणी शब्द सुंनि रिसाल।
वहां की चाल है गुलबीन, उलटा पंथ दरिया मीन।। ५२।।

वार्ता

प्रथम सकल शुन्य, दूजे अभै शुन्य, तीजे महा शुन्य, चौथे अजोख शुन्य, पांचमें अलील शुन्य, षष्टमें सार शुन्य, सप्तमें सत्त शुन्य। सप्त शुन्य ऊपर समाधि चकरी है। समाधि चकरी ऊपर अगाध चकरी है। अगाध चकरी ऊपर मुंनि चकरी है। मुंनि चकरी ऊपर ध्वनि चकरी है। ध्वनि चकरी ऊपर रास चकरी है। रास चकरी ऊपर बिलास चकरी है। बिलास चकरी ऊपर बिनोद चकरी है। बिनोद चकरी ऊपर अनरोध चकरी है। सहंस कोटि चकरी ऊपर चकरी सजी है। तिस के ऊपर अदली कबीर की गजी है। अस्सी अरब कोस समाधि से मारग कहूँ हूँ। अनरोध चकरी में रहूँ हूँ। जहां जुलहदी ताना बाने है। आपै पूरे आपै पाने है। पाताल लोक पाखली है। मृत्यु लोक दोलड़ा है। इन्द्र लोक तिसई है। धर्मराय का लोक, लील कोर खरड़ी है। स्वर्ग लोक चौसई है। ब्रह्मा का लोक पैंसई पटा है। विष्णु का लोक छैसई है। शिव का लोक सतसई है। निरंजन का लोक अठसई अटंबर है। मूला माया का लोक नौसई है। सतगुरु का लोक हजारी है। सत्य लोक ग्यारा सई झीना है। सत्य लोक के ऊपर अनिन मारग है। पाताला लोक से सत्य लोक

सोलह शंख कोस है। ये तो एक अण्ड की बातां है। ऐसे ऐसे सप्त शंख अंड हैं। सप्त संख अंड ऊपर अनिन मारग है। अनिन मारग के पंथ हमौं गवन किया है। इत लग भेद धर्मदास कूँ दिया है। वहां हमौं शब्द शंख टेर्‌या है। वहां से धर्मदास सत्यलोक कूँ फेर्‌या है। फिर हम अनिन मारग चलें हैं। सत्तर महा प्रलय पंथ में हुई हैं। वहां अकह है, अलह है, अबै है, अदे है, अथै है। शब्द है न स्वाल है। तिसके ऊपर गूंगनी मारग है। फिर वहां की बातां न कहूँगा। फिर हम उलटे फिरे, सत्य लोक में आवते। सत्तर महा प्रलय हुई हैं। फिर वहां निरंजन है न माया है। फिर वहां हमो हिरंबर हिलमिलाट में गोता खाया है। सत्य पुरुष की एक पलक में, अनंत महा प्रलय बीते है। एक महाप्रलय में, सप्त शंख अंड की टोडी खिसै है। एते का अनुमान हमारै है। बिलास बोध में, भेद भिन्न भिन्न कर कह्या है। पृथ्वी तत्व कूँ जल तत्व ग्रासैगा। जल तत्व कूँ अग्नि तत्व ग्रासैगा। अग्नि तत्व कूँ पवन तत्व ग्रासैगा। पवन तत्व कूँ गगन तत्व ग्रासैगा। गगन तत्व कूँ निरंजन ऊँकार ग्रासैगा। ऊँकार निंरजन कूँ अविगत ग्रासैगा। ऐसे सप्त शंख अण्ड की टोडी खिसैगी। जब तुम कहां रहोगे भाई। जिसतैं पहली ही आगम विचारो। ये तो बातां कहन सुनन की नांहीं, करि पाड़ने की हैं। यौह मन माया का जाल बिछ्या है। कर्म चबीना हंस चुगैं हैं। पारधी सर सांधे खड़ा है। तेरी पर कुट है। जे तूं फंध्या तो यहां ही रहैगा। युगन युगन कर्म चबीना चबाईयेगा। एक एक दाणें का लेखा है। जेते दाणें तूं चाबैगा, जेती बेर तेरी गुद्‌दी की राह जुबान काढ़ियेगी। मौहम्मद और माधो कूँ पूछि देखो। एक एक दाणा चाव्या था, सो अजहूँ नहीं छूटे। फरीद बारह वर्ष कूये में लटके। माथे पर काग आंनि बैठै, आँखि काढ़ने कूँ। एक मन मुरारि तपस्वी कूँ तप किया था। दस हजार वर्ष शिला पर। फिर औह दरगाह में गया। वहां धर्मराय बोल्या, अदलि करूं अक फलज करूं। बोल्या, अदलि करो। शिला हमारी क तुम्हारी। ना तुम्हारी। तो दस हजार वर्ष शिला धरि ले सिर ऊपर। फिर मन मुरारि ने कह्या, फजल करो। धर्मराय बोल्या, लेखे सिर लेखा है भाई। मैं धर्म का राज करूं हूँ। तेरे सिर तैं उतारौं, तो मेरे सिर धरिये। अदलि कर के फजल करूंगा। जब मन मुरारि तपस्वी ने कह्या, हजार बार तोबा है। तपस्वी तो अनंत कोटि हो हो गये। एक काणा कर्ण तपस्वी था। उन बाईस लाख वर्ष तप किया। तब उसके मन में मोदि आई। मेरा सा जाजुल तप किन्हें नहीं किया। जब धर्मराय ने उसके वास्ते

विवान भेज्या। चलो तुम याद किये हो। यहां एक पर्वत पर शिला है, उसकी परिक्रमा दे चलो। जब वहां तपस्वी गया। अठारा करोड़ काणें कर्ण अंक लिख लिख गये हैं। फिर पीबरत नें ग्यारह अरब वर्ष तप किया और ग्यारह अरब वर्ष राज किया। जब धर्मराय ने पारषद भेजे। पीबरत तुम चलो। ग्यारह अरब तो तप किया और ग्यारह अरब राज किया। इतने में तो दम लेखे कोई लाग्या नाहीं। जब पीबरत बोले, मेरे तांई एक दम मांग्या देहो। पारषद बोले, खबरदार जे तैं दम लिया। दम देने का तेरे तांई हुकम नहीं। आगे धरि ले गये। जब चित्रगुप्त ने लेखा लिया। पहली तो तप किया पीछे राज किया। कहो तो कुछ ल्याये बी, अब खाली ही आये। जब पीबरत बोल्या, महाराज खाली ही आये। जब धर्मराज बोल्या, करो इस का मुँह काला। जब पीबरत बोल्या, महाराज, मेरा काला मुँह क्यों कीजिये है। धर्मराय बोल्या, बंदगी के वास्ते भेज्या था। बंदगी क्यों करी नांही। पीबरत बोल्या, तकसीर हुई। मारकंडे गुसांईं ने तप किया। दस हजार वर्ष पदम आसन। तब इन्द्र नैं उर्वशी भेजी, ठगने के तांई। उर्वशी ने ऐसा रूप धर्‍या। विशाल लोचनी चंद्र बदनी। छत्तीसौं बाजे ले कर आई। श्रवण तो राग मोहे। लोचन तो रूप मोहे। नासिका तो सुगंध मोहे। रसना तो रिसाल मोहे। एक मस्तक ऐसा लाल विशाल धर्‍या अज सातौंपुर चमत्कार में दरसै। दांतों पर हीरे हिंरबर की कणी जड़ी। शीशफूल की शोभा क्या कहूँ एक एक मुक्ताहल ऐसा जड़्या, जिस में च्यारौं मुक्ति और वैकुण्ठ भासैं। कांचू के मोतियों के लहरिया लगाये। जैसे घटा में दामिनी खिमें है। ऐसा गुलाब मलागीर लाया। द्वादस योजन मकरंद ऊठै। उस बन खण्ड के तपस्वी तो पतंग के ज्यूं जलि मरे। एक एक पायल ऐसी बजै है। अज सातौं पुर मोहित हो रहे। उस बन खण्ड के तपस्वीयों का बीज नाश किया। मान सरोवर भूमि ईशांन कूँट उर्वशी ऊतरी। मारकंडे गुसांईं के माने का साज धरि के। सहंस नाच नाची। मारकंडे गुसाईं नहीं मुसकाये। तब खिसियानी होय कर कमर का डोरा तोड़ि गेर्‍या। तब मारकंडे गुंसाई बोले, हे बेटी, हे बहनी, हे माई, तूं हमारै क्यूँ आई। उर्वशी कहै है, हे मारकंडे गुसाईं, तुम्हारी योग समाधी कहां है। जब मारकंडे गुसांई बोलै हैं। सप्तपुरी के ऊपर ब्रह्मलोक है। वहां एक अविगत राजा है। उस के एक एक नित नेम, नौलाख उर्वशी नांचन आवैं हैं। एक एक उर्वशी कैसी है। जिन के सात सात बांदी हैं तुम्हसी, पग धोवने कूँ। वहां थे हम। जेती धूमा धामी करी तुम्हौं, हमौं कुछ सुनी न देखी। अब

के फिर बन कर आवो। जो कछु जुरत होय तो। तब उर्वशी शीश कूट कर रोई। मैं दुहागिनि कीजियौंगी। इन्द्रलोक में कहैंगे। तुम मल्ल अखाड़ा हार आई। मारकंडे गुसाईं बोले, तुम से कोई और अगली हो, और कूँ भेजो। तब उर्वशी बोली, महाराज इन्द्र की पटरानी मैं ही हूँ। हमारी जो पति राखो, तो इन्द्रलोक में चलो। हमौं तीन लोक के मुनीश्वर तो लूट लिये है। तुम किस लोक में रहो हो, तुम जानौं मारकंडे गुसांईं कहैं है। वे तो कुम्हार है। सो तेरे ऊपर चढ़ैं हैं। तूं गधी है। कोई पजावा लावना, अननीम उसारनी। इन्द्र मरैगा जब किस नैं करैगी। महाराज मैं चौदह इन्द्र बरूंगी। चौदह इन्द्र मरैंगे तब तूं कहां जायगी। तब उर्वशी कहै है। मृत्युलोक में गधी कीजियौंगी। जेते इन्द्र मैं भोगूंगी। तेते इन्द्र गधे कीजियेंगें। तब मारकंडे गुसांईं बोले, तूं हमारे तांई इन्द्र लोक में क्यों चलावौ थी। अपनी पत्त राखने के वास्ते। मारकंडे गुसांईं बोले। गधियौं के पत्त कैसी। कोई उतरो और कोई चढ़ो। तब उर्वशी प्रणाम करि के उठि गई। तब इन्द्र आंनि कर मारकंडे गुसांईं के चरणौं परे। चलो बंद नवाज, इन्द्रपुरी लीजे। मारकंडे गुसांईं बोले, रे रे इन्द्र तूं क्या कहै है। रे रे इन्द्र हमारे इन्द्रपुरी किस काम की है। हम निःकामी हैं। हम निहइच्छा है। निर्गंध हैं। निरबासीक है। एक समय हम ब्रह्मलोक में चले जाए थे। वहाँ हम देखैं तो सतासी लिल इन्द्र बैठे हैं। तब उन्हों हमारे चरण लिये। ये ब्रह्म शरे की बातां हैं। ब्रह्म शरा कैसा है। अज असंख्य असंख्य कोस की सैल है। सो तुम्हारी इन्द्रपुरी काग की बीट है। यौह पटतरा दे कर मारकंडे गुसांईं ने इन्द्र समझाया। जे जानै तो इन्द्र पदवी का सकंल्प ल्यौह। लख चौरासी के खालसे तैं छुटावैं, तेरे तांहीं। इन्द्र बोल्या महाराज, किसी समय भल्यौं। अब तो मेरे तांही राज करने देहो। एक बलिराजा था। जिन निनाणवैं यज्ञ करी। स्वर्ग पुरी के राज के वास्ते। जिस के बावन स्वरूप धरि के कन्हैया जी गये। साढे तीन पैंड जिमी मांगी है। वहां बलि राजा बोल्या, रे पांडे क्या मांग्या। मै तो सर्वस्व राज देता। जब बावन स्वरूप बोले हैं। हमारे कर्म में कुछ ऐसी ही है। जब बलि राजा बोल्या, सिद्धि करावो तो जब तीन लोक की तीन पैंड कीन्ही है। आधे पग कूँ पीठ दीन्ही है। स्वर्ग कूँ नहीं जान पाये है। पाताल कूँ पठाये हैं। यज्ञ करके साहिब कूँ मिल्या चाहै, तो सो यों बी नहीं है। एक समय सेऊ सम्मन ने यज्ञ करी थी। ढाई सेर अन्न की। निहइच्छा रूपी। सो साहिब के धाम कूँ गये। बलि राजा नै निनाणवैं यज्ञ करी। सो

पाताल कूँ पठये। इस यज्ञ में और उस यज्ञ में क्या भेद। बलि ने तो इच्छा रूपी करी। सेऊ सम्मन ने निहइच्छा करी। सेऊ सम्मन तो साहिब के धाम गये। बलि राजा पाताल कूँ पठये। एक सघड़ राजा था। जिन एक तपस्वी सेया था। उन ही तपस्वी ने साठ हजार पुत्र दीन्हे। राजा सघड़ के तांई। जैसा ही तो बांह बल। जैसा ही माया का बल। जब उसके क्या उद बिरति उठी। जांनिए किसी से युद्ध कीजै। जब कुल पुरोहित बोल्या, जहां हम कहैं, तहां द्रव्य लगाओ। एक कूवा एक बांय एक पोखर बनावो। तो अश्वमेध यज्ञ का फल होय। तब राजा सघड़ ने जो सिरड़ि लागी। सब जिमीं छांनि गेरी। तब जिमीं विष्णु के धाम जाय खड़ी हुई। महराज, मेरे तांई कोई ठिकाना बताईये। मैं जला वतन करी। जब विष्णु विश्वंभर नाथ बोले, किन जला वतन करी। तब वहां पृथ्वी बोली, महाराज, एक मृत्यु लोक में सघड़ राजा है। जिसके साठ हजार पुत्र हैं। नित नेम कूये बांय पोखर खोदे हैं। जब विष्णु विश्वंभरनाथ बोले, जावो ना खोदेंगे। देखो बंदगी बिना जिहाज डूबैं हैं। पांडव एक घोड़ा ल्याये थे, इन्द्र के तैं सावकरण। यज्ञ संपूर्ण करने के वास्ते। इस बात नैं तो सब कोई जाने है। कौन सी तिरनें की है और कौन सी डूबने की है। इस बात की ख्यास कोई नहीं करते। औह जो घोड़ा पंडवौं कै आया था, वहीं घोड़ा राजा सघड़ कै आया। इन्द्र नै दोय बात नहीं सुहाती हैं। एक तो तप और एक यज्ञ। इन्द्र के भय रहे है। हिलकारे छूटि रहे है। तीन लोक में अज तप और यज्ञ करके, मेरा राज लेले नहीं। एक समय कपिलमुनि तपस्वी तप करै था। गंगासागर की खाड़ी में। दोय चोर इन्द्र नै पठाये। राजा सघड़ के से घोड़ा खोल्हि कै, कपिलमुनि तपस्वी की जांघ कै धांधि गये। देखो बाजीगर क्या ख्याल करै है। सघड़ के साठ हजार सत्यानाश की मढ़ी नै जांहि है। उस घोड़े की खोज की गैल फौज चढ़ी है। जे देखैं तो कपिलमुनि तपस्वी की जांघ के बंधि रह्या है। तपस्वी की हीकौं में भाले अड़ाय दीन्हे। वे जो पलक झूम रही थी, सो कपिल पुनी ने खोल्ही हैं। अग्नि बाण छूटैं हैं। सघड़ के साठ हजार पुत्र जलि गये। एक ग्वालिया ने एक गऊ गोदांन उतारी। गुरु ने बताई वैतरणी नदी में पार उतारैगी। फिर कौन गुरु उपदेश दे है। ब्राह्मण गुरु। एक समय ऐसी भई, जो उस गवालिया के तांई और उस गऊ के तांई सिंह मिल गया। वन खंड में दोनों का भक्षण कर गया। तब उस ब्राह्मण को पूछने लागे। यह गऊ और गवालिया कहाँ गये। बोल्या, वैकुण्ठ में गये। तब

कुल के लोग बोले, वैकुण्ठ में कहाँ गये। उन्हें तो सिंह खा गया। तो यहां गवालिया कौन है और गऊ कौन है। गवालिया तो राजा सघड़ है। कूये बांय खुदवाई और यज्ञ करी, ये गऊ हैं। बन खंड का सिंह कपिल मुनी है। जेती यज्ञ थी और साठ हजार सघड़ के पुत्र थे, इन सब कै तांई कपित मुनि खा गया। सो कपिल मुनि ने यौह तो एक महोछा कर्या है। और एक यज्ञ बतावैं हैं। एक समय मानधाता चकवे था। जिस के उदय अस्त बीच चक्र चलैं थे। जिस की भुजा खुजाई, अज किसी सेती युद्ध कीजे। चार्यो कूँटौं तें चार हिलकारे चले आवैं थे। पंथ में चुनक ऋषिश्वर मिल गये। जिस की कौपीन कै सात गांठि थी। सातौं पुरि के ऊपर लात मार रह्या। चीपी मूंधी मारै तो महा प्रलय हो जाय। सूधी करै तो सृष्टी खड़ी हो जाय। ऐसा जाजुल तपस्वी। अठासी हजार ऋषिश्वर जलेव में चलैं हैं। और उपमा क्या बरणौं, दुर्वासा से ऋषिश्वर धूणी ढोवैं हैं। जिन के आठ सिद्धि नौ निधि आगै हाथ बांधे खड़ी हैं। किरणि धारी कलंद्र। कच्छ मच्छ कूरम्भ शेष धौल वैकुण्ठ महत्त लोक लग सब थरणां क्यूं कंपैं हैं। एक बहेलिया पुरान, कौपीन के ते गांठ खोल्हि कर हिलकार्यौं के ताहीं दीन्ही। हिलकारे बोले, महाराज, क्या है इसमें। जब चुनक ऋषिश्वर बोले हैं, रे मेरे बहेलिया पुरान में असंख्यौं क्षूहणि बह गई हैं। तुम्हारे तो बहत्तर क्षुहणि है। जावो, मानधाता चकवे से कहो, जे ना सरै तो हम ही युद्ध ओट्या। जब हिलकारे हंसे, अरे कंगाल, तेरे तांई तो दांणे बी पैदा नहीं होते। हिलकार्यौं हकीकत कही, चुणक ऋषिश्वर की, मानधाता चकवै सूं। तुम्हारा युद्ध चुणक ऋषिश्वर ने ओट्या फौज में नकीब फिर्या, युद्ध की तैयारी हुई। चुनक ऋषिश्वर नै चार पुतली बनाई। अपने अपने औसरे, बहत्तरि क्षूहणि का चरबन कर गई। ऐसे ऐसे राजा तो अनंत कोटि हो गये। जोजरी जुरार, लाखा फूल से दातार। अब जोजरी नदी कहै हैं।

साखी :- गरीब, लाखा सरीखे लख गये, और अनड़ सरीखे आठ।
हेम हड़ाऊ सारखा, आया न दूजी बाट।।

लाखाफूल नै तो फूल छायें, और अनड़ राजा ने सारी वनस्पति छाई। हेम हड़ाऊ राजा नै कांटे मोती परोये। एक राजा रतन पारिख था। जिस की गैल निनाणवैं कोटि राजा योगी हुये। एक समय गोरख गुसांईं गोसे चुगैं थे। कचर्यौं की गाड़ी चली आवै थी, मठ के तांही। वहां गोरख गुसांईं ने अपने बट का कचरा ले लिया आधा। मठ के योगी कहने लगे, रे यौह आधा कचरा कैसा है। जब

वहां गड़वाल्यौं कह्या, तुम्हारा चेला एक गोसे चुगै था, उनही लिया। तब वहां गोरख गुसांईं के कानौं पर टिकड़ी चढ़ाई। गोरख बोले, ऊठ्या सो सिद्ध, बैठा सो पत्थर। बारह हजार मूर्ति तो पत्थर हो गई, और सिद्धौं की कोई गिनती नहीं। देखो, दुतरफा शब्द चलै है। फजल बी होय है, अदलि बी होय है। जिस ते पीछे गोरख ग्यारह बेर बिके, पर काज कूँ। सेऊ सम्मन शीश दिया, सेर ढाई नाज कूँ। बलि पठये पाताल, मन इच्छा धारी राज कूँ। रावण रण के मांहि लिया है, पकडि बुटेरी बाज कूँ। नबी मौंहम्मद पीर जु, पौंहच्या नहीं नमाज कूँ। यादव छप्पन कोटि सिंघारे, कठिन अवाज कूँ। अचल नाम बिलास बोध। निर्भय अखंड काया शोध। **दास गरीब** अनूप दीदार। धन्य बंदी छोड कबीर जुहार। कच्छ मच्छ कूरम्भ शेष, धौल जिमीं आकाश। पवन पानी चंद्र सूरज, कर्ता की कहानी। सात दीप, नौ खंड, चौदह तबक, इक्कीस ब्रह्माण्ड, याह तो एक अंड रजधानी है। ब्रह्मा विष्णु महादेव, आदि माया धर्मराय सेव, नारद शारद इन्द्र सनीप, छ्यानवैं कोटि मेघ माला, निनानवैं कोटि खेड़े, एक अंड के बीच। स्वर्ग पाताल महत लोक वैकुण्ठ, दोजख और बहिश्त, अठासी सहंस दीप, अठसठ तीरथ, सात समुंद्र, अष्ट कुली पर्वत, अठारह भार बन माला, चार खानी, चार वाणी, एक अंड में बिहानी। तेतीस कोटि देवता, नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, चौबीस अवतार, अठासी हजार ऋषिश्वर, लख चौरासी जात, सवा लाख उपजे, लाख खपे, मेदिनी सिंघार योनी जौंरा, बेह और भौंरा, यौह एक अंड मध्य सामग्री है। नारद शंकर, सनकादिक कपिल देव मुनि भूप। नरहर दास जनक बल भीष्म, सुष्मण धर्म स्वरूप। ध्रुव प्रहलाद दत्त और गोरख, पाखरिया रणधीर। नामा और रैदास धन्ना सिर, सतगुरु मुकट कबीर। भक्ति हेत अंडा मध्य आये, ज्यूं अलल पंख गैंनार। लख चौरासी बंध छुडाई, सतगुरु अधम उद्धार।।

साखी :- गरीब, जैसे तन में मन रहै, गवन करै तब न्यार।
सप्त शंख अंड बरनि हूँ, भरिया ऊंट कतार।।

असंख्य जुग बीते चलते। अगली मुहारि ढुली है, न पिछली पहुँची है। एक एक शुतरौं के कजायौं में, दस दस हजार अंड हैं। सो ये बातां एक कतार की कहूँ हूँ। कैसे शुत्र हैं, शक्ति शक्ति स्वरूपी। प्रपट्टण के चौंक में से, दशौं दिशा ने ऐसी कतार चलैं हैं। याह लीला बे उनमान है। जिन शुत्र और अण्ड बनाये, ओही जंत्री जानै। जाकै असंख्य कोटि ब्रह्मा हैं। जाकै असंख्य कोटि विष्णु हैं।

जाकै असंख्य कोटि शंभू हैं। जाकै असंख्य कोटि नारद हैं। जाकै असंख्य कोटि इन्द्र हैं। जाकै असंख्य कोटि चित्रगुप्त हैं। जाकै असंख्य कोटि धर्मराय हैं। जाकै असंख्य कोटि लक्ष्मी हैं। जाकै अंसख्य कोटि सावित्री हैं। जाकै असंख्य कोटि परवती हैं। जाकै असंख्य कोटि कामधेनु कल्पवृक्ष हैं। जाकै असंख्य कोटि मेरु कुबेर भंडार भरे हैं। जाकै असंख्य कोटि रिद्धि हैं। जाकै असंख्य कोटि सिद्धि हैं। जाकै असंख्य कोटि सरस्वती स्वर भरत हैं। जाके असंख्य कोटि अनभै पाठ उच्चरैं हैं। जाकै असंख्य कोटि वेद ध्वनि करैं हैं। जाकै असंख्य कोटि ध्यानी ध्यान धरैं हैं। जाकै असंख्य कोटि रागी राग उच्चरैं हैं। जाकै असंख्य कोटि योगी योग ध्यान धरैं हैं। जाकै असंख्य कोटि साध भव भाक्ति करैं हैं। जाकै असंख्य कोटि अनाहद बाजे बजैं हैं। जाकै असंख्य कोटि गायन सजैं हैं। जाकै असंख्य कोटि धुनि होंहि हैं। जाकै असंख्य कोटि नवेले नाच होंहि हैं। सो तो शुन्य मंडल का राजा है। तिस का नाम अविगत है। उसकी उपाई हुई बाजी की गति नहीं पावती है। उसकी गति कोई क्यूं कर पावैगा। उसके चित्त के चौक में से शुतरौं की कतार चली जांहि है। अगली मुहारि ढुलैगी और पिछली वहीं पौंहचेगी। तिस दिन धूंधूंकार का शंख बजैगा। सकल शुत्र और सकल अंड, महा प्रलय में आवैंगे। अविगत निरमोही निरालंभ गुसांईं रहेंगे, और महा प्रलय में आवैंगे। एक अविगत गुसांईं कै रत्नागर बीन है। तिस में तो अनुरागी संत रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै उजागर बीन है। तिस में ज्ञान उजागर संत रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै सुखसागर नाद है। तिस में ध्यानी योगी रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै पुञ्ज बीन है। तिस में चांचरी प्रकाशी रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै तेज तूर है। तिस में षट् कर्म उपासी रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै गुलसफा नाद है। जिसमें पवन अरोधी रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै पिंगुल बीन है। जिस में शब्द जौहरी योगी रहैंगे। एक अविगत गुसांई कै ल्यौलीन बीन है। जिसमें विरह वियोगी संत रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै रुद्र बीन है। जिसमें रिद्धि उपासी योगी रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै विलास बीन है। जिस में बासना स्वरूपी संत रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै सुख सैल बीन है। जिस में बीतरागा हंस रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै मधुर बीन है, जिसमें अमीरस मध पीवन वाले हंस रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै शुन्य सलहली बीन है। जिसमें इन्द्री जीत भक्त योगी रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै अविचलन बीन है। जिस में निर बासीक हंस

रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै बिहंगम बीन है। जिस में निःकामी हंस रहैंगे। एक अविगत गुसांईं कै सकल सरोवन बीन है। जिसके अष्ट कँवल दल में ररंकार ध्वनि होय रही है। वे हंस सकल सरोवन बीन में रहैंगे। जिनके रूंम रूंम में अखंडित नाम चलैं है। वे शब्द अतीत अनाहद पद में रहैंगे। अविगत निर्वान में मिलैंगे। अपना अपना बीज अंकुर भक्ति हेत लिये आवैंगे।

साखी :- **गरीब,** भक्ति बीज पलटै नहीं, जे युग जांहि असंख्य।
सतगुरु सिर पर राखिये, चौरासी नहीं शंक।।

वहां एक आदि ॐकार मूला माया है। अविगत गुसांईं के चरण कमल में रहती हैं। ॐकार के नाद में लख चौरासी का खालसा है। जिसमें कृतघ्नी जीव रहैंगे। एक ॐकार कै लुब्धी बीन है। जिसमें माया के लोभी जीव रहैंगे। एक ॐकार कै करूरी बीन है। जिस में क्रोधी जीव रहैंगे। एक ॐकार कै स्याह रूह बीन है। जिसमें कामी जीव रहैंगे। एक ॐकार कै बिहंडम बीन है। जिस में मोहित जीव रहैंगे। एक ॐकार कै बिटंब बीन है। जिसमें बिटंब वादी जीव रहैंगे। एक ॐकार कै रक्त श्यात बीन हैं। जिसमें गुरु द्रोही जीव रहैंगे। एक ॐकार कै निषध रासी बीन है। जिस में निंदत जीव रहैंगे। एक ॐकार कै हलाहल बीन है। जिस में आंन उपासी जीव रहैंगे। एक ॐकार कै विष्णों उच्चार बीन है। जिस में सरगुण उपासी जीव रहैंगे। एक ॐकार कै रक्त कुटिल बीन है। जिस में जीव हिंसा करने वाले रहैंगे। याह तो लख चौरासी की खालसे बरणी और वे जो हंस बरणें, वे लोक दीप के हंस बरणें। जिस दिन उत्पत्ति अखंड नाद बाजैगा। पांच तत्व तीन गुण का क्रितम ख्याल खड़ा होयगा। अष्ट प्रकार ॐकार माया बिस्तरेगी। अपना अपना बीज अंकुर लिये आवैंगे, युग प्रवान।

साखी :- गरीब, हंस लोक में हंस हैं, सुख सागर के तीर।
आनंदी अविगत रते, अचल हिरंबर थीर।।
गरीब, चौरासी की खालसे, पड़े बहुत हैं जीव।
मिटे न मन की वासना, भूलि गये हैं पीव।।

विलास बोध में आदि और अंत की बातां कही है। साहिब का किया हुवा सजै है।

साखी :- गरीब, साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये साध।
ये तीनौं अंग एक है, अविचल आदि अनादि।।
दास गरीब कबीर कूँ, दया करी दरहाल।
चरण कमल हंसा रहैं, मेटे जम के साल।। २३०।।

अथ सुख सागर बोध

अविगत महल की सुन बात, एका एक संग न साथ।
जासे हुवा सकल जिहांन, ॐ कार पंच बिवान।। १।।
ब्रह्मा विष्णु शंकर आदि, अविगत ध्यान शुन्य समाधि।
कृतम ख्याल बाजी कीन, पांचौं तत्व हैं गुण तीन।। २।।
कूरंभ कच्छ कीन्हा, धौल रु शेष थंभाद दीन्ह।
धरणी गगनि पाणी पवन, चंद्र सूर चौदह भुवन।। ३।।
चौरासी लाख कृतम जीव, अविगत आप समर्थ पीव।
सतगुरु किया कृतम ख्याल, बाजी गैब गैबली चाल।। ४।।
नाद रु बिन्द की है देह, जामें भ्रम कर्म संदेह।
पांच पचीस तीनौं मांहि, आवागवन हंसा जांहि।। ५।।
माया मूल का है वास, जौंरा काल हंस गिरास।
हंसा कौंन विधि छूटै क, जौंरा काल तिस लूटे।। ६।।
सतगुरु मिलें संत सुजान, तो यौह मिटे आवा जान।
नौ दर मास कुंभी कुंड, हंसा सकल रुंडक मुंड।। ७।।
नेमी नेम कर भूले, उरध मुखी पींघ कसि झूले।
पंच अग्नी लगावै पीठि, सौदा ज्ञान सकल बसीठि।। ८।।
मुंडित जटा जूटं भेष, डूब्या सकल बिन विवेक।
हैं बिरक्त उदासी ऐंन, माया लगै मीठी सैंन।। ९।।
बांघबरिया अटंबर ऊंट, सो तो बंधे तुनके बूट।
गूदरिया बनें बहुरंग, बिचरे फिरत हैं वे नंग।। १०।।
अंतर लगी है झीनी क, माया मूल की सीनी।
सुच्चत करै आसन योग, अविगत नाम बिन सब रोग।। ११।।
अलौनिया खात हैं नहीं लौंन, दीजें पीठ पर तिस गौंन।
झरणैं बैठते हैं मूढ, जीमैं पंच गिरासं रूढ।। १२।।
एक हैं गुफा धारी सिद्ध, सो तो पड़े जम के फंध।
कुटीचर मांगते हैं चून, जन्म न बीज बोया भून।। १३।।
अर्पण करैं बहुत आचार, पोथी लिये खर का भार।
चीन्ह्या नहीं रमता राम, कुटन बह मुवा बेकाम।। १४।।
अविगत आप हैं ल्यौलीन, खोजी खोज कर आकीन।
पहिरै मुंद्रा एक कांन, योगी योग का नहीं ध्यान।। १५।।
कन फटिया कलंदर कूर, अविगत महल साहिब दूर।
भरमी भ्रम की बाजी क, भूले पंडित काजी।। १६।।
सन्यासी उदासी जान, पाया नहीं सतगुरु ज्ञान।

एक हैं तर्क त्यागी तीर, अंदर बहुत माया भीर।। १७।।
एक हैं दण्ड धारी डाग, बन खंड कीजियैंगे बाघ।
मौंनी मौंनियां रहते क, दोजिख दुंद में बहते।। १८।।
पौंनी करैं पवन उपास, नाम बिन तोरते हैं श्वास।
पट्टण अघाट असे नहीं प्रीति, जिन कूँ कहै कौन अतीत।। १६।।
बजरी बंधते हैं सोय, कहि बिन बंदगी क्या होय।
बांधै पवन का गुटका क, धूंमर पान क्यूं लटक्या।। २०।।
खुसर्‌यौं के कहां है बिन्द, मूरख समझते नहीं अंध।
एक हैं मुकट धारी चोर, बन खंड कीजियैंगें मोर।। २१।।
एक तो नग्न है नागा क, जिनहौं नहीं सूझता आगा।
सींगी बांधते सेली क, कीजे बैल घर तेली।। २२।।
टोपी कूबरी करुवा क, भांडी नाम बिन भरुवा।
आकाशी मौंनी मुद्रा मूल, सो तो गये सतगुरु भूल।। २३।।
जंत्र धूप गूगल सेव, जिन जान्या नहीं दिल देव।
बैरागी बिहंगम दूर, याह तो चाल श्वानं सूर।। २४।।
जैनी जन्म क्यूं हार्‌या क, दरगह बीच मुँह कारा।
जलाली पर्‌या जम के जाल, याह तो भिन्न दोजख चाल।। २५।।
सोहं सुरति ना लागी क, सो तो नहीं बैरागी।
दिगंबर डूंगरी चढ़ि जांहि, भवजल बहुरि गोते खांहि।। २६।।
मनसा मूल है मांहीं क, माया लगी गल बांहीं।
मदारी मदन का सिक्का क, नाम बिन खात है धक्का।। २७।।
गलरी गाल क्यूं पीटे क, सतगुरु संत ना भेटे।
बिंदा देह सिंदूर लिलाठ, जम के मारियें गे काठ।। २८।।
बंकी बाट है भौंदू क, भूले तूरक और हिन्दू।
हदीरे पूजते हैं घोर, ये सब गये गारत गोर।। २६।।
ख्वाबी ख्याल हे बंदे क, अंदर समझिले अंधे।। ३०।।

साखी :- गरीब, भेषौं से भगवंत का, महल दूर है द्वीप।
मंझि बसै सूझै नहीं, ज्यूं मोती मध्य सीप।। ३१।।

अगमी अगम है रासा क, त्रिगुण दूर कर पासा।
पंथौं से पुरातम राह, नगरी नहीं पावैं थाह।। ३२।।
भूल` हैं बिटंबी बाट, औघट पंथ बांका घाट।
अविगत शरे कूँ सैलांन, हंसा धरत हैं कोई ध्यान।। ३३।।
गैबी गैब का डंका क, मकरी मन बीच है मक्का।
काबे की लखाऊं राह, मस्तक है मसीत अल्लाह।। २४।।
कुफरी छाडि दे कुफरं, शरै का होय चलो नफरं।

गऊ कूँ मार मत भाई क, मट्टी मांस ना खाई।। ३५।।
बकरी है शरै की रूह, सो तो मारि डारी हूह।
मुरगी अंड ना फोरो क, चिशमां शरै कूँ जोरो।। ३६।।
शरे में होत है हिसाब, मुरगी दूर कर कबाब।
हिलवानं हनौज न मार, जो तुझ चाहिये दीदार।। ३७।।
दिल कूँ साफ करि हक्का, लगै नहीं गैब का धक्का।
मनी कूँ पीस ले महीन, सतगुरु का धरो आकीन।। ३८।।
गुमज में बंग ना दीजे क, येता शोर क्यूं कीजे।
चींटी बजे पायल पैर, साहिब सुनत है सब लहर।। ३९।।
कतेबां कुरस की पढ़िये क, अरशी अरश कूँ चढ़िये।
शब्द तूं मांनि ले मोरा क, यौह सब छाडि दे तोरा।। ४०।।
हकीकत समझि ले खूंनी क, इनमें रूह को सूंनी।। ४१।।

साखी :- गरीब, दहौं दीन षटदर्शनं, इनका कह्या बियान।
एक पत्थर पानी बंधे, एक गुमज मसीत पिछांन।। ४२।।

हलीमी हेत कर हंसा क, चीन्हौं जाति कुल बंसा।
दीना गर्भ में डेरा क, संगाती कौन है तेरा।। ४३।।
घोरारंभ धूंधूंकार, वहां तो नहीं था परिवार।
जुगति न योग जाति न पात, एका एक संग न साथ।। ४४।।
रहता निराधारं धीर, वहां तो दिया चोसा खीर।
जठरा अग्नि से लीया राखि, अंतर नाम दीन्हा साखि।। ४५।।
बाचा बंध होय आया, धनी का नाम बिसराया।
माया की लगी है पौंन, बिरसऱ्या नाम साहिब कौन।। ४६।।
जगत का पेखना पेख्या, धनी का नाम ना लेख्या।
मौहरा राम से गया टूट, जौंरा काल ले गया लूट।। ४७।।
धनी का बांचि ले फुरमान, जासे परै काम निदान।
गगन की सैल चलना है, बिरह की अग्नि जलना है।। ४८।।
वहां एक है अनुपम लोक, पावैं हंस निश्चय मोष।
अधम की छाड़ि दे वाणी, सतगुरु हैं दया दानी।। ४९।।
सिलहरा शुन्य में झांई क, अविगत कंत है सांईं।
मसीतां मुलक की तजि राह, अंदर दीजिये नित धाहि।। ५०।।
बहरम काम हैं तेरा, धणी का दूर है डेरा।
संजम सुरति से करना, धनी का नाम चित्त धरना।। ५१।।
निरति का लोक है लहरी क, बाजैं बीन अति गहरी।
बिहंगम राग रंग बाजी, सुरति और निरति धुनि साजी।। ५२।।
मदीना कीजियेगा क्याँव, मन मक्के धरो नैं पाँव।

सुनि हैं अरस की बंगा क, मुल्लां हुआ है दंगा।। ५३।।
गायत्री पढ़ै हैं गुपतार, जाका देख ले दीदार।
अदल और फलज हैं जाकै क, हंसा जाई चढ़े नाकै।। ५४।।
शरै की बात कहता हूँ, सकल सब भेद लहता हूँ।
बसीला कौन है तेरा, बहुरि ना होत है फेरा।। ५५।।
दम कूँ लीन कर भाई क, सुष्मण द्वार चढ़ि जाई।
पिंगुल घाटि ना फिरना, इला से उलटि कर भरना।। ५६।।
मगन होय मूल कूँ बंधे क, उलटा गगन शर संधैं।
गगनि में धरि बिश्वंभर ध्यान, कादिर आप है कुरबान।। ५७।।
चंपा है अगम गुलबास, जाके पिंड प्राण न श्वास।
सकल की जानता सोई क, अविगत आप निर्मोही।। ५८।।
सहंस दल कँवल मध्य रहता क, वाणी भेद सब कहता।
शिखर की शुन्य में साजे क, अनहद नाद जित बाजे।। ५६।।
अगम पद खोज लेना है, धणी कूँ जुवाब देना है।
दास गरीब की अरदास, मेटो सकल द्वंद्व उपास।। ६०।।

अथ विज्ञान बिहंगम बोध

अविनाशी निश्चल आदि, रहते चरण कमलं साध।
धूंधूंकार दरिया दीन, पांच न तत्व थे गुण तीन।। १।।
माया मूल फूल न गंध, शब्द अतीत सार समंद।
ब्रह्मा विष्णु ना वाणी क, शंभु योग ना ध्यानी।। २।।
सावित्री ना लक्ष्मी गौरि, धूंधकार सतगुरु पौरि।
धर्मराय नहीं थे तिस बार, चत्रगुप्त थे गुप्तार।। ३।।
लोक न लील कंठ कैलास, पिंड ब्रह्मण्ड ना था बास।
काया कर्म काल न देह, ना था ज्ञान योग संनेह।। ४।।
वेद न भेद बहरम ख्याल, साखी शब्द ना था माल।
करनी कर्म ना चोला क, वाणी नहीं थी सोला।। ५।।
पिंड न काल काया कर्म, जा दिन पुण्य पाप न धर्म।
सुख दुःख नहीं था दरवेश, कूरंभ कच्छ धौल न शेष।। ६।।
नेम न धर्म ज्ञान न ध्यान, जूनी जीव मृत्यु न हांन।
रिद्धि सिद्धि नहीं था बैराग, श्रोता नहीं लापत राग।। ७।।
लहमी लहम दरिया लैल, ना था ख्वाब मेला खैल।
चौबीसौं नहीं अवतार, धरणी नहीं अठारा भार।। ८।।
तेतीस कोटि ना देवा क, अठासी सहंस ना भेवा।
नारद नहीं त्रिकाली क, तरुवर मूल ना डाली।। ६।।

सनकादिक नहीं थे च्यार, वाणी कहूँ धूं धूं कार।
सूरज चंद्र ना थे पवन, चौदह तबक ना थे भुवन।। १०।।
तीनौं लोक ना लिलाठ, पांच न तीन सिरजे आठ।
जम दम नहीं था लेखा, लिखी नहीं कर्म की रेखा।। ११।।
शक्ति न मुक्ति थी माया क, धूंधूंकार गुरुराया।
ना था महाकाल कुलीन, नाद न बिंद सिरज्या सीन।। १२।।
महत न लोक थे बैकुठ, च्यार न मुकित सिरजी कंठ।
दोजिख बहिश्त ना थे दीन, अविगत आप है ल्यौलीन।। १३।।
बीजक कित रह्या कर्तार, अविगत अलख सिरजनहार।
बिश्वंभर कित रह्या मांही, तूंही गति जानता सांईं।। १४।।
निरंतर बीज की खानी, कँवल दल गंध समानी।
सृष्टि का भार है केता क, सतगुरु भेद सब देता।। १५।।
सलहली सैल है सैली, जहां कोई पंथ ना गैली।
बीते अनंत जुग अन जोख, सतगुरु रहत है सत्य लोक।। १६।।
सूरति अजब नगरी ऐंन, शुन्य मंडल अनाहद गैंन।
निश वासर नहीं तिथि बार, जा दिन रवन धूंधूंकार।। १७।।
रवनं रूप रेख न जांन, ता दिन भये थे न जिहांन।
अधर ध्वनि गगन गाजत है, अखंडत नाद बाजत है।। १८।।
दिव्य दृष्टि अलेख अल्लाह, मढ़ी न महल पंथ न राह।
योग न भोग था भाई, समुंद्र शब्द बे थाही।। १९।।
अगम और निगम दोनौं नांहि, माया मूल वृक्ष न छांहि।
कथनी कथा कीर्ति काज, सिकल न बिकल शरस न लाज।। २०।।
सूक्ष्म रूप का रासा, कँवल दल में लिया वासा।
बट की बटक बीज विचार, ऐसे कमल दल संसार।। २१।।
सुहंगम हंस हैं सोहं, इच्छा वासना दोवं।
दरीबा दीप है दरियाव, सतगुरु खेलता है दाव।। २२।।
बांका भगल है भाई, कोई जन भेद जित पाई।
जल थल नहीं था निसतूक, पांचौं तत्त सरवर सूक।। २३।।
ॐ कार बाज्या नाद, अविगत आप पूर्‌या साध।
कँवल दल सुरति धरि कीन्हा क, ॐकार रंग भीना।। २४।।
चेला तीन कर तत्काल, शकित रची विश्वंभर ख्याल।
पांचौं तत्त की ताखी क, त्रिगुण मध्य में राखी।। २५।।
आरंभी कीया आरंभ, एकै शब्द रोप्या खंभ।
सूवा पवन पर संच्या क, बीजक रख्या मन इच्छा।। २६।।
धर्म का पुत्र उपज्या धर्म, जाकै कौन लावै कर्म।

सिरजे च्यार अंड अनादि, जा मध्य जगत की है आदि।। २७।।
खानी च्यार के सब जीव, मन और पवन संचे पीव।
वाणी च्यार का सब ख्याल, काया कर्म सिरजे काल।। २८।।
विभूती शंभू कूँ साज्या, जलाबिंब थीर कर काजा।
पर्वत अस्थि मध्य दीन्हें क, पांचौं खेल मिल कीन्हें।। २९।।
कूरंभ कीया है कर्तार, कच्छ अरु मच्छ धौल अधार।
सहंस फुनि शेष रटता है, अखंडित नाम छुटता है।। ३०।।
चंद्र सूर्य सैलांनी, रचें हैं पवन और पानी।
तारे गगन ध्वनि गैंनार, सिरज्या पलक में संसार।। ३१।।
गुपतारी गुइंदर बीज, खेलैं अनंत जुग नहीं छीज।
काया कर्म हैं झांई, बिटंबी काल तिस लाई।। ३२।।
सूवा संचर्‌या है पवन, ता पर लग्या आवा गवन।
गैबी गैब का भौंरा क, कालं खात हैं जौरा।। ३३।।
फोरे भ्रम की मुटकी क, जौंरा काल है पुटकी।
मरता नहीं है महबूब, हंसा अजब मूर्ति खूब।। ३४।।
सुरति और निरति निश्चल राख, अविगत सिन्धु सोहं साख।
सोहं सुरति का निर्बान, निरति तो धसी महलौं जांन।। ३५।।
खेलैं हैं खिलारी ख्याल, शुन्य संदूक मध्य है लाल।
भ्रम की भीर है भौंदू क, भूले तुरक और हिन्दू।। ३६।।
सहंस दल कँवल मध्य हैं बास, पट्टण घाट रोको श्वास।
चंबेली चांदनी हैं सेज, सुष्मण द्वार सोहं बेझ।। ३७।।
अविगत नगर अदली नेक, घट नहीं धारता है भेष।
बहु रंग बिनती सुनिये क, ताना सुरति का बुनियें।। ३८।।
पटंबर पीठ चलना है क, हम कूँ चैन पल ना है।
निगम के नाद से न्यारा, सहंस पंखडी प्यारा।। ३९।।
जूनी नहीं जन्म धरता है क, सौदा अजब कर्ता है।
सतगुरु की चलो नै हाट, हंसौं की करत हैं साट।। ४०।।
नैनों में बसंता है क, वहां नहीं आदि अंता है।
गैबी अजब साजन संग, लाया है निरंतर रंग।। ४१।।
झिलमिल नूर का मेला क, भवजल बिचरिया चेला।
मदन की मढ़ी पूरे नाद, मेटै सकल द्वंद्व उपाध।। ४२।।
नीर और खीर छानै है, चरित्र कौन जांनै है।
समझि ले सैंन साजन की क, अति चोखा अमी रस पी।। ४३।।
मूलक है मालवे महली, करो नै दूर बद फैली।
सहंस जाप का एक जाप, सोहं सुरति का सुनि लाप।। ४४।।

सुरति नैनों में नीका है, अजपा जाप टीका है।
दास गरीब सत्य उपदेश, हर दम निकट रहना पेश।। ४५।।

अथ हिरंबर बोध

पाकम पाक है निज नाम, निर्गुण सत्य निरालंब राम।
साहिब सत्य सुभानं नूर, जल थल है सकल भरपूर।। १।।
कर्ता है करीम अल्लाह, पूर्ण ब्रह्म बे प्रवाह।
अविगत अलख अपरंपार, सांईं सत्य अधम अधार।। २।।
मीरां मिहरबान खुदाय, खालिक रह्या सब घट छाय।
मालिक है निरंतर नेक, बंदे पाक दिल कर देख।। ३।।
मौले लहम दरिया तीर, सोहं सत्य अदलि कबीर।
नबी का नाम हिरदे राख, करि तदबीर पांचौं नाख।। ४।।
रोजे की समझिले रीत, मुरशित शब्द कर प्रतीत।
बंगी बंग क्या देता क, करता शोर क्यों येता।। ५।।
नमाजी लोटता है क्या, मनी के कुफर पर धरि पा।
कलमां दूर है दुरबीन, यहां तो खांहि मुरगी सीन।। ६।।
हक्का हक्क कूँ पिछान, जिन तेरा किया महल निशान।
मुल्लां क्या मुलक की रीत, माटी का गुमज मसीत।। ७।।
काजी कजा कर भाई क, मुरगी शरै क्यूं आई।
मुसल्लम चल मुसाफर राह, मुरशद आप है अल्लाह।। ८।।
दोनों दीन पर डंका क, मन में खोजि ले मक्का।
मदीना है मुदफर बीच, चित्त के चौंतरे टुक कीच।। ९।।
रपट्या है नबी का पांव, दोस्त कहैं आप अल्लाह।
याह तो भूल है भारी क, नबी कूँ कहो धारी।। १०।।
याह तो हुई बड़ तकसीर, उम्मत अनंत प्रलय पीर।
दावा बंध दूजा कौंन, अल्लाह नाम अकल अलौंन।। ११।।
एक लाख अस्सी हजार, येते जिन्द कीन्हें ख्वार।
इनमें है बंदा कोई नेक, नबी तूं चलि शरे कूँ देख।। १२।।
नबी औह नगर है बांका, छठी का दूध दे माँ का।
आगे की कहूँ क्या बात, उम्मत नांहि चालै साथ।। १३।।
मीहीं महल है बारीक, रात न दिवस है तारीक।
शिखर सुमेर की है बाट, औघट पंथ बांका घाट।। १४।।
मुहम्मद की चली है रूह, दरगह देख दूह बरदूह।
पीर कबीर जिंदा ख्याल, मारग मक्रतारं बाल।। १५।।
शुन्य बे शुन्य ऊपर सैल, बांका पंथ झींनी गैल।
गुजरी गुजर कर दिन दोय, मनी से ना मिलावा होय।। १६।।

झिलमिल नूर झींना सिंध, यौह निज महल है मुहम्मद।
सत्य शरे में से तीन आवाज आई,वहां मनी मुहम्मद के तांई।। १७।।
कह्या दूर दूर दूर, नबी का चल्या है विमान, शंकर द्वीप आया जान।
हिन्दू हदि में भारी क, दोनों दीन दिलकारी।। १८।।
दई का लेख ना मिटता क, दोनौं दीन अब जुटता।
एक अजीद था कुफरी क, जाके लगी थी विपरी।। १९।।
आदम हव्वा का गुण येह, मुहम्मद के रह्या संदेह।
रावण कूँ किया तप जोर, दस फिर शीश डारे तोर।। २०।।
लंका करी धामां धूर, विभीषण रह्या है हजूर।
मुहम्मद बड़ा दावा दीन, उम्मति का रह्या आकीन।। २१।।
लगी है हिंदुवां से खांत, चौके के उड़े दो दांत।
हसन हुसैंन का हिसाब, गीदड़ खाय गये कबाब।। २२।।
बीबी फातमा के लाल, उम्मति कूँ दिया घर घाल।
पड़ी है गैब की जिंद मार, ल्हाशौं की नहीं शुमार।। २३।।
शंकर दीप में बड़ शोक, उम्मति का लग्या है रोग।
भीजे ताजियों के तंग, दोनौं दीन का है जंग।। २४।।
दोनौं दीन का हमाम, बिसरैं हैं अल्लाह सत्य राम।
मुहम्मद के तांही ऐसी गुजरी।। २५।।

साखी :- गरीब, दीन गवाया दुनी से, दुनी न चाली साथ।
पाँव कुहाड़ा मारिया, गाफिल अपने हाथ।। २६।।

शरीकति सुनि शरै की राह, खुदी से दूर अलख अल्लाह।
कतेबां पढ़त हैं काजी क, दिलमें है दगा बाजी।। २७।।
मनी से पंथ है न्यारा क, मुरगी अंड सिंघारा।
तीतर मुरग चिड़ी बुटेर, मुल्लां मारता है हेर।। २८।।
गुजरैंगी नहीं ये बात, किया संग चालै साथ।
हलीमी हेत कर भाई, गले के छुरी ना लाई।। २९।।
मिहरी मिहर का चोसा क, देते कौन कूदोषा।
दया के सफर में रहना क, बिसमल में नहीं बहना।। ३०।।
बिसमल में बिश्वंभर एक, गल तूं कौन का अब छेक।
कादिर बे चमूंनं जांनि, होगी शरे खैंचातानि।। ३१।।
खूंनी खूंन है भारी क, बे तकसीर क्यूं मारी।
तीसौं करत हैं रोजा क, सिर पर बहुत है बोझा।। ३२।।
किये की राह चलना है क, बदला नहीं टलना है।
मुहम्मद पूछियो भाई क, बिसमल कहां से आई।। ३३।।
मदीने मक्के में रहता क, मुहम्मद पीर अगम अगाह।

जिन कूँ नहीं पाया खोज, बिसमल डार सिर से बोझ।। ३४।।
उम्मति याह कौन की कहिये क, ऐसे भ्रम ना बहिये।
आजिज संग रहता थीर, कुफरी कुफर है बे पीर।। ३५।।
निरगुण नाम से नेहा, कीजे शब्द सनेहा।
अबिचल अलह अपरमपार, बिन नेकी नहीं दीदार।। ३६।।
पीव का पंथ है बारी क, बदी दिल कहो क्यौं धारी।
चिशमें उलटि ऐंनक लाय, अविगत सिन्धु अलख अल्लाह।। ३७।।
नेकी नेक राह पिछांन, गाफिल बदी कूँ दे जांन।
जुलमी जुलम ना कीजे क, शरै में जबाब क्या दीजै।। ३८।।
मनी का शीश है नीचे, अमी कूँ अरंड क्यौं सींचैं।
दम का खोज कर भाई, नबी के नाम ल्यौ लाई।। ३९।।
हक्का हक्क में रहिये क, बिसमल भ्रम ना बहिये।
दास गरीब अलह नूर, खालिक है सकल भरपूर।। ४०।।

अथ मुहंमद बोध

बिलैवांन विस्तार बिलाका, नौज उदर घर संजम ताका।
जाकै भोग मुहंमद आया, नौज उदर घर मुहंमद जाया।। १।।
ऐसा ज्ञान मुहंमद पीरं, जिन मारी गऊ शब्द के तीरं।
शब्दै फेर जिवाई,
जिन गोसत नहीं भाख्या, हंसा राख्या ऐसा पीर मुहंमद भाई।। २।।
पीर मुहंमद नहीं बहिश्त सिधाना, पीछे भूल्या है तुरकाना।
गोसत खांहि नमाज गुजारै, सो कहो क्यूँ कर बहिश्त सिधारैं।। ३।।
एक ही गूद, एक ही गोस्त, सूर गऊ एकै जाती,
एकै जीव साहिब कूँ भेज्या, दोहूँ में एकै राती।। ४।।
एकै चाम एक ही चोला, गूद हाड की काया।
भूल्या काजी कर्द चलावै, कदि रब्ब कूँ फुरमाया।। ५।।
काजी कौन कतेब तुम्हारी।
ना तूं काजी ना तूं मुल्लां, झूठा है व्यापारी।। ६।।
काजी सो जो कजा नबेड़ै, हक्क हलाल पिछानै।
न्याव करै दरहाल दुनी का, नीर क्षीर कूँ छानैं।। ७।।
मुल्लां सो जो मूल मिलावै, दिल महरम दिल बीच दिखावै।
सो मुल्लां मसताखी।
सो तो मुल्लां बहिश्त सिधारै, और मुल्लां सब खाखी।। ८।।
कलमां रोजा बंग नमाजा, आप अल्लाह फरमाया।
रोजे रहि कर मुरगी मारी, यौह क्या पंथ चलाया।। ९।।

है रोजे से राह निराला, कलमां काल गिरासा।
कूकै बंगी बुद्धि भ्रिष्ट है, करो नमाज अकासा।। १०।।
वजू ऊज्जल वस्तु बिहूंन, किन बकरीद ईद फुरमाई।
जब मुसलमान मुसाफर होते, धुर तैं सुन्नत आई।। ११।।
कौंम छतीसं हैं जगदीशं, ब्रह्म बीज एक बाड़ी।
सो हिंदवानी सो मुसलमानी, पहरैं एकै साड़ी।। १२।।
उदर बीच कहां था कलमां, कहां सुन्नत एक तानां।
बाप तुरक और मांय हिंदवानी, सो क्यूं कर मुसलमाना।। १३।।
अंडा सहजे कीन्ह तमाशा, अंडे कै गल नांही।
जामैं पांचौं तत्व इकत्र नूरं, तापर कहां छुरी चलाई।। १४।।
काफर सो जो करद चलावैं, हंस तड़फडै ताला।
ऐसे तीसौं रोजे जांहि रिसातल, बहिश्त बीच मुँह काला।। १५।।
काफर सो जो कर्द कलीना, अन्न छाडि कर भषैं मलीना।
हंस हिसाबं लेगा, जो गल काटै, मैला चाटै, सोई बदला देगा।। १६।।
मन में महीं मनावर तकिया, दिल बिच तहबर खाना।
दिल ही में राम रसूला बैठे, दिल ही से दिल जान्या।। १७।।
बेचगूंन साहिब सर्वंगी, सकल बियापी सोई।
जन दास गरीब कहै रे संतौ, सूर गऊ नहीं दोई।। १८।।

अथ काफर बोध

काफर बोध सुनो रे भाई, दोहूँ दीन बिच राम खुदाई।। १।।
काफर सो माता दे गारी, वै काफर जो खेलै सारी।। २।।
काफर कूड़ी साखि भरांही, काफर चोरी खट्या खांही।। ३।।
काफर दान यज्ञ नहीं करहीं, काफर साधु संत से अरहीं।। ४।।
काफर तीरथ व्रत उठावैं, सत्यवादी जन निश्चय लावैं।। ५।।
काफर पिता बचन उलटाहीं, इतने काफर दोजिख जाहीं।। ६।।
सत्यकर मानों वचन हमारा, काफर जगत करूं निरबारा।। ७।।
वै काफर जो बड़ बोलै, काफर कहो घाटि जो तोलै।। ८।।
वै काफर ऋण हत्या राखै, वै काफर पर दारा ताकै।। ९।।
काफर स्वाल सुखन कूँ मोडै, काफर प्रीति नीच सूं जोड़ै।। १०।।
दोहा :- काफर काफर छाडि हूँ, सत्यवादी से नेह।
गरीबदास जुग जुग पड़ै, काफर के मुख खेहं।। ११।।
वै काफर जो कन्या मारैं, वै काफर जो बन खंड जारैं।। १२।।
वै काफर जो नारि हितांही, वै काफर जो तोरैं बांही।। १३।।
वै काफर जो अंतर काती, वै काफर जो देवल जाती।। १४।।

वै काफर जो डाक बजावैं वै, काफर जो शीश हलावैं।। १५।।
वै काफर जो करैं कंदूरी, वै काफर जिन नहीं सबूरी।। १६।।
वै काफर जो बकरे खांही, वै काफर नहीं साधु जिमाहीं।। १७।।
वै काफर जो मांस मसाली, वै काफर मारै हाली।। १८।।
वै कफर जो खेती चोरं, वै काफर जो मारैं मोरं।। १६।।
वै काफर अन भावत खांही, काफर गणिका सूं लग बांही।। २०।।
काफर अर्ध बिंब से संगा, काफर सो जो फिरै बिनंगा।। २१।।
काफर सो जो महीं तनावैं, जाका दूध रुधिर घर ल्यावैं।। २२।।
काफर जो भल भदर भेषा, जाके सिर पर बाल न एका।। २३।।

दोहा :– काफर कीड़े नरक के, जुग जुग होत बिधंस।
गरीबदास साची कहै, नहीं चीन्हत हैं बंस।। २४।।

काफर सो जो मुरदी काटैं, वै काफर जो सीनां चाटैं।। २५।।
काफर गूदा घतैं सलाई, काफर हुक्का पीवै नाई।। २६।।
काफर भांग भसौड़ी भरहीं, काफर हुक्के कूँ सर करहीं।। २७।।
काफर घट में धूमां देहीं, काफर नास नाक में लेहीं।। २८।।
काफर कथ सुपारी चूना, पांन लपेटि मुख में थूंना।। २६।।
काफर मालनि कूँ डर पावैं, बिन ही कीने भाजी खावैं।। ३०।।
काफर सो एक अंब चिचोरैं, मजलसि बैठें मुख निपोरैं।। ३१।।
काफर सो जो कानी देही, काफर सो कन्या धन लेही।। ३२।।
काफर जो साली से साखा, काफर बचन पलटै माँ का।। ३३।।
काफर सो जो विद्या चुरावैं, काफर भैरव भूत पुजावै।। ३४।।

दोहा :– पूजैं देई धाम कूँ, शीश हलावैं जोय।
गरीबदास साची कहैं, हदि काफर है सोय।। ३५।।

काफर तोरै बनज व्योहारं, काफर सो जो चोरी यारं।। ३६।।
काफर सो जो बाग उपारं, काफर सो बिन नाम अधारं।। ३७।।
काफर आंन देव कूँ मानैं, काफर गुड़ कूँ दूधैं सानैं।। ३८।।
वै काफर जो अनरुचि खांही वै काफर जो भूले सांई।। ३६।।
वै काफर जो अंडा फोरै, काफर सूर गऊ कूँ तोरै।। ४०।।
वै काफर जो मिरगा मारैं, काफर उदर कर्द से पारैं।। ४१।।
काफर पीवत गऊ हटावैं, काफर कूवे की मणि ढांवैं।। ४२।।
काफर भेष भेष कूँ मारैं, काफर कूड़ा, ज्ञान पसारैं।। ४३।।

दोहा :– काफर कीर्ति ना लखै, दया धर्म व्यवहार।
गरीबदास कैसे बचैं, जाना जम दरबार।। ४४।।

अथ ज्ञान सागर के सवैये

लंक जराय दई हनुमंत जु, हाक हुकम से आनि परे हैं।
देखत हैं सब भूप स्वरूप, योधा हनुमंत से देख डरे हैं।। १।।
छप्पन पौल में रौल परी जब, छ्यानवैं दरवाजे जो खूब जरे है।
सांवत मंडलीक सभै भागे, रावण रणधीर जो शंक करे है।। २।।
फूकि जराय दई क्षिण में जो, जब तुम कंत जो क्यौं न लरे हैं।
अंगद चर्ण शिला सेती लाय के, ज्यौं कुम्हरा के जो चाक फिरे हैं।। ३।।
दाने जो दूत सपूत सबै संगि, अंगद स्यौं सुद्ध आनि करे हैं।
अंगद चर्ण पाताल गये, जो तो मल्ल युद्ध में पांव नां ऊखरे हैं।। ४।।
सात समुंद्र सेतु बंध्या जानि जो, बड़े पाहन जल मांहि तिरे हैं।
ऐसे तो योधा अनेक दलौं बिच, अंगद टारे जो नांहि टरे हैं।। ५।।
पूर्णब्रह्म चिदानंद स्वामी जी, धनुष चढ़ाय जो बाण खरे हैं।
हनुमंत की हाक सुनी तिहूँ लोक में, गर्भवती नारी जो तो गर्भ हरे हैं।। ६।।
तेतीस कोटि की बंध छुटावन, रावण कंत जो जानि मरे हैं।
दास गरीब मंदोदरि भाषत, हम गुरु मस्तक हाथ धरे हैं।। ७।। १।।
चंचल नारि अपार दलां मोहि, अंगद हनुमंत पाकर ल्याऊँ।
सात समुंद्र से पारि हीं लेत हूँ, अठारह ही पदम को त्रास दिखाऊँ।। १।।
सजि चढ्ढू दल दामनी बांन ले, मारत मारत दूर ले जाऊँ।
मेघ मलार घटा दल बादल, इन्द्र की वर्षा ज्यौं बरषाऊँ।। २।।
सप्त पुरी के तो देव सकल बंधि, ये दल मूत्र की धार बहाऊँ।
शंकर आंनि समूल से खोऊँ जो, की तल कर दिखलाऊँ।। ३।।
इन्द्र कुबेर सुमेर कूँ ढाहि द्यौं, बहु बिधि हाहा जो कार मचाऊँ।
सपत पताल की शाखाई पार द्यौं, कच्छ कुरंभ शेषा पर धाऊँ।। ४।।
ना करूं शंक निःशंक चढूं नारी, मैं ब्रह्म वंश रावण कहिलाऊँ।
शंभू की शंक योगी महादेव हैं, दूजे कूँ जाय क्या शीश नवाऊँ।। ५।।
काटत काटत कटक हनूं सब, ज्ञानी गुणी जो तो चरण लगाऊँ।
दास गरीब रावण घर भूल है, या विधि बहु घनसार झड़ाऊँ।। ६।। २।।
राक्षस कंत कला नहीं समझत, योगी शंभू महादेव भुलाये।
अग्र के बान कमान चढ़ी जो तो, जाकी सीता तुम क्यूं हरि ल्याये।। १।।
जाकै शंभू हैं संख्य असंख्य ब्रह्मा वेद, विष्णु विश्वंभर से चढ़ि आये।
गोरख दत्त दिगंबर से संग, बाशिष्ठ विश्वामित्र ज्ञान के धाये।। २।।
ध्रुव प्रहलाद चढ़े शुकदेव जी, नारद शंख असंख बजाये।
धूंम परी तिहूँ लोक तलाक दे, बंदर रीछ लंगूर रिसाये।। ३।।
हाक चढ़े हनुमंत हठीले जी, नौ लख बाग जो धार बहाये।
अंगद और नल नील लंगूर है, सुमेर की हाक पताल सुनाये।। ४।।

नेजे निशान ध्वजा असमान में, इन्द्र घटा घन घोर के छाये।
रावण पर रघुवीर चढ़े सो तो, चौदहूँ भुवन नकींब फिराये।। ५।।
करनाम मुनींद्र चढ़े जोगजीत जी, कबीर सपेद ताजी पिड़वाये।
दुर्वासा दयाल चढ़े निरालंब जी, चुणक चिदानंद घूंमत आये।। ६।।
कागभुशंड चढ़े मारकण्डे जी, इन्द्र मलागीर लेप लगाये।
शंभू की सैल हुई जो तो लंक पै, कालभद्र क्रितदेव डिढ़ाये।। ७।।
सप्तपुरी के कमंद चढ़े संग, कुरबान कला रावण धन्य मांये।
शंभु कूँ नाश किया जड़ मूल से, रावण राज धतूरा खवाये।। ८।।
लंक बिलंक कूँ मारि चिदानंद, राज विभीषण कूँ बतलाये।
दास गरीब हनू हिर हेत से, चौकी लंगूरिया लंक पठाये।। **९।। ३।।**
लंक कूँ मार सिंघार किया सब रावण भँवर लिलाट उडाना।
खैंच हदफ अलफ विचार के, लक्ष्मण खैंच कसीसई बाना।। १।।
योजन लख पलक उघार के, रावण के जहां बेधे हैं प्राणा।
धरणी कूँ पार पताल गये, जहां मार लिया महारावण दाना।। २।।
भुजा ऊपार के बाहि दई, मृत्यु लोक ल्याये पायक हनुमाना।
पाताल का राज रसातल मेलिया, मूंधे परे जो तो नेजे निशाना।। ३।।
रावण महरावण मार लिये, जहां लंक दुहाई फिरी अस्थाना।
राम जो राज विभीषण देत हैं, दैंत्य रु भूत जो करते पियाना।। ४।।
तेतीस कोटि की बंधि छुटांयां, करत जुहार सबै मुनि ज्ञाना।
मुक्ता भये संत स्वर्ग सिधाये, बेलोक विमान गये शशी भाना।। ५।।
एक रती कंचन मुख देन कूँ, अरज करत सुर संत सुजाना।
ब्रह्मा का बंश निरंस ही जात है, उलटे हैं देव बचन नहीं माना।। ६।।
रावण महारावण संग जरे, सुर खंख बधाई बजैं प्रवाना।
दास गरीब स्वर्ग पताल में, सकल भये सुर लोक अमाना।। **७।। ४।।**
सतवंती चरण जुहारत है, ईशन के ईश चिदानंद स्वामी।
सुर बंधि छुटाय करी मुक्ता, है तूं जगदीश परम पद धामी।। १।।
हम मेटी कार हजार हित्या, ठग लेर गया मोहि रावण कामी।
कलधूत की नारि कलंक नहीं, कहो कौन सीता में खामी।। २।।
उर अंतर जाप जपूं तुम्हारा, मोहि भूल नहीं है आठौं ही जांमी।
अंतर विश्वास विश्वंभर का, अब तुम बिन कौन कहो को हांमी।। ३।।
सरवंग सुभान कला तुम्हरी, परमानंद पुरुष धनुष ध्यानी।
मोक्ष के रूप मुकित के दाता जी, साखि भरत हैं पवन अरु पानी।। ४।।
सूर्य चंद्र करै प्रितहार जी, सीता कलंक न बारह वाणी।
रावण बाग वैकुण्ठ है मोहि कूँ, झूले हिंडोले सखी संग आनी।। ५।।
रावण नारि मंदोदरी पूछि ले, चरण कँवल तुम्हरे रजधानी।

तेतीस कोटि की आन है मोहि कूँ, रावण पिता हमारे ही जानी।। ६।।
लक्ष्मण साखि भरे सतवंती की, गोरख दत्त दिगंबर ज्ञानी।
क्षमा करो देव दयाल होय लीजिये, मैं अर्धंगी नहीं मनमानी।। ७।।
आदि ही अंत के संगी हमारे जी, फेर न पावोगे सीता सी रानी।
हाजिर हजूर कसूर नहीं मोहि, डार कराही करो धूमा धामी।। ८।।
ताते ही तेल में मेलि चिदानंद, शंक भजाय लीजो प्रवानी।
दास गरीब सीता सतवंती है, साक्षी भरैं तिहूँ लोक पिरानी।। **९।। ५।।**
लंगर नारि अडोल फिरै तूं, बहु विधि बात बनावत आई।
रावण के घर जाय बरी तूं, कैसी कहै हम से चतुराई।। १।।
द्वादश वर्ष के दाग लगे तोहि, कौन करै तेरी मंजर काई।
कार कूँ मेट कलंक कूँ औटि कै, रावण गोद चढ़ी सीता जाई।। २।।
लंगर नार धिक्कार मुखां तोहि, रावण डाल समूलाई खाई।
कौन कहै सतवंती सीता तोहि, रावण का मुख देखत धाई।। ३।।
अंग से अंग लगाय चढ़ी गोद, बहुरि सती सीता कैसे कहाई।
फिट पसाव प्रीति तुम्हारी जी, गीतों ही गाई और ढोलौं बजाई।। ४।।
हनुमंत से बीर हमारे है, मुद्रा गोद पौंनीक दिखाई।
द्रोणागिरी कूँ ऊठाय के लंक में ले गये, सीता सती थी तो क्यूं ना चढ़ आई।। ५।।
लंक बिलंक टूटंत कैसे नरा, सीता हरी नहीं रावण ल्याईं।
ठारा ही पदम चढ़े कलधूत के, लंका से कोट समुंद्र सी खाई।। ६।।
रावण सेती जंग जुगादि के होत हैं, कुंभकर्ण से हैं जा संगि भाई।
दास गरीब सीता सतवंती है, तेतीस कोटि की बंधि छुटाई।। **७।। ६।।**
आदि जुगादि की बात कहूँ स्वामी, निर्गुण नांह है कंत हमारा।
रावण राम हैं झाल समुंद्र की, ऊपजी बाजी नहीं मूल न डारा।। १।।
सीता की सैल संगीत लहै कोई, सूक्ष्म रूप का देखन हारा।
सूक्ष्म छाकि रही सतवंती जी, नाना ही वर्ण रच्या हे पसारा।। २।।
रावण राम नहीं सतवंती जी, ये दल बादन काल की धारा।
जैसे लहरि समुंद्र के पाट उठंत हैं, देखे देवा कोई कौतक हारा।। ३।।
रावण राम रंगीले अनेक हैं, सीता अनेक विचित्र विचारा।
शब्द अदूल कर्‍यो नहीं राघो जी, ज्यूं के त्यूं ही कहूँ अर्थ विचारा।। ४।।
कच्छ अरु मच्छ कूरंभ शेषा धौल, सप्तपुरी जु रचें हैं गैंनारा।
पिंड रु प्राण जिहांन रचे जिन, मेरा तेरा धनी सिरजन हारा।। ५।।
तास कूँ देख अलेख अतुल है, तोल न मोल नहीं कछु भारा।
समाधान अस्थूल का फूल तूं राम है, देह धरी जो कैसा कर्तारा।। ६।।
शंख भुजा जो संगीत रहे सती, पलक बिछर नहीं होत है न्यारा।
पीठ न पेट नहीं देही दम है, काहे चढ़ावै है पदम अठारा।। ७।।

सेतु न बांध समुंद्र न फांदि है, ना रघुबीर जी लेत अवतारा।। ८।।
सुख सागर बीच मिलैंगे जो स्वामी जी, दास गरीब जो होत जुहारा।। **६।। ७।।**
रघुबीर दयाल रिसाल चिदानंद, मोक्ष मुक्ति का दाता वही है।
पिंड पसार आकार सबै लखि, एक अनेक जो दूजी दुई है।। १।।
ज्ञान गता कर देख चिदानंद, सीता हरी सो तो हौंनी हुई है।
टूटी है लंक बिलंक बिनानी जी, मारें है दूत ज्यू लोढ़ी रूई है।। २।।
हनुमंत लंगूर फिराय परे, जहां दैत्य की नारि दहाक तुई है।
वज्र पौरि परीत मंदोदरि की, कहैं दास गरीब जु द्वार सूई है।। **३।। ८।।**
अग्र के नाद अगाध बजैं जित, सीता सती जहां मंगल गावै।
आदि न अंत बियोग नहीं जित, जूनी न जीव कहो कौन जावै।। १।।
रावण राम न सीता समुंद्र है, रघुबीर तुम्हारे अकीन न आवै।
चंद्र गता शुन्य मंडल सैंन है, दृष्टि परै सोई दूजा कहावै।। २।।
कुरबांन अमान बिराजत है, जो तो बारी न बोवै न सीता हरावै।
परमानंद पूर्ण पाख कला, कहैं दास गरीब न सेना चढ़ावै।। ३।। ६।।
ख्याल खिलारी के जानत है कौन, भगल विद्या रचि जंत्र कीन्हा।
पक्षी की पैर प्राणी न पावत, सिन्धु का खोज गया कहां मीना।। १।।
राजिक राम भगल से भिन्न हैं, कौन लखै ताका मग झीना।
आदि न अंत न कंत के काल है, सर्बंग समाय रहे प्रवीना।। २।।
अरज बंदी की तूं मान चिदानंद, ज्ञान करो कछु अकल अकीना।
लोक अलोक विश्वंभर के उर, ऐसा बड़ा सो तो सबही से हीना।। ३।।
रंग न रूप स्वरूप सुभान है, नाद न बिंदु नहीं घट सीना।
दास गरीब दरश अरस का, मिहर दया कर हम कूहीं दीना।। **४।।१०।।**
माधुरी मूर्ति मोहन सांवरे, सीता का नांह निरंजन बाला।
बांदी विचार करत बिचित्र के, दृष्टि अदृष्टि जहूरा है लाला।। १।।
धनुष ध्यान अमान अकाश में, कैसा कहूँ देवा गोरा न काला।
साक्षी संगीत रहे सीता संग जी, लोक अलोकों ही का प्रतिपाला।। २।।
हाजिर नाजिर नूर जहूर है, नैनों में नांह बैठे चित्रशाला।
कारण कर्म कला कलधूत की, सोई लखै जाके मोटे हैं ताला।। ३।।
रंग बिरंग उपंग अनादि है, श्वेत छत्र जाके मोहन माला।
बाना न भेष अलेख धरत है, कर करुवा न आसन मृग छाला।। ४।।
शारंगपान समुंद्र के बिंब ज्यूं, चंद्र झलक अलख खियाला।
दास गरीब सीता संग नायक, अविगत पूर्ण दीन दयाला।। **५।। ११।।**
बोलत राम सीता सतवंती जी, कैसे लख्या तुम रूप मुरारी।
ये छल छिद्र बनावत आई तूं, शीश कलंक चढ़्या तोहि भारी।। १।।
साक्षी तो भूत हमारे ही संग है, समुंद्र का पाट बंध्या सैना तारी।

कूदे हनूं जो समुंद्र की फाल कर, फूकी है रावण रंग अटारी।। २।।
नौ सै नवासी जो कोस में नगर है, गर्द मशान करी लंका सारी।
पैठि पताल पलक ना ढील है, महारावण दांने की भुजा उपारी।। ३।।
विभीषण राज दीया रघुवीर कूँ, मैं ही हूँ राम सदा धनुष धारी।
शंभू करै प्रणाम प्रीत सूं, ब्रह्मा उठावत हमरी ही झारी।। ४।।
तेतीस कोटि की बंधि छुटाय है, तोरी है लंक बिलंका ही मारी।
रावण से रणधीर खपाईया, केते ही दानें रु दूत सिंघारी।। ५।।
जा दिन हेत कीया नहीं सीता जी, मुंद्रा गोद तुम्हारे ही डारी।
पौंनी की संग चली नहीं चातुरि, हनुमत नौ लख बाग उपारी।। ६।।
रावण के रस भोगवे कूँ सती, राम की कार मेटी तैं तो नारी।
कुल वंश कूँ काट लग्या कलधूतनी, दास गरीब कहैं ब्रह्मचारी।। **७।। १२।।**
बाशिष्ठ गुरु सती ज्ञानद के सागर, तेतीस कोटि करत हैं आसा।
गोरख दत्त चरन का चाव है। ज्ञानी गुनी रु मुनी सब दासा।। १।।
जाकी तूं साखि भराय दे सीता जी, जानत हैं सो तो निगुण रासा।
प्रलय अनेक विशेष बीतंत हैं, चंद्र सूरा और धरनि अकासा।। २।।
आगम अंग अलख स्वरूप है, अनहद पुर में है जाका ही वासा।
शुन्य बे शुन्य में संख कला हैं, ताहि पुरुष के पिंड न श्वासा।। ३।।
सुवर्ण मृग हुये कै बार जी, रावण राम किये चढ़ि नासा।
चमकी चित मांहिं कला उसकी, जैसे घन बीज परत है कांसा।। ४।।
चौदह ही भुवन फनां फरदी है, ज्यू पानी गलि जात पतासा।
कैसा है धाम दया कर बोलिये, अग्र पुरुष के कौन खवासा।। ५।।
शारंगपान शिला त्यारी सर, समुंद्र अतुल है बोझ न मासा।
दास गरीब कला किस की ये, नारी ठगै मोहि आवत हांसा।। **६।। १३।।**
पूर्ण ब्रह्म चिदानंद चौरंग, ग्रिद गता सतवंती है बोलै।
शुन्य समाय रहे जगदीशं, मौनी कुलफ कपाट न खोलै।। १।।
स्वर्ग नर्क से न्यारा निरंजन, जैसे ई नीर बंध्या बिधि औल्है।
देह कर्म से काया ही दीखत, आंच लगे जल वाणी ही सोल्है।। २।।
जे निजरूप लख तुम राघो जी, काहै कूँ सैना चढ़ावत डोलै।
कर्म न काट लगे कलधूत कै, काहे कूँ तू सतवंती कूँ तोलै।। ३।।
बिचरि जावो ब्रह्म लोक बिनांनी जी, ए बातां तुम मारो ही भोलैं।
दीर्घ देह सकल समाना है, सीता कहै जग मार्याई झोलै।। ४।।
लाल समुंद्र के बीच छिपे नघ, ज्ञानी गुणी थल मांहि ढिंढोलै।
मौज विश्वंभर नाथ की होत है, दास गरीब बसै पट ओल्है।। **५।। १४।।**
पूर्ण ब्रह्म चिदानंद स्वामी जी, मौले मुरारी की अगम कथा है।
ये अवतार कला कलधूत की, कानौं ही कुंडल भृगलता है।। १।।

वे मन मोहन दृष्टि न आवहीं, तीनौं देवा जहां नाहीं रता है।
मौले निरंजन अंजन से भिन्न, ताहि पुरुष की लेत संथ्या है।। २।।
स्वर्ग समूल पताल पलक में, वारन पार न थाह अंता है।
मालिक मौले मगन मुरारी जी, सीता कहै सोई मेरा कंता है।। ३।।
निरमल अंग बिरंग बिनानी जी, सीता कहै जाका सार मता है।
दास गरीब भगल क्या जानत, मैं तोहि ज्यूं का त्यूं ही बता है।। **४।। १५।।**
ब्रह्मा की आदि कहै सतवंती जी, नाभि कँवल से कीरति होई।
शंभु विष्णु विश्वंभर नाथ की, आदि ॐ कार माता है सोई।। १।।
त्रिगुण ताल ख्याल नियारा है, मूल की डाल उलट समोई।
लील अलील से आगे अगम है, अविगत आदि पुरुष है सोई।। २।।
जीव जंजीर जरे मन मोहन, बाजी विश्वंभर की सब छोई।
मौले मनोहर प्रेम की झाल में, संत सही उर अंतर धोई।। ३।।
संगि बिनंग चले परमानंद, आगै अगम सुरति परोई।
दास गरीब कुटी नहीं बांधत, है निर्वाणी सदा निर्मोही।। **४।। १६।।**
बीज न भूमि असंभ बिराजत, डाल न मूल न फूल अकूँरा।
दृष्टि न मुष्टि पंखी नहीं परसत, देख्या सीता कछु अजब जहूरा।। १।।
गहवर गंध सुगंध सलौंना है, नीचे कूँ शाखाई ऊपर मूरा।
चित्त चिदानंद चांदनी चंपा है, कैसे कहूँ सो तो निकट न दूरा।। २।।
त्रिकुटी पाट सघन समूला है, बाजत नाद अनाहद तूरा।
दास गरीब जो आदि जुगादि है, जाहि लखावत सतगुरु पूरा।। **३।। १७।।**
अग्र अलील अनंत भुजा धर, शारंगपानि प्रीतम मेरा।
नीम न नगर बगर नहीं बेढ़ा जी, गगन मंडल में ताका है डेरा।। १।।
मैं शक्ति सुमर्थ की दासी हूँ, सीता सती जहां लीन्हां है फैरा।
ब्रह्मा विष्णु शंभु शेष देवा जित, ऐसे मुनीजन घालत केरा।। २।।
अग्र की डोरि बंधी बिधना कसि, चक्र सुदर्शन मेटि अंधेरा।
अंतर हेत न सेत सलौने का, ताहि प्राणी से जात प्रेरा।। ३।।
स्वर्ग की सैल सती सब जानत, सीता कूँ आवत कैफ घुमेरा।
शंकर शेष न ब्रह्मा विष्णु जी, ता दिन तालिब मुरली की टेरा।। ४।।
अग्र के दीप दियाल की चांदनी, सीता सती जहां लेत बसेरा।
अवतार अनंत बसंत ज्यूं जात हैं, दास गरीब है पुरुष उजेरा।। **५।। १८।।**
कैसी है मुरली मनोहर मूर्ति, कौन जुगन का तुम्हरा ही नाहा।
वेदी विचार कहो सतवंती जी, कौन देवा जिन शोध्या है साहा।। १।।
कंकन कीर्ति मोहि दिखावो जी, कौन समय तुम कीन्ह विवाहा।
चौरी चरित्र शाखा पढ़ी किन, तुम्हारा है ज्ञान उगाहा।। २।।
साक्षी भराय सती मोहि दीजिये, आनंद पुरुष है अगम अथाह।

दास गरीब सुभान सती तोहि, मेटि हमारी यह अंतर दाहा।। **३।। १६।।**
शुन्य बे शुन्य की सैल कहूँ सुनि, अग्र ही पौरि अग्र दरवाजा।
दल ताल सुभान बजें जित, अविगत पुरुष जहां राम राजा।। १।।
मूल उचार कथा वेदी ध्वनि, सुंनि संगीत अनाहद बाजा।
मुरली मनोहर गावत है जहां, तन मन रंग रु बाण अवाजा।। २।।
अवतार सुगम की सैल सबै हैं, देह धरी नर जम का खाजा।
जगन्नाथ नहीं जगदीश मिले जिस, कहा करै मक्के दर हाजा।। ३।।
योग वियोग नहीं जहां होत है, ताहि पुरुष पर पूर्ण साजा।
दास गरीब दशों दिश दर्शन, सारत है सो तो सब विधि काजा।। **४।। २०।।**
रावण कोटि रसातल जात है, सीता हरी जदि सरवर बांध्या।
रघुवीर कला रामा अवतार है, धनुष चढ़ाय लंका शर संध्या।। १।।
सुन संगीत शिला त्यारी तुम, तेतीस कोटि हुवा जहां मांदा।
ये छल छिद्र जो आदि के होत हैं, मारि गर्भाये हो रावण बांदा।। २।।
शंभू नरेश कूँ नाश कीया नर, सूझत नाहीं नरा जीव आंधा।
सहंस अठासी द्वीप में जो राज है, दास गरीब धर्मराय जग छांदा।। **३।। २१।।**
नागर पान फलैं नहीं फूलत, चंदन के फल लागत नाहीं।
बादल बूंद फंहारे प्रेम के, उमगि घटा जैसे ओलर आई।। १।।
पवन पलक अलख अलील में, ये गुण मूल कहां छिप जांहीं।
ऐसे अवतार कला कलधूत की, ज्यूं मन इन्द्री संकोच ना माहीं।। २।।
शंख की टेर सुमेर गुंजार है, वृक्ष के नाल वृक्ष की छांहीं।
मूल आकार पसार संगीत है, ऐसे ई जान परी गलि बांहीं।। ३।।
मीन समुंद्र की सैल करै नर, खोज खलीलं का विधि पाई।
लपट उठैं कस्तूरी कपूर की, मृगा ई घास ढंढोरत धाई।। ४।।
बुद बुद रूप बिधंस जो होत है, लहरि समुंद्र की झाल गिनाई।
सीता न राम न रावण राघो है, शब्द बिना सुपनें की है झांई।। ५।।
बाद बिरोध जो भँवर परत हैं, छोटी बड़ी तोहि लहरि बताई।
नाह बिरांने का नाम न लीजिये, भूली सखी जैसे मंगल गाई।। ६।।
खेत चढ़े रणधीर गंभीर हैं, याद करै नहीं शूरा जो भाई।
सती संगीत जलै मुये कंत की, कौतुक हार सबै उठि जाई।। ७।।
पूर्ण ब्रह्म चिदानंद चीन्हो जी, व्यापक ब्रह्म समाना है सांई।
अरस कुरस में भ्रम विटंब है, मृग तृष्णा मृग के संग लाई।। ८।।
बूंद समुंद्र में ढूंढी न पावत, बूंद कहो क समुंद्र कहाई।
दास गरीब सीता सती संग है, हाजिर नाजरि गोपि गुसांई।। **६।। २२।।**
ज्यूं मुरजीवा समुंद्र कूँ पारत, हीरे ही लाल लगैं नघ हाथा।

है गुपतार विचार का खेलना, गर्भ गता नहीं जानत माता।। १।।
कौन कँवल में होत कुलाहल, कौन कँवल में ध्यान समाता।
हार ब्यौहार की कीर्ति काल है, मोक्ष मुक्ति के साहिब दाता।। २।।
शुन्य समुद्र में लाल अमोल हे, कीमत नांहीं जो पावै विधाता।
स्वर्ग विमान अमान अलील है, सीता सती का है ताहि से नाता।। ३।।
राम कूँ रोग वियोग लग्या बड़, प्राण तजे नहीं आत्म घाता।
मोहि कलंक लगै नहीं स्वामी जी, बूझो बाला क्यूं ना लक्ष्मण भ्राता।। ४।।
है सुख सागर रहनि हमारी जी, हंस हजूरि में आवत जाता।
दास गरीब सीता स्वर्ग हंसनी, ज्ञानी गुणी सब भूले हैं ज्ञाता।। **५।। २३।।**
पारिख हंस प्रेम के छाके जी, है उनमुनि अगोचर लीला।
द्वादश उलटि मढ़ी मध्य बैठो जी, देखो देवा कछु रक्त न पीला।। १।।
भृकुटि बान कमान कूँ खेंचि के, अंतर पैठि के कीन्ह करीला।
सुष्मण पाट सुरति से शोधि के, पीवो प्याला मद राम रसीला।। २।।
भृंगी ध्यान अमान हो जात है, संगी महोबति या विधि खीला।
अठारह हूँ पुराण कलू काल नाच है, खेलत है नर डीलम डीला।। ३।।
मुख बिन राग बिहाग बिनांनी जी, जंत्र बाजत है स्वर जीला।
दास गरीब सीता सतवंती का, सूक्ष्म रूप है राम रंगीला।। **४।। २४।।**
व्योम जला बिंब व्यापक सारे ही, लाल समुंद्र के बीच छिपे हैं।
मुरजीवा प्रीति लगी नघ लैंन की, ताहि समुंद्र कूँ पार धसै है।। १।।
अहरनि घन चोट सहै सिर जानि के, या कसनी विधि लाल कसै है।
धम घिरती ज्ञान समान समझे, जानत है विधि हीरे नसे है।। २।।
दूती का दोष रहै नहीं छानाई, बाहर रोवत मध्य हँसे है।
सर्प भुवंग भयानक भारी जी, दूध पिलाये से दूना डसे है।। ३।।
चंदन गात अनाथ है कोमल, पाहन सेती जो लायों घसे है।
शील संतोष विवेक विचार में, दास गरीब जो रंग रसे है।। **४।। २५।।**
तेल तिली मध्य व्यापक सारेई, अग्नि काष्ठ के जो बीच रहै है।
दूध गऊ गति रूंम त्वचा दर, अमृत धारा जो सिन्धु बहै है।। १।।
लाल की परख लखै कोई जौहरी, शीश घना गति चोट सहै है।
चंद की चाह चकोर लगी जैसे, योगी जुगति से कर्म दहै है।। २।।
भूल परी विधि समझत नांहीं जी, कायर खेत न शूर डहै है।
ज्ञान अज्ञान का फंदा पर्‍या देखो, खैंचत खैंचत गांठि गहै है।। ३।।
लाली तंबोली के पान में होत है, चाबै बीरा सोई सार लहै है।
नैनों के बीच निरंजन नूर है, दास गरीब जो भेद कहै है।। **४।। २६।।**
सूभर सिन्धु जलाबिंब झलकत, रीते कूँ राम बिकाम भरै है।
है प्रवीण प्रीतम पूरण, खोटे कूँ जानि के खराई करै है।। १।।

तूं रघुवीर रजा नहीं जानत, गोढेई डूबत शिलाई तिरै है।
मन पवन के गवन से आगै ई धाईये, देखो देवा गज ग्राह लरै है।। २।।
ये प्रपंच अबंच अध्यात्म, रावण काहे कूँ सीता हरै है।
लंक बिलंक न सिरजी समाधान, सेतु बंध्या अन सेना तिरै है।। ३।।
लक्ष्मण बाण चल्या नहीं राघो जी, बाला के हाथ न रावण मरै है।
जीव जंजाल दिखाई है जेवरी, सर्प शंका लगी देखि डरै है।। ४।।
वै कल्पवृक्ष कला कलधूतं, ना संसार अवतार धरै है।
ये गुण इन्द्रिय वियोग विचित्र, वौह देवा नाथ परे से परै है।। ५।।
है गुल गंध सुगंध सपोषन, आदि पुरुष जो अजर जरै है।
दास गरीब जो जैसे कूँ तैसाई, भगल विद्या बाजी खेल करै है।। **६।। ७।।**
ज्यूं कपि नाचत योगी के आगेई, घर घर बार दिलावत फेरी।
नलनी का सुवा बांध्या कहो कौन को, गल में न तौक पांह्यौं नहीं बेरी।। १।।
अंधे के आगेई अंधाई जात है, गाम का पंथ बूझै कौन सेरी।
बहरा विनोद वाणी कहे कौन से, गूंग सूं गूंग क्या बात नबेरी।। २।।
बांझ सूं बांझ मिलाप कहो कहां, पीर नहीं अन व्यावर चेरी।
पूत की आश निराश चली सखी, चूतिया नांह कूँ नाहक घेरी।। ३।
लोक अलोक न सिरजे हैं राघो जी, समझ बिना सब डूबी है ढेरी।
दास गरीब सीता सती संग है, मुरली मनोहर मुरली ही टेरी।। **४।। २८।।**
कऊवा की कीर्ति हंस कहै कहां, कुत्ता रसोई क्या जानत भोगं।
ज्ञानी जो पाठ पढ़ै ब्रह्म ज्ञान के, ताहि उरा कैसा शंशा अरु शोगं।। १।।
हाडी मुखां चाबत चूहरा चित्त है, लाग्या लगाना जो तास कूँ रोगं।
मृगा की घात चीता मग लावत, ऐसा जिहांन बियाना है लोगं।। २।।
गूदे की साथ मच्छी मार खात है, कांटा तालू फोरि संगी वियोगं।
माखी की घात मकरियाई लावत, दास गरीब है साल बियोगं।। **३।। २९।।**
जूंनी नरा जड़ पूजत देहरा, तोर चढ़ावत फूल रु पाती।
निंद्या पुरुष की नैंनों भर देख ले, खेलत है नर आत्म घाती।। १।।
मुगद्रा मार शुमार न शंकि है, तोरत है जम किंकर छाती।
संग संगीत दाने नरा दूत थे, एक लख पुत्र सवा लख नाती।। २।।
चौदह हूँ भुवन का राज बिराज है, शीश पर धूर ज्यूं मंगल हाथी।
दास गरीब भय मान कर खेलना, नहीं तास रावण घर दीपक बाती।। **३।। ३०।।**
खारी समुंद्र के खारी किलोल है, अठारह ही गंडे बीच गंगा है नीकी।
योगी शंभु महादेव दया कर, ताहूँ से जानि जटा में परीखी।। १।।
गंग तरंग बिहंगम चाल है, तीनूं त्रिलोक महात्म्य मूलं।
नादिया बैल अस्वार शंभु देवा, तास के हाथ सोहै त्रिशूंल।। २।।
सींगी जो नाद भूभूति भस्म है, ताहि गलै रुण्ड माल अशूलं।

नाग नरा लील कंठि बिराजत, पींघू परे गलि तास के झूलं ।। ३।।
आक धतूरे का हार हानौज है, चंद लिलाट देवा मख मूलं।
पाय पदम परीक्षा जो लीजिये, गरुड वाहन जाके अग्र के फूलं।। ४।।
योगी वियोगी शंभू महादेव है, आदि रु अंत नहीं जिस भूलं।
दास गरीब शंभु देवा सत्य है, अजर अमर जाके वज्र की चूलं।। ५।। ३१।।
अनरागी शंभु महादेव संगीत है, ज्ञान अरु ध्यान गलीचे हैं जाके।
गंधर्व कोटि खड़े कर जोड़हीं, गौरिजा चौंर करै पवन हांहै।। १।।
रिद्धि सिद्धि के दाता दयाल जी, ज्ञान के सागर शुकदेव भाखै।
तेतीस कोटि जो कीर्ति करत हैं, सहंस अठासी हैं प्रणाम ताकै।। २।।
सनकादिक नारद शारद ध्याव हीं, विष्णु और शेष जी आखै।
गोरख दत्त दिगंबर योगी जी, और मुनिजन कोटों ही लाखै।। ३।।
लाचन अनंत उरों बिच असतल, संख कला निर्वानी ही झाकै।
देवी दयाल के दासी अनंत है, पार्वती प्रणाम पिया कै।। ४।।
वज्र की ताल हमाल शिवनाथ हैं, संतो के जीवन पूर्ण साकै।
कौसत रंग महा निर्वाणी जी, दास गरीब दीदार अभिलाखै।। ५।। ३२।।
शंभु योगी महादेव मुरारी है, तास की ओपि नहीं नर दूजा।
स्वर्ग पताल मृत्यु लोक की लाज है, निर्वाणी निरंजन लिंग की पूजा।। १।।
संख मुनीश्वर ध्यान धरत हैं, भोला भंडारी महादेव सूझा।
खेत्रपाल भैरव जाके पीर प्रेत है, दैत्य और भूत खईसों की बूझा।। २।।
नांचै कमंद योगी महादेव कै, डोरू जो डाक धतूरे के कूजा।
सप्त पुरी सुर इन्द्र देवा मुनी, दास गरीब शिव संग उरीझा।। ३।। ३३।।
योगी शंभु महादेव श्विवंभर, आदि ही अंत जो घायल घाणी।
क्रितिया देव काली भद्रकाल है, बैठे कमंद जो घूंम घुमानी।। १।।
गाजत शुन्य विशुन्य बसत हैं, उलटि चढ़ी जाकी भौंह कमानी।
स्वर्ग पताल के साल शंभु देवा, ताहि प्रणाम करूं कुरबानी।। २।।
भस्मा भूत करै शंभु देव निरंजन, आदि ही अंत की सुनि हो कहानी।

शंभु समाधि अगाध अगोचर, दास गरीब अलेख बिनानी।। ३।। ३४।।
शंभु योगी महादेव बिहंगम, स्वर्ग पातल में वज्र की ताली।
ब्रह्मा कूँ बूटे रंगीले लगाये हैं, सीचत तांहि विश्वंभर माली।। १।।
सुन्दर श्याम सलौंने संगीत हैं, रक्त रु पीत रु जरद गुलाली।
माया के चोज जलूस जुगादि हैं,
तीनूं देवा येही हाली मवाली।। २।।
मूल शाखा वृक्ष पान में प्रेम है, फूल फलंत सबै संग डाली।
जड़ हेत से प्रेत प्रीति न लाईये,
तास का पान न तोड़ि जुबाली।। ३।।
उत्पत्ति अनंत खालसे खेल है, जाय पड़े नर जम की जाली।
सतगुरु ज्ञान न सांईं का ध्यान है,
कैसे रहै धर्मराय कै लाली।। ४।।
अंतर जाप नहीं जगदीश का, कंठी कटाव की अनगिन घाली।
मार पड़ै धर्मराय के धाम में, द्वादश तिलक बनावत भाली।। ५।।
रोवैगा रात रु दिन रंगीले जी, जैसे ही सुंदरि सौहरे चाली।
रूप के रस कुरस कूँ भोगत,
आकी दौरा तेरी नजर बियाली।। ६।।
चौपड़ के बाजार लगे बाजी, सौदा कीया नहीं जाते हो खाली।
दास गरीब चितावनी चूक क्या,
और कहां अब दीजैगी गाली।। ७।। ३५।।
शंभू योगी जगदीश दयाल हैं, पुत्र गणेश्वर दासी है गौरा।
कोटि भैंरों खड़े पाठ पढ़त हैं, देवी करै ताहि शीश पै चौंरा।। १।।
भूमियां बिताल हमाल हजूर है, योगी शंभू महादेव हैं बौरा।
खेत्रपाल रिसाल संगीत खिलारी हैं,
ताहि खड़ी कर जोड़त जौरा।। २।।
भक्ष्य अभक्ष्य करत हैं शंभू जी, शंकर शीश बिराजत टौरा।
गंग तरंग जटा जगदीश कै, चंद लिलाट गुंजारत भौंरा।। ३।।
कलधूत कला कुरबान है ताहि कूँ, चंदन लेपहि अग्र की खोरा।
शुन्य समाधान शालाई कर्म हैं, शंकर लावत ज्ञान के मौरा।। ४।।
दूजा न ओपि शंभू महादेव की, ज्ञानी गुणी अरु गुनी करैं डौरा।
दास गरीब जगत भक्ति क्या,
कौडी कूँ मारैं हि ऊकै बटौरा।। ५।। ३६।।
योगी शंभू महादेव दयाल हैं, रिद्धि सिद्धि के दाता सरोता।
सूवा स्वरूप धरे शुकदेव जी, वृक्ष के खोढ़ में पक्षी है तोता।। १।।

नाम निरालंब दीन्हा दया कर, गौरिज लाया है ध्यान में गोता।
झूंमी पलक अलख ध्यानी है,
रूम्बी रूम्बा रंग गंगा के सोता।। २।।
आदि अनादि जुगादि योगी शंभू, निर्गुण निरालंब ऐसाई होता।
दास गरीब जो साक्षी जो भूत है,
मार्या छला छदि ब्रह्मा का पोता।। ३।। ३७।।
योगी शंभु महादेव दयाल है, रिध्दि रु सिध्दि के दाता दयालं।
दाहिनी जटा बीच गंगा बहत है,
बामी जटा में अमीते हैं मालं।। १।।
बाजे वियोगं अयोगं अनरागी हैं, नादौ निरंतर भभूति जो ख्यालं।
अनभूत मौले जो कुरसी, अरसी जंग जो स्वर्ग पातालं।। २।।
निर्वाण शाखा परमहंस योगी जो, शक्ति सुरानाथ मूलों न डालं।
अघनूस नागा बिहागा असंभूज, निर्गुण रिसालं।। ३।।
बाजंत नाद अगाध निराधार, वार न पार कहूँ क्या हवालं।
दास गरीब सुनें दंग होत है,
दामिनी रूप खिमत गुलालं।। ४।। ३८।।
योगी शंभू माहदेव कूँ याद कर, रिध्दि रु सिध्दि भंडारे में मुक्ता।
काली घट जोड़ि कर आये हैं शंभू जी,
नीर निर्वाणी जो बरषे अन जुखता।। १।।
हीरे और लालन के दौंने दरियाई दत,
हारी अर रीनी पर ऐसेंई हकता।
शंभू से योगी अनरागी वियोगी है,
ज्ञानी ब्रह्मज्ञानी से पूर्ण पद धुकता।। २।।
गौरिज गणेशा उपदेशा अनरागी रंग, अमलौं में झुकता।
मनसा के दाता विधाता हैं योगी शंभू, पारख हंस लखता।। ३।।
दत्त से दयालं निधि नजर हैं निहालं, ज्ञानी बहु बकता।
कहते हैं **गरीबदास** पौंहचे हैं शंभू पास,
वर्षा ब्रह्म लोक सागर, मान्या है नुकता।। ४।। ३६।।
ब्रह्मा बिनानी कूँ पारख लीजिये, येते स्वरूप कहां सेती ल्याया।
नाद न बिंद समंद समूला है, कौन कला सेती सिरजी है काया।। १।।
सहंस मुखी ब्रह्मा पिता प्रीतम है, योनी जो संकट में राखै गुरु राया।
मौले मुरारी की माला मन फेरत है, अमृत अनभूत नैं जहां भोजन पौंहचाया।। २।।

ऋग यजु जो साम अथर्वण की लीला है, श्वासा सुहंगम स्वर वेदौं उपाया।
सनकादिक सेवा बड़े देवा अनंतों हैं, ब्रह्मा प्रवीना ल्यौलीना रंग माया।। ३।।
नाम तो निरंतर गुरु मंत्र उपदेशा है, आदि और अंत बीच काल कर्म लाया।
दुनिया से तर्क खेल घाले जम किंकर हेल, कहता है गरीब दास,
सतगुरु का है खवास, नूर में मिलाया।। ४।। ४०।।
विष्णु विश्वंभर नाथ बिनानी जी, आदि रु अन्त उपावत बाजी।
अवतार अपार कला कलधूत की, कोई मुल्लां कोई सिरजा है काजी।। १।।
कोई नेमी कोई धर्मी ध्यानी हैं, सेवा पूजा कोई बंगी निवाजी।
कोई तपी कोई जपी जुगादि है, कोई काबे मक्के होते हैं हाजी।। २।।
कोई चोरी कोई जारी खिलारी है, कोई कपटी लपटी है दगा बाजी।
दास गरीब तबीब मौले तूंही, खानें जाद गुलाम शरै का हे पाजी।। ३।। ४१।।
ज्ञान के छंद अबंध न जानत, मूढ़ नरा जैसे मारत लाठी।
नौ पांच पचीस की परख न आवत, मन लगाम जर्‍या नहीं ढाठी।। १।।
चेहरै मुहरै चंगा चाह नहीं उर, ना कहीं मोलि बिकै तन माटी।
स्वाफ सलेश नहीं नर नाट हे, नाक फुफाय कहैं बानी हैं बाठी।। २।।
शोक विवाद बदी बद फैल है, बूझत नांहि जो ज्ञान की हाटी।
येता बिटंब कुटुम्ब जो संग है, कैसे चलो आगे औघट घाटी।। ३।।
फूल चवे कैफी घूंम घुमांने हैं, शुन्य सरोवर प्रेम की भाठी।
बावन अक्षर बीच न आया है, पंडित पीर ढिडोलें हैं साठी।। ४।।
पीठ लदै खर भेद न जानै है, अग्र मलागीर कैसी है सार्टी।
दास गरीब दया दरवेश की, झीनी अलील निरालंब बाटी।। ५।। ४२।।
चक्र चलै चौदह भुवन का राज है, गर्व गुमान करै नरा धन का।
कोटि कटक अटक न आगै हे, शंक सुवा नहीं राखत रन का।। १।।
जोधा अनेक विशेष संगीत हैं, लाल कूँ भय नहीं जैसे ही घन का।।
कल्प वृक्ष चिदानंद कामना पूरण, पार लखै कौन साधुई जन का।। २।।
नजरि के बीच रिनालंब देख्याई, मोल कहूँ कहां कौस्तुभमणि का।
ज्ञान सुनैं नहीं जात सखी री, सर्प भुवंग विषै जैसे ही फण का।। ३।।
संग मंदोदरि ज्ञान जु देत है, नीमांई नाश गया है रावण का।
दास गरीब मुलायम संत हैं, सीत ढंढोरि देखो इक कनका।। ४।। ४३।।
ज्ञानी गुनी मुनि मूल न जानत, कूक पुकारैं ज्यूं जंगल गदरा।
निर्गुण कंत का पंथ न पावहीं, भक्ति बिना सारे लागे है भदरा।। १।।
कर्म की कूल बंबूल लगावत, जैसे बिलोमान धूमें के बदरा।
आज ही काल परूं परले दिन, बीत चलैं जैसे ही तिथि पंदरा।। २।।
चौक बहत्तरि बिलास खुलास हैं, राज बिराजी चलैंगे जो इन्द्रा।
रावण से रणधीर कहां हैं, छाडि गये देखो सोने के मन्द्रा।। ३।।

गोरख नाथ गुरु गति पाई न, सिंगल द्वीप बंधाने मछंद्रा।
तत्ववेत्ता योगी जुग जागत हैं सोई, कामिनी मार मोहे देखो सुंदरा।। ४।।
धूमाई धामी हिवानी का हेत है, जुवा जुवारी खिलारी खिलंद्रा।
काला कुलीन जो कोला है मध से, जैसे ही काष्ट जरावै बसंद्रा।। ५।।
ऐसे माया मग रोके खड़ी देवा, बुलबुल जुटि गई खाये जो गुन्द्रा।
दास गरीब कहा प्रमोधिये, उर मध्य जाप नहीं खाली अंद्रा।। ६।। ४६।।

अथ गैंद उछाल के सवैये

है दिलदार अपार निरंजन, योग जुगति समूल सुनावै।
मूल कूँ बंधि बिलावल पंथ है, लिंग शरीर का भेद बतावै।। १।।
दम की धार सुमार सुजीवन, नागी के शीश पै नाद बजावै।
भौंरी उलटि लिलाट का घाट है, दण्ड सुमेर सूधा कर ध्यावै।। २।।
नैंन के बान कमान कूँ खैंचि के, पैठि पताल शेषा गहि ल्यावै।
चंद सूरज इला पिंगुला मधि, सुषमन घाट कूँ सुरति लगावै।। ३।।
शुन्य सुमेर कुमेर की राह है, गंग सहंस मुख प्रबी ही नहावै।
मूल में पैठि पसाव करै तहां, तापर शाला ही कर्म रचावै।। ४।।
मूल उच्चार गणेश गायत्री है, नौ तत्व के कूँ भिरंग उडावैं।
चंद्र सूर समोय के सिद्धि करै, नाद सूं नाद कूँ आंनि मिलावै।। ५।।
नाभ कि ताब में बंक की बाट है, औघट घाट कूँ हंसाई जावै।
मेर सुमेर कूँ छेदि के धाईये, सहंस कँवल दल पैठि समावै।। ६।।
जहां जोति अपार कला गुलजार है, तेज रु पुंज के चौंर ढुरावै।
हीरे लाल बिसाल मोती मुक्ताहल, मानसरोवर हंस चुगावै।। ७।।
शुन्य में शेष बदेस विश्वंभर, ताहि पै सूक्ष्म रूप लखावै।
अष्ट भुजा पर मूल सहंस, अक्षर धाम की डोरि बंधावै।। ८।।
मक्रतार अपार है पंथ पुरातम, बिन सतगुरु तहां को ले जावै।
संख भुजा परमानंद का देश है, दास गरीब बहुरि नहीं आवै।। ९।। १।।
पांन अपांन उद्यांन बियांन कूँ, खैंचि असमांन न आलस कीजै।
बायर बिंद सलेस कर नाद स्यूं, सतगुरु ज्ञान विचार सुनीजै।। १।।
दुरगुन दीप बंका गढ़ भाई जी, योग जुगति की राह परीजै।
खेत मंडे शूरे सार झडैं जहां, सतगुरु आगेई यौह सिर दीजै।। २।।
ऐसे जन्म कूँ काट न लाईये, साके बिना कहो कौन पतीजै।
भूख रु प्यास तिरास सरीकति, खड्ग के धार की चोट में सीझै।। ३।।
शत्रु कूँ मार निछत्र का पूरा तूं, चौदह ही कोटि से जंग करीजै।
खेत पड़े सिर पीठ न दीजिये, ताहि पै मौला ई मुरशद रीझै।। ४।।

सुखमन सिन्धु में चंद्र अपार है, प्रीत से प्रेम का प्यालाई पीजै।
बंक नाल के घाट में आठ फुहारे हैं, भौंर गुफा मध्य भौंरा ही भीजैं।। ५।।
मानसरोवर से गंग जो आई है, मान तलाई उलटि भरीजै।
अर्थ धर्म काम हौंहि मोक्ष मुरारी से,
कल्प वृक्ष नाम है ध्यान हरीजै।। ६।।
शूरयौं की चोट चुटाल का काम है, लावैं सुरति की चोट निशानें।
आत्मराम स्वरूप में सैल है, गगन मंडल में तंबू ही तानें।। ७।।
दीप परदीप दिवाना ही देश है, सतगुरु नीर रु क्षीर कूँ छानें।
ऋग यजु साम अथर्वण थाके हैं, ब्रह्मा विष्णु रु शंभू दिवानें।। ८।।
धन्य जननी जगदीश भक्त की, शेष पै सूक्ष्म रूप पिछानें।
बावन कोटि कंगूरे अपार हैं, ताहि पै अनहद नाद घुरानें।। ९।।
अविगत नगर में आरती होत है, तहां उहां रहत हैं हंस अमानें।
प्रीत की रीत छिपै न छिपाई जी,
नैंन रु बैंन रु सैंन से जानें।। १०।।
आदि रु अंत है मध्य चिदानंद, सतगुरु खोल्हे हैं गैबी खजानें।
दास गरीब उड़े सतलोक कूँ, जैसे अलल पंख कीन्ह पियानें।। ११।।
२।। अजपा ई जाप जपौ जगदीश कूँ, सुरति सुहंगम तार संनेही।
तालू न कंठ हलै नहीं रसना जी,
देही के मांहि रटे हैं विदेही।। १।।
शब्द की गाज अवाज सी होत है, बोलनहार चिदानंद येही।
खांड रु खीर हमीर का खान है,
अन्ध नरा भूले चाटत रेही।। २।।
तीरथ बरत विश्वास विश्वंभर, धौरी हि जानि के खाई है खेही।
बारू की भीति में भात धरें कौन,
मूढ नरा सेती न्यारा परेही।। ३।।
मूढ के ढूंढ में डांमाई डोल है, पांच पचीस पिशाच पुकारै।
कंठ से नाम न गाम गलीज है, जाप अजपा कहो कैसे धारै।। ४।।
खान रु पान का द्वारा ही दूत है, आप मरे देखो और कूँ मारे।
पांच परौसी प्रेतों का साथ है, कीर नरा भूंडै ही किलकारै।। ५।।
स्वाफ शरीर खमीर खुलास है, अष्ट कँवल दल नाम उचारै।
रूंम ही रूंम अखंड धुनि ध्यान है,
जाप अजपा कूँ संत विचारै।। ६।।
सतगुरु सन्त मिलें अविनाशी जी, आप तिरें अरु और कूँ त्यारै।
जूंनी जिहान में फेर न आवहीं,
लख चोरासी का भार उतारै।। ७।।

धर्मराय की बंधि समूल छुटावत, चित्रगुप्त का कागज पारै।
रूप न रंग अभंग बिराजत, त्रिकुटी पाट पै है दिलदारै।। ८।।
कोटिक सिद्धि खड़ी कर जोरहीं, मेर कुमेर भरें हैं भंडारें।
दास गरीब अजपा का ख्याल यौह,
पल पल प्रबी है जगि जौंनारें।। ९।। ३।।
हाल हजूर चिदानंद साहिब, मौले मुरारी विश्वंभर आया।
ना पैद से पैद किया नर मूरख,
पिण्ड रु प्राण रची जिन काया।। १।।
जैसे का तैसा जहां का तहां मौला, खोज करो देखो खोया न पाया।
दीद बरदीद जो नूर जहूर है, नैंन की रेख में सुरमा समाया।। २।।
कुरबान जुगा जुग जाऊँ मैं तास की, जिन्ह महबूब अलेख लखाया।
दम सुदम की माला सुहंगम, छत्र श्वेत पर चौंर ढुराया।। ३।।
संख असंख निशान धजा जहां, शुन्य वे शुन्य सकल विधि छाया।
तेज रु पुंज की कुंज अपार है, झिलमिल नूर जहूर समाया।। ४।।
समाधान अछैवृक्ष आदि जुगादि है, तेरा धनी तेरे मांहि बताया।
उज्जल नाद बीना तुतकार है, राग बिहाग अकल झर लाया।। ५।।
केतगी भौंर गुंजार करत हैं मधुकर मूल ज्यूं फूल कूँ धाया।
दास गरीब समुंद्र की झाल ज्यूं,
नीर में नीर सरूप बिलाया।। ६।। ४।।
हैरांन हैरांन हैरांन हैरांन हूँ, कहाँ कहूँ कलधूत के खेला।
सरबंग समाधि अगाध अलील की,
कौन गुरु और कौन है चेला।। १।।
कुल मंडन न मूल अभूल परी मोहि, सुरति शरीर है सार का सेला।
अचारी विचारी अनारी न जानत,
घंआ बजावे धरैं आगै डेला।। २।।
फूटि गये पट हिरदे के अंध हैं, धात धतूरा ये पीटें सकेला।
संत सुजान अमान रहैं नित, पदम उजियार बाती बिन तेला।। ३।।
जैसे अहलक कौड न बेलि फुलानी है, कूक पुकारि दिया हम हेला।
ऊतौं के ऊत अतीत कहावत, लिंग लरकायें फिरें काढे पेला।। ४।।
मोटे मलंग कुलंग खलील हैं, ज्ञान रु ध्यान बिकै नहीं धेला।
दास गरीब नटी कैसा नांच है,
बिन सतगुरु झूठा फोकट मेला।। ५।। ५।।
नाद रु बिंद की गांठि परी नर, देह दमांमा नगारे से चूतर।
षट् भेष अलेख न जांने जुगां जुग,

ये जमराय के आये हैं दूतर।। १।।
धांमें परे धूंनी ताप लगावहीं, मलंग मलीन कूँ खाती हैं घूतर।
खोज न बूझ न झूझ न काम से,
गहले गुलाम जो देत न उत्तर।। २।।
आये गये फंद काल के जाल में, उजारि के कूप में झेरे कबूतर।
दास गरीब दुरबुद्धि भेष की,
भद्र भये जो रखावें है झूथर।। ३।। ६।।
हाली मुवाली का हाल बिहाल है, चार संप्रदा दसौं दस नामा।
चाकर चोर कठोर कटक हैं, रोगी अरु शोगी समूच गुलामा।। १।।
कंकड़ भांग तमाखू कूँ पीवत, भूले धनी जो तो भेष अलामा।
षट् कर्म धर्म कूँ जांनत नाहीं जो,
मंजन मूल नहीं पाख जामा।। २।।
दगर्‍यों के दूत कपूत कुटीचर, भूत प्रेत कूँ हेत से धामा।
मूण्ड मुंडाय के भिक्षा के भौंर हैं,
भूल गये धनी आठौं ही जामा।। ३।।
नागनी नाद न भौंर उलटि हीं, मूल गुदा पैर लावै न बामां।
दास गरीब मंजीठ के रंग कूँ,
भूल गये देखो निर्गुण रामा।। ४।। ७।।
दीद बरदीद पिछांन परख ले, नैंन के नाद में सारंगपाणी।
द्वादश धाम पर दीप हमारा है,
सोलह सरूप अरु बारह ही वाणी।। १।।
रंग बिरंग अपंग अपार है, घट के पट बीच दया दिलदानी।
सुरग पताल हमाल का काम है,
लील अलील में खैंच कमानी।। २।।
पाखर प्रेम संजोयल सार की, भौंर गुफा मध्य ध्यान ध्यानी।
शील की सांग सलेमाईबाद में, पट्टन घाट रहो ब्रह्मज्ञानी।। ३।।
सार के कोट में चोट लगे नहीं, हरि हेत परीति रहो क्रिसानी।
नाद की नाल कूँ मंजन मांजहीं,
इला पिंगुला सुषमन तुरफानी।। ४।।
गुल रिंचक शोख पतंग झरै देवा, सो जांने यौह अकथ कहानी।
चोट चुटाल चलावत हैं, जो मारत है मोहन मृगानी।। ५।।
चंचल डारि बिडारत हैं, जिस छूटत हंसा चार्‍यौं ही खानी।
दास गरीब दगा दिल दूर है,
समझ धनी का तूं हेत हिवांनी।। ६।। ८।।
जैसे बीजक माल बतावत है, ऐसे शब्द बतावत साहिब सेवा।

मूल कूँ बंधि बिलावल पंथ है, आदि रु अंत उड़े हैं प्रेवा।। १।।
जाजरी नाम निरालंब लाज है, पार उतारत पूरा ही खेवा।
नौ सुर बंधि नसा बिच नांम का, दूर करो घट मैल मलेवा।। २।।
बरदवांन बांधि के सुरति कूँ सांधि के, सूभर भरि मुक्ताहल मेवा।
दुरबीन का ध्यान अलील अमान में,
पत्थर स्यों नहीं लागत रेवा।। ३।।
शील संतोष विवेक दया दिल, दूर करो द्वंद्व हाल हलेवा।
काम रु क्रोध जो लोभ रु मोह है,
कर्म कुसंगति का बिच छेवा।। ४।।
ब्रह्म महूरति मालवे देश में, अमी महारस कीन्ह कलेवा।
दास गरीब तबीब के तेज हैं,
मोहि मिलें हैं जिन्दा गुरु देवा।। ५।। ९।।
भ्रिकुटी नाद में आदि जुगादि है, सुरति सरोवर डाल न मूला।
अचरज अक्षर अंग बिहूनाई, नीचे ई चीपी है ऊपर चूल्हा।। १।।
धनुष चढ़ाय के ध्यान से देखि ले,
जग फिर आवे चरण बिन लूला।
ज्ञानी गुणी मुनी भेद न पावहीं,
मोतिया बिन्द का नैनों में फूला।। २।।
हिरदै बिलाव नैनों बग ध्यानी हैं, अंतर तास के सूल बबूला।
बैराट के घाट का ध्यान न जांन ही,
ज्ञानी गुणी रु कहैं मसकूला।। ३।।
गींड की मींड बदैं बदनी विधि, खेलत हैं नर हूलम हूला।
केतगी कमल कुलाहल होत है,
दास गरीब अनंत विधि फूला।। ४।। १०।।
दगाबाज अवाज सुनें नहीं ब्रह्म की, नैंन रु नाक जो श्रवण फूटे।
हैफ हलीमी स्यों बोलत हैं ठग, आठोंई गांठि कर्म कूर झूठे।। १।।
जांन रु माल पैमाल पलक में, तास पर साहिब सतगुरु रूठे।
हिवानी हैरांन बिरांन फिरैं देखो,
जुगन जुगन जम किंकर लूटे।। २।।
संत के दन्त ज्यूं राय चंबेली, तंबोली के पान चाबे सेती फूटे।
ब्रह्म के घाटि कपाट कूँ खोल्हि के,
भौंर गुफा में अमीरस घूंटे।। ३।।
हदी हिंदोले चढ़े नहीं ब्रह्म के, भंगी भड़ुवे पीवें भांग के टूठे।
दास गरीब खेवा जाका पार है,
तास पै सांई जो सतगुरु टूठे।। ४।। ११।।

बहरे बिलोमान होत हैं, नाक रु नैंन हैं श्रवण अंधे।
घनघोर नदी जाके थाह न थेहाई, मूढ़ नरा धूंध धार बहंदे।। १।।
पातनी फूहरी चूहरी चित है, अदेख लावें लावें प्रचंदे।
पंडित पीर बे पीर बघेरे हैं। समझ न बूझत ज्ञान के छंदे।। २।।
ज्ञान विचार उचार कहीं कहीं, गैबी मिले कोई मौज से बंदे।
अजरी बजरी बाई बिन्द कूँ बांधि कै,
भौंर गुफा बैठे खांही गुलकंदे।। ३।।
बंकनाल की राह अमीरस पीवैं, सुमेर शिला कूँ उघारें फिरंदे।
चांदनी चौक के शालाई कर्म है,
सोहं चौरां सो तो छत्र ढुरंदे।। ४।।
जाके तालू तलाई पर लंब का गैब है,
छोई कूँ छांनि अमी कूँ पीवंदे।
धूंम परी डफ बाजत ताल है, बारहूँ मास बसंत खिलंदै।। ५।।
दीरघ छत्र तख्त गुलजार है, बैठा मौला जहां गावैं सिकंदे।
त्रिवैणी छूटी ब्रह्मलोक से आई है,
सातों समुंद्र जो उलटि भरंदे।। ७।।
असनान अमान ध्यान की धूप है, कुशमल कर्म जो काटि धोवंदे।
नंक नगीना पदम का तेज है, नैंन गुलजारा है पलक बिलंदे।। ६।।
ब्रह्म तेज की दामिनी होत झमाझमि, इन्द्र अनंत घटा बरखंदे।
दास गरीब अमान भये हम,
मोहि मिलें हैं कबीराई जिंदे।। ८।। १२।।
सार शब्द की चोट सराहिये, शूरा सुभान डिगै नहीं हालै।
लाग्या है बान दशौं दिश फूटी है,
श्वास उश्वास शरीर में साले।। १।।
रूंम रूंमी नघ गाजत है घट, गैबी के बान कूँ शूराई झाले।
फूटि गये पट बार रु पार से, अरश कुरश में बलत मसाले।। २।।
मार्‌या है बान गुडी उड़ीती देख के, लागी है चोट निशानें बिचाले।
हीरे का हैफ सुनों खड्ग बेधना,
अहरनि बिच हुये गैब लाले।। ३।।
अमर बेली अकाश में फूल फुलानी है,
आगे आगोचर से टलै न टाले।
लागे अमर फल खात सखी संत,
जुगन जुगन हंसा होत बहाले।। ४।।
तेजरु पुंज जो नूर शरीर है, हाड रु चाम नहीं घट खाले।
अमर अलेख के बाग अलील है,

ब्रह्म दरश हंसा एक पियाले।। ५।।
मदन कूँ मार सिंघार के फूंक दे, ब्रह्म अग्नि बीच ताहि कूँ जाले।
हंस जुगा जुग जाते हैं लोक कूँ,
लावो सुखमना जो कूँची ही ताले।। ६।।
ब्रह्म कँवल में लीन किये हंस तुरिया चढ़े भये एक निवाले।
दास गरीब सुभान उस रूप कूँ,
सतगुरु भेटे हैं नजर निहाले।। ७।। १३।।
हीरा हजूर कसूर न तास कूँ, सिंध के रूप कूँ कौन पिछानें।
जैसे बादल में चंद अबंद अजोख है,
तेज रु पुंज कमोदनी जांनें।। १।।
चंद की चाह चकोर को होत है, आगि अंगार से ठंडि प्राणें।
सूरज मुखी लटकन्त झुके झुकि, अर्थ की गैल महोबति मानें।। २।।
नाद का बाद स्वाद सुनें मृग, दीप पतंग करें कुरबानें।
तत्व के रूप कूँ साधु योगी लखे,
सिंध की सुरति जो सिंध समानें।। ३।।
हैफ दुनी नर जीवत काहे से, सांईं बिना नर होत हैं श्वानें।
दास गरीब जुगा जुग जागिये,
सूते की म्हैंसि का पाडा निदानें।। ४।। १४।।
अनभै उपजी प्रकाश भया, भेटे गुरुदेव कबीर सही।
निरभै निरदुंद अबंध भये, अनभै अनहद की बात कही।। १।।
सुख सागर में बिचरे हंसा, रतनागर नाम लिया तबही।
गुलबास निवास अकाश चढ़े, तब भ्रम बिटंब की भीति ढही।। २।।
त्रिकुटी धरि ध्यान निशांन जहां, अविगत मूरति सुख श्याम लही।
छूटे नहीं फंध पड़े बिरह के, गहरी गुरु प्रेम की गांठि गही।। ३।।
शुन्य मंडल में मौहरा जाग्या, कर्म काल जिंजाल कूँ सोच भई।
चले नाम अखंड प्रचंड जहां, ररंकार उचारं भ्रम बही।। ४।।
दिल में दीदार अपार कला, सुरति सैंन विश्वंभर स्यौंज नई।
घनघोर घटा दामिनी चमके, जहां मेघ मलार की छांनि छई।। ५।।
सरवै नित मेघ निरंतर में, जहां भौंर विधे गंध बास मही।
कहैं दास गरीब तबीब मिले,
दिया नाम भक्ति प्रतीत रही।। ६।। १५।।
सुरति सैल अगम अनरागी है, जहां योग बियोग नहीं करनी।
जहां शेष महेश गणेश नहीं, जित कच्छ कूरंभ नहीं धरणी।। १।।
जहां हंस न काल उचाल कोई, जम जीव नहीं जित ना डरनी।
रहौ शुन्य बेशुन्य अगम नगरी,

दु:ख दुन्द नहीं जहां भै तरनी।। २।।
ब्रह्मा नहीं वेद अभेद कहूँ, सनकादिक नारद सब बरणी।
नांहीं गुण तीन बे दीन विद्या, जहां जाप न थाप हरा हरनी।। ३।।
ज्ञान न ध्यान अमान जहां, कोई पुरुष न नारी घरा घरनी।
जहां नाद न बिंद न सिंध शिला, साहा नाहा नहीं पी परनी।। ४।।
अविगत अवधूत अनाहद है, जहां जन्म न जांनि नहीं मरनी।
मौले मसतान जिहांन नहीं,
कहै दास गरीब वस्तु जरनी।। ५।। १६।।
शुन्य संपट योग बियोग कहूँ, मूल चक्र बंधि बिलावल है।
नाभि निरबान समान समो, दम थीर करो जे तावल है।। १।।
हिरदे हरि हेत सहेत समां, जठरा जीतो भूख लावल है।
कंठ कँवल खलील वकील विद्या,
त्रिकुटि चढ़ि देख चकावलि है।। २।।
जहां हंस हिरंबर धाम कहूँ, पचरंग पिछांनि रंगावलि है।
उरध कूप अनूप उजल बागं, मोती चुगते हंस पावल हैं।। ३।।
तब हंस जग्या धुन ध्यान लगा, अमी खीर पीये मध्य चावल है।
कहै दास गरीब चढ़े दशमें,
जहां उजल हिरंबर रावल है।। ४।। १७।।
सुख सागर न्हान चलो हंसा, प्रबी प्रभाति बताई है।
अठसठ तीरथ का मेल कहूँ, सतगंग सहंस मुख आई है।। १।।
सरवर गहरा लहरा दरिया, सत मान सरोवर पाई है।
मोती मुक्ता समझो नुक्ता, जहां हंस चुगे रुशनाई है।। २।।
खग भेद कहूँ लखि पंथ सरा,
नीचे एक मान तलाई हैं गंग जमुन सरस्वती संग बगैं,
देखो शुन्य सुमेर से आई है।। ३।।
काशी पटना गया पिराग जहां, इन्द्रदौंन महोदधि न्हाई है।
जगन्नाथ जहां दीदार दिये, सतगुरु नित संग सहाई है।। ४।।
सेतुबंध रामेश्वर राम धजा,
फलगू परसे निधि पाई हैं पौहकर लोहागिर लार लगे,
हरिद्वार हिरंबर ध्याई है।। ५।।
हरि पैड़ी बदरीनाथ जहां, निज नाम रते धुनि लाई है।
कहै दास गरीब किलोल जहां,
सतगुरु सब भेद लखाई है।। ६।। १८।।
सुख सागर न्हांन चलो हंसा, भवसागर भूल रहे लोई।
कुल काट लग्या जम आन ठग्या,

अगली पिछली सब ही खोई।। १।।
निंदत नेमी निरताई लिये, कुछि समझत हैं नहीं गुरु द्रोही।
संतों का दोष धरै दिल में, अघ पाप के बीज बौहत बोई।। २।।
सुसरे सालौं हितकार करैं, सासू साली कोई नंनदोई।
जग लंढम है प्रतीति नहीं, बोले नहीं साच जगत धोही।। ३।।
लंगड़े भरुवे नहीं भेद लहैं, गुज बीरज मंत्र हम ही गोई।
साधू माखन मधि छाकि रहे, जग पीवत है पिछली छोई।। ४।।
दिन आवत है सुनि दंग भया, जम तलब छुटी जब रोवत है।
कहै दास गरीब जगाई रहे,
भरुवे निश वासर सोवत है।। ५।। १६।।
तप राज लिया बड़ जुलम किया, आगम अंधर्यौं नहीं सूझत है।
घट में सत शालिगराम सही, चेतन होय कर जड़ पूजत हैं।। १।।
पाती तोरे नहीं मुख मोरै, पत्थर पांहन से लूझत है।
अंधे बहरे गूंगे गहले, शब्द नहीं अनाहद बूझत हैं।। २।।
कामधेनु सदा कलवृक्ष कला, जहां अमी महारस दूझत है।
कहैं दास गरीब गगनि गादी, गैबी गलतांना गूंजत है।। ३।। २०।।
है तिल के तिल के तिल भीतर, चौदह भुवन बनावन हारा।
जो पिंड ब्रह्मण्ड रचे धरणी धर, अनंत लोक का है चेजारा।। १।।
झीना उजियार विचार कहूँ, समझो रे संत सही कीजे।
बैठ्या त्रिकुटि भ्रिकुटि मांहीं, दीदार अलख दर्शन कीजे।। २।।
जहां ऊंचा मेर सुमेर शिला, सरवर न्हाने की है प्रबी।
जहां हिंदुस्तान जिहांन नहीं, तुरकाना तबक नहीं अरबी।। ३।।
जहां पंथ न द्वार अनिन धजा, तरतीजन से आगे अगमी।
दस नाम न द्वादश पंथ जहां, किस कारज कूँ भगमा भगमी।। ४।।
जहां सुरग पताल नहीं मिरत लोक, अजोख अमान अलहदा है।
ज्यूं चंद उदिक में दीखत है, उस रूप बिना सब बहदा है।। ५।।
ज्ञानी कथि ज्ञान पखान बंधे, विद्या की पोट धरी भारी।
सत शालिगराम नहीं चीन्ह्या, उहां धर्मराय कै होगी ख्वारी।। ६।।
करि मंजन मूल मुकित पावै, अजपा जपिये सोहं श्वासा।
एक भँवरी मध्य भौंरा गूंजै, सतलोक अगम पुर है वासा।। ७।।
चिशम्यों मध्य चंद पदम झिलके, जहां नूर की कुंज अजब दरिया।
जहां ज्ञान न ध्यान कथा कथनी,
जहां योग न भोग कर्म क्रिया।। ८।।
गुटके मधि गंग समाय रही, शिव के सिर पर की सैल कहूँ।
महादेव बड़े मुनि ध्यानी है, जट कुंडल ऊपर छाइ रहूँ।। ६।।

जहां गंधर्व देव नहीं कोई, सनकादिक चार नहीं जाते।
कोई नौ चौबीस न तीस जहां, शिव ब्रह्मा विष्णु नहीं राते।। १०।।
जट कुंडल ऊपर आसन है, सतगुरु की सैल सुनो भाई।
जहां ध्रुव प्रहलाद नहीं पौंहचे, सुखदेव कूँ मारग ना पाई।। ११।।
नारद मुनि जन मुसकाई रहै, दत्त गोरख से कौन सूचा है।
बड़ी सैल अधम सुलतान करी, सतगुरु तकिया टुक ऊंचा है।। १२।।
अब भरथरी गोपीचंद चले, काया दम जीति अगम रासा।
पांचों प्रमोधि समोय रहै, जीवन और योग लगी आशा।। १३।।
औह भक्ति हिरंबर न्यारा है, नामा से संत करैं रटना।
अठसठ तीरथ तिल के तिल में, सब धाम भया काशी पटना।। १४।।
सूजा सैंना बाजीद बिंधे, पीपा प्रवानि पिछान्या है।
औह लोक अलोक गवन सैली, रैदास अगम पुर जान्या है।। १५।।
धन्ना धरि धीरज ध्यान धरैं, नानद दादू दरिया मीनी।
जहां खेलन कूँ बड़ी सैल भईया, सतगुरु की रामत है झींनी।। १६।।
धर्मराय जहां का ध्यान धरै, अद्या अधिकार बतावत है।
दो लिखुवा चित्रगुप्त जाके, सतगुरु तकिया नहीं पावत है।। १७।।
मन पवन सुरति की सैल थकी, जहां निरति निरालंब नाद बजै।
ल्यौलीन निरंतर न्यारा है, उस धाम भईया कहो कौन सजै।। १८।।
जट कुंडल ऊपर गूंगनी गीता, अरबी तुरकी नहीं हिंदवानी।
पद पारसीयौं से न्यारा है, शुन्य भेद कहूँ लखि फुरमानी।। १६।।
शुन्य की शुन्य सैल ब्रह्म दरिया, वेदी बे अंत अथाहा है।
जहां अविगत दुलह कबीर कला,कहै दास गरीब जुलाहा है।। २०।। २१।।
कोली कर्तार बुने तांना, तीन्यौं भये राछ रछींड़ा है।
शिव ब्रह्मा विष्णु विश्वंभर से, तिन के सिर पर एक बीड़ा है।। १।।
सब उलझि रहे सुलझे नाहीं, बुनते तनते जुग बीत गये।
प्रलय बीती प्रभाति भये, चोटी कट तीन्यू पकड़ि गहे।। २।।
नौ पांच पच्चीस लगे डोरे, जहां प्रेम की पान लगाई है।
फिर रिध्दि रसायन जुरी तुरिया, मुलमुल खासा बुनि भाई है।। ३।।
जहां अंध अधोगति चालत है, टूटे सब तार कहां कीजे।
नलकी नहीं नेह लगै लगनी, तांने वाला कहौ क्या रीझे।। ४।।
नाभि खूंटा त्रिकुटी बूटा, इला पिंगुला नली भराई है।
सुरति कर सूत पलटि श्वासा, कोली कूँ इब विधि पाई है।। ५।।
मुलमुल खासा बुनि महमूंदी, सोहं सोहं करि सार झरे।
तुरिया पर पुरिया प्रवाना, सो अनंत लोक की व्याधि हरे।। ६।।
हरि हीरा हेत लगै भाई, चित चांचरियों मध्य चंपा है।

खाडी घट मांही अरध उरधं, दम का कर खोज अनंपा है।। ७।।
अब हेत हजारे स्यूं लाग्या, जगदीश उनासे बैठा है।
डरता कोली बुनि निश वासर, खाडी में जुलहा पैठा है।। ८।।
एक धोबिया पट्टन घाट रहै, बिन साजी साबुन धोवत है।
कहै दास गरीब जुलहदी कूँ,
तांना सतगुरु घर सोहत है।। ९।। २२।।
झलकै निज पूर जहूर सदा, निरभै निरधार अपार कला।
कादर कुरबांन अमांन सही, रहता रमता है अलख अलाह।। १।।
सरबंग अभंग अनाहद है, जल थल पूरन है सुंनि सिला।
दरवेवस दयाल निहाल करै, करनी भरनी डूबे न जला।। २।।
घट देह संनेह नहीं जाके, श्रवण चिशमें नहीं कण्ठ गला।
कुछि रूप न रंग अभंग विद्या, सोवे जागे बैठ्या न खला।। ३।।
करि ले दीदार जुहार सही, तेरा जुगन जुगन होय जात भला।
कहै दास गरीब अलख लखिये,
कोई दरगह में पकरे न पला।। ४।। २३।।
निरबांन निरंजन चीन्हि भईया, दुःख दालिद्र मोक्ष करै करता।
गर्भवास मिटै निज नाम रटो, क्यौं जुगन जुगन चोले धरता।। १।।
चल थीर करो अविगत नगरी, तूं लख चौरासी क्यूं फिरता।
सत संगति ले निज साधुन की,
नहीं नाम बिना कारज सरता।। २।।
दयावंत विवेक भये ज्ञानी, टुक छेर कर्‍यो से सब लरता।
चुण्डित मुण्डित सब पकरि लिये,
इन से जम किंकर ना डरता।। ३।।
तूं कौन कहां से आंनि फंध्या, देखो आगि बिरानी क्यूं जरता।
समझे नहीं सोख शूद्र गहले,
बड़े भूत भये जोय पिण्ड भरता।। ४।।
मुक्ता होने का भेद कहूँ, चल चौंर सुहंगम जित ढुरता।
कहै दास गरीब निवास सदा,
जहां नाद अखंड अजब घुरता।। ५।। २४।।
झलकै जोती मुक्ता मोती, निरभै निरबांनी भेट्या है।
त्रिकुटी तांना भरि नाम नली, एकै लखि पूरन पेटा है।। १।।
एक बिंद पिछांनि जिहांन रच्या, कोई बाप कहै कोई बेटा है।
कहीं पीतसरे का पात लग्या, कोई सुसर भया समधेटा है।। २।।
जदि काल महाबली पकरि लीया, मरघट में आय करि लेट्या है।
साऊ सब ही खपर फोरैं, सिर फोरि दिया पुत जेठा है।। ३।।

गति बूझत हैं जदि फूकि दिया, खग खोज नहीं सब मेट्या है।
कहै दास गरीब उपाधि लगी, सब भूत भये जग हेठा है।। ४।। २५।।
मघ पूछत हैं प्रतीति नहीं, बादी प्राधी झगरा ठानत है।
मुकता रुकता नहीं राह लहैं, नहीं साधु असाधु कूँ जानत हैं।। १।।
देवल जांही महजदि मांही, साहिब का सिरज्या भांनत है।
पण्डित काजी डोबी बाजी, नहीं नीर खीर कूँ छांनत हैं।। २।।
चेतन का गल काटत हैं, धरि पत्थर पांहन मांनत हैं।
कहैं दास गरीब निराश चले, धिक्कार जनम नर लानत है।। ३।। २६।।
दुःख दुंद उपाधि में जीव बंधे, समरथ की नहीं उपासा है।
नेमी धरमी धरम धामि फिरैं, करे साधु संगति कूँ हांसा हैं।। १।।
बघनी ठगनी कूँ लूटि लिये, चीन्हा नहीं निर्गुण रासा है।
जल अरघ दिया जम आंनि लिया, न्हाते जल बारह मासा हैं।। २।।
सूझै नहीं सिंध अबंध विद्या, पाती तोरै नर घासा है।
जम मारत है मुगदर मोटे, चिशम्यौं में देत धमांसा है।। ३।।
चंचल चोर कठोर कुटल, क्या पहरत मुलमुल खासा है।
जम नगन करै साहिब की सौं, देगा तुझे बौहत तिरासा है।। ४।।
दिल खोजि भईया निज नाम जपो, सत पूरन ब्रह्म खुलासा है।
कहै दास गरीब पत्थर पटको, तुम डारो त्रिगुण पासा है।। ५।। २७।।
भंगी रंगी भडुवे भांडी, सर कर हुक्का दम तोड़त हैं।
ककड़ फकड़ घर फूकि दिया, मुरगी अंडे कूँ फोड़त हैं।। १।।
बकरी कुकड़ी सब खाय गये, दीदार भिसत का लोड़त है।
गूदा भखि बंगी बंग दई, साहिब दर चिशमां जोड़त है।। २।।
काढ़े हैं खाल उलटि काजी, गूदा तलि बहुत सफोड़त हैं।
सींक भरै सुख मानि लिया, चपनी हंडिया कूँ रोड़त हैं।। ३।।
काजी कलधूत लख्या नांही, कहां खाल खलील निचोड़त हैं।
कहे दास गरीब दरद नांही, बकरे झोटे सिर तोड़त हैं।। ४।। २८।।
भंगी भरुवे नहीं भय मांनै, बीतैगी आंनि सही सिर पर।
ककड़ है काल बिहाल करै, क्या फिरता चिलम लिये कर पर।। १।।
बंकी पगरी मुख पान चबै, टूटैगी छानि पड़ै धड़ पर।
पोसत प्रभाति पिसावत है, टुक फीम लई अमली अड़ पर।। २।।
घरक्यां कूँ खुरकावत है, कोई आवत ना अमली भड़ पर।
कहै दास गरीब बिटंब मुवा, जम आक दिया अमली जड़ पर।। ३।। २९।।
जुलमी जुलमांना छांडि भईया, गल काटत हे बदला लीजै।
खिचड़ी खांना तजि हिलवांना, सुरा पान प्राधी क्यूं पीजै।। १।।
रहै कोटि बरष संगति साधौं की, जल में पांहन का क्या भीजै।

चंदन बन में रंग लावत हैं, एक बांस बिटंबी ना सीझै।। २।।
बहरे आगै पद छंद कह्या, समझे नहीं मूढ कहाँ रीझै।
कहै दास गरीब कुटिल काजी,
चलि जुबाब सरे में क्या दीजै।। ३।। ३०।।
पापी प्रभाति नहीं भेटे, मुख देखत पाप लगै जाका।
जननी नौ मास त्रास दई, धिक्कार जन्म तिस की माँ का।। १।।
चौरासी कुण्ड परे पापी, है जुगन कुंभी नांका।
गर्भ छेदन भेदन पीर लगै, मिटता नांही इच्छा टांका।। २।।
जिस सेरी साधू संत गये, औह मारग कठिन बौहत बांका।
कहै दास गरीब ध्रू बूझि भईया,
भया तीनि लोक साबति साका।। ३।।३१।।
मानो सत स्वाल सीख, चलता है बिना बीक, नैंन का झरोखा।
जैसे जल बिंब बीन,
सरवर में चलता मीन रुकता नहीं रोक्या।। १।।
छूटत है गंग धार,
कोटि पदम रूंम लार, सुंन में समाधिं देख्या निज भगल खेल,
सुरति निरति अगम पेलि, बरत बांधि बादी।। २।।
बाजत है ज्ञान ढोल, गायन गावैं अमोल, चरणन बिन नांचै।
भगली है भगली भेद,
देख्या हम कमल छेदि, बर्तन बिन सांचै।। ३।।
रसनां बिन अजब ख्याल, नांचत है बरत बाल, नैंनन बिन देख्या।
जरदम विशाल रूप, निर्गुण निश्चल अनूप, रूप नहीं रेखा।। ४।।
अगमी है अगम रास, काया दम नहीं श्वास, नगरी बिन बसती।
गुल बिन उजियारा ऐंन,
बोलत है अजब बैंन, मन पवन गसती।। ५।।
बाजत है गगन तूर, झिलके सिर मुकट नूर, गैबी गलताना।
अनहद अनराग मूल, सुरति निरति अगम झूल, शुन्य में समाना।। ६।।
अविचल अनराग लाप, देवन बिन देव थाप, गगन मंडल रहना।
कहता है **गरीबदास**, निश्चल निर्बान बास, भेद नहीं कहना।। ७।। ३२।।

अथ रेखते

दिल दरियाव की खबर कैसे पटै, कौन पैर्‌या कीन्हे पार पाया।
सिद्ध और साधु सब जगत ही खोजता, अगम में सोधिसी मंझि काया।। १।।
झिलमिली जोति जहां अविगता आप है,
सोई निज नूर मंझौं गंवाया।

रटो हौ धुंध क्यूं फूलवारी लगे,
कहो किन्हि खात में बोइ कर आंब खाया।। २।।
खीर और नीर का भेद जान्या नहीं, वेद कुरांन मारग भुलाया।
ब्रह्म ही ज्ञान और ब्रह्म ही तत बिन,
खोज देखो नहीं पार पाया।। ३।।
पांच कूँ मार पचीस स्यूं राडि कर, धारि कर ध्यान कूँ मारि पीता।
असंभ बरिषा लगै गरज गहरी झरै,
भरेगा ताल नहीं होई रीता।। ४।।
चढ़ैगी पवन ब्रह्मण्ड की सैल कूँ, श्रवणौं सुनें अनहद गीता।
झरैगी गंग तब सुरति ना भंग होई,
सिद्ध और साधु का यौही मता।। ५।।
सिद्ध और साधु सब जगत ही जात है,
कहो किन किया है कँवल सुधा।
जहां बाजती झांझ मृदंगब नित आरती,
घुरें हैं नाद असंभ फुंभा।। ६।।
काम और क्रोध की गसत घट में फिरै,
मन पारधी फिरै डाहै पलीता।
लोभ लंकार तो खात हैं रैंन दिन,
मृग की घात जैसे लाई चीता।। ७।।
जहां सते सत बोलना झूठ का काम क्या,
झूठ का बांन नहीं पिंड लावे।
जगत सब झूठ में मूढ़ नहीं खोजता,
कहो कैसे दारू की शीशी में गंग आवै।। ८।।
तपै लिलाठ और घाट सब ही लखै, ब्रह्मण्ड में तूर अनहद बजावै।
झिलमिली जोति में जोति जाय मिलेगी,
प्रेम के ताल मे उठि न्हावै।। ६।।
कँवल सूधा भवै अमी बरिषा लगै, नागनी कल्प कर कुसटि जावै।
ब्रह्म सूता जगै हंस मोती चुगै,
तब दुनी बकवादि कूँ कौन गावै।। १०।।
मन कूँ मारि ले तत तरवारि ले, शील संतोष का बांधि चीरा।
क्षमा के छालनें जगत पिछांनि ले,
सो छांनि कर पीवैगा अमी खीरा।। ११।।
दुन्द और बाद से दूर बेड़ा करो, तत्व निज नाम से होय सीरा।
अमी प्याले पीवैं नूर देखें जीवैं,
जामन और मरन की मिटै पीरा।। १२।।

गहो ने मौंन और चलन दे पौंन कूँ, देख संसार मति ही पुकारै।
पूरना बिसवें बीस में सूझता, पूरतो रह्या हे पुरुष सारै।। १३।।
मेर कुमेर गज गैंवरां चीटियां, सबे सत खड़े आधार थारे।
जप तप साधना बरत लो आदि दे,
सबै आरंभ जिन नाम लारे।। १४।।
जो कथें हैं ज्ञान और म्यान जाने नहीं, काढ़ि कर खड्ग कहां समावै। डाल और मूल से सोई नर जांहिगे, जो कथें है ज्ञान नही राह पावै।। १५।।
केते मान मारे फिरे, ध्यान घट में धरे,
कहो किन्हि लख्या अलखी भंडारा।
भक्ति और मुक्ति की बात सोई कहै,
अगम और निगम खेलै अधारा।। १६।।
लाल कूँ पाईले ख्याल कूँ गाईले, चाबि निज सार रचि हीद बीड़ा।
दास गरीब प्रतीत तहतीक है,
बिना प्राण खोजे सब जगत कीड़ा।। १७।। १।।
कोई हे ऐसा दरवेश महली, इस महल के मंझ की खबर ल्यावै।
जबरूत नासूत मलकूत लाहूत पर,
सुन्य सत्य लोक कूँ बेगि ध्यावै।। १।।
अकल फहमीद जो हिरस चाले नहीं, नेक चिशमें निराकार जोरे।
मारि जहूद जिंद जेर शमशेर कर, पीड़ ताजी चढ़े ज्ञान घोरे।। २।।
नफस निहगंध निसतूक निश्चल करै,
काम और क्रोध कूँ कर्द कर्दं।
लोभ के फैंन पर ज्ञान गोला दगे,
जानि दरवेश याह शिकल मरदं।। ३।।
औजूद मौजूद मुस्ताक मस्ती रहै, झिलमिला कार अपार झांई।
जगमगें नूर जहां तूर बाजैं सदा,
अगम पुर धाम कोई संत जांही।। ४।।
सुरति और निरति मन पवन चंपा करै,
शब्द के सिंधु में गोत खावै। दास गरीब दरवेश सो जानिये,
उलट करि नाद नहीं बिन्दू आवै।। ५।। २।।
निरदुन्द निरबंध जो नेश निहकाम है, शब्द अतीत का महल पाया।
राज और पाट सब धुन्ध की पीठ है,
अगम पुर धाम सतगुरु लखाया।। १।।
चाम के महल में बोलता ब्रह्म है, आप कादिर निराकार गावै।
शब्द साखी कहैं भेद भेदी लहैं, बे मुखी नहीं दरबार जावैं।। २।।

मगज पटीट पट खूल्हते हैं नहीं, अगम पुर सलहला धाम है रे।
मेर में मरि गये महल पाया नहीं, नेस नामूद का काम है रे।। ३।।
कुटी कलधूत जो चौपटे रहत हैं, नगर के बीच फिर नाद पूरं।
मन की भावना नर्क निश्चय पड़ै,
नीच घर होहिंगे श्वान सूरं।। ४।।
चुंडता मुंडता भेद भेद्या नहीं, स्वांग बिभिचार सेवा लगाई।
बुगल का ध्यान धरि उनमुनी ताड़ियां,
मूसटे खांहि घट में बिलाई।। ५।।
फकीर तो सोई मुख फाल गैरत नहीं,
बिरह बिन अंग बैराग कैसा। गुरज गोल्यों भिडैं आनि धामौं पड़ै,
कलजुगी डिंभ का मोल पैसा।। ६।।
भेद भेद्या नहीं कँवल छेद्या नहीं, बैठते ध्यान जो गुफा धारी।
कौन गुरु ज्ञान जो ब्याज बट्टा करैं,
बेच कर चून जो ब्रह्मचारी।। ७।।
मुग्ध मरदूद औजूद चीन्हे नहीं, पत्थर कूपान क्यों तोरता है।
दास गरीब पद पाक मेला नहीं,
भेष धरि ठीकरी जोड़ता है।। ८।। ३।।
सकल सरबंग बौह रंग निज ब्रह्म है, शब्द अतीत निरबान बैंना।
त्रिकुटी महल में रोशनी राशि है,
देख दिल मगज मध्य उलटि नैंना।। १।।
नीर के मध्य आकार है बुद बुदा, भया आकार तब नाम दूजा।
सिन्धु के बीच में उपति और खपत है,
भेद भेद्या जिसे शब्द सूझा।। २।।
चम दृष्टि दिव्य दृष्टि ब्रह्म दृष्टि में ब्रह्म है,
शब्द समाध अगाध राते। दुई कूँ मेटि रे दूसरा कौन है,
भ्रम झांई जीव काल खाते।। ३।।
ब्रह्म बैराट का अंग अनराग है, नैंन के नाद में देखता है।
स्याह सपेद मध्य तिली बिच नूर है,
महल के मिलन का रेखता है।। ४।।
कुलफ कपाट सिन्ध घाट खूल्हे बिना, झिलकता है नहीं पदम हंसा।
पांच बाई गिरह नाद में नींद है,
काल गिरासै नहीं मेटि संसा।। ५।।
भेद रिंचक लह्या भ्रम सुमेर है, कँवल कसीस कैलाश बासी।
महल महबूब के जाय हंसा मिले,
बौहरि न परैंगे काल फांसी।। ६।।

गगनि के बीच में दामनी खेल है, मेघ मलार चमकार चमकै।
गरजता शब्द है सिंध में मिल रहै,
खलक खाली नहीं लाल सब कै।। ७।।
निरधनी को नहीं कीर समझे नहीं, अपना आप नहीं भेद बूझ्या।
अकल मतिहीन माला सही फेरते,
नीर पाषान जड़ जाय पूज्या।। ८।।
हद बेहद बैराट में कहां है, शब्द पद सेहरा सेज पाई।
दुरमती दीन बेदीन सो जानिये शब्द कूँ छाड़ जड़ पूज लाई।। ९।।
अर्श आसन करैं ध्यान सुंन में धरैं, सुरति के बरत पर नांच नांचैं।
खेल कलधूत अनभूत बैराट में,
मंझि मैदान जहां निरति काछैं।। १०।।
तिहर नट खेल मन पेल पारिंग करै,
शक्ति और मुक्ति नहीं मुख बांचै।
कमना छाडि निहकाम साधू रहै, संत समागमा भक्ति जांचै।। ११।।
पांच तत्व तीन गुण फूटि अटका गया,
प्राण पक्षी कहां लिया वासा।
तन काछते भेष मन महल पाया नहीं,
स्वर्ग पाताल मृत्यु लोक आशा।। १२।।
दीप की जोति कहो कहां बुझि बिस्तरी,
बिस्तरी घोर कहां फूट कांशा।
घटा आकार बादल भये गगन में,
भये जब लीन कित लिया वासा।। १३।।
फाट कर दूध कांजी भया रतन रस, घीव माखन कहो कहां जाई।
काष्ट कूँ आगि दे छार छिन में करै,
गगन गैंनार धूमां समाई।। १४।।
बिन्द से नाद रखि भेद सबही खूल्हैं, हंस मन हेर सोहं जगाया।
तत कूँ छाडि नेहतत कूँ चीन्ह ले,
नाद कर थीर शब्दे समाया।। १५।।
मुरजीव मुक्ता लहै रत्न मोती नघै, सिन्धु में पैठकर देह त्यागै।
दास गरीब वे साधु बिरले लखै,
छाड आकार कूँ शब्द लागै।। १६।। ४।।
एक उरध मुख कूप जहां गंग बौह धार हैं,
भेद भेदे नहीं जगत गहलं।
पंख पपील के पांव टिकते नहीं,
करत हैं संत जिस धाम सैलं।। १।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

गंग और जमन मध्य सरस्वती संग है, मेर कुमेर कूँ छेद आनी।
अगम द्वीप आकाश कैलास बासी भये,
भेद भेदे कोई ब्रह्म ज्ञानी।। २।।
अठसठ्यौं तीरथों नदी घनघोर हैं, सिंध सरोवर पराधाम कहिये।
जहां ब्रह्मा और विष्णु नारद मुनी न्हात हैं,
शेष गणेश महेश पईये।। ३।।
झिलमिलें पदम जहां नूर प्रकाश हैं, नैंन नादू भरे ब्रह्म जोती।
इन्द्र दवन महोदधां मंझि ही देखले,
सीप सायर जहां होहिं मोती।। ४।।
यौह गुरुमुखी ज्ञान बाजार व्यवहार है,
सतगुरां बिना नहीं सिंध मेला।
दास गरीब पद पुष्प गंध झींन है,
शब्द अतीत अविगत अकेला।। ५।। ५।।
धुंध रे धुंध सब फंद फोकट रचा, धरनी आकाश कैलाश जासी।
चंद और सूर पानी पवन जाहिंगे,
नाद और बिंद कूँ काल गिरासी।। १।।
खंड और पिंड ब्रह्मण्ड प्रलय भवैं, चलैंगे भिसति वैकुण्ड तांई।
कच्छ और मच्छ कूरंभ धौल चलेंगे,
समझि कर देख याह झूठ झांई।। २।।
कौंम छतीस याह रीत सब जाहिंगे, दृष्टि देख्या सो धुंध धोखा।
पांच तत्व तीन गुन बुरद बाजी सबे,
समझि भूले जगत मूढ लोका।। ३।।
तूर तन तबक बाजे सबे जाहिंगे, चलें चक्रवर्ती सबे तुरक हिन्दू।
दहूँ दीन षट् दर्शनी खरच में मिलेंगे,
समझते हैं नहीं भेद भौंदू।। ४।।
सुरग पताल मिरत लोक बी चलेंगे, सकल ज्ञानी गुणी वेद जाते।
नीर पाषान चहूँ खानि खारिज भये,
मूढ प्राणी कहो कहां राते।। ५।।
शेष महेश गेणश सब जाहिंगे, ब्रह्मा और विष्णु नारद चलंता।
रूंमी ऋषि चलें जिन पार पाया नहीं,
भेद भेदा नहीं आदि अंता।। ६।।
नौ अवतार विस्तार कर विस्तरे, दशमा बी चलेगा बांधि दावा।
सुरनरा संत कोई अंत पावैं नहीं, इंछ रूपी सबै खेल जावा।। ७।।
मूल आकार पैसार सबे जायेंगे, जाहिंगे चार जुग धूंध होना।
अचल पद पेखि गुण रेख लागै नहीं,

हदि हिंदोल सब झूठ गौंना।। ८।।
मिल्या गुरु महरमी मजलि मालिक सही,
महल सिंझूत जिन भेद दीन्हा।
शब्द अतीत शुन्य मंडली रहत है,
दास गरीब पद अभय चीन्हा।। ६।। ६।।
अजब महरम मिल्या ज्ञान अग है खुल्हा,
परख प्रतीति से दुंद भाग्या।
शब्द के सिंध में फंधि मनवा गया,
बिरह घनघोर से हंस जाग्या।। १।।
अष्ट दल कँवल मध्य जाप अजपा चले,
मूल कूँ बंधि बैराट छ्याया।
त्रिकुटी तीर बहु नीर नदियां बहैं,
सिंध सरवर भरे हंस न्हाया।। २।।
खेचरी भूचरी चांचरी उनमनी, अकल अगोचरी नाद हेरा।
सुंनि सतलोक कूँ गवन हंसा किया,
अगम पुर धाम महबूब मेरा।। ३।।
अक्षर धाम की डोरि घन घोर में मिलि गई,
भेद भेदा मक्रतार महली।
दास गरीब यौह विषम बैराग है,
समझि देखो नहीं बात सहली।। ४।। ७।।
बिरह की पीर जिस गात गूदा नहीं, बीझि पींजर गया अस्त सूक्या।
उनमनी रेख धुनि ध्यान निहचल भया,
पांच जहूद तन ठोकि फूक्या।। १।।
लगेगी भाहि तिब धाहि देता फिरे, बिरह के अंग में रोवता है।
पलक आंझू झिरैं ध्यान बिरहनि धरैं,
प्रेम रस रीति तन धोवता है।। २।।
हाड तन चाम गुदा अस्थि गलत है, उड़ेगा गात तन रूई रंगा।
पिण्ड तन पीत उदीत बैराग है, देत है मध्य जो कूक बंगा।। ३।।
हंस परमहंस सरबंग सेझां मिल्या, बिरह बियोग यौह योग योगी।
दास गरीब जहां पाख प्याले फिरै,
पीवते सही रस भोग भोगी।। ४।। ८।।
दीद बरदीद प्रतीति प्रत्यक्ष है, नैंन के नाद में गरक होई।
अजब गलतान कुरबान एक तत्व है,
शब्द अतीत कूँ परखि लोई।। १।।
जैसे पानी के बीच में बुद बुदा होत हैं,

फिर पानी के बीच पानी समाया।
ऐसे ब्रह्म दरियाव बिच बुदबुदा ख्याल है,
किसी पारखी संत की दृष्टि आया।। २।।
शब्द टकसाल की लहरि छांनी नहीं,
जैसे दीप दरवंत भोडल धरीता।
संत सूभर भरे तत मस्तक धरे,
हदि का जीव सब सकल रीता।। ३।।
जैसे तिल में तेल है काष्ट में अगनि है,
दूध में घृत मथि काढि लीया।
सोई नर साध अगाध निहचल भये,
नूर प्याला जिन्हौं जांनि पीया।। ४।।
नाभि के कँवल पर बुरद बाजी रची,
सुरति और निरति का नहीं मेला।
मेरडंड मैदान पर सन्मुख करैं,
सो जानता होय नट भगल खेला।। ५।।
बंक बाजीगरी विषय सा खेल है, नूर प्याले पीवै पैठ सेझै।
लाख बांनी पढ़े ध्यान शून्य में धरै, महल का महरमी भेद भेदै।।
६।।
अज गैब का कोट है चोट लागै नहीं, शब्द अतीत में नेश होई।
दास गरीब गुरु भेद से पाईये, अगमपुर धाम की बाट जोई।। ७।।
८।। घट घट में नाद उचार बांनी, मींही महल में मारफति गावता है। ताल मृदंग जहां संख सुर पूरिये, बिना मुख नाद बजावता है।। १।। तूर तुतकार धूमार तिस महल में, अजब गुलजार एक नूर चंपा। कोकला बैंन सुख चैंन सुनते भये, बिंध्या है हंस ले बिरह कंपा।। २।। आदि अन अंति एक मध्य मेला भऱ्या, शिखरि की शून्य में जिकर लागी। केतगी कमल जहां अजब बारी बनी, भँवर गुंजार निहतंत रागी।। ३।। दुलहनी दंग दुलहा भई देख कर, संख रवि झिलमिलैं नूर जोती। अजब दरियाव जहां कोटि बेड़े पड़े, चुगत हैं हंस बिन चुंच मोती।। ४।। जहां गुमट अनूप एक सेत छत्र बन्या, गगनि गुलजार जहां नूर गादी। दास गरीब दिल दूसरा दूर कर, शब्द अतीत शुन्य में समाधी।। ५।। १०।। शब्द साखी कहैं रहनी में ना रहैं, काछ के लपट हैं कीर कूते। धर्म के धाम की मार मासूर है, मगज में पडेंगे बौहत जूते।। १।। शब्द और साखी पढ़ि पंडिता बौह पिटे, धर्म के धाम खाया अड़ेका। गुरों के ज्ञान बिन महल पाया नहीं, अगमपुर धाम नहीं तुम्हों देख्या।। २।। दाम

गिनती सही गांठि खरची नहीं, फकत की कौन कहो करै हूंडी। शब्द और साखी पढ़ि कौन पारिंग हुआ, बंदगी बिना सब बात भूंडी।। ३।। मौंन मौंनी रहै अगनि में तन दहे, बैठ झिरनें जलांबिंब न्हावैं। बंदगी बिना सब रिंदगी ध्यान है, जम के जाल में फंध खावें।। ४।। उरध मुख छार तन खाख चोला रंगे, सुचती ध्यान लावें आकाशी। योग प्राणायाम् से काम सुधरे नहीं, परे हैं फंध बिरकत उदासी।। ५।। दिलौं के फोकटी बात नीकी कहें, चौपड़े चित्त चंगेरि चाली। सीख साखी लई अर्थ बूझ्या नहीं, जाई करि पड़ैंगे जम जाली।। ६।। सप्त दीप नौ खंड ब्रह्मण्ड तिहूँ लोक में, धजा निशान कबीर गाडे। नूर के महल में रोशनी रंग हैं, गुरौं के भेद बिन अंक आडे।। ७।। पीर कबीर दहूँ दीन दरवेश है, अलह अलहा अबिगत है सोई। आदि और अंत मध्य सत्य कबीर है, तखत खवास हजूर सोई।। ८।। जिंद सब जगत है सृष्टि अहडे गई, नहीं अकीन है शब्द का रे। दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, भक्ति के भाव पारिंग उतारे।। ६।। ११।। बे अकल बे रूह वेदनि जाने नहीं, साधु के महल की बात बूझे। घोर मसान मसजिद मढ़ी जाई कर, मौंन पत्थर सही पिरति पूजे।। १।। बोलता ब्रह्म बेगम पुरा पेखिले, शब्द झंनकार अपार गाजे। देख महबूब खुधि खूब खालिक सही, पत्थर कूँ पूजते विरद लाजे।। २।। शील संतोष विवेक बगतर परे, ज्ञान हथियार गुलजार गुरजां। पकर खाखी लिया राज नूरी दीया, काम और क्रोध की ढाहि बुरजां।। ३।। पीवते दूध दिल दाग मेटे नहीं, त्यागि नगरी बन खंड ध्यावैं। बंदगी बिना क्या बरत बैराग है, अन्न कूँ छाडि फल फूल खावैं।। ४।। हिरसि के दाग दिल मंझि हिवांन हैं, पांच नारी नटी नांचती हैं। पूत पचीस घट मध्य है जोगिया, सांग बिभचारनी काछती हैं।। ५।। ताल तीरथ फिरे पर्वतों ढूंढते, उरध मुख पींघ क्या लटकता है। गुरौं के ज्ञान बिन महल पाया नहीं, कर्म के अंक से भटकता है।। ६।। चित्त चेतन चिता धरम का देहरा, सोई दरवेश दिल दया है रे। मिहर की नजर मसताक मन में रहै, महल का भेद जिन्हि लह्या है रे।। ७।। कलजुगी भेष अलेख चीन्हैं नहीं, सत के शब्द पर रेख लावैं दास गरीब के निंदता बैल है, मैल कूँ काट गूंनी लदावे।। ८।। १२।। सकल सौजूद औजूद में अरस है, अरस के कुरस पर खैर खूबी। पाष की नजरि मसताक चिशमें सही, बिरहनी जोहती पंथ ऊभी।। १।। ना पाख तो सोई जो पाख चीन्हें नहीं, बंदगी बिना सब गंध गहलं। अलह के तखत का येलची मिल्या है, मिहर गुरु भेद लखि

अरसि महलं।। २।। गैब गुलजार चमकार चंपा खिला, नैंन में नेस है पलक पंखी। शिखर की शुन्य में सेहरा जगमगे, खोल्हि कपाट चढ़ि बाट बंकी।। ३।। वेद कुरांन जिहांन जानें नहीं, मृग कस्तूर नहीं अरथ खूल्ह्या। मच्छ दरियाव में पड्या प्यासा मरै, बहज मुख भेष यौं भेद भूल्या।। ४।। स्वाद विवाद विषमाद सबै भेष है, भेष तो नहीं याह भाखसी है। भोडली अंग जो रंग ऊपर दिखे, मधि के बीच कुछ लाखसी है।। ५।। ज्ञान में पग धरे सती सेवक करे, मोहनी रूप धर जगत लूट्या। मालपूड़े मींहीं मैंद पकवांन पर, कांइषी कीर नर बौहत टूट्या।। ६।। स्वाद विवाद जो तुम्हों त्यांग्या नहीं, पांच इन्द्री भये भूत भैंरों। दास गरीब पद पाष मेला नहीं, जाई जम जाल पड़े विषै लहर्यौं।। ७।। १३।। महमंत दरियाव फिरंग का खेल है, फेर फिरंग नहीं तुम्हों जान्या। भरी जिहाज और साज ना लगी है, लुटेगा माल अनगिन खजाना।। १।। चलेगा हंस तब बंस कित रहेगा, नाम आधार से पलटि जांमा। जिन्हि पांनी की बूंद से पिंड पैदा किया, सो तो जीवते ही नहीं तुम्हों जान्या।। २।। भरैं हैं पिंड सब दण्ड दरगाह के, प्राण तो पुरुष के पिंड नांही। पाष का पूतला पाष पारिंग हुवा, खाख का पूतला खाख मांही।। ३।। जो जीवते ही नहीं संग करता, तो क्या मूये से संग करात है रे। जो जीवतें ही नहीं अन्न भषता, तो क्या मूयें से अन्न भषात है रे।। ४।। वेद कूँ संग ना सूझता आंन कूँ पूजता, वेद की बात खिलाप है रे। दास गरीब प्रतीति तहतीक है, आप अपलोक में आप है रे।। ५।। १४।। मेटि दिल दाग इस दुई से दूर हो, चीन्हि अनराग निहतंत वाणी। आकार कूँ पूज आकार आरंभ कर, भ्रम धोखे पड़े जीव प्रानी।। १।। अकल हनौज औह खोज पावैं नहीं, दूर है देश वाह बंक बाटी। दत्त कबीर जहां गोरखी गंग है, नूर प्याले फिरे अरस भाठी।। २।। दरियाव का नीर सालिग शिला धोवते, कहैं चरणौदिका ब्रह्मचारी। तुलसी का पांन जिहांन सब खात है, बौहरि क्यूं पंडिता जूंनि धारी।। ३।। शिला पाषान जिहांन सब जात है, ताल तीरथ चलें नदी नीरा। ब्रह्म चेतन चिता जड़ कूँ पूजते, मिल्या गुरु पीर नहीं असलि मीरां।। ४।। सुंन सतलोक चहुँ मुकित चंपी करें, गगन गुलजार जहां नूर गादी। शब्द अतीत कुछि भगल विधि खेल है, दास गरीब नट कला साधी।। ५।। १५।। जमौं के जाल में बह्या जग जात है, बांचते बैठ पोथी पुरांना। नौ अवतार तो साहिब का नूर है, अजब सतलोक तो नहीं जान्या।। १।। मिले सराफ कोई संत जन जौहरी, महल का महरमी भेद भेदे। मनी कूँ

पीस कर बिरह तन फूकता, खुदी गुमान कूँ दूर खेदे।। २।। उलटि कर सुरति चढ़ जाइ सतलोक कूँ, आवा और गवन मिट जाय झांई। बिना कर ताल अज गैब बाजे घुरे, उहां की खबर किन्हि संत पाई।। ३।। मंडे रन मांही कोई शूर जननी जन्या, खेलते खेल बिन बांस बरता। जन दास गरीब सतगुरु सनमुख मिले, अरस अवाज दई आप करता।। ४।। १६।। जांन रे जांन पिछांनि पद पेख ले, समझि ले सैंन जहां बीन बाजें। तूर डफ झांझ मुरली महल झीन है, शंख नादू जहां अनहद छाजे।। १।। रैंन दिन रास बिलास प्रकाश है, अजब बेगम पुरा धाम पाया। मूल अन फूल फल वृक्ष साखा नहीं, बेली बिन कंद एक अरस छाया।। २।। पीवते नीर गुन खीर जान्या नहीं, सिंधु कूँ छाडि कर डोब खोदी। पूजते पत्थर परलोक पेख्या नहीं, छाडि नर मूढ याह बात बोदी।। ३।। थावरां जंगमां सकल में एक हैं, पूजते हैं नरां जड़ जूंनी। कालचंडी तुझे चौपटे मारसी, ले चाल्या बैल ज्यूं लाद गूंनी।। ४।। बोलता ब्रह्म सुख धाम सेया नहीं, आप में आप बिसार दीन्हा। दास गरीब मति चोर हर ले गये, जगत की अकल मति भई खीना।। ५।। १७।। चीन्हि पद पेख आकीन करि बावरे, छाडि दे ब्रिध वैकुण्ठ आशा। थोथरी मुकित ले चौपटे मर गये, ले गये दूत जम काल गिरासा।। १।। मुक्ति मुक्ता कहै दोजखी कौन है, भिश्त वैकुण्ठ सब जीव जांही। सुरग पताल मिरत लोक फेरा पर्‌या, जीव जूंनी हिते काल खांही।। २।। सुपन की मुक्ति सब लोक भिसती भये, काल का जाल जग जीव हेरा। लाख परलौ सवा लाख उपगार है, हर हटी डोरी ज्यूं कूप फेरा।। ३।। नीर पाषान चहूँ खानि का खेल है, च्यार खानी सेती रहै रहता। अंडरजा जेरजा उदबुदा सेत है, शब्द अतीत नहीं नाद बहता।। ४।। फोकटी पाठ क्यूं पढ़त हो पंडिता, छाडि आरंभ याह डिंभ पूजा। चरण चंपी करै मुकट सिर पर धरै, महल भेद्या जिन्हों शब्द सूझ्या।। ५।। शब्द अतीत निरबान निरलोभ है, गैब गैबी नहीं दृष्टि आवै। कहै दास गरीब औह अगम पुर अरस है, रहे शुन्य मांहि प्रगट चितावै।। ६।। १८।। कंनी कंचन हीरे लाल बरषत हैं, झिलमिलें पुंज प्रकाश नैंनां। क्रोडी धजी कोटि जो लखपति को गिने, मेर कुमेर लग साह होनां।। १।। संख लग द्रव्य है गिटी संचन करें, जगत ब्यौहार कर ब्जाय बट्टा। परम पूंजी बिना टूट धन जाइगा, झूठ संसार सब हाट पट्टा।। २।। सोई बड़ भागिया साधु सेवन करे, संत मिजमांन जिस द्वार आवे। तिहूँ लोक के जीव जिस चरण गह ऊधरे, धर्म राय की बंधि छिन

मे छुटावें।। ३।। साधु साहिब नहीं दूसरा अंग है, साधु साहिब परस लीजे लाहा। आदि और अंत मध्य संत सेवन करें, दास गरीब काशी जुलाहा।। ४।। १६।। देख रे देख अलेख दरहाल है, पांच तत्व तीन गुण मध्य बोले। शब्द नहीं बूझता पत्थर कूँ पूजता, समझि नर मूढ़ क्या भ्रम डोले।। १।। दृष्टि आवै नहीं गैब गुलजार है, पूजते हैं नरा पत्थर मौनी। नीर चरनौदकां शिला धोइ पीवते, पड़े हैं जीव जग भ्रम जूंनी।। २।। पत्थर कूँ तोर ले पांन पाती धरे, अकलि मारी गई समझि तेरी। अंध ही चेलका अंध गुरुवा मिला, शिष्य स्वामी गई डूब ढेरी।। ३।। शब्द माने नहीं भेद जांने नहीं, पीवते पंडिता पत्थर धोई। चांम का गाम है बोलता राम है, समझते हैं नहीं अंध लोई।। ४।। सृष्टि की दृष्टि में मोतियाबिंद है, दरशता है नहीं नूर चंपा। दिल दरियाव में द्वारिका परस ले, मक्र कूँ त्यागि मन बीच मक्का।। ५।। नेम निवाज रोजा करे बंग दे, भ्रम भूले दहूँ दीन धाई। जहां ग्यास तीरथ बरत नहीं अचार है, अगमपुर सलहली सैल भाई।। ६।। पंडिता पाठ पढ़ि ब्रह्म खोज्या नहीं, पूजते घोर काजी मुलांना। पत्थर कूँ पूज दहौं दीन देवा कहैं, शब्द अतीत नहीं महल जान्या।। ७।। चढ़े चेतन तुरी गये बेगमपुरी, भ्रम भूले दहूँ दीन धोखै। मगहर के बीच में गैब जुलहा भया, अजौं नर मूढ फिर पत्थर पोखै।। ८।। वेद पुरान का ज्ञान गहनें धर्‍या, होम आचार अंगीठ लाई। पंडिता बे मुखी देव तुमरा भया, पत्थर की सौंज जुलहे बुलाई।। ९।। पंडिता पत्थर कूँ कौन पारिंग कीया, अठसठों तीरथां धाम थोथे। कच्छ और मच्छ जल जीव बौहते रहैं, समझि नर मूढ़ नहीं मुकित होते।। १०।। लवा बुटेर तीतर हितें हेरि के, खा गये भूंनि कर मुरग चिड़िया। पकड़ि हिलवांन ततबीर तिके कीये, अजो नर भिसति के भरमि पड़िया।। ११।। सूर और गऊ में एक रब्ब रूह है, एक ही चाम और एक चोला। मुसलमान तो सोई जो मांस छूहै नहीं, गूद गोसत भखें सोई गोला।। १२।। राम रहीम करीम करता कहैं, अलह अलेख तो एक है रे। खुद खुदाई तो छाय सब घटि रह्या, कौन का गला तूं छेकि है रे।। १३।। गौंस पैगंगरां कूतब कूँ पूछि ले, सवा मन अन्न फरीद खाया। उरध मुख कूप में लटकि तन चै गया, विषम घर अलह दीदार पाया।। १४।। ईद बकरीद कूँ खाजरू खात है, तीस रोजे निमां स्याम सीनां। मुरग अंड फोड़ कर सोरवा पी गये, कौन विधि कहौ हलाल कीन्हां।। १५।। हिरसि हिवान कूँ मार मैदान कर, दुई दुरमति का शीश नाखै। काम और क्रोध कू कटक पैमाल कर,

नूर प्याले पीवें प्रेम चाखैं।। १६।। शुन्य सतलोक में जाई डेरे हुए, तनी कनात तंबू अटारी। नूर के तखत पर संत लटका करें, पौंहचते हैं नहीं ब्रह्मचारी।। १७।। छोड बद फैल बद नजर नेकी सदा, लोभ और मोह से रहै न्यारा। दास गरीब दरवेश सो जांनिये, महल पौंहच्या सोई पीर म्हारा।। १८।। २०।। रिद्धि के राजई राज परलो गयै, जिन्हों वेद कतेब की सुनी वाणी। धाम और देहरे धोक दुनिया मुई, षट् दर्शनी ख्वार हुये न्हाय पानी।। १।। आंन का ध्यान धर देहरे पूजते, चंडि का पाठ मुख खूब गाई। महादेव का लिंग तिहूँ लोक में पूजिये, बोलते ब्रह्म की खबर नांहीं।। २।। वेद कतेब सब काल का मूल है, जंतरी आप बाजी उपाई। जैसे ऊनरा पकर कर चौपटे मारिये, घात मंजार बैठी बिलाई।। ३।। पूजते देहरा जड़ से नेहरा, तोर पाती धरे फूल पांना। अकलि के ऊत हैं अंदरि अंधेर हैं, पढ़े क्या होय पोथी पुरांना।। ४।। पगों चालै नहीं मुखों बोलै नहीं, बांधि गांठि लीये सरे के चोर ज्यूं कोतवाली। बाल तो भाग चेतन पुरुष खा गया, ये मुख बोलते नांही बांके बिहारी।। ५।। ज्वाला मुखी जूड़ि कर बंधि में गेरिये, जहां लाख बकरे निमां स्यांम टूटै। पीर तागीर सब फनां हो जाहिंगे, सरे के चोर कहो कहाँ छूटै।। ६।। खित्रपाल की खाल दरगाह में खैंचिये, मिलेगी भूत और दैंत सब कूँ दुगांनी। भैरों का शीश ले भाड़ में दीजिये, कटैगा नाक दुर्गा मशानी।। ७।। शेढ़ का शीश ले कुंड में दीजिये, होयगी सीतला सूत्र बे सूत्र भाई। दैंत दानैं सबै देहरे धुंध हैं, नौ कोटि दुर्गा पड़ी बंधि मांही।। ८।। येही जम दूत और भूत भैरों भये, सुरग पताल मिरत लोक लूटे। दास गरीब गुरु ज्ञान प्रवांन से, कोई नर संत इस भेद छूटे।। ९।। २१।। षट दर्शन से प्रसंन, अन प्रसंन प्रकाशा है। काया अन माया जहां, खेलत निर स्वासा है।। १।। पानी अन पौंन न, अन दौंन न अकाशा हैं सूरज अन चंदा, अन तार न प्रकाशा है।। २।। बिन कर लेखे कूँ लिखता है, रसना बिन बकता है। दाडिब बिन दाई, बिन दरगह सफाई, प्याले कूँ लखता है।। ३।। खंडा अन पिंडा जहां, लोकन पति लोका है। प्रेम का प्याला, किन्हें साधु जन झोक्या है।। ४।। शुद्र सुध ज्ञानी कूँ ब्राह्मण पढ़ाया है। जत सत के मेले कूँ, चेला उठ धाया है।। ५।। चिरताना चहडोल न, एक मोल न बिन पाया है। जत सत के मेले में, बाजीगर आया है।। ६।। झिलमिल के कूजे में, दूजा दूर भेद क्या। पिंडे ब्रह्मंडे में, एकम एक माया है।। ७।। कोई रोगी रग पावैगा, षट चक्र के ताल्यों के कूँची झड़ लावैगा। जाकी श्वासा

ससकानी जो पलटैगा वाणी, गगन के सिंघासन का आसन थर्रावैगा।। ८।। जन कहता है **गरीबदास**, जीव पीव रहैं पास। भेद किन्हीं बिरल्यों कूँ पावेगा।। ६।। २२।। अनहद के बीच में हदि जो करैगा, दीन और दुनी से कोहे कूँ डरैगा। काल के जाल से प्राण न्यारा कीया, जम के दूत की मार ना मरैगा।। १।। मन मलाह से शीर तेरा भया, पेलि धर नाव दरियाव मांही। दरियाव ही नहीं तो नीर कहां थर हरै, नीर ही नही ंतो कहां मोती।। २।। मोती ही नही ंतो हंस क्या चुगैगा, हंस ही नही ंतो बिनश काया। काया ही नही ंतो माया कहो है कहां, काया न माया तो कहौ क्या ल्याया।। ३।। मन मलाह से शीर तेरा भया, पेलि धर नाव दरियाव मांही। दरिया के बीच में हंस मोती चुगें, हंस के शीश अनमुख पांही।। ४।। अमी कूँ घूंटता प्रेम कूँ लूटता, कहो तो कौन द्वारे सेती प्रेम खाया। दांत लाग्या नहीं, जीभ चाख्या नहीं, अमी कूँ पीय कर धापि आया।। ५।। हंस कूँ बेधि कर सुंन नगरी चढ़ा, सुंन मुकाम में ब्रह्म गाजे। दसत ही बिना जहाँ झांझ अनहद घुरें, बिना मुखार बिन नाद बाजे।। ६।। सुरति स्यों सुरति कर निरति का खेल है, देखि स्यूं दृष्टि मठ बीच नागा। कला के कोट में लेट पुरुषा रह्या, दुष्ट तितारचे मार काढ़्या।। ७।। खड़ा खवास निवास सेजां बिछी, गगन मुकाम जाय रोप्या टांडा। बाजती बीन जहां तीन त्रिगुण लख्या, तार से तार मिल तार काढ़्या।। ८।। भरी जिहाज और लाज सतगुरां कूँ, लाल के माल की लखो ढेरी। एकही तत और मत का खेल है, भूलिया भेष क्या फिरे फेरी।। ६।। शब्द अतीत प्रतीति से पाईये, नूर प्याले निरालंब लोई। दास गरीब तबीब सतगुरु मिले, नूर के सेहरे सुरति पोई।। १०।। २३।। देख दिल मंझि महबूब का धाम है, शब्द के सिंध में मार गोता। अष्टदल कँवल के पींजरे में रहैं, सुंन सूवा सकल जांनि तोता।। १।। गया पिराग काशी जगन्नाथ का, ध्यान अस्नान बहु बेर कीन्हा। इन्द्र दौंन द्वारामती दूर देशों गये, आत्माराम नहीं संग चीन्हा।। २।। आत्मा खोजि परमात्मा संगि है, हंस परमहंस का धाम बूझो। इस चाम के महल में बोलता राम है, मौंन जड़ पत्थर किस हेत पूजो।। ३।। नहीं अकीन बुद्धि हीन हैं मानवी, विप्र विष्णों कहां ध्यान लाया। औह तो तापिया लोदिया के समय प्रकट्या, म्हैंसि के सींग में ब्रह्म पाया।। ४।। अंग चितराम पीतल पटा देत हैं, धात कूँ गात प्रणाम करता। दास गरीब औह राम न्यारा रह्या, शब्द अतीत जो कर्म हरता।। ५।। २४।। देव ही नहीं तो सेव किसकी करूं, किसे पूजूं कोई नाहीं दूजा। दूजा करता

हीं नही ंतो कीरती किसकी करूं, पिंड ब्रह्मंड में एक सूझा।। १।। जाग ही रह्या तो जाग किस कूँ कहूँ, सूता ही नहीं तो किस को जगाऊँ खोया ही नहीं तो खोज किस का करूं, बिछर्या ही नहीं जिसे ढूंढ ल्याऊँ।। २।। बोलता संग और डोलता है नहीं, कला क कोट में अलख छिप रह्या प्यारा। गैब से आया और गैब छिप जायगा, गैब ही गैब रचिया पसारा।। ३।। प्रान कूँ सोध कर मूल कूँ दर गहो, वेद के धुंध से अलख न्यारा। वेद कुरांन कूँ छाडि दे बावरे, नूर ही नूर कर ले जुहारा।। ४।। कर्मना भ्रमना छाडि दे बावरे, छाडि सब ब्रत एक बैठ ठाही। दास गरीब प्रतीत तहतीक है, ब्रह्मंड की ज्योति इस पिंड मांहीं।। ५।। २५।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर अलख योगी। राम रस पीवते अनंत जुग हो गये, महबूब साहिब सही प्रेम भोगी।। १।। शुन्य की मेखली शुन्य का दण्ड है, शुन्य ताखी धरे अलख स्वामी। गाम अन ठाम कुछ नाम बसती नहीं, निकटि से निकट है दूर धामी।। २।। योग अनभोग सिंयोग से रहत हैं, अरस के गुमट में गैब तकिया। सुरति और निरति की परख आवै नहीं, देख बे देख बिन नैंन लखिया।। ३।। मन पवन के गवन से नगर आगे बसै, शब्द अन स्वाल जहां ख्याल ख्याली। शुन्य का गावना शुन्य का धावना, शुन्य ही आसन बन्या शुन्य ताली।। ४।। शुन्य ही राग हे शुन्य बैराग है, शुन्य की सेज है शुन्य गादी। शुन्य के द्वार से शुन्य बांनी कहैं, शुन्य के महल में शुन्य समाधी।। ५।। शुन्य की कोठड़ी शुन्य की कुलफ है, शुन्य की सुरंग है शुन्य ताला। शुन्य के पन्थ पर सैल सेली करै, दास गरीब कुरसी उजाला।। ६।। २६।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर खैर खूबी। शब्द मान्या नहीं मरम जान्या नहीं, कहर दरियाव में दुनी डूबी।। १।। खाख के महल में सहलसा जीवनां, मांनि बे यार मेरा संदेशा। अकल अकूप यौह रूप जर जायेगा, चलत चेतन होसी अंदेशा।। २।। जम की तिरास से नास नामूद है, समझि बे यार भै मांनि भाई। गऊ और सूर ततबीर ना कीजिये, सरे हिसाब मुरगी न खाई।। ३।। अलख अलाह का घड्या ना भांनिये, सक लमें रूप सूक्ष्म समाना। हदि हिंदू बंध्या हिरसि छाडे नहीं, डार बे कर्द तूं मुसलमाना।। ४।। सरा साबति करो मनी पर पग धरौ, कौन अमली कहो कौन सोफी। गला काटि के भिसत दीदार कीन्हे कीया, नबी को पूछि ल्यौ दगा रोपी।। ५।। अमां के उदर में कहां बदफैल थे, तुंही तूं तुंही तुतकार तारी। जठर से राखि कर महल साबति किया, कौन के

हुकम से रूह मारी।। ६।। भिसति का नाम ले दीन दोजिख गया, कौन उपदेश गल काट खाया। हरि नाम हीरा अलह अलख जपिया नहीं, बे दर्द तहतीक दोजिख पठाया।। ७।। ख्वाब के ख्याल कूँ साच मानें फिरें, साच कूँ कहत हैं ख्वाब ख्वाबी। दास गरीब लखि भिसति के महल कूँ, गये हैं देख सुलतान राबी।। ८।। २७।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद हैं, अरस के कुरस पर अलख मौलें। देख बे यार दीदार तो त्यार है, छाडि बदफैल करदूर रौले।। १।। शेष के शीश पर उरध मुख शिव तपै, ब्रह्मा का वेद धुनि पाठ होई। तास पर विष्णु का धाम वैकुण्ठ है, सुरति निश्चल करो देख लोई।। २।। अगम रासा कहूँ सिंध की सैल है, तास का भेद कहो कौन पावे। जुड़े जे नजर तो बजर पट दूर होहि, दीद बरदीद सतगुरु लखावैं।। ३।। मुकट महबूब सिर खूब हैं सेहरा, देख बे यार शिव विष्णु लोचैं। इन्द्र ब्रह्मा सबै बिनती करत हैं, देख दीदार अब कहाँ सोचैं।। ४।। झीना मारग कहूँ मन पवन परचे लहूँ, सुरति और निरति से है अलहदा। गुष्ट समान अजोख आगे रहै, देख दरहाल है छाडि बहदा।। ५।। निरति के गवन से गवन आगे सदा, पलक में संख कोसों सिधारें। पिंड ब्रह्मण्ड से छोत है तास की, मीन के खोज कहां सिंध फारे।। ६।। धरन मध्य सैल आकाश में मठ रच्या, कच्छ और मच्छ कूरंभ उडानी। पांच तत्व तीन गुण भिन्न है तास की, पिंड अन प्रान अविगत अमानी।। ७।। बांमे चरण पदम और चकर कर दांहने, भार अकार ना है अजोखं। दास गरीब सुभान सूरत सही, तास के चरण मध्य अनंत लोकं।। ८।। २८।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर दया दांनी। संख रवि पदम जहां झिलमिले नूर के, नजर कर नजर कर ब्रह्मज्ञानी।। १।। संख जौंनार अपार भंडार हैं, आप ही आप है दया दांनी। कल्पवृक्ष की कामना सिध्दि पूरन सकल, पूरता जांनि पूरन बिनांनी।। २।। सिंध की सैल कर फैल सब ही छूटै, सुरति और निरति पद मांहि सानी। मन के लोर कठोर सब कुटल हैं, दूर कर दूर कर होय अमानी।। ३।। सकल गुण मेटि ले सैल बारीक है, झीन है झीन है पौहप पानी। मनी कूँ मारि कर निफस कूँ पीसले, समझि ले कुटन काया बिरांनी।। ४।। नीम बिन महल जहां सैल सुख साहिबी, अजब है अजब नगरी दिवांनी। दास गरीब गुरु भेद से पाईये, सिंध की लहरि सिंधे समानी।। ५।। २९।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर गावता है। कुरबांन कुरबांन कुरबांन कुरबांन जां, अरध रोम पर सकल ठहरावता है।।

१।। जल बूंद के साज से महल महली रचा, देखो पिंड अरु प्राण बनावता है। बे चमूंनी निमूंनी निरालंब है, नीर बिन नाव चलावता है।। २।। बैठ बेड़े उजेरे गवन कीजिये, खोज खोजी कोई पावता है। अठसिद्धि नौनिधि जहां आरती करत है, अजब धुनि नाद बाजावता है।। ३।। झड़े घनसार दीदार चल कीजिये, सूरमा शीश चढ़ावता है। अमीरस कंद जहां नूर प्याले फिरें, प्रेम शीशी भरे प्यावता है।। ४।। सोई योगी जिन्हों जगतगुरु चीन्हिया, नीर कर थीर जमावता है। कहै दास गरीब निरबान पद निरखि ले, अरस पर यार बुलावता है।। ५।। ३०।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर अजब रागी। अधम सुलतान कूँ गवन भारी किया, पातशाह से भया जांनि पाजी।। १।। कुफर के निफस पर पैर धर चल्या है, मिटि गई मनी सब दगाबाजी। अरस की कुंज में जाय कलमां पढ़्या, रब्ब रमजानि चीन्ह्या अवाजी।। २।। मन के बीच में मक्का तहतीक हैं, बैठ काबे जहां हुये हाजी। कतेब कुरांन का ज्ञान सब धूंध है, दूर बे दूर बे मुलां काजी।। ३।। देख्या जिनाजा सबे सृष्टि का जात है, अमर महबूब एक यार गाजी। अमर सुलतान समरथ सतगुरु मिले, कटि गये फंद सब मूल ब्याजी।। ४।। हक बे हक दोन्यूं सरे छाडि दे, हराम रोजी भई लाल भाजी। दास गरीब मसतांन मौले मिल्या, नूर की सेज हैं अजब झाझी।। ५।। ३१।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर राम राजा। अलख अवधूत अविगत कूँ याद कर, सरेंगे हंस जो सकल काजा।। १।। संख धुनि आरती नाद दीरघ जहां, अजब गुंजार झंनकार बाजा। नेम और बरत कूँ दूर कर बावरे, मेट कुल कांनि तूं सकल लाजा।। २।। छुरी की फांट में आंट कछु बौहत है, दूर कर दूर हरांम खाजा। सरे इनसाफ है पाप ना कीजिये, चिड़ी कूँ पकडि ले जात बाजा।। ३।। अंध समझें नहीं बुरद सब ख्याल है, जिमीं के बीच मिली है जिनाजा। दास गरीब हनौज तूं खोज कर, हक अलाह दर एक नाजा।। ४।। ३२।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर अजब दरिया। चुगत मोती बिना चंच हंसा जहां, जाप अजपा जपे काज सरिया।। १।। शिखर की सुंन में धुंन लागी रहै, नेम निवाज कलमां न रोजा। परे नहीं भ्रम जो ब्रह्म चीन्ह्यां जिन्हों, तत्व कूँ छाडि निहतत्व खोज्या।। २।। कहाँ काबा जगन्नाथ कूँ जाईये, तुरक हिंदू सबै हद मांहीं। कोटि ब्रह्मण्ड एक चरण के कमल में, मिले महबूब अविगत गुसांईं।। ३।। धनी कूँ याद कर, सुरति कूँ साधि कर, मूल कूँ बंधि

लावै पलीता। अष्ट दल कँवल में नूर ही नूर है, छाडि भागोति क्या पढ़े गीता।। ४।। अरध और उरध मध्य फूल गुलजार हैं, फूल के बीच एक पाखता है। सप्त पुर सुंन सब लोक नजर्यौं परें, उलटि कर नैंन जो झांकता है।। ५।। बाहरली मूंदिले मांहिली जोय ले, त्रिकुटी महल की खोल खिरकी। सुंन कैलाश पर श्वास दम पीजिये, झिलमिली सेज है सुंन घर की।। ६।। झिलमिली झिंझली नूर की गिलम है, अरस के कुरस पर ध्वजा फरके। लायले ध्यान असमान के महल में, दास गरीब कोई संत निरखे।। ७।। ३३।। मौजूद मौजूद मौजूद मौजूद है, अरस के कुरस पर यार मेरा। लाग्या है दाव तूं नाव पर बैठिले, सिंध में पैर कर ले नबेरा।। १।। जगमगे महल पचरंग झंडा खड़ा, देख बे देख कुरसी उजेरा। पग पंथ बिन सैल उस महल कूँ जात है, असमांन असतल जहां गैब डेरा।। २।। चांदनी चंद जहां नूर के दीप हैं, बसै बेगमपुरा सुंन खेरा। फजर के चलें पौंहचे सही नगर में, समझि बे यार होती अबेरा।। ३।। संख सुर गये हैं गवन कर लोक कूँ, अंजौं बी जात है लग्या नेरा। करो परतीति परलोक कूँ परिख ले, लहम दरियाव है पार बेरा।। ४।। जन्म और कर्म के लेख मिटाय ले, राम भजि राम भजि ले सबेरा। लाग्या है घाट तो साटि सत कीजिये, दास गरीब नहीं बौहरि फेरा।। ५।। ३४।। कोई वेद पुरान कूँ खोजता है, कोई खोजता है औतार धारा। कोई नेम करता कोई धर्म करता, कोई बैठता है तुला दान धारा।। १।। कोई अंधला है कोई चुंदला है, किसी सूझता है सरल ही पसारा। कोई जैसे का तैसा तो जाइगा रे, कोई गंवाई चलेगा जो मूल सारा।। २।। कोई मूंड मुंडाय कर ऊठि चलता, कोई शीश पर जूट जो रखता है। कोई वारि डोलै कोई पारि डोलै, कोई दीन और दुनी में भटकता है।। ३।। कोई मौन साधै कोई पौंन साधै, कोई घालि कर पींघ जो लटकता है। कोई धाम धोके कोई पत्थर पोखे, कोई रब्ब की रूह कूँ झटकता है।। ४।। कोई काया कूँ धोय न्हलावता है, कोई अंग भभूति रमावता हैं कोई विष्णु के नाम में रुच राता, कोई ईश के नाम कूँ गावता है।। ५।। कोई भंग पीता कोई जंग जीता, सो तो कहो कोई भेख में पवन बेगा। सबे माया लंडी कूँ जो ख्वार कीते, तुम्हों मान मारे कहो कौन देख्या।। ६।। पांच पचीस जो तीन ताबे करें, जाय चौथे मिले सुंन मांही। दास गरीब दरवेश सो जानिये, अरस चंपा लखै नूर झांई।। ७।। ३५।। तत्व में मिलाय दीया, प्याला हम प्रेम पीया, अमरत रस कूजा हैं। जान्या सरबंग एक, आदू अनंत भेख, खालिक नहीं दूजा

है।। १।। खलकत कुलकत सरूप, चीन्ह्या हम पद अनूप, एके तत्व बूझ्या है। पाया हम गैब राह, अमरापुर रहे जाय, सतगुरु सा दाता, कहीं सुन्या है न सूझ्या है।। २।। जन कहता है गरीब दास, पीवत प्याले निवास, निर्गुण पद पूज्या है।। ३।। ३६।। आया है समझि देख, आदू अनंत भेष, भेष में अभेष है। है सो निनांम नाम, जाके नही गांम ठाम, नहीं रूप रेख है।। १।। नहीं सुत्र सार वार पार, देखो दिल कूँ बिचारि, आडा नहीं कोट है। मुकट निकट नैंन बैंन, बैठ्या है गलीचे ऐंन, ऐंनक की ओट है।। २।। ऐंनक अनूप रूप, तकिया तालिब सरूप, ताखी बीच नेश है। साहिब सरबंग जांनि, निर्गुण पद अजब तांन, सूर्यों की चोट है।। ३।। छाडे नहीं सूर खेत, कायर भागे अचेत, बंदे में खोट है। जाके नहीं भग लिंग नाद, दरश्या हम अकल आदि, जान्या हम जान्या जो, दर दर दरवेश है।। ४।। शिखर शुन्य परम धुंन, लाया है तहां मन, निर्गुण झड़ नेश है। बंकी नगरी निदान, अमरापुर अगम धाम, दुर्लभ सा देश है।। ५।। चीपी फरुवा न जान, सेली मुद्रा न कान, मुंडित नहीं केश है। बैठे ऊठे न कोई, जाग्या सूता न सोई, सरबंगी पेस है।। ६।। निश्चल छाया न धूप, घट घट में राग रूप, साचा उपदेश हैं। शील बरत रहना है, भरमि नहीं बहना है, धरता क्या भेष है।। ७।। जाकूँ ब्रह्मा नारद जपंत, सुर नर मुनि जन तपंत, रटता शंकर और शेष है। जन कहता है गरीब दास, परम सुंन परम बास, मुक्ताहल पद पेस है।। ८।। ३७।। दिल दरियाव की सैल सुभांन है, नीर बिन नाव चलावता हूँ। उलटि ले चिशम जहां सुरति की सैल है, डोरी बिन गुडी उडावता हूँ।। १।। अरस में भगल जहां कला कर्तार है, नीम बिन महल चिनावता हूँ। अरस और कुरस बीच नूर ही नूर है, देख बे यार दिखलावता हूँ।। २।। जहां करौं बिन ताल और मुखों बिन ख्याल, अनहद में नाद बजावता हूँ। गैब के सिंध की कहां वाणी कहूँ, अरस की घोर सुनावता हूँ।। ३।। स्याहलोक स्याहनीप स्याहयुज स्याहरूप, चहूँ मुकित कूँ चरण लगावता हूँ। बंदीछोड का बिरद वैकुण्ठ आशा करे, सतलोक के धाम पौंहचावता हूँ।। ४।। रुंड और मुंड मौले सकल कूँ करे, नैंन के बीच छिप जावता हूँ। हम बे चमूंनी नमूंनी सकल शुन्य में, हेत के भेति फिर आवता हूँ।। ५।। मरै है सोई जो भक्ति से बे मुखी, चार खांनि की धार बहावता हूँ। कंटकी जाति उतपति तिस देत हूँ, सर्प गीध और सूर बनावता हूँ।। ६।। गधे और काग कर्तार कूँ कीये हैं, पीछले कर्म भुगतावता हूँ। मनुष की जूनि से

चंड कर देत हूँ, लाख तोबा मैं ही लावता हूँ।। ७।। करे ततबीर और धीर हम ही धरां, कंठ पर छुरी चलावता हूँ। गऊ के सीन से सरे सावत रहूँ, मास मच्छी सकल खावता हूँ।। ८।। इन्द्र वरुण कुमेर जमराय और धर्मराय, ब्रह्मा विष्णु और ईश कूँ ध्यावता हूँ। काल का काल महाकाल का काल हूँ, दृष्टि में सृष्टि रचावता हूँ।। ९।। बे दीन बे दीन बे दीन बे दीन हूँ, पिंड ब्रह्मंड कूँ ढावता हूँ। अकल अचिंत महमंत मौले, हमें संत कूँ शीश बैठावता हूँ।। १०।। शेष से संत ररंकार उचार है, दत्त गोरख चिशम चावता हूँ। गीध गनिका देखो भीलनी तरि गई, बालनीक अश्वमेध ठहरावता हूँ।। ११।। द्रोपदी चीर गंभीर बहु बधि गये, गज अरु ग्राह कूँ वाहता हूँ। विष्णु भगवान कूँ तहां करुणा करी, भक्ति का बिरद बँधावता हूँ।। १२।। दलों के बीच जदि टूट घंटा पड़्या छत्रपती जोधा सकल गाहवता हूँ। दई जदि टेर सुमेर ऊंची गई, पांच पंड और अंड बचावता हूँ।। १३।। असुर कूँ बांधि प्रहलाद आगै कीया, खंभ कूँ आनि खिलावता हूँ। नखों से उदर बिधंसि परलौ कीया, भक्ति का तिलक तिस द्यावता हूँ।। १४।। सुरपति फिलाद भगवान आगे करी, बावना रूप धरि आवता हूँ। तिहूँ लोक की पैंड तो तीन ही कर गया, बलिराय पाताल पठावता हूँ।। १५।। कबीर रनधीर रैदास तो पास है, नौलाख बोडी तहां ल्यावता हूँ। भरे भंडार मुकतार जौंनार तहां देत हूँ, केशों नाम तो आंनि धरावता हूँ।। १६।। दर्दबंद दरवेश कोई नेश निश्चा करै, मूल मंत्र कूँ आंनि गोहरावता हूँ। दास गरीब यौह भगल बारीक है, स्याह रंग से निकट लखावता हूँ।। १७।। ३८।। जल बूंद से साज सुभांन साहिब रच्या, रती के बीच में सृष्टि सानी। तीन सौ साठ तो चिहर बंध लगे हैं, मौज मौला करी कुल बिनानी।। १।। एक तन के बीच में मन का महल है, मन के बीच में दिल दानी। दिल के बीच में सफा असथान है, तास में रहत है हंस प्रानी।। २।। जिगर के बीच में नगर एक नाद है, नाद के बीच में आदि बांनी। आदि बांनी जहां पुरुष असथान है, तास कूँ खोजि ले ब्रह्मज्ञानी।। ३।। कच्छ और मच्छ कूरंभ कारण कहूँ, सहंस मुख शेष रटता बिनांनी। धरनि आकाश कैलाश पानी पवन, चंद और सूर दो दीप जानी।। ४।। इन्द्र अरु वरुण कुबेर जहां धर्मराय, ब्रह्मा और विष्णु जहां ईश दानी। कोटि तेतीस जगदीश कूँ रटत हैं, पुरुष सिर चौंर कर हैं भवांनी।। ५।। घुरें निशान अमांन बाजे बजें, संत बे अंत देवा दिवानी। शील संतोष जहां ज्ञान विवेक हैं, जगि जौंनार दे दया दानी।। ६।। अकल

अकीन प्रबीन समता सुरति, निरति के महल की कहि निशानी। निफस के नैन कूँ खोल्हि कर देखि ले, सोई सत पीर जो हिरस फांनी।। ७।। औजूद मौजूद में मानसी गंग हैं, जहां असनांन कर परबी न्हांनी। शब्द के सिंध में फंध कहीं है नहीं, पंख बिन भँवर काया उड़ानी।। ८।। गुरु ज्ञान अमांन अडोल अबोल है, सतगुरों शब्द सेसी पिछानी। दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, आंनि असथांन रोप्या छुड़ानी।। ६।। ३६।। अकलि के ऊत हैं भेद समझैं नहीं, करें पुकार सब कूक कागा। दुई कूँ मेटि रे दूसरा कौन है, ज्ञान की दृष्टि धर देख आगा।। १।। करो नबेड़ कछु खोज दिल में भया, बूझिले ज्ञान ब्रह्मज्ञान विज्ञान बांनी। चौबीस सिद्धांत का भेद सब ही कहा, वेद कतेब की कहां जांनी।। २।। मूल ऊँकार पैसार पैदा हुवा, जहाँ से परे की कहूँ बांनी। देखते कहा अन देख कहते नहीं, भरत हैं कैद बेदी कुरांनी।। ३।। धर्मराय की जेर जमदूत के जाल में, लोक चौदह भये जात देखे।कोई निरगुनी संत उपदेश सतगुरु जहाँ, तोरि जम जाल हंस काढि लेते।। ४।। रे नाम चीन्ह्या जिन्हों शब्द पख्या सही, पारखी संत परलोक राते। कहे दास गरीब जग भेद समझै नहीं, अकलि के ऊत अंध भ्रम माते।। ५।। ४०।।

अथ कवित्त

विरक्त कहैं हम तयाग चले सब, हाथ में हांडी और जंगल बासा।। १।। आछा सा खाया और पाट बिछाया, होय बैठे जग मांही उदासा।। २।। पेट में भूख अनन्त बिराजै, **गरीबदास** कहै जिन कौन तमासा।। ३।। विरक्त विरक्ताई के लक्षण है नहीं, भेष बनाय बैठे ठग का सा।। ४।। १।। कंठी और माल मृग जो छाला है। पंखरू अंग खोल्हि कर जटा विभूत रिसाला है।। १।। बढ़ाय रह्यो नख और उठाय रह्यो मुख, ठाढो ही रहत दिन रैन हूँ दुखाला है।। २।। पौहप के विछाय से और कन्द मूल के खाये से, और बैठ हूँ रहाय से, कछु राम न हांसी ख्याला है।। ३।। जन कहता है गरीब दास, जाका चित हूँ न एक ठौर। इन बातां कहीं, मिले हैं गोपाला है।। ४।। २।। दौर वे दौर वे दौर वे बालके, राम दरबार में एक अवधूत आया।। १।। हाथ में घोटा और काख में कुंडी है, पांच सातां कूँ तो मूंड ल्याया।। २।। दास गरीब कबीर का बालका, एक अटकली दास महंत आया।। ३।। ३।।

अथ झूलने

चढ़ो नाम की नाव जिहाज भईया, तेरा पार चलने कूँ जो दिल है जी। अजब कहर दरियाव में नाव लागी, जहां मन मलाह जाजुल है जी।। १।। चप्पू चित लाबो बरदवांन बांधो, बड़ा पंथ के बीच में गुल है जी। जहां भँवर भारी नाव डिगमगें हैं, ठेका खाय भईया गहगल है जी।। २।। सूवा बोलता खाख के पिंजरे में, संरतत सिंध मेला बुलबुल है जी। चिदानन्द चिन्हौं ब्रह्म गाजता है, जैसे मधुकरों बासना फूल है जी।। ३।। कहै दास गरीब दलाल सोई, सौदा नाम की नहीं समतुल है जी।। ४।। १।। सुनि खाख के पूतले बात भईया, पलक मारते खाख होय जाहिगा रे। हसती फील झूलें अरथ पालकी हैं, तेरे बौहत लागी घोड़े पायगा रे।। १।। ऐसे महल में आन कर मोदि मानी, छिंन भंगरी कहां ठहरायगा रे। हंसा गवन कीन्हां खोड़ फूक दीन्ही। कुल कुटम्ब के लोग दे धाहि है रे।। २।। आगे धर्मराय है लेखा लीजियेगा, कुंभी नरक की राह जूं जाहिगा रे। पड़े गैब की मार बैजार मांही, तेरा हंस गोते जहां खागया रे।। ३।। नहीं नाम नेहा मनी मैल काती, शीश पीट रोया दे धाहि है रे। कहै दास गरीब दलाल सोई, नाम सुने से दुनी रिसाय है रे।। ४।। २।। बंदीछोड साहिब का नाम लीजे, कटै फंध नहीं चीन्हता है। देई धाम कूँ पूज कर मगन होई, देखो शब्द की नहीं यकीनता है।। १।। भेदी भेद दीन्हा शब्द महल का रे, सीढ़ी सुंन में लाय कर पैठ ध्याये। मार्‍या मोरचा पहल दर मोह का जी, वही ज्ञान तरवार सिर काट ल्याये।। २।। चढ़े शील संतोष विवेक बंका, जहां काम दल कटक सब फूक दीन्हें। जिब दया के चौंतरे चार आये, अनराग निरबांन निहतंत चीन्हें।। ३।। आकी मार मैदांन गढ़ कोट ढाह्या, सफर जंग की राडि है खेल भाई। दुर्जन मार कर गगन में नाद बाज्या, देखो दीद बरदीद प्रतीति आई।। ४।। चित चौतरे बैठ कर बांधिया जो, हम लोक परलोक कूँ गवन कीन्हा। उलटी चाल चालै नहीं चूक है जी, निरालंब निरबांन निहतंत चीन्ह्या।। ५।। गैबी गैब दरियाव में मार गोता, जैसे मीन का खोज नहीं पावता है। कहैं दास गरीब दरहाल धारा, परबी प्रेम की बेगि न्हवावता है।। ६।। ३।। बंदीछोड साहिब का ध्यान धारो, निरालंब निज नूर निज नेक है जी। जल थल में थीर गंभीर गैबी, देखो लोक परलोक में एक है जी।। १।। धरि ध्यान दुरबीन अकीन कीजे, दिल देहरे पैठ कर परखि भाई। कुरबांन कर्तार के सेहरे पर, जहां सुरति और निरति दोहूँ निरखि आई।। २।। अलह नूर मौले मगन आप है जी,

गलतांन सुभांन सही देख लीजै। बैठे अरश के तखत पर आप सांईं, दीदार के वासते शीश दीजै।। ३।। देखि दीदार दरहाल दरिया, जाके मुकट पर संख रवि झिलमिलै जी। जोती जगमगैं जोग बिजोग बांनी, जाकी पलक में खलक जिहांन है जी।। ४।। नहीं दीखता मुगध की दृष्टि आवै, संतों खोजि लीया कलधूत है जी। शून्य सैल कर सिंध में सुरति पैठी, जहां आप अविगत अनभूत है जी।। ५।। मनी मार कर छत्र कूँ भेर भईया, होयगी अदलि अवधूत इस भेद हाजी। अलह बैठ कर आप निसाफ करता, चित चौंतरे चूक नहीं भई काजी।। ६।। पड़ै गैब की मार सुमार नाहीं, देखो कुफर कूँ कुफर दिखलावता है। फजल सिर फजल जहां होय भईया, जाके एक नहीं फूल की लावता है।। ७।। शून्य शिखर के महल में दिया डेरा, चौक चांदनी बीच नहीं पला पकड़ै। कुफर कूँ मार पैमाल नीचा करै, लालखां बांधि कर तहां जकडै।। ८।। मलागीर की सेज शूली नजर आवती, मिले सुलतान कूँ कुफर तोड़्या। दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, सुरति और निरति का तार जोड़्या।। ६।। ४।। बंदीछोड साहिब कूँ चीन्हि भईया, मारो नूर के सिंध में गैब गोता। बिना पंख पंखी उड़े भँवर शून्य में चढ़ै, अछै वृक्ष में बैठि निज सुनि तोता।। १।। दया की दाल और नाम चोसा चुगै, सतगुरु दत बानी बिलासा। प्रेम के पींजरे बीच बैठ्या रहै, कर्म खिड़की दई तोड़ फांसा।। २।। एक पींजरे पास मंजार बैठ्या रहै, खोज कर खोज कर खोज खोजी। कौन से भेद से अरश झूलत रहे, चुगै मत चुगा याह रिध रोगी।। ३।। शून्य के ताक में पांच प्रपंच हैं, तीन के भुवन पर गवन कीजै। खड़ा मंजार सिर कूटि रोवै सदा, उड़ै अकाश वृक्ष अक्षै लीजै।। ४।। प्रेम बानी पढ़ै नाम निश्चय रटै, चंद चकोर ज्यूं ध्यान ध्यानी। दास गरीब यौह खेल जो यादि है, तो पींजरा छाडि नहीं ब्रह्मज्ञानी।। ५।। ५।। बंदीछोड साहिब कूँ देख भईया, तेरे नैंन में बैंन बिलास बानी। कच्छ मच्छ कूरंभ जिनि धौल धरनी धरे, लोक परलोक एक शब्द ठांनी।। १।। सूक्ष्म सा रूप विस्तार येता किया, आदि और अंत मध्य नहीं है रे। सृष्टि का कर्ता तो सृष्टि में रमि रह्या, नैंन के बीच में सही है रे।। २।। गुलबास निवास जो पौहप गंध से झीन है, मुगध की दृष्टि में नहीं आवै। सुरति की सैल से निरति आगे चलै, बिना आकार का भेद पावै।। ३।। पिण्ड ब्रह्मण्ड से सिंध न्यारी कहूँ, त्रिकुटी भ्रिकुटी नहीं दशमां। हदि बेहदि के मध्य निज महल है, रोशनी सेज बिन देख चिशमां।। ४।। रंग महल की सैल

जहां सुरति निहलचल करै, निरति कूँ वार और पार पेलै। पिण्ड ब्रह्मण्ड का खोज पावै नहीं, बिना आकार आकार मेलै।। ५।। श्रवण और नैंन जहां नासिका है नहीं, नहीं मन पवन जहां शीश द्वारा। सत कमल काया नहीं खोया पाया नहीं, नूर जहूर अविगत हजारा।। ६।। जहां रहत हैं हंस जो सिंध सूभर भर्‌या, मीन के खोज मसताक रहना। दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, समझि कर खेल नहीं भेद कहना।। ७।। ६।। भली भांति के भेद से रहना यारो, अगर दीप के धाम कूँ जाना है जी। चिदानंद कूँ चीन्हि दीदार पावै, जाका तंबू तो बन्या असमान है जी।। १।। बैठ्‌या चांदनी चौक में यार मेरा, अडील पड़दा नहीं तास कै रे। बांनी बोलता अमर अनराग रागी, जाका गावना कोई नहीं गा सकै रे।। २।। अरस कुरस पर पंथ है झीन मेरा, मीनी खोज की बाट लखावता हूँ। पलक बीच में सरे की सैल करता, अगर दीप के धाम चलावता हूँ।। ३।। कहूँ बात बैराट के घाट की जी, ज्ञानी कूँ पाय कर डूब जाते। एक झिलमिली सिंध है दीप दरिया, कोई ब्रह्म ज्ञानी जहां जाय न्हाते।। ४।। बहै गंग कैलाश आकाश मांही, शिव के शीश पर सैल है अगम रासा। जहां दत्त गोरख नहीं ध्यान ध्यानी, अबल नूर ही नूर देखो तमासा।। ५।। अरश कुरश के बाग में कौन माली, जहां नूर जहूर के कंद है जी। कहै दास गरीब संभालि भईया, देखो चाखते नहीं सो अंध है जी।। ६।। ७।। खबरदार होय खेलना यार भाई, चिदानंद की चांदनी बीच रहना। पग पीठ उलटा नहीं फेरिये जी, शब्द स्वाल के सुने से शीश देना।। १।। कुलफ जड़ी है यार महबूब मेरे, सप्तपुरी का भेद नहीं भेदता है। उलट पवन द्वादश के दीप जाईं, षट कँवल कूँ मूढ़ नहीं छेदता है।। २।। ब्रह्मलोक की बात सुनि रीझ जाता, रंग रोशनी दीप नहीं दीखता है। तप जोग कर भक्ति भय मांनि भाई, अब साखी शब्दी कहां सीखता है।। ३।। गुलसफा की गली में निफस कूँ गाडि दे, मार तितारचा तीर तुका। शीश कूँ काट कर हाथ महबूब ले, इशक कूँ छाड कर कहां ल्हुक्या।। ४।। मनशूर कूँ देख मासूक यौं हूजिये, अनल ही हक्क बोलै दिवाना। शीश कर कटे हैं रुधिर मुख धोवता, इशक नहीं छाड शूली चढ़ाना।। ५।। इश्क ही इश्क में फूक तन दिया है, बहै हैं अस्थि दरियाव मांही। कहै दास गरीब यौह इश्क साचा सही, अमर मनशूर है हक्क सांई।। ६।। ८।। जिमीं असमान जिन राखे थूनी थंभ बिन, सुनि भाई यार सो तो समरथ सार है। आदि अंति रूप रंग, निरभै अजूंनी तंत नहीं वार पार

है।। १।। दृष्टि मुष्टि नहीं आवै, सूक्ष्म अगाध भेद, निर्गुण निराकार है। सोहं अनूप रूप, पारख परखि ल्याये, अकलि बिचार है।। २।। अक्षर धाम नाद वेद, ता पर कमंद बांध, आगै मकरतार है। दामनि चमके बीज असंख भांन, अजब नूर मेघ जो मलार है।। ३।। तंबू न कनात बली बिना अजब भेव, जाकूँ तो जुहार है। पाया विज्ञान भेव, मूरति तो विश्वंभर देव, नहीं जीत हार है।। ४।। छत्र सेत अगर चौंर सेज तो सुरंगी, जो अटारी गुलजार है। शब्द सिंध सुरति सैल, कहता है गरीब दास अजब दीदार है।। ५।। ६।। एक रेख कूँ देख निहाल भये, मौला सकल सबूह लखावता हूँ। देखो शेष के नंक पर अंक अगमी अक्षर धाम की डोर गोहरावता हूँ।। १।। छुछिम सा रूप अनूप अलेख मौला, देखो गुसट समांन सुनावता हूँ। बाजें जंग अपार दीदार मौला, मक्रतार की डोरि फिर गावता हूँ।। २।। छुछिम रूप में अष्ट भुज रूप रासा, बजर नाद की देह धर धावता हूँ। पींघू अरस के बीच में गैब गैबी, देखो पिंड अरु प्रान झुलावता हूँ।। ३।। बेदी संख जौंनार गुंजार भौंरा, अछै वृक्ष की राह से आवता हूँ। मारी ज्ञान गिलोल चहडोल मांही, गूंजे भँवर भारी ज्ञान लावता हूँ।। ४।। अग्र मूल में पैठ कर आये यारो, जहां नागनी नाथ कर उलटि मारी। सुर खैंचि कमान का बान मार्‍या लाग्या पौंन का दण्ड प्रचंड भारी।। ५।। वामां पैर गुदा की जो सिंध लाया, मूल चक्र का घाट मुंद्या विचारी। दहना पैर अंबरी पर जो चूर दीन्हा, बैठे सिद्ध आसन कला जोग सारी।। ६।। पेचा खोल्हि कर नागनी नैंन मूंदेश जोग नेस क्रिया लील चक्रधारी। देखो नाभि कूँ फेर सुमेर ध्याये संतों पकर आनी गही ऊँनकारी।। ७।। हिरदे नाद की गुंजि गुंजार घोरें, कंठ कँवल में पैठ बैराट पारी। इला पिंगुला सुषमला सूत लाया, बजर पौर की जाई खोल्ही किवारी।। ८।। मोती मुकित माला देखी चित्रसाला, हंसा देख रे देख झिलमिल अटारी। सहंस दल कँवल के महल में किया लटका, जहां जोग और जुगति की लगी तारी।। ९।। भौंरो उजल अलील बिन परों उड़ते फिरें, अछे जो वृक्ष की बैठ डारी। जहां गंग निरबांन असनांन आशा मुखी, हंस बेदी रचै कलाधारी।। १०।। परमहंस का लोक परलोक घर अगम है, याह तो सुन्न शक्ति ऊँकार नारी। ब्रह्मा विष्णु महेश अरु शेष जाकूँ रटैं, दूर औह देश भुज संख धारी।। ११।। शिव शकित मिल सेहरा पुरुष का गूंदही, कोटि कोटि अनभै मिली छंद गावैं। ब्रह्मा कोटि कलधूत के लोक मांही, जहां कृष्ण और विष्णु मुरली बजावैं।। १२।। शिव कोटि

संगीत जो इन्द्र गिनती कहां, पुरुष प्रवांन अविगत कहावैं। अलख अवधूत संजूत सतगुरु कहैं, दास गरीब ऐसे लखावैं।। १३।। १०।। जल थल के बीच में रमि रह्या, तूं देख दीदार दरहाल है रे। औह सेत सुभांन जिहांन मांही, जो अजब महबूब अकाल है रे।। १।। पारस की खांनि तो मूत्र की धार में, कहाँ मोती हीरा लाल है रे। गलतांन असमांन में अजब मौला, एक सृष्टि त्रिलो का माल है रे।। २।। जल बूंद से जूंनि जिहान सब होत है, एक पलक के बीच पैमाल है रे। पाखंड कूँ पूज पाखंड परलौ गया, सृष्टि सूवा ठग्या जाल है रे।। ३।। पत्थर के फैन से फैज पाई नहीं, शीश जम दूत का साल है रे। कौन मारै कहौ कौन मरि जात है, छाडि हंसा चल्या खाल है रे।। ४।। अगर मूल के फूल की बासना कहत हूँ, झिलमिला रंग रिसाल है रे। सेत ही हंस जहां सेत सरवर सरु, सेत ही कमल जहां ताल है रे।। ५।। बुदबुदे संख कहां राव और रंक है, नजरि दर नजरि निहाल है रे। दरियाव की लहरि दरियाव ल्यौलीन है, भँवर और फील जल झाल है रे।। ६।। भरम के बुरज और सीत के कोट हैं, अजब ख्याली रच्चा ख्याल है रे। दास गरीब औह अजब निज ब्रह्म है। एक ही फूल फल डाल है रे।। ७।। ११।। एक बटक के बीज में सकल संसार है, बटक का बीज निहबीज भाई। छुछिम सा रूप अनूप निज सार है, निकटि निरबांन निर्गुण समाई।। १।। अलख अलेख के भेख बपु हैं नहीं, गर्भ औजूद जानें न माई। चंद में सूर और सूर में चंद है, शरद और गरम देह दिखाई।। २।। छिपै नही चंद और सूर ऊगै नहीं, रात और दिवस किन्हें बनाई। सुरग पाताल मिरत लोक मौला रचे, अलख इलाम बाजी उपाई।। ३।। बटक के बीज में बटक सौ संख हैं, बटक का बीज सौ संख राई। वेद बंदूख अवाज सी होत है, नहीं दीदवांन में सुरति लाई।। ४।। कलम के काम कलधूत पावैं नहीं, मूढ नर अंध कहां घोल स्याही। किले और कोट पर चोट एक होत हैं, लाय कर मोरचे ढाहि खाई।। ५।। तत की तोब तो दहूँ दिश दगत हैं, सुरति और निरति दो सुरंग लाई। किला अचांन असमान कूँ उड़ि गया। सपतपुर सुंन नौबत बजाई।। ६।। मन मैंदान में पकरि जोधा लिया, किला कलधूत का दीया ढाही। सफर के बीच में नफर का काम है, जोगिनी मंलगचार गाई।। ७।। किले संजूत अनभूत के में बड़े, अरस और कुरस में नूर झांई। अलख महबूब खुद खूब खालिक धनी, दम के बीच दीदार पाई।। ८।। रैदास चमार और नामा छीपा कहूँ, गया परलोक सदना कसाई।

सवा मन सूत जहां तोर पंडित चलें, कनक जनेऊ रैदास ल्याई।। ९।। जुलहदी जंग दहूँ दीन से रोपिया, तहां नौ लााख बोडी उपाई। कसत केशो किया हुकम कबीर से, आन जौंनार काशी जिमाई।। १०।। चले जद मगहर कूँ, लखै कोई डगर कूँ, चदर और फूल अधके बिछाई। खड़े दहूँ दीन तिहूँ लोक साका भया, शब्द में शब्द ल्यौलीन थाई।। ११।। गीध गनिका देखो भीलनी कौन थी, तास के झूठे फल आप खाई। सेऊ और संमन मनियार मौला मिले, हुकम हजाम था सैंन नाई।। १२।। मूंज अरु बांस सर खूब चोखे लीये, नामदेव छांनि तहां खूब छाई। पातशाह मसक जद बांधि नामा लिया, गऊ तत्काल बेगहि जिवाई।। १३।। पीपा रजपूत और धन्ना था जाट का, तास का खेत साहिब निपाई। बूझ्सा चंदुवा और सिंघ दीक्षा दई, ऊँच और नीच में भेद काई।। १४।। पंडौं की जगि में सुपच साका किया, चौदहूँ भुवन शंखा सुनाई। सहदेव के वेद तो भाडली ले गई, सूर के चहल परबी न्हवाई।। १४।। ऊँच नर नीच और नीच नर ऊँच हैं, पंडितों मुखे मुख खेह खाई। दास गरीब एक नाम मिहमांतनी, अनंत ब्रह्मण्ड में है दुहाई।। १६।। १२।। तखत बन्या तरबीत ही का, चलो हाजी हजा जहां खूब है जी। मन मक्के की राह बतावता हूँ, जहां आप सांई महबूब है जी।। १।। फुरामेस कुरान पुरान सबै, काजी पंडिता भेद नहीं पावता है। जगन्नाथ जगदीश है शीश साखी, दहूँ दीन कूँ ज्ञान चितावता है।। २।। काजी कजा कूँ छाडि करि नेश होना, मुल्लां मूल की राह समझि ले रे। पांडे पिंड कूँ धोवता कर्म कांडी, तूं तो आशकी पंथ में शीश दे रे।। ३।। प्याले प्रेम के खुरदनी नहीं जांनें, काले पत्थर कूँ धोई कर पीवता है। भौंदूं भूत की जूंनि में जात है रे, स्वाल मान मोरा नहीं जीवता है।। ४।। बकें वेद वादी शब्द नहीं लाधी, औह तो शब्द की राह अबंच है रे। पिंड प्राण में बोलता शब्द साक्षी, एक शब्द बिन सबै प्रपंच है रे।। ५।। काजी पंडिता मुलनां परख नाहीं, दहूँ दीन के बीच में भांड है रे। मोती छाड कर रेत रज ढूंढता है, देखो पत्थर की शीश पर पांड है रे।। ६।। भूले दीन दोनूं गऊ सूर खांही, औह तो बोलता एक अलेख है रे। कहै दास गरीब अचराचर में, वाकूँ जान प्यारे जो अभेख है रे।। ७।। १३।। तखत पर तूर बजावता है, मौला आदि जुगादि जगदीश जोगी। बाजे ताल मृदंग सुरबीन सोहं, गावै आप अनराग है शब्द भोगी।। १।। सोहं शब्द झंनकार धूमार ध्यानं, कलाकंद कुरबांन एक आरती है। अपन के काज येलम नहीं किया है, सकल संसार

परमारथी है।। २।। सकल जूंनि बेजूंनि में तूंही तालिब, कहां चिड़ी और मोर क्या पाखता है। कौन पर मिहर और कौन पर कहर है, कुल एक परमात्मा झांकता है।। ३।। संगी नाम तेरा फिराऊँ न प्रानी, देखो बार की बार पुकारता है। मोमन पर मिहर हमेश हुई, कुफरांन कूँ जुगां जुग मारता है।। ४।। मोमन के महल में लाय सीढ़ी हजूर तखत पर लेई जाऊँ। कहैं दास गरीब कुफरान काढ़ौं, नहीं आदि जुगादि में मिहर ल्याऊँ।। ५।। १४।। सकल रूप मेरा मना मनी त्यागो, घट घट में बोलता मैं ही हूँ रे। शब्द रूप सोहं ॐ मधि मेला, देखो पिंड और प्रान में सही हूँ रे।। १।। अधर बंध बंधान असमान मेरा, यौह तो पिंड अरु प्रान अन हारथी है। करो बंदगी रंदगी छाड खेलो, मेरी भक्ति शक्ति बिन जगत सब गारती है।। २।। खलक मुलक में फिरे से क्या होवै, जटा शीश बंधावते मेघ डंबरी। भभूत संजूत संग नहीं मेरे, बाफता ओढ़ भावें भेड कंबरी।। ३।। मनी महल के बीच में नहीं आऊँ, हिरस खुधी कीनेश जड़ खोदता हूँ। मान डिंब आरंभ से नहीं राजी, बेदीन का दगड़ा शोधता हूँ।। ४।। जाका पंथ बुहारि सुमारि देहूँ, सो तो दीन बेदीन से हुये हैं रे। कहै दास गरीब जिहांन मांही, वे तो जीवते ही फिर मूये हैं रे।। ५।। १५।। नहीं बाद बिरोध सुर सोधि सोहं, नाभि कँवल में नाम निरबान चीन्ह्या। चारों वेद का भेद बतावता हूँ, मूल मंत्र बानी माथे तिलक दीन्हा।। १।। सोहं सुषम की आरती शीश धरिये, ऊँ आदि जुगादि है कला सारी। इला पिंगला सुषमना मध्य जोवैं, सुषम वेद शाखा जहां लगे तारी।। २।। सुषम वेद शाखा जहां अजब झांखा, कनी झिलमिला कार है हीर मोती। कहाँ वेद भागौत और गुनी गीता गति, झिलमिलें अरस में संख जोती।। ३।। संख जोती जहां झिलमिला कार है, कोटि ब्रह्मा जहां शंभू ध्यानी। कोटि जगि का फल है एक ही पलक में, दास गरीब उपदेश दांनी।। ४।। १६।। भजो राम कबीर का नाम भाई, तिहूँ लोक में रोशनी रंग है जी। सुरति नाद और बिंद का बांधि बेरा, इस जगत का रंग पतंब है जी।। १।। हरिनाम निरभै निराकार सोई, देखो दीद बरदीद दरहाल है जी। बजर नाद के पिंड का ध्यान धरना, जहां कर्म काया नहीं काल है जी।। २।। अक्षर धाम के देहरे जाप अजपा करें, मक्र मीनी महा ध्यान है रे। पिंड ब्रह्मण्ड पर अगम आसन करे, पंथ मारग बिना जान है रे।। ३।। शाला कर्म संगीत प्रणाम नित कीजिये, निरख और परख में आवता है। सोई पीर का दस्त सिर राखि भाई, दम देह बिन दरश दिखावता है।। ४।। नासा

नैंन पर सैंन सुभांन सोई, आम खास में बास है पुरुष का रे। मन मोदि बिनोद सब बंध होई, कूल नाश शोग और हरष का रे।। ५।। बाजी आन मांडी दाव खूब लाग्या पासा डार बिचार कर खेलना है। पांच पचीसा और तीनद कूँ त्यागि दे, जुग बांधि कर चौपटे मेलरा है।। ६।। निरालंब आरंभ का ध्यान धारो, तिहूँ लोक में त्रक दिल कीजिये रे। भाठी त्रिकुटी घाट परआन रोपी, अमी प्रेम प्याला ऐसे पीजिये रे।। ७।। अकल मूल महमंत बैराट घाटी, जहां जायगा सोईमन पवन जीते। **गरीब दास** उपास जो करैगा रे, एक पलक में शंख जुग आंनि बीते।। ८।। १७।। निरालंब के ध्यान का दरश देखो, कली फूल और बाग बनावता है। अरस कुरस में कला गुलजार है रे, देखो बीज से बिरछ लगावता है।। १।। सांनी हाल सुरति से साज साजे, क्रितम ख्याल का खेल ना भावता है। कली बाग माली कूँ तो खोई डारे, ना पैद से पैद कर ल्यावता है।। २।। देखो पिंड ब्रह्मंड की कला कैसी, एक रत्ती से अरथ बनावता है। कच्छ मच्छ कूरंभ पर कुरस झूले, मक्रतार की डोरी बंधावता है।। ३।। अशन बसन बसती नहीं तास के रे, देखो खोज खोजी कोई पावता है। कला हीन दुरबीन कूँ कहां जानें, मीनी राह निहाग कर ध्यावता है।। ४।। शिलाबजर खोल्ही हिरदे हेत हाजी, पलक पीठ में उलटि कर ध्यान जोर्‍या। कली संख पर संख सैलांन कीन्हां, नाभि किताब का बांधि डोरा।। ५।। भली भांति बैराठ का घाट पाया, मेरे पीर से परख सब आवती है। अंदर मंदिर में नाद गुंजारता है, देखो आत्मा दरश कूँ पावती है।। ६।। ऊजन तोल मोल नहीं तास का रे, कहो कौन उपदेश जो पीर देवै। अलल पंख के ध्यान से दीखता है, दरश छाक आवै कल्प संख जीवै।। ७।। मनी मनां कूँ जहां नहीं ठौर भाई, निरालंब होई लैल कूँ त्यागता है। कहैं दास गरीब दरवेश सोई, आठ वखत में जोगिया जागता है।। ८।। १८।। मंदिर मालवे देश बदेश है रे, सीढ़ी सुरति की लाय कर चढ़ो भाई। निरख परख कर पैर ठहरावता है, जिन्हों धनी विश्वास से बस्तु पाई।। १।। निकट से निकट और दूर औह देश है, आकार निराकार से सिंध न्यारी। पुरुष विदेह से नेह लावो, पकरि ले मूल अब छाड डारी।। २।। प्राचीन आकीन कर ध्यान धारो, नशा खूब महबूब का अमल है रे। दामनी दमक और चमक बैराठ में, बिना ही नीर जल बिंब हे रे।। ३।। कला कोटि कलधूत के महल मांही, बिना मूल एक फूल फिरावता है। शिव के शीश पर सेहरा खूब साजै, दिव्य दृष्टि के बीच में आवता है।। ४।। पलक जोड़ कर

जूंनि बे जूंनि देखो, इस सैंन कूँ मांन महबूब भाई। चारों वेद भागौति का अरथ इस बीच है, दिव्य दृष्टि के ध्यान से नजर आई।। ५।। सकार हकार मकार पर मूल है, मूल असथूल बिन अरस मांही। पीठ अन पेट जहां चरण नहीं शीश है, पौहप की गंध से मंद झुयांही।। ६।। नाभी नाद कूँ साधि कर सुरति लावो, संगीत है मीत महबूब मेरा। गगन गलतान अमान असथूल बिन, अरस के बीच में करो डेरा।। ७।। अलख आदि अनादि अगाध हाजी, सरा दीन बे दीन से दूर है रे। कहै दास गरीब अली सेर साखी, त्रक दे गऊ क्या सूर है रे।। ८।। १६।। अलह बीनती बंग क्या देत भाई, मुरग मार कर कूक पुकारता है। रुद्र मांस में दशत तो भरे तेरे, पकर कर गऊ फिर मारता है।। १।। चिड़ी बुटेर जग जीव जिहांन में, मार खरगोस तीतर तिराजी। पंच बखत क्यूं लोटता है हिवानी, याह तो बंदगी नहीं कुछ दगा बाजी।। २।। कादर पाख साहिब कूँ याद करो, ऐसे जीव पर जुलम ना कीजिये रे। गऊ सूर में सार संगीत सांईं, धनी ध्यान धरि तखत यौं लीजिये रे।। ३।। रूंम रूंम हिसाब किताब होई, एक जरा सा जीव नहीं भूलता है। पड़द पोस के जोस से जीवता है, उस सरे में अरथ सब खूल्हता है।। ४।। दगाबाज निवाज से नेह कैसा, पंच बख्त की बंग पुकारता है। अजा भेड़ हिलवान सब काट खाये, जो तूं बिना तकसीर जीव मारता है।। ५।। ईद बकरीद सब वाद विवाद है, खाजरु खीर पकवान कीन्हां। नबी बूझि कर नीति साबुत कीजे, ऐसा कौन जो पीर उपदेश दीन्हां।। ६।। ऐसे जुलम पर जुलम नित होय भाई, नहीं जाड़ के स्वाद जगदीश राजी। मक्का मन के बीच तहतीक है रे, जाका स्वाफ सीना सो तो हुवा हाजी।। ७।। मसतक मसीत याह रीति पिछांन ले, दम लाहूत लै लाय भाई। दास गरीब तबीब के तखत चल, कौन के हुकम से गऊ ढाकी।। ८।। २०।। कोई है रे ऐसा अलाह परखि ल्यावे, वाकी परख पर प्राण कुरबांन है जी। खुधी छाड कर कुरस में मार गोता, जहां नूर जहूर प्रवान है जी।। १।। अलह बिंब की आरसी उलटि देखो, जहां जगमगे नूर जहूर है रे। सेजा सुंन महली महल पैठ देखो, देख जहां नबी का राज है रे।। २।। काजी कजा कीजे जुबाब सरे दीजे, मुलां मुरग कूँ मार कर हक्क बोल्या। गला छेकता है धनी देखता है, नहीं मिहर आई बड़ा कुफर तोल्या।। ३।। हाजी हजा मांगे मुलां कूकि बांगे, तूं अलह के कीये कूँ मारता है। बे मिहर भाई नहीं दया आई, दीदार की दवा पुकारता है।। ४।। मुरग मार भूंन्या अंड फोर सीनां, यौह

कौन कतेब में लिखा है रे। नबी पूछि देखो नहीं पाख पाया, गंद खाना तुम्हों भख्या है रे।। ५।। गऊ मार मुजरा कहो किन्हि पाया, तूं तो पिछला खोज पिछान भाई। नबी राह जोहा छुरी डार लोहा, तुम्हों रब्ब की रूष किस हुकम ढाही।। ६।। लवा मार बुटेर का पेट फोर्या चिड़ी चोखता बोलती रब्ब बानी। मोर मुरग कूँ मार कर मनी मुवासा, कहा कजा कीन्ही काजी दवा दानी।। ७।। अजा भेड़ खाई मुरगी मार ढाही, तुम्हों खुदी खर गोसत का बनाया। सीने की सींक भरि भिसत कूँ पूछता, नहीं तुम्हों नबी का राह पाया।। ८।। मंजिल दूर भाई गऊ काट खाई, तूं दीन बे दीन क्यूं हुवा है रे। तुम्हों कौन सी बस्तु हलाल कीन्ही, औह तो जोति सरूप नहीं मुवा है रे।। ६।। दिल कबज कीजे सारा राह लीजे, मांस छाडि दे मुसल जो मांन है रे। अरस कुरश चलिये गूदा नहीं तलिये, याह छाडि दे बुरी जो बान है रे।। १०।। अलह रूह रासा करी कर्द तिरासा, लेखा होयगा सरे हिसाब काजी। तुम शब्द मानो नहीं रूह भानों, गूदा खाय कर हूवा है बौहत राजी।। ११।। मुरगी आंनि कर सरे में धाहि दीन्ही, अजा रोवती कूँ सजा बहुत पाई। जहां बैठ कर अलहा इन्साफ करता, काजी कौन के हुकम से रूह ढाही।। १२।। लेखा दीजिये रे अलह बूझता है, तूं तो मुरदफरेश हलाल नाहीं। मुरग मुल्लां कीया, जाय बदला दिया, अजा काजी की जूंनि पाई।। १३।। दम दम लेखा जहां दूध पानी छनें, सरे में जुलम ना होयगा रे।। खुधी छाडि खेलो शब्द नांहि पेलो, स्वाद स्वादी दिन दोय का रे।। १४।। सफरखाना नहीं सरे कूँ भावता है, उलटि औजूद तन खाल काढ़। मुसलमान तो सोई जो मुसकीन में मिल रहे, गुदा खात हैं जानिए सोई गीदी।। १५।। छाडो बाद बिबाद विषमाद भाई, खाना खाय लीजिये अमीरस प्रेम का रे। कहै दास गरीब निमूंन निरभै रहै, अलह केता खाना जग में कीया है रे।। १६।। २१।। चेत रे चेत तूं पैठ निज खेत में, शब्द के सिंध में गरक होई। शील संतोष विचार कर चालना, समझ कर खेल तूं अंध लोई।। १।। उनमनी दिशा और विकल शरीर है, लगी है चोट जब पोट होई। दास गरीब सतगुरु सनमुख मिले, पाई छिपाई के दिल धोई।। २।। २२।।

अथ अरील

मरदानें मर जांहि मनी पर मार है।
ऐसा महल अनूप पलक में छार है।। १।।

जौंरा बुरी बलाय जीव जग भूंचि है। पलक पहर छिंन मांहि नंगारा कूंच है।। २।। सुरति सुहंगम नेश पेश होय बावरे, बदी बिधारो बेगि धनी कूँ ध्याव रे।। ३।। दम की डोरी खोज दरीबा खूब है। अगर दीप सतलोक अजब महबूब है।। ४।। सुत्र पुत्र गृह नार छार सब गात रे। हरिहाँ महबूब कासे लाया नेह, संगि नहीं साथ रे।। ५।। हंस अकेला जाय हिरंबर हेत रे। शब्द हमारा मान नाम निज चेत रे।। ६।। कोतिल घोड़े पीड़ अरथ संगि पालकी। हरिहाँ महबूब गज गैंवर दल ठाठ, निशानी काल की।। ७।। हक्क हलाल पिछांनि बदी कर दूर रे। याह मुरगी रब्ब रूह गऊ क्या सूर रे।। ८।। हिंदू खाहि हदीस मुसल तज मांस रे। तूं जाने दरियाव तिरूया है कांस रे।। ९।। तीतर चिड़ी बुटेर भखे हिलवांन रे। हरिहाँ महबूब मुलां बंग पुकारि, अलह रहमांन रे।। १०।। रमजानी रमजांन ज्ञासि चोसा दीया, पकर पछाड़ी रूह कहो यौह क्या कीया।। ११।। खूंनी खूंन गुजार खाल कूँ काढ़ता। देखे रब्ब रहमांन गले कूँ बाढ़ता।। १२।। ऐसे बूडैं नाव होत है गरक रे। हरिहाँ महबूब कहता दास **गरीब,** नाम निज परखि रे।। १३।। १।। महमूंदी चौतार हजारा पहरता। सुलतानी कूँ देख बलक सा शहर था।। १।। सोलह सहंस सुहेली पदमनी भोग रे। सतगुरु के उपदेश लिया तज जोग रे।। २।। तुरी अठारा लाख ऊँट गैंवर घनां। शीश महल में सैल बाग नौलख बन्या।। ३।। कस्तूरी तन लेप गुलाबी गंधि रे। हरिहाँ महबूब खाना खाते खूब, पदमनी चंद रे।। ४।। दल बादल गज ठाठ अदलि तूमार रे। सहदांने सहनाय महल धूमार रे।। १५।। हीरे मोती मुकता ज्वाहर लाल रे। निश दिन खूबी खैर खजाने माल रे।। ६।। लाग्या बांन बिहंगम शब्द सबूह रे। भलका मारूया खैंच दूह बर दूह रे।। ७।। राज पाट गज ठाठ छाड़ कफनी लई। सार शब्द की चोट तोर बखतर गई।। ८।। नजरी नजरि निहाल जिन्दा गुरु पीर था। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब तबीब कबीर था। ९।। २।। कहा हुवा दो साखि शब्द सुनि सीख रें। बंकी पगड़ी बांधि पान चाबि पीक रे।। १।। तकहिं बिरांनी नार तार नहीं काढ़ता। अंतरि विपै बिकार गली दर हांढता।। २।। तजि बेस्वा का साँग भाँग क्या पीजिये। ककड़ अत्र अतीत धूंम क्यूं दीजिये।। ३।। कैफी कैफ बिसार अमल में चूर है। हरिहाँ महबूब गोसत मदिरा खांहि, सु कुत्ता सूर है।। ४।। कागज पुड़ी बनाय नास न लीजिये। यौह भिसती दरबार क्यों धूंमा दीजिये।। ५।। नैंन बैंन सुर सैंन रसन में राम हैं। पूरि रह्या जगदीश केवल विश्राम है।। ६।। राम रसायन

छाडि ककड़ स्यौं नेह है। हरिहाँ महबूब दीन्हा पाखि बिसार पड़ी मुख खेह है।। ७।। आक धतूरा नींब सुसरढ़ा खात हैं। जनम जनम जुग भूल जु पिछली दात है।। ८।। अमल नाम कर्तार कर्म कॉंजी पड़ी। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब सुहंगम सत जड़ी।। ६।। ३।। है मौला मसतान मुलायम महल रे। चीन्हों शब्द सिताब जीवना सहल रे।। १।। राजा रंक फकीर फनां होय जाहिंगे। बिना बंदगी बाद बहौत पिछतांहिंगे।। २।। जनम पदारथ पाय पुरुष जान्या नहीं। गीदी गदहे श्वान शब्द मान्या नहीं।। ३।। लेखा बारम्बार धर्मराय लेत है। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब कसौटी देत है।। ४।। ४।। मौला मगन मुरार विश्वंभर चीन्हि रे। दिल अंदर दीदार अरश दुरबीन रे।। १।। इला पिंगुला फेर सुषमनां ध्याव हीं। त्रिकुटी झरोखे बैठ परम पद पाव हीं।। २।। झिलकैं सिंध अपार मुकित का धाम रे। अचल अगोचर पुरुष देख बरियांम रे।। ३।। निकट निरंजन नूर जहूर जुहारिये। मीनी मारग खोज सिंध यौं पारिये।। ४।। नैंनों ही में लाल बिशाल अलेख है। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब रूप नहीं रेख है।। ५।। ५।। बिना मूल अस्थूल गगन में रमि रह्या। कोई न जानै भेव सकल सब भ्रम रह्या।। १।। अछैवृक्ष बिसतार अपार अजोख है। नहीं गाम नहीं धाम मुक्ति नहीं मोख है।। २।। छत्र सिंघासन सेत पुरुष का रूप है। अवर्ण वर्ण विचार न छाया धूप है।। ३।। देख पदम उजियार परख नहीं आव हीं। कलम लिख्या सो होय टरै नहीं भावहीं।। ४।। अविगत पूरण ब्रह्म परसि प्रवानि रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब जु शब्द पिछानि रे।। ५।। ६।। शिव ब्रह्मा का राज इन्द्र गिनती कहां। च्यार मुकित बैकुण्ठ समझि येता लह्या।। १।। संख जुगन की जूंनि उमर बड़ धारिया। जा जननी कुरबांन सु कागज पारिया।। २।। येती उमर बिलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगै न कान न भेटे संत रे।। ३।। सौ करौरि मंडलीक जु सावंत संगि हैं। सूरे अनन्त अपार परे बे नंग हैं।। ४।। लंक सरीखा कोट चोट पैमाल है। मरना है मैदांन सही सिर काल है।। ५।। रावण की रस रीति रंगीला राज था। चौदह भुवन विमान मनो मई साज था।। ६।। इन्द्र वरुण कुबेर सुमेर सलांमियां। हो हो गये अनंत घनें बौह नामियां।। ७।। तेतीस कोटि की बंधि बिथा सुनि लीजिये। बांधि ल्याया शशि भान सजा सुर दीजिये।। ८।। पकरे जौरा काल सु कूप उसारियां। ऐसा छल बल कीन्ह सु रावण मारियां।। ६।। फोकट राज अरु पाट पिटेगा अंत रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब भजो निज कंत रे।।

१०।। ७।। एक लख जाकै पुत्र सवा लख नातियां। रावण राज अपार जु भिंन न भांतियां।। १।। कुंभकर्ण से बीर हमीर हठील हैं। बलवंत अपरंपार जु अगम अडील हैं।। २।। योजन च्यार मुकाम अटारी रंग है। जहां रावण की सेज मंदोदरि संगि है।। ३।। त्रिलोकी की ऐस देख पल में गई। चौकी बैठे दूत छार मुख में दई।। ४।। एक रती भर कंचन मांग्या न मिल्या। रावण राज बिराज देख छारहीं रल्या।। ५।। तप जप कौने काज राज की आश पर। बजर पर्या है आंन रावण की ल्हाश पर।। ६।। पल में खंड बिहंड सकल सैंना गई। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब चरित्र है दई।। ७।। ८।। क्या राजा क्या रीत अतीत अतीम रे। जोधा गये अपार न चंपी सीम रे।। १।। याह दुनिया संसार पतासा खांड का। जौंरा पीवै घोल बिसरजन मांड का।। २।। काम क्रोध मद लोभ बटाऊ लूट हीं। हिरसि खुदी घट सु बौह विधि कूटहीं।। ३।। संसा शोग शरीर सुरसरी बहत है। न्हांहीं चौदह भुवन गवन सा रहत है।। ४।। दुरमति दोजख भाहि बलै बहु भांति है। सतगुरु भेटा होय तो निहचै स्वांति है।। ५।। आजिज जीव अनाथ पर्या है बंधि में। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब जगत सब फंध में।। ६।। ९।। अकलि विकलि होय जाय सु सतगुरु बाहरी। ब्राह्मण के घट मांहि जु बसै बलाहरी।। १।। ममता का दरियाव झिकोले खात हैं। सुरनर मुनिजन पण्डित सब ही न्हांत हैं।। २।। कहर लहर के लोर कुटल काली नदी। अपनी अपनी बार सबै बैठे गदी।। ३।। इन्द्र उर्वशी छाडि सु गौतम के गया। चंद लगी मृगछार चरित्र क्या भया।। ४।। शुक्ल कूकड़ा होय कहुक प्रभाति रे। इन्द्र सहंस भग कीन्ह दई की दाति रे।। ५।। संपट शिला होय गई अहल्या देख रे। एक काम के बांन किये बहु छेक रे।। ६।। काम नदी मति न्हाहि टरै तो टारिये। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब रतन क्यूं जारिये।। ७।। १०।। रतन जतन से राखो पारा बिंद रे। कांमनि काल बिहाल समझि ले अंध रे।। १।। शब्द भोग संजोग सु शाला कर्म है। सनकादिक कूँ बूझि यौही निज धर्म है।। २।। मथनी सृष्टि चलाय जगत गारत कीया। जैसे परे पतंग देख दीपक दिया।। ३।। हाड चाम का गाम सु घोरारंभ रे। सप्त कुण्ड तिस मांहि जु कहैं हुरंभ रे।। ४।। नरक नगीना देह धूर का धाम है। दुर्वासा से देव अटके काम है।। ५।। काम भँवर कुच लाग उर्वशी भोगिया। तिहूँ लोक है कार सु बौरे जोगिया।। ६।। उर्वशी लग्या श्राप शरीर तुरही भई। हांढ़ी घरि घरि बार कुमति घट में छई।। ७।। तीन बजर की मार

परी तब आंनि के। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब समझि ले जांन के।। ८।। ११।। याह दुनिया संसार सरीकति जाहिंगी। निहचै बिसवे बीस सु जौंरा खायगी।। १।। साची बात परेर न पूरा पाईया। देखो अंध गंवार कहां डहकाईया।। २।। पाहन से नघ फोर खुसी फिरता खरा। इस ते आगै और कहा होगा बुरा।। ३।। खोया लाल रतन जतन जान्या नहीं। सतगुरु अरथ बिचार शब्द मान्या नहीं।। ४।। कोटि पाप सिर ओट जगत संगि जात है। खाली रह्या खलील लग्या क्या हाथ है।। ५।। पारासुर से देव काम कूँ दरमले। जाये ब्यास बशेष खेवटनी कूँ छले।। ६।। ताहूँ बिंद के ब्यास जु ताहि मछोदरी। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब रही कहां सोधरी।। ७।। १२।। जल की बूंद बिचार साज जिन साजिया। दस द्वारे की देह बनाय निवाजिया।। १।। जन्म कर्म लिख दिया लिलाट तुम्हार रे। खांन पांन पहुंचाया समझि गँवार रे।। २।। दंत नहीं जदि खीर दीया था खांन कूँ। राख्या जठरा मांहिं तुम्हारे प्राण कूँ।। ३।। मल मूत्र के बीच विश्वंभर राखिया। ऐसी जठरा मांहि हंस भला किया।। ४।। जूंनी संकट काटि जू बंधि छुटाईया। आया जग के मांहि सु पीर पूजाईया।। ५।। बाजैं ढोल बिलल गुललड़ गावहीं। नाचै चुड़ैल धनी नहीं ध्यावहीं।। ६।। निहचै नूर जहूर धनी की दात हैं यौह बालक बिलकंत समझि कुछ भ्रांति है।। ७।। ऐसा जुलम गुदार गदहरी गध की। पूजैं देई धाम सु निंद्या पद की।। ८।। मढी मसानौं जाई कर बोक चढ़ाव हीं। तोबा तालिब देखे गला कटाव हीं।। ९।। डूबै पुरुषा नारी पुत्र समेत रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब धनी नहीं हेत रे।। १०।। १३।। दुर्योधन से राजा खाजा गीध का। ऐसा जगत उपास चंद ज्यूं ईद का।। १।। ग्यारह खूहनि गुल अतुल अपार रे। हथियन हलके देखो कोटि हजार रे।। २।। रापति राज जहूरा तुरिया सोहनी। इकोतर बीर हमीर पदमनी मोहनी।। ३।। द्वादश योजन छत्र फिरै था शीश रे। दुर्योधन की ल्हाश सु जंबक घीस रे।। ४।। कहां गये दुर्योधन सैंना संगि थी। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब कैफ ज्यूं भंग थी।। ४।। १५।। दुर्योधन जग मांही राजा भारथी। पंडौं अरथ विमान कृष्ण से सारथी।। १।। नष में तीन्यूं लोक अलोक अनंत है। भक्त बछल भगवान सु पंडौं संत हैं।। २।। लख संधानी बांन बियांन समझि रे। भक्ति बछल जिन संग सकै को गंज रे।। ३।। द्रोपदी दारुण माया दीखे इस्त्री। अंधे को कोपीन जु पारै बसतरी।। ४।। पंडौं बाजी हार गये हैरांन रे। इनकी द्रौपदी नार न पावै जांन रे।। ५।। सिर

धर सुवर्ण कलश द्रौपदी आईया। दुःशासन हंकारे कोप रिसाईया।। ६।। तुंही तुंही कर टेरी द्रौपदी जानराय। उबरे गज रु ग्राह सु भंजन काल राय।। ७।। दुःशासन कूँ चीर पकर पल्लू गह्या। भीष्म द्रोणा कर्ण मुखों कुछ ना कह्या।। ८।। ऊँचे सुर से टेरी द्रौपदी आईया। भक्त बछल भगवान सो चीर बढ़ाईया।। ९।। पल में चीर अनंत चिदानंद चित में। जीमै तीन्यूं लोक द्रौपदी हथ में।। १०।। पंच भरतारी नारि न परदा पाट ही। सती लग्या कलंक समुंद्र घाट ही।। ११।। द्वापर त्रेता लाय लखै गति कौंन रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब होत अन हौंन रे।। १२।। १५।। भीष्म द्रौंणा कर्ण धुरौं धुर नाटिया। दुरजोधन की संगति तीन्यूं फाटिया।। १।। भीष्म खाये बाण मुखे मुख मार रें। द्रौणाचारज चूक परी घनसार रें।। २।। कर्ण परे दल मांहि बिहंडम हो गया। कुल कूँ लाया काट जनम कूँ खो गया।। ३।। ग्यारा सात रु बीच अंड दल घेरिया। छूटैं गैबी बाण सु कंप सुमेरिया।। ४।। धरणि धमक भय खाय कंपि शशि सूर रे। लख संधानी बाण चले भरपूर रे।। ५।। तुंही तुही कर टेरी दासी दरश की। कंपे चोदह भुवन खबर नहीं कुरश की।। ६।। बीर खेत बरियाम मंडे हैं भारथी। अर्जुन जोध्या भीम करत है आरती।। ७।। बजे दुंदई नाद पंचायन शंख रे। रामचंद्र चढ़ि धाये जैसे लंक रे।। ८।। ऐसा भारथ कीन दीन थरकी दुनी। दुर्योधन दल मांहि परे ऐसे सुनी।। ९।। बेर बेर की टेर सुनत है जान राय। रखिये पांचौ अंड धनी तूं ध्यान राय।। १०।। मैं दासी हूँ तोर जुगन जुग संग की। चरण कमल चित मांही चेरी अंग की।। ११।। करुणामयी दयाल दया कर राखिया। बिल्ली तनें बिश्वंभर आव न पाकिया।। १२।। रापति इन्द्र तना घंटाला टूटिया। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब अंड बंध छूटिया।। १३।। १६।। अठारह खूहनि गैब हुई पल मांहि रे। सुरनर मुनिजन गंधर्व गोते खांहि रे।। १।। कैंरों राज बिराजी पल में होत है। यौह जीवन जग मांही देखो तोत है।। २।। असुर अंसा सब गये सुरौं से खिलस रे। जैसे बांस बसीन पतंब बिन जलस रे।। ३।। उर मं अगनि उछाल कुचाल कुबुध्दि का। हरिहाँ महबूब दास गरीब गये सब रंक रा।। ४।। १७।। गये बैंन बलिराय बिलंब न लागिया। सौ जगि आरंभ कीन्ह सुनों बड़ भागिया।। १।। बावन रूप स्वरूप छले बलिराय रे चाह्या सुरग समूल रसातल जाय रे।। २।। त्रिलोकी त्रिपैंड विश्वंभर मापिया। अरध पैंड नहीं पपई बलि जहां कांपिया।। ३।। आधे पग कूँ पीठ निवाय परे बलि तीछ रे। राख्या सुरपति राज विश्ंभर बीच

रे।। ४।। गर्व प्रहारी साहिब है धुकते धड़े। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब भक्ति आगै लड़े।। ५।। १८।। जानैं जान अजान सकल की जानता। घट घट मं अविनाशी पूर्ण प्राण था।। १।। अविगत भिन्न अभिन्न महल में महल है। हाजरि नाजरि देख कहो क्या गहल है।। २।। अलख पलक के बीच अकाशी ईश रे। सुरति निशाने लाय देखि जगदीश रे।। ३।। सेत वर्ण शुभ रंग बिरंग बिचार रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब देख दीदार रे।। ४।।१९।। हिरदै कपट कमाल लाल पावै नहीं। बौहत पड़ी भ्रम भूल गांठ गहरी गही।। १।। मुरजीवा मन मार महोदधि पैठ रे। अनहद शब्द घमोर तहां टुक बैठ रे।। २।। त्रिकुटी कँवल पर सिंध सरोवर सुंन रे। हूँठ हाथ गढ़ छाडि तहां रखि मन रे।। ३।। लगै कोट परि चोट अकार पसार है। उपजे सेती भिन्न सु वस्तु नियार है।। ४।। अलख अलीलं पदम सु दम जहां लाईये हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब रहत घर पाईये।। ५।। २०।। नक सरवर पर तरवर शाख न मूल रे। अछै वृक्ष अस्थान जहां मन झूल रे।। १।। पींघू अनंत अपार परे तिस धाम रे। तत्ववेत्ता परमहंस बसैं निकहाम रे।। २।। समाधान संजूत सलेमाबाद रे। अजर अमर घर देखो आदि अनादि रे।। ३।। बैकुण्ठ भिस्त बिसार नाश हौये जात है। चलि हंसा सतलोक नवेला साथ है।। ४।। अगर डोर चढ़ि देख झिलमिली शुन्य रे। अजर अमर घर बसो पाप नहीं पुन्य रे।। ५।। तहां वहां पदम अंनत परेवा जांहिगे। अछै वृक्ष फल हंसा तहां वहां खांहिगे।। ६।। अगम भूमि अस्थान प्राण जहां चालि रे। अनंत कोटि तहां सिध्दि अमीते माल रे।। ७।। अविगत पुर का राजा अविगत नाम है। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब हमारा गाम है।। ८।। २१।। परमानंद की पीठ लगी प्रवानि रे। साहूकार अपार बसैं धुनि ध्यान रे।। १।। सौदागर एक पीठ बनज कूँ आईया। सतगुरु जा का नाम किन्हे नहीं पाईया।। २।। प्रपट्टन शहर हमार जो अधर अधार है। अविगत आप अलेख जु शाहूकार है।। ३।। केशव नाम कबीर खुलासा फिरत है। अनन्त कोटि संग बोडी बालद ढुरत हैं।। ४।। धरती धरैं न पाव सिरौं नहीं सींग रे। बालद बिसवे बीस मिरच मध्य हींग रे।। ५।। अजर मुनक्का दाख छुहारे छोति के। केशव संग बनजारे एकै गोत के।। ६।। केसर और कसतूरी पांन सुपांरियाँ। पचरंग झंडे लंबे अमर अटारियाँ।। ७।। तंबू तनें अपार सुपेद सुरंग रे। सप्तसुरों के गायन ताल मृदंग रे।। ८।। महमूंदी और खासे कचिया बाफते। तकुवै लग्या न तार सुहेली ना कते।।

६।। पीतंबर पहरांन सुरों की सैल रे। आये काशी धाम लाद कर बैल रे।। १०।। हे हरि हे हरि होय आन बालदि ढुरी। नूर तेज के संत जहां मजलसि जुरी।। ११।। चौपरि के बैजार लगी है चाँदनी। बिंजन भोजन पाक न चीपी रांधनी।। १२।। गेहूँ चावल चून मिठाई दाल रे। घृत सहत पकवान परी जहां पाल रे।। १३।। गैबी अरश विमान सुरौं की सैल के। कोई न जानैं भेव जीव सब लैल के।। १४।। शाह सिंकदर सुन कर मेले आईया। हरिहां महबूब कहता दास गरीब भेद नहीं पाईया।। १५।। २२।। एक चद्दरि एक गुदरी सतगुरु पास रे। हम नहीं निकसै बाहर होय है हांस रे।। १।। शाह सिंकदर सुनि कर डेरे जात है। बोले माय कबीर यहाँ कुछ घात है।। २।। इन कपटी कुलहीन लगाया काट रे। वहां केशव बनजारा कर हैं साट रे।। ३।। जहां शाह सिकंदर सतगुरु गोसटि कीन्हियां। तुम कर्ता पुरुष कबीर तिबे उहां चीन्हियां।। ४।। हम रेजा कपरा बुनि है आत्म कारनैं। ठारा लााख दल भेष पर्‍या है बारनैं।। ५।। खांन पांन घर मांहि नहीं है मोर रे। षट् दल कीन्ही हांसि कीया बहु जोर रे।। ६।। मुसकल की आसान करेगा जांनि कर। एक केशव बनजारा उतर्‍या आंनि कर।। ७।। सुनियौं शाह सिंकदर साची भाषि हैं। काशी के बैजारि द्रव्य बहु लाख हैं।। ८।। गुदरी गहनें घर कर सीधा देत हैं। गौंडी टोडी और बिलावल लेत हैं।। ९।। रासा निरगुण नाम हमारे एक है। हरिहां महबूब कहता दास गरीब मुझे कोई देख है।। १०।। २३।। कुटल भेष कुलहीन कुबुद्धि कूर हैं। भाव भक्ति नहीं जानैं श्वाना सूर हैं।। १।। चल मेले का भाव देख फिर आवहीं। उहां केशव बनजारा भूल भुलावहीं।। २।।
एक हिलकारा आनि तंबू में ले गया। केशव और कबीर सु मूला दे गया।। ३।। तीन दिवस दरवेश महात्म मलावै। गैबी फिर नकीब कुंच कर चालवै।। ४।। गंग उतरि कर गैब हुये दल भिन्न रे। कहां गये बनजारे बोडी अन्न रे।। ५।। केशव और कबीर मिलत एकै भये। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब तकी रोवै दहे।। ६।। २४।। शाहतकी नहीं लखी निरंजन चाल रे। या परचें से आगे मांगै ज्वाल रे।। १।। शाला कर्म सुभान सरीकत देखिया। शाहतकी निरभाग न कागज छेकिया।। २।। शाह सिकंदर चरण जुहारे जान कर। तुम अविगत पुरुष कबीर बसो उर आंनि कर।। ३।। तुम खालिक सरबंग सरूप कबीर हैं। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब पीरन सिर पीर है।। ४।। २५।। यौह सौदा सति भाय करो प्रभाति रे। तन मन रतन अमोल बटाऊ साथ रे।। १।। बिछरि जांहिगे मीत

मता सुनि लीजिये। बौहर न मेला होय कहो क्या कीजिये।। २।। सील संतोष विवेक दया के धाम हैं। ज्ञान रतन गुलजार संगाती राम हैं।। ३।। धर्म धजा फरकंत फरहरैं लोक रे। ता मध्य अजपा नाम सु सौदा रोक रे।। ४।। चले बनजुवा ऊठि हूँठ गढ़ छाडि रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब लगै जम डांड रे।। ५।। २६।। जम जौंरा का जाल काल खग शीश रे। हैफ होत छिंन मांहि सुमरि जगदीश रे।। १।। ऐसा साज बनाय बिसर नहीं जाईये। जनम पदारथ खोय बहुर कहां पाईये।। २।। जम जौंरा का जोर कठोर बिजोग है। सर्ब लोक सिर साल सु दीरघ रोग है।। ३।। जे जानैं तो जानि शब्द कूँ मान रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब होत है हान रे।। ४।। २७।। जम जौंरा जल थल में छोडै है नहीं। उड़े गड़ें गढ़ मांहि न बंचत है दई।। १।। सरब लोक सब ठौर सु जम की मार है। यौह घट खंड बिहंड़ मिलै तन छार है।। २।। जमका मुगदर ओट बिसासी क्या लह्या। क्या हासिल कलि मांहि सतगुरु कूँ कह्या।। ३।। अनंत तरौं की मार अपार अतुल है। जम जौंरा जग मांहि देख जाजुल है।। ४।। कहां चकवे गये छह उदे बिच राज थे। मनोमई मकसूदन गैबी साज थे।। ५।। अजब नवेली तरिया पुरिया लज सिज्या। तारा मंडल तेज फरकत हैं धजा।। ६।। चंद सूर शशि भान गरद में झंपिया। हरियाँ महबूब कहता दास गरीब जमौं से कंपिया।। ७।। २८।। सावंत और मंडलीक गये बहु सूर रे। राजा रंक अपार मिले सब धूर रे।। १।। रूई लपेटी आग अंगीठी आठ रे। कोतवाल घट मांहि मारता काठि रे।। २।। नरक बहै नव द्वार देहरा गंद रे। क्या देख्या कलि मांहि पर्‌या क्यूं फंध रे।। ३।। हासिल का घर दूर हजूर न चालता। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब हटी में लाल था।। ४।। २९।। हाट पटन बैजार बनज फीका पर्‌या। जम किंकर कूँ तौंक आंन गल में जर्‌या।। १।। मार मुहें मुंह खाय शीश धड़ पीटहीं। जम रोकै नौ द्वार गला और घीटहीं।। २।। रिंचक स्वाद शरीर सिंघासन सेज रे। परी जुगन जुग भूल न छाडै हेज रे।। ३।। जैसे मध की माखी मधुवा भोग रे। छार दई मुख मांहि लूट हैं लोग रे।। ४।। ऐसा संग्रह कीन्ह संगि जो चालि हैं। हरदम अजपा नाम जपौ यौह माल है।। ५।। दौरा दूत न चोर तिसै नहीं लूटि हैं। जूंनी संकट बंधि नाम से छूटि हैं।। ६।। उर में आसन मार खजाना खूब है। तप जप कौने काम बेचनां दूब है।। ७।। लालौं के ब्यौपार पलक टुक मूंदि रे। खैर चढ़्या मति खांहि अज्ञानी गूंद रे।। ८।। कांटे कुटल करीर सरीर झरोर है। चल

सतगुरु के देश जो पदम करोर हैं।। ९।। सूली सेज सुरंग तुरंग नचावते। जिन कें नाम न गाम कहीं नहीं पावते।। १०।। मरना है महबूब हक्क दर हक्क रे। नजर करो निरतावो पदम परख रे।। ११।। सुजनी सेज बिछाइ कर चौंर ढुरावतें। जा घर रमनी रंभा रागी गावते।। १२।। सूंने महल रु मंदिर बासैं काग रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब जगत रिनभाग रे।। १३।। ३०।। खलक मुलिक कूँ देख संगाती को नहीं। जम का है मुकतार शीश बैठे बहीं।। १।। होगा हाल बिहाल शब्द कूँ शोधि रे। पुत्र बिसार्‌या माता बालक गोद रे।। २।। और सुहेली आंनि सैंन बतलाईया। कण्ठ धुक धुकी पाय ज्ञान समझाईया।। ३।। ऐसे मौला खोया महल के मांहि रे। हरियाँ महबूब कहता दास गरीब वृक्ष मध्य छांह रे।। ४।। ३१।। न्यारा कबूं न होय निरंजन देह से। रह्या सकल घट पूर परम सुख नेह से।। १।। ज्यूं दरिया मध्य लीन मीन मघ जोहि रे। पंछी पैर अकाश खोज नहीं होय रे।। २।। बिन पंखौं के भौंरा उड़ै आकाश कूँ। इला पिंगला सुषमन शौधो श्वास कूँ।। ३।। गूंगे कूँ गुड़ खाया कैसे जानिये। सैंन सुरति से पावै बचन पिछांनिये।। ४।। काली पीली सुरही धौली धैंन रे। सेत वर्ण सब दूध सकल इक बैंन रे।। ५।। नहीं ऊँच नहीं नीच निरंजन जाति रे। कर्ता के सब मांहि दिवस और रात रे।। ६।। सोहं साक्षी भूत न दूसर कोय रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब धनी कूँ जोहि रे।। ७।। ३२।। बाजीगर की बाजी लेखा हाटि का। सूका गुड़ गुड़यांन सोई भा लाट का।। १।। गुड़ पैसे का सेर बिकै बिष टांक का। भेड़ कतरनी ऊँन सु धागा पाट का।। २।। हरिहाँ महबूब एक नागौरी बैल निरख कर नाट का। जिन की बुध्दि नहीं ठौरि पीवैं मध माट का।। ३।। पोसत भांग तमाखू दुश्मन काट का। हरिहाँ महबूब गोसत खांहि गुलाम छुरी की फांट का।। ४।। सुलतानी बाजीद धन्ना था जाट का। नानक और रैदास भेद कहैं बाट का।। ५।। भरथरि गोपीचंद जोग एक ठाठ का। हरिहाँ महबूब गोरख दत्त कबीर जु तिलक लिलाट का।। ६।। इला पिंगला सुषमन द्वार कपाट का। त्रिबैंनी के तीर पियाला छांट का।। ७।। गगन चढ़्या नहीं जाय कमंद है आंट का। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब महल बैराठ का।। ८।। ३३।। कुसटी होवै संत बंदना कीजिये। बेस्वा के विश्वास चरण चित दीजिये।। १।। चुगल चोर चिंडाल कूड़ नर नीच हैं। जाका हरि से हेत सु परमल सींच है।। २।। कपटी लपटी लोभी माया सूंम हैं। तासे कर ले पीति नाम दर रूंम हैं।। ३।। दानी ज्ञानी

दाता नाम न जांनहीं, जाके सिर पर मार बीस दस पानहीं।। ४।। दीया लुणै सब कोय सकल संसार में। बिना बंदगी नहीं बड़े दरबार में।। ५।। अजामेल अधिकार किये अघ पाप रे। नारद संत सहेत सु आये आप रे।। ६।। सुरापान मध पीवन बेस्वा भोग रे। जाकै भक्ति विलास किया अन जोग रे।। ७।। अजामेल वैकुण्ठ पठाये देखि रे। गणिका चढ़ी विमान सु भक्ति विवेक रे।। ८।। किया कर्म का नाश नाम चिनघी परी। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब बिना बारी बरी।। ९।। ३४।। अर्जुन जुमला वृक्ष उड़े अकाश कूँ। कर्म पीछले भोग गये कैलास कूँ।। १।। नारद चिनघी डारी मेट्या कर्म रे। नल कूबर दिया श्राप किया अधर्म रे।। २।। औगुण मांहि गुण कर देवैं संत रे। भला करत होय बुरा सो दूत्र दैंत रे।। ३।। गीध व्याधि और भीलनी भाव न जानहीं। जा कूँ कैसी भक्ति दई धुनि ध्यान हीं।। ४।। सहंस अठासी देव कोटि तेतीस रे। ब्रह्मा विष्णु महेश सुधां जगदीश रे।। ५।। इन्द्र वरुण कुबरे जहां धर्मराय है। अनंत कोटि सुर संत सु जगि उपाय है।। ६।। पण्डित द्वादश कोटि विप्र सहदेव से। खेवट बिना जिहाज कहो कौन खेब से।। ७।। जहां पुंडरीक पारासुर नारद ब्यास रे। गोरख दत्त दिगंबर और दुर्वास रे।। ८।। जां मारकंड पिपलादिक रूंमी ऋषि रे। कपिल मुनि जगि मांहि न बाज्या शंख रे।। ९।। नौ जोगेश्वर निर्भय कागभुसंड रे। जहां बावन गादी जनक भक्ति प्रचंड रे।। १०।। जहां शुकदेव ध्रू प्रहलाद भक्ति के खंभ रे। जगि रची जगदीश किया आरंभ रे।। ११।। बज्या सुपच का संख स्वर्ग में धुनि सुनी। गण गंधर्व गलतान सकल ज्ञानी गुनी।। १२।। बालनीक के शंख किये सुर मांत रे। द्रोपद सुता के दिल में आई भ्रांति रे।। १३।। कणि कणि बाज्या संख स्वर्ग भई सैल रे। पंडौं कर्म बिधंस भये सब मैल रे।। १४।। ऐसा अचरज कीन्ह दीन के सिर धरी। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब धनी नर हर हरी।। १५।। ३५।।

अथ बैत नसीतनामा

ऐसी बैत पढ़ो रे भाई उलटि अजूद अकलि घर जाई।। १।। कलमा पाख पियाला नूरी। करि पांचों बिसमल बेग सबूरी।। २।। सुंन मं सुंनति ध्यान समोई। मुरदी काटत खलड़ी रोई।। ३।। काफर कुफर करै बद फैला। इस खाने से है मन मैला।। ४।। मुरगी बकरी चिड़ी बुटेरी। सुर गऊ में एकै सेरी।। ५।। जाकें रूंम रूंम में देव असथाना। दूध मही और घिरत समाना।। ६।। जा मं ऐसे रतन

रसायन भाई। सो बिसमल कहौ किन्हि फुरमाई।। ७।। कंठ कटै नहीं साहिब राजी। मुरगी बकरी मारै काजी।। ८।। काजी मुलां अजब दिवांना। मुरदफरोस हलाहल खाना।। ६।। क्या मानस क्या डांगर ढीका। एक रूह सरबंगी जीका।। १०।। साखी :- सकल बियापी रमि रह्या, मुरगी बकरी मांहि। **गरीबदास** गल गऊ के, करद दीजिये नांहि।। ११।। क्या बेटा क्या नारी देवा। सब घट बिसमल एकै भेवा।। १२।। हक्क सरे का सुनि ले भाईं गल काटै सो कुफर कसाई।। १३।। हक्क सरे में हक्क सिरि होई। अपना लेखा दे सब कोई।। १४।। पशू पिरांनी मार गिराया। ता ऊपर ले करद चलाया।। १५।। वहां तो मींही महल अलह का आदू। यहां तो गोसत खांहि रु तोड़ै बाजू।। १६।। गोसत खांहि करै कुफरांना। जिन दरगह का महल न जान्या।। १७।। माटी की ईंट राज चिन आया। सो दरगह का महल बताया।। १८।। जहां पांच बख्त की करैं निवाजा। दिल बीच सिकरा अंतरि बाजा।। १६।। पशू पिरानी दृष्टि समाया। सो मन में बिसमल ठहराया।। २०।। तीसौं रोजे नहीं सकूंना। सांझ परी जब करते खूंनी।। २१।। खूंना खालिक हूँ नहीं भावै। काजी मुलां मुरगी खावैं।। २२।। साखी :- खूंनी खूंन न कीजिये, आत्मघात पिरांन। **गरीबदास** दरगाह में, अदला बदला जान।। २३।। उस मुरगी का होगा खोजा। जांहि रिसातल तीसों रोजा।। २४।। मुरगी बकरी हुजरे आई। जब क्या जुवाब करोगे भाई।। २५।। आब न खाख न बाद न आतं। ब्रह्मंड पिंड जब कहां समातं।। २६।। तबक नूर सिरजे ना भाई। जब कहां होते गाय कसाई।। २७।। नहीं महमंद नहीं महादेव। जब बिसमलह कहो कहां साधे।। २८।। आदम हवा नहीं था हुजरा। जब कौन पुरुष से करते मुजरा।। २६।। देखा देखी दीद बरदीदं। साबति मूरति सकल सहींद।। ३०।। सकल सरे की कौन कुरांना। तुम्ह सरबंगी साहिब नहीं जाना।। ३१।। ना थे पीर पैगंबर पैहरी। आदम ईदम मरद न मैहरी।। ३२।।

साखी :- गरीब, होते धूंधूंकार जदि, धर अंबर आकाश। जब बिसमलह कहाँ थी, पिंड प्रान नहीं श्वास।। ३३।। घर घर बिसमल प्रगट पेड़ा। आखरि होगा न्याव नबेड़ा।। ३४।। ना थे हिंदू मुसलमाना। राम रहीम न दवा सलामा।। ३५।। जो चेते तिस भिसति पठावां। बिसमलह कूँ दोजिख ल्यावां।। ३६।। होते नबी मुहंमद पीरा। जाकूँ मुरशद मिले कबीरा।। ३७।। शंकर दीप में आंनि चिताया। शब्द महल का भेद लखाया।। ३८।। कौन मुहंमद

मजहब तेरा। रब्ब की रूह न कीजे हेरा।। ३६।। धुर की फरदी मोहर न कोई। देखा देखी बिसमल होई।। ४०।। झोटे बैल हिते बहु भाई। सूर गऊ रब्ब रूह सताई।। ४१।। लवा बुटेरी तीतर भूनां। खालिक बिना कौन घट सूनां।। ४२।। मच्छी चिड़ी बौहत सी मारी। रब्ब की रूह करी तरकारी।। ४३।।

साखी :- आबी खांना खूब है, पैसाबी है गंद। **गरीबदास** संसार शठ, समझत नाहीं अंध।। ४४।। जंगली जीव हिते खरगोसा। यौह सब मुहंमद के सिर दोषा।। ४५।। मारे मिरग हिते बहु मोरा। देख्या कादर का नहीं तोरा।। ४६।। अजा भेड़ काटे हिलवाना। एक रह्या अब मानुष खाना।। ४७।। रब्ब की रूह करी ततबीरा। बहुरि कहावै हजरति पीरा।। ४८।। बोलत रूह काट गल खाया। जोति सरूपी हाथ न आया।। ४६।। जो ये रूह तैं भिसति पठाई। तो कर ततबीर कबीला भाई।। ५०।। देखि देखि कर करद चलावो। ऐसी दुविधा मन में ल्यावो।। ५१।। सरे सरीकति ज्वाब न लीजै। तो सकल कबीला बिसमल कीजै।। ५२।। कैसा दीन चलाया भाई। सकल रूह कादर ठकुराई।। ५३।। उस कादर की रूह न पेखी। पकडि पछाड़ि करद गल छेकी।। ५४।।

साखी :- गरीब, दया जिन्हों के दिल नहीं, करद चलावै सोइ। बदला कहीं न जाइगा, शीश कटेगा लोई।। ५५।। छेकें गला कहावैं काजी। कूंके मुलां बंग निवाजी।। ५६।। बंग निवाज देत हो किसकी। काटत गला रूह बहु ससकी।। ५७।। रब्ब रूह का भेद नहीं जाना। झूठा काजी फिरै मुलांना।। ५८।। खालिक बिना खलक ना दूजी। रब्ब की रूह एक नहीं सूझी।। ५६।। उस दरगाह का भेद बताई। बिसमल कौन सरे से आई।। ६०।। इस बिसमल का बड़ा अन्देशा। रब्ब की रूह करैं बौह नेशा।। ६१।। नेश करै और भिसति पठावैं, गूदा तले मांस भखि जावैं।। ६२।। तडफैं रूह हूह गल काटै। गूदा खांहि रक्त रु चाटै।। ६३।। जेती रूह करद गल छेकी। रब्ब राजिक कादर सब देखी।। ६४।। खुदि खालिक मालिक सब मांही। सरबंगी रहता सब ठांही।। ६५।।

साखी :- कुदरत कादर की सबै, तीन लोक विसतार। **गरीबदास** भय मांनि के, करद हाथ से डार।। ६६।। रूह बिना पाई नहीं रोजी। बहुता भार उठाया बोझी।। ६७।। उस रब्ब का खिलखांना सारा। सो तुम काजी करद सिंघारा।। ६८।। दरगह बीच परैगी फरदी। ये सब रूह बहुत सी करदी।। ६६।। अंडा फोरै अर्क निचोरै। साहिब सों चिशमें नहीं जोरै।। ७०।। कुफर किये बद फैल

कमाये। काजी दोनों दीन गवायें।। ७१।। दीन गवाये राह न पाये। कौन हुकम से जीव सताये।। ७२।। येती रूह रसातल मेली। मुलां जेही कूकें छेली।। ७३।। कर ततबीर भखे हिलवानां। धुर का हुकम नहीं प्रवाना।। ७४।। बंग निवाज कहां से आई। रोजा कलमां हमें बताई।। ७५।। कलमा पढ़ें उधेड़े खालं। जाई परेंगे जम कमे जालं।। ७६।।

साखी :– जम किंकर के जाल में, जाई परे हैं जीव। **गरीबदास** हरि भक्ति बिन, बिसरि गये हैं पीव।। ७७।। बहुत कफीक सरे में होंगे। भिसति बीच क्या जबाब करोगे।। ७८।। धर्मराय के तिल तिल लेखा। तुम उस दरगह का महल न देखा।। ७९।। उलटि अजूद खैंचिये तेरा। बहुरि न ऐसा भावै हेरा।। ८०।। अनगिन खूंन किये हैं खूंनी। कोट्यों जीव सताये मौंनी।। ८१।। कैसा दीन दवा किस करते। उस कादर से तुम नहीं डरते।। ८२।। गुरजों मार उड़ेगा चोला। गोसत धर धर पलड़े तोला।।। ८३।। औंडी मार पडेगी तोही। दीन गंवाई चले सब खोई।। ८४।। नख शिख सकल शरीर कटेगा। घर घर गूदा मांस बटेगा।। ८५।। हमरा ज्ञान गुरज गसतीरा। हम कूँ मुरशिद मिले कबीरा।। ८६।। नीर खीर का करौं बियाना। भ्रमें दोनों दीन दिवाना।। ८७।।

साखी :– दहूँ दीन की दया कूँ, लेई गये हैं चोर। **गरीबदास** हरि भक्ति बिन, तातें भये कठोर।। ८८।। राम रहीम एक है भाई दोई कहैं सो दोजिख जाई।। ८९।। अलह अलेख एक कर बूझो। देवल धाम घोर मत पूजो।। ९०।। मन में मक्का महजिम लहिये। हरदम तसबी अन्दर गहिये।। ९१।। मसतक जांनि मसीत पियारे। जा चढ़ि मुल्लां बंग पुकारे।। ९२।। काया महजदि मंझि निवाजा। भिसति बीच सुन अनहद बाजा।। ९३।। मन मुलां महबूब मिलावा। हरदम बंग मढ़ी में ध्यावा।। ९४।। सिदक सबूरी यौह तन खोजा। डारो बिसमलह का बोझा।। ९५।। पांचों कर ततबीर नरेशा। हरदम हाजिर रहना पेशा।। ९६।। छाडो कुफर नफर होई चालो। काया महजदि दीपक बालो।। ९७।। हिरसि खुधी की खाल कढ़ावो। दुविधा दूती महल न ल्यावो।। ९८।।

साखी :– जे दुविधा में मन गया, तन भी तहियां जाइ। **गरीब दास** मन भँवर कूँ, राखों सुंन चढ़ाइ।। ९९।। करि दिल पाख ताख धर ध्याना। नजर निहाल देख रहमाना।। १००।। काम क्रोध कूँ कसो कसौटी। जब सुंन मंडल भाठी औठी।। १०१।। लंपट लोभ मोह बस कीजै। काया महल तखत यौं लीजै।। १०२।। रब्ब राजिक के

ओडे खोजा। कोई जांने संत विवेकी लोझा।। १०३।। नूर तखत से नेहा कीजे। सिदक सबूरी प्याला पीजे।। १०४।। तेज पुंज का महल जहूरा। अविगत कादर झीनें तूरा।। १०५।। जहां अलह अपा दोसत दिलदानां। सरबंगी रहता रहमानां।। १०६।। जास्यों नजर जोड़ि ले धागा। आप अलेख निरंजन नागा।। १०७।। ऐसा तत्व बिसार्‌या भाई। जरै मरै तिस काल न खाई।। १०८।। कादर है कुरदत के मांही। रब्ब रूह कछु पड़दा नांही।। १०६।। साखी :- कादर कुदरत में बसै, कुदरत कादर मांहि। **गरीबदास** पाषान जल, नाहक पूजन जांहि।। ११०।। पड़दा पड़्या भ्रम की फांसी। सूझे नांही अलह अविनाशी।। १११।। है लाहूत मुकाम मवासा। आप अलह जहां तखत खवासा।। ११२।। ख्वाब ख्याल कुदरत सब कहिये। इस कुदरत में कादर लहिये।। ११३।। है महबूब खूब खुदि भाई। जहां बिसमल की फिरै दुहाई।। ११४।। पीर कबीर देत है हेला। दास गरीब दरश का मेला।। ११५।।

अथ पारसी बैत

बंदे जानि साहिब सार वे,
पिदर मादर आप कादर, नहीं कुल परिवार वे।। १।।
जल बूंद से जिनि साज साज्या, लहम दरिया नूर वे।
है सकल सरबंग साहिब, देख निकटि न दूर वे।। २।।
जिन्द जूंनी बे निमूंनी, जागता गुरु पीर वे।
उलटि पट्टण मेर चढ़ना, लहम दरिया तीर वे।। ३।।
अजब साहिब है सुभान, खोज दम का कीन्ह वे।
त्रिकुटी के घाटि चढ़ कर, ध्यान धरि दुरबीन वे।। ४।।
अजब दरिया है हिरंबर, परमहंस पिछानि वे।
आब खाख न बाद आतश, ना जिंमी असमांन वे।। ५।।
अलख आप अलह साहिब, कुरस कुंजि जहूर वे।
अरश ऊपरि महल मालिक, दर झिलमिला नूर वे।। ६।।
मौले करीम खुदाय खूबी, धुनि सहंसर जाप वे।
बंग रोज निवाज कलमां, है शब्द गरगाप वे।। ७।।
निरभै बिहंगम नाद बाजै, निरखि कर टुक देख वे।
अरशी अजूनी जिंद जोगी, अलख आदि अलेख वे।। ८।।
मढ़ी महल न तास के, आसन असंभी ऐंन वे।
पाजी गुलाम गरीब तेरा, देखते सुख चैंन वे।। ६।। १।।
बंदे खोज पैंडा पकरि वे,

लेखा सरे में लीजियेगा, कर धनी का जिकर वे।। १।।
जिकर फिकर फिलादि कर ले, अंदरूनी अरश वे।
हाली मुवाली यादि कीजैं, ना सरे में तरस वे।। २।।
रसना रंगीला राम जपि ले, अलख कादर आदि वे।
पीरां फकीरां परिस ले, पूजो सनेही साध वे।। ३।।
दरगह मिटै ज्यौं डंड तेरा, नेकी निरंतर राखि वे।
ना पैद से पैदा कीया, तूं नाम बिन नापाक वे।। ४।।
दिल सफा कर सैलांन कीजै, बंक मारग बांट वे।
इला पिंगुला सुषमनां, तूं उतर औघट घाट वे।। ५।।
बंक नाल विसाल बहना, है अमीरस अरश वे।
रसना विहूँना राग गावै, बिना चिशमौं दरश वे।। ६।।
प्याला अमीरस पीजिये, खूल्हे हैं बजर कपाट वे।
अरश कुरश अबंध अविगत, कोल्हू चवै बिन लाठि वे।। ७।।
निरभै निरंतर नेम रख, अकलां अनाहद राति वे।
मुक्ता मुलायम यादि साहिब, दूर कर दिल घात वे।। ८।।
जोगी बियोगी बिंद रख, शुन्य में समांना सिंध वे।
हाजरि गुलाम गरीब है, सोला कला रवि चंद वे।। ९।। २।।
बंदे देखिले दरहाल वे,
शुन्य मंडल सैल कर ले, अजब गैबी ख्याल वे।। १।।
जबरूत पर नासूत है, नासूत पर मलकूत वे।
मलकूत पर लाहूत है, लाहूत पर अनभूत वे।। २।।
सुनि ले सहंसर जाप कूँ, शुन्य में सिलहरा बांधि वे।
शेष के सिर ध्यान धरिये, उलटि सर कूँ सांधि वे।। ३।।
तीन मूरति निरख निहचल, पैठि देख पताल वे।
मूल चक्र गणेश गैबी, रंग रूप विशाल वे।। ४।।
डंड धारी भुजा भारी, मुकट की छवि खूब वे।
अगमी अनाहद अदलि है, फजली फजल महबूब वे।। ५।।
टुक उलटि चिशमें सिंध में, झलकै जला बिंब जोरि वे।
अजब रास बिलास बानी, चंद सूर करोरि वे।। ६।।
हलका न भारी है मुरारी, अजब नूरी नैंन वे।
दिल मगज अंदरि महल है, तूं समझि ले याह सैंन वे।। ७।।
एक गुमट अटल अनादि है, ढुरते सुहंगम चौंर वे।
सेत छत्र शीश सोहै, अजब उजल भौंर वे।। ८।।
अजब नूर जहूर जोती, झिलमिलैं झिलकंत वे।
हाजर गुलाम गरीब है, जहां देख आदि न अंति वे।। ९।। ३।।

बंदे देख हाल हिजूर वे,
अरस ऊपरि धनी साहिब, नहीं एक कसूर वे।। १।।
असलि मीरां अधर तकिया, है मगन महबूब वे।
आसिकां रा सिदक अस्थिर, देख ले खुदि खूब वे।। २।।
अधरि कुंजि अनूप बानी, बोलता कुछि ऐंन वे।
उस धनी के ध्यान बिन, जो सबै फोकट फैंन वे।। ३।।
अजर मूरति अभै सूरति, देख ले गुलजार वे।
कुलफ कुंजी खोल्हि खालिक, दम में दीदार वे।। ४।।
चिशम नाजर अलह हाजरि, मैंन फैंन बिसारि वे।
इन्द्री अजूद अजाति पायत, निफस कूँ टुक मारि वे।। ५।।
दम दुरसतर एक कर ले, सुषमनां संभालि वे।
इला पिंगुला नाद हाजी, बिना सरवर पालि वे।। ६।।
सुखन मांनि समूल शाखा, देख वे कुछ देख वे।
गरीब दास निवास गादी, है अलह अलेख वे।। ७।। ४।।
बंदे देखि ले दुरबीन वे,
ऐंनक उघारि किवार खोल्हो, चले जल बिन मीन वे।। १।।
बिना जल जहां मीन चलता, नाम नौका अधरि वे।
बेड़े विमान अमान देखो, को लखै याह कदर वे।। २।।
पानी बिना सरवर सरू, जहां फूल है गुलजार वे।
अधरि बाग अनंत फल, कायम कला कर्तार वे।। ३।।
करि निगाह अगाह आसन, बरषता बिन बदर वे।
बिना पखावज ताल सुर, बाजे बजैं जहां मधुर वे।। ४।।
चिशम बंक अनंक नासा, अधरि महल अकाश वे।
दरी खानें दम दुलीचा, चिशम कर दम श्वास वे।। ५।।
बांनी बिनोद असोध पुर, चंदा नहीं जहां सूर वे।
पानी पवन नहीं भुवन भारी, कला संख सपूर वे।। ६।।
कायम कुलफ कूंची लगी, खोल्है सोई सत पीर वे।
कहता गरीब तबीब तन, चंगा करत कबीर वे।। ७।। ५।।
आसिक इसक दर फनां वे,
एक लुजति सेती सुखन कीजे, बोलनां नहीं घनां वे।। १।।
घनां बोलत डोलत पवनां, मन मुरादां छूट वे।
पंखी पखेरू पवन है, यौह चले पैंडे ऊठ वे।। २।।
चलै पैंडे ऊठ मनुवा, छाड तन याह देह वे।
बपरा बटाऊ कौन साऊ, कीया कासैं नेह वे।। ३।।
पैंडे चल्या मनुवां फिरै, कीया जरा मुकाम वे।

माता पिता नहीं बंधुवा, कौंने तुम्हारा गांम वे।। ४।।
अकल देश अलील पुर से, उतर्‍या किस हेत वे।
कमल फूल शुन्य सरवर, जहां भौंरा सेत वे।। ५।।
अगर बेली हे चंबेली, संख किरण सुभान वे।
गरीबदास निवास पद में, फजल पर कुरबांन वे।। ६।। ६।।
फजल तालिब इश्क गालिब, बिरह बंग बियोग वे।
नेमी निवाजी दगाबाजी, दूर कर यौह शोग वे।। १।।
काबा अरश बिन कुरश है, बंगी दरद दिल बंग वे।
मक्का मनी से बगल है, पौंहचैं तहां कोई मरद वे।। २।।
मरद हाजी होत हैं, जहां नहीं कायर काम वे।
तत्व तसबी फेरिये, जहां साफ सीना नाम वे।। ३।।
जीवता ही मरि मुलांने, नाम नंका घोर वे।
काजी कजा में क्या लीया, खाई गऊ बहु ढोर वे।। ४।।
टुक संकि कर उस सरे की, होगा तहां हिसाब वे।
खूनी खुसहालं फिरत हैं, निकसी तहां किताब वे।। ५।।
कीते गुनाह गनीम तैं, अब जवाब कर किस भांति वे।
गूदा गुलामं खात हैं, वै कटे जीव अनाथ वे।। ६।।
कटे जीव अनाथ करदं, सरै बदला दीन वे।
गरीबदासं हक हाजी, तजो गोसत सीन वे।। ७।। ७।।
बंदे देखिले निज मूल वे,
कला कोटि असंख धारा, अधरि निर्गुण फूल वे।। १।।
है अबंच असंच अविगत, अधरि आदि अनादि वे।
कमल मोती जगमगैं, जहां सुरति निरति समाधि वे।। २।।
भुवन भारी रवन शोभ्या, भजो राम रहीम वे।
साहिब धनी कूँ यादि कर, जपि अलह अलख करीम वे।। ३।।
मादर पिदर हैं संगि तेरे, बिछरता नहीं पलक वे।
कायम कला कुरबांन जां, खालिक बसे हैं खलक वे।। ४।।
खालिक धनी है खलक में, तूं झलक पलक समोय वे।
अरश आसन है बिहंगम, अधर चिशमें जोय वे।। ५।।
बैराठ में एक घाट है, उस घाट में एक द्वार वे।
उस द्वार में एक देहरा, जहां खूब है एक यार वे।। ६।।
खूब है दिलदार साहिब, देखना नहीं भूल वे।
गरीबदास निवास नक पर, भई सेजां शूल वे।। ७।। ८।।
बंदे अधर बेड़ा चलत वे,
साच मांनि सुगंधि साहिब, नहीं कर याह गलत वे।। १।।

अधर पौहमी अधर गिरवर, अधर सरवर ताल वे।
अधर नदियां बगत हैं, जहां अधर हीरे लाल वे।। २।।
अधर नौका अधर खेवट, अधर पानी पवन वे।
अधर चंदा अधर सूरजि, अधर चौदह भुवन वे।। ३।।
अधर बागं अधर बेले, अधर कूप तलाब वे।
अधर माली कौहकता है, अधर फूल खिलाव वे।। ४।।
अधर बंगला अधर ड्यौढी, अधर साहिब आप वे।
अधर पर गढ़ हूँठ नगरी, नाभि नासा मांपि वे।। ५।।
हूँठ हाथ हिजूर हासिल, अधर पर एक अधर वे।
गरीबदासं अधर ध्यानी, औढे एकै चदर वे।। ६।। ६।।
बंदे पाख नाम पिछानि वे,
पाख मेला पाख परबी, पाख हे अस्नान वे।। १।।
पाख सेवा पाख पूजा, पाख शालिगराम वे।
पाख चंदन पाख अरपन, पाख है औह धाम वे।। २।।
पाख संखा पाख झालरि, पाख है बोह तूर वे।
पाख बीनां पाख घंटा, पाख यारां नूर वे।। ३।।
पाख सिज्या पाख आसन, पाख है औह तखत वे।
पाखे पुजारी पूजता, जो पाख है सब रखत वे।। ४।।
पाख कुरशी पाख तुरशी, पाख माला फेर वे।
पाख रागी राग गावैं, पाख नादू भेर वे।। ५।।
पाख भौंरा पाख चौरा, पाख पुष्पं गंध वे।
पाख मोती पाख हंसा, पाख सरवर सिंध वे।। ६।।
पाख लहरां पाख मेहरां, पाख सूरजि चंद वे।
पाख शस्त्र पाख वस्त्र, पाख पुर आनंद वे।। ७।।
पाख बानी पाख प्रानी, पाख बोलनहार वे।
गरीबदासं पाख होकर, पाख कर दीदार वे।। ८।। १०।।
बंदे जानि साहिब अजर वे,
अजर मूरति अजर सूरति, अजर है औह गजर वे।। १।।
अजर खाना अजर पीना, अजर सा निहाल वे।
अजर हीरा जाप जपिये, अजर है औह लाल वे।। २।।
अजर नैंनां अजर बैंनां, अजर माला तिलक वे।
एक अजरी कहाँ गावै, अजर है सब मुलक वे।। ३।।
अजर घाटी अजर बाटी अजर है ओह द्वार रे।
अजर पींघू अजर झूलैं, अजर है निहकाम वे।। ४।।
अजर कायम अजर दायम, अजर अक्षर धाम वे।

अजर अजरी जात हैं, चढ़ अजर मकरतार वे।। ५।।
अजर ज्ञानी अजर ध्यानी, अजर शुन्य समाधि वे।
अजर मंत्र अजर जंत्र, अजर पावैं दाद वे।। ६।।
अजर संजम अजर शाखा, अजर हे फल फूल वे।
अजर अक्षै अछीज अविगत, अजर उरधं मूल वे।। ७।।
अजर नायक अजर पायक, अजर ताहि खवास वे।
अजर माया अजर काया, अजर निश्चल बास वे।। ८।।
अजर नायब अजर साहिब, अजर सारी सैंन वे।
गरीबदासं अजर होना, छाडि फोकट फैंन वे।। ९।। ११।।
बंदे बंदगी बर हक वे,
बेदां कतेबां सिहर क्या, अज बिना नाम अनभख वे।। १।।
नाम बाहर नाम भीतर, नाम शीश सुभांन वे।
नाम आसन असलि मीरां, नाम पर कुरबांन वे।। २।।
नाम ऊठत नाम बैठत, नाम सोवत जागि वे।
नाम खाते नाम पीते, नाम सेती लागि वे।। ३।।
तूं नहीं था जब नाम था, अब तूं सरू नाम नहीं वे।
काफर कहो अब कौन हैं, कर्ता फिरै मैं मही वे।। ४।।
मैं मैं करै सो मारिये, तूं तूं करै सो छूटि वे।
इस मार में हुशियार क्यों, गदहा बनें क्या ऊँट वे।। ५।।
हौं हौं करै सो गधा है, मैं मैं करै सो बोक वे।
बंदा बिसारे बंदगी, तो श्वान है सब लोक वे।। ६।।
श्वान शूकर होत कूकर, बिन धनी के नाम वे।
सोहं अजपा जाप जपि, हरदम तूं आठों जांम वे।। ७।।
जल बूंद से पैदा कीया, जठरा अग्नि पर शीश वे।
उस भाखसी की बंधि में, तूं सुमरता जगदीश वे।। ८।।
चरन ऊपर शीश नीचे, लटकता दिन नैर वे।
उस धनी कूँ तूं बिसर कर, अब क्या उठाये फैंन वे।। ९।।
फैंनी फनां होई जाहिगा, पिछताहिगा दर उमरि वे।
पवन पंखी कर पियाना, निकसि जागा गुमर वे।। १०।।
पीरां मुरीदां कुतब गौंसा, यौही पैंडा पंथ वें गूदा गदहरा खा गये, जो परे रह गये जंत वे।। ११।।
हासिल हलीमी छाडि दीन्ही, बंदगी सो बाद वे।
रिंदगी कर रूह मारी, नहीं है इतकाद वे।। १२।।
रोजा करें राजी नहीं, गल काट खाया बोक वे।
उस सरे में खूनी पिटें, काजी मुल्लां दो शोख वे।। १३।।

हक्का हक्का कर बोलते, देते मुलाने बंग वे।
उस सरे में हिसाब है, नहीं दूसरा कोई संग वे।। १४।।
काजी कतेबां बांचि कर, फिर स्याम खाते भेड़ वे।
हाडी न गूदा पावता, किस कूँ कहौ फिर ढेढ वे।। १५।।
तिली सेती तिली मिल है, नैंन सेती नैंन वे।
रूह कूँ जब रूह मारे, बंदगी नहीं फैंन वे।। १६।।
लोटता क्यूं पंच बखतं, किसे कुरनसि कीन्ह वे।
औह सुनें ना साहिब धनी, मैले भरी असथीन वे।। १७।।
मैले भरी असथीन तेरी, करद काफर हाथ वे।
सांई सरे की खबरि ना, मोटा किया टुक गात वे।। १८।।
कादर करीम रहीम राजिक, नहीं तुमरे संग वे।
अलह अलख साहिब धनी, औह नहीं सुनता बंग वे।। १९।।
गाडर कलीनां खात है, बकरी जु उलटी खाल वे।
फजल तोफा दूर कीना, मांग लीन्हां ज्वाल वे।। २०।।
जुलमी जुलम पर ज्वाल है, सिर स्वाल है सो कीन्ह वे।
गरीब दास तलाक तोकूँ, नहीं खाना सींन वे।। २१।। १२।।
बंदे बंदगी प्रवेश वे,
धरें भेख विवेक बिन हीं, सिर जटा मुंडत केश वे।। १।।
सेली रु सींगी तूबरी, चोला अमोला पहरि वे।
लुकटी लकरिया हाथ लेकर, पूछते हैं शहर वे।। २।।
चंगे मलीदे खाई कर, मनवा भया हे डाग वे।
ऊपर ऊपर तो हंस बांना, मध्य कऊवा काग वे।। ३।।
गूदरी लगाई अजब चींधी, अरन बरन बौह रंग वे।
फिरे बन खंड भेड़िया ज्यूं, नहीं सतगुरु संग वे।। ४।।
भंगे बिनंगे फिरत हैं, कचकोल कोरा काढ़ि वे।
भांग पोसत गरक गोसत, नहीं दीखै हाड वे।। ५।।
खाखी खता में परे हैं, भसमी लगाये भसम वे।
भूले फिरें जग भांड है, दर नहीं जोड़ै चिशम वे।। ६।।
मुंद्रा बिलौरी कांन हैं, मसतक सिंदूरी तिलक वे।
पाढे जंगल के रोझ हैं, जो नहीं चीन्ह्या अलख वे।। ७।।
मोटा मुतंगा बांधि कर, कीन्ही बजर कोपीन वे।
मनवा बाहिर भाग्या फिरै, टुक भेख लहजा लीन वे।। ८।।
कंदर्प बह्या नित जात हैं, सुपनें सषोपति माहिं वे।
जागते ही पंथ भूले, कौन पकरै बाहिं वे।। ९।।
काटर कटुवा गाय ज्यूं, बोलत चलावैं लात वे।

गये गारत गोर भौंदू, नहीं संगी साथ वे।। १०।।
प्रवीन होकर जग ठगै, ल्यौलीन होकर खाहि वे।
बाफत्यौं की चदरि ओढे, धगड़ लुटैं जाहि वे।। ११।।
धगड़ धौंसू भेख है, भागे फिरे बैराग वे।
बोलते ही विष चढ़ै, ज्यूं सर्प बाँबी नाग वे।। १२।।
कांने कुटीचर चुंधले, अंधे फिरे अन भख वे।
जग्यौं में जीमत फिरैं, जो बड़े पेटौं कुख वे।। १३।।
घोटे मलीदे मन सिहर, अन्दर अनारी भूत वे।
आकिल जराइत खात हैं, मेले जुरे सब ऊत वे।। १४।।
दुंदी फिस्यादी है पराधी, अंदर काती घात वे।
बंदगी का रिसम नांही, जुरे मारन हाथ वे।। १५।।
चूंन चावल दाल रोटी, माल पूड़े गुटक वे।
इन्द्री सधै कहो कौन विधि, खाने नहीं है अटक वे।। १६।।
एक रंडी त्यागि दीन्ही, पांच रंडी गैल वे।
पाया न द्वारा मुकित का, शुकदेव करी बौह सैल वे।। १७।।
टोपी रु कोपी कूबड़ी, झंडा लीया है हाथ वे।
मोर मुकटं शीस धरि कर, खान निकसे भात वे।। १८।।
गरजी नहीं उस धाम के, दुंदर फिरै सब भेख वे।
पैसे पसारी जोड़ हीं, मोटे मदारी शेख वे।। १९।।
अनवंच की नहीं अंछ है, और अंछ है सब मांहि वे।
गरीब दास गती न मोषं, जमके दर जांहि वे।। २०।। १३।।
बंदे खोजिले अंदरूंन वे,
मिटें हैं गुनाह तेरे, देखि ले बेजूंनि वे।। १।।
मौले अलह कूँ याद कर, सुरसादिक रिसमोई वे।
मकरतारं बंक मारग, सुरति सिंध परोई वे।। २।।
साहिब सुभान अमांन अविगत, निरखि परख पिछांन वे।
हरदम नसीहत हैफ है, जो नहीं धरते ध्यान वे।। ३।।
आखर फनां दर फनां है, इस पिंड ऊपर दंड वे।
सुखन मान संभालि खेलो, नहीं खाना अंड वे।। ४।।
मुरग अंड काफर कलीना, चाम चोला गूद वे।
काइम गुनाह न राह रोसन, एक जननी दूध वे।। ५।।
जीव जंगली करद बाना, मार बे नहीं मार वे।
तिस उदर में एक गर्भ हैं, ताका न पिण्डा पार वे।। ६।।
पार पिण्डा फोर अण्ठा, नहीं खाना खूब वे।
गरीब दास त्रास जीव की, देखता महबूब वे।। ७।। १४।।

बंदे चीन्ह साहिब धनी वे,
मोमन मुरीदं कोई है, तज मान गर्व रु मनी वे।। १।।
बेदां कतेबां कदर नां, जानें कहां जगदीश वे।
मटी मुरद खाना भख्या, फिर बंदगी की रीस वे।। २।।
नांजर निजूमी नजर ना, हाजर हिजूरं देखि वे।
कलमां पढ़ो हो कौन का, किस का गला इब छेकि वे।। ३।।
काजी मक्के का मक्र है, काबे कसत क्यूं कीन्ह वें।
बेजार दिल तोसे भया, तूं है काफर बे दीन वे।। ४।।
मक्का मदीना मने में, काबा सही दिल बीच वे।
रूह की रग काटते, किस कहो काफर नीच वे।। ५।।
गऊ सूर सुभांन सूरति, जानता क्यूं दोई वे।
संखो चिरागं जगमगें, घट एक दीपक लोई वे।। ६।।
बटक बीज का विस्तार है, दिलदार है सब मांहि वे।
काफर कुफर जो करत है, उस सरे चोटां खांहि वे।। ७।।
बानी बिनांनी एक है, जल सीन से संसार वे।
दूई ऊपर दूसरा, घट एक बोलनहार वे।। ८।।
हिंदू न तुरका कोई हैं, याह जाति है जगदीश वे।
घट घट विश्वंभर बोलता, जिस कहैं कौंम छतीस वे।। ६।।
एक मट्टी के भांडे बने, दीन्ही ज आवें भाहि वे।
एक जाति रु एक पाति, सकल रूह अरवाह वे।। १०।।
सकल रूह अरवाह एकै, दूसरा नहीं कोई वे।
मंजन महल महबूब का, टुक देखि ले दिल धोई वे।। ११।।
दिल धोई कर मन पाख कर तूं, पाख यार पिछांन वे।
गरीब दास उजांस जाका, सकल घट रहिमान वे।। १२।। १५।।
बंदे छाडि दे बदफैल बे, उस दरीखाने दरद होवे,
मार गऊ न बैल वे।। १।।
झोटे झटके मृग मूरति, मोर मुरग समूल वे।
सकल गंध सुगंध सोहं, एक कायम फूल वे।। २।।
एक बाड़ी एक बागं, एक माली मूल वे।
एक दम दरगाह एके, नहीं तोड़स फूल वे।। ३।।
बे दरद होकर करद घालै, अपन सा दिल जान वे।
नाजिक नबी दिल साफ कर, तूं सवाल हमारा मान वे।। ४।।
गल काटि मुजरा किन किया, औह हमें पीर बताये वे।
करद भांने रूह तांने, सरे कूकैं गाय वे।। ५।।
कामधेनु काटे मुलाने, सुनों काजी बात वे।

सुरह का सब दूध पीवै, दहूँ दीनं मात वे।। ६।।
घृत भोजन होम कर हीं, देवता सुर बास वे।
उस सरे में कित ठौर है, जो कामधेनु विनाश वे।। ७।।
सुरह साखा गऊ माँ का, खीर खांहि दहूँ दीन वे।
कामधेनु काट खाई, गूद माटी शीन वे।। ८।।
सीना सलाई भरत है, यौह करत हैं कुफरान वे।
वहां नहीं दारमदार है, गऊ का न गल तूं भान वे।। ६।।
दरगाह में निगाह है, तिल तिल हिसाब वे।
गरीबदास तिरास बीते, क्या करो तब जुबाब वे।। १०।। १६।।
जन्म खोया कुल बिगोया, नाम रत्ता नांहि वे।
शब्द की प्रतीत नांहि, जमलोके जाहि वे।। १।।
अंदरूनी देख अंदर, मिहर चोसा मूल वे।
सुंन में हैं महल मालिक, गगन दर अस्थल वे।। २।।
मुसलमाना दर इमाना, सरै दीन दयाल वे।
देखता महबूब मालिक, नजर नेक निहाल वे।। ३।।
बंग रोजा बीनती, कलमां पढ़ो लाहूत वे।
नेमी निवाजा करो निश दिन, जोर धागा सूत वे।। ४।।
शिखर में है सैल सैली, मुरद बासिद मीन वे।
सिंध दरिया पैठ देखो, पंथ मारग झीन वे।। ५।।
पीरां मुरीदां कुतब गौंसा, यौही राह रबांन वे।
असलां सलामां असलि कूँ है, दूई दोष गुलाम वे।। ६।।
अकलि राह पिछानं प्यारे, है खुलासा पंथ वे।
अलह अलेख अकल साहिब, वार पर न अंत वे।। ७।।
मुरग मुलनां खात हैं, साहिब सरे बहु दोष वे।
कूकते बंगी बिना बुद्धि, अजा तरासी बोक वे।। ८।।
याद कर उस नबी कूँ, निहचा निरन्तर राख वे।
जल बूंद से जिन साज साज्या, सुनों मुरशद साख वे।। ९।।
खाख रोजी रूह कूँ लख, लैल में मत भूल वे।
धनी का फुरमांन बांचो, चाल बंदे सूल वे।। १०।।
कामी क्रोधी बुद्धि बोदी, खुदी राह बिसार वे।
दूई से है दूर साहिब, निफस निश्चय मार वे।। ११।।
पाख कर दिल परसि रब्ब कूँ, पीर परचे बोलि वे।
अलह अलेख सुभांन साहिब, महल द्वारा खोल्हि वे।। १२।।
कादर करीमा है रहीमा, राजिका रहमांन वे।
देखो गरीब दीदार दिल में, अजब नूर सुभांन वे।। १३।। १७।।

रब्ब कूँ रफात कीन्हा, पाया तन महल सीना,
कादर की कुदरत, यौह जल का जिहाना है।। १।।
रूह का निवासा, दर महल है खुलासा,
जलबूंद का बंधेज बांधि, साज्या पिण्ड प्राना है।। २।।
पिण्डे ब्रह्मण्डे का, आकार धार एक रूप,
पवन सी प्रेवा, बीच मधि में ठहराना है।। ३।।
कूरंभ कमाल ख्याल,
कच्छ मच्छ धौल साल, शेष का समाना है।। ४।।
धरणि गगन रोपि खंभ,
कीन्हा तालिब आरंभ, तारा शशि भाना है।। ५।।
आजित अनाथ जीव, साजे समरथ पीव,
साहिब विश्वंभर हाल, मीरां मिहरबाना है।। ६।।
ब्रह्मा आदम आदि, विष्णु कूँ कीये अबाद,
अलह का अलफ रूप, शकित सुभाना है।। ७।।
सतगुरु से हमालं, जो तोरि हैं जम जालं,
चेले की चाल कुटिल, सेवक विज्ञाना है।। ८।।
मकरु के मांस अरु गऊ के गोसत बीच,
दिल में दीदार यार, देखो सीनां संभार, एके खिलखाना है।। ६।।
दिल ही में दरगह, अरु चित्त में चबूतरा,
त्रिकुटी में आब खास, असली दिवाना है।। १०।।
सोहं सुभांन ध्यान, कलमां कबूल मांन,
लाहि लाहि ईल्लिल्लाह है, जाकी कुरबाना है।। ११।।
काबा हाजर हजूर, जगमग जोती जहूर,
मन ही में मक्का, महबूब कूँ पिछान्या है।। १२।।
काजी निवाजी दिल दूर दगा बाजी,
टुक सीनें कूँ स्वाफ करो, खाया हिलवाना है।। १३।।
काजी नहीं हाजी तूं, दम दम दरहग दरुनं,
बंग तो बंगीरम, क्यूं कूके मुलाना है।। १४।।
खुल्हे दुरबीन द्वार, भेटे जहां चार यार,
उजू अनादि, हौद कौसर में न्हाना है।। १५।।
सिरंगी है अलफ सैंन, बोलत कुछ अजब बैन,
मसतक मसीत, मुकर मीन का पियाना है।। १६।।
सलहली समूल घाट, सुषमन खूल्हे कपाट,
इंगुला और पिंगुला, दर लाहूत का मकाना है।। १७।।
सुषमन सुरग द्वारी, जहां अजब है अटारी,

कमल दर कमोदं, जो चवता रस पाना है।। १८।।
अनहद नाद बाजें, जहां जंगी जैत साजें,
हरदम खुलासा ख्याल, अमल जो अमाना है।। १६।।
हाली और मुवाली का, लेखा बारंबार लीजे,
पातशाह पाजी, और काजी कहाँ राना है।। २०।।
नबी के नवासे के, मारे फरजंद बीन,
हसन और हुसैन, बीबी फातिमा के प्राना है।। २१।।
मुहंमद के मदन सेती, फातिमा का अंग हूवा,
फातिमा के मदन से, हसन हुसैन जान्या है।। २२।।
अली सेर बंदा, गुलजार है बिलंदा,
कहता है **गरीबदास**, अगर मूल मध्य बास।
अली का अलह रूप, सिंध में समाना है।। २३।। १६।।

अथ तमाखू की बैत

तमाखू कसीदम तमा मसत हैफ। लुजति न सीरी कूँअति न कैफ।। १।। मरहूद मकरूद पीवे शराब, होगा सरे बीच खाना खराब।। २।। कुटन कला हीन जुग जुग कलेश। सुखन मान मेरा मैं कहता हमेश।। ३।। तलक सा तमाखू शिला घोटि पीसि। दई नाक नासा जु कमल में कसीस।। ४।। करी चूर चकना धर्या नाम नांस। सतर सलाई घती काटि मांस।। ५।। भिसति के दरीबे जु कीन्हां दुलद। अग्र मूल मौला जहां बसत हैं प्रसिद्ध।। ६।। हिन्दू तुरक कूँ ज दीन्ही तलाक। पीवे तमाखू सरे के कजाक।। ७।। खू नाम खू का त्मा नाम गाय। सौगंधि सौ बार इस कूँ न खाय।। ८।। गदह श्वान कऊवा कर्म के कुलीन। पीवे तमाखू सो जम के अधीन।।६।। चिदानंद चित्त में चिशम दर जहूर। अधम पाप पापी भये श्वान सूर।। १०।। नजला फिरें नैंन बिंद कूँ विधांस। नस नाद नाड़ी ज दमहीं न श्वास।। ११।। पित्त बाई खांसी निवासी निवास। कफदल कलेजा लिया है गिरास।। १२।। काला तमाखू रु गौरा पिवाक। दस बीस लंगर जहां बैठे गुटाक।। १३।। बाजैं नैं गुड़गुड़ अर हुक्के हजूंम। कोरे कुबुद्धि बिसा हैं न सूम।। १४।। बांकी ही पगडी अरु बांकी ही नैं। डिबी डबोये पर डूबे हैं कै।। १५।। गुटाकड़ अटाकड़ मटाकड़ लहूर। एक बैठे अड़िकर एक बैठे दूर।। १६।। शब्द मांन मेरा मैं कहता हूँ तोहि। यौही मूल मंत्र तमाखू न बोई।। १७।। अजाजील बंदा इरान्या समूल। सरे का बचन जिन किया है अदूल।। १८।। तमाखू तलबदार जम का जमांन। हुक्का हुकम नेश

पीवैं हिवांन।। १६।। दम दूत द्वारं खुलक खाल धूंम। कँवल कंठ मैला चिशम अंध रूंम।। २०।। सुरापान भंगी मट्टूटी मांस खांहि। ककड चड़स पीये जम लोक जांहि।। २१।। गुदा मूल मुख द्वार गंदा शरीर। पड़े मार मोटी जड़े जम जंजीर।। २२।। कैफी कमल कूँ ज खैंच्या कमंद। इला पिंगला दर रुके ब्रह्म रंध्र।। २३।। जहां सुषमन सुराही अमी का जु द्वार। जहां गंगा रु जमुना सरस्वती किदार।। २४।। काशी अरु पटणा गया जो प्रयाग। अधर पिंड भरिये पित्र जूंनि त्याग।। २५।। पितृदेव दाना भये ब्रह्म रूप। जहां जोगी जगन्नाथ साहिब सरूप।। २६।। महोदधि गाजे अवाजं अवाज। पितृदेव पोषे जु कीन्हा श्राद्ध।। २७।। अंदर इन्द्र दौंन आदं अनादि। कटें कोटि कुश्मल लगे पद समाधि।। २८।। श्री मार्कण्डे बटे कृष्ण बाट। रूहन्यां रवनपुर न्हाये जु आठ।। २६।। सुरति सेतुबंध सलहली जु सैल। ध्वजा संख फरकत झीनी जु गैल।। ३०।। जहां ढोलं समुंद्र महोदधि मिलाप। गंगा क्षीर सागर जपो अजपा जाप।। ३१।। जहां राम लक्ष्मण भरत चित्र देख। सीता समूलं लखो ऊर्ध रेख।। ३२।। कलमल कला शेष कुंडल किलोल। जहां क्षीर सागर धनी फूल डोल।। ३३।। श्री रंग साहिब समूलं समूल। पहुकर द्वारा दीप न देख भूल।। ३४।। हरि हेत हरिद्वार न्हाय हु कुंभ। बदरी बिलासा खुलासा आरंभ।। ३५।। गंगा गोदावरी मल मैल धोइ। अठसठ परीक्षा लई बाट जोइ।। ३६।। नीमषार मिश्रक सरजू न्हांन ध्यान। नौधे निरंजन अरु दशधा प्रवांन।। ३७।। अगम मान सरवर अमर हंस न्हांहि। पदम कोटि झलकें कल्पवृक्ष छांहि।। ३८।। ऐसे दरीबे अमल की जु चाह। गये गोर गारत पाई न थाह।। ३६।। चिमटे चिलम के जु खैंच्या है नाक। सोटे की साबल दई बीच आंखि।। ४०।। तूं लंगर है लगड़ा अरु झूठा लवार। अमली के मुख में है मुत्र की धार।। ४१।। कडुवा ही कडुवा तूं करता हमेश। कडुवा ले प्यारे जु कडुवा ही पेश।। ४२।। बालू की रेती के होते पलाव। खाते हैं अमली जम देते गिलाव।। ४३।। रुधिर की नदियां हैं काली कुलीन। डूबै हैं अमली ज्यूं दरिया में मीन।। ४४।। जाते रसातल कुसातल के मांहि। असंख्य जुग जन्म जांहि छूटन्त नांहि।। ४५।। तमाखू तरक कर गरक कर क्रोध। ममता मनी मार सुन सार बोध।। ४६।। कामी रु क्रोधी तूं लोभी लबूट। बचन मानि मेरा ज धूंमा ना घूंट।। ४७।। भड़वे भयानक अचानक अचूक। धरि हैं सुत्र देह खाते हैं रूख।। ४८।। लदें बोझ भारी अनारी अनाथ। खाता जवासा उखरि जाड़ दांत।।

४६।। भंगड़ भली भांति जाते समूल। सुत्र खान पानं सु कीकर बबूल।। ५०।। सुन रे शराबी खराबी जिहांन। धगड़ धूंस दुनियां से डूबी निदान।। ५१।। हुक्का हरामी गुलामी गुलाम। धनी के सरे में न पौंहचे अलाम।। ५२।। तमाखू त्रासा निराशा निराश। भूलें धनी कुन्ज कहिये इलास।। ५३।। पामर परम धाम जाते न कोई। झूठे अमल पर दई जांन खोई।। ५४।। मुरदा मुजावर हरामी हराम। पीवें तमाखू स झूठे गुलाम।। ५५।। अंदर अंधेरी ना चिशमयों चिराग। पीवें तमाखू गये फूट भाग।। ५६।। अमली अलह के जु नामा कबीर। अमृत अहारी खुमारी शरीर।। ५७।। अमली अलह के जु नारद नरेश। ब्रह्म विष्णु ध्यान शिव और गणेश।। ५८।। जुग जुग अमांनें दिवाने दिवान। पीया जु अमृत अमी रस पांन।। ५६।। गोरख हनू हेत हाजर हजूर। लक्ष्मण अमल अंग नांहि कसूर।। ६०।। सीता रमें राम भरत अरु भिराव। निर्गुण निरालंब सतगुरु मिलाव।। ६१।। धन्य शेष रटना ररंकार रीत। चिदानंद चीन्ह्या शब्द सुंन अतीत।। ६२।। कर रे प्राणी प्रीतम प्रीत। साहिब निरालंब अकल पद अतीत।। ६३।। सकल सिद्धि चरनों स बरनों बियांन। बसो सुख सागर धरो निज ध्यान।। ६४।। हाली मवाली संभालो सिताब। बिना नाम अमली स झूठी किताब।। ६५।। अमली अलह के मक्के बीच लेट। गऊ सूर छाडो करो शीश भेट।। ६६।। दुनिया दिवानी हिवांनी हनौज। अमल आदि छाड्या सुरापान गोज।। ६७।। अलह सीन साबति दिलह दीन स्वाफ। मुरगी न मारो सुनो शब्द साख।। ६८।। मक्का मनै में मदीना मसीत। कुफर दूर कर रे सु छाडो अनीत।। ६६।। गऊ का गला काट खाते जु गूद। दहूँ दीन ममडी पीवों क्यूं न दूध।। ७०।। गऊ का गला काट खाते जु मांस। काजी निवाजी चले हैं निराश।। ७१।। मुलां मुरग मार देते जु बंग। उलटि खाल काढ़ि सु बकरी बिनंग।। ७२।। मुरगी अंडा फोर करते निवाज। लोटें पंच वखतं तज्या है जु नाज।। ७३।। कादर कली जोर कीन्हा है पिण्ड। काजी मुलां कूँ जु फोर्या है अण्ड।। ७४।। चिड़िया बुटेरी जु मारी गिलोल। त्रिसरेंण जीव का नहीं तोल मोल।। ७५।। सुरह का श्रापं चढ़े शीश आय। सुनों यार काजी हिती क्यूं जु गाय।। ७६।। मन्सूर महबूब जान्या खुदाइ। सूली चढ़े शीश दीना कटाइ।। ७७।। मन्सूर चाल्या है धनी के मिलाप। कटा शीश जाका सुनों आदि शाख।। ७८।। दोनों दशत काटि शूली चढ़ाय। ऐसा सरा है धनी का जु राह।। ७६।। जिगर स्वाफ सीना जु पांचों हलाल। मन्सूर महबूब खैंची न खाल।। ८०।।

ऐसे बंदे कूँ जु क्यामति धरी। काटें गऊ शीश जासे डरी।। ८१।। तसबी गले बीच गल काट खाइ। काजी मुल्लां कैसे जान्या अलाह।। ८२।। अलह के सुलह में चलें हैं न कोइ। सुनों यार काजी भया नाश तोहि।। ८३।। अलह की न चिंता चिदानंद चीन्ह। मस्तक चिशम अंध खाना न सीन।। ८४।। खालिक अलह आप होगा तिराज। मुलां हक्क बोलै सो झूठी अवाज।। ८५।। काफर दहूँ दीन भिसती न कोई। भिसती सोई है अलह का जो होइ।। ८६।। हिंदू मुसलमान मट्टी मलीन। काफर सृष्टि में सही दोऊ दीन।। ८७।। कलमां पढ़ें और कलीना जु खांहि। दरगह सरे में जिनों ठौर नांहि।। ८८।। अलह अलख साहिब सकल में समूल। स्थावर जंगम बीच न देख भूल।। ८९।। साहिब सलेमान दिल बंक आंहि। हुई पाग बांकी चली फौज नांहि।। ९०।। चारों मवक्कल कीया है समाध। सुन तूं सलेमान बचनं अनाद।। ९१।। अजाजील बंदा इरान्या गया। धनी का सुखन स्वाल मिथ्या कह्या।। ९२।। भया नूर बंदा निरालंब जाति। मिहर और फजल सब रह्या नांहि हाथ।। ९३।। सैतान कलि में अजाजील कीन। फलज मिहर तोफा न आई आधीन।। ९४।। हिंदू हरि हेत बोले जु राम। बैराह भक्षण जपै कृष्ण नाम।। ९५।। खरगोस बकरी मृग मारि भूंनि। साहिब धनी बिन खाली न जूंनि।। ९६।। झटका करें शीश काटें खलील। नर देह धरेंगे बनों के जु भील।। ९७।। सहनान खोटे कुटिल चाल तोहि। गले हाथ माला तिलक कीन्ह दोय।। ९८।। दोजिख गये जीव हिंसक हनोज। मारे मिरग कूँ जु पावै न खोज।। ९९।। दिल में धनी का जु नांहि अकीन्ह। कन्या हते जांन पुत्रा न चीन्ह।। १००।। जूंनी जन्म काज नाड़ी विरोध। सो तो पुत्र कूँ खिलावें न गोद।। १०१।। हुई है पृथ्वी पिरोसान यौं। हत्या चढ़ी शीश अपनी जगौं।। १०२।। सरीकति हकीकत तरीकत पिरांन। दरगह दई की जु लेखा दिवान।। १०३।। दीजे जु अमली गदह जूनी बास।
सुखन मान मेरा कहै **गरीबदास**।। १०४।।

साखी :- गरीब सौ नारी जारी करैं, सुरापान सौ बार।
एक चिलम हुक्का भरै, डूबै काली धार।। १।।
गरीब, सूर गऊ कूँ खात हैं, शंका नहीं सलेश।
शंकर से सतगुरु मिले, तो न लगै उपदेश।। २।।
गरीब, सूर गऊ कूँ खात हैं, भक्ति बिहूनें राढ़।
भांग तमाखू खा गये, सो चाबत हैं हाड।। ३।।
गरीब, भांग तमाखू पीव हीं, गोसत मद्राहार।

चंद्र सूर की आव लग, चोला धरें चमार।। ४।।
गरीब, भांग तमाखू पीव हीं, सुरा पांन से हेत।
गोसत मट्टी खाइ कर, जंगली बनें प्रेत।। ५।।
गरीब, पांन तमाखू चाब हीं, नास नाक में देत।
सो तो ईरानें गये, ज्यूं भड़भूजे का रेत।। ६।।
गरीब, भांग तमाखू पींव हीं, गोसत गला कबाब।
मोर मृग कूँ भखत हैं, देंहगे कहाँ जवाब।। ७।।
गरीब, आला पाला खाइ थी, बकरी भेड़्या बाघ।
स्यों रूमां भक्षण करी, कर्म आपने भाग।। ८।।
गरीब, कुरड़ी पर गदहा चरै, बोलै राग रमंड।
वेद कतेबां बांचि कर, खाइ गये मुरग अंड।। ९।।
गरीब, ठूठा पी कर भांग का, भंगी भया खुसाल।
मगन हुवा मानै नहीं, ईरान्या है काल।। १०।।
गरीब, भांग तामाखू पीवते, चिशम्यों नालि तमाम।
साहिब तेरी साहिबी, जांने कहां गुलाम।। ११।।
गरीब, द्वादश तिलक बनाइ कर, फांसी लीन्ही हाथ।
विष के लड्डू देत हैं, जीवों ऊपर घात।। १२।।
गरीब, नाना वर्ण भेख हैं, इस दुनिया के मांहि।
बचन हमारा मानियों, ये पंथ रसातल जांहि।। १३।।

अथ झूंमकरे

नाभि कँवल में पैठिये राइ झूंमकरा।
चल बंक नाल के घाट सुनो राइ झूंमकरा।। १।।
इला पिंगला फेरियो राइ झूंमकरा।
उतरो औघट घाट सुनो राइ झूंमकरा।। २।।
सुष्मणा सुरति लगाईये राइ झूंमकरा।
खोल्हो बज्र कपाट सुनो राइ झूंमकरा।। ३।।
काया नगरी जदि बसें राइ झूंमकरा।
जदि घर आवें आठ सुनो राइ झूंमकरा।। ४।।
द्वादश बंध लगाईये राइ झूंमकरा।
नक सरवर पर ध्यान सुनो राइ झूंमकरा।। ५।।
संख पदम उजियार है राइ झूंमकरा।
जहां कोटि कला शशि भानु सुना राइ झूंमकरा।। ६।।
जहां दौंना मरुवा फूल है राइ झूंमकरा।
अक्षयवृक्ष अस्थान सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।

राइ चंबेली केवड़ा राइ झूंमकरा।
सूरज मुखी सुभान सुनो राइ झूंमकरा।। ८।।
सुरति निरति दो हंसनी राइ झूंमकरा।
मानसरोवर न्हांहि सुनो राइ झूंमकरा।। ९।।
मन हंसा तिस बीच है राइ झूंमकरा।
बिन मुख मोती खांहि सुनो राइ झूंमकरा।। १०।।
अनभै मालनि उतरी राइ झूंमकरा।
फूलन सेज बिछाइ सुरो राइ झूंमकरा।। ११।।
छत्र सिंहासन सेत है राइ झूंमकरा।
पलकों चौंर ढुराइ सुनो राइ झूंमकरा।। १२।।
अरस दिवांगना गावहीं राइ झूंमकरा।
अनहद शब्द घमोर सुनो राइ झूंमकरा।। १३।।
बिन पग का जहां पंथ है राइ झूंमकरा।
मक्रतार की डोरि सुनो राइ झूंमकरा।। १४।।
और कहूँ कछु और है राइ झूंमकरा।
बिन देही का देव सुनो राइ झूंमकरा।। १५।।
सुरग रसातल में बसें राइ झूंमकरा।
जाकी करिले सेव सुनो राइ झूंमकरा।। १६।।
तीन चरण चिन्तामणि राइ झूंमकरा।
गरदन गरीब मरोर सुनो राइ झूंमकरा।। १७।।
हंस रूप जहां देखिये राइ झूंमकरा।
मुकट कलाइर मोर सुनो राइ झूंमकरा।। १८।।
कलंगी कोटि हजार धज राइ झूंमकरा।
चक्र सुदर्शन शीश सुनो राइ झूंमकरा।। १९।।
गदा पदम कूँ परखिये राइ झूंमकरा।
है ईशन पति ईश सुनो राइ झूंमकरा।। २०।।
बामें धनुष बिराजहीं राइ झूंमकरा।
दहनें बाण विहंग सुनो राइ झूंमकरा।। २१।।
गिरद गता सुंन मंडली राइ झूंमकरा।
नहीं रूप नहीं रंग सुनो राइ झूंमकरा।। २२।।
पल पल चरण जुहारिये राइ झूंमकरा।
देखें ही सुख चैंन सुनो राइ झूंमकरा।। २३।।
दास गरीब हजूर चल राइ झूंमकरा।
सुनि सतगुरु के बैंन सुनो राइ झूंमकरा।। २४।। १।।
सकल भेद तोसे कहूँ राइ झूंमकरा।

सुनियों शब्द संदेश सुनो राइ झूंमकरा।। १।।
इन नैंनों दिखलाईये राइ झूंमकरा।
कैसा है औह देश सुनो राइ झूंमकरा।। २।।
पल नीचे पल ऊपरे राइ झूंमकरा।
ता मध्य निरखि निहार सुनो राइ झूंमकरा।। ३।।
अजर नजर आवें नहीं राइ झूंमकरा।
खेले अधर अधार सुनो राइ झूंमकरा।। ४।।
दहिनें बामें आंगनें राइ झूंमकरा।
सुरग रसातल भिन्न सुनो राइ झूंमकरा।। ५।।
त्रिकुटी छाजे बैठ कर राइ झूंमकरा।
देखो राम रतन सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
सनकादिक नारद रटें राइ झूंमकरा।
ब्रह्मा विष्णु महेश सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।
सहंस फुना मुख गांवहीं राइ झूंमकरा।
ध्यान धरत हे शेष सुनो राइ झूंमकरा।। ८।।
नैनों ही में नैन रखि राइ झूंमकरा।
भगल विद्या कूँ देख सुनो राइ झूंमकरा।। ९।।
दास गरीब अतुल है राइ झूंमकरा।
अविगत पुरुष अलेख सुनो राइ झूंमकरा।। १०।। २।।
अधर सरोवर अधर हंस राइ झूंमकरा।
अधर नदी प्रवाह सुनो राइ झूंमकरा।। १।।
अधर न्हान स्नान है राइ झूंमकरा।
अधर मछ मन राह सुनो राइ झूंमकरा।। २।।
अधर बाग बेले बनें राइ झूंमकरा।
अधर फूल गुलजार सुनो राइ झूंमकरा।। ३।।
अधर समाधि लगाईये राइ झूंमकरा।
अधर देख दीदार सुनो राइ झूंमकरा।। ४।।
अधर राग रंग होत है राइ झूंमकरा।
अधरे रास बिलास सुनो राइ झूंमकरा।। ५।।
अधर सरा साहिब धनी राइ झूंमकरा।
अधरे चौंर खवास सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
अधर नगर अविगत बसै राइ झूंमकरा।
अधर वृक्ष विस्तार सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।
अधर सुराही फिरत है राइ झूंमकरा।
अधर होत जौंनार सुनो राइ झूंमकरा।। ८।।

अधर पाख प्याले फिरें राइ झूंमकरा।
अधर बसै मतवार सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
अधर बीज भूमी अधर है राइ झूंमकरा।
अधर तमाम जुहार सुनो राइ झूंमकरा।। १०।।
अधर गलीचे बिछि रहे राइ झूंमकरा।
अधरे मुजरा होई सुनो राइ झूंमकरा।। ११।।
दास गरीब अधर बसै राइ झूंमकरा।
अधरे सुरति परोई सुनो राइ झूंमकरा।। १२।। ३।।
अधर धार आगे रहै राइ झूंमकरा।
उजन तोल नहीं मोल सुनो राइ झूंमकरा।। १।।
जहां तहां मौला देखिये राइ झूंमकरा।
रत्न जरे चहडोल सुनो राइ झूंमकरा।। २।।
अरस कुरस कुरबान है राइ झूंमकरा।
बिछे बिछौने नूर सुनो राइ झूंमकरा।। ३।।
खालिक बिन खाली नहीं राइ झूंमकरा।
सकल सिंधु भरपूर सुनो राइ झूंमकरा।। ४।।
आगा पीछा है नहीं राइ झूंमकरा।
नहीं पीठ नहीं पेट सुनो राइ झूंमकरा।। ५।।
कोटि सिद्ध पर सिद्ध है राइ झूंमकरा।
सब पृथ्वी पति सेठ सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
हार व्यवहार न तास कै राइ झूंमकरा।
सत्य सुकृत सरबंग सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।
अप स्वार्थ कछु हे नहीं राइ झूंमकरा।
परमार्थ धरि अंग सुनो राइ झूंमकरा।। ८।।
भक्ति वत्सल भगवान है राइ झूंमकरा।
भय कूँ करै विध्वंस सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
म्हैंसि सींग में प्रगटे राइ झूंमकरा।
पुरवन जन की आश सुनो राइ झूंमकरा।। १०।।
प्रहलाद खंभ से बांधिया राइ झूंमकरा।
हिरणाकुश दई तिरास सुनो राइ झूंमकरा।। ११।।
नरसिंह होकर ऊतरे राइ झूंमकरा।
कीया असुर का नाश सुनो राइ झूंमकरा।। १२।।
गज रु ग्राह उबारिया राइ झूंमकरा।
द्रौपदी चीर बढ़ाइ सुनो राइ झूंमकरा।। १३।।
सुदामा दारिद्र मोक्ष करि राइ झूंमकरा।

अन्न धन द्रव्य अंघाइ सुनो राइ झूंमकरा।। १४।।
दश सिर मारे सेतु बंध राइ झूंमकरा।
महरावण भुजा उपारि सुनो राइ झूंमकरा।। १५।।
रावण मुख मूंधे परे राइ झूंमकरा।
लंका कीन्ह सिधार सुनो राइ झूंमकरा।। १६ ।।
कंस केश शिशुपाल से राइ झूंमकरा।
बाली सहंस्त्राबाहु सुनो राइ झूंमकरा।। १७।।
काली नाग कूँ नाथिया राइ झूंमकरा।
अविगत अलख अलाह सुनो राइ झूंमकरा।। १८।।
नाग नाथि ऊपर चढ़े राइ झूंमकरा।
ल्याये पऊ के नाल सुनो राइ झूंमकरा।। १९।।
अबल बली बरियाम है राइ झूंमकरा।
जम किंकर के साल सुनो राइ झूंमकरा।। २०।।
बेर भीलनी खात है राइ झूंमकरा।
गणिका चढ़ी विमान सुनो राइ झूंमकरा।। २१।।
दास गरीब अगाध गति राइ झूंमकरा।
कादर कूँ कुरबान सुनो राइ झूंमकरा।। २२।। ४।।
अजपा तारी तत में राइ झूंमकरा।
शब्द अतीत पिछांन सुनो राइ झूंमकारा।। १।।
बिनही चिशम्यों देखिये राइ झूंमकरा।
बिन श्रवण सुन कानसुनो राइ झूंमकरा।। २।।
बिन ही चरणों चालिये राइ झूंमकरा।
बिन ही पिण्ड प्राण सुनो राइ झूंमकरा।। ३।।
बिना पंख भौंरा उड़ै राइ झूंमकरा।
अमर लोक अस्थान सुनो राइ झूंमकरा।। ४।।
बिन कर बाजे बाजहीं राइ झूंमकरा।
बिन मुख रागी राग सुनो राइ झूंमकरा।। ५।।
मन का मस्तक मूंडिये राइ झूंमकरा।
बिन देही बैराग सुनो राइ झूंमकरा।। ६ ।।
खूंटी तार न तास के राइ झूंमकरा।
अविगत रंग रबाब सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।
दम देही बिन बोलता राइ झूंमकरा।
उत्तर प्रश्न जबाब सुनो राइ झूंमकरा।। ८।।
भगली भगल बनावहीं राइ झूंमकरा।
नटवा नाटिक खेल सुनो राइ झूंमकरा।। ९।।

दास गरीब सुबास ले राइ झूंमकरा।
फून लगै बिन बेल सुनो राइ झूंमकरा।। १०।। ५।।
पूरब देश हमार है राइ झूंमकरा।
कोई न जानैं भेव सुनो राइ झूंमकरा।। १ ।।
गगन मंडल में रहत है राइ झूंमकरा।
बिन देही का देव सुनो राइ झूंमकरा।। २।।
अनहद जंग बजाव हीं राइ झूंमकरा।
है जिंदा जगदीश सुनो राइ झूंमकरा।। ३।।
सिर पर साहिब सत्य है राइ झूंमकरा।
आया बिसवे बीस सुनो राइ झूंमकरा।। ४।।
पाया खोया कहत है राइ झूंमकरा।
बड़ा अंदेशा मोहि सुनो राइ झूंमकरा।। ५।।
रूंमी वस्त्र अंतरा राइ झूंमकरा।
एक ढिग पारस लोह सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
अंग पलटि है पलक में राइ झूंमकरा।
भ्रम कपट उठि जाइ सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।
सौंहगे से मैंहगा भया राइ झूंमकरा।
मंहगे मोल बिकाइ सुनो राइ झूंमकरा।। ८।।
कीमत करता की नहीं राइ झूंमकरा।
जैसे कन्द कपूर सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
दास गरीब चरणों बसै राइ झूंमकरा।
सकल लोक भरपूर सुनो राइ झूंमकरा।। १०।। ६।।
सुंन विदेशी बसि रह्या राइ झूंमकरा।
ऊजड़ बसती बीच सुनो सुनो राइ झूंमकरा।। १।।
सर्व लोक सब ठौर है राइ झूंमकरा।
क्या उत्तम क्या नीच सुनो राइ झूंमकरा।। २ ।।
गिरही द्वारे देखिये राइ झूंमकरा।
बैरागी ब्रह्मचारी सुनो राइ झूंमकरा।। ३ ।।
पण्डित के पट बीच है राइ झूंमकरा।
ना कुछ भिन्न चमार सुनो राइ झूंमकरा।। ४ ।।
चार वर्ण षट् आश्रम राइ झूंमकरा।
सरबंगी सब मांहि सुनो राइ झूंमकरा।। ५ ।।
गंध पौहप में कहत हूँ राइ झूंमकरा।
ज्यूं वृक्षा मध्य छांह सुनो राइ झूंमकरा।। ६ ।।
क्षण पल नहीं वियोग है राइ झूंमकरा।

न्यारा है अक मांहि सुनो राइ झूंमकरा।। ७ ।।
धरनि गगन में फिरत है राइ झूंमकरा।
फिर वह ठांह की ठांह सुनो राइ झूंमकरा।। ८ ।।
वृक्षा अपनी ठौर है राइ झूंमकरा।
छाया दशौं दिश देख सुनो राइ झूंमकरा।। ६ ।।
वृक्ष वर्ण बप जानिये राइ झूंमकरा।
छाया के रूप न रेख सुनो राइ झूंमकरा।। १० ।।
ऊँच नीच बप देश है राइ झूंमकरा।
सरस निरस निरताइ सुनो राइ झूंमकरा।। ११ ।।
औह निर्गुण न्यारा रहै राइ झूंमकरा।
संपट नहीं समाइ सुनो राइ झूंमकरा।। १२।।
कौन वर्ण विधि तास की राइ झूंमकरा।
सतगुरु कहो संदेश सुनो राइ झूंमकरा।। १३।।
ब्रह्मा सनकादिक रटैं राइ झूंमकरा।
गावैं शंकर शेष सुनो राइ झूंमकरा।। १४ ।।
धरणी गगन पग ना धरै राइ झूंमकरा।
सुंन बे सुंन से न्यार सुनो राइ झूंमकरा।। १५।।
पलक पीठि में बसि रह्या राइ झूंमकरा।
खेले अधर अधार सुनो राइ झूंमकरा।। १६।।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड हैं राइ झूंमकरा।
एक रत्ती नहीं भार सुनो राइ झूंमकरा।। १७।।
ऐसा भगल बनाईया राइ झूंमकरा।
नहीं जीत नहीं हार सुनो राइ झूंमकरा।। १८।।
शकित शेष हैरान है राइ झूंमकरा।
गति मति लखी न जाइ सुनो राइ झूंमकरा।। १६।।
मौला अलख अपूरबी राइ झूंमकरा।
नहीं पिता नहीं माइ सुनो राइ झूंमकरा।। २०।।
सेत वर्ण शुभ रंग है राइ झूंमकरा।
उठें अनंत तरंग सुनो राइ झूंमकरा।। २१।।
तोल मोल नहीं माप है राइ झूंमकरा।
जुगन जुगन सत्संग सुनो राइ झूंमकरा।। २२।।
तर्क दुनी कूँ त्याग दे राइ झूंमकरा।
परमानन्द से प्रीति सुनो राइ झूंमकरा।। २३।।
दास गरीब अमर पटा राइ झूंमकरा।
सतगुरु शब्द अतीत सुनो राइ झूंमकरा।। २४।। ७।।

सब गीता का मूल है राइ झूंमकरा।
भागौति रामायण बांचि सुनो राइ झूंमकरा।। १।।
तत्व ज्ञान कोई ना कहै राइ झूंमकरा।
पैसे ऊपर नांच सुनो राइ झूंमकरा।। २।।
नादी बादी लंपटी राइ झूंमकरा।
कामी क्रोधी कूर सुनो राइ झूंमकरा।। ३।।
लालच नीच नकीब है राइ झूंमकरा।
जिन से सांई दूर सुनो राइ झूंमकरा।। ४।।
तत्व ज्ञान शुकदेव कह्या राइ झूंमकरा।
विश्वामित्र वाशिष्ठ सुनो राइ झूंमकरा।। ५।।
ब्यास बालनीक कूँ कह्या राइ झूंमकरा।
खूल्ही दृष्टि अदृष्टि सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
सनकादिक नारद मुनि राइ झूंमकरा।
तत्त ज्ञानी ध्रुव जान सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।
प्रहलाद पैज प्रवांन है राइ झूंमकरा।
साक्षी है शशी भान सुनो राइ झूंमकरा।। ८।।
जनक विदेही जगत में राइ झूंमकरा।
राजा योगी एक सुनो राइ झूंमकरा।। ९।।
गोरख जीते ज्ञान कर राइ झूंमकरा।
शुकदेव दिया बिवेक सुनो राइ झूंमकरा।। १०।।
दत्त तत्त में मिल रह्या राइ झूंमकरा।
नौ योगेश्वर नाद सुनो राइ झूंमकरा।। ११।।
निरबासी निर्वाण पद राइ झूंमकरा।
जाकै विद्या न बाद सुनो राइ झूंमकरा।। १२।।
नाथ जलंधरा तत्त मथ्या राइ झूंमकरा।
भरथरी गोपीचंद सुनो राइ झूंमकरा।। १३।।
अमर कछ अस्थरि भये राइ झूंमकरा।
तत्त मिल करें अनंद सुनो राइ झूंमकरा।। १४।।
सूजा सैंन बाजीद हैं राइ झूंमकरा।
पीपा और रैदास सुनो राइ झूंमकरा।। १५।।
नामा निर्गुण पद मिले राइ झूंमकरा।
तखत कबीर खवास सुनो राइ झूंमकरा।। १६।।
नानक दादू दरश लखि राइ झूंमकरा।
तत्वे तत्त जुहार सुनो राइ झूंमकरा।। १७।।
पिण्ड प्राण परचे भये राइ झूंमकरा।

पुनरपि जन्म निवार सुनो राइ झूंमकरा।। १८ ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश है राइ झूंमकरा।
सब बाजी के खंभ सुनो राइ झूंमकरा।। १९ ।।
तत्त ज्ञान तीन्यौं मिले राइ झूंमकरा।
शब्द रचे आरंभ सुनो राइ झूंमकरा।। २० ।।
गिरजा और गणेश है राइ झूंमकरा।
तत्त ज्ञान निज मूल सुनो राइ झूंमकरा।। २१।।
शंकर शब्द लखाईया राइ झूंमकरा।
बिना पिण्ड अस्थूल सुनो राइ झूंमकरा।। २२ ।।
जिन शिव शकित उपाईया राइ झूंमकरा।
है निर्गुण निःतत्त सुनो राइ झूंमकरा।। २३ ।।
दास गरीब दशौं दिशा राइ झूंमकरा।
वार पार नहीं अंत सुनो राइ झूंमकरा।। २४ ।। ८।।
ऐसा सतगुरु सेईये राइ झूंमकरा।
मुकित रूप सब साज सुनो राइ झूंमकरा।। १ ।।
सुरति निरति पर तखत है राइ झूंमकरा।
सत्य पुरुष का राज सुनो राइ झूंमकरा।। २ ।।
अजब नवेला देश है राइ झूंमकरा।
जानै जानन हार सुनो राइ झूंमकरा।। ३ ।।
त्रिकुटी छाजे बैठ कर राइ झूंमकरा।
सुरति निरति भरि तार सुनो राइ झूंमकरा।। ४ ।।
मनसा वाचा कर्मणा राइ झूंमकरा।
हंसा उतरे घाट सुनो राइ झूंमकरा।। ५ ।।
दिल के बीच दलाल है राइ झूंमकरा।
खूल्हे सहज कपाट सुनो राइ झूंमकरा।। ६।।
ज्ञान राछ गलतान है राइ झूंमकरा।
नाम नली से नेह सुनो राइ झूंमकरा।। ७।।
ध्यान की खूंटी गाडिये राइ झूंमकरा।
प्रेम की पान से नेह सुनो राइ झूंमकरा।। ८ ।।
सरगुण खाडि शरीर है राइ झूंमकरा।
निर्गुण ताना तंत सुनो राइ झूंमकरा।। ९ ।।
दिल में दीपक बालिये राइ झूंमकरा।
तहां वहां तार अनंत सुनो राइ झूंमकरा।। १० ।।
अरस कुरस तांना तन्या राइ झूंमकरा।
उत्तर दक्षिण है पेट सुनो राइ झूंमकरा।। ११ ।।

सब शाहन पति शाह है राइ झूंमकरा।
सोई जगत है सेठ सुनो राइ झूंमकरा।। १२ ।।
मक्रतार मुक्तार है राइ झूंमकरा।
छिन आवै छिन जाइ सुनो राइ झूंमकरा।। १३ ।।
सुरग सात असमान पर राइ झूंमकरा।
खेले सुरति सुभाइ सुनो राइ झूंमकरा।। १४ ।।
मक्रतार डोरी गहो राइ झूंमकरा।
यौह निज पंथ हमार सुनो राइ झूंमकरा।। १५ ।।
पल बाहर पल अंदरे राइ झूंमकरा।
सुरति गुडी ज्यूं तार सुनो राइ झूंमकरा।। १६ ।।
खैंचत खैंचत खैंचिये राइ झूंमकरा।
त्रिकुटी तार समोइ सुनो राइ झूंमकरा।। १७ ।।
उड़गन गुडी उड़ाइ दे राइ झूंमकरा।
पल में पारिंग होइ सुनो राइ झूंमकरा।। १८ ।।
पृथ्वी दहनावर दीजिये राइ झूंमकरा।
अपने ही घर बैठ सुनो राइ झूंमकरा।। १९ ।।
अंदर बाहर एक है राइ झूंमकरा।
दिल दरिया में पैठ सुनो राइ झूंमकरा।। २० ।।
तहां वहां मीनी मघ कहूँ राइ झूंमकरा।
खूल्हे चिशम गुलाल सुनो राइ झूंमकरा।। २१ ।।
बिन डूंगर मोरा कहौंक ही राइ झूंमकरा।
सुंन सरवर बिन पाल सुनो राइ झूंमकरा।। २२ ।।
हंस कतूहल करत है राइ झूंमकरा।
मुक्ताहल की खान सुनो राइ झूंमकरा।। २३ ।।
दास गरीब येता लखै राइ झूंमकरा।
सतगुरु के प्रवान सुनो राइ झूंमकरा।। २४।। ९ ।।
मानसरोवर मालवे राइ झूंमकरा।
लुब्धी भौंरा जांहि सुनो राइ झूंमकरा।। १ ।।
बिन पर उड़ै आकाश कूँ राइ झूंमकरा।
सुंन सरवर ठहरांहि सुनो राइ झूंमकरा।। २ ।।
अशन वसन नहीं बिस्तरा राइ झूंमकरा।
अगम भूमि बैराठ सुनो राइ झूंमकरा।। ३ ।।
घर नर नारी नहीं नेहरा राइ झूंमकरा।
ना कछु पंथ न बाट सुनो राइ झूंमकरा।। ४ ।।
गगन मंडल में महल है राइ झूंमकरा।

जहां पांच पचीस न आठ सुनो राइ झूंमकरा।। ५ ।।
शब्द समुंद्र सूभर भर्‍या राइ झूंमकरा।
कौन दिशा कूँ घाट सुनो राइ झूंमकरा।। ६ ।।
उत्तर पंथ हमार है राइ झूंमकरा।
द्वादश दरिया दीप सुनो राइ झूंमकरा।। ७ ।।
मुरजीवा मुक्ता लहै राइ झूंमकरा।
जहां मोती होंहि बिन सीप सुनो राइ झूंमकरा।। ८ ।।
काया माया भ्रम है राइ झूंमकरा।
शब्द अतीत समूल सुनो राइ झूंमकरा।। ६ ।।
उपजें विनशें हैं नहीं राइ झूंमकरा।
एक देवा बिन अस्थूल सुनो राइ झूंमकरा।। १० ।।
षट् दर्शन खाली फिरें राइ झूंमकरा।
भूलें हिंदू तुरक सुनो राइ झूंमकरा।। ११ ।।
कोट्यों मध्यों को नहीं राइ झूंमकरा।
अरबौं में कोई गरक सुनो राइ झूंमकरा।। १२ ।।
औह साजन बिना शरीर है राइ झूंमकरा।
कैसे आवै दृष्टि सुनो राइ झूंमकरा।। १३ ।।
शुकदेव ध्रुव प्रहलाद से राइ झूंमकरा।
खोजत हे वाशिष्ठ सुनो राइ झूंमकरा।। १४ ।।
त्रिदेवा तारी लगी राइ झूंमकरा।
गहबर गंध सलौंन सुनो राइ झूंमकरा।। १५ ।।
अनंत जुगन गये ध्यान में राइ झूंमकरा।
ताहि बुलावै कौन सुनो राइ झूंमकरा।। १६ ।।
एक रतन बहु पारखू राइ झूंमकरा।
न्यारा न्यारा मोल सुनो राइ झूंमकरा।। १७ ।।
कीमत कर्ता की नहीं राइ झूंमकरा।
नहीं उजन नहीं तोल सुनो राइ झूंमकरा।। १८ ।।
सकल रंग में मिल रह्या राइ झूंमकरा।
सकल रंग से न्यार सुनो राइ झूंमकरा।। १६ ।।
दास गरीब मजीठ रंग राइ झूंमकरा।
ऐसा देश हमार सुनो राइ झूंमकरा।। २०।। १०।।

अथ असटांग

कुंभ कण्ठ नासा, सुभ संत सूवा। कुल पंथ कूपं, भ्रम नीस जूवा।। १।। त्रिमाल त्रिकुटी, नभ नाद द्रवनं। भ्रिकुटी भँवर गुंज, लघुसीन

श्रवणं।। २।। भुज दण्ड साजं, गुलजारी गातं। पढ़ते सुषम वेद, अनुराग रातं।। ३।। छुछिम छिके छाकं, चितघन विदेही। रहते गगन सुंन, निज रूप येही।। ४।। असटं सहंस, संखा न संखा। देखो सुरति बांधि, दृष्टि न नंका।। ५।। कहते गरीबं, तबीबं हिजूरी। मृगा न जानें, कहां है कस्तूरी।। ६।। १।। शुकदेव सिहर कौन, भ्रमां नि भूतं। ब्रह्मा विष्णु ईश, कलपंत दूतं।। १।। बपुदेश बिरवा, जानी सुजाना। निर्गुण निरालंब, बानी न बाना।। २।। इन्द्री अजूदं, सजूदं सनाथा। त्यागी जनक जानि, शुकदेव बाथा।। ३।। बीतराग बंधे, अजब ख्याल ख्यालं। बंध्या स मुक्ता, जनक भीर मालं।। ४।। कहते गरीबं, गलत योग जुगता। परसत विदेही, परम धाम मुक्ता।। ५।। २।। ममता स माया, चिंत्या स चेरी। भ्रमों सु भारिजा, भुवन सकल फेरी।। १।। क्रोधी सु कूपं, कामी स कलुवा। लोभी सु लारं, टिकते न तलुवा।। २।। इच्छा सु असतल, शंका स सूलं। बैराग बिचरंत, डालो न मूलं।। ३।। भगली भगल गंज, मन डाग डोलं। जोगी भरथरी सु, पीकं टिटोलं।। ४।। कहते गरीबं, गृहचार येही। त्यागी जनक जांनि, शुकदेव अंदेही।। ५।। ३।। कंदर्प गुदा गात भगनी स भोगं। कथो ज्ञान ध्यानं, कहां योग योगं।। १।। लोहा कु लोहा, कुटल रूप द्रोहं। प्रसंत पारस, अग्र मूल सोहं।। २।। गुसटांन गलतं, चलतं अचानं। गृहचार तन तत्त सोहं सुभानं।। ३।। मूरति अमूरति अनिन नाम नासा। बाहर न भीतर, न पौहमी अकाशा।। ४।। अलबूद सूदं, मकरंद मोहं। कहते गरीबं, असथान कोहं।। ५।। ४।। चमकंत बीजं, ग्रज गाज गाजं। बरषंत मेघा, अनराग साजं।। १।। झिलकंत शशि ताल, कदली कमौदं। दीदार दर्शन, दया दीन शोधं।। २।। अलल कुंजि कुंज्या, मीनी न पंथा। कैसे सपोषन, देही न दन्ता।। ३।। सुरति नालि सकती, निरति का निशाना। पाया न खोया, अमानं अमाना।। ४।। मैंहदी पत्र मध्य लाली गुलालं। कहते गरीबं, जु हाजर हमालं।। ५।। ५।। बिचरंत नागा, दुरमानि देहं। जट मुंड भद्रा, अजू दांन खेहं।। १।। मन मंज मोखा, विष्णुनाथ धर्मं। तन मंज तूंबा, करुवा स कर्मं।। २।। जड़ जूंनि सेवा, कर्म काण्ड संध्या। बिना मूल पाये, सो भटकंत पंथा।। ३।। नघ ब्रह्म भूले, तिलक माल ढोढा। बाजंत घंटा सु, रीझंत मोडा।। ४।। निर्गुण निजारा, हजारा हिजूरं। कहते गरीबं, भ्रम भेख दूरं।। ५।। ६।। बाजंत तूरं, कलपंत शूरं। दुरमांस नासं, त्यागंत हूरं।। १।। सतीइन सलसाज, मुरदं फरोसा। इन्द्री लुब्ध काम, कुल कूँ न दोषा।। २।। काची चिता चित, बाजंत लोहा। यौही खेत साधं, मैदांन गोहा।।

३।। दानी दया राख, दतवी ज दतं। कोटं नमो नाम, सोहं सोहं सोंह सत्यं।। ४।। कुल काट शूरा, सती साल कामं। नमो देव देवं, चिदानंद रामं।। ५।। मन अंक भटकंत, भूतां न भूतं। कहते गरीबं, सहे साल दूतं।। ६।। ७।। ब्रह्मा स नादं, भिरंगी स कीटं। सूरज शिखर तेज, उल्लू न दीठं।। १।। कामनि कला छंद बंझा न ब्याई। ध्रुव की सही मात, सिसटा बिलाई।। २।। गुटके गलत गंगा, उड़ते ज सिद्धा। पीबते सवा मन, जम जाल फंधा।। ३।। जंत्र जता योग गोरख ज्ञानी। मेला सु मुख मूद, पलटंत बानी।। ४।। खारा सू मीठा, मीठा सू खारा। गोरख गति मूल, ततो बिचारा।। ५।। हनू हेत हाका, उचंक्या सु दौंना। भरत बान खैंच्या, जु समझंत पौंना।। ६।। औगन अगम में, नहीं नेक नामा। पंडों नरक में, हते हैं अस्वथामा।। ७।। बिरंच ताल बाजी, गुंजार घोरं। कहते गरीबं, सु रजनी न भोरं।। ८।। ८।। काशी सु मघरं, अगरं धतूरा। भसमांत भूतं, शिवनाथ पूरा।। १।। गंगा स गीता, भागौति भेवं। सुर संत लीनं, राकस बिछेवं।। २।। हिरनांक्ष रावण, शिशुपाल कंसा। चानौर चूरंत, बूडंत वंसा।। ३।। अपगुन अविद्या, कर्माणि नाशी। तथो जांनि मगहर, तथो जांनि काशी।। ४।। बिछी सेज फूलं, सुरग नाद झीनं। जुलहदी कबीरं, सुधां देह लीनं।। ५।। देख्या तलूबाज, दूजा न कोई। कहते गरीबं, चिदानंद सोई।। ६।। ६।। जंत्र सुजानं, मंत्रं बिरोधं, बरतं बिसूसाल, जगतं परोधं।। १।। शिव बरत साजं, एकादश अधूतं। चौदसि सिहर साल, न जांनि भूतं।। २।। चंद्रानि बरतं, सूरज समूलं। ना पाई देवो, उरध मुख झूलं।। ३।। मूंल गुदा नाद, प्रणाम योगं। धोती रु नेती, जु न्यौली अरोगं।। ४।। प्रानं अपानं, समानं शरीरं। वृक्षा सु पेड़ं, कहां नाद नीर।। ५।। आसन सिंहासन, कहां योग राजं। इन्द्री दमन दूत, ना त्यागि नाजं।। ६।। पशु पंछ नूरं, जहूरं जबानं। सकल संग सोहं, सकल से अमांनं।। ७।। मौंनी अमौंनी, सु भेखो अभेखा। न जानि पद पाई, रूपो न रेखा।। ८।। त्यागी बैरागी न, गिरही उदासी। न जानि मोकूँ, जो भूले सन्यासी।। ६।। तप योग तारी, अनारी अनीतं। मोअंक आडे, सु पाखान भीतं।। १०।। झरणें जलाबिम्ब, तांपत उरधं। नहीं रंग जुग बांधि, बाजी सु बुरदं।। ११।। बाजी बुरद होत, जुग जुग खिलारी। ऐसा खेल खेलंत, जीतो संसारी।। १२।। सुरग उरध बाहूँ, अकाशी भद्र मुंडं। कहते गरीबं, स त्यागो जटा झुंडं।। १३।। १०।। मुद्रा मुदांइम, सु दांइम नहीं रे। चलत पिण्ड प्राणं, सु परलौ गई रे।। १।। चिशमें उघरि मंद, झांपंत पलकं। न पाई मम रूप को

ध्यान अलफं।। २।। रवन पूर फेरे, धरे ध्यान ऊँचा। अगम से अगम हूँ, अधर बंध कूंचा।। ३।। त्रिकुटी न भृकुटि, न तालू न तंतं। पावे मुझे कौन, द्वारा न पंथं।। ४।। धोवे ऊँनकारी, अगम सुंन तारी। न्हावे कूप उरधं, सो अधरो अधारी।। ५।। पीवत अमीपान, करि मेर सूधा। अनबंच रहते, जिनौं से बिरूधा।। ६।। काया कलप अंग, करते करारं। जूंनी जन्म पाय, धरि शीश भारं।। ७।। पलटंत जामा, सु जामा सुधारं। नहीं मोक्ष मुक्ता, न देहूँ दीदारं।। ८।। द्वादश दमन पौंन, नाभि जमावै। अनंत कोटि भरमंत, मोकूँ न पावै।। ६।। काया कमल छाडि, खेलै गगन में। जिन कूँ न पाऊँ, सु बिचरैं अग्नि में।। १०।। करैं धरनि सैलं, पौंहमी स पैठे। आसन अधर में, गगन जाई बैठे।। ११।। जिनों रूप मो मरम, जान्या न भेवं, कहते गरीबं, पूछो शुकदेवं।। १२।। ११।। दुरबीन झाखी, नाकी सु ध्यानं। जिन से अलहदा, सु मम रूप बांनं।। १।। माला विशाला, महोदधि मिलापं। जिन कूँ न पाऊँ, जपें अजपा जापं।। २।। झलकंत नघ नूर, पदमो सुबानां। क्षीरो समुंद्रं, जहां शेष थानां।। ३।। दुमदेह गगनं, मुख जो पतालं। झिलमिल जलाबिम्ब, रतनों स लालं।। ४।। चिशमें गुलालं, बिसालं सु धारी। नारायण शेषं, ग्रिद रूप क्यारी।। ५।। बाजू भुजा दण्ड, मुख शीश मीना। झलकंत पदमं, नघनो सु भीना।। ६।। कोषं कूरंभ ख्यालं, दुम नेस झीनं। मुख सेत शोभ्या, लखे जो प्रबीनं।। ७।। सहंस मुख सर्वत्र, ररंकार रामं। धरनी बिजोगं, सु शेषा अमानं।। ८।। गिरद नाद कुण्डलं, हरी पलक भौंहा। जपते सहंस मुख, ना उराध सोहं।। ६।। तालू कपोलं, ढोलं समुंद्रं। घटा घोर कारा, सु बरषंत बदरं। १०।। नमो शेष नारायण, पारानि रूपं। अनंत कोटि कलंगी, सु झिलमिल सरूपं।। ११।। गगन सुंन गाजे, निवाजे निवासा। अनंत कोटि धामं, सु बाजू बिलासा।। १२।। जाके शिखर शीशं, छुछिम बिनांनी। मगन पीत रूपं, महकंत बानी।। १३।। गुसटांनि मंतरं, छुछिम रूप छाका। जाके परे हैं, अनंत कोटि शाखा।। १४।। ब्रह्मा स विष्णुं कृष्णं स तोहं। ऊँ सोहं सोहं ऊँ।। १५।। यौही मूल मंत्रं, कटक बीज माहीं। अनंत कोटि ब्रह्मांड, रचे हैं गोसाईं।। १६।। ऊँ सोहं मधि है, स मधि है। ज्यूंका त्यूं हीं देख, घट है न बध है।। १७।। घट मठ बैकुण्ठ, बसता न कोई। दोजिख भिसति सुरग, पाताल सोई।। १८।। महतत्व मेला, अकेला नियारा। कहते गरीबं, सकल तुझ अधारा।। १६।। १२।। ममो पद परख, पूर पावै न कोई। अधर मूल शाखा, लख्या जान लोई।। १।। अधर संख भानं,

अमानं अलीलं। लहीं स्याम सेतं, नहीं रक्त पीलं।। २।। पदम संख शोभ्या, समाधान सोई। अक्षयवृक्ष अस्थीर, नहीं बीज बोई।। १३।। श्रीमाल शाखा, अँकार शकित। अनंत कोटि दामिनी, खिमें बिसन भक्ति।। ४।। मादर पिदर अंस, गुपतार गोता। अरस के कंगूरे, सु बोलंत तोता।। ५।। लगे गैब गोता, सुरग संख बेधे। परखे पतालं, स येता ऊमेदे।। ६।। अग्र मूल बीजं, अछीजं बताया। जामें न उगे, न काया न माया।। ७।। राई सहंस धार, मम रूप मूलं। कहो कौन पावैं, बिना डाल फूल।। ८।। मगर मच्छ माया, सकल जीव खाया। लखै कौन मोकूँ, छूछिम रूप राया।। ६।। कली अष्ट कमलं, रहे मध्य मौला। करै खोज बूझं, कमल स्याह धौला।। १०।। धौले कमल मध्य, स्याही नरेशा। स्याही कमल में, बटक बीज भेषा।। ११।। बटक बीज खिरकी, लगी है लिलाटं। तहां वहां अग्र मूल, मम संत बाटं।। १२।। मम रूप पावै, सु मम रूप होई। कहते गरीबं, दूसर न कोई।। १३।। १३।। गऊ कोटि दानं, जज्ञा असुमेदं। कूपं पौहप बाग, पोखरि उमेदं।। १।। मक्रेत काशी, परब गंग न्हानं। तपो होम नेमं, पढ़े जो पुरानं।। भागौति गीता, पढ़ो क्यूं न कोई। चहौं वेद मुख पाठ, ऐसा जु होई।। ३।। बिना नाम जानें, जनम जात अंधे। सतगुरु मिलै तो, कटै सकल फंधे।। ४।। ऊँ मूल मंतरं, श्रीकार साधे। अनभय षट वेद, ऐसा अराधे।। ५।। ऊँकार मंत्रं, जपै जोग जुगता। पढ़े नाद वेदं, सकल काज मुक्ता।। ६।। ऊँ मूल शाखा, ब्रह्म ईश माई। अनंत कोटि कलपं, सु कमलं भुलाई।। ७।। ऊँ मूल माया, मनो काम करनी। रटे ईश ब्रह्मा, सु बिष्णौ निसरनी।। ८।। ऊँ मूल माया, बजर नाद रूपं। तहां कोटि ब्रह्मा, रटें तोहे सरूपं।। ६।। ऊँ अण्ड पिण्ड, सु ब्रह्मण्ड रचनी। उपावै खपावै, ऐसा कछ कछनी।। १०।। ऐसा नाच नाचंत, बाचंत कोई। तहां कोटि शंभू, जु ल्यौलीन होई।। ११।। अग्र मूल माया, उपावै खपावै। सुसम वेद सोहं, बिना नाद गावै।। १२।। सुसम वेद शाखा, अनंत कोटि धारा। नमो मात गंगे, जटा दर फुहारा।। १३।। नमो मात गंगी, अभंगी त्रंगी। छूटें संख धारा, अपारा बिनंगी।। १४।। माया भुजंगी, सिरंगी समूल। सती चौंर करि है, सुनावो निमूलं।। १५।। निमूलं अतूलं, निराकार निरभै। जानें न कोई, बसै लोक सरबै।। १६।। किरण संख भानं, अमांनं अलहदा। श्रीमूल माया, उपाया सु बहदा।। १७।। अनिन नाम नासो, न मासो न माया। सदा सत्त सोहं, पिण्डोन काया।। १८।। अनिन नाम नावं, बिनावं बिनावं। कहते गरीबं, बिना मूल पावं।। १६।। १४।। मूलो न फूलो, न शाखा न पतरं। आसन

सिंहासन मुकटो न छतरं।। १।। श्रीमाल सोहं, सोहं सोहं। ताकी खवासी, करै मूल ऊँ।। २।। किरण संख शोभ्या, तहां मन लोभ्या। बिन मूल फूलं, मयंग झोब्या।। ३।। झडैं घनसारं, अपारं अपारं। दुरबीन दर्पण, दिल दम दीदारं।। ४।। दिल दम दीदारं, जुहारं जुहारं। पलक पंथ पैण्डा, बुहारं बुहारं।। ५।। श्रीनाद सोहं, श्रीमाल ऊँ। कहते गरीबं, बटक बीज तोहं।। ६।। १५।। भगद्वार नादं, अबादं अजन्य। पुत्र संग साठं, दस दोई कन्या।। १।। कलपं कुलं कार, मम रूप जोगं। चक्र कला नेम, शस्त्र अमोघं।। २।। शिशुपाल दमनं, कलप रूप कालं। टूटंत घंटा, अचानं हमालं।। ३।। अरजन धनक धूप, लख संध बानं। गोपी लुटें बान, पूठे सुरानं।। ४।। छूटें सार लोहा, अनंता अनंतं। कलप रूप करदं, शस्त्र बाल जंतं।। ५।। भीषम दमन कर्ण, दुर्योधन मारे। टूटंत घण्टा, जु पंड दल उबारे।। ६।। द्रौपदी बढ़े चीर, कलपंत करुणा। उतरे पीतंबर, झीनें अबरना।। ७।। अनंत कोटि चीरं, कल्पना सु तोरी। पीतंबर अटंबर, चलैं कैंसे जोरी।। ८।। असुर थाकि बादं, सुनी है ज राधं। डूबंत गज काजि, पैरों पियादं।। ६।। पितरो बिंजन भूख, अढ़कार देवं। रिख शीष ऐसी, शत्रु नाश छेवं।। १०।। कूरंभ पंनिग धौल, हम शीश भारं। अधर लोक शकित, जो अपने अधारं।। ११।। इन्द्री कर्म नाश मन मंद होई। कहो कौन मंत्रं, समूलं समोई।। १२।। अनंत कोटि जगि, जलाबिम्ब न्हावैं। अनंत कोटि होमं, सु बेदी रचावें।। १३।। अनंत कोटि दानं, बिना इच्छा आशा। अनंत कोटि वेदं, पढ़ो सिरंग श्वासा।। १४।। अनंत कोटि आसन, सिंहासन सिरारं। सुरपति इन्द्रं, मंदरं बिहारं।। १५।। अनंत कोटि गीता, गती नाद गेहं। अनंत कोटि विद्या, सु विद्या सनेहं।। १६।। अनंत कोटि जप तप, जुगा जुग जगावै। इन्द्री न मन थीर, न मूल पावै।। १७।। कोटिक जन्म देह, फूके फुकावै। इन्द्री न दमनं, न मन थीर पावै।। १८।। कोटिक जन्म धूप, धूनी ध्याना। पावे न मोकूँ, तजो देह प्राणा।। १६।। कोटिक जन्म देह, झरना उपासी। पावै न मोकूँ, बसो क्यूं न काशी।। २०।। कोटिक जन्म देह, बदरी बिशालं। बैठो विमानं, जु सुरगो पतालं।। २१।। कोटिक जन्म देह, पिण्डो प्रधानं। पावै न मोकूँ, जो आसन ईशानं।। २२।। कोटिक जन्म अंग, बिरकत विदेही। पावै न मोकूँ, जो गृह का सनेही।। २३।। कोटिक जन्म जंग, सूरे करांही। पावै न मोकूँ, दुनी राह जांही।। २४।। कोटिक जन्म दत्त, दानी प्राणी। पावै न मोकूँ, चहूँ खानि सानी।। २५।। कोटिक जनम मुरद, मट्टी जु लेवें। आपन डूबंत, औंरा न

खेवें।। २६।। कोटिक जन्म जल, सज्या शरीरं। पावै न मोकुं, जलाबिम्ब कीरं।। २७।। कोटि कनी कनक, गज फील दानं। पृथ्वी प्रदक्षिणा, न होवै अमानं ।। २८।। इन्द्र कुबेर, वरुण क्यूं न होवै। पावै न मोकूँ, नहीं बाट जोवै।। २६।। कोटिक जन्म देह, कनक धार बूठे। पावै न मोकूँ, नहीं जूंनि छूटे।। ३०।। तपो नाश कालं, शरन संत आवै। मगन बे इच्छा, सु मम रूप पावै।। ३१।। मम संत मुझे जांनि, मेरा सरूपं। अधर बास देऊँ, कलप कोटि रूपं।। ३२।। मम संत सेवा, करै चरण चापी। आदि अनादं, नहीं काल झांपी।। ३३।। मम संत सेवा, करत हैं ज राजी। बिछरौं न तासों, अनंत जांहि बाजी।। ३४।। जपै मूल मंत्रं, नहीं नाश ताका। पढ़ै गोई गुझं, सुसम वेद शाखा।। ३५।। अगम पंथ पुष्पं, बिछी फूल सेजं। मंत्रं गुईं गात, लख भांन तेजं।। ३६।। बैकुण्ठ बटक बीज, जांतन है जोई। निःइच्छा निरबासी, निःकामी है सोई।। ३७।। रागो न दोषो न, दुंदी न धारा। है तो सृष्टि में, सृष्टि से नियारा।। ३८।। छिमापद छिके हैं, अतीतं अतीमं। नहीं जूंनि जन्म, गर्वो न नीमं।। ३६।। नहीं गर्भ त्रासं, सुबासं शरीरं। कलप कोटि जुग जात, जूंनी न पीरं।। ४०।। मेरी शरण शंकि, ब्यापै न कोई। अभै पद अमानं, द्यों बास तोंही।। ४१।। मेरी शरण संत, आवै अबूझं। मंत्र गायत्री, जपै मौन गुझं।। ४२।। ज्ञानो बनज वेद, उलटै अपूठा। मूढ़ो मुगध मंद, संसार रूठा।। ४३।। आदर अनादर, करो क्यूं न कोई। मम संत शरणें, जगत जांनि छोई।। ४४।। मगनं छत्र छाहं, राजा न काजा। चलते नगन पैर, कुहियां न बाजा।। ४५।। एता इलम त्यागि, आ सरनि मेरी। इन्द्री दमन नाश, कटि फंध बेरी।। ४६।। मन मीन दरिया, सरोवर समावै। चुगे हंस मोती, न कागा कहावै।। ४७।। मेंढक बुगल काग, खाते हमेशा। जांनें न मोकूँ, कहै भेख भेषा।। ४८।। सेनां चलें कोटि, आगे अनंतं। राजी बिराजी, नहीं मान संतं।। ४६।। नहीं मान मोदं, असोधं बिरूनं। कलप तास करि हूँ, जु दीन्हा ज धूनं।। ५०।। सुरग में धजा देख, फरकंत ध्रुव की। रहती सुनीतं, अनपाई भूखी।। ५१।। ऐसा नाम नेहं, संदेह न कोई। भक्ति माल देशं, निपा नाज सोई।। ५२।। नारद मिले ध्रुव, ध्यान बताया। संवाय सोहं, जु मंत्र सुनाया।। ५३।। अजर मूल मुद्रा, ज निद्रा न झंपै। लग्या तार तत्त में, नहीं काल चंपें ५४।। तहां सेत कमलं, लगी है समाधी। चूके कला ना, बरत बांस बादी।। ५५।। मन मूल मोहं, सोहं सेवा। लग्या ध्यान ऐसा, मिले ब्रह्मदेवा।। ५६।। चांचर अचांचर, चिशम झांपि झोके। इन्द्री निराधार मन हठ

रोके।। ५७।। इन्द्री दमन कीन्ह, मन मठ छाया। त्रिकुटी गुफा बीच, ध्रुव ध्यान लाया।। ५८।। आसन पदम बंध, उलटी जो पौंना। चढ़े बंक नालं, गवन गगन कीन्हा।। ५९।। पेचा शक्ति खोल्हि, सुंन में समाये ।बजे नाद अनहद अगम धाम पाये।। ६०।। प्रानं अपानं, समानं समोई। जीती धनंजै, क्रिकल खुध्या खोई।। ६१।। रेचक रजु माद, कुंभा ज कीता। खुल्हे सुसम वेदं, प्रणाम कीता।। ६२।। बंधे कमल मूलं, गणेशो पुजाया। कंदर्प गुदा नाद, उलटा बाहाया।। ६३।। पूजा गणेशं, हमेशं जो होई। मंत्र किलियं, जाप जाने न कोई।। ६४।। कूरंभ कुरबान ता पीठ शेषं। तहां धौल ध्यानं, शकित सो प्रवेशं।। ६५।। खूल्हे कमल नाभं, चहूँ वेद चंपें ऋग यजु सामं, अथर्वणं संपे।। ६६।। ता मध्य सुसम वेद, बिन अंक पढ़िया। स्याही न कलमं, कागज न चढ़िया।। ६७।। खुल्हे द्वार सिंभु, अरंभं अजोती। लगी मध्य खेचर, बरषें ज मोती।। ६८।। द्वादश उलटि, सेत कमलं चढ़ाया। अनंत भांन रूपं, मिली मूल माया।। ६९।। गंगा रु जमुना, सरस्वती छुटी है। बटक मोक्ष द्वारं, तहां आई मिली है।। ७०।। तहां आई मिली है, चली है पतारं। याही बाट मम धाम, काशी किदारं।। ७१।। चांचरि घमंड कीन्ह, मुख मूंदि द्वार। श्रवण सुरग बंधि, खूल्हे किवारं।। ७२।। भँवर मीन मेला, करै संत पूरा। बाजें गगन में, बिना मुख तूरा।। ७३।। बैठ्या गगन में, अडिग नाद पूरं। गावें दिवंगना, अनन्त कोटि हूरं।। ७४।। कीये कर्मशाला, उजाला भुवन में। हरदम होमं, सु दीपक पवन में।। ७५।। सुरति निरति निर्मल, पदम नाभि नेहा। ऐसा ध्रुव धियानी, जु पद से संनेहा।। ७६।। गिरद नाद कुण्डल, उगे पश्चिम सूरं। चंदा लिलाटं, बरषंत नूरं।। ७७।। सुनी संख टेरं, घुमेरं घुमाना। बाजंत मुरली, जु अनभै दिवाना।। ७८।। ऐसा ध्रुव धियानी, अमानी अपारं। बाजंत सुरग बीन, दादुर गुंजारं।। ७९।। कर्म नाश कीता, अनीता अनीतं। पवन बंध जोगी, बिजोगी उदीतं।। ८०।। लगी शब्द तारी, अजारी बिरह का। खिले कमल कुण्डल, जो महकंता महका।। ८१।। नारद मुनि मठ, गगनं बताया। लगे ध्यान पद में, कलप कोटि माया।। ८२।। कलप कोटि माया, जहां रंग राती। तहां ध्रुव धियानी, अधर मूल पाती।। ८३।। ब्रह्मा विष्णु ईश, इन्द्र अषारा। खूली समाधि, अधर पद अधारा।। ८४।। निर्भय अचल बास, ल्यौह ध्रुव धियानी। बचन मोर मानो, स पद में समानी।। ८५।। मैं चरन चेरा, जु तेरा गुलामं। बकस मोर प्राणं, जु माया अलामं।। ८६।।

साहिब सुरति नाल, हरदम हमारे। कहते गरीबं, अलल ध्यान धारै।। ८७।। १६।।

अथ राग रमैंणी

जो चेला सतगुरु का होई। हमरी चाल चलैगा सोई।। १।। मूल कँवल कस बंध बियांना। जासे उलटें पांन अपाना।। २।। गुदा कँवल कंदर्प का दौंना। बजर कछौटी बांधे पौंना।। ३।। नाभि कँवल सम सूधा कीता। गगन मण्डल सुन अनहद गीता।। ४।। हिरदे कँवल करीला कीजे। सुरति निरति मिलि सोहं लीजे।। ५।। कण्ठ कँवल से पलटै बानी। तो चेला सतगुरु का जानी।। ६।। त्रिकुटी कँवल में चंपा चौंरा। भँवर गुफा में उजल भौंरा।। ७।। सहंस कँवल दल फूले जोती। मानसरोवर मुक्ता मोती।। ८।। पछिम दिशा का खोले तारा। फूल रहे चंपा गुलजारा।। ९।। सप्तुपुरी का भेद अभेदा। सतगुरु मिले मेरु दण्ड छेदा।। १०।। अनंत कोटि जहां शंकर शेषा। हरदम हाजर रहते पेशा।। ११।। ब्रह्मा विष्णु गिने नहीं जांही। सुख सागर की सिन्धु समांही।। १२।। नाद नाद नारद त्रिकाली। शब्द महल में लागी ताली।। १३।। कोटि कृष्ण जहां करै करीला। ऐसा अनहद रास रसीला।। १४।। दस प्रकार अजब धुन रासा। संख कान्ह जहां करैं विलासा।। १५।। अमरलोक सनकादिक सेवा। सुरनर मुनिजन जपते देवा।। १६।। यौह तो अक्षर खण्ड बताया। आगै निःअक्षर गुरु राया।। १७।। सप्त अण्ड का भेद बखाना। आगे सुंन शिखर सैलाना।। १८।। शब्द बिहंगम चाल हमारी। जहां शेष महेश नहीं अवतारी।। १९।। ब्रह्मा विष्णु न नारद नादू। जा घर पौंहचे सतगुरु साधू।। २०।। अगम दीप की कहूँ निशानी। संख कला रवि रूंम समानी।। २१।। हंस हिरंबर हेत लगाया। गैबी गुमट अरस में छाया।। २२।। चौंर सुहंगम ढुरैं अपारा। जा दर परस्या हंस हमारा।। २३।। सुंन मंडल सत्यलोक निधाना। अविगत नगर भये सैलाना।। २४।। जा पद परसि बहुरि नहीं आवैं। शब्द अतीत अरस मठ छावै।। २५।। नाद बिंद नहीं धरि हैं हंसा। शब्द अतीत मिलै कुल बंसा।। २६।। दास गरीब हिरंबर मेला। याह चाल चलै सतगुरु का चेला।। २७।।

अथ ब्रह्म रमैंणी

ऐसा ब्रह्म विचारो लोई। आदि अन्त मुक्ता पद सोई।। १।। आत्म जीव सकल एक जाती। ऊँच नीच कुछ भिन्न न भांती।। २।। पांच तत्व घट नाद जहूरा। जामें बाजे गैबी तूरा।। ३।। अष्ट कँवल दल कुदली काया। जामें हंसा खेलन आया।। ४।। मूल कँवल कसि बंध लगावो। उलटी पवन गगन कूँ ध्यावो।। ५।। नाभि कँवल कूँ निश दिन फेरो। हिरदे जाप अजपा हेरो।। ६।। हिरदे कँवल जुहारा हेतं। सोहल कला चंद्रमा सेतं।। ७।। कंठ कँवल कुंभी रस प्याला। शब्द सुषमनी कूंची ताला।। ८।। परमहंस पेखो प्रवाना। खुल्हे कपाट धरो सुंन ध्याना।। ९।। इला पिंगुला सुषमन द्वारा। गगन मंडल में महल हमारा।। १०।। मेरु दण्ड मैदान खिलारी। जहां पौंहचे नहीं तपी ब्रह्मचारी।। ११।। सहंस कँवल दल फूले जोती। मानसरोवर मुक्ता मोती।। १२।। अक्षर धाम अगमापुर आगे। सतगुरु मिले तो हंसा जागे।। १३।। मक्रतार मारग मैदाना। कोई पौंहचे साधु संत सुजाना।। १४।। मानसरोवर झिलमिल धारा। हंसा केलि करें हुशियारा।। १५।। सुखसागर रतनागर पाया। हंसा जाय अरस मठ छाया।। १६।। सप्त अन्ड का भेद लखाऊँ। सुंन मण्डल सत्यलोक सिधाऊँ।। १७।। अलल पंख अनुरागी हेला। शब्द महल धुंन हंसा मेला।। १८।। अलंकार अग है अनरागी। जहां गवन करें हंसा बड़भागी।। १९।। ऐसा शब्द समुंद्र दरिया। हीरे मानिक सूभर भरिया।। २०।। अरध उरध बैजार सराफं। जा मध्य हंसा अजपा जापं।। २१।। सुंन दरीबे ज्वाहर खाना। लाल अमोली अजब दुकाना।। २२।। जहां गुरुमुख साधू सौदे जावैं। बौहरि न भवसागर में आवैं।। २३।। सहंस इकीसों छै सौ धागा। निश वासर होंहि खण्ड बिहागा।। २४।। कौंन नाद में नलकी जोई। आगा पीछा मध्य न कोई।। २५।। मन का कौन ठौर है बासा। जाका भेद सुनाऊँ दासा।। २६।। बिन पर पंखी करै पियाना। सुंन मण्डल सत्यलोक निधाना।। २७।। जा सायर से अक्षर पाटा। बौहर्यों फेर न पाया घाटा।। २८।। इच्छा रूपी खेलन आया। ताते सुखसागर नहीं पाया।। २९।। सुरति निरति दो मालिनि मिहरी। सेज सिंहासन सेवन लहरी।। ३०।। संख कला सरवर सैंलाना। जा मध्य हंसा करो पियाना।। ३१।। अधर धार पर खेल हमारा। निर्गुण झड़ सुंन मण्डल धारा।। ३२।। मक्रतार से मारग झीना। कोई पौंहचेंगे साधू प्रवीना।। ३३।। कायर गिरें परें भौ मांहीं। सावंत सुभट सूर ठहरांहीं।। ३४।। निर्वासी निहकामी जांहीं। निहइच्छा निर्गन्ध समांहीं।। ३५।। शब्द महल में सिध्दि चौबीसा। हंस बिछोरें बिसवे

बीसा।। ३६।। एक सिद्धि सुरदेव मिलावै। एक सिद्धि मन विरति बतावै।। ३७।। एक सिद्धि है पौंन सरूपी। एक सिद्धि होवै अनरूपी।। ३८।। एक सिद्धि निस वासर जागै। एक सिद्धि सेवक होय आगै।। ३६।। एक सिद्धि सुरगापुर ध्यावै। एक सिद्धि जो सब घट छावै।। ४०।। एक सिद्धि सब सागर पीवै। एक सिद्धि जो बौह जुग जीवै।। ४१।। एक सिद्धि जो उड़ै अकासा। एक सिद्धि परलोके बासा।। ४२।। एक सिद्धि कष्टी तन जारा। एक सिद्धि तन हंस नियारा।। ४३।। एक सिद्धि जल डूब न जाई। एक सिद्धि जल पैर न लाई।। ४४।। एक सिद्धि बहु चोले धारै। एक सिद्धि निहतत बिचारै।। ४५।। एक सिद्धि पांचों तत्व नीरं। एक सिद्धि जो बजर शरीरं।। ४६।। एक सिद्धि पीवै नहीं खांहीं। एक सिद्धि जो गुपत छिपाई।। ४७।। एक सिद्धि ब्रह्मण्ड चलावै। एक सिद्धि सब नाद मिलावै।। ४८।। येता खेल खिलारी खेले। सोहं हंसा प्रगट बेले।। ४६।। चौबीसां कूँ ना दिल चाहवै। सो हंसा शब्द अतीत कहावै।। ५०।। परासिद्धि पूरन पटरानी। सत्य लोक की कहूँ निशानी।। ५१।। सत्यलोक सुखसागर पाया। सतगुरु भेद कबीर लखाया।। ५२।। परमहंस पेखो प्रवाना। जन कहता दास गरीब दिवाना।। ५३।।

अथ आदि रमैंणी

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धूंधूंकारा।। १।। सत पुरुष कीन्हा प्रकाशा। होते तखत कबीर खवासा।। २।। मन मोहिनी सिरजी माया। सतगुरुष एक ख्याल बनाया।। ३।। धर्मराय सिरजे दरवानी। चौसठ जुग तप सेवा ठांनी।। ४।। पुरुष पृथिवी जा कूँ दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।। ५।। ब्रह्मण्ड इक्कीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जग लीन्हा।। ६।। माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लीये जिनहूँ धर्मराजा।। ७।। धर्म का मन चंचल चित धार्‍या। मन माया का रूप विचारा।। ८।। चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।। ६।। धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।। १०।। आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल से त्यागी।। ११।। पुरुष लोक से दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।। १२।। सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौन कौन कुल पंथा।। १३।। धर्मराय बोले दरवानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।। १४।। चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथिवी हम कूँ दीन्ही।। १५।। चंचल रूप भया मन बौरा।

मन मोहिनी ठगिया भौरा।। १६।। सतगुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।। १७।। अगर दीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।। १८।। बोले सहज दास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।। १६।। सतपुरुष से अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।। २०।। सहज दास को कीया पियाना। सत्यलोक लिया प्रवाना।। २१।। सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।। २२।। धर्मराय तुम्हारा दरवानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।। २३।। कौन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौं उस धर्मराजा।। २४।। भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।। २५।। सहज विमान चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।। २६।। हम तो अरज करी अनरागी। तुम विषय लोक जावो बड़भागी।। २७।। धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।। २८।। मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थाना लाये।। २६।। बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।। ३०।। इन पांचों मिल जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।। ३१।। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज बठाया।। ३२।। यौह खोखापुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगा सी साजी।। ३३।। कृतिम जीव भुलाने भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।। ३४।। सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।। ३५।। उपति खपति याह प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।। ३६।। पांचों तत्व हैं प्रलय मांहीं। सत्वगुण रजगुण तमगुण झांई।। ३७।। आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्मण्ड सकल भरमाया।। ३८।। या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्मण्ड लगी है खोरी।। ३६।। श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।। ४०।। सुनाऊँ हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।। ४१।। भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।। ४२।। पांचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।। ४३।। हमरा धर्मराय सौं दावा। भवसागर में जीव भरमावा।। ४४।। हम तो कहैं अगम की बानी। जहां अविगत अदली आप बिनानी।। ४५।। बंदी छोड हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।। ४६।। जुगन जुगन हम कहते आये । जम जौंरा से हंस छुटाये।। ४७।। जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।। ४८।। या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो किन देखा।। ४६।। दास गरीब अगम की बानी। खोजो हंस शब्द सहदानी।। ५०।।

अथ शब्द रमैंणी

ऐसा ब्रह्म विचारो हंसा। छाडो लोक लाज कुल बंसा।। १।। उत्पत्ति प्रलय काहे बहिये। जुगन जुगन दुःख जमका सहिये।। २।। शब्द अतीत सिंधु घर कीजे। राम रसायन अमृत पीजे।। ३।। नाभि कँवल और नासा अगरी। सोई काशी सोई मघरी।। ४।। इला पिंगुला सुषमन द्वारा। बजर पौरि का खोल्हो तारा।। ५।। जामन मरन मिटै इस भाँती। शब्द महल जहां सुषमन तांती।। ६।। निज मन सेती निज मन लावै। खाखी मन की भ्रान्ति उठावै।। ७।। परम तत्व से लावै तारी। पकरै मूल न चीन्है डारी।। ८।। गुण इन्द्री के बीज बीजोवै। तुरिया पद में हंस समोवै।। ९।। परसे ब्रह्म करम सब जारै। सतगुरु मिलै तो हंस उबारै।। १०।। अकल पाट पर सतगुरु लेखा। काहे षट दल भरमै भेषा।। ११।। मरि मरि गये गुकित नहीं पाई। लोक दीप कोई बिरला जाई।। १२।। संपट खोल समुंद्र पैरे। तेजपुंज लखि हंसा लहरें।। १३।। अदल बंध अनरागी सोई। दास गरीब मुक्ति यौं होई।। १४।।

अथ भगल रमैंणी

भगलीगर आये ब्रह्मज्ञानी। अरस अनाहद अग हैं बानी।। १।। बटक बीज का यौह बिस्तारा। जासे उपजे नौ अवतारा।। २।। चौसठ और सहंस अठासी। तेतीसौं और तीन्यों जासी।। ३।। जैसे सिंधु बुदबुदा होई। मिटे बुदबुदा सिन्धु है सोई।। ४।। ऐसे भिन्न भई है दूजी। आत्म कूँ गुरु आत्म पूजी।। ५।। सतगुरु शब्द अतीत कहावै। देह धरे धरि महल लखावै।। ६।। जैसे तरुवर मांहे छाया। ऐसे ब्रह्म शब्द में माया।। ७।। बंधे मूल पवन कूँ पीवै। जुगति करै तो जुग जुग जीवै।। ८।। अजरी बजरी पलटै बिन्दा। बिचरै जब जग सूरज चंदा।। ९।। मेरु दण्ड पर बोलै सूवा। पट्टन घाटी अमृत कूवा।। १०।। पिंगुल नाड़ी बांधि चलावै। इला के घर उलटि समावै।। ११।। सुषमन सेझा पलटै जोती। भँवर गुफा में झलकै मोती।। १२।। बिन आकार पदम जहां दीसे। सतगुरु गाजत है सिर शीशे।। १३।। जोग जुगति करि जीतै काया। न्यौलह घाटी बंध लगाया।। १४।। पिण्ड ब्रह्मण्ड सं न्यारा बोलै। रूप न रेख तुले नहीं तोलै।। १५।। रक्त न पीत न जरद न काला। दास गरीब अमर एक लाला।। १६।।

अथ अमर कछ रमैंणी

प्रथम जोग सुनो नर लोई। बंधो मूल पवन थिर होई।। १।। द्वादश दरशे पलटे पौंना। बहुरि न होई आवा गौंना।। २।। बाहर जाता भीतर ल्यावो। भँवर गुफा में उलटि समावो।। ३।। सोहं शब्द कहां अस्थानी। कौन कँवल में बारा बानी।। ४।। अंबर भीजे धरती बरसे। सोलह कला संपूरन दरशे।। ५।। षट् चक्र में चंचल खेले। बिन कोल्हू कहां निकसे तेले।। ६।। जो तुझ दीपक जोया चहिये । तो शब्द अनाहद हंसा गहिये।। ७।। कंदर्प जीतै सो ब्रह्मज्ञानी। बंक नाल बंधै रस पानी।। ८।। सप्त सुरों का एके द्वारा। ता घाटी से बंधे पारा।। ६।। ता घाटी पर बंध लगावै। सो तो कामधेनु दुहि ल्यावै।। १०।। सहंसमुखी सत न्हावै गंगा। मेटै मन की लहरि तरंगा।। ११।। चंचल को कोई निश्चल जीते। पलक एक चारों जुग बीते।। १२।। या घट में अनहद आनन्दां बिचरे जब लग सूरज चन्दा।। १३।। चंचल कूँ खाये सब लोका। कोई न देख्या मुक्ता मोखा।। १४।। कहन सुनन की कहते बाता। कोई न देख्या अमृत खाता।। १५।। साखी शब्दी पढ़ै बिचारैं चंचल कूँ कोई निश्चल मारैं।। १६।। भवसागर में आवें जांहीं। चौरासी में गोते खांहीं।। १७।। बजर पौलि पट खोल्हे सोई। मिले सिन्धु में आपा खोई।। १८।। अमर कछ होइ पिण्ड न फूटे। दास गरीब जुगन जुग छूटे।। १६।। साखी :- **गरीब,** अमर कछ इस विधि भये, सतगुरु शब्द विचार। दिल दरिया में पैठ कर, देखो वार रु पार।। २०।।

अथ मुहंमद रमैंणी

हम ही मुनींद्र नाम धराये । हम ही जोग जीत होय आये।। १।। हम केवल करनाम कहावै। हम ही सिन्धु कबीर समावै।। २।। मुहंमद बोध सुनो ब्रह्मज्ञानी। शंकर दीप आये धुंन ध्यानी।। ३।। लोक दीप कूँ हम लेगैऊँ। इच्छा रूपी वहां न रहैऊँ।। ४।। उलटि मुहंमद महल पठाया। गुझ बीरज इक कलमां धाया।। ५।। रोजा बंग निवाज दई रे। बिसमल की नहीं बात कही रे।। ६।। चार यार मिल मसलति भीनी। गऊ पकर कर बिसमल कीन्ही।। ७।। तब हम मुहंमद याद किया रे। शब्द सरूपी बेग गया रे।। ८।। मुई गऊ हम बेगि जिवाई। तब मुहम्मद के निश्चय आई।। ६।। तुम्ह सत

कबीर अलह दरवेशा। मन मुहंमद का गया अंदेशा।। १०।। दास गरीब अनाहद थीरं। भज ल्यौ नाम मुनींद्र कबीरं।। ११।।

अथ विज्ञान रमैंणी

क्या गावै महबूब हमारा। जाका ज्ञानी करो विचारा।। १।। जाके दसत न चरण न काया छाया। रूप न रेख कौन गति राया।। २।। पीठ न पेट नैंन मुख द्वारा। जाका मुनिजन करो बिचारा।। ३।। रक्त न पीत न सेत न सूहा। जा की कौन बरन गति रूहा।। ४।। ना जाया न मुवा न मरता। सो तो नौ अवतार न धरता।। ५।। जा कूँ खोजै हिंदू मुसलमाना। खोजै कौम छत्तीसौं बांना।। ६।। षट् दर्शन खोजत सब थाकें अवतारों के गावै साके।। ७।। खोजत शेष महेश गणेश रु गौरा। तेरी सिपत सुनि हो गये बौरा।। ८।। जाके आसन असतल गाम न धामा। जा कूँ खोजै नो अवतारी रामा।। ९।। दास गरीब कहैं नर लोई। साहिब चीन्हें बिरला कोई।। १०।।

अथ भेख चितावनी रमैंणी

भेख बनाई दई है टीकी। इन्द्री मन मनसा नहीं जीती।। १।। बहु विधि भांति किये अचारा। कहा भया तन लाई छारा।। २।। जूट रखाई भद्र भये भाई। निज धर की कोई खबर न पाई।। ३।। कान चिराई भये हैं जोगी। बहर मुखी हैं रिद्धि के रोगी।। ४।। चेतन मूरति जड़ कूँ पूजें। अनहद शब्द न मूरख बूझें।। ५।। याह जड़ मूरति घड़ी ठठेरें माथा फोरे मारि अंधेरे।। ६।। शालिग शिला परहरो भाई। शब्द अतीत रहो ल्यौलाई।। ७।। शब्द हमारा सत कर माना। जा हंसा कूँ द्यौं प्रवाना।। ८।। जा कूँ ना प्रतीत हमारी। सो हंसा बूडे जलधारी।। ९।। अगर दीप सत्यलोक पठावें। पद प्रतीत बौहरि जो ल्यावें।। १०।। अजर अमर अनरागी हंसा। जाइ मिलो अपने कुल वंशा।। ११।। अगर दीप सत्यलोक सिघासन। कहैं **गरीबदास** दासन के दासन।। १२।।

अथ तर्क रमैंणी

काछैं भेख कहावें भांडी। घट में पैठी दुविधा रांडी।। १।। नारी पांच पच्चीसों पूता। ता कारण फिरता रूता रूता।। २।। अजरी बजरी करै बियानां जिन शब्द अतीत महल नहीं जान्या।। ३।। धोती नेती न्यौली कर्मा। इन्द्री नाल चलावै बरमा।। ४।। गज कर्मी गुरुवाई क

चेरा। धोवै आंत कँवल नित फेरा।। ५।। षट कर्म है बंधन भाई। चोला पाख लगे नहीं काई।। ६।। पांचों मुद्रा करें बियांना। जा से भेद आगोचर जान्या।। ७।। चौरासी आसन बसि कीन्हें। अनरागी निःतत्व न चीन्हें।। ८।। कामधेनु का कित है बासा। अमृत दूझे परवे आशा।। ९।। कामधेनु दुहि पीवो साधू। दुर्लभ देश सत्यलोक अगाधू।। १०।। तीन सुंन में जम की जाली। आसन जोग नाम बिन खाली।। ११।। चौथी सुंन लखै जन कोई। आवा गवन बहुरि नहीं होई।। १२।। मेरु दण्ड की बाट बताऊँ। पैठि दरीबे अमृत ल्याऊँ।। १३।। अक्षर धाम की डोरी सूची। सोलह संखी रामत ऊँची।। १४।। मक्रतार का मारग झीना। भेद अभेद शब्द घर चीन्हा।। १५।। सुंन मंडल सत्यलोक बसेरा। बहुरि न हंसा कर हैं फेरा।। १६।। सत्यलोक से सतगुरु आये। हंसा आन शब्द बिरमाये।। १७।। बंदी छोड कबीर गोसांई। द्रवे नूर झिलमिले झांई।। १८।। अदली आदि कबीर पियारे। जिन हंसा भवजल आन उबारे।। १९।। लख चौरासी बंधन तोरे। अनरागी से चिशमें जोरे।। २०।। शब्द बिहंगम सैंन उदासी। सुंन मण्डल रहते अविनाशी।। २१।। सूली ऊपर सेज लखाई। कहो गुरुदेव कौन विधि जाई।। २२।। तखत हजूरी चाकर लाये। सतगुरु सत के दाग दगाये।। २३।। सप्त अंड पर धाम हमारा। जहां ऊँ सोहं नहीं पसारा।। २४।। ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं बानी। शेष महेश गणेश न जानी।। २५।। जहां राम रहीम करीम न कोई। अलह अलेख इसम नहीं दोई।। २६।। खुद खुदाई जहां नहीं भाईं तहां कहो किस की ठकुराई।। २७।। नौ अवतार जहां नहीं कोई। शब्द अतीत रहै निर्मोही।। २८।। कृत्रिम ख्याल तबक नहीं बाजी। वेद पुराण न पंडित काजी।। २९।। घर अंबर नहीं पावक पानी। अगम अगोचर अकथ कहानी।। ३०।। जहां जीव न शीव न सुरति न निरता। ज्ञानी गुणी मूढ़ अनसुरता।। ३१।। बेगम पुरा ब्रह्मगति आदू। जहां दास गरीब बिराजै साधू।। ३२।।

अथ निर्गुण रमैंणी

निगुर्ण राजिक महल बनाया। अष्ट कँवल दल भँवर छिपाया।। १।। जा में तीन सै साठ चिहर बंध लागा। शब्द स्वरूपी सीम्या धागा।। २।। जामें थान बहत्तरि बावन कंगूरा। इस नगरी में अजब जहूरा।। ३।। जहां अठसठ तीरथ मान तलाई। मान सरोवर हंसा न्हाई।। ४।। शब्द सुषमणा कूंची ताला। संत समागम फिरें पियाला।। ५।।

अगर पौहप में शब्द समाना। मिट गया जूंनी आवन जाना।। ६।। सहंस पंखड़ी अजब हिंडोला। सोहं हंसा निर्गुण चोला।। ७।। सोलह संख सुंन सैलांना। जहां शब्द अतीत महल अस्थाना।। ८।। जन दास गरीब कहैं नर लोई। साहिब चीन्हे बिरला कोई।। ९।।

अथ तत्वभेद रमैंणी

पृथ्वी तत्व मुख मालिक मेला। पवन तत्व नाखी सुर खेला।। १।। अग्नि तत्व दरगह दरहाला। जल तत्व नूरी आत्म ताला।। २।। गगन तत्व में गगन ज्ञाना। पांच तत्व का यह अनुमाना।। ३।। पृथ्वी तत्व ले पीत पिछाना। पवन तत्व हरयाई बाना।। ४।। जल तत्व नूर सुफेदी धारा। गगन तत्व जो लीला कारा।। ५।। अग्नि तत्व जलती महताबी। पांच तत्व का रंग गुलाबी।। ६।। सतयुग द्वापर त्रेता जानों। चहुँ पहर का भेद बखानों।। ७।। सतगुरु शब्द सत्य कर मानों। घड़ी घड़ी की अवधि जानों।। ८।। पलक पलक का छाना बीना। तिन नर योग युक्ति पद दीना।। ९।। सांस उसांस मध्य है सोई। इसको चीन्हे सो निर्मोही।। १०।। शब्द डोरी जिन पकड़ी भाई। सार वस्तु तिनहुँ ने पाई।। ११।। दास गरीब कहै समझाई। याका भेद प्रगट दिखलाई।। १२।।

अथ अर्थ बंध रमैंणी

प्रपट्टन परलोक निधाना। परमहंस पेखो प्रवाना।। १।। प्रपट्टन परलोक, निधाना निधि, परमहंस साहिब, पेखना नाम दीदार का।। कहां सूई में रहे सुमेरं। बिन जल पाहन कहां तरेरं।। २।। सूई सुरति, सुमेर मन, जल प्रतीत, प्रतीत के ऊपर कर, पाहन मन तर्या। सहंस मुखी कहां गंग ज्ञानी। सुषम वेद कहां गावै बांनी।। ३।। सहंस मुखी गंग, त्रिकुटी कँवल में, सुषम वेद, शब्द सिन्धु।। बिन सरवर कहां सीप सजोई। बिना स्वांति कहां मोती होई।। ४।। बिन सरवर, सीप सुरति, स्वांति शील, मोती नाम।। बिन दरिया दादुर कहां बोले। बिन पलड़ें मानिक कहां तोले।। ५।। दादुर दिल, पलड़ा प्रीति, मानिक वाणी।। बिना चुंच कहां मोती चुगना। बिन कागज कहां लिखिये लगनां।। ६।। बिन चंच चित्त, मोती नाम चुगिये, कागज करीला, लगन लैं।। बिन जल मीन कहां चलि जाई। बिन पर भौंर उडें कहां भाई।। ७।। मीन मन, भौंर भाव, पर प्रेम, जांहि अगम दीप के तांई।। बिन मुख भोजन कहाँ अहारा, बिन

रसना कहां शब्द उचारा।। ८।। बिन मुख विवेक, भोजन अमीरस कंद, कहाँ हिरदा हिरंबर, बिना रसना अजपा जाप, शब्द उचार अनाहद वाणी।। बिना कनक कहां हार हमेलं। बिन कोल्हू कहां चवता तेलं।। ६।। कनक कर्तार, कहाँ चांचरी, हार हेत, हमेल हिलमिलाट, कोल्हू उरध मुखी चवता, तेल तत्त।। कहां चीपी पर चूल्हा भाई। बिन ईंधन कहां अग्नि जलाई।। १०।। चीपी चित, कहां कुरबान, चूल्हा इला पिंगुला, ईंधन काम क्रोध, अग्नि विरह अग्नि।। बिन तरुवर कहां निर्मल कन्दा। बिन चिसम्यों कहां दर्वे चन्दा।। ११।। बिन तरुवर अक्षय वृक्ष, कहा अगम भूमि, निर्मल कन्द अमीरस, बिन चिसम्यों बैराठ द्रवें, पिण्ड ब्रह्मण्ड से न्यारा, चन्दा नूर।। बिन संदूख कहो कहां लालं। बिन झीवर कहां परते जालं।। १२।। संदूख सुरति, लाल नाम, कहा अरध उरध, बिन बीनती, झीवर झोक, कहा अरस कुरस, जाल जन्म जीतना।। बिना शीश कहां पंखी सूवा। उरध मुखी कहां अस्थीर कूवा।। १३।। बिना बपदेश, बिना शीश पंखी, सूवा मन, उरध मुखी कूवा, अस्थीर गगन में।। कहां मच्छी कूँ बुगला खाया। कहां कागा कूँ हंस पढ़ाया।। १४।। कहां हिरदा कँवल, मच्छी नूरी मन, बुगला खाखी मन, खाया नूरी मन नें, कागा खाखी मन, सतगुरु से परसि हंस हुवा, आपे कूँ आप पढ़ाया।। कहां दादुर कूँ सर्प सिंघार्यां अग्नि बिना कहां तन मन जार्या।। १५।। दादुर दिल, सर्प संसा कहा हिरदा कँवल, अग्नि विरह अग्नि, तन मन जार्या ले समाधि में।। कहां रैंन चकवी का मेलं। फूले फूल कहां बिन बेलं।। १६।। कहां अनाहद भूमी, रैंन अनाहद राग, चकवी चित्त, चकवा अनाहद, शब्द में मेला, फूल प्रेम, कहा हिरदा कँवल बुद्धि बेल, कहा त्रिकुटी कँवल।। कहां कूप बिन सींचे माली। कहां बैल चालै बिन हाली।। १७।। कूप उरध मुख, बिन बिनती, सींचे सार तत्व, माली निज मन, कहा अरस कुरस, बैल चन्दासूर, चाले अरस, हाली हेत।। बिना चन्द कहां ध्यान चकोरं। बिन घनहर कहां कहूंकै मोरं।। १८।। बिन बिनती, चन्द अनाहद शब्द, कहा अरस, ध्यान धूंनि, चकोर चित्त, घनहर अनाहद घोर, कहा अरस, बिन कहूँकैं कहना, मोर मुकति।। बिन बादल दामिनी कहां द्रवै। बिना बीन कहां बाजे बरवै।। १६।। बिन बीनती, बादल बुद्धि, दामिनी तेज पुंज की, कहां अर्स, द्रवे दीदार, बिन बिनती बीन अनाहद रास, कहां अरस, बाजे अनाहद मंदल, बरवे विवेक।। कहां मूसे कूँ हिती बिलाई। कहां स्याल कूँ सिंघ चलाई।। २०।। कहां हिरदा कँवल, मूसा नूरी मन, हिती नाम

सो मारने का, बिलाई नाम दुर्मति का, स्याल शील सिंघ संसा, शील समाध, जब सब कारज सिध हुये।। कहां तीतर कूँ बाज पकड़िया। कहां चीते सूं मिरगा लड़िया।। २१।। कहां हिरदा कँवल, तीतर तत्व नाम, बाज विकार, हिरदे कँवल में नाम संचर्या, सब विकार जाते रहैं, कहां हिरदा कँवल, मिरगा नूरी मन, चीता चूक, जेती चूक थी सब उठाई दीन्ही।। बिन पानी धोबी कहां धोवे। बिन हल बेल बीज कहां बोवे।। २२।। बिन बीनती, पानी प्रेम, धोबी ध्यान, कहां प्रपट्टन की शिला, बिन बिनती, हल हेत, बुद्धि के बैल, बीज नाम, कहां हिरदा कँवल बोवै बेगि।। बिन जल कमल कहो कहां फूले। बिना बाट कहां पंथी भूले।। २३।। बिन बिनती, जल जुहारा, कमल करीला, कहां परम सुंन, बिन बिनती बाट गवन, भूले संसार सागर के तांही, कहां परम सुंन, पंथी हंस मन।। बिना डोरी कहां गुडी उडानी। बिन खोडि कहां बसते प्रानी।। २४।। बिन बीनती, डोरी डिढ, कहां परम सुंन, गुडी गलतान, बिना खोडि ऊँकार नाद, कहां पिण्ड ब्रह्मण्ड से रहत, बसै बासना, इच्छा रूपी प्राण हंस।। जंबक जूवा कहौ कहां खेलैं। गदै पासे कहौ कहां मेलै।। २५।। जंबक जोग जुवा, जुहार, कहो नाम बानी का, कहां नाम हिरदे कँवल का, खेलना नाम भक्ति भाव का, गदै नाम गम का, पासे नाम प्रेम का, कहौ नाम बानी का, कहां हिरदे कँवल में मेले।। बिना सारि कहां चौपड़ि मांडी। कहां डोऊ कूँ रोडै हांडी।। २६।। बिन बीनती, सारि सेवा, चौपड़ी चित्त, मांडणां नाम मंडप ज्ञान का, कहां हिरदा कँवल, डोऊ डिढ, हांडी हेत, रोडना नाम राग का।। कहां कुत्ते कूँ भुसै बटौरा। कहां वृक्ष बिन लागै मौरा।। २७।। कहां हिरदा कँवल, कुत्ता काल, भुसै भाव, बटौरा बटक बीज, जिहि में ज्ञान का समाना, कहां अगम भूमि, वृक्ष अक्षय वृक्ष, मौर अमीरस फल।। कहां गूनि पर लादै बैलं। बिन पग पंथी कहौ कहां सैलं।। २८।। कहां हिरदा कँवल, गूनि गम, पर परख, लद्या भाव, बैल विवेक, बिन बीनती, पग नाम प्रेम, पंथी हंस, कहौ नाम बांनी का, कहां नाम अगम भूमि का, सैल नाम सुरति का।। कहां भेड़ कूँ लाया थाना। कहां अजा के हैं किरसाना।। २९।। कहां हिरदा कँवल, भेड़ भाव, लाई लै, थाना स्थीर कहा हिरदा कँवल, अजा अजोग, किरसाना सुकर्म।। को जागीर तुम्हारी सूबं। कौन धाम रहते महबूबं।। ३०।। कौन राज तुम्ह अदलि पठाया। कौन सरे से चाकर आया।। ३१।। कौन तुम्हारी है बादशाही। अदलि बंध किस भेद पठाई।। ३२।। उहां तो नाम गाम नहीं बसती। इहां कौन कोतवाल

कौन है गसती।। ३३।। कौन उजीर फौज है तेरी। कौन दसत गहिया समशेरी।। ३४।। कौन नाम तुम्ह जग में दीन्हा। आत्म तत्त को कौन विधि चीन्हा।। ३५।। आत्म तत्त का करो बिचारा। सब घट एकै बोलन हारा।। ३६।। हम तुम तुम हम एकै अंसा। एकै जाति एक कुल बंसा।। ३७।। येता भेद समझ बे भौंदू। किस कूँ कहते तुरका हिन्दू।। ३८।। सरबंगी साहिब सैलानी। रमता राम सकल प्रवानी।। ३९।। सत्यलोक का भेद न भेद्या। अष्ट कँवल दल तुम्ह नहीं छेद्या।। ४०।। जो तुम ऐसे ब्रह्म ज्ञानी। तो सत्यलोक की कहो निशानी।। ४१।। अविगत नगर हमारा बासा। भेद अभेदा निर्गुण रासा।। ४२।। हम अहदी अविगत फरमानी। हमरा भेद नहीं कोई जानी।। ४३।। धर अंबर नहीं पौन न पानी। जा दिन की हम कहां निशानी।। ४४।। असंख जुगन प्रलय प्रवाना। जा दिन का हम कागज ठाना।। ४५।। आदि पुरुष के अहदी आये। ब्रह्म ज्ञान हंसा बिरमाये।। ४६।। पत्थर पांहन कमल जमावां। घर घर सिधा भक्ति पठावां।। ४७।। चौदह तबक हमारा डंका। धर्मराय मानत है शंका।। ४८।। हम अहदी हैं धुर के भाई। जम किंकर पर हमरी धाई।। ४९।। सत्यलोक के हम सैंलानी। आत्म तत्व से पलटें बानी।। ५०।। आदि अंत का करौ बिचारा। जित से उपज्या यौह संसारा।। ५१।। ऊँकार ईश्वरी माया। जिन ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जाया।। ५२।। पांच तत्व का पिण्ड ब्रह्मण्डा। जा में नदी अठारे गंडा।। ५३।। लख चौरासी हैं चहूँ खांनी। जाकी बेड़ी वेद कुरानी।। ५४।। तुम कोन राम का करते जापं। जाते मिटे न तीन्यू तापं।। ५५।। तामस करें क्रोधी कऊवा। अमी क्षीर चाख्या नहीं महुवा।। ५६।। तुम्हरा राम निरंजन नाती। ताते हम तुम्ह में हैं भान्ती।। ५७।। अनंत राम अयोध्या में आये। सो दसरथ के पूत कहाये।। ५८।। रघुवंशी राजा थे भाई। तीन लोक जाकी ठकुराई।। ५९।। कोटि राम गये लंका तोरी। तातें लखी न अविगत डोरी।। ६०।। आदि राम साहिब सरबंगी। अविगत अस्थीर अचल अभंगी।। ६१।। यौह बावन अक्षर विस्तारा। आदि राम का भेद नियारा।। ६२।। रमता राम अलख प्रवानी। सत्यपुरुष की कहूँ निशांनी।। ६३।। भ्रम भक्ति नहीं कीजे भाई। तुम हो जम की फरदी मांही।। ६४।। कौन मुकित के हो तुम बासी। भ्रम भेद में पड़े हुलासी।। ६५।। याह शब्दी का जाने भेवं। सो आपे कर्ता आपे देवं।। ६६।। आगे अदलि सरे की चौकी। कैसे उतरो घाटी औखी।। ६७।। हमरी चाल

बिहंगम बीनाां शब्द महल रहते ल्यौ लीना।। ६८।। जन दास गरीब कहैं नर लोई। रामे मिलै सो रामै होई।। ६६।।

अथ अगाध रमैंणी

ऊँ सुंन धौं औधू, सुंन कहां ते आई। जो भनभी सो गोद खिलाई।। १।। बाजै जोग लहे निज तुरं। पारब्रह्म बानी निज नूरं।। २।। कौन सुंन कौन की चेली। कौन नाद से रहै अकेली।। ३।। कौन सुंन किह जुगते जाई। जाकूँ बूढ़ी कहूँ क तरनी भाई।। ४।। जाका अलख निरंजन पार न पाया। सो बानी हमरा गुरु ल्याया।। ५।। कहौ धौं पारब्रह्म का कौन पसारा। कौन नाद जो सुंन से न्यारा।। ६।। सुंन सोई जो सुंन में बोले। कौन सुंन की ताली खोल्हे।। ७।। क्या ताली बिच मारग पईया। छिन में चेटक लागै भईया।। ८।। सर्व लोक की माया त्यागे। ममता टूटे गृह बैरागे।। ६।। दीन दुनी से होइगा न्यारा। सोई पावैगा सुंन पसारा।। १०।। पदम जन्म जो ब्रह्मा धारे। तो सत सुंन नाहीं प्रकारे।। ११।। विष्णु नाम हे सत सतेसा। सत सुंन से नाहीं भेटा।। १२।। सतानवें बेर शिव शंकर धाया। सत सुंन का मरम न पाया।। १३।। जैसे बटक बीज में बड़की छांहीं। ऐसे गुण इन्द्री मन मांहीं।। १४।। शब्द अतीत सिंध की सैली। मिटे बुदबुदा फोकट फैली।। १५।। क्या न्यारा क्या मध्य बताऊँ। सुकृत नाम कौन विधि पाऊँ।। १६।। सुकृत नाम सुरति की डोरी। निरति निरालंब पुरुष किसोरी।। १७।। सकल सुंन, महा सुंन, अभै सुंन, अलील सुंन, अजोख सुंन, सार सुंन, सत सुनं।। १८।। **गरीब,** सत सुंन में सत है, और सुंन प्रकाश। जहां कबीरा मठ रच्या, कोई पौंहचे बिरला दास।। १६।। सेत गुमट की सेव है, ज्यूं कुंजी के बैंन। दास गरीब जहां रत्ते, तहां पाया सुख चैंन।। २०।।

अथ मूल रमैंणी

मूल रमैंणी कहूँ समझाई। आदि अंत का भेद लखाई।। १।। संख जुगन का जोग विजोगं। सत्यपुरुष साहिब रस भोगं।। २।। अगर दीप सत्यलोक निवासा। जहां चौंरा करें कबीर खवासा।। ३।। आदि पुरुष अदली अनरागी। सुनों शब्द अचंत बड़ भागी।। ४।। ऊँकार उचार जु भैऊँ। नाद निरंजन आये कैऊ।। ५।। बावन अक्षर यौह विस्तारा। सतगुण रजगुण तमगुण धारा।। ६।। धर्मराय धरनी धर राजा। चौदह कोटि दूत संग साजा।। ७।। माया आदि अंधगति

मेला। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला।। ८।। इन पांचन मिलि कीन्ह बंधाना। समझैं नांही जीव दिवाना।। ९।। इन पांचन मिलि जीव अटकाये। जुगन जुगन हम आनि छुटाये।। १०।। मूल रमैंणी अरब करोरी। धर्मराय की हम बंधि तोरी।। ११।। चौदह अरब रमैंणी रासा। सुनि कर हंस न पावै तरासा।। १२।। अलील इक्कीस रमैंणी जोगं। सुनत गुनत मिटि संसा शोगं।। १३।। सत्रह संख रमैंणी अदली। हंसा खोजो काया कुदली।। १४।। द्वादश कोटि रमैंणी दरिया। सुनि कर हंसा ज्ञान उधरिया।। १५।। बावन लील रमैंणी बिरहै। भवसागर से हंसा तरि हैं।। १६।। अचल रमैंणी अस्थीर आदू। कोटि बहत्तर गाई साधू।। १७।। सुनो बिहंगम सार रमैंणी। सोलह संख भई सुख चैंनी।। १८।। आदि रमैंणी निरभै गाई। और रमैंणी सुन ले भाई।। १९।। नाद रमैंणी चीन्हों लोई। पंदरह खरब भई फुनि सोई।। २०।। बिंद रमैंणी भिन्न भिन्न सुनाई। तीस लाख चिहरे में आई।। २१।। अक्षर खण्ड रमैंणी पासी। चीन्हों हंसा पदम अठासी।। २२।। निःअक्षर नेश रमैंणी ज्ञानी। सात पदम भई जुग प्रवानी।। २३।। निःअक्षर से अक्षर फुटे। परमहंस हंसन से रूठे।। २४।। हम अविगत अदली दरवांनी। भिन्न भिन्न भेद कहा प्रवानी।। २५।। सत करि मानों शब्द संदेशा। सतगुरु का सुन ले उपदेशा।। २६।। गुटका ज्ञान हमारे पासी। चढ़ि चल हंसा बौहरि न आसी।। २७।। अमर करूं सत्यलोक पठाऊँ। संख पदम झिलमिल दरशाऊँ।। २८।। दास गरीब बिहंगम मेला। सत्यपुरुष अदली का चेला।। २९।।

अथ असुर निकंदन रमैंणी

सत पुरुष समरथ ऊँकारा। अदली पुरुष कबीर हमारा।। १।। आदि जुगादि दया के सागर। काल कर्म के मोचन आगर।। २।। दुःख भंजन दरवेश दयाला। असुर निकंदन करि पैमाला।। ३।। आब खाख पावक और पौना। गगन शुन्य दरियाई दौंना।। ४।। धर्मराय दरवानी चेरा। सुर असुरौं का करै नबेरा।। ५।। सत का राज धर्मराय करहीं। अपना किया सबै डंड भरहीं।। ६।। शंकर शेष रु ब्रह्मा विष्णं। नारद शारद जा उर रसनं।। ७।। गौरिज और गणेश गोसाई। कारज सकल सिधि होय जांहीं।। ८।। ब्रह्मा विष्णु रु शंभू शेषा। तीन्यूं देव दयाल हमेशा।। ९।। सावतरी और लक्ष्मी गौरा। तिहूँ देवा सिर करि हैं चौंरा।। १०।। पांच तत्व आरंभन कीन्हा। तीन गुनन मधि शाखा झीना।। ११।। सत गुरुष से ऊँकारा।

अविगति रूप रचे गैंनारा।। १२।। कच्छ मच्छ कूरंभ और धौला। सिरजन हार पुरुष है मौला।। १३।। लख चौरासी साज बनाया। भगलीगर कूँ भगल उपाया।। १४।। उपजैं बिनसैं आवैं जांही। मूल बीज कूँ संसा नांहीं।। १५।। लील नाभ से ब्रह्मा आये। आदि ऊँ के पुत्र कहायें।। १६।। शंभू मुनि ब्रह्मा की शाखा। ऋग युज साम अथरवण भाषा।। १७।। पीबरत भया उतानं पाता। जाके ध्रू है आत्म ज्ञाता।। १८।। सनक सनंदन संत कंवारा। च्यार पुत्र अनरागी धारा।। १९।। तैतीस कोटि कला बिसतारी। सहंस अठासी मुनिजन धारी।। २०।। कासिब पुत्र सूरज सुर ज्ञानी। तीनि लोक में किरण समानी।। २१।। साठ हजार संगी बालकेलं। बीना रागी अजब बलेलं।। २२।। तीनि कोटि जोधा संग जाके। सिक बंधी हैं पूरन साके।। २३।। हाथि खड्ग गलि पौहप की माला। कासिब सुत है रूप बिशाला।। २४।। कौसत मणि जड्या विमान तुम्हार। सुरनर मुनिजन करत जुहारा।। २५।। चंद सूर चकवे पृथ्वी मांहीं। निश बासरि चरणौं चित्त लांहीं।। २६।। पीठे सूरजि सनमुख चन्दा। काटें त्रिलोकी के फंधा।। २७।। तारायन सब सुरग समूलं। पखे रहैं सतगुरु के फूलं।। २८।। जै जै ब्रह्मा समरथ स्वामी। येती कला परम पद धामी।। २९।। जै जै शंभू शंकर नाथा। कला गणेश रु गौरिज माता।। ३०।। कोटि कटक पैमाल करंता। ऐसे समरथ शंभू कंता।। ३१।। चंद लिलाट सूर संगीता। जोगी शंकर ध्यान उदीता।। ३२।। लील कण्ठ सोहै गरुड आसन। शंभू जोगी अचल सिंघासन।। ३३।। गंग तरंग छूटैं बहु धारा। अजपा तारी जै जै कारा।। ३४।। रिद्धि सिद्धि दाता शंभू गोसांई। दालिद्र मोचि सबै हौय जांहीं।। ३५।। आसन पदम लगायें जोगी। निहइच्छा निरबानी भोगी।। २६।। सर्प भुंवग गलै रुंड माला। ब्रषभ चढ़िये दीन दयाला।। ३७।। बामें कर त्रिशूल बिराजै। दहनें कर सुदर्शन साजै।। ३८।। सुनि अरदास देवन के देवा। शंभू जोगी अलख अभेवा।। ३९।। तूं पैमाल करै पल मांही। ऐसे समरथ शंभू सांई।। ४०।। एक लख योजन धजा फरकैं। पचंरग झंडे मौहरे रखै।। ४१।। काल भद्र क्रित देव बुलाऊँ शंकर के दल सब हीं ध्याऊँ।। ४२।। भैंरो खित्रपाल पलीतं। भूत रु दैत चढ़े संगीतं।। ४३।। राकस भंजन ब्रिद तुम्हारा। ज्यौं लंका पर पदम अठारा।। ४४।। कोट्यौं गंधर्व कमंद चढ़ावैं। शंकर दल गिनती नहीं आंवै।। ४५।। मारै हाक दहाक चिघारै। अग्नि चक्र बांनों तन जारैं।। ४६।। कंप्या शेष धरणि थररानी। जा दिन लंका घाली घानी।। ४७।। तुम शंभू ईशन के ईशा। ब्रषभ

चढ़िये बिसवे बीसा।। ४८।। इन्द्र कुबेर और वरुण बुलाऊँ। रापति सेत सिंघासन ल्याऊँ।। ४९।। इन्द्र दल बादल दरियाई। छ्यानवै कोटि की हुई चढ़ाई।। ५०।। सुरपति चढ़े इन्द्र अनरागी। अनंत पदम गंधर्व बड़ भागी।। ५१।। कृष्ण भंडारी चढ़े कुबेरा। अब दिल्ली मंडल बौहर्यौं फेरा।। ५२।। बरन विनोद चढ़े ब्रह्मज्ञानी। कला संपूरन बारह बानी।। ५३।। धर्मराय आदि जुगादी चेरा। चौदह कोटि कटक दल तेरा।। ५४।। चित्रगुप्त के कागज मांहीं। जेता उपज्या सतगुरु सांईं।। ५५।। सातों लोक पाल का रासा। उर में धरिये साधू दासा।। ५६।। बिसन नाथ है असुर निकंदन। संतौं के सब काटें फंधन।। ५७।। नृसिंह रूप धरे गुरुराया। हिरनांकुस कूँ मारन धाया।। ५८।। शंख चक्र गदा पदम बिराजैं। भालि तिलक जाकै उर साजैं।। ५९।। बांहन गरुड क्रिसन असवारा। लक्ष्मी ढोरै चौंर अपारा।। ६०।। रावण महरावण से मारे। सेत बांधि सैंना दल त्यारे।। ६१।। जरासिंध और बालि खपाये। कंस केस चांनौर हराये।। ६२।। कालीदह में नागी नाथा। शिशुपाल चक्र से काट्या माथा।। ६३।। काल जवन मथुरा पर धाये। अठारह कोटि कटक चढि आये।। ६४।। मुचकंद पर पीतंबर डार्या। काल यवन जहां बेगि सिंघार्या।। ६५।। परशुराम बावन अवतारा। कोई न जानैं भेव तुम्हारा।। ६६।। संखासुर मारे निरबानी। बैराह रूप धरे प्रवानी।। ६७।। राम औतार रावण की बेरा। हनुमंत हाका सुनी सुमेरा।। ६८।। आदि मूल बेदी ऊँकारां असुर निकंदन कीन सिंघारा।। ६९।। बसिष्ठ विश्वामित्र आये। दुर्वासा और चुणक बुलाये।। ७०।। कपल कलंद्र कीन जुहारा। फौज नकीब सभन सिरदारा।। ७१।। गोरख दत्त दिगंबर बाला। हनुमंत अंगद रूप विशाला।। ७२।। ध्रू प्रहलाद और जनक विदेही। शुकदेव संगी परम सनेही।। ७३।। पारासुर और ब्यास बुलाये। नल नील मौहरे चढ़ि धाये।। ७४।। सुगरीब संगि और लछमन बाला। जोरि घटा आये घन काला।। ७५।। जैदे पायल जंग बजाये। अजामेल और हरिचंद आये।। ७६।। तांबरधुज मोरधुज राजा। अंबरीक कर पूरन काजा।। ७७।। सूरजि बंसी पंडौं। काल मीच सिर देवैं डंडौं।। ७८।। धर्म युधिष्ठिर धरै ध्याना। अर्जून लख संधानी बाना।। ७९।। सहदे भीम निकुल और कौंता। द्रौपदी जंग का दीन्हा न्यौता।। ८०।। हाथि खप्पर और मस्तक बिंदा। अठारह खूहनि मेले दुंदा।। ८१।। देवी शिव शिव करैं सिंघारे। खड्ग बान चकरौं से मारे।। ८२।। चौसठि जोगनि बावन बीरा। भक्षण बदन करै ततबीरा।। ८३।। असुर

कटक धूंमरि उड़ि जांई। सुरौं रक्षा करै गोसांई।। ८४।। पचरंग झंडे लंब लहरिया। दक्खन के दल उत्तर उतरिया।। ८५।। पचरंग झंडे लंब चलाये। दक्खन के दल उतर धाये।। ८६।। मोहरे हनुमंत गोरख बाला। हरि के हेत हरौल हमाला।। ८७।। चिंडोल चुणक दुर्वासा देवा। असुर निकंदन बूडत खेवा।। ८८।। बलि अरु शेष पतालौं साखा। सनक सनंदन सुरगौं हाका।। ८६।। दौंह दिश बाजू ध्रू प्रहलादा। कोटि कटक दल कट्या पयादा।। ६०।। बजरबान की बोऊँ बाड़ी। सतगुरु संत जीत हैं राड़ी।। ६१।। जे कोई मानै शब्द हमारा। राज करै काबल कंधारा।। ६२।। अरब खरब मक्के कूँ धाऊँ। मदीनां बांधि हद में लाऊँ।। ६३।। ईरां तूरां कहां छिकारी। गढ़ गजनी लग है असवारी।। ६४।। दिल्ली मंडल पाप की भूमां। धरती नालि जगाऊँ सूमां।। ६५।। हसती घोरा कटक सिंघारौं। दृष्टि परे असुरां दल मारौं।। ६६।। शंख पंचायन नादू टेरं। सुरग पतालं हाक सुमेरं।। ६७।। बालनीक सुर बाचा बंधा। पंडौं जगि द्वापर की संधा।। ६८।। नारद कुंभक ऋषि कुरबाना। मारकंड रूमी ऋषि आना।। ६६।। इन्द्र ऋषि बकतालिक स्वामी। और संत साधू घण नामी।। १००।। नाथ जलंधर और अजेपाला। गुरु मछंदर गोरख बाला।। १०१।। भरथरी गोपीचंदा जोगी। सुलतान अधम है सब रस भोगी।। १०२।। नरहर दास पखै बलि भीषम। ब्यास बचन प्रबानी सीषम।। १०३।। नामा और रैदास रसीला। कोई न जानैं अविगत लीला।। १०४।। पीपा धन्ना चढ़े बाजीदा। सेऊ संमन और फरीदा।। १०५।। दादू नानक नाद बजाये। मलूक दास तुलसी चढ़ि आये।। १०६।। कमाल मल और सूर गियानी। रामानंद के हैं फरमानी।। १०७।। मीरांबाई और कमाली। भीलनी नाचै दे दे ताली।। १०८।। नासकेत नकीब हमारा। उदालिक मुनि करत जुहारा।। १०६।। साहिब तखत कबीर खवासा। दिल्ली मंडल लीजे बासा।। ११०।। सतगुरु दिल्ली मंडल आयसी। सूती धनी सुंम जगायसी।। १११।। काग भुशंड छत्र के आगे। गंधर्व करत चलत हैं रागे।। ११२।। येता गुप्तार रासा पढ़ेगा सो चढ़ैगा। चंपेगा पर भूमि सीम, साखी कृष्ण पांचौं पंडौं, भारथी भीम।। ११३।। द्रौपदी के खप्पर में मेदिनी समायसी। चौसठि जोगनि मंगल गायसी।। ११४।। बजरबान का ताला राक्षस सिर ठोकसी। दक्खन के दल दीप, उतर कूँ झोकसी।। ११५।। दिल्ली मंडल राज त्रिकुटी कूँ साधसी। याह लीला प्रवानि, जो सतगुरु कूँ अराधसी।। ११६।। कजली बन के कुंजर, ज्यौं गोफनि के गिलोल है। राक्षस का रासा,

भंग खाली चहडोल हैं।। ११७।। निहकलंक अंस लीला, कालंदर कूँ मारसी। अरध लाख बरष बाकी, दानें और दूतौं कूँ सिघारसी।। ११८।। कलिजुग की आदि में चानौर कंस मारे थे। त्रेता की आदि में हिरनाकुस पछारे थे।। ११६।। बलि की बिलास जगि, सुरपति पुकारे थे। बावन सरूप शरि, कीन्ही सुरपति पुकार बलि बैंन निसतारे थे।। १२०।। कलिजुग की आदि बारा सदी की अंत है। दूलह दयाल देव, जानत कोई संत भेव, औही बाला कंत है।। १२१।। दिल्ली के तखत छत्र फिर भी फिरायसी। खेलत गुपतार सैंन, भंजन सब फोकट फैंन, महियल राजबाला, पुरुष, सतगुरु दिखलायसी।। १२२।। आवैगा दखन से दिवाना। काबिल का काल, किल किल किलियं, गलि है तुरकाना।। १२३।। किल किल किलियं, अवतार कला। जीतन जंग झुझमला।। १२४।। ऐसा पुरुष आया। कहता है **गरीबदास**, दिल्ली मंडल होय बिलास। निहकलंक राया।। १२५।।

अथ सातों बार की रमैंणी

सातों बार समूल बखानों। पहर घड़ी पल त्योतिष जानों।। १।। ऐतबार अंतर नहीं कोई। लगी चांचरी पद में सोई।। २।। सोम संभाल करो दिन राती। दूर करो नैं दिल की काती।। ३।। मंगल मन की माला फेरो। चौदह कोटि जीत जम जेरो।। ४।। बुध बिनानी विद्या दीजै। सतगुकृत निज सुमरण कीजै।। ५।। बृहस्पति भ्यास भये बैरागा। तातें मन राते अनरागा।। ६।। शुक्र शाला कर्म बताया। जदि मन मानसरोवर न्हाया।। ७।। शनैश्चर श्वासा मांहि समोया। जब हम मक्रतार मग जोया।। ८।। राहु केतु रोके नहीं घाटा। सतगुरु खोल्हे बजर कपाटा।। ६।। नौ ग्रह नवन करै निरबाना। अविगत नाम निरालंब जाना।। १०।। नौ ग्रह नाद समोये नासा। सहंस कँवल दल कीन्हा बासा।। ११।। दिशा सूल दहूँ दिश का खोया। निरालंब निरभै पद जोया।। १२।। कठिन विषम गति रहनि हमारी। कोई न जानत है नर नारी।। १३।। चंद्र समूल चिंतामणि पाया। **गरीबदास** पद पदह समाया।। १४।। १।। मावस मंगल चार मुकेसा। सतगुरु ज्ञान सुनों उपदेशा।। १।। पड़िवा परम तत्त प्रकाशा। शब्द महल में कीजे बासा।। २।। दोइज दुंद मेटि दरबानी। इला पिंगुला सुषमन जानी।। ३।। तीजे त्रिगुण ताला बेली। त्रिकुटी द्रवै फूल चंबेली।। ४।। चौथे चंद लीये प्रकाशा। अमृत पीवै प्रेम पियासा।। ५।। पांचें पंच अग्नि प्रवाना। सूरज उदे भये शशी

भाना।। ६।। छठे छहूँ दीये छिटकाई। पांचौं इन्द्री और मन भाई।। ७।। सातें सकल दीप सैलाना। अगम अगोचर कीया पियाना।। ८।। आठें अटक रहीं नहीं कोई। चौदह भुवन रमें निर्मोही।। ६।। नौमें निर्गुण रूप निहार्‌या। बिन मुख रसना शब्द उचार्‌या।। १०।। दसमें दस इन्द्री कसि बांधी। सुरति निरति ले पद में सांधी।। ११।। ग्यारसि गंग बहें घट मांहीं। पल पल परबी हंसा न्हांहीं।। १२।। बारसि बरवे राग सुनाया। मिरगा हेड़ी के घर आया।। १३।। तेरसि त्यारन तिरन समूला। अक्षय वृक्ष दरशे अस्थला।। १४।। चौदसि चौदह चौकसि पाया। जहां का बिछर्‌या तहां समाया।। १५।। पून्यूं चंद जगमगै जोती। रूंम रूंम में मानिक मोती।। १६।। अकल अखंड अगाध अमाना। **गरीबदास** पाया परवाना।। १७।। २।। सत सुकृत निज फूल जहूरा। ताहि लखावै सतगुरु पूरा।। १।। संख किरण सैलान शरीरा। हम कूँ भेटे पुरुष कबीरा।। २।। कौसतमणि है अंग अजूनी। बिना देह का शंभू मौंनी।। ३।। सेत बरन साहिब शुभ रंगा। जामें ऊठें अनंत तरंगा।। ४।। अनंत तरंग गंग लहराही। कोट्यों परबी चरनों मांहीं।। ५।। नाद न बिन्द पवन नहीं पाया। बिन चरणों चाले गुरु राया।। ६।। उरध मूल है मधरी शाखा। समाधान अनभै पद भाखा।। ७।। कलाकंद निरबंध अजाती। चंद सूर जहां दिवस न राती।। ८।। नगन मगन दरवेश दयालं। देखत कंपे जौरा कालं।। ६।। अमर चीर पीतंबर साजे। जा घर अनहद बाजे बाजें।। १०।। तखत समूला चले बिनानी। को जाने याह अकथ कहानी।। ११।। जाकी कदर न पावै कोई। शिव ब्रह्मादिक शेषा सोई।। १२।। सनक सनंदन संत कुमारा। नारद मुनि से लखें न पारा।। १३।। इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया। जाका पार न पावै माया।। १४।। मारकण्ड रूमी ऋषि व्यासा। कागभुशण्डा करै उपासा।। १५।। कच्छ मच्छ कूरंभ समूलं। बिन डांडी का जगमग फुलं।। १६।। सो तो फूल महेश्वर लालं। जा से ब्रह्मा भये रसालं।। १७।। ब्रह्मा की आदि कँवल है भाई। कँवल नाभि से उपजे आई।। १८।। नाभि लील की कहिये शाखा। लील आदि ऊँ गुण माँ का।। १६।। बीच पटतरा माया मूलं। आपे दुलहनी आपे दूलं।। २०।। परम पुरुष है आदि मुरारी। ना जानै ब्रह्मा त्रिपुरारी।। २१।। **गरीबदास** निर्गुण निरबाना। सत सुकृत निज फूल दिवाना।। २२।। ३।। पांच तत्त का महल शरीरा। किला फिरंगी गहर गंभीरा।। १।। या नगरी के दस दरवाजा। जा में राज करै मन राजा।। २।।
कौन कर्म गति रोके हंसा। मिलते नांहीं हैं निज बंसा।। ३।।

दस इन्द्री ग्यारवां मनवा। ज्यूं गोपियन में खेले कन्हवा।। ४।।
पांच कर्म पांच ज्ञान गहेली। ये मन ही है आदि सुहेली।। ५।।
पचीसों प्रकृति परेवा। पांच पांच भारज संग देवा।। ६।।
तीन गुनन की बाजे तारी। फगुवा खेलत हैं नर नारी।। ७।।
काम क्रोध मद लोभं लाहा। मोह मवासी अगम अगाहा।। ८।।
आशा तृष्णा नदी बहाहीं। संखों भँवर परें तिस मांहीं।। ६।।
जा में सुरनर मुनिजन ज्ञानी बूडे। पावत नांहीं हैं फिर ढूंडे।। १०।।
कोटि तरंग लहरि लहरांहीं। भवसागर में गोते खांहीं।। ११।।
राग द्वेष ठाढे दरवानी। हर्ष शोक में भूले प्रानी।। १२।।
चिन्ता चोर मुसे घर द्वारा। बाहर खड़े लूटें पुठवारा।। १३।।
भोग करत हैं मनसा नारी। मनवा होय रह्या घरबारी।। १४।।
गृही धरें योनी का ध्याना। तातें होय गये शूकर श्वाना।। १५।।
काम कंदला लई बनाई। जागत लूटें सोयें घर जाई।। १६।।
सुपने बिंद गया रे नागा। फिट तेरा कर्म धर्म बैरागा।। १७।।
संसा सूल बबूल बियाना। पाप पुण्य का बीज न जाना।। १८।।
ममता माया सबतन खाया। ज्ञानी गुणी लूट में आया।। १६।।
द्वादश कोटि दूत घट मांहीं। कैसे हंसा परमगति जांहीं।। २०।।
गरीबदास बंधू जन तेरा। पार लंघावे साहिब मेरा।। २१।। ४।।
समरथ साहिब महल बनाया। जल की बूंद रच्या तन काया।। १।।
धन्य कारीगर समरथ सांई। बार बार तुमरी बलि जांई।। २।।
कहां ये पिण्ड कहां ये प्राणा। धन्य कारीगर संजम बाना।। ३।।
धाम बहत्तर बावन कंगूरा। बाजें राग बजें सुर पूरा।। ४।।
चौसठ सिंध बंध बैराठा। जापर रचिया औघट घाटा।। ४।।
तालू ऊपर हे त्रिबैनी। ब्रह्मरंध्र का घाट दुलहनी।। ६।।
गंगा जमुना मध्य प्रयागा। काया काशी न्हाये माघा।। ७।।
इन्द्र दौंन हैं आदि अनादं। शब्द महोदधि लगै समाधं।। ८।।
बिकट पंथ बंका दरवाजा। कोई न जानें जोगी राजा।। ६।।
सुंन सलहली अमृत धारा। मलयागीर मकरंद अपारा।। १०।।
उलट पंथ गति मारग मीनी। बिन पग चलना रामत झीनी।। ११।।
संखों पौहप सिंध सैलाना। गगन मंडल कूँ कीया पियाना।। १२।।
सुर नर मुनि जन लखें न भेवा। परम धाम कूँ गये प्रेवा।। १३।।
जीव जूनि कैसे गति पावै। शेष सहंस मुख निशदिन गावै।। १४।।
गरीबदास ता पर कुरबाना। जो उस नगरी करै पियाना।। १५।।
५।।

अथ पतिव्रता रमैंणी

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

जिब लग हंसा हमरी आनां। तिब लग लगे न तुम्हरा बानां।। १।।
दोही दें अरु भरैं हुंकारा। जिनि हंसौं की चढ़ौं पुकारा।। २।।
कोटि कटक कर हूँ पैमाला। जम किंकर के तोरौं जाला।। ३।।
चौदह कोटि बांधि जम ल्याऊँ। धर्मराय कूँ तिरास दिखाऊँ।। ४।।
चौदह भुवन दुहाई गाजै। जिस कूँ जम किंकर सुनि भाजै।। ५।।
भक्ति बीज जो होवै हंसा। कोट्यौं जीव उधारैं बंसा।। ६।।
उधरे हंस पारि होय जांहीं। भौ सागर में बहुरि न आंहीं।। ७।।
साखी :- गरीब, शब्द हमारा मांनि है, जाके हिरदे हेत।
अमर लोक पहूँचाय हूँ, रूप, धरत है सेत।। ८।। १।।
कहै कबीर सुनों धर्मराया। हम संखौं हंसा पद परसाया।। १।।
जिनि लिया हमरा प्रवाना। सो हंसा हम किये अमाना।। २।।
अमृत पांन अमीरस चोखा। पीवो हंसा नाहीं धोखा।। ३।।
या रस की जो लगै खुमारी। गगन मंडल में शुन्य अधारी।। ४।।
झरैं अमीरस अमृत धारा। जानैगा कोई पीवन हारा।। ५।।
हंस परेवा अमृत पीवैं। संखौं कलप जुगे जुगि जीवैं।। ६।।
टूटें बंधन होत खुलासां **गरीबदास** पद हंस निवासा।। ७।। २।।
सेत सिंघासन सेत ही अंगा। सेत छत्र जाके सेत ही रंगा।। १।।
सेत खवास सेत ही चौंरा। सेते पौहप सेत ही भौंरा।। २।।
सेते नाद सेत ही तूरा। सेत सिंघासन नाचैं हूरा।। ३।।
सेत नदी जहां सेते बिरछा। सेते चंदन मसतगि चरच्या।। ४।।
सेत सरोवर सेते हंसा। सेते जाका सब कुल बंसा।। ५।।
सेते मंदिर चंद्र जोती। सेते माणिक मुकता मोती।। ६।।
सेत गुमट सेत ही थाना। सेत धजा और सेत निशाना।। ७।।
गरीबदास यौह धाम हमारा। सुर नर मुनिजन करो विचारा।। ८।।
३।। बिन ही पंथ पंथ है भाई। बिन चरणौं चालै सो जाई।। १।।
बिन ही देह धरैं जहां ध्याना। देह न ग्रेह न पिंड न प्राना।। २।।
पिंड ब्रह्मण्ड बाक नहीं बानी। मन बुद्धि सेती अगम निशानी।। ३।।
अलफ इलाम गांम नहीं ग्रेहा। गगन मंडल में जुर्या संनेहा।। ४।।
येता येलम जो दिखलावै। सो सतगुरु साचा कहलावै।। ५।।
गरीबदास मन धरै न धीरं। अधर धार पंथ बाट कबीरं ।। ६।।
४।।
रूप न रेख भेष नहीं बाना। आसन असतल नहीं असथाना।। १।।
अकल अभूमि गमि नहीं मोरी। हो सतगुरु कहाँ पाऊँ डोरी।। २।।
ऊंचा धाम गाम नहीं कोई। बिना चरण जहां चलना होई।। ३।।
अचरज लीला अगम अपारा। कैसे पाऊँ पंथ तुम्हारा।। ४।।

सुरति निरति का सार सतेशा। उतरे हंसा पारि हमेशा।। ५।।
कहैं कबीर पुरुष बरियामं। **गरीबदास** एक नौका नामं।। ६।। ५।।
आदि सनातन पंथ हमारां जांनत नांहीं यौह संसारा।। १।।
पंथो सेती पंथ अलहदा। भेषो बीच पर्‌या है बहदा।। २।।
षट् दर्शन सब षटपट होई। हमरा पंथ न पावै कोई।। ३।।
हिंदू तुरक कदरि नहीं जानैं। रोजा ग्यासि करै धिगतानैं।। ४।।
दोन्यूं दीन अकीन न आशा। वै पूरब वै पछिम निवासा।। ५।।
दहूँ दीन का छाड़्या लेखा। उत्तर दक्षिण में हम देखा।। ६।।
गरीबदास हम निहचै जान्या। चार्‌यों कूंट दशौं दिश ध्याना।। ७।।
६।। कैसे हिंदू तुरक कहाया। सब ही एकै द्वारै आया।। १।।
कैसे ब्राह्मण कैसे सूदा। एकै हाड चाम तन गूदा।। २।।
एकै बिन्द एक भग द्वारा। एकै सब घट बोलन हारा।। ३।।
कौंम छत्तीस एक ही जाती। ब्रह्म बीज सब की उतपाती।। ४।।
एकै कुल एकै परिवारा। ब्रह्म बीज का सकल पसारा।। ५।।
ऊँच नीच इस विधि हैं लोई। कर्म कुकर्म कहावैं दोई।। ६।।
गरीबदास जिनि नाम पिछान्या। ऊँच नीच **पदवी प्रवाना।। ७।।**
७।। ऊँ सोहं मंत्र सारं। सुरति निरति से करे उचारं।। १।।
ऊँ सोहं मंत्र जपिये। जोग जुगति याह धूनी तपिये।। २।।
शाला कर्म सुरति के मांहीं। मन पवना जहां निरति समांहीं।। ३।।
अंध कपाट नाम से खूल्हें। सुरति पींघ चढ़ि हंसा झूलें।। ४।।
सुरति हंसनी कूँ जो देखें। अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड परेखें।। ५।।
सुरति हंसनी सोहं अंगा। सुनों पुरुष का निज प्रसंगा।। ६।।
अष्ट कँवल दल पूरन पाया। सुरति हंसनी हंस समाया।। ७।।
सोहं सुरति शब्द से आई। अनन्त लोक जाकी ठकुराई।। ८।।
सोहं सुरति विमान हमारा। जा चढ़ि हंसा उतरो पारा।। ९।।
सोहं सोलह की अगवाना। सतरह सुरति लोक बखाना।। १०।।
सूरज द्वार बंधि ले बाटा। चंद्र द्वार के खोल्हि कपाटा।। ११।।
सूरज द्वार दहनें सुर देवा। चंद्र द्वार बामें सुर भेवा।। १२।।
चंद्र द्वार दहनें सुर ल्यावो। दहना सुर बामें कू ध्यावो।। १३।।
दोहू सुर मध्य सुष्मणा तारी। तिल प्रवान जहां लगी किवारी।।
१४।।
ब्रह्मरंध्र का घाट पिछानों। दोहुं सुर खैंचि गगन कू तांनों।। १५।।
जहाँ गरजे गगन अनाहद ध्याना। अक्षय वृक्ष देख्या प्रवाना।। १६।।

पिंड ब्रह्मण्ड से न्यारा साजे। जाकी अनंत लोक में गाजे।। १७।।
समाधान है सुरति समूलं। **गरीबदास** पाया निज मूलं।। १८।। ८।।
सुनिये अनहद गगन टकोरा। सुरति निरति का लाग्या डोरा।। १।।
बाजे बजें सुहंगम सैनां। श्रवण बिना सुनें निज बैंना।। २।।
सुरती ऊपर निरती नादं। देखी लीला अगम अगाधं।। ३।।
मूल उचार शब्द जहां होई। संख पदम जहां झलकें लोई।। ४।।
दहनी ओर उत्तर का घाटा। महरम होई सो जांनै बाटा।। ५।।
बही जात है ज्ञान की गंगा। लख लख योजन उठै तरंगा।। ६।।
सुख का सागर वार न पारा। सुनियत शब्द अजब झंनकारा।। ७।।
झालरि झांझ पखावज बीना। मुरली अधर मधुर ल्यौलीना।। ८।।
संख तूर नादों की टेरं। रनसींगे और बाजें भेरं।। ९।।
बोलें दादुर भँवर गुंजारा। सुनें संत पद न्यारा न्यारा।। १०।।
कठनाई से पावै पैण्डा। छाडि अचार बिचार पछैण्डा।। ११।।
ध्यान की धुंनही खैंचे भाई।। बान कमान रहै ल्यौ लाई।। १२।।
कूरंभ पवन गगन में जोड़ै। दत्त देव कूँ उलटी मोड़ै।। १३।।
क्रिकल खुध्या मेटि रस भोगी। बाई धनंजै जीते जोगी।। १४।।
त्रिबैंनी कीजै असनाना। मानसरोवर हंस मिलाना।। १५।।
अंजन मंजन सेत सरूपा। **गरीबदास** निज ध्यान अनूपा।। १६।।
९।। कामधेनु दूझे एक तहियां। गुजरी दुहती है बिन बहियां।। १।।
है गुजरी मद की मतवारी। आठ बखत उतरै न खुमारी।। २।।
दूझै अमृत आनंद कंदा। पीवत होते अति आनंदा।। ३।।
अमी महारस दूझै धेनं। कामधेनु दुहिये दिन रैनं।। ४।।
या रस की मोहि छाक परी है। कान्ह सलौंने आंन बरी है।। ५।।
कान्ह गुजरिया का गठबंधन। **गरीबदास** टूटें सब फंधन।। ६।।
१०।। देखो सुन्दर श्याम सलौना। मुरली मधुर बजावें बैंना।। १।।
अनंत कोटि गोपियन का कान्हा। देख्या दूलह दरश दिवाना।। २।।
सेत छत्र सिर मुकट बिराजे। पीतंबर मध मध कर साजे।। ३।।
ढुरें सुहंगम चौंर अनादं। जा नगरी नहीं वाद विवादं।। ४।।
सुरति कँवल कैलाश कलंद्र। बैठे सतगरु धनी मुनींद्र।। ५।।
धनी मुनींद्र मौंनी सांईं। हो देवा दरवेश गोसांई।। ६।।
गावें अनहद बैंन बिलासा। गगन गुफा मंदिर कैलासा।। ७।।
रुण्ड माल रंगी रघुवीरं। परम पदारथ सुख का सीरं।। ८।।
कोटि कोटि गंगा और काशी। चरण कमल तुम्हरे अविनाशी।। ९।।
आनंद घन पद अग है ऊँचा। **गरीबदास** कोई पावै सूचा।। १०।।
११।।

लोहे चुंबक प्रीति प्रानी। यौह साहिब तन मन में जानी।। १।।
लोहा प्राण और चुंबक सांई। है न्यारा पर दरसे मांहीं।। २।।
लोहे के तो लागी काई। तातें चुंबक लख्या न जाई।। ३।।
मंजन करें सिकल सहनाना। जाके चुंबक मिलें प्राना।। ४।।
पदम रूप चुंबक का अंगा। अनंत कोटि त्रिवैणी गंगा।। ५।।
साखी :- गरीब, लोहे चुंबक प्रीति है, चारों जुग के मांहिं।
यौं साहिब घट बसै, ज्यूं वृक्ष मध्य छांहि।। ६।। १२।।
काट्या कटै न जार्‍या जरि है। छाया वृक्ष एक ही घर है।। १।।
काया हंसा तजे प्राना। वृक्ष बीज के मध्य समाना।। २।।
ऊगे बीज अछीज अनादं। गुण इन्द्री मन तहां समाधं।। ३।।
अनंत कोटि जुग ऐसे बीते। पण्डित लिख लिख कागज चीते।। ४।।
औह निहबीज ताहि नहीं पावै। सतगुरु मिले तो अलख लखावै।।
५।।
गरीबदास याह अकथ कहानी। भूलि रहे सुरनर मुनि ज्ञानी।। ६।।
१३।।
चुंबक रूपी शब्द हमारा। कोटि ज्ञान से भिन्न पसारा।। १।।
कोटि ज्ञान जो पढ़ि गोहरावै। चुंबक रूप तांहि नहीं पावै।। २।।
मुकर बिना मुख कैसे दरशै। चुंबक रूप सकल में बरसै।। ३।।
सतगुरु दया करें दिल फेरे। तिल के औल्हे देख सुमेरे।। ४।।
सकल रूप रूपों की खानी। जल थल पूर रह्या प्रवानी।। ५।।
अगम अगोचर गह्या न जाई। **गरीबदास** चरणों चित लाई।। ६।।
१४।। शब्द स्वरूपी रूप हमारा। समरथ साहिब अधर अधारा।।
१।। मूल न फूल न बीज न वृक्षा। कहो पण्डित क्या कीजे चरचा।।
२।। डाल न मूल फूल फल नाहीं। समाधान है समरथ सांई।। ३।।
उरध मूल नीचे कूँ शाखा। संस्कृत क्या पावै भाषा।। ४।। अक्षय
वृक्ष आनंद पद ऊँचां। धरनी मुकाम गगन नहीं कूंचा।। ५।। ज्यूं
दरिया मग मीन न होई। पंछी पैर गगन ना कोई।। ६।। **गरीबदास**
यौह अकह संदेशा। बूझो ब्रह्मा शंकर शेषा।। ७।। १५।। सतगुरु
सन्मुख मार्‍या तीरा। ग्यासी बेधे प्रान शरीरा।। १।। काढी कढै न
खैंची जाई। तातें चुंबक देह लगाई।। २।। गगन मंडल में चुंबक
हीरा। ग्यासी काढी मेटी पीरा।। ३।। जग मग रूप स्वरूप न कोई।
ऐसा चुंबक घट घट लोई।। ४।। चुंबक रूप चिदानन्द आये।
गरीबदास चरणों चित्त लाये।। ५।। १६।। चुंबक रूपी राम हमारा।
अग्नि पवन पानी जल धारा।। १।। पांच तत्व जो खड़े खवासा।
त्रिलोकी में ताहि निवासा।। २।। तीन्यू लोक अधर ठहराई। शेषा कूँ

तो दई बड़ाई।। ३।। चुंबक रूपी अकल अमाना। सूरज चंद धरत हैं ध्याना।। ४।। औह तो अकलां कल्या न जाई। अनंत लोक जाकी ठकुराई।। ५।। जिन ये पिंड रु प्राण बनाये। वे साहिब जननी नहीं जाये।। ६।। चेरी तास करै अदगारा। अनंत कोटि जाके अवतारा।। ७।। **गरीबदास** समरथ पद सेवो। भवसागर जग हंसा खेवो।। ८।। १७।। राजा राम चकवे सोई। आदि अन्त मध्य एकै होई।। १।। जैसे जल में ऊठैं तरंगा। सूरज किरण एक ही अंगा।। २।। ब्रह्म अग्नि में बारा बानी। शब्द अतीत एक ही जानी।। ३।। घट मठ महतत्व एकै सुंनं। जाके लिपे पाप नहीं पुण्यं।। ४।। साहिब संत और अवतारा। तीन कला एकै दरबारा।। ५।। ज्यूं केले मध्य कदली होई। स्वांति सीप में मोती जोई।। ६।। गज मोती चीन्हों अनरागा। एक स्वांति अरु तीन विभागा।। ७।। चौथे स्वांति भुवंग मुख आई। जहर क्रितिया दुनिया खाई।। ८।। जैसे अग्नि काष्ट के मांहीं। ऐसे घट घट व्यापक सांई।। ९।। निर्गुण ब्रह्म रु सरगुण काया। दो कर सेती ताल बजाया।। १०।। एक कर से बाजें नहीं तारी। **गरीबदास** या सृष्टि अनारी।। ११।। १८।। सतगुरु मार्या बान बिहंगा। फूटे सात पुड़त तन अंगा।। १।। रूंम रूंम में सालत बाना। ग्यासी लागी मरम निदाना।। २।। गगन मंडल में बाजें तूरा। सतगुरु लाया शब्द जंबूरा।। ३।। मुरली अधर मधुर धूंनि टेरं। रनसींगे और बाजें भेरं।। ४।। झालर झांझ ताल डफ बाजें। मिहर करें पल मांहि निवाजें।। ५।। ताल मृदंग उपंग जहूरा। ध्यान धरें जहां सतगुरु पूरा।। ६।। अगर मूल जहां शब्द उचारा। कोटि किरण शशि भानु उजारा।। ७।। महकें गंध सुगंध सुबासा। ब्रह्मनगर में लीजे बासा।। ८।। जगमग लाल रु दमकें हीरा। ता लखि टूटें जम जंजीरा।। ९।। **गरीबदास** ऐसे धुनि होई। जीवत मुक्ता कहिये सोई।। १०।। १९।। दिव्य दृष्टि देखे दरहाला। चर्म दृष्टि के फूटे ताला।। १।। ब्रह्म दृष्टि जो हिरदे आवै। कौंम छत्तीस एक दरशावै।। २।। कहिये रू का पिता बनोलां। जा में तार निकसि है धौला।। ३।। बारह बानी रंग चढ़ावैं। जा का नां तो सूत कहावै।। ४।। रंग चढ़ावै बारा बानी। सूत कपास बनौला जानी।। ५।।
स्थावर जंगम जूंनि जिहाना। घट घट देखें पद निरबाना।। ६।।
पारब्रह्म परमानंद स्वामी। आदि पुरुष साहिब घण नामी।। ७।।
अठ सिद्धि नौ निधि चरन बिराजें। **गरीबदास** पलकौं पर साजें।। ८।। २०।।
राजा राम हमारे आये। आनन्द मंगल आनन्द बधाये।। १।।

चरण कमल का धरि हूँ ध्याना। पिण्ड रु प्राण करौं कुरबाना।। २।।
तन मन धन वारौं रे भाई। शीश चढ़ाई रहूँ ल्यौलाई।। ३।।
जै जै पुरुष विश्वंभर नाथा। तुंहीं मेरे मादर पिदर विधाता।। ४।।
कुल कुटंब भाई परिवारा। समरथ साहिब सिरजन हारा।। ५।।
सजन सनेही तुंहीं गुरुदेवा। आदि ही अंत करौं पद सेवा।। ६।।
सुरग नरक बाचौं ना कोई। भाव भक्ति दीजो गुरु मोही।। ७।।
त्रिलोकी में मन दौराया। अविचल धाम कहीं नहीं पाया।। ८।।
देखे बैकुण्ठ और कैलाशा। चरण कमल में लीया निवासा।। ९।।
सेत भूमिका सेते आसन। सेत छत्र जहां सेत सिंहासन।। १०।।
सेत मुकट जहां सेते चौंरा। सेते गुंज करत हैं भौंरा।। ११।।
सेते हंस कतूहल करहीं। सेत पुरुष का ध्यान जु धरहीं।। १२।।
रहनि हमारी काया काशी। **गरीबदास** चीन्ह्या अविनाशी।। १३।। २१।।
प्रथम आदि गणेश मनाऊँ। चरण कमल का ध्यान लगाऊँ।। १।।
किलियं ऊँ सोहं सारं। याह गायत्री मूल उचारं।। २।।
हरियं श्रीयं सुरति समोधं। पंच नाम पूरन प्रमोधं।। ३।।
स्वाद चक्र पारस बह जांहीं। मुत्र धार से सृष्टि रचाही।। ४।।
नाभि कँवल में श्वास ब्रह्म है। बूझो आदि अनादि धर्म है।। ५।।
मनसा चक्र महत्पद विष्णं जहां बैठे आदि अनादिं कृष्णं।। ६।।
हिरदै कँवल महादेव विराजे। सुंन सरूपी बैठे साजे।। ७।।
कण्ठ कँवल त्रिभंगी तालं। ब्रह्म जोगनी माया ख्यालं।। ८।।
त्रिकुटी कूंट जहां सत गुरु डेरा। चल मन रावल कीजे फेरा।।९।।
सहंस कँवल दल झिलमिल रंगा। आदि अनादं गोमुख गंगा।। १०।।
सप्त कोटि योजन गहराई। शिवपुर सेती गंगा आई।। ११।।
ऊँचा बेग बहै त्रिवैणी। कर्म मोचि काटन सुख चैंनी।। १२।।
ब्रह्मरंध्र मनी करण का घाटा। जहां सनकादिक जोहे बाटा।। १३।।
मेरुदण्ड पूरब मुख द्वारा। जहां शिव साहिब लिंग तुम्हारा।। १४।।
प्रथम पूजो शिव का लिंगा। उरध मुखी जहां गिर है गंगा।। १५।।
शिव साहिब कूँ हंस रिझावो। जा पर काबड़ पत्र चढ़ावो।। १६।।
मोतियन झालर दमके हीरा। अनंत पदम धुनि गहर गम्भीरा।। १६।।
संख कमल फूले कुरबाना। **गरीबदास** जहां पुरुष अमाना।। १८।। २२।।
सतपुरुष समरथ पद साहिब। तुंही मेरा मालिक तुंही मेरा नाइब।। १।।
मालिक मीरां मन में पाया। नाइब सेवक बनि कर आया।। २।।
चरण कमल से गंगा आई। याह परबी तूं ले रे भाई।। ३।।
याह तो परबी शिव कूँ लीन्ही। ब्रह्मा विष्णु शेष कूँ दीन्ही।। ४।।
सनक सनन्दन सैल करांहीं। याह परबी निश वासर न्हांहीं।। ५।।

ध्रुव प्रहलाद अमीरस प्याया। नारद व्यास रु शुकदेव न्हाया।। ६।।
मारकण्ड रूमी ऋषि रासा। काग भुशंडा शब्द निवासा।। ७।।
वासिष्ठ विश्वामित्र छाके। अमी महारस मधुवा पाके।। ८।।
बावन गादी जनक विदेहा। ब्रह्म शब्द से लग्या संनेहा।। ९।।
बालमीक है पद प्रकाशा। सौ कोटि रामायण शब्द विलासा।। १०।।
सुपच रूप धरि सतगुरु आये। पंडौं जगि में शंख बजाये।। ११।।
सुरनर मुनिजन गंधर्व ध्यावें। भाग लिख्या है सोई पावें।। १२।।
तेतीस कोटि खड़े प्रितहारा। विकट पंथ बांका दरबारा।। १३।।
अनंत कोटि संतों रस पीया। संखों कलप जुगों जुग जीया।। १४।।
चरण कमल चरनामृत मीठा। इन नैंनों नारायण दीठा।। १५।।
कलजुग नाम कबीर दुहाई। चारों जुग में कीर्ति गाई।। १६।।
अमीपान से जुग जुग जीवो। शिला पाषाण धोई मत पीवो।। १७।।
अजर बूंद से अजरा होई। **गरीबदास** गुपता पद गोई।। १८।। २३।।
समरथ साहिब रतन उजागर। सतपुरुष मेरे सुख के सागर।। १।।
जूंनी संकट मेटि गोसांई। चरण कमल की मैं बलि जांही।। २।।
भाव भक्ति दीजो प्रवाना। साधु संगति पूरन पद ज्ञाना।। ३।।
जन्म कर्म मेटो दुःख दुंदा। सुखसागर में आनंद कन्दा।। ४।।
निरमल नूर जहूर जुहारं। चंद्रगता देखो दीदारं।। ५।।
तुम्ह हो बंकापुर के बासी। सतगगुरु काटो जम की फाँसी।। ६।।
मिहरवान हो साहिब मेरा। गगन मण्डल में दीजो डेरा।। ७।।
चकवे चिदानंद अविनाशी। रिध्दि सिध्दि दाता सब गुण राशी।। ८।।
पिण्ड प्राण जिन दीन्हें दाना। **गरीबदास** जाकूँ कुरबाना।। ९।। २४।।
राम शरण आवै जो कोई। जाका नाश कबू ना होई।। १।।
को अगरम को मगरम ध्यावै। राम शरण कोई नहीं आवै।। २।।
राम शरण आये हैं शेषा। ब्रह्मा नाल दीया उपदेशा।। ३।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर गावै। नारद व्यास रु शुकदेव ध्यावै।। ४।।
सुरनर मुनिजन कथें ज्ञाना। सनकादिक जहां धरि हैं ध्याना।। ५।।
राम शरण आये ध्रू ध्यानी अयोध्या संग गई प्रवानी।। ६।।
राम शरण आये प्रहलादं। जाकी पूरण करी मुरादं।। ७।।
नरसिंह रूप धरे नारायण। जो ध्यावे सोई पारायण।। ८।।
गरीबदास भज राम मुरारी। सकल बियापी सुंन अधारी।। ९।। २५।।
जग मग जोती रतन उजागर। दशों दिशा बरषै बैरागर।। १।।
पारस पद परमेसर पाया। सहज सुभाय दया करि आया।। २।।
सुरति नाल है सतगुरु संगी। अधर अधार रहै बहुरंगी।। ३।।
बिन पग गवन करें गलताना। बिन मुख गावें पद निरबांना।। ४।।

बिन हीं श्रवण सुनै दयाला। बिन ही कर फेरत है माला।। ५।।
बिन मुख बाजें अनहद नादं। बिन कर बटैं अखै प्रसादं।। ६।।
बिन ही लेखनी सब कुछ लेखै। नैंनों बिना सकल कूँ देखै।। ७।।
अजर अमर अविनाशी दूलं। है सो रतन अमोली फूलं।। ८।।
कोटि किरण झिलमिल झिलकंता। **गरीबदास** नित फाग वसंता।। ९।। २६।।
सूरज मुखी सबतरि साजे। चंद्र गता तिस मध्य बिराजे।। १।।
बिन ही सरवर फूल हजारा। गगन मण्डल में है गुलजारा।। २।।
बिन ही बेली फूले फूलं। जा फुलवा के डाल न मूलं।। ३।।
दृष्टि अदृष्टि अगम से ऊँचा। जो देखे सोई जन सूचा।। ४।।
दृष्टि अदृष्टि अगम से आगे। जो देखे सोई बड़ भागे।। ५।।
वा फुलवा पर वारौं प्राणा। सुरति नाल जो करै पियाना।। ६।।
कोटि जगि अश्वमेध करांहीं। तो फुलवा की सरबर नांहीं।। ७।।
फुलवा कूँ नैंनों में राखै। **गरीबदास** तो जम नहीं झांकैं।। ८।। २७।।
है सो आदि अनादि अनादं। वा फुलवा कूँ सेवें साधं।। १।।
सेवें ब्रह्मा विष्णु महेशा। नारद शारद सेवें शेषा।। २।।
सुरनर मुनिजन गंधर्व सेवें। सनक संनदन तन मन देवें।। ३।।
वा फुलवा का धरि हैं ध्याना। आगे द्रवें कोटि विमाना।। ४।।
सुरति निसरनी सीढ़ी लाई। यौं माणिकपुर हंसा जांही।। ५।।
माणिकपुर में महल हमारा। सतगुरु सौदागर बनजारा।। ६।।
सतगुरु सौदागर ब्यौपारी। बूझत नाहीं शब्द अनारी।। ७।।
शब्दे जीवन मूल हमारे। शब्दे खेवा पार उतारे।। ८।।
शब्दे आदि अंत प्रवाना। शब्दे बांधे सकल बंधाना।। ९।।
शब्दे मच्छ कच्छ कूरंभा। शब्दे रोप्या सब आरंभा।। १०।।
शब्दे पौहमी धरनी अकाशा। शब्दे पांच तत्त का बासा।। ११।।
शब्दे घट घट अंदर बोले। **गरीब दास** जग मार्‌या झोले।। १२।। २८।।
शब्दे पुरुषा शब्दे नारी। शब्दे महंता शब्द भंडारी।। १।।
शब्दे नारी शब्दे पुरुषा। शब्दे हिंदू शब्दे तुरका।। २।।
शब्दे ब्राह्मण शब्दे शूद्रा। शब्द बिना लागें हैं भदरा।। ३।।
शब्दे कौंम छतीसौं जाती। शब्दे पूजा शब्दे पाती।। ४।।
शब्दे षट् दर्शन षट् भेखा। शब्द रूप हम निश्चय देखा।। ५।।
शब्दे नाद और शब्दे बिंदं। शब्द बिना जग भूल्या अंधं।। ६।।
शब्दे वेद रु शब्दे बानी। शब्दे अग्नि पवन और पानी।। ७।।
शब्दे सूरज शब्दे चंदा। शब्द चीन्हि होवै निरदुन्दा।। ८।।
गरीबदास पद शब्द निवासा। हरदम चीन्हों निर्गुण रासा।। ९।। २९।।
खेती बोवन चले किशाना। पामर हाली मूढ निदाना।। १।।

कालर खेत रु कूरी बोई। पाहुनड़े आये ननदोई।। २।।
मंडुवा भात रु कंगनी मांडे। करै रसोई बंधू पांडे।। ३।।
हड़हड़ दालि दले बिन रांधी। खाय गई हर मुसटा बांदी।। ४।।
ननदोई तो झुलझुल झांके। बिली खाय स माडा पाके।। ५।।
पांच किसान पच्चीस लिखऊवा। खेती भक्षण करि गये कऊवा।। ६।।
जबती हुई जरीब पियारा। तीन चुगल कूके दरबारा।। ७।।
मन राजा किरसान बुलाये। बांधि लालखां के लटकाये।। ८।।
लोभ मोह के कीये हवाले। काम क्रोध जब छप्पर जाले।। ९।।
नगरी लूटि करी मैदाना। फिट रे हाली मूढ किसाना।। १०।।
बोया भूनि और उकटि गईया। उस नगरी फिर जाय बलईया।। ११।।
गरीबदास तन नाहक धार्या। बाजी हारी कच्चे बारा।। १२।। ३०।।
बेटी चोद बहन के लौरे। नाहक फिरते दौरे दौरे।। १।।
कोई पूरब कोई पश्चिम धावै। कोई दक्षिण कोई उत्तर जावै।। २।।
आखर पूजै पत्थर पानी। जम के द्वारै धूमा धामी।। ३।।
शालिग शिला नवावैं शीशं। भूलि गये साहिब जगदीशं।। ४।।
कंकर बांधि कहैं करतारा। मार परैगी जम के द्वारा।। ५।।
पत्थर परमेश्वर ठहरावै। मूरख बाना बिरद लजावै।। ६।।
कण्ठी माला तिलक जनेऊँ। जम किंकर करि हैं बहनेऊ।। ७।।
तन पाखंड करो मति भाई। भक्ति पुरातम तुम नहीं पाई।। ८।।
जटा जूट हैं भदरा भेखं। तन पाखंड धरत हैं शेखं।। ९।।
सेली सींगी मुंद्रा काना। ऊँचै आसन भया दिवाना।। १०।।
कान चिराये भसम रमाई। जोगी जुगति न जानी भाई।। ११।।
सन्यासी बैरागी बाघं। बाँबी बीच बनेंगें नागं।। १२।।
तीरथ बरत अर्थ नहीं पावै। राम भजै तो मुक्ति करावै।। १३।।
साखी :- मन मथुरा दिल द्वारिका, काया काशी खेत।
गरीबदास याह भक्ति है, दरशे दर्पण सेत।। १४।। ३१।।
समरथ साहिब पुरुष बिनानी। जल की बूंद महल प्रवानी।। १।।
नख शिख साज बनाय समारा। नैंन नाक मुख श्रवण द्वारा।। २।।
शीश चरन कर दसत बनाये। प्राण पिण्ड में ले ठहराये।। ३।।
जठरा अग्नि बीच तन राखा। पुत्र कहाया मात पिता का।। ४।।
हाड चाम तन त्वचा शरीरं। प्याये दूध अमीरस खीरं।। ५।।
दस सहंस नाड़ी मध्य नादं। लीला रोपी अगम अगाधं।। ६।।
थान बहत्तरि बावन कंगूरा। जोगी नाद भरै सुर पूरा।। ७।।
तीन सौ साठ चिहर बंध लागा। अजौं न समझे मूढ अभागा।। ८।।
कली कली करि सब कल जोड़ी। कोई लखी कोई भया करोड़ी।। ९।।

अरथ पालकी कोतिल घोड़े मुलिक परगनें दीनें थोड़े।। १०।।
बेगम बांदी तखत खवासा। सिज्या पौहढ़े महल निवासा।। ११।।
चरण कमल से उतरी माया। मन मान्या सो खरच्या खाया।। १२।।
हुकम तलू से तलव पठाई। नेकी छाडि बदी परि धाई।। १३।।
भजे नहीं साहिब भगवाना। **गरीबदास** जम हाथ बिकाना।। १४।। ३२।।
जल की बूंद महल जिन कीन्हां। सो साहिब तुम क्यों नहीं चीन्हां।। १।।
जिन साहिब यौह महल बनाया। सो तो तुमरे यादि न आया।। २।।
गुनहार बेकार दिवाने। समरथ साहिब क्यों नहीं जांने।। ३।।
अनंत कोटि कीन्हीं तकसीरं। हाजरि होना दामन गीरं।। ४।।
हाजरि होना मादर बकता। औह साहिब बूझैगा नुकता।। ५।।
नुकते ऊपरि रीझैगा रे। कोटि कर्म जरि जाहि तुम्हारे।। ६।।
सत पद अलख निरंजन ध्यावो। सहंस इकीसौं लेखै लावो।। ७।।
सहंस इकीसौं छै सौ जापं। सो जोगी है आपै आपं।। ८।।
मूरति अजर बजर तन पिंडा। सो बिचरत है नोऊँ खंडा।। ९।।
त्रिलोकी तत्काल सिधारै। आप तिरै औरन कूँ त्यारै।। १०।।
सुरति निरति मन पवन निराशा। भँवर गुफा में कीजे बासा।। ११।।
त्रिकुटी महल में अमृत पीवै। **गरीबदास** सो जुग जुग जीवै।। १२।। ३३।।
एक रतन बहु पारिख आई। जाकी कीमति किन्हें न पाई।। १।।
रतन अमोली तोल न मोलं। हीरे लाल जरे चहडोलं।। २।।
को भारी को बीनैं हलका। कैसा कर्ता है इस कलि का।। ३।।
अकल अखंड पार नहीं पावै। सतगुरु मिलै तो तत्त दरशावै।। ४।।
अनंत कोटि ब्रह्मंड परेखा। सो साहिब तुम कैसे देखा।। ५।।
छूछिम रूप सरूप लखाया। जिन कारण अस्थूल बनाया।। ६।।
छूछिम कारण और असथूलं। इनका कहौ कहां निज मूलं।। ७।।
शेष बदन पर छूछिम नांचै। निःअक्षर पद कोई ना बांचैं।। ८।।
शेष सहंस मुख निशदिन गावैं। ब्रह्मादिक से पार न पावैं।। ९।।
तीनि चरण चिंतामणि ईशं। नाभ कँवल और हिरदे शीशं।। १०।।
कमल नैंन निरगुण निरधारा। शेष मुकट परब्रह्म द्वारा।। ११।।
जटा कुंडली कहिये सोई। **गरीबदास** शिव ध्यान समोई।। १२।। ३४।।
जटा कुंडली पद प्रवाना। दूछिम रूप आदि निरबाना।। १।।
जल बूडै नहीं अग्नि जराई। जाकी पूजा करि रे भाई।। २।।
खड्ग बाण शस्त्र नहीं छेदं। जा कूँ कैसे पावै वेदं।। ३।।
वेद पुराणौं लिख्या न जाई। पण्डित कहौ कहां गुण गाई।। ४।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड दहूँ से न्यारा। हदि बेहदि से अगम अपारा।। ५।।
नैंनों नालि रहे निरमोही। देखो हरदम पलक समोई।। ६।।

ज्यौं अलमीन पलक का भौंरा। जाका ध्यान धरें शिव गौरा।। ७।।
सिंघासन आसन नहीं जाकै। **गरीबदास** सत बानी भाषै।। ८।। ३५।।
भेदी स्यों कहिये यौह ज्ञाना। अजरा जरि है शब्द समाना।। १।।
भेदी स्यों कहिये ही कहिये। अन भेदी के संगि न रहिये।। २।।
दिल महरम दरवेश दिवाना। अनहद पद में लावै ध्याना।। ३।।
शीलवंत सूरे सैलानी। जिनसे कहिये अकह कहानी।। ४।।
निहकामी साचा सतवादी। जाकी पद में लगै समाधी।। ५।।
आशा तृष्णा ताहि न व्यापै। गुण गायत्री हरदम लापै।। ६।।
ज्ञान ध्यान से क्रोध बिडारै। लोभ मोह का संग निवारै।। ७।।
काम कलेश कछु नहीं राखै। बिंद जराय अमीरस चाखै।। ८।।
बुद्धि विवेक दिल दया दलेलं। छिमा छिके अनहद पद खेलं।। ९।।
रहनी करनी इन्द्री सूचा। **गरीबदास** सो कलि में ऊँचा।। १०।। ३६।।
ये दो दीन कहाँ से आये। काजी पंडित सबै भुलाये।। १।।
हिंदू तुरक की एकै माई। एकै दरगह एक खुदाई।। २।।
दरगह में से आया हिंदू। इहां मुसलमान करि डार्‍या भौंदू।। ३।।
हिंदू से मुसला करि डार्‍या। सुन्नत कीन्ही जुलम गुदार्‍या।। ४।।
हिंदू तुरक की एकै ममड़ी। आगे से क्यों काटी चमड़ी।। ५।।
वै कुरान वै बांचे वेदं। उस दरगह का लख्या न भेदं।। ६।।
वै बिसमल वै झटका करहीं। दोन्यूं दीन नरक में परहीं।। ७।।
अरस कुरस बीचि पढ़ो किताबा। मन में मक्का दिल बिचि काबा।। ८।।
सत शब्द की करद चलावो। ये पांचौं बिसमल करि ल्यावो।। ९।।
हिंदू तुरक की एकै करनी। तत्व की तसबी सुरति सुमरनी।। १०।।
गरीबदास सुनि पद प्रसंगा। मन चंगा त कठौती गंगा।। ११।। ३७।।

अथ राग गोड़ी

औधू धुन्य मंडल सुर पूरा।
अविगत नगर अमरपुर थानं, जहां बाजैं अनहद तूरा।। टेक।।
धर अंबर से न्यारा खेलौं, पांच तत्त तन ताखी।
इला पिंगला उलटि समोऊँ, चंद सूर दो साखी।। १।।
मूल कमंडल गुदा भेदि हूँ, नाभ कँवल कसतूरी।
उठैं महल मकरंद गंध फुनि, हिरदे झिलमिल नूरी।। २।।
कंदर्प गात धात रस कीन्हा, पांच बाय का भेरा।
सुरति निरति मन पवन समाधी, शुन्य मंडल घर मेरा।। ३।।
कंठ कँवल रस नीझर झरता, त्रिकुटी में मणि द्रवी।
गंगा जमना संग सुरसती, बहु विधि भाठी सरवी।। ४।।

मांन तलाई हंसा छ्याई, औघट घाट अटारी।
मानसरोवर के जल न्हांवै, सो जोगी ब्रह्मचारी।। ५।।
उलटि खेचरी कूल भरावै, खिलै पौहप प्रभाती।
भूंचरी मुद्रा जुगति से भूंचे, यौह तो जोग अजाती।। ६।।
चांचरी मुद्रा झिलमिली गुदरी, सोलह कला जुहारं।
ऐनक उलटि दरीबे लाई, झलकै तंत अपारं।। ७।।
अकल अगोचर मुद्रा कहिये, जहां निहतंती अनरागी।
बेखुद खैर खबर नहीं तन की, सुरति शब्द में लागी।। ८।।
अरस उनमनी अकल भेद है, आदि अंत ना कोई।
पांचों मुद्रा से पद न्यारा, है अविगत निरमोही।। ९।।
ज्ञान ध्यान से महल अगोचर, कहो कहां लगै समाधी।
पौहप गंध से झीना जंत्री, भगल विद्या नट साधी।। १०।।
रूप न रेख विवेक न बसती, पांच तत्व नहीं भाई।
अपना रूप न निगुर्ण सरगुण, सप्त शुन्य बिसराई।। ११।।
सोलह संख शुन्य सुर पूरौं, ऐसी रामति खेलौं।
मन पवना की गुडी उडाऊँ, सोहं हंसा बेलौं।। १२।।
अभै शुन्य में आसन मांडौं, सतलोक असथाना।
जन दास गरीब परम पद भीन्या, मिले कबीर दिवाना।। १३।। १।।
औधू शिवपुर नगर दुहेला।
पचि पचि मुये जोग कर जोगी, भ्रम न भूलो चेला।। टेक।।
बंकी बाट घाट नहीं पावैं, भ्रमें वेद पुरानी।
भौजल गये बहे विधि झूठी, भुगतैं चार्यौं खानी।। १।।
सूषिम सैल सब छाडो, शुन्य मंडल रहूँ थीरं।
बरषैं नूर तूर बहु भांती, नादू गहर गंभीरं।। २।।
तीनि शुन्य में काल जाल है, रिंचक रहै न हंसा।
चौथी शुन्य सैल करि औधू, पेखो अपने बंसा।। ३।।
पंचम शुन्य अनूपम सरवर, जहां नदी अठारह गंडे।
शिवपुर सेती छुटी सुरसती, फेरी है नौ खण्डे।। ४।।
षष्ट शुनय में क्षीर समुंद्र, जहां अमृत अखै भंडारा।
सप्त शुन्य में कामधैंनि है, दूझत है बहु धारा।। ५।।
सप्त अंड लौं आड परी है, जहां पौंहचे हैं सब साधू।
बिरहा एक बिहंगम बानी, जुलहे का घर आदू।। ६।।
दुर्लभ देश नेश होय पावै, गगन मंडल गुलजारा।
अभै शून्य पर आसन कीन्हा, खूल्हैं शिंभु द्वारा।। ७।।
अभै शुन्य पर परम शुन्य है, परम शुन्य पर सेजं।

जहां बंदी छोड कबीर गोसांई, नूर झिलमिला तेजं।। ८।।
नो पट्टण पर नादू बाजै, दशमें पट्टन दरिया।
जन दास गरीब कहै रे साधौ, जहां आसन जोग न क्रिया।। ९।। २।।

औधू सो फल क्यों नहीं खाते।
अमर अगोचर ऐसा फल है, धरतें रसना माते।। टेक।।
नीझर झरै निराशा बासा, उरध मुखी एक कूवा।
बंकनालि रस भाठी सरवै, जिनि जान्या तिनि पीया।। १।।
मन पवन सुरति सहनानी सेझा, वार पार नहीं कोई।
गूंगे की गति गूंगा जांनै, परचे का घर सोई।। २।।
परचा पाया शुन्य समाया, यौह बिरही घर जोगं।
अति ना पैद रहौ रे संतौं, उपति खपति सब रोगं।। ३।।
उनमन रहना भेद न कहना, राते माते नैंना।
चलो अकल सुरगा पुरि डेरा, जहां महबूब सलौंना।। ४।।
ब्रह्म शहर बेगमपुर बासा, अविगत नगर निधाना।
जन दास गरीब कहै रे साधौ, करि सतलोक पियाना।। ५।। ३।।

औधू परम तत्व प्रकाशा।
कोली कष्ट करै खाडी में, ताना बुनैं पियासा।। टेक।।
ब्रह्मलोक में तांना बुनिये, देखो अरश तमाशा।
सूत कपास न पूनी रहसी, निश दिन का मोहि संसा।। १।।
धागा टूटैं पान बिहूँना, कोली दर्द बिसारं।
एक सुरति का सूत हडै, जो देखै तारं तारं।। २।।
नजरि निरंतर जंत्र जाली, कोली नजरि छिपावै।
कोली सूत हडै हरि मुसटा, क्यों कर पूरा पावै।। ३।।
ताना बाना झीना कैसा, गाढ़ा गहर गजीना।
तत्व तेल भरि दीपक जोया, जब कोली रस भीना।। ४।।
ताने बाने से मन लाया, कोली बुननें लागा।
टूटै तार तुरत ले जोरै, बिनशै एक न धागा।। ५।।
धागा टूटै पान बिहूना, अब तो पान समोई।
खाड न छूटै कोली ऊठै, ऐसे बुनता कोई।। ६।।
ज्ञान राछ गलतान भर्‍या, जब नलकी सूत घनेरा।
ताने ही में तन समाया, कोली बौहरि न फेरा।। ७।।
जैसे ताना बुन्या कबीरा, ऐसे बुनि ले भाई।
ताना बुनि तनि नगर पहूँचै, ताने तन समाई।। ८।।
आगै ताना पीछै ताना, ताने वार न पारं।
जन दास गरीब कहै रे साधो, यौह ताना निज सारं।। ९।। ४।।

औधू जो जानैं सो जानैं। लोका भूल्या भ्रम भियानै।। टेक।।
अरश अनाहद गैब अबाजं, भिनि भेद झनकारं।
मोहकम महल गलीचे बैठ्या, है मालिक कर्तारं।। १।।
पूरे नाद अखंडो गाजै, निहचल अचल न डोलै।
मगज मढ़ी दर महल खुलासा, शब्द अनाहद बोलै।। २।।
महक सुबासा ब्रह्म निवासा, नीझर अजर जरैगा।
नभ कुंडल दौंना उलटै पौंना, सो जन दरश लहैगा।। ३।।
महक सुबासा ब्रह्म निवासा, औघट घाटी धारा।
भीजै भँवर गुफा गलतानं, बूठै शून्य फुहारा।। ४।।
रसना बंधि रसायन ल्याये, पारस परसे जीया।
साचे सतगुरु भेद लखाया, जब अमृत प्याला पीया।। ५।।
खांमि खमीर चवाई भाठी, सो घर बिरला जानैं।
भूलें फिरैं बिसारै तकिया, तखत तलै घर ठानैं।। ६।।
महंगा सौहंगा भाव न निकसै, सौदागर जन कोई।
मिले कबीर थीर दिल कीन्हा, शब्दें सुरति परोई।। ७।।
मानसरोवर हंसा राते, नौ खंड गंग बहाई।
जन दास गरीब कहे रे साधो, छाडो लोक बड़ाई।। ८।। ५।।
औधू सुंनि मंदला बाजैं।
आसन अनूपम जोगी, अनहद वेणी गाजैं।। टेक।।
मुख बिन नाद करौं बिन पकरैं, अधरि अनाहद छाजैं।
सुर बिन बीन सरोतर बानी, बिन दम मुरली बाजैं।। १।।
ना पैद बजावै किस मन आवै, अलख बिहंगम बाना।
नलकी नालि फिरै जग सारा, हम बाजीगर जान्या।। २।।
रसन बिहूना राग उठावै, सरबन कूँ सब सूझै।
चिशमें जाय करै बतलावनि, सुरति मारफति बूझै।। ३।।
बिन दम राग बिहाग बिनानी, मगज निरंतर गावा।
जन दास गरीब कहे रे साधो, सतगुरु भेद लखावा।। ४।। ६।।
औधू कौन कँवल से शब्द चलत हैं, कौन कँवल पद सोहं।
कौन कँवल में झिलमिल जोती, कौन कँवल मल धोवं।। टेक।।
मूल कँवल से शब्द चलत है, नाभ कँवल पद सोहं।
हिरदे कँवल झिलमिलै जोती, कंठ कँवल मल धोवं।। १।।
हिरदे कँवल अलेख बसेरा, जीव जोति इक ठांहीं।
प्रगट गुप्त गुप्त पुनि प्रगट, है सो दरशै नांहीं।। २।।
कंठ कँवल में बसैं करीमां, चिसम्यों चेतन सोई।
त्रिकुटी महल में तेज अपारा। जहां अनहद बीन परोई।। ३।।

अमी सरोवर साहिब की गति, गंग उरध मुख धारा।
शिव नारद ब्रह्मा जन शेषा, शिखर समाधि सारा।। ४।।
तेजपुंज प्रकाश जोति जल, अनहद नाद गुंजारा।
इला पिंगला सुषमन सेवा, त्रिबैनी की धारा।। ५।।
मन पवन सुरति ले बैठ गुफा में, जहां दरशै रूप अपारा।
मानसरोवर फूले जोती, अविगत अलख हजारा।। ६।।
जहां बाजैं नाद अगाध अगोचर, बाजैं बीन रिसाला।
गगन गुफा में जोगी बैठ्या, जड़ै जोग जुग ताला।। ७।।
उनमन बिरति रहैं सो साधू, शुन्य मण्डल सुरपूरा।
जन दास गरीब कहै रे साधौ, देखो अरश जहूरा।। ८।। ७।।

औधू श्वासा संगि शास्त्र निकसै, संख असंखौं भेला।
दूजा कौन पढ़ावे है रे। आपै गुरु आपै चेला।। टेक।।

चेला हमरा चित्त बन्या है, शब्द गुरु हम चिन्ह्या।
मन पवना दो नाद बिलंबे, तखत सुरति से लीन्ह्या।। १।।
सोहं हंसा अमर है निहचल, नाद बिंद की काया।
लखि महबूब मढ़ी बिन मालिक, सतगुरु कूँ बतलाया।। २।।
सोहं जीवन सोहं पीवन, सोहं सुरति समाना।
गाजै शब्द सरोवर गूंजैं, लखि निर्गुण झड़ ताना।। ३।।
उजल नाद अनाहद बानी, नित बाजै निज तूरं।
जोगी एक अरश में बैठा, पूरै नाद अपूरं।। ४।।
उजल नाद नाद बेदंगी, पढ़िया अगम अपारा।
अनभै ज्ञान मूल कर मेला, भरि भरि ल्याये लारा।। ५।।
जाकी गैबी नजरि गैब ही चोला, गैबी नाद गुंजारं।
गगन गुफा निरमायल तकिया, हंस हटी हुशियारं।। ६।।
ब्रह्म शहर में हाटि कलाली, प्याला अमृत पीजै।
बिन जर प्याला अमर उजाला, सो साधू क्यों ना लीजै।। ६।।
ऐसा प्याला अमर उजाला, पीवै बिरला कोई।
हम सौदागर सतगुरु भेजे, भरि निर्गुण झड़ लोई।। ८।।
लखि रे हंसा बंसा बानी, कलप कंगनी कूजा।
जीव पीव कुछ अंतर नांहीं, कौन भेद से दूजा।। ६।।
पारस रतन लाल काया में, मुरजीवा कूँ पावै।
झूठी कथनी कारज कैसा, शब्द साचा जगावै।। १०।।
जागै आत्म तत्व तेज फुंनि, दशौं दिशा उजियारा।
सतगुरु खोल्हि कपाट दिखावै, नूरी महल भंडारा।। ११।।
रक्त न पीत न सेत न श्यामं, अरन बरन ना कोई।

सुन्दर मूरति सार निरंजन, है अविगत जन सोई।। १२।।
आदि अंति अविगत अबिनाशी, ब्रह्म बिनानी बीना।
जिनि माटी के घटि तत्त उपाया, कहौ कौन ने चीन्हा।। १३।।
कादर कुदरति अकल निरंजन, घटै बढ़ै फुनि नांही।
जाकै गैब ही आसन गैब सिंघासन, तत्त तेज फुनि झांही।। १४।।
जाका तकिया मंजन लहरि निरंजन,
दर्पण धारा ब्रह्म हमारा, झिलमिल नूर गुलाली।
सतगुरु खोल्हि कपाट दिखावैं, शून्य सिंघासन ताली।। १५।।
जहां बैठ्या देवा अकल अभेवा, आदि अंत है अविनाशी।
जरै मरै जूनी नहीं आवै, परम शुन्य का वासी।। १६।।
आदि न अंति न मध्य न मूलं, वार पार नहीं कोई।
जन दास गरीब कहे रे साधो, है अविगत निरमोही।। १७।। ८।।

संतों बाघनि जग में आई।
तीन लोक और भुवन चतुर्दश, हंसा चुनि चुनि खाई।। टेक।।

हिंदू मुसलमान दीन दोय, प्रगट लूटे सोई।
फोकट गुरुवा बात बगाड़ी, बहुत बिगूचनि होई।। १।।
कंठी बांधि गुरु कनफूका, लूटै सिष असंखा।
स्वामी सेवक सूली दीन्हें, तीन लोक में डंका।। २।।
काजी पंडित अंधे कीन्हें, गुरु पीर पट फूटै।
कहैं कहानी वेद कुरांनी, बंधे जम के खूंटै।। ३।।
षटदर्शन जिभ्या रस खाये, इन्द्री भूत बिताला।
छाजन भोजन रूचि रूचि राते, जाय परे जम जाला।। ४।।
सिद्ध चौरासी मुनि तेतीसौं, नौ नाथां जिनि खाये।
श्रृंगी ऋषि नारद मुनि मोहे, पारा ऋषि डहकाये।। ५।।
कैरौं पंडौं बहु दल दलिया, जादौं छप्पन कोड़ी।
दुरयोधन रावण गये रसातल, बाघनि कान्हें न मोड़ी।। ६।।
छत्रपति जिन चुनि चुनि खाये, चकवे हो गये चूहा।
याह बाघनि मंजारी माया, खाय दूबर दूहा।। ७।।
तन की माया त्यागि गये हैं, मन की माया मांहीं।
सूषिम लहरि गिरासै हंसा, फिर फिर आवें जांहीं।। ८।।
कनक कामिनी अंध कूप हैं, डूबैं कीट पतंगा।
कामिनी हंस रसातल मेले, बाघनि डोबै संगा।। ९।।
तिहूँ देवा सिर तूर बजाया, पटरानी भई दासी।
ब्रह्मण्ड इकीसौं गलत किये हैं, हंसा नाद गिरासी।। १०।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, बाघनि खाये भाई।

नौ अवतार पुकार करत हैं, हम संगि खेलन आई।। ११।।
नौ औतार गुटकि जिन्हि लीन्हें, अपने उदरि समाये।
पुरुषा होय कर संग खेलै थी, पूता कर कर जाये।। १२।।
सुभट शूर पाखरिया लूटे, अबल बली जिन बलिया।
कायर सावंत सकल गिरासे, इन बाघनि बहु छलिया।। १३।।
बाघनि सरप सिंघनी माया, या से डरते रहियो।
पुत्र सुत्र दासी होये आवै, संतो सेती कहियो।। १४।।
याह बाघनि बेरूंन करैगी, सुनि ल्यौ इसका रासा।
जन दास गरीब नाम पद ऊपरि, शब्द महल कर बासा।। १५।। ६।।

माई एक बिहूदी। जाकी ब्रह्मा पीई दूधी।। टेक।।

पाप बाप कूँ नित उठि पोषै, और पोषै एक बहनी।
जेठा बेटा गोद खिलावै, घर का भेद न कहनी।। १।।
संसा शोग रहै दो संगी, मनसा करै रसोई।
खाखी खसम कमेर करत है, कुनबा जीमैं लोई।। २।।
काजी पंडित है दो पोते, इन स्यौं अविगत प्यारा।
कर्म अकर्म संग दो भाई, निश वासर जौंनारा।। ३।।
जिनि ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चुंघाये, श्रृंगी ऋषि दीया चोसा।
नारद मुनि कूँ घूंटी प्याई, पारा ऋषि कहां दोषा।। ४।।
तेतीसौं तसमई पिलाई, सिद्ध चौरासी झूले।
लगे लखीसर लारे झारे, माता कूँ नहीं भूले।। ५।।
कृष्ण विष्णु कन्हवा भगवाना, उस माया के पूता।
गोरख दत्त दिगंबर जोगी, रहै ज्ञान अवधूता।। ६।।
गुरु मछंदर जीत लीया है, दुर्वासा दरवेशा।
ध्रुव की धजा अरश में फरकै, निरगुण पद में नेशा।। ७।।
शुकदे ज्ञान मैदान मड्या है, प्रहलाद परगुरु पाया।
जनक विदेही राज करंता, धर्मराय बंधि ल्याया।। ८।।
सुलतानी बाजीद फरीदा, सेऊ संमन साका।
पीपा धन्ना नामदेव नानक, सूरा रंगा बंका।। ९।।
रामानंद कपिल मुनि जोगी, औघट घाटी रोकी।
उस माया के जालि न आये, घर तें काढी खोटी।। १०।।
गोपीचंद भरथरी होते, सफरजंग सैलानी।
पारब्रह्म से परचे खेलै, आदि अंति ब्रह्मज्ञानी।। ११।।
रैदास रसत एक परचे लूटी, दादू हैं दरवानी।
या माया के जाल न आये, मेटी चार्‍यौं खानी।। १२।।
सत्य कबीर थीर एक देवा, आदि अंत की कहता।

दास गरीब अचल अनरागी, नाद बिन्द नहीं बहता।। १३।। १०।।
लोका भ्रम न भूलो भाई।
पूजै आंन अनीत देहरा, पत्थर से ल्यौ लाई।। टेक।।
भैंरों खित्रपाल कालिका, दुरगा देवी ध्यावै।
भूत भवानी दि लमें पैठी, साध नहीं मन भावै।। १।।
चंडी लंडी बकरे खांनी, ज्वालामुखी जुहारं।
करि ततबीर करद गल काटै, बूडे भौजल धारं।। २।।
शेढ़ शीतला शिला पुजारी, बांटै थांन कंदूरी।
नारी नहीं हम निहचै देखी, घर घर सुनही सूरी।। ३।।
बड़े पित ग्रह पिरोहत खाये, सातौं कुली डबोई।
पांडे पिण्ड पिटैगा भाई, तातैं चाले आपा खोई।। ४।।
आपा खोया जगत बिगोया, सरै सरीकति हाँसी।
स्वामी सेवक भौजल बूडे, पड़ि है जम की फाँसी।। ५।।
गीता पाठ पुरान ध्यानं, घड़ी महूरत साधी।
जो तिथि बार लगन सब लिखते, जमपुरि गुरजां खाधी।। ६।।
अठारा पुरान वेद चारूयों चित, करते बौहत अचारा।
जम के जालि बंधि है भाई, बूडे भौजल धारा।। ७।।
पढ़ि पढ़ि राते गुणि गुणि माते, गलत गई सब गूझां।
ब्रह्म अचारी पिटते देखे, तातैं पत्थर न पूजां।। ८।।
सकल बियापी सब से न्यारा, जैसे गंध पौहप के मांहीं।
जन दास गरीब परम पद भीनें, मिले कबीर गोसांई।। ९।। ११।।
दरशै नहीं चिदानंद स्वामी। वहां नहीं परदा पोसी है।। टेक।।
आसन करैं जोग बिधि साधैं, कसि कसि इन्द्री मोसी है।
सोलह संख बिहंगम गैली, बंका मारग कोसी है।। १।।
जहां चार मुक्ति बेकुण्ठ न कहिये, संख पदम जहां जोसी है।
हम कूँ चाह लगी जित हूँ की, होनी होय सो होसी है।। २।।
कर्म कुसंगति जीव भुलांनें, सतगुरु कूँ क्या दोषी है।
छोटा पांहन काहै पूजो, बड़ा पत्थर एक ढोसी है।। ३।।
तुम्ह दीदार कौन बिधि कीन्हा, वहां तो मिहरी मरद न तोसी है।
जन दास गरीब कहै रे साधौ, जहां खाना कहाँ परोसी है।। ४।। १२।।
औधू जोगी एक अकेला। जाकै तीरथ बरत न मेला।। टेक।।
सींगी नाद भभूत न बटुवा, आसन असतल नांहीं।
जोग न जुगति न ज्ञान न ध्यानं, रहै अरश के मांहीं।। १।।
चुप न मौंन हरष नहीं हांसी, ना गावै ना रोवै।
खाय न पीवै मरै न जीवै, ना जागै ना सोवै।। २।।

पावक जले न जल में बूडै, सीत घाम से न्यारा।
बीन बजावै बरवै गावै, है सो यार हमारा।। ३।।
जाके भग न लिंग नाद नहीं बिंद, ना पुरुषा ना नारी।
शूद्र वैश्य न हिंदू तुरका, ना दीखे ब्रह्मचारी।। ४।।
अति अगाध अगोचर ऐसा, निरालंब निरमोही।
जाके सिकल न सूरति महल न मूरति, रूप रेख नहीं कोई।। ५।।
शब्द अतीत शुन्य का बासी, राग रूप सो कहिये।
दृष्टि मुष्टि से रहै अगोचर, कहौ कौन भेद गति लहिये।। ६।।
जप तप ध्यान धरे बहुतेरे, दर दीवाल नहीं मसतं।
बीन बजावै बिरकत गावै, सो मौंनी किस बिधि हसतं।। ७।।
तन मन फूक जरै काष्ट में, शब्द अरथ नहीं साजं।
बार बार सतगुरु बलिहारी, अब तो राते अरश अवाजं।। ८।।
गगन शुन्य में सेज हमारी, जहां शब्द अतीत रहंता।
उलटी चाल पहुँचे साधू, ये भरम भुलाने पंथा।। ९।।
पिंगुला ज्ञान ध्यान जिति लाग्या, दुर्लभ देश अपारा।
सोहं हंस परम पद चीन्ह्या, शुन्य मंडल घर म्हारा।। १०।।
जहां बरवै बांनी अकथ कहानी, क्या कहिये क्या गहिये।
जन दास गरीब कहै रे संतों, तातैं मौंनी रहिये।। ११।। १३।।

निरगुण सरगुण माया संतों, निरगुण सरगुण माया।
साचे सतगुरु भेद लखाया।। टेक।।

निरगुण कहूँ तो संसा व्यापे, सरगुण कहूँ तो नेशा।
शब्द अतीत अमर अनरागी, समझो शब्द संदेशा।। १।।
निरगुण सरगुण है दो धारा, इन में बह्या सो डूब्या।
दहनै निरगुण बामै सरगुण, दहौं के मध्य हम ढूंढ्या।। २।।
चिशम्यों आगे बिंब बियास्या, नासा अगर निराला।
सोहं सार झड़े अनरागी, निरखै मोटे ताला।। ३।।
जहां बंदीछोड कबीर बिराजै, अगरी चौंर ढुरंता।
जन दास गरीब कहै रे संतो, बारह मास बसंता।। ४।। १४।।

नैंनों बीच नबी है संतों, नैंनों बीचि नबी है।। टेक।।

लाग्या बांन बिरह बिंबल का, ग्यासी प्रेम गभी है।
स्याह सपेद तिली मधि तालिब, अविगत अलख रबी है।। १।।
जबराईल जबां पर बैठा, महकाईल भ्रिकुटी।
असराफील सकल कूँ परखै, दो दल कँवल त्रिकुटी।। २।।
अजाजील अनहद की ड्यौढी, जहां सप्तपुरी का नाका।
अक्षर धाम अधिकार बताऊँ अगम पंथ है बांका।। ३।।

मक्रतार पर महल हमारा, जहां सरबंगी गावै।
दास गरीब तास का चेरा, जो शब्द महल सुधि ल्यावै।। ४।। १५।।
लीजे मुजरा मेरा सतगुरु, लीजे मुजरा मेरा।। टेक।।
सप्तपुरी पर सार चलाऊँ, तो सतगुरु का चेरा।
चौदह कोटि कटक दल काटौं, ज्ञान शब्द शमशेरा।। १।।
चित्रगुप्त के कागज कीरौं, मेटौं सकल बखेरा।
धर्मराय की बंधि छुटाऊँ, झिलमिल नूर उजेरा।। २।।
अरश कुरश पर सेत गुमट है, जहां सतगुरु का डेरा।
शुन्य शहर में सैल हमारी, अविगत नगर बसेरा।। ३।।
अगर डोर पर अगर दीप है, अविगत महल उचेरा।
जन दास गरीब कहै रे संतो, बहुरि न होसी फेरा।। ४।। १६।।
ऐसा धुंध बनाया, औधू ऐसा धुंध बनाया।
जिन खोज्या तिन पाया।। टेक।।
ब्राह्मण सोई जो ब्रह्म पिछानैं, ज्ञान ध्यान तकलीदी।
परम पुरुष सब ही घट व्यापक, भांती क्या है गीदी।। १।।
क्रिया नेम रहो किस भांती, नौ द्वारौं मध्य बहता।
सप्त कुण्ड नरक मंझि भरे हैं, तू कौन धरम स्यौं रहता।। २।।
मात पिता के पिण्ड भराये, अपना पिण्ड न खोज्या।
शुन्य मंडल में सुरही ब्याई, अमी खीर नहीं दोझ्या।। ३।।
ब्राह्मण बनिये ज्ञान बिचार्या, शूद्र नीच ठहराया।
औह अवधूता उत्तम ऐसा, जिन बिन बरवै फल खाया।। ४।।
औह अवधूता किसका पूता, करि ले अपने ताबै।
गरक खजांना बिरला लूटै, नहीं किसी कूँ फाबै।। ५।।
जे लूट्या तो लूटि पचावौ, पीछे बहुत फिलादी।
कलूकाल में दुंद पड़ैगा, जाय बैठो सत गादी।। ६।।
जे तुम कूँ सतगुरु भेटे हैं, अगम निगम तुम देख्या।
शुन्य मंडल में बास निवासा, जहां अविगत अलख विवेका।। ७।।
अविगत से गति तेरी लागी, कोई सुरनर शब्द उचारै।
परम पुरुष से सांझा तेरा, आवागवन निवारै।। ८।।
आवागवन निवार्या संतों, अब है तेरी बारी।
दास गरीब भनैं सतगुरु का चेला, तू मेरा ब्यौपारी।। ९।। १७।।

अथ राग माली गौड़ी

ऐसा ध्याऊँ शब्द समाऊँ,
पद झलकाऊँ बहुरि न आऊँ, धरि गौंना।। टेक।।

दीपक मेलौं बाती तेलौं, पद में खेलौं शब्द सकेलौं, थीर करौंगा मन पौंना।। १।। कागज कीरौं हंसा थीरौं, गहर गंभीरौं, अमृत नीरौं, पी दौंना।। २।। ऐसा देखौं रूप न रेखौं, अकल विवेकौं, शब्द अलेखौं रह मौंनां।। ३।। ऐसा चीन्हं, अति ल्यौलीनं, बहु बिधि बीनं, जंत्री झीनं दे जौंना।। ४।। आपा खोऊ सब मल धोऊँ, धागा पोऊँ नाद समोऊँ, बहुरि न भरमौं इस भौंना।। ५।। यौह मत शूरा देखो नूरा, अनहद तूरा अजब जहूरा, त्रिगुण आगम झूठा सौंना।। ६।। जुग जुग जाग्या सीमौं बागा, गुदरी धागा शब्द बिहागा, नहीं दास गरीब उदै हौंना।। ७।। १।।

यौह रस नीका त्यारन जीका, सब का टीका घणनामी।। टेक।।

आदि जुगादं विद्या न बादं, अनहद नादं,
समझि बूझि होहि निहकामी।। १।।
अकह कहूँगा अलह लहूँगा, सकल सहूँगा, परनामी।। २।।
जोग जुगंता, अविगत कंता, आदि न अंता, सतधामी।। ३।।
अकल अनूपं, छांह न धूपं, सत्त सरूपं,
है सतगुरु साहिब स्वामी।। ४।।
सकल समाना, पद निरबाना, उनमन ध्याना,
डूबि गये भौजल कामी।। ५।।
सुख सलाहद, सतगुरु साहद, संत उगाहद,
छाडि दई दहनी बामी।। ६।।
अगम उजागर, सुख के सागर,
पद रतनागर, दास गरीब मिले दानी।। ७।। २।।

हंस उधारन भौजल त्यारन, सतगुरु आये थे लोई।
सतगुरु शब्द उलंघ्या प्राणी, माया चित राख्या पोई।। टेक।।

जर स्यौं नेहा जा मुख खेहा, पैसे स्यौं लागी यारी।
शीश चढ़ावै मुजरा पावै, सो पेखै उनमन तारी।। १।।
पारस छाडि लोह गह्यो गांठी, मुकताहल पद ना चीन्ह्या।
माया सेती लगी महौबति, सतगुरु कूँ सिर ना दीन्हा।। २।।
बलख बुखारे राज पियारे, सतगुरु शब्दौं छाडि गये।
भौजल प्राणी भुगते खानी, ते गंधी स्यौं लागि रहे।। ३।।
त्यागि तबेले अजब नवेले, अठारह लाख तुरी छाडी।
हीरे जुवाहर मोती मुकता, लालौं की खाडी छाडी।। ४।।
सेऊ संमन शीश चढ़ाया, सिर साटे लई प्रसादी।
धन्य बंदीछोड उधारे हंसा, जिन पेखी उनमन गादी।। ५।।
नूर पियाला आनि पिलाया, जासे अजर अमर हौना।

जन दास गरीब कहै रे साधौ, याह दुनिया झूठा गौना।। ६।। ३।।
मन की नारी मनसा दारी। काया के मध्य बसै कुटनी।। टेक।।
पांच पच्चीस तीनि संग रसिया, घटि घटि नाचत है नटनी।। १।।
काम क्रोध के ढोल बजत है, लोभ मोह नगरी लुटनी।। २।।
असंख कलप जुग नाचत हो गये, पेसा एक नहीं खटनी।। ३।।
रूखा सूखा भावैं नांही, मन भरुवा मांगै चटनी।। ४।।
आगे धर्मराय लेखा मांगै, दरगह बीचि परै लठनी।। ५।।
इस बिभचार ख्वार होय जायेगी, सतगुरु से सौदा सटनी।। ६।।
दास गरीब ब्राह्मनी के घर में, आनि बरी मुसली पठनी।। ७।। ४।।

अथ राग मला गौड़ी

जालिम जुलम गुदार्‍या बे यारो, जालिम जुलम गुदार्‍या है।। टेक।।
मन का मुहरा दिल की दुमची, लै का लगाम बिचार्‍या है।।
जोग जुगति का जीन बनाया, घुड़ला ज्ञान सिंगार्‍या है।। २।।
शील सिंजोय प्रेम की पाखर, हंस भये असवारा है।।
हुकम हिसाबी हम चल आये, खेलन हंस शिकारा है।। ४।।
बिन धुंनही बिन भालि सरी बिन, कसि कर खैबर मार्‍या है।।
भलका लाग्या शब्द करारा, टूटे भ्रम किवारा है।। ६।।
घायल घूंमै पैर न टिकते, आवै जोरि तिवारा है।।
औषद पाटी बेगि चढ़ावै, जो कोई होय हमारा है।। ८।।
समझैं नहीं अकल के भौंदू, घर घर वेद पुकार्‍या है।।
शुन्य मंडल सतलोक पठावैं, जहां पारब्रह्म निराकारा है।। १०।।
दास गरीब जहां रंग राते, संख कला उजियारा है।। ११।। १।।
खूब रंग्या बे खूब रंग्या, मैंडी चोली दा बूंटा, खूब रंग्या।। टेक।।
पंच तत्व की चोली बनी है, या रंगते नौ मास लग्या।।
रंग पतंग दिया बहुरंगी, बाजीगर कूँ जगत ठग्या।। २।।
जरद कनारी जोरि बनी है, बिच बिच हीरा लाल लग्या।।
दास गरीब सोई भल चूनर, जामै सत का दाग दग्या।। ४।। २।।
अचल विहंगम हीरा संतों, अचल विहंगम हीरा है।। टेक।।
सुरति सनेही पुरुष विदेही, बैठ्या त्रिकुटी तीरा है।।
दहनैं गंगा बामै जमना, मध्य सुरसती नीरा है।। २।।
चंचल रूप सरूप चलैंगे, औह तो असथरि थीरा है।।
परानंदनी द्वार बिराजै, दूझै अमृत खीरा है।। ४।।
यौ ही रूप नरसिंघ बनि आये, बावन धरे शरीरा है।।
गीध ब्याध गनिका और भीलनी, भौसागर लंघि तीरा है।। ६।।

येही रूप गज गिराह उबारे, मेटि दई दुःख पीरा है।।
ये ही रूप कूँ रावण मारे, येही रूप रघुबीरा है।। ८।।
येही रूप कूँ निरख निहारो, तोरन जम जींजरा है।।
गरीब दास निर्गुण निरबांनी, साहिब पुरुष कबीरा है।। १०।। ३।।
नैंनों में रेख अलेख धनी है, पूजन चले पहारा है।। टेक।।
तीरथ कोटि कटक चढ़ि धाये, पांहन से सिर मार्या है।।
जड़ के आगे चेतन गावै, अजब मूढ़ लजमारा है।। २।।
ज्ञानी गुणी मुनि सब धावैं, भूलि रह्या संसारा है।।
दादुर मीन मुक्ति नहीं होई, नित न्हावै जल धारा है।। ४।।
ऊतै गुरुवा ऊतै चेला, जग ऊतौ का सारा है।
मच्छी मीन काटि गल खाया, परबी लेत सवारा है।। ६।।
अनभेदी स्यौं भेद न कहिये, यौह जग झूठा दारा है।।
रतन अमोली रंग सुरंगा, औह तो फूल हजारा है।। ८।।
सकल भांति भांतिन में आवै, तन मन सेती न्यारा है।।
सुरति निरति मन पौंन पदारथ, इन में को शिखदारा है।। १०।।
पलक बिजोग न होत बिनानी, हरदम प्रीतम प्यारा है।।
नाद बिन्द का सेवन करि ले, बांधि गगन मठ पारा है।। १२।।
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष से, खड़े रहै दरबारा है।।
छूछिम रूप सरूप सकल में, जग का त्यारन हारा है।। १४।।
गरीबदास सो जीवत मुकता, दरश परस करतारा है।। १५।। १४।।
देखो ने गंज सहीदा दुलहनि, देखो ने गंज सहीदा है।। टेक।।
जा पुरुषा संग फेरे लीये, सो तो ढेर मट्टी दा है।।
आन पुरुष से तैं चित लाया, किस पर काढि कसीदा है।। २।।
बद नजरी तुम छाडो दुलहनि, नेक करो टुक दीदा है।।
ध्रुव प्रहलाद उतरि गये पारा, सुलतानी बाजीदा है।। ४।।
गोपीचंद भरथरी जोगी, जिन के खूब अकीदा है।।
गोरख दत्त दिगंबर जोगी, जिन कूँ साहिब सूझ्या है।। ६।।
जन रैदास कबीर कमाला, जिन पर साहिब रीझ्या है।।
इला पिंगुला सुषमन के घरि, चोखा फूल चबीदा है।। ८।।
दास गरीब कहै रे संतो, जम की जलब रसीदा है।। ९।। ५।।
माटी दा अजब तमाशा बे यारो, माटी दा अजब तमाशा है।। टेक।।
माटी दा लोहा माटी दा तांबा, मांटी दा पीतल कांसा है।।
माटी दा रूपा माटी दा सोना, माटी दा चांदी हांसा है।। २।।
माटी दी चौसई माटी दी पैसई, माटी दा मुल मुल खासा है।।
माटी दी मेवा माटी दी मिसरी, माटी दा खांड पतासा है।। ४।।

माटी दी नारी माटी दा पुरुषा, माटी दा घर घर बासा है।।
माटी दा गुरूवा माटी दा चेला, माटी दा सेवक दासा है।। ६।।
माटी खोजो माटी बूझो, माटी में हंसौं का बासा है।।
दास गरीब परम रंग भीनें, तखत कबीर खवासा है।। ८।।
त्रिकुटी तमाम भँवर भंनकारे, दीन दयाल निहाल करी।। टेक।।
तेतीस कोटि मुनिजन माया, इन्द्र उर्वशी आंनि खरी।।
सहंस अठासी अनहद रासी, मौले की मजलसि आनि जुरी।। २।।
सनकादिक ब्रह्मादिक आये, नारद मुनि सुर तान भरी।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नांचे, अनहद बाजे नाद घुरी।। ४।।
गोरख दत्त कबीर नामदे, ध्रू प्रहलाद है संत नरी।।
शेष सहंस मुख ररंकार है, कौसतमणि जाके शीश जरी।। ६।।
आदि निरंजन सब दुःख भंजन, पारब्रह्म मेरे आये हरी।।
मोसी दुहागनि है बड़ भागनि, कंत पियारे कूँ आनि बरी।। ८।।
शंख चक्र गदा पदम बिराजै, भृगुलता उरि जाके धरी।।
लीलंबर पीतंबर बाना, सेत छत्र सिर चौंर ढुरी।। १०।।
पचरंग झंडे गैबी गगन में, फरके हैं आंनि निशान जरी।।
सुषमन सुरति झरोखे बैठी, इला पिंगुला उलटि भरी।। १२।।
सूरति नगर सुहंगम दगरा, जाय बसे हम अचल पुरी।।
दास गरीब अनाहद प्याले, अर्श कुर्श बिच फूल झरी।। १४।।

अथ राग आरती

पहली आरती हरि दरबारे। तेज पुंज जहां प्रान उधारे।। टेक।।
पाती पंच पौहप कर पूजा। देव निरंजन और न दूजा।। १।।
खण्ड खण्ड में आरती गाजै। सकल मई हरि जोति बिराजै।। २।।
शांति सरोवर मज्जन कीजै। जत की धोती तन पर लीजै।। ३।।
ग्यान अंगोछा मैल न राखै। धर्म जनेऊ सत मुख भाखै।। ४।।
दया भाव तिलक मस्तक दीजै। प्रेम भक्ति का अचमन लीजै।। ५।।
जो नर ऐसी कार कमावै। कंठी माला सहज समावै।। ६।।
गायत्री सो जो गिनती खोवै। तर्पण सो जो तमक न होवै।। ७।।
संध्या सो जो सन्धि पिछानै। मन पसरे कूँ घट में आनै।। ८।।
सो संख्या हमरे मन मानी। कहै कबीर सुनो रे ज्ञानी।। ९।। १।।
ऐसी आरती त्रिभुवन तारे। तेजपुंज जहां प्रान उधारे।। टेक।।
पाती पंच पौहप कर पूजा। देव निरंजन और न दूजा।। १।।
अनहद नाद पिंड ब्रह्मण्डा। बाजत अहि निस सदा अखंडा।। २।।
गगन थाल जहां उडगन मोती। चंद सूरज जहां निर्मल जोती।। ३।।

तन मन धन सब अर्पन कीन्हा। परम पुरुष जिन आत्म चीन्हा।। ४।।
प्रेम प्रकाश भया उजियारा। कहैं कबीर मैं दास तुम्हारा।। ५।। २।।
संध्या आरती करो विचारी। काल दूत जम रहै झख मारी।। टेक।।
लाग्या सुषमण कूंची तारा। अनहद शब्द उठै झनकारा।। १।।
उनमनि संजम अगम घर जाई। अछै कँवल में रह्या समाई।। २।।
त्रिकुटी संजम कर ले दरसन। देखन निरखत मन होय प्रसन।। ३।।
प्रेम मगन होय आरती गावैं। कहै कबीर भौजल बहुर न आवैं।। ४।। ३।।
हरि दर्जी का मर्म न पाया।
जिन यौह चोला अजब बनाया।। टेक।।
पानी की सुई पवन का धागा। नौ दस मास सींवते लागा।। १।।
पांच तत्त की गुदरी बनाई। चन्द सूरज दो थिगरी लगाई।। २।।
कोटि जतन कर मुकट बनाया। बिच बिच हीरा लाल लगाया।। ३।।
आपे सीवैं आप बनावैं। प्रान पुरुष कूँ ले पहरावैं।। ४।।
कहै कबीर सोई जन मेरा, नीर खीर का करै निबेरा।। ५।। ५।।
राम निरंजन आरती तेरी।
अवगति गति कुछ समझ पड़ै नहीं, क्यूँ पहुंचै मति मेरी।। टेक।।
निराकार निरलेप निरंजन, गुण अतीत तिहुँ देवा।
ग्यान ध्यान से रहै निराला, जानी जाय न सेवा।। १।।
सनक सनंदन नारद मुनि जन, शेष पार नहीं पावै।
शंकर ध्यान धरै निस वासर, अजहूँ ताहि झुलावै।। २।।
सब सुमरैं अपने अनुमाना, तो गति लखी न जाई।
कहै कबीर कृपा कर जन पर, ज्यों है त्यों समझाई।। ३।। ५।।
नूर की आरती नूर के छाजे, नूर के ताल पखावज बाजे।। टेक।।
नूर के गायन नूर कूँ गावै। नूर सुनंते बहुर न आवै।। १।।
नूर की बानी बोलै नूर। झिलमिल नूर रह्या भरपूर।। २।।
नूर कबीरा नूर ही भावै। नूर के कहे परम पद पावै।। ३।। ६।।
तेज की आरती तेज के आगै। तेज का भोग तेज कूँ लागै।। टैक।।
तेज पखावज तेज बजावै। तेज ही नाचै तेज ही गावै।। १।।
तेज का थाल तेज की बाती। तेज का पुष्प तेज की पाती।। २।।
तेज के आगै तेज विराजै। तेज कबीरा आरती साजै।। ३।। ७।।
आपै आरती आपै साजै। आपै किंगर आपै बाजै।। टेक।।
आपै ताल झांझ झनकारा। आप नचै आप देखन हारा।। १।।
आपै दीपक आपै बाती। आपै पुष्प आप ही पाती।। २।।
कहै कबीर ऐसी आरती गाऊँ। आपा मध्ये आप समाऊँ।। ३।। ८।।
अदली आरती अदल समोई। रिनभै पद में मिलना होई।। टेक।।

दिल का दीप पवन की बाती। चित का चंदन पांचौं पाती।। १।।
तत का तिलक ध्यान की धोती। मन की माला अजपा जोती।। २।।
नूर के दीप नूर के चौंरा। नूर के पौहप पूर के भौंरा।। ३।।
नूर की झांझि नूर की झालर। नूर के संख नूर की टालर।। ४।।
नूर की सौंज नूर की सेवा। नूर के सेवक नूर के देवा।। ५।।
आदि पुरुष अदली अनरागी। शुन्य संपट में सेवा लागी।। ६।।
खोजो कँवल सुरति की डोरी। अगर दीप में खेलो होरी।। ७।।
निरभै पद में निरति समानी। दास गरीब दर्श दरवानी।। ८।। १।।
अदली आरती अदलि उचारा। सतपुरुष दीजो दीदारा।। टेक।।
कैसे कर छूटै चौरासीं जूनी संकट बहुत तिरासी।। १।।
जुगन जुगन हम कहते आये। भौसागर से जीव छुटाये।। २।।
करि विश्वास श्वास कूँ पेखो। या तन में मन मूरति देखो।। ३।।
श्वासा पारस भेद हमारा। जो खोजै सो उतरै पारा।। ४।।
श्वासा पारस आदि निशानी। जो खोजै सो होय दरवानी।। ५।।
हरदम नाम सुहंगम सोई। आवागवन बहुर नहीं होई।। ६।।
अब तो चढ़े नाम के छाजे। गगन मंडल में नौबत बाजे।। ७।।
अगर अलील शब्द सहदानी। दास गरीब बिहंगम बानी।। ८।। २।।
अदली आरती अदलि बखाना। कोली बुनै बिहंगम ताना।। टेक।।
ज्ञान का राछ ध्यान की तुरिया। नाम का धागा निहचै जुरिया।। १।।
प्रेम की पान कँवल की खाडी। सुरति का सूत बूनै निज गाढी।। २।।
नूर की नालि फिरै दिन राती। जा कोली कूँ काल न खाती।। ३।।
कुल का खूंटा धरनी गाड्या। गहर गजीना ताना गाढा।। ४।।
निरति की नली बुनै जे कोई। सो तो कोली अविचल होई।। ५।।
रेजा राजिक का बुनि दीजै। ऐसे सतगुरु साहिब रीझै।। ६।।
दास गरीब सोई सत कोली। ताना बुनि कै अर्श अमोली।। ७।। ३।।
अदली आरती अदलि अजूनी। नाम बिना है काया सूनी।। टैक।।
झूठी काया खाल लुहारा। इला पिंगुला सुषमन द्वारा।। १।।
कृतघ्नी भूले नर लोई। जा घटि निश्चय नाम न होई।। २।।
सो नर कीट पतंग भवंगा। चौरासी में धरि है अंगा।। ३।।
उदबुद खानी भुगतै प्रानी। समझैं नहीं शब्द सहदानी।। ४।।
हम हैं शब्द शब्द हम मांहीं। हम से भिंन और कछु नाहीं।। ५।।
पाप पुण्य दो बीज बनाया। शब्द भेद किन्हें बिरले पाया।। ६।।
शब्दे सरब लोक में गाजे। शब्द उजीर शब्द है राजे।। ७।।
शब्दे स्थावर जंगम जोगी। दास गरीब शब्द रस भोगी।। ८।। ४।।
अदली आरती अदलि जमाना। जम जौरा मेटौं तलबाना।। टेक।।

धर्मराय परि हमरि धाई। नौबति नाम चढ़ो ले भाई।। १।।
चित्रगुप्त के कागज कीरौं। जुगन जुगन मेटौं तकसीरौं।। २।।
अदली ज्ञान अदलि एक रासा। सुनि करि हंस न पावैं त्रासा।। ३।।
अजराईल जुरावर दाना। धर्मराय का है तलबाना।। ४।।
मेटौं तलब करौं तागीरा। भेटे दास गरीब कबीरा।। ५।। ५।।

अदली आरती अदलि पठाऊँ।
जुगन जुगन का लेखा ल्याऊँ।। टेक।।

जा दिन ना थे पिंड न प्राणा। नहीं पानी पवन जिमी असमाना।। १।।
कच्छ मच्छ कूरंभ न काया। चंद सूर नहीं दीप बनाया।। २।।
शेष महेश गणेश न ब्रह्मा। नारद शारद नहीं विश्वकर्मा।। ३।।
सिद्ध चौरासी ना तेतीसौं। नौ औतार नहीं चौबीसौं।। ४।।
पांच तत्व नांहीं गुण तीनां। नाद बिंद नांहीं घट सीनां।। ५।।
चित्रगुप्त नहीं कृतम बाजी। धर्मराय नहीं पंडित काजी।। ६।।
धूंधूंकार अनंत जुग बीते। जा दिन कागज कहु किन्ह चीते।। ७।।
जा दिन थे हम तखत खवासा। तन के पाजी सेवक दासा।। ८।।
संख जुगन परलौ प्रवाना। सत्पुरुष के संग रहाना।। ६।।
दास गरीब कबीर का चेरा। सत्यलोक अमरापुर डेरा।। १०।। ६।।

ऐसी आरती पारख लीजे। तन मन धन सब अरपन कीजे।। टेक।।

जाकै नौलख कुंजि दिवाले भारी। गोवर्द्धन से अनंत अपारी।। १।।
अनंत कोटि जाकै बाजे बाजैं। अनहद नाद अमरपुरि छाजैं।। २।।
शुन्य मंडल सतलोक निधाना। अगम दीप देख्या अस्थाना।। ३।।
अगर दीप में ध्यान समोई। झिलमिल झिलमिल झिलमिल होई।। ४।।
तातें खोजो काया काशी। दास गरीब मिले अविनाशी।। ५।। ७।।

ऐसा आरती अपरमपारा। थाके ब्रह्मा वेद उचारा।। टेक।।

अनंत कोटि जाकै शंभू ध्यानी। ब्रह्मा संख वेद पढ़ैं बांनी।। १।।
इन्द्र अनंत मेघ रस माला। शब्द अतीत बिरध नहीं बाला।। २।।
चंद सूर जाकै अनंत चिरागा। शब्द अतीत अजब रंग बागा।। ३।।
सात समुंद्र जाकै अंजन नैंना। शब्द अतीत अजब रंग बैंना।। ४।।
अनंत कोटि जाकै बाजे बाजैं। पूरन ब्रह्म अमरपुर छाजैं।। ५।।
तीस कोटि रामा औतारी। सीता संग रहंती नारी।। ६।।
तीनि पदम जाकै भगवाना। सप्त लील कन्हवा संग जान्या।। ७।।
तीस कोटि सीता सी चेरी। सप्त लील राधा दे फेरी।। ८।।
जाकै अर्ध रूम पर सकल पसारा। ऐसा पूरन ब्रह्म हमारा।। ६।।
दास गरीब कहै नर लोई। योह पद चीन्हैं बिरला कोई।। १०।। ८।।

अथ राग दीप

मेरे लागी चोट शब्द की नीकी, मेरे लागी।। टेक।।
ज्ञान तुरंगम चढ़े बिहंगम, कुशल भई तन जीकी।।
काजी पंडित पिण्ड न खोज्या, स्याही बहु बिधि लीकी।। २।।
गीता पढ़ै गात नहीं खोजै, साखि शब्द बहु सीखी।
करै अचार विचार न जानै, माटी मसतगि टीकी।। ४।।
जड़ की सेवा भूले देवा, मन मूरति नहीं दीखी।।
दास गरीब जगत है भांडी, नाम बिना सब फीकी।। ६।। १।।
मेरे लागी चोट शब्द की अदली, मेरे लागी।। टेक।।
सतगुरु मिले महल के भेदी, काया खोजी कुदली।।
दुरमति दूर करी दरवानी, कुमति सुमति से बदली।। २।।
मानसरोवर हंसा खेलैं, क्षीर समुंद्र दुधली।।
गगन मंडल में गैबी मेला, बाजै अनहद मंदली।। ४।।
पारब्रह्म कूँ सेवो साधू, अमर करैगा गदली।।
सार शब्द कूँ चीन्हैं नांहीं, याह दुनियां है अंधली।। ६।।
तजि पाखंड दंड नहीं ब्यापै, त्रिगुण सेवा दुंदली।।
दास गरीब दरश दरवानी, त्रिकुटी संपट संदली।। ८।। २।।
मेरे लागी चोट शब्द की गहरी, मेरे लागी।। टेक।।
पांच तत्व तीनूं गुण बिसरे, काया शुन्य भई बहरी।।
हरदम जाप सुहंगम सेवा, ध्यान लग्या अठ पहरी।। २।।
और कोई तेरा मरम न जानैं, सतगुरु सेती कहरी।।
गगन गुफा में छुटैं फुहारे, सतगुरु बूठें लहरी।। ४।।
मैं तो तेरे तन का पाजी, और चाकर सब सहरी।।
दास गरीब अगमपुर डेरा, सुरति निरति दो महरी।। ६।। ३।।
कित कूँ तेरा कूंच मुकामा, कित कूँ है।। टेक।।
सहंस लखी जब भया करोरी, जोर्‍या बहुत खजानां।।
क्या ले आया क्या ले जायगा, बहुत किया है सामां।। २।।
अनंत उजारे अनंत बसाये, कौन तुम्हारा गामां।।
अन्न धन तोकूँ बहुत दिया है, गोसत खांहि गुलामां।। ४।।
सब घट पूरन ब्रह्म बिनानी, सब घट आत्मरामां।।
कहैं दास गरीब सत्तलोक चलो रे, समझै नहीं अलामां।। ६।। ४।।
भजि ले रे मन राम सनेही, भजि ले रे।। टेक।।
पिंड ब्रह्मण्ड से न्यारा है रे, समरथ पुरुष बिदेही।।
रतन सिंध रतनो की खानी, अविगत मूरति येही।। २।।
कलाली की हाटि पियाला, शीश काटि क्यों न देही।।

अमी महारस साधू छाके, यौह जग चाटै रेही।। ४।।
गगन मंडल में छुटैं फुहारे, अष्ट कँवल दल भेई।।
अजपा जाप नाम धुनि लावो, सुरति निरति पद सेई।। ६ ।।
सुखसागर रतनागर पाया, मिट गये सकल संदेही।।
दामनि कोटि खिमैं घनहर में, बरषत है जल मेही।। ८।।
गरीबदास परलोक पाठये, भौ सागर से खेई।। ९।। ५।।
मन मिरगा खेत चरै रे, मन मिरगा।। टेक।।
जाके संग पांच मिरगानी, ताके नालि फिरै रे।।
तीनि छिकारे टरै न टारे, खेत उद्यानि करै रे।। २।।
पच्चीस बखटुवा संग बिराजैं, देखत अकलि हरै रे।।
तीर तुपक तरवार चलावैं, जासें नांहीं डरै रे।। ४।।
जब लग मिरगा मरता नांहीं, कारज नाहीं सरै रे।।
भसम रमाय तजे गिरह द्वारा, नौऊँ खंड फिरैं रे।। ६ ।।
सुरनर मुनिजन ज्ञानी रोवैं, है कोई मन पकरै रे।।
करि प्रणाम धाम उस पौंहचे, रेचक कुंभ भरै रे।। ८।।
ध्यान धनुष से मिरगा मार्‍या, भौजल अत्र तिरै रे।।
पांच पच्चीसौं बिडरि जात है, जो पद में ध्यान धरै रे।। १०।।
गरीबदास सुखसागर पहुंचे, बहुरि न गर्भ परै रे।। ११।। ६ ।।
सुनियत है शब्द सिंध झनकारा, सुनियत है।। टेक।।
बिनहीं दरिया दादुर बोलैं, अर्शी भँवर गुंजारा।।
गीता और भागौत इसी में, सौ कोटि रामायण सारा।। २।।
आदि न अंत पंथ बिन पैडी, दर्शन बानी बारा।।
ध्रू प्रहलाद और नाम कबीरा, थे इस ही संसारा।। ४।।
अकल अदेश चले सुखसागर, उतरि गये भौपारा।।
बिनहीं पंथ संत चालत है, दरिया बिना नवारा।। ६ ।।
मानसरोवर मुकताहल है, बिन जल फूल हजारा।।
अठसठि तीरथ का फल है रे, चरण कमल संत धारा।। ८।।
संख भान शशि चंद उगानें, ऐसा देश हमारा।।
दास गरीब गलतान महल में, दिल अंदर दीदारा।। १०।। ७।।

अथ राग कल्याण

घट में चंद चकोरा साधो भाई, घट में चंद चकोरा।। टेक।।
दामनि दरवै घनहर गाजै, बोलै दादुर मोरा।।
सतगुरु गसती गसत फिरावै, फिरता ज्ञान ढंढोरा।। २।।
अदली राज अदल बादशाही, पांच पच्चीसौं चोरा।।

चीन्हौं शब्द सिंध घर कीजो, होना गारत गोरा।। ४।।
त्रिकुटी महल में आसन मारो, जहां चले न जम का जोरा।।
दास गरीब भक्ति सत कीजो, हुवा जात है भोरा।। ६।। १।।
घट में दरश जहूरा साधो भाई, घट में दरश जहूरा।। टेक।।
कायर कीर उलटि कर भागै, पौंहचेंगे कोई शूरा।।
गगन मंडल में अनहद बाजैं, झनकै झीनें तूरा।। २।।
त्रिकुटी महल में ध्यान समोया, झिलमिल झिलमिल नूरा।।
अगर दीप में आसन मारो, मिट गई जम की घूरा।। ४।।
संख पदम जहां प्रगट देखे, मुरशद मिलिया पूरा।।
दास गरीब अटल जागीरा, काटैं कौन कसूरा।। ६।। २।।
दिल दरवेश कोई है जग में, दिल दरवेश कोई है।। टेक।।
मगज मनी कूँ पीसि बहावै, दूरि कर दोष दूई है।।
खंथा सीमैं सत पद नीमैं, सोहं सुरति सूई है।। २।।
रस कुस मांखन संतौं खाया, पीवै जगत छूई है।
अब तो चढ़े नाम के छाजै, होंनी होय स हूई है।। ४।।
मूल कँवल दृढ़ कर बांधौ, उलटी पवन गूई है।।
दास गरीब अगम पुर डेरा, चेतो अंध लूई है।। ६।। ३।।
धन्य ते अविगत रंग रंगे हैं, धन्य ते अविगत रंग रंगे हैं।। टेक।।
जे सूते ते जनम बिगूते, जागे सोई जगे हैं।।
सूरे तेई नगरी पहुंचे, कायर उलटि भगे हैं।। २।।
नौमें द्वारे दरश दरीबा, दशमें ध्यान लगे हैं।।
शुन्य शहर में हुई सगाई, हमरे हंस मंगे हैं।। ४।।
निर्गुन नाम निरालंब चीन्हौं, हमरे साधु सगे हैं।।
बिन मुख बानी सतगुरु गावैं, नाहीं दस्त पगे हैं।। ६।।
दास गरीब अमर पुर डेरे, सत के दाग दगे हैं।। ७।। ४।।
कबू न होवै मैला रामधन, कबू न होवै मैला।।
चेतन होय कर जड़ कूँ पूजैं, मूरख मूढ रबैला।। टेक।।
जिस दगरे पंडित उठि चाले, पीछे पड़ि गया गैला।।
औघट घाटी पंथ बिकट है, जहां हमारी सैला।। २।।
बिना बंदगी म्हैंसा कीजे, बोक बनै कै खैला।।
कूकर शूकर खर कीजेगा, छाडि सकल बद फैला।। ४।।
घर ही कोश पचास परत हैं, ज्यों तेली का बैला।।
पोसत भांग तमाखू पीवैं, मूरख मुख से नै ला।। ६।।
सहंस इकीसौं छै सौ दम है, निश वासर तूं लै ला।
गरीबदास सुनि पार उतरि गये, अनहद नाद घुरैला।। ८।। ५।।

मीठा है अविनाशी राम रस, मीठा है अविनाशी।।
जो पीवै परलोक जात हैं, पावै परम निवासी।। टेक।।
गीध ब्याधि भौसागर तरि गये, छूटि गई चौरासी।।
मन मथुरा दिल द्वारा नगरी, खोजो काया काशी।। २।।
दिव्य दृष्टि जहां ध्यान धरत हैं, दरशै फूल अकाशी।।
रतन अमोली सुख का सागर, सोहं शब्द निवासी।। ४।।
नभ का पवन गगन चढ़ि गरजै, अनहदपुर का बासी।।
बिरह बियोगी हरदम पीवैं, आत्म प्रेम पियासी।। ६।।
कोटि कला झिलमिल उजियारा, ऊठ तिमर सब जासी।।
सेत सुभाना ज्ञान गमि नांहीं, दशौं दिशा फिर आसी।। ८।।
कोटि कला पर संख कला है, जहां सूरज चंद उगासी।।
गरीबदास घट ही में खोजो, बाहर भरम भुलासी।। १०।। ६।।
आत्मराम बिनानी हमरे, आत्मराम बिनानी।।
जो जांनै सोई पहचानैं, गावै अनहद बानी।। टेक।।
अंधे गूंगे बहरे लोई, पूजैं पत्थर पानी।।
पाती तोरि चढ़ावैं मूरख, भुगतैं चार्‌यौं खानी।। २।।
बिना बंदगी पार न उतरै, कोटि जगि करि दानी।।
बलि राजा पताल पठाये, कहां गई सुरग बिमानी।। ४।।
ध्रू कूँ नाम निरंजन गाया, कीन्हा राम दिवानी।।
सप्तपुरी पर आसन जाका, सेत धजा फररानी।। ६।।
प्रहलाद राम कूँ निश दिन गावै, गिरवर से ढरकानी।।
अगनि जराया जरता नांहीं, ऐसी अद्‌भुत बानी।। ८।।
नरसिंह रूप धरे नारायण, पारब्रह्म प्रवानी।।
तीनि लोक में गाज तास की, हाजरि है दिलदांनी।। १०।।
कोट्‌यौं किरणि अवर्ण भयानक, कंपे सुरनर ज्ञानी।।
ऐसा रूप कहां से ल्याये, क्या गति कहूँ निशानी।। १२।।
अठारा लाख तुरा जिन छाड्‌या, सोलह सहंस पटरानी।।
बलख बिलायत त्यागि गये हैं, देख अधम सुलतानी।। १४।।
पीर कबीर मिले हैं मालिक, खालिक पर कुरबानी।।
गरीबदास वै ऐसे साहिब, सुनो शब्द सहदानी।। १६।। १७।।
राम हमारे आये राजा, राम हमारे आये।
तारिंग मंत्र छूछिम छाके, अनहद नाद बजाये।। टेम।।
घट मठ महतत्त सेती न्यारा, गगन मंडल मठ छ्याये।।
मात पिता कुल बंधु न कोई, ना कीन्हे जननी जाये।। २।।
तीनि चरण चिंतामणि साहिब, शेष बदन पर छ्याये।।

मुरली अधर मधुर धुनि बाजै, नाचि नाचि पद गाये।। ४।।
सेत छत्र सिर मुकट बिराजै, पीतंबर पहराये।।
कमल नैन कमलापति स्वामी, त्रिकुटी छाजे पाये।। ६।।
गलि बैजंती माला जाकै, शीश मुकट राम राये।।
घूंघर वाले केश बिराजै, कानों कुंडल माये।। ८।।
सुरति बिहंगम चलैं बिनानी, असतल नहीं बंधाये।।
ठाकुर के नहीं ठौर ठिकाना, ठहरे जहां ठहराये।। १०।।
कोटि ज्ञान से भिंनि पसारा, सतगुरु कूँ दरशाये।।
गरीबदास याह अकथ कथा है, पढ़ि पढ़ि धक्के खाये।। १२।। ८।।
शेष सहंस मुख गावै संतो, शेष सहंस मुख गावै।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर थाके, नारद नाद बजावै।। टेक।।
सनक सनंदन ध्यान धरत है, दृष्टि मुष्टि नहीं आवै।।
लघु दीरघ कछु कह्या न जाई, जो पावै सो पावै।। २।।
अठोतर पिंड गये है परलौ, शिव की नारि कहावै।।
जी जूंनी कूँ कैसे दरसैं, गौरिज शीश चढ़ावै।। ४।।
नारद मुनि उपदेशी मिलिया, गौरिज के मन भावै।।
शिव कूँ तारिंग मंत्र दीन्हा, गौरिज तत सुनावै।। ६।।
ब्रह्मरंध्र का घाट जहां है, उलटि खेचरी लावै।।
सहंस कँवल दल झिलमिल रंगा, चाोखा फूल चवावै।। ८।।
गंगा जमना मधि सुरसती, चरण कमल से आवै।।
परबी कोटि परम पद माहीं, सुख के सागर न्हावै।। १०।।
सुरति निरति मन पवन पदारथ, चारूयौं तत्त मिलावै।।
अकाशें उड़ चलै बिहंगम, गगन मंडल कूँ धावै।। १२।।
मोर मुकट पीतंबर राजे, कोटि कला छबि छावै।।
वर्ण अवर्ण तास के नांहीं, बिचरत है निरदावै।। १४।।
बिनहीं चरणौं चले चिदानंद, बिन मुख बैंन सुनावै।।
गरीबदास याह अकथ कहानी, ज्यों गूंगा गुड़ खावै।। १६।। ९।।
नाम निरंजन नीका संतो, नाम निरंजन नीका।।
तीरथ बरत थोथरे लागैं, जप तप संजम फीका।। टेक।।
भजन बंदगी पार उतारै, समरथ जीवन जी का।।
कर्म कांड व्यौहार करत है, नाम अभै पद टीका।। २।।
कहा भया छत्र की छांह, चलाया राज पाट धेली का।।
नाम सहत बे उतन भला है, दरि दरि मांगैं भीखा।। ४।।
आदि अनादि भक्ति है नौधा, सुनो हमारी सीखा।।
गरीबदास सतगुरु के शरणैं, गगन मंडल में दीखा।। ६।। १०।।

नाम अभै पद ऊँचा संतो, नाम अभै पद ऊँचा।।
खोल्हि कपाट घाट घट मांहीं, बंध करो नौ कूंचा।। टेक।।
तजि पाखंड नाम से लागै, सोई जगत में सूचा।।
राम दुहाई साच कहत हूँ, यौं सतगुरु से पूछा।। २।।
राज करंते राजा बूडे, हो गये सुनहा बूचा।।
जनम तीसरे नरक पड़त हैं, फिटि रे डाढी मूछा।। ४।।
आन रांन से सिद्धि न होई, शिला किया कै हूँछा।।
हीरे लाल जवाहर बरपैं, **गरीबदास** पल रूचा।। ६।। ११।।
निरमल नाम सरंगा संतो, निरमल नाम सुरंगा।।
घट मठ महतत सेती न्यारा, अविचल रूप बिहंगा।। टेक।।
अनहद नाद अनंत धुनि उपजैं, कबहूं न होत अभंगा।।
पांच लड़ी छटे से गूथैं, मन का बांधि मुतंगा।। २।।
शुन्य बे शुन्य से ऊँचा है रे, मेटो सकल तरंगा।।
समझि बूझि तन खोजि पियारे, ज्ञान ध्यान प्रसंगा।। ४।।
कुल मरजाद काल का फंधन, करो साध सत्संगा।।
संख कलप उतरत नहीं संतो, चढ़ै मजीठी रंगा।। ६।।
चरण कमल का ध्यान धरो रे, जहां जटा कुंडली गंगा।।
त्रिवैनी के घाट न्हान है, नित प्रछालो अंगा।। ८।।
त्रिलोकी में कोई न पकरै, जे मन होवै चंगा।।
शील संतोष दया दिल मांहीं, जीतें जम के जंगा।। १०।।
जैसे ध्यान कमोदनि धरि है, ऊठैं बिरह उमंगा।
गरीबदास सो अविचल कहिये, पकरै विषे भवंगा।। १२।। १२।।

अथ राग कान्हड़ा

जीव जोति उत्पति भनीजै। जो जनम्यां सो जीव कहीजै।। टेक।।
इत उत पंगति परम पियारा। सब घट अंदरि शब्द अधारा।। १।।
बस्तु अलफ घट बीच समाई। क्या अंधे कूँ खोज बताई।। २।।
माटी के घट अजब गियाना। क्या पढ़ि भूले वेद कुरांना।। ३।।
कहो कहां मूल कहो कहां शाखा। को मंदर जहां पूजन जाता।। ४।।
अधर दुलीचा तकिया तेजं। नूर महल जहां झिलमिल सेजं।। ५।।
जहां निरति निरंतर सेवा सारं। अनहद शब्द उठें झनकारं।। ६।।
सिर साटे का खेल कहीजै। दास गरीब पेखि पद लीजै।। ७।। १।।
जीवन पीवन पीव हमारे। उत्पति परलौं से निसतारे।। टेक।।
जाकै धूंमी धारन झोली झरना। पीक फाहुड़ी जोगी जरनां।। १।।
जाकै धीरज खंथा धुर पद धागा। जोगी अजरावर निज बागा।।

२।। जाकै खप्पर खीर निज मुद्रा मोषं। गैबी गायत्री निज गोपं।। ३।। जाकै चीपी चित्त मनोरथ मेला। सींगी सार सुरति पद खेला।। ४।। जाकै निश वासर नाद मढ़ी बिन बाजा। अमरापुर की अजब अवाजा।। ५।। जाकै कंकन केश भभूति न गोला। मढ़ीयन मुद्रा रहै अकेला।। ६।। जाकै कोटि कला मुख नूर निशानी। ऐसा अविगत अलख बिनानी।। ७।।
खोल्हि कपाट मगज दर ताला।
पीया गरीब अमीरस प्याला।। ८।। २।।

तूं ही तूं कर्तार बिनानी। अकथ कथा कछु भेद न जानी।। टेक।।

निरालंब निश्चल अनरागी। शब्द अतीत पेखि बड़भागी।। १।।
सुरति निरति से मूल मिलावा।
मन पवना असथरि कर ध्यावा।। २।।
नाभ कँवल निरदुंद समाधी। बांस मनोरथ चढ़ि रे बादी।। ३।।
हिरदे जाप अगोचर पाया। सोलह कला पौहप में छ्याया।। ४।।
जाकै बारा बानी रूप न रेखा। याह सहनानी हंसा देख्या।। ५।।
त्रिकुटी ताल पखावज पूरं। अनहद नाद कला निज नूरं।। ६।।
शुन्य मंडल सतलोक बसेरा। दास गरीब अगमपुर डेरा।। ७।। ६।।

तूं हीं तूं रब्ब राजिक मेरा। शब्द अतीत नाद धुनि हेरा।। टेक।।

गुनहगार गुरुदेव तुम्हारा। खाने जाद खरीद पियारा।। १।।
हुकमी आया हुकम पठाया। बांदी जाम कीया मनि भाया।। २।।
पूत पिता से बेमुख होई। तो भी पिता जानि मल धोई।। ३।।
हरदम हैफ किये अघ भारी। मादर पिदर मैं शरण तुम्हारी।। ४।।
तैं कोट्यौं पावन पतित उधारे। छिन मात्र जिनके अघ जारे।। ५।।
हमसे अनगिन जीव अनाथा। लख चौरासी आवत जाता।। ६।।
मिहरबान मालिक बहुरंगी। दास गरीब सदा सतसंगी।। ७।। ४।।

तूं हीं तूं तन तेज अपारा। दरवै नूर गगन गुलजारा।। टेक।।

जुगिया एक अर्श में गावै। बिरह बिहंगम राग सुनावै।। १।।
दस प्रकार अनाहद बाजैं। नजरि निहाल अमरपुर छाजैं।। २।।
निरमोही निहतंती अर्शं। झलकैं पदम अनूपम दरसं।। ३।।
बाहर भीतरि बिरहा बासी। लगै उनमनी ध्यान उदासी।। ४।।
मूरति एक अचल पद नीका। जप तप संजम सब का टीका।। ५।।
जहां नेम धर्म पुण्य पाप न कहिये। ऐसा देश विज्ञाना लहिये।। ६।।
बिन पग पंथ पियाना पेख्या।
दास गरीब शब्द मिल देख्या।। ७।। ५।।

तूं हीं तूं दिल अंदरि माली। शुन्य सरोवर निश्चल ताली।। टेक।।

द्वादश घाट चलै बिन मरुवा। औह जल ऐचै सो नर गरुवा।। १।।
डोल न डोरि ब्रह्मगति ऊँची। सोलह संखी रामति सूची।। २।।
बाड़ी बाग केतगी मौरा। जहां गुंजारैं उजल भौंरा।। ३।।
जहां धूमार सार सुर साधू। जा सुनि भागे बाद बिबादू।। ४।।
रूंम रूंम मे रमता रामं। स्वामी सेवक संग विश्रामं।। ५।।
बारा मास बिलावल बीना। ऐसा धाम अमरपुर चीन्हा।। ६।।
जहां बूठैं स्वांति सीप अन सायर।
दास गरीब लखै नहीं कायर।। ७।। ६।।
तूं हीं तू कर्तार हमारे। कर्म भ्रम अघ सब ही जारे।। टेक।।
निरालंब निरगुण निरमोही। आदि अंत जाके ना कोई।। १।।
वार न पार मध्य न मूलं। काया छाया ना अस्थूलं।। २।।
गगन मंडल में चंपा दरवै। राग बिहाग शब्द सुनि बरवै।। ३।।
दामनि खिमैं झिलमिलै जोती। मानसरोवर मुकता मोती।। ४।।
गैबी तख्त झिलमिलैं झांही। आदि अंत कोई पावै नांहीं।। ५।।
अगम दीप अमरापुर बासा। अदली आप कबीर खवासा।। ६।।
छत्र सेत सुहंगम चौंरा। दास गरीब बिलंबे भौंरा।। ७।। ७।।

अथ राग किदारा

रतन अमोलिक लाल पाया, रतन अमोलिक लाल।
जिनि ये पिण्ड रु प्राण सिरजे, है सो दीन दयाल।। टेक।।
अमर भूमि अनादि आदं, शुन्य सरवर ताल।
हंस मोती चुगन लागे, फूले फूल विशाल।। १।।
अमीरस के हौद हाजरि, खोजि ले बंकनालि।
त्रिकुटी कोटि अनंत धुनि सुनि, सुरति निरति संभालि।। २।।
अधरि वास निवास निश्चल, बिना चरणौं चाल।
उजल भँवर गुंजार करहीं, मंड्या अनहद ख्याल।। ३।।
अगर बान निशांन फरकैं, कंपे जौंरा काल।
मनसा नाथ मनोरथ पुरवन, धनी नजरि निहाल।। ४।।
कोटि सिद्धि जुहार करहीं, सतपुरुष अबदाल।
गरीबदास निवास पाया, कटे जम के जाल।। ५।। १।।
झिलमिल रंग अपार सांई, झिलमिल रंग अपार।
रकत पीत न सेत सूहा, खूब है दिलदार।। टेक।।
निरमला निरबंध निरगुन, ना कछु लगार।
तत्त रूप सरूप सुन्दर, देखि ले दीदार।। १।।
श्याम सुन्दर देख अंदरि, भूर भद्र न्यार।

स्याह तिलि में है सपेदा, करो खोज बिचार।। २।।
दामनी बहु दमक हीरा, गरज सिंध अपार।
बिना मुख ही बैंन गावैं, सुनत है झनकार।। ३।।
बिना श्रवण नाद सुनिये, संख झालरि सार।
खड़े संत सुजान गावैं, धनी के दरबार।। ४।।
सुखन मानि दिवान चलना, जीति भावै हारि।
गरीबदास न जाति पात, नहीं कुल परिवार।। ५।। २।।
निरमला निरबंध साहिब, निरमला निरबंध।
अमर आसन सत सिंघासन, है धनी निरदुंद।। टेक।।
मुकट मालिक धनी खालिक, अकल पद आनंद।
संख दामनि तेज मंदा, कोटि सूरज चंद।। १।।
खालिक बिना खाली नहीं है, सकल सूभर सिंध।
देखिले दीदार दर्शन, कटें जम के फंध।। २।।
नजरि जोरि करोरि कारन, फनां है सब धुंध।
अमर कछ अभूमि मांहीं, पके निरमल कंद।। ३।।
अगमी झरोखे नजरि जोड़ै, ताहि पाजी इंद।
राजा रीति अतीत कूँ क्या, लख्या तखत बिलंद।। ४।।
गगन मंडल महल मालिक, जहां नाद न बिंद।
गरीबदास निवास पाया, मिले साहिब जिंद।। ५।। ३।।
छूछिम रूप अनादि आदं, छूछिम रूप अनादि।
तांहि ब्रह्मा विष्णु ध्यावै, शिव समूल समाधि।। टेक।।
कच्छ मच्छ कूरंभ कारन, शेष नाम अराधि।
गौरिज और गणेश गावैं, संत साहिब साध।। १।।
सुरति निरति परखते हैं, अकल रूप अगाध।
निरालंब निवास निहचल, छूटैं बाद बिबाद।। २।।
सकल दांना देव मुनियर, पावते जहां दादि।
गरीबदास अजन्म जोगी, सुरति निरति लाधि।। ३।। ४।।
झिलमिला झमकंत साहिब, झिलमिला झमकंत।
द्वार बार न देहरा रे, नहीं पैंडा पंथ।। टेक।।
जिनि गर्भवास में प्रतिपाल कीन्ही, सुमरि समरथ कंत।
माई न दाई जहां है रे, जो दूध दे बिन दंत।। १।।
जठरा अग्नि से राखि लीन्हा, जहां पीड़ अनंत।
च्यार वेद उचार करहीं, रटै साधू संत।। २।।
पारसनाथ प्राण के संग, बूझि सतगुरु मंत।
गरीबदास जुहार जाकूँ, जहां आदि न अंत।। ३।। ५।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

झिलमिल हैं लोय निरगुन, झिलमिल हैं लोय।
अकला अभूमी अर्श में है, जहां ध्यान समोय।। टेक।।
सुषमना दरि सुरति लावो, इला पिंगला दोय।
ब्रह्मरंध्र के घाट जाना, जहां धोबटि धोय।। १।।
सुरति निरति मन पवन पंखी, शब्द में रखि गोय।
नाद अनहद सुनत हंसा, ब्रह्मवारी बोय।। २।।
ब्रह्म अग्नि जराय कुसमल, ऊगमें नहीं सोय।
गरीबदासं प्राण परचै, मिलै पारस लोह।। ३।। ६।।

अथ राग हेली

बिना पंथ की बाट हेली, सुख सागर में चालना।
करि सतगुरु से साटि हेली, जहां जम जौंरा काल ना।। टेक।।
मानसरोवर हंस हैं री हेली, मुकताहल चुनि खांहि।
सुख सागर में बसि रहे, बहुरि न आवैं जांहि।। १।।
तेज पुंज जहां झिलमिलैं, दामनी संख उजास।
चंद सूर की गमि नहीं, पवन प्रकाश।। २।।
सुरति निरति दो हंसनी, करि हंसन से मेल।
बिना पंख उड़ जात है, ऐसा अचरज खेल।। ३।।
ऊँ सोहं पंख ले, प्राण पुरुष उड़ जात।
अजर अमर जहां हंस हैं, अजब नवेला साथ।। ४।।
ब्रह्मा विष्णु महेश हैं, शेष रटत हैं ताहि।
अविगत दूलह कंत हैं, जननी जन्या न माय।। ५।।
कूंजि कलश जहां बहु धरे, पूजा अरपन होय।
आदि अनादं बंदगी, जानैं बिरला कोय।। ६।।
कमल नैंन कर्तार है, छत्र मुकट सिर सेत।
गरीबदास परब्रह्म पद, बिन ही मांग्या देत।। ७।। १।।
कहो कैसे कर जाईये, गगनि मंडल में धाम हेली।
सुरति निरति से पाईये, अविगत नगरी गाम हेली।। टेक।।
अधरि बिहंगम चाल है, गगन मंडल के बीचि।
ज्ञान ध्यान खूंटी गड़ी, अमृत परिमल सींचि।। १।।
आगे हरहट बाग है, अजब रंगीले फूल।
परे हिंदोले प्रेम के, जा चढ़ि हंसा झूल।। २।।
अधरि बाग हरहट चलें, छुटे फुहारे शून्य।
बेगमपुर में बास है, जहां पाप नहीं पुण्य।। ३।।
दादुर मोर चकोर हैं, कोइल कुंजी बैंन।

भौंरा सेत गुंजार हीं, जहां हंस सुख चैंन।। ४।।
अधरि विमान अमान है, कोटि चरण मुख गंग।
सो परबी क्यों न न्हाईये, सत सुकृत ले संग।। ५।।
दर दिवाल पद मसत है, होत शब्द झनकार।
छप्पन भोग संजोग हैं, संख पदम उजियार।। ६।।
बेदाना फल झुकि रहे, हंसा करैं अहार।
गरीबदास उस देश में, नित ही जगि जौंनार।। ७।। २।।
सुरति निरति पद लाईये, जैसे चंद चकोर हेली।
बहुरि न भवजल आईये, सुनि अनहद घनघोर हेली।। टेक।।
गगन मंडल में मठ रच्या, पैड़ी पंथ न कोय।
चढ़ै सही गिरि गिरि परैं, शीश कूटि रहे रोय।। १।।
संख असंखौं कोश है, अविगत पुरुष नरेश।
मैं अपंग कैसे चलौं, थाके ब्रह्म महेश।। २।।
चिंत्यामनि की चांदनी, पग थिलसत है मोर।
रपटि परौं हरि हरि करौं, फिर पकरौं बाहू डोर।। ३।।
शुन्य सलहली सैल है, अलल पंख धुनि ध्यान।
बिन सतगुरु नहीं पाईये, कोटि कथो भावैं ज्ञान।। ४।।
ड्यौढी परदा है नहीं, अलग अमान अलेख।
अजर नजरि आवैं नहीं, कोटि धरो भावै भेष।। ५।।
उड़गन आनंद रूप है, संख कला प्रवीन।
जाका खोज न पाईये, ज्यों दरिया मध्य मीन।। ६।।
बारा बानी ब्रह्म है, सोलह कला अमोघ।
गरीबदास पावै नहीं, कोटि करो भावै जोग।। ७।। ३।।
दिल अंदरि दरिया हेली, हरदम परवी न्हाईये।
तीरथ जाय बलाय हेली, अमी महारस पाईये।। टेक।।
तीरथ कोटि अनंत हैं, गंगा जमना दोय।
मध्य सुरसती बहत है, नहाईये निरमल होय।। १।।
ब्रह्मरंध्र का घाट है, आगै शिव का लिंग।
जहां प्रदछना दीजिये, बहै सहंस मुख गंग।। २।।
जहां कलाली हाटि है, चोखा फूल चवंत।
बिन सतगुरु नहीं पाईये, कोई साधू जन पीवतं।। ३।।
शीश काटि धरनी धरै, ऊपरि मेलै पांव।
कालंद्री के घाटि चढ़ि, ऐसे परबी न्हाव।। ४।।
तुंहीं तुंजीं तुतकार है, ररंकार धुनि ध्यान।
ॐ सोहं मूल है, यों नित परबी न्हान।। ५।।

ऋग यजु साम अथर्वण, पढ़ि चहूँ वेद का ज्ञान।
जिन की गति कैसे भई, बांधे गांठि पखान।। ६।।
चहूँ वेद का पिता है, सुषम वेद संगीत।
गरीबदास के मुकट में, अविगत ब्रह्म अतीत।। ७।। ४।।
हूँठ हाथ गढ़ लीजिये, टूटैं कौन विचार हेली।
सतगुरु कूँ सिर दीजिये, चरण कमल दीदार हेली।। टेक।।
मन राजा का राज है, गढ़ में च्यार उमीर।
चौसठि जोगनि गांव हीं, नांचैं बांवन बीर।। १।।
काम क्रोध मद लोभ हैं, मोह बली तपदार।
ये चार्यौं मसलति करैं, और संग पांचौं नार।। २।।
जाके पुत्र पच्चीस हैं, न्यारी न्यारी भांति।
नित उठि मांगैं खांन कूँ, त्रिलोकी नहीं स्वांति।। ३।।
द्वादश कोटि कटक चढ़ैं, लालच फिरै नकीब।
जिन यौह मन पकर्या नहीं, फूटे ताहि नशीब।। ४।।
आशा तृष्णा तास कै, दो दूती दरबार।
हर्ष शोग हाजरि खड़े, नित उठि करै जुहार।। ५।।
मनसा माया संग है, डायनि डाकन नीच।
बूडे काली धार में, मची कर्म की कीच।। ६।।
राजा प्रजा बह गये, सुरनर मुनिजन देव।
लख चौरासी में परे, ब्यास पुत्र शुकदेव।। ७।।
जे शिव से सतगुरु मिलैं, पारि उतारैं संत।
कर्म न यारी देत हैं, भसमागिर भसमंत।। ८।।
रावण कूँ सतगुरु मिले, महादेव शिव ईश।
गरीबदास लंकेसरी, आनि कटावै शीश।। ९।। ५।।
कैसे उतरौं पार हेली, भौसागर में भै घना।
जनम जूवा गये हार हेली, पूंजी खोई रे मना।। टेक।।
बांस बली लागै नहीं, डोलै मोर जिहाज।
बरदबांन बांका भया, बिगरे सब ही काज।। १।।
भँवर परे कैसे तिरैं, लख चौरासी धार।
गहरा पाट समंद का, दोजिख भिसति किनार।। २।।
कोटि बहत्तनि उर्वशी, धर्मराय की धीव।
रस कुस हंसा देत हैं, जम किंकर ले जीव।। ३।।
भवजल परे सो बूडि हैं, चंद सूर की आव।
फिर पूंजी कहां पाईये, पाटि गई जदि नाव।। ४।।
कंस केश चानौर थे, बालि सहस्राबाह।

दुर्योधन रावण बली, जिनौं न पाई थाह।। ५।।
राजा बूडे सो कहूँ, दुनियां की क्या बात।
त्रिलोकी सब बह गई, कछु न लाग्या हाथ।। ६।।
सुरपति का आसन डिग्या, गौतम ऋषि कै आय।
अंग सहंस भग हो गये, चिंत्या मिटी न चाह।। ७।।
जैसी कांटे ओस है, ऐसा यौह संसार।
धूप खिलै पावै नहीं, **गरीबदास** परिवार।। ८।। ६।।
मन पंछी प्रपंचिया, हाथ न आवै मोहि हेली।
खाता मांस रु मछिया, चल्या जनम जग खोइ हेली।। टेक।।
संसा सर्प जू खात है, है तछिक घट मांहि।
त्रिलोकी सब डसि लई, कोई छूट्या नांहि।। १।।
शोग रोग दीरघ बड़े, बहु दुर्जन की भीर।
भागे भागे फिरत हैं, लख बीछू की पीर।। २।।
ज्ञानी ध्यानी लूटिये, मूढ़ गये किस राहि।
जम जौंरा बैठे रहे, सैंना खाये जाय।। ३।।
जा दिन की मोहि कल्पना, कूंच करैगा हंस।
जाता अकल अदेश कूँ, छाडि चल्या कुल वंश।। ४।।
नाम गाम कुछ हैं नहीं, भ्रम भुलानें लोय।
ज्यों तरुवर पंखी बस्या, बहुरि न आया कोय।। ५।।
मात पिता सुत बंधुवा, नारि पुरुष का नाश।
जैसे धूंमरि मेह है, बूंद परे नहीं बांस।। ६।।
आगै गये न बाहुरे, रहते भी सब जांहि।
बिन साहिब की बंदगी, ठौर ठिकाना नांहि।। ७।।
जैसा मोती ओस का, ऐसी तेरी आव।
गरीबदास कर बंदगी, बहुरि न ऐसा दाव।। ८।। ७।।
बिकट पंथ बैराठ हेली, बिन पग पंथ पियान हैं।
बिना पंथ की बाट हेली, जहां गगन मंडल अस्थान हैं।। टेक।।
नौ छावरि का महल है, पांच पचीसौं संग।
तीनि गुनन के घाट में, प्रछारत हैं अंग।। १।।
कर्म भ्रम का गिरह रच्या, जागरत सुपन अंदेश।
शुन्य सुसोपति में गये, नहीं पाया ब्रह्म विदेश।। २।।
नगर नायका बहुत हैं, सखी सुहेली ऐंन।
काम कंदला खड़ी हैं, निश वासर नहीं चैंन।। ३।।
शहर सवाया मुसि लिया, लूटे चोर कठोर।
प्राण पुरुष क्यों मारिये, कर्म करै मन मोर।। ४।।

मन माया खेलत फिरै, इच्छा असतल बंध।
लूटि पीटि कर उठि चलैं, समझत नाहीं अंध।। ५।।
देह गिरह तेरा नहीं, दिन दस बन्या मुकाम।
कूंच नगारा बाजसी, छाडि चल्या सब धाम।। ६।।
उदै अस्त का राज ले, चक्रवर्ती होय जांहि।
जिन की खैर न खबरि है, शीश कूटि पछतांहि।। ७।।
बिना धनी की बंदगी, सुख नहीं तीन्यौं लोक।
चरण कमल के ध्यान से, **गरीबदास** संतोष।। ८।। ८।।

अथ राग परज

राम न जान्या रे मूढ नर, राम न जान्या रे।। टेक।।
जल की बूंद महल रच्या, यौह सकल जिहाना रे।
जठर अग्नि से राखिया, तेरा पिण्ड रु प्राणा रे।। १।।
जहां तोकूँ भोजन दिया, अमृत रस खाना रे।
गर्भ वास से काढि कर, नर बाहिर आन्या रे।। २।।
लीला अगम अगाध है, सूरति बिधि नाना रे।
मात पिता सुत बंधुवा, क्या देख भुलाना रे।। ३।।
इन में तेरा को नहीं, क्यों भया दिवाना रे।
जा तन चंदन लेपते, ले धरे मशाना रे।। ४।।
सूवै सिंभल सेईया, तरु देख लुभाना रे।
चोंच मारि व्याकुल भया, बौहते पछिताना रे।। ५।।
मानसरोवर कमल दल, घर दूर पयाना रे।
गये रसातल राह कूँ, पढ़ि पोथी पाना रे।। ६।।
सतगुरु संत सेये नहीं, पूजैं पाखाना रे।
मरकब भये कुम्हार के, फिर शूकर श्वाना रे।। ७।।
पंथ पुरातम बूझि हैं कोई संत सुजाना रे।
श्वासा पारस नाम है, नाभी असथाना रे।। ८।।
हिरदे में हरि पाईये, त्रिकुटी प्रवाना रे।
गगन मंडल में गुमट है, जहां धजा निशाना रे।। ९।।
हाजरि नाजरि है धनी, साहिब दिलदाना रे।
पलकौं चौंरा कीजिये, ता परि कुरबाना रे।। १०।।
मन पवन सुरति से अगम है, कहै निरति बियाना रे।
जैसे अलल अकाश को, धरि है धुंनि ध्याना रे।। ११।।
आसन बंध अडोल मन, जो पदहि समाना रे।
गरीबदास यौं पाईये, पीव पुरुष पुराना रे।। १२।। १।।

लेखा लीजै ने धनी कै, लेखा लीजै रे।। टेक।।
हाटि पटन सब लुटि गये, कहौ इब क्या कीजै रे।
पूंजी मूल गंवाईया, फिर कौन पतीजै रे।। १।।
मैं गाफिल भूल्या फिरौं, गढ़ हंस चढ़ीजै रे।
चाकर चोर अनादि का, सिर बोझा दीजै रे।। २।।
शीश काटि हाजरि करै, जब सतगुरु रीझै रे।
अमी महारस नाम है, अमृत पै पीजै रे।। ३।।
गगन मंडल भाठी झरै, कमला दल भीजै रे।
शब्द अनाहद घोर है, चलि हंस सुनीजै रे।। ४।।
पूंजी शाहूकार की, याह हरदम छीजै रे।
गरीबदास दूने करै, सो शाह कहीजै ने।। ५।। २।।
लेखा देना रे धनी कै, लेखा देना रे।। टेक।।
रागी राग उचारते, गावत मुख बैंना रे।
हस्ती घोड़े पालकी, छाडी सब सैना रे।। १।।
रोकड़ि धरी ढकी रही, सब जेवर गहनां रे।
फूकि दिया मैदान में, कछू लैंन न दैंना रे।। २।।
मुगदर मारैं शीश में, जम किंकर दहना रे।
उतरि चल्या तागीर होय, ज्यों मरदक सहना रे।। ३।।
फूल्या सो कुमलात है, जो चिन्या सो ढहना रे।
चित्रगुप्त लेखा लीया, जहां कागज फहना रे।। ४।।
चलिये आँब दिवान में, सतगुरु सें कहना रे।
मुसकलि से आसान होय, ज्यों बहुरि न मरना रे।। ५।।
बोया अपना सब लुणैं, पकरो मन अहना रे।
चरण कमल के ध्यान से, छूटें सब फैंना रे।। ६।।
परानंदनी संग है, जाकै कामधैंना रे।
गरीबदास फिर आव हीं, जो अजर जरैंना रे।। ७।। ३।।
भजन कर राम दुहाई रे, भजन कर राम दुहाई रे ।। टेक।।
जनम अमोली तुझ दीया, नर देही पाई रे।
देही देवा लोच हीं, सुर नर मुनि भाई रे।। १।।
सनकादिक नारद रटैं, चहूँ वेदां गाई रे।
भक्ति करैं भौजल तिरैं, सतगुरु शरनाई रे।। २।।
मिरगा कठिन कठोर है, कहु कहां डहकाई रे।
कसतूरी है नाभ में, बाहरि भरमाई रे।। ३।।
राजा बूडे मान में, पंडित चितराई रे।
ज्ञान गली में बंक है, तन धूरि मिलाई रे।। ४।।

उस साहिब कूँ यादि कर, जिन सौंज बनाई रे।
देखत ही होय जात है, पर्वत से राई रे।। ५।।
कंचन काया नास होय, तन ठोकि जराई रे।
मूर्ख भौंदू बावरे, क्या मुक्ति कराई रे।। ६।।
चमरा जुलहा तर गये, और छीपा नाई ने।
गनिका चढ़ी विमान में, सुरगापुर जाई रे।। ७।।
शवरी भीलनी जाति की, और सदन कसाई रे।
नीच तरे तोसे कहूँ, नर मूढ इन्याई रे।।
शब्द हमारा साच है, और ऊँट की बाई रे।
धूंमे के सा धौलहर, तिहूँ लोक चलाई रे।। ९।।
कलबिष कुसमल सब कटैं, तन कंचन काई रे।
गरीबदास निज नाम है, नित परबी न्हाई रे।। १०।। ४।।

अथ राग जैजैवंती

ऐसी तेरी जोग माया, कोई नहीं बांच है।। टेक।।
चौदह भुवन धारी, भरमे ब्रह्मा त्रिपुरारी।
शिव सिर थाप लगाई, तोरे ढांच है।। १।।
शिव की नारि नेहा, जिनकी क्यूँ उबरै देहा।
भसमागिर से नांचै, गंड हथ नांच है।। २।।
शिव कूँ कंद्रप जारे, मोहन मोहनी रूप धारे।
महादेव से जोगी, बिंद कहां सांच है।। ३।।
नारद मुनि से ज्ञानी, झीवरी बनाय ठानी।
पूत बहत्तर जाये, चूल्है नहीं आंच है।। ४।।
रावण राम बैरी, जा दिन सीता हरी।
एक रती नहीं पाये, कंचन कांच है।। ५।।
इन्द्र मन मानी, गौतम ऋषि की रानी।
चंद लगी मिरग छारा, पाप की चांच है।। ६।।
सुरपति मदन ठग्या, जाकै सहंसर भगा।
भई अहिल्या शिला, हरदम सांच है।। ७।।
कृष्ण गुरु दुर्वासा, जाकै कलप नहीं आशा।
इन्द्र अखारै ल्याई, बैरनि पांच है।। ८।।
दास गरीब तेरा, सांई उतारै बेरा।
बौहर न देह धरैंगे, काया नहीं काछि है।। ९।। १।।
माई ऐसा साहिब सेवो, पतित उधारना।। टेक।।
बजर की होरी जारी, प्रहलाद लीये हैं उबारी।

आये री आये, खंभ के पारना।। १।।
धन्य धनी अपरमपारे, नरसिंघ रूप धारे।
हिरनाकुस से मारे, उदर विदारना।। २।।
इन्द्र पुकार दौरे, बिसंभरनाथ स्यौं रे।
बलि जगि सौ उपराजि, सुरपति टारना।। ३।।
बावन रूप कीन्हां, बलि जगि दांन दीन्हां।
त्रिलोकी त्रिपैंड, चरन पसारना।। ४।।
बावन रूप सांई, पलकौं बिराज गुसांई।
आदि अरु अंत रहैंगे, बलि के द्वारना।। ५।।
ध्रू की सुनीति माता, जिनकै एक सेर उखाता।
आसन अटल बिराजे, कोई न टारना।। ६।।
दूजा बैकुण्ठ साज्या, निशान तिहूँ लोक बाज्या।
ऐसा समरथ सेया, अधर अधारना।। ७।।
जल में जुध पारे, गज अरु गिराह उबारे।
अरध नाम मुख टेर्‌या, ररा उचारना।। ८।।
भीलनी के बेर पाये, नदी के कलंक बहाये।
बैठ विमान गई रे, गनिका के त्यारना।। ९।।
तेतीस की बंधि तोरी, लंका, जरत जैसे होरी।
रावण महरावण की, भुजा उपारना।। १०।।
बसुदेव की बंध काटी, कन्या जु मारी आठी।
कंस केस शिशुपालं, शीश उतारना।। ११।।
चंदन लेपन कीन्हां, मसतगि तिलक दीन्हा।
कुबजा मालनि के जी, कूब सुधारना।। १२।।
रापति दंत उपारे, जीतन जंग मल अखारे।।
आये चिदानंद सांई, कंस के जी मारना।। १३।।
दुःशासन हारि थाके, द्रौपदी की लाज राखे।
अनंत पीतांबर झीनें, चीर उतारना।। १४।।
मुटठी दो तंदुल दीन्हें, रूकमनी जांनि लीन्हें।
संत सुदामा के जी, दरिद्र बिडारना।। १५।।
कर्ण से बानौं मारे, भीष्म द्रौण सिंघारे।
असुर की संग्या कीन्ही, झूठी धारना।। १६।।
अठारह छुहनि खोई, फिरी है पंडौ दोही।
महाभारथ कै मांही, अंड उबारना।। १७।।
कबीर की पैज राखी, चंद्र सूर साखी।
नौ लख बालदि आई, केशो से बनिजारना।। १८।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

दास गरीब साखा, मैं बिरद भाट भाषा।
दरबार तुम्हारे तेरा चारना।। १६।। २।।
माई समरथ साहिब सेवो, पुरुष अलेख है।। टेक।।
खूल्हे ब्रह्मरंध्रं, झलकंत मुकट चंद्रं।
अविगत आदि अनादं, अकल अदेख है।। १।।
हरि गुल अधर सेजं, झलकंत कोटि तेजं।
निरगुन पुरुष विदेही, रूप न रेख है।। २।।
नारद मुनि से बांचैं, ब्रह्मा विष्णु नांचैं।
महादेव से जोगी, ध्यान विवेक है।। ३।।
शेष सहंस मुख गावैं, जाका पार न पावैं।
नहीं गति मति जांनी, एक अनेक है।। ४।।
दास गरीब बंधू, जम के काटन फंधू।
आदि रु अंत हमारै, नाम की टेक है।। १५।। ३।।
हरि चिंतामणि सांईं, अविचल बंक है।। टेक।।
धम घिरति धरणि सौधे, परबत पत्थर हीरा खोजे।
बिन परबत पाषानें, अधरि निःशंक है।। १।।
चलै चरण बिन लूला, जाकै भुजा न कूला।
बरषा मेह न भीजै, अटै न खंख है।। २।।
पग बिन निरति होई, टार्‌या टरै न कोई।
अधर उड़त अनरागी, पद बिन पंख है।। ३।।
खाय न पीवै, सो तो कहौ कैसे जीवै।
हरि मोटे से मोटा, पतरा सा लंक है।। ४।।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड, रूंम रूंम में पिण्ड।
हरि भारे से भारा, बोझ न टंक है।। ५।।
कामधैंनु कर्तारं, सांईं हरि अधर अधारं।
हरि जैसे कूँ तैसा, राव न रंक है।। ६।।
पढ़े ज्ञान गीता, कागज लिख लिख चीता।
दास गरीब बिनांनी, पद बे अंक है।। ७।। ४।।
अबिगत सांईं पुरुष अलेख है।। टेक।।
नारद मुनि से बांचै, ब्रह्मा विष्णु नांचै।
शंकर जोगी, ज्ञान विवेक है।। १।।
शेष सहंस मुख गावै, जाका पार न पावै।
कैसे जानौं, एक अनेक है।। २।।
बरन अबरन बाना, मैं दीदार दिवाना।
शब्द सरूप बिनानी, रूप न रेख है।। ३।।

दास गरीब देवा, समरथ पद साहिब सेवा।
कोई दिल महरम जांनैं, सकल अदेख है।। ४।। ५।।
धनुष उठाया सीता जानकी।। टेक।।
अनंत कोटि राजा, आये जनक दरवाजा।
धनुष न चढ्या, खबर न बान की।। १।।
काल रु मीच बांधे, तेतीस कोटि फांधे।
जाकी करत खवासी, किरण शशि भान की।। २।।
रावण तांन खैंच्या, जस जोर दीन्हा पौंहचा।
जहां पैज पछौड़ी, हुई हिवान की।। ३।।
अनंत कोटि जोध्या, धनुष उठाय सोध्या।
कहा चलत है, गर्व गुमान की।। ४।।
राम रु लछमन आये, सुर नर मुनि मन भाये।
वरियां बीती, आनि निदान की।। ५।।
छत्र सिंघासन चौरा, कलंगी विराजत टौरा।
या दिश मुख कर बैठे, कूंट ईशान की।। ६।।
पुरुष पुरातम येही, जनम जनम के प्राण सनेही।
तन मन धन वारौं, चरण कुरबांन की।। ७।।
धनुष तो कोई चढ़ावो, फूल माल यहि गलि लावो।
बात सुनों हो, मोरे ईमान की।। ८।।
तुनके ज्यौं धनुष तोर्या, रावण मुख शीश मोर्या।
गलि फूल माल डारी, सीता ध्यान की।। ९।।
जनम जनम की दासी, मेरे पुरुष अविनाशी।
सीता परनाई, पद प्रवान की।। १०।।
नूर के पुरुष विदेही, चिदानंद रूप येही।
बजर का पिंजर सांईं, सरबरि कीये पान की।। ११।।
दास गरीब दिवाना, अविगत पद प्रवाना।
मुक्ति करोगे, हमरे प्राण की।। १२।। ६।।
लछमन समझावै, रावण महा नीच है।। टेक।।
सौरन का मिरग बन्या री, तोरत फूलन की बारी।
रावण का मामा, यौह मारीच है।। १।।
बदनद विनोद नूरी, महकत ज्यों कसतूरी।
रावण पापी, रुधिर की कीच है।। २।।
नीब का करुवा फरुवा, जानत कोई नर गरुवा।
आक धतूरा परमल, कहां सीच है।। ३।।
औने राजा रामं, इहां सीता निहकामं।

लछमन चेरा, दौंहू के बीच है।। ४।।
बजर के पिंजर सोई, और न सरबरि कोई।
रावण के सिर, काल रु मींच है।। ५।।
दास गरीब रासा, सुखसागर लीन्हा बासा।
जनम निछत्र, तास अभीछ है।। ६।। ७।।
येरी कार उलंगी, राजा राम की।। टेक।।
काम कलप का डोरा, तेतीस की बंधि तोरा।
कोई बात न बूझे, येरी निहकाम की।। १।।
और न धारण धारौं, तुम्हरे चरण जुहारौं।
चेरी तेरी, आठौं जाम की।। २।।
यौह तो चाकर चेरा, पाजी बरदा तेरा।
कहां मैं सेज चढ़ौंगी, रावण गुलाम की।। ३।।
नूर के पुरुष अनादं, जा घरि विद्या न बादं।
रावण देही, हाड रु चाम की।। ४।।
यौह ब्रह्मा का नाती, खेले आत्म घाती।
मैं तो माला फेरौं, तुम्हरे नाम की।। ५।।
जप तप ज्ञान ध्यानं, निरगुण पद निरबानं।
मोहि खबर नहीं है, छाया घाम की।। ६।।
गरीबदास दरबानी, बोलत सीता रानी।
बात कहूँ जी, ये निज धाम की।। ७।। ८।।
परशोतम बाला, नगन बिनंगिया।। टेक।।
उरध मुख नाद पूरं, सींगी अजब जहूरं।
आसन गरुड लगायें, है एक टंगिया।। १।।
आसन पदम लगावै, शीश चरण नहीं पावै।
जैसे सूरजि कुण्डलं, चंद्र अभंगिया।। २।।
सरल सरूप साखा, त्रिभंग बिच से बांका।
कुछि परख न आवै, है बौह रंगिया।। ३।।
गिरद कुंडल नादं, लीला कुछ अगम अगाधं।
बिन चरणौं चालै, अचल अपंगिया।। ४।।
फलगू गया पिरागं, परबी न्हाये माघं।
जाके चरणौं की धारा, कोटिक गंगिया।। ५।।
एक पलक पल मांहीं, चौदह भुवन फिर आंहीं।
अविगत सांई, चाल कुलंगिया।। ६।।
कोटि कोटि काशी, अठसठि तीरथ न्हासीं।
जगन्नाथ जगदीशं, है सतसंगिया।। ७।।

चौदह कोटि दूतं, धर्मराय जाका भूंप।
नाम निरालंब, जीतन जम जंगिया।। ८।।
मुख जाका सेत सूहा, चिशम में गुलाब रूहा।
गरदन ग्रीवा, पीठि भुजंगिया।। ९।।
ॐ मूल माया, चौरा करत प्रभाया।
सुरति निरति की, सैल सिरंगिया।। १०।।
मारि जिवारि लेही, चिदानंद रूप येही।
गरीबदास की, सुरति भिरंगिया।। ११।। ९।।
येरी झनकार झीनी, सुनियत गाज है।। टैक।।
दरबन दमांमें बाजैं, संखौं गायन साजैं।
बिन मुख बानी, अलफ अवाज है।। १।।
झालरि झांझि तूरा, दर्शत अजब जहूरा।
भक्ति वत्सल का, ये जहां राज है।। २।।
मुरली की टेर होई, चीन्हत बिरला कोई।
सुरति निरति का, साज्या साज है।। ३।।
ताल बरदंग नादू, बिचरत है सुंनि साधू।
आनन्द मंगल, हमरै आज है।। ४।।
बाजंत ताल घंटा, देख्या एक अविचल मंठा।
जहां नहीं पूजा पाती, नेम निवाज है।। ५।।
दास गरीब दिवाना, सुनि कर पद निरवाना।
भक्ति मुक्ति की, तोकूँ लाज है।। ६।। १०।।
आनन्द रूपं पद ल्यौलीन है।। टेक।।
चक्र सुदर्शन स्यामं, जाके धनुष कर बानं।
शेष बदन पर, चरण जाके तीनि है।। १।।
एक चरण पग सीधा, करियौ ध्यान अकीदा।
अकल निरंजन, हरि प्रबीन है।। २।।
दसत बिलोक फूलं, सांईं के शीश झूलं।
संखौं शाखा, डार अलील है।। ३।।
बिरछं समाधानं, पुष्पं संख उगानं।
कछू परख न आवै, मारग झीन है।। ४।।
ब्रह्मा विष्णु महेशा, रटते हैं नारद शेषा।
जाति अजाति, दीन बेदीन है।। ५।।
अरध चन्द्र षटकूंनं, दर्शे प्रहलाद धूनं।
पंच पदम का, एक जहां मीन है।। ६।।
तीनि कलश मठ कँवलं, उचरत बानी बिंबलं।

राग छत्तीस, मधुर धुनि बीनि है।। ७।।
गऊ मुख गंग मीता, कोटि कोटि भागौत गीता।
राम रसायन, हरदम चीन्ह है।। ८।।
खूल्हे शिंभू द्वारं, **गरीबदास** कूँ दीदारं।
हरदम हाजरि, दिल दुरबीन है।। ९।। ११।।
येरी अनभूत बिनानी, तन तो बैराठ है।। टेक।।
दोदल कँवल चिशमां, दर्शत एक न रिसमां।
जोरि जुगति से, जरे कपाट है।। १।।
त्रिगुण पांच इन्द्री, तन मन मचि रह्या दुंदरी।
आत्म तत्व के, बैरी आठ है।। २।।
पंथ अपंथ प्राणी, जानत कोई नर ज्ञानी।
या घट मांहें, औघट घाट है।। ३।।
प्रेम फूलेल फूलं, चवत ब्रह्म समतूलं।
कोल्हू फिरदा, ये बिन लाठि है।। ४।।
भाठी अजब लाई, दो पुर जोरि चवाई।
अमल अनाहद, सिर की साटि है।। ५।।
गरीबदास निरवासी, पाया पद अविनाशी।
मक्रतार से, झीनी बाट है।। ६।। १२।।
येरी मन मोहन, मौला आये नन्द के।। टेक।।
त्रिकुटी भँवर कमलं, उगमें सूरजि बिंबलं।
नैंन निमांनै, पटतर चन्द के।। १।।
ब्रह्मा बछ चुराये, जिन के पार न पाये।
भ्रम पर्या है, सुरपति इंद के।। २।।
हरदम करत करीला, जाकी कोई न जानैं लीला।
कर्म न लागै, येरी निरदुंद के।। ३।।
गंग जमन के तीरा, मधि है सुरसती का नीरा।
उस घाटि खड़े हैं, येरी ब्रह्मरंध्र के।। ४।।
राम रस मीठा, नैनों नारायण दीठा।
बीज न बकला, निरमल कंद के।। ५।।
दास गरीब अजूनी, आशा तृष्णा भूनी।
मध्य समाऊँ, सरवर सिंध के।। ६।। १३।।
जाके नैंन सुरंगे, चन्द चकोर है।। टेक।।
पगरी तो लटपटी बांधै, नैंनन के शर सांधै।
बान चलावै, कठिन कठोर है।। १।।
मधुकर भँवर गूंज्या, नैंनन रेख अंज्या।

जैसे बोलत बानी, कोकल मोर है।। २।।
गरजत सिंध साजं, बोलत अजब अवाजं।
जैसे दामनि दमकै, घनहर घोर।। ३।।
गम की गुडी उड़ाऊँ, पलपल दर्शन पाऊँ।
सुरति निरति की, लाऊँ डोरि है।। ४।।
नंद नाद ढुटौंना, कूदत ज्यों मिरग छौंना।
नाचत बाला, ये मुख मोर है।। ५।।
भक्ति का साक्षी ऐसा, है जैसे कूँ तैसा।
आंनि चराये, नंद के ढोर है।। ६।।
सुर नर करत आशा, धाम बैकुण्ठ बासा।
अकल विसंभर, जालिम जोरि है।। ७।।
जत सत गरेहा, **गरीबदास** नाम नेहा।
कृष्ण कन्हैया, मेरा मन चोरि है।। ८।। १४।।
याह मूरति सूरति, आदि अनादि है।। टेक।।
बाजंत ताल बीना, सुनियत राग झीना।
नेरे से नेरा, अगम अगाध है।। १।।
तल बरदंग नादू, सुनि कर बिचरंत साधू।
झालरि शंखा, अजब अवाज है।। २।।
मुरली अधर बाजै, आनंद राग साजै।
जा घरि येरी, विद्या न बाद है।। ३।।
ब्रह्मा विष्णुं सेवा, सनक सनंदन देवा।
शिंभू गावै, ध्रू प्रहलाद है।। ४।।
गलि बैजंती माला, अविगति रूप विशाला।
गरीबदास कै, अखै प्रसाद है।। ५।। १५।।

अथ राग विहाग

अकथ कथा परिवारी सतगुरु, अकथ कथा परिवारी।
बिन कागज के लेख लिखाये, ना कर कलम बिचारी।। टेक।।
बिनहीं भाठी फूल चवाया, सोहं सुरति खुमारी।
पीवत ही परमानंद परसे, मजलसि टरै न टारी।। १।।
आशा तृष्णा तर्क परी सब, ज्ञान खड़ग से मारी।
कहा कहूँ प्याले की महिमा, ल्याई फूल कलारी।। २।।
इला पिंगुला पोतन बैठी, सेवन सुषमन नारी।
जा कारनि यौह फूल चवाया, दूलह कंत अटारी।। ३।।
जहां सुर संख पियाले पीवैं, अपनी अपनी बारी।

उनमन आनंदपुर में मेला, लागी सुषमन तारी।। ४।।
बाहरि रहै स फूल न चाखे, अंदर प्याले भारी।
दास गरीब मिहर सतगुरु की, खोल्ही बजर किवारी।। ५।। १।।
सुरति निरति का मेला साधो, सुरति निरति का मेला।
मन हंसा जहां सुरति हंसनी, अगम अगोचर खेला।। टेक।।
निरति निरंतर रूप बखानैं, परम पुरुष की दासी।
महरा होय सो महलौं जावै, अनहदपुर का वासी।। १।।
त्रिकुटी महल में पैठि निहारै, दो दल अंदरि देवा।
आसन अरश लगावै जोगी, अविगति अलख अभेवा।। २।।
सींगी नाद भभूति न बटुवा, झोली पत्र न राखैं।
चित में चीपी अमृत धारा, महरा होय सो चाखै।। ३।।
गुसल करै अरवाह मुकामा, ऊजू अर्श जहूरा।
दास गरीब पद परसै सोई, भेटे सतगुरु पूरा।। ४।। २।।
अमर पुरुष अनरागी देवा, अमर पुरुष अनरागी।
मादर पिदर नहीं मौला के, सो सच्चा बैरागी।। टेक।।
बन खण्ड जाय न बसती बासै, गिरि पर्वत नहीं चाहै।
भूखा रहै न मांगन जाई, नहीं भिक्षा भीख उगा है।। १।।
ना करुवा कोपीन न जाकै, दण्ड कमण्डल झोरी।
पैरों चलै न आसन मांडै, ना खंथ्या ना डोरी।। २।।
बिनहीं करौं रबाब बजावै, राग छत्तीसौं लापै।
बिनही रसना सब गुण गावै, अपनी थापनि थापै।। ३।।
पूजा प्रेम लगावै नाहीं, शब्द अतीत उदासी।
खान पान इच्छा नहीं असतल, गगन मंडल का बासी।। ४।।
राजा रीति अतीत के आगे, चलता पैर पियादा।
गरीबदास जाकी बलिहारी, जिन चिसम्यों बौह लाधा।। ५।। ३।।
ऐसा साज बनाया सतगुरु, ऐसा साज बनाया।
सुरति की नालि शरीर उड़ावै, मुरशद भेद बताया।। टेक।।
जैसे गुटकै सिधि कला है, सुरति शरीर समावै।
लोक अलोक जहां मन बंचत, जहां इच्छा तहां जावै।। १।।
जैसे भगली भगल विद्या करि, उड़ै अकाश बिहगा।
खण्ड बिहण्ड होय परै धरणि परि,
फिर ज्यों का त्यौं ही अंगा।। २।।
चरण दसत सिर न्यारा न्यारा, दम देही नहीं श्वासा।
ऐसे सुरति शरीर हमारा, शब्द महल में बासा।। ३।।
महतत लील चक्र में रहते, आये कौंने काजा।

अधर धार अनरागी मेला, ल्याये शब्द अवाजा।। ४।।
लील चक्र परि पीत चक्र है, पीत चक्र परि सेतं।
सेत चक्र पर लाल चक्र है, यौह सूरौं का खेतं।। ५।।
सिर धड़ पड़े त बिरद नहीं लाजै, और भूमि सब भूंडी।
बिन सतगुरु नहीं परसै हंसा, परी ज्ञान की घूंडी।। ६।।
जैसे घोरा कहुक कलायर, कसतूरी मधि मिरगा।
ऐसे शब्द अतीत समाना, भँवर उडाना सुरगा।। ७।।
कदली गांठि कसौटी दीजे, बौहरि न पावै अंगा।
दास गरीब सतलोक सिधाये, चढ़ि कर ज्ञान तुरंगा।। ८।। ४।।

शाला कर्म रचाया सतगुरु, शाला कर्म रचाया।
कौन भूमि और कौन देश है, जितसे सतगुरु आया।। टेक।।
आपै प्याला आपै मधुवा, आपै पीवन हारा।
आपै सतगुरु फूल चवाया, आप भया मतवारा।। १।।
गगन मंडल में मौला रहता, अर्श कुर्श मघ मीना।
उलटि कपाट झरोखै बैठे, ध्यान धरे दुरबीना।। २।।
भूमि देश सिज्या सहनानी, कहूँ सकल बिधि हंसा।
त्रिकुटी कँवल कैलास भूमि है, तो में तोरे बंसा।। ३।।
संख पदम उजियार धार है, अनंत बरन बहुरंगा।
लोयन लाख लखै जो कोई, तो कहा करै प्रसंगा।। ४।।
अनंत रूप और अनंत भांति छबि, ऊठै अनंत तरंगा।
सुखसागर में लहरि निरंजन, कोटि सुरसती गंगा।। ५।।
अजर बीज से ब्रह्मा आये, अजर बीज से शेषा।
अजर बीज शंभू और बिसनं, अजर शब्द उपदेशा।। ६।।
अजर बीज गौरां कूँ पाया, सनक सनंदन जोगी।
अजर बीज से नारद उधरे, नौ जोगेसर जोगी।। ७।।
अजर बीज शुकदेव सुनि पाया, अमर भये अनसारी।
दास गरीब कहूँ क्या महिमा, सतगुरु की गति न्यारी।। ८।। ५।।

देख्या अजब जहूरा सतगुरु, देख्या अजब जहूरा।
जब हंसा परलोक पहुंचे, भेटे सतगुरु पूरा।। टेक।।
जोग करै और जुगति न जांनै, देखा देख बिसासी।
जूनी जनम न छूटैं हंसा, परे काल की फांसी।। १।।
जप तप करनी करै पिरानी, इच्छा रूप अनारी।
साहिब लेखै दम नहीं लावै, ऐसे जुग जुग ख्वारी।। २।।
तत्वबेता होय तन मन फूकै, फूकि फाकि फिर आवैं।
ये रस भोगी कैसे जोगी, मूज मंत्र नहीं पावैं।। ३।।

मूल मंत्र का भेद नियारा, इच्छा बीज न जाकै।
दास गरीब अमर होय सुनि कर, ऐसे सतगुरु भाषै।। ४।। ६।।
हिरसि हवा की नगरी संतों, हिरसि हवा की नगरी।
काम कसाई कोतवाल है, हंसा भूले डगरी।। टेक।।
लोभ मोह मद छोह छिकनिया, घट में दुरमती दूती।
आशा तृष्णा है दरवाजे, भौंके कारी कूती।। १।।
हर्ष शोग दो तस्कर ठाढे, काया गढ़ रखवारे।
ममता माया सब तन खाया, लूटैं न्यारे न्यारे।। २।।
पांच पच्चीस शीश परि बैठे, तीनि करै तकशीशा।
या नगरी कूँ छाडो संतो, लूटी बिसवे बीसा।। ३।।
जे कोई रहे त रहन नहीं पावै, बांधै मसक चुरंगा।
महमूदी खासे क्या पहरै, उस दिन होत बिनंगा।। ४।।
उतारि पागरी तोरि तागरी, बांधि जेवर्यौं जूरा।
येती तिरास उपास मिटावै, बकसै सतगुरु पूरा।। ५।।
अरब खरब और लख करोड़ी, खाली हाथौं चाले।
अगर चंदन के लेपन होते, शीश चरण मुख काले।। ६।।
बसता लूट्या रसते लूट्या लूट्या मडहट माहीं।
जुगन जुगन घर चौड़ हदीरा, साहिब जान्या नाहीं।। ७।।
जुगन जुगन की बंधि छुटावैं, करि प्रतीत हमारी।
दास गरीब धनी से मेला, जमका कागज फारी।। ८।। ७।।

अथ राग सोरठि

खुरदनी निज खीर प्याले। खुरदनी निज खीर।। टेक।।
त्रिकुटी के घाटि दरवै, चोखा अर्श खमीर।
सुरति निरति समाधि लावौ, मन पवना कर थीर।। १।।
सिद्ध मुनि जन नहीं भेद भेदी, खाली रह गये पीर।
पांच तत्व और तीनि गुनन में, बह्या जाय जग कीर।। २।।
कौन हिंदू कौन तुरका, एक चोला चीर।
कौन ब्राह्मण कौन सूदरा, सकल सीना धीर।। ३।।
मानसरोवर हंस मेला, गंग निरमल नीर।
दास गरीब दयाल साहिब, सतगुरु मिले कबीर।। ४।। १।।
खुरदनी निजनूर प्याले, खुरदनी निजनूर।। टेक।।
शीश तन मन करै साटे, सुभट साचा सूर।
अगम दीप अगाध अग है, बाजैं अनहद तूर।। १।।
सिंध सरवर अजब प्याले, खूब चोखा फूल।
कोटि भान प्रकाश पूरन, झिलमिलाट जहूर।। २।।

अर्श ऐंनक मुकट महली, देखि निकट न दूर।
दास गरीब अगाध अग है, अमल में है चूर।। ३।। २।।
शब्द नाम संजूत साहिब, शब्द नाम संजूत।। टेक।।
आदि अंत न मध्य कोई, अनरागी अनभूत।
कोटि तीरथ लार जाकी, सुरति संजम सूत।। १।।
ररंकार उचार कीजै, डरत हैं जम दूत।
मात पिद्र न बंधु कोई, कौन किस का पूत।। २।।
धुंध बाजी झूठ गौंना, रह्या किस स्यौं रूति।
दास गरीब बिचारि करि ले, देखि अपनी कूति।। ३।। ३।।
शब्द में कर बास औधू, शब्द में कर बास।
नाम सोधौ मूल रोधौ, उलटि हरदम श्वास।। टेक।।
सोलह कला संजूत गुल है, फूल रह्या आकाश।
पंच बाई बिरह जारै, करै कुल का नाश।। १।।
बेलि काचरू सींध ज्यौं रे, मेटि जग की हांसि।
बीज भूनि अंकुर खोवै, सही साचा दास।। २।।
मेरडंडै करै रामति, जाय बसै कैलास।
दास गरीब जो ब्रह्म बंसा, मिले निर्गुण रास।। ३।। ४।।
शब्द हमरा धाम औधू, शब्द हमरा धाम।। टेक।।
रूंम रूंम ररंकारं, रटौ आठौं जांम।
दीन्हा दान दयाल सतगुरु, एक अपना नाम।। १।।
सुरति संजम करें चौरा, बेर बेर बलिजांव।
अमर गादी अमर तकिया, है बेगमपुर गांव।। २।।
कहै दास गरीब साधौ, सतलोक चलि जांव।। ३।। ५।।
शब्द में रहो नेश औधू, शब्द में रहो नेश।। टेक।।
मुंडित भद्रा कांनौं मुंद्रा, क्या बधावौ केश।
तन फकीरी किन बंधी है, मन नहीं उपदेश।। १।।
विषम घाटी पंथ बंका, दूरि है औह देश।
तखत महली है हिजूरी, कौन सा कहौ पेश।। २।।
बंदीछोड कबीर साहिब, चित चौंरा दरवेश।
कहैं दास गरीब साधौ, रटत शंकर शेष।। ३।। ६।।
महल की कहो रीति साधौ, महल की कहो रीत।। टेक।।
कौन महली दिल दिवाना, गावत हैं सब गीत।। १।।
कौन भेष अलेख चीन्ह्या, कहौ ध्यान उदीत।। २।।
कौन लै से लीन होई, कौन पिंगुला प्रीति।। ३।।
कौन दुश्मन है तुम्हारा, कौन जग में मीत।। ४।।

कौन पूजा है पुजारी, कौन पंडा भीत।। ५।।
कौन महंगे मोलि आवे, कौन आवे सीत।। ६।।
कहै दास गरीब साधौ, करो दूरि अनीति।। ७।। ७।।
सबै दिवाना लोग साधौ, सबै दिवाना लोग।। टेक।।
मूढ़ चातुर हैं अनारी, लग्या है यौह रोग।। १।।
मन मसीतां धाम पूजैं, करैं तन का जोग।। २।।
भैरों खित्रपाल धोकैं, करैं कंदूरी भोग।। ३।।
एक उपजै एक बिनशै, करैं किस का शोग।। ४।।
कहै दास गरीब साधौ, बिरह बिना बियोग।। ५।। ८।।
ज्ञान गसती राखि औधू, ज्ञान गसती राखि।। टेक।।
शील बरती रहो हरदम, कूड़ शब्द न भाखि।। १।।
श्वास रस्सी पासि कूबटे, प्रेम प्याला चाखि।। २।।
दया धर्म संतोष मौंहरे, बुधि विवेकै राखि।। ३।।
मारि आकी तेग तत्व की, शीश काट्या नाखि।। ४।।
समझि बूझि बिचार मन में, सुनो साची साखि।। ५।।
त्रिकुटी का खोल्हि ताला, तोरि गढ़ कूँ दाखि।। ६।।
कौंन राजा रंक दुनिया, कहां कोड़ी लाख।। ७।।
कहै दास गरीब साधौ, एक नाम की है साख।। ८।। ९।।
है कोई महल का रसिया, है कोई महल का रसिया।। टेक।।
सप्त शुन्य पर लाय तारी, जहां मन बसिया।। १।।
पांच रांडि त्यागि भांडी, होय रहौ खसिया।। २।।
गोय यौह मैदान औधू, हिरसि तजि मसिया।। ३।।
अंदरूंनी उलटि चिशमें, किले में धसिया।। ४।।
शब्द पारस सुरति लोहा, निरति से घसिया।। ५।।
कहै दास गरीब साधौ, निपस गहि कसिया।। ६।। १०।।
महल मालिक कौन घट में। महल मालिक कौन।। टेक।।
हंस मन है गैब पंखी, नाद पूरैं पौंन।। १।।
कौन ज्ञानी ज्ञान बकता, कौन रहता मौन।। २।।
कौन होनी होय साधौ, कौन होय अनहोंन।। ३।।
फना फारिक सकल बाजी, सबै झूठा गौंन।। ४।।
कहैं वाणी गति कहाणी, लीया सामंण सौंण।। ५।।
कहे दास गरीब साधौ, मिल्या पाणी लौंण।। ६।। ११।।
नूर प्याला पार संतो, नूर प्याला पार।। टेक।।
पांच पच्चीसौं परहरौं रे, चंचल मन कूँ मारि।। १।।
गगन मंडल में भाठी सरवै, चोखा फूल कलार।। २।।

त्रिवैणी तट भर्या मेला, गंग सहंस मुख धार।। ३।।
झिलमिलाट जहूर जोती, तत शब्द झनकार।। ४।।
हरदम नाम सुहंगम सेवा, ब्रह्म अग्नि तन जारि।। ५।।
ना कोई तेरा तूं काहू का, जीत्या जूवा न हारि।। ६।।
कैफी हो कर अमल बिसारैं, भरमि रह्या बिभचारि।। ७।।
मरकट मूठी गही अविद्या, छाडै नहीं गँवार।। ८।।
ताहूँ से संसार सागर, डोलैं घरि घरि बारि।। ९।।
माली एक अनूप सजनी, बाजीगर कर्तार।। १०।।
दास गरीब विज्ञान बानी, सतगुरु बेग जुहार।। ११।। १२।।
खुरदनी मसतान प्याले, खुरदनी मसतान।। टेक।।
चोखा फूल चवास ले रे, दूरि करो खलिहान।। १।।
कबित्त साखी शब्द कहि कहि, हो गया जग हान।। २।।
शब्द साचा गहौ औधू, निश्चल नाम निशान।। ३।।
च्यार दिन की चिहर बाजी, जे जांनै तो जानि।। ४।।
बे मुखी बिन संत बाजी, मरहट भये मशान।। ५।।
शब्द की प्रतीति नांहीं, पूजते हैं आन।। ६।।
शब्द अतीत संजूत साहिब, हंस हिरंबर दान।। ७।।
दास गरीब दयाल साधू, सतगुरु कूँ कुरबान।। ८।।
संतो अपने दिल की बूझै। तो अगले दिल की सूझै।। टेक।।
पैठि बिचारै मांही। तो दरशे झिलमिल झ्यांही।। १।।
पेखै निज कसतूरी। तो दर्पण दरवे नूरी।। २।।
षटदल कँवल बिचारै। ले उर में पवन अधारै।। ३।।
ड्योढी पड़दा खूल्ही। लखि तखत रवा परि शूली।। ४।।
तन का आपा खोवै। तो शूली ऊपरि सोवै।। ५।।
मुहंमद महल न पाया। सो सतगुरु आनि चिताया।। ६।।
काजी मुल्लां पांडे। सब जम के दूते डांडे।। ७।।
ज्ञानी गुनी गंवारा। क्या जानै भेद हमारा।। ८।।
षट्दर्शन खलि खाता। नहीं नाम अभै पद राता।। ९।।
कौंम छत्तीसौं खाली। सब बंधे जम की जाली।। १०।।
जन दास गरीब तुम्हारा। धन्य समरथ सिरजन हारा।। ११।। १४।।

अथ राग मलार

बरषैं नूर निमाना संतो, बरषैं नूर निमाना।
श्याम घटा घनघोर गरज है, पचरंग तंबू ताना।। टेक।।
बरषै मेघ मलार अमीरस, भीगै लाल पलाना।

दांमनि खिमैं सकल दुःख भंजन, ना कर कंत पियाना।। १।।
जनम जनम की दासी तुम्हरी, तूं है पुरुष पुराना।
मैं आजिज अरदास करत हूँ, दया करो दिलदाना।। २।।
सुख सागर रतनागर नीका, निराकार निरबाना।
गैबी गैब लहरि धुनि उपजै, नहीं जिमी असमाना।। ३।।
उडगन नहीं लिलाट चंद्रमा, नहीं सूर तहां भाना।
इला पिंगला सुषमन सोहं, त्रिकुटी कँवल धरि ध्याना।। ४।।
दास गरीब अनंत धुनि उपजै, सतगुरु कूँ कुरबाना।। ५।। १।।

बरषै नूर लहरिया संतो, बरषै नूर लहरिया।
आदि न अंत मध्य नहीं जाकै, शुन्य समाना दरिया।। टेक।।
मानसरोवर मुकता मोती, हीरे मानिक भरिया।
मुरजीवा होय धसै समुंद में, कायर पैठत डरिया।। १।।
शाहूकार सुरति की डोरी, रतन खजाना भरिया।
सरबस सौंपि देत साहिब कूँ, काज जिन्हौं के सरिया।। २।।
सिर साटै जो साटि करत है, सोई संत निसतरिया।
सुमिरन भजन बंदगी करि हैं, सो भौसागर तरिया।। ३।।
जूनी संकट मिटै तास की, गर्भवास नहीं परिया।
नाम चीन्हि दुःख दालिद्र भंजन, कर्म भ्रम सब हरिया।। ४।।
दास गरीब दरश सो पावै, ध्यान अगोचर धरिया।। ५।। २।।

बरषैं नूर सलौंना संतो, बरषैं नूर सलौंना।
मेहर दया करि दर्शन देहीं, छाडो टामन टौंना।। टेक।।
बिन अकार अखंड झर लागै, ना जहां पानी पौंना।
दिल कूँ खोजि दिशंतर त्यागो, क्यूं भरमत हो भौंना।। १।।
मसतगि लिख्या लहत है प्राणी, क्या ले सामन सौंना।
सिकल बिकल छाडो सब हंसा, दूरि कर घर का कौंना।। २।।
जुगन जुगन तन छार करत हैं, फिर होंना फिर होंना।
तीरथ बरत किये त्रिकाली, कहा भया साधै मौंना।। ३।।
बिना नाम भटकैं चौरासी, मिटै न जूनी जौंना।
पारब्रह्म अविगत अविनाशी, सत पुरुष से गौंना।। ४।।
दास गरीब मिलै जे सतगुरु, पारस ढिग लोहा सोना।। ५।। ३।।

दस दर ऊपर गाजे अजब धुनि, दस दर ऊपर गाजै।
पिण्ड ब्रह्मण्ड से न्यारा सतगुरु, बिन मुख अजब अवाजै।। टेक।।
गगन गलतान अमान अनाहद, नजरि निहाल निवाजै।
शब्द अतीत सलहली सेजं, जो कुछ करै स साजै।। १।।
पृथ्वीपति चकवे छत्रधारी, अनंत लोक का राजै।

शुन्य विदेशी है सर्व देशी, बिरह अग्नि तन दाझै।। २।।
बिन दीदार मरण होय हमरा, बिरद तुम्हारा लाजै।
अजब झनकार अपार तेज है, अटल अनाहद छाजै।। ३।।
सकल कामना पूरन स्वामी, बिगरत है नहीं काजै।
तेज पुंज प्रकाश पदम हैं, हमरै आवो आजै।। ४।।
दास गरीब के सिर पर साहिब, नैनां मंझि बिराजै।। ५।। ४।।
अटल अनाहद जोगी सतगुरु, अटल अनाहद जोगी।
कामधैंन कलवृक्ष कलंदर, अमी महारस भोगी।। टेक।।
चरण कमल छाडौं नहीं तुम्हरे, होंनी होय स होगी।
अठसिध्दि नौनिधि राते प्रानी, मन माया के भोगी।। १।।
छाडि बंदगी आन उपासा, विषयों राते रोगी।
लंपट लैल बैल नर पशुवा, मन भटकावत लोभी।। २।।
बिना विवेक भेष जो धारैं, शोभ करत हैं शोभी।
बिन बेली फल कंद अनूपम, तरुवर मूल न गोभी।। ३।।
अजब लहरिया शुन्य बिसतरिया, तेज पुंज के झोबी।
निज निरबान निरंतर नीका, भेद लखैं नहीं लोगी।। ४।।
सुखसागर की परबी न्हाये। **दस गरीब** वियोगी।। ५।। ५।।
मिटै नहीं है हौंनी संतो, मिटै नहीं है हौंनी।
इजै बिजै दरवान धनी के, सनक सनंदन गौंनी।। टेक।।
अमरपुरी जाते जो अटके, दिया श्राप बिरौंनी।
हिरण्याकक्षव हिरणाकुस राजा, आय मंडल जौंनी।। १।।
उदर विदारि खण्ड कर नाखे, भरमै भौजल भौंनी।
संखासुर कूँ कौन हतै है, ले गया चोर बिदौंनी।। २।।
बछासुर कूँ पृथ्वी चोरी, अंग बैराह धरौंनी।
अविगत की गति कोई न पावै, नारद गौंनम गौंनी।। ३।।
भसमागिर क्यौं भसम होत है, जे शंकर रहै मौनी।
रामचंद्र दशौटे पठये, सीता संग पतौंनी।। ४।।
बलि राजा कूँ जगि करी जदि, भरि गये तीन डिगौंनी।
जे रावण सीता नहीं हरते, काहै लंका सौंनी।। ५।।
छप्पन कोटि कटे एक छिन में, दुर्वासा ऋषि दौंनी।
गरीबदास एक साहिब साचा, झूठा सामन सौंनी।। ६।। ६।।
कदि आवैंगे मेरै रघुवर, कदि आवैंगे मेरै।
सुनि रे कपि कर्ता सौं कहियौ, ऊँचे सुर से टेरै।। टेक।।
हम तो गऊ रहै बन खण्ड में, औह रावण है शेरै।
धनक बान सौं आवै स्वामी, तासौं खेलत हेरै।। १।।

दीपक जरत मसाल दुसाखे, अब हम रहत अंधेरै।
दिन दो गोकल रास बन्या है, जैसे सखियां केरै।। २।।
जित पठवै तित जात हुकम से, उजर नहीं है चेरै।
काम क्रोध और लोभ मोह कूँ, मारि करै जम जेरै।। ३।।
ऐसी उरझी तुम्ह सुरझावौ, निरगुण नांह नबेरै।
यौह दम तार अधारि तुम्हारै, बैठी सुरति अटेरै।। ४।।
उड़ि रे काग जाहि कर्ता पै, नांहीं बोल मँडेरै।
गरीबदास सीता सतवंती, लागी निरति कँडेरै।। ५।। ७।।
जाय रे तूं जाय रे, अरे बनचर उस रघुबर पै तूं जाय रे।। टेक।।
वै रघुवंशी रामचंद्र हैं, जुग जुग नांह हमारे।
मैं सीता सतवंती चेरी, रावण बाग मंझारे।। १।।
तेतीसौं की बंधि छुटावन, कब आवैं पीव प्यारे।
श्याम घटा घनघोर गरज धुनि, बरषत बदरा कारे।। २।।
सांमन मास सुरंगम आया, छूटत गगनि फूहारे।
दामनि दमकि खिमैं दिल मांहीं, बिरह अग्नि तन जारे।। ३।।
सुनि पौंनीक चंचल बुद्धि तेरी, नौलख बाग उजारे।
हमरी राम राम जाय कहियौ, सीता तुम्ह आधारे।। ४।।
वै कलबिरछ कलप जो करहीं, पूरन काम समारे।
जार जार निस बासर रोऊँ, उमगत बदन हीया रे।। ५।।
अनंत कोटि सेना संग जाकै, वे दल बेगि चढ़ा रे।
दश मस्तक औह बीस भुजायें, खंड करत हैं सारे।। ६।।
जहां पौंनीक देत प्रकम्यां, कूदे अधरि अधारे।
गरीबदास उहां रामचंद्र से, लटका आनि किया रे।। ७।। ८।।
अरे बनचर क्या खबरां कपि ल्याये।
कहु सीता की बात बिथा सब, क्या क्या भोजन पाये।। टेक।।
कैसी प्रीति करी तुम सेती, बिंजन कहां जिमाये।
कहौ हनुमंत संत जन मेरे, भूखे रहें क धाये।। १।।
कैसा बदन बिनोद सती का, बूझत हूँ मन लाये।
क्या पौंनीक पटंबर पहरे, हार डोरि गलि छ्याये।। २।।
कहां सिंगार उचार करत है, रावण सिज्या जाये।
सुरमा सिलकि सिज्या पैठी, ना कुछ बदन छिपाये।। ३।।
बोलै पौंनी होय स हौंनी, सुनि हो रघुपति राये।
सीता सती अती अति आतुर, आंसुपात चलि जाये।। ४।।
ढूंढत फिरे लंक चहूँ औरा, नौलख बाग छिपाये।
जाय बिरछ पर छबकी लाई, मुंदरा भंट चढ़ाये।। ५।।

तहां प्रणाम करी सीता सौं, माता दर्शन पाये।
झरे परे का हुकम किया था, नौलख बाग अघाये।। ६।।
नाजुक बदन नाम तुम्हारे में, जैसी माता जाये।
रावण सेती प्रीति न जाकी, चंद बदन मुख छाये।। ७।।
पनिंग समेटि पदम आसन से, पौंना गगन चढ़ाये।
त्रिकुटी संजम ध्यान तास का, सूरज कमल उगाये।। ८।।
हार डोरि नहीं पाट पटंबर, सीता मन मुरझाये।
अगर मालवै मूरति सूरति, **गरीबदास** पद गाये।। ६।। ६।।
राम धजा फररानी देखौ, राम धजा फररानी।
पचरंग झंडे लंब लहरिया, गगन मंडल असमानी।। टेक।।
अंगद और सुग्रीव चढ़े हैं, दल दारन हनुमानी।
नल और नील शिला सर बांधे, हरि हरौल जांबवानी।। १।।
रामचन्द्र की सीता ल्याये, सुनि रावण अभिमानी।
वै रघुनन्दन करैं निकन्दन, तुमरी धूंमा धामी।। २।।
हनुमान हंकार सुने से, सूके सरवर पानी।
कूदैं सुरंग पौंन के नन्दन, उड़गन अर्श उड़ानी।। ३।।
मैं रावण राजा बड़ जोध्या, तेतीसौं बंधि आनी।
शंभू सेव करी बहु बिधि से, दस सहंस धुनि ध्यानी।। ४।।
ब्रह्मा शंभू तास उपाये, है चाकर दरवानी।
कहे मंदोदरी सुनि पीया रावण, दे मिल उनकी रानी।। ५।।
नरसिंघ होय प्रहलाद उधारे, खंभ कला प्रगटानी।
हिरणाकुस के उदर बिदारे, किये निकन्दन प्राणी।। ६।।
इन्द्र सिंघासन डिगमग आसन, वै राजा बलि दानी।
सुरपति गये बिशंभर आगे, सौ जगि मन में ठानी।। ७।।
बावन होय बलि द्वारे ठाढे, त्रिलोकी पग तानी।
दावे दबे न बलि के द्वारे, कोटि दूत लिपटानी।। ८।।
कहै मंदोदरी सुनि पीया रावण, तुम्हरी लंक लुटानी।
गरीबदास गति कोई न पावै, अविगत अकथ कहानी।। ६।। १०।।
एक सुनि हो अरज हमारी रावन, सुनि हो अरज हमारी।। टेक।।
वै रघुवंशी रामचन्द्र हैं, जिनकी पृथ्वी सारी।
उनकी सीता तुम हरि ल्याये, ऐसा जुलम न भारी।। १।।
अनन्त कोटि दल रापति तुम्हरै, योजन च्यार अटारी।
ऐसी ऐश विसंभर दीन्हीं, घरि नौ जोबनि नारी।। २।।
एक लख पूत सवा लख नाती, हीरूयौं भरी बुखारी।
जाहू की तुम सेवा कीन्हीं, ताहू के अधिकारी।। ३।।

जदि पौंनीक पियांना कीन्हा, उन बनचर बैजारी।
सीता की सुधि लैंन पठाये, गोद मुन्दरा डारी।। ४।।
एकै बिरछ रह्या पीया रावण, नौ लख बाग उपारी।
जा दिन सरवरि क्यूं नहीं कीन्हीं, ता दिन लंका जारी।। ५।।
बोलै रावण सुनों मन्दोदरी, अब हम देवैं गारी।
उस शंभू की सेवा कीन्हीं, दस सहंस लग तारी।। ६।।
ब्रह्मा शंभू चाकर जाके, हाथि सुराही झारी।
कहै मंदोदरी मुगध कन्त सुनि, समझो मूढ़ अनारी।। ७।।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराजा, तेतीसौं कोतवारी।
पहुपक खोसि सुरग से आन्या, तास कुबेर भंडारी।। ८।।
चंद सूर प्रवाये बांधे, कूवटे मीच उसारी।
अग्नि रसोई करै मंदोदरी, देहैं पौंन बुहारी।। ९।।
कच्छ मच्छ कूरंभ शेष लग, मानत शंक हमारी।
दास गरीब कहै बड़ जोध्या, हम रावण बल धारी।। १०।। ११।।

हरि बिन क्यों जीवो जग माहीं।
जिनकी सीता तुम हरि ल्याये, चढ़ि आवैंगे सांईं।। टेक।।
जा दिन सरबरि क्यों नहीं कीन्हीं, तोरे धनुष चढ़ाई।
वेही लछमन वेही रामचन्द्र हैं, जिनि सीता प्रनाई।। १।।
लंका कूदि बिलंका कूदे, उलटे चरणौं धाई।
जा पौनीक पियाना करि रे, सीता की सुधि ल्याई।। २।।
पकरि पेड़ जड़ मूल उखारे, नौ लख बाग बहाई।
तास अटारी जरै घास ज्यौं, या बिधि लंक जराई।। ३।।
अनंत कोटि दांने मजलसि में, अंगद शिला फिराई।
ऐसे दूत अनन्त कोटि हैं, उस रघुपति दल मांहीं।। ४।।
बोले रावण सुनों मन्दोदरि, हम सरबरि कोई नांहीं।
एक लख पूत सवा लख नाती, सौ योजन लग खाई।। ५।।
मेघनाद से पुत्र भारथी, कुम्भकर्ण से भाई।
सुरग पताल शंकि सब मानैं, तेतीसौं बंधि ल्याई।। ६।।
सैना अनन्त अपार चढ़त है, करि हैं धाई धाई ।
मोहि दल बादल अनन्त अपारा, वै दल मोकूँ राई।। ७।।
पचरंग झण्डे आंनि गड़े हैं, देखो धजा दिखाई।
अठारह पदम चढ़े हैं बंदर, रींछ लेत अंगराई।। ८।।
सौ सौ योजन फाल तास की, कूदैं भरि गल बाहीं।
कोटि बहत्तरि रीछ चढ़ें हैं, खेलत झांई मांई।। ९।।
बंध्या सेत सरवर पर गिरिवर, सायर शिला तिराई।

कहै मंदोदरी सुन पीया रावण, सैंना उतरी आई।। १०।।
बाज्या शंख पंचायन दल में, घोर अंधार लराई।
बंदर रींछ लंगूरी कूदें, देखो लंक लुटाई।। ११।।
रावण मारि विभीषण थरपे, छिन में छार उड़ाई।
रावण के काटे दस मस्तक, रती न सोना पाई।। १२।।
अंगद और सुग्रीव हनूं हरि, जांबवान बलि जाई।
सीता चरण लिये रघुबर के, जिन सब बंधि छुटाई।। १३।।
मैं तो चेरी जनम जनम की, अविगत अलख गोसाई।
असुर सिंघारन संत उधारन् **गरीबदास** पद गाई।। १४।। १२।।

बोलै दादुर मोरा पर्वत, बोलै दादुर मोरा।
राजा जोगी घर अपने हैं, चालें चाकर चोरा।। टेक।।

कारी घटा श्याम दल उमगे, बहुविधि घनहर घोरा।
कोयल कुहुक सुहावन सामन, ऊठत बौह बिधि लोरा।। १।।
शब्द पपीहा पी पी बोलै, श्याम बदन तन गोरा।
सुंदर मूरति अविगत सूरति, अनहद शब्द टकोरा।। २।।
पंच सखी नित सेवन करहीं, विरह अग्नि तन जोरा।
छिरकौं बदन मदन की दाझी, चंदन केसर घोरा।। ३।।
मैं तो पीव की बाट बुहारौं, जग बाहत ईंट रोरा।
गरीबदास पीव सुरगि सिधारे, गोपीयन से मन तोरा।। ४।। १३।।

आवो नैं बिरज राज हमारै, आवो नैं बिरज राज।
कानौं कुंडल मुकट मनोहर, धरि पीतंबर साज।। टेक।।

यौह बृजलोक अधरि कमलापति, जहां कंस को राज।
नन्द के नन्द बिसंभर साहिब, बड़े गरीब निवाज।। १।।
पौरि पहरुवा सोय गये हैं, देवकी करत अवाज।
सुनि बसुदेव भेव बालक के, पूरन कर हैं काज।। २।।
कोटि भान प्रकाश उजागर, अनंत कोटि धुनि गाज।
जमना छूहि चरण जद निकसी, नंद के नंद बिराज।। ३।।
कंस केस चानौर खपावन, गोकल आज सुराज।
गरीबदास कुबजा थी कुबरी, तुम कूँ हमरी लाज।। ४।। १४।।

घन आया प्रेम जगाया हो।। टेक।।

आया सावन महमंता,
जहां गरजि गरजि बरषंता, जहां दामनि खिमैं अनंता।। १।।
जहां गरजत हैं घनघोरा,
सुनि करत पपीहे शोरा, जहां बोले दादुर मोरा।। २।।
जहां बरषत घनहर कारा,

जहां दामनि खिमैं अपारा, बाजीगर खेल पसारा।। ३।।
सब सूभर सरवर तालं,
जहां कमल केतगी लालं, जहां उजल भँवर विशालं।। ४।।
सुर पूरन पांचौं मुद्रा,
जहां रक्त पीत बहु बदरा, जहां बोलै मीठे ददरा।। ५।।
जहां गंग जमन लहरानी,
जाकै सुरसती मध्य समानी, जहां न्हाते हैं ब्रह्मज्ञानी।। ६।।
जब खूल्ह्या सुषमन ताला,
देखी गगन मंडल चित्र शाला, दीदार दरश मतवाला।। ७।।
जहां झिलमिल झिलमिल होई,
देखो अठसठि का फल सोई, जहां रूप नवेला लोई।। ८।।
जहां बोलत कोयल कुंज्या,
जहां झलकैं तेज रु पुंज्या, कोई जांनत कोट्यौं मंझा।। ९।।
सुषमन सुरति जंबूरा,
कोई लावै जोगी पूरा, जाकूँ दरशै शंख कंगूरा।। १०।।
जाकै सेत छत्र बहुरंगा,
जाकै रूप रेख नहीं रंगा, जाकै रूंम रूंम में गंगा।। ११।।
जाकै शंख कला शशिभाना,
मैं तो हरदम दरश दिवाना, जहां **गरीबदास** गलताना।। १२।। १५।।
घन आया सब मन भाया हो।। टेक।।
आया भादौं बरियामा,
झर लागैं आठौं जामा, जो पूरण सबही कामा।। १।।
आसौजां अस्थीरं,
बरषा शुभ्र जल थल नीरं, निरमल स्वांति शरीरं।। २।।
कातिग धाम दिवाना,
पूरन अठसिद्धि नौनिधि धामा, अन्न धन सकल समाना।। ३।।
मंग सिर माल मुरारी,
अन्न धन भोगत हैं नर नारी, सौदं करने चले व्यौपारी।। ४।।
पोह पिहोवै न्हांनं,
लीजे परबी अश्नानं, जहां दीजे हंसा दानं।। ५।।
माह मकर की परबी,
अजपा तारी हर हरबी, दीन अभ्यागति दरबी।। ६।।
फागुन फूल बंसता,
अनहद ताल बरदंग घुरंता, बानी गावैं सुरनर संता।। ७।।
चैत चितवना जाई,

फूली बनराय अघाई, जहां अंबा मौर लगाई।। ८।।
ग्रीष्म ऋतु बैशाखा,
तपत करै गुन ताका, केसू फूले शाखा।। ९।।
जेठमास जगदीशं,
अंध धुंध गति ईशं, तपत चरण तन शीशं।। १०।।
साढ़ सलेमाबादी,
बरषा होती आदि अनादी, इन्द्र राजा बैठे गादी।। ११।।
सांमन सैल न कीजे,
राजा जोगी बैठि पतीजे, ऐसे बारा मास सुनीजे।। १२।।
लीजे सुरति निरति से लाहा,
अविगत निरगुण रूप निगाहा,
मिट गई **गरीबदास** सब चाहा।। १३।। १६।।

अथ राग मारू

साधौ अविगत रूप अपारा हो।
आसन असतल नहीं तास के, है मांहीं पर न्यारा हो।। टेक।।
नरसिंघ रूप धरे नहीं सतगुरु, नहीं बावन औतारा हो।
हिरणाकुस के उदर बिदारे, यौह माया बिसतारा हो।। १।।
त्रिलोकी त्रिपैंड न मापै ना बलि कीन्ह अखारा हो।
तहां उहां नहीं बिसंभर आये, ले संकल्प जौनारा हो।। २।।
परशुराम सुत जमदग्नि का, जिन छत्री मारि सिंघार्या हो।
जाका धनुष तोरि तुनके ज्यौं, रघुवंशी कुल न्यारा हो।। ३।।
तास पिता जगमदग्नि कहावै, क्रोध न अंगीकारा हो।
माता सही रेणुका कहिये, घाटि सराहत बारा हो।। ४।।
येते कर्त्ता कित से आये, ता संग पदम अठारा हो।
रावण मारि विभीषण थरपे, किये लंक शिषदारा हो।। ५।।
कंस केश चानौर खपाये, कृष्णचंद उदगारा हो।
बावन गंडे कर्त्ता जाकै, सब का सिरजनहारा हो।। ६।।
अष्ट कुली पर्वत पग जाकै, रती न रिंचक भारा हो।
सुरग पताल ख्याल एक नख में, शुन्य गगन गैंनारा हो।। ७।।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड रोमदर, ना गोवर्द्धन धारा हो।
महिमा अगम अनंत तास की, जानै जाननहारा हो।। ८।।
कीमति नहीं तास साहिब की, नहीं हलका नहीं भारा हो।
दास गरीब वंदना जाकूँ, नहीं जीत्या नहीं हारा हो।। ९।। १।।
साधौ ऐसा आसन लावौ हो।

आसन पदम प्रेवा हंसा, पौंन तुरी चढ़ि ध्यावौ हो।। टेक।।
मूल चक्र की मुद्रा साधौं, तहां गणेश मानावौ हो।
आसन बंधि बिसंभर चीन्हौं, नाद बिंद गोहरावौ हो।। १।।
नाभ कँवल दर बंकनालि है, द्वादश तहां समावौ हो।
उलटी चाल चलौ जल मीनां, तास रहत घर पावौ हो।। २।।
नौ तरंग नाद के अंदरि, कैसे मारिग जावौ हो।
कछिब ध्यान धरो दिव्य दृष्टि, पैठि पतालौं धावौं हो।। ३।।
तहां एक नघ नारायन रूपं, जाकी कीमति ल्यावौ हो।
सत्तरि सुरंग तास के ऊपरि, बिनहीं बांस चढ़ावौ हो।। ४।।
बिन बरदवान नांच तूं निरभै, दो सुर आंनि मिलावौ हो।
औघट पंथ बिचालै दरिया, मानसरोवर पावौ हो।। ५।।
ऊठै तरंग गंग त्रिबैंनी, तहां वहां हंस न्हवावौ हो।
याह तो बाट सुगम सतगुरु से, आगे भेद बतावौ हो।। ६।।
पछिम पौंन करैं उदगारं, पूरब द्वारै आवौ हो।
पूरब उत्तर मध्य द्वार है, तहां नेक बिरमावौ हो।। ७।।
जहां से फेर पियाना कीजै, बजर डंड गति लावौ हो।
सुरति सुहागिन अधरि हंसनी, सोहं जाप जगावौ हो।। ८।।
नाभ कँवल कर मंडल असथिर, जहां दुरबीन दिखावौ हो।
त्रिकुटी कँवल में ऊगै चंदा, धोखा दुंद बहावौ हो।। ९।।
ता पर सोलह सुरंग और है, सतगुरु मति बेलावौ हो।
चंद में सूर सूर में चंदा, योजन च्यार चढ़ावौ हो।। १०।।
इहां एक बंकनालि अमृत की, अमीपान पै प्यावौ हो।
भंजन भरो डरो मति हंसा, तिल प्रवानि में आवौ हो।। ११।।
ताकै अंदरि सुरग द्वार है, हंसा हंस मिलावौ हो।
संख भान झिलमिल उजियारा, तहां वहां चौंर ढुरावौ हो।। १२।।
अति आधीन होय जो प्रानी, तिसको पासि बैठावौ हो।
गरीबदास याह अकथ कथा है, भेदी को समझावौ हो।। १३।। २।।
संतो रावण खेत बुहार्‌या। जाकै दल बल अनंत अपारा।। टेक।।
हरि ल्याये सीतारानी, जाकी अकथ कथा प्रवानी।
जिन तेरा बिरद बधाया, औह शंभू उन्हें उपाया।। १।।
जाकै सैना पदम अठारा, बंदर लीला और कारा।
है सो भूर भद्र बहुरंगी, बंदर और रीछ सिरंगी।। २।।
राम और लछमन जोरी, जाकै रींछ बहत्तर कोरी।
जाकै सावंत सूर अलिलं, जाकी ना सरबरि समतुलं।। ३।।
जाकै अंगद और सुगरीमां, जाकै जांबवांन बलभीमां।

जाकै नल नील दरबारा, तातैं सेत बंध्या जलधारा।। ४।।
जाकै सेत धजा फहराहीं, पचरंग झंडे है दल मांहीं।
है सो बजर दण्ड बहुरंगी, जाकी सैंना अजब सिरंगी।। ५।।
जाकै लछमन हनू हठीला, रतनाला मस्तक पीला।
है सो भूर भद्र बिकराला, जिनकी लख लख योजन फाला।। ६।।
जिन नौलख बाग उपार्‍या, सो तो डारि दिया मंझि धारा।
जिन तेरी नेक न मानी शंक्या, गढ़ फूक दिया है लंका।। ७।।
जाकै अंगद से बलधारी, रावण की सैना सारी।
जिन चरणौं शिला फिराई, जहां तेरे दूत सबै थे भाई।। ८।।
जदि अंगद चरण पसार्‍या, जहां शेष कलमल कारा।
जहां कुंभकर्ण महमंता, अंगद के लखे न अन्ता।। ९।।
जहां बजैं दुंदई नादं, लीला कुछि अगम अगाधं।
जहां जबैं शंख और भेरी, सैंना उतरी बिन बेरी।। १०।।
जहां दरवन जंग दुदकारैं, जहां दूत खड़े किलकारैं।
लूटे लंक गढ गाढा, जिनकी सौ सौ जोजन डाढा।। ११।।
रावण महरावण मारे, विभीषण राज दिया रे।
जिन तेतीस बंधि छुटाये, हरि चेरी सीता ल्याये।। १२।।
दूलह साहिब अविनाशी, तूं काटै जम की फांसी।
गरीबदास जन तेरा, मैं जुगन जुगन का चेरा।। १३।। ३।।
सतगुरु सूरे संत सुजाना, संतों खेत मंडे मैदाना।। टेक।।
ध्रू प्रहलाद अगाधा, लिख दिया राज अबाधा।
नरसिंघ रूप मुरारे, जिन हिरनाकुस से मारे।। १।।
जिन गज और गिराह उबारे, देखो गीध ब्याधि से त्यारे।
भीलनी करी अमाना, देखो गनिका चढ़ी विमाना।। २।।
अब पारासुर परि आई, जाका अचिरज कह्या न जाई।
नारद के सिर बाजी, सींगी ऋषि हो गये पाजी।। ३।।
सिद्ध चौरासी चोरे, तेतीसौं खूब घंमोरे।
उदालिक अधक उदासी, पहली पुत्र पीछै भई दासी।। ४।।
सुरपति से बिभचारी, आगे गौतम ऋषि की नारी।
मदन किया उदगारा, तातैं चंद लगी मिरग छारा।। ५।।
दुर्वासा से कूटे, सो तो इन्द्रपुरी में लूटे।
मदन भवंगा जागै, सो तो उर्वशी के कुचि लागै।। ६।।
माया का मद भारी, मोहे संगल दीप की नारी।
जहां कटे मछंदर जोगी, अब आगै क्या क्या होगी।। ७।।
गोरख तुरा कुदाया, मछंदर बेगि जिवाया।

कहां लग बिदर बखानौं, राजा त्यारे कोटि निनानौं।। ८।।
गोरख दिया कढ़ियाला, जहां सार झड़ैं चौ ताला।
जाकै नौ लख सींगी बाजै, जोगी शब्द सिंध में साजै।। ६।।
जाकै सोलह सहंस सुहेली, एक से एक अधिक नवेली।
जाकै लख अठारह घोरा, सुलतानी संगर तोरा।। १०।।
शुकदेव तुरा कुदाया, सो तो गगनि मंडल कूँ धाया।
जिन तज्या धात मल मूता, जोगी तखत गया है छूता।। ११।।
मनसूर मगन महमंता, जाकी अजब बतीसी दंता।
सो तो सन्मुख शूली चढ़िया, माया लूटे बहुत अंगडिया।। १२।।
भरथरि गोपीचंदा, सतगुरु मेटि दिये दुःख दुंदा।
बाजीद फरीद फराका, जिन लाई अविचल डाका।। १३।।
सेऊ संमन साजे, सतुरु कूँ खूब निवाजे।
रंका बंका ध्यानी, पद पदैं मिलैं प्रवानी।। १४।।
पीपा परवन आशा, सो तो कूदे दरिया दासा।
जिन बाही तेग सरोही, पीछै हुई न आगै होई।। १५।।
संगि रैदास कमाला, जिन पीया प्रेम पियाला।
जिन कनक जनेऊ काढ़्या, सो तो है फौजन का लाडा।। १६ ।।
चरपट और कनेरी, जंगी जवाहर कलवेरी।
अभै जलंधर नाथा, सो तो मंगल ज्ञाने माता।। १७।।
सैंना धन्ना हिजूरी, सदना कर्म कसूरी।
अजामेल अधिकारी, जिन पुरी अयोध्या त्यारी।। १८।।
हरीचन्द्र सतवादी, जहां दास मलूक अबादी।
नानक दादू तुरसी, सो तो जाय चढ़े हैं कुर्सी।। १६।।
अनन्त कोटि घणनामी, कहां लग बिरद बखानौं स्वामी।
कर्मा मीराबाई, सो तो मुकट कमाली छ्याई।। २०।।
पूल्ही पद परवाना, जा का गगन मंडल अस्थाना।
राबिया रंग चुवाया, मक्का तिहुँ मजलि बुलाया।। २१।।
अब आये नाम कबीरं, तातैं टूटे जम जंरीरं।
जाकी तोबा लाल बिराजैं, सो तो धर्मराय परि साजैं।। २२।।
पाखरिया रनधीरं, जोध्या खेत मंडे बलबीरं।
गरीबदास शरनाई, बोलो सत्य कबीर दुहाई।। २३।। ४।।
सतगुरु आदि भक्ति उपराजी हो।
वेद कतेब कत्रनी दिल में, झगरे पंडित काजी हो।। टेक।।
जंबूदीप सिहर सब दुनिया, कोई न जासैं राजी हो।
ऐसा ज्ञान अमान तास का, किया जगत सब माजी हो।। १।।

षटदर्शन ओर दहूँ दीन का अंदर हिरदा दाझी हो।
सारी सृष्टि इष्ट कूँ निंदै, सब दोजख के साझी हो।। २।।
हाफिज हेत कुहेत करत हैं, पीर मुलानें हाजी हो।
राम नाम की निंद्या कर के, बूडत है सब बाजी हो।। ३।।
ज्ञान तुरंगम के असवारा, चढ़े कबीरा ताजी हो।
यौह संसार पार नहीं पावै, सब सतगुरु के पाजी हो।। ४।।
अनन्त कोटि जुग बूडत हो गये, झूठे गुरवा जाजी हो।
दास गरीब नहीं कोई सरबरि, चढ़े कबीरा नाजी हो।। ५।। ५।।

सतगुरु भक्ति अनाहद ल्याये हो।
अलल पंख होय किया प्याना, गगन मंडल कूँ धाये हो।। टेक।।
नाद न बिंद सिंध बिन सरवर, जहां वहां हंस चुगाये।
लुबधी भँवर उजल अनरागी, कमल ध्यान बिरमाये हो।। १।।
अधरि चंद जहां अधरि कमोदनि, देखत कबू न धाये हो।
सूरजमुखी संख सरवर में, मानिक हंस अघाये हो।। २।।
अधरि अलग मग है हमरा, पंथी पंथ न पाये हो।
मादर पिदर नहीं सतगुरु के, ना वै जननी जाये हो।। ३।।
अधरि अमान ध्यान धरि देखो, ना कहीं गये न आये हो।
है अनरागी लखि बड़भागी, पूजत नहीं पुजाये हो।। ४।।
अर्श मांहि षट कूंन ख्याल है, दीखत नहीं दिखाये हो।
अर्ध चन्द्र अंकुस है असथरि, मौज मिहर से पाये हो।। ५।।
ऐनक रूप आयना असली, मध्य मुकट दरशाये हो।
दास गरीब कबीर मिहर से, फूल माल पहराये हो।। ६।। ६।।

सतगुरु अटल पटा लिख दीजै हो।
इसतैं आगे कहा चढ़ाऊँ, शीश ईश हरि लीजै हो।। टेक।।
कृपा करो हरो मन माया, जे तूं सतगुरु रीझै हो।
रिंचक मिहर कहर जरि जांहीं, या कृपा से जीजै हो।। १।।
कर्म करो साहिब अविनाशी, प्रेम पियाला पीजै हो।
ललोपतो की भक्ति छाडि दे, ऐसे कौन पतीजै जो।। २।।
ब्रह्म अग्नि में बिरह बियोगी, तन मन पिंजर बीझै हो।
गरीबदास यौह अटल पटा है, नाम अभै पद सीझे हो।। ३।। ७।।

सतगुरु कीन्हा मगहर पियाना हो।
दोन्यूं दीन चले संगि जाकै, हिंदू मुसलमाना हो।। टेक।।
मुक्ति खेत कूँ छाडि चले है, तजि काशी असथाना हो।
शाह सिकन्दर कदम लेत है, पतिशाह सुलताना हो।। १।।
च्यार वेद के बकता संगि हैं, खोजी बड़े बयाना हो।

शालिगराम सुरति से सेवैं, ज्ञान समुंद्र दाना हो।। २।।
षट्दर्शन जाके संगि चाले, गावत बानी नाना हो।
अपना अपना ईष्ट संभालैं, बांचैं पोथी पाना हो।। ३।।
चद्दरि फूल बिछाये सतगुरु, देखे सकल जिहाना हो।
च्यार दाग से रहत जुलहदी, अविगत अलख अमाना हो।। ४।।
बीरसिंह बघेला करै बीनती, बिजली खान पठाना हो।
दो चद्दरि बख्शीस करी है, दीन्हा यौह प्रवाना हो।। ५।।
नूर नूर निर्गुण पद मेला, देखि भये हैराना हो।
पद ल्यौलीन भये अविनाशी, पाये पिण्ड न प्राना हो।। ६।।
शब्द सरूप साहिब सरबंगी, शब्दें शब्द समाना हो।
दास गरीब कबीर अर्श में, फरकैं धजा निशाना हो।। ७।। ८।।
देख्या मघर जहूरा हो।
काशी में कीर्ति करि चाले, मिले नूर में नूरा हो।। टेक।।
माया आदि अर्श तै उतरी, बनी अपसरा हूरा हो।
हम तो बरैं कबीर पुरुष कूँ, तूं है दुलहा पूरा है।। १।।
माया कहै कबीर पुरुष से, देखो बदन जहूरा हो।
अर्श विमान स्वर्ग में मंदर, भोगैं हम कूँ सूरा हो।। २।।
कहै कबीर सुनो री माया, कुटिल नजरि तुम घूरा हो।
जिन भोगी सोई कलि रोगी, हो गये धूरम धूरा हो।। ३।।
माया कहै कबीर पुरुष से, मैं हूँ जग से दूरा हो।
मैं तुमरी पटरानी दासी, राखौं पलक हजूरा हो।। ४।।
कहै कबीर सुनो री माया, तुम तो लड्डू बूरा हो।
जो तुझि खावै सो बह जावै, तास अकलि के कूरा हो।। ५।।
सेत मुकट जहां सेत छत्र है, जाबैं अनहद तूरा हो।
दास गरीब कहै सुनि माया, हमसे रहियौ दूरा हो।। ६।। ९।।

अथ राग मंगल

प्रपट्टन परधाम, जहा मन मानिया।
सतगुरु के उपदेश, अगमपुर जानिया।। टेक।।
जहां औघट घाट कपाट, दरीबा दूर है।
कायर का क्या काम, पौहंचसी सूर है।। १।।
बंके ब्रह्मद्वार, पार नहीं पाईये।
जाके आदि अंत नहीं कोय, कहो क्या गाईये।। २।।
नौलख घाटी वारि, मेरडंड बूझिया।
सतगुरु के उपदेश, अगमपुर सूझिया।। ३।।

जहां अठारह करोड़ि मेर दण्ड, उलंग न कीजिये।
जहां हंस सरोवर धाम, बिंबल रस पीजिये।। ४।।
जहां फिरैं पियाले प्रेम, कलाली हाटि है।
कायर गिरि गिरि जांहि, विषम सी बाट है।। ५।।
पीवै सुराही संत, तत गलतान है।
जहां दरवै नूर अपार, दर्श कुरबान है।। ६।।
जहां चौदह तबक न कोय, तीन लोक नहीं पेखिया।
सतगुरु के उपदेश, अगमपुर देखिया।। ७।।
जहां धर अंबर नहीं धौल, न चंदा सूर है।
नहीं पानी पावक पवन, अगमपुर नूर है।। ८।।
नहीं सुरग मिरत पाताल, न बैकुण्ठ वास है।
नहीं पांच तत गुन तीन, न शब्द निवास है।। ९।।
नहीं शेष गणेश महेश, न नारद नाम है।
जहां ब्रह्मा वेद न कोय, हमारा धाम है।। १०।।
जहां ज्ञान ध्यान गमि नांहि, तहां झर लागिया।
कोई जानैं जाननहार, सोई बड़ भागिया।। ११।।
जहां सुरति निरति नहीं जाय, बेगमपुर वास है।
शब्द अतीत अलेख, नूर प्रकाश है।। १२।।
जहां बाजैं अनहद नाद, तूर तुतकार है।
तहां झालरि संख अपार, महल गुलजार है।। १३।।
जहां ताल बरदंग नरेश, देश जिस बाजिया।
मुरली सुनत अवाज, विरह घट दाझिया।। १४।।
जहां झनकै झीनी झांझि, सांझ निश बासरी।
दुर्लभ देश अनूप, शब्द प्रकाशरी।। १५।।
जहां दामनि दरवैं नूर, घटा घन बरषहीं।
उनमन ऐंनक लाय, अमर पद परखहीं।। १६।।
जहां नूरी कंदल बास, भौंर गुंजार हीं।
अनरागी निहतंत, शब्द झनकारहीं।। १७।।
अक्षर धाम की डोरि, परम शुन्य लागिया।
कोटि जन्म के कर्म, भ्रम सब भागिया।। १८।।
जहां मक्रतार पद पूर, तहां जगदीश है।
तन मन अरपि चढ़ाय, खेल बिन शीश है।। १९।।
शब्द महल सुख धाम, जहां चलि जाईये।
झिलमिल झिलमिल होय, तहां मन लाईये।। २०।।
जहां नौलख चांवरि होंहि, नूर दीदार में।

कोटि भान छिपि जांहि, रूंम उजियार में।। २१।।
दिलदाना महबूब, खूब पद पाईया।
सो हंसा सतलोक, अमरपुर छ्याईया।। २२।।
जन दुलहनि दास गरीब, अकल पद पेखिया।
धन्य बंदीछोड **कबीर,** अटल बर देखिया।। २३।। १।।
मुकताहल की पीठि, लगी सौदागरी।
करि सौदा सतभाय, शब्द बेहागरी।। टेक।।
लाल अनूपम खूब, दृष्टि भरि देखि रे।
लगी गूदरी आनि, बनज भल पेखि रे।। १।।
मणि महंगी महबूब, बिकै नहीं मोलि रे।
चिक अंदरि झलकंत, तुलै नहीं तोल रे।। २।।
रतन खजाना खूब, लगे बैजार रे।
सतगुरु मिले दलाल, असलि ब्यौपार रे।। ३।।
बाजैं बीन अगाध, अनूपम नादुवा।
बरबै राग बिहाग, विलंबे साधुवा।। ४।।
कसतूरी की लपट, महल मकरंद रे।
फूल रही राय बेलि, भँवर का फंध रे।। ५।।
नागरबेली निराश, मूल ना फूल रे।
पान अनूपम सार, गगनि असथूल रे।। ६।।
वीरे शरस दुकान, दरीबे जाईये।
लाल सुरंगा प्रेम, सु हिलमिल खाईये।। ७।।
साबति करो शिताब, उचालू हाटि है।
सतगुरु खड़े दलाल, सती सौं साटि है।। ८।।
सिर साटे का खेल, पियाला पीजिये।
कपटी लावैं काट, भेद ना दीजिये।। ९।।
कायर कीर अनंत मिलैंगे बहुत रे।
अमी महारस कंद, न दीजे सहत रे।। १०।।
खोखापुर के काग, मिलै दिन दोय रे।
अरबों में कोई हंस, हमारा होय रे।। ११।।
भांडी से क्या भेद, अभेद दुकान है।
को जानैं संत सुजान, अमरपुर थान है।। १२।।
संत विवेकी साध, सिकल कोई बूझसी।
हूँठ पटण के नगर, सूरमा झूझसी।। १३।।
कूँची जड़ी सिंदूख, फिरंगी ख्याल रे।
कोई जुगता जोगी खोल्हि, अनूपम माल रे।। १४।।

सुषमन ताली लाय, अनूपम अर्श रे।
उनमन अपरमपार, झिलमिला दर्श रे।। १५।।
तीरथ एक तलाब, नदी बरियाम है।
मांनसरोवर हंस, अनूपम धाम है।। १६।।
मोती चुनि चुनि खांहि, चितारौ संत रे।
दोन्यूं दीन गंवार, भुलानें पंथ रे।। १७।।
षटदर्शन का खेल, खिलारी ख्वार है।
हाड चाम का गाम, कौन आचार है।। १८।।
सप्त शुन्य का भेद, लखै कोई जौहरी।
ब्रह्मण्ड इकीसौं वारि, हदि है भौंहरी।। १९।।
इस बिचि भरमैं हंस, हिसाब कराय ले।
धर्मराय की कलम, फेर नहीं बाहिले।। २०।।
लागी शुन्य सुरंग, सलहली सेज रे।
प्रपट्टन के घाटि, झिलमिला तेज रे।। २१।।
तन मन छाके प्रान, हंस रस भोगिया।
जहां खेलै नाम **कबीर,** अरु गोरख जोगिया।। २२।।
थकत भये सब भेष, अलेख न पाईया।
पत्थर पानी लाग, भ्रम डहकाईया।। २३।।
अनरागी निहतंत, हमारी जाति रे।
जन कहते दास गरीब, चलैं सब गात रे।। २४।। २।।
अविगत नगर निधान, अगम बेगमपुरी।
सिकली जीन पलानि, चढ़े चेतन तुरी।। टेक।।
ब्रह्म कमल कसतूर, फूल दरबंत है।
लंघे औघट घाट, विझाना पंथ है।। १।।
जहां उठैं महल मकरंद, पियाले पाख हैं।
मतवाला कोई एक, सोफिया लाख हैं।। २।।
बिरहा बंगी मीत, बिरह तन बेधिया।
दाझे पिण्ड रु प्रान, अमी रस भेदिया।। ३।।
शीशी संख सुराही, प्याले फिरत हैं।
सूरे सौंपे शीश, कायर नर डरत हैं।। ४।।
जुलहे मार्‍या बान, द्वास्यौं फूटिया।
अंतरि पड़िया छेक, देख भल टूटिया।। ५।।
भलका मार्‍या ऐंन, गैंन सब गूंजिया।
तीनि लोक ब्रह्मण्ड, तबक सब सूझिया।। ६।।
कौन विवेक विचारि, हमारे आईया।

भौजल बूढत हंस, आनि विरमाईया।। ७।।
गुनहगार बेकार, फिलाद पिछानिया।
मादर पिदर अगाध, अपन कर जानिया।। ८।।
तीन्यूं लोक लुटंत, पड्या जम शोर है।
बेलनियां वरियांम, जुरावरि, जोरि है।। ६।।
जम किंकर कर जोर, चलैं तिस देख रे।
धर्मराय के अंक, मिटावौं लेख रे।। १०।।
जीव जूंनी नहीं जांहि, बांह ठाढै गही।
दरगह मंझि हिजूरि, पकड़ि छेकी बही। ११।।
सप्त शुन्य परि वास, अगमपुर धाम है।
धन बंदीछोड **कबीर,** तुम्हारा नाम है।। १२।।
कहता दास गरीब, शब्द आधार है।
सतगुरु नजरि निहाल, हंस भौपारि है।। १३।। ३।।
लगन लगी सतलोक, सिंध घर कीजिये।
अमी महारस प्रेम, पियाला पीजिये।। टेक।।
रूंम रूंम रंग भीनि, चीन्ह चितलाय ले।
मुकताहल महबूब, पदम झलकाय ले।। १।।
झलकैं पदम अनूप, कला संख समानी।
शब्द घटा घनघोर, झिलमिलै दामनी।। २।।
संगलदीप सैलान, शिखरि शुन्य अलस है।
बूठैं धार अखण्ड, कुंभ एक कलश है।। ३।।
पश्चिम द्वारा खामि, धाम कूँ पेखि ले।
सनकादिक ब्रह्मलोक, नजरि भरि देख ले।। ४।।
आगै भेद अपार, दिवाना देश है।
अदली आप **कबीर,** तखत जिस पेशि है।। ५।।
छूटैं फैंन फिराक, बहुरि नहीं आवहीं।
सो हंसा सतलोक, अमरपुर छ्यावहीं।। ६।।
सतलोक असथान, हमारा बास है।
कहते दास गरीब, शब्द प्रकाश है।। ७।। ४।।
लगनि लगी सतलोक, अमरपुर चलिये।
शुन्य मंडल सतलोक, दीप धर बालिये।। टेक।।
जुगिया नाद बजाय, रह्या है ओलनैं।
सतलोक के अंक, लिखे हैं चोलनैं।। १।।
हम बिभचारनि चीर, छार बहुते किये।
मिहरवान महबूब, तुम्हौं अनगिन दिये।। २।।

होते कीट पतंगा, संग किस बिधि लिये।
कंपे जौरा काल, सही जुग जुग जीये।। ३।।
अकल उदासी राग, शिखर में बोलता।
सुरति निरति भई नेश, पवन नहीं डोलता।। ४।।
मन राते सतलोक, सिंध में गैब है।
उलटि मिले अनराग, तहां नहीं ऐब है।। ५।।
निरगुण झड़ का भेव, भँवर कोई जानसी।
दास गरीब समाधि, अमरपुर ठानसी।। ६।। ५।।

दीन के जी दयाल, भक्तित विरद दीजिये।
खाने जाद गुलाम, अपन कर लीजिये।। टेक।।

खानें जाद गुलाम, तुम्हारा है सही।
मिहरवान महबूब, जुगन जुग पति रही।। १।।
बंदी का जाम गुलाम, गुलाम गुलाम है।
खड़ा रहै दरबारि, सु आठौं जाम है।। २।।
सेवक तलबदार, दरि तुम्हारे कूक हीं।
औगुन अनंत अपार, परी मोहि चूक हीं।। ३।।
मैं घर का बंदिजादा, अरज मेरी मानिये।
जन कहता दास गरीब, अपन कर जानिये।। ४।। ६।।

धन्य सतगुरु वरियाम, अटल वर हम बरी।
दुलहनि के बड़ भाग, सुहागनि धन्य घरी।। टेक।।

चलो सखी सतलोक, सेहरा गाईये।
मोतियन थाल भराय, सु चौक पुराईये।। १।।
हलदबान हित कीन्ह, बीन जहां बाज हीं।
धन्य सतगुरु उपदेश, दिहाड़ा आज हीं।। २।।
दुलहनि दोहे देहि, सु मंगल गांव हीं।
सतपुरुष के धाम, सु चौंर ढुरांव हीं।। ३।।
ढुरैं सुहंगम चौंर, सु चौरी गाईये।
ब्रह्मा खंडे वेद, लाडो परनाईये।। ४।।
शंकर साहा सोधि, समागम कीजिये।
विष्णु बिसंभर रोपि, अटल वर दीजिये।। ५।।
नरद पूरै नाद, सकल सुर आव हीं।
शुन्य मंडल सतलोक, समागम छ्यावहीं।। ६।।
जहां सेत धजा फरराहि, अर्श तंबू तना।
अनहद नाद अगाध, ल्याये नूरी बना।। ७।।
नाद तूर डफ झांझि, संख मुरली बजै।

बरदंग झालरि भेरि, अजब तुरही सजै।। ८।।
रंग महल में रास, बिलास अपार है।
चलो सखी उस धाम, सु कंत हमार है।। ९।।
दस प्रकार अपार, अजब धुनि धाम है।
दुलह वर वरियाम, पीया निहकाम है।। १०।।
विषम दुहेली बाट, पंथ नहीं पाईये।
शुन्य मंडल सतलोक, कौन विधि जाईये।। ११।।
शुन्य मंडल सतलोक, दुलहनी दूर है।
शब्द अतीत पिछानि, नूर भरपूर है।। १२।।
नूर रह्या भनपूर, दिवाना देश है।
दुलहनि दास गरीब, तखति जिस पेशि है।। १३।। ७।।
जोगजीत सतनाम, बियालीस वंश रे।
चार्‌यौं जुग प्रवानि, रहै तेरा अंश रे।। टेक।।
द्वादश पंथ चलाय, चिताया जगत रे।
सतगुरु आदि अनादि, ल्याये निज भक्ति रे।। १।।
इच्छा रूपी राज पाट, सब भोग रे।
सुनि ब्रह्मज्ञानी ज्ञान, सार सत जोग रे।। २।।
इन्द्रराज बड़ पदई, कऊवा बीठ रे।
महत लोक लग जानौं, झूठी पीठ रे।। ३।।
ये ख्याली के ख्याल, बाजी सब बंध है।
या जग में कोई जानि, साधु निहगंध है।। ४।।
निरवासी निहकाम, इच्छा नहीं धार हीं।
जो जन शब्द अतीत, सो सतगुरु म्हार हीं।। ५।।
ज्यौं कमला मध्य बास, ऐसे हम आईया।
बिनसे काया कमल, बास कहां पाईया।। ६।।
गंधी नूर जहूर, हमारा अंग है।
कहता दास गरीब, नहीं कुछि रंग है।। ७।। ८।।
तिल उनमान कपाट, पवन बंध छेद रे।
बिषमी बाट बिचारि, अगोचर भेद रे।। टेक।।
जहां उजल पौहप अनंत, सरोवर मंझि रे।
हंसा हिलमिल खेल, अनूपम कुंजि रे।। १।।
मगज मनी कूँ पीसि, बिरह तन फूकि रे।
गुनहीं दम दरहाल, तखत नित कूकि रे।। २।।
च्यार वेद का ज्ञान, गंवारी रोज रे।
अलल पंख अनराग, बिहंगम खोज रे।। ३।।

उठैं गरज घनघोर, उडाना भौंर रे।
छत्र सेत अनूप, सुहंगम चौंर रे।। ४।।
अगमदीप असथान, अनूपम वास है।
जहां हंस पढ़ै चटसाल, कबीर खवास है।। ५।।
ज्ञाता से घर दूरि, भ्रम भूले गुनी।
जन कहते दास गरीब, लगी झर उनमुनी।। ६।। ६।।
औघट पंथ अपार, सु झीनी गैल रे।
संत विवेकी साधु, करै कोई सैल रे।। टेक।।
कोईक जन ठहरांहि, बिरंच गिरि गिरि परैं।
शेष महेश गणेश, पैर डरते धरैं।। १।।
नहीं जाप नहीं थाप, न पंडा भीति रे।
नहीं सेव नहीं देव, न महल मसीति रे।। २।।
नहीं रूप नहीं रेख, विवेक न भेष रे।
सूरति मूरति जानि, सकल सब एक रे।। ३।।
कलमां रोजा बंग, निवाज न नेम रे।
तीरथ बरत न गयासि, जहां एक प्रेम रे।। ४।।
नहीं अचार विचार, न धोती ध्यान रे।
अठसठि का फल एक, नाम निज जानि रे।। ५।।
सत्तरि काबे देख, अजब मखमूल रे।
जगन्नाथ जगदीश, अर्श मठ झूल रे।। ६।।
मन में मक्का जानि, काजी कजा कीजिये।
मुलां मुरग न मारि, जुबाब कहां दीजिये।। ७।।
सब घटि है रहमान, अलह का नूर रे।
क्या मुरगी क्या बकरी, गऊ क्या सूर रे।। ८।।
तुरका तसबी पहरि, हिंदू माला डार हीं।
काफर कुफर न कीन्ह, गऊ सूर मार हीं।। ९।।
हिंदू पूजैं देहरे, मुलसलमान घोर रे।
दोन्यूं दीन गँवार, अकलि हरी चोर रे।। १०।।
पंडित के पट फुटि, काजी भया अंध रे।
षटदर्शन कूँ मारि, गया देखो चंद रे।। ११।।
भक्ति करेगा कौन, भाव का नाश रे।
भंगी पीवैं भांगि, भखै मद मांस रे।। १२।।
जपौ सुहंगम नाम, गाम गमि चित धरो।
नेकी निश दिन खाटि, बदी कूँ परहरो।। १३।।
छाडो बाद बिबाद, खुदी निंदा तजो।

हंसा पौंहचे लोक, साहिब सतगुरु भजो।। १४।।
तजि पाखण्ड अभिमान, गुमान न कीजिये।
सील संतोष विवेक, ज्ञान धरि लीजिये।। १५।।
प्रपट्टन के बैन, कहूमैं कौन से।
कोई न बूझन हार, रहूँगा मौन से।। १६।।
सुपना भिसति बैकुण्ठ, ठगौरी ठीक रे।
बार बार हम आनि, दई तौकूँ सीख रे।। १७।।
प्रपट्टन के हंस, हिसाब कराई ले।
धर्मराय के अंक, सो लेख मिटाई ले।। १८।।
दिल दरिया में पैठि, मंजन कर आरसी।
शब्द अतीत पिछानि, समझि निज पारसी।। १६।।
जुगन जुगन सतसंग, रंग अविचल भये।
अगम दीप सतलोक, जहां हंसा गये।। २०।।
जुगन जुगन सतसंग, बौहरि नहीं आवहीं।
जन कहते दास गरीब, अमरपद पावहीं।। २१।। १०।।

अविगत अपरमपार, पार नहीं पावै हो।
नाद बिंद का जीव, भ्रम डहकावै हो।। टेक।।

मन मनसा नहीं ठौर, ध्यान कहां धरिय हो।
कासैं करौं फिलादि, कहौ क्या करिये हो।। १।।
तजि दुरमति का संग, रंग नहीं लागै हो।
कोटि जनम का श्वान, हाड नहीं त्यागै हो।। २।।
विषै हलाहल खाय, जगत सब धूता हो।
ज्यो हेड़ी के संगि, शिकारी कूत्ता हो।। ३।।
कऊवा तजै न बीठ, हंस कैसे होई हो।
अंध गुरु का चेल, खेल सब खोई हो।। ४।।
बैठ्या मंझि मंझारि, मूसटे खाई हो।
बाहरि किसा अचारि, बूडि पंडिताई हो।। ५।।
बग मीनी का ध्यान, नहीं नर धरिये हो।
भौसागर में आंनि, बौहरि क्यों परिये हो।। ६।।
पारस पद कूँ परसि, सुरति ठहरावो हो।
निरति निरंतर लाय, अगम पुर जावो हो।। ७।।
जहां झिलमिल झिलमिल नूर, अजब खिलखाना हो।
जन कहते दास गरीब, सो देश दिवाना हो।। ८।। ११।।

निज घर सेती आये, जिन घर जाना हो।
मुरशद महली आनि, दिया प्रवाना हो।। टेक।।

प्रपट्टन के पूरि, चबाई भाठी हो।
अगम दीप असथान, उतरि गये घाटी हो।। १।।
सुखसागार दरियाव, दरीबा दरवै हो।
मोहि लिया मन मिरग, राग रंग बरवै हो।। २।।
बरवै राग बिहाग, सु बीन बजावै हो।
हेरत है दिन रात, घात गति लावै हो।। ३।।
लग्या प्रेम का बाण, तान तुतकारा हो।
सतगुरु साहिब आनि, सु खेल शिकारा हो।। ४।।
भाजि गई सब डारि, कलायर कुरहै हो।
जन घायल दास गरीब, लग्या शर बिरहै हो।। ५।। १२।।
मंगल एक अगाध, साध मिल गावो हो।
अगर दीप अघनूस, सुरति ठहरावो हो।। टेक।।
अगर दीप अघनूस, सुहंगम सेवा हो।
कासें कहिये भेद, मिले गुरुदेवा ही।। १।।
कंदर्प बीरज खामि, पवन कूँ हेरो हो।
त्रिकुटी धरियो ध्यान, चंचल मन फेरो हो।। २।।
खूल्हैं वजर किवार, सुषमना ताली हो।
उरध मुखी एक कूप, विहंगम माली हो।। ३।।
अछै बिरछ एक बाग, केतगी फूलै हो।
गूंजै भँवर अपार, सु संपट खूल्है हो।। ४।।
शुन्य सतोगुन मांहि, शब्द अनरागी हो।
हंस चलै सतलोक, सोई बड़भागी हो।। ५।।
अर्श खुरदनी खीर, कबीर कलाला हो।
जन कहते दास गरीब, अमीरस प्याला हो।। ६।। १३।।
चलो हामरी चाल, हाल सब कहता हो।
औघट पंथ अपार, भेद नहीं लहता हो।। टेक।।
अक्षर धाम की डोरि, घोर घनघोरा हो।
गरजत सिंध अपार, सु मोर चकोरा हो।। १।।
अविगत मारग झीन, सु मक्रतारा हो।
झिलमिल झिलमिल होय, सो देश हमारा हो।। २।।
जहां एक गुमट अनूप, धूप नहीं छाया हो।
सतगुरु सत**कबीर,** सो भेद लखाया हो।। ३।।
चढ़ि चढ़ि परैं अनंत, संत कोई जाता हो।
जन कहते दास गरीब, पंथ अति बांका हो।। ४।। १४।।
सुनों हमारी सीख, बीक धरि ऊँची हो।

नीचा परहरि छाडिद्व समझि निज कूँची हो।। टेक।।
ताला कूंची लाय, खोल्हि मठ द्वारा हो।
जहां बैठ्या पुरुष अलेख, आप कर्तारा हो।। १।।
प्रपट्टन के पूरि, सो सूभर भरे फुहारा हो।
त्रिवैंणी संजोग, सहंसर धारा हो।। २।।
जहां ढुरैं सुहंगम चौंर, ब्रह्म दीदारा हो।
हंस चले सतलोक, मिलन परिवारा हो।। ३।।
जहां जगमग जोत अपार, अजब गुलजारा हो।
जन कहते दास गरीब, भँवर गुंजारा हो।। ४।। १५।।
तेज पुंजि प्रकाश, नहीं मन मदन है।
झिलमिल रूप अनूप, पुरुष का बदन है।। टेक।।
सकल सिंध भरपूर, समाना सार है।
जहां तहां दरहाल, वार नहीं पार है।। १।।
आगै ही से आगै, अगमी अगम है।
सतगुरु मेला होय, तो सौदा सुगम है।। २।।
कोटि कोटि बैकुण्ठ, रूंम की लार है।
दिल अंदरि दरवेश, नेश दीदार है।। ३।।
सुरग रिसातल मांहि, बसै सरबंग है।
दिव्य दृष्टि होय देख, रूप नहीं रंग है।। ४।।
रक्त पीत नहीं सेत, श्याम नहीं बरण है।
संख पदम उजियार, झिलमिली किरण है।। ५।।
जगमग जोती जाहर, बाहरि शुन्य में।
मन पवना जहां लाय, सुरति निज धुंनि में।। ६।।
अंतर ही से अंतर, भीतरि है सही।
दहूँ ठौर एक मूल, अगम गति हम लहीं।। ७।।
सैंना बैनी बोध, समोध बिचारि है।
ज्ञानी गुनी सिर धुंध, धरी बेगारि है।। ८।।
बारा बानी ब्रह्म, सु आदि अनादि है।
कहा पढ़ो कहा गुनों, ज्ञान गुन बाद है।। ९।।
बावन गादी ब्यास, वेद धुनि भाषि है।
शिव ब्रह्मा से ज्ञानी, नारद थाकि है।। १०।।
यौह दुनिया संसार, सिंभल का फूल है।
नासा अगरी देख, अजब मखमूल है।। ११।।
अजर अमर अविनाशी, अबिगत आप है।
जपता दास गरीब, अजपा जाप है।। १२।। १६।।

अर्श कुर्श के बीच, ब्रह्म का तेज है।
लखि मौले मसतान, अगम दर सेज है।। टेक।।
दो नैनों के मध्य, हिरंबर झिलमिलै।
नासा अगरी नूर, उलटि हंसा मिलै।। १।।
घड़ियत है घनसार, धार बौहरंग है।
उठत कला किलोल, जो उमंग उमंग है।। २।।
जहां उहां पदम उजास, दास सति मानि रे।
दो दल मध्य मिलाप, सुरति कूँ तान रे।। ३।।
अगर दीप की सैल, सुरति से कीजिये।
परमहंस का भेद, हंस सुनि लीजिये।। ४।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड से न्यार, लखाऊँ तास कूँ।
सप्तपुरी का राज, छाडि कैलास कूँ।। ५।।
ब्रह्मा विष्णु महेश, देश तिस भिन्न है।
जिनि जान्यां छूछिम रूप, हंस ते धन्य हैं।। ६।।
कच्छ मच्छ कूरंभ, शेष और धौल रे।
महत लोक बैकुण्ठ, पड़ैगी रौलि रे।। ७।।
योह बिरही बैराग, सुनों चित लाय करि।
किस असतल में हंस, रहोगे जाय करि।। ८।।
आदि अंति और मध्य, एक ही एक है।
अर्शी अर्श अनादि, बरन नहीं भेष है।। ९।।
सुरग मिरत पताल, ख्याल सब बुदबुदा।
इन्द्रपुरी का राज, कूड़ है गुदगुदा।। १०।।
अरब अलिल बेकुण्ठ, रूंम दर रूंम हैं।
और कहा कहूँ हंस, सार महबूब है।। ११।।
सकल लाल सब लोक, अर्श उजियार है।
असंख सुरन का मेल, जहां दीदार है।। १२।।
अविगत अलख अपार, ज्ञान जहां गूदरी।
जन कहते दास गरीब, हंस लखि ऊधरी।। १३।। १७।।
काम क्रोध मद लोभ, जु कीन्ह उलंगना।
शील संतोष विवेक, दया बंध कंगना।। टेक।।
मोतियन थाल भराय, लीपौंगी अंगना।
अगर बाण भरि मारि, जु आई है देवंगना।। १।।
त्रिवैंनी के तीर, छुटी है गंगना।
मानसरोवर न्हांन, साध सत संगना।। २।।
बाजैं अनहद नाद, अगाध उपंगना।

अर्श कमंद कूँ खैंचि, जु पंथ बिहंगना।। ३।।
अकथ कथा अनराग, भई सुनि दंगना।
बरषैं नूर अपार, झिलमिनी रंगना।। ४।।
सुख सागर अस्नान, जु लहरि लरंगना।
मिटे दिलों के दाग, नहीं चित भंगना।। ५।।
जपिले अजपा जाप, सु शब्द सुहंगना।
हंस चले सतलोक, चढ़ि ज्ञान तुरंगना।। ६।।
यौही गो मैदान, जीति चलि जंगना।
कहते दास गरीब, सुनो प्रसंगना।। ७।। १८।।

द्वादश बंध लगाय, मूल करि मंजना।
दरशैं कच्छ रु मच्छ, खड़े दर गंजना।। टेक।।
मोछि मुकति के मूल, सही दुःख भंजना।
लीलंबर पर लाल, सपेद निरंजना।। १।।
सिकरि सलेमाबाद, किला अति रंजना।
गरजैं सिंध अपार, बजैं अति झंझना।। २।।
रिमझिम रिमझिम होय, तेज और पुंजना।
देख्या हाल हिजूरि, आंजि करि अंजना।। ३।।
ऊलटा कमंद कसीसि, चढ़ो ब्रह्म रंदना।
जन कहते दास गरीब, जु शब्द समंझना।। ४।। १६।।

दिल के अंदरि दीप, देहरा शुन्य में।
मन पंछी गलतान, भया है धुंनि में।। टेक।।
भौंर गुंजि गलतान, अमान अगाध है।
निहतंती झनकार, सुनै सोई साध है।। १।।
शब्द सिंध घनघोर, दमांमें बाजहीं।
सहनाई और भेरि, नफीरी साजहीं।। २।।
रनसींगे रस रीति, तुतक तुतकार है।
झालरि संखा नाद, अजब झनकार है।। ३।।
सुरति निरति मन पवन, इकतर कीजिये।
अलल पंख का मारग, हंसा लीजिये।। ४।।
सेत छत्र सिर शीश, बिराजै सेहरा।
चरण कमल में हंसा, लावो नेहरा।। ५।।
शंख चक्र गदा पदम, मुकट सिर सेत है।
अलल पंख का मारग, सतगुरु देत है।। ६।।
तेज पुंज की नाचैं, आगे कामनी।
संख कला शशिभान, झिलमिलैं दामनी।। ७।।

मोती होहि बिन सीप, जु स्वांति बूठहीं।
गरीबदास गढ़ अंदरि, देखो हूंठहीं।। ८।। २०।।
दिल के अंदरि दीप, दिवाना देश है।
सुरति गगन कूँ लाय, मुकट में शेष है। टेक।।
बंकापुर का वासी, अविगत आप है।
शेष सहंस मुख जपता, अजपा जाप है।। १।।
रिमझिम रंग अपार, निरति जहां लाईये।
बिन पर बिनहीं चरणौं, तहां वहां जाईये।। २।।
होते अजब किलोल, कला कुछि क्या कहूँ।
बिनहीं श्रवण सुने, नैंन बिन झांकि हूँ।। ३।।
गहरी सिंध अवाज, गाज गलतान है।
ब्रह्म अग्नि का किरका, चखमख प्रान है।। ४।।
सुरति शोषता लाई, तहां चिनघी झरी।
प्राण पुरुष के मांहि, आनि चित में परी।। ५।।
उठैं प्रेम भभूके, चिसम्यौं चांदनी।
गगन मंडल के मांहि, सुरति जहां सांधनी।। ६।।
कोटि जोग का जोग, समझि सुनि सार है।
गरीबदास दिल मांहि, दर्श दीदार है।। ७।। २१।।
आसन पदम लगाय, मेरदण्ड सूध रे।
कामधैंनि बिन ब्याई, सरवै दूध रे।। टेक।।
छूछिमहार बिचार, करै सो जोगिया।
अमी महारस कंद, छिके रस भोगिया।। १।।
अनब्याई का दूध, कहा गुन करत है।
जरा मरण तन ब्याधि, सवै कूहरत है।। २।।
आलस नींद जंबाहीं, चिंत्या खण्ड है।
अनब्याई का दूध, ऐसा प्रचण्ड है।। ३।।
कामधैंनि का दूध, अर्श मठ मांहि है।
दूझै प्रेम सहत, अमर फल खांहि है।। ४।।
काया कल्प कमाल, होत है तास से।
नागफुनी नर जोग, पलटो श्वास से।। ५।।
अरस परस घट मांहि, दरश बिन देह रे।
गरीबदास की सुरति, लगी है सेह रे।। ६।। २२।।
उलटि नाद और बिंद, दहूँ कर एक रे।
आसन पदम लगावो, समझि विवेक रे।। टेक।।
पूरन हो मुरादि, सोई विधि साधि ले।

जरा मरण मिट जाय, सो नाम अराधि ले।। १।।
ब्रह्मरंध्र के घाट, दुधारा नाद है।
इला पिंगला मध्य, सुषमना साधि है।। २।।
दो दल का जहां कँवल, कलश बहु कुंभ है।
धारा छुटैं दयाल, कला आरंभ है।। ३।।
सप्त कोटि योजन से, धारा गिरत है।
पीवत होय आनन्द, कमल घट झरत है।। ४।।
तहां लंबका लाय, अगर की धार है।
गरीबदास सतगुरु से, खेवा पारि है।। ५।। २३।।
रतनागर सुख सागर, हंसा चालि रे।
जहां पारस पदम अनंत, अमीते माल रे।। टेक।।
रतन सिंध बैरागर, मुकते माल है।
हीरे मोती मुकते, लालौं पालि हैं।। १।
कामधैंनि कलबिरछ, चिंतामनि नीन्हि रे।
लोचन खूल्हैं अनंत, अर्श दुरबीन रे।। २।।
खूल्हैं अंध कपाट, लगे जो चांचरी।
सिंभु द्वार दुरबीन तहां पद बांचरी।। ३।।
बंका हीरा देख, सुरति हैरान है।
सेत धजा फरराहि, अमरपुर थान है।। ४।।
मानसरोवर परबी, हरदम लीजिये।
झरै गऊ मुख गंग, तहां सिर दीजिये।। ५।।
पलकौं चौंर ढुराय, नैंन पट बीचि है।
गरीबदास गुलजारा, परमल सींचि है।। ६।। २४।।
मंगल अजब सलौंना, सतगुरु गाय हूँ।
भक्ति मालवै मेला, तहां मैं जाय हूँ।। टेक।।
नाशा नैनों अगर, मुकति का खेत है।
जैसे चंद चकोर, सुरति संकेत है।। १।।
माणिक कोटि अनंत, पदम जहां झिलमिलैं।
दीपक संख चिराग, बिना बाले बलैं।। २।।
महताबी महबूब, खूब खुदि खेल है।
नहीं दीपक नहीं बाति, बलै बिन तेल है।। ३।।
कली कली परि भँवरा, सेत गुंजार हीं।
दादुर मोर पपीहे, पीव पुकारहीं।। ४।।
मानसरोवर हंस, कतूहल करत हैं।
गरीबदास सतवादी, मेलै जुरत हैं।। ५।। २५।।

अथ राग चौरी

टुक रंग महल में आव क, निरगुन सेज बिछी।। टेक।।
जहां धर अंबर नहीं धौल, न चंदा सूर शशी।। १।।
संत समागम सार क, ब्रह्मा वेद बची।। २।।
शुन्य मंडल सतलोक, पीया मेरे चौरी रची।। ३।।
चित चंदन छिड़कंत, मलागीर वेगि घसी।। ४।।
चढ़त पीया की सेज क, दुलहनी हरषि हँसी।। ५।।
पारब्रह्म कूँ परसि, महल में जाय धँसी।। ६।।
कहै दुलहनि दास गरीब, सुनौं याह भक्ति सच्ची।। ७।। १।।
टुक रंग महल में आव, पीया जहां अविनाशी।। टेक।।
यौह झूठा गौना हे, चलि होय पीव की दासी।। १।।
रंग महल कूँ देख, छुटत है अति हांसी।। २।।
अविगत राम विलास, जहां निरगुन रासी।। ३।।
दुलहनी दास गरीब, महल सतगुरु वासी।। ४।। २।।
टुक रंग महल में आव, पीया जहां अनरागी।। टेक।।
बिरहै बेधे प्रान, सुरति शब्दे लागी।। १।।
सतगुरु के प्रताप, सही आत्म जागी।। २।।
शब्द महल कर बास, गंदी गिलगसि त्यागी।। ३।।
मिटे कर्म के अंक, सुनि बिरहा पागी।। ४।।
चीन्ह्या दास गरीब, सोई है बड़भागी।। ५।। ३।।
टुक रंग महल में आव, अमीरस प्याला है।। टेक।।
यौह औसर चूके हे, सही मुख काला है।। १।।
शीश चढ़ावो हे, नहीं घर खाला है।। २।।
अष्ट कँवल दल पूर, त्रिकुटी ताला है।। ३।।
सुषमन कूँची लाय, तहां एक लाला है।। ४।।
झल कै पदम पनूप, अर्श उजियाला है।। ५।।
मिटे कर्म के अंक, नहीं जम जाला है।। ६।।
सिर मुकट बिराजे हे, सुहंगम माला है।। ७।।
दुलहनि दास गरीब, सज्जन मतवाला है।। ८।। ४।।
टुक रंग महल में आव, पीया जहां निरवानी।। टेक।।
मेरे दिल दी बूझे हे, सोई है दिलदानी।। १।।
तन मन अरपि चढ़ाये, मिटे चारों खानी।। २।।
ज्हां अनहद बाजे हे, सुनों निज सहदानी।। ३।।
दुलहनि दास गरीब, भई जहां पटरानी।। ४।। ५।।

टुक रंग महल में आव, पीया जहां पाया है।। टेक।।
मेरे सतगुरु महली हे, निज भेद लखाया है।। १।।
मन पौंना कर थीर, महल ठहराया है।। २।।
अनंत जुगन के बिछरे हे, सो हंस मिलाया है।। ३।।
बिन श्रवण बानी हे, निज नाद सुनाया है।। ४।।
भाठी श्रवैं हे, सुनि प्याला प्याया है।। ५।।
खोज बूझि बिचारि, बिना मुख गाया है।। ६।।
अमर पुरुष बरि लेह, मुवा नहीं जाया है।। ७।।
दुलहनि दास गरीब, सो दाग मिटाया है।। ८।। ६।।
टुक रंग महल में आव, सजन साहिब मेरा।। टेक।।
तेरी बिरहनि रोवै हे, करियो मालिक फेरा।। १।।
अविगत वास निवास, महल दीजो डेरा।। २।।
लग्या ज्ञान का बाण, नहीं थिर मन मेरा।। ३।।
आकी मारो हे, करो इन्हें जम जेरा।। ४।।
दुलहनि दास गरीब, चरण है चित चेरा।। ५।। ७।।
चल मानसरोवर हे क, सुरति सुहागनियां।। टेक।।
सुनि सतगुरु उपेदश, सही बड़ भागनियां।। १।।
जहां हरदम नाम उच्चार, गिनत जहां क्या गिनिया।। २।।
जीतो निंदरा काल, सु काली नागनियां।। ३।।
बारा मास बसंत, सदा जहां फागनियां।। ४।।
राग छत्तीसौं होत, पलक छिन रागनियां।। ५।।
त्रिबैंनी के तीर, सु गया पिरागनियां।। ६।।
शब्द सिंध झंनकार, निरति जहां लागनियां।। ७।।
जहां **गरीबदास** गलतान, जुगां जुग जागनियां।। ८।। ८।।
चल मानसरोवर हे, सहंस मुख गंगा है।। टेक।।
झंडा आदि अनादि, देख पचरंगा है।। १।।
शील संतोष विवेक, ज्ञान सतसंगा है।। २।।
दया धर्म के दीप, सु नाद कुरंगा है।। ३।।
मदन काम जरि जांहि, सु दीप पतंगा ह।। ४।।
नागदौंनि निज नाम, सु काल भुजंगा है।। ५।।
रावल जुगिया राम, रूप बौहरंगा है।। ६।।
अमर जड़ी जगदीश, सुनों प्रसंगा है।। ७।।
विष नहीं ब्यापै ताहि, न खात भुवंगा है।। ८।।
गगन मंडल गलतान, अमान अभंगा है।। ६।।
नाम न गाम न ठांम, पुरुष सिरी रंगा है।। १०।।

दायम कायम दरहाल, जीति जम जंगा है।। ११।।
गरीबदास का साहिब, हरदम चंगा है।। १२।। ६।।
चल मानसरोवर हे, सखी मैं तोहि कहूँ।। टेक।।
झिलमिल जोति अखण्ड, सुरति मध्य पोय रहूँ।। १।।
उनमन मुदरा लाय, चरण मध्य सोय रहूँ।। २।।
घाट बाट नहीं पंथ, कहां मघ जोय रहूँ।। ३।।
मक्रतार की डोरि, उलटि मुख गोय रहूँ।। ४।।
कीजे पांन रिसान, अकल दिल धोय रहूँ।। ५।।
झीनां तार हमार, पौहप गंधि लोय रहूँ।। ६।।
गांठि गुडी कूँ भानि, अमानी होय रहूँ।। ७।।
गलतांना महबूब, मगन पद मोहि रहूँ।। ८।।
गरीबदास फुलवारी, चिसम्यौं बोय रहूँ।। ६।। १०।।
चल मानसरोवर हे क, फूल चंबेली है।। टेक।।
बिन बैल फिरावै लाठ, दिवाना तेली है।। १।।
अमृत चवै अपार क, सुरति नवेली है।। २।।
मिसरी का प्रभाव, बंधे नहीं भेली है।। ३।।
मन मंगल मसतान, सु पंच सुहेली है।। ४।।
यौह रस दिली न दीप, न बांस बरेली है।। ५।।
जो पीवें सो अभै, न जनम जमेली है।। ६।।
गरीबदास निरबानी, नौका पेली है।। ७।। ११।।
चल मानसरोवर हे, अमीरस मधुवा है।। टेक।।
जिन रस नहीं चख्या हे, सो ज्ञानी रदुवा है।। १।।
जग के नर नारी हे, अस मींडक भदुवा है।। २।।
सनकादिक पीया हे क, नारद सदुवा है।। ३।।
सुखदे ब्यास हुलास, अमीरस दधुवा है।। ४।।
यौह तन तुंबा हे क, कड़वा कदुवा है।। ५।।
मीठा जब ही होय स, अरध उरधुवा है।। ६।।
गरीबदास का साहिब, नौ निधि नधुवा है।। ७।। १२।।
चल मानसरोवर हे, मुलाइम मालिक है।। टेक।।
कहां ढूंढन जाईये हे, खलक में खालिक है।। १।।
साहिब का तो साहिब, चेरा पाइक है।। २।।
तन बनजारा हे क, मनवां नाइक है।। ३।।
उस रूप बिना सब खण्ड क, सोवा पालिक है।। ४।।
भूलि रहे निज ब्रह्म क, नलनी नालक है।। ५।।
रूप लख्या जिन हे, दुनी क्या तालिक है।। ६।।

गरीब दास का साहिब, बिरध न बालक है।। ७।। १३।।
चल मानसरोवर हे क, अजब फुहारा है।। टेक।।
गंगा जमना मधि, सुरसती धारा है।। १।।
जहां उजल हंस प्रबीन क, अधर अधारा है।। २।।
मुकता मोती चुगे स, करें अहारा है।। ३।।
कमल केतगी फूले, भँवर गुंजारा है।। ४।।
जहां बाजैं नाद अखण्ड शब्द झनकारा है।। ५।।
चिनघी नाम लगंत, कसट भये छारा है।। ६।।
संख पाप छ्यौ जांहि, फजल दरबारा है।। ७।।
जगमग दरसे जोति, क फूल हजारा है।। ८।।
छिन पल नहीं वियोग, स बारंबारा है।। ९।।
सनकादिक सब साध, अजब जौंनारा हैं।। १०।।
पीवैं अमृत पान, सकल परवारा है।। ११।।
अजर अमर अनरागी, शब्द उचारा है।। १२।।
गरीबदास का साहिब, त्यारम त्यारा है।। १३।। १४।।
चल मानसरोवर हे, मनी के पिण्ड भरो।। टेक।।
यौह भै का सागर हे क, हंसा अत्र तरो।। १।।
यह रसनां नेजू हे क, समझो नारि नरो।। २।।
बसि भँवर गुफा में हे क, अमृत अजर जरो।। ३।।
छूछिम रूप अनूप, पुरुष का ध्यान धरो।। ४।।
निज साहिब बंका हे क, जम से नांहि डरो।। ५।।
रूंम रूंम रस रीति क, अजपा जाप करो।। ६।।
गरीबदास निज नाम, कर्म और काल हरो।। ७।। १५।।
चल मानसरोवर हे, सलहली सैल जहां।। टेक।।
जहां शब्द अनाहद हे, सुखसागर सिंध लहां।। १।।
यौह मारग झीनां हे क, कासे भेद कहां।। २।।
यौह नाम निनावा हे क, अविगत नगर रहां।। ३।।
सतगुरु खेवट हे क, अविचल बांह गहां।। ४।।
गरीबदास निज नाम, कर्म और काल दहां।। ५।। १६।।
चल मानसरोवर हे क, अजब जहूरा है।। टेक।।
जहां संख कँवल दल हे क, अनंत कंगूरा है।। १।।
जहां जगमग जोती हे क, निकटि न दूरा है।। २।।
बाहरि भीतरि हे क, नूरम नूरा है।। ३।।
बिरह अग्नि जरि हे क, चूरम चूरा है।। ४।।
सतगुरु दानी हे क, पूरम पूरा है।। ५।।

यौह भेद न पावै हे क, अधम अधूरा है।। ६।।
जहां राग छत्तीसौं हे क, तार तंबूरा है।। ७।।
कायर कंपे हे क, मारग सूरा है।। ८।।
गरीबदास का साहिब, पूरम पूरा है।। ६।। १७।।
चल मानसरोवर हे क, झिलमिल नीरा है।। टेक।।
जहां लाल अमोली हे, रतन एक हीरा है।। १।।
दम देही बिन देव क, गहर गंभीरा है।। २।।
अडोल अबोल अछेद, न असथरि थीरा है।। ३।।
छप्पन भोग बिलास, कंद निज खीरा है।। ४।।
गरीबदास का सतगुरु, पुरुष कबीरा है।। ५।। १८।।
सुखसागर बरसना हे, बिसंभर पाया है।। टेक।।
नागा निरवानी हे, मोह नहीं माया है।। १।।
मादर पिदर न हे, मुवा नहीं जाया है।। २।।
खाय न पीवै हे, भूखा नहीं धाया है।। ३।।
यौह मठ महमंता हे, खोया नहीं पाया है।। ४।।
कामधैंनि कलबिरछा, शीतल छाया है।। ५।।
चकवै आदि अनादि क, शुन्य समाया है।। ६।।
गरीबदास कूँ सतगुरु, अलख लखाया है।। ७।। १६।।
सुखसागर चलना हे क, अटल सिंघासन है।। टेक।।
जहां फटक बरन बर हे क, सेत रिवासन है।। १।।
जहां धरणि गगन नहीं हे क, शुन्य अकाशन है।। २।।
जहां जगमग जोती हे, झिलमिल प्रकाशन है।। ३।।
यौह पुरुष विदेही हे क, पिण्ड न श्वासन है।। ४।।
गरीबदास निज बंधु, दासन का दासन है।। ५।। २०।।
सुखसागर बसना हे, पुरुष अनरागी है।। टेक।।
द्वादस दल जीते हे, सोई बैरागी है।। १।।
परमात्म चीन्हौं हे क, आत्म जागी है।। २।।
यौह रूप नवेला हे क, चीन्हत बड़भागी है।। १३।।
अर्श कमंद मठ हे क, निरगुन नागी है।। ४।।
गरीबदास गलतान, सुरति पद लागी है।। ५।। २१।।
सुखसागर बसिये हे, पुरुष प्रवीना है।। टेक।।
दिल दरिया खोजो हे क, मारग झींना है।। १।।
शब्द महोदध हे क, पैरत मीना है।। २।।
त्रिकुटी छाजे हे, दरश दुरबीना है।। ३।।
रतन अमोली हे, चिंतामनि चीन्ह्या है।। ४।।

अबल बली बरियाम, अस निपट अधीना है।। ५।।
गरीबदास गलतान, सुरति पद लीना है।। ६।। २२।।
चल गगन मंडल में हे क, मगन मुरारी है।। टेक।।
औह सकल समाना हे क, शुन्य अधारी है।। १।।
यौह शब्द समूलं हे क, नहीं नर नारी है।। २।।
घट मठ व्यापक हे क, बड़ा विसतारी है।। ३।।
औह अंग न छूहै हे क, अकल बिचारी है।। ४।।
त्रिगुन पासा हे क, सोलह सारी है।। ५।।
याह चौपड़ि मांडी हे क, खेल खिलारी है।। ६।।
गैंदा गंध गुलाब, अर्श फुलवारी है।। ७।।
रस का रसिया हे क, मधि की झारी है।। ८।।
पीवै अमीरस पान क, प्रेम खुमारी है।। ६।।
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि दरबारी है।। १०।।
शेष सहंस मुख गावै, ररां उचारी है।। ११।।
गरीबदास गलतान, शब्द धुंनि तारी है।। १२।। २३।।
चल गगन मंडल में हे क, शब्द घनघोरा है।। टेक।।
जहां ऊँचा पर्वत हे क, कौंहके मोरा है।। १।।
कमल कमोदनि हे क, चंद चकोरा है।। २।।
दादुर बौले हे क, शब्द घमोरा है।। ३।।
भेरी संख अवाज क, चितवन चोरा है।। ४।।
शुन्य भँवर उडाना हे क, सुरति का डोरा है।। ५।।
गरीबदास नें तार, निरति का जोऱ्या है।। ६।। २४।।
चल गगन मंडल में हे, भक्ति जहां नौधा है।। टेक।।
दस इन्द्री जीतो हे क, कौदम कौदा है।। १।।
मन रापति कीन्ह पलान क, हस्ती हौदा है।। २।।
प्रपट्टन नगरी बास क, सतगुरु सौदा है।। ३।।
अछै बिरछ फल कंद क, पारस पौदा है।। ४।।
गरीबदास का साहिब, बिरह बिरोधा है।। ५।। २५।।
चल गगन मंडल में हे, भक्ति जहां दसधा है।। टेक।।
दस इन्द्री कूँ हे क, जोगी कसदा है।। १।।
इला पिंगुला बीचि, सुषमना रसदा है।। २।।
शीश करौ कुरबान क, सौदा ससदा है।। ३।।
द्वादश दल के मध्य, पुरुष एक हसदा है।। ४।।
चित चंदन का अगर, लेप कर घसदा है।। ५।।
गरीबदास का साहिब, चिसम्यौं वसदा है।। ६।। २६।।

चल गगन मंडल में हे, गिलम जहां गलताना।। टेक।।
सेज सुरंगी हे क, बैठे दिलदाना।। १।।
अविगत साहिब हे क, दूलह निरबाना।। २।।
त्रिकुटी संजम हे क, अकाशी निज ध्याना।। ३।।
गंगा जमना हे क, सुरसती में न्हाना।। ४।।
गया पिरांग हे, भरौ पिण्ड प्रधाना।। ५।।
फलगू परसे हे क, अठसठि तीरथ न्हाना।। ६।।
नूर झिलमिला हे, सूरज संखौं भाना।। ७।।
चौरा कीजे हे, पुरुष सिर कुरबाना।। ८।।
गरीबदास हाजरि, नाजरि है दरबाना।। ६।। २७।।
चल गगन मंडल में हे, कलश निज कुंभा है।। टेक।।
उरध मुख कूवा हे क, बड़ा अचंभा है।। १।।
अमृत नीरं हे, उजल जहां बिंबा है।। २।।
भेदी संगि लीजे हे क, कीन्ह अरंभा है।। ३।।
आसन अंगन हे क, लघु नहीं लंबा है।। ४।।
एक कामनि भरती के क, अजब हुरंभा है।। ५।।
नीचे नगरी हे, अष्टदल खंभा है।। ६।।
गरीबदास दासन का, दास बिलंब्या है।। ७।। २८।।
चल गगन मंडल में हे, उरध मुख दरिया है।। टेक।।
सुंनि समाना हे क, सुभर भरिया है।। १।।
दामनि दमके हे क, नीझर झरिया है।। २।।
गरज धुंनि गाजे हे क, प्रेम की पुरिया है।। ३।।
सुरति सुहागनि हे क, निरति जहां जुरिया है।। ४।।
तन मन लागी लाये , बिरह में जरिया है।। ५।।
अमृत पान अमान, गागरि पर घरिया है।। ६।।
पीवै प्रेम पियासी, नारि सुन्दरिया है।। ७।।
अमर कच्छ अनरागी, बौहरि न मरिया है।। ८।।
गरीबदास कलि पापी, अधम उधरिया है।। ६।। २६।।
भागी दुलहनि हे, तूं पानीड़ा क्यों नै भरै।। टेक।।
तेरे आंगनि कूवटा हे क, भरतम काहे कूँ फिरै।। १।।
मेरे नेजू नाहीं हे क, कलशा काहे से भरै।। २।।
तेरे रसना नेजू हे क, कलशा कुंभ भरै।। ३।।
औह पंथ सलहला हे क, पग मेरा रपटि परै।। ४।।
जहां झीनी घाटी हे, चढ़त मेरा मनुवा डरै।। ५।।
जहां हरहट चालै हे, बैल बिन चाक फिरै।। ६।।

तुम औह जल पीवौ हे, बौहरि नहीं देह धरै।। ७।।
जहां चंदा झलकै हे क, टारूया नांहीं टरै।। ८।।
जहां कोइल बोलै हे क, मोरा शब्द करै।। ९।।
जहां भगल विद्या का खेल, कला नट तिहर करै।। १०।।
जहां ब्रह्मा विष्णु महेश, शेष जाका ध्यान धरै।। ११।।
जहां अर्श कंगूरा हे क, सुक्रत फूल झरै।। १२।।
जहां संख भान उजियार क, नीझर अजर जरै।। १३।।
तूं पारब्रह्म कूँ परसो हे, जुगा जुग काहे कूँ मरै।। १४।।
जहां दुलहनि दास गरीब, सुहंगम चौंर ढुरैं।। १५।। ३०।।
जा कै रुनक झुनक झनकार क, पायल बाजनियां।। टेक।।
देखो सूक्ष्म मूरति सार क, सतगुरु साजनियां।। १।।
ज्ञान घटा घनघोर क, नजरि निवाजनियां।। २।।
काम क्रोध मध्य लोभ क, दु:ख दुंद भागनियां।। ३।।
चलि देख मुक्ति का धाम, सरैं सब काजनियां।। ४।।
जाकै भक्ति मुक्ति की छाप, सोई हंस मांजनियां।। ५।।
जाकै नहीं भक्ति हरि नाम क, ता विरद लाजनियां।। ६।।
दास गरीब सुभान क, अंजन आंजनियां।। ७।। ३१।।
असन बसन कूँ साधि, गगन में चढ़ि जाना।। टेक।।
करि दुनिया से दिल दूर, शब्द में मिल जानां।। १।।
बिन कागज के लेख, बांचि ले प्रवानां।। २।।
इला पिंगला बीचि, सुषमनी असनानां।। ३।।
जहां बहै सहंस मुख गंग, पढ़ै नित ब्रह्मज्ञानां।। ४।।
हम उतरे औघट घाट, न पंडित पंथ जानां।। ५।।
जहां मूरति सूरति सार, दयावंत दिलदानां।। ६।।
जहां ढुरैं सुहंगम चौंर, चिदानंद कुरबानां।। ७।।
जहां मौले मगन मुरारि क, निरगुन निरबानां।। ८।।
जहां परसे दास गरीब, अजब धुंनि खिलखानां।। ९।। ३२।।
जाके रतनाले से नैंन, छत्र है गुलजारा।। टेक।।
जाकै बाजैं अनहद नाद, शब्द है झनकारा।। १।।
जाकै होता मूल उचार, भँवर जहां भनकारा।। २।।
जहां बिगसैं चंद्र सूर, गगन गैबी तारा।। ३।।
जहां दामनि खिमैं अपार, गरज घनहर कारा।। ४।।
जहां बोलैं दादुर मोर, लोर निरगुन धारा।। ५।।
जहां कुंजी बैंन विलास, पपीहे तुतकारा।। ६।।
जहां कोयल हंस अवाज, परम पद परिवारा।। ७।।

जहां घुड़ला ज्ञान पलान, हंस भये असवारा।। ८।।
हंस चले सतलोक, पुरुष लखि दीदारा।। ९।।
जहां झलकैं तेज रु पुंज, दरश न्यारा न्यारा।। १०।।
जहां परसे दास गरीब, अलख पूरन प्यारा।। ११।। ३३।।

अथ राग विनोद

तूं अविगत नगर बसाय हंसा, शब्द महल है गुलजारा।
कुछ ऐसा जतन करो प्रांनी, जांमन मरन कट जाय फांसी।
ऐसा कलधूत रटो प्यारे, अलख पुरुष है अविनाशी।। टेक।।
आया है सो जायगा रे, मति कोई करो गुमान।
पानी के सा बुदबुदा, यौह तेरा उनमान प्यारे।। १।।
दया दिलों बिचि राखिये रे, हरदम जपिये नाम।
संत समागम कीजिये, ज्यौं हंसा पौहचे धाम प्यारे।। २।।
अनहद नाूद बाज हीं रे, अगम अगोचर तूर।
रंग महल में रोशनी, जहां झिलमिल नूर जहूर प्यारे।। ३।।
तकिया तो तन बीचि है रे, बंकी बाट अघाट।
कोटि जतन नहीं पाईये रे, सतगुरु खोल्हैं कपाट प्यारे।। ४।।
आदि अंति नहीं पाईये रे, वार पार नहीं कोय।
ऐसा पूरन ब्रह्म है रे, तूं सुरति निरति मघ जोय प्यारे।। ५।।
पिण्ड खण्ड ब्रह्मण्ड में रे है माया का जाल।
मुकताहल में मिल गये रे, पर सतगुरु नजरि निहाल प्यारे।। ६।।
परमहंस के धाम कूँ रे, बिरहा चीन्हौं हेरि।
पहरि घड़ी पल जात है रे, अब क्यों लावै बेर प्यारे।। ७।।
प्रपट्टन पारिख लिया रे, राते बरवै राग।
जिन का जम कहो क्या करै जी,
दगि गये सत के दाग प्यारे।। ८।।
जहां एक गुमट अनूप है रे, सेत धजा फरराय।
गोरख नाम कबीर से, कोई बिरला साधू जाय प्यारे।। ९।।
शुन्य मंडल सतलोक है रे, शब्द समुंद्र थीर।
दास गरीब जहां रत्ते, सतगुरु मिले कबीर प्यारे।। १०।। १।।
वाह वाह सूक्ष्म रूप सरूप, दर्श दिल कुरबाना।
म्हारे सतगुरु भये दयाल, दिया हम प्रवाना।। टेक।।
बंका हीरा जगमगे रे, गगन मंडल के मांहि।
चंद सूर की गमि नहीं रे, ना जहां धूप न छांहि।। १।।
दिल के अंदरि देहरा रे, जा देवल में देव।

पत्थर पानी छाडि कर रे, करो पुरुष की सेव।। २।।
योजन संख असंख है रे, लगे रहै जहां नैंन।
चिसम्यौं अंदरि चांदनी, सुनि सतगुरु के बैंन।। ३।।
बिनहीं चरणौं चालतार रे, बिना पंख उड़ि जाय।
सो देवा कैसे पकरिये रे, जासे कहां बसाय।। ४।।
निरमल नीका सार है रे, सुरति निरति जहां बांहि।
प्रेम फांसि से पकरिये रे, सतगुरु दिया लखाय।। ५।।
आसन असतल है नहीं रे, अकल अभूमी आदि।
गरीबदास सेवन करै, ध्यान धनुष शर सांधि।। ६।। २।।
वाह वाह उजल भँवर विसाल, गगन धुंनि गरजत है।
जल की बूंद जिहान, सकल कूँ सिरजत है।। टेक।।
सेत भँवर जहां गूंज ही रे, मानसरोवर बीचि।
बंकनालि नीझर झरै रे, हरदम परमल सींचि।। १।।
जहां कमल केतगी खिल रहें रे, भँवर करत हैं गुंजि।
अगम निगम जहां है नहीं रे, अधर सिंघासन कुंजि।। २।।
नाद बिंद जहां वहां नहीं रे, पिण्ड प्राण नहीं देह।
बुद्धि बानी से अगम हे रे, जा स्यौं लग्या सनेह।। ३।।
हरदम संगी संगि है रे, पलक बिछर नहीं जाय।
बाहर भीतर है नहीं रे, शुन्य में रह्या समाय।। ४।।
सेत छत्र सिर मुकट है रे, रतनाले हैं नैंन।
बिनहीं मुख बानी कहै रे, बोलत अनहद बैंन।। ५।।
नैंन नाक मुख मूंदि कै रे, कुंभक रेचक कीन्ह।
सरवन कूँची लाय कर रे, देख पुरुष परवीन।। ६।।
उड़गन हीरा पकरिया रे, धन्य सतगुरु सिरताज।
गरीबदास गलतान पद रे, है सो अजब अवाज।। ७।। ३।।
वाह वाह निरालंब निरबान, निरंजन जोगी है।
ना पीवै ना खाय, सकल रस भोगी है।। टेक।।
घट मठ से न्यारा रहै रे, महतत महल मुरारि।
शेष सहंस मुख गांवहीं रे, शिव ब्रह्मा सिकदार।। १।।
कच्छ मच्छ कूरंभ से रे, धौल धरणि धर धीर।
चंद सूर जाकूँ रटैं, पानी पवन हमीर।। २।।
इन्द्र कुबेर वरुण रटैं रे, धर्मराय धरि ध्यान।
माया आदि अनादि है रे, सतगुरुष सुलतान।। ३।।
थावर जंगम जूंनि है रे, जड़ चेतन में बास।
समाधान सेवन करो रे, फूल्या फूल अकाश।। ४।।

बिन डांडी का फूल है रे, चिसम्यौं ऊपरि ऐंन।
कोटि जतन कर देखिये रे, देखें ही सुख चैंन।। ५।।
संख विष्णु ब्रह्मा गये रे, शंकर गये समूल।
गरीब दास पद अचल है रे, टार्‌या टरै न फूल।। ६।। ४।।
वाह वाह अधरि बिहंगम चाल, पुरुष विदेही है।
निरति रही निरताय क, सुरति सनेही है।। टेक।।
योजन संख असंख की रे, एक लगावै फाल।
मन मेरा चितवत रह्या रे, ऐसी जाकी चाल।। १।।
खड्‌ग बान बेधै नहीं रे, जल बूडै न जराय।
कुल कुटंब जाके नहीं रे, जननी जन्या न माँय।। २।।
संख सिधि प्रसिधि है रे, ऐसा है अनभूत।
काल डरै कर्तार से रे, जौंरा और जमदूत।। ३।।
दम सुदम सेवन करो रे, श्वास सुरति संभालि।
मिलैं पुरुष अनभूत स्यौं, ताहि न चंपै काल।। ४।।
निरखि परखि कर देख ले रे, दिल अंदरि दरवेश।
कुल का कर्ता यौही है, ताहि रटत है शेष।। ५।।
राई सा रघुबीर है रे, बटक बीज विस्तार।
त्रिस रैंन से झींन है रे, ताहि धरे औतार।। ६।।
कोटि भिसति बैकुण्ठ मठ रे, गये गलत कई बार।
रतन सिंध विनसै नहीं रे, अचल पुरुष कर्तार।। ७।।
कादर कुदरति मांहि है रे, ज्यौं घिरत दूध दयाल।
मुरजीवा नघ ल्यावहीं रे, हीरे माणिक लाल।। ८।।
जोग जुगति से दूर है रे, जप तप करनी कीन।
गरीबदास गति अगम है रे, ज्यौं दरिया मधि मीन।। ९।। ५।।
वाह वाह झुकि आये महबूब, मिलन की बेर भई।
चरण कमल में लावो, हंसा ध्यान सही।। टेक।।
धरती परि पग ना धरै रे, गगन मंडल गलतान।
सुरति निरति दो हंसनी रे, जा कूँ लिया पिछान।। १।।
एक पलक बैठे नहीं रे, खड़ा रहै नहीं कोय।
सुरति निरति आगै चलै रे, कैसे मिलना होय।। २।।
उलटी सुरति समोय ले रे, त्रिकुटी कँवल में आनि।
हिरदे में हाजिर हुये रे, दिया अभैपद दान।। ३।।
कोटि जगि असमेद करि रे, तुल बैठत हैं जाय।
राम रसायन ना लख्या रे, भौजल गोते खाय।। ४।।
गृह आंगन में खेलता रे, साहिब घर घर बार।

दिव्य दृष्टि खूल्हे बिना रे, पूजन चले पहार।। ५।।
रतन अमोली रंग भर्‍या रे, आदि पुरुष जगदीश।
दरवै रूप दयाल का रे, क्यौं न चढ़ावो शीश।। ६।।
असमानी आनन्द घन रे, निरगुन पद निरवान।
गरीबदास यौह ब्रह्म है रे, आदि पुरुष रहमान।। ७।। ६।।
वाह वाह खुद खालिक महबूब, मिलन कूँ आया है।
परानन्दनी संग पुरुष की माया है।। टेक।।
लुक अंजन मंजन महल रे, नजरि परै नहीं कोय।
तोरन के सा फूल है रे, दरशत निरगुन लोय।। १।।
सुख सागर आनन्द घन रे, अकलि पुरुष निरधार।
निराकार निज निरमला रे, शोभा अधिक अपार।। २।।
पुरुष बिनानी परसि लै रे, निरगुण सरगुण सेव।
भाग बिना क्यों पाईये रे, पारब्रह्म सा देव।। ३।।
संख कलप जुग हो गये रे, खान पान नहीं कीन्ह।
अविनाशी है अस्थि बिन रे, तेज पुंजि का सीन।। ४।।
तन अजूद नहीं तास के रे, नाद बिंद नहीं नेह।
गरीबदास पिण्ड नूर का रे, साहिब पुरुष विदेह।। ५।। ७।।
वाह वाह गरजे सिंध अपार, झिलमिलैं दामनियां।
गंधर्व कोटि अनंत, सो गावैं कामनियां।। टेक।।
संख कलप जुग हो गये रे, बैठ्या आंब दिवान।
संख तर तूर नादू बजैं रे, अकल अखण्डत तान।। १।।
संख रतन का रतन है रे, सब रतनों का मूल।
चिसम्यौं आगे जगमगै रे, सेत श्याम दो फूल।। २।।
सेत श्याम दो फूल हैं रे, लाय सुरति की डोरि।
अष्ट कँवल दल खुल्हि गये रे, जब दरसैं फूल करोरि।। ३।।
संख चक्र संगीत है रे, सुरति निरति के नाल।
मानसरोवर कमल जल रे, नैंन निरंजन ताल।। ४।।
सुरती नाल सुराहियां रे, निरति नालि निशान।
सेत धजा जहां फरहरैं रे, अविगत अकल अमान।। ५।।
नैंन नाक मुख शीश परि रे, अधरि गुमट गुरुदेव।
गरीबदास गलतान पद रे, करो तास की सेव।। ६।। ८।।
रिमझिम रंग अपार, अर्श में आनन्द है।
अविगत अलख अपार, धनी परमानंद है।। टेक।।
सुन्दर मूरति सेत भुज रे, सैलानी सुरज्ञान।
कोटि सिद्धि आगे खड़ी रे, धरैं तास का ध्यान।। १।।

एक रतन बहु पारिखू रे, ध्यावैं तीन्यौं लोक।
सौहंगा महंगा है नहीं रे, कहीं उधारि कहीं रोक।। २।।
पैसे केर पचास है रे, स्वामी आवै सीति।
कोटि जगि असमेद कर रे, तो नहीं जोड़ै प्रीति।। ३।।
अनंत कोटि वैष्णौ गये रे, पण्डित द्वादश कोटि।
बालनीक के चरण की रे, रही जगि में लोड़ि।। ४।।
कृष्णचंद परमात्मा रे, चरणामृत लिया ताहि।
पांच पंड और द्रौपदी रे, लगे सुपच के पाय।। ५।।
ऐसे महंगे संत हैं रे, साहिब सौहंगा जांनि।
पंडौ जगि अश्वमेध में रे, चरण लिये भगवान।। ६।।
पांच गिरासी उपास था रे, कण कण बाज्या संख।
गरीबदास तिहूँ लोक में रे, सुन्या राव और रंक।। ७।। ६।।
मन जंत्र जूंनि जाल, हंस भरमाया है।। टेक।।
अष्ट कँवल दल है गुलजारा,
ता अंदरि एक छुटत फुहारा, सप्त धात की काया है।। १।।
पांच पच्चीस नहीं निरबानी,
जा परि सरवर रच्या बिनानी, ता सरवर कोई न्हाया है।। २।।
मन की सैल सहंसर डोरी,
काया अंदरि खेलो होरी, धूधूँ धार मचाया है।। ३।।
चौदह भुवन गवन कर महली,
जा ऊपर एक मंदिर सैली, जहां वहां कुलफ जड़ाया है।। ४।।
जहां केते राजा राज करंते,
चौरासी में उलट परंते, कहो राज पाट को धाया है।। ५।।
सतगुरु हंसौं के ब्यौपारी,
हंसौ की साटि करत हैं भारी, जिन जूनी जीव छुटाया है।। ६।।
औघट घाट बाट है बंकी,
जहां न सूवा पौंहचे पंखी, जहां सतगुरु भेद लखाया है।। ७।।
बावन कोटि कंगूरे काशी,
जा पर महल रच्चा अविनाशी, सत सुकृत राज पठाया है।। ८।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव नारद,
शेष सहंस मुख रटते शारद, जिन्हौं पार नहीं पाया है।। ६।।
कोटि पदम झिलमिल उजियारा,
जहां अविगति पूर्ण पुरुष पियारा,
जहां संख लोचनी माया है।। १०।।
अगम नगर की खोल्हो खिरकी,

झिलमिली सेज सुरंग तिस घर की,
जहां दास गरीब समाया है।। ११।। १०।।
बसि हे बसि हे बसि हे दुलहनि,
तूं अविगत नगरी बसि हे।। टेक।।
बाहरि भरमी हे बेशरमी, दिल दरिया में धसि हे।।
शील संतोष विवेक विचारो, जत का नाड़ा कसि हे।। २।।
तत का तिलक ध्यान की धोती, चित का चंदन घसि हे।।
मोह ममता कूँ दूर बहावो, पारब्रह्म से रचि हे।। ४।।
दास गरीब सोई निज दुलहनि, जब रहै तेरा रस हे।। ५।। ११।।

अथ राग वियोग

सुनियों संत सुजांन, गर्व नहीं करना रे।। टेक।।
च्यार दिना की चिहर बनी है, आखरि तौकूँ मरना रे।।
तूं जांनैं मेरी ऐसे निबहैगी, हरदम लेखा भरना रे।। २।।
खाले पीले बिलसि ले रे हंसा, जोड़ि जोड़ि नहीं धरना रे।।
दास गरीब सकल में साहिब, नहीं किसी स्यौं अरना रे।। ४।। १।।
सुनियों संत सुजान, दिया हम हेला रे।। टेक।।
और जनम बहु तेरे होसी, मानुष जनम दुहेला रे।। १।।
तूं जो कहै मैं लसकर जोड़ौं, चलना तुझे अकेला रे।।
अरब खरब लग माया जोरी, संग न चलसी धेला रे।। ३।।
याह तो सत की मेरी नवरिया, सतगुरु पारि पहेला रे।।
दास गरीब कहै भाई साधौ, शब्द गुरु चित चेला रे।। ५।। २।।

अथ राग सिंध

मेरे अनहद नादू बाजै, रंगला रंगला।। टेक।।
मेरे सतगुरु भेद लखाया, मंगला मंगला।। १।।
मैं सुनि कर हो गूंगी, बंगला बंगला।। २।।
जहां सुरति निरति का धागा, पिंगुला पिंगुला।। ३।।
कहैं दास गरीब जग बोदा, कंगला कंगला।। ४।। १।।
हम गगन मंडल घर पाया, झीनां झीनां।। टेक।।
जन उतरे औघट घाटी, बीनां बीनां।। १।।
जहां चाल बिहंगम चालै, मीनां मीनां।। २।।
जहां चौथे पद में वासा, लीनां लीनां।। ३।।
जहां काल जाल गम नाहीं, तीनां तीनां।। ४।।

जहां नाद बिंद नहीं काया, सीनां सीनां।। ५।।
हम मौज महल की पाई, दीनां दीनां।। ६।।
दास गरीब सत महली, कीनां कीनां।। ७।। २।।
मन में है मक्का मदीना, मन में है।
तुम्हौं अलह कौन विधि लहिया, तुम गोसत खांहि कलीनां।। टेक।।
मन में मक्का मन में मदीना, मसतग जांनि मसीता।
जहां अरब कुरान अलिल वेद है, कागज कहो क्यों चीता।। १।।
तन में तसबी ऊजू उजल है, नेम निवाज किया रे।
रोजा करो रसातल मेलो, अण्डा फोरि सोरवा पिया रे।। २।।
मुरगी मुल्लां साहिब सिरजे, दूजा कौन है भाई।
महजदि चढ़ि कर बंग पुकारै, बहरा नहीं इलाही।। ३।।
मुरगी बकरी चिड़ी बुटेरी, मारि लिये हिलवाना।
दोपा चोपा सब ही भूनें, एक रह गया मानुष खाना।। ४।।
गऊ मारि कर बिसमिल कीन्ही, रूह कहां पौंहचाई।
नबी मुहंमद साहिब की सौंह, बदला कहीं न जाई।। ५।।
भेड़ बिहण्डी चढ़िया हण्डी, पकड़ बकरी।
नबी मुहंमद साहिब देखे, तूं धरि धरि तोलै तखड़ी।। ६।।
उहां तो लोह लुहार नहीं रे, करद कहां से लाया।
धुर की मौंहर नहीं रे काजी, बिसमल किन्हि फुरमाया।। ७।।
मुसलमान जो रूह न मोसैं, सिदक सबूरी रहनां।
कहैं दास गरीब सुनौं रे काजी, ऐसे भ्रम न बहनां।। ८।। ३।।
खाते हैं गौड मच्छी रे,
पांडे नीच कर्म से लागे, ये नहीं बात अच्छी रे।। टेक।।
पूजैं आंन अनीत अटंबर, साहिब सेती तोरी।
तुम्हरे लछनि हम लाजत हैं, ये पांडे नहीं थोरी।। १।।
ऊजड़ खेड़ै बकरे तुड़ावैं, करैं अचार विचारी।
सूतिग पातिग जीमौं पांडे, करते फिरो अग्यारी।। २।।
ब्राह्मनी कूँ नहीं ब्राह्मन जाया, नांहीं जनम जनेऊँ।
जन दास गरीब कहै रे पांडे, दूरि देश घर भेऊँ।। ३।। ४।।

अथ राग बरवै

बंकी है सतगुरु चाल। कहो कौन चालैगा।। टेक।।
रहनी करनी बुगचे बांधो। औह तो नजरी नजर निहाल।।
माया से जोरि साहिब से तोरी। बहुत बटोर्‌या माल।। २।।
शेष महेश गणेश रु पठिया। औह तो झीना मारग बाल।।

ब्रह्मादिक नारद मुनि कंपे। औह तो ऐसा अनहद ख्याल।। ४।।
जिन के तन मन थीर नहीं है। भौसागर की झाल।।
जिन के सतगुरु बाण लगाया। तिन का कौन हवाल।। ६।।
जब जुलहदी घोड़ा छेड़्या। हाथि मोतियन का थाल।।
दास गरीब डाक कौन लावै। चूकैं मुनिजन फाल।। ८।।

नहीं पग धरनें कूँ ठौर कैसे जाऊँगा।। टेक।।

ब्रह्मण्ड इकीसौं ऊपरि तकिया। जहां सतगुरु की बंकी पौरि।।
बिना मूल एक तरुवर फूल्या। लगे अनूपम मौर।। २।।
अगम से सुगम किया मेरे सतगुरु। भया और से और।।
दास गरीब अमर अनरागी। ढुरैं कबीरा के सिर चौंर।। ४।।

मौले तेरा नाद बजैं रंग गुलजारा।। टेक।।

अंधे गूंगे मुक्ति न पावैं। बौहर बौहर भौसागर आवैं।
कोई पद बूझैं प्रीतम प्यारा।। १।।
अमृत मीठा राम रसायन। जो पीवैं सो होय पारायन।
इस दुनिया का रस है खारा।। २।।
योग करैं पर भोग न छाडैं।
पांच पच्चीस न घर से काढैं। जिनके हैं कच्चे बारा।। ३।।
अकल अनाहद पद अनरागी।
जो खोजै सोई बड़भागी। इन्द्रियौं पर होंना असवारा।। ४।।
सावंत शुभट सूर कोई है रे। तीनि लोक में जस जै जै रे।
जिनि पकड़ि चौपटे मन मार्या।। ५।।
हर दम नाभी नाम जगावै।
जूंनी संकट बहुरि न आवै। उतरि गये भौजल परा।। ६।।
सतगुरु कूँ दीन्हा उपदेशा।
राग छत्तीसौं होत हमेशा। शब्द महल धुंनि झंनकारा।। ७।।
बिन हीं चिसम्यौं दरवैं फुलवा।
तल शाखा ऊपरि मुलवा। शेष सहंस मुख धुंनकारा।। ८।।
सतगुरु दिया अभैपद दांना। **गरीबदास** निरभै पद जान्या।
सो तो पिण्ड ब्रह्मण्ड से है न्यारा।। ६।। ३।।

तेरा नाद बजै है निरबानी।
मौले तेरा नाद बजै है निरबानी।। टेक।।

गीता और भागौति पढ़े हैं।
सो बरदवानं नहीं चढ़े हैं। आशा तृष्णा नहीं फांनी।। १।।
पढ़े गुनें सो कोटि रामायण।
सो पांडे नांहीं पारायण। उलटि परैं चार्यौं खांनी।। २।।

सुर नर मुनि गन गंधर्व ध्यावैं।
बिन मसि का औह अंक न पावैं। मिले न सतगुरु दिलदांनी।। ३।।
अनंत कोटि वैष्णौ चलि गईया।
बिन मसि का औह अंक न लहिया। नजरि मुहल्ले नहीं आंनी।। ४।।
कहा भया तन जटा मजूसा।
अंदरि बिल्ली खात है मूसा। सुरति निरति पद नहीं सांनी।। ५।।
बहु विधि भद्रा भेष बनावैं। झांझि पीट नांचैं और गावैं।
पूजि मुये पत्थर पानी।। ६।।
निज पद की तो खबरि न पाई।
अनंत लोक जिन दिये बनाई। बाजे बाजैं सहदानी।। ७।।
साचे सतगुरु भेद लखाया।
शब्द अतीत महल मठ पाया। जिन संतो पर कुरबानी।। ८।।
सतगुरु दिया अभै पद दाना। बिन पग पंथौं करै पयाना।
गरीबदास दई पहरांनी।। ९।। ४।।
मौले तेरा नाद बजैं रंग अति झीनां।
मौले तेरा नाद बजैं रंग अति झीनां।। टेक।।
बिन चिसम्यौं जहां दरवे चन्दा।
मिट गया तिमिर सबै दुःख दुन्दा। बिन श्रवण सुनिये बीनां।। १।।
झूंमी पलक अलख से जोरी।
क्या लखी क्या भये करोरी। अरब खरब लग है खीनां।। २।।
त्रिलोकी राजा रजधानी।
ध्रू मंडल कूरंभ उड़ानी। क्रितम ख्याल सब लखि लीनां।। ३।।
कहां हुवा जाय बस्या बैकुण्ठा।
जब लग लख्या न अविचल मंठा। जहां बसते हैं देवा तीनां।। ४।।
खुल्हे चिसम इसम के मांहीं।
अटल बिरछ की बैठे छांहीं। ध्यान धर्‌या है अलमीनां।। ५।।
गहवर गंधि सुगंधि सलौंना।
फूल रह्या है मरुवा दौंना। ध्यान धरैं दिल दुरबीनां।। ६।।
अवर्ण वर्ण किरण बहु भांती।
मोती बरषैं बिन हीं स्वांती। ज्यौं दरिया पैठे मीनां।। ७।।
शीश काटि चरणों धरि दीजे।
इस बिधि राम रसायन पीजे। नाद बिन्द घट नहीं सीनां।। ८।।
शीश काटि धरि द्यौह सबेरा।
गगन मंडल में कर ले डेरा। सब जग से होय रहो हीनां।। ९।।

निहअक्षर निरगुन निरबानां।
सो पद घट घट मध्य समानां। पद पावै कोई परबीनां।। १०।।
हीरा लाल घंटा टकसारा।
पारस पद परमेश्वर प्यारा। दास गरीब सही कीन्हां।। ११।। ५।।

अथ राग विहंगम बरवै

चलि सतगुरु के देश। कूँच जुलहदी है।। टेक।।
ब्रह्मादिक से पार न पावैं। रटते शंकर शेष।। १।।
सब जागीर चलैंगी हंसा। बिना नाम नहीं पेश।। २।।
दम दरबान दरीबे पौंहचे। हरदम रटो हमेश।। ३।।
दास गरीब बड़ाई बूडै। होना निरगुन नेश।। ४।। १।।
गगन मंडल की सैल। सतगुरु चलना है।। टेक।।
शील संतोष विवेक विचारो। दूर करो बद फैल।। १।।
निरगुन नाम निरालंब चीन्हो। काटो जुगन जुगन के मैल।। २।।
बिना नाम कोई पारि न उतरे। करि दीजौगे बैल।। ३।।
या जग में कोई रहन न पावै। मरि मरि जांहीं कैल।। ४।।
यौह जग सुपन साच कर जान्यौ। है सो ख्वाबी लैल।। ५।।
अलल पंख होय किया पयाना। है सो झीनी गैल।। ६।।
कहै दास गरीब नाम से छूटै। लख चौरासी खैल।। ७।। २।।
गगन मंडल गुलजार। तुझे कुछ सुझदा है।। टेक।।
अठसठि तीरथ हैं घट मांहीं। एक नाम की लार।। १।।
चिदानन्द चीन्हौं रे हंसा। पूजो कहां पहार।। २।।
पढ़ि पंडित भटकत रहे साधौ। तिर्‌या रैदास चमार।। ३।।
प्रपट्टन की परबी न्हांवों। गंग सहंस मुख धार।। ४।। बाजे बजैं सुहंगम सोहं। शब्द महल झनकार।। ५।। प्याले पीवै खुरदनी हंसा। चोखा फूल कलार।। ६।। अगम अथाह अलील अजोखं। सतगुरु अपरमपार।। ७।।
कोटि भांन कुरबान शरीरं। रूम रूम की लार।। ८।।
दास गरीब पान परवाना। दिल अंदरि दीदार।। ९।। ३।।
रमता रमाय ले, कोये दम जीवै तो,
रमता रमाय ले। पदम झलकाय ले।। टेक।।
मूल कँवल कूँ दृढ़ कर बांधो रे। उलटी पवन समाय ले।। १।।
नाभि कँवल कूँ निश दिन फेरो रे। सुषमन ध्यान लगाय ले।। २।।
याह माया महबूब साहिब की रे। आप परसि भुगताय ले।। ३।।
ऐसी परबी बौहरि नहीं है रे। मानसरोवर न्हाय ले।। ४।।

सहंस मुखी जहां गंग ज्ञानी रे। हंसा मोती चुगाय ले।। ५।।
गगन मंडल में भाठी सरवे रे। चोखा फूल चुवाय ले।। ६।।
चलो सराफैं ज्याहर खानैं रे। खोटे खरे परखाय ले।। ७।।
जे तुझि भूले परख नहीं है रे। तो घालि कुठारी में ताय ले।। ८।।
मोतियाबिंद फिरया है चिसम्यौं रे। नैंन सिकल करवाय ले।। ९।।
ब्रह्म शहर दी गली रंगीली रे। अविगत नगर बसाय ले।। १०।।
कहैं दास गरीब भक्ति सति कीजो रे। सत के दाग दगाय ले।। ११।। ४।।

कोय दम जीवे तो जनम सुधारि ले।
जनम सुधारि ले, चंचल मन मारि ले।। टेक।।

यौह सतगुरु का खेत मंड्या है रे। ज्ञान शब्द तरवार ले।। १।।
जिन सतगुरु तो कूँ भेद लखाया रे। वाहूँ के चरण जुहारि ले।। २।। यौह भौसागर भै का दिरिया रे। बूड़त हंसा त्यारि ले।। ३।।
मन ममता की गांठ बंधी है रे। काहै को सिर भार ले।। ४।।
कहैं दास गरीब भक्ति सति कीजो रे। जमके कागज पारि ले।। ५।। ५।।

कोये दम जीवै तो शब्द पिछानि ले।। टेक।।

जुगन जुगन हम कहते आये रे। आदि संदेशा मानि ले।। १।। लोक लाज कुल की मर्यादा रे। या से उलटा तानि ले।। २।। मगज मनी कूँ पीस बहावौ रे। सतगुरु का तूं ज्ञान ले।। ३।। कहैं दास गरीब भक्ति सति कीजो रे। अलल पंख का ध्यान ले।। ४।। ६।।

क्या ल्याया रे क्या ल्याया।
भौंदू माता के उदर से बाहरि, क्या ल्याया।। टेक।।

पानी की बूंद साज जिन साज्या। अधरि गगन में ठहराया।। १।।
उदर मांहि प्रतिपाल जो कीन्हीं। सो मुरशद क्यों बिसराया।। २।।
जठर अग्नि से राखि लिया है। खांन पांन तोकूँ पौंहचाया।। ३।।
औह दिन हंसा याद करो रे।। मुठी बांधि बाहरि आया।। ४।। जब तुम्ह नगन निराशा रहते। अब सिरोपाव तोकूँ पहराया।। ५।। अब तूँ मेरी मेरी करता। अरब खरब लग जोरी माया।। ६।। कहा भया द्वारे नौबति बाजी। चढ़ि कर ताजी चमकाया।। ७।। कौड़ी कौड़ी माया जोरीं ना बाँट्या खरच्या खाया।। ८।। अंत समै नर बौरे भौंदू। चलती बेर क्यौं पछिताया।। ९।। कहैं दास गरीब सतलोक चलौ रे। बेर बेर तोकूँ समझाया।। १०।। ७।।

चीन्हो सत शब्द नबेरा है।। टेक।।

ऐंठा ऐंठी करते प्रांनी। यामें क्या मेरा क्या तेरा है।। १।। यौह सतगुरु का खेत मंड्या है रे। ज्ञान शब्द शमशेरा है।। २।। तीरथ व्रत ग्यासि कर भूले। यौह एक बड़ा बखेरा है।। ३।। च्यार वेद और पुरान अठारा। यौह एक ऊजड़ झेरा है।। ४।। जो मूरति ठाकुर ठहराये। सो तो घड़ी ठठेरा है।। ५।। च्यार मुक्ति बैकुण्ठ नहीं रे। औह तो मारग अगम उचेरा है।। ६।। वैकुण्ठ के जीव आवैं जाहीं। हरहट के सा फेरा है।। ७।। सोलह संख विहंगम गैलीं जहां सतगुरु का डेरा है।। ८।। कहैं दास गरीब सतलोक चलौ रे। धरियो ध्यान उचेरा है।। ९।। ८।।

समझि खेलौ रे। सौदा बनज समझि खेलौ रे।। टेक।।

यौह जग गुदरी लागी पीठ। ब्रह्मज्ञान सतगुरु से दीठ।। १।। कोई क सौदा करते दूनि। कोई क बैल डारि गये गूनि।। २।। कोई क चौगनें कर कर जांहि। कोई क मूरख मूल गवांहि।। ३।। दोन्यूं दीन चले पछिताय। षट्दर्शन दिया मूल गंवाय।। ४।। काजी पंडित जग के पीर। बैल गूंनि रही उरलै तीर।। ५।। तीन जगाती लैंहि जगाति। जान न पावै कोई दिवस न राति।। ६।। सुर नर मुनिजन भरत जगाति। ऐंठ करैं सो खाय है लात।। ७।। तेतीसौं सिर गुजर लगाय। सिद्ध चौरासी गये चुकाय।। ८।। ब्रह्मा विष्णु महादेव मूल। गुजर लगाय दे गये रसूल।। ९।। चौबीसौं घेरे कोतवाल। नौ औतार डारि गये माल।। १०।। हम तो भरिया सौहंगी साटि। पूरब देश पछां है घाटि।। ११।। संख गुणा किया व्यापार। भौसागर से उतरी लार।। १२।। धुरके दसतक मोहर मजीठ। दास गरीब गुजर लई लूटि।। १३।। ९।।

अमर गुरु है रे। आदि अनादि अमर गुरु है।। टेक।।

जम के गुरुवा मर मर जांहि। भौसागर में गोते खांहि।। १।। जग के गुरुवा काछैं भेष। वह तो सतगुरु शब्द अलेख।। २।। जग के गुरुवा बांचैं वेद। शब्द महल का लख्या न भेद।। ३।। जग के गुरुवा करैं आचार। औह तो सतगुरु अधम अधार।। ४।। उस गुरुवा के माई न बाप। पांच पच्चीस न तीन्यौं ताप।। ५।। अगर अलील जहां शब्द अवाज। जहां तो सत पुरुष का राज।। ६।। सतलोक की विषमी बाट। दास गरीब चल औघट घाट।। ७।। १०।।

अगम गहौ रे सुमिरन भजन। अगम गहौ रे।। टेक।।

जिन साहिब नैं साज्या साज। उस मुरशिद कूँ कर ले याद।। १।। पानी की बूँद बुदबुरा कीन्ह। जल की तरंग जल ही में लीन।। २।।

पांच तत का महल अनूप। जामें बसत सुहंगम रूप।। ३।। इला पिंगला सुषमन तीर। मानसरोवर कोकल कीर।। ४।। द्वादश दरसैं पलटै पौंन। बौहरि न होय है आवा गौंन।। ५।। द्वादस ऊपरि बोलै सोय। ता लखि अमर निहचल होयं। ६।। बाहरि जाता भीतरि आनि। संख कला ऊगै शशि भांन।। ७।। सोलह कला संपूरन देख। बाहरि भीतरि दर्पण एक।। ८।। अगर दीप की बंकी सैल। शब्द महल की झींनी गैल।। ९।। जहां उत्पत्ति परलो दुंद न दोष। दास गरीब अमर सतलोक।। १०।। ११।।

मेरे दिल बस रहे साहिब कबीर।। टेक।।

सोवत जागत अरु सुपन में। नजरि परै निरगुन तसमीर।। १।। ज्ञान गुरजि मौले ने बकस्या। ताबै हो गये पांचौं पीर।। २।। सतगुरु समरथ भेद लखाया। जाये बसे दरिया रे तीर।। ३।। गगन मंडल में भाठी सरवै। प्याले फिरैं अमीरस खीर।। ४।। सत लोक कूँ गवन कर हंसा। जहां देखो बौह संतन की भीर।। ५।। कहैं दास गरीब या में संसा नाहीं। सतगुरु तोरै जम जंजीर।। ५।। १२।।

सतगुरु आये रे देखो, हरि दरिया रे तीर।। टेक।।

सतगुन रजगुन तमगुन साधौ। अब बंधि लीजौ रे तुम पांचौं पीर।। १।। इला पिंगला सुषमन खोजो, जहां बहै सहंस मुख रे, अमृत धारा नीर।। २।। कामधैंनु निशवासर दूझै। बरषै अमी महारस रे, जहां बरषै अमी महारस खीर।। ३।। शब्द अतीत अनाहद बाजे। जहां बानी रे, अनहद गहर गंभीर।। ४।।

दास गरीब जा का सेत बरन है। अविगत है रे, अविगत जिन्दा पुरुष कबीर।। ५।। १३।।

शब्द विचारो रे हंसा, उतरो औघट घाट।। टेक।।

त्रिकुटी कँवल में भँवर गुफा है। जहां जड़ि राखे है रे, खोल्हो बजर कपाट।। १।। बिना बैल जहां कोल्हू चालै। प्रेम चवै है रे, प्रेम चवै बिन लाठ।। २।। धरि ऐंनक दुरबीन लगावौ। ध्यान धरौ नैं रे, ध्यान धरौ बैराठ।। ३।। बिनहीं चरनौं करो पियाना। मक्रतार की रे, चलि मक्रतार की बाट।। ४।। हम सौदागर सतगुरु भेट्या। ब्रह्म शहर में रे, जहां कलाली हाटि।। ५।। दास गरीब बनज है नीका। सतगुरु कीन्ही रे, देखो बहु हंसौं की साटि।। ६।। १४।।

सतगुरु देख्या रे, पलटे नैनों ही में नैंन।। टेक।।

गगन मंडल कूँ किया पयाना। समझि लीजौ ने रे, समझि हमारी सैंन।। १।। मुरली अधर मधुर धुंनि बाजैं। गावै है रे, बिन मुख

अनहद बैंन।। २।। बाहरि भीतरि सकल निरंतरि। सुनिये है रे, सुनिये कुंजी बैंन।। ३।। जहां चन्द सूर नहीं गगन है। निशवासर नहीं है रे, निशवासर नहीं रैंन।। ४।।
ब्रह्म शब्द में हरदम रहना, मिट गये है रे, मिट गये फोकट फैन।। ५।। बिना बंदगी बादि बहत है। ना कछु है रे, ना कछु लैंन न दैंन।। ६।। दास गरीब सुख सागर पाया। हंस करैं है रे, करैं सुख चैंन।। ७।। १५।।

नगरिया बावरी रे। देख्या सूरति नगर सुभान।। टेक।।

मैं आजिज दगरा नहीं जानौं। पौंहचे है रे, पौंहचे सतगुरु के परवानि।। १।। अनन्त जोधा जहां हैं रखवारे, ना कोई पावै रे, ना कोई पावै जान।। २।। लाख जगि असुमेद उठावैं। कोटि गऊ रे, कोटि गऊ दे दान।। ३।। अठसठि तीरथ परबी न्हावै। इन्द्र दौंन कर रे, इन्द्र दौंन अस्नान।। ४।।
गया पिरागजहां मकर महीना। कीजै है रे, कीजे पिण्ड प्रधान।। ५।। काशी जगन्नाथ के बासी। जहां न होता रे, जहां न होय कल्यान।। ६।। पृथ्वी की प्रदछिनां देवै। नहीं अरध नाम की रे, नहीं अरध नाम प्रवान।। ७।। शेष शीश पर निरगुण रासा। जहां वहां धरियौ रे, जहां वहां धरियौ ध्यान।। ८।। शंख चक्र गदा पदम बिराजै। धनुष चढ़ाये रे, धनुष चढ़ाये बाण।। ६।। अष्ट भुजा पर सहंस भुजा हैं। फरकैं हैं रे, फरकैं धजा निशान।। १०।। संख भुजा परमानंद स्वामी। जा मूरति ऊपरि रे, जा मूरति पर कुरबान।। ११।। सपतपुरी का राज कहां है। ता पर वारौं रे, ता पर वारौं पिण्ड रु प्रांन।। १२।। दास गरीब सतलोक बसेरा। अब मिट गया रे, मिट गया आवन जान।। १३।। १६।।

नगरिया बावरी रे। जहां कोई पौंहचे बिरले संत।। टेक।।

ज्ञानी ध्यानी वारि पुकारैं। बाट न पावैं रे, बाट न पावैं पंथ।। १।। जो पौंहचे सो कहा बखानैं। वार पार नहीं रे, वार पार नहीं अंत।। २।। जहां दुलहा एक असंख दुलहनी। अविगत दुलह रे, अविगत दुलह साहिब कंत।। ३।। दास गरीब कोई महरम जानैं। जहां बारा मास जु रे, बारा मास बसंत।। ४।। १७।।

नगरिया बावरी रे, अनहद सत शब्द झनकार।। टेक।।

कोटिक अनभै गूंदै सेहरा। पुरुष गले कूँ रे पुरुष गले फुलमाल।। १।। छत्र सेत और सेत सेहरा। पीतंबर पतिर रे, पीतंबर धूमार।। २।। सेत चौंर और सेत सिज्या है। उजल भौंरा रे, उजल भँवर भनकार।। ३।।

मुकट निकट देखो अनरागी। संख पदम का रे, संख पदम उजियार।। ४।। त्रिकुटी भृकुटी ऊपर बैठ्या। दिल अंदर है रे, दिल अंदर दीदार।। ५।। रिमझिम रिमझिम होय दशौं दिश। अविगत नूर जु रे, अविगत नूर अपार।। ६।। दास गरीब जहां अछै बिरछ है। परमहंस का रे, परमहंस परिवार।। ७।। १८।।

पारस भेट्या रे, देखो लोह कंचन होय जाय।। टेक।।

जैसे ध्यान कमोदनी लावैं। चकोर अंगारे रे, चकोर अंगारे खाय।। १।। जुगन जुगन के सूते हंसा। सतगुरु लिये रे, सतगुरु लिये जगाय।। २।। सिंह सूर और साध सती। ये नहीं चालैं रे, ये नहीं चालैं राहि।। ३।। कदली कपूर ज्यों कसैं कसौटी। गांठि जु दीन्ही रे, देखो गांठि जु लीन समाय।। ४।। जैसे भिरंगी कीट पतंगी। मूये पंछी कूँ रे, मूये पंछी कूँ लेत जिवाय।। ५।। क्या सतगुरु की कीरति बरनौं। गुटकैं गंग जु रे, देखो गुटकैं गंग बहाय।। ६।। दूजी कीरति कर्ता बरनी। देखो सिधा रे, देखो सिधा लिये उड़ाय।। ७।। जैसे लाल सहैं सिर घन कूँ। दो दलि में रे, देखो दो दल में ठहराय।। ८।। जाकी माया सब जग खाया। अपने जाये रे, अपने जाये लिये छिपाय।। ९।। हम कूँ सतगुरु ऐसा भेट्या। जाकै पिदर न रे, जाकै पिदर न माय।। १०।। दास गरीब सतलोक बसेरा। अभै अमर घर रे, अभै अमर घर पाय।। ११।। १९।।

तालिब तोरा रे, हंसा है तेरे ही मांहि।। टेक।।

समाधान में सुरति लगावो। अछै बिरछ की रे, अछै बिरछ की छांहि।। १।। जुगन जुगन लौ ज्ञान कथीला।
बिन सतगुरु नहीं रे, बिन सतगुरु पावै नांहि।। २।। हिरदे खोया बाहरि जोया। देवल धामा रे, तीरथ ढूंढन जांहि।। ३।। जेते बाग धरनि पर लागैं। फूलि फूलि कर रे, फूलि फूलि कुमिलांहि।। ४।। याह मूरति सूरति कहां पावैं। जांमि जांमि कर रे, जांमि जांमि मरि जांहि।। ५।। पूंजी शाहूकार की। मूरख मूल जु रे, मूरख मूल गवांहि।। ६।। शीतल शब्द शरीर हमारा। दास गरीब जु रे, दास गरीब समांहि।। ७।। २०।।

नीच कौन है रे, ब्रह्म पिछानि नीच कौन है।। टेक।।

बालनीक कूँ कहते नीच। नाम प्रताप हो गये ऊँच।। १।। जाकै द्वारै गड़ती कूँडि। रैदास चल्या षट दरशन मूंडि।। २।। कनक जनेऊ काढ्या कंध। समझैं नांहीं हिये के अंध।। ३।। सदना बकरे चीरत चाम। जा घट बोलया रमता राम।। ४।। सैंन भक्त का संसा दूर। स्वामी सेवक मिले हजूर।। ५।। नामा छीपी पद प्रवानि। देवल फेर

छिवाई दई छानि।। ६।। जाकूँ शूद्र कहते लोई। धन्ना भक्त दई कंकर बोई।। ७।। अजामेल से अधम उधारि। गनिका बैठि विमान भई पार।। ८।। पीपा परचै थे रजपूत। समझैं नांहि अकल के ऊत।। ६।। काशीपुरी कबीर कमाल। गैबी बालदि आई रिसाल।। १०।। पंडित तिरा न देख्या कोइ। सूतग पातिग जीमें दोई।। ११।। हौं हौं करैं सो मूरिख होइ। कहे दास गरीब ब्रह्म नहीं दोइ।। १२।। २१।।

सुरति समाना रे, देखो त्रिकुटी कँवल में लाल।। टेक।।

जहां वहां अविगत हंस बिराजैं। मानसरोवर रे, मानसरोवर ताल।। १।। सतगुरु हंसा आनि चिताये। हंसा गवनी रे, देखो हंसा गवनी चाल।। २।। अबरन बरन न बरन्या जाई। उदबुद रूप रे, उदबुद रूप बिसाल।। ३।। चितके अंदरि चौंक पुराऊँ। भरि भरि मोतियन रे, भरि भरि मोतियन थाल।। ४।। मुरली मनोहर मगन मुरारी। गावै हैं रे, गावै अनहद ख्याल।। ५।। क्या सतगुरु का रूप बखानौं। मोला है रे, मौला नजरि निहाल।। ६।।

रहम कर्म कर हमरे आये। अविगत दीन जु रे, अविगत दीन दयाल।। ७।। अमर लोक जहां अमर भूमि है। कहा करै है रे, कहा करै जम काल।। ८।। दास गरीब हम जाकै चाकर। जम जौंरा के रे, जम जौंरा के साल।। ६।। २२।।

झिलमिल दरसै रंग जहूरा, कोई जानै सतगुरु पूरा।। टेक।।

जहां बाजै अनहद नादं, जहां ध्यान धरैं कोई साधं।। १।। लाग्या गगन मंडल में डोरा, जहां नाचैं हंस रु मोरा।। देख्या गगन मंडल में जोती, जहां बरषैं मानिक मोती।। ३।। जहां छुटैं अनंत फुहारा, जहां गंग सहंस मुख धारा।। ४।। जा कूँ शेश सहंस मुख गावै, जा का ब्रह्मा पार न पावै।। ५।। धरैं सनक सनंदन ध्याना, जहां शिव शंकर गलताना।। ६।। बाजैं झालरि झांझि अखण्डा, सब गूंजैं पिण्ड ब्रह्मण्डा।। ७।। देखी गगन मंडल चित्रशाला, जहां बाजैं बीन रसाला।। ८।। बीते संख कलप जुग लोई, जा का तालहि भंग न होई।। ६।। जहां बाजैं भेरि नफीरी, सुनि राजौं लई फकीरी।। १०।। बाजे रुनक झुनक रुनझुनियां, हम गगन दमामें सुनियां।। ११।। मुरली अधर मधुर महमंती, जहां राग होत निहतंती।। १२। जहां मलागीर मकरंदा, जहां केसर बाग बिलंदा।। १३। जहां सेत धजा फरराहीं, जहां बैठे अलख गोसांई।। १४।। जहां सेत भूमिका साजै, जहां अजब घड़ावलि बाजै।। १५।। जहां सेत भूमिका सारी, जहां संख पदम उजियारी।। १६।। जहां कमल केतगी साजैं, जहां

उजल भँवर बिराजैं।। १७।। जहां सुनियें शब्द सुसीला, जहां होती अजब करीला।। १८।। जहां **गरीबदास** गलताना, हम देख्या देश दिवाना।। १६।। २३।।

झिलमिल दरसै कमल खुलासा, हमरे नैनों ही में बासा।। टेक।।

जहां धर अंबर नहीं धवलं, जहां फूल रह्या एक कमलं।। १।। हम रहे लुबधि बिरमाई, सो तो गहि पकर्या नहीं जाई।। २।। सो तो शिखर शुन्य पर साजैं, हमरी पलकौं मंझि बिराजैं।। ३।। जहां अविगत रंग विलासा, एक फूल्या फूल अकाशा।। ४।। हम देख्या अविगत फूलं, तल शाखा उपरि मूलं।। ५।। सौ तो बिना मूल गहराहीं, सो तो बिन डांडी लहराहीं।। ६।। वह तो लहरि लहरि झुकि आवै, जन ठहरै जित ठहरावै।। ७।। जहां अधरि सिंध एक नौका, सो तो विकट पंथ है औखा।। ८।। औह तो चालै अधरि सतेसा, जहां बैठे शंकर शेषा।। ६।। जहां ब्रह्मा विष्णु तपंता, सनकादिक नारद संता।। १०।। बांध्या सुरति निरति तसमीरं, हम भेटे पुरुष कबीरं।। ११।। छूटी भुवन चतुर्दश आशा, हम कीन्हा पद में बासा।। १२।। वैकुण्ठ मुक्ति क्या कीजै, अविगत कमल अमीरस भीजै।। १३।। हम पाया पद प्रवाना। जहां **गरीबदास** दरबाना।। १४।। २४।।

झिलमिल दरसै फूल चंबेली, चंपा दरसै जहां परसै सुरति नवेली।। टेक।।

देख्या अधर बाग गुलजारा, जहां फूल्या फूल हजारा।। १।। जहां रिमिझिम रिमिझिम रंगा, सुनि बेधे नाद कुरंगा।। २।। देख्या सेत बरन शुभ रंगा, जासैं कबू न होय चित भंगा।। ३।। जहां गगन घटा गरजाहीं, जहां लहरि लहरि बरषाहीं।। ४।। जहां दामनि दमकैं बीजं, जहां दुलहनि खेलें तीजं।। ५।। देख्या सुरग समान हिंडोला, जाकी कला संपूरन सोला।। ६।। जहां देख्या संख कंगूरा, कोई पौंहचे सतगुरु पूरा।। ७।। जहां हंस परमहंसा खेले, कोई पर सतगुरु बेले।। ८।। भये दरस परस प्रवाना, हम पाया फल बेदाना।। ६।। बिन श्रवण सुनी अवाजा, बिन चिसम्यौं देख्या साजा।। १०।। साध्या सुरति निरति पद श्वासा, हम कीन्हा अनहद बासा।। ११।। जहां पान पान में चंदा, हम देख्या अति आनंदा।। १२।। जहां बाजैं गगन दमामें, तुम सुनो सत सहनामे।। १३।। जहां **गरीबदास** धरि ध्याना, जाके चरण कमल कुरबाना।। १४।। २५।।

कर सुरति निरति की सैल, अगम दर अरसी है।। टेक।।

त्रिकुटी कँवल में रोशन तकिया, चिशमें उलट हरफ इक लखिया, सो योगी पद परसी है।। १।। सूर चंद पवन नहीं पानी, कच्छ मच्छ कूरंभ न जानी, जहां अरस नहीं कुरसी है।। ररंकार अनहद धुनि होई, अजपा जाप सुहंगम सोई, जम जौंरा जहां डरसी है।। ३।। अविगत नगर चलो रे चेला, हंस परमहंस करूंगा मेला, सो तो बहुरि न जूनि धरसी है।। ४।। चित्त चकमक चमकाय ले रे हंसा, अविगत नाद मिलो कुल बंसा, जो तो विरह अग्नि में जरसी है।। ५।। दास गरीब अचल अनरागी, यौह पद खोजे सो वैरागी, सो तो पारब्रह्म पर वरसी है।। ६।। २६।।

गहरा गाजे शब्द सुरो रे। पढ़ पंडित वेद गुनो रे।। टेक।।

कहा पाहन फूल चढ़ावै, जड़ जोनि घंट बजावै। याह जड़ पूजा नहीं कीजै, जासे पारब्रह्म नहीं रीझै।। १।।
जड़ पाहन श्याम शरीरा, गंडकी नदी बहै बहु नीरा।
यह घड़ी ठठेरे बीना, तन टांकी चीत न कीना।। २।।
जो सोने का शालिग्रामा, सो आवै तेरे कामा।
जे चांदी का भी होई, तेरी भूख बिडारै सोई।। ३।।
कहा पाहन पूजे पाढ़ा, जैसे छेली गल थन राडा।
या थन में दूध न मूता, पाहन धार मार गया कूता।। ४।।
तूं समझै क्यों न कोरी, कुतरे की टांग न तोरी।
बहु चंदन अर्पण कीना, पाहन तिलक किया मति हीना।। ५।।
तूं बूझ कबीरा कोरी, पंडित पाती क्यों तोरी।
जिन शालिग शिला बुलाई, जड़ पाहन दूध पिलाई।। ६।।
जाकै कनक जनेऊ बाना, रैदास विप्र हम जाना।
गल सूत जनेऊ धागा, सो देही संग जर जागा।। ७।।
यौह चालत है षट् मासा, इस धागे की क्या आसा।
जो सुरती श्वास मिलावै, गलि पिण्डा तन पहरावै।। ८।।
जाकै लागै गांठ न घूंडी, नाभि सुरति समानी सूंडी।
उपजे शील संतोष रु ज्ञाना, जासे दया धर्म प्रवाना।। ९।।
जो बुद्धि विवेक बनावै, याह स्वांति सुरति कहावै।
जो चित्त चंदन घस लेखे, सौ दर्पण में मुख देखे।। १०।।
लेवे क्षमा अकल का छापा, जाकूँ व्यापै पुण्य न पापा।
उलटे द्वादश तिलक समौवै, सो तो बंकनाल में जोवै।। ११।।
पूजे ब्रह्मानंद पद सेवै, सो आप तिरै और कूँ खेवै।
कहै दास गरीब त्रिवाचा, कहिये सो ब्रह्मचारी साचा।। १२।। २७।।

अथ राग सरबंग

ररंकार रसता रहे मन बौरा रे।
तुंही तुंही फुनिलार समझि मन बौरा रे।। टेक।।
सोहं शब्द सही मिलै मन बौरा रे।
आगै भेद अपार समझि मन बौरा रे।। १।।
जहां ज्ञान ध्यान की गमि नहीं मन बौरा रे।
सुरति निरति नहीं जाय समझि मन बौरा रे।। २।।
कोटिक प्रानी ध्यान धरि मन बौरा रे।
उलटि परे भौ आय समझि मन बौरा रे।। ३।।
सिर साटे का खेल है मन बौरा रे।
सूली ऊपरि सेज समझि मन बौरा रे।। ४।।
जहां संख कोटि रवि झिलमिलैं मन बौरा रे।
नूर जहूरं तेज समझि मन बौरा रे।। ५।।
कायर भागे देखते मन बौरा रे।
सुनि अनहद घनघोर समझि मन बौरा रे।। ६।।
घाव नहीं मैं घावले मन बौरा रे।
कोई सूरा रहसी ठौर समझि मन बौरा रे।। ७।।
लोझा पीठि न फेर हीं मन बौरा रे।
सन्मुख अरपैं शीश समझि मन बौरा रे।। ८।।
तन मन मिरतग हो रहै मन बौरा रे।
तिस भेटे जगदीश समझि मन बौरा रे।। ९।।
सतलोक कूँ चालिये मन बौरा रे।
संत समागम हेत समझि मन बौरा रे।। १०।।
तहां एक गुमट अनूप है मन बौरा रे।
जहां छत्र सिंघासन सेत समझि मन बौरा रे।। ११।।
शब्द महल गुलजार है मन बौरा रे।
जहां ढुरैं सुहंगम चौंर समझि मन बौरा रे।। १२।।
दास गरीब जहां रते मन बौरा रे।
जहां गूजैं उजल भौंर समझि मन बौरा रे।। १३।। १।।
याह काया छिन भंग है मन बौरा रे।
सुमरो सिरजनहार समझि मन बौरा रे।। टेक।।
रूंम रूंम धूनि ध्यान धरि मन बौरा रे।
आठौं कँवल उच्चार समझि मन बौरा रे।। १।।
यौह लाहा क्यों न लीजिये मन बौरा रे।
सुरति निरति कर लीन समझि मन बौरा रे।। २।।

पंछी खोज न पाईये मन बौरा रे।
ज्यौं दरिया मध्य मीन समझि मन बोरा।। ३।।
पांच तत्व के मध्य है मन बौरा रे।
नौ तत्व लिंग शरीर समझि मन बौरा रे।। ४।।
नौ तत्व के से आगहीं मन बौरा रे।
अजर अमर गुरु पीर समझि मन बौरा रे।। ५।।
सूक्ष्म रूप है तास का मन बौरा रे।
चतुर्भुजी चितरंग समझि मन बौरा रे।। ६।।
अष्ट भुजा है तास मध्य मन बौरा रे।
मूरति अचल अभंग समझि मन बौरा रे।। ७।।
सहंस भुजा संगीत है मन बौरा रे।
शिखरि सरू बैराठ समझि मन बौरा रे।। ८।।
विश्व रूप है तास मध्य मन बौरा रे।
गुरु लखाई बाट समझि मन बौरा रे।। ९।।
शंख चक्र गदा पदम है मन बौरा रे।
कौसति मणि झलकंत समझि मन बौरा रे।। १०।।
धनुष बान मूसल धजा मन बौरा रे।
अजब नवेला कंत समझि मन बौरा रे।। ११।।
खड्ग धार भुज डंड है मन बौरा रे।
फरकैं धजा निशान समझि मन बौरा रे।। १२।।
निरख परखि करि देख ले मन बौरा रे।
साचे सतगुरु के प्रवानि समझि मन बौरा रे।। १३।।
ता आगे सत पुरुष है मन बौरा रे।
जाकै भुजा असंख समझि मन बौरा रे।। १४।।
अनंत कोटि रवि झिलमिलैं मन बौरा रे।
हंस उडैं बिन पंख समझि मन बौरा रे।। १५।।
सेत छत्र चौंरा ढुरैं मन बौरा रे।
दामनि दमक दयाल समझि मन बौरा रे।। १६।।
अमर कछ अनहद पुरी मन बौरा रे।
सतगुरु नजरि निहाल समझि मन बौरा रे।। १७।।
अनंत जुगन की बाट थी मन बौरा रे।
पल अंदरि प्रवानि समझि मन बौरा रे।। १८।।
मिहर दया से पाईये मन बौरा रे।
औह दरगह दिवान समझि मन बौरा रे।। १९।।
संख योजन परि लाल है मन बौरा रे।

दमक्या चिसम्यौं तीर समझि मन बौरा रे।। २०।।
दास गरीब लखाईया मन बौरा रे।
मुरशद मिले कबीर समझि मन बौरा रे।। २१।। २।।

अथ राग बधावना

गावो मंगल चार, आज बधावना ये।
सुपना दीठ्या साच, सजन घरि आवना ये।। टेक।।
छत्र मुकट सिर सेहरा, अविगत अलख अनूप।
दसमें ऊपरि दरश है, ना छाया ना धूप।। १।।
छत्र मुकट महबूब का, रतन उजागर तेज।
हीरे माणिक झिलमिलैं, चलि सतगुरु की सेज।। २।।
संख चौंर जहां ढुरत हैं, छत्र मुकट सिर शीश।
सतगुरु के उपदेश से, देख्या बिसवे बीस।। ३।।
संख कोटि रवि झिलमिलैं, रूंम रूंम उजियार।
अगमदीप अनहदपुरी, बाजे बजैं अपार।। ४।।
संख पदम झरपोश है, पीतंबर कुरबांन।
शुन्य शिखर महबूब है, निरगुन पद निरबांन।। ५।।
कलंगी मुकट बिराजहीं, उजल हिरंबर दंत।
अजर अमर वर पाईया, अविगत दूलह कंत।। ६।।
संख पाट धुनि करत हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सनकादिक नारद रटैं, पार न पावै शेष।। ७।।
संख सुरसती लाप हीं, अनभै मालनि मूल।
शिव के सिर पर सेहरा, फिरैं सुराही फूल।। ८।।
कोटि कुबेर भंडार हैं, चरण कमल प्रसाद।
जहां दुलहनि आरति करैं, संख असंखौं साध।। ९।।
परमहंस बांनी जहां, अछैबिरछ का बाग।
कसतूरी गंध महक हीं, सुनों संदेशा राग।। १०।।
अगर पौहप में बास है, त्रिवैणी के तीर।
दास गरीब लखि अगम है, अविगत दूलह कबीर।। ११।। १।।
अविगत साहिब राम का, देख्या रूप अपार।
नासा अगरी नूर है, पल पल दृष्टि निहार।। टेक।।
अविगत साहिब शुन्य में, नहीं देश नहीं गाम।
अजब अटारी झिलमिलैं, बिना नीम का धाम।। १।।
ब्रह्मा गायत्री पढ़ैं, ररंकार धुनि शेष।
शंकर सोहं जाप है, सतगुरु का उपदेश।। २।।

अर्श कुर्श के अंतरै, पड़दा पंथ अडील।
सूक्ष्म से सूक्ष्म लह्या, दीरघ जेता लील।। ३।।
राई सौंमा अंश है, जा परि नजरि कसीस।
पवन दण्ड कूरंभ कला, सतगुरु बैठे शीश।। ४।।
मीनी खोज खालिक लह्या, उड़गन अधरि अचंक।
खोज करे से पाईये, अविगत मारग बंक।। ५।।
सूरज ऊपरि सूर हैं, चंदा ऊपरि चंद।
तार्यौं पर तारे खिमैं, देख्या अति आनंद।। ६।।
संख चक्र झीनें जहां, मुरली बजैं विशाल।
अमर कच्छ अविगत पुरुष, कंपैं जौंरा काल।। ७।।
असमानी असतल रच्या, सेत गुमट है मूल।
कायम दायम है सदा, करि चलनें का सूल।। ८।।
निरगुण रासा समझि ले, लाय सुरति की डोरि।
दास गरीब रवि रूंम में, सूरजि खिमैं करोरि।। ९।। २।।

अथ राग सेहरा

रे नौ रंग लाग्या सेहरा।। टेक।।
धरि धरि ध्यान निहारिये, तेरे मिटि जांहि तीनौ ताप।
सुरति निरति संजम करो रे, जपि ले अजपा जाप।। १।।
जांमा है जरी बफत का रे, पीतंबर फरकंत।
शुन्य शिखर में देखि ले रे, अविगत दूलह कंत।। २।।
कानौं कुण्डल अति बनें रे, सेत छत्र है शीश।
पारब्रह्म वर पाईया रे, हे दुलह जगदीश।। ३।।
पदम झलकैं चरण में रे, गलि मोतियन की माल।
शुन्य शिखर में देखि ले रे, अविगत रूप विसाल।। ४।।
शील सुमति दोऊ संगि है रे, ज्ञान घोरे असवार।
करि दुलहनि तूं आरता हे, पुरुष खड़ा तेरे बारि।। ५।।
पलक उठाय कर देखि ले हे, रिमझिम रिमझिम होय।
बाहरि भीतरि रमि रह्या हे, और न दूजा कोय।। ६।।
त्रिकुटी अंदरि पैठि कर हे, तुम लावो शब्द सनेह।
आदि अंति जाके नहीं रे, देखो पुरुष विदेह।। ७।।
दास गरीब दया करी रे, तन मन वारौं प्रान।
धनि सतगुरु उपदेश तूं, शीश करौं कुरबान।। ८।। १।।

अथ राग डोरी

आशा तृष्णा मेटि हो, तातैं जनम जनम डहकाईया।। टेक।।
राज पाट बहुते किये रे, सुरगापुर किया वास।
इन्द्र गये बारू जिते, मिटी न जम की तिरास।। १।।
माला पहरै क्या हुवा रे, तिलक बनाये बीन।
तुलसी निशदिन खाय थे, जम के भये आधीन।। २।।
शालिग शिला संपट किये रे, औह नहीं संपट समाय।
अनंत कोटि बाजे बजैं, सो कैसे रीझ रिझाय।। ३।।
जटा बधाय जंगल बस्या रे, मुण्ड मुण्डाया घोट।
सांग धर्‌या व्यभिचारणी, मिटे न मन के खोट।। ४।।
अठसठि तीरथ सब किये रे, परबी न्हाये खूब।
राम रसायन ना पिया रे। तातैं सौना भया न सूब।। ५।।
दस इन्द्री लारे लगी रे, पच्चीसौं प्रकृति।
तीन गुनन के ताव से, टूटि गया मन व्रत।। ६।।
जब तेरा हंसा पीड़िये रे, लख बिच्छू की झाल।
तन मन धीरी ना धरै रे, कठिन तिरास जम काल।। ७।।
सत सुकृत पद चीन्हि ले रे, गरभ तिरास मिटि जाय।
ऐसा सतगुरु सेईये रे, बहुरि न उदर समाय।। ८।।
संख कलप जुग हो गये रे, जनम कर्म नहीं नेश।
कहा कमाया आनि कर रे, लग्या नहीं उपदेश।। ६।।
औघट घाट अबाट है रे, जहाँ न पंथी पंथ।
सतगुरु के प्रताप से, कोई जानत बिरला संत।। १०।।
इला पिंगला मध्य है रे, सुरति सुषमना घाट।
चलि सतगुरु के लोक कूँ, सनकादिक जो हैं बाट।। ११।।
सहंस कमल दल जगमगै रे, त्रिकुटी ताल समूल।
नासा अगरी देखि ले रे, बिन डांडी का फूल।। १२।।
दोय तीनि जहां च्यार हैं रे, पंच फूल प्रवानि।
पांचों संगि पच्चीस हैं रे, तातैं छ्याय रह्या असमान।। १३।।
संख कमल करुणामई रे, दशौं दिशा कूँ देख।
अविगत आदि अनादि है रे, पूरन ब्रह्म अलेख।। १४।।
चंद अखण्डा जगमगै रे, सूरजि तेज असंख।
गरीबदास गति को लखै रे, औह अक्षर बेअंक।। १५।। १।।

अथ राग केहरा

जिंदा मौला मालिक मेरा, हम सत साहिब जान्या रे।
गगन मंडल गुलजार गलीचा, पेख्या रवि खिलखाना रे।। टेक।।
खालिक मालिक है महबूबं, है निरगुन निरबाना रे।
अलह अलेख रेख नहीं रूपं, शब्द अतीत पिछान्या रे।। १।।
शब्द अतीत रंगे रस भीनां, अनरागी निज ताना रे।
अर्श खुरदनी लगी खुमारी, अमी महारस खाना रे।। २।।
शब्द समाधि लगी अमरापुर, करि सतलोक पियाना रे।
शब्द अपारूं नूर जुहारूं, कादर परि कुरबाना रे।। ३।।
यौह जग बंध्या भौजल फंध्या, समझै नहीं बिगाना रे।
जिनि चौदह तबक रचे छिन मांही, धरे जिमि असमाना रे।। ४।।
पांच तत्व की गुदरी कीन्ही, सिरजे पिण्ड रु प्राना रे।
दास गरीब मिहर सतगुरु की, शब्दे शब्द समाना रे।। ५।।
दृष्टि परै सो धोखा रे,
खंड पिंड ब्रह्मण्ड चलैंगे, थिरि नहीं रहसी लोका रे।। टेक।।
रजगुण ब्रह्मा तमगुण शंकर, सतगुण बिसन कहावै रे।
चौथे पद का भेद नियारा, कोई बिरला साधु पावै रे।। १।।
ऋग यजुर हैं साम अथरवन, चहूँ वेद चित भंगी रे।
सुषम वेद साहिब सरबंगी, सो हंसा सतसंगी रे।। २।।
अलंकार अग हे अनरागी, दृष्टि मुष्टि नहीं आवै रे।
रूप न रेख विवेक न बानी, च्यार वेद क्या गावै रे।। ३।।
आवै जाय सो हंसा कहिये, परमहंस नहीं आया रे।
पांच तत तीन्यूं गुन तूरा, याह तो कहिये माया रे।। ४।।
शुन्य मंडल सुखसागर दरिया, परमहंस प्रवाना रे।
सतगुरु महली भेद लखाया, है सतलोक निधाना रे।। ५।।
अगमदीप अमरापुर कहिये, हिलमिल हंसा खेलै रे।
दास गरीब देश है दुरलभ, साचा सतगुरु बेलै रे।। ६।।
मन की मुदरा पावो रे,
सुरति निरति धुंनि मूल समाना, काया नगर बसावो रे।। टेक।।
ब्रह्मण्ड अनंत पिण्ड में देखे, शंकर शेष असंखा रे।
नाद नाद में नारद ब्रह्मा, ऐसा यौह गढ़ बंका रे।। १।।
मूल कँवल से सहंस कँवल दल, उठारा कोटि करारी रे।
संख कान्ह जहां करै विलासा, खेलत है रास धारी रे।। २।।
मानसरोवर हंसा पैठे, अछर धाम का बेरा रे।
रतनागर में ऐश करत हैं, सुखसागर में डेरा रे।। ३।।
मक्रतार अघनूस निशानी, कोई संत जन पावै पारा रे।

समझि बूझि याह सैंन अगम है, अगम दीप का कहरा रे।। ४।।
समझि बूझि यौह खोज अगम है, विचरत शंकर शेषा रे।
शब्द महल में तारी लागी, सतगुरु के उपदेशा रे।। ५।।
भेष न पंथ तत धुनि बसती, नाम न गाम न नेहा रे।
दास गरीब शब्द के सैली, खोज बतावैं केहा रे।। ६।।

अगम अगोचर डेरा रे,
मुकताहल पद पेखो हंसा, बौहरि न होसी फेरा रे।। टेक।।

मूल कँवल कूँ दृढ़ कर बांधौ, सिद्ध आसन प्रवाना रे।
नारी चक्र चितारौं औधू, कौन महल दरवाना रे।। १।।
गुदा कँवल में नेश बिंद है, रवणपुरी निज रासा रे।
नाभ कँवल का संपट खोल्हो, चढि मेर दण्ड कैलाशा रे।। २।।
हिरदे कँवल हिरंबर हंसा, जपि ले अजपा बानी रे।
सुरति सुहंगम डोरी लावो, चीन्हि शब्द सहदानी रे।। ३।।
कंठ कँवल बिरहा प्रकाश्या, उठैं लहरि अनरागी रे।
त्रिकुटी कँवल में पदम झलकैं, देखै सो बड़भागी रे।। ४।।
बजर पौरि उघारि चलि हंसा, भँवर गुफा घर कीजे रे।
शब्द सुषमना कुँची ताला, यौह मारग मघ लीजै रे।। ५।।
नाद तूर जहां झांझि संख डफ, रनसींगे घनघोरा रे।
तुरही भेर अजब सहनाई, जहां कोकिल मोर चकोरा रे।। ६।।
सप्त शुन्य पर अगम दीप है, सहंस कँवल जहां दरिया रे।
कंगनी कंगनी बाजे बाजैं, सुनि पद हंस उधरिया रे।। ७।।
शब्द अतीत रास मंडल है, अलल पंख धुनि होई रे।
कोटिक मुनिजन ध्यान धरैं हैं। पद चीन्हैं बिरला कोई रे।। ८।।
अलंकार अनहद धुनि गाजे, अछर धाम दरवाना रे।
आगै मक्रतार की डोरी, जहां कोटि कला छबि भाना रे।। ९।।
सतपुरुष से परसे हंसा, जहां संख पदम उजियारा रे।
दास गरीब तलब नही जम की, मिले महल परिवारा रे।। १०।।

यौह गुण ख्याल कौन मन बौरे, कहां जाय कहां आवै रे।। टेक।।

ज्ञानी गुणी मुनी सब भूले, चार्‍यौं वेद पढ़ावै रे।
अक्षर में निःअक्षर बोलैं, सूक्ष्म वेद कूँ गावै रे।। १।।
मुसलमान धरनि बिच धरिये, हिंदू अग्नि जरावै रे।
दहूँ दीन की माटी एकै, दूसरा कौन कहावै रे।। २।।
शालिग शिला जगत सब पूजैं, अठसठि तीरथ न्हांवै रे।
गरुड पुरान प्रान सब सुनहीं, बौह बिधि पिंड भरावै रे।। ३।।
अनन्त कोटि चौरासी भटकैं, जनम जनम डहकावै रे।

राजा प्रजा पशु पंखेरू, शूकर श्वान बनावै रे।। ४।।
पंच अगनि झरनैं जल बैठैं, धूमरि पान झुलावै रे।
भँवर गुफा का घाट विषम है, बंकनाल नहीं पावै रे।। ५।।
गगनि मंडल में भाठी सरवै, चोखा फूल चवावै रे।
परानंदनी कामधैनु है, छिन छिन मांहि दुहावै रे।। ६।।
जाकै गर्भ नहीं रहता है, वाह बंझा नहीं ब्यावै रे।
खीर खुरदनी भोजन हंसा, अमृत प्याला प्यावै रे।। ७।।
संखौं गुरु गरद में मिल गये, चेले कौन छुटावै रे।
जा मुरशद की मैं कुरबानी, आत्म तत दरसावै रे।। ८।।
अविगत मूरति अवचिल सूरति, सतगुरु अलख लखावै रे।
दिल दर्पण दुरबीन कहावै, बिन चिसम्यौं दरसावै रे।। ९।।
रसना बिना राग रंग बौरे, सरवन बिना सुनावै रे।
नाभ कँवल में दम दरवानी, द्वादश मधि समावै रे।। १०।।
लख चौरासी बौहरि न भरमें, गर्भ तिरास मिट जावै रे।
ऊँ सोहं मध्य महल है, ररंकार धुनि लावै रे।। ११।।
इला पिंगुला मध्य द्वार है, सुषमन सुरति लगावै रे।
तिल परवानि ब्रह्मद्वार है, मन हसती नहीं समावै रे।। १२।।
तहाँ पपील पंथ नहीं बौरे, मीन खोज गौहरावै रे।
मानसरोवर हंस रहत हैं, मोती बीनि चुगावै रे।। १३।।
सुरति निरति की डोरी गहियौ, शुन्य में गुड्डी उड़ावै रे।
दास गरीब शब्द चिंत्यामनि, गगन मंडल कूँ ध्यावै रे।। १४।।
मूढ़ मुगद की नजरि न आवै, झिलमिल रंग अपारा रे।
पाहन ऊपरि फूल चढ़ावै, करैं अचार विचारा रे।। टेक।।
सतगुरु संत समागम कीजै, ताहि मिलै करतारा रे।
अकल निरंजन सब दुःख भंजन, निरबानी निरधारा रे।। १।।
बिनहीं चरणौं चलै चिदानन्द, बिन मुख बैंन उचारा रे।
जाकी गति कैसे कर लहिये, बिचरत अधर अधारा रे।। २।।
धम घृती हीरा कूँ पावै, परख नीर सिरहारा रे।
सब के आगे साहिब ठाढा, यौह अंधरा संसारा रे।। ३।।
बावन अक्षर ज्ञान सकल है, तीनि लोक विस्तारा रे।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड तास के, सो हलका नहीं भारा रे।। ४।।
पढ़े गुनें दोजिख कूँ जांही, लिख लिख कागज कारा रे।
मूरख महल कहां से पावै, समझ न परी गंवारा रे।। ५।।
घट मठ महतत मांहि बिराजै, पिंड ब्रह्मण्ड से न्यारा रे।
जैसे नीर गगन नहीं भीजै, कहा करै प्रितहारा रे।। ६।।

बहुरंगी सतसंगी साहिब, अदल फजल दरबारा रे।
समाधान आनन्द पद ऊँचा, दरसत फूल हजारा रे।। ७।।
मूसा कोहतूर पर बैठा, मांगत है दीदारा रे।
संख कला दामनि जहां दमकी, भागे छाडि पहारा रे।। ८।।
अललपंख का मारग बीनौं, कुंजी बैंन जुहारा रे।
गरीबदास ज्यौं चंद चकोरा, कर है अग्नि अहारा रे।। ६।। ६।।

अथ राग जांगड़ा

डिगै गिरि मेर पर सुभट भागै नहीं।
सेलरी अणी कोई सूर झालै।। टेक।।
ध्रू प्रहलाद जहां फिरत है पाखरी,
सुभट शुकदेव गोरख अगाधा।
नाम कबीर रनधीर गादी तखत,
धन्ना रैदास पीपा पियादा।। १।।
नानक नर धजा धर दलारा पाखरी,
दादू दरवेश जिस देश देख्या।
हनू हनोज हरि खेतरा सूरमा,
धरनि धरि नाद नहीं शेष मेट्या।। २।।
गोपीचंद और भरथरी अवल आदू मंडे,
जोग और जुगति का साज साज्या।
सूजा और सैंन का सेज मुजरा हुआ,
कायर नर कूर जहां उलटि भाग्या।। ३।।
दाव चूकै नहीं अर्श धुनि लगी रही,
मंड्या रन जोग बिरकत कमाला।
सुलतानी बाजीद फरीद फाके भिडैं,
पिये मसतान नूरी पियाला।। ४।।
सेऊ और संमन नैं शीश साटै किया,
गिरी जिब लोथि नहीं सूर कंप्या।
नाज तिहूँ सेर कूँ साध सन्मुख बिके,
संकि नहीं मानिया सूर बंका।। ५।।
बान गुगान असमान चक्र चलैं,
गुरज गरगाप गैंनार गूंजैं।
मंड्या रण जंग तहां रंग सूरौं तना,
कोई संत जन पारखी भेद बूझैं।। ६।।
तीर तरवारि जहां तुपक गोले चलैं छूटैं जबर जंग आदु हवाई।

बांधि कर मोरचे मार मुकती दई,
धड़ हड़ैं शीश तन खबर नांहीं।। ७।।
सुभट नर सूरमां महल कूँ हकि गये,
तखत स्यूं जाय मिसरी अड़ाई।
पैज सनमुख रही सेज मुजरा हुवा,
झूठि मति जानि साहिब दुहाई।। ८।।
गगन गादी गये अमर निहचल भये,
सुभट नर सूर जिस लोक सीझ्या।
दास गरीब की बंदगी मानियौं,
पूरि सुर नाद जहां ब्रह्म रीझ्या।। ६।। १।।

हे जी सोई नर संत जो सुभट साचा।
मिलैं निरबान पद ब्रह्म वाचा।। टेक।।

गणपत गौरि कूँ सौंरि संजम करै,
श्री गणेश प्रथम मनावैं। ब्रह्मा और विष्णु शिव मदति संगीत ले,
अलख जगदीश के सिर चढ़ावे।। १।।
प्रथम गायत्री जाप अजपा जपै, नाम निरबान ऊँ उचारै।
पांच पच्चीस मन पौंन कूँ बांधि करि, त्रिकुटी कोट में ध्यान धारै।। २।। नाभ का पवन जब गवन गगने करै, त्रिकुटी भृकुटी खुल्हैं तारा। नैंन मुख मूंदि कर सरवन समोय ले। सुरति और निरति लखि शम्भू द्वारा।। ३।। सर्पनी मारि कर श्वास पीवत रहे, पदम आसन करें मेरे सूधा। सुरग वैकुण्ठ की वासना छांडि करि, जोगिया जुगति कर पद बिरूधा।। ४।। खेचरी भूचरी चांचरी उनमुनी, अकल अगोचरी सबै साधी। अधर ही धार अपार का खेल है, भगल विद्या चढ़ो व्रत वादी।। ५।। चिसम दुरबीन दरबार लागे रहैं, इंगुला और पिंगुला मध्य फुहारा। सुषमना सिंध की जाय परबी लई, सहंस मुख बहै जहां गंग धारा।। ६।। हदफ का तार सुमार दम की करै, पंख बिन हंस गगनें उड़ावै। अष्ट दल कँवल पर सहंस दल कँवल है। जोगिया भँवर मन ले चढ़ावे।। ७।। मानसरवर जहां कँवल फूले तहां, कली दर कली जाय भँवर छ्यावै। कोटि निशान जहां छत्रपति ब्रह्म है, आदि अनादि अनहद बजावै।। ८।। ब्रह्मण्ड में पिण्ड है पिण्ड ब्रह्मण्ड में, पिंड ब्रह्मण्ड किन्हें बनाया। कोटि ही शुन्य जहां कोटि बैराठ है, तास का भेद कहु किन्हि लखाया।। ६।। नाद में बिन्द है बिन्द में नाद है, नाद अर बिंद कर एक भाई। अलल का ध्यान धरि सुरति समूल है, लोक प्रलोक दिव दृष्टि आई।। १०।। अर्श में कुर्श है कुर्श में अर्श है, अर्श और कुर्श से

भिन्न सोई। सुरति में निरति है निरति में सुरति है, सुरति और निरति से अगम जोई।। ११।। बीज में बिरछ है बिरछ में बीज है, बीज और बिरछ का सुनि बयाना। मूल में फूल है फूल में मूल है, डाल फल पान सब एक जान्या।। १२।। सलहली सैल जहां पंथ मारग नहीं, अगमपुर धाम गढ़ हूँठ मांहीं। संख दल कँवल जहां जगमगै जोगिया, तास परि चढ़े नौबति बजाहीं।। १३।। जीव में ब्रह्म है ब्रह्म में जीव है, जीव और ब्रह्म बीचि भ्रम कालं। दास गरीब जो परम गति कूँ गये, मिले दरहाल सतगुरु दयालं।। १४।। २।।

अजब रंग नूर भरपूर भारी, हांजी मगन महबूब मौले मुरारी।। टेक।।

अलख की पलक में खलक सब ही सबै, खलक की पलक से अलख न्यारा। धरनि आकाश कैलाश कूरंभ लग, चिसम के बीच रवि चंद तारा।। १।। खड़े उजीर तहां संख सैनापति, ब्रह्मा और विष्णु महेश गावैं। तखत खवास जहां चौंर चंपा करैं, सहंस मुख शेष नहीं पार पावैं।। २।। धनुष धर धीर अमीर गिनती नहीं, संख ऋषिमुनी दरबार ठाढें संख दरवेश जहां पेशि पंखा करैं, संख साधू जहां लाड लाडे।। ३।। अजब दरबार गुलजार दीदार है, सेत निशान जहां धजा फरकैं। छाडि आकार बेकार की भावना, सोई जन संत निज तत निरखैं।। ४।। संख कानून जहां संख बाजे बजैं, संख ही नाद जहां संख भेरी। संख ही तूर जहां नूर ही नूर है, राग अलमस्त मुरली उचेरी।। ५।। संख ही गुनी जहां ज्ञान गीता पढ़ै, संख ही वेद भागौत बांचै। संख ग्याता जहां खोज पद का करैं, संख सुर खड़े दरबारि नाचैं।। ६।। संख मौंनी जहां मौन समाधि हैं, संख बकता जहां कहैं बानी। संख सुरता जहां सिंध में मिल रहे, संख दरबार में खड़े दानी।। ७।। संख सावंत जहां संख मंडलीक हैं, संख दरबार में सूर वीरं। करौं प्रणाम कुरबान सब संत सिर, मुकट मणि लाल साहिब कबीरं।। ८।। संख झालरि जहां संख ही झांझि हैं, संख ही ताल जहां संख बीना। अलल का ध्यान गुरु ज्ञान गमि कीजिये। सुनो उपदेश लखि पंथ मीना।। ९।। संख रापति जहां सेत और पीत हैं, संख ताजी तुरा हरे बांनैं। संख म्याने जहां पालकी अरथ हैं, संख नौबति घुरैं दर दिवानैं।। १०।। संख विमान अमान बेगमपुरा, संख चहडोल अमोल हीरा। संख देवंगना रास मंडल करैं, संख भोजन जहां अमर चीरा।। ११।। संख ही सिद्धि जहाँ रिद्धि आगे खड़ी, सुरति मन भावना नाद पूरैं। संख ही मंदिर जहां संख ही गिलम हैं, हूर हाजिर खड़ी पैर चूरैं।।

१२।। संख ही कुंज जहां तेज ही पुंज है, संख ही सेज जहां चित्रसाला। दास गरीब सतगुरुष साहिब मिले, धनी कबीर दिया अमर प्याला।। १३।। ३।।

धरौं निज ध्यान प्रवानि होई, हां जी अगली पीछली कुबुधि खोई।। टेक।।

चरण और कँवल का दास तुमरा चेरा, जुगन जुग जोग सिंजोग स्वामी। याही अरदासि इब पासि तुम्हरै रहौं, मानियौं अरज मेरी परमधामी।। १।। किये अघ पाप कुछ धाप आई नहीं, संख जामैं जन्म जूंनि धारी। सकल ब्रह्मण्ड में पिंड धरते फिरे, करो संभाल साहिब मुरारी।। २।। कर्म और भ्रम का नाश तुम्हीं करो, फकरियौ बांह बलवंत बीना। गीध गनिका देखो भीलनी तिरि गई, अजामेल तो तुम्हो ही पारि कीन्हा।। ३।। पतित पावन धनी अरज जन की सुनी, सुरग समांनि अघ किये नाशा। कोटि मण काष्ट में अगनि चिनघी परै, सकल हौंहि छार जम कटै फांसा।। ४।। बड़ा बरियाम निहकाम साहिब धनी, तुंही दरदबंद दिल दरद बूझैं दास गरीब तबीब तालिब धनी, चौदहूँ तबक में अलख सूझै।। ५।। ४।।

मानियो शब्द सुर ज्ञान मेरा, हां जी जाय लाहूत पर करो डेरा।। टेक।।

मूल कूँ बंधि बैराठ का घाट लखि, पदम आसन करो अजर नादं। बजर का बान कमान कूँ खैंचि कर, भँवर की गुफा धरि ध्यान साधं।। १।। गुदा असथांन पर स्वाद चक्र जहां, कामदेव बसै जहां बली बांका। मार मैदान में मदन कूँ बसि करै, अनंत जुग रहैगा सृष्टि साका।। २।। नाभ किताब सब जुमल की टेक है, रवनपुर चक्र जहां ध्यान धरिये। हिरदे का नाद अगाध में गमि करै, कीन्ह प्रणाम घट कुंभ भरिये।। ३।। कंठ कुरबान कीमति कही जाय क्या, षोडिश के कमल पर कला कोटं। इलां और पिंगुला सुषमना सिधि करै, शब्द की सिंधि में जाय लोटं।। ४।। जबरूत नासूत मलकूत लाहूत परि, परम गुरु धाम दरबार देवा। संख रवि तेज जहां सेज सतगुरुष की, दास गरीब पद परखि सेवा।। ५।। ५।।

राम कबीर कछु अंतर नांहीं, हां जी मिले स्यौं देह तन मगहर मांहीं।। टेक।।

कामदल बसि किया, क्रोध जिन्हि कसि लिया, लोभ और मोह बिगारि मारे। माया का मांन गुमांन भंजन किया, धनी कबीर कूँ अत्र त्यारे।। १।। मगहर में मरै सो गदहरा होत है, दई तलाक लिख लोकपालं। परे त्रिसंखु जो ब्रह्मा की कलप से, गये जम लोक

किये भक्षन कालं।। २।। मगहर में मरै सो जाय जमलोक कूँ, लोकपालं किये बचन येही। मुक्ति के धाम कूँ छाडि मगहर गये, अजब साका किया पद सनेही।। ३।।
ब्रह्मा और विष्णु महादेव इन्द्र सहित, वरुण कुबेर धर्मराय ध्यानी। तोरि तलाक त्रिसंखु जिन्हि त्यारिया, मगहर के बीच में मुकति आनी।। ४।। अकल अनभूत जमदूत जासे डरै, चौदहूँ कोटि धर्मराय कंपैं। दास गरीब कबीर साके पती, काल महाकाल नहीं सीम चंपें ५।। ६।।

अलफ इलाम जरदाम पाया। हां जी संख जुग कलप नहीं गया आया।। टेक।।

मैं ही खोया फिरौं धनी तो ठौरि है, जहां का तहां हाजरि हजूरं। खलक और मुलिक महतत ज्यौं मिल रह्या, देख दरहाल निज ख्याल नूरं।। १।। दशौं दिश दस्त और संख भुज चरण हैं, कौन विधि चढौं, अति पंथ बांका। रापति मन राम कूँ कहो कैसे मिलै, गवन मघ तास का सूई नाका।। २।। संख परलो सही पलक में होत हैं, उपति और खपति लेखा न लेखै। जूनि जिहांन शशि भान साखा नहीं, धरै औतार नहीं रूप रेखै।। ३।। कोटि औतार एक कलप से होत हैं, आदि माया चेरी चरण दासी। भक्ति के खंभ आरंभ पूरन किये, तास का नाम है अविनाशी।। ४।। परम पद सार अधार नहीं किसी के, सकल अधार तुम्हारे गोसांई। कच्छ और मच्छ कूरंभ शेषा शरण, ब्रह्मा और विष्णु महेश तांई।। ५।। आदि और अंति कुछि मध्य जाके नहीं, पलक में रचत है भगल बाजी। संख ब्रह्मण्ड कुल पिण्ड प्रकाशिया, दास गरीब गुण कला साजी।। ६।। ७।।

लरै जन संत बेअंत बौरा, हां जी काल महाकाल जम जीत जौंरा।। टेक।।

चौदहूँ तबक जिन खाय खारज किये, देव ऋषि मुनी और गुनी ज्ञानी। बड़ा हठवांन शैतान अति महाबली, काल समशेर तिहूँ लोक जानी।। १।। उदै और असत बीचि चक्र जिन्ह के चले। मिले सब चक्रवर्ती खाख मांहीं। संख सेनापती धूरि धामा किये, सूर सावंत की संकि नाहीं।। २।। महादेव की नारि सिंघार अठोतर भई, कौन विधि बचै कहो जीव संग्या। गये औतार कर्तार का नाम धरि, चलैंगे शंभु जट बहै गंगा।। ३।। संख शिंभू गये ब्रह्मा गिनती कहा, इन्द्र बारू जेते धरनि धांनी। कोटि बैकुण्ठ पैमाल परलो भये, अमर सतपुरुष साहिब अमानी।। ४।। जिमी असमांन के बीचि पल पंथ है, पंथ पर पैर कोई संत धरि है। अलल की सुरति ले सैल सैली

करैं, जम से जंग नर सोई करि है।। ५।। मांनधाता गये काल कंटक दहे, अनंत जोध्या चलैं छत्र छांहीं। नौ जोबनी नारि दरबारि देवा तपै, लंकपति गये नहीं खबरि पाई।। ६।। बड़ा झूझार अपार दल तास के, धर्मराय के नालि जिन राड़ मांडी। राम स्यौं जंग जो रावण कर गया, दुनी संसार क्या लरै लांडी।। ७।। बड़ा रनधीर कबीर दरबार में, चौदहूँ तबक रोशन सारै। काल महाकाल कूँ जीत जोध्या गया, पुरुष के शीश जो चौर ढारै।। ८।। मगहर मैदान में आंनि जंगी घुरे, हिंदू और तुरक दहूँ दीन देखैं। शब्द अतीत गुन तीनि जाकै नहीं, कौन किताब जुवाब लेखैं।। ९।। चित्र और गुप्त का कलम कागज मिट्र्या, धर्मराय खड़ा कर शीश जोड़ैं। चौदहूँ तबक में तेग सारै सरू, बिना कबीर बंधि कौन तोड़ै।। १०।। अंश औतार से जनक नानक भये, गोरख प्रहलाद की पैज राखी। कोटि निनानवैं छत्रपती तिरे, नारद और व्यास शुकदेव साखी।। ११।। पुंडरपुर नामदेव भक्ति का खंभ है, फेरि देवल दिया गऊ जिवाई। ऐसा साका तिहुँलोक में कहां है, नौ लाख बोडी जहां भरी आई।। १२।। आब और खाख जहां बाद आतश नहीं, होत प्रकाश नहीं पवन पानी। अग्नि आतश महतत्त काया जरै, पिण्ड अन प्राण अविगत अमानी।। १३।। कोटि कोटि ब्रह्मण्ड हैं बटक के बीज में, बटक का बीज नहीं नजरि आवै। दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, महल का भेद घट में लखावै।। १४।। ८।।

करो गुरुदेव कोई दिल दिवाना,
हां जी हंस ततकाल होय पद पिराना।। टेक।।

गंग गीता गरुड सबे कुछि करि गये,
भक्ति भागौत श्रवण सुनाई।
पिण्ड प्रधान और जोग जगि बौह किये।
जन्म और जूंनी कोई मिट्र्या नांहीं।। १।।
मूढ़ मन मीन की चाल छाडे नहीं,
इन्द्रियां बीज किनहूँ न भूंनी।
बड़ा अंदेश उपदेश लागै नहीं,
कौन विधि मिटै कहो जन्म जूंनी।। २।।
हीरे की कणी में जहर जैसे बसैं,
फट कमणि बीच ज्यौं मध्य माया।
काष्ट में अग्नि ता उलटि करि ले जलैं,
कौन विधि बचै कहौ काल काया।। ३।।
गुदा अस्थान परि मूल अस्थान है,

मूल अस्थान परि स्वाद चकरं।
स्वाद के चक्र परि नाभ का कँवल है,
नाभ के कँवल का करो फिकरं।। ४।।
हिरदे अस्थानं में शक्ति शिव बसत हैं,
कण्ठ अस्थान में बसत कालं।
त्रिकुटी कँवल में भँवर का बास है,
सुरति और निरति से परखि लालं।। ५।।
पूजि गणेश उपदेश तो से कहूँ,
कामदल जीतिये क्रोध भारी।
लोभ और मोह सब ममता माया तजो,
मांनि गुरु ज्ञान अब छाडि जाी।। ६।।
उलटि धमनी धमैं गगन कूँ सो रमैं,
नाभ के कँवल का संपट खोल्है।
अजब झनकार धूमार तहां होत है,
बिना मुख शब्द एक अजब बोलै।। ७।।
हिरदे अस्थान में मन मूरति लखो,
सुरति सारंग सोहं सराफा।। ८।।
कंठ अस्थान में ररं रस रीति है,
बिना मुख रसन जपि अजपा जापा।। ९।।
त्रिकुटी कँवल पर किला कैलाश है,
अजब वैकुण्ठ बैलोक नगरी।
सहंस दल कँवल पर अगम आसन पुरुष,
दास गरीब नहीं पंथ डगरी।। १०।। ९।।
अलख अनभूत संजूत सांई,
हां जी वार अन पार कुछ था नाहीं।। टेक।।
कच्छ और मच्छ कूरंभ की पीठ परि,
शेष प्रवेश रचि धौल धरनी।
स्वर्ग पताल मृत्य लोक की लाज है,
सकल संसार का उदर भरनी।। १।।
अजब कुरबांन सुभांन साहिब धनी,
ॐ अनादि कलि आदि माया।
एक ही नाद के ब्रह्मा और विष्णु हैं,
रचे शिव शक्ति गण ईश राया।। २।।
चंद और सूर पानी पवन सिरजियां,
रच्या संसार जग च्यारि खानी।

अलफ अंकुर की मांड सबही मंडी,
इलाम का धाम लखि दया दानी।। ३।।
संख ऋषि मुनी भये शब्द और सुरति से,
कोटि तेतीस देवा दिवानै।
साध और सिद्ध प्रसिद्ध केते कहूँ,
कमंद किंनर केते देव दानै।। ४।।
कुतब और गौस पैगंबरा औलियां,
केते कलधूत जननी न जाये।
अगम अगाध गति कौन तेरी लखै,
जूंनि में जीव जा में बनाये।। ५।।
धनी बरियाम निहकाम कर्ता पुरुष,
कहां मैं करौं अब सिपति तेरी।
तुंही मल्लाह संसार सागर बली,
कीजिये जांनि कर पारि बेरी।। ६।।
अकल अगाह कुछ थाह थेहा नहीं।
सहंस मुख शेष नहीं पार पावैं।
दास गरीब दिल दम दीदार है,
अर्श की कुंज में ध्यान लावै।। ७।। १०।।

अथ राग बंगला

बंगला खूब बन्या है जोरि। जामैं सूरज चंद करोरि।। टेक।।
या बंगले के द्वादश दर हैं, मधि पवन प्रवाना।
राम भजे तो जुग जुग तेरा, नातर होत बिराना।। १।।
पांच तत्व और तिनि गुनन का बंगला अधिक बनाया।
या बंगले में साहिब बैठ्या, सतगुरु भेद लखाया।। २।।
रूंम रूंम तारायन दमकैं, कली कली दर चंदा।
सूरजि मुखी सबतरि साजैं, बांध्या परमानंदा।। ३।।
बंगले में बैकुण्ठ बनाया, सपतपुरी सैलाना।
भुवन चतुर्दश लोक बिराजै, कारीगर कुरबांना।। ४।।
या बंगले में जाप होत है, ररंकार धुनि शेषा।
सुर नर मुनिजन माला फेरैं, ब्रह्मा विष्णु महेशा।। ५।।
गन गंधर्व गलतान ध्यान में, तैंतीस कोटि बिराजै।
सुर निहतंती बीना सुनिये, अनहद नादू बाजै।। ६।।
इला पिंगुला पींघ परी है, सुषमन झूल झुलन्ती।
सुरति सनेही शब्द सुनत है, राग होत निहतंती।। ७।।

पांच पच्चीसौं मगन भये हैं, देख्या परमानंदा।
मन चंचल निहचल भया हंसा, मिले परम सुख सिंधा।। ८।।
नभ की डोरि गगन सौं बांधै, तो इहां रहनै पावै।
दशौं दिशा से पवन झिकोरे, काहे दोष लगावै।। ९।।
आठौं बखत अलिल्यौं बाजे, होता शब्द टकोरा।
गरीबदास यौं ध्यान लगावै, जैसे चंद चकोरा।। १०।। १।।
बंगला सोई सति प्रवांनि, जा में पारब्रह्म का ध्यान।। टेक।।
साढे तीनि करोड़ि बिरछ हैं, या बंगले के पासा।
सालेमार शरीर सरोवर, नौलख बाग खुलासा।। १।।
या बंगले के आगै कूवा, उरध मुखी महमंता।
मनवा माली बारै ढारै, आठौं बखत चलंता।। २।।
इला पिंगुला मध्य सुषमना, ता परि एक सुराहीं।
अमी महारस छाक परी है, पीवत होय रुशनाई।। ३।।
रोशन तकिये रास होत हैं, बाजे बजैं अपारा।
पांचौं इन्द्री अस्थिर हौंही, घूंमे मन मतवारा।। ४।।
संखौं कमल कलश की न्याई, सेत भँवर भनकारैं।
कोयल मोर पपीहे बोलैं, दादुर अधिक गुंजारैं।। ५।।
बीना ताल पखावज बाजैं, गावैं गंधर्व रागी।
शिव की तहां समाधि लगी है, चीन्ह परी बड़ भागी।। ६।।
ध्रू प्रहलाद और नाम कबीरा, नारद शुकदे ब्यासा।
गोरख दत्त भये गलताना, देख्या अजब तमासा।। ७।।
ब्रह्मा विष्णु महेश रु शेषा, ररंकार धुनि होई।
गुझ बीरज यौह मंत्र दीन्हा, राखि शब्द कूँ गोई।। ८।।
मानसरोवर ऊपर बंगला, जहां हंस परमहंसा खेलै।
गरीबदास भौसागर सेती, पूरा सतगुरु बेलै।। ९।। २।।
बंगला सोई सति निज सार, जा में पारब्रह्म दीदार।। टेक।।
दिल अंदरि दीदार होत है, बाहरि भीतरि सोई।
त्रिबैंनी स्नान कीजिये, मल मूत्र सब धोई।। १।।
बंगले आगे संख फुहारे, छुटे सहंसर धारा।
दिव्य दृष्टि तो देखत हैं, सो हरदम बारंबारा।। २।।
गंगा जमना मध्य सुरसती, पट्टन घाट फुहारा।
कालंद्री काया प्रछाली, धन्य बड़भाग हमारा।। ३।।
इन्द्रदौन महोदधि गाजै, रतनागर लहराई।
जगन्नाथ जगदीश बिराजै, देखो क्यों ना भाई।। ४।।
हरिद्वार हरि पैडी न्हाये, बदरीनाथ विलासा।

द्वारामती दरश नित होई, कर वृन्दावन वासा।। ५।।
लोहागिर पौहकर पद परसे, गया पिण्ड प्रधानां।
अठसठि तीरथ हैं तन मांहीं, मोछि मकति भये प्रानां।। ६।।
काशी कांची काया में, मोक्ष दायका माया।
अकलि अयोध्या आदि अनादं, सप्तपुरी परसाया।। ७।।
अवंतिका पुरी अर्थ के मांही, सुरति निरति से जांनी।
गरीबदास साहिब का बंगला, अजर अमर प्रवांनी।। ८।। ३।।
बंगला खूब बन्या प्रवीन। जामें अर्श कला दुरबीन।। टेक।।
बंगले आगे डयौढी लागी, पलकौं दे चिक बंधा।
छ्यानवैं कोटि मेघ माल हैं, शब्द सिंध गरजंदा।। १।।
बंगले आगे नक सरवर है, तेतीस कोटि तपंता।
सहंस अठासी मुनियर बैठे, सोहं जाप जपंता।। २।।
बंगले आगे बाय बिहंगम, दो दर भीतरि एकै।
ब्रह्मरंध्र का घाट जहां है, साधु चढ़ै सो देखै।। ३।।
बंगले आगे नटवा नाचै, ताहि लखै नहीं कोई।
परै गगन से धरती ऊपरि, खंड बिहंड न होई।। ४।।
बंगले भीतरि रतन अमोली, सेत पीत नहीं जरदा।
बिनहीं चरणौं चलै बिहंगम, चिसम्यौं आगे फिरदा।। ५।।
ऋग यजु साम अथरवन चारयौं, बंगले मांहि बिराजैं।
सूक्ष्म वेद से तारी लागी, अनहद नौबति बाजैं।। ६।।
आसन पदम लगाय रह्या है, हाथ कमण्डल दण्डा।
ब्रह्मा आदि अनादं बैठे, च्यारि वेद धुनि खण्डा।। ७।।
सूक्ष्म वेद से सुरति लगावैं, सो सुरति मोहि अंगा।
गरीबदास बाहरि क्यों भरमें, घट ही अंदरि गंगा।। ८।। ४।।
बंगला खूब बन्या है वेश, यामें ररंकार धुनि शेष।। टेक।।
रूंम रूंम में नाम चलत है, अजपा तारी लागी।
सुरति निरति परि अनहद बाजै, सुनते हैं अनरागी।। १।।
मूल चक्र का घाट बांध करि, सुषमन पवन अरौधै।
प्रथम आदि गणेश मनावै, नाभ कँवल कूँ सोधै।। २।।
बंकनालि का घाट बिकट है, तहां खेचरी लावै।
अमी महारस अमृत पीवै, अजर अमर होय जावै।। ३।।
दहिनैं गंगा बामें जमना, मध्य सुरसती धारा।
उलटा मीन चलै सरवर में, ऐसा खेल हमारा।। ४।।
हाथ न पैर पिण्ड नहीं प्राना, शुन्य सरवर में खेलै।
बांस बली नौका नहीं लागै, तो कैसे भौंरा पेलै।। ५।।

दुरबीन ऐंनक अनुसारी, पवन पिण्ड भरि गोला।
सुरति निरति की सुरंग लगावै, दरसे रतन अमोला।। ६।।
कोटि कोटि दामनि दमकाहीं, गरजैं सिंध समूंचा।
शीलवन्त सैलानी जोगी, मिलै काछ का सूचा।। ७।।
संखौं पदम झिलमिलैं जोती, अगम पंथ बैराठा।
गरीबदास सतगुरु के सारै, उतरै औघट घाटा।। ८।। ५।।
बंगला अजब बन्या है खूब, जामें पारब्रह्म महबूब।। टेक।।
आगे नौ लख पातरि नाचैं, ब्रह्मानंद रिझावै।
तेज पुंजि की सुन्दरि नारी, अनहद मंगल गावैं।। १।।
पीतंबर पहरान तास के, सूहे वस्त्र साजै।
एक कान्ह और नौ लख गोपी, बंगले मांहि बिराजैं।। २।।
चंद सूरज दो अधर चिरागा, हुकमी पौंन रु पानी।
सकल संत और सकल साहिबी, बंगले मांहि बिनांनी।। ३।।
पांचौं तत खवास खड़े हैं, हाजरि नाजरि जाकै।
त्रिलोकी का राज रसातल, क्या क्रोड़ी धज लाखै।। ४।।
सब रतनन का रतन राम है, राम रतन कूँ जांनै।
इन्द्र का राज काग की बिष्टा, जासै उलटा तानैं।। ५।।
हीरा मोती जवाहर तांई, पारस पले न बांधै।
शब्द सिंध चिंत्यामनि साहिब, सुरति गगनि कूँ सांधै।। ६।।
चिंत्यामनि पारस परमेश्वर, हिरदे मांहि बिराजैं।
गरीब दास ताहि कूँ सेवे, जा का अविचल राजै।। ७।। ६।।
बंगला खूब बन्या हैं ऐंन, जामें कल्प बिरछ कामधैंनि।। टेक।।
गंगा कोटि त्रिवैणी संजम, काशी गया पिरागा।
या बंगले में साहिब बैठ्या, शब्द करै अनरागा।। १।।
संख सुरसती बहैं अगोचर, गुपती गोपि ज्ञाना।
बंगले के पारस की पैड़ी, पाया पद निरबाना।। २।।
या बंगले में सेत गुमट है, ता मध्य अलख गुसांई।
सेत छत्र सिर मुकट बिराजै, दरस्या नैनों मांहीं।। ३।।
निरबानी प्रवानी पद है, रूप बरन से न्यारा।
बंगले मांहि से उडै बिहंगम, खेलै अधरि अधारा।। ४।।
अधर अधार अपार पुरुष है, दृष्टि मुष्टि नहीं आवै।
सूक्ष्म रूप सरूप न जाके, शेष सहंस मुख गावै।। ५।।
उड़े विहंगम अकल तिरंगम, जाके मोह न माया।
सतगुरु भेदी भेद कहत है, हम दिव्य दृष्टि लखाया।। ६।।
योजन संख पलक में पौंहचे, बिनहीं चरणौं धावै।

अगमी डोरि सुरति से खैंचे, फिरि बंगले में आवै।। ७।।
सुरति सुहंगम मूल विहंगम, ज्ञान ध्यान से ऊँचा।
घट मठ महतत सेती न्यारा, कहां घाट बंधि कूँचा।। ८।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड से न्यारा जोती, बिनहीं पींघू झूलै।
गरीबदास धिक्कार जन्म कूँ, जो इस पद कूँ भूलै।। ९।। ७।।
बंगला अजब बन्या दरहाल, जा में रतन अमोली लाल।। टेक।।
जल की बूँद महल मठ कीन्हा, नख शिख साज बनाया।
या बंगले में गैबी खेले, ना मूवा ना जाया।। १।।
या बंगले के चौसठि खंभा, पांच पदारथ लागे।
तीनि गुनन की गलियां मांहीं, कोई सूते कोई जागे।। २।।
कोटि उनन्चा पवन गुंजारै, नौ नाड़ी से नेहा।
धाम बहत्तरि धारा नगरी, जा से लग्या सनेहा।। ३।।
चौथे पद से महरम नांहीं, तीन गगन में धोखा।
चौथा पद चिंत्यामनि साहिब, सौदा रोकम रोका।। ४।।
आलस नींद जंबाहीं जोरा, कर्म नाश ना होई।
शील संतोष विवेक न चीन्हा, जनम अकारथ खोई।। ५।।
आशा तृष्णा बनी दुलहनी, मनसा नारी सोई।
बंगले के दरवाजै बैठी, देख सुहेली दोई।। ६।।
दूती दोय दलों बीचि खेलैं, मोहे सुर नर सारे।
गन गंधर्व और ज्ञानी ध्यानी, बंगले मांहि पछारे।। ७।।
काम क्रोध और लोभ मोह की, मदिरा प्याई भारी।
गरीब दास सतगुरु सौदागर, भौसागर से त्यारी।। ८।। ८।।
बंगला खूब किया बख्शीश, साहिब पारब्रह्म जगदीश।। टेक।।
या बंगले की चीन्ह परी है, बांध्या नौ दस मासा।
पैसा एक न मिहनत मांगै, धंनि दासन पति दासा।। १।।
लख चौरासी बंगले छ्यावै, न्यारी न्यारी भाँती।
साक्षी भूत सकल संग खेलै, कीड़ी कुंजर हाथी।। २।।
या बंगले का तोल न मोलं, संख पदम झिलकाई।
या बंगले कूँ राखि न सकै, शेष महेसर तांई।। ३।।
हीरे मोती झालरि लागे, और लालन की बाती।
या बंगले कूँ छाडि चलैंगे, ना कोई संग न साथी।। ४।।
चंद सूरजि दोय कलश बिराजै, मध्य एक अजब फुहारा।
झलकैं जोती बरषैं मोती, जानैं जाननहारा।। ५।।
कामधेनु और कल्पवृक्ष हैं, ये दो बंगले मांहीं।
आठ सिद्धि नौ निधि परमपद, अविगत अलख गुसांई।। ६।।

या बंगले में बाघ बसत है, हंसा लेत गिरासी।
पकरे बाघ राग कूँ चीन्हैं, ताहि मिलै अविनाशी।। ७।।
पकर्या बाघ कबीर पुरुष कूँ, जरिया तौंक जंजीरं।
जाका बंगला अजर अमर है, धन्य पीरन सिर पीरं।। ८।।
संख कलप जुग परलो जांही, बंगला डिगै न डोलै।
गरीबदास सतगुरु का बंगला, ना कुछ तोल न मोलै।। ९।। ९।।
काया खोजि ले रे तो में रहता पुरुष अलेख।
बिभचारनि का सांग छाडि दे, क्या दिखालावैं भेष।। टेक।।
मुकताहल की पीठि लगी है, चौपड़ि के बैजार।
ब्रह्मशहर बेगमपुर चलिये, अविगत नगर अपार।। १।।
अष्ट कँवल दल भीजन लागे, बरषत अमृत नीर।
सोहं हंसा किया पयाना, मानसरोवर तीर।। २।।
बिन बादल बिन बिजली चमकैं, बूठे शुन्य फुहार।
संख कला झलकन्ता जोती, गगन मंडल गुलजार।। ३।।
इस काया में नीझर झरते, औंडे दरिया कूप।
शीशी संख फिरैं सुर पीवै, प्याले अजब अनूप।। ४।।
इस काया में रास मंडल है, बाजै अनहद तूर।
सोहं हंसा सिंधि मिलै हैं, झिलमिल नूर जहूर।। ५।।
ताल मृदंग पखावज बाजैं, तुरही तूर अनंत।
शब्द अतीत परमपद पाया, चीन्ह्या निरगुन तंत।। ६।।
इस काया में घाट पटन है, मल मूत्र सब धोई।
आपा मेटि भेट साहिब स्यौं, बौहरि न आवन होई।। ७।।
सीखें सुनें कहो क्या होइ, मन पौंना नहीं नेश।
औघट घाट बाट है बंकी, दुर्लभ देश विदेश।। ८।।
ज्ञान ध्यान जिस धाम न पौंहचे, साखी शब्द शरीर।
शुन्य अशुन्य परम शुन्य चीन्या, औंडी मजलि कबीर।। ९।।
सप्त शुन्य पर संखा झालरि, अक्षर धाम की डोर।
मक्रतार की बीनि चीन्हि करि, हौंना गारत गोर।। १०।।
पांच तत्व तीनों गुण नाहीं, धर अंबर नहीं धौल।
चन्द सूर नहीं पावक पानी, बंकी नगरी पौल।। ११।।
मेटो खोज बोझ सब डारो, मिल हों निरगुण तांन।
दास गरीब परम रंग भीना, चीन्ह्या पद निरबांन।। १२।। १०।।

अथ राग छन्द बंगाली

ऐसे हैं ल्यौलीन सतगुरु, ऐसे हैं ल्यौलीन।। टेक।।

निश्चिय होय तो निकट लखावैं,
अगम दीप हंसा ले जावैं, ध्यान धरैं दुरबीन।। १।।
इला पिंगुला सुषमन मेला,
हदि बेहदि से आगे खेला, उलटि चढ़ै जल मीन।। २।।
हिंदू तुरक दहूँ कूँ तरकैं,
निरगुण सरगुण न्यारा निरखैं, छाडै दीन बेदीन।। ३।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड से न्यारा सोई,
शब्द अनाहद चीन्हौ लोई, पांच पच्चीस न तीन।। ४।।
श्रवण नैंन नासिका उलटै,
द्वादश अंगुल अंदरि पलटै, बाजैं अनहद बीन।। ५।।
शब्द महोदधि मधुरी बानी,
गावै अविगत अलख बिनानी, लखि ल्यावै प्रबीन।। ६।।
दास गरीब देख दिल अंदरि,
सोलह कला संपूरन चन्दर, मैं कोली कुलहीन।। ७।। १।।
ऐसे अगम अगाध सतगुरु, ऐसे अगम अगाध।। टेक।।
अजामेल गनिका से त्यारे,
ऐसे पापी अधम उधारे, छाडो वाद विवाद।। १।।
ध्रू प्रहलाद उतरि गये पारा,
बहुरि न आये इस संसारा, गुरु द्रोही कूँ खादि।। २।।
सदना सेऊ संमन त्यारे,
गुरु द्रोही तो चुणि चुणि मारे, निंदत कूँ नहीं दादि।। ३।।
धन्ना भगत का खेत निपाया,
नामदेव की छानि छिवाया, सतगुरु लीन्हे राध।। ४।।
षट्दर्शन कूँ हांसी करिया,
भक्ति हेत केशो तन धरिया, ल्याये बालदि लादि।। ५।।
जा कूँ कहैं कबीर जुलाहा,
सब गति पूर्ण अगम अगाहा, अविगत आदि अनादि।। ६।।
ऐसी सतगुरु थापनि थापी,
कोटि अकर्मी त्यारे पापी, मेरी क्या बुनियादि।। ७।।
बाहर भीतरि की सब जानैं,
नौका लगी जिहाज निदानै, उतरि गये कोई साध।। ८।।
दास गरीब बिसंभर नाथा,
हम कूँ भेटे सतगुरु दाता। मिट गई कोटि उपाधि।। ९।। २।।
ऐसे हैं निज नेक सतगुरु, ऐसे हैं निज नेक।। टेक।।
चौरासी से बेगि उधारैं,

जम किंकर की तिरास निवारैं, मेटै कर्म की रेख।। १।।
जल थल महियल सरबंगी सोई,
आदि अनाहद अविगत जोही, कहा धरत हो भेष।। २।।
कच्छ मच्छ कूरंभ पसारा,
शेष धौल तिहूँ सिर भारा, औह धरनीधर एक।। ३।।
निरखि परखि कर धरि ले ध्याना,
शब्द अतीत पेखि निरबांना, जे तुझ मांहि विवेक।। ४।।
शुन्य सिलहरा प्रगट फरकै,
जे तूं अग्नि लगावै घरकै, रमता राम अलेख।। ५।।
सांग धरै सांगी नहीं पावै,
भड़वा नाना सांग बनावै, कोई जिन्दा कोई शेख।। ६।।
वाह दुरबीन ध्यान है ऐंनक,
याह माटी की फूटै सहनक, जम का काजग छेक।। ७।।
वार पार कहीं थाह न थेहा,
शब्द अतीत लाइ ले नेहा, ज्यों का त्यों ही देख।। ८।।
सुरति निरति से अगम अगोचर,
दुःख दुंद सब कालं मोचर, सब बसुधा की टेक।। ९।।
दास गरीब सैल दरियाई,
मीनी होय सो पैरे जाई, मति बुद्धि ज्ञान अनेक।। १०।। ३।।

ऐसे सतगुरु जानि साहिब, ऐसे सतगुरु जानि।। टेक।।

क्यों भरमें है जग में बौरे,
सुरति निरति बरत बांधि चढ़ौ रे, शब्द हमारा मांनि।। १।।
ज्यों दरिया मध्य उठैं तरंगा,
झाल बुदबुदे सो हौंहि भंगा, ऐसा सकल जिहांन।। २।।
काजी हो कर गऊ पछारी,
शब्द न समझै मूढ़ अनारी, पढ़ि पढ़ि धरै कुरान।। ३।।
बिसमल करै अलह का कीन्हा,
तुम्ह कहो साहिब कैसे चीन्ह्या, पूजैं घोर मशांन।। ४।।
कलमां पढ़ि पढ़ि हौंहि खुस्याला,
मारैं रूह उधरै खाला, तीसौं रोजे हांनि।। ५।।
अहरनि की तो चोरी कर हैं,
सो साहिब से कैसे डर है, करै सुई का दान।। ६।।
पंडित होय कर पतरे बांचैं,
झांझि पीटि जड़ आगे नाचैं, तोरे पाती पांन।। ७।।
साहिब का घट में नहीं निहचा,

झोटे बकरे तोरैं बहचा, होयगी खैंची तांन।। ८।।
पढ़ै वेद कुछ भेद न बूझैं,
करैं कंदूरी आंन कूँ पूजैं, सब घट एक पिछांनि।। ६।।
उहां धर्मराय लेखा लेगा,
शीश काटि कै सूली देगा, छाडो खोटी बांनि।। १०।।
दोन्यौं दीन एक ही अंका,
हरिद्वार मन ही में मक्का, उलटि देख शशि भांन।। ११।।
लै लाहूत मुकाम मिलावा,
जगन्नाथ काबे क्यौं धावा, अखै अलह का थांन।। १२।।
दास गरीब दुनी नहीं देवा,
अर्श गुमज में करिले सेवा, कादर कूँ कुरबांन।। १३।। ४।।
छंद :- मौले मसतान मूरति,
देखी कुछि अजब सूरति, गैबी गुलजार है।। १।।
नीका है लाल रंग, बाजत हैं अजब जंग।
सदा है संगाती संगि, सौदागर त्यार है।। २।।
नूरी हैं बिशाल नैंन, गावै कुछि अजब बैंन।
सुनते ही होय चैंन, दिल में दीदार है।। ३।।
पौंहचे हैं सिंभ तीर, मार्‍या है बान पीर।
गोला है गम का गहीर, नहीं वार पार है।। ४।।
ढुरते है संख चौंर, गूंजत हैं उजल भौंर।
रसनां बिन नाम सौर, नहीं जीति हारि है।। ५।।
देख्या दरहाल ख्याल, सतगुरु हैं नैंन नालि।
ता की है बिहंगम चाल, **गरीबदास** की जुहार है।। ६।। ५।।
अविगत निरबान पद, सतगुरु सब जांनैं सुधि।
शब्द सिंध सोई।। १।।
बाजैं तूर अजब नूर, पौंहचे कोई संत सूर।
बिरला जन कोई।। २।।
अजब थीर गुन गहीर, जिंद पीर। सुरति निरति पोई।। ३।।
देखो कुछ निरखि परिख, त्रिबैनी तीर सरकि।
गलताना शब्द गरकि, एक नहीं दोई।। ४।।
टूटे सब भ्रम फंध, दरिया एक अजब सिंध।
झलकैं जहां कोटि चंद, राख्या पद गोई।। ५।।
प्याले नूरी निवास, पिण्ड प्राण नहीं श्वास।
पीवै कौई संत दास, दूरि करै छोई।। ६।।
काटे सब कर्म मैल, देखी कुछ अजब सैल।

मक्रतार झीन गैल, दिल दर्पण धोई।। ७।।
अदली अंदरूंन रास, धरनी नाहीं अकाश।
तीन्यौं नहीं पंच वास, बीज भूनि बोई।। ८।।
चित में चौरंग खेत, वर्षा जहां प्रेम हेत।
भौंरा जहां कमल सेत, कहता है **गरीबदास**,
जहां गैब की रसोई।। ६।। ६।।
अविगत करतार ऐंन, सतगुरु की समझि सैंन।
बांनी रस खूब बैंन, जान्या हम जान्या।। १।।
बहुरंग बरियांम जोरि, सुरति निरति लागी डोरि।
अदली पद कुंज घोर, त्रिकुटी निशांना।। २।।
शब्द का स्वाद जीन, भगली जहां भगल बीनि।
शब्द है रसाल लीन, अमरापुर थांना।। ३।।
नांहीं जहां दिन राति, दीपक बिन तेल बाति।
सतगुरु की अजब दाति, शब्द में समांना।। ४।।
उठैं जहां गैब लोर, कौंहके जहां अजब मोर।
पकरैं हैं पंच चोर, सतगुरु दिलदाना।। ५।।
गगनी है गगनी ख्याल, बाजैं जहां अजब ताल।
सरवर एक बिना पालि, हंस का पयाना।। ६।।
मुकता है मुकति थीर, मोती जल अजब नीर।
सतगुरु साहिब **कबीर, गरीबदास** जान्या।। ७।। ७।।
साहिब सरबंगी तूं, अभंगी सतसंगी समीप, सोहं रहता है।। टेक।।
कच्छ मच्छ कूरंभ धौल, शेष से न पावैं पार।
च्यार वेद कहता है।। १।।
शंकर से ध्यानी जो, ब्रह्मा से ज्ञानी।
नारद सनकादिक, कहो कौन भेद लहता है।। २।।
बिसन से बिसंभर, जाका रूप है हिरंबर।
खेलै गुपतार यार, बहनैं नहीं बहता है।। ३।।
बाजीगर बिचार देख,
नाना है अनंत भेष सुरति सिंधि महता है।। ४।।
सतपुरुष सोहं सुरति फूल ऊँ। कहता है **गरीबदास**,
साहिब के सरूप बिना, सकल यार ढहता है।। ५।। ८।।

अथ राग निहपाल

जालिम जुलहे जारति लाई, ऐसा नाद बजाया है।। टेक।।
काजी पंडित पकरि पछारे, तिन कूँ जवाब न आया है।

षट्दर्शन सब खारज कीन्हे, दोन्यौं दीन चिताया है।। १।।
सुर नर मुनिजन भेद न पावैं, दहूँ का पीर कहाया है।
शेष महेश गणेशर थाके, जिन कूँ पार न पाया है।। २।।
नौ औतार हेरि सब हारे, जुलहा नहीं हिराया है।
चरचा आनि परी ब्रह्मा की, चार्यों वेद हराया है।। ३।।
मगहर देश कूँ किया पयांना, दोन्यौं दीन डुराया है।
घोर कफन हम काठी दीजो, चदरि फूल बिछाया है।। ४।।
गैबी मजलि मारफति औंढ़ी, चादरि बीच न पाया है।
काशी वासी है अविनाशी, नाद बिंद नहीं आया है।। ५।।
ना गाड्या ना जार्या जुलहा, शब्द अतीत समाया है।
च्यार दाग से रहता सतगुरु, सो हमरै मन भाया है।। ६।।
मुक्ति लोक के मिलें प्रगनें, अटलि पटा लिखवाया है।
फिर तागीर करै ना कोई, धुर का चाकर लाया है।। ७।।
तखत हिजूरी चाकर लागे, सति का दाग दगाया है।
सतलोक में सेज हमारी, अविगत नगर बसाया है।। ८।।
चंपा नूर तूर बहु भांती, आनि पदम झलकाया है।
धन्य बंदीछोड कबीर गोसांई, दास गरीब बधाया है।। ९।। १।।

शब्द अतीत सकल सरबंगी, रमता राम जुगा जुग है।
तूं जानैं याह हंस की मूरति, कऊवा काग बुगा बुग है।। टेक।।

शब्द महोदधि अनहद गाजै, हीरे लाल नघा नघ है।
अमृत पीजै भेद न दीजै, जत जौंनार अजब जगि है।। १।।
महल भेद महरम कूँ दीजै, यौह जग जांनि ठगा ठग है।
जिंदे का कोई भेद न पावै, काशी छाडि गया मघ है।। २।।
चदरि फूल बिछाये सतगुरु, च्यारि दाग नांहीं दगि है।
दास गरीब जिंदे का चेला, तीनि लोक सतगुरु अग है।। ३।। २।।

शील संतोष विवेक ज्ञान ले, दया धर्म इकतारै।
भाव भक्ति सुमरन सति कीजै, हरदम नाम उचारै।। टेक।।

काम क्रोध और लोभ मोह मद, इन कूँ दूर बिडारै।
तीनि लोक और भुवन चतुर्दश, आशा खण्ड निवारै।। १।।
एका एकी रहै निरंतर, उर में आसन मारै।
पांच पच्चीस तीनि पर तूरा, शब्द सिंध झनकारै।। २।।
मूल कँवल कूँ दृढ़ कर बांधै, नाभी नाद गुंजारै।
हिरदे कँवल में हाजरि नाजरि, दिल अंदर दीदारै।। ३।।
कामधैंनु कलबिरछ कलंदर, अघ पापन कूँ जारै।
बिनहीं चरणौं चलै चिदानंद, हरदम बारंबारै।। ४।।

त्रिकुटी कँवल के बैठि झरौखै, अलमिन दृष्टि उघारै।
गगन मंडल कूँ उड़े विहंगम, ना कुछ पंख पसारै।। ५।।
खालिक सबै खलक में देखै, बाहर भीतर सारै।
अठसिधि नौ निधि आगै ठाढ़ी, अणिमा महिमा लारै।। ६।।
गोरख नाम कबीर यौही है, नौ चौबीस औतारे।
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष लग, इसी तत्त के सारे।। ७।।
कछिब ध्यान धरैं उर मांही, मीनी खोज बिचारै।
पांच तत का तकिया जाकै, खेलै अधरि अधारै।। ८।।
मुरदा होय सो यौह मद पीवै, आप तरै जग त्यारै।
गरीबदास याह वस्तु अगोचर, उलटि काल कूँ मारै।। ६।। ३।।

अथ राग भैरौं

सेवौ रे सतगुरु समरथ दाता। शब्द अतीत अनाहद राता।। टेक।।
सुख का सागर झिलमिल दरिया, हीरे मोती मानिक भरिया।। १।।
सुख का सागर झिलमिल जोती। मानसरोवर मुकता मोती।। २।।
झिलमिल झिलमिल अजब जहूरा। ताहि लखावै सतगुरु पूरा।। ३।।
सुख के सागर हंस पठावै। बहुरि न जूंनी संकट आवै।। ४।।
कोटि कनी हीरौं की खनी। सतगुरु मिले दया दिल दानी।। ५।।
सूरज मुखी मुक्ति का चंपा। सतगुरु ध्यान लगाया कंपा।। ६।।
दौंना मरुवा फूल चंबेली। सुखसागर में खेलो री हेली।। ७।।
संख पदम झिलमिल उजियारा। दास गरीब सतलोक हमारा।। ८।।

अथ राग रामकली

राम सुमरि राम सुमरि, राम सुमरि हंसा।
भक्ति जानि ज्ञान ध्यान, छाडो कुल बंसा।। टेक।।
कोटि कर्म भ्रम जारि, पार तोहि उतारै।
मुक्ति लोक पाय मोक्ष, नाम जो उचारै।। १।।
सुरति सिंध कोटि चंद, झलकत पल मांहीं।
पद विमान है अमान, आदि अंत नांहीं।। २।।
निराकार अधरि धार, वार पार नांहीं।
व्यापक महबूब खूब, धूप है न छांहीं।। ३।।
संख तूर दर जहूर, झिलमिल झिल रंगा।
घुरै नाद संगि साध, चरण कोटि गंगा।। ४।।
अरस कुरस नूर दरस, तेज पुंज देख्या।

कोटि भान साच मांनि, रूंम रूंम पेख्या।। ५।।
अमृत रस अमी खीर, खुरदनी खुशहाली।
प्याले मसताक पाख, लालन सिर लाली।। ६।।
नाद बिंद घट अकार, देह गिरह नांहीं।
निरमल निरदुंद ऐंन, देखत ही होत चैंन, पलकन के मांहीं।। ७।।
आदि मूल रतन फूल, सेत पद सुभांना।
गरीबदास जहां बास, दरश में दिवांना।। ८।। १।।
राम सुमरि राम सुमरि, राम सुमरि लोई।
सतगुरु उपदेश दीन, भक्ति बीज बोई।। टेक।।
काम क्रोध लोभ मोह, शत्रु हैं तुम्हारे।
हर्ष शोक राग द्वेष, पकरि क्यों न मारे।। १।।
तीन चीन्हि पांच मार, पकरो मठ धारी।
पुत्र तो पच्चीस संगि, सैंना है अपारी।। २।।
पांच नारि घट मंझारि, मन की पटरानी।
द्वादश दल कोटि कटक, सैंना है बिरानी।। ३।।
शाहूकार पकरि लीन्ह, लूटैं गढ़ चोरा।
आत्म तो अनाथ जीव, सुनों राम बाप मोरा।। ४।।
मन के सब राज पाट, तीनि लोक माहीं।
आत्म तो अनाथ जीव, सुनों हो गुसांई।। ५।।
फंध काटि करो साटि, मौज मिहरबांना।
अरजि तो कबूल होवै, साहिब रहमांना।। ६।।
सहिब दरबार बीच, कूकै बंदि जादा।
महजर क्यों न सुनों राम, पूछि हो फिलादा।। ७।।
समरथ जगदीश ईश, शरणि आया तोही।
ठाढा दरबार तेरे, सुनों राम दोही।। ८।।
अर्थ धर्म काम मोक्ष, पूर्ण सब काजा।
गरीबदास शरणि आया, बाप राम राजा।। ९।। २।।
राम सुमरि राम सुमरि, राम सुमर बौरे।
हरदम तो अजपा जाप, साहिब कूँ भजौ रे।। टेक।।
इन्द्री घट पांच भूत, दूत हैं दिवानें।
पच्चीस प्रकृति लार, जानें तिन जानें।। १।।
काम सहर क्रोध कहर, लोभ लहर ऊठैं।
मोह के तो परै फंध, कैसे कर टूटैं।। २।।
सैना दल अपार यार, येती ठकुराई।
कैसे कर पकर्‌या जाय, गढ़ सुरंग लाई।। ३।।

अगड़ी हठबान बंका, जोध्या मन राजा।
कोटि तो निशान घुरैं, बाजैं अनंत बाजा।। ४।।
सेना दल अपार सजैं, संख लहरि लहरी।
खसिया मन राज करै, मरद है न मिहरी।। ५।।
सुरग और पाताल मिरत, तिहूँ लोक लूटे।
सतगुरु कै शरणैं आये, सेई जांनि छूटे।। ६।।
काया गढ़ नांहीं तेरा, देह साच मानी।
भाड़े की दंकान यार, सो तो है बिरानी।। ७।।
दूनें तीनें नांहि कीन्हें, हाटि बीचि टोटा।
पकरैंगे जम जहूद, तोरैंगे लंगोटा।। ८।।
होयगा बे वतन हंस, देह जारि दीन्हीं।
गरीबदास कहां वास, पंथ खोज मीनी।। ६।। ३।।
राम सुमरि राम सुमरि, राम सुमरि बीना।
नांहीं कछु घाट बाट, मारग अति झीना।। टेक।।
ध्रू कूँ जो धरे ध्यान, छूटि गये मलीना।
गाया प्रहलाद राम, अकल पद अकीना।। १।।
ररंकार कर उचार, गज ग्राह चीन्हा।
गीध ब्याधि गनिका, और भीलनी कुलीना।। २।।
सेत जाय बंध्या जहां, यौही नाम लीन्हा।
सैंना दल पार उतरि, रावण छ्यौ कीन्हा।। ३।।
बावन बलिराय छले, तीनि पैंड कीना।
त्रिलोकी सब मांपि लीन्ही, आधा पग खीना।। ४।।
द्रोपदी कूँ बनी भीर, दु:शासन हीना।
ऐसी लीला अपार, अनंत चीर कीन्हा।। ५।।
तुलाधार जगि अपार, नामदेव सहीना।
पलरा जहां नाहीं उठ्या, संकलप सब कीन्हा।। ६।।
बालदि उतरी अपार, जगि दान दीन्हा।
काशी कबीर पुरुष, तीनि लोक चीन्हा।। ७।।
कूवैं लटके फरीद, सीन साफ कीन्हा।
देखो मनसूर कूँ, जो शीश काटि दीन्हा।। ८।।
ऐसा औह नाम गाम, इशक जो लगावै।
पीपा दरियाव कूदि, उलटि बहुरि आवै।। ६।।
गरीबदास साहिब कूँ, तन मन सब अरपै।
बूढ्या जिहान जांनि, पाहन ब्रह्म थरपै।। १०।। ४।।
राम सुमरि राम सुमरि, राम सुमरि मीता।

सतगुरु नहीं ज्ञान ध्यान, खाली है सलीता।। टेक।।
हाड चाम सकल गाम, गंध है खलीता।
पाष तो विसारि दीन, विरह ना जरीता।। १।।
दम का सुमार कीन्ह, नाम क्यों न लीता।
इला पिंगला बिचारि, सुषमना पलीता।। २।।
शील और संतोष आंनि, दया धर्म कीता।
काम क्रोध लोभ मोह, शत्रु क्यों न जीता।। ३।।
साहिब दिल से बिसारि, कौन जुलम कीता।
दुनिया गिपतार यार, छाडि दे अनीता।। ४।।
नाहीं और श्याम सेत, लाल है न पीता।
आवै नहीं परख, पढ़ो कोटि ज्ञान गीता।। ५।।
पिण्ड प्रांन अरपि दीन्ह, सतगुरों सरीता।
गरीबदास पावै यौं, ब्रह्मपद अतीता।। ६।। ५।।
राम सुमरि राम सुमरि, सुमरि ले रे।
जम और जिहांन जीत, तीनि लोक जै रे।। टेक।।
इन्द्री अदालत चोर, पाकरि मन अहि रे।
अनहद टकोर घोर, सुनैं क्यों न बहरे।। १।।
सुरति निरति नाद बिंद, मन पवन गहै रे।
उनमनी अलील रूप, निराकार लहै रे।। २।।
धनुष ध्यान मारि बाण, दुरजन से फहरे।
दीखत के सीत कोट, भ्रम बुरजि ढहै रे।। ३।।
सांचे से प्रीति कीन्ह, झूठा मन महै रे।
कहता है **गरीबदास**, कुटल बचन सहै रे।। ४।। ६।।
राम सुमनि राम सुमरि, राम सुमरि हीरा।
मुश्किल असान होय, मेटै दुःख पीरा।। टेक।।
चेति अंध कटैं फंध, जम के जंजीरा।
भागैं जमदूत भूत, तलबी तागीरा।। १।।
काजी पंडित मुकीद, दहूँ दीन पीरा।
खाते हैं सूर गऊ करते ततबीरा।। २।।
अदली दरबार यार, काढ़ै तकसीरा।
दम दम लेखा निसाफ, छानैं नीर खीरा।। ३।।
जाते हैं दोजिख राह, परि गया बहीरा।
कहते हैं भिस्त देखो, चौड़ घर हदीरा।। ४।।
पीवत हैं साध संत, अमृत रस खीरा।
छाजन भोजन अपार, अमर अंग चीरा।। ५।।

बाजै बजैं अपार, झांझि डफ मंजीरा।
मुरली धुंनि संख टेर, गहर पद गंभीरा।। ६।।
शीश काटि करो साटि, पकरे मन थीरा।
गरीबदास जहां वास, नामदेव कबीरा।। ७।। ७।।

अथ राग प्रभाती

हरि खेलै अधरि अधारा, निरगुन न्यारा।। टेक।।
ज्यों जलमीन लीन ब्रह्मज्ञानी, मध्य बसै परि न्यारा।
सोलह कला संपूरन दरसै, फूलि रह्या गुलजारा।। १।।
मानसरोवर मोती मुकता, चुनता हंस हमारा।
ज्यौं कमला मध्य गंध समानी, नहीं हलका नहीं भारा।। २।।
ज्यों भूमि शीम कहीं नहीं चंपै, जैसे कूँच करै बनिजारा।
शब्द अतीत कोई जन पावै, चढ़ि ज्ञान घोरे असवारा।। ३।।
जैसे सीप समंद सिंध मांही, स्वांति प्रान से प्यारा।
दास गरीब कमोदनि चन्दा, दरवै बानी बारा।। ४।।
सर लायले अविगत सुरति समूलं।। टेक।।
अछै बिरछ असथान हमारा, जहां प्रेम हिंडोले झूंल संख दुलहनी
अर्श देवगंना, जहां बसै एक दूलं।। १।।
चरण न शीश नहीं दम देही, बिना पिंड असथूलं।
सुरति निरति दो अनभै मालनि, ल्याई हार चंबेली फूलं।। २।।
बिना भूमि बिरछा बिसतारा, नीचै डाल रु ऊपरि मूलं।
ना कूवा नहीं बाग न क्यारी, नीर ढुलै बिन कूलं।। ३।।
दास गरीब सर्वत्र साहिब, जा कूँ देख न भूलं।। ४।। २।।
तुझि कहां लगी मन मसती, थोरे से जीवन के कारनै।। टेक।।
जंगल डेरा होगा तेरा, तूं छाडि चलैगा बसती।
तूं जानैं मैं इहांही रहौंगा, तेरै बारि खड़े हैं गसती।। १।।
अंकुश ज्ञान महावत राखो, तेरा खून चढ़ै नहीं हसती।
नहीं मुकाम कूँच है बौरे, जग चल्या जात है रसती।। २।।
क्यों दम तोरै लाय ले डोरै, कहा भरत है जसती।
अरब खरब लग दलबल जोड़्या, सुखपाल चढ़्या गज हसती।। ३।।
महंगी साटि बनज है महंगा, भक्ति मुक्ति नहीं ससती।
दास गरीब फजल कर मौले, धरि सतगुरु सिर दसती।। ४।।
कहा राज में राजी, नफरा होय रहियै।। टेक।।
घुरैं निशांन भांन लग फरकैं, झूठी नौबति बाजी।
इन्द्र कुबेर सुमेर चलैंगे, देख दगासी साजी।। १।।

पलक पहर में कूँच तुम्हारा, हो गये राज बिराजी।
शब्द हमारा मानि गंवारा, क्यों समझत नहीं पाजी।। २।।
मन में मुलनां बंग देत है, तेरे दिल ही अंदरि काजी।
करि ले पूजा दूर कर दूजा, टुक देखि ले नेम निवाजी।। ३।।
धनि वै बंदे सतगुरु जिन्दे, जो परसे अरस अवाजी।
दास गरीब पलक कर पलना, चौंर ढुरैं उपराजी।। ४।।

घट घेरै नींद निमानी घट घेरै।। टेक।।

सतगुरु मिलैं तो बेगि छुटावैं, छानैं दूध रु पानी।
पांच पच्चीस शीश चढ़ि खेलैं, ज्यों नाचैं भूत भवानी।। १।।
निंदरा काल जाल है भाई, हो गई तांनम तांनी।
जिंदे से मुरदा करि डारै, भटकत फिरै प्रानी।। २।।
जो जागै सो पद स्यौं लागै, पावै अकथ कहानी।
उलटि पवन षट चकरे बेधै, जा परि मैं कुरबानी।। ३।।
पवन डंड नागनि कूँ मारै, नाभ फिरै तुरफानी।
इला पिंगला सुषमन सेझा, चलि मानसरोवर न्हानी।। ४।।
है बहुरंगी अचल अभंगी, वै तो हैं हंसों के दानी।
कहै दास गरीब अमर होय सुनि करि, तूं मानि हमारी बानी।। ५।।

हंसा उतरैंगे पार नौका नावरी।। टेक।।

लंबे रे बरदवान गहरी जिहाज, नीके रे उतरियौ लागी साज।
डिगै न डोलै कोडी न होय, उस नौका चढ़ि सकै न कोय।। १।।
उस नौका परि जगमग फूल, जा नौका कूँ पलक न भूल।
हीरे मोती जड़िया लाल। वाह नौका है नजरि निहाल।। २।।
त्रिलोकी तिल मांहि सुमेर, उस नौका का ऐसा ही फेर।
पृथ्वी प्रदछिनां दे आवै, एक पलक प्रलोके जावै।। ३।।
सुरग नरक की करैं न कांन, अरसी नौका अजब विमान।
स्वर्ग नरक की करै न भिंन, जा के जरिया कोटि रतन।। ४।।
ब्यौमी से सुरगापुरी जाव, सुर नर मुनिजन धरैं न पाव।
है हिरदे के मध्य त्रिकुटी के तीर,
दास गरीब भजि अविगत कबीर।। ५।।

गाहक फिर फिर जांहि सौदा जोरि है।। टेक।।

तन मन अरपि चढाईयो शीश, सौदा करियो बिसवे बीस।
हाटि पटण जो चलता गाम, बहुरि कौन तेरा लेगा नाम।। १।।
हाटि पट्टन होयगा बारा बाट, बहुरि कौन तेरी करि है साटि।
हिरसि हवा के हैं बजार, जम किंकर की खाहिगा मार।। २।।
मारे रावण मारे कंस, जिन्हि के कहीं न पाये बंस।

चकवै गये धजा फरराय, जिनि के कहीं न पाये राह।। ३।।
अरब खरब कोडी धज लाख, जिन के तन की हो गई खाख।
सैंना चढ़ती घुरत निशांन, सो तो मरहट धरे मसान।। ४।।
कुंभकर्ण थे बड़े गनीम, जा के खप्पर में बूडे भीम।
दास गरीब तबीब पिछांनि, हिरदे धरि सतगुरु का ध्यान।। ५।।

कोई जन जानैगा भेव शाख न मूल है।। टेक।।

ऊपरि मूल तले कूँ डार, बिन चिसम्यौं तुम देखो रे निहारि।
समाधान शाखा न पात, कौन लखै सांई की दाति।। १।।
राता पीरा है अकाश, दम कूँ खोजो महतत बास।
महतत में एक मूरति ऐंन, मुरली मधुर बजावैं बैन।। २।।
अछै बिरछ असथान हमार, खेलौ हंसा अधरि अधार।
कोटिक ब्रह्मा धरते ध्यान, कोटिक शंभू है सुरज्ञान।। ३।।
नारद शारद रटते शेष, कोई क जानैं सतगुरु उपदेश।
सनक सनंदन हैं ल्यौलीन, ध्यान धरै सतगुरु दुरबीन।। ४।।
जनक विदेही और शुकदेव, गोरख दत्त करत हैं सेव।
कोटि कला त्रिबैंतनी तीर, दास गरीब भजि अविगत कबीर।। ५।।

अष्टभुजी सतरूप अपूरब प्रकाशा,
अचल विहंगम देखि न दम देही श्वासा।। टेक।।

तत सरूपी सार पुरुष का तन खासा।
त्रिकुटी महल असथान जहां सतगुरु का बासा।। १।।
फिरैं पियाले प्रेम पीवैं कोई निज दासा।
जानैं नौ कुरबांन लखै निगुण रासा।। २।।
अगर मूल के फूल, गगनि डोरी नासा।
छै रुति छाक घमोर, छिके बारा मासा।। ३।।
देख कला दुरबीन, महल की करि आशा।
दास गरीब पिछानि, कटैं ज्यौ जम फांसा।। ४।। ६।।

सहंस भुजा सैलान प्रीतम पाया है।
दर्दबंद दरवेश दया कर आया है।। टेक।।

अरन बरन छवि रूप, पिंड नहीं काया है।
है जिंदा जगदीश, न जननी जाया है।। १।।
ऋग यजु साम अथरबन, चार्यौं गाया है।
ब्रह्मा विष्णु महेश, शेष धुनि लाया है।। २।।
भागौति कथी शुकदेव, गीता बतलाया है।
सनक सनंदन नारद, नाद बजाया है।। ३।।
धरि नरसिंघ जु रूप क, असर गिराया है।

खंभ बंधे प्रहलाद, जो आनि छुटाया है।। ४।।
उधरे गज और गिराह, जो जुध मिटाया है।
अठारह पदम चढ़ाय के, सेत बँधाया है।। ५।।
दस मस्तक रावण तोरि के, बंधि छुटाया है।
दई विभीषण लंक, ऐसी तेरी माया है।। ६।।
द्रुपद सुता के चीर, जो अनंत बढ़ाया है।
सुदामा दालिद्र मोछि क, अंन धन धाया है।। ७।।
नरसीला की हूँडी झाली, सो राघो राइ ल्याया है।
नामदेव का देवल फेरि कै, गऊ जिवाया है।। ८।।
देखि धन्ना का ध्यान, जु खेत निपाया है।
संखासुर से मारि कै, वेद चुराया है।। ९।।
बावन रूप सरूप, छले बलिराया है।
चाह्या स्वर्ग समूल, पताल पठाया है।। १०।।
सैना का संसा दूरि क, शीश मुंडाया है।
रैदास भक्ति बिलास क, दूध पिलाया है।। ११।।
कनक जनेऊ काढ़ि कै, विप्र हराया है।
केशो नाम कबीर कै, बालदि ल्याया है।। १२।।
दास गरीब दयाल, शब्द गौहराया है।। १३।। १०।।
जानी आया है रे देखो जानि माल दा मौला।। टेक।।
कहां गीता भागौत बखानी, कहां किया रमायन रौला।
बिन सरवर जहां कमल कुलाहल, भौंरा उड़ते हैं धौला।। १।।
कहां भवंग करै विषिया संगि, सूंधि लरै बूटी न्यौला।
शील संतोष विवेक दया दिल, जाप अजपा स्यौं ल्यो ला।। २।।
हदि बेहदि के बंधन तोरे, दूरि किया परदा डौला।
कहै दास गरीब चलौ सुखसागर, बिन सरवर फूले कौंला।। ३।।
मनसूर वाले मौलाये मौलाये।। टेक।।
शिमली सिपति करै सतगुरु की, पिये प्रेम पियाले।
लब की लार अपार दृष्टि दिल, खुल्हि गये आठौं ताले।। १।।
अरब खलील भई बे काजी, तौंक जंजीर गलौं डाले।
मीर उमराव खांन सब देखैं, कोई न देता है टाले।। २।।
शाह समेत कहैं सब मारो, उलटि खैंचि काढौ खाले।
कर कूँ काटि रक्त मुख धोया, सत महली सूली चाले।। ३।।
जहां अनरागी राग करत हैं, तहां मनसूर मस्त माले।
शिखरि सलेमाबाद चढ़ाया, अठसली सूली साले।। ४।।
फूकि फाकि तन किया फजीहत,

दास गरीब कष्ट जाले।। ५।। १२।।
महरै सतगुरु आये होद क, भल दिन आज घरी।। टेक।।
चतुर्भुजी चित मांहि लखाया, अष्टभुजी अनरागी।
सहंसभुजी संगीत पियारे, देखै सो बड़ भागी।। १।।
परमानंद अलख अविनाशी, संख भुजा सैलांना।
खालिक बिन खाली नहीं संतो, सतगुरु कूँ कूरबांना।। २।।
सेत छत्र सिर मुकट बिराजै, पीतंबर पट मांहीं।
कोटिक रिद्धि सिद्धि आगै ढाढ़ी, अविगत अलख गोसांई।। ३।।
कोटिक ब्रह्मा पाठ पढ़त हैं, कोटिक शंभु ध्यानी।
कोटिक विष्णु बिसंभर ठाढ़े, सतगुरु के दरबानी।। ४।।
शेष सहंस मुख निश दिन गावैं, ररंकार रंग भीना।
संख लोचनी माया नाचै, चलि मघ मारग झीना।। ५।।
कोटिक अनभै छन्द करत हैं, नाचैं नाच नवेला।
कोटि देवंगना गावत आई, अविगत पुर में मेला।। ६।।
ब्रह्मा विष्णु महेसर नाचैं, सनक सनंदन गावैं।
कोटि सरस्वती लाप करत हैं, नारद नाद बजावैं।। ७।।
वशिष्ठ विश्वा कपिल मुनी हैं, गावैं ध्रू प्रहलादा।
सुखदे जनक विदेही जोगी, लीला अगम अगाधा।। ८।।
सोई सुखदे भागौति कथी है, सोई गीता बतलाया।
ऋग यजु साम अथरबन थाकै, च्यार वेद कूँ गाया।। ९।।
मारकंडे रूंमी ऋषि नाचैं, नाचै कागभुसंडा।
कृष्ण गुरु दुर्वासा नाचैं, जम सिर मारै डंडा।। १०।।
बालमीक की बलि बलि जाऊँ, कथा रामायण नीका।
संख पंचायन आंनि बजाया, भक्ति दिलाया टीका।। ११।।
गोरख दत्त गोपीचंद भरथरी, सुलतानी बाजीदा।
उरध मुखी कूये में लटके, पौंहचे जांनि फरीदा।। १२।।
नाशकेत कर्दम ऋषि गावैं, बकतालिक मुनि ज्ञानी।
परलो कोटि पलक में बीतैं, ऐसे है मुनि ध्यानी।। १३।।
बेर भीलनी केर चढ़े हैं, कर्मा मीरां बाई।
गनिका बैठि विमान गई है, सतगुरु की सरनाई।। १४।।
धन्ना सुदामा नानक नामा, पीपा परचा पाया।।
छानि छिवाई गऊ जिवाई, देवल आंनि फिराया।। १५।।
रैदास रसायन माते रहते, सुनते आदू तांना।
जिनके कहां कभी ब्रह्म मेला, दो कौडी बंधि कांना।। १६।।
कांना कसते शुन्य में बसते, संत विवेकी बीना।

बैठि चौपटे क्रितम करते, आत्म का रोजीना।। १७।।
रैदास आकश चढै अनरागी, ततै तत समाना।
कनक जनेऊ काढ़ि दिखाया, विप्र किये हैराना।। १८।।
संख असंखौं संत विराजैं, वार पार नहीं अंता।
अविगत पुरुष कबीर भजौ रे, है दूलह महमंता।। १९।।
सकल सरोमनि है दिलदाना, मगन मुरारी मौला।
दास गरीब जहां रंग राते, उजल भौरा धौला।। २०।। १३।।

अथ राग बिलावल

रब्ब राजिक तू महरमी, करतार बिनानी।
अविगत अलख अलाह, तूं कादिर प्रवानी ।। टेक।।
खालिक मालिक मिहरबान, सर्वंगी स्वामी।
निश्चल अचल अगाध तूं, निरगुण निहकामी।। १।।
राम रहीम करीम तूं, कुदरत से न्यारा।
गंध पुष्प ज्यों रम रह्या, फूल्या गुलजारा।। २।।
पूर्ण ब्रह्म परम गुरु, अकला अविनाशी।
शब्द अतीत विहंगमा की, शिकल उदासी।। ३।।
अनरागी निहतत्त कूँ, तन मन सब अरपूं।
शीश करूं तिस बारनैं, चित चंदन चरचूं।। ४।।
उस साहिब महबूब कूँ, कर हरदम मुजरा।
चित से बंग न बिसरूं, दिल अंदर हुजरा।। ५।।
पति राखन तूं परद पोस, साहिब दिलदाना।
मीरां मेरे मेहर कर, पेखूं खिल खाना।। ६।।
नूर निहारूं नजर से, नैनों भरि देखू।
मूरत सूरत शिकल कूँ, चिश्म्यौं में पेखूं।। ७।।
तेज पुंज की सेज है, शुन्य मंडल सीरा।
अदली तखत खबास है, जहां आप कबीरा।। ८।।
कुंभक ऊपर कुंभ है, गागर पर गगरी।
संत विवेकी पौंहचसी, उस अविगत नगरी।। ९।।
अविगत नगर निधान है, बेगमपुर बासा।
विरह वियोगी बिंध रहे, जहां शब्द निवासा।। १०।।
तन मन मृतक होय रहे, दिल दुई उठावैं।
शब्द समुंद्र सिंधु में, ले अंग मिलावैं।। ११।
खोजी खोज न पाव हीं, गुरु भेद बिचारं।
चार वेद चितवन भये, भूले भ्रम अचारं।। १२।।

पुरान अठारा गम नहीं, क्या गावै ज्ञानी।
मौनी महल न पावहीं, बिन सतगुरु बानी।। १३।।
अष्ट योग जानैं नहीं, षट कँवल कशीशं।
पांचौं मुद्रा वार है, पारख जगदीशं।। १४।।
बावन अक्षर ना चढ़ै, वह बिरहा बंगी।
दास गरीब पिछानिया, सो हरदम संगी।। १५।। १।।
मतवालौं के महल की, सोफी क्या पावै।
अर्श खुरदनी खीर है, सतगुरु बतलावै।। टेक।।
शुन्य दरीबे हाट है, जहां अमृत चवता।
ज्ञानी घाट न पावहीं, खाली सब कविता।। १।।
टांक बिकै नहीं मोल कूँ, जो तुलै न तोल्या।
कूँची शब्द लगाय कर, सतगुरु पट खोल्या।। २।।
फूल झरैं भाठी सरैं, जहां फिरैं पियाले।
नूर महल बेगमपुरा, घूमैं मतवाले।। ३।।
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, त्रिबैंणी धारा।
बेड़े बाट बिहंगमी, उतरे भव पारा।। ४।।
अठसठ तीरथ ताल है, उस सरवर मांहीं।
अमर कंद फल नूर के, कोई साधू खांहीं।। ५।।
नौ सै नदी अचूक हैं, उस मंझ तलाई।
मेरु डंड कूँ छेद कर, सतगुरु बतलाई।। ६।।
मानसरोवर कुंज है, जहां हंसा खेलैं।
भवसागर की बाट तैं, सतगुरु सति बेलैं।। ७।।
हंसा मोती चुगत हैं, जुग जुग आधारा।
खात न टूटै परम धन, जो अखै भंडारा।। ८।।
अमर कच्छ हंसा भये, मिल शब्द समाये।
औघट लंघे साधवा, वै बौहर न आये।। ६।।
सुरंग लगावैं शुन्य में, सो सतगुरु सूचा।
मुकताहल पद बेलड़ी, फल देवे ऊँचा।। १०।।
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन जन्म सुधार्‌या।
ज्ञान खड्ग की गुरज से, दूतर सब मार्‌या।। ११।।
बिरह बिथा का बादला, घट अंदर बूठ्या।
दास गरीब दया भई, भल सतगुरु टूठ्या।। १२।। २।।
चिंतामणि कूँ चेत रे, मुक्ताहल पाया।
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन भेद बताया।। टेक।।
हीरामणि पारस परस रे, लख लाल नरेशा।

मोती जवाहर जोगिया, औह दुर्लभ देशा।। १।।
कामधैन कल्पवृक्ष है, दरबार हमारे।
अठसिद्धि नौनिधि आंगनैं, नित कारज सारे।। २।।
राग छतीसौं रिद्धि सबै, जहां रास अरु बानी।
ताल तंबूरे तूर हैं, अविगत निरबानी।। ३।।
शुन्य में बाजैं डुग डुगी, बरवै पद गावै।
चल हंसा उस देश कूँ, ज्यौं बौहर न आवै।। ४।।
नूर महल गुलजार है, निज शब्द समाये।
हंसा बौहर न आवहीं, सत्यलोक सिधाये।। ५।।
सतगुरु मंझ दलाल हैं, जिन सौदा कीन्हा।
दास गरीब दया भई, सत साहिब चीन्हा।। ६।। ३।।

नूर नगर बेगमपुरा, प्रपट्टन थानं।
सतगुरु सैन लखाइया, जो पद निरबानं।। टेक।।

कोकिल वाणी होत हैं, पारख निहतंती।
जा का मुजरा होयगा, तन काढ़ै जंती।। १।।
अनरागी निहतत्त है, पद पारख लीजै।
प्रेम पियाला पीय कर, कहीं भेद न दीजै।। २।।
अनरागी निहतत्त में, ले सुरति समोई।
महल महरमी जाहिंगे, तन आपा खोई।। ३।।
पिंगुल बैंन अवाज है, जहां सुरति समाहीं।
निरति निरंतर रम रही, तहां दूसर नाहीं।। ४।।
आसन अर्शी पेख ले, शुन्य मंडल मेला।
सींगी नादू बाजहीं, जहां गुरु न चेला।। ५।।
सिर छत्र अनुपम श्वेत है, जहां साहिब रहता।
चँवर सुहंगम ढुरत हैं, यौं सतगुरु कहता।। ६।।
झिलमिल नूर अपार है, जहां जंत्री जोगी।
सकल ब्यापी रम रह्या, परख रस भोगी।। ७।।
दृष्टि मुष्टि आवै नहीं, मौनी महबूबं।
विरह विहंगम बैत है, असला पद खूबं।। ८।।
उज्जल भँवर अनंत हैं, जहां कुंजी बैंना।
शब्द अतीत समाधिया, लख उनमुन नैंना।। ९।।
घाट बाट पावैं नहीं, बिन सतगुरु सैंना।
भेष परे हैं भर्म में, सब फोकट फैंना।। १०।।
सूरति निरति मन पवन का, एक अंग बनाया।
सो हंसा शुन्य में गये, सत्यलोक बासाया।। ११।।

बिन पर भँवर उड़ाइया, बिन पगौं पयाना।
जन दास गरीब अगमपुरी, जहां ज्ञान न ध्याना।। १२।। ४।।
मैं अमली निज नाम का, मद खूब चवाया।
पिया पियाला प्रेम का, सिर साटै पाया।। टेक।।
गण गंधर्व योधा बड़े, कैसे ठहराया।
शील खेत रणजंग में, सतगुरु शर लाया।। १।।
पांच सखी नित्य संग हैं, कैसे होय त्यागी।
अमर लोक अनहद रते, सोई अनरागी।। २।।
प्रपंची पाकर लिया, विरहे का कंपा।
संख पदम उजियार हैं, झलकत है चंपा।। ३।।
कुंभ कलाली भर दिया, महंगा मद नीका।
और अमल नापाक हैं, सब लागत फीका।। ४।।
एक रत्ती पावै नहीं, बिन शीश चढ़ाये।
वौह साहिब राजी नहीं, नर मूंड मुंडाये।। ५।।
नौधा के नर बहुत हैं, बैकुंठ सिधौरा।
सुकृत नाम संभालियो, लूटत जम जौंरा।। ६।।
सुकृत नाम सनीप है, शिव गौरि सुनाया।
सूवटे से शुकदेव हुआ, पारस पद पाया।। ७।।
रंग महल में रोशनी, रमते से मेला।
परस्या दास गरीब है, सतगुरु का चेला।। ८।। ५।।
आज का लाहा लीजिये, कल किस कूँ होई।
यौह तन माटी में मिलै, जानै सब कोई।। टेक।।
लखी क्रोडी चल गये, बौह जोड़ खजाना।
जा तन चंदन लेपते, सो धरे मसाना।। १।।
हसती घोड़े पालकी, दल बल बहु साजा।
सवा लाख संगी गये, रावण से राजा।। २।।
कुंभकर्ण से वीर थे, लंका छत्र धारी।
नाम बिना वंश बूडि है, समझावै नारी।। ३।।
विभीषण पद भेदिया, निरगुण निरवाना।
रावण दुई विसार दे, तज गर्व गुमाना।। ४।।
बड़ चकवे काल चक्र पड़े, जिन नाम बिसार्‍या।
कंश केशि चानौर रे, धर बाल पछार्‍या।। ५।।
हिरनाकुश समझे नहीं, प्रहलाद पढ़ावै।
उदर विनाश्या आनि कै, तब कौन छुटावै।। ६।।
जरासिंध से मारिया, और सहस्रा बाहु।

ग्राह से गज छुटाईया, निज नाम है साऊ।। ७।।
दःशासन परलो गये, इकोतर भाई।
दुर्योधन की देह कूँ, तन गीध न खाई।। १८।।
निरगुण निरभय नाम है, भजि लीजो सोई।
अगर दीप सत्यलोमक में, तब बासा होई।। ६।।
सहंस अठासी द्वीप में, उत्पति की खानी।
दास गरीब भक्ति मिलै, जब थिर होय प्रानी।। १०।। ६।।

ज्ञान की अखियां रंग भरी, लोयन निज नूरी।
मृगा बाहर भरमहीं, नाभी कस्तूरी।। टेक।।
पीताम्बर मस्तक बन्या, त्रिकुटी अति सोहै।
सो घट छान्या ना रहै, पद परस्या लोहै।। १।।
शील संतोष विवेक रे, और ज्ञान विज्ञाना।
दया दुलीचे बैठ करि, होय ब्रह्म समाना।। २।।
क्षमा छत्र जाकै ढुरत है, तामस नहीं तेज।
सो नर परसे जानिये, अविगत की सेजं।। ३।।
कँवल हिरंबर खिल रहे, अनभय अनरागी।
दास गरीब सत्यलोक के, सोई वैरागी।। ४।। ७।।

सजन सुराही हाथ है, अमृत का प्याला।
हम विरहनि विरहै रंगी, कोई पूछै हाला।। टेक।।
चाोखा फूल चवाईयां विरहनि कै ताहीं।
मतवाला महबूब है, मेरा अलख गुसांई।। १।।
प्रेम पियाला पीय करि, मैं भई दिवानी।
कहां कहूँ उस देश की, कछु अकथ निसांनी।। २।।
बरवै राग सुनाय करि, गल डारी फांसी।
गांठ गही खूल्है नहीं, साजन अविनाशी।। ३।।
गुझ की बातां किस कहूँ, कोई महरम जानै।
अगली पिछली मति गई, बेधी इकतानै।। ४।।
शुन्य मंडल सत्तलोक से, बिरहा चलि आया।
मुझ बिरहनि के लैन कूँ, मेरे सजन पठाया।। ५।।
रूंम रूंम में राग है, बिरहा रंग रासी।
लोक वेद झूठे लगे, पिछली बुधि नाशी।। ६।।
अनहद नादू बाजहीं, अमरापुर मांहीं।
शुन्य मंडल सत्यलोक कूँ, दुलहनि उठि धाई।। ७।।
अर्श गुमट गुलजार है, गैबी गलताना।
श्वेत ध्वजा जहां फरहरैं, पचरंग निशाना।। ८।।

तन मन छाके प्रेम से, मन मंगल महली।
दुलहनि दास गरीब है, जहां सेज सलहली।। ८।। ८।।
शुन्य सरोवर हंस मन, मोती चुग आया।
अगर द्वीप सत्यलोक में, ले अजर जराया।। टेक।।
हंस हिरम्बर हेत है, हैरान निशानी।
सुखसागर मुक्ता भये, मिल बारह बानी।। १।।
रतनागर अघनूस है, अग है अनरागी।
शुन्य सलहली सैल रे, करि है बड़भागी।। २।।
खंड पिंड ब्रह्मंड से, वह न्यारा नादूं
सुनि समझ याह बेग रे, गये वाद विवादू।। ३।।
सतगुरु सार जगाईया, धर कूँची ताला।
रंग महल में रोशनी, घट भया उजाला।। ४।।
दीपक जोया नूर का, ले अस्थिर बाती।
बौहर न भवजल आवहीं, निरगुण के नाती।। ५।।
नाम शहर बेगमपुरा जहां लगी ताली।
सब घट मणि संजूद है, नाहीं कोई खाली।। ६।।
अजब दिवाना देश है, जहां हिलमिल रहिये।
जन कहता दास गरीब है, मुक्ता पद लहिये।। ७।। ६।।
ज्ञान तुरंगम पीड़्या ताजी दरियाई।
पाखर घाली प्रेम की, चित चाबुक लाई।। टेक।।
परमधाम से ऊतरे, हुकमी सैलानी।
शब्द सिंध मेला करैं, हंसौं के दानी।। १।।
असंख्य युग परलो गये, जदि के गुण गाऊँ।
ज्ञान गुरज है दस्त में, ले हंस चिताऊँ।। २।।
शील हमारा सेल है, और छिमा कटारी।
तत्व तीर तकि मारि हूँ, कहां जाय अनारी।। ३।।
बुधि हमारी बंदूक है, दिल अंदर दारू।
प्रेम पियाला सार का, चित चखमख झारू।। ४।।
तत्व हमारी तेग है, जो असल अशीलं।
शूरे सनमुख लेत है, कायर मुख पीलं।। ५।।
घायल घूमैं अर्श में, जिस लगी करारी।
औषधि निश्चा नाम है, जिन पीड़ पुकारी।। ६।।
पाखरिया सत्यलोक के, रणजीत पठाये।
कहता दास गरीब है, गुरु गम से आये।। ७।। १०।।
घट ही अंदर गारडू, धोखै मर गईया।

सार शब्द चीन्हा नहीं, कछु भेद न लहिया।। टेक।।
न्यौल जड़ी कूँ सूंघ करि, ग्रह डंक लगावै।
सर्पन बाँबी स्यौं डसी, कहीं जान न पावै।। १।।
बाजी अनहद बीन रे, फुंभी फुनकारा।
भगल विद्या बाजीगरी, जानै गुरु हमारा।। २।।
सतगुरु मिल्या गारडू, जिन मंत्र दीन्हा।
नाग दमन निरगुण जड़ी बिसयर बस कीन्हा।। ३।।
बजीगर की डुगडुगी, बिसयर बिरमाया।
घाल पिटारै ले चल्या, घर बार नचाया।। ४।।
ऐसा सतगुरु सेईये, बाजीगर पूरा।
दास गरीब अमर करै, दिल दर्श जहूरा।। ५।। ११।।
भजि निज नाम अनूप रे, निर्भय पद नीका।
जप तप तीर्थ संजमां, सब का है टीका।। टेक।।
दरदबंद दरवेश है, बे दरद कसाई।
संत समागम कीजिये, तज लोक बड़ाई।। १।।
डिंभी डिंभ न छाड हीं, मरहट के भूता।
घर घर द्वारै फिरत हैं, कलियुग के कूता।। २।।
डिंभ करैं डूंगर चढ़ैं, तप होम अंगीठी।
पंच अग्नि पाखंड है, याह मुक्ति बसीठी।। ३।।
पाती तोरे क्या हुवा, बहु पान झरोरे।
तुलसी बकरा खा गया, ठाकुर क्या बौरे।। ४।।
पीतल ही का थाल हे, पीतल का लोटा।
जड़ मूरति कूँ पूजते, आवैगा टोटा।। ५।।
पीतल चमचा पूजिये, जो खान परोसै।
जड़ मूरति किस काम की, मत रहो भरोसै।। ६।।
काशी गया प्रयाग रे, हरि पैड़ी न्हाये।
द्वारामती दर्शन किये, बौह दाग दगाये।। ७।।
इन्द्र दौंन असनान रे, कर पुष्कर परसे।
द्वादस तिलक बनाय कर, बहु चंदन चरचे।। ८।।
अठसठ तीरथ सब किये, वृन्दावन फेरी।
नाम बिना खुल्है नहीं, दिव्य दृष्टि अंधेरी।। ६।।
सतगुरु भेद लखाईया, निज नूर निशानी।
कहता दास गरीब है, छूटैं सो प्रानी।। १०।। १२।।
सुनो महातम नाम का, मुजरै चल भाई।
अजामेल गणिका तिरे, और सदन कसाई।। टेक।।

बालनीक ब्रह्मलोक कूँ, गये नाद बजाई।
संख पंचायन बाजिया, पंडौ यज्ञ रचाई।। १।।
बेर भीलनी के चढ़े, स्योरी कुल हीनी।
चीर द्रोपदी के गहे, सतगुरु बहु दीन्ही।। २।।
तंदुल सुदामा के लिये, दुर्योधन आये।
अमृत भोजन छाड कर, साग विदुर घर पाये।। ३।।
रंका बंका तिर गये, और सेऊ सूचा।
सम्मन कै सतगुरु गये, इनसे कौन ऊँचा।। ४।।
सूजा सैन पीपा तिरे, और नानक नामा।
धन्ना भक्त से ऊधरे, पौंहचे सत धामा।। ५।।
ध्रू प्रहलाद उधर गये, और जनक विदेही।
धर्मराय की बंध तोर्या, सुखदे संग लेही।। ६।।
सुलतानी बादशाह थे, तज्या बलख बुखारा।
ऐसे सतगुरु बेलिया, भल औगन गारा।। ७।।
गेपीचंद और भरथरी, भल योग बिजोगी।
रामथली रोशन करी, शीतल रस भोगी।। ८।।
गोरख दत्त कबीर हैं, रैदास कमाला।
दादू दर्श पर्श भये, पिया प्रेम पियाला।। ९।।
केते अमली अमल में, उस देश दिवाने।
ऊँचे कुल कूँ कोसना, होंहि धूर समाने।। १०।।
कौन ऊँच कौन नीच है, चढ़ो नाम निवारे।
गरीबदास आजिज तिरे, बूडे बट पारे।। ११।। १३।।
नजर निहाल दयाल है, मेरे अंतरयामी।
सोलह कला संपूर्णा, लख बारह बानी।। टेक।।
उलट मेरदंड चढ़ गये, देख्या सो देख्या।
संख कोटि रवि झिलमिलैं, गिनती नहीं लेखा।। १।।
वर्ण वर्ण के तेज हैं, पचरंग प्रेवा।
मूरति कोटि असंख्य हैं, जा मध्य एक देवा।। २।।
जाकै ब्रह्मा झारू देत हैं, शंकर करि पंखा।
शेष चरण चंपी लगे, अगमी गढ़ बंका।। ३।।
धर ऐनक दुरबीन कूँ, ध्वनि ध्यान लगावै।
उलट कँवल अरशां चढ़ै, तब नजर्यौं आवै।। ४।।
सूक्ष्म मूरत सोहना, अगमी एक रासा।
रहता रमता राम है, घट पिंड न श्वासा।। ५।।
जो देख्या सो किस कहूँ अचरज एक ख्याला।

कहता दास गरीब है, निज रूप बिशाला।। ६।। १४।।
सोई साध अगाध है, आपा न सराहै।
पर निंद्या नहीं संचरै, चुगली नहीं चाहै।। टेक।।
काम क्रोध तृष्णा नहीं, आशा नहीं राखै।
साचे से परचा भया, जब कूड़ न भाषै।। १।।
एकै नजर निरंजना, सब हीं घट देखै।
ऊँच नीच अंतर नहीं, सब एकै पेखै।। २।।
सोई साध शिरोमणी, जप तप उपगारी।
भूले कूँ उपदेश दे, दुर्लभ संसारी।। ३।।
अकल अकीन पठाय दे, भूले कूँ चेतै।
सो साधू ससांर में, हम बिरले भेटैं।। ४।।
सूतक खोवैं सत्य कहैं, साचे से लावै।
सो साधू संसार में, हम बिरले पावैं।। ५।।
निरख निरख पग धरत हैं, जीव हिंसा नांहीं।
चौरासी त्यारन तिरन, आये जग माहीं।। ६।।
इस सौदे कूँ उतरे, सौदागर सोई।
भरैं जिहाज उतार दें, भवसागर लोई।। ७।।
भेष धरैं भागे फिरैं, बहु साखी सीखैं।
जानैं नहीं विवेक कूँ, खर कै ज्यौं रीकैं।। ८।।
अरवाह मुकामां दर्श है, जो अर्श रहंता।
उनमनि में तारी लगी, जहां अजप जपंता।। ६।।
शुन्य महल अस्थान है, जहां अस्थिर डेरा।
दास गरीब सुभान है, सत् साहिब मेरा।। १०।। १५।।
भवसागर के तिरन कूँ एक नाम सतेसा।
शिव ब्रह्मादिक रटत हैं, और नारद शेषा।। टेक।।
सतगुरु साखि समझ रे, सब मिटैं अंदेशा।
सुन हंसा चल बूझ रे, वह अगम संदेशा।। १।।
भवसागर कूँ तिर गये, सो तोहि बातावैं।
ध्रू प्रहलाद उधर गये, सो बहुर न आवैं।। २।।
सनक सनंदन सेवहीं, लै कुंजि गुंजारा।
अंडे पोषण होत हैं, हरि नाम अधारा।। ३।।
जैसे अलल अकाश में, कीन्हा है डेरा।
सुरति सिन्ध बच्चा मिल्या, जो बौहर न फेरा।। ४।।
वाशिष्ट विश्वा बसि रहे, और ब्यास गुसांई।
मारग अलल अनादि है, कोई पावत नांहीं।। ५।।

मारकंड रूंमी ऋषि और कागभुसंडा।
साक्षी एक कबीर की, दर नौऊँ खंडा।। ६।।
नामा नमक हलाल रे, कीन्हा है भाई।
गरीबदास एक नाम की, नौका जग मांहीं।। ७।। १६।।
तत्त कहन कूँ राम है, दूजा नहीं देवा।
ब्रह्मा विष्णु महेश से, जाकी करि हैं सेवा।। टेक।।
जप तप तीर्थ थोथरे, जाकी क्या आशा।
कोटि यज्ञ पुण्य दान से, जम कटै न फांसा।। १।।
यहां देन वहां लेन है, यौह मिटै न झगरा।
वाह बिना पंथ की बाट है, पावै को दगरा।। २।।
बिन इच्छा जो देत हैं, सो दान कहावै।
फल बांचै नहीं तास का, अमरापुर जावै।। ३।।
सकल द्वीप नौ खंड के, क्षत्री जिन जीते।
सो तो पद में ना मिले, विद्या गुण चीते।। ४।।
कोटि उनंचा पृथ्वी, जिन दीन्ही दाना।
परशुराम अवतार कूँ, कीन्ही कुरबाना।। ५।।
कंचन मेर सुमेर रे, आये सब माहीं।
कामधेनु कल्पवृक्ष रे, सो दान करांहीं।। ६।।
सुर नर मुनि जन सेवहीं, सनकादिक ध्यावैं।
शेष सहंस मुख रटत हैं, जाका पार न पावैं।। ७।।
ब्रह्मा विष्णु महेश रे, देवा दरबारी।
संख कल्प युग हो गये, जाकी खुल्है न तारी।। ८।।
प्रलय संख्य असंख्य रे, पल मांहि बिहानी।
गरीबदास निज नाम की, महिमा हम जानी।। ९।। १७।।
सुख के सागर राम हैं, दुख मोचन होई।
पत्थर पानी प्रतिमा से, तिर्‍या न कोई।। टेक।।
नारद मुनि ध्रू को मिले, जिन नाम सुनाया।
कोटि कल्प युग हो यगे, फिर गर्भ न आया।। १।।
सप्तपुरी पर ध्रू तपै, सो नाहीं छाना।
शेष रिसातल गगन ध्रू, भये राम दिवाना।। २।।
प्रहलाद भगत प्रवान है, ध्वनि गर्भ लगाई।
राम पुरुष की बंदगी, रोशन भई भाई।। ३।।
गिरि पर्वत से डारिया, सो जर्‍या न जार्‍या।
तीन लोक साका भया, नरसिंह अवतारा।। ४।।
गीध ब्याध गणिका तिरी, और भीलनी श्यौरी।

शिव जोगी मंत्र दिया, जद उधरी गौरी।। ५।।
शिला अहल्या हो गई, गौतम की नारी।
वै चरण कमल क्यौं न ध्याव हीं, जिन पार उतारी।। ६।।
चरण कमल की रज परी, ज्यौं पारस लोहा।
गई अहल्या लोक कूँ, छूटे सब द्रोहा।। ७।।
पत्थर पानी से बंधे, नर मूढ़ गंवारा।
राम पुरुष सूझै नहीं, अंधरा संसारा।। ८।।
जिन पत्थर पानी रचे, जा कूँ नर ध्याओ।
तीर्थ व्रतं थोथरे, गोविंद गुण गाओ।। ९।।
आदि सनातन राम है, भज लीजो भाई।
गरीब दास दूजा नहीं, कोई राम दुहाई।। १०।। १८।।
सुख के सागर राम हैं, जहां धरिये ध्याना।
त्रिवैनी के घाट रे, कीजै असनाना।। टेक।।
नाभ कँवल से ऊचरै, दम लेखै लाओ।
परबी कोटि अनंत हैं, सुखसागर न्हाओ।। १।।
अनंत कोटि धुनि होत है, सुखसागर मांहीं।
पैडी पंथ न महल के, जहां हंसा जांहीं।। २।।
ऊँ मूल उचार है, जपिये मन माला।
सूक्ष्म वेद से ध्वनि लगी, पौंहचे चित्रशाला।। ३।।
ऐंनक आदि अनादि है, दुरबीन धियाना।
पलकौं चँवरा कीजिये, त्रिकुटी अस्थाना।। ४।।
सहंस कँवल दल जगमगै, जहां भँवर गुंजारा।
घटा गरज बहु दामनी, अनहद झनकारा।। ५।।
गरजे सिन्धु अगाध रे, बिन श्रवन सुनियां।
नर की क्या बुनियाद है, पौंहचत नहीं मुनियां।। ६।।
मन पवना के गवन से, आगै लख भाई।
सुरति निरति की पंख ले, हंसा उड़ जाई।। ७।।
अधर बिहंगम उड़ चलै, भँवरी ले भँवरा।
गरीबदास कहो क्या करै, जाका जम जौंरा।। ८।। १९।।
सुख के सागर राम हैं, दुख दूर निवारैं।
चौरासी कूँ मेट के, भवसागर त्यारैं।। टेक।।
गज अरु ग्राह जुटे तहां, वर्ष सहंस बतीतं।
ररंकार उचरतं रे, दुख मोचन मीतं।। १।।
भीर बनी प्रहलाद कूँ, हिरनाकुश धाये।
खंभा में प्रगटे गल्लार, तहां आन छुटाये।। २।।

रापति साठ हजार का, दुःशासन जोरं।
द्रोपदि फूल स्वरूप है, जहां चीर करोरं।। ३।।
पंच भरतारी द्रोपदी के, पांडव कंतं।
एक पलक में होय गये, जहां चीर अनंतं।। ४।।
सौ यज्ञ का संकल्प किया, बलि राजा दानी।
तीन लोक सब पृथ्वी पग नीचै आनी।। ५।।
बावन होय कर बलि छले, जहां बढ़े अगाधं।
गरीबदास निज रूप की, कुछ ना मर्यादं।। ६।। २०।।
अविगत राजा राम हैं, चकवे अविनाशी।
ब्रह्मा विष्णु वजीर हैं, शिव करत खवासी।। टेक।।
इन्द्र कोटि अनंत हैं, जाकैं प्रतिहारा।
बरन कुमेरं धर्मराय, ठाढे दरबारा।। १।।
तेतीस कोटि देवता, ऋषि सहंस अठासी।
वैष्णव कोटि अनंत हें, गुण गावैं राशी।। २।।
नौ जोगेश्वर नाद भरि, सुर पुरैं संखा।
सनकादिक संगीत हैं, अवचिल गढ़ बंका।। ३।।
शेष गणेश रु सरस्वती, और लक्ष्मी राजैं।
सावित्री गौरा रटैं, गण संख बिराजैं।। ४।।
अनंत कोटि मुनि साध हैं, गण गंधर्व ज्ञानी।
अरपैं पिंड रु प्राण कूँ, जहां संखौं दानी।। ५।।
सावंत शूर अनंत हैं, कुछ गिनती नांहीं।
जती सती और शीलवंत, लीला गुण गाहीं।। १६।।
चंद्र सूर बिनती करैं, तारा गण गाढे।
पांच तत्व हाजिर खड़े हुकमी दर ठाढे।। ७।।
तीर्थ कोटि अनंत हैं, और नदी विहंगा।
अठारह भार तोकूँ रटै, जल पवन तरंगा।। ८।।
अष्ट कुली पर्वत रटैं, धर अंबर ध्याना।
महताब अगनि तोकूँ जपैं, साहिब रहमाना।। ६।।
अर्श कुर्स पर तेज है, तन तबक तिराजी।
एक पलक में करत है, सो राज बिराजी।। १०।।
अलख बिनानी राम कूँ, रंग खूब चवाया।
एक पानी की बूंद से, संसार बनाया।। ११।।
अनंत कोटि ब्रह्मंड हैं, कछू वार न पारा।
लख चौरासी खान का, तूं सिरजनहारा।। १२।।
सूक्ष्म रूप स्वरूप है, बौह रंग बिनानी।

गरीबदास के मुकट में, हाजिर प्रवानी।। १३।। २१।।
भक्ति करै बिन भाव रे, सो कौने काजा।
विदुर कै जीमन उठि गये, तज दुर्योधन राजा।। टेक।।
बिंजन छत्तीसौं छाडि करि, पाया साग अलौना।
थाल नहीं उस विदुर के, धनी जीमत दौंना।। १।।
बिंजन छत्तीसौं परोसिया, वहां द्रोपदि रानी।
बिन आदर सतकार रे, कही शंख न बानी।। २।।
पंच गिरासी बालनीक, पंचै वर बोले।
आगे शंख पंचायना, कपाट न खोल्हे।। ३।।
बोलत कृष्ण महाबली, त्रिभुवन के साजा।
बालनीक प्रसाद से, कण कण क्यों न बाजा।। ४।।
प्रेम पंचायन भूख है, अंन जग का खाजा।
ऊँच नीच द्रोपदि कहा, कण कण यौं न बाजा।। ५।।
द्रोपदी सेती कृष्ण देव, जद ऐसे भाख्या।
बालनीक के चरण की, तेरै नहीं भिलाषा।। ६।।
बालनीक के चरण की, लई द्रोपदि धारा।
संख पंचायन बाजिया, कण कण झनकारा।। ७।।
सुनत पंचायन संख रे, जम की बंध टूटी।
पंड राजा पारंग भये, धर ध्यान अनूठी।। ८।।
सप्तऋषौं की सेवना, करी कुन्ती माता।
शब्द स्वरूपी पुत्र रे, निज दिये विधाता।। ९।।
धर्म युधिष्ठिर भीमसैन, अर्जुन और सहदे।
नकुल निरंतर नाद में, मिटि गये सब बहदे।। १०।।
कृष्णदेव की बहिन है, अर्जुन की दासी।
लख संधानी बान रे, बख्शें अविनाशी।। ११।।
संग सुभद्रा तास के, द्रोपदि सी चेरी।
त्रिलोकी के नाथ कूँ, दई कला बडेरी।। १२।।
दुःशासन फीटे परे, धरि द्रोपदि ध्याना।
अनंत कोटि पीतंबरं, ता पर कुरबाना।। १३।।
रावण राजा नगन है, पर्‍या मूंध मुहानै।
सुर असुरौं यौह अंतरा, जानैं सो जानैं।। १४।।
दुर्योधन की देह कूँ, तन गीध न खाया।
एक पलक में बह गई, सुपने की माया।। १५।।
राग रते सो जानिये, होहि राग स्वरूपा।
भौसागर आवैं नहीं, योनी ग्रह कूपा।। १६।।

दसधा में दीदार है, नौधा निधि सारी।
शिव शंकर के राग में, बहे विष्णु मुरारी।। १७।।
साहिब राग स्वरूप है, सब संत समूलं।
गरीबदास गलतान है, सूरज मुख फूलं।। १८।। २२।।
अर्ध नाम का पटतरा, सुनियों रे भाई।
गज ग्राह पशुवा तिरे, नर सुमरो तांहीं।। टेक।।
नारद दासी पुत्र था, सेर अन्न नहीं पाया।
तलब लगी दीदार की, तिहूँ लोक बढ़ाया।। १।।
प्रहलाद अगाध भजन किया, धरि योनि का जामा।
नारद से सतगुरु मिले, पौंहचे सति धामा।। २।।
सौ यज्ञ का संकल्प किया, अवश्मेध पसारा।।
बलि के द्वारै आईया, बावन अवतारा।। ३।।
ध्रू की ध्वजा जहां फरहरैं, अमरापुर मांहीं।
सेर नाज की कल्प थी, दिया राज गुसांई।। ४।।
गीध ब्याध से तिर गये, चढ़ी गणिक विमाना।
हम कूँ क्या वहां भीर है, तुम्हरै अस्थाना।। ५।।
तपिया कूँ तो ना मिले, लोदिया कै आये।
सुनियो औघड़ नाथ जी, तुझ क्या समझाये।। ६।।
ग्यारह अरब की बंदगी, पल मांहि बहाई।
पीवरत से राजा गये, लिये काल धिकाई।। ७।।
हरिश्चंद्र सरबस दिया, तन मन नहीं रंगता।
ऐसी तुम्हरै बूझ है, किया मड़हट मंगता।। ८।।
कोटिक तपिया तप करैं, बन खंड के मांहीं।
अविगत राजा राम जी, जूठे फल खांहीं।। ९।।
राजा कोट निनाणवैं, केते पतित उधारे।
क्या चूहरी का दिल पाक है, धनी अपरमपारे।। १०।।
सीता के शीश कलंक रे, लाये रघुबीरं।
पंच भरतारी द्रोपदी के, बढ़ गये चीरं।। ११।।
सुपच के संगी हो गये, पंडित किस काजा।
सहदे से द्वादस कोटि थे, तहां संख न बाज्या।। १२।।
भीष्म द्रोणा करण से, तक बाणों मारे।
करुणा सुनी टटीहरी, घंटा तोड़ उबारे।। १३।।
घंटा टूट्या इन्द्र का, मण सहंस अठासी।
पुड दल अंड उबारिया, अविगत अविनाशी।। १४।।
बिल्ली के सुत ना जरे, आवें के मांहीं।

शीतल पवन झकोरिया, धंन सुमर्थ सांईं।। १५।।
नामा का देवल फिर्‌या, जो जाति का छीपा।
रैदास रंगे मजीठ में, हरी संग सनीपा।। १६।।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड में, जुलहे का गवनं।
केशव बनजारा भया, दीन्हीं जगि जवनं।। १७।।
ना मरदौं की मरदमी, दरबार तुम्हारै।
मर्द गर्द होय जात हैं, रावण झूझारै।। १८।।
खाने जाद गुलाम है, घर का बंदि जादा।
गरीबदास की बंदगी, रहै आदि अनादा।। १६।। २३।।
करि साहिब की बंदगी, गफलत नहीं कीजै।
अजालील कूँ देख रे, अब कौन पतीजै।। टेक।।
अजाजील क्यों बह गया, कैसे ईराना।
योजन संख समाधि रे, ता पर अस्थाना।। १।।
कर साहिब की बंदगी, धर धनी ध्याना।
बानी बचन अदूल रे, ऐसे ईरान्या।। २।।
ब्रह्मा आदम विष्णु कूँ, वह महल न पावै।
अजाजील की सैल कूँ, दूजा को ध्यावै।। ३।।
गफलत ऊपर मार है, सुन शब्द संदेशा।
अजाजील के सफर कूँ, पौंहचे नहीं शेषा।। ४।।
बंदा कीन्हां नूर का, हरि हुकम उपाया।
बिना धनी की बंदगी, दोजख पैठाया।। ५।।
तन मन जाका नूर का, सब नूरी फिरका।
कीन्हा हुकम अदूल रे, सांईं के घर का।। ६।।
बे अदबी भावै नहीं, साहिब के तांहीं।
अजाजील की बंदगी, पल मांहिं बहाई।। ७।।
हाड चाम का पूतला, जा से क्या कहिये।
बंदा बह गया नूर का, अब चेतन रहिये।। ८।।
ईरान्यां बौहडै नहीं, साहिब के घर का।
नहीं भरोसा कीजिये, इस गंदे नर का।। ६।।
अजराईल अनादि है, साहिब के आगै।
अनंत लोक ब्रह्मंड की, बानी अनरागै।। १०।।
जबराईल जबान पर, हाजिर दरबाना।
अलह तख्त की बंदगी, निर्गुण निर्वाणा।। ११।।
महकाईल अशील सुर, धर सुष्मण ध्याना।
गगन मंडल के महल हूँ, सो करत पियाना।। १२।।

असराफील अलील भुमि, पर धर है ध्याना।
नूर नूर में मिल रह्या, कादिर कुरबाना।। १३।।
चारि मुयकिल आदि हैं, साहिब दरबारी।
ये ही सनक सनंदना, ये ही चार यारी।। १४।।
गरीबदास गति गर्भ की, कछु लखै न माता।
दोहूँ दीन भिड़ भिड़ मरैं, वोह एक विधाता।। १५।। २४।।
कर साहिब की बंदगी, बैरागर लै रे।
समर्थ सांईं शीश पर, तो कूँ क्या भै रे।। टेक।।
शील संतोष विवेक हैं, और ज्ञान विज्ञाना।
दया धर्म चित चौंतरे, बांचो प्रवाना।। १।।
धर्म ध्वजा जहां फरहरैं, होंहि जगि जौंनारा।
कथा कीर्तन होत हैं, साहिब दरबारा।। २।।
समता माता मित्र हैं, रख अकल यकीनं।
सत्तर पड़दे खुल्हत हैं, दिल में दुरबीनं।। ३।।
जाके पिता विवेक से, और भाव से भाई।
या पटतर नहीं और है, कछु बैंन सगाई।। ४।।
दृढ़ कै डूंगर चढ़ गये, जहां गुफा अनादं।
लागी शब्द समाधि रे, धन्य सतगुरु साधं।। ५।।
सहंस मुखी जहां गंग है, तालब त्रिबैनी।
जहां ध्यान अस्नान कर, परवी सुख चैनी।। ६।।
कोटि कर्म कुसमल कटैं, उस परवी न्हाये।
वौह साहिब राजी नहीं, कछु नाचे गाये।। ७।।
अगर मूल महकंत हैं, जहां गंध सुगंधा।
एक पलक के ध्यान से, कटि हैं सब फंदा।। ८।।
दो पुड़ की भाठी चवै, जहां सुष्मण पोता।
इला पिंगुला एक कर, सुख सागर गोता।। ९।।
अबल बली बरियाम हैं, निरगुण निरबानी।
अनंत कोटि बाजे बजैं, बाजैं सहदानी।। १०।।
तन मन निश्चल हो गया, निज पद से लागे।
एक पलक के ध्यान से, दुंदर सब भागे।। ११।।
प्रपट्टन के घाट में, एक पिंगुल पंथा।
छुटैं फुहारे नूर के, नहां धार अनंता।। १२।।
झिलमिल झिलमिल होत हैं, उस पुरि में भाई।
घाट बाट पावै नहीं, है द्वारा राई।। १३।।
तहां वहां संख सुरंग हैं, मध औघट घाटा।

सतगुरु मिलैं कबीर से, तब खुलैं कपाटा।। १४।।
श्वेत कँवल जहां जगमगैं, पीतांबर छाया।
सूरज संख सुभान हैं, अविनाशी राया।। १५।।
अगर डोर से चढ़ि गये, ध्वनि अलल ध्याना।
दास गरीब कबीर का, पाया अस्थाना।। १६।। २५।।
लोक लाज नहीं कीजिये, निर्भय होय रहिये।
यौह मन साधौं दीजिये, तो गोविंद पईये।। टेक।।
भौसागर जूनी जन्म, हरि दास मिटावैं।
बहुर बहुर नहीं आवहीं, मुकता पद पावैं।। १।।
ऐसे हरिजन संत हैं, संगत नित्य कीजै।
झूठे जग की लाज में, नांहीं चित दीजै।। २।।
यौह जग बदरा धुंध का, मेहनैं ना डरिये।
जे मन चाहे राम कूँ, दासा तन करिये।। ३।।
हस्ती डर मानैं नहीं, जे श्वान भुकाहीं।
सतसंगी संग ना तजैं, चित राम बसाहीं।। ४।।
श्वान रूप संसार है, कछु करसी नांहीं।
शीश महल कूँ देख कर, भौंकत मर जाहीं।। ५।।
मतवाले महबूब हैं, साधू जग मांहीं।
गरीबदास समझाव हीं , जिज्ञासू तांहीं।। ६।। २६।।
राम कहै मेरे साध कूँ, दुःख मत दीजो कोय।
साध दुखाये मैं दुःखी, मेरा आपा भी दुःख होय।। टेक।।
हिरणाकुश उदर बिदार्‍या, मैं ही मार्‍या कंस।
जो मेरे साधु कूँ आन दुखावै, जा का खोऊँ बंस।। १।।
पौंहचूंगा छिन एक में, जन अपने कै हेत।
तैंतीस कोटि की बंध छुटाई, रावण मार्‍या खेत।। २।।
कला बधाऊँ संत की, प्रगट करि है मोहि।
गरीबदास जुलहा कहै, मेरा साध न दहियो कोय।। ३।। २७।।
करो नबेरा रे नरो, जम उमांगै बाकी।
कर जोड़े धर्मराय खड़ा, सतगुरु है साखी।। टेक।।
माटी का कलबूत है, सतगुरु का साज्या।
उस नगरी डेरा करो, जहां शब्द अवाजा।। १।।
नूर मिलैगा नूर में, माटी में माटी।
कोई एक साधू चढ़ि गये, उस औघट घाटी।। २।।
रूंम रूंम में राग है, अजपा जपि लीजै।
सुरति सुहंगम डोर गह, प्याला मद पीजै।। ३।।

जम की फरदी ना चढ़ै, सोई जन शूरा।
परस्या दास गरीब है, योगेश्वर पूरा।। ४।। २८।।
अगम ज्ञान की ध्वनि सुनि, दुलहनि भई बौरी।
यौह भगलीगर का जंत्र है, कोई लखै न डोरी।। टेक।।
झूठे फल प्रवान हैं, प्रतीत जो श्यौरी।
यौह अनुराग अनादि है, जो अमर भई गौरी।। १।।
बिन तरुवर के बाग हैं, जहां लागे मौरी।
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, मधुकर हैं भौंरी।। २।।
अष्ट कँवल दल भीतरा, सुमरन सुमरो री।
यौह अवसर चूकूँ नहीं, कछु होय सो हो री।। ३।।
पिंड प्राण तिस वारि हूँ, तन मन अरपो री।
गरीबदास पद अर्श में, सुरति सिन्धु मिलो री।। ४।। २६।।

अथ राग आसावरीं

मन तूं चलि रे सुख के सागर, जहां शब्द सिंध रतनागर।। टेक।।
कोटि जन्म जुग भरमत हो यगे, कुछि नहीं हाथ लग्या रे।
कूकर शूकर खर भया बौरे, कऊआ हंस बुगा रे।। १।।
कोटि जन्म जुग राजा कीन्हा, मिटी न मन की आशा।
भिछक हो कर दर दर हांड्या, मिल्या न निर्गुण रासा।। २।।
इन्द्र कुबेर ईश की पदवी , ब्रह्मा वरुण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूँ पौंहच्या, बहुरि अपूठा आया।। ३।।
असंख जन्म जुग मरते होय गये, जीवत क्यों न मरै रे।
द्वादश मध्य महल मठ बौरे, बहुरि न देह धरै रे।। ४।।
दोजिख भिसति सबै तैं देखे, राजपाट के रसिया।
त्रिलोकी से त्रिपति नांहीं, यौह मन भोगी खसिया।। ५।।
सतगुरु मिलैं तो इच्छा मेटैं, पद मिल पदह समाना।
चलि हंसा उस देश पठाऊँ, जहां आदि अमर अस्थाना।। ६।।
च्यार मुक्ति जहां चंपी करि हैं, माया होय रही दासी।
दास गरीब अभे पद परसै, मिले राम अविनाशी।। ७।। १।।
मन तूं सुख के सागर बसि रे, और न ऐसा जस रे।। टेक।।
सर्व सोनें की लंका होती, रावण से रनधीरं।
एक पलक में राज बिराजी, जम के परे जंजीरं।। १।।
उदै अस्त बीच चक्र चलैं थे, ऐसी जन ठकुराई।
चुणक ऋषीश्वर कलप करी, जहां खोज न पाया राई।। २।।
दुर्योधन से राजा होते, संगि इकोतर भाई।

ग्यारह खूंहनी संग चलैं थी, देही गीध न खाई।। ३।।
साठि हजार सघड़ के होते, कपल मुनीश्वर खाये।
एके पुत्र उत्तानपाद कै, परमात्म पद पाये।। ४।।
राम नाम प्रहलाद पढ़ै था, हिरणाकुश नहीं भाये।
नरसिंघ रूप धरे नारायण, खंभ पारि कर आये।। ५।।
नामदेव नाम निरंजन राते, जा की छानि छिवाई।
एक पलक में देवल फेर्‍या, मृतक गऊ जिवाई।। ६।।
काशीपुरी कबीरा होते, ताहि लखौ रे भाई।
जहां केशो बनिजारा उतर्‍या, नौ लखि बालदि आई।। ७।।
कनक जनेऊ कंध दिखाया, भक्ति करी रैदासा।
दास गरीब कौन गति पावै, मगहर मुक्ति बिलासा।। ८।। २।।

मन तूं मानसरोवर न्हाय रे, इहां न भटका खाय रे।। टेक।।

सूरज मुखी फूल जहां फूले, संख पदम उजिराया।
गंगा जमना मध्य सुरसती, त्रिबैनी की धारा।। १।।
जहां कमोदनि चन्द्रगता है, कँवल कँवल मध्य तूरा।
अनहद नाद अजब धुनि होंही, जानैं सतगुरु पूरा।। २।।
औघट घाट विषम है दरिया, न्हावैं संत सुजाना।
मोचि मुक्ति की परबी लै रे, साखी हैं शशि भाना।। ३।।
जहां वहां हंस कतूहल करि हैं, मोती मुक्ता खांहीं।
ऐसा देश हमेश हमारै, अमृत भोजन पांहीं।। ४।।
संखौं लहरि मिहरि की उपजैं कहर नहीं जहां कोई।
दास गरीब अचल अविनाशी, सुख का सागर सोई।। ५।। ३।।,

संतो अमी महारस मीठा, ताते सतगुरु शब्दै दीठा।। टेक।।

फूल चवै निश वासरि सरवै, गंग जमन मध्य भाठी।
है कोई मधुवा मध कूँ पीवै औघट घाटी।। १।।
शिव ब्रह्मादिक और सनकादिक, नारद मुनि से मधुवा।
शेष सहंस मुख पीवत छाके, ज्ञान ध्यान भये रदुवा।। २।।
ध्रू प्रहलाद प्याला पिया, अमर भये तिस वारी।
आठ पहर मधुवा मध छाके, उतरै नहीं खुमारी।। ३।।
गोरख दत्त दिगंबर पीया, नाथ जलंधर नीका।
जो पीवै सोई अविनाशी, त्यारन है पद जीका।। ४।।
सुलतानी कूँ प्याला पीया, गोपीचन्द भरथरी।
सुरति निरति का चप्पू लगाया, चली गगनि कूँ कतरी।। ५।।
जो चाखै सोई सिर देवै, तन मन शीश चढ़ावै।
ज्यूं मनसूर भया मतवारा, ऐसा प्याला प्यावै।। ६।।

जो बाजीद फरीदा पीया, नामदे और कबीरा।
पीपा और रैदास पासि हैं, अविचल मति के धीरा।। ७।।
गौरिज और शुकदेव कूँ पीया, शिव कूँ सिंध लखाया।
दास गरीब अमर अविनाशी, बहुरि न भौजल आया।। ८।। ४।।

बाबा विकट पंथ रे जोगी, तांतै छाडि सकल रस भोगी।। टेक।।

प्रथम सिधि गणेश मनावौ, मूल कँवल की मुद्रा।
किलियं जाप जपौ हरि हीरा, मिटैं कर्म सब सुद्रा।। १।।
कूरंभ बाय परि शेष बाय है, तास होत उदगारं।
दहूँ कूँ जीति जन्म जुग जोगी, अविगत खेल अपारं।। २।।
नाभ कँवल में नाद समोवौ, नागनि निंद्रा मारौ।
दो फनसार संखनी जीतो, उरधे नाम बिचारौ।। ३।।
हिदरे कँवल सुरति का संजम, निरति कला निस्वांसा।
सोहं सिंध सैल पद कीजै, ऐसे चढ़ौ अकासा।। ४।।
कण्ठ कँवल से हरि हरि बोलै, षोडिस कला उगानी।
यौह तो मघ मारग सतगुरु का, पंथ बूझि ब्रह्मज्ञानी।। ५।।
त्रिकुटी मध्य मूरति दरवै, दो दल दर्पण झांहीं।
कोटि जतन करि देख्या भाई, बाहरि भीतरि नांहीं।। ६।।
वाह तो सिंध दौंह से न्यारी, कहां ठहराईये।
सुंनि बेसुनि मिलै नही ं भौंरा, कहां रहत घर पाईये।। ७।।
अनहद नाद बजावैं जोगी, बिना चरण चलि नगरी।
काया काशी छाडि चलोगे, जाय बसौ मन मघरी।। ८।।
धरती धूति अकाश तपाऊँ, मेरडंड परि मेला।
गगन मंडल में आसन करि हूँ, तो सतगुरु का चेला।। ९।।
तिल प्रवानि ब्रह्म दरवाजा, तिस घाटी ले जाऊँ।
चींटी के पग हसती बांधौं, अधर धार ठहराऊँ।। १०।।
दक्खन देश में दीपक जोऊँ, उत्तर धरौं धियाना।
पछिम देश में देवल हमरा, पूरब पंथ पियाना।। ११।।
पिंड ब्रह्मण्ड दहूँ से न्यारा, अगम ज्ञान गोहराऊँ।
दास गरीब अगम गति अग है, सिंधे सिंध मिलाऊँ।। १२।। ५।।

संतो मांनौ मोर संदेशा। ज्यौं बहुरि न रहै अंदेशा।। टेक।।

अधिरि गंग एक अधरि सरोवर, अधरि पौहप गुलजारा।
सूरजमुखी संख सुर शोभ्या, ऐसा देश हमारा।। १।।
षट्कूँन चक्र कूँ चीन्हि पियारे, अंकुस अरस अनादं।
तुरही रूप बंकड़ा साहिब, लीला अगम अगाधं।। २।।
हंस मोर के मध्य चंद्र है, कलंगी कोटि बिराजैं।

जाकै ऊपरि अर्श गुमट है, तीनि कलश जहां साजैं।। ३।।
परानंदनी कामधेनु है, गऊ मुख गंग कहावै।
कलप रूप साहिब सरबंगी, मन बंचत फल पावै।। ४।।
सुनि सलहली धजा फरकैं, ध्यान धरै कोई बीनां।
अललपंख ज्यौं करै पियाना, खोज न पावै मीनां।। ५।।
त्रिकुटी कँवल परि सेत गुमट है, जा मध्य भँवर बिराजै।
दास गरीब कहै रे संतो, शब्द अनाहद बाजै।। ६।। ६।।

संतो निज पद अधरि बिवाना, जा मूरति परि कुरबाना।। टेक।।

सेत छत्र सिर मुकट मनोहर, बन्या मुकेसी चीरा।
संख चक्र गदा पदम बिराजै, दामनि दमकैं हीरा।। १।।
जरीबाब झिलमिल झलकंता, पीतंबर प्रकाशा।
हाजरि नाजरि देख अर्श में, अविगत चौंर खवासा।। २।।
कच्छ मच्छ कूरंभ धौल से, शेष पार नहीं पाई।
बिना दस्त जहां चौंर होत है, हम देख्या रे भाई।। ३।।
सत्तरि खांन बहत्तरि उमरे, शिव ब्रह्मा से रागी।
नारद नाम कबीरा गावै, सुरति शब्द में लागी।। ४।।
राग बिहंग भंग न होई, बंध्या रहै तसमीरं।
दास गरीब बजर पट खूल्हे, सतगुरु मिले कबीरं।। ५।। ७।।

रमता राम जपौ रे प्रानी, अब तूं सुनि ले राम कहानी।। टेक।।

कच्छ मच्छ कूरंभ न होते, धौल धरनि नहीं ध्यानी।
चंद सूर दो दीपक नाहीं, ता थे पौंन न पानी।। १।।
ब्रह्मा विष्णु महेश न होते, नहीं लक्ष्मी गौरज रानी।
सावित्री नाहीं सनकादिक, होते अलख बिनानी।। २।।
शेष सहंस मुख निश दिन गावैं, ररंकार निजबानी।
राम नाम का सिक्का मेटैं, डूबैंगे अभिमानी।। ३।।
सुर तैंतीसौं सहंस अठासी, और चौरासी सिद्धा।
च्यार खानी के जीव उपाये, आदि पुरुष की अद्या।। ४।।
आदि राम सोई अंत राम है, मधि राम है सोई।
पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक, आगा पीछ न कोई।। ५।।
जनक विदेही राजा होते, जमराय की बंधि तोरी।
राम नाम प्रहलाद उधरि गये, फूक फाक दई होरी।। ६।।
रामचन्द्र रघुबंशी होते, जिनि जान्या जिनि जान्या।
दिव्य रूप सुरगापुर पौंहचे, अजुध्या चढ़ी विमाना।। ७।।
राम कहंते रामे हो गये, पूछि देख प्रहलांद।
दास गरीब जरै नहीं जारे, लागी अजर समाधं।। ८।। ८।।

कशो कृष्ण करीमां मौला, राजिक राम रहीमां।। टेक।।
नरसिंघ रूप धर्‌या नारायन, भक्ति बाहरू भीमां।
हिरनाकुस के उदर बिदारे, प्रहलाद तिलक जिनि दीन्हां।। १।।
सायर ऊपर शिला तिरानी, सेत बंधे प्रवीनां।
रावण मारि विभीषण थरपे, लंक दई बकसीनां।। २।।
कंस केश चानौर बालि से, शिशुपालं सिर भीनां।
गई पूतना विष दूधी लाई, जाके प्रांन सुषीनां।। ३।।
कुबजा मालनि कूब सुधार्‌या, ज्यौं गुसटी मध्य नगीनां।
दिव्य रूप दर्पण भई काया, नूर बदन तन सीनां।। ४।।
रची सुदामा पुरी बिसंभर, मुठी इक तंदुल दीनां।
सौ जगि कर के गये रिसातल, बलि राजा आधीनां।। ५।।
गज रु गिराह जुटे बलवंता, रापति पकरे मीनां।
झिलमिल रूप अर्श ते उतरे, निरबांनी नघ झीनां।। ६।।
गनिका गीध ब्याधि से त्यारे, भीलनी जाति कुलीनां।
अजामेल सदना से त्यारे, पाप किये सब खीनां।। ७।।
द्रौपद सुता के चीर बढ़ाये बालनीक जस दीनां।
दास गरीब पंचायन बाजे, पंडौ जगि सहीनां।। ८।। ९।।
केशो आया है बनिजारा, काशी ल्याया माल अपारा।। टेक।।
नौ लख बौडी भरी बिसंभर, दिया कबीर भंडारा।
धरती ऊपर तंबू तानें, चौपड़ि के बैजारा।। १।।
कौन देश तैं बालदि आई, ना कहीं बंध्या नवारा।
अपरमपार पार गति तेरी, कित उतरी जल धारा।। २।।
साहूकार नहीं कोई जाकै, काशी नगर मंझारा।
दास गरीब कलप से उतरे, आप अलख कर्तारा।। ३।। १०।।
बिसमल कित से आई काजी,
बिसमल कित से आई। ताते बोलो राम खुदाई।। टेक।।
उहां तो लोह लुहार नहीं रे, कर्द घड़ी किन्ह भाई।
अहरनि नहीं हथोड़ा नांहीं, बिन आरन कहां ताई।। १।।
जा ममड़ी का दूध पीवत हो, दही घिरत बहु खाई।
जा कूँ फेर हलाल करत हो, ले कर कर्द कसाई।। २।।
गोसत माटी चाम उधेर्‌या, रूह कहां पौंहचाई।
उस दरगह की खबरि नहीं है, कौन हुकम से ढाही।। ३।।
हक्क हक्क कर मुल्लां बोलै, महजदि बंग सुनाई।
तीसौं रोजे खून करत हो, खोज न पाया राई।। ४।।
सूर गऊ की एकै माटी, आत्म रूह ईलाही।

दास गरीब एक औह साहिब, जिन्हि याह उंमति उपाई।।५।। ११।।

दिल ही अंदरि हुजरा काजी,
दिल ही अंदरि हुजरा। करि ले उस तालिब से मुजरा।। टेक।।

मक्का मदीना दिल ही अंदरि, काबे कूँ कुरबाना।
काहे लेट निवाज करत हो, खोजो तन अस्थाना।। १।।
सत्तरि काबे देख नूर के, खोल्हि किवारी झांकी।
तापरि एक गुमज है गैबी, पंथ डगरिया बांकी।। २।।
हक्क हक्क कर मुल्लां बोलै, काजी पढ़ै कुरानां।
जिन्ह कूँ औह दीदार कहां है, काटै गला बिरानां।। ३।।
अर्श कुर्श में अलह तखत है, खालिक बिन नहीं खाली।
वै पैगंबर पाख पुरुष थे, साहिब के अबदाली।। ४।।
मुहंमद कूँ नहीं गोसत खाया, गऊ न बिसमल कीती।
एक बेर कह्या मनी मुहंमद, तापरि येती बीती।। ५।।
नबी मुहंमद नमस्कार है, राम रसूल कहाया।
एक लााख अस्सी कूँ सौगंधि, जिनि नहीं करद चलाया।। ६।।
वैही मुहंमद वैही महादे, वैही विष्णु वैही ब्रह्मा।
दास गरीब दूसरा को है, देखो अपने घरमा।। ७।। १२।।

चीन्हौं अधर अधारे, मन तूं पावैगा अपना किया रे।। टेक।।

राजा राम की कार उलंघी, सीता लंक मंझारे।
सेत बंध्या जिब सेना उतरी, चढ़ि गये पदम अठारे।। १।।
लंका तोरि बिलंका तोरी, महारावण से मारे।
दस मस्तक रावण के काटे, विभीषण राज दिया रे।। २।।
प्रहलाद पैज प्रवांनि करी है, धरि निरसिंघ औतारे।
दीन दयाल दया कर उतरे, हिरणाकुश उदर बिदारे।। ३।।
हाहा हूबू बंदे होते, तोलत हैं बल भारे।
गज और गिराह बने भौसागर, दस सहंस अधिकारे।। ४।।
श्वास घट्यौ बलहीन भयौ जदि, खैंचि लिया मंझि धारे।
अर्ध नाम रसना से टेर्या, सुमरत हैं ररंकारे।। ५।।
नारद मुनि त्रिकाली जोगी, जिन मन गर्व किया रे।
पल में पूत बहतरि जाये, रोवत केश उपारें। ६।।
कृष्ण गुरु दुर्वासा होते, छप्पन कोटि सिंघारे।
अंबरीक के चले अपूठे, दुर्वासा से हारे।। ७।।
दुर्योधन और दुःशासन कूँ, द्रौपति चीर उतारे।
अंधे कूँ कोपीन दई थी, बधि गये अनंत अपारे।। ८।।
भीष्म पिता और द्रौनाचारज, कर्ण से बानौ मारे।

महाभारथ में टटीहरी के राखे, घंटा टूटि पर्‍या रे।। ६।।
तेतीस कोटि जगि में आये, सहंस अठासी सारे।
द्वादश कोटि वेद के बकता, सुपच का संख बज्या रे।। १०।।
चमरा कनक जनेऊ काढ़्या, विप्र पंडित सब हारे।
जुलहे के घर बालदि आई, केशो से बनिजारे।। ११।।
मीराबाई कूँ मारन लागे, जहर का प्याला प्याय रे।
पीवत ही अमृत हो लाग्या, होय गया शरद हिया रे।। १२।।
कंस केश चानौर खपावन, जीतन मल्ल अखारे।
दास गरीब करै को सरबरि, ऐसा शीश हमारे।। १३।। १३।।
जो कोई ना मानै ना मानै, जाकू अजाजील ईरानैं।। टेक।।
करैं अचार बिचार असंभी, पूजत जड़ पाखानैं।
पाती तोरि चढ़ावैं अंधरे, जीवत जी कूँ भानैं।। १।।
पिण्ड प्रधान करैं पितरौं के, तीरथ जगि और दानैं।
बिना बंदगी मुक्ति नहीं रे, भूलि रहे सुर ज्ञानैं।। २।।
शुकदेव शिव का तत्त सुन्या है, भक्ति लई धिगतानैं।
सतगुरु जनक विदेही भेटे, पद मिल पदैं समानैं।। ३।।
अकथ कथा कुछ कही न जाई, देखत नैंन सिरानैं।
अबल बली बरियाम बिहंगम, लाय ले चोट निशानैं।। ४।।
पंडित वेद कहे बौह बानी, काजी पढ़ै कुरानैं।
सूर गऊ कूँ दोय बतावैं, दोन्यौं दीन दिवानैं।। ५।।
एक ही मट्टी एक ही चमरा, एक ही बोलत प्रानैं।
जिभ्या स्वादि मारत हैं नर, समझत नहीं हिवानैं।। ६ ।।
मुरगी बकरी कुकडी खाई, कूकैं बंग मुलानैं।
जैसा दर्द आपने होवै, ऐसा दरद बिरानैं।। ७।।
मन मक्के की हज नहीं कीन्हीं, दिल काबा नहीं जानैं।
कैसी काजी कजा करत हो, खाते हो हिलवानैं।। ८।।
जा दिन साहिब लेखा मांगैं, द्यौह क्या जुबाब दिवानैं।
ऐसा कुफर तरस नहीं आवै, काटै शीश खुरानैं।। ६।।
उस पुर सेती महरम नांहीं, अनहद नाद घुरानैं।
दास गरीब दुनी गई दोजिख, द्यावै गारि गुरानैं।। १०।। १४।।
औधू पाया अति आरूढ़ं,
कोटि उणंचा काहै नंच्चा, तन ढुंढे में ढूढं।। टेक।।
पोथी थोथी काहे ढंढोरे, सुन रे पंडित मूढं।
लंबी जटा अटा क्यौं बांधै, काहि मुंडावै मूडं।। १।।
जल पाषान तिर्‍या नहीं कोई, सूवा सिंभल डूडं।

औह नघ हीरा परख्या नांहीं, क्यौं खोदत है जूडं।। २।।
जल मिरग त्रिसनां सृष्टि भुलानी, भूलि रह्या जग भूडं।
नाम अभै पद निश्चय निपजै, बीज परै ज्यौं खूडं।। ३।।
बिन आकार अपार पुरुष है, बाल वृद्ध नहीं बूढं।
दास गरीब अचल अविनाशी, अविगत मंत्र गूढं।। ४।। १५।।

संतो मन की माला फेरो, यौह मन बाहरि जाता हेरो।। टेक।।

तीनि लोक और भुवन चतुरदस, एक पलक फिरि आवै।
बिनहीं पंखौं उड़ै पंखेरू, या का खोज न पावै।। १।।
तत्त की तसबी सुरति सुमरनी, दृढ़ के धागे पोई।
हरदम नाम निरंजन साहिब, यौह सुमरन करि लोई।। २।।
किलियं ऊँ हरियं श्रीयं, सोहं सुरति लगावै।
पांच नाम गायत्री गैबी, आत्म तत्त जगावै।। ३।।
ररंकार उचार अनाहद, रूंम रूंम रसतालं।
कर की माला कौन काम जिब, आत्मराम अबदालं।। ४।।
स्वर्ग पताल सृष्टि में डोलै, सर्व लोक सैलानी।
यौह मन भैरों भूत बितालं, यौह मन अलख अमानी।। ५।।
यौह मन ब्रह्मा विष्णु महेशं, इन्द्र वरुण कुबेरं।
मन ही धर्मराय है भाई, सकल दूत जम जेरं।। ६।।
मन ही सनक सनंदन बाला, गौरिज और गणेशा।
मन ही कच्छ मच्छ कूरंभा, धौल धरनि और शेषा।। ७।।
मन ही गोरख दत्त दिगंबर, नारद शुकदेव ब्यासा।
मन ही बलि बावन होय आया, मन का अजब तमासा।। ८।।
मन ही ध्रू प्रहलाद विभीषन, मन का सकल पसारा।
मन ही हरि हीरा हिरनाकुश, मन नरसिंघ औतारा।। ९।।
मन सुग्रीव बालि मन अंगद, रावण राम रंगीला।
मन ही नौ औतार धरे हैं, मन की अविगत लीला।। १०।।
मन ही लछमन हनुमान हैं, मन ही चेरी सीता।
मन ही चार्‌यौं वेद विद्या सब, मन भागौति रु गीता।। ११।।
मन ही परशुराम पुरुषोत्तम, छत्री किये निछत्री।
मन ही कपिल देव देहूती, मन ही अद्या अत्री।। १२।।
मन ही चंद सूर तारायन, मन ही पानी पौंना।
मन ही लख चौरासी डोलै, मन ही का सब गौंना।। १३।।
मन तेतीसौं कोटि देवता, मन ही सहंस अठासी।
मन ही थावर जंगम जूंनी, मन ही सिद्ध चौरासी।। १४।।
मन ही कीट पतंग भवंगा, मन जूंनी जगदीशं।

मन के ऊपर निज मन साहिब, ताहि निवाऊँ शीशं।। १५।।
निज मन सेती यौह मन हूवा, धरि आया अनंत शरीरं।
दास गरीब अभै अविनाशी, ता मिल रहे कबीरं।। १६।। १६।।
पार किन्हें नहीं पाये संतो, पार किन्हें नहीं पाये।
जुग छत्तीस रीति नहीं जानी, ब्रह्मा कमल भुलाये।। टेक।।
च्यार अण्ड ब्रह्मण्ड रचाये, कूरंभ धौल धराये।
कच्छ मच्छ शेषा नारायण, सहंस मुखी पद गाये।। १।।
च्यार वेद अस्तुति करत हैं, ज्ञान अगम गौहराये।
अकथ कथा अक्षर निःअक्षर, पुस्तक लिख्या न जाये।। २।।
सुरति निरति से अगम अगोचर, मन बुद्धि हैरति खाये।
ज्ञान ध्यान से अधक प्रेरा, क्या गाऊँ राम राये।। ३।।
नारद मुनी गुनि महमंता, नर से नारि बनाये।
एक पलक परिपूर्ण साहिब, पूत बहत्तरि जाये।। ४।।
ध्रू प्रहलाद भक्ति के खंभा, द्वादश कोटि चिताये।
जिनकी पैज करी प्रवाना, खंभा में प्रगटाये।। ४।।
रावण शिव की भक्ति करी है, दस मस्तक धरि ध्याये।
राज पाय कर गये रिसातल, जिनि कैलाश हलाये।। ६।।
शिव की भक्ति करी भसमागिर, जिनि शिव शंकर ताये।
ऐसे मोहनी रूप मुरारी, गंड हथ नाच नचाये।। ७।।
बलि कूँ जगि असमेद पुराजी, बावन द्वारै आये।
तीनि लोक त्रिपैंड करी जिनी, ऐसे चरण बढ़ाये।। ८।।
पंच भरतारी की पति राखी, सीता कलंक लगाये।
अनन्त चीर चिंत्यामनि कीन्हें, शोभा कही न जाये।। ९।।
दुर्योधन की मेवा त्यागी, साग विदुर घरि खाये।
पंडौं जगि जगदीश जगतगुरु, बालनीक थरपाये।। १०।।
बाज्या शंख स्वर्ग में सुनिया, अनहद नाद बजाये।
शबरी के बेर अधिक महिमा से, रुचि रुचि भोग लगाये।। ११।।
सदना जाति कसाई उधरे, पारासुर ध्यान डिगाये।
तपिया का तप दूर किया है, लोदिया कै गला बंधाये।। १२।।
नरसीला की हूँडी झाली, सांवल शाह कहाये।
नामदेव की छांनि छिवाई, देवल फेर दिखाये।। १३।।
पतिशाह कूँ परचा लीन्हा, बच्छा गऊ जिवाये।
दामनगीर पीर तुम्ह आगे, महलों अग्नि लगाये।। १४।।
अविगत की गति कोई न जांनैं, केशो नाम धराये।
नौ लख बोडी काशी आई, दास कबीर बढ़ाये।। १५।।

अतीसार चले साध के, फिरि सिकलात उढ़ाये।
पीपा परचे साहिब भेटे, चंदोवा दिया बुझाये।। १६।।
भवन गवन सुंनि में कीन्हा, घोरे दाग दगाये।
दास गरीब अगम अनुरागी, पद मिल पदे समाये।। १७।। १७।।
संतो चीन्ह परी चित नादं। जा घर विद्या न बादं।। टेक।।
अललपंख का मारग पाया, उलटा उड़्या अगाधं।
तहां सतगुरु प्रकाश परम गुरु, भेट भई नहीं साधं।। १।।
चितमन दिल दरिया दुरबीनं, दरस्या आदि अनादं।
मोक्ष मुक्ति मंदिर महबूबं, कीन्हें हंस अबादं।। २।।
लोहा खेड़ी मिसरी घड़िये, सांनि धरी फौलादं।
मार्‍या मरै न जार्‍या जरि है, अमर भये प्रहलादं।। ३।।
खंभ बांधि जिब परचा मांग्या, कोप्या दूत जलादं।
साध सतावन कोटि पाप है, अनगिन हत्या प्राधं।। ४।।
दुर्वासा की कलप काल से, परलो हो गये जादं।
पित्र पिरोहित कैसे उधरै, खाये माल सराधं।। ५।।
मीन का नाद बज्या जिब जानौं, बरिषा बरषै भादं।
दास गरीब परम पद पूर्ण, अविगत नाम अराधं।। ६।। १८।।
संतो चक्र दहे दुर्वासा, जैसे बीजल कांसा।। टेक।।
अंबरीक कै द्वारै आये, किया ज्ञान प्रकाशा।
चक्र सुदर्शन चोट चलाई, भई ऋषिन कूँ तिरासा।। १।।
तीनि लोक में बिचरत डोलै, मिटया न मन का संसा।
ऐसे ऋषि दिल बेदन लागी, ज्यौं जल दाह जिवासा।। २।।
काल सरूप कलंदर देवा, छप्पन कोटि किये नासा।
जादौं वंश अंश नहीं राख्या, ज्यौं जल बीचि पतासा।। ३।।
अंबरीक राजा रजधानी, घोरे बरत उपासा।
जा परि चक्र चोट नहीं चाली, पद में लिया निवासा।। ४।।
पूर्ण ब्रह्म कचैहरी पौंहचे, सुन्या दिगबिजै रासा।
मति के हीन दीन होय चालो, तुम ऋषि मान पियासा।। ५।।
तेतीस कोटि जहां ऋषि बैठे, सहंस अठासी हासा।
अंबरीक के द्वारै जावौ, कर बंधन कर दासा।। ६।।
अनंत कोटि जुग ध्यान दर्श करि, छह ऋतु बारा मासा।
दास गरीब कृष्ण यौं भाख्या, निज सुमरन कर श्वासा।। ७।। १९।।
औधू ले तन मन का लाहा। चीन्हौं ज्ञान अगाहा।। टेक।।
काशी गहन बहन भये प्रानी, पिराग न्हात है माहा।
बिना नाम जूंनी नहीं छूटै, भरमें भूल भुलाहा।। १।।

सहंस मुखी गंगा नहीं न्हाते, खोदत ऊजड़ बाहा।
नारद ब्यास पूछ शुकदेव कूँ, चार्‌यौं वेद उगाहा।। २।।
पंथ पुरातम खोज लिया है, चाले अविगत राहा।
शुकदेव ज्ञान सुन्या शंकर का, मिटी न मन की दाहा।। ३।।
दो तपिया गुन तप कूँ लागे, बंदे हूहू हाहा।
लग्या शराप परे भौसागर, कीन्हें गज रु गिराहा।। ४।।
स्यौ शंकर कै तिलक किया हे, नारद सोध्या साहा।
ब्रह्मादिक कूँ चौंरी रचिया, किया गौरि का ब्याहा।। ५।।
एक सौ आठ गये तन परलो, बौहरि किया निरबाहा।
स्यौ कै संगि गौरिजा उधरी, मिट गया काल सुराहा।। ६।।
ज्यौं सर्पा की पूछ पकर करि, अंदरि उलट्या जहा।
नीर कबीर सिंध सुखसागर, पद मिल गया जुलाहा।। ७।।
हमरा ज्ञान ध्यान नहीं बूझ्या समझ न परी अगाहा।
दास गरीब पार कैसे उतरै, भेट्या नहीं मलाहा।। ८।। २०।।
मन रे पकरि ज्ञान का लोहा। ताते छाडौ माया मोहा।। टेक।।
भेष लिया बस्ती तजि भाग्या, कीन्हा बौहत अबोहा।
मन का मान मुवा नहीं मरदक, जाय बरस्या बन खोहा।। १।।
गहरी नदी ममत माया की, जा में बड़े बड़े होहा।
सर्वंगी नहीं मिल्या सर्व स्यौं, मिट्या न मन का द्रोहा।। २।।
बिचर्‌या बौहत वस्तु नहीं पाई, लरि मैदानं गोहा।
श्रवण कण्ठ नाद नहीं निहचा, सुन्या न सतगुरु दोहा।। ३।।
शील संतोष विवेक न चीन्हा, दुरमति दारन छोहा।
ऐसे भस्म हुवा दुनिया में, जैसे बन का फोहा।। ४।।
जम किंकर से जुध नहीं कीन्हा, मंड्या न रन में रोहा।
दास गरीब संत जो सूरा, पकरत मूठि सरोहा।। ५।। २१।।
संतो झिलमिल रंग अपारा, जहां दरसे बानी बारा।। टेक।।
काया माया जन्म न जूंनी, पिंड ब्रह्मण्ड से न्यारा।
निकटि न दूर दर्श दिल दरिया, खेलै अधरि अधारा।। १।।
अनंत कोटि शिव ब्रह्मा थाके, चीन्ह्या वार न पारा।
शेष सहंस मुख निश दिन गावैं, उच्चरत नाम उचारा।। २।।
समाधान समतूल सिंध है, दरवत फूल हजारा।
संख भान गुरु ज्ञान ध्यान छवि, ऐसा देश हमारा।। ३।।
निरख न परै परख नहीं आवै, अचरज रूप तुम्हारा।
ऐसा महारतन अविनाशी, अग्नि न बंधै पारा।। ४।।
ढुरक्या फिरै सकल दुनिया में, नहीं महल घर द्वारा।

ऊँच कै ऊँच नीच कै नीचा, को है ब्राह्मण चमारा।। ५।।
सुंनि सरवर की पालि बैठि करि, छोडै ब्रह्म फुहारा।
अनंत कोटि तीरथ तन मांहीं, पाया मुक्ति द्वारा।। ६।।
मुक्ताहल की खांनि खुली है, गज मोती निर्धारा।
मुरजीवा नघ सीप न सायर, ना कोई परखन हारा।। ७।।
संत जौहरी कीमति कर हैं, सतगुरु माल भंडारा।
दास गरीब लाल की कीमत, चोट सहै घनसारा।। ८।। २२।।
मैं घर का बंदि जादा सतगुरु, मैं घर का बंदि जादा।। टेक।।
पूर्ण ब्रह्म परमगुरु साहिब, सतगुरु अगम अगाधा।
भूली दुनी कहौ कहां ढूंढै, निपट निरंतर लाधा।। १।।
माया मोह लोभ मद लूटे, संक्या डायन खाधा।
मूरति एक मुकट महमंता, सुरति निरति शर सांधा।। २।।
ध्रू कूँ कलप जु सेर नाज की, दीन्हा राज अबाधा।
अटल पटा जाका लिख दीन्हा, निहचल आदि अनादा।। ३।।
जाय फिलाद करी राजा कै, साना मुरका पाधा।
हम तो तुम्हरा नाम सुनावा, वै बोलत कुछ जादा।। ४।।
चौरासी तो दई शासना, कीन्हा हुकम जलादा।
गिरि पर्वत से डारि दिया है, बौहरि खंभ से बांध्या।। ५।।
अपने अपने मंडे मोरचे, भाव भक्ति आराधा।
कोई कोई तो बावन हजारी, कोई कोई पैर पियादा।। ६।।
खंभ पारि हिरनाकुस मारे, उधरि गये प्रहलादा।
तीन लोक में गाज सुनी है, फर फूलत है कांधा।। ७।।
बीना ताल पखावज सुनिये, बाजैं अनहद नादा।
दास गरीब शब्द मिल रहिये, छूटें वाद विवादा।। ८।। २३।।
खंभ पारि कर आये सतगुरु, खंभ पारि कर आये।। टेक।।
मात पिता कुल कौन तास कै, ना किन्हें जननी जाये।
कोटि कला कलधूत पुरुष की, गाजत है राम राये।। १।।
प्रथम तो बैराह भये हैं, हिरणाक्षव ठुकराये।
दाने दरमलि चूरन कीन्हें, पारस पृथ्वी ल्याये।। २।।
हिरनाकुश नख उदर बिदारे, कोपे बौहत रिसाये।
बटक बीज कीन्हा बिसतारा, उलटे सिंध समाये।। ३।।
तीनि लोक में गाज सुनी है, च्यार वेद कूँ गाये।
आदि पुरुष अविगत अविनाशी, संतो के मनि भाये।। ४।।
परशुराम बावन औतारा, रामचंद्र चढ़ि धाये। रावण
महरावण से मारे, तेतीस बंध छुटाये।। ५।।

अंगद और सुगरीब पुकारे, जोधा बालि खपाये।
गीध ब्याधि गनिका से उधरे, गज और गिराह छुटाये।। ६।।
गौतम ऋषि की नारि अहल्या, चरण कमल रज चाहे।
बैकुंठो कूँ उड़ी देवंगना, लोक दीप पैठाये।। ७।।
गहरे जल में लई नवरीया, झींवर देख डराये।
गौतम ऋषि की घरनी तिरनी, उड़ी गगनि कूँ जाये।। ८।।
कंश केश चानौर चूरना, सिर शिशपाल उड़ाये।
कृष्ण देव पंडौं की जग में, बालनीक थरपाये।। ९।।
साठि हजार तास बल रापति, दुःशासन गरबाये।
द्रौपदि कमल फूल की नांई, ताके अंत न पाये।। १०।।
भीषण द्रोणा कर्ण सिंघारे, भक्ति द्रोह नहीं भाये।
दुर्योधन का मान मुवा है, द्रौपदि चीर बढ़ाये।। ११।।
पंडदल में घंटाला तोर्‍या, पांचौं अंड बचाये।
गरीबदास सतगुरु के शरनै, सकल कर्म कट जाये।। १२।। २४।।
गगन मंडल में बासा सतगुरु, गगन मंडल में बासा।। टेक।।
नाद बिंद कूँ अस्थिर कर ले, अंछर डोरी श्वासा।
इला पिंगुला सुषमन खोजो, सहजै चढ़ौ अकाशा।। १।।
फूल सलौंना मरुवा दौंना, छह ऋतु बारा मासा।
पल पल तुमरा रूप निहारौ, हरि के चरण निवासा।। २।।
त्रिबैनी अस्नान करौ रे, चित चंदन प्रकाशा।
सुरति निरति धुनि ध्यान लगावौ, उनमन सेज रिवासा।। ३।।
नूर जहूर सिंध झलकत है, जानैं बिरला दासा।
कोटि कलप जुग परलौ जांहीं, कछू न होत बिनासा।। ४।।
जम किंकर का जोर न चलि है, मिटि है तलब तिरासा।
धर्मराय की दरगह मांहीं, मुकलसि हंस खुलासा।। ५।।
आन धर्म अधकारी बूडै, ज्यौं जल देख जिवासा।
जाकै हिरदै हरि का सुमरन, ताकौं रती न संसा।। ६।।
तेज पुंजि की दामनि दमकै, गरजै सिंध बिलासा।
अलख मुनिंद्र साहिब बैठ्या, तखत कबीर खवासा।। ७।।
बंकी फौज मौज साहिब की, हरि हरौल रैदासा।
गरीबदास तो पहरि दिखावै, सिरौपाव दियो खासा।। ८।। २५।।
सुदरे ब्राह्मन पढ़ाया संतो, सुदरे ब्राह्मन पढ़ाया।। टेक।।
च्यार वेद और पुरान अठारा, नौ ब्याकरनं ल्याया।
पंडित का पट खोल्हि दिया, जदि ब्रह्मचार में आया।। १।।
चिंडाली कूँ चौका दीन्हा, मिसरा न्योत जिमाया।

बिनही तुरसी पाती तोरी, चंपा फूल चढ़ाया।। २।।
गूंगे कूँ गायत्री पढ़िया, बहरे नाद सुनाया।
बिन कर झालरि बाजन लागी, ब्रह्मानंद रिझाया।। ३।।
बहरे गूंगे कूँ गति पाई, बिटिया बाबल जाया।
आदि पुरुष अविगत अविनाशी, अंधरै दर्शन पाया।। ४।।
कीडी के पग रापति बांध्या, स्याल सिंध पर धाया।
एक अचंभा ऐसा देख्या, बकरी व्याघर खाया।। ५।।
माखी कूँ तो मकरी पकरी, मुरगै मंजरा ताह्या।
सर्प शीश पर दादुर बैठ्या, बोलत है लहराया।। ६।।
चकवा चकवी मेल भया है, रैंन चैंन दरसाया।
शारदूल पर सुसा चढ़िया, तीतर बाज गिलाया।। ७।।
तिल में मेर सुमेर समाना, गदहा गंग न्हवाया।
पौहमी तो निश बासर बरषै, गरजै सिंध सवाया।। ८।।
म्हैंसे ऊपरि ऊँट नचल है, मछरे मंगल गाया।
गरीबदास अचरज गति देखी, ऐसी तेरी माया।। ९।। २६।।
चूहे हिती बिलाई संतो, चूहे हिती बिलाई।। टेक।।
सुरही कै तो भेड पाहुनी, चील अलल ले आई।
कऊवा कूँ तो हंस पढ़ाया, औनामासी गाई।। १।।
एक नारि का सकल पसारा, पुरुषे नारी जाई।
नारी कूँ तो नारी भोगै, पुरुष न पाया भाई।। २।।
पनिहारी घरि कूवा आया, बिनहीं नेज भराई।
माता पुत्र आनन्द में सोवैं, पीड़ लगी है दाई।। ३।।
मछली उड़ी गगन मंडल कूँ, पर्वत उगल्या राई।
गढ़ का राजा गाम गया है, कोट चिनै दुनियाई।। ४।।
सूली ऊपर शाह दिया है, चोर साहिबी पाई।
पंडित कूँ तो पातिक लाग्या, भद्र भया है नाई।। ५।।
शाला कर्म शुद्र के होई, पंडित मति बौराई।
चमरा कै तो तुरसी बोई, पूजा सुपच लगाई।। ६।।
चीपी ऊपर चूल्हा मांड्या लकरी दोय जलाई।
योजन च्यार अर्श के ऊपरि, तहां रसोई पाई।। ७।।
जुलहे के घर ताना बाना, चमरा नली भराई।
गनिका गलै जनेऊ देख्या, पहर्‌या सदन कसाई।। ८।।
पापी के घर दानी आया, दीजे मोहि भलाई।
सूम स्वर्ग वैकुण्ठौं चाल्या, **गरीबदास** गति पाई।। ९।। २७।।
अललपंख धुंनि ध्याना संतो, अललपंख धुंनि ध्याना।। टेक।।

षटदर्शन से खिलस भया है, हिंदू मुसलमाना।
बाहरि जाता भीतर ल्यावो, उलटो द्वादश प्राना।। १।।
ना जागीर महल न कोई, यौह तन देह बिरानां।
खेती करैं भरैं नित पैसे, मोर पंच किरसानां।। २।।
होत जरीब गरीब असामी, कूत भई जुलमानां।
दोन्यौं सिरे जात दुनियां के, हो रही खैंचा तानां।। ३।।
कानूगो सिकदार चुगल हैं, नहीं पौंहचे आब दिवानां।
या नगरी में कोई न साऊ देत मुकंदम कानां।। ४।।
काजी पंडित दीन गंवाया, कीन्हा गरब गुमानां।
वै बिसमल वै झटके मारै, कूके सरे कुरानां।। ५।।
हिंदू कै तो धाम देहरा, खड़ा मसीत मुलानां।
वै पूरब वै पछिम ध्यावै, उत्तर दषन की आनां।। ६।।
जड़ जूंनी की सेव करत हैं, अलह अलेख न जानां।
घट घट बोलत है सरबंगी, आदि पुरुष रहमानां।। ७।।
सुनौं फिलादि आदि अविनाशी, मेटौ जम तलबानां।
ठाकुर आगै ठारा भाऊ साहिब सुनै न काना।। ८।।
गये रिसातल पैठि कुसातल, पढ़ि पढ़ि वेद कुरानां।
चेतन पद से महरम नांहीं, पूजैं जड़ पाषानां।। ९।।
अंत समय पाषान होत हैं, खोया जन्म जमानां।
गरीबदास सतगुरु से छूटे, यौह तो पंडित खानां।। १०।। २८।।
दरसै झिलमिल तारा संतो, दरसै झिलमिल तारा।। टेक।।
अबरन बरन किरनि की शोभा, कहां कहूँ विस्तारा।
तीनि लोक और भुवन चतुरदश, छ्याय रह्या गैंनारा।। १।।
कोटि पदम झिलमिल झलकंता, तेज पुंजि उजियारा।
रतन अमोली हीरा पाया, अविगत फूल हजारा।। २।।
अर्श कुर्श मधि पुरुष बिराजै, दिल अंदर दीदारा।
बाहरि भीतर सकल निरन्तर, पिंड ब्रह्मण्ड से न्यारा।। ३।।
दामनि खिमें झिलमिलें जोती, गरजैं घनहर कारा।
स्वांती सीप समंद्र लहरै, बरषै मेघ मलारा।। ४।।
राग छत्तीस बीनि में बाजैं, होत शब्द झनकारा।
अंतर के पट खुल्हि गये हैं, दादुर भँवर गुंजारा।। ५।।
कर्म भ्रम सब उड़े अनादं, छूटे अचार बिचारा।
आदि संदेशा सतगुरु ल्याये, परखि शब्द टकसारा।। ६।।
बिजली खां वीरसिंघ बघेला, फौजन में सिरदारा।
काशी तजि कर सतगुरु चाले, मगहर मंड्या अखारा।। ७।।

जाके नौ लख बोडी आई, और केशो बनिजारा।
दोन्यूं दीन दरस से छाके ना गाड़्या ना जार्‍या।। ८।।
तीनि लोक में रोशन सारे, दीन्हीं जगि जौंनारा।
कनक जनेऊ तहां दिखाया, उन रैदास चमारा।। ९।।
शालिग सौंज कबीर बुलाये, भूरा पत्थर कारा।
गरीबदास जहां सतगुरु जीते, काजी पंडित हार्‍या।। १०।। २९।।
झिलमिल दरसै चंदा संतो, झिलमिल दरसै चंदा।। टेक।।
उलटै पवन गगनि गमि कीजै, सुषमन सुरति सुरंदा।
सतगुरु सेती भेट भई तब, खुल्हि गये ब्रह्मरंदा।। १।।
डार डार और पान पान कूँ, बाड़ी मिरग चरंदा।
प्रेम फांसि से पकरि लिया है, गल में डार्‍या फंधा।। २।।
गगन मंडल कूँ किया पयाना, बिन पर उड़्या परंदा।
लोक वेद कुल की मरजादा, टूट गये सब फंदा।। ३।।
अविगत चंद चकोर प्रान है, निरखत होत अनंदा।
पहर घड़ी पल पंथ निहारूँ, आठ पहर झलकंदा।। ४।।
तीनि लोक और भुवन चतुर्दश, मेला आनि भरंदा।
एकता होय तो अर्थ बताइये, दूजे नालि दुरंदा।। ५।।
स्यौ पारबती ज्ञान सुनाया, चेतन सूवा गंदा।
सुरति सभलि कर चर्चा कीजै, बाचा बचन फुरंदा।। ६।।
चेतन भया चिदानंद चीन्ह्या, बांनिक आनि बनंदा।
चौरासी के बंधन टूटे, दूरि भये दुःख दुंदा।। ७।।
नजरि निहाल ख्याल सतगुरु के, सूके सरौं भरंदा।
अधम उधार वार नहीं लावै, गूंगा बहरा अंधा।। ८।।
भक्ति मुक्ति के दाता सतगुरु, भटकत प्राण फिरंदा।
उस साहिब के हुकम बिना नहीं, तरुवर पात हलंदा।। ९।।
काम क्रोध और लोभ मोह मद, पीड़ा ब्याधि हरंदा।
गरीबदास साहिब के शरनैं, कारज सकल सरंदा।। १०।। ३०।।
सुनैं गुनैं सरबंगी सतगुरु, सुनैं गुनैं सरबंगी।। टेक।।
आठ पहर विष उतरत नाहीं, बांबई बसै बिनंगी।
गारडु गीता आनि सुनावै, उतरत लहरि भुजंगी।। १।।
ज्ञान ध्यान से महरम नाहीं, दुनिया भई अपंगी।
वैद्य हकीम कहा बतलावै, जग मार्‍या अधरंगी।। २।।
तीनि लोक और भुवन चतुर्दश, कोई नहीं सतसंगी।
साहिब सतगुरु संत मिलैं तो, बूंटी देवैं चंगी।। ३।।
गगन मंडल गलतान ध्यान है, लावै सुरति सुरंगी।

हरदम सोहं नाम जपै तो, पलटै देह भिरंगी।। ४।।
बिनां देह का सिंभू साहिब, चालै चाल कुलंगी।
सेत वर्ण सुभ रंगा साहिब, जा सिर कोटि कलंगी।। ५।।
नजरि निहाल करै तोहि मौला, अवादान होय झूंगी।
बीना ताल पखावज सुनिये, बजैं काठ की पूंगी।। ६।।
प्रेम प्याला पिया नाहीं, अमी महारस गंगी।
मदरा ऊपरि भद्रा लागी, बूड़ि गये हैं भंगी।। ७।।
अंतर मांहि निरंतर धुंनि है, सुनिहो नाद कुरंगी।
गरीबदास के सिर पर साहिब, आदि पुरुष श्रीरंगी।। ८।। ३१।।

बिनही पंख परेवा संतो, बिनही पंख परेवा।
है सो सब देवन पति देवा।। टेक।।
उड़गन भँवन अनिन रूप है, सब रूपन की खानी।
कच्छ मच्छ कूरंभ धौल, धर, शेष शक्ति प्रवानी।। १।।
सुर नर मुनि गण गंधर्व ध्यावैं, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
सनक सनन्दन पार न पावैं, सहंस मुखी धुंनि शेषा।। २।।
पांच तत्त और तीनि गुनन का, पिण्ड ब्रह्मण्ड अठखंभा।
तारायन फुलबारी जाकै, चंद सूर दोय थंभा।। ३।।
बिनही चरणौं चलै विहंगम, दम देही नहीं जाकै।
परलो संख पलक में बीतैं, बीज सबन का राखै।। ४।।
संख स्वर्ग से ऊँची शाखा, संख पताल समाना।,
येता बड़ा इलाम अलफ है, राई तिल प्रवाना।। ५।।
अनंत कोटि अवतार तास के, एक अनेक समाना।
दोय कहैं तिसही कूँ दोजिख, सब घट है रहमाना।। ६।।
अर्श कुर्श से न्यारा खेलै, पिण्ड ब्रह्मण्ड जिन्हि कीन्हा।
गरीबदास समरथ पर साहिब, सो तत्त बिरल्यौं चीन्ह्या।।७।। ३२।।

भूल परी बौह भारी संतो, भूल परी बौह भारी।
तातैं भटकि मुई संसारी।। टेक।।
कोई सरगुन कोई रिनगुन ध्यावै, दौंह के मध्य रमईया।
अनंत कोटि जुग ऐसे बीते, शब्द न बूझ्या भईया।। १।।
सरगुन काया निर्गुण माया, असटंगी अधकारी।
इनके मध्य रमईया साहिब, अविगत अलख मुरारी।। २।।
सरगुन शिला नदी और तीरथ , निरगुन है मन माया।
शब्द ब्रह्म कूँ चीन्हत नांहीं, जिन्हि यौह ख्याल बनाया।। ३।।
पांच तत्त और तीनि गुनन का, खड़ा किया गढ़ काया।
बोलनहार जगतगुरु येही, सो तो नजरि न आया।। ४।।

चार्‌यौं जुग का खोज कीजिये, समझि बूझि मुनि ज्ञानी।
संत समागम कीजो भाई, छाडौ पत्थर पानी।। ५।।
चेतन हो किर जड़ कूँ पूजैं, फूटि गये पट चार्‌यौं।
हिरदे और माथे की खोई, राजा राम जुहारौं।। ६।।
एक नेम एक धर्म बतावैं, कोई जगि आहूती।
इहां देंन वहां लैंन होत है, कदे न होत सपूती।। ७।।
षटदर्शन तो खाली रह गये, च्यार बरन सब चूके।
ब्रह्मानंद पद दरसत नांहीं, जुगन जुगन यौं भूखे।। ८।।
गीता और भागौति रामायन, पढ़ें गुनें क्या होई।
घट में दुबध्या दारन माया, खाली रह गये सोई।। ९।।
हिंदू मुसलमांन मुसाफर, दोन्यूं दीन दिवानां।
पूजैं घोर देहरे देवल, शब्द ब्रह्म नहीं जाना।। १०।।
परशुराम का धनुष तोरि के, रामचंद्र रुचि मानी।
रच्या स्वयंवर जनकपुरी में, ब्याही सीता रानी।। ११।।
सोई राम सोई रावण कहिये, एक जाति कुलबंसा।
देह धरे से दूजा दरसै, औही कृष्ण औही कंसा।। १२।।
औतारों लग कर्म लगत हैं, देह धरी जिन्हि काया।
देखो सुरपति इन्द्र बिनांनी, गौतम ऋषि कै आया।। १३।।
सौ जगि का जदि संकल्प कीन्हा, सुरपति राज बिराजी।
बावन रूप छलै बलिराजा, देखि दगा सी साजी।। १४।।
एक कनक के भूषन सबही, नाना बरन नरेशा।
गरीबदास तत्त ताय लिया जदि, मिट गया सकल अंदेशा।। १५।।
३३।।

अलख पलक पर नाचे संतो, अलख पलक पर नाचै।
तातें पंडित परिया खांचै। टेक।।

तन के उज्जल मन के मैले, तीरथ व्रत बिसासा।
कसतूरी है नाभ कँवल में, मिरग ढिंढोरे घासा।। १।।
तीरथ व्रत करें क्या होई, कर्म कंड ब्यौहारा।
आत्मराम नाम नहीं सुमर्‌या, बिसरे सिरजनहारा।। २।।
जप तप संजम पढ़ना गुनना, वेद विद्या चतुराई।
छूछिम मूरति सूरति साहिब, औह तो नजरि न आई।। ३।।
बलि राजा सौ जगि करी थी, संकल्प दिया छुटाई।
चाह्या स्वर्ग पताल पठाया, गया रिसातल भाई।। ४।।
ध्रू का ध्यान अमांन अनाहद, सुरग नरक नहीं चाह्या।
बेकुण्ठौ पर जाय विराज्या, ऐसी भक्ति अगाहा।। ५।।

जोरे दाम राम नहीं सुमर्‍या, हो गये लखी करोरी।
पैसा एक संगि नहीं चाल्या, फूकि दई ज्यौं होरी।। ६।।
जिन्हि खरच्या तिन ही कुछ खाया, जोरे से क्या होई।
बीसल बीस करोर धरी थी, हाथ न लागी कोई।। ७।।
अविनाशी साहिब कूँ सुमरौ, आनंदी अनरागी।
गरीबदास सोई पार उतर गये, सुरति शब्द धुंनि लागी। ८।। ३४।।
दया पदौं से न्यारी संतो, दया पदों से न्यारी।
तीनि लोक की सकल संप्रदा जाकी है अधकारी।। टेक।।
शील संतोष विवेक ज्ञान गुण, दया करैं जदि पावैं।
समता छिमा छिके जो होंही, जाकै चार्‍यौं आवैं।। १।।
दया धर्म बिन सूनी काया, कर ऊँचा नहीं कीन्हा।
भाव भक्ति जा हिरदे होई, सोई संत प्रवीना।। २।।
अछै बिरछ पर दया बेलि है, बचन पत्र बौह छ्याया।
शाखा गगन मंडल में जाकी, जिन्हि खोज्या तिन पाया।। ३।।
समाधान में सुरति लगावे, गहबर गंध सिलौंना।
शालिक शिला कदे नहीं पूजै, काहे धरैं खिलौंना।। ४।।
अकल अध्यात्म रूप छाड़ि करि, पूजत हैं पाषानां।
सतगुरु मिलैं तो करे नबेरा, भूल्या जगत दिवाना।। ५।।
कीरति नाद दशौं दिश गरजै, बरिषा प्रेम भिगोवै।
गरीबदास निज नाम अभै पद, मल मूत्र सब धोबै।। ६।। ३५।।
भक्ति बछल बिरद तेरा सतगुरु, भक्ति बछल बिरद तेरा।
हमरा पार निबाहो बेरा।। टेक।।
गज और गिराह जुटे थे भाई, जुध पर्‍या तहां भारी।
ररंकार रघुबीर सुमरते, पौंहचे कृष्ण मुरारी।। १।।
अजामेल गनिका संगि उधरे, कर्म कुसंगति नाचे।
ऐसे पतित उधार दिये हैं, जिन के कर्म न बांचे।। २।।
अधम भीलनी पारि उतरि गई, जाकै फल तुम्ह खाये।
हो रघुबीर नीर शुद्ध कीन्हा, नदी के कलंक बहाये।। ३।।
गौतम ऋषि की नारि अहल्या, शिला संपट भई येही।
चरण कमल की रज तन लागी, दिव्य रूप भई देही।। ४।।
गीध ब्याधि से अधम अधारे, कोटि जीव चुनि खाये।
दोजिख के अधिकारी होते, सो बैकुण्ठ पठाये।। ५।।
निर्धन सेती धनवंत कीन्हा, सुदामा विप्र भिखारी।
द्रोपद सुता के चीर बढ़ाये, सो तो पंच भरतारी।। ६।।
पंडौ जगि असमेध रची थी, सुरनर मुनि जन आये।

नीच अपावन बिरद बधावन, सुपच के शंख बजाये।। ७।।
छानि छिवाई गऊ जिवाई, देवल फेर्या देवा।
नामदेव किस कुल में कहिये, च्यार वर्ण नहीं भेवा।। ८।।
सदना जात कसाई उधरे, वा से नीचा को है।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, तीनि लोक परि सोहै।। ९।।
नाई देखि कसाई छीपा, जुलहा और चमारा।
चूहरे का चरणामृत लीन्हा, कृष्ण चंद्र कर्तारा।। १०।।
धन्ना जाट पीपा रजपूतं, केवल कूबा कुम्हारा।
कनक जनेऊ कंध दिखाया, सो रैदास चमारा।। ११।।
ऊँच नीच अंतर नहीं कोई, भक्ति करै सोई भावै।
गरीबदास पर साहिब राजी, चरण कमल चित लावै।। १२।। ३६।।
औधू कामधैनि कर्तारा। कोई पीवैगा पीवनहारा।। टेक।।
सहंस कँवल दल मानसरोवर, चिंत्यामनि पद पाया।
परानंदनी पारख लीजै, सतगुरु भेद लखाया।। १।।
बिकट पंथ बैराठ घाट है, पौंहचेगे प्रवीना।
इन्द्री दवन करै दरवेशा, शीश काटि धरि दीन्हा।। २।।
तन मन शीश चरण पग नाहीं, दूझै बारा मासा।
बिनही चारै धैनि दुहावै, या का अजब तमाशा।। ३।।
परानन्दनी कामधैंनि है, सींग शरीर न देही।
अमी महारस अमृत दूझै, पीवै शब्द सनेही।। ४।।
शिव का लिंग सलेमाबादं प्रथम पूजौ भाई।
गऊ मुख गंग झरै निश बासर, रंग महल रुयानाई।। ५।।
कामधेनु काया बिन दूझै, सुरति निरति दो गुजरी।
गरीबदास नारायण पाया, अभै निरंतर नजरी।। ६।। ३७।।
औधू कामधेनु हरि हीरा। सो तो मेटै सब दुःख पीरा।। टेक।।
पारस पद परमेश्वर परसै, सुरति निरति शर सांध्या।
मन गुण इन्द्री नाद समोये, गगन मंडल मठ बांध्या।। १।।
आनंद घन पद दूझन लाग्या, अष्ट कँवल दल स्वांती।
अर्श कुर्श नहीं मंदिर मेला, दीपक है बिन बाती।। २।।
ज्ञान ध्यान से अगम अगोचर, पौंहचत ना बुधि बानी।
परानंदनी अमृत दूझै, आत्म दर्श दिवानी।। ३।।
फूल चवै बिन भाठी बेला, आठौं बखत खुमारी।
महुवा आंब अर्श का टपका, झुकि आया बिन डारी।। ४।।
राम रसायन पद पारायन, महिमा कही न जाई।
शिव सनकादिक पीवत छाकै, शेष सहंस मुख गाई।। ५।।

नारद शारद निश दिन पीवैं, ब्रह्मा बारंबारा।
ऐसा राम रसायन मीठा, पिण्ड प्रान निसतारा।। ६।।
कामधेनु कूँ काल न खाई, अजर अमर औह प्याला।
सुरति निरति से सुमरन कीजै, सोहं चित्रशाला।। ७।।
कामधेनु काया के मांहीं, तालू पर त्रिबैनी।
गरीबदास यौह मारग लीजै, मोक्ष नाद सुख चैनी।। ८।। ३८।।
औधू कामधेनु कसि बांधी। तांते सुरति निरति शर सांधी।। टेक।।
कामधेनु काया का मंडन, बिनहीं बछरै दूझै।
चारा नहीं चिंत्यामनि आगै, बिरला साधू बूझै।। १।।
लंघन सेती लाहा देवै, चारे सेती मोढा।
परानंदनी बीडर जावै, आक प्रेम नहीं डोडा।। २।।
हार ब्यौहार नहीं सुरही कै, प्रेम रस्सी कर बांधी।
प्रवीना तो दुहि दुहि पीवै, भूली दुनिया आंधी।। ३।।
बादल घटा घोर घन बरषै, दामनि खिमै अपारा।
इसका मूल फूल कित भाई, जांनै जाननहारा।। ४।।
ऐसे कामधेनु सब कै है, कोई घट नांहीं खाली।
खोया लाल माल कहां पावै, दिव्य दृष्टि मुख लाली।। ५।।
बंका हीरा हरि नारायन, सब की नजर्यौं आगै।
कोटि गुरु घर पावत नांहीं, सतगुरु मिलै त जागै।। ६।।
निरखि परखि कुछि आवत नांहीं, है जैसे कूँ तैसा।
गरीबदास मोचन पद साहिब, कहि दिखलाऊँ कैसा।। ७।। ३९।।
औधू कामधेनु हम पाई, जाकी कीमति कही न जाई।। टेक।।
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, शेष सहंस मुख गावै।
नारद शारद ब्रह्मा थाके, सो कीमति नहीं पावै।। १।।
तेतीस कोटि देवता कहिये, मुनीजन सहंस अठासी।
कामधेनु का पार न पावै, बैकुण्ठ स्वर्ग विलासी।। २।।
अनंत कोटि बैसनौं बरियामं, खाली रह गये भाई।
कर्मकंड काया के कर हैं, कामधेनु नहीं पाई।। ३।।
सुर नर मुनि गन गंधर्व ध्यावैं, कामधैनु नहीं परसे।
धोखे ही में जन्म गंवाया, जुगन जुगन यौं मरसे।। ४।।
च्यार वर्ण षट आश्रम कहिये, दोन्यूं दीन दरेरा।
कोटि जतन करि पावै नांहीं, अकल अभूमी खेरा।। ५।।
जहां वहां कामधेनु है भाई, बिनही ब्याई दूझै।
तीन्यौं लोक बूंद नहीं पावै, आत्म ज्ञानी बूझै।। ६।।
मीठा दूध कामधेनु का, पिया ध्रू प्रहलादा।

वशिष्ठ विश्वामित्र पिया, शुकदेव रही न बाधा।। ७।।
ब्यास हुलास हरी रस पिया, परख भुशंडा आई।
गरीबदास पिया नाम कबीरा, तीन लोक रुशनाई।। ८।। ४०।।
ओधू कामधेनु पदसारं। जाका कर दीदारं।। टेक।।
नाद बिंद नाहीं घट काया, कामधेनु कलि मांहीं।
संतो कै तो निश दिन दूझै, मूढ़ मुगध नहीं पांहीं।। १।।
धरती ऊपर पैर न धरि है, अंबर सेती न्यारी।
अर्श कुर्श कै अंग न लावै, कामधेनु जग प्यारी।। २।।
गोरख नाथ गही वाह सुरही, जाका भंजन भरिया।
राजा कोटि निनानौं त्यारे, कुल सहत निसतरिया।। ३।।
वाह तो सुरही सार वस्तु है, पद प्रवान प्रवाना।
अनंत कोटि वैकुण्ठ उधरि है, ब्रह्मण्ड संख समाना।। ४।।
अठसिद्धि नौ निधि आगै नाचैं, चौबीसौं झुकि आई।
येता लाभ सुलभ तास कै, कामधेनु जिन्हि पाई।। ५।।
परानंदनी पद परमेश्वर, सब घट ब्यापक सोई।
ऐसी कला तास कै मांहीं, चारा खाय न कोई।। ६।।
रूखी भूखी बौहत दुहावै, मुकती नहीं मथाना।
जो पीवै सो जुग जुग जीवै, बूझैगा दिल दाना।। ७।।
कामधेनु बहु कलश भरंती, सब शर सूभर भरिया।
ऐसा राम रसायन है रे, नर से होय नर हरिया।। ८।।
कोटि कटक एक बटक समाना, बटक कटक कै मांहीं।
येते गुन गायत्री जा में, कामधेनु है सांईं।। ९।।
मत बिरोध जाकै कुछ नांहीं, कुल कुटंब नहीं गरेहा।
ऐसी परानन्दनी पाई, दूझै दर्श विदेहा।। १०।।
आसन असतल नाम न गामं, धरनीधर नहीं पावैं।
गरीब दास औह पुरुष विदेही, चिंत्यामनि कहिलावै।। ११। ४१।।
औधू गगन मंडल में रहना। यौह भेद न काहूँ कहना।। टेक।।
गगन मंडल में कामधेनु है, कल अजरावर काया।
संख सुरग से ऊपरि आसन, संख पताल समाया।। १।।
गगनि मंडल में शिव का मठ है, परानंदनी पाई।
अनंत कोटि बह्मण्ड तुछि हैं, तीन लोक ठकुराई।। २।।
जहां एक धजा सफेद फरहरै, संख फूल गुलजारा।
कामधेनु बहु कलश भरंती, बटक बीज विस्तारा।। ३।।
कामधेनु में कारन केते, शिव ब्रह्मा नहीं पावैं।
ररंकार धूमार होत है, शेष सहंस मुख गावैं।। ४।।

बहु गुणवंती कामधेनु है, जा फल बीज न बकला।
सुरति निरति निश बासर दूझै, देवै अमृत अकला।। ५।।
पट्टन घाटी प्रान हमारा, पीवै अमृत मदुवा।
ऐसा ध्यान अमान तास का, और अमल सब रदुवा।। ६।।
आशा तृष्णा भरमत नाहीं, थिरि तालिब कूँ कीन्ही।
मनसा माया है पटरानी, खुल्हे चिसम दुरबीनी।। ७।।
कामधेनु काया कै मांहीं, बहु भांति बौहरंगी।
गरीबदास नहीं पलक बिछोहा, सदा रहै सतसंगी।। ८।। ४२।।
औधू अमी महारस पीजै। तातैं हूँठ हाथ गढ़ लीजै।। टेक।।
हूँठ हाथ में सात धात हैं, जो खोजै सो पावै।
काया अजर अमर होय जा की, बौहरि न देह धरावै।। १।।
सारंग शब्द सुरति परि बोलै, निरति निसरनी लावै।
मन पवना कूँ एक करैगा, सो मारग मघ पावै।। २।।
अठार भार मध्य राम रसायन, मधु की माखी ल्याई।
काया कलश कलंदर भरि हैं, शुन्य घटा बरषाई।। ३।।
बीजक बिना माल कहां पावै, माल मोचि ब्रह्मज्ञानी।
सोलह कला चंद्रमा दरसै, ता मध्य बारह बानी।। ४।।
सूरजि संख असंख सरोवर, हंस कतूहल करहीं।
वर्दवान पर निरत निरंतर, गगन मंडल पग धरहीं।। ५।।
मदुवा संख असंख दिवानैं, राम रसायन पीया।
काल अकाल दहूँ पर दारन, संख कलप जुग जीया।। ६।।
मोचन पद माया से न्यारा, अठ सिद्धि नौ निधि दासी।
गरीबदास यौह येलम जानै, ताहि मिलै अविनाशी।। ७।। ४३।।
औधू राम रसायन मीठा। सो तो सतगुरु प्रसादे दीठा।। टेक।।
नैनों ही कै मध्य खुमारी, आठ बखत गलताना।
बिनहीं भाठी फूल चवावै, दरश परस प्रवाना।। १।।
संखौं तूरा संख कंगूरा, दशौं दिशा कूँ दरसैं।
दिल अंदरि दुरबीन ध्यान है, सो जन हरि पद परसै।। २।।
बीज बिन बिरछ बिन डारी, डारी बिन एक फुलवा।
जा फुलवा का तोल न मोलं, सो भारी नहीं हलुवा।। ३।।
हलुवा कहूँ तो हलुवा नाहीं, भारी कहत न भारी।
शेष महेश गणेसर थाके, झुकि आया बिन डारी।। ४।।
संपट नहीं समावै फुलवा, धरनी धर्‌या न जाई।
संख शून्य से अगम अगोचर, नैनों मध्य समाई।। ५।।
उस फुलवा कै मुलवा नाहीं, समाधान गरजंता।

ब्रह्मा विष्णु संख शिव थाके, जाकै आदि न अंता।। ६।।
फुलवा निरख परख से न्यारा, चंद्रगता शशि भानं।
अछै बिरछ आनंद पद कहिये, सोहं सुरति निशानं।। ७।।
बीज न बिरछ डाल नहीं मूलं, हदि बेहदि से न्यारा।
गरीबदास याह अकथ कहानी, जाने जाननहारा।। ८।। ४४।।
औधू अविगत फुलवा पाया। परलो संख असंख गई हैं, सो कहीं गया न आया।। टेक।।
ऐसा फुलवा डाल न मुलवा, कैसे बिरद बखानौ।
अकथ कथा अक्षर से न्यारा, दिल मरहम दिल जानौं।। १।।
गगनि मंडल में फुलवा रहता, त्रिकुटी ऊपर आन्या।
उस फुलवा के संख कली हैं, कैसे करौं बखाना।। २।।
कली कली परि संख फूल हैं, संख फूले संग तारं।
झींनी सुरति निरति से पावै, दिल अंदरि दीदारं।। ३।।
त्रिकुटी भृकुटी दिल का दर्पण, नाभ नाद गह पौंना।
इन तीन्यौं कूँ एक करैगा, दरसै चौदह भुवना।। ४।।
प्रथम अष्ट कँवल दल पैठे, मूल कँवल कसि बांधै।
सातौं संपट मूंदि सवेरा, सुरति गगन कूँ सांधै।। ५।।
नक सरवर पर तरुवर छाया, लील भूमि जहां कहिये।
औह तो फुलवा अकल अलीलं, सब गुण रहता गहिये।। ६।।
मारग बिना चलै महमंता, जाकै पंथ न बाटा।
एक पलक में ऐसा ध्यावै, कोटि शुन्य बैराटा।। ७।।
शालिगराम शिला पर बैठ्या, पुस्तक ऊपर आया।
गरीबदास और मूढ़ लिखारी, जिन्हि नहीं दर्शन पाया।। ८।। ४५।।
औधू जोरि अलख से यारी। लावौ उनमन तारी।। टेक।।
अनंत कोटि भंडार भरे हैं, अणिमा महिमा चेरी।
अठसिधि नौ निधि आगै नाचै, देह पुरुष की फेरी।। १।।
अनंत कोटि प्रसिधि परेवा, जाकै आगे नाचैं।
सुर नर मुनि गन गंधर्व ज्ञानी, इच्छा बीज कूँ बांचैं।। २।।
ब्रह्मा विष्णु महेश भंडारी, लोक पाल तिहूँ देवा।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, करैं तास की सेवा।। ३।।
परासिद्धि पूर्ण पटरानी, ब्रह्म जोगनी माया।
अनंत कोटि औतार तास के, कर्ता हो हो आया।। ४।।
असन बसन वैरागर मुक्ता, बहु विधि नाच नचावै।
संतो कै तो दासी होई, साकट कूँ भरमावै।। ५।।
अनंत कोटि चकवे चित चोर्या, मारि लिये मैदाना।

परा शक्ति कै संगर मांहीं, सुरनर मुनि उरझाना।। ६।।
रावण राज रसातल मेल्या, तेतीस बंधि छुटाये।
एक रती कंचन नहीं पाये, लंका कोट पराये।। ७।।
पल में हंसा पारिंग होवै, छिन में छार उड़ावै।
गरीबदास कर्त्ता की बाजी, भेद नहीं कोई पावै।। ८।। ४८।।
औधू रंग महल में रहिये।
यौह तत्त बारंबार क्यों न कहिये।। टेक।।
रंग महल में राम रसायन, पीवै बिरला कोई।
जो पीवै सो जुग जुग जीवै, इच्छा बीज न बोई।। १।।
दस इन्द्री करि दर्शन परसन, नौ ग्यारह परि द्वारं।
पांच तत्त का बांधि मुतंगा, गंगा न्हांन किदारं।। २।।
आनंद घन पद अस्तल नाहीं, ब्यापक ब्रह्म बिनानी।
बाहरि भीतर भीतर बाहरि, रूंम रूंम प्रवानी।। ३।।
खालिक बिन खाली नहीं है रे, ज्यौं जल ज्यौं जगदीशं।
धरनि गगन में गुप्त समाना, हाजर बिसवे बीसं।। ४।।
राजिक राम रंगीला साहिब, दिल अंदरि दरवेशा।
निरबानी निर्गुण अविनाशी, जाकै वर्ण न भेषा।। ५।।
अविगत रूप निरंतर निरभै, न्यारा कबहूँ न होई।
हेत न प्रीति अतीत ब्रह्मपद, अलख पुरुष निर्मोही।। ६।।
बचन अतीत ब्रह्मपद बीना, सुख सागर सरबंगी।
गरीबदास कबहूँ नहीं परलै, अविगत अचल अभंगी।। ७।। ४७।।
औधू राम रसायन ऐसा, जाके मोल न लागै पैसा।। टेक।।
राजा जोगी गये रसातल, रैयत कौन बिचारी।
राम रसायन किन्हें न पीया, बुझी नहीं खुमारी।। १।।
एक बूँद का सकल पसारा, ऐसा महंगा भाई।
ध्रू प्रहलाद प्रीति से पीया, अमर किये रघुराई।। २।।
नारद शारद शंकर शुकदेव, सनकादिक भरि पीया।
ब्यास भुसंड मारकंडे से, अमर भये जुग जीया।। ३।।
गोरखनाथ जलंधर जोगी, दत्त तत्त में ध्याना।
सप्तरिषौं का रासा सुनि ले, अमर भये प्रवाना।। ४।।
तेतीस कोटि और सहंस अठासी, बैसनौं कोटि अनंता।
लारै झारै लगे लखीसर, शब्द छाक महमंता।। ५।।
नाम कबीरा मति के धीरा, पीपा और रैदासा।
रामानंद राम रसायन पीया, निज पद ब्रह्म बिलासा।। ६।।
सूजा सैंन बाजीद फरदा, त्रिलोचन तत्त तारी।

नरसीला की हूँडी झाली, सांवल शाह मुरारी।। ७।।
ताम्रध्वज मोरध्वज राजा, अंबरीक अनुरागी।
गरीबीदास जिन्हि अमृत पीया, अमर भये बड़भागी।। ८।। ४८।।
औधू पारब्रह्म को ध्यावौ। ये गुण तहां समावौ।। टेक।।
ये गुण इन्द्री कित से आई, कित से आया हंसा।
साचा सतगुरु भेद बतावै, कहां आदि कुल वंशा।। १।।
बिरछ और बीज नहीं जदि होता, गुण इन्द्री नहीं ज्ञाना।
पांच तत्त नहीं पिण्ड ब्रह्मण्डा, तब यौह कहां समाना।। २।।
जप तप कर्मकंड नहीं काया, दम देही नहीं देवा।
भक्ति न शक्ति सरूपन सुमरण, करो कौन की सेवा।। ३।।
योग न भोग संजोग न संजम, ऊँकार नहीं अद्या।
सतगुन तमगुण रजगुण नाहीं, पिंड प्राण न खुध्या।। ४।।
चौबीसौं तत्त कहां रहंते, इनकी आदि बतावौ।
इनका जुबाब नहीं जो आवै, तो झोरी झंडा ल्यावौ।। ५।।
पांच तत्त नौ तत्त दस इन्द्री, ये कहु कित से आई।
जे तैं भेष धर्या दरवेशा, तो इनकी आदि बताई।। ६।।
चौबीस तत्त का पिण्ड शरीरा, पच्चीसमा तत्त न्यारा।
छब्बीस तत्त के कूँ जो पावै, तो सब का करै बिचारा।। ७।।
सतगुन तमगुन रजगुन कहिये, ऊँ सोहं सारं।
ये तीसौं तत्त सम करि सोधै, सो परलौ से पारं।। ८।।
ब्रह्मा जुग छत्तीस भुलानें, ताहि लख्या नहीं मरमा।
गरीबदास गति मति को पावै, भूलि रहे घट घरमा।। ९।। ४९।।
औधू पारब्रह्म पद न्यारा। है सो मोक्ष मुक्ति दरबारा।। टेक।।
ये गुन इन्द्री उत से आई, पांच तत्त नौ तत्ता।
जे तूं आत्मज्ञानी है रे, समझि ज्ञान की संथा।। १।।
पच्चीसौं प्रकृति समोवै, कर्म इन्द्री के मांहीं।
कर्म इन्द्री का बीज बिजोवै, ज्ञान इन्द्री गुन ध्याहीं।। २।।
पांच तत्त नौ तत्त से मेला, ऊँ सोहं ध्याना।
ये गुन इन्द्री ऐसे जीतै, आत्म मांहि समाना।। ३।।
आत्म परमात्म से मेला, सतगुरु भेद बतावै।
अजपा जाप जपै निश वासर, बहुरि न भौजल आवै।। ४।।
कूप की छांहीं कूप कै मांहीं, ऐसा आत्मज्ञाना।
इसके आगे अगम अगोचर, है सो पुरुष पुराना।। ५।।
मूरति सूरति शम दम कीजै, दर्पण मांहि दयालं।
पौहप गंध से झीना है रे, अविगत रूप बिसालं।। ६।।

ऐसे गुन इन्द्री गलताना, आत्म तत्त कै मांहीं।
बीज बिरछ का भेद लखाया, **गरीबदास** गुन पांहीं।। ७।। ५०।।
औधू ऐसा आत्म ज्ञाना।
नूर जहूर सकल में साहिब, क्या पूजै जड़ पाषाना।। टेक।।
नैंन बैंन श्रवण जिभ्या परि, नासा अगरी नाचै।
कोटि पुरान ज्ञान से न्यारा, सो पद कोई न बांचै।। १।।
इन्द्र पुलन्दर गये सब परलो, परखि किन्हें नहीं लीन्हा।
राजपाट की रटना लागी, पिण्ड प्रान भये खीना।। २।।
ब्रह्मा संख असंख गये हैं, शंभू पदम करोरी।
इन्द्र कुबेर गये बारू सम, बिसनं बाहां जोरी।। ३।।
पराशक्ति परलौ के मांहीं, हो रह्या आवन जाना।
अजर अमर अविनाशी अविगत, शब्द अतीत अमाना।। ४।।
अनंत कोटि अनभै अरधंगी, अनहद नाद बिलाना।
सकल रूप परलौ कै मांहीं, रहै न मूढ ज्ञाना।। ५।।
पारस लोह कला उस ही की, चंद सूर मठ धारी।
कच्छ मच्छ कूरंभ शेष लग, परलौ करत मुरारी।। ६।।
महाकाल परि मालिक साहिब, सतपुरुष अविनाशी।
गरीबदास औह कदे न परलै, देह धरै सो जासी।। ७।। ५१।।
औधू औह साहिब नहीं पाया।
जिन्हि यौह जल से महल बनाया।। टेक।।
अधरि विहंगम बसै बिनानी, दिलदाना हरि हीरा।
जा का सुमरन कर रे भाई, मेटै जम की पीरा।। १।।
संख भान प्रकाश परम पद, धासड़ फूसड़ नाहीं।
असन बसन आसन नहीं असतल, चंद्रगता घट मांहीं।। २।।
चिंत्यामनि की चितवनि करि रे, मन पौंना से ध्यावै।
सुरति निरति से चौंर निरन्तर, क्यौं न परम पद पावै।। ३।।
कली कली दर कलश नूर के, चित चंदन घसि लीजै।
मन की माला सुरति सुमरनी, कुंभ भाव धरि दीजै।। ४।।
गम की गया पिराग बनावै, खोजै काया काशी।
मन में मथुरा दिल में द्वारा, ताहि मिलै अविनाशी।। ५।।
पौहकर पिंड परेवा न्हावै, ले लोहागिर लाहा।
हरि पैडी हरि हीरा पाया, बदरी बोध ऊगाहा।। ६।।
सरजू शाला कर्म किया है, गंग जमन के तीरा।
इन्द्र दौंन फलगू फल पाया, निज पद गहर गंभीरा।। ७।।
अठसठि का फल मानसरोवर, ब्रह्मरंध्र का घाटा।

गरीबदास तिल में त्रिबैनी, खुल्हि गये सहजि कपाटा।। ८।। ५२।।

औधू या विधि सेवा कीजै। तातैं राम रसायन पीजै।। टेक।।

प्रथम चित में चौका देवै, प्रेम प्रीति परवाना।
शील संतोष विवेक भाव धरि, सुनि ले आत्म ध्याना।। १।।
यौं परमात्म पूजा कीजै, चितवन चित कै मांहीं।
सुरति निरति मन पौंन पदार्थ, ब्रह्मद्वार ले जांहीं।। २।।
चिंत्यामनि चौकी परि आनै, करै मानसी पूजा।
उर्धमुखी आहुती देवै, देखै देव न दूजा।। ३।।
छप्पन भोग संजोग सुरति से, सकल पदार्थ आनै।
पंच अग्नि पारायन तापै, नीर खीर कूँ छानै।। ४।।
सुरग सलेमा गंग शुन्य में, ता से पुरुष न्हवावै।
सहंस कँवल दल मानसरोवर, तहां वहां पौहप चढ़ावै।। ५।।
तेजपुंजि की झालरि घंटा, वीणा ताल बजावै।
संख तूर मुरली मनमोहन, या विधि निरति करावै।। ६।।
बांधै मुकट छत्र सिर ऊपरि, मणि बैरागर जड़िया।
ज्ञान ध्यान संकल्प संगीतं, दण्ड कमंडल खड़िया।। ७।।
करै आरती आनंद सेती, गुन गायत्री लापै।
बिनहीं रसना रटै राम कूँ, बिना थापना थापै।। ८।।
गरजै सिंध फंध सब टूटैं, मुक्ति रूप महमंता।
झड़े सार घनसार गरज धुनि, सुनि पूजा की संथा।। ६।।
तेजपुंज प्रकाश परमपद, ध्यान धूप हरि हीरा।
बाजै तूर नूर निरबानी, मिटै सकल दुःख पीरा।। १०।।
छाजन भोजन करै सकल विधि, अमर चीर पहरावै।
गरीबदास करि पूजा ऐसे, सतगुरु भेद लखावै।। ११।। ५३।।

औधू गगनि मंडल घर मेरा।
पांच तत्त गुण तीन नहीं है, जहां किया हम डेरा।। टेक।।

जामन मरन नहीं तिस नगरी, उपजै खपै न कोई।
मात पिता कुल कर्म न करनी, ज्यौं का त्यौं ही सोई।। १।।
जप तप संजम नहीं तास कै, अधर मधर महमंता।
रंग न रूप वर्ण वपु नाहीं, जाकै आदि न अंता।। २।।
सूभर पुरुष शरीर बिहूना, खाली देख्या भाई।
अनंत कोटि बैरागर बरषै, तां चरणौं चित लाई।। ३।।
एक कहूँ तो दूजा दरसै, दोय कहूँ तो एकै।
आपा मेटै तो उस भेटै, जयौं का त्यौं ही देखै।। ४।।
जंगम शेख सेवड़ा नाहीं, शूद्र नहीं ब्रह्मचारी।

ब्राह्मण बैरागी भी नाहीं, है सो शून्य अधारी।। ५।।
मनुष्य देवता गंधर्व नाहीं, मूढ न ज्ञानी गहला।
सबसे ऊँचा नीचा चालै, भोजन करि है पहला।। ६।।
मरै न जीवै सब रस पीवै, आपै भोग भुगन्ता।
गरीबदास पावै सो गावै, एकै रूप अनंता।। ७।। ५४।।
औधू भक्ति मुक्ति पद गहरा। समझै अंध न बहरा।। टेक।।
साध संत के चरणौं चितवन, नाम निरंतर राता।
आत्म जीव सकल में एकै, दर्शन सब सुख दाता।। १।।
मादर पिदर प्रीति नहीं जोरै, अकल अनाहद राता।
सोहं सुरति सार पद सेती, अनवत स्यूं करि बाता।। २।।
मन पौंना का संजम कीजै, सुरति ब्रह्मपद जोरै।
बिनही पंखौ उड़ै परेवा, चढ़ै ज्ञान के घोरै।। ३।।
मान गुमान गलत करि पीसै, भ्रम भभूति उड़ावै।
तत तिलक त्रिबैणी रोपै, सो दरवेश कहावै।। ४।।
गारि गंवार लगावै मस्तक, सो तो तिलक न कहिये।
सब के आगै अगम अगोचर, तत्त तिलक पद लहिये।। ५।।
ऊँ सोहं मध्य मुरारी, दम सुदम दरवाना।
गरीबदास वै पारि पहुँचे, जिन्हि यौह शब्द पिछाना।। ६।। ५५।।
संतो कामधेनु दुहि पीवौ। तातै जुग जुग जीवौ।। टैक।।
दहूँ पर्वत के मध्य सरोवर, नाव लगै नहीं कोई।
चप्पू बांस बली नहीं है रे, कैसे उतरो लोई।। १।।
ब्रह्मरंध्र का घाट जहां है, इला पिंगुला नारी।
बीचि सुषमना पोचा फेरै, कामधेनु परिवारी।। २।।
रसना राम रसायन पीवै, अष्ट कँवल दर भरिया।
कलबिष कुसमल बंधन छूटै, सकल व्याधि पर हरिया।। ३।।
तिल प्रवानि जहां खुल्ही किवारी, गंग जमन लहरानी।
मध्य सुरसती सुरग द्वार है, पीवत है ब्रह्मज्ञानी।। ४।।
तिल प्रवानि में है त्रिबैनी, शिखर शुन्य से आई।
घाट बाट जहां पंथ न कोई, उतरि चलौ घड़नाई।। ५।।
दहनै गंगा बामैं जमनां, मध्य सुरसती द्वारं।
फलगू गया पिराग जहां है, काशी और किदारं।। ६।।
परानंदनी निरख परखि ले, दिव्य दृष्टि कूँ दीखै।
परबीना तो पारंग होते, मूढ चले नहीं बीकै।। ७।।
समाधान की शीतल छाया, अछै बिरछ अस्थाना।
गरीबदास जहां कामधेनु है, पीवै दरश दिवाना।। ८।। ५६।।

राम राय तेरी भक्ति गड़बड़ गौंडा। औह मारग मघ औंडा।। टेक।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड नहीं जहां दोऊँ, कच्छ मच्छ कूरंभा।
धरनि गगनि पौंन नहीं पानी, अधरि गुमट अठ खंभा।। १।।
षटदर्शन खलि खाय बिगूते, पद परस्या नहीं कोई।
जिनि यौह क्रितम ख्याला बनाया, अकल अभूमी सोई।। २।।
दान्यौं दीन दहै नित रोवै, पूजै घोर मसाना।
चेतन जड़ कूँ शीश नमावै, पाया न पद निरबाना।। ३।।
ऋग यजु साम अथरबन चार्यौं, सूक्ष्म वेद के पूता।
जिनि ये पिण्ड ब्रह्मण्ड रचे हैं, सो पद है अनभूता।। ४।।
मन और पवन भवन बिन गूंजें, सुरति निरति नहीं जाई।
दम देही बिन दर्शन है रे, अविगत अलख गोसांई।। ५।।
वार पार जहां मध्य नहीं है, बांस बली नहीं लागी।
नौका नाम चढ़े जन हंसा, उतर गये बड़भागी।। ६।।
मघ नहीं पग नहीं पिण्ड न प्राना, चलन कहां रे भाई।
गरीबदास वै नगर पहूँचे, सतगुरु की शरनाई।। ७।। ५७।।
तेरा भजन करूँ राम राया। थांभौ अपनी माया।। टेक।।
जल की बूँद जिहान रच्या है, दस द्वारे का पिण्डा।
सात दीप काया कै मांहीं, और देख नौ खण्डा।। १।।
कली कली कर सब कल जोरी, नाड़ी नाद बंधाना।
हाड चाम रग रूंम बनाये, और बहतरि थाना।। २।।
नैंन नाक मुख द्वारा देही, श्रवण संगि शरीरं।
सहंस इकीसौं छै से दम हैं, अमृत सजल खमीरं।। ३।।
पिण्ड प्रान जिनि दान दिये हैं, जा कूँ कहा चढाऊँ।
कोटि शीश जगदीश देत है, एक न लेखै लाऊँ।। ४।।
माया मोह द्रोह तन खोये, एक न लेखै लाग्या।
जा कूँ सतगुरु मिल्या सनेही, सो जन सूता जाग्या।। ५।।
हरदम नाम जपौ निरबानी, सुरति निरति पद नेहा।
गरीबदास पद पारख लीजै, साक्षी पुरुष विदेहा।। ६।। ५८।।
दम दयाल मुझ दीन्हा सतगुरु, दम दयाल मुझि दीन्हा।
यौह पद बिरलै चीन्हा।। टेक।।
दम के बीच दयाल बसत है, श्वासा पारस कहिये।
निरमोही निरबानी रिनभै, सुरति निरति से गहिये।। १।।
सुरति निरति की पंख बनावै, गगन मंडल कूँ उड़ना।
शुन्य बे शुन्य से अगम अगोचर, बिना निसरनी चढ़ना।। २।।
चीन्हैं सार असार कूँ त्यागै, रहै तत्त ल्यौ लाई।

वै परलो से पारि पहुँचे, जिन कूँ काल न खाई।। ३।।
दम सुदम का एकै रासा, हरदम हरि पद ध्यावै।
द्वादश उलट महल में पैठे, मन पौंना गहि ल्यावै।। ४।।
शाला कर्म सुरति से रोपै, ज्ञान ध्यान आहूती।
इला पिंगुला सुषमन संजम, सेवै पद अनभूती।। ५।।
कल अजरावर होत शरीरं, खुसी परै तो मरना।
प्राणायाम परन नित बांधै, कुंभक रेचक करना।। ६।।
दम कूँ खोज दर्श ज्यौं पावै, बाहरि अंत न जाई।
गरीबदास घट ही में मेला, रहौ तत्त ल्यौ लाई।। ७।। ५९।।

पुरुष संगि मिल गया नीर कबीरा।
जा का पाया नहीं शरीरा।। टेक।।

तन मन धन सब अरपण कीन्हा, अठसिद्धि नौनिधि त्यागी।
कोटि सिद्धि प्रसिद्धि प्रेरी, ब्रह्म रूप बैरागी।। १।।
काम क्रोध मद लोभ तजे हैं, मोह मवासी जीत्या।
मान बड़ाई सबै बहाई, हरष शोग परचीत्या।। २।।
कनक कामनी तजी तर्क से, विद्या बाद गुन ज्ञाना।
आधीनी की राह गही है, छाडि गये अभिमाना।। ३।।
दरबंद दर्पण दिल कीन्हा, हरि दरिया हरि हीरा।
सुरति निरति से नौका पेली, मन पौंना करि थीरा।। ४।।
अविनाशी कै फांसी डारी, बोरे गंगा नीरा।
ऐसा येलम अलख पुरुष का, झरि गये तौंक जंजीरा।। ५।।
बांधी मसक कसक नहीं खाई, डारि गयंद कै आगै।
नरसिंघ रूप धरे नारायन, हसती उलटा भागै।। ६।।
दोन्यौं दीन दर्श कूँ आये, षट्दर्शन फलहारी।
सन्यासी बैरागी बपरे, पूजा मांगै न्यारी।। ७।।
काशी वासी सबै उदासी, शाह सिकंदर तांई।
गरीबदास ये जिब ही राजी, मेला करै गोसांई।। ८।। ६०।।

षट्दर्शन चढ़ि आया। देखौ ऐसी तेरी माया।। टेक।।

चिठ्ठा फिर्या समुंदरौं ताई, भेषौ तोत बनाया।
ठारा लाख चढ़े दफतर में, कलम बंधि लिख धाया।। १।।
करनामई कलप जदि कीन्हीं, दिल में ऐसी धारी।
नौ लख बोडी भरि करि आये, केशो नाम मुरारी।। २।।
चावल चूंन और घिरत मिठाई, लागि गये अटनाले।
छप्पन भोग सिंजोग सलौंने, भेष भये मतवाले।। ३।।
राजा राम रसोई दीन्ही, केशो बनि करि आये।

परानंदनी जा कै द्वारै, बहु विधि भेष छिकाये।। ४।।
हिंदू मुसलमान कहत हैं, ब्राह्मण और बैरागी।
सन्यासी काशी के गांवै, नाचै दुनिया नागी।। ५।।
कोई कहै भंडारा दीन्हा, कोई कोई कहै महोछा।
बड़े बड़ाई देत हैं भाई, गारी काढ़ै ओछा।। ६।।
सिंध शरीर कबीर पुरुष का, जल सरूप जगदीशं।
गरीबदास आसन नहीं अस्तल, साहिब बिसवे बीसं।। ७।। ६१।।
हंसा राम भजौ रे प्रानी। याह शिला मोलि क्यौं आनी।। टेक।।
शिला अलौंनी राम सलौंना, निरखि परखि रे भाई।
आत्मदेव सेव क्यों न करता, जिनि याह पूजा खाई।। १।।
शालिगराम शिला से न्यारा, दम देही धरि आया।
छप्पन बिंजन किये निरंजन, बाल भोग जिन्हि खाया।। २।।
हिरदे कँवल में हाजरि नाजरि, बोलत विधना बानी।
घड़ि पषांन शिला क्यों बाँधी, क्या धोवत है पानी।। ३।।
आतमराम अतीत पुरुष है, जा का सेवन कीजै।
चरण कमल का ध्यान धरो रे, याह दिक्षा बुधि लीजै।। ४।।
जड़ कै आगै चेतन नाचै, यौह बानिक नहीं बनता।
छाती ऊपरि पैर दिया है, घड़्या ठठेरै घनता।। ५।।
शालिगराम शिला नहीं कहिये, तेजपुंज का है रे।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड रचत हैं, तीनि लोक जै जै रे।। ६।।
अंजन मांहि निरंजन साहिब, आत्मराम कहावै।
गरीबदास गति मति से न्यारा, याह सेवा मनि भावै।। ६२।।
नर सुनि रे मूढ गंवारा। राम भजन ततसारा।। टेक।।
राम भजन बिन बैल बनैगा, शूकर श्वान शरीरं।
कऊवा खर की देह धरैगा, मिटै न याह तकसीरं।। १।।
कीट पतंग भवंग होत हे, गीदड जंबक जूंनी।
बिना भजन जड़ बिरछ कीजिये, पद बिन काया सूंनी।। २।।
भक्ति बिना नर खर एकै है, जिनि हरि पद नहीं जान्या।
पारब्रह्म की परख नहीं रे, पूजि मूये पाषाना।। ३।।
स्थावर जंगम में जगदीशं, व्यापक ब्रह्म बिनानी।
निरालंब न्यारा नहीं दरसै, भुगतै चार्‌यौं खानी।। ४।।
तोल न मोल उजन नहीं आवै, अस्थिर आनंद रूपं।
घट मठ महतत सेती न्यारा, सोहं सति सरूपं।। ५।।
बादल छांह ओस का पानी, तेरा यौह उनमाना।
हाटि पटण क्रितम सब झूठा, रिंचक सुख लिपटाना।। ६।।

निराकार निरभै निरबानी, सुरति निरति निरतावै।
आत्मराम अतीत पुरुष कूँ, **गरीबदास** यौं पावै।। ७।। ६३।।
जीवरा राम भजौ रे भाई। छाडि सकल चतुराई।। टेक।।
राम भजन बिन पार नहीं है, भौसागर नहीं छूटै।
जा का तन मन अस्थिर नाहीं, जम किंकर तिस लूटै।। १।।
पारब्रह्म से परचे बोलै, वै अनरागी हंसा।
गुन इन्द्री तन मन कूँ जीतै, कदे न होत बिधंसा।। २।।
जोग जुगति और भक्ति मुक्ति का, मारग पाया मांहीं।
जो तन मन कूँ अस्थिर करि हैं, जा की मैं बलि जांहीं।। ३।।
तन मन जीतै गुन परचीतै, साध कहावै सोई।
एका एकी रमे निरन्तर, निरबानी निरमोही।। ४।।
मान गुमान तजै सब तर्के, हरि पद में रह लीनं।
दशौं दिशा कूँ दर्शन है रे, ज्यौं दरिया मधि मीनं।। ५।।
सकल संपूरन निकटि न दूरं, हरि पद ऐसा कहिये।
आत्मराम सजीवन साहिब, लह्या जाय तो लहिये।। ६।।
अंतर मांहि निरंतर खेलै, आत्मराम अतीतं।
गरीबदास जोगी जन पावै, छूटैं सबै अनीतं।। ७।। ६४।।
जोगिया जुगति जमाया पानी। अविगत पुरुष बिनानी।। टेक।।
सकल बीज का बीज तास पै, नहीं मातरा झोरी।
सींगी नाद भभूति न बटुवा, नहीं मतंगा डोरी।। १।।
मुंद्रा कान नहीं जोगी कै, जटा अटा नहीं बांधी।
है बितरागा निरगुन नागा, देखि सुरति शर सांधी।। २।।
पत्र न पाठ ठाठ सब मांहीं, जो कुछ करे सो साजै।
पलक पीठ में जोगी बैठ्या, अधरि घड़ावलि बाजै।। ३।।
असन बसन बिंदा नहीं जा कै, तिलक न तकिया धारी।
अनन्त कोटि वैकुण्ठ तास कै, दर्शन के अधिकारी।। ४।।
ब्रह्मा विष्णु कृष्ण कर जोरें, शिव और शेष संगीतं।
नारद शारद पार न पावैं, अविगत अलख अतीतं।। ५।।
सूरज संख असंख चंद्रमा, तेज पुंज की सैना।
सुर नर मुनि गन गंधर्व गावैं, लखै न ताके बैंना।। ६।।
अनहद राग भनै अनरागी, मुख रसना बिन गावै।
सुर नर मुनि गन की कहा चालै, शिव बिरंच नहीं पावै।। ७।।
मिल्या रहै और अनमिल है रे, यौह अचरज बड़ भारी।
गरीबदास कैसे करि पाऊँ, अविगत अलख मुरारी।। ८।। ६५।।
भजन करौ उस रब्ब का। जो दाता है कुल सब का।। टेक।।

बिना भजन भै मिटै न जम का, समझि बूझि रे भाई।
सतगुरु नाम दान जिनि दीन्हा, याह संतौं ठहराई।। १।।
करुनामई नाम कर्त्ता का, कलप करै दिल देवा।
सुमरन करै सुरति से लापै, पावै हरि पद भेवा।। २।।
आसन बंध पवन पद परचै, नाभी नाम जगावै।
त्रिकुटी कँवल में पदम झलकै, जा से ध्यान लगावै।। ३।।
सब सुख भुक्ता जीवत मुक्ता, दुःख दालिद्र दूरी।
ज्ञान ध्यान गलतान हरी पद, ज्यौं कुरंग कसतूरी।। ४।।
गज मोती हसती के मसतगि, उनमन रहै दिवाना।
खाय न पीवै मंगल घूमें, आठ बखत गलताना।। ५।।
ऐसे तत्त पद के अधिकारी, पलक अलख से जोरैं।
तन मन धन सब अरपन करहीं, नेक न माथा मोरैं।। ६।।
बिनहीं रसना नाम चलत है, निरबानी से नेहा।
गरीबदास भोडल में दीपक, छानी नहीं सनेहा।। ७।। ६६।।
हरि का भजन करौ रे जीवरा। बहुरि न मिलसी पीवरा।। टेक।।
यौह तन देह खेह हो जायगा, हंसा होत बटाऊ।
खान पान नहीं गिरह गांठि का, कौन तुम्हारा साऊ।। १।।
अरब खरब लग द्रव्य संकेर्या, राजा रंक भया रे।
लखी करोरी भया अनंत बेर, दालिद्र नहीं गया रे।। २।।
इन्द्र कुबेर भये कलि मांहीं चक्रवर्ती छत्रधारी।
डूम भाट होय भटका खाया, ब्राह्मण भंड भिखारी।। ३।।
नर खर शूकर श्वान फिरि कीन्हा, कऊवा हंस बगा रे।
चौरासी में उलट परे हैं, लागी नहीं लगा रे।। ४।।
चाकर चोर कठोर कुटल है, क्रितघनी तूं ठगुवा।
जंगलि रीछ बनैगा भाई, बनखंडौं का बघुवा।। ५।।
मानि बचन तूं समझि सबेरा, सुरति करो सुधि ल्यावौ।
खोजो आत्मरूप अध्यात्म, बैरागर पद पावौ।। ६।।
बैरागर है परम पदारथ, निराकार निरबानी।
दिव्य दृष्टि होय देख दर्श कूँ, मिटि है चार्यौं खानी।। ७।।
अक्षर में निःअक्षर है रे, बूझि हमारा ज्ञाना।
गरीबदास चिंत्यामनि पाया, हरदम दर्श दिवाना।। ८।। ६८।।
हरि का भजन करौ रे प्रानी। तांते सुनौं शब्द सहदानी।। टेक।।
सहदानी पद पारखि लै रे, अकल अखंडत गाजै।
अविगत रूप सरूप दर्श करि, जरा मरन भै भागै।। १।।
सुंदर श्याम सलौंना साहिब, जड़ जूंनी से न्यारा।

आत्मराम सदा सरबंगी, जा का करौ बिचारा।। २।।
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, दशौं दिशा दरहाला।
शुन्य बे शुन्य में पूर रह्या है, आदि पुरुष हरि बाला।। ३।।
अंतरवेद निरंतर पढ़ना, पढ़ै गुनै सो गावै।
निःअक्षर एक हरफ हरीहर बिन सतगुरु नहीं पावै।। ४।।
जा का दर्शन कलप किदारं, शिव ब्रह्मादिक ध्याना।
सौ करोरि रामायन पढ़िया, बांचै अक्षर ज्ञाना।। ५।।
अक्षर ज्ञान गलत है भाई निःअक्षर निसतारा।
संख कमल दल कल अजरावर, सकल रूप से न्यारा।। ६।।
गाज न बीज पवन नहीं पानी, वर्षा होत अखंडं।
राई रंग रसायन टपका, निपजत सब ब्रह्मण्डं।। ७।।
सूक्ष्म छाक छिके हैं हंसा, रूंम रूंम रसतालं।
गरीबदास हरि हीरा पाया, सत पद नजरि निहालं।। ८।। ६८।।
संतो भ्रम परौ मति कोई। ऊँचे कुल से भक्ति न होई।। टेक।।
ऊँचे कुल में नाश होत है, नीचा ही कुल दीजै।
तपिया कूँ तो दर्शन नाहीं, लोदी नालि पतीजै।। १।।
तपिया कूँ तो बहु तप कीन्हा, तन मन डोलत रहिया।
लोदी कै तो गला बंधाया, हाथ पैर सब गहिया।। २।।
ऊँचे कुल दुर्योधन रावण, नीचे कुल में गनिका।
गनिका भीलनी पारि उतरि गई, गर्व करौ मति धन का।। ३।।
चित्रकेतु राजा तप कीन्हा, सौ करोरि गृहरानी।
एक पुत्र जिस नहीं प्राप्त, ऐसा बानिक बानी।। ४।।
सुनही कूँ तो आठ दिये हैं, सूरी जाये बारह।
ऊँचद नीच में एता बटा, थिर नहीं सात न ग्यारह।। ५।।
पशु प्रानी अंडरज ध्यानी, पंडदल मांहि पिराना।
भीषम द्रौंणा कर्ण हिते हैं, सो तकि मारे बाना।। ६।।
पंड दल मांहि घंटाला टूट्या, राखि लिये रघुबीरं।
नीचे कुल से ऊँचा होई, भक्ति करौ बलबीरं।। ७।।
बृतरासुर भस्मागिर होते, ऊँचे कुल अधिकारी।
गरीबदास दहूँ दमन किये हैं,अविगत अलख मुरारी।। ८।। ६९।।
नाच रे मन मेरा निश दिन,
नाच रे मन मेरा। तातैं करौ अधरि परि डेरा।। टेक।।
ऐसा नाचो हरदम काछो, रीझैं शंकर शेषा।
ब्रह्मा विष्णु इन्द्र अधकारी, देखैं नाच हमेशा।। १।।
पांच पच्चीस तीस ले चढ़ि रे, गगनि मंडल बरत बांध्या।

सपत सुरौं का संपट मूंदौ, सुरति निरति शर सांध्या।। २।।
तत्त की तेग बेगि कसि बांधी, डिढ की ढाल बनाई।
बुधि विवेक बन्दूख भरी है, दम दारू ठहराई।। ३।।
चित की चषमष प्रेम पलीता, गूंनी ज्ञान हमारै।
यौह येलम अकला कोई जानैं, नाम निशाना मारै।। ४।।
बर्दवान बदरे सा खेलै, तिहरी ऊपरि ताना।
शुन्य बे शुन्य पर काछ चढ्यो है, बिन पग पंथ पियाना।। ५।।
तन बिन मन बिन आसन मांडे, महतत करैं मुकामा।
उतरे नहीं धरनि पर कबहूँ, नाचे आठौं जामा।। ६।।
इच्छा बीज जरावै जोगी, घट मठ राज नरेशा।
च्यार वर्ण षट आश्रम खोवै, धारै भेष न भेषा।। ७।।
कुल करनी के कलश फोरि करि, छाडे लोक बंधाना।
गरीबदास यौं नाचै मनुवा, तो पद पदहि समाना।। ८।। ७०।।
यौह सौदा फिर नाहीं संतो, यौह सौदा फिर नाहीं।। टेक।।
लेहे के सा ताव जात है, काया देह सिराहीं।
यौह दम टूटै पिण्डा फूटै, लेखा दरगह माहीं।। १।।
तीन लोक और भुवन चतुर्दश, यौह जग सौदे आई।
दूनें तीनें किये चौगनें, किन्हीं मूल गवांई।। २।।
उस दरगह में मार परैगी, जम पकरैंगे बाहीं।
वा दिन की मोहि डरनी लागै, लज्या रहै क नाहीं।। ३।।
नर नारायन देह पाय करि, फिरि चौरासी जाहीं।
जा सतगुरु की मैं बलिहारी, जामन मरन मिटाहीं।। ४।।
कुल परिवार सकल कबीला, मसलति एक ठहराई।
बांधि पींजरी आगै धरिया, मडहट में ले जाई।। ५।।
अग्नि लगाय दिया जदि लूंबा, फूकि दिया उस ठांहीं।
वेद बांधि कर पंडित आये, पीछै गरुड़ पढ़ाहीं।। ६।।
नर सेती फिर पशुवा कीजै, गदहा बैल बनांई।
छप्पन भोग कहां मन बौरे, कुरड़ी चरनें जांई।। ७।।
प्रेत शिला पर जाय बिराजे, पितरौं पिण्ड भराहीं।
बहुरि शराध खान कूँ आये, काग भये कलि माहीं।। ८।।
जे सतगुरु की संगत करते, सकल कर्म कटि जाहीं।
अमरपुरी में आसन होते, ना जहां धूप न छाहीं।। ६।।
सुरति निरति मन पवन पियाना, शब्दे शब्द समाई।
गरीबदास गलतान महल में, मिले कबीर गोसांई।। १०।। ७१।।
राम भजौ रे बाला सतगुरु, राम भजौ रे बाला।। टेक।।

षट गुन ज्ञान ध्यान धरि पद में, जपिले अजपा माला।
दसमें नाद अनाहद बाजै, है जहां अर्श दिवाला।। १।।
भौंरा गूँज कुंजि में करहीं, खूब बनी चित्रशाला।
थरंचक राम रसायन पीवत, टूटि गये जम जाला।। २।।
प्रेम नगर में पारस पद है, वर्षत नजर निहाला।
जहां कलाली कमल कलश है, भरि भरि देत पियाला।। ३।।
रंग महल में चवै रसायन, पीवै सद मतवाला।
गरीबदास जहां उजल सरोवर, पौंहचे मोटे ताला।। ४।। ४२।।
ऐसा रंग चवाया रंगी, ऐसा रंग चवाया।। टेक।।
इला पिंगुला नालि बनाई, कुंभा माट चढ़ाया।
सुषमन सूत गगनि में डोरा, खैंचि लिया तन ताया।। १।।
नाभ कँवल में दम की धमनी, त्रिकुटी पट्टन लाया।
बाहरि भीतर एक पदारथ, नैनों जनर्यौं आया।। २।।
दम सुमारि दरीबै चढ़ि करि, अमी महारस खाया।
सुरति निरति मन पवन अर्श में, अनहद नाद बजाया।। ३।।
सारिंग सुरति निरति पद परसी, अगम अगोचर पाया।
संख असंख जहां निरति कारी, राग रते गुरुराया।। ४।।
दिल के अंदर मंदिर महली, योजन संख चढ़ाया।
पैड़ी पैर नहीं जहां कोई, खूंटी हाथ न लाया।। ५।।
भगल विद्या नट खेल हमारा, खण्ड बिहण्ड होय आया।
पौहमी ऊपरि आनि पर्या जदि, साबति पिण्डा पाया।। ६।।
पर बिन उड्या बिहंगम बादी, अधर धार ठहराया।
बांस बरत बिन नाचत हे रे, ऐसा खेल दिखाया।। ७।।
पौहमी ऊपरि पग नहीं टेकै, शीश दस्त नहीं काया।
भगल देश तैं बादी उतर्या नटुवा नाचन आया।। ८।।
जहां ब्रह्मा विष्णु महेसर बैठे, शेष सहंस मुख गाया।
सनक सनंदन नारद शारद, नाच देखि बिरमाया।। ९।।
संख कला कलधूत कलंदर, ना किन्हे जननी जाया।
गरीबदास नटुवा परिवारी, ना कुछि भूखा धाया।। १०।। ७३।।
नाचत भगली नटुवा संतो, नाचत भगली नटुवा।। टेक।।
डेरा डांडा ना भगली कै, भारकसी नहीं टटुवा।
खाना दाना कित से करि है, ना बैजार न हटुवा।। १।।
एकाएकी रहै बिहंगम, ना कुछि क्रितम खटुवा।
घर घर आगै नाच करत है, बाट चलै नहीं बटुवा।। २।।
नाच का दान कहीं ना मांगै, ऐसा बादी हटुवा।

औह सुरताल ख्याल कुछि गावै, जैसा भंगी लटुवा।। ३।।
तीन लोक और भुवन चतुर्दश, ठाठ रच्या एक ठठुवा।
गरीबदास कुरबान विहंगम नाचत है घट घटुवा।। ४।। ७४।।
भक्ति मुक्ति के दाता सतगुरु, भक्ति मुक्ति के दाता।। टेक।।
पिण्ड प्रान जिन्हि दान दिये हैं, जल से सिरजे गाता।
उस दरगह कूँ भूलि गया है, कुल कुटंब से राता।। १।।
ऋद्धि सिद्धि कोटि तुरंगम दीन्हें, ऐसा धनी विधाता।
उस समरथ की रीझ छिपाई, जग से जोर्‌या नाता।। २।।
मुसकल से आसान किया था, कहां गई वै बाता।
सत सुकृत कूँ भूलि गया है, ऊँचा किया न हाथा।। ३।।
सहंस इकीसौं खंड होत हैं, ज्यौं तरुवर के पाता।
थूंनी डिगी थाह कहां पावै, यौह मंदिर ढह जाता।। ४।।
इस देही कूँ देवा लोचैं, तूं नर क्यों उकलाता।
नर देही नारायन येही, सनक सनन्दन साथा।। ५।।
ब्रह्म महूरति सूरति नगरी, शुन्य सरोवर न्हाता।
या परबी का पार नहीं रे, सकल कर्म कटि जाता।। ६।।
सुरति निरति मन पवन बंध करि, मेरदण्ड चढ़ जाता।
सहंस कँवल दल फूलि रहै हैं, अमी महारस खाता।। ७।।
जहां अलख निरंजन जोगी बैठ्‌या, जा से रह्या न भाता।।
गरीबदास पारंग प्रान है, सहंस कँवल खिल जाता।। ८।। ७५।।
जपि ले अलख बिनानी संतो, जपि ले अलख बिनानी।। टेक।।
कच्छ मच्छ कूरंभ बनाये, धौल धरनि ठहरानी।
शेष पर सकल पसारा, कादर कूँ कुरबानी।। १।।
ब्रह्मा विष्णु महेश गणेशा, सुर नर मुनि जन ज्ञानी।
सनक सनन्दन पद में राते, नारद मुनि से ध्यानी।। २।।
ध्रू प्रहलाद और नाम कबीरा, चार्‌यौं जुग प्रवानी।
तीन लोक मे ताहि दुहाई, अलफ इलाम निशानी।। ३।।
राजा कोटि निनानौं त्यारे, गोरख पद गलतानी।
अमरीक और जनक विदेही, द्वार पाल दरबानी।। ४।।
मारकंड रूमीरिष रंगे, बालमीक सुलतानी।
अरब रमायन आनि सुनाया, थाके पौंन रु पानी।। ५।।
स्थावर जंगम ताहि रटत हैं, गावैं चार्‌यौं खानी।
अठार भार पर्वत बनमाला, घट घट ब्रह्म समानी।। ६।।
स्कल मनोरथ पूर्ण साहिब, समरथ दाता दानी।
गरीबदास तांहीं कूँ सेवौ, लीला बिरद बखानी।। ७।। ७६।।

सतगुरु जै रामा जै रामा।
सबही सौंज सांवरे मांहीं, क्या दाहिना क्या बामा।। टेक।।
कलबिरछा और कामधेनु जो, सब ही पूर्ण कामा।
रुकमनि राधा कुबजा मालनि, चौंर करैं सतभामा।। १।।
पल में पुरी बिसंभर रचिया, तुंदल भेट सुदामा।
धन्ना भगतरा खेत निपाया, गऊ जिवाई नामा।। २।।
बालनीक कूँ शंख बजाया, सुपचं जाति गुलामा।
चमरा कनक जनेऊ काढ्या, धरे सात सौ जामा।। ३।।
जुलहे कै घर बालदि आई, ताहि करौं प्रनामा।
सैंन भक्त का संसा मेट्या, नाई भये हजामा।। ४।।
सदना जाति कसाई उधरे, बकरे का चीरत चामा।
अजामेल से अधम उधारे, गनिका चढ़ी विमाना।। ५।।
ध्रू प्रहलाद अगाध अगम गति, फरकत धजा निशाना।
अरजन जुमला बिरछ उधारे, गीध ब्याधि निहकामा।। ६।।
पढ़ि पंडित भटकत रहे इत ही, अजौं न पाया गामा।
जन्म जनेऊ नहीं विप्र कै, घाली डोरि गुलामा।। ७।।
हमरा बदन कुटिल तन मैला, जैसा कारा झामा।
तुम्हरे चरण कमल के परसे, पौंहचैंगे सत धामा।। ८।।
अजपा जाप जपौ निश बासरि, सुमरन करौ उरामा।
दास गरीब अगम अनरागी, चीन्हौं अलफ इलामा।। ९।। ७८।।
औधू शब्द अतीत सही करि। तातैं अमृत प्याला पी करि।। टेक।।
रसना सेती चरचा कैसी, जब उनमन झर लागी।
गावन धावन सब ही छूट्या, चीन्ह्या पद अनरागी।। १।।
ज्ञान ध्यान दो रहे महोलै, लै की लपट जहूरा।
सुरति निरति शुन्य मंडल मेला, बाजैं अनहद तूरा।। २।।
अक्षर धाम धरि डोरि दरीबै, जहां बिरहा बंग उदासी।
मक्रतार महल में पैठे, जहां अठसिद्धि नौनिधि दासी।। ३।।
साखी शब्द कहै क्या होई, महरम नहीं महल का।
अमृत प्याला पीया चाहे, भाव न जानैं खलि का।। ४।।
शब्द सिंध में लगी समाधी, आत्म तत्त दरसाया।
गरीबदास जो बहुरि न आवै, तास रहत घर पाया।। ५।। ७९।।
भूले गुरुवा गरब न कीजै। तातैं पाहन कदे न रीझै।। टेक।।
बाल मुकंदं बोलत नाहीं, लटक बिहारी लूटै।
गुरुवा के सिर मार परैगी, पैंडा कदे न छूटै।। १।।
गुरुवा के सिर फरुवा फोरो, घर से काढि घसीटो।

इसके मारै पाप नहीं है, या कूँ निहचै पीटौ।। २।।
या देवल में देव नहीं है, पान पतासे खाई।
बिल्ली बीठ शीश पर कीन्हीं, कुतरे धार चलाई।। ३।।
बिल्ली देव बिडारत नाहीं, मूरति में कुछि खोरी।
या देवा में अजमति नाहीं, कुतरे की टांग न तोरी।। ४।।
मूरति के नहीं श्रवन चिसमें, गुरुवा घंट बजावै।
खीर खांड का भोजन धरि कै, आपन ही गुटकावै।। ५।।
बैरागर की परख नहीं रे, पाहन गांठी बांधे।
या गुरुवा कै लीतर लावो, ये गुरुवा सब आंधे।। ६।।
जड़ कै आगै चेतन नाचै, अंधे कूदैं गावैं।
गरीबदास इस पूजा सेती, नर पत्थर हो जावै।। ७।। ८०।।

गुरुवा गाम बिगारे संतो, गुरुवा गाम बिगारे।
ऐसे कर्म जीव कै लाये, बहुरि झरै नहीं झारे।। टेक।।
पाहन कूँ परमेश्वर कहते, याह निंदा बड़ भारी।
या की मोकूँ समझ न परहीं, पूजा करी क गारी।। १।।
जोहड़ का जल भर कर ल्याये, चरणामृत ठहराये।
जड़ के चरण धोय कर दीन्हे, चेतन कूँ फिरि प्याये।। २।।
दस लख जंत जीव जल उपजैं, यौह चरणामृत नाहीं।
या में छोति घनेरी पांडे, समझि देखि मन मांहीं।। ३।।
शालिग शिला धोय कर पीये, हिरदा पत्थर होई।
चरण कम लमें चरणामृत है, जिस पीवत नहीं कोई।। ४।।
कऊवा मच्छ मीन जल पीया, बिसटा कीन्ही माहीं।
गुरुवा के तो गारा लाया, जुग जुग छूटै नाहीं।। ५।।
भ्रम बिधूसन शब्द हमारा, कोई गावै।
कोई रोवैं पांडे कूँ तो परख नहीं है, कीचड़ महमूंदी धौवै।। ६।।
शालिग शिला गांठि में बांधे, तीरथ चले पराधी।
समझ न परै परख नहीं आवै, बड़े ज्ञान के बादी।। ७।।
भैरौं भूत मसांनी पूजैं, दुर्गा देवी ध्यावैं।
ऊती कै तो तबही बाजैं, बकरै आनि कटावैं।। ८।।
भेड पूँछ कूँ पंडित पकरैं, भादौं नदी बिहंगा।
गरीबदास वै भौजल बूडे, नहीं साध सतसंगा।। ९।। ८१।।

पांडे प्रीति न तेरै भाई,
पांडे प्रीति न तेरै। याह तो मूरति घड़ी ठठेरै।। टेक।।
पीतल का तो देव बनाया, ऊपरि टांकी लाई।
जे देवा कै दर्द होय तो, तोबा करता भाई।। १।।

नैंन नाक मुख श्रवण कीन्हे, मुख से कदे न बोलै।
पांडे की तो अकलि गई है, यौह जग मार्‍या झोलै।। २।।
पग नहीं चलै दसत नहीं देवै, ना कुछि खाय न पीवै।
बड़ा अंदेशा मो कूँ है, यौह देवा मरै क जीवै।। ३।।
च्यार टके कूँ मोलि लिया था, पैसा एक न ऊठै।
इस पूजा का यौह फल पांडे, जम किंकर सिर कूटै।। ४।।
बारह बाट भये सब ठाकुर, पर्‍या भगाना भारी।
बाल मुकंदं बारा भोरा, पकरे लटक बिहारी।। ५।।
लटक बिहारी ख्वारी कीन्हीं, मैं क्या जानौं भाई।
ठाकुर कूँ तो सैंन दई, जिब ब्रह्मचारी परि आई।। ६।।
ब्रह्मचारी तो पाकरि लीन्हें, छाती तोरन लागे।
शालिग शिला जिमी से पटके, पांडे सूते जागे।। ७।।
पंडित गंडित भये कूकरा, सुनही कै घर आया।
गरीबदास या पूजा ऐसी, सतगुरु भेद बताया।। ८।। ८२।।

पांडे पोथी पतरा डारौ।
आपै भौजल बूडि गये, तो किस कूँ पारि उतारौ।। टेक।।
उत्तम बीज बनौला बीनौं, रूई जाति रघुबीरं।
जा के वस्त्र दूर किये है, ठाकुर चढ़े न चीरं।। १।।
ऊन कतर काती करि आनी, भेड फूहरा खाई।
जिस लोई में ठाकुर बांधे, फिटि तेरी चतुराई।। २।।
तुलसी तोरि मरोरैं मूरख, पाहन फूल चढ़ावै।
चेतन होय तो करैं अहारं, जड़ मूरति नहीं खावै।। ३।।
कालंदरी का घाट जहां है, गंग जमन के तीरा।
जहां न पंडित पूजा तेरी, नघ नारायन हीरा।। ४।।
सात बार पंदरा तिथी मांहीं, पूजा करी न मन में।
पत्थर पानी स्यौं सिर मार्‍या, साहिब खोया तन में।। ५।।
ब्रह्मरंध्र का घाट न चीन्ह्या, पढ़े अविद्या बानी।
पाहन को पारायन कीन्हा, भूले शारंगपानी।। ६।।
अकलि गई जब ही हम जानी, पंडित पाडा होई।
सूतिग पातिग खाया सब ही, ज्ञान गांठि का खोई।। ७।।
गुदा भिस्ट बहु करैं अहारा, बंकनाल नहीं जानी।
गरीब दास औह महल न पावैं, सुनि पंडित अभिमानी।। ८।। ८३।।

अथ राग सारंग

मन मानसरोवर न्हान रे।

जल के जंत रहैं जल मांहीं, आठौं बखत बिहान रे।। टेक।।
लख चौरासी जल के वासी, भरमें चारूयौं खानि रे।
चेतन होय कर जड़ कूँ पूजैं, गांठी बांधि पषान रे।। १।।
मरकब कहा चंदन के लेपैं, क्या गंग न्हवाये श्वान रे।
सूधी होय न पूँछ तास की, छाडत नाहीं बानि रे।। २।।
द्वादश कोटि जहां जम किंकर, बड़े बड़े दैंत हिवान रे।
धर्मराय की दरगह मांहीं, हो रही खैंचा तान रे।। ३।।
लख चौरासी कठन तिरासी, बचन हमारा मानि रे।
जैसे लोह तार जंती में, ऐसे खैंचे प्रान रे।। ४।।
जूंनी संकट मेट देत हैं, शब्द हमारा मानि रे।
हरदम जाप जपौ हरि हीरा, चलना आँब दिवान रे।। ५।।
सुरग रसातल लोक कुसातल, रचे जिमी असमान रे।
चौदह तबक किये छिन मांहीं, सिरजे शशि अरु भान रे।। ६।।
निर्गुण नूर जहूर जुहारो, निरखि परखि प्रवानि रे।
गरीबदास निज नाम निरंतर, सतगुरु दीन्हा दान रे।। ७।। १।।
मन मानसरोवर गंग रे।
जहां का बिछर्या तहां मिलाऊँ, सुनों शब्द प्रसंग रे।। टेक।।
दहनै गंगा बामैं जमना, मधि सुरसती रंग रे।
कलविष कुसमल मोचि होत हैं, पल पल परबी अंग रे।। १।।
काशी करवत काहे लेही, बिना भजन नहीं ढंग रे।
कोटि ग्रन्थ का यौही अर्थ है, करो साध सत्संग रे।। २।।
छुछिम रूप सरूप सुभानं, निहचल अचल अभंग रे।
आसन असतल नही तास के, बाना बिरद बिनंग रें।। ३।।
बिनहीं पंखौं उड़ै गगनि कूँ, चालै चाल बिहंग रे।
दिव्य दृष्टि तो दर्श करत है, हरदम कला उमंग रे।। ४।।
परानन्दनी पारिख लीजै, मूल मंत्र ॐ अंग रे।
गायत्री गलतान ध्यान है, सोहं सुरति सुहंग रे।। ५।।
अजपा जाप जपौ निश वासर, जीति चलो जम जंग रे।
गरीबदास दर्शन देवा का, देखि भया मन दंग रे।। ६।। २।।
मन मानसरोवर चाल रे।
उजल भँवर गुंजार करत है, जहां कमल केतगी लाल रे।। टेक।।
अनहद नाद अगाध बजत है, जहां गूंजै शब्द रिसाल रे।
सुरति निरति तो पारखि ल्याई, नजरी नजर निहाल रे।। १।।
हंस हंसनी करत कतूहल, सरवर है बिन पाल रे।
अछै बिरछ आनन्द पद साहिब, सतगुरु दीन दयाल रे।। २।।

कोटि कला कलधूत कलंदर, झिलमिल रंग बिसाल रे।
निरगुण सरगुण सब गुनवंता, आदि पुरुष अबदाल रे।। ३।।
अठसिद्धि नौनिधि आगे दासी, बाजैं घंटा ताल रे।
जो जन जाका ध्यान धरत हैं, ताहि न चंपै काल रे।। ४।।
गर्भ वास जग बहुरि न आवै, नांहि पड़ै जम जाल रे।
गरीबदास आनंद पद मेला, कोई बूझैं हाल हवाल रे।। ५।। ३।।

मन मानसरोवर मेल रे,
भौसागर से पारि उतारै, अगम अगोचर खेल रे।। टेक।।
श्रवण बिना शब्द एक सुनिये, परखो ताहि बलेल रे।
गगन मंडल में ध्यान धरो रे, जहां दीपक है बिन तेल रे।। १।।
च्यारूयौं जुग में संत पुकारें, कूकि कह्या हम हेल रे।
हीरे मोती मांनिक बरषैं, यौह जग चुगता डेल रे।। २।।
पांच पच्चीस तीन पर तकिया, यौह मन सुनि सकेल रे।
बरदवांन ले बुधि का बांधौ, भौजल नौका पेल रे।। ३।।
बारू के सी गांठि बंधी है, नर समझौं मूढ बहेल रे।
लखी करोड़ी भये जगत में, संगि न चलिया धेल रे।। ४।।
हसती घोड़े अरथ पालकी, ताजि घालि हमेल रे।
सूरे हो कर शीश कटावैं, लावत हैं तन सेल रे।। ५।।
एक पापी एक पुंनी आये, एक है सूम दलेल रे।
गरीबदास एक राम भजन बिन, सब ही जम की जेल रे।। ६।। ४।।

मन मांनिक लहरि समंद रे,
मुरजीवा नहीं सीप न सायर, निरमल आनंद कंद रे।। टेक।।
मोती मुक्ता दरशत नाहीं, यौह जग है सब अंध रे।
दीखत के तो नैंन चिसम हैं, फिरूया मोतिया बिंद रे।। १।।
नर नारायण देह पाय कर, कटूया न जम का फंध रे।
रतन अमोली दरशत नाहीं, ध्रिग है वाकी जिंद रे।। २।।
पूर्ण ब्रह्म रते अविनाशी, जो भजन करैं गोबिंद रे।
भाव भक्ति जा हिरदे होई, फिर क्या करि है सुरपति इंद रे।। ३।।
लख चौराणी बहे जात थे, सूवटा गंदा अंड रे।
तत्त नाम सतगुरु कूँ दीन्हा, जाय मिल्या सुख सिंध रे।। ४।।
इन्द्री कर्म न लगे लगारं, जो भजन करै निरदुद रे।
गरीबदास जग कीरति होयगी, जिब लग सूरजि चंद रे।। ५।। ५।।

अथ राग नट

सही हम नाम पदारथ पाया।

अनंत जुगन के भूले हंसा, सतगुरु भेद लखाया।। टेक।।
होते कीट पतंग भवंगा, मिहर दया करि आया।
गगन मंडल में लगी खुमारी, चोखा फूल चवाया।। १।।
अमी महारस अमृत सरवै, प्याला आंनि पिलाया।
लागी प्रीति परमपद बिरहै, हंस हिरंबर छ्याया।। २।।
तहां एक गुमट अनुपम देख्या, जहां हम चौंर ढुराया।
अंधे गूंगे बहरे होते, अनहद नाद बजाया।। ३।।
गगन मंडल कूँ किया पयाना, घुड़ले ज्ञान चढ़ाया।
दास गरीब लगे हैं चाकर, सत का दाग दगाया।। ४।। १।।
सही हम नजर निहाल निवाजे।
अगर दीप सतलोक पठाये, अनहद नादू बाजे।। टेक।।
काम क्रोध ममता और मनसा, विरह अग्नि में दाझे।
ज्ञान गुरजि हम गसती राखे, जब जम किंकर भाजे।। १।।
भीर बनी प्रहलाद भक्त कूँ, कोपे हिरनाकुस राजै।
मुसकल से आसान भई है, भक्ति बिरद नहीं लाजे।। २।।
देवल फेर्‌या गऊ जिवाई, पूर्ण कीन्हे काजे।
कांकर बोई समझो लोई, निपजे खेत धनाजे।। ३।।
सदना के घरि सतगुरु आये, नाम के अंजन आंजे।
अजामेल गनिका संग उधरे, अनहद अर्श बिराजे।। ४।।
सैंन भगत का संसा मेट्या सेवन कीन्हें सांझै।
दास गरीब दर्श दरवानी, तन मन दर्पण मांजे।। ५।। २।।
यौह जग होय होय जाना औधू, यौह जग होय होय जाना।
सौ **योजन मरजाद सिंधु की, जा परि सेत बंधाना।। टेक।।**
एक लख पूत सवा लख नाती, संग चढ़ै बौह दाना।
चौदह अरब सजैं संग रापति, पंदरा खरब खुरसाना।। १।।
अग्नि रसोई पवन बुहारी, बांधि ल्याये शशि भाना।
तेतीस कोटि दिये कोतवाली, घर ही पंडित खाना।। २।।
काल मीच जिन कूवे उसारे, संखौं संख खजाना।
लंका से कोटि समुंदर सी खाई, फूकि दई हनुमाना।। ३।।
संग विभीषण भाई उधरे, घरे मंदोदरी राना।
दास गरीब कटे दस मस्तक, आया जम तलबाना।। ४।। ३।।
समझि ले कुल बिरद भूल परी रे।
पंडौं जगि असमेध उठाई, मेला अजब भरी रे।। टेक।।
बालनीक नीचे कुल साधू, पंचायन संख घुरी रे।
सदना के घरि सतगुरु आये, डारी दसत छुरी रे।। १।।

सैंन भक्त की सेवन कीन्हीं, हजामति आनि करी रे।
रैदास रसायन माते रहते, जनेऊ कनक धरी रे।। २।।
धन्ना भक्त नैं कांकर बोई, निपज्या खेत हरी रे।
दादू दास दर्श के माते, जा के नाम से जिहाज तिरी रे।। ३।।
नामदेव ने निरगुण चीन्ह्या, देवल बेग फिरी रे।
अजामेल से पापी होते, गनिका संगि उधरी रे।। ४।।
नाम कबीरा जाति जुलाहा, षटदल हांसि करी रे।
हे हरि हे हरि होती आई, बालदि आनि ढुरी रे।। ५।।
शब्द सरूपी सतगुरु मेरा, जा स्यूं दुनियां आनि अरी रे।
दास गरीब दर्श साहिब का, बिलंब न एक घरी रे।। ६।। ४।।
नट बरत बांधि चढ़ौ रे, सुहंगम नट बरत बांधि चढ़ौ रे।। टेक।।
सुरति निरति के लगे बंधाना, गहरौ बांस गड्यौ रे।
तिहरी ऊपरि नाच हमारा, ज्ञान का ढोल मढौ रे।। १।।
ताता थेई ताना नाना, चूकत खंडत हडौ रे।
अधर धार पर कला लगावै, जो विद्या भगल पढ्यौ रे।। २।।
अभैदान सतगुरु मुझ दीन्हा, नाच को दान कढ्यौ रे।
दास गरीब अमर जहां गदली, बहु विधि लाड लड्यौ रे।। ३।। ५।।
घट में अविगत लाल लखे री।। टेक।।
ऋग यजु साम अथरवर गावै, शिव ब्रह्मा विष्णु थके री।
अर्श खुमारी फूल चवंते, प्याले प्रेम छिके री।। १।।
भीतर बाहरि बाहरि भीतर, ढकनैं नाहि ढके री।
अर्श अंगुरी बाग लगे हैं, फल बेदान पके री।। २।।
गगन मंडल गुलजार गलीचा, धूंनी ध्यान सुखे री।
हम सौदागर सतगुरु भेजे, दास गरीब मुके री।। ३।। ६।।

अथ राग बसंत

अमरपुरी जहां अगर दीप, सतलोक काया सनीप।। टेक।।
शुन्य मंडल का कहूँ भेव, सुर नर मुनि जन भूले देव।
निश्चल नीम करौ इक ठाम, बारू में नहीं बसै गाम।। १।।
मूल कँवल काया कुदली चीन्ह, गुदा कँवल थिरि कंदर्प सीन।
नाभ कँवल कूँ निश दिन सोध, कहा पढ़त है ठारा बोध।। २।।
रवनपुरी में राग अनूप, ध्यान धरौ नहीं छाया धूप।
हिरदे कँवल अजपा जाप, बिन रसना गुण सोहं लाप।। ३।।
कण्ठ कँवल त्रिबैनी तीर, अठसठ तीरथ निर्मल नीर।
शब्द महोदधि गरजें सिंध, रतनागर सागर अति आनन्द।। ४।।

मानसरोवर मुकता मेल, जहां हंस कतूहल करते केल।
जगमग जोती झिलमिलाट, हंसा उतरैं औघट घाट।। ५।।
अगम भूमि जहां अगम ठांम, ध्यान धरो जहां आठौं जाम।
दास गरीब जहां पद निवास, जिस तखत कबीरा है खवास।। ६।।
अविगत आनन्द अति बसंत, जहां पारब्रह्म है दूलह कंत।। टेक।।
सतपुरुष एक निराधार, आदि अंत नहीं वार पार।
निरगुण रिनभै निज अनूप, सार शब्द है सत सरूप।। १।।
जहां कोटिक शेष महेश जानि, पारब्रह्म का धरै ध्यान।
ब्रह्मा विष्णु रहै कर जोरि, गिनती लेखा नाहीं और।। २।।
नारद सनकादिक सनीप, ध्यान धरत हैं अगर दीप।
अगरदीप में पौहप गंध, भँवर परे हैं बिरहै फंध।। ३।।
ध्रू प्रहलाद समाधि सेव, जहां गोरख दत्त दिगम्बर देव।
सुलतानी बाजीद बिलास, सूजा सैंन रंगे रैदास।। ४।।
भरथरी गोपीचंद विनोद, खेल्या चाहै तो काया सोध।
जहां पीपा धन्ना धरत ध्यान, नानक नामा पद समान।। ५।।
जनक बिदेही शुकदे संगि, अनंत संत जहां रंगे रंग।
दादू दावा किया दूर, गगन मंडल में बाजैं तूर।। ६।।
उड़त अबीर गुलाल लाल, जहां संख झालरी बजैं टाल।
केसर की पिचकारी पाख, पारब्रह्म जहां बैठ्या ताख।। ७।।
बाजैं झालरि अधक झांझि, दो फारै निश बासर सांझ।
दास गरीब निज पद जुहार, जिस तखत कबीरा चौंरा ढार।। ८।।
कोई है रे हमरे देश का। जो ध्यान धरै सुंनि शेष का।। टेक।।
तन मन मंजन करै पाख, सुनि सांई सतगुरु की साख।
सुरति कँवल परि ध्यान धारि, मीन खोज जैसे सिंधि फारि।। १।।
दिव्य दृष्टि देवा दयाल, सोहं बानी अति रिसाल।
अनरागी अनहद बसंत, तत्तदर्शी कोई लखै संत।। २।।
पद परसी परवर दिगार, गगन मंडल में निराधार।
सुरग रिसातल है अखण्ड, चढ़ि देखो संतो पवन दण्ड।। ३।।
संख भुजा मौले मुकंद, चलि देखो संतो शब्द सिंध।
जहां बरषै नूर अखण्ड धार, लखि मौले मुरशद का दीदार।। ४।।
शब्द सिंध में शब्द गाज, अनहद बाजै अति आवाज।
सतपुरुष सरवर शरीर, जहां दास गरीब खेवट कबीर।। ५।।
कोई है रे हमरे गाम का। पद चीन्हैं रमता राम का।। टेक।।
जहां अछै बिरछ आनंद रूप, सुरति निरति सोहं सरूप।
गगन मंडल दिवान आम, चलि देखो संतो अगम धाम।। १।।

तरुवर शाखा गहबर गंध, जहां झिलकैं सूरजि कोटि चंद।
समाधान संगीत सोय, जहां बिन सतगुरु नहीं मिलन होय।। २।।
सेज सुरंगी सबज भांति, जहां बिन ऋतु बरषैं सदा स्वांति।
दामनि दीरघ अजब ख्याल, जहां छह ऋतु बरषत है दयाल।। ३।।
बिना सीप मोती मुरार, बिन चिसम्यौं देखो अति निहार।
जहां मानसरोवर मुक्ति धाम, भुजा दण्ड पौंनी बियांम।। ४।।
हंस करीला अलल अंग, जहां अनहद बानी अति उपंग।
छत्र सिंघासन सेत जानि, जहां पीतांबर चिक रहै तानि।। ५।।
पल पलड़्यौं मोती जुहार, चलि अगमी ऐंनक देखि यार।
चिक अंदर मंदिर मुकाम, दास गरीब बसै शुन्य गाम।। ६।।
कोई है रे हमरे नगर का, जो भेद कहै पंथ डगर का।। टेक।।
जहां बिनहीं चरणौं सैल संत, मघ मारग जहां नहीं पंथ।
शब्द संदेशा मानि मोर, मक्रतार की लावो डोरि।। १।।
बिना भूमि का बसै देश, सहंसमुखी जाकूँ रटै शेष।
बजर पौरि पट खोल्हि देखि, बेगमपुर मूरति अनेक।। २।।
ब्रह्मनाद सरवर सरीति, चलि देखो अविगत अतीत।
गाजे बाजे दरबन धूंम, रागी राग उचारत रूंम।। ३।।
जहां शीतल शब्द निवास जोरि, चंद्र सूर अनंत करोरि।
तेज पुंज प्रकाश ऐंन, राग छत्तीसौं बजैं बैंन।। ४।।
घट मठ से न्यारा निशान, चलि देखो संतो धरो ध्यान।
सेत धजा फरकंत पारि, लखि छूछिम मूरति निराधार।। ५।।
तीन चरण हैं शेष शीश, जहां अविगत दूलह बिसवे बीस।
उलटि ग्रीव गरदन मरोरि, संख भुजा जहां लगी तोर।। ६।।
चक्र सुदर्शन आस पास, ताहि लखै कोई बिरला दास।
लीली धज परि धनुष बान, बिन सतगुरु पावै न जान।। ७।।
छिन छिन रूप धरै अनेक, नगन मगन मौले अलेख।
करि त्रिकाली अस्नान ध्यान, दास गरीब पद में बिहान।। ८।।
कोई है रे बूझै शब्द कूँ, सिर राखै सतगुरु अबद कूँ।। टेक।।
काया में कर्ता करीम, हूँठ हाथ की चंप सीम।
पद खोजें बिन है खलील, दिल दरिया में पैठि जील।। १।।
घटि बोलनहारा कौन यार, नहीं ऊँच नीच सुद्रा चमार।
गैबी बोलै गैब ख्याल, लखि रतन अमोली अजब लाल।। २।।
पद पारस पूरन बिहंग, पूर्व जनम का है सतसंग।
कंचन कांच मिलै न कोय, तन देही से भिंनि सोय।। ३।।
छाडि चल्या केतीक बार, ज्यौं कंचली गये सर्प डारि।

काया माया ना संगीत, घट के पट में अविगत अतीत।। ४।।
मन मौला सब सकल बीच, काम क्रोध की मची कीच।
सुर असुरन सब न्हात जात, सत्य शब्द बूझै न बात।। ५।।
घट बोलत बलवंत पीर, जरै मरै जूनी न सीर।
चंद उदक जैसे उजास, ऐसे घट में लिया वास।। ६।।
इच्छा बीज बिचितर खेल, घट उजियारा बाती तेल।
कौन मरै कौन जीवै जान, दास गरीब बोलत पिछान।। ७।।
जो बोलै सो अलख है। याह हाड चाम की खलक है।। टेक।।
हाड चाम का गाम खंड, पांच पच्चीसौं लगे दण्ड।
तीनि सरीकति करैं चोट, कहा खुदावै खाई कोट।। १।।
बाहरि मौहकम करै बास, घट अंदरि गहरा मवास।
जागत सोवत लूटै गाम, कहा करै बिच अलख राम।। २।।
हरि हिरदे में है हजूरि, एक पलक नहीं होय दूरि।
ज्यौं लोहे चंबक लगी प्रीत, ऐसे सतगुरु संग अतीत।। ३।।
देह खेह कूँ भूलि संत, अविगत नगरी बूझि पंथ।
असंख बेर उपजे शरीर, बिन सतगुरु को धरै धीर।। ४।।
सौ बातौं की एक बात, जूंनि धरै सो बिनश जात।
आदि अंत कूँ देख जोय, भग भोगी जीवै न कोय।। ५।।
जूंनि जनम से उलटि खेल, सतगुरु की सुन ले बलेल।
हीरा जनम न बारंबार, कित भूल रह्या भैंदू गंवार।। ६।।
श्वास खंड बिनशे शरीर, अचला गये दिगंबर पीर।
दम दरवानी ठौरि लाय, दास गरीब निजपद समाय।। ७।।
कोई है रे परले पार का। जो भेद कहै झनकार का।। टेक।।
वार ही गोरख वार ही दत्त, वार ही ध्रु प्रहलाद अरथ।
वार ही शुकदेव वार ही ब्यास, वार ही पारासुर प्रकाश।। १।।
वार ही दुर्वासा दरवेश, वार ही नारद शारद शेष।
वार ही भरथर गोपीचंद, वार ही सनक सनंदन बंध।। २।।
वार ही ब्रह्मा वार ही इन्द्र, वार ही सहंस कला गोविंद।
वार ही शिव शंकर जो सिंभ, वार ही धर्मराय आरंभ।। ३।।
वार ही धर्मराय धरधीर, परमधाम पौंहचे कबीर।
ऋग यजु साम अथरवन वेद, परमधाम नहीं लह्या भेद।। ४।।
अलल पंख अगाध भेव, जैसे कुंजी सुरति सेव।
वार पार थेहा न थाह, **गरीबदास** निरगुण निगाह।। ५।।
अविगत गति जानै न कोय।
सब खेलै मुनि जन ज्ञान गोय।। टेक।।

ज्ञान गोय में भूल भार, जहां खेलै चौबीसौं अवतार।
धरनि धरा जहां नहीं रात, जीव जूंनि की कहा बात।। १।।
सलल पंथ जहां बिकट घाट, दरस परस नहीं झीनी बाट।
कोटि सुंनि कूरंभ ध्यान, जहां अविगत नगरी अवादान।। २।।
निरख परख प्रतीत आनि, नेरे ही से निकटि जानि।
सोहं सुरति समूल मूल, अछै बिरछ जहां गहबर फूल।। ३।।
आदि अंत परलो न पाल, त्रिकुटी झलकंत अजब लाल।
सौ करोरि सूरज सुभान, त्रिकुटी कँवल में उगे आन।। ४।।
को जानत यौह भेव भाव, ज्ञान गोय की परी चाव।
कोटिक ब्रह्मा रहे भूलि, ज्ञान गोय की मची झूल।। ५।।
कोटिक शंकर तप उचार, कोटि सरस्वती खड़ी द्वार।
कोटिक विष्णु बिलास रूप, उपजी बाजी सकल सूप।। ६।।
सुरग भिसति बंचे सो जीव, अनरागी रंग रते पीव।
मुक्ति महौला भक्ति रीत, **दास गरीब** सतगुरु अतीत।। ७।।

भगल विद्या भगली खियाल। इहां जम जौंरा के परे जाल।। टेक।।

जामन मरन संताप सोग, जगत ठगौरी दीरघ रोग।
एक मढ़ी मसानौं धरे जाय, एकौं ढोल बजाये आय।। १।।
एक धन संचत हैं राजा रीति, एक कुल त्यागि भये अतीत।
एक गिर चढ़ै गलीचै आसि, कामनि कीर रहैंगे पासि।। २।।
उरधमुखी पंच अग्नि भंड, मन के अस्तल नोऊ खंड।
कहां नगर कहां बन बैराग, जो मन मनसा करै न त्याग।। ३।।
पंच गिरासी नगन नाग, बांबई सर्पा बनौं बाघ।
नखी नरायण लख्या नांहि, उलटि पुलटि चौरासी मांहि।। ४।।
मन मनसा में संसा शोग, नाम बिना है झूठा जोग।
कुल करनी कूरा करार, बिना भक्ति नर मुखौं छार।। ५।।
आशा पासा काटि फंध, साध संगति बिन सकल दुंद।
मुरजीवा मन रहे मारि, जिन सतगुरु चीन्ह्या शब्द सार।। ६।।
शाला कर्म शरीर तोय, आनि मंडी है ज्ञान गोय।
जे जीतै तो जनम जीति, कहै दास गरीब मिलि सांईं सीति।। ७।।

एक बालक खेलैं नंद पौरि। शिवशंकर ध्यान धरैं गौरि।। टेक।।

ब्रह्मा विष्णु नारद नरेश, सहंसमुखी जा कूँ रटत शेष।
रूंम रूंम में ररंकार, शेष गणेश न लहैं पार।। १।।
सनकादिक सब धरैं ध्यान, संख जुगन जुग पद प्रवान।
इन्द्र कुबेर वरुण बीर, आदि भक्ति है धर्म धीर।। २।।
ध्रू प्रहलाद अगाध चीन्ह, कागभुशंडा ब्यास लीन।

मारकंड रूमी रटंत, वशिष्ठ मुनी गावै बसंत।। ३।।
गोरख दत्त हनू हजूरि, शुकदेव लछमन नाद पूरि।
सोई अजुध्या राम देव, कृष्णचंद भये भक्ति भेव।। ४।।
नामदेव पीपा **कबीर,** एक पुरुष विदेही बिन शरीर।
नौलख बोडी ढुकी आन, केशव बनजारा पद प्रवान।। ५।।
मगहर झगड़ा रोप्या आनि, जहां आये हिंदू मुसलमान।
चद्दरि फूल सिज्या बिछंत, जहां पाये नहीं कबीर संत।। ६।।
रुकमनि सीता का औतार, संग खेलन आई बारंबार।
माया चेरी आदि अंत, सोलह सहंस न पाया मंत।। ७।।
शंख चक्र गदा पदम ऐंन, बंसी बजाई कमल नैंन।
पीतंबर का अजब साज, तीनि लोक मुरली अवाज।। ८।।
मेहे सुरनर मुनिजन गऊ धैंन, जमना जल कूँ सुने बैंन।
पशु पंछी और बिरछ थीर, बछरा पीवत नहीं खीर।। ९।।
मुरली मधकर अजब साज, चौदह भुवन जाकी अवाज।
अस्थिर शेष गणेश थीर, नदिया थाके सकल नीर।। १०।।
मोहे चंद सूर पानी पवन, मुरली सुनी चौदह भुवन।
कोटि भान वर्षंत नूर, सुंदर मूरति हाजिर हजूरि।। ११।।
कच्छ मच्छ कूरंभ औतार, बाराह भये नरसिंघ मुरारि।
बावन रूप किया प्रवेव, परशुराम भये राम देव।। १२।।
सतगुरुष अविगत अधार, जा का पावत नहीं पार।
संख ब्रह्मण्ड जा के अजब ख्याल, **गरीबदास** नजरी निहाल।। १३।।

सुख सागर सिंधु अखण्ड नाद।
जा कूँ सुरनर मुनिजन रटैं साध।। टेक।।

ब्रह्मरन्ध्र के बिकट घाट, कैसे खूल्हैं दर कपाट।
पवन दण्ड खूल्हैं द्वार, जहां सुरति निरति के लगैं तार।। १।।
कलबिरछ कला छ्याया अलील, जहां पग नहीं टिकते हैं पपील।
सहंसमुखी जहां बहै गंग, कुछ अविगत लीला अति तरंग।। २।।
संख कला सरवर अमान, जहां पलपल परबी है स्नान।
बिन मुख बानी अजब बैंन, बिन ब्याई दूझै कामधैंन।। ३।।
जहां ताल बरदंग अगाध भेरि, मुरली की सुनियें अधक टेर।
जहां झालरि झांझि अखंड तूर, कानून बजैं हरदम जहूर।। ४।।
जहां अधरि अनाहद बजैं शंख, जहां भँवर उड़त हैं बिना पंख।
सहनाई लफीरी अति उपंग, चलि देखो संतो रास रंग।। ५।।
मानसरोवर मुक्ति धाम, जहां हंस निरालंब जपैं नाम।
अर्ध चन्द्र सूरज समूल, जहां संख वर्ण के गगनि फूल।। ६।।

अछै बिरछ फल समाधान, जहां दौंना मरुवा पद प्रवानि।
अटल तखत है अधरि धार, जहां खड़े खवासी कामदार।। ७।।
जाके पेट पीठ नहीं चरण शीश, संख भुजा गिरद गता ईश।
मुकट झिलमिला छत्र सेत, शिव ब्रह्मा गावैं नेत नेत।। ८।।
संख पदम झिलमिल अपार, जहां निरबानी पद निराधार।
सेत धजा फरकैं निशान, चलि अविगत नगरी अवादान।। ६।।
रूमी ऋषि और मारकंड, भरमें नारद कागभुशंड।
कागभुशंडा उड्या जात, रामचंद्र कर शीश हाथ।। १०।।
संख सुर इन्द्र एक ओर, संखौं ब्रह्मा शिव करोरि।
शेष सहंसमुख ररंकार, जिनहूँ नहीं पाये वार पार।। ११।।
बंकापुर गढ़ बंगी पौरि, संख जनम जुग भरमी गौरि।
अठोतरि जनम शिव संग साथ, तो जीव जूंनि की कहा बात।। १२।।
तन मन मेरा धरै न धीर, जिस पंथ गये सतगुरु कबीर।
गगन मंडल में अधर वास, पग कैसे धरिये **गरीबदास**।। १३।।

अथ राग धमार

ऐसी काया में होरी खेलिये हो,
आहो मेरे साधो सनकादिक आये हैं चाहि।। टेक।।
ब्रह्मा विष्णु महेसर आये, नारद शुकदेव व्यास।
ध्रू प्रहलाद विभीषण आये, फगुवा खेलन की आश।। १।।
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, शेष सहंस फुनि साटि।
गोरख दत्त दिबंगर जोगी, उतरे हैं औघट घाटि।। २।।
कारतग स्याम गणेश रु गौरा, लछमी लील अलील।
सावित्री ब्रह्मा की दासी, गावै हैं सुर भरि जील।। ३।।
कोटिक अनभै पाठ पढ़त हैं, कोटिक छंद अछंद।
कोटिक सूरजि करै आरती, कोटि कर जोरैं चंद।। ४।।
सुलतानी बाजीद, फरीदा भरथरी गोपीचंद।
काया नगर में फगुवा खेलैं, काटै जम किंकर के फंध।। ५।।
धन्ना सुदामा पीपा आये, नामदेव और रैदास।
नानक दादू खेलत संतो, सतगुरु तखत के पासि।। ६।।
उड़त गुलाल बिसाल बिसंभर, रिमझिम रिमझिम रंग।
अगर अबीर कबीर खवासा, जम जौंरा जीतन जंग।। ७।।
सुंनि विदेही शब्द सनेही, अविगत गति कुरबान।
केसर की पिचकारी छूटैं, शिव ब्रह्मा खेलैं हैं आनि।। ८।।
अनंत कोटि संतन का फगुवा, मुनिजन मारग मांहि।

याह काया काशी अविनाशी, दास गरीब सरनांहि।। ६।। १।।

ऐसी काया का लाहा लीजिये हो।
आहो मेरे साधौ तन मन धन अरपन कीजिये हो।। टेक।।

पांवर के प्रतीति नहीं है, भाव भक्ति नहीं हेत।
वर्षा सेती निपजत नाहीं, ज्यों कालर का खेत।। १।।
या तन बारू की गांठि बंधी है, होयगी छारमछार।
या तन देही का लाहा लै रे, दीजैगा पिंडा जारि।। २।।
संगति मांहि कुसंगति उपजी, जैसे बन में बांस।
आपा घसि घसि अग्नि उपाई, कीन्हा है बन खंड नाश।। ३।।
परब्रह्म का ध्यान नहीं है, ना संतन से प्रीति।
शील संतोष विवेक न आया, लूटि लिये विपरीति।। ४।।
राम नाम का बीज न बोया, बाई बकैं असंभ।
घट में सूल बबूल बोये हैं, कित से चाखैंगे अंब।। ५।।
आशा तृष्णा मनसा डोलै, मन भरमें चहूँ ओर।
जा तन शब्द बेधता नाहीं, पापी है कठिन कठोर।। ६।।
भसमासुर तो भसम भया है, शिव सतगुरु दरबार।
सघड़ भगीरथ गंगा ल्याये, छूटी सहंसमुख धार।। ७।।
हिरनाकुस और रावण राजा, कंश केशि चानौर।
पारब्रह्म की निंदा कीन्ही, ठाढे है जम की पौरि।। ८।।
कुंभकर्ण शिशुपाल सारखे, दुर्योधन कूँ देख।
ग्यारह खूहनि खोज न पाया, ज्यौं धूंमे की रेख।। ६।।
छप्पन कोटि गये हैं जादौं, छह चकवै भये नेश।
पारब्रह्म का ध्यान धरो रे, गावैं हैं शंकर शेष।। १०।।
ब्रह्मा ध्यान धरैं निश वासर, सनक सनंदन लीन।
षट्दर्शन तो गया खरच में, भूले हैं दोन्यौं दीन।। ११।।
नारद ब्यास और शुकदेवा, बिचरे कागभुशंड।
नामदे नाम कबीर भजो रे, दोही हैं नौ खण्ड।। १२।।
ध्रू प्रहलाद अगाध रटत है, पीपा और रैदास।
गोरख दत्त अमर अविनाशी, पाया अविचल वास।। १३।।
अजर अमर अविनाशी पद है, लावो सुरति कमंद।
गरीबदास गलतान भये हैं, साखी हैं सूरज चंद।। १४।। २।।

ऐसी काया में करता पाईये हो।
सतगुरु के शरनैं आईये हो।। टेक।।

जिनि तोकूँ नर देही दीन्हीं, साहिब भये दयाल।
जा तालिब की करो बंदगी, काटैं जम के जाल।। १।।

पांच तत्त और तीन गुनन का, पिंजर बन्या शरीर।
जा साहिब की मैं कुरबानी, साज्या जल पिंडा नीर।। २।।
नैंन नाक मुख द्वारा देही, चरण भुजा दिये शीश।
आत्म और परमात्म तन में, अंतरि है जगदीश।। ३।।
सेत मुकट और सेत छत्र है, अजब रंगीले नैंन।
अनहद वाणी कहै बिनानी, सुनियों जाके बैंन।। ४।।
अकल अखंड पिंड नहीं जाकै, पौहप गंध से झीन।
त्रिकुटी ऊपरि दर्श तास का, धरि ऐंनक दुरबीन।। ५।।
पान पान और डार डार में, मूल फूल प्रकाश।
रूंम रूंम में रमता साहिब, जानै कोई बिरला दास।। ६।।
कच्छ मच्छ कूरंभ धौल धर, रूंम रूंम परि देख।
अनंत कोटि ब्रह्मण्ड तास के, जा का नाम अलेख।। ७।।
शेष सहंस मुख करै आरती, ब्रह्मा पूरैं नाद।
शिव शंकर जा की सिपति लखी है, कोई जन बिरले साध।। ८।।
गगन शीश पताल चरण हैं, संपटि नहीं समाय।
नैंनों अंदरि आव पियारे, हिरदे राखौं बिरमाय।। ९।।
रूप न रेख बरन बपु नाहीं, सूरति मूरति ऐंन।
पल पल तुम्हरा ध्यान धरत हूँ, देखे ही सुख चैन।। १०।।
अधरि बसंता है महमंता, मुरली बजै अखंड।
शुन्य विदेशी सकल समाना, गूंजे पिंड ब्रह्मण्ड।। ११।।
सुरति निरति की तारी लावै, मन पवना पद लीन।
गरीबदास निज नाम अधरि है, जानै सतगुरु प्रबीन।। १२।। ३।।

पद रतन अमोली सेईये हो,
आहो मेरे देवा भौसागर नौका खेईये हो।। टेक।।

काम क्रोध की नदी बहत है, लोभ मोह जामें कुण्ड।
हर्ष शोग संसे के सर में, भँवर परैं प्रचंड।। १।।
आशा तृष्णा तन कूँ चीरैं, दुःखी होत है प्रान।
नर देही ऐसे भर्मत है, जैसे भटकत श्वान।। २।।
मनसा नारी अति बिभचारी, मन जा का भर्तार।
तीनि लोक और भुवन चतुर्दश, डोलत है घर बार।। ३।।
पांच पच्चीस तीनि तन व्यापक, राग दोष दो मांहि।
मन भवंग जहां डंक लगावै, बड़ ज्ञानी बह बह जांहि।। ४।।
ज्ञान का अकुंस शीश लगावै, धरो ध्यान की धूप।
मन गयंद कूँ पाकरि लै रे, देखो नैं अपना रूप।। ५।।
दरवन धूम जिस द्वारि होत है, सपतपुरी के पाठ।

ब्रह्म शब्द निहतंती सुनि करि, पकरो नैं दुरजन आठ।। ६।।
बीना ताल पखावज सुनिये, सुरति निरति धुंनि ध्यान।
ब्रह्म शब्द जहां फूल झरत है, पीवत रस अमृत पान।। ७।।
पांच तत्त और तीनि गुनन का, कीजो कलप शरीर।
गरीबदास सतगुरु सौदागर, भेटे हैं पुरुष कबीर।। ८।। ४।।
म्हारे शुन्य विदेशी आईये हो। जम जौरा की बंध छुटाईये।। टेक।।
दूरि दिशंतर अंतर नाहीं, रह्या सकल भरपूर।
हम नेरे से नेरे पाया, कौन बतावै दूर।। १।।
कोटि जगि अश्वमेध करत हैं, कोटिक परबी न्हान।
कोटिक काशी करवत लेहीं, पाया नहीं अविगत थान।। २।।
कोटिक तीरथ व्रत करत हैं, कोटि करैं पुनि दान।
कोटिक जप तप संजम करि हैं, पाया नहीं पद निरबान।। ३।।
उर्ध मुखी पंच अगनी तापैं, आसन पदम लगांहि।
दूधा धारी अन्न प्रहारी, जम कै पकरे जांहि।। ४।।
जल सिज्या निश बासर करि हैं, झरनैं बैठे आये।
धूमरि पान करैं दरवेशा, जम किंकर गुरजां खाय।। ५।।
अनंत उपास तरास तन देही, जीमें पंच गिरास।
जड़ के आगै घंट बजावै, जिन का जमपुर बास।। ६।।
उलटि कपाली आसन लावैं, जिन कूँ कछु न लाभ।
कसतूरी है नाभ कँवल में, मिरग ढिंढौरे डाभ।। ७।।
मूंड मुंडाय भस्म तन लावैं, जटा बधावैं केश।
ऊँचे आसन मुंद्रा पहरैं, नहीं सतगुरु उपदेश।। ८।।
तप से राज राज से नरका, बहुरि भये है श्वान।
भक्ति मुक्ति का राह अगम है, सतगुरु देवै दान।। ९।।
पृथ्वी की प्रदछिना देवैं, जाय बसैं बैकुण्ठ।
जूनी संकट मोछि नहीं है, लख्या न अविचल मंठ।। १०।।
श्वासा पारस परसै नाहीं, जप्या न अजपा जाप।
अनंत उपंग किये मन बौरे, मिटे न तीन्यूं ताप।। ११।।
बैरागर की खानि कहां है, क्या पारस की भेट।
गरीबदास अविगत पद परसे, सब सेठन के सेठ।। १२।। ५।।
अविनाशी दूलह देखिये हो।
जम जौरा के कागज छेकिये हो।। टेक।।
कच्छ मच्छ कूरंभ शेष लग, सबही तुम्हरा अंग।
ब्रह्मा विष्णु महेश तुंहीं है, आन चुवाया रंग।। १।।
जल बूडै नहीं अग्नि जरत है, अविगत अकल अमान।

चंद सूर और पावक पानी, रचे जिमी असमान।। २।।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, सब तुम्हरा प्रवेह।
तेतीस कोटि और सहंस अठासी, बाढ़े अधक सनेह।। ३।।
अष्टकुली पर्वत पाषाना, और अठारह भार।
अचराचर में ब्यापक है रे, खेलै सिरजनहार।। ४।।
अष्टकुली सब नाग बखानों, जल थल सागर सात।
साढे तीन करोरि नदी हैं, सब नाथन का नाथ।। ५।।
गगन मंडल तारायन तूं है, सिरजे कीट पतंग।
थावर जंगम जूंनि बनाई, खेलत है बहु रंग।। ६।।
सुर नर मुनि गन गंधर्व ज्ञानी, सिरजे पुरुष अरु नार।
आदि पुरुष तेरी ऐसी माया, पराशक्ति आधार।। ७।।
लख चौरासी जाति बनाई, न्यारी न्यारी भांति।
सकल समुद्र हीरा नाहीं, मोती निपजै स्वांति।। ८।।
एक रतन के संख रतन हैं, संख रतन का एक।
गरीबदास रवि किरनि सबतरि, जैसे सूरज देख।। ९।। ६।।
अविनाशी दूलह केशवा हो, कौन तुम्हारै पेशवा हो।। टेक।।
ब्रह्मा विष्णु महेश रटत हैं, शेष सहंसमुख ध्यान।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, गावैं तुम्हरा ज्ञान।। १।।
नारद शारद रटैं तास कूँ, सनक सनंदन सेव।
सुर नर मुनि गण गंधर्व ध्यावैं, सब देवन का देव।। २।।
तेतीस कोटि और सहंस अठासी, ध्यान धरैं सब साध।
अविगत की गति किन्ही न पाई, लीला अगम अगाध।। ३।।
पांच तत्त और तीनि गुनन का, कीन्हा जगत निवास।
सूरज चंद खवासी करि है, रटते धरनि अकाश।। ४।।
ध्रू कूँ नाज तीन पा मिलता, माता संग सुनीति।
अटल जु पदई दई पुरुष कूँ भाव भक्ति प्रतीति।। ५।।
जे तुझ राज पाट कुछ चहिये, पारब्रह्म धर ध्यान।
इन्द्रपुरी प्रहलाद कूँ दीन्हीं, हिरनाकुस मारे आन।। ६।।
साठि हजार वर्ष तप कीन्हा, ब्रह्मा का आधीन।
नरसिंघ रूप धर्‍या नारायण, लीन्हा सब तप छीन।। ७।।
बलि ने जगि अश्वमेध पुराजी, कीन्हा राज उपाव।
सो तो ले पताल पठाया, ऐसे त्रिभुवन राव।। ८।।
बावन रूप छले बलि राजा, बलि कीन्हा चित्त भंग।
त्रिलोकी की तीनि पैंड है, फिर माप्या पिण्डा अंग।। ९।।
पीपा और रैदास नामदेव, मांझी मुकट कबीर।

जा कै नौ लख बोडी आई, केशव सेती सीर।। १०।।
स्यौरी जाति भीलनी होती, जाके पाये बेर।
गरीबदास तजि काठ की माला, मन का मनिया फेर।। १६।। ७।।
सुखसागर सिंध समाईये हो। गुण इन्द्री नाद मिलाईये हो।। टेक।।
मुख तो करै ईशान कूँट कूँ, सिद्ध आसन कर बैठ।
प्रथम आदि गणेश मनावो, मूल कँवल में पैठ।। १।।
नौ तत्त के तो पांच तत्त हैं, पांच तत्त के तीनि।
तीनि तत्त का एक तत्त है, लेह काया में चीन्हि।। २।।
पांच पच्चीस तीनि का पिंजर, जा में पंछी प्रान।
अछै बिरछ में बासा लै रे, यौह तन झूठा जान।। ३।।
समाधान में सुरति समोवै, झूठी तन की आश।
नदी संग बिरछ नारि संग पुरुषा, जब तक होय बिनाश।। ४।।
नाभ कँवल में श्वास बास है, हिरदे कँवल मन जान।
कंठ कँवल से नाम जपो रे, धरि त्रिकुटी कँवल पर ध्यान।। ५।।
जहां सहंस कँवल दल फूलि रहे हैं, दर्शन दशमें द्वार।
गरजैं सिंध फंध सब टूटै, शब्द महल झनकार।। ६।।
सहंस कँवल परि एक कँवल है, महिमा कही न जाय।
अललपंख का मारग है रे, चढ़ै सो देखै ताहि।। ७।।
गुण इन्द्री मन नेश होत है, प्रान होत पद लीन।
जगर मगर जहां दीप करत हैं, बाजै अविचल बीन।। ८।।
संख कमल जहां संख पदम है, संख तूर और नाद।
झांझि शंख डफ झालरि बाजें, बटैं अखै प्रसाद।। ९।।
सुख का सागर पद रतनागर, हरदम सुनों अवाज।
गरीबदास अविनाशी पद है, भक्त बछल का राज।। १०।। ८।।
रघुनाथ आये जानिये हो,
आहो पीया रावण तुम्ह बचन हमारा मानिये हो।। टेक।।
जिनहि ये पिंड ब्रह्मण्ड रचे हैं, सो सब का करतार।
आदि पुरुष देवन का देवा, धरि आये औतार।। १।।
जिन्ह की सीता तुम हरि ल्याये, मानी कछु न शंक।
राजा राम दल साजि चढ़ैंगे, तेरा तोरेंगे गढ़ लंक।। २।।
काले रीछ रु भूरे बंदर, दल बल वार न पार।
तेतीस कोटि की बंधि छुटावन, आये सिरजनहार।। ३।।
चीत मताले मुख रतनाले, ल्याये सैना जोरि।
अठारा पदम लंगूर बंदर हैं, जाकै रीछ बहत्तरि कोरि।। ४।।
जा कै सूरे सावंत लील पदम हैं, दल बल गिनती नांहि।

वै देखो पचरंग निशाना, सेत धजा फररांहि।। ५।।
बांध्या सेतु खेत के पूरे, सेना उतरी वार।
तीन लोक और भुवन चतुर्दश, चढ़ि आये सात कंधार।। ६।।
जांबवान से जोध्या दम में, अंगद और सुगरीम।
नल और नील हजूरी चाकर, चंपैंगे गढ़ की सीम।। ७।।
हनुमान से पायक जाकै, उड़ता बिनहीं पंख।
नौलख बाग उपारि बहाया, तेरा फूकि दिया गढ़ लंक।। ८।।
सपत कोटि जोध्या मजलसि में, सावंत सूर अनंत।
चरण चंच कर शिला फिराई, पाया नहीं अंगद अंत।। ९।।
कहै मंदोदरि सुनि पिया रावण, सुनो बचन प्रसंग।
गरीबदास अविनाशी सेति कैसे जितौगे जंग।। १०।। ६।।

गिरह आसन बांधौ जोगिया हो,
तुम सब रस के रस भोगिया हो।। टेक।।

पारब्रह्म से कौन बड़ा है, असतल बंध बिलास।
ब्रह्मा विष्णु आश्रम माहीं, शिव का घर कैलाश।। १।।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, चार्यौं असतल बंध।
ज्ञान ध्यान लीला गुण गावै, जाय बसै सुख सिंध।। २।।
माता रैंनका पिता जमदग्नि, परशुराम कूँ देख।
छत्री मारि निःछत्री कीन्हे, चीन्ह्या पद पुरुष अलेख।। ३।।
रामचंद्र आश्रम माहीं, पुरी अजुध्या बास।
तीन लोक जा की ठकुराई, सीता दुलहनि पास।। ४।।
दत्तात्रेय आश्रम माहीं, माता अनसूया जाहि।
हनुमान आश्रम मांहीं, अंजनी जाया ताहि।। ५।।
बावन औतार आश्रम माहीं, माता जानि अदिति।
सो बावन बलि द्वारै ठाढ़े, मानों शब्द हमारा सति।। ६।।
कृष्णचंद्र आश्रम माहीं, द्वारामती नरेश।
खीर समुंद्र में जाय पौहढ़े, सहंसमुखी जहां शेष।। ७।।
सुरनर मुनिगण गंधर्व ज्ञानी, आश्रम लोक बंधान।
कागभुशंड आश्रम मांहीं, नारद से सुरज्ञान।। ८।।
सहंस अठासी और तेतीसौं, किया महंदर बास।
जेते तन तेते ही मन हैं, घट घट ब्रह्म निवास।। ९।।
व्यास पुत्र शुकदेव कूँ पूछो, आश्रम पकर्या जाय।
लई जंबाही घट में पैठ्या, कमले गंधि समाय।। १०।।
स्थावर जंगम दोय जूंनि हैं, अचराचर कूँ देख।
लख चौरासी आश्रम माहीं, बूझो शब्द विवेक।। ११।।

प्राण पुरुष का आश्रम तन है, तन का आश्रम कीन्ह।
पांच पच्चीस आश्रम माहीं, गरीबदास गुन तीनि।। १२।। १०।।

अथ राग होरी

कोई बांचै वेद विज्ञाना भईया रे, कोई है रे।
कहां पूजैं जड़ पाषाना भईया रे, कोई है रे।। टेक।।
जाकूँ शेष महेशर ध्यावैं, जाकूँ नारद ब्रह्मा गावैं।
सनकादिक पार न पावैं, अनहद धुनि ध्यान लगावैं।।। १।।
जाकूँ सिद्ध चौरासी खोजैं, जाकूँ मुनि तेतीसौं रोधैं।
तुम्ह पढ़े अठारह बोधैं, कसि बांधै गांठी बोझैं।। २।।
जाकूँ नौ औतार हिराना, जिन्हि शब्द महल नहीं जाना।
वै तो चूके लोक ठिकाना, नहीं पाया देश दिवाना।। ३।।
जाके संख पतालौं चरनां, जाका शीश गगनि शुन्य अरनां।
जाके रूप रेख नहीं बरनां, सो तो नहीं वृद्धा नहीं तरनां।। ४।।
जाके अर्श गगनि में मठ री, तुम्ह खोजो काया घट री।
जाके अठसठि तीरथ ठठरी, सो कैसे बंधै गठरी।। ५।।
तुम्ह छाडो झगरा झांटी, सोई तुरसी सोई जांटी।
बानी हमरी बांठी, कैसे बांधे करता गांठी।। ६।।
यौह तो अठार भार बनमाली, देखो खालिक बिन नहीं खाली।
जड़ जंग बजावो टाली, ऐसे जाय परो जम जाली।। ७।।
तुम्ह साधुन कूँ द्यौह गाली, ऐसे बूडो धारा काली।
तैं जड़ से लाई ताली, कीजो गुरू नजरि निहाली।। ८।।
औह तो निरभै निरगुन देवा, औह तो अविगत अलख अभेवा।
जन दास गरीब पद सेवा, कोई पौंहचे संत परेवा।। ९।। १।।
सति मानों शब्द हमारा भईया रे, कोई है रे।
तेरे दिल अंदरि दीदारा भईया रे, कोई है रे।। टेक।।
उहां तो तेज पुंज की गादी, जहां शब्द अतीत समाधी।
ना जहां वाद विवादी, कोई भगल विद्या नट साधी।। १।।
चलि मानसरोवर न्हाना, जहां सतगुरु पद प्रवाना।
कहां बांचै वेद पुराना, ना जहां ज्ञान न ध्याना।। २।।
बांधो मन का मुकट विशाला, जहां सुरति सुहंगम माला।
खोल्हि त्रिकुटी ताला, पीवो अमीरस प्याला।। ३।।
धरि प्रेम पौहप पनवारा, जहां प्रीति की पाती सारा।
तूं छाडि अचार बिचारा, समझे नहीं मूढ़ गंवारा।। ४।।
अब कीजो राम ससोई, द्यौ बीज भक्ति का बोई।

मति अगली पिछली खोई, पद चीन्है सो बिसनोई।। ५।।
तत्त तिलक करि टीका, यौह त्यारन तेरे जी का।
जप तप संजम फीका, कहा साखि शब्द पढ़ि सीखा।। ६।।
जहां अमृत भोजनहारा, जीमैगा हंस तुम्हारा।
जहां अनहद शब्द गुंजारा, जहां तत्त शब्द झनकारा।। ७।।
खोजि शब्द अनरागी, जे तूं है बड़भागी।
कहै दास गरीब बिहागी, पद खोजै सो बैरागी।। ८।। २।।
तेरे दर्पण दाग लग्या रे भईया रे, कोई है रे।
जड़ पाहन जगत ठग्या रे भईया रे, कोई है रे।। टेक।।
जे जूं ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया, तो आन बाट क्यौं न आया।
तैं घाल्या कंध जनेऊ, तूं भूल्या बाट बटेऊ।। १।।
कँवल तुम्हरा मूधा, एकै जननी सब दूधा।
है सब हाड चाम मल गूदा, या में को ब्राह्मण को सूदा।। २।।
तैं भेद न जान्या धुर का, सब एक चाम तन बुरका।
तैं ज्ञान न पाया गुरु का, या में को हिंदू को तुरका।। ३।।
सब एक चाम मल धीरा, या में को चेला को पीरा।
तुम छानों नीर अरु खीरा, होगा घर चौड़ हदीरा।। ४।।
क्या अठसठ तीर्थ न्हाये, द्वारा के दाग दगाये।
जहां रहते अनगिन मीना, जिन्हि झींमर कूँ गल दीन्हा।। ५।।
बहु विधि भिंनि अचारी, यौह झूठा खेल जुवारी।
सतनाम गरीब सहाई, घटि मूसे खाहि बिलाई।। ६।। ३।।
आज हमारे रंग संत समागम है रे, आज हमारे रंग।। टेक।।
कथा कीर्तन गावन ध्यावन, बौहत सुनें प्रसंग।।
मन की कुटिलता छूटत नाहीं, यौह मन बसै भवंग।। २।।
दिल दरिया में भँवर परत हैं, उठैं अनंत तरंग।।
त्रिकुटी महल में जाय बसो रे जहां बहै सहंसमुख गंग।। ४।।
कहा कहूँ कछु कही न जाई, मूरति अचल बिहंग।।
अर्श पियाले सद मतवाले, काहे कूँ घोटो भंग।। ६।।
कहै दास गरीब मिटै सब झगरा, करो साध सतसंग।। ७।। ४।।
बरन बरन के तेज फूल फुहारे छूटै।। टेक।।
उस रंगी के रंग अनंत हैं, झिलमिलिया रंगरेज।।
कामधैंन कलबिरछ बिराजैं, सब बातन की रेज।। २।।
त्रिकुटी दरीबै डेरा लीजै, जहां ब्रह्मरंध्र का बेझ।।
दास गरीब नूर भरपूरा, चलि सतगुरु की सेज।। ४।। ५।।
बहु विधि मीना कारी। हो हो हो होरी,

पासे तीन पकरि कर खेलो, जीतो सोलह सारी।। टेक।।
सुरति निरति मन पवन पदारथ, ये देवा दरबारी।
ऊँकार भंडार महल है, सोहं शुन्य अटारी।। १।।
गगन मंडल में भाठी सरवै, प्याला देत कलारी।
बिन सिर के औह प्याला पीवैं, शीश काटि धरि जारी।। २।।
पीवत ही मन चढ़ै गगन कूँ, उतरत नहीं खुमारी।
या मध की मोहि छाक परी है, चोखा फूल चवारी।। ३।।
एक रती भर राम रसायन, तीन लोक अधिकारी।
मधुवा लिया चुराय पड़ौसन, कैसे जीवौं मारी।। ४।।
दूती एक महल के मांहीं, है सो मनसा नारी।
मन मंगल जहां न्हाता नाहीं, जा कूँ लागे खारी।। ५।।
ऐसा ख्याल पड़ौसन कीन्हा, अमृत विष करि डारी।
मन मंगल कूँ मीठा लाग्या, ताहि लिया चुचकारी।। ६।।
रतन अमोली हाजरि नाजिर, मूल फूल बिन डारी।
दिल साबूत दरीबै जाही, पीवत है सिर डारी।। ७।।
नैनों में निरखि परखि करि देख्या, सांवलिया गिरिधारी।
कोटि कला कलधूत कलंदर, लागि रही तिल तारी।। ८।।
यौह संसार हाटि का लेखा, सौदागर व्यौपारी।
दास गरीब बनज भल कीन्हा, लादी लौंग सुपारी।। ९।। ६।।
सुरति निरति से झीना। कछू नजरि न आवै,
पट्टन घाट परम पद पैडी, उतरैंगे प्रबीना।। टेक।।
शब्द महोदधि गरजत है रे, दिल दरिय दुरबीना।
पाख महोबति लाय पुरुष से, स्वाफ करो तन सीना।। १।।
कुंभक रेचक राम रसायन, उलटी पवन चढ़ीना।
अर्थ धर्म और काम मोक्ष होंहि, कारज सकल सरीना।। २।।
जनम जौहरी कै घर पाया, परखि लाल दुरबीना।
तीन लोक का राज दिया तो, सुरपति कहा कमीना।। ३।।
गर्व गुमान दूरि करि बौरे, याह तो बात भली ना।
आधीनी की राह पकरि लेह, होय रहु सब से हीना।। ४।।
बड़ै बड़्यों तो मूल गंवाय, छोटे भर्‍या करीना।
कामधेनु काया कै माहीं, अमृत दुहि करि पीना।। ५।।
तन के योगी मन के भोगी, इन्द्री नहीं कसीना।
सुरति निरति दरबारि हंसनी, महलों नहीं धसीना।। ६।।
जे सिर जाय सिरड़ नहीं दीजै, यौह पद अजर जरीना।
सतगुरु सार वस्तु बतलावे, पारस लौह घसीना।। ७।।

दर्दबंद दरवेश समझि हैं, मूरख खांहि कलीना।
जिन्ह कूँ तो दीदार कहां है, आत्म बिरह जरीना।। ८।।
रूंम रूंम में द्वार देहरी, जैसे अंग पसीना।
ऐसे ररंकार रटि बौरे, सोहं नाद सुसीना।। ९।।
मानसरोवर के जल न्हावों छाडौ मकर महीना।
ब्रह्मा विष्णु खवासी करि हैं, गरीब दास कह दीना।। १०।। ७।।

अलल का ध्यान धरौ रे, चीन्हों पुरुष विदेही।। टेक।।
उलटि पवन रेचक करि राखो, काया कूंभ भरौ रे।
अडिग अमांन अडोल अबोलं, टार्‌यौं नांहि टरौ रे।। १।।
बिन सतगुरु पद दरशत नाहीं, भावै तिहूँ लोक फिरौ रे।
गुण इन्द्री का ज्ञान परेरो, जीवत क्यों न मरौ रे।। २।।
पलकौ दा भौरा पुरुष बिनानी, खोटा करत खरौ रे।
कामधेनु दूझै कलवारनि, नीझर अजर जरौ रे।। ३।।
कलविष कुसमल बंधन टूटैं, सब दुःख व्याधि हरौ रे।
गरीबदास निरभै पद पाया, जम से नांहि डारौ रे।। ४।। ८।।

बोलत है किस डारी, मेरी श्याम कोइलिया।। टेक।।
याह दुनिया सब काग अधम है, बानी अजब तुम्हारी।
चिसमें लाल गुलाल बने हैं, नैनों बीचि खुमारी।। १।।
बुगल सपेद भेद क्या भाई, तूं कोयल क्यों कारी।
जिगर पाटि झिंझर भया मेरा, तूं बिरहनि उड़ि जारी।। २।।
औषद मूल लगै नहीं मन कै, हम हैं बिरह अजारी।
सतगुरु एक हकीम हमारे, ताहि दिखावां नारी।। ३।।
बाजत शंख झांझि डफ झालरि, तुरही तूर तुतकारी।
कमल केतगी महकि रहे हैं, उजल भँवर भनकारी।। ४।।
बोलत मोर चकोर पपीहे, सूवै चंच सवारी।
मानसरोवर हंस कतूहल, मोती चुगत अहारी।। ५।।
चोवा चंदन अगर कुंमकुंमा, केसरि की पिचकारी।
गगन मंडल में रास मच्या है, फगुवा दे गिरधारी।। ६।।
बिन पग नटुवै नाच कछ्यौ है, बिन कर बाजैं तारी।
बिनहीं मुख जहां राग होत है, समझत नहीं अनारी।। ७।।
देखो अर्श कमोदनि फूली, चंदा लई उगारी।
संख भान जाके नख की शोभा, कोटि पदम उजियारी।। ८।।
चलि बेगमपुर देश दिवाना, फूलन सेज संवारी।
महल की महिमा बरनि न जाई, झिलमिल रंग अटारी।। ९।।
जगर मगर जहां दीप करत है, आसन अधरि अधारी।

गरीबदास सतलोक पठावें, हंसों के ब्यौपारी।। १०।। ६।।
जननी बादि बही रे, कलि नाहक आये।। टेक।।
पंडित वेद पढ्या न पढ्या रे, कथा कही न कही रे।
गोकल गुजरी पारि उतरि गई, बेचत नगर दही रे।। १।।
अजामेल संगि गनिका उधरी, बैठि विमान गई रे।
पंडौ जगि में अचरज देख्या, सुपच की भक्ति सही रे।। २।।
पातिशाह कूँ छीपा पकर्‌या, मिरतग गऊ जई रे।
झींमर हो कर डेरे आये, नामदेव की छानि छई ने।। ३।।
झाली नानी कूँ मौहर चढ़ाई, चमरा भेट लई रे।
शाह सिकन्दर तलब पठाई, जुलहे स्यों आनि फही रे।। ४।।
चमरा कनक जनेऊ काढ्या, प्रेम की गांठि गही रे।
सात सै पंडित शिष्य भये जाके, अचरज देखि दई रे।। ५।।
केशो नाम निरंजन साहिब, बालदि आनि ढही रे।
दास गरीब कबीर पुरुष कै, उतरी सौंज नई रे।। ६।। १०।।
बिन सतगुरु नहीं पावै, औह भेद अगम है।। टेक।।
जटा जूट जल सिज्या बैठे, काहे कूँ मूण्ड मुंडावै।
गृह छाडि गिरि पर्वत जांहीं, नाहक बन खण्ड धावै।। १।।
करें आचार बिचार न जानै, छापे तिलक बनावै।
अनन्त कोटि जाकै बाजे बाजैं, काहे कूँ घंट बजावे।। २।।
तीर्थ बरत करै ब्रह्मचारी, अठसठ परबी नहावै।
अठार भार जा के चरण निवासा, काहे कूँ फूल चढ़ावै।। ३।।
अचल अडोल अबोल प्रेरा, किस कूँ झूल झूलावै।
शालिगराम सही नहीं कीन्हा, पत्थर डोल बठावै।। ४।।
गोला बांधि भभूत भसम का, नख शिख अंग रमावै।
धूंनी ध्यान तपै निश बासर, काहे कूँ अंग जरावै।। ५।।
अलख अपिंडी पिण्ड न काया, किसके पिण्ड भरावै।
औह तो मोक्ष मुक्ति से न्यारा, नहीं जाय नहीं आवै।। ६।।
गिरह छाडि बैराग बिहंगम, बड़े बड़े मंदिर छावै।
देवल थरपि दिवाले नाचै, झांझि पीटि कर गावै।। ७।।
सहंसमुखी एक गंग बहत है, सुषमन द्वारे जावै।
दो दल का जहां कँवल उभै है, जहां मन कूँ ठहरावै।। ८।।
संख चक्र जा कै गदा पदम हैं, पीतंबर छबि छावै।
दास गरीब अगम गति आगै, पद में तारी लावै।। ९।। ११।।
मारी है नजर कटारी, महबूब सलौने नैं।। टेक।।
बिरह बान ने बषतर तोड्या, टूटी है भ्रम किवारी।।

सेली सिंगी चेहरा मोहरा, कलजुग के व्यवहारी।। २।।
टोपी ताषी चौला पहरे, भेष धरे ब्रह्मचारी।।
सुरनर मुनीजन तपा सन्यासी, कानों मुंदरा भारी।। ४।।
दास गरीब कहै रे संतो, हंसौं के व्यौपारी।। ५।। १२।।
भलका टूटि गया रे। शर खूब लगाया, सतगुरु बान गह्या रे।। टेक।।
फूट्या वार पार शर बेध्या, हिरदे बीचि खह्या रे।
खूब कसीस कसीस लगाया, सतगुरु बान गह्या रे।। १।।
ब्रह्मा कोटि उपारि रहै हैं, उपरत नांहि खह्या रे।
खोजि बूझि रहे कौन का चारा, सतगुरु यौही चह्या।। २।।
संख जुगन का किला जुगादि, भ्रम का बुरज ढह्या रे।
पत्थर से पानी भया साधौ, जल सर होय बह्या रे।। ३।।
प्रेम का बान अचान लगाया, उर के बीच खह्या रे।
बिना प्रेम कोई पारि न उतरे, कोटिक ज्ञान कह्या रे।। ४।।
ज्यों सूरज के आगै बदरा, ऐसे कर्म छया रे।
प्रेम की पौंन करै चित मंजन, झलकै तेज नया रे।। ५।।
सुनि कर ज्ञान अमान अनाहद, अमली अमल खह्या रे।
दास गरीब अमरपुर पौंहचे, ना जम साल सह्या रे।। ६।। १३।।
सुनत ज्ञान गलताना पद पदे समाना।। टेक।।
अमरलोक से सतगुरु आये, रूप धरे कारवाना।
ढूंढ़त ऊँट महल में डोलै, बूझत शाह बियाना।। १।।
दूजा रूप धर्‍या कासिद का, महल सराय बखाना।
ये तो महल हमारे हैं, तूं पंथी फिरै अयाना।। २।।
तीजा रूप खवास धर्‍या रे, फूलों सेज बिछाना।
तीनि कोरड़े तन पर खाये, मारत चोट हिवाना।। ३।।
कहै खवास सुनों अब्राहीम, कैसा खिलबति खाना।
एक घड़ी सिज्या परि पौहढ़े, तन का चाम उडाना।। ४।।
हेत हुसन सब दूरि किया है, दरस्या तखत बिराना।
गैब खवास भये तिहबारी, कंपन लगे प्राना।। ५।।
उतरी चीरी लई फकीरी, पार्‍या तोसह खाना।
मुलमुल खासा दूर बगाया, ताखी पहरि इमाना।। ६।।
सोलह सहंस सुहेली छाडी, अठारह लाख तुराना।
सतगुरु शब्दें लई फकीरी, अब्राहीम सुलताना।। ७।।
हीरा मोती मुकता छाड़े अरबौं द्रव्य खजाना।
सत्तर खान बहत्तर उमरे, तजे अमीर दिवाना।। ८।।
मेवा मान बड़ाई त्यागी, अमृत भोजन खाना।

नंगे पैरों भये पियादे, फरकत छाडि निशाना।। ९।।
घोरे जोरे छाडि चले हैं, अनंत फौज पील खाना।
सार शब्द दिल अंदरि बेध्या अविगत अमल दिवाना।। १०।।
चढ़त गयंद इन्द्र की न्याई, सूरज अरथ छिपाना।
सेना संग रंग दल बादल, गरद जात असमाना।। ११।।
दसौं दिशा कूँ मक्का फेर्‌या, चरणों बांधि कुराना।
दास गरीब कबीर पुरुष कूँ, अमर किये सुलताना।। १२।। १४।।
गगन मंडल में गुमट है रंग होरी हो,
सेत धजा फररांहि राम रंग होरी हो।। टेक।।
बुद्धि बानी से अगम है रंग होरी हो,
सुरति निरति जहां लाय राम रंग होरी हो।। १।।
नाभ कँवल ब्रह्मा भये रंग होरी हो,
सिरजे विष्णु महेश राम रंग होरी हो।
त्रिगुण माया बिसतरी रंग होरी हो,
किया सकल प्रवेश राम रंग होरी हो।। २।।
चंद सूर पानी पवन रंग होरी हो,
कच्छ मच्छ कूरंभ राम रंग होरी हो।
ऊँ आदि अनादि है रंग होरी हो,
रचे सकल आरंभ राम रंग होरी हो।। ३।।
तीन गुनन परि तखत है रंग होरी हो,
पांच तत्त प्रकाश राम रंग होरी हो।
ऊँ मंत्र आदि है रंग होरी हो,
रचे धरनि कैलाश राम रंग होरी हो।। ४।।
सुर नर मुनि जन देवता रंग होरी हो,
सावित्री और गौरि राम रंग होरी हो।
लक्ष्मी आदि अनादि है रंग होरी हो,
कमलापति में भौंर राम रंग होरी हो।। ५।।
किन्नर भूत पिशाच हैं रंग होरी हो,
दानें दैंत अपार राम रंग होरी हो।
राक्षस का रासा कहूँ रंग होरी हो,
रचे सकल परिवार राम रंग होरी हो।। ६।।
गण गंधर्व ज्ञानी गुनी रंग होरी हो,
चातुर मूढ़ अनंत राम रंग होरी हो।
ऊँ नाद अगाध है रंग होरी हो,
अजब नवेला कंत राम रंग होरी हो।। ७।।

लख चौरासी जाति है रंग होरी हो,
च्यार खानि के जीव राम रंग होरी हो।
अंडरज जेरज उदबुदा रंग होरी हो,
सेत खानि रची पीव राम रंग होरी हो।। ८।।
बिरछ पहार नदी सरा रंग होरी हो,
स्थावर जंगम जूनि राम रंग होरी हो।
जा जननी कुरबान जां रंग होरी हो,
इच्छा बीज भूनि राम रंग होरी हो।। ९।।
इच्छा बीज बिजोग है रंग होरी हो,
कैसे मेला होय राम रंग होरी हो।
आत्म और परमात्मा रंग होरी हो,
एक देहि में दोय राम रंग होरी हो।। १०।।
सतगुरु मेला करत है रंग होरी हो,
सुनों अगम पुर धाम राम रंग होरी हो।
दिल ही अंदरि दीप है रंग होरी हो,
अगम भूमि असथान राम रंग होरी हो।। ११।।
मूल कँवल कूँ बंध ले रंग होरी हो,
पान अपानं जीत राम रंग होरी हो।
द्वादश ऊपर दरश है रंग होरी हो,
धरौ ध्यान की धूप राम रंग होरी हो।। १२।।
गुदा कँवल में मदन है रंग होरी हो,
उलटी नालि अपूठ राम रंग होरी हो।
बंकनालि अमृत झरे रंग होरी हो,
अमृत रस कूँ घूंट राम रंग होरी हो।। १३।।
त्रिबैनी परि ताल है रंग होरी हो,
फूले कमल अनंत राम रंग होरी हो।
मधुकर भौंरा गूंजही रंग होरी हो,
जहां वहां फाग बसंत राम रंग होरी हो।। १४।।
मलागीर चंदन चरचि रंग होरी हो,
कसतूरी निज गंध राम रंग होरी हो।
अधरि फुहारे छूटत हैं रंग होरी हो,
बरसाना ब्रह्मरंध्र राम रंग होरी हो।। १५।।
मन मथुरा तन द्वारिका रंग होरी हो,
जहां बसै जगदीश राम रंग होरी हो।
आत्म और परमात्मा रंग होरी हो,

खेलैं बिसवे बीस राम रंग होरी हो।। १६।
नासा अगरी जग मगैं रंग होरी हो,
अनजाया अनभूत राम रंग होरी हो।
योजन च्यार अखंड धुंनि रंग होरी हो,
लाय सुरति का सूत राम रंग होरी हो।। १७।।
पारस खानि पिछानि ले रंग होरी हो,
चरण अर्श और कुर्श राम रंग होरी हो।
दोय कँवलौं के मध्य है रंग होरी हो,
चिसम्यौं ऊपरि दरश राम रंग होरी हो।। १८।।
कँवल सलौंने सात हैं रंग होरी हो,
जा मध्य पारस नाम राम रंग होरी हो।
वाह सूरत मूरत देख ले रंग होरी हो,
दीन दुनी सब मात राम रंग होरी हो।। १६।।
सहंस कँवल दल नूर के रंग होरी हो,
कली कली दर भँवर राम रंग होरी हो।
नौ लख गोपी रास है रंग होरी हो,
ढुरैं सुहंगम चौंर राम रंग होरी हो।। २०।।
संख कँवल दल जगमगैं रंग होरी हो,
कली कली शशि भान राम रंग होरी हो।
सुखसागर में खेलता रंग होरी हो,
गरीबदास गलतान राम रंग होरी हो।। २१।। १५।।
शुन्य सरोवर हंस मन रंग होरी हो,
खेलैं फाग बसंत राम रंग होरी हो।
शिव शंकर से खेलहीं रंग होरी हो,
सुर नर मुनि जन संत राम रंग होरी हो।। १।।
दुलह साहिब एक है रंग होरी हो,
दुलहनि संख असंख राम रंग होरी हो।
घाट बाट कछु है नहीं रंग होरी हो,
अविगत मारग बंक राम रंग होरी हो।। २।।
सेत गुमट सिर सेहरा रंग होरी हो,
झिलकैं किरण अनंत राम रंग होरी हो।
रसना बिना उचार है रंग होरी हो,
बुद्धि बानी पुलकंत राम रंग होरी हो।। ३।।
शुन्य सलहली सैल है रंग होरी हो,
पांव न टिकै पपील राम रंग होरी हो।

संख कलप संगीत है रंग होरी हो,
दरश्या लील अलील राम रंग होरी हो।। ४।।
लाल अमोली जग मगै रंग होरी हो,
अकल हिरंबर हीर राम रंग होरी हो।
मोती मानिक बीनयौं रंग होरी हो,
मानसरोवर तीर राम रंग होरी हो।। ५।।
नाद बिंद की गमि नहीं रंग होरी हो,
कैसे धरिये ध्यान राम रंग होरी हो।
गाम ठांम कछु है नहीं रंग होरी हो,
अविगत पुरुष अमान राम रंग होरी हो।। ६।।
कौन जुगति से पाईये रंग होरी हो,
सतगुरु कहि उपदेश राम रंग होरी हो।
ऐसा अगम अगाध है रंग होरी हो,
पार न पावै शेष राम रंग होरी हो।। ७।।
पान अपानं सम करैं रंग होरी हो,
नाद बिंद करि नेश राम रंग होरी हो।
कुंभक रेचक कीजिये रंग होरी हो,
ऐसे होई प्रवेश राम रंग होरी हो।। ८।।
खेचरी भूचरी चांचरी रंग होरी हो,
अकल अगोचर ध्यान राम रंग होरी हो।
उनमन घर आसन करो रंग होरी हो,
पावै पद निरवाण राम रंग होरी हो।। ९।।
द्वादश दल में पैठिये रंग होरी हो,
उलटा नाभि समाय राम रंग होरी हो।
त्रिकुटी भँवर गुंजारहीं रंग होरी हो,
बहुरि न आवै जाय राम रंग होरी हो।। १०।।
अमृत धारा बरषहीं रंग होरी हो,
पीवैं संत सुजान राम रंग होरी हो।
सोरन कलशा कुंभ है रंग होरी हो,
सूभर भर्‍या अमान राम रंग होरी हो।। ११।।
पल पल परबी लीजिये रंग होरी हो,
सुखसागर अस्नान राम रंग होरी हो।
संख जगि असमेध हैं रंग होरी हो,
कोटि गऊ नित दान राम रंग होरी हो।। १२।।
नाम की सरबरि है नहीं रंग होरी हो,

होता मूल उचार राम रंग होरी हो।
अरध उरध मध्य देखिये रंग होरी हो,
हरदम बारम्बार राम रंग होरी हो।। १३।।
काल कर्म का नाश कर रंग होरी हो,
अजपा जाप जपंत राम रंग होरी हो।
ऊँ सोहं नाद भरि रंग होरी हो,
परिख नवेला कंत राम रंग होरी हो।। १४।।
सकल कामना सिद्ध होय रंग होरी हो,
आशा तृष्णा थीर राम रंग होरी हो।
कलप करी करुनामई रंग होरी हो,
बढ़े द्रौपदी चीर राम रंग होरी हो।। १५।।
सकल मनोरथ पूरना रंग होरी हो,
परवन जन की आश राम रंग होरी हो।
अर्थ धर्म काम मोक्ष होंही रंग होरी हो,
जाके नाम विश्वास राम रंग होरी हो।। १६ ।।
चींटी पर्वत ले उड़ी रंग होरी हो,
रापति राई भार राम रंग होरी हो।
रावण वंश निरंस होय रंग होरी हो,
बिना नाम अधार राम रंग होरी हो।। १७।।
दुःशासन पर्वत भये रंग होरी हो,
चींटी द्रौपदि नारि राम रंग होरी हो।
जा की सरबरि ना भई रंग होरी हो,
बढ़ि गये चीर अपार राम रंग होरी हो।। १८।।
द्रौपदी कमल का फूल है रंग होरी हो,
दुःशासन पाषान राम रंग होरी हो।
सो तो चूरन ना भई रंग होरी,
भंजन किया गुमान राम रंग होरी हो।। १९।।
सीता कूँ रावण ले गया रंग होरी हो,
सात समुंद्र पार राम रंग होरी हो।
कौन तेज से ऊबरी रंग होरी हो,
जा का करो बिचार राम रंग होरी हो।। २०।।
चिदानंद चितवन करो रंग होरी हो,
दिल दर्पण मुख देख राम रंग होरी हो।
रावण राई हो गया रंग होरी हो,
सीता पक्ष अलेख राम रंग होरी हो।। २१।।

समरथ का शरना गहो रंग होरी हो,
कछु न होय अकाज राम रंग होरी हो।
सेर नाज की कलप थी रंग होरी हो,
ध्रू कूँ दीन्हा राज राम रंग होरी हो।। २२।।
पारब्रह्म कूँ सेईये रंग होरी हो,
आवा गवन निवारि राम रंग होरी हो।
गरीबदास की बंदगी रंग होरी हो,
संतो सकल जुहार राम रंग होरी हो।। २३।। १६।।
मन राजा खेलन चल्या रंग होरी हो,
त्रिबैनी के तीर राम रंग होरी हो।
पांच सखी नित संग हैं रंग होरी हो,
बरषैं केसर नीर राम रंग होरी हो।। १।।
इला पिंगुला मध्य है रंग होरी हो,
बीच सुषमना घाट राम रंग होरी हो।
शिव ब्रह्मादिक खेलहीं रंग होरी हो,
सनकादिक जोहैं बाट राम रंग होरी हो।। २।।
शेष सहंसमुख गांवहीं रंग होरी हो,
नारद पूरैं नाद राम रंग होरी हो।
हाथ अबीर गुलाल है रंग होरी हो,
खेलत है सब साध राम रंग होरी हो।। ३।।
इन्द्र कुबेर वरुण हैं रंग होरी हो,
धर्मराय ध्यान धरंत राम रंग होरी हो।
चित्रगुप्त चितवन करैं रंग होरी हो,
कोई न पावै अंत रात रंग होरी हो।। ४।।
ध्रू प्रहलाद जहां खेलहीं रंग होरी हो,
नारद का उपदेश राम रंग होरी हो।
हाथ पिचकारी प्रेम की रंग होरी हो,
खेलत हैं हमेश राम रंग होरी हो।। ५।।
जनक विदेही खेलहीं रंग होरी हो,
बावन गादी ब्यास राम रंग होरी हो।
शुकदेव सिंध समूल है रंग होरी हो,
गगन मंडल में रास राम रंग होरी हो।। ६।।
विभीषन जहां खेलहीं रंग होरी हो,
रूंमी ऋषि मारकंड राम रंग होरी हो।
विश्वामित्र वशिष्ठ हैं रंग होरी हो,

खेलैं कागभुशंड राम रंग होरी हो।। ७।।
मोरधज ताम्रधज हैं रंग होरी हो,
अंबरीष प्रवानि राम रंग होरी हो।
दुर्वासा जहां खेलहीं रंग होरी हो,
मिट गई खैंचातान राम रंग होरी हो।। ८।।
गोरख हनु हनोज हैं, रंग होरी हो,
लछमन और बलदेव राम रंग होरी हो।
भरत अरथ में मिल रह्या रंग होरी हो,
करै पुरुष की सेव राम रंग होरी हो।। ९।।
बालनीक बलवंत हैं रंग होरी हो,
बालमीक बरियांम राम रंग होरी हो।
पांचौं पंडौं खेलहीं रंग होरी हो,
पूर्ण जिनके काम राम रंग होरी हो।। १०।।
भरथर गोपीचंद हैं रंग होरी हो,
नाथ जलंधर लीन राम रंग होरी हो।
जंगी चरपट खेलहीं रंग होरी हो,
हाथ जिन्हौं के बीन राम रंग होरी हो।। ११।।
नामदेव और कबीर हैं रंग होरी हो,
पीपा पद प्रवानि राम रंग होरी हो।
रामानंद रंग छिरक हीं रंग होरी हो,
निरगुण पद निरबान राम रंग होरी हो।। १२।।
सब संतन सिरताज है रंग होरी हो,
मांझी मुकट कबीर राम रंग होरी हो।
जा का ध्यान अमान है रंग होरी हो,
टूटैं जम जंजीर राम रंग होरी हो।। १३।।
रंका बंका खेलहीं रंग होरी हो,
सेऊ संमन साथ राम रंग होरी हो।
कमाल मल्ल मैदान में रंग होरी हो,
रंग छिरकैं रैदास राम रंग होरी हो।। १४।।
सूजा सैंन बाजीद है रंग होरी होरी हो,
धन्ना भक्त दरहाल राम रंग होरी हो।
जैदे जगमग ज्योत में रंग होरी हो,
हाथ अबीर गुलाल राम रंग होरी हो।। १५।।
दत्त तत्त में मिल रह्या रंग होरी हो,
नानक दादू हंस राम रंग होरी हो।

मानसरोवर खेलहीं रंग होरी हो,
चीन्ह्या निरगुण बंश राम रंग होरी हो।। १६।।
त्रिलोचन जहां खेलहीं रंग होरी हो,
खेलै दास मलूक राम रंग होरी हो।
सदन भक्त जहां खेलहीं रंग होरी हो,
गई जिन्हों की भूख राम रंग होरी हो।। १७।।
कर्माबाई भीलनी रंग होरी हो,
स्यौरी सिंध समूल राम रंग होरी हो।
अमृत केसर बरषहीं रंग होरी हो,
संख वर्ण के फूल राम रंग होरी हो।। १८।।
कमल कमाली ले रही रंग होरी हो,
मीरा गूंदै हार राम रंग होरी हो।
आरता दूलह का करै रंग होरी हो,
गज मोतियन के थार राम रंग होरी हो।। १६।।
ताल मृदंग उपंग हैं रंग होरी हो,
बाजत हैं डफ झांझि राम रंग होरी हो।
शंखा झालरि बाजहीं रंग होरी हो,
खेलो तन मन मांजि राम रंग होरी हो।। २०।।
मुरली मधुर धुंनि बाजहीं रंग होरी हो,
रणसींगौं की टेर राम रंग होरी हो।
अनहद नाद अगाध हैं रंग होरी हो,
शहनाई और भेरि राम रंग होरी हो।। २१।।
गायन संख असंख हैं रंग होरी हो,
कहां कहूँ उनमान राम रंग होरी हो।
कहन सुनन की है नहीं रंग होरी हो,
देखे ही प्रवान राम रंग होरी हो।। २२।।
आदि अंत आगे रहै रंग होरी हो,
सूक्ष्म रूप अनूप राम रंग होरी हो।
गरीब दास गलतांन है रंग होरी हो,
पाया सत सरूप राम रंग होरी हो।। २३।। १७।।

मन राजा खेलन चल्या रंग होरी हो,
प्रपट्टन अस्थान राम रंग होरी हो।
चंद सूर की गमि नहीं रंग होरी हो,
नहीं जिमीं असमान राम रंग होरी हो।। १।।
प्रवीना प्रकाशिया रंग होरी हो,

झिलमिल नूर जहूर राम रंग होरी हो।
पुष्पौं की वर्षा लगी रंग होरी हो,
बाजैं अनहद तूर राम रंग होरी हो।। २।।
पांच पच्चीसौं संग है रंग होरी हो,
मन राजा प्रधान राम रंग होरी हो।
भीड़ी घाटी सांकड़ी रंग होरी हो,
पावन नाहीं जान राम रंग होरी हो।। ३।।
तिल की ओट सुमेर है रंग होरी हो,
सतगुरु सिंध समाय राम रंग होरी हो।
झांखी परदा खुलि गया रंग होरी हो,
खेलैं फगुवा जाय राम रंग होरी हो।। ४।।
कालंद्री जमना बहै रंग होरी हो,
मेहन मदन गोपाल रामद रंग होरी हो।।
मुरली मधुर धुंनि बाजहीं रंग होरी हो,
कंपे जौंरा काल राम रंग होरी हो।। ५।।
ब्रह्मनाद धुंनि होत है रंग होरी हो,
तन मन धन कुरबान राम रंग होरी हो।
भँवर गुफा में आँब खास रंग होरी हो,
दूलह पुरुष दिवान राम रंग होरी हो।। ६।।
ऊँची दिशा ईशान कूँट रंग होरी हो,
कोई न पावै जान राम रंग होरी हो।
उजल पौलि अगमपुरी रंग होरी हो,
जहां अविगत पुरुष अमान राम रंग होरी हो।। ७।।
सुखसागर की लहरि हैं रंग होरी हो,
उठैं अनंत तरंग राम रंग होरी हो।
पलकौं डोरि हिलाईये रंग होरी हो,
ठाकुर का चहडोल राम रंग होरी हो।। ८।।
नादी वादी बहु मिलैं रंग होरी हो,
करै कलेजै छेक राम रंग होरी हो।
ऐसा कोई ना मिलै रंग होरी हो,
ताहि लखैं उरध रेख राम रंग होरी हो।। ९।।
संगलि दीप की पदमनी रंग होरी हो,
मन नहीं चाहै ताहि राम रंग होरी हो।
जैसे किरका जहरि का रंग होरी हो,
कहो कौन तिस खाय राम रंग होरी हो।। १०।।

नाम अखण्ड धुंनि होत है रंग होरी हो,
रूंम रूंम झनकार राम रंग होरी हो।
गरीबदास गलतान है रंग होरी हो,
साहिब अधम उधार राम रंग होरी हो।। ११।। १८।।

मन राजा खेलन चल्या रंग होरी हो,
प्रपट्टन की सैल राम रंग होरी हो।
पाँव न टिकै पपील के रंग होरी हो,
पंडित लादे बैल राम रंग होरी हो।। १।।
जहां वहां महल कबीर का रंग होरी हो,
राई ना ठहराय राम रंग होरी हो।
पानी पवन न संचरै रंग होरी हो,
चंद सूर नहीं जांहि राम रंग होरी हो।। २।।
च्यार वेद पंडित पढ्या रंग होरी हो,
बावन अक्षर लेख राम रंग होरी हो।
औह अक्षर यामें नहीं रंग होरी हो,
रहे शेष के शेष राम रंग होरी हो।। ३।।
कागज कलम कलेश है रंग होरी हो,
स्याही का नहीं काम राम रंग हारी हो।
देही मांहि विदेह है रंग होरी हो,
बिनहीं रसना नाम राम रंग होरी हो।। ४।।
तारंग मंत्र लीजिये रंग होरी हो,
ॐ सोह नाद राम रंग होरी हो।
सुकृत नाम उचार है रंग होरी हो,
लीला अगम अगाध राम रंग होरी हो।। ५।।
ॐ सोहं मध्य है रंग होरी हो,
सूक्ष्म मंत्र पाय राम रंग होरी हो।
निरगुन पद निरबान है रंग होरी हो,
सुरति निरति धुनि लाय राम रंग होरी हो।। ६।।
ॐ सोहं मध्य हैं रंग होरी हो,
सूक्ष्म मंत्र छाक राम रंग होरी हो।
याह गायत्री सार है रंग होरी हो,
और मंत्र कोट्यों लाख राम रंग होरी हो।। ७।।
ॐ आनंदी लहरि है रंग होरी हो,
सोहं मुकता सिंह राम रंग हारी हो।
ॐ सोहं सार है रंग होरी हो,

कोटि कला रविचंद राम रंग होरी हो।। ८।।
ॐ सोहं पालड़े रंग होरी हो,
चौदह भुवन चढ़ाय राम रंग होरी हो।
तीनि लोक पासंग धरैं रंग होरी हो,
तो नहीं तुले तुलाय राम रंग होरी हो।। ६।।
सोहं शेष उचार है रंग होरी हो,
ब्रह्मा विष्णु महेश राम रंग होरी हो।
सनकादिक नारद रटैं रंग होरी हो,
सोहं सति उपदेश राम रंग होरी हो।। १०।।
मानसरोवर हंस हैं रंग होरी हो,
मोती करैं अहार राम रंग होरी हो।
गरीबदास ल्यौलीन है रंग होरी हो,
आवा गवन निवारि राम रंग होरी हो।। ११।। १६।।

हरि भजि रे जान न दोऊँ। घट गूदा मांस रु लोहूँ।। टेक।।

सूर गऊ में एक धनी है, सोई ऊँट रु घोरा।
लघु दीरघ में एकै मौला, मुरग अंड क्यों फोरा।। १।।
मुरगी बकरी चिड़ी बुटेरी, जलमीना है मच्छी।
तीतर मोर मूसी मुरगाई, उड़त पंखेरू पंछी।। २।।
पकरि कबेड़ कबूतर खाये, और जंगल के मिरगा।
याह दोजिख की चाल चलत हो, कैसे पौंहचो सुरगा।। ३।।
उत्तम मध्यम किस कूँ कहते, एकै बिंद रु मूत्ता।
गदह गऊ में एकै पौंना, आदम ईदम कूत्ता।। ४।।
को पंडित किस कहो चूहरा, एकै बोलनहारा।
ज्यौं अटक्यौं में झिलकै चंदा, है माहीं पर न्यारा।। ५।।
नारि पुरुष का कैसे नता, बेटी बहू बिसारं।
जैसे कपड़ बनोला बीजं, ऐसे है संसारं।। ६।।
अपने बिंद की बेटी कहिये, कुल बिंद बहन भतीजी।
अचरज देख समझि कर भूले, घर में नारि क जीजी।। ७।।
कासिब गोतरा कासिब गोतरी, पंडित शाखा ल्याया।
कोई तत्तवेता ज्ञानी जानैं, बहन ब्याहि घर आया।। ८।।
एक न भूल्या दोय न भूल्या, भूली सब संसारी।
ब्रह्मा विष्णु महेसर देखो, तिहूँ देवा घरबारी।। ६।।
सवित्री लक्ष्मी अरु गौरा, तिहूँ देवा परनाई।
आदि माया ऊँकार कहावै, सो तो सब की माई।। १०।।
अलख ईशरी संख लोचनी, आदि ऊँ का मेला।

दास गरीब चिदानंद चीन्हों, जाके गुरु न चेला।। ११।। २०।

अथ राग काफी

नहीं है दारमदारा उहां तो, नहीं है दारमदारा।। टेक।।
उस दरगह में धर्मराय है, लेखा लेगा सारा।।
मुल्लां कूकैं बंग सुनावैं, ना बहरा करतारा।। २।।
तीसौं रोजे खूंन करत हो, क्यों करि होय दीदारा।।
मूल गंवाय चले हो काजी, भरिया घोर अंगारा।। ४।।
भौजल बूडि गये हो भाई, कीजैगा मुँह कारा।।
वेद पढ़ै पर भेद न जानैं, बांचै पुरान अठारा।। ६।।
जड़ कूँ अंधरा पांन खवावै, बिसरे सिरजनहारा।।
ऊजड़ खेड़े बहुत बसाये, बकरा झोटा मारा।। ८।।
जा कूँ तो तुम मुक्ति कहत हो, सो हैं कच्चे बारा।।
मांस मछरिया खाते पांडे, किस विधि रहे अचारा।। १०।।
स्यौं जजमानें नरके चाले, बूडे स्यूं परिवारा।।
छाती तोरि हनें जम किंकर, लाग्या जम का लारा।। १२।।
दास गरीब कहै बे काजी, ना कहीं वार न पारा।। १३।। १।।
क्या गावै घर दूरि दिवानें, क्या गावै घर दूरि।। टेक।।
अनलहक सरे कूँ पौंहची, सूली चढ़े मनसूर।।
शेख फरीद कूयें में लटके, हो गये चूरम चूर।। २।।
सुलतानी तजि गये बलख कूँ, छाडी सोलह सहंसर हूर।।
गोपीचंद भरथरी योगी, सिर में डारी धूर।। ४।।
दादूदास सदा मतवारे, झिलमिल झिलमिल नूर।।
जन रैदास कबीर कमाला, सनमुख मिले हजूर।। ६।।
दोन्यौं दीन मुक्ति कूँ चाहैं, खांहि गऊ और सूर।।
दास गरीब उधार नहीं हैं, सौदा पूरमपूर।। ८।। २।।
बूझन हारे कूँ बूझ, बहुरि नहीं आवना है।। टेक।।
भलका ज्ञान शब्द का लीजो रे, भ्रम का कोट ढहावना है।।
सुनि काया यौह हंस बटाऊ, दिनां च्यार का पाहुना है।। २।।
त्रिकुटी महल के छाजे बैठो, नूर की अखियाँ लखावना है।।
कोटि पदम जहां झिलकैं हंसा, ऐसा दीप सुहावना है।। ४।।
जिनि मुरशद यौह भेद लखाया, सो अदली मनि भावना है।।
सुरमा सुंनि नैंन मध्य सारो, प्रेम की लहरि बहावना है।। ६।।
गगन मंडल में लगी खुमारी, चोखा फूल चुवावना है।।
हदि बेहदि पर महल हमारा, अविगत नगर बसावना है।। ८।।

दास गरीब शब्द अनरागी, हरदम हंस चितावना है।। ६।। ३।।
अलख नूर निरबान है हरि शुन्य अधारी, छत्र सेत सिर शीश सेहरा, कादर कूँ कुरबाना है।। टेक।।
शेष शीश परि त्रिभुवन मूरति, तंबू बन्या असमाना है।।
अगम अगोचर निकटि निरंतर, त्रिकुटी के असथाना है।। २।।
आवे नहीं जाय मरे नहीं जामै, अविगत नगर अमाना है।।
मीनी खोज हनोज हाजर, वाह मूरति बे उनमाना है।। ४।।
दास गरीब जहां संख पदम हैं, रूंम रूंम शशिभाना है।। ५।। ४।।
मार्‌या है सतगुरु तीर, नी मेरे मार्‌या है।। टेक।।
रूंम रूंम में सालत संतो, ग्यासी गहर गंभीर।।
घायल करि कै छाडत संतो, क्यौं न करो ततबीर।। २।।
जहां बेड़ा बांस बल्ली नहीं लागै, डार्‌या गहरै नीर।
शाह सिकंदर परचा लीन्हा, झड़ि गये तौंक जंजीर।। ४।।
जौंरा काल कर्म नहीं लागै, अचल दिगंबर थीर।।
भक्ति हिरम्बर हंस उधारन, छानैं नीर रु खीर।। ६।।
मगहर मुवा सो सतगुरु मेरा, हिंदू तुरक का पीर।।
दोन्यौं दीन हर्ष भये संतो, पाया नहीं शरीर।। ८।।
दास गरीब अगम अनरागी, सतगुरु मिले कबीर।। ६। ५।।
घट में बूटा है गुलजार, नहीं देखै सो अजब गंवार।। टेक।।
चंपा दरवै बानी बरवै,
झिलमिल तेज अपार।। १।।
घोर घटा घनकारा, बादर अबरन बरन अपारा,
दामनि का चमकार।। २।।
घनहर गरजै धरहर लरजै, बूटैं शुन्य फंहार।। ३।।
संतो प्रपट्टन घर पाया, जो साचे सतगुरु भेद लखाया,
जहां गंग अमी की धार।। ४।।
दूझै कामधेनु बहु धारा, पीवै संत सदा मतवारा,
पच्छिम दिशा के द्वारि।। ५।।
झिलमिल नूर जुहारा, टूटै अनंत अर्श में तारा,
ऐंनक उलटि बहार।। ६।। बहु हीरा घन मोती,
झिलकै कोटि किरनि रवि जोती, शब्द महल झनकार।। ७।।
बाग कली बिन मोरा, बिन परछ्‌या रहै जहां भौंरा,
बहु विधि बेसि गुंजार।। ८।।
कहै दास गरीब बिचारा, संतो ऐसा देश हमारा,
कोई मिले स मुनि सबदार।। ९।। ६।।

त्यारैंगे तहतीक सतगुरु त्यारैंगे।। टेक।।
घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट ही में हैं जगदीश।।
तुम्हरा ही ज्ञाना तुम्हरा ही ध्याना, तुम्हरे त्यारन की प्रतीति।। २।।
मन करि धीरि बांधि ले रे बौरे, छाडि दे नैं पिछल्यों की रीति।।
दास गरीब सतगुरु का चेला, टारैंगे जम की रसीति।। ४।।
मति देंदी बालिम यानें नूं।। टेक।।
गीता और भागौति पढ़त हैं, नहीं बूझे शब्द ठिकानें नूं।।
मन मथुरा दिल द्वारा नगरी, कहा करैं बरसानें नूं।। २।।
जब फुरमांन धनी का आया, को राखे घरि जानें नूं।।
जा सतगुरु का शरनां लीजै, मेटै जम तलबानें नूं।। ४।।
उत्तर दक्षिण पूरब पच्छिम, फिरदा दाणें दाणें नूं।।
सर्व कला सतगुरु साहिब की, हरि आये हरियानें नूं।। ६ ।।
जम किंकर का राज कठिन है, नहीं छाडै राजा राणें नूं।।
याह दुनिया दा जीवन झूठा, भूलि गये मरि जानें नूं।। ८।।
शील संतोष विवेक विचारो, दूरि करो जुलमाणें नूं।।
ज्ञान दा राछ ध्यान दी तुरिया, कोई जानैं पाण रिसाणें नूं।। १०।।
वज्र कपाट सतगुरु नैं खोले, अमी महारस खानें नूं।।
गरीबदास शुन्य भँवर उड़ावै, गगन मंडल रमजाणें नूं।। १२।। ८।।
मति देंदी बालिम जानी नूं।। टेक।।
श्वासा पारस भेद पुरुष का, खोजो दिल दरवानी नूं।।
पच्चीस बखटुवा कूँ परमोधो, पकरि पांच मिरगानी नूं।। २।।
तीन छिकारे पकरि पछारे, बूझि कबीर कमानी नूं।। जठरा
अग्नि अमी से भीजै, जो साधै पवन रु पानी नूं।। ४।।
त्रिकुटी कँवल में पदम झिलमिलै, देखो बारह बानी नूं।।
शब्द हमारा सधर वस्तु है, परखो आदि निशानी नूं।। ६ ।।
ब्रह्म शब्द से जुगिया रात्या, कहा करि है राज दिवानी नूं।।
इन्द्र दा राज काग दी बिष्ठा, ना भोगै इन्द्रानी नूं।। ८।।
शुकदेव पासि हुरंभा आई, जा का ध्यान लग्या निरबानी नूं।।
गरीबदास तज्या बलख बुखारा, बूझि अधम सुलतानी नूं।। १०।।
मति देंदी बालिम अंधे नूं।। टेक।।
चतुर विवेकी शब्द पिछानै, क्या समझावै खंदे नूं।।
तन मन धन कुरबान कीजिये, शीश चढ़ावै जिंदे नूं।। २।।
जा सतगुरु की मैं कुरबांनी, जो काटै जम के फंधे नूं।।
पांच पच्चीसौं अस्थिर करि हैं, दूरि करै दुःख दुंदे नूं।। ४।।
करि प्रणाम परम पद पावै, पवन चढ़ै ब्रह्मरंदे नूं।।

गरीबदास याह भगल विद्या है, को जानै खेल खिलंदे नूं।। ६।।
मति देंदी बालिम बहरे नूं।। टेक।।
संसारी दी गलां चीन्है, नहीं बूझै शब्द जो गहरे नूं।।
मुरद्यौं सेती प्रीत लगावै, नहीं जानैं सतगुरु महरे नूं।। २।।
ऊँची थलिया खेती बोवै, भूलि गये निज डहरे नूं।।
यौह संसार समझदा नाहीं कहंदा श्याम दुपहरे नूं।। ४।।
सेत छत्र सिर मुकट बिराजै, देखता ना उस चेहरे नूं।।
गरीबदास यौह बखत जात है, रोवैंगे इस पहरे नूं।। ६।।
मति देंदी बालिम गूंगे नूं।। टेक।।
जा बालिम दी मैं बलि जावां, ध्यान लगावै ऊँगे नूं।।
छाड्या मूल फूल क्या तोरै, कहा चढ़ावै सूंघे नूं।। २।।
दूध गऊ दा बछै बिटाल्या, कहा चढ़ावै चूंघे नूं।।
याह तन देही विनाश जात है, बहुरी आनियौं भूंगे नूं।। ४।।
ये तन देही हाथ न आवै, कहां करैगा रूंगे नूं।। ५।।
नघ नारायन भूलि रह्या है, कहा परखै मोती मूंगे नूं।। ६।।
गरीबदास यौं शाखा सूकै, बीज न बोया डुंघे नूं।। ७।। १२।।
मति देंदी बालिम झूठै नूं।। टेक।।
सायर सीप समुंद्र ल्याये, कहा करि है मोती फूटे नूं।।
कालर खेत निपजदा नाहीं, कहा करि है बहु जल बूठे नूं।। २।।
भांग तमाखू मदरा पीवैं, छाडत ना इस ठूठे नूं।।
मिहर महौबति छानी नाहीं, सब जानैं सतगुरु टूठे नूं।। ४।।
प्रेम पियाले सद मतवाले, पीवत हैं रस घूँटे नूं।।
दिल दरिया में बाग लगाया, सींचत हैं उस बूटे नूं।। ६।।
उस दरगह में मुकलि करि है, जो फेरै जमके लूटे नूं।।
गरीबदास दरहाल मनावैं, राजी करि हैं सतगुरु रूठे नूं।। ८।।
अपना लाल संभालि, कुडे क्या करदी है।। टेक।।
रतन अमोली नजरि न आया, पाहन से सिर मारि।।
यौह पाहन परमेश्वर नाहीं, सिर से बोझा डारि।। २।।
जप तप करनी काम न आवै, बिन सुमरन सिरजनहार।।
कर्मकंड कलपंत्र बीते, नाहक तन मन जारि।। ४।।
अठसठि तीरथ हैं तन मांहीं, गंग सहंसमुख धार।।
ब्रह्मा विष्णु महेशर शेषा, जाप जपै ररंकार।। ६।।
अनंत कोटि जहां नौबति बाजैं, अदल फजल दरबार।।
सीता सती कलंक लग्या है, मेटी रामचंद्र दी कार।। ८।।
रावण राजा गये रसातल, लंका दे सिकदार।।

मानधाता दे चक्र चलंदे, लिया चुणक रिषिसर मार।। १०।।
दुर्योधन तन गीध न खाया, जा की ग्यारह खूहनि लार।।
सूरे सावंत संख असंखौं, गये जमाना हार।। १२।।
ध्रू प्रहलाद और नाम कबीरा, खेत झड़े घनसार।।
जनक विदेही कूँ बंध तोरी, दीन्हैं द्वादश कोटि उधारि।। १४।।
गोरख त्यारैं कोटि निनानौं, सोनां किया पहार।।
सुन वे कुड़िये तैं तां मूल गंवाया, तूं घर दी पनिहारि।। १६।।
दास कबीर दी लाल ज तोबा, जा की जम किंकर पर मार।।
गरीबदास पद हाजरि नाजर, देखो दिल अंदरि दीदार।। १८।।

कैसे आऊँ तोरी बिकट नगरिया।। टेक।।

बेगमपुर विज्ञानी जाहीं, वार पार नहीं प्रेम की पुरिया।।
पंथ सलहला नहीं निसरनी, चढ़त देख मेरा तनम न डरिया।। २।।
चरण कमल में फांसी डारी, सुरति निरति की बाही है डोरिया।।
औंधे मुख एक कूप गगन में, अमृत जलहर कैसे भरिया।। ४।।
जब लग नेजू पौंहचत नाहीं, तब लग तोरी खाली है गगरिया।।
निकट बसै पर दूर धाम है, कहा करै ठाढी पनिहरिया।। ६।।
अमृत भोजन हंस करत हैं, बहै कुदार न चालत हरिया।।
हरदम यज्ञ असमेध होत है, कहा करै अब कर्म रु क्रिया।। ८।।
गंगा जमना मध्य सरस्वती, ब्रह्मरंध्र में फही है नवरिया।।
लोभ मोह का लाहा छाडो, काम क्रोध सब ही परहरिया।। १०।।
कोटि कोटि दामनि चमकांहीं, चंद्रगता छ्याय रही है बदरिया।।
सतगुरु खेवट पारि उतारैं, भौसागर तन देह न धरिया।। १२।।
गरीबदास सो पारि उतरि गये,
बिरह अग्नि तन मन सब जरिया।। १३।। १५।।

पास रहंदा प्रदेश प्रीतम, है महबूब सलौंना वो।। टेक।।

एक पलक में साहिब मेरा, फिरदा चौदह भौंना वो।।
सो बर बरौं टरौं नहीं कबहूँ, जा संग करि हूँ गौना वो।। २।।
जे तुझ चल्या मिल्या वहां चहिये, पलटो द्वादश पौंना वो।।
ग्यासी लागी सार शब्द की, घायल हो तन नौंना वो।। ४।।
कोटि हकीम तहां पचिहारे, करि कर टामन टौंना वो।।
हाजरि नाजर साहिब मेरा, साधौ उनमन मौंना वो।। ६।।
आदि पुरुष अविगत अविनाशी, संतो नालि खिलौना वो।।
गरीबदास जग में दो फंधा, कनक कामनी सौंना वौ।। ८।।

पास रहंदा वाको परसत नाहीं, है महबूब दिवाना वो।। टेक।।

पुरुष विदेही शब्द सनेही, जा कै भेष न बाना वो।।

सेत मुकट सिर सेत छत्र है, लाग्या सुरति निशाना वो।। २।।
घाट न बाट पंथ नहीं मारग, है सो दूरि पियाना वो।।
पैर न पंख प्रान हमरे के, कैसे मारग जाना वो।। ४।।
सुरति निरति मन पवन मिला वो, सिंधु शब्द समाना वो।।
त्रिकुटी भृकुटी ऊपरि तकिया, अविचल तखत अमाना वो।। ६।।
गगन मंडल से उर में आया, धन्य सतगुरु दिलदाना वो।।
गरजत सिंध दांमनि चमकै, संख कला शशि भाना वो।। ८।।
भीतरि बाहर बाहर भीतरि, सुरति निरति हैराना वो।।
बुधि बानी से अगम अगोचर, पढ़ि थाके वेद कुराना वो।। १०।।
सेत कमल दल शीतल छाया, हमरे नैंन सिराना वो।।
गरीबदास याह अकथ कथा है, बिन पर भँवर उड़ाना वो।। १२।।
पास रहंदा मैंडा सतगुरु जिंदा, है महबूब बिनानी वो।। टेक।।
कोटि कोटि बैकुण्ठ तास कै, च्यार मुक्ति प्रवानी वो।।
ब्रह्मा विष्णु खवासी करि हैं, शिव शंकर सैलानी वो।। २।।
इन्द्र कुबेर वरुण धर्मराया, आदि शक्ति पटरानी वो।।
हुकमी सूरज चंद हिजूरी, अग्नि पवन और पानी वो।। ४।।
कच्छ मच्छ कुरंभ धौल धर, गगन धरनि धरि आना वो।।
ररंकार उच्चार होत है, शेष सहंस मुख बानी वो।। ६।।
उस कादर कूँ कैसे पावै, कुदरति कूँ कुरबानी वो।।
सुरति स्वयंवर अचल हिरंबर, गगन मंडल कुरबानी वो।। ८।।
बावन अक्षर से औह न्यारा, बिन मसि अंक डिढानी वो।।
गरीबदास जननी धंनि जै जै, जिन्हि औह हरफ पिछानी वो।। १०।।
निकट रहंदा कहीं बिछर न जांदा, है महबूब मिलापी वो।। टेक।।
सहंस इकीसौं छैब सौ दम हैं, नाभ नासिका मापी वो।।
श्वास उसासा मध्य बसत है, जिन्हि याह थापनि थापि वो।। २।।
सुरति निरति मन पवन समोवो, जपिले अलपा जापी वो।।
तिल की ओट सुमेर बसत है, समझि बूझि याह काफी वो।। ४।।
गरीबदास षटदर्शन खाली, पाहन पूजै पापी वो।। ५।। १६।।
अछै बिरछ अनरागी देवा, है महबूब समूला वो।। टेक।।
समाधान समरथ सरबंगी, ना कुछ पान न फूला वो।।
ना दम देह सनेह न जा कै, नहीं पिण्ड प्रान असथूला वो।। २।।
बिनहीं चरणैं चले चिदानंद, मै जानूं है लूला वो।।
नीचे चीपी सुरति समोई, ऊपरि धारिया चूल्हा वो।। ४।।
जो यौह घाट बाट नहीं पावै, सो जोगी पद भूल्या वो।।
शील संतोष विवेक ज्ञान गुण, मिट गये संसा सूला वो।। ६।।

गरीबदास सो गुरुमुख ज्ञानी, झूलै अनहद झूला वो।। ७।। २०।।
सुरति निरति से आगै धावै, है महबूब अजाती वो।। टेक।।
अकल अकेला गुरु न चेला, ना कोई संग न साथी वो।।
मादर पिदर न जननी जाया, कुल कुटुंब न नाती वो।। २।।
क्या आरंभ करौं गुरु देवा, ना कुछ पूजा पाति वो।।
सुनि रे मूढ़ रूढ़ नर प्रानी, ये दस इन्द्री कहां राती वो।। ४।।
देही सा देवल नहीं दूजा, सोहं सुरति समाती वो।।
दशौं दिशा जगमग उजियारा, बिन दीपक बिन बाती वो।। ६।।
चींटी में नहीं चींटी रंगा, हाथी में हाथी वो।।
गरीबदास औह बरन अबरनं, मेटी दिल की काती वो।। ८।।
सुरति निरति से परख न आवै, है महबूबा सरोहा वो।। टेक।।
द्वार बार घर छाड़ि गये हैं, जाय बसे बन खोहा वो।।
भेष बनाय भये बहु रंगी, कीन्हा बौहत अबोहा वो।। २।।
कामी क्रोधी बग मंजारा, छाड्या लोभ न मोहा वो।।
पिता विवेक क्षमा सी माता, जिन दूरि किया दिल द्रोहा वो।। ४।।
मांड्या खेत नेति जस गाऊँ, सतगुरु पकर्‍या लोहा वो।।
चौदह भुवन गवन सब छुटे, दिल ही अंदरि जोया वो।। ६।।
है निजधाम दर्श दिल मांहीं, भ्रम कर्म सब खोया वो।।
सिज्या अधरि सिंघासन अविगत, तुरिया पद में सोया वे।। ८।।
अनहद तारी लगी हमारी, उजू अकालि से धोया वो।।
सतगुरु दानी मिले बिनानी, बीज अभै पद बोया वो।। १०।।
गरीबदास गायत्री लापी, शीश पीट जम रोया वो।। ११।। २२।।
खान पान कछु करदा नाहीं, है महबूब अचारी वो।। टेक।।
कौंम छत्तीस रीत सब दुनिया, सब से रहै बिचारी वो।।
बेपरवाह शाहन पति शाहं, जिन याह धारनि धारी वो।। २।।
अनतोल्या अनमोल्या देवै, क्रोड़ी लाख हजारी वो।।
अरब खरब और पदम लग, संखों संख भंडारी वो।। ४।।
जो सेवै ताहीं कूँ खेवै, भौजल पारि उतारी वो।।
सुरति निरति गल बंधन डोरी, पावैं बिरह अजारी वो।। ६।।
ब्रह्मा विष्णु महेश सरीखे, ताहि उठावैं झारी वो।।
शेष सहंस मुख करैं बिनती, हरदम बारंबारी वो।। ८।।
शब्द अतीत अनाहद पद है, ना औह पुरुष न नारी वो।।
सूक्ष्म रूप सरूप समाना, खेलै अधर अधारी वो।। १०।।
गरीबदास शरणागति आये, साहिब लटक बिहारी वो।। ११।। २३।।
मंद मंद मुसकात मुसाफर, है महबूब परेवा वो।। टेक।।

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष लौ, सब देवन पति देवा वो।।
अमृत कंद इन्द्र नहीं मौसर, अमी महारस मेवा वो।। २।।
कोटि सिद्धि प्रसिद्ध चरण में, जा की करिले सेवा वो।।
तीरथ कोटि नदी सब चरणों, गंगा जमना रेवा वो।। ४।।
सब के घर दर आगै ठाढा, कोई न जानैं भेवा वो।।
रिंचक सा प्रपंच भर्‌या है, अविगत अलख अभेवा वो।। ६।।
गरीबदास कूँ सतगुरु मिलिया, भौसागर का खेवा वो।। ७।। २४।।
जूनि नजम कुछ धरता नाहीं, है महबूब अजूनी वो।। टेक।।
बिन देह का शंभू साहिब, निरगुण नागा मौनी वो।।
पांच तत्त का कमरि मुतंगा, ध्यान दर्श की धूनी वो।। २।।
नर देही धरि नाम न सुमर्‌या, देही देवल सूनी वो।।
जल तंरग जल ही से बुद बुदा, रहसी तार न पूनी वो।। १४।।
इच्छा रूपी आवै जाहीं, बीज न बोया भूनी वो।।
नूर जहूर दर्श से छाके, दुनिया देख अलूनी वो।। ६।।
नाहक देह धरी जग माहीं, दुनिया सहद न खूनी वो।।
हासिल का घर कैसे पावै, बिंद गये नहीं रूनी वो।। ८।।
गरीब दास इस तरक दुनी से, यौह जग गूनम गूनी वो।। ६।२४।।
चरखा अजब रंगीला वो, सोहं झनकारत है तार।। टेक।।
खूंटे खालिक खूब बनाये, पींदा है गुलजार।।
साठ तीन सै लगी फंखरिया, घड़्या पुरुष कर्तार।। २।।
पटड़ी पीढा रंग बिरंगा, काढे फूल हजार।।
जत की जतनी खूब चढ़ाई, तीजन देख बहार।। ४।।
प्रेम परबती चित की चरमख, सूत कतै चौतार।।
तत्त के तकुवै उलटि समोवौ, मौहकम करि ले मार।। ६।।
हथली बीच जो ज्ञान घेरनी, कोई कातै कातनहार।।
आत्म दुलहनि कातन बैठी, फिरता अधरि अधार।। ८।।
लम्बा तार गगन शुन्य खैंचे, सो पावै दीदार।।
महमूदी खासा बुनि लीजै, पहरै हंस हमार।। १०।।
गरीबदास वै बहुरि न आवै, उतरै भौजल पारि।। ११।। २६।।
चरखा अजब रंगीला वो, सोहं रसना धुंनि रस रीति।। टेक।।
आपै पीनै आपै कातै, आपै राजा रीति।।
ठाकुर द्वारा दिल ही अंदरि, पूजन चले मसीति।। २।।
काम क्रोध मद लोभ त्यागि दे, छाडो सबै अनीति।।
यौह मन चरखा चलन न देवै, है सो अकल अजीति।। ४।।
सुरति सुहागनि चरखा फेरै, सतगुरु की प्रतीत।।

दूलह दुलहनि रंग महल में, बैठे ब्रह्म अतीत।। ६।।
गरीबदास चरखै चित लाया दुनिया गावै गीत।। ७।। २७।।
चरखा अजब रंगीला वो, फिरता गरन गरन गलतान।। टेक।।
चरखे मांहीं चंद सूर हैं, सुधा जिमीं असमान।।
नौ लख तारे हैं चरखे में, सोहं सत्य सुभान।। २।।
गिरवर मेर नदी सब सागर, और हैं चार्‌यौं खानि।।
गंगा जमना हैं चरखे में, मध्य सरस्वती जानि।। ४।।
चरखे मांहीं आँब खास है, देख्या आँब दिवान।।
चरखे मांहीं भिसति दरीबा, पौढे हंस प्रान।। ६।।
चरखा चरखा कहा करत हो, चरखा पद प्रवानि।।
गरीब दास चरखे कूँ फेरै, सोई संत सुजान।। ८।। २८।।
चरखा अजब रंगीला वो, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर मांहि।। टेक।।
सावित्री लक्ष्मी और गौरा, तीन्यौं पद की छांहि।।
या चरखे में शेष बिराजैं, ररंकार जपि नाम।। २।।
चरखे माहीं मानसरोवर, सनकादिक जहां न्हांहि।।
चिंत्यामणि पारस पद चरखा, गगन मंडल की राह।। ४।।
गरीबदास चरखै चित लाया, सतगुरु पकरी बांह।। ५।। २९।।
चरखा अजब रंगीला वो, कातैं ब्रह्मा विष्णु महेश।। टेक।।
सनकादिक और नारद कातैं, सहंस मुखी धुंनि शेष।।
ध्रू प्रहलाद और शुकदेव ब्यासा, कागभुसंड नरेश।। २।।
मारकंड लोमी रिष कातैं, चरखा फिरै हमेश।।
तेतीस कोटि और सहंस अठासी, प्याया प्रेम सरेश।। ४।।
गरीबदास टूटे सब फंधन, सतगुरु के उपदेश।। ५।। ३०।।
चरखा अजब रंगीला वो, सतगुन रजगुन तमगुन तीन।। टेक।।
सतरह सुरती कातन लागी, कटि गये कर्म कुलीन।। सात तार की माल गुंजारै, जैसे बाजै बीन।। २।।
मंगल चार उचार होत है, सुनैं हंस प्रबीन।।
षटदर्शन परसन पद नाहीं, भरमें दोन्यौं दीन।। ४।।
गरीबदास पद संत मिलत हैं, ज्यौं दरिया मधि मीन।। ५।। ३१।।
चरखा अजब रंगीला वो, फिरदी राम नाम दी माल।। टेक।।
या चरखे में जवाहर जड़िया, हीरे मोती लाल।।
अष्ट कँवल दल कुदली चरखा, साल्या, चौसठि साल।। २।।
चौसठि सिंध बंध बहु लागे, चरखा नजरि निहाल।।
जननी माई धन्य वाह दाई, ताहि छिहाया नाल।। ४।।
धन्य औह देश गाम प्रपट्टन, जनमे संत दयाल।।

गरीबदास घट भक्ति मालवै, भेजी पुरुष रिसाल।। ६।। ३२।।
दम दा नहीं भरोसा वो, अब तूं करि चलनें दा सूल।। टेक।।
मुये पुरुष संग सती जरत है, परी भ्रम की भूल।।
पीठि मुनक्का दाख लदी है, करहा खात बबूल।। २।।
मैंडी मंदिर बाग बगीचे, रहसी डाल न मूल।।
जिंदा पुरुष अचल अविनाशी, बिना पिण्ड असथूल।। ४।।
नैनों आगे झूकि झुकि आवै, रतन अमोली फूल।।
गरीबदास यौह अलल ध्यान है, सुरति हिंडोलै झूल।। ६।। ३३।।
दम दा नहीं भरोसा वो, करि ले अनहदपुर में बास।। टेक।।
कच्छ मच्छ कूरंभ चलैंगे, धौल धरनि कैलाश।।
नाभ कँवल में उलटि समाना, ये दम जीतो श्वास।। २।।
संख दुलहनी दूलह आगे, होता मंडल रास।।
संखों फूल फुहारे छूटैं, छ्याय रह्या आकाश।। ४।।
हीरे मोती जवाहिर परखैं, सो तो चले निराश।।
झिलमिल झिलमिल झिलमिल होई, तेजपुंज प्रकाश।। ६।।
कर्मकंड सब खंड होत हैं, जीमैं पंच गिरास।।
गरीबदास बारीक वस्तु है, परखैं बिरले दास।। ८।। ३४।।
दम दा नहीं भरोसा वो, यौह दम टूटि टूटि होय खण्ड।। टेक।।
अकल अभूमी चीन्हि चिदानंद, थिर नहीं तुम्हरा पिण्ड।।
अपने तन की आशा नाहीं, अपनावत ब्रह्मण्ड।। २।।
दस इन्द्री में बिचर्‌या डोलै, खेलत मन प्रचण्ड।।
पच्चीसौं प्रकृति प्रान परि, हरदम देवें दण्ड।। ४।।
नाम भरोसे पारि उतरना, कहा करै कर्मकण्ड।।
राखनहारा ऐसे रखिसी, ज्यों पुड दल में अण्ड।। ६।।
गरीबदास अविचल पद चिन्ह्या, सो चीन्ह्या कागभुशंड।। ७।। ३५।।
सतगुरु सौदा करि वो, नहीं बादि जात है।। टेक।।
जिनि तेरा पिण्ड प्राण बनाया, उस साहिब से डरि वो।।
अजपा जाप जपो मन बौरे, जम किंकर से लरि वो।। २।।
शुकदेव कूँ चौरासाी भुगती, बन्या पजावै खर वो।।
तेरी क्या बुनियाद प्राणी, तूं पैंडा पंथ पकरि वो।। ४।।
नर से नारि किया नारद मुनि, अविगत बाजीगर वो।।
शिव की संख कलपना मेटी, भसमागिर लिया छरि वो।। ६।।
अनंत चीर चिंत्यामनि कीन्हे, द्रौपदी पीताम्बर वो।।
दुःशासन का मान मूवा है, उदबुद देख लहरि वो।। ८।।
अजामेल गनिका के लारै, गई अजुध्या तिर वो।।

बालनीक का संख बजाया, जहां द्वादश कोटि बिपर वो।। १०।।
केशो नाम कबीर कै आये, नो लख बोडी भरि वो।।
काशी धाम कबीर कलपना, गई विपत्ति सब टरि वो।। १२।।
गगन मंडल के मध्य महल है, जहां मूरति अजर अमर वो।।
दास गरीब बिहंगम साहिब, मिले परम पद हरि वो।। १४।। ३६।।
साहिब से चित लाय रे, मन गर्व गुमानी।। टेक।।
नाभ कँवल में नीर जमाया, औह दिन यादि कराय।
नीचै जठरा अग्नि जरै थी, तेरा दीन्हा महल बनाय।। १।।
नैन नाक मुख द्वारा देही, नख शिख साज बनाय।
नौ दस मास गर्भ में राख्या, उहां तेरी करी सहाय।। २।।
दंत नहीं जदि दूध दिया था, अमी खीर रस खाय।।
नीचै शीश चरण ऊपर कूँ, लगी न ताती बाय।। ३।।
बाहर आया भ्रम भुलाया, बजै तूर शहनाय।।
तुंही तुंही तैं छाडि दिया है, चल्या अधम किस राहि।। ४।।
दाई आई घूंटी प्याई, माता गोद खिलाय।।
जो दिन आज सो काल नहीं रे, आगै है धर्मराय।। ५।।
द्वादश वर्ष खेलते बीते, फिर लिया ब्याह कराय।
तरुणी नारी से घर बारी, चाल्या मूल गवाय।। ६।।
रात्यौं सोवै जनम बिगोवै, द्यौंहदी खेत कमाय।।
बिन बंदगी बाद बहत है, तेरा जनम अकारथ जाय।। ७।।
कारे काग गये घर अपने, बैठे सेत बुगाय।।
दांत जाड़ तेरे उखरि गये हैं, रसना गई तुतराय।। ८।।
जम किंकर सिरहाणै बैठ्या, खर्च कदे का खाय।।
रसना बीच जु मेख मारि है, सैंना दाम बताय।। ९।।
ऐसे सूम जगत बहुतेरे, धर्या ढक्या रहि जाय।।
कुल के लोग जंगल में ले करि, दीन्हा ठोकि जराय।। १०।।
फिर पीछै तूं पशुवा कीजै, दीजै बैल बनाय।।
च्यार पहर जंगल में डोलै, तो नहीं उदर भराय।। ११।।
सिर परि सींग दिये मन बौरे, दुम से मच्छर उडाय।।
कांधै जूवा जोतै कूवा, कोदौं का भुस खाय।। १२।।
फिर पीछै तूं खर कीजैगा, करड़ी चुगनैं जाय।।
टूटी कमरि पजावै चढ़ि है, कागा मांस गिलाय।। १३।।
शुकदेव नैं चौरासी भुगती, कहां रंक कहां राय।।
ऐसी माया राम बली की, नारद मुनि भ्रमाय।। १४।।
ध्रू प्रहलाद कबीर नामदे, रहे निशान घुराय।।

दास गरीब चरण का चेरा, शब्दै शब्द समाय।। १५।। ३७।।
गुरु दीन्हा सिंध लखाय परम पद,
निरखि परखि ज्ञानी गुनियां।। टेक।।
षटदर्शन से पंथ अगम है, भ्रम रहे पापी पुनियां।।
गगन मंडल में उरध मुख कूवा, भरि ल्याये ता का परियां।। २।।
संत जौहरी शब्द पिछानैं, धात लखै सुनरा बनियां।।
ज्ञान राछ करि नाम नली भरि, सुरति निरति ताना बुनियां।। ४।।
बिनहीं चिसम इसम हम देख्या, बहरै नाद अजब सुनियां।।
झिलमिल झिलमिल झिलमिल, संख पदम झलकैं कनियां।। ६।।
दास गरीब करि दर्शन परसन, बाजे बाजैं रुनझुनियां।। ७।। ३८।।
चल दुरबीन द्वारे रे, हरि स्यौं भली बनी है।
जा का बाल न बांका रे, सिर परि राम धनी है।। टेक।।
मूल कँवल कूँ मंजन करि ले, गुदा कँवल प्रवानी।
स्वाद चक्र में काम कटक है, जीति चलो ब्रह्मज्ञानी।। १।।
नाभ कँवल में नाद वेद है, गरजैं सिंध अपारा।
सहंस इकीसौं लेखे लावो, सुरति सुहंगम तारा।। २।।
हिदरे कँवल शिव शक्ति विराजै, हरि लक्ष्मी का वासा।
हरदम जगि असमेध होत है, सोहं शब्द निवासा।। ३।।
कण्ठ कँवल कैलास कुंज है, षोडश कलियां साजै।
त्रिकुटी कँवल परि अधरि सिंघासन, जहां अविगत पुरुष बिराजै।। ४।।
आंखी ऊपर झांखी है रे, झांखी मध्य एक द्वारा।
द्वारे में दुरबीन लगावो, उतरो भौजल पारा।। ५।।
सहंस कँवल दल मानसरोवर, हंसा केल कराहीं।
दास गरीब निरंजन जोगी, मिले कबीर गोसांई।। ६।।
यौह मघ मारग झीना रे।
नर कूँ खोज न पावै, खोजो दिल दुरबीना रे।। टेक।।
अठसठि तीरथ काहे भरम्या, जे तेरा दिल बांका।
यौह मन मेर सुमेर समाना, पंथ सूई का नाका।। १।।
तीरथ व्रत किये ब्रह्मचारी, ठाकुर डोल बैठाये।
खीर खांड बहु भोजन बगदे, हरि सुपनैं नहीं आये।। २।।
जप तप तीरथ संजम सेवा, लंबे लंबे केश बधाये।
भदरा भेष बहुत विधि साधे, फिरि भग द्वारै आये।। ३।।
पंच अग्नि में पिण्डा जार्‌या, उरध मुखी क्यों झूले।
गाम गाम की भिक्षा मांगी, दरि दरि फूके चूल्हे।। ४।।
अजरी बजरी बिंद न जार्‌या, आत्म तत्त नहीं जान्या।

कहै दास गरीब भ्रम में भूले, मिल्या न पद निरबाना।। ५।। ४०।।
हम तो ज्ञानी बौरा रे, मो कूँ पद समझावो।
हंसा कित से आया रे, या का खोज बतावो।। टेक।।
शेष महेश गणेश न होते, ब्रह्मा वेद न बानी।
जूनी जीव नहीं जदि होते, जब की कहो निशानी।। १।।
धरनी अंबर धौल न होते, ना थे चंद न सूरा।
जा दिन का तुम खोज बतावौ, जे गुरु मिलिया पूरा।। २।।
वेद कतेब नहीं जदि होते, ना थे पण्डित काजी।
क्रितम ख्याल तबक नहीं सिरजे, जब क्या रटती बाजी।। ३।।
पांच तत्त गुण तीन न होते, ना थे पिण्ड ब्रह्मण्डा।
सालिग सिला नहीं जदि होते, नहीं नदी अठारह गण्डा।। ४।।
काया माया जदि नहीं होती, जब था धूंधूं कारा।
जा दिन का तुम खोज बतावौ, कहां रहता हंस तुम्हारा।। ५।।
सोलह संख हमारा तकिया, गगन मंडल के जिन्दा।
हुकम हिसाबी हम चलि आये, काटन जम का फंधा।। ६।।
पंछी मारग भेद न पावै, अनरागी ल्यौलीना।
दास गरीब जहां रंग राते, खोज न पावै मीना।। **७।। ४१।।**
मन मगन भया जब क्या गावै।। टेक।।
ये गुण इंद्री दमन करैगा, वस्तु अमोलक सो पावै।। १।।
त्रिलोकी की इच्छा छाडै, जग में बिचरै निरदावै।। २।।
तरतीबर बैराग धारि कै, जग में जीवत मरि जावै।। ३।।
अधरि सिंघासन अविचल आसन, जहां वहां सुरति ठहरावै।। ४।
उलटी सुलटी निरति निरंतरि, बाहर से भीतर ल्यावै।। ५।।
त्रिकुटी महल में सेज बिछी है, द्वादश अंदरि छिपि जावै।। ६।।
अजर अमर निज मूरति सूरति, ॐ सोहं दम ध्यावै।। ७।।
सकल मनोरथ पूर्ण साहिब, बहुरि नहीं भौजल आवै।। ८।।
गरीब दास सतपुरुष विदेही, साचा सतगुरु दर्शावै।। **९।। ४२।।**
मन मगन भया कैसे जान्या।। टेक।।
ब्रह्म खुमारी शुन्य अधारी, आठ बखत रहै गलताना।। १।।
ॐ सोहं सार वस्तु है, अजपा जाप सही जान्या।। २।।
या तन देही बहुरि नहीं है, अष्ट कँवल दल अस्थाना।। ३।।
स्थावर जंगम में जगदीशं, क्या पूजै जल पाषाना।। ४।।
सुरति सनेही सिंधि मिलैंगे, दिल कूँ खोजै दिलदाना।। ५।।
याह मन मूरति चंपा सूरति, समझि बूझि ले ब्रह्म ज्ञाना।। ६।।
बिन मसि का एक अंक अर्श में, क्या पढ़िये पोथी पाना।। ७।।

संख कंगूरा बाजैं तूरा, सेत धजा लखि असमाना।। ८।।
उजल हिरंबर शब्द गुरंबर, जम जौंरा नहीं तलबाना।। ६।।
गंगा जमना मध्य सरस्वति, मानसरोवर में न्हाना।। १०।।
मोक्षि मुक्ति जहां पितर होत हैं, वहां करो पिण्ड प्रधाना।। ११।।
अर्थ धर्म सब काम मोक्षिना, आदि पुरुष पद निरबाना।। १२।।
गरीबदास दर्पण मुख दरसें, संख कला रवि शशि भाना।। १३।। ३।।

मन मगन भये का सुनि रासा।। टेक।।

ये इन्द्री प्रकृति परेरे, डारि चलो त्रिगुण पासा।। १।।
सफम सफा होय मिले नूर में, काम क्रोध का करि नाशा।। २।।
यौह तन खाख मिलेगा भाई, क्या पहरै मुल मुल खासा।। ३।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड कुछि थिर नहीं है रे, गगन मंडल में करि बासा।। ४।।
चिंत्या चेरी दूरि प्रेरी, काटि चलो जम का फासा।। ५।।
मान बड़ाई जमपुरी जाई, होय रहो दासन दासा।। ६।।
गरीबदास पद अर्श अनाहद, ॐ सोहं जपि श्वासा।। ७।। ४४।।

मन मगन भया सो ब्रह्मचारी।। टेक।।

यौह मन अकल अजीत जीतिया, दमन करी पांचौं नारी।। १।।
दुरमति का तो देवल ढाया, पकरि लई मनसा दारी।। २।।
चित कै अंदर चौपड़ि खेले, जहां फिरती हैं सोला सारी।। ३।।
जा की नरद पकी घरि आवै, गर्भवास में ना जारी।। ४।।
जूनी संकट मोचि होत हैं, उतरि गये भौजल पारी।। ५।।
दहूँ दीन षटदर्शन त्यागे, ऐसी ही धारनि धारी।। ६।।
झिलमिल नैंना अनहद बैंना, लागि रही उनमन तारी।। ७।।
यौह जग निंद्या बिंद्या करि है, कहीं असतुति कहीं दे गारी।। ८।।
गरीबदास दीदार दर्श करि, फगुवा खेलन की बारी।। ६।। ४५।।

मैंडी जिंदड़िये वो, रब्ब दा पंथ विषम है बाट।। टेक।।

गगन मंडल में महल साहिब का, अंदरि बन्या झरोखा।
एक मुल्ला महजिद में कूकै, एक पुकारै बोका।। १।।
इन में कौन सरे कूँ पौंहच्या, हमे लग्या है धोखा।
दोन्यौं अदला बदला खेलैं, नहीं मुक्ति नहीं मोखां।। २।।
कलमा रोजा बंग निवाजा, नबी मुहंमद कीन्हा।
कदि मुहंमद ने मुरगी करद गलै कदि दीन्हा।। ३।।
मुरगी बकरी चिड़ी बुटेरी, सोई गऊ गल सीना।
जिन कूँ भिसत कहां बे काजी, गूंदै सीक भरीना।। ४।।
उस दरगह में छुरी न घड़िये, करद कहां से ल्याया।
गूदा राता गोस्त ताता, केसर रंग बनाया।। ५।।

घालि देगचे बिसमिल कीन्हा, सरस निवाला खाया।
जा हंसा का खोज बतावो, कौन सरै पौंहचाया।। ६।।
खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड न होते, ना थे गाय कसाई।
आदम हवा न हुजरा होता, कलमां बंग न भाई।। ७।।
उनि कादर नहीं कुदरति सिरजी, जब क्या खाना खाई।
दास गरीब कहै बे काजी, बेचगून चित लाई।। ८।। ४६।।
मैंडी जिंदडिये वो जग में, जीवन है दिन दोय।। टेक।।
जिन कादर यौह महल बनाया, जा की कदरि न पाई।
मन में मक्का दिल बीच काबा, महजदि काहे जाई।। १।।
मस्तक जानि मसीति मुलानें, किस कूँ बंग सुनाई।
सिदक सबूरी साबति रहना, खड़ी पड़ी नहीं खाई।। २।।
माटी ईट राज चिन आया, कूकैं बंग मुलांना।
रब्ब का सिरज्या नेश किया है, मारि लिया हिलवाना।। ३।।
पैर बांधि रूखों कै टांगे, काढ़ि लिया दिल म्याना।
येता कुफर न करि बे काजी, देखत है रहमाना।। ४।।
एक बूँद का सकल पसारा, क्या तुरका क्या हिंदू।
सूर गऊ में एकै रब्ब है, समझत नाहीं भौंदू।। ५।।
जिभ्या स्वाद सरे कूँ भूले, खाते गोसत गूंदू।
जोति सरूपी हाथि न आया, उदर बधाया दूंदू।। ६।।
या तन अंदरि तसबी है रे, जपौ सुहंगम बानी।
मौला मूल अर्श में बैठ्या, देखत है दिलदानी।। ७।।
सब घट देखो नूर नबी का, गला कौन का भानी।
दास गरीब कहै बे काजी, छानौं दूध रु पानी।। **८।। ४७।।**
नैनों में शाह नगीनां नैनों में।। टेक।।
आसि पासि तो सेत किला है, महल बन्यां प्रबीनां।। १।।
स्याह के मध्य एक स्याम तिली है, आगै मारग झीनां।। २।।
मगज मनी से पंथ अलहदा, होय रहो ज्ञान ल्यौलीनां।। ३।।
उलट पुलट का खेल पियारे, ज्यों जल पैरे मीनां।। ४।।
अनंत कोटि जोध्या रखवारे, पांच तत्त गुन तीनां।। ५।।
अलल पंख का पंथ पियारे, पौंहचेंगे प्रबीनां।। ६।।
दास गरीब मुक्ति यौं पावै, सतगुरु कूँ सिर दीनां।। ७।। ४८।।
अवधू तानौं रंग पाक्या वो, सांईया मैडे बाग में।। टेक।।
ना औह काला ना औह पीला, ना औह जरद न राता वो।। १।।
यौह रखवाला खिवदा पाला, जिन तरवर से तोरि न चाख्या वो।। २।।
संग ही खोया चलता रोया, यौह जीवन तेरा खाखा वो।। ३।।

अगम निगम की सब सुधि पाई, जिन देख्या औह ताखा वो।। ४।।
छाडो घर बासा खेलो पासा, गुरु मिलन की आशा वो।। ५।।
लई फकीरी क्या दिलगीरी, छाडे अरब खरब और लाखा वो।। ६।।
संत गरीबं भनैं तबीबं, मंदिर पाया पाखा वो।। **७।। ४६।।**
सुषमन सुरति लगाय नी महबूब खरे हैं।। टेक।।
गगन मंडल में धनक ध्यान है, पदम झलकैं पाय।। १।।
जुगन जुगन की भूली बिसरी, सतगुरु लई जगाय।। २।।
ऐसा औसर बहुरि नहीं बौरी, तन मन शीश चढ़ाय।। ३।।
जम किंकर मेरा कहा री करैगा, मैं चली परातम राहि।। ४।।
दही देवल अंदरि पूजो, साहिब है सत भाय।। ५।।
दास गरीब जन नजरि निवाजे, त्रिकुटी भँवर चढ़ाय।। **६।। ५०।।**
भगल विद्या का खेल सतगुरु मोहि लखाया।। टेक।।
मैं घायल गुरु ज्ञान भई री, लग्या प्रेम का सेल।। १।।
पिण्ड न प्रान नहीं दम देही, जा की सुनी बलेल।। २।।
खेत परौं तो मुजरा मेरा, सतगुरु ले गया बेल।। ३।।
दास गरीब चिराग अर्श में, बिन बाती बिन तेल।। **४।। ५१।।**
करि हैं नजरि निहाल, सतगुरु जोग बिजोगी।। टेक।।
जिन के पीया परदेश बसत हैं, तिन का कौन हवाल।। १।।
लाय महोबति तोरि चले हैं, जीवैंगे कै काल।। २।।
मोरे पीया का शब्द न मान्या, जा पर परि है जुवाल।। ३।।
एक पलक में गौरि उधारी, ऐसे दीन दयाल।। ४।।
दास गरीब परख नहीं आवै, त्रिकुटी दरवै लाल।। **५।। ५२।।**
अजब रंगीले नैन मुरली तो बाजत आई।। टेक।।
जो देखै आली सोई जानै, पलक न परि है चैंन।। १।।
एक सुर सेती मुरली बजावै, एक सुर गावै बैंन।। २।।
हमरे द्वारे मोहन ठाढ़े, कैसे सोऊँ रैंन।। ३।।
एक उठै एक परै धरनी परि, ग्यासी छूटै गैंन।। ४।।
उस दूलह कूँ सोई देखै, अंदरि फिरै तुरफैंन।। ५।।
दास गरीब अर्श मठ तकिया, लखि सतगुरु की सैंन।। **६।। ५३।।**
तुम बिन कौन छुटावै, गज पकरे हैं, गिराह।। टेक।।
नरसिंह रूप धरे नारायण, प्रहलाद भगत की मदाह।। १।।
जदि संखासुर वेद चुराये, धरि मारे रूप बराह।। २।।
लंका तोरी रावण मारे, अठारा पदम चढ़ाय।। ३।।
आई पूतना तुम कूँ मारन, दूधी विष लगाय।। ४।।
कंस केसि चानौर पछारे, मल अखारै जाय।। ५।।

धन्ना भक्त ने कांकर बोई, जा का खेत निपाय।। ६।।
द्रौपदी चीर गहे दुःशासन, जा के अनंत बढ़ाय।। ७।।
सुदामा दलिद्र मोक्ष किये हैं, अन्न धन रही न चाह।। ८।।
पीपा परचै साहिब पाये, कूदि परे दरियाय।। ९।।
नरसीला की हूँडी झाली, सांवल शाह कहाय।। १०।।
केशो नाम कबीर कै आये, नौलख बोडी लदाय।। ११।।
मीरा बाई कूँ मारन लागे, बिष का प्याला प्याय।। १२।।
देवल फेर्या गऊ जिवाई, नामदेव की छांनि छिवाय।। १३।।
सात सै रूप धरे रैदासा, कनक जनेऊ दिखाया।। १४।।
दास गरीब अब बेर हमारी, तुम सुनियो अलख अलाह।। **१५।। ५४।।**

बछरू चुरावन आये ब्रह्मा लख्या न भेव।। टेक।।

नंद कहै मेरा नंद को नंदा, पुत्र कहै बसुदेव।। १।।
सुरपति चढ्या बिरज डबोवन, भीज्या भीति न लेव।। २।।
इन्द्र कढ़ाही होत सकल में, पूजा खाय गये देव।। ३।।
शेष सहंस मुख निश दिन गावै, साखि भरैं शुकदेव।। ४।।
चिदानंद चित मांहि लखावै, पूरा सतगुरु सेव।। ५।।
दास गरीब भाडली परसी, परबी न जानी सहदेव।। **६।। ५५।।**

मुकट मुरारी की मुरली नैं मोही री।। टेक।।

कहैं कुछि और करै कुछि और, बात न धोही री।। १।।
माखन माखन खात कन्हैया, रह गई छोई री।। २।।
बिछरि जात तब ढूंढत डोलू, गहबर रोई री।। ३।।
अंझू नीर झरै निश बासर, अंगिया धोई री।। ४।।
दास गरीब पलक कै अंदरि, है निरमोही री।। **५।। ५६।।**

मुरलीधर आवत है री मुरलीधर।। टेक।।

प्रगट नाम सभा में लेवै, मेरे कुल कूँ लजावत है री।। १।।
मुरली बजावै शब्द सुनावै, कछु अटपटी बानी गावत है री।। २।।
हम दध बेचन जात नगर में, मेरी मटकी फोर गिरावत है री।। ३।।
अजामेल गनिका से त्यारे, भीलनी के झूठे फल खावत है री।। ४।।
सुदामा दालिद्र मोचि कीये हैं, अन्न धन चाह मिटावत है री।। ५।।
दुःशासन से पचि पच हारे, द्रौपदी चीर बढ़ावत है री।। ६।।
देवल फेर्या गऊ जिवाई, नामा की छांनि छिवावत है री।। ७।।
धन्ना भक्त कूँ कांकर बोई, जाका खेत निपावत है री।। ८।।
केशो नाम कबीर कै आये, नौ लख बोडी ढुरावत है री।। ९।।
विप्र हैरान किये रैदासा, कनक जनेऊ दिखावत है री।। १०।।
दास गरीब औह अबल बली है, ग्वालनियौं की दही गिरावत है री।। ११।। ७।।

अरे हो नगर में जाना है।। टेक।।
इला पिंगुला सुषमन तीरा, त्रिकुटी बीच निशाना है।। १।।
जत की जिहाज परम पद पाया, निःअक्षर बरदवाना है।। २।।
संख सुरन हैं समाधि लगाये, जहां अविचल पुरुष पुराना है।। ३।।
वार न पार परख नहीं आवै, निरगुण पद निरवाना है।। ४।।
झिलमिल दरिया हंस बिचरिया, सकल कला शशि भाना है।। ५।।
ब्रह्मा संख खड़े कर जोरैं, शंभू से सुरज्ञाना है।। ६।।
विष्णु विश्वंभर चौंर करत हैं, अविगत देश दिवाना है।। ७।।
सनक सनंदन संत कुमारा, नारद मुनि प्रवाना है।। ८।।
जहां गोरख दत्त कबीर बसत हैं, देख अधम सुलताना है।। ९।।
या भूमि छाडि चलौगे हंसा, यौह तो देश बिराना है।। १०।।
दास गरीब अर्श मठ तकिया, सतगुरु कूँ कुरबाना है।। **११।। ५८।।**
अरे हो अगमपुर रासा है।। टेक।।
द्वादश ऊपरि दीप हमारा, उनमन के घरि वासा है।। १।।
सोंह सुरति लगाय ले हंसा, जाकै पिण्ड न श्वासा है।। २।।
बिरछ हिरंबर शब्द गुरंबर, निरखो अगरी नासा है।। ३।।
सकल समाना है बेदाना, घट मठ नहीं अकाशा है।। ४।।
शंख चक्र गदा पदम बिराजैं, नैनों मध्य प्रकाशा है।। ५।।
सेज सुरंगी तखत दिवाना, जहां कबीर खवासा है।। ६।।
दास गरीब संपटि नहीं आवै, छह ऋतु बारह मासा है।। **७।। ५९।।**
अरे हो अगमपुर बांका है।। टेक।।
शुन्य सरोवर हंसा जाहीं, द्वार सुई का नाका है।। १।।
साचै सतगुरु दिया पलीता, भँवर उडे बिन पांखा है।। २।।
सुरति निरति कूँ पद में लावो, अर्श कुर्श बिच झांका है।। ३।।
हंसा मानसरोवर जाहीं, द्वार सुई का नाका है।। ४।।
दास गरीब अगम अविनाशी, त्रिकुटी अंदर चांपा है।। ५।। ६०।।
वाह वाह पुरुष दिलदांना है।। टेक।।
निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण, संख कला कुरबाना है।। १।।
इला पिंगला सुषमन संगी, औघट घाट पियाना है।। २।।
ब्रह्मरंध्र का घाट बिकट है, जा दर हंसा जाना है।। ३।।
संख फुहारे छूटैं नूर के, ऐसा जहां खिलखाना है।। ४।।
चंद सूर नहीं पावक पानी, नहीं जिमी असमाना है।। ५।।
आँब खास में खालिक बैठ्या, चलि जहां आँब दिवाना है।। ६।।
इच्छा बीज जरै जिस देखे, सब ही खेल सिराना है।। ७।।
काम क्रोध और लोभ मोह सब, छूटैं गरब गुमाना है।। ८।।

क्रितम ख्याल हवाल समोधन, कहां गये पंच किसाना है।। ९।।
सुखसागर अमृत का दरिया, अमी महारस खाना है।। १०।।
उड्या बिहंगम खोज न पाया, अलल पंख धुनि ध्याना है।। ११।।
गये रिसातल राह न पाया, पढ़ि पढ़ि पोथी पाना है।। १२।।
सेवक कूँ सतगुरु बतलावैं, देखो धजा निशाना है।। १३।।
कौन वहां की खबरि कहै फिरि, दरिया बूँद समाना है।। १४।।
दास गरीब जो हरदम हाजरि, लखि साहिब सुलताना है।। **१५।। ६१।।**

वाह वाह अगम पुर जाऊँगा।। टेक।।

कुंभक रेचक राम रसायन, दशमें पवन चढ़ाऊँगा।। १।।
नाभ कँवल से करो पियाना, ब्रह्मरंध्र में ल्याऊँगा।। २।।
त्रिकुटी कोट में आसन माडौं, भौंर गुफा घर छ्याऊँगा।। ३।।
मेरदण्ड सूधा करि बैठौं, बंकनाल होय धाऊँगा।। ४।।
संख फुहारे छुटै नूर के, अधर धार बरषाऊँगा।। ५।।
गंगा जमना मध्य सरस्वती, ब्रह्म महूरति न्हाऊँगा।। ६।।
सुरति निरति गहि नाद बिन्द कूँ, तत्ते तत्त समाऊँगा।। ७।।
जरीबाब झिलमिल झलकंता, अमर चीर पहराऊँगा।। ८।।
दीन दयाल भक्ति दे मोकूँ, अनहद वाणी गाऊँगा।। ९।।
जलाबिंब जलहर जगदीशं अमृत आनि पिलाऊँगा।। १०।।
गरीबदास यौह मुक्ति महौला, निज मूरति दरसाऊँगा।। ११।। ६२।।

वाह वाह पुरुष ब्रह्मचारी है।। टेक।।

अन्न जल संजम करता नांहीं, जिनि याह धारनि धारी है।। १।।
चूल्हा चौका करै न कोई, आसन अर्श खुमारी है।। २।।
अमी महारस प्याले पीवैं, सुरति निरति मतवारी है।। ५।।
ब्रह्मा विष्णु उजीर बनाये, मेर कुबेर भंडारी है।। ४।।
शिव जोगी महादेव मुनीश्वर, जोग कला बिसतारी है।। ७।।
एक बीज ब्रह्मण्ड पिण्ड में, कोई पुरुषा कोई नारी है।। ६।।
अनंत कोटि महल मठ सिरजे, सूरति मूरति न्यारी है।। ९।।
जल पारस पृथ्वी के परदे, कहीं पीठा कहीं खारी है।। ८।।
कहीं मौंनी कहीं बकता ज्ञानी, कोई गावै दे दे तारी है।। ९।।
कहीं कहीं भाव भक्ति उपराजी, कहीं निंद्या कहीं गारी है।। १०।।
गरीबदास ता परि कुरबानी, झिलमिल रंग अटारी।। ११।। ६३।।

वाह वाह पुरुष अविनाशी है।। टेक।।

मन मथुरा दिल द्वारा नगरी, खोजो काया काशी है।। १।।
देही देवल मध्य पुरुष है, सब गुण का जो रासी है।। २।।
परानंदनी संग बिराजै, सो तो जाकी दासी है।। ३।।

हरदम दर्शन प्रसन्न मेला, दरसत फूल अकासी है।। ४।।
गरीबदास यौह जोग संपूर्ण, निरगुण नूर निवासी है।। ५।। ६४।।
आली ऐसा कंत प्रेवा है।। टेक।।
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष लग, सब देवन पति देवा है।। १।।
अक्षर में निःअक्षर बोलै, नहीं मातरा छेवा है।। २।।
नाद बिंद से न्यारा दरसै, सुरति निरति से सेवा है।। ३।।
सुख का सागर पद रतनागर, अमी महारस मेवा है।। ४।।
गरीबदास सुखधाम दया निधि, प्रान पुरुष का खेवा है।। ५।। ६५।।
आली ऐसा कंत बिनानी है।। टेक।।
घट मठ महतत सेती न्यारा, गावै अनहद बानी है।। १।।
हदि बे हदि से असतल ऊँचा, सेत धजा फररानी है।। २।।
सेत सिंहासन अविचल आसन, देखो दर्श निशानी है।। ५।।
जो जानैं सोई पहचानैं, जाहूँ के मनि मानी है।। ४।।
कच्छ मच्छ कूरंभ शेष से, ररंकार धुंनि ध्यानी है।। ५।।
अरध रूंम परि सकल पसारा, ताहूँ परि कुरबानी है।। ६।।
पांच तत्त तीन्यौं गुण तकिया, जिन याह बानक बानी है।। ७।।
महल न पाया भ्रम भुलाया, मन इन्द्री गुन सानी है।। ८।।
गरीबदास पृथ्वी जाहूँ की, अग्नि पवन और पानी है।। **९।। ६६।।**
पोइस बाबा पोइस है, चल्या जाय पद पोइस है।। १।।
आगे पोइस पाछै पोइस, पोइस पोइस होइस है।। २।।
जिन पोइस का मर्म न जान्या, जन्म अकारथ खोइस है।। ३।।
कहैं दास गरीब जहां ले छोडू, आवा गमन न होइस है।। ४।।
हरदम शब्द निवासी निज नादू बाजैं।। टेक।।
हद के जीव हदीरे पूजैं, शिव ब्रह्मा के उपासी।। १।।
चेतन मूरत जड़ को पूजैं, पाती फूल चढ़ासी।। २।।
अकल बिहूना समझत नाहीं, पाती पत्थर ना खासी।। ३।।
कोई द्वारामती पौहकर कूँ ध्यावै, कोई वृन्दावन काशी।। ४।।
कोई बदरी पर्वत छीकै लखिया, कोई जगन्नाथ कूँ जासी।। ५।।
बैरागी बिरह नहीं बेध्या, भूले भेद सन्यासी।। ६।।
शब्द अतीत अकल घर पाया, तो अठसिद्धि नौनिधि दासी।। ७।।
उनमनि महल शब्द सुधि पाई, जग से रहे उदासी।। ८।।
सतगुरु हंसा आन उधारे, कटी काल की फांसी।।
दास गरीब परम रंग भीने, मिले कबीर खवासी।। १०।।
जंत्री जग से न्यारा, क्या पाहन पूजै।। टेक।।
पत्थर ना पाती खात अज्ञानी, अजा भेड़ का चारा।

बनखण्डी नागा निरबानी, अंग लपेटै छारा।। १।।
सिद्ध चौरासी सुर तेतीसौं, लख्या न ब्रह्मद्वारा।
ज्ञानी गुणी मुनी सब भूले, पढ़ पढ़ पुस्तक भारा।। २।।
शेष महेश गणेश रु गौरा, ब्रह्मा पाया न पारा।
अठारह करोड़ मेरडण्ड उलंघन, नौ कोटि जलधारा।। ३।।
नाद बिंद में फिर फिर आवैं, भरमें नौ औतारा।
धरती अम्बर निःचल नाहीं, रहसी शब्द हमारा।। ४।।
जुगन जुगन के भूले हंसा, सतगुरु लिये उबारा।।
बन्दीछोड कबीर गोसांई, दास गरीब तुम्हारा।। **५।। ६९।।**

समझा है तो सिर धर पाव, बहुरि नहीं है ऐसा दाव।। टेक।।

अनगिन शीश मिले हैं धूर, अब कै ले मिल तखत हजूर।। १।।
सिर के साटै निकट नजीक, सतगुरु कूँकै सुन ले सीख।। २।।
सुत रु पुत्री गृह नारी नेह, जम किंकर मुख देंगे खेह।। ३।।
लोक लाज कुल की मर्याद, यह बजुरगी बिगड़े काज।। ४।।
अधर धार पर खेल हमार, कायर गिरि हैं अनंत अपार।। ५।।
मक्रतार मीहीं मैदान, पहुंचे सूरे संत सुजान।। ६।।
बहते कूँ बह जान न देह, सतगुरु पूरे खेवट हेह।। ७।।
शब्द अतीत हमारी जात, गरीबदास गूदा न गात।। **८।। ७०।।**

ऐसा ज्ञान कथो नरलोई, बहुरि न भौजल आवन होई।। टेक।।

वेद कतेब ज्ञान सब कूर, औह संतों का मारग दूर।। १।।
पढ़ै शास्त्र अठारह पुराण, आखिर कीजोगे शूकर श्वान।। २।।
गीता अर्थ पढ़ै भागौति, काल अचानक लेगी मौत।। ३।।
दर्पण धोती तिलक बनाय, आखिर तो जम डण्डा खाय।। ४।।
बहु विधि चौका किया अचार, तो नहीं बंच है जम की मार।। ५।।
बसती तज बनखण्डों बास, काहे कूँ जीमौ पंच गिरास।। ६।।
दूधाधारी कन्द अहार, काहे को तन लावो छार।। ७।।
झरने बैठ सरद क्यों खाव, काहे कूँ छीकै धर पाव।। ८।।
दास गरीब चीन्ह परमहंस, बहुरि न जीवरा होय विधंस।। ९।। ७१।।

अथ राग हिंडोलना

काया कँवल मंझारि, अटल अनराग है।
चीन्हैं संत सुजान, सोई बड़भाग है।। टेक।।

संत बड़भाग बिहाग बानी, चात्रक चंद चकोर हैं।

कोयल हंस परमहंस मेला, बोलत दादुर मोर हैं।। १।।
सुरति निरति मन पौंन परसौ, चलि हिरंबर बाग में।
अजब दीप समीप साजन, क्या लीजै बेराग में।। २।।
सुरति निरति मन पवन खंभा, कमल हिंडोले झूलिये।
झूलैं पांच पच्चीस तीन्यौं, ऐसा बाग न भूलिये।। ३।।
सतगुरु भेद अभेद अगम हैं, बारह मास मलार हैं।
सखी सुहेली चली नवेली तालिब तीज त्यौहार हैं।। ४।।
सोहं सिंध अबंध माला, शीशफूल हैं सुरति का।
बेसरि हार हमेल हीरा, बिंदा बेनी निरति का।। ५।।
कथ कांचू चित चीर पहरे, मन महंदी मसताक हैं।
खेले तीज अछीज अविगत, क्या कोड़ी धज लाख है।। ६।।
ऐसी झूल अझूल झूलौ, सतगुरु झूटे दीन्हिया।
जुगन जुगन के बिछरे हंसा, संग अपने कर लीन्हिया।। ७।।
है गुलबास निवास साहिब, दीन दयाल दया करी।
दास गरीब कबीर सतगुरु, हम बिभचारनि चित्त धरी।। ८।।

अथ राग टोडी

रिंचक सा प्रपंच भर्यौ है,
नाहर होय हिते हिरनाकुश, रावण को कुल नाश कर्यौ है।। टेक।।
तीनि लोक त्रिपैंड करी, देखो बावन होय बलिराय छल्यौ है।
अविगत आदि अनादि अनादं, अजहूँ बलि के द्वारे खर्यो है।। १।।
गोढेई डूबै सुमेर शिला तिरै, देखो सरवर पाषान तिर्यौ है।
तेतीस कोटि की बंधि छुटावन, सीता के शीश कलंक धर्यौ है।। २।।
गज रु गिराह निबाहि दिये, तहतीक तहां अरध नाम सर्यो है।
बसुदेव की बंधि छुटावन कूँ, देखो वहां पुत्र को भाव धर्यौ है।। ३।।
कंस केस चानौर खपावन, मल अखारे जो जाय अर्यौ है।
कुबजा चंदन भेट चढ़ायो, तहां वहां मालनि कूब हर्यौ है।। ४।।
चढ़े शिशुपाल गोपाल कूँ मारन, गैब के चक्र शीश झर्यौ है।
शंख रु चक्र गदा पदमी पुरुष, रुकमणि कूँ वर सोई बर्यौ है।। ५।।
नारद पूत बहत्तर जाये जो, पलक फिरंते जुग फिर्यौ है।। ६।।
छप्पन कोटि का जोड़ जादौं बंस, एक घड़ी पैमाल कर्यौ है।। ७।।
कैरौंई पंडों की ठारा खपाय कर, राखे टटीहरी के घंट पर्यौ है।। ८।।
तंदुल भेट सुदामा चढ़ाये, दालिद्र को नाश तो तुमहीं कर्यौ है।। ९।।
दुर्वासा के चक्र चले अमरीष पै, उलटि ऋषिसुर भागि फिर्यौ है।। १०।।
भक्ति को द्रोही जो मेरो द्रोही, दुर्वासा का मान तहां ही गिर्यौ है।। ११।।
अर्जुन जुमलाई बिरछ उधारि कै, काली के शीश पे नृत्य कर्यौ है।। १२।।

सुपच का रूप धर्‍यो धरनीधर, पंड की यज्ञ में शंख घुर्‍यौ है।। १३।।
साग ही पत्र से परिपूरण, अठासी सहंस को पेट भर्‍यौ है।। १४।।
द्रौपद सुता के जु चीर बढ़ाय के, दुःशासन मान तहां ही गिर्‍यौ है।। १५।।
मुरली की टेर सुमेर से ऊँची है, गायन को सुर खूब भर्‍यौ है।। १६।।
गोपी ही ग्वाल सबै गलतान हैं, गोवर्द्धन कर ताही धर्‍यौ है।। १७।।
इन्द्र से पैज करी परमात्म, एक रती नहीं बूँद झर्‍यौ है।। १८।।
छ्यानवैं कोटि घटा घन घोरि कै, इन्द्र तहां वहां फीटो पर्‍यौ है।। १६।।
ब्रह्मा कूँ बछ चुराय लिये जदि, नौ लख गऊ न थीर कर्‍यौ है।। २०।।
पूतना प्रान हिते परमेश्वर, कंस को बंस तबे तै डर्‍यौ है।। २१।।
छानि छिवाय के गऊ जिवाय के, नामा का देवल फेर धर्‍यौ है।। २२।।
सैंन भगत का सांसाई मेट्या, जु रूप अलेख हजाम कर्‍यौ है।। २३।।
पीपा समुंद्र में कूदि परे तहां, संक न सीव न जीव डर्‍यौ है।। २४।।
सीता समेत मिले चिदानंद से, पाप न पुण्य न खोटो खर्‍यौ है।। २५।।
सदना सही संत मिले जगदीश कूँ, देखो अजूद में डार्‍यो छुरौ है।। २६।।
रंकाई बंका रंगे गये रंग में, रैदास चमार से कौन बुरौ है।। २७।।
काशी के ढोर घसीट घसीट के, सांई के ध्यान से जोरि जुर्‍यौ है।। २८।।
शाह सिकन्दर काशी कबीर थे, पंडे को पांव बुझाय सिर्‍यौ है।। २६।।
सूकी नदी में जु नीर बहाय के, दत्ता जीया के जु खूंट हर्‍यौ है।। ३०।।
दास कबीर के बालदि आई है, तहां वहां केशो जी नाम धर्‍यौ है।। ३१।।
मेरे प्रतीति पतिव्रता के सी है, सो तो जु मगहर में जाय मर्‍यौ है।। ३२।।
पूरन ब्रह्म चिदानन्द साहिब, दास गरीब के अजर जर्‍यौ है।। ३३।।

चौरी

सुरति निरति का पंथ, अधरि में पग धरना।
तन मन शीश चढ़ाय, सही जीवत मरना।। टेक।।
उलटि खेचरी लाय, कलश कुंभा भरना।
चित चांवरि दिल मांहि, दरश दूलह करना।। १।।
कहने की नहीं बात, जहूर अजर जरना।
अकलि अपिण्डी प्रान, पिण्ड किस का भरना।। २।।
सेत मुकट तन श्याम, ध्यान जा का धरना।
भगल विद्या सुनि सैल, उलटि पौहमी परना।। ३।।
सुरति निरति मन पौंन, भजन की जै करना।
गरीबदास गलतान पुरुष साहिब बरना।। ४।। १।।
रे मन काहे डिगमगाय,
तेरा बाणिक अधक बणाया, समरथ कूँ कीन्हीं सहाय।। टेक।।

ज्यों भिछक घरि घरि द्वारै डोलै, सुनहा भटकत है सराय।
लखी हजारी लख्या न लाहा, कोड़ी ध्वज क्यों न अघाय।। १।।
अरब खरब और लीलि परम परि, रे मन मूरख चल्यौ ही जाय।
संख समूल बबूल डडूलं, मन चिंत्या ना मिटी चाहि।। २।।
उदै अस्त का राज दिया रे, अब क्यों भटकै रंक राय।
बलि असमेध करी अस्थापन, सुरपति दिये डिगाय।। ३।।
बावन रूप अनूप बिनानी, आंनि छले तिनहूँ बलिराय।
तीनि लोक त्रिपैंड करी है, समरथ साहिब पग बंधाय।। ४।।
सींगी ऋषि से बन में मोहे, दुर्वासा कुच भौंर लाय।
इंद्र मोहनी पातरि भोगी, जागरत सुपना एकै भाय।। ५।।
पलक फिरंते ही जुग फिरै, ऐसी तुम्हरी जोग माय।
नारदमुनि से जोगी डिगमग, पूत बहत्तर दीये जाय।। ६।।
कामदेव कामनि कूँ चाहै, मुक्ति पछूड़ी दे बहाय।
गौतमऋषि कै सुरपति आये, सहंस भग दीन्हीं बनाय।। ७।।
शुक्राचारज गये समूलं, भृगु सुता घरि लगी भाहि।
सतगुरु सुमरत उलटि समाने, हरदम निश्चय नाम गाय।। ८।।
ब्रह्मा विष्णु ईश से डिगमग, इन्द्र वरुण कुबेर धर्मराय।
चंचल माया सब जग खाया, मन मान्या यौही सुभाय।। ९।।
लोझा सूर सुभट सावंत सुंनि, घाव नहीं मेलेंह अघाव।
तन मन शीश करैं कुरबाना, सो बैठे धरि तखत पाव।। १०।।
हनूं कबीर भरथरी गोरख, ध्रू प्रहलाद किया उपाव।
पुण्डरीक पारासुर नारद, यास कपिल मुनि चले राहि।। ११।।
अकल अडोल अबोल निरंजन, गगन मण्डल मठ रह्यौ छ्याय।
गरीबदास असथिरि अविनाशी, आदि अंत नाहीं थरराय।। **१२।। २।।**

बोलण लागे री अलमोरा मोरा,
त्रिकुटी का ध्यान अमान अगोचर, सुरति निरति का लाय ले डोरा।। टेक।।
शंख चक्र गदा पदम बिराजैं, झिलमिल झलकैं मुकट तोरा।
वृन्दावन की कुंजि गली में, आनि बिराजे नंद किशोरा।। १।।
ताल बिरदंग झांझ डफ बाजैं, मुरली सुनियें शंख घमोरा।
पानी में पाहन ना भीजै, जनम रह्या कोरे का कोरा।। २।।
बिना विवेक जिन भेष लिया रे, अकलि गई नहीं नाम निहोरा।
गरीबदास गरज धुंनि सुनियें, भिणक सुनी वृन्दावन बोरा।। ३।। ३।।

सत्तनाम

सतगुरु सत्त कबीर की दया

श्री सतगुरु कबीर साहिब की वाणी

मंगलाचरण

नमो नमो परब्रह्म, परम सुख पूर्ण स्वामी।
नमो ब्रह्म प्रकाश, सकल घट अंतरयामी।। १।।
नमो विशंभर नाथ, सकल कूँ पालै पोसै।
लख चौरासी जूनि, सबन कूँ आप संतोषै।। २।।
नमो निरंजन देव, अचल अविनाशी राया।
नमो अछेद अभेद, नहीं तिस काल न काया।। ३।।
नमो अरूप अगाध, अजूनी रहै अकेला।
नमो अरंग अभंग, नहीं तिस गुरु न चेला।। ४।।
नूर रह्या भरपूर, सकल दीप सब ठौर।
जन कबीर सर्व वंदना, तुम समान नहीं और।। ५।।
नमो नमो निज नाम तूं, नमो कबीर कृपाल।
नमो संत शरणागती, सकले भ्रम निवार।। ६।।
सतगुरु सिरजनहार जन, करि कबीर प्रणाम।
नमस्कार डण्डोत सदा, अहनिश आठौं जाम।। ७।।
जन कबीर सर्व वंदना, करि हरि भक्ति विशेष।
सिरजे सिरजनहार कूँ, सुध बुध ज्ञानी भेष।। ८।।
पिरथम गुरु मनाय कै, शिष कीजै सब काज।
विघन हरै मंगल करै, राखै जन की लाज।। ९।।
बिघन हरन मंगल करन, परमेश्वर प्रणाम।
इष्ट अलेख मनाय कै, शिष करो सब काम।। १०।।
राम रमै जग जोत में, करि कबीर तह सेव।
विघन हरन मंगल करन, नमो निरंजन देव।। ११।।
डण्डौत गोविंद गुरु, बंदौं अब जन सोय।
पहल भये प्रणम तिन, नमो जो आगै होय।। १२।।
जन कबीर वंदन करै, केहि विधि कीजै सेव।
वार पार कीमत नहीं, नमो नमो निज देव।। १३।।

अथ गुरुदेव का अंग

कबीर, गुरु को कीजै डण्डवत, कोटि कोटि प्रणाम।
कीट न जानै भृंग को, गुरु करि ले आप समान।। १।।
कबीर, शिष गुरु कूँ दो बखत, नित कर है उण्डौत।
कहै कबीर ता शिष का, आवागमन ना होत।। २।।

कबीर, गुरु गोविंद कर जानिये, रहिये शब्द समाय।
मिलै तो डण्डवत बंदगी, नहीं पल पल ध्यान लगाय।। ३।।
कबीर, गुरु गोविंद दोनों खड़े, किस के लागौं पाय।
बलिहारी गुरु आपनें, जिन गोविंद दीये लखाय।। ४।।
कबीर, गुरु गोविंद दोऊ एक है, दूजा सबै आकार।
आपा मेटै हरि भजै, तब पावै करतार।। ५।।
कबीर, गुरु गरुवा मिल्या, ज्यों आटे में लौंन।
जाति पांति कुल मिट गया, अब नाम धरैगा कौन।। ६।।
कबीर, रामानंद का शिष भया, सतगुरु भये सहाय।
जग में जुगति अनूप है, सोई दई बताय।। ७।।
कबीर, सतगुरु के प्रताप तें, मिटि गये सब दुःख दुंद।
कहे कबीर दुबिधा मिटी, गुरु मिलिया रामानंद।। ८।।
कबीर, सतगुरु के उपदेश का, सुनता एक विचार।
जो सतगुरु मिलता नहीं, तो जाता जम कै द्वार।। ९।।
कबीर, जम द्वारे में दूत सब, करते ऐंचा तान।
उनतें कबहूँ न छूटते, फिरते च्यारों खान।। १०।।
कबीर, पाछे लागा जाय था, लोक वेद के साथ।
मारग में सतगुरु मिल्या, दीपक दीन्हा हाथ।। ११।।
कबीर, दीपक दीन्हा तेल भर, बाती दई अघट।
पूरा किया विसाहनां, बहुर न आवै हट।। १२।।
कबीर, भली भई जो गुरु मिल्या, नातर होती हांनि।
दीपक जोति पतंग ज्यों, परते आये निदांनि।। १३।।
कबीर, ज्ञान प्रकाश्या गुरु मिल्या, सो जनि बिसर जाय।
जब गोविंद कृपा करी, तब गुरु मिलिया आय।। १४।।
कबीर, बलिहारी गुरु आपने, घड़ी घड़ी सौ बार।
जिन मानुष से देवता किया, करत न लागी बार।। १५।।
कबीर, गुरु बड़े गोविंद ते, मन में देखि विचार।
हरि सिरजे ते वार है, गुरु सिरजे ते पार।। १६।।
कबीर, गुरु से ज्ञान जो लीजिये, शीश दीजिये दान।
बहुतक भौंदू बहि गये, राख जीव अभिमान।। १७।।
कबीर, गुरु की आज्ञा आवहीं, गुरु की आज्ञा जाय।
कहे कबीर वे संत हैं, आवा गवन नसाय।। १८।।
कबीर, लाख कोस जो गुरु बसै, दीजे सुरति पठाय।
शब्द तुरी असवार होय, छिन आवै छिन जाय।। १९।।
कबीर, गुरु परसि गुरु परस है, गुरु चन्दन सुख वास।

सतगुरु पारस जीव के, जिन दीया मुक्ति निवास।। २०।।
कबीर, गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष समान।
तीन लोक की संपदा, सो गुरु दीन्ही दान।। २१।।
कबीर, राम नाम के पटतरै, देवै को कुछ नांहि।
क्या ले गुरु संतोषिये, हौंस रही मन मांहि।। २२।।
कबीर, शिष खंडा गुरु मुश्कला, चढ़ै शब्द खुरसान।
शब्द सहै सन्मुख रहै, तो निपजै शिष सुजान।। २३।।
कबीर, सतगुरु समां न को सगा, सोधी सई न दाति।
हरि जी समां न को हितू, हरिजन सई न जाति।। २४।।
कबीर, सतगुरु की महिमा अनंत, किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़ियां, अनंत दिखावन हार।। २५।।
कबीर, थापन पाई थिर भया, सतगुरु दीन्ही धीर।
कबीर हीरा बनजिया, मान सरोवर तीर।। २६।।
कबीर, हीरा बनजिया, हिरदे प्रगटी खान।
पारब्रह्म कृपा करी, तब सतगुरु मिले सुजान।। २७।।
कबीर, निहचल निधि मिलाय तत, सतगुरु शाह स धीर।
निपजी में साझी घनां, बाटनहार कबीर।। २८।।
कबीर, चेतन चौकी बैठ करि, सतगुरु दीन्ही धीर।
निर्भय होय निशंक भजि, केवल कहै कबीर।। २९।।
कबीर, सतगुरु हम सूं रीझ करि, एक कह्या प्रसंग।
बरष्या बादल प्रेम का, भीज गया सब अंग।। ३०।।
कबीर, बादल प्रेम का, हम पर बरष्या आय।
अंतर भीजी आत्मा, हरी हुई बनराय।। ३१।।
कबीर, सतगुरु शब्द कमान करि, वाहन लाग्या तीर।
एक जु वाह्या प्रीत सूं, भीतर बिध्या शरीर।। ३२।।
कबीर, सतगुरु साचा सूरमा, शब्द जु वाह्या एक।
लागत ही भै मिटि गया, पड़्या कलेजे छेक।। ३३।।
कबीर, सतगुरु साचा सूरमा, नख शिख मार्‌या पूर।
बाहर घाव न दीसहीं, भीतर चकनाचूर।। ३४।।
कबीर, सतगुरु मार्‌या बान भरि, धरि कर सूधी मूठ।
अंग उघाड़ै लागिया, गई दुवा सूं फूट।। ३५।।
कबीर, सतगुरु मार्‌या तान करि, शब्द सुरंगी बान।
मेरा मार्‌या फिर जीवै, तो हाथ न गहूँ कमान।। ३६।।
कबीर, सतगुरु मार्‌या बान भरि, निरख निरख निज ठौर।
राम अकेला रहि गया, चित न आवै और।। ३७।।

कबीर, कर कमान सर सांधि कर, खैंन जु मार्‍या मांहि।
भीतर बिध्या सो मारि है, जीवै क जीवै नांहि।। ३८।।
कबीर, जब ही मार्‍या खैंचि करि, तब मैं मूवा जान।
लागी चोट जु शब्द की, गई कलेजा छानि।। ३९।।
कबीर, गूंगा हुवा बावरा, बहरा हुवा कान।
पावौं ते पिंगुला भया, सतगुरु मार्‍या बान।। ४०।।
कबीर, सतगुरु मारी प्रेम की, रही कटारी टूटि।
ऐसी अणी न सालहीं, जैसी सालै मूठि।। ४१।।
कबीर, राम नाम छाडूं नहीं, सतगुरु सीख दई।
अविनाशी सो परस करि, आत्मा अमर भई।। ४२।।
कबीर, चित चोखा मन निर्मला, बुधि उत्तम मति धीर।
सो धोखा नहीं बिच रहा, जो सतगुरु मिलै कबीर।। ४३।।
कबीर, सतगुरु बड़े जहाज हैं, जो कोई बैठे आय।
पार उतारै और कूँ, अपना पारस लाय।। ४४।।
कबीर, सतगुरु बड़े सराफ हैं, परखे खरा और खोट।
भवसागर ते काढि कै, राखै अपनी ओट।। ४५।।
कबीर, महल बनाईया, ज्ञान गिलावा दीन।
हरि देखन के कारनै, शब्द झरोखा कीन।। ४६।।
कबीर, पासा पकड़्या प्रेम का, सारी किया शरीर।
सतगुरु दाव बताईया, खेलै दास कबीर।। ४७।।

अथ गुरु पारख का अंग

कबीर, गुरु मिल्या न शिष भया, लालच खेल्या दाव।
दोनों बूडे धार में, चढ़ि पत्थर की नाव।। १।।
कबीर, जाका गुरु है अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधे कूँ अंधा मिल्या, पर्‍या काल कै फंध।। २।।
कबीर, गुरु गुरु में भेद है, गुरु गुरु में भाव।
सोई गुरु नित बंदिये, जो शब्द बतावै दाव।। ३।।
कबीर, माई मूंडूं उस गुरु की, जा ते भ्रम ना जाय।
आप जो बूड़्या धार में, चेला दिया बहाय।। ४।।
कबीर, पूरे गुरु बिना, पूरा शिष न होय।
गुरु लोभी शिष लालची, दूनी दाझन होय।। ५।।
कबीर, पूरा सहजे गुन करै, गुना न आवै छेह।
सायर पोखर सर भरै, दान न मांगै मेह।। ६।।
कबीर, पूरा सतगुरु ना मिल्या, सुनी अधूरी सीख।

स्वांग जती का पहर करि, घर घर मांगै भीख।। ७।।
कबीर, पूरा सतगुरु न मिल्या, सुनी अधूरी सीख।
मूंड मुंडावै मुक्ति कूँ, चाल न सकई बीक।। ८।।
कबीर, सतगुरु मिल्या निर्भय भया, रही ना दूजी आस।
जाय समाना शब्द में, राम नाम विश्वास।। ९।।
कबीर, गुरु किया है देह का, सतगुरु चीन्ह्या नांहि।
भौसागर के जाल में, फिर फिर गोते खांहि।। १०।।
कबीर, कनफूका गुरु हद का, बेहद का गुरु और।
बेहद का गुरु जब मिलै, तब लखै ठिकाना ठौर।। ११।।
कबीर, गुरुवा तो सस्ता भया, पैसे केर पचास।
राम नाम धन बेच कै, करै शिषौं की आस।। १२।।
कबीर, गुरुवा तो घर घर फिरै, कोई दिछ्या हमरी लेह।
कै बूडै कै ऊबरै, टका परदनी देह।। १३।।
कबीर, झूठे गुरु के पक्ष कूँ, तजत न कीजै बार।
द्वार न पावै शब्द का, भरमै बारमबार।। १४।।
कबीर, साचे गुरु के पक्ष में, मन कूँ दे ठहराय।
चंचल ते लिहचल भया, नहीं आवै नहीं जाय।। १५।।
कबीर, गुरु सिकलीगर कीजिये, ज्ञान मुश्कला देय।
मन का मैल छुडाय कै, चित दर्पण करि लेह।। १६।।
कबीर, मैं उपकारी ठेठ का, सतगुरु दिया सुहाग।
दिल दर्पण ज्ञान मुश्कला, दूर किये सब दाग।। १७।।

अथ गुरु निर्दोष का अंग

कबीर, गुरु विचारा क्या करै, जो शिष ही माहें चूक।
भावै ज्यौं प्रमोधिये, जानों बांस बजाई फूक।। १।।
कबीर, सतगुरु का चारा नहीं, शब्द न बेध्या अंग।
कोरा रह गया सीधरा, सदा तेल के संग।। २।।
कबीर, सतगुरु मिल्या तो क्या भया, जो मन पड़ गई भोलि।
पाह बिनुठ्या कपड़ा, क्या करै बिचारी चोलि।। ३।।
कबीर, गुरु बतावै साध को, साध कहै गुरु पूजि।
अरस परस के लेख में, भई अगम की सूझि।। ४।।

अथ निगुरा नर का अंग

कबीर, निगुरा जो सुमरन करै, दिन में सौ सौ बार।

नगर नायका सत्ति करै, तो जरै कौन की लार।। १।।
कबीर, गुरु बिन अहनिश नाम ले, नहीं संत का भाव।
कहै कबीर ता दास का, परै न पूरा दाव।। २।।
कबीर, गर्भ जोगेसर गुरु बिना, लागा हरि की सेव।
कहै कबीर बैकुण्ठ ते, फेरि दिया सुखदेव।। ३।।
कबीर, सुखदेव सरीखा फेरिया, तो को पावै पार।
गुर बिन निगुरा जो रहै, पड़ै चौरासी धार।। ४।।
कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है, पूछो वेद पुरान।। ५।।
कबीर, निश अंधियारी कारनै, चौरासी लख चन्द।
गुरु बिन ऐते उदै होंहि, तऊ दृष्टि है मन्द।। ६।।
कबीर, चौसठि दीवा जोय कै, चौदह चंदा मांहि।
तिह घर किसका चांदना, जिह घर सतगुरु नांहि।। ७।।
कबीर, पूरे कूँ पूरा मिलै, पूरा पड़सी दाव।
निगुरा तो कुबट चलै, जब तब पड़ै कुदाव।। ८।।
कबीर, जो कामनि पड़दे रहै, सुनै न गुरु मुख बात।
सो तो होयगी कूकरी, फिरै उघारे गात।। ९।।

अथ गुरु शिष हेरा का अंग

कबीर, ऐसा कोई न मिल्या, हम कूँ दे उपदेश।
भौसागर में डूबते, कर गह काढै केस।। १।।
कबीर, ऐसा कोई न मिल्या, जा स्यों रहिये लाग।
सब जग जलता देखिया, अपनी अपनी आग।। २।।
कबीर, ऐसा तो सतगुरु मिल्या, जा स्यों रहिये लाग।
सब जग तो शीतल भया, जब मिटी आपनी आग।। ३।।
कबीर, हम घरि जार्या आपना, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घरि जारूँ तासका, जो चलै हामरे साथि।। ४।।
कबीर, ऐसा कोई न मिलै, हम कूँ ले पहचान।
अपना करि के पाकरै, ले ऊतरै मैदान।। ५।।
कबीर, ऐसा कोई न मिलै, राम भजन का मीत।
तन मन सौंपे मृग ज्यूँ, सूनै बधिक का गीत।। ६।।
कबीर, ऐसा कोई न मिलै, जा स्यूं कहूँ दुख रोय।
जा स्यूँ कहिये भेद की, सो फिर बैरी होय।। ७।।
कबीर, ऐसा कोई न मिल्या, सब बिधि देय बताय।
सुन्न मंडल में पुरुष है, तांहि रहूँ ल्यौ लाय।। ८।।

कबीर, हम देखत जग जात है, जग देखत हम जांहि।
ऐसा कोई न मिल्या, पकड़ि छुडावै बांहि।। ९।।
कबीर, सारा सुरा बहु मिलै, घायल मिलै न कोय।
घायल कूँ घायल मिलै, तो राम भक्ति दृढ़ होय।। १०।।
कबीर, सर्प हीं दूध पिलाईया, सोई विष होय जाय।
ऐसा कोई न मिल्या, आपे ही विष खाय।। ११।।
कबीर, नादी वादी बहु मिले, करत कलेजे छेद।
कोई तखत तले का न मिला, जासौं पूछौं भेद।। १२।।
कबीर, तखत तले की सो कहै, जो तखत तले का होय।
मंझ महल की को कहै, जहां बांका पड़दा सोय।। १३।।
कबीर, मंझ महल की गुरु कहै, जिन देख्या सब घर बार।
कूँची दीन्ही हाथ करि, पड़दा दिया उघार।। १४।।
कबीर, बांका पड़दा खोल्ह कै, सन्मुख ले दीदार।
बाल सनेही साईयां, आदि अंत का यार।। १५।।
कबीर, वस्तु कहीं ढूढत कहीं, किहि विधि आवै हाथ।
कहै कबीर तब पाईये, जब भेदी लीजै साथ।। १६।।
कबीर, भेदी लीन्हा साथ करि, दीन्ही वस्तु बताय।
कोटि जन्म का पंथ था, पल में पहुंचा जाय।। १७।।

अथ सेवक का अंग

कबीर, सेवक सेवा में रहै, अंत कहूँ न जाय।
दुख सुख सिर ऊपर सहै, कहै कबीर समझाय।। १।।
कबीर, सेवक सेवा में रहै, सेवक कहिये सोय।
कहै कबीर सेवा बिना, सेवक कबहूँ न होय।। २।।
कबीर, सेवक मुखै कहावहीं, सेवा में दृढ़ नांहि।
कहै कबीर सो सेवका, लख चौरासी मांहि।। ३।।
कबीर, सेवक सेवा में रहै, सेव करै दिन रात।
कहै कबीर कुसेवका, सन्मुख न ठहरात।। ४।।
कबीर, फल कारण सेवा करै, निश दिन जांचै राम।
कहै कबीर सेवक नहीं, चाहै चौगुना दाम।। ५।।
कबीर, राम धनी जाचैं नहीं, सेव करै दिन रात।
कहै कबीर तेह सेवक को, काल करै नहीं घात।। ६।।
कबीर, सेवक स्वामी एक मति, जो मति में मति मिल जाय।
चतुराई रीझै नहीं, रीझै मन के भाय।। ७।।
कबीर, सब कुछि गुरु के पास है, पाईये अपने भाग।

सेवक मन स्यों प्यार है, निश दिन चरणौं लाग।। ८।।
कबीर, सतगुरु कहै सो शिष करै, सब बिधि कारज होय।
अमर अभय पद पाईये, काल न झंपै कोय।। ९।।
कबीर, गुरु और साधू कूँ, शीश नवावै जाय।
कहै कबीर सो सेवका, महा परम पद पाय।। १०।।
कबीर, साहिब के दरबार में, कमी काहूँ की नांहि।
बंदा मौज न पावहीं, चूक चाकरी मांहि।। ११।।
कबीर, द्वार धनी के पर रहो, धक्का धनी का खाय।
कबहूँ क धनी निवाज हीं, जो दर छाडि न जाय।। १२।।
कबीर, धूम धाम सहता रहै, कबहूँ न छोडे संगि।
पाह बिना लागै नहीं, कपड़ा के बहुरंग।। १३।।
कबीर, कुत्ता राम का, मोतिया मेरा नाम।
गले राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाव।। १४।।
कबीर, तोह तोह करै तो बाहरूं, दुर दुर करै तो जाव।
जयूं हरि राखै त्यूं रहूँ, जो देवै सो खाव।। १५।।
कबीर, मेरा मुझि में कछु नहीं, जो कछु है सो तेरा।
तेरा तुझि कूँ सौंपता, क्या लागैगा मेरा।। १६।।

अथ सुमिरन का अंग

कबीर, सुमिरन सार है, और सकल जंजाल।
आदि अंत मध्य सोधिया, दूजा देखौं काल।। १।।
कबीर, निज सुख दाता राम है, दूजा दुःख अपार।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार।। २।।
कबीर, कहता जात हूँ, सुनता है सब कोय।
राम कहै भला होयगा, नहीं तर भला न होय।। ३।।
कबीर, चिंता तो हरि नाम की, और न चिंता दास।
जे कुछ चितवै राम बिन, सोई काल की फांस।। ४।।
कबीर, सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुःख जाय।
कहै कबीर सुमिरन किये, सांई मांहि समाय।। ५।।
कबीर, सांई सुमरि मति ढील करि, जा सुमिरन ल्यौ लाह।
इहां खलक खिजमति करै, उहां अमरापुर जाह।। ६।।
कबीर, सहकामी सुमिरन करै, पावै उत्तम धाम।
निहकामी सुमिरन करै, पावै अविचल राम।। ७।।
कबीर, जिन हरि जैसा जानिया, ताकूँ तैसा लाभ।
ओसां प्यास न भाजहीं, जब लग धसै न आब।। ८।।

कबीर, सुमिरन की सुधि यौं करो, गागरि ज्यौं पनिहार।
बोलै डोलै सुरति में, कहै कबीर विचार।। ६।।
कबीर, सुमिरन की सुधि यौं करो, ज्यौं सुरभि सुत मांहि।
कहै कबीर चारा चरत, बिसरत कबहूँ नांहि।। १०।।
कबीर, सुमिरन की सुधि यौं करो, जैसे दाम कंगाल।
कहै कबीर बिसरै नहीं, पल पल लेत संभाल।। ११।।
कबीर, सुमिरन से मन लाईये, जैसे नाद कुरंग।
कहै कबीर बिसरै नहीं, प्राण तजै तिह संग।। १२।।
कबीर, सुमिरन से मन लाईये, जैसे कीट भिरंग।
कबीर बिसारै आप कूँ, होय जाय तिह रंग।। १३।।
कबीर, सुमिरन से मन लाईये, जैसे दीप पतंग।
प्राण तजै छिन एक में, जरत न मोरै अंग।। १४।।
कबीर, सुमिरन से मन लाईये, जैसे पानी मीन।
प्राण तजै पल बिसरै, दास कबीर कह दीन।। १५।।
कबीर, सुमिरन सुरति लगाय कै, मुख ते कछु न बोल।
बाहर के पट देय करि, अंतरि के पट खोल।। १६।।
कबीर, जो बोलै तो राम कहि, अंत कहुँ मत जाय।
दास कबीर निश दिन कहै, सुमिरन सुरति लगाय।। १७।।
कबीर, लूटि सकै तो लूट ले, राम नाम की लूटि।
पीछे फिरि पछिताहिंगे, प्राण जांहिगे छूटि।। १८।।
कबीर, लूटि सकै तो लूटिये, राम नाम भंडार।
काल कंठ कूँ गहैगा, रोकै दसौं द्वार।। १६।।
कबीर, निर्भय राम जपि, जब लग दीवै बाति।
तेल घटै बाती बुझै, तब सोवेगा दिन राति।। २०।।
कबीर, सूता क्या करै, जाग न जपै मुरारि।
एक दिनां भी सोवना, लम्बे पांव पसार।। २१।।
कबीर, सूता क्या करै, गुण गोविंद के गाय।
तेरे सिर पर जम खड़ा, खर्च कदे का खाय।। २२।।
कबीर, सूता क्या करै, सूते हेय अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिग्या, सुनत काल की गाज।। २३।।
कबीर, सूता क्या करै, ऊठ न रोवै दुख।
जाका वासा गोर में, सो क्यों सोवै सुख।। २४।।
कबीर, सूता क्या करै, जागन की करि चौंप।
यह दम हीरा लाल है, गिन गिन सांईं कूँ सौंप।। २५।।
कबीर, सूता क्या करै, काहे न देखै जागि।

जाके संग से बिछर्‍या, ताहीं के संगि लाग।। २९।।
कबीर, अपने पहरे जागिये, ना परि रहिये सोय।
ना जानौ छिन एक में, किस का पहरा होय।। २७।।
कबीर, नींद निशानी मौत की, ऊठि कबीरा जाग।
और रसाइन छाडि कै, तूं राम रसाइन लाग।। २८।।
कबीर, सोया सो निश्फल गया, जाग्या सो फल लेह।
साहिब हक्क ना राखसी, जब मांगै तब देह।। २९।।
कबीर, केसो कहि कहि कूकिये, ना सोईये असरार।
रात दिवस के कूँकने, कबहुँ तो जाय पुकार।। ३०।।
कबीर, जैसे माया मन रमै, तैसे राम रमाय।
तारा मंडल छाडि कै, जहां केसो तहां जाय।। ३१।।
कबीर, खुध्या कूकरी, करत भजन में भंग।
याकूँ टुकड़ा डारि के, सुमिरन करो निशंक।। ३२।।
कबीर, मेरी सुमिरनी, रसनां ऊपरि राम।
आदि जुगादि भक्ति हरि, सब का निज बिसराम।। ३३।।
कबीर, जबही नाम हृदय धर्‍या, भया पाप का नाश।
मानों चिनघी आग की, परी पुराने घास।। ३४।।
कबीर, नाम जो रत्ती एक है, पाप जु रत्ती हजार।
आधी रत्ती घट संचरै, जारि करै सब छार।। ३५।।
कबीर, हरि के नाम में, सुरति रहै एकतार।
तो मुख ते मोती झरै, हीरा अनंत अपार।। ३६।।
कबीर, राम नाम कूँ सुमिरते, उधरे पतित अनेक।
कहै कबीर नहीं छाडिये, राम नाम की टेक।। ३७।।
कबीर, राम नाम कूँ सुमिरते, अधम तिरे संसार।
अजामेल गनिका सुपच, सदना शिवरी नार।। ३८।।
कबीर, सुपने में बरराय कै, जो मुख निकसै राम।
वा के पग की पाहनी, मेरे तन का चाम।। ३९।।
कबीर, नाम जपत कन्या भली, साकट भला न पूत।
छेरी के गलि तल थनां, जामैं दूध न मूत।। ४०।।
कबीर, नाम जपत कुष्टी भला, चूय चूय परै जो चाम।
कंचन देह किस काम की, जा मुख नाहीं नाम।। ४१।।
कबीर, नाम जपत दलिद्री भला, टूटी घर की छानि।
कंचन मन्दिर जारि दे, जहां भक्ति न सारंगपानि।। ४२।।
कबीर, सब जग निरधना, धनवंता नहीं कोय।
धनवंता सो जानिये, जाकै राम नाम धन होय।। ४३।।

कबीर, बाहर क्या दिखलाईये, अंतर जपिये राम।
कहां मुहला खलक से, परा धनी सौं काम।। ४४।।
कबीर, मुख तो सोई भला, जा मुख निकसै राम।
जा मुख राम न निकसै, सो मुख है किस काम।। ४५।।
कबीर, गोविंद के गुण गावते, कबहूं न कीजै लाज।
अब पदई आगे मुक्ति, एक पंथ दो काज।। ४६।।
कबीर, हरि के मिलन की, बात सुनी हम दोय।
कै कुछ हरि का नाम ले, कै कर ऊँचा होय।। ४७।।
कबीर, पाँच संगी पीव पीव करै, छठा जो सुमरै मन।
आई सूत कबीर की, पाया राम रतन।। ४८।।
कबीर, तूं तूं करता तूं भया, मुझि में रही ना हूँ।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूँ तित तूं।। ४६।।
कबीर, सहजे ही धुंनि लग रही, कहै कबीर घट मांहि।
हिरदे हरि हरि होत है, मुख की हाजत नांहि।। ५०।।
कबीर, माला काठ की, बहुत जतन का फेरि।
माला फेरो स्वांस की, जामें गांठ न मेर।। ५१।।
कबीर, राम नाम का सुमरना, हंसि करि भावै खीज।
उलटा सुलटा निपजै, खेत पड्या ज्यौं बीज।। ५२।।
कबीर, स्वांस सुफल सो जानिये, हरि सुमिरन में जाय।
और स्वांस यूंही गये, करि करि बहुत उपाय।। ५३।।
कबीर, जाकी पूंजी स्वांस है, बिनस जाय छिन मांहि।
स्वांस स्वांस सुमिरन करो, और यतन कुछ नांहि।। ५५।।
कबीर, जीवन थोरा ही भला, जो हरि का सुमिरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरै न कोय।। ५६।।

अथ भक्ति का अंग

कबीर, हरि की भक्ति करि, तज विषिया रस चोज।
बार बार नहीं पाईये, मानुष जन्म की मौज।। १।।
कबीर, हरि की भक्ति बिन, धृग जीवन संसार।
धूवां के सा धौलहर, जात न लावै बार।। २।।
कबीर, भक्ति भाव भादौं नदी, सबै चली गहराय।
सलिता सोई जानिये, जो जेठ मास ठहराय।। ३।।
कबीर, हरषि बडाई देख कै, भक्ति करै संसार।
जब देखै कुछ हीनता, औगुण धरै गँवार।। ४।।
कबीर, जब लग नाता जगत का, तब लग भक्ति न होय।

नाता तोरै हरि भजै, भक्त कहावै सोय।। ५।।
कबीर, भक्ति बीज बिनसै नहीं, आय परै जो झोल।
कंचन जो बिष्ठा परै, घटै न ता का मौल।। ६।।
कबीर, जल ज्यौं प्यारा माछली, लोभी प्यारा दाम।
माता प्यारा बालका, भक्त प्यारा राम।। ७।।
कबीर, प्रेम बिना जो भक्ति है, सो निज डिंभ विचार।
उदर भरन के कारने, जन्म गवावै सार।। ८।।
कबीर, भक्ति भेष बहु अंतरा, जैसे धरनि आकाश।
भक्त सुमरै भगवंत कूँ, भेष जगत की आस।। ९।।
कबीर, भक्ति पदारथ जब मिलै, तब प्रभु होय सहाय।
प्रेम प्रीति की भक्ति जो, पूर्ण भाग मिलाय।। १०।।
कबीर, भक्ति द्वारा साकड़ा, राई दसमें भाय।
मन तो मैंगल होय रहा, क्यों करि होय समाय।। ११।।
कबीर, भक्ति द्वारा मोकला, सुमर सुमर समाय।
मन का तो मैदा किया, निरभै आवै जाय।। १२।।
कबीर, भक्ति दुहेली राम की, नहीं कायर का काम।
निस्परेही निरधार को, आठ पहर संग्राम।। १३।।
कबीर, भक्ति दुहेली राम की, नहीं कायर का काम।
शीश उतारै हाथ ले, सो लेसी हरि नाम।। १४।।
कबीर, भक्ति दुहेली राम की, जैसी खांडे धार।
डिगमगै सो गिर पड़ै, निहचल उतरै पार।। १५।।
कबीर, कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति बरण कुल खोय।। १६।।
कबीर, जब लग भक्ति सहकामता, तब लग निष्फल सेव।
कहै कबीर वे क्यूं मिलै, निहकामी निजदेव।। १७।।
कबीर, भक्ति निसैनी मुक्ति की, संत चढ़े सब धाय।
जिन जिन मन आलस किया, जन्म जन्म जेहड़ाय।। १८।।

अथ दासातन का अंग

कबीर, दासातन हिरदै नहीं, नाम धरावै दास।
पानी के पीये बिना, मिटै न जीव की प्यास।। १।।
कबीर, दासातन हिरदै बसै, साधुन स्यौं आधीन।
कहै कबीरा दास सौं, दास लछन ल्यौ लीन।। २।।
कबीर, स्वामी होना सोहरा, दोहरा होना दास।
गाडर आनी ऊन कूँ, बांधी चरै कपास।। ३।।

कबीर, हरि तो सब कूँ भजै, हरि कूँ भजै न कोय।
जब लग आस शरीर की, तब लग दास न होय।। ४।।
कबीर, निरबंधन बंध्या रहै, बंध्या निरबंध होय।
कर्म करै करता नहीं, दास कहावै सोय।। ५।।
कबीर, राम धनी सिर पर खड़े, कहा कमी तोहे दास।
रिद्धि सिद्धि सेवा करै, मुक्ति न छाडै पास।। ६।।
कबीर, दास दुखी तो हरि दुखी, आदि अंत तिहूँ काल।
पलक एक में प्रगटै, पल में करै निहाल।। ७।।

अथ उपदेश का अंग

कबीर, हरि जी याहि बिचारिया, साखी कहो कबीर।
भवसागर में जीव है, सुनि कै लागै तीर।। १।।
कबीर, कलूकाल ततकाल है, बुरा न करियौ कोय।
अनबोवै लुनता नहीं, बोवै लुनता होय।। २।।
कबीर, जो तोको कांटा बोवै, ताको बो तूं फूल।
तोकूँ फूल के फूल है, वाको सूल के सूल।। ३।।
कबीर, दुर्बल को न सताईये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की स्वांस से, लोह भस्म हो जाय।। ४।।
कबीर, आप ठगाईये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगै दुख होय।। ५।।
कबीर, सत ही में सत बांटिये, रोटी में से टूक।
कहै कबीर ता दास को, कबहूँ न आवै चूक।। ६।।
कबीर, देह धरे का गुण यही, देह देह कछु देह।
बौहर न देही पाईये, अबकै देह सुदेह।। ७।।
कबीर, कहै कबीरा देह तूं, जब लग तेरी देह।
देह खेह हो जायगी, तब कौन कहैगा देह।। ८।।
कबीर, कहै कबीर पुकारि कै, दो बातां लिख लेय।
कै साहिब की बंदगी, कै भूखे भोजन देय।। ९।।
कबीर, हाड बड़ा हरि भजन करि, द्रव्य बड़ा कुछ देह।
अकल बड़ी उपकार करि, जीवन का फल येह।। १०।।
कबीर, ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन कूँ सीतल करै, आपहु सीतल होय।। ११।।
कबीर, जग में बैरी कोई नहीं, जे मन सीतल होय।
येह आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।। १२।।
कबीर, हसती चढ़िये ज्ञान कै, सहज दुलीचा डारि।

स्वांन रूप संसार है, भुसने दे झख मारि।। १३।।
कबीर, तूं काहे कूँ डरै, सिर पर सिरजन हार।
हसती चढ़ि न डरपिये, कूकर भुसे हजार।। १४।।
कबीर, आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कहै कबीर नहीं उलटिये, वही एक की एक।। १५।।
कबीर, हरि जन तो हार्या भला, जीतन दे संसार।
हारा तो हरि स्यों मिलै, जीता जम के द्वार।। १६।।
कबीर, धारा तो दोऊ भली, गिरही कै बैराग।
गिरही दासातन करै, बैरागी अनराग।। १७।।
कबीर, मांगन मरन समान है, मति कोई मागों भीख।
मांगन ते मरना भला, यह सतगुरु की सीख।। १८।।
कबीर, उदर समाता अंन भला, तन समाता चीर।
यासों अधिका न गहै, ताका नाम फकीर।। १९।।
कबीर, कथा कीतरन कल बिखै, भवसागर की नाव।
कहै कबीर यह जगत में, नाहीं और उपाव।। २०।।
कबीर, कथा कीरतन करन की, जाकै निश दिन रीत।
कहै कबीर वा दास सो, निश्चय कीजे प्रीत।। २१।।
कबीर, कथा कीरतन छाडि कै, करि है और उपाय।
कहै कबीर ता साध के, पास कोई मति जाय।। २२।।
कबीर, कथा कीरतन रात दिन, जाकै ऊदम येह।
कहै कबीर ता साध की, हम चरनन की खेह।। २३।।
कबीर, कथा कीरतन कल बिखै, तिरने को उपकार।
सुनै सुनावै और कूँ, यह उपदेश हमार।। २८।।
कबीर, बंदे तूं करि बंदगी, तो पावै दीदार।
औसर मानुष जन्म का, बहुर न बारम्बार।। २५।।
कबीर, बार बार तोसों कहा, सुन रे मनुवा नीच।
बनजारे के बैल ज्यूं, तेरी पैंडे मांही मीच।। २६।।
कबीर, बनजारे के बैल ज्यूं, भ्रम फिर्यौं चहूँ देश।
खांड लाद भुस खात है, बिन सतगुरु उपदेश।। २७।।
कबीर, जो कोई समझै सैंन में, तासे कहिये बैंन।
सैंन बैंन समझै नहीं, तासों कछु न कैंन।। २८।।
कबीर, राम भजो मन बस करो, यही बात है तंत।
काहे को पढ़ि पचि मरो, कोटिक ज्ञान ग्रन्थ।। २९।।
कबीर, राम नाम सुमिरन करो, सतगुरु पद निज ध्यान।
आत्म पूजा जीव दया, लहे सो मुक्ति अमान।। ३०।।

कबीर, गुरु मुख शब्द प्रतीत करि, हरष शोक बिसराय।
दान छिमा सत सील गहि, अमर लोक ले जाय।। ३१।।

अथ प्रेम का अंग

कबीर, यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नांहि।
शीश उतारै भुंइ धरै, तब पैठे घर मांहि।। १।।
कबीर, शीश उतारै भुंइ धरै, ऊपर राखै पाव।
दास कबीरा यौं कहै, ऐसा होय तो आव।। २।।
कबीर, यह तो घर है प्रेम का, ऊँचा अधिक इकंत।
शीश काटि पग तर धरै, तब कोई पहुँचे संत।। ३।।
कबीर, प्रेम न वाड़ी उपजै, प्रेम ना हाटि बिकाय।
राजा परजा जो रुचै, शीश देय ले जाय।। ४।।
कबीर, प्रेम प्याला सो पीवै, शीश दछनां देय।।
लोभी शीश न दे सकै, नाम प्रेम का लेय।। ५।।
कबीर, छिन चढ़ै छिन ऊतरै, सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोय।। ६।।
कबीर, प्रेम प्यारे लाल सो, मन दे कीजे भाव।
सतगुरु के प्रसाद से, भला बना है दाव।। ७।।
कबीर, प्रेम प्रेम सब को कहै, प्रेम न चीन्हे कोय।
आठ पहर भीजा रहै, प्रेम कहावै सोय।। ८।।
कबीर, प्रेम न चाखिया, चाख न लिया स्वाद।
सूने घर का पाहुना, ज्यूं आवै त्यूं जाव।। ९।।
कबीर, जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, स्वांस लेत बिन प्रान।। १०।।
कबीर, प्रेम बिकाता मैं सुना, माथा साटे हाटि।
पूछत विलम्ब ना कीजिये, ततछिंन दीजे काटि।। ११।।
कबीर, प्रेम बिना धीरज नहीं, बिरह बिना बैराग।
सतगुरु बिन मिटते नहीं, मन मनसा के दाग।। १२।।
कबीर, जहां प्रेम तहां नेम नहीं, तहां न बुधि व्यवहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिनै तिथिवार।। १३।।
कबीर, प्रेमी ढूंढत मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोय।
प्रेमी स्यौं प्रेमी मिलै, तो राम भक्ति दृढ़ होय।। १४।।
कबीर, प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट उपज्या होय।
जो पै मुख बोलै नहीं, नैंन देत हैं रोय।। १५।।
कबीर, प्रेम भाव एक चाहिये, भेख अनेक बनाय।

भावै रहो जो गृह में, भावै बन में जाय।। १६।।
कबीर, जोगी जंगम सेवड़ा, सन्यासी दरवेश।
बिना प्रेम पहुंचै नहीं, दुर्लभ हरि का देश।। १७।।
कबीर, जो तूं प्यासा प्रेम का, शीश काटि करि गोय।
जब तूं ऐसा होयगा, तब कुछ होय सो होय।। १८।।
कबीर, पीया चाहै प्रेम रस, राख्या चाहै मान।
एक म्यान में दोय खड़ग, देखा सुना न कान।। १६।।

अथ आनदेव का अंग

कबीर, सौ बर्षहि गुरु भक्ति करै, एक दिन पूजै आन।
सो अपराधी आत्मा, परै चौरासी खान।। १।।
कबीर, राम नाम कूँ छाडि कै, करै आन का जाप।
जा कै मुहडै दीजिये, नौसाइ को बाप।। २।।
कबीर, राम नाम कूँ छाडि कै, करै आन का जाप।
वेस्वा केरे पूत ज्यौं, कहै कौन सूं बाप।। ३।।
कबीर, राम नाम कूँ छाड़ि कै, करै आन की आस।
कहै कबीर ता दास का, होय नरक में बास।। ४।।
कबीर, राम नाम कूँ छाडि कै, राखै करुवा चौथ।
सो तो होयगी सूकरी, तिन्ह राम सौं कौथि।। ५।।
कबीर, आन भजै सो अंधरा, राम भजै सो साध।
तत्त भजै सो वैष्णौं, तिन का मता अगाध।। ६।।
कबीर, कामी तिरे क्रोधी तिरे, लोभी तिरे अनंत।
आन उपासी कृतघ्नी, तिरै न राम कहंत।। ७।।
कबीर, देवी देव मानै सबै, अलख न मानै कोय।
जा अलख सब कुछ किया, तासे बेमुख होय।। ८।।
कबीर, देवी देव ठाडे भये, हम कूँ ठौर बताय।
जो मुझ से बेमुख है, तिनकूँ लूटो खाय।। ६।।
कबीर, माई मसांनी सेढ़ि सीतला, भैरों भूत हनवंत।
साहिब से न्यारा रहै, जो इन कूँ पूजंत।। १०।।

अथ विरह का अंग

कबीर, रात्यौं रूनी विरहनी, ज्यौं बच्च्यों कूँ कुंज।
कबीर अंतर प्रजल्या, प्रगट्यो विरहा पुंज।। १।।
कबीर, अंबर कुंजा कुरलियां, गरजि भरे सब ताल।

जिन से गोविन्द बिछुड़े, तिनके कौन हवाल।। २।।
कबीर, चकवी बिछुड़ी रैन की, आय मिली प्रभात।
जो जन बिछुड़े राम सौं, ते दिन मिलै न रात।। ३।।
कबीर, बासर सुख न रैन सुख, ना सुख सपने मांहि।
कबीरा बिछुड़्यां राम सौं, ना सुख धूप न छांहि।। ४।।
कबीर, बहुत दिनन की जोहती, बाट तुम्हारी राम।
जिय तरसै तुम मिलन कौ, मन नाहीं बिसराम।। ५।।
कबीर, विरहनि ऊभी पंथ सिर, पंथी बूझै धाय।
एक शब्द कहो पीव का, कबहुँ मिलैंगे आय।। ६।।
कबीर, विरहनि देय संदेसड़ा, सुनो हमारे पीव।
जल बिन मछली क्यों जीवै, पानी में का जीव।। ७।।
कबीर, विरहनि देय संदेसड़ा, सुनहों राम सुजान।
बेगि मिलो तुम आय कै, नहीं तो तजहूँ प्रान।। ८।।
कबीर, विरहनि ऊठै भुँइ पड़ै, दर्शन कारण राम।
मूवा पीछे देहुँगे, सो दर्शन किह काम।। ६।।
कबीर, मूवा पीछे जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।
पत्थर घासा लोह सब, तब पारस कौने काम।। १०।।
कबीर, आय न सकौं तुझ पै, सकौं न तुझे बुलाय।
जियरा यौही लेहुँगे, बिरह तपाय तपाय।। ११।।
कबीर, यह तन जालूं मसि करूं, ज्यौं धुंवा जाय सुरग।
मति वे राम दया करैं, बरसि बुझावैं अग।। १२।।
कबीर, यह तन जालूं मसि करूं, लिखूं राम का नाम।
लेखनि करूं करंक की, लिखि लिखि राम पठाव।। १३।।
कबीर, चोट सतावै विरह की, सब तन जर जर होय।
मारन हारा जान है, कै जिस लागी सोय।। १४।।
कबीर, कर कमान सर सांध करि, खैंच जु मार्‍या मांहि।
भीतर बेध्या सो मार होय, जीवै क जीवै नांहि।। १५।।
कबीर, बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोय।
राम वियोगी न जीवै, जीवै तो बौरा होय।। १६।।
कबीर, बिरह भुवंगम पैस करि, किया कलेजे घाव।
साधू अंग न मोडहीं, ज्यौं भावे त्यौं खाव।। १७।।
कबीर, सब रग तंत रवाब तन, बिरह बजावै नित।
और न कोई सुन सकै, के सांईं कै चित्त।। १८।।
कबीर, बिरह बिरह जिनि कहौ, बिरह है सुलतान।
जिस घट बिरह न संचरै, सो घट सदा मासन।। १६।।

कबीर, अंखडियां झांई पड़ी, पंथ निहार निहार।
जीभड़ियां छाला पड़्या, राम पुकार पुकार।। २०।।
कबीर, नैनों नीझर लाइया, रहट बहै निश जाम।
पपीहा ज्यौं पीव पीव करै, कबहुँ मिलहिंगे राम।। २१।।
कबीर, बिरह जलाई मैं जलूं, मोहि बिरह का दुख।
छांह न बैठूँ डरपती, मति जलि ऊठै रुख।। २२।।
कबीर, बिरह जलाई मैं जलूं, जलती जलहर जाऊँ।
मो देखत जलहर जलै, संतों कहा बुझाऊँ।। २३।।
कबीर, हँसना दूर करि, रोवन सौं करि चित्त।
बिन रोयां क्यों पाईये, प्रेम प्यारा मित्त।। २४।।
कबीर, हँसौं तो दुःख नहीं बिसरौं, रोऊँ तो बल घटि जाय।
मन ही मांहि विसूरना, ज्यौं घुण काठ हीं खाय।। २५।।
कबीर, हँसि हँसि पीव न पाईये, जिन पाया तिन रोय।
जे हाँसौं ही हरि मिलै, तो नहीं दुहागनि कोय।। २६।।
कबीर, हाँसी खेलै हरि मिलै, तो कौन सहै खुरशान।
काम क्रोध तृष्णा तजै, ताहि मिलै भगवान।। २७।।
कबीर, देखत दिन गया, निश भी निरखत जाय।
विरहनि पीव पावै नहीं, जीयरा तड़फै माय।। २८।।
कबीर, पर्वत पर्वत मैं फिर्‍या, नैंन गंवाये रोय।
सो बूटी पाऊँ नहीं, जासै जीवन होय।। २९।।
कबीर, नैनों अंतर आव तूं, निश दिन निरखूं तोहि।
कब हरि दर्शन देहौंगे, सो दिन आवै मोहि।। ३०।।
कबीर, नैंन हमारे बावरे, छिन छिन लोड़ै तुझ।
ना तुम मिलै न मैं सुखी, ऐसी बेदन मुझ।। ३१।।
कबीर, फाडि पटोला धज करूं, कांवलड़ी पहराऊँ।
जिस जिस भेषा हरि मिलै, सोय सोय भेष कराऊँ।। ३२।।
कबीर, विरहनि थी तो क्यों रही, जली न पीव के नाल।
रहु रहु मुगध गहेलड़ी, प्रेम न लाजौं पार।। ३३।।
कबीर, हूर बिरह की लकड़ी, समझि समझि धूं धाऊँ।
छुटि पड़ौ इस बिरह से, जे सारी ही जलि जाऊँ।। ३४।।
कबीर, कै बिरहन कूँ मीच दे, कै आपा दिखलाय।
आठ पहर का दाझना, मोपै सह्या न जाय।। ३५।।
कबीर, गलौं तुम्हारे नाम पर, ज्यौं पानी में लौन।
ऐसा बिरह मेलि कै, नित दुख पावै कौन।। ३६।।
कबीर, सुखिया सब संसार है, खावै और सोवै।

दुखिया दास कबीर है, जागै और रोवै।। ३७।।
कबीर, तन मन जोवन जारि कै, भस्म किया सब देह।
बिरहनि जरि जरि मर गई, क्या तूं ढूंढै खेह।। ३८।।
कबीर, लकड़ी जलि कोइला भई, कोइला जलि भई राख।
मैं बिरहनि ऐसी जली, कोइला भई न राख।। ३६।।
कबीर, तन मन यौं जला, बिरह अगनि सौं लागि।
मृतक पीर न जानहीं, जानैंगी वह आगि।। ४०।।

अथ निहकर्मी पतिव्रता का अंग

कबीर, साँई मेरा एक तूँ, और न दूजा कोय।
दूजा साँई क्या करूं, तुझ सम और न होय।। १।।
कबीर, प्रीतड़ी तो तुझ स्यौं, बहु गुणियाले कंत।
जे हँसि बोलूं और से, तो नील रंगाऊँ दंत।। २।।
कबीर, नैंना अंतर आव तूं, ज्यौं हूँ नैंन झंपेऊँ।
ना मैं देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देऊँ।। ३।।
कबीर, दोजख तो हम अंगिया, यह डर नाहीं मुझ।
भिस्त ना मेरे चाहिये, वाझ प्यारे तुझ।। ४।।
कबीर, जो वह एके जानिया, तो जान्या सब जान।
जे वह एक न जानिया, तो सब ही जान अजान।। ५।।
कबीर, एक न जानिया, तो बहु जाने क्या होय।
एके से सब होत है, सब से एक न होय।। ६।।
कबीर, जे मन लागै एक स्यौं, तो निरवाला जाय।
तूरा दो मुख बाजना, घने तमाचे खाय।। ७।।
कबीर, एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
माली सींचै मूल को, फूलै फलै अघाय।। ८।।
कबीर, सब आये उस एक में, डार पात फल फूल।
अब पीछे कहो क्या रहा, गहि पकड़ा जब मूल।। ६।।
कबीर, उस समर्थ का दास हो, कबहुं न होय अकाज।
पतिव्रता नांगी रहे, तो उस ही पुरुष कूँ लाज।। १०।।
कबीर, घर परमेश्वर पाहुना, सुनो सनेही दास।
षटरस भोजन भक्ति करि, कबहूँ न छाडै पास।। ११।।
कबीर, रेख सिन्दूर की, काजल दिया न जाय।
नैनौं रमईया रमि रहा, दूजा कहां समाय।। १२।।
कबीर, सूरे के तो सिर नहीं, दाता के धन नांहि।
पतिव्रता के तन नहीं, सुरति बसै पिव मांहि।। १३।।

कबीर, पतिव्रता के एक तूं, और न दूजा कोय।
आठ पहर निरखत रहै, सोई सुहागिन होय।। १४।।
कबीर, आठ पहर चौसठ घड़ी, मेरे और न कोय।
नैंना माहीं तूं बसै, नींद ठौर नहीं होय।। १५।।

अथ चितावनी का अंग

कबीर, नौबत आपनी, दिन दस लेहो बजाय।
ये प्रपट्टन ये गली, बहुरि न देखै आय।। १।।
कबीर, जिनकै नौबत बाजती, मैंगल बंधते वारि।
एकै हरि के नाम बिन, गये जन्म सब हारि।। २।।
कबीर, ढोल दमांमे दुड़बड़ी, सहनाई संगि भेरि।
औसर चले बजाय करि, है कोई राखै फेरि।। ३।।
कबीर, सातौं शब्द जो बाजते, घर घर होते राग।
ते मन्दिर खाली पड़े, बैठन लागे काग।। ४।।
कबीर, थोड़ा जीवना, मांडै बहुत मंडान।
सब ही ऊवा पंथ सिर, राव रंक सुलतान।। ५।।
कबीर, एक दिन ऐसा होयगा, सब से पड़ै बिछोह।
राजा राना छत्रपती, सावधान क्यों न होह।। ६।।
कबीर, उजड़ खेड़े ठीकरी, घड़ि घड़ि गये कुम्हार।
रावण सरीखे चलि गये, लंका के सिकदार।। ७।।
कबीर, ऊँचा महल चिनावते, करते होडम होड।
सोरन कलश चढ़ावते, गये पलक में छोड।। ८।।
कबीर, ऊँचा महल चिनावते, सोरन कलश ढुलाय।
ते मन्दिर खाली पड़े, रहे मसानों जाय।। ६।।
कबीर, देवल ढहि पर्‍या, ईंट भई सैबार।
कोई चिजारा चिणि गया, मिल्या न दूजी बार।। १०।।
कबीर, देवल ढहि पर्‍या, ईंट भई सैबार।
करि चिजारा स्यों प्रीतड़ी, जो ढहै न दूजी बार।। ११।।
कबीर, कहां चिनावै मैंडीयां, लम्बी भीत उसारि।
घर तो साढे तीन हाथ, घना तो पौने च्यार।। १२।।
कबीर, पांच तत्त का पुतला, मानष धरिया नाम।
दिना च्यारि के कारनै, फिर फिर रोकै ठांम।। १३।।
कबीर, कहां गरबियौ, ऊँचा देखि अवास।
काल पर्‍यौं भुंइ लेटना, उपरि जामै घास।। १४।।
कबीर, कहां गरबियौ, इस जोबन की आस।

केसु फूले दिवस चार, खंखर भयो पलास।। १५।।
कबीर, कहां गरबियौ, देही देखि सुरंग।
बिछरियां मिलवो नहीं, ज्यौं कांचली भुवंग।। १६।।
कबीर, कहा गरबियौ, चाम लपेटे हाड।
हैबर उपरि छत्र सिर, ते भी देवा खाड।। १७।।
कबीर, कहा गरबियौ, काल गहै कर केश।
ना जानौं कित मारसी, कै घर कै प्रदेश।। १८।।
कबीर, पाकी खेती देख कै, कहा गरबियौ किरसान।
अजहूँ झोला बहुत है, घरि आवै तब जान।। १६।।
कबीर, ऐसा यह संसार है, जैसा सिंबल फूल।
दिन दस के व्यवहार में, झूठे रंग न भूल।। २०।।
कबीर, पाँच पहर धंधे गया, तीन पहर रहा सोय।
एक पहर भी न भजे, तो मुक्ति कहां ते होय।। २१।।
कबीर, रात गंवाई सोय कै, दिवस गवाया खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौडी बदले जाय।। २२।।
कबीर, सुपने रैन के, पर्‌या जीया में छेक।
जे सोऊँ तो दो जना, जे जागूं तो एक।। २३।।
कबीर, सुपने रैन के, उघरि आये हैं नैंन।
जीव पर्‌या बहु भूल में, जागै तो लैन न दैन।। २४।।
कबीर, आज क काल्ह क पंच दिन, जंगल होयगा वास।
उपरि उपरि हल फिरै, ढोर चरैंगे घास।। २५।।
कबीर, हाड जलै ज्यूं लकड़ी, केश जलै ज्यूं घास।
सब जग जलता देख कै, भया कबीर उदास।। २६।।
कबीर, मरहिंगे मरि जाहिंगे, कोई न लेगा नाम।
उजड़ जाय बसाहिंगे, छाडि बसंती गाम।। २७।।
कबीर, मौत बिसारी बावरे, अचरज किया कौन।
तन माटी में मिल गया, ज्यूं आटे में लौंन।। २८।।
कबीर, जामन मरन बिचारि कै, कूड़े काम निवारि।
जिन पंथौं तोहि चालना, सोई पंथ संवार।। २६।।
कबीर, खेत किसान का, मिरगौं खाया झाड़ि।
खेत बिचारा क्या करै, जो खसम न करई बाड़ि।। ३०।।
कबीर, बिन रखवाले वाहिरा, चिड़िया खायौं खेत।
आधा परधा उबरै, चेत सकै तो चेत।। ३१।।
कबीर, जिह घट प्रीति न प्रेम रस, पुनि रसना नहीं राम।
ते नर आये संसार में, उपज खपे बेकाम।। ३२।।

कबीर, राम नाम जान्या नहीं, हुवा बहुत अकाज।
बूडेगा रे बापरा, बड़े बड़ौं की लाज।। ३३।।
कबीर, राम नाम जान्या नहीं, पाल्या सकल कुटंब।
धंधा ही में पचि मुवा, बाहरि भई न बंब।। ३४।।
कबीर, यह औसर चेत्यो नहीं, पसू ज्यूं पाली देह।
राम नाम जान्या नहीं, अंत परी मुख खेत।। ३५।।
कबीर, राम नाम जान्या नहीं, बात बिनट्ठी मूल।
हरि सा हितू बिसारिया, अंत परी मुख धूल।। ३६।।
कबीर, राम नाम जान्या नहीं, लागी मोटी खोरि।
काया हांडी काठ की, ना यह चढ़ै बहोरि।। ३७।।
कबीर, माटी कहै कुम्हार से, तूं क्या रूंदे मोहि।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रूदौंगी तोहि।। ३८।।
कबीर, कहा किया हम आय कै, कहा करेंगे जाय।
इत के भये न उत के, चाले मूल गवाय।। ३९।।
कबीर, वौह दिन यादि करि, पग उपर तल शीश।
मृत मंडल में आय कै, बिसर गया जगदीश।। ४०।।
कबीर, हरि के नाम बिन, नारि कूकरी होय।
गली गली भुसती फिरै, टूक न डारै कोय।। ४१।।
कबीर, यह तन काचा कुम्भ है, चोट चहुँ दिश खाये।
एके हरि के नाम बिन, जदि तदि परलै जाय।। ४२।।
कबीर, यह तन काचा कुम्भ है, लिया फिरै था साथ।
ठबका लाग्या फुटि गया, कछु न आया हाथ।। ४३।।
कबीर, यह तन काचा कुम्भ है, माहे कीया रहबास।
कबीर नैंन निहारिया, नहीं पल जीवन की आस।। ४४।।
कबीर, दुनिया सेती दोस्ती, होय भजन में भंग।
एका एकी राम सूं, कै साधू के संग।। ४५।।
कबीर, दुनिया के धोखे मुवा, चल्या जो कुल की कांन।
तब कुल काको लाजसी, जब ले धर्‍या मसांन।। ४६।।
कबीर, कहत सुनत जग जात है, विषे न सूझे काल।
कहै कबीर सुन प्राणियां, बानी ब्रह्म सम्भाल।। ४७।।
कबीर, केवल राम कहि, सुधि गरीबी चाल।
कूड़ बडाई बूडसी, भारी परसी काल।। ४८।।
कबीर, उजल पहिरे कपड़ा, पान सुपारी खांहि।
एक जो हरि के नाम बिन, बंध्या जमपुर जांहि।। ४९।।
कबीर, महलन माहीं पौढ़ते, प्रमल अंग लगाय।

छत्रपती की छार में, गदहा लोटे जाय।। ५०।।
कबीर, थली चरंता मृगला, बेध्या एक जु सौंन।
हम तो पंथी पंथ सिर, हरा चरेगा कौंन।। ५१।।
कबीर, जिसने रहना उस घर, सो क्यूं लोड़ै मित्त।
जैसे पर घर पाहुना, रहै उठाये चित्त।। ५२।।
कबीर, ज्यौं कोली रेजा बुनै, बुनता आवै ओर।
ऐसा लेखा मीच का, दौर सकै तो दौर।। ५३।।
कबीर, मैं मैं बड़ी बलाय है, सकै तो निकसो भाग।
कब लग राखौ है सखी, रूई पलेटी आग।। ५४।।
कबीर, मेर तेर की जेवड़ी, बल बँध्या संसार।
दास कबीरा क्यूं बँधे, जाके नाम अधार।। ५५।।
कबीर, जेह जेवड़ी जग बँध्या, तिह तूं मति बँधे **कबीर**।
जैसे आटा लूण बिन, सूना हुवा शरीर।। ५६।।
कबीर, नाव जरजरी, भरी विराने भार।
खेवट से परचा नहीं, क्यों करि उतरै पार।। ५७।।
कबीर, नाव जरजरी, कूड़ा खेवनहार।
हलके हलके तिर गये, बूडे जिन सिर भार।। ५८।।
कबीर, पूंजी शाह की, तूं जनि करै खवारि।
खरी विगूचन होयगी, लेखा देती वार।। ५९।।
कबीर, लेखा देना सोहरा, जो दिल साचा होय।
सांई के दरबार में, पल्ला न पकरै कोय।। ६०।।
कबीर, रसरा पाव में, कहां सोवै सुख चैन।
स्वांस नगारा कूच का, बाजत है दिन रैन।। ६१।।
कबीर, तन सराय मन पाहरू, मनसा उतरी आय।
को काहूँ को है नहीं, सब देखे ठोक बजाय।। ६२।।
कबीर, राज द्वारै बांधिया, मुंडी धुनै गयंद।
मानुष जन्म कब पाय हूँ, कब भजि हूँ गोविंद।। ६३।।
कबीर, मानुष जन्म दुर्लभ है, देह न बारमबार।
तरुवर से पत्ता झरै, बहुरि न लागे डार।। ६४।।
कबीर, तूं मति जानै बावरे, मेरा है सब कोय।
पिंड प्राण सो बँधि रहा, सो नहीं अपना होय।। ६५।।
कबीर, ऐसा संगी को नहीं, जैसा जीवरा देह।
चलती बरिया रे नरा, डारि चल्या करि खेह।। ६६।।
कबीर, एक शीश का मानवा, करता बहुतक हीस।
लंका पति रावण गया, बीस भुजा दस शीश।। ६७।।

कबीर, दीन गंवायो दुनी संग, दुनी न चाली साथ।
पाँव कुहाड़ा मारिया, मूरख अपने हाथ।। ६८।।
कबीर, डर करनी डर परम गुरू, डर पारस डर सार।
डरता रहै सो उबरै, गाफिल खावै मार।। ६९।।
कबीर, बारी बारी अपनी, चले प्यारे मित्त।
तेरी बारी जीयरा, नियरै आवै नित्त।। ७०।।
कबीर, चेत सवेरे बावरे, फिर पाछै पछिताय।
तुझ को जाना दूर है, कहै कबीर जगाय।। ७१।।
कबीर, जागो लोगो मत सोवो, ना करो नींद से प्यार।
जैसा सपना रैन का, ऐसा यह संसार।। ७२।।
कबीर, पगड़ा दूर है, जिन के बिच है रात।
क्या जानौं क्या होयगा, उगंते प्रभात।। ७३।।
कबीर, शेष नाग के सहंस फन, फन फन जिभ्या दोय।
नर के ऐकै जीभ है, रहै तांहि में सोय।। ७४।।
कबीर, ज्ञानी होय सो मानही, बूझै शब्द हमार।
कहे **कबीर** सो बच रहै, और सकल जम धार।। ७५।।

अथ मन का अंग

कबीर, मन के मते न चालिये, छाडि देहु यह बानि।
कतवारी के सूत ज्यौं, उलटि अपूठा आनि।। १।।
कबीर, मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, वे साधू कोई एक।। २।।
कबीर, मन पांचौ के बस पड़ा, मन के बस नहीं पाँच।
जिच देखूँ जित दौं लगी, जित मांगू तित आँच।। ३।।
कबीर, निहचै होय कै हरि भजै, मन में राखै सांच।
इन पाँचौं कूँ बसि करै, तांहि न आवै आँच।। ४।।
कबीर, यह मन मसखरा, कहूँ तो मानै रोस।
जा मारग साहिब मिलै, तहाँ न चालै कोस।। ५।।
कबीर, मन गाफिल भया, सुमिरन लागै नांहि।
घनी सहेगा शासना, जम की दरगह मांहि।। ६।।
कबीर, मन जानै सब बात, जान बूझि औगुण करै।
काहे की कुशलात, कर दीपक कूवै पड़ै।। ७।।
कबीर, मन मिरगा भया, खेत विराना खाय।
सूलां करि करि सेकसी, जब खसम पहुँचे आय।। ८।।
कबीर, मन मैला भया, यामें बहुत विकार।

या मन कैसे धोईये, संतो करो विचार।। ६।।
कबीर, गुरु धोबी शिष कापड़ा, साबुन सिरजनहार।
सुरति शिला पर धोईये, निकसै रंग अपार।। १०।।
कबीर, मन ही कूँ प्रमोधिये, मन ही को उपदेश।
जो मन कूँ बसि करै, शिष होय सब देश।। ११।।
कबीर, मन गोरख मन गोविंदा, मन ही औघड़ होय।
जो मन राखै जतन करि, आपे करता सोय।। १२।।
कबीर, मन के बहुतक रंग है, छिन छिन बदलै सोय।
एक रंग में जो रहे, ऐसा बिरला कोय।। १३।।
कबीर, कोटि कर्म करै पलक में, याह मन बिषिया स्वाद।
सतगुरू शब्द मानै नहीं, जन्म गवाया बाद।। १४।।
कबीर, महमंता मन मारि ले, घट ही मांहि घेर।
जब ही चालै पीठ दे, अंकुश दे दे फेर।। १५।।
कबीर, मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
कहै कबीर गुरु पाईये, मन ही की प्रतीति।। १६।।
कबीर, जो मन गया तो जान दे, दृढ़ करि राख शरीर।
बिन चढ़ाये कमान के, कैसे लागे तीर।। १७।।
कबीर, मन चलता तन भी चलै, तांते मन को घेर।
तन मन दोऊ बसि करै, होय राई सौं मेर।। १८।।
कबीर, मना मनोरथ छाडि दे, तेरा किया न होय।
पानी में घी नीकलै, तो लूखा खाय न कोय।। १६।।
कबीर, काटी कूटी मछली, छीकै धरी चहोड़ि।
कोई एक औगुण मन बस्या, दह में पड़ी बहोड़ि।। २०।।
कबीर, मन मरकट भया, कहूँ नहीं ठहराय।
राम नाम बांधे बिना, जित भावै तित जाय।। २१।।
कबीर, मन तो एक है, भावै तहां लगाय।
भावै हरि की भक्ति करि, भावै विषे कमाय।। २२।।
कबीर, मन मुवासी भया, बसि करि सकै न कोय।
सनकादिक शुक सारिखा, तिनको गया बिगोय।। २३।।
कबीर, मन के मारे बन गये, बन तजि बसती मांहि।
कहै कबीर क्या कीजिये, याह मन ठहरे नांहि।। २४।।
कबीर, काया कसौ कमान ज्यौं,पाँच तत करि बांन।
मारौ तो मन मिरगला, नहीं तो मथ्या जांन।। २५।।
कबीर, बिना शीश का मिरगला, चहुँ दिश चरने जाय।
बांधि ल्याऊँ गुरु ज्ञान से, राखूँ तत लगाय।। २६।।

कबीर, तीन लोक चोरी भई, सब का धन हर लीन्ह।
बिना शीश का चोरबा, पर्‌या न काहूँ चीन्ह।। २७।।
कबीर, चोरबा भल हम चीन्हिया, चोरबे हम नहीं चीन्ह।
कहै कबीर विचार कै, हम चोरबे दिक्षा दीन्ह।। २८।।
कबीर, चोर भरोसे शाह के, ल्याया वस्तु चुराय।
पहली बाधौं शाह कूँ, चोर आप बंधि जाय।। २९।।
कबीर, अपने अपने चोर कूँ, सब कोई डारै मारि।
मेरा चोर मुझ कूँ मिलै, तो सरबस डारूँ बारि।। ३०।।
कबीर, काया देवल मन धजा, विषे लहर फहराय।
मन चलता देवल चलै, ताका सरबस जाय।। ३१।।
कबीर, तन तुरंग असवार मन, करम पियादा साथ।
त्रिसना चली शिकार कूँ, विषे बाज ले हाथ।। ३२।।
कबीर, यह मन लालची, समझै नहीं गंवार।
राम भजन कूँ आलसी, खावें कूँ हुशियार।। ३३।।
कबीर, कहत सुनत सब दिन गये, उरझ न सुरझे मन।
कहै कबीर चेत्या नहीं, अजहुँ पहला दिन।। ३४।।
कबीर, दौरत दौरत दौरिया, जेती मन की दौर।
दौर थके मन थिर भया, वस्तु ठौर की ठौर।। ३५।।
कबीर, अपने उरझै उरझिया, दीखै सब संसार।
अपने सुरझे सुरझिया, यह गुरु ज्ञान विचार।। ३६।।
कबीर, यह तन में मन कहां बसै, निकस जाय कहां ठौर।
गुरु गम होय तो परख ले, नहीं गुरु करो कोई और।। ३७।।
कबीर, नैंनन मांही मन बसै, निकस जाय सब ठौर।
गुरु गम भेद बताईया, सब संतन सिर मौर।। ३८।।
कबीर, यह मन हरि चरणौं चला, माया मोह से छूट।
बेहद माहीं घर किया, काल रहा शिर कूट।। ३९।।
कबीर, मन मिरतक भया, दुर्लभ भया शरीर।
पीछे लागा हरि फिरै, यूं कहै **दास कबीर**।। ४०।।

अथ सूषम मारग का अंग

कबीर, अब हम चले अमरापुरी, टारे टरे न घाट।
आवन होय सो आईयो, सूली उपरि बाट।। १।।
कबीर, सूली उपरि घर करै, विष का करै आहार।
तिन कूँ काल कहा करै, जो आठ पहर हुशियार।। २।।
कबीर, जिस कारन मैं जाय था, सो तो मिलिया आय।

सांई के सन्मुख भया, लागि कबीरा पाय।। ३।।
कबीर, कौन देश कहां आईया, जानै कोई नांहि।
यौह मारग पावै नहीं, भूल परे इस मांहि।। ४।।
कबीर, नाम न जानै गांव का, बिन जाने कित जांव।
चलता चलता जुग गया, पाव कोस पर गांव।। ५।।
कबीर, सतगुरु दीन दयाल हैं, दया करी मोहि आय।
कोटि जन्म का पंथ था, पल में पहुँचा जाय।। ६।।
कबीर, उत ते कोई न बाहुरा, जासे बूझौं धाय।
इत ते सब ही जात है, भार लदाय लदाय।। ७।।
कबीर, उत ते सतगुरु आईया, जाकी मति बुधि धीर।
भौसागर के जीव कूँ, खेव लगावै तीर।। ८।।
कबीर, सब कूँ पूछत मैं फिरूं, रहन कहै नहीं कोय।
प्रीत न जोड़ी राम सौं, रहन कहां से होय।। ९।।
कबीर, चलन चलन सब कोई कहै, मोहि अंदेशा और।
साहिब से परचै नहीं, पहुंचैंगे किस ठौर।। १०।।
कबीर, जायबे को जागा नहीं, रहबे को नहीं ठौर।
कहै कबीरा संत हो, अवगति की गति और।। ११।।
कबीर, चलो चलो सब कोई कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक और कामनी, दुर्गम घाटी दोय।। १२।।
कबीर, मारग कठिन है, कोई न सकई जाय।
गये ते बाहुरे नहीं, कुशल कहै को आय।। १३।।
कबीर, मारग कठिन है, सब मुनिजन बैठे थाकि।
तहां कबीरा चढ़ि गया, गहि सतगुरु की साखि।। १४।।
कबीर, सुरनर थाके मुनिजनां, तहां न कोई जाय।
मोटे भाग कबीर के, तहां रहे घर छाय।। १५।।
कबीर, सुरनर थाके मुनिजनां, ब्रह्मा विष्णु महेश।
तहां कबीरा चढ़ि गये, सतगुरु के उपदेश।। १६।।
कबीर, बिना पांव का पंथ है, बिन बस्ती का देश।
बिना पिंड का पुरुष है, कहै **कबीर** संदेश।। १७।।
कबीर, तहां काल की गमि नहीं, मुवा न सुनिया कोय।
कहै कमाली विप्र सौं, जहां होय तो होय।। १८।।
कबीर, चलते चलते पग थके, निपट करारी कोस।
बिन दयाल फलका परै, काकौं दीजै दोष।। १९।।
कबीर, बाट बिचारी क्या करै, पंथ न चलै सुधार।
राह आपनी छाड कै, चले उजारि उजारि।। २०।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

कबीर, नाहीं आवागमन था, नाहीं धरती आकाश।
होता कबीरा राम जन, साहिब पास खवास।। २१।।
कबीर, पहुंचैंगे तब कहेंगे, अब कुछ कहा न जाय।
अजहूँ भेरा समंद में, बोल बिगूचै काय।। २२।।
कबीर, करता की गति अगम है, तूं चलि अपनै उनमान।
धीरे धीरे पांव धरि, पहुँचैंगे परवान।। २३।।

अथ माया का अंग

कबीर, माया पापनी, फंद ले बैठी हाटि।
सब जग तो फंदे पर्‌या, गया कबीरा काटि।। १।।
कबीर, माया पापनी, सब लारै लाये लोग।
पूरी किनहुँ न भोग हीं, इनको यहीं वियोग।। २।।
कबीर, माया पापनी, हरि स्यूं करै हराम।
मुख कडियाली कुमति की, कहन न देई राम।। ३।।
कबीर, माया पापनी, मांगी मिलै न हाथ।
मनहुँ उतारी झूठ करि, तब लागी डोलै साथ।। ४।।
कबीर, माया और बेस्वा, दोनों की ऐकै घात।
आवत कूँ आदर करै, जात न पूछै बात।। ५।।
कबीर, जग हटवारा स्वाद ठग, माया बेसां लाय।
राम नाम गाहटा गहौ, जिनि जावौ जन्म ठगाय।। ६।।
कबीर, मै जानौं हरि से मिलौं, मोहि मन मोटी आस।
हरि बिच डारे अंतरा, माया बड़ी बिसास।। ७।।
कबीर, माया मोहनी, मोहे जान सुजान।
भागे हूँ छूटै नहीं, भरि भरि मारे बान।। ८।।
कबीर, माया मोहनी, जैसी मीठी खांड।
सतगुरु की कृपा भई, नहीं तो करती भांड।। ६।।
कबीर, माया मोहनी, सब जग घाल्या घाण।
कोई एक साधू उबरे, जिन तोड़ी कुल की काण।। १०।।
कबीर, माया मन की मोहनी, सुर नर रहे लुभाय।
इस माया जग खाइया, माया को कोई न खाय।। ११।।
कबीर, माया डाकनी, सब काहूँ कूँ खाय।
दांत उपाडूं पापनी, जे सेतों नेड़े जाय।। १२।।
कबीर, माया दासी संत की, उभी देत अशीश।
बिलसी और लातों छड़ी, सुमरि सुमरि जगदीश।। १३।।
कबीर, माया तो ठगनी भई,ठगती फिरै सब देश।

जा ठग नै ठगनी ठगी, तां ठग कूँ आदेश।। १४।।
कबीर, माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गये शरीर।
आसा त्रिसना न मुई, यूँ कथि कहे कबीर।। १५।।
कबीर, माया मार मन मारिया, राख्या अमर शरीर।
आसा त्रिसना मारि कै, थिर होय रहै कबीर।। १६।।
कबीर, बुगले नीर बिटारीया, सायर चढया कलंक।
और पंखेरू पी गये, हंस न बोरे चंच।। १७।।
कबीर, माया काल की खान है, धरै त्रिगुण विपरीत।
जहाँ जाय तहाँ सुख नहीं, यह माया की रीत।। १८।।
कबीर, तीन गुनन की बादली, ज्यूं तरुवर की छांहि।
बाहरि रहै सो उबरै, भीजै मन्दिर मांहि।। १६।।
कबीर, जग की कहा कहूँ, भौजल बूडे दास।
पारब्रह्म पती छाड कै, करै मान की आस।। २०।।
कबीर, मोटी माया सब तजै, झीनी तजी न जाय।
पीर पैगंबर औलीया, झीनी सब कूँ खाय।। २१।।
कबीर, रामहि थोरा जान कै, दुनिया आगै दीन।
जीवां स्यूं राजा कहै, माया के आधीन।। २२।।
कबीर, माया आगे जीव सब, ठाडे रहे कर जोड़।
जिन सिरजेह जल बूँद से, तासे बैठे तोड़।। २३।।
कबीर, पूत प्यारे पिता कूँ, गोह न लाग्या धाय।
लोभ मिठाई हाथि दे, आपन गया भुलाय।। २४।।
कबीर, डारी खांड पटक कै, अंतर रोस उपाय।
रोवत रोवत मिलि गया, पिता प्यारे जाय।। २५।।
कबीर, माया की झल जग जलै, कनक कामनी लाग।
कहो संतो क्यूँ राखिये, रूई लपेटी आग।। २६।।
कबीर, इस संसार का, झूठा माया मोह।
जिह घर जिता बंधावना, तिह घर तिता अंदोह।। २७।।
कबीर, माया दीपक नर पतंग, भ्रम भ्रम मांहि परंत।
कोई एक गुरु ज्ञान से, उबरै साधू संत।। २८।।
कबीर, सौ पापन का मूल है, एक रूपईया रोक।
साधू जन संग्रह करै, हारै हरि सा थोक।। २६।।
कबीर, साधू ऐसा चाहिये, आई देय चलाय।
दोष न लागै तास कूँ, सिर की टरै बलाय।। ३०।।
कबीर, माया रूखड़ा, दो फल की दातार।
खावत खरचत मुक्ति भये, संचत नरक द्वार।। ३१।।

कबीर, खाव खरच बहु अंतरा, मन में देख बिचार।
एक खवाई साध कूँ, एक मिलाई छार।। ३२।।
कबीर, माया दो प्रकार की, जे कोई जानै खाय।
एक मिलावै राम कूँ, एक नरक ले जाय।। ३३।।
कबीर, माया राम की, मोदी सब संसार।
जाको चीट्ठी उतरी, सोई खरचन हार।। ३४।।
कबीर, सो धन संचीये, जो आगे कूँ होय।
शीश चढ़ाये पोटली, ले जात न देख्या कोय।। ३५।।
कबीर, नईया में पानी बढ़ै, घर में बढ़ै जो दाम।
दोनों हाथ उलीचीये, यही सियानों काम।। ३६।।
कबीर, आंधी आयी ज्ञान की, ढही भ्रम की भीत।
माया टाटी उडि गई, लगी राम से प्रीत।। ३७।।

अथ दीनता का अंग

कबीर, दीन गरीबी बंदगी, साधुन से आधीन।
ताकै संग हरि यूं फिरै, ज्यौं पानी में मीन।। १।।
कबीर, दीन लखै मुख सबन को, दीन लखै नहीं कोय।
भली विचारी दीनता, मानुष देवता होय।। २।।
कबीर, जल थल जीव जंत में, रह्या सकल भरपूर।
जो दिल आवै दीनता, तो सांईं मिलै हजूर।। ३।।
कबीर, एक बानी जो दीनता, सब कुछ हरि दरबार।
यही भेद जगदीश का, संतन कियो विचार।। ४।।
कबीर, दीन गरीबी दीन कूँ, दुंदर को अभिमान।
दुंदर तो विष सौं भरा, दीन गरीबी ज्ञान।। ५।।
कबीर, दीन गरीबी बंदगी, सब सो आदर भाव।
कहै कबीर सोई बड़ा, जामें बड़ा स्वभाव।। ६।।
कबीर, नहीं दीन नहीं दीनता, संत नहीं मिजमान।
ता घर जम डेरा किया, जीवत भये मसान।। ७।।
कबीर, नवै सो आपको, पर को नवै न कोय।
घाल तराजू तोलिये, नवै सो भारी होय।। ८।।
कबीर, ऊचै पानी न टिकै, नीचै ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पीवै, ऊँचा पियासा जाय।। ९।।
कबीर, नीचे नीचे सब तिरै, जिह तिह बहुत अधीन।
चढ़ि बोहित अभिमान की, बूडे ऊँच कुलीन।। १०।।
कबीर, प्रभुता को सबही भजै, प्रभु को भजै न कोय।

कहै कबीर प्रभु के भजे, प्रभुता चेरी होय।। ११।।
कबीर, लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।
चींटी शक्कर ले चली, हसती के सिर धूर।। १२।।
कबीर, लेने को हरि नाम है, देने को है दान।
तिरने कूँ है दीनता, बूडन कूँ अभिमान।। १३।।
कबीर, दरसन कूँ तो साध है, सुमिरन को ब्रह्मज्ञान।
तिरबै कूँ आधीनता, बूडन कूँ अभिमान।। १४।।
कबीर, बुरा जो देखन मै चला, बुरा न मिलिया कोय।
जब दिल खोज्या अपना, मुझ सा बुरा न कोय।। १५।।
कबीर, सब ते हम बुरे, हमते भल सब कोय।
जिन ऐसा करि बूझिया, सो मीत हमारा होय।। १६।।

अथ चाणक का अंग

कबीर, कै खाना कै सोवना, और न कोई चित्त।
हरि सा प्रीतम बिसरिया, बालपनां का मित्त।। १।।
कबीर, इस उदर के कारनै, जग जाँच्यो निश जाम।
स्वामी पना सिर परि चढयो, सर्‌यो न एको काम।। २।।
कबीर, कलि का स्वामी लोभीया, मनसा रहे बँधाय।
देहीं पैसा ब्याज कूँ, लेखा करता जाय।। ३।।
कबीर, कलि का स्वामी लोभीया, पीतल धरै खटाय।
राज द्वारै यौं फिरै, ज्यौं हरियाई गाय।। ४।।
कबीर, राज द्वारे राम जन, तीन वस्तु को जाय।
कै मीठा कै मान कूँ, कै माया की चाह।। ५।।
कबीर, कलियुग कठिन है, साध न मानै कोय।
कामी क्रोधी मसकरा, तिनका आदर होय।। ६।।
कबीर, हरि सुमिरन साची कथा, कोई न सुनि है कान।
कलियुग पूजा दंभ की, बैजारी का मान।। ७।।
कबीर, तारा मंडल बैठि के, चंद बडाई खाय।
उदै भया जब सूरज का, स्यौं तारों छिप जाय।। ८।।
कबीर, पद गावै मन हरषि कै, साखी कहै आनन्द।
राम नाम नहीं जानिया, परै गले में फंध।। ९।।
कबीर, करता दीसै कीरतन, ऊँचा करि कै तूंड।
जानै बूझै कुछ नहीं, यौही आंधा रूंड।। १०।।
कबीर, नाचै गावै पद कहै, नाहीं हरि स्यूँ हेत।
कहै कबीर क्यौं निपजै, बीज बिहूना खेत।। ११।।

कबीर, शिष साखा संसार गति, सेवक पूत छिकाल।
जोगी होय छावै मढ़ी, ताको मूल न डाल।। १२।।
कबीर, जाकै हिरदे हरि नहीं, शिष साखा की भूख।
सो नर उभा सूकसी, ज्यौं बन दाझ्या रूख।। १३।।
कबीर, शिष साखा बहुते किये, माधो किया न मीत।
चाले थे हरि मिलन कूँ, बीच ही अटक्या चीत।। १४।।
कबीर, पंडित केरी पोथीयां, ज्यूं तीतर का ज्ञान।
औरां सुगन बतावहीं, अपना फंध न जान।। १५।।
कबीर, चतुराई क्या कीजिये, जो नहीं शब्द समाय।
कोटक गुन सुवटा पढ़ै, अंत बिलाई खाय।। १६।।
कबीर, पंडित और मसालची, इनकूँ सूझै नाहीं।
औरन कूँ करै चांदना, आप अंधेरे मांहीं।। १७।।
कबीर, बानी तो पानी भरै, चारौं वेद मजूर।
करनी तो गारा करै, साहिब का घरि दूर।। १८।।
कबीर, पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित हुवा न कोय।
एक जो अक्षर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।। १९।।
कबीर, पढ़ना दूर करि, पुस्तक देहु बहाय।
बावन अक्षर शोध कै, राम नाम ल्यौ लाय।। २०।।
कबीर, ब्राह्मण गुरु है जगत का, भगतन का गुरु नांहि।
उरझ पुरझ कै मरि गया, चारों वेदां मांहि।। २१।।
कबीर, ब्राह्मण बूडा बापरा, जनेऊ के जोर।
लख चौरासी मांग लई, पारब्रह्म से तोर।। २२।।
कबीर, कलि का ब्राह्मण मसकरा, ताहि न दीजै दान।
कुटंब सहित नरके चलै, साथ लिये जजमान।। २३।।
कबीर, पारोसी से रूठनां, तिल तिल सुख की हांन।
पंडित भया शराबगी, पानी पीवै छांन।। २४।।
कबीर, इस संसार कूँ, समझाया कै बार।
पूछ जो पकड़ै भेड़ की, उतर्‌या चाहै पार।। २५।।
कबीर, अमरापुर को जात हूँ, सबसे कहूँ पुकार।
आवन होय तो आईये, शूली उपर यार।। २६।।

अथ अमल अहारी का अंग

कबीर, कलियुग काल पठाइयां, भांग तमाखू फीम।
ज्ञान ध्यान की सुधि नहीं, बसै इन्हौं की सीम।। १।।
कबीर, गउ जो विष्ठा भखि है, विप्र तमाखू भंग।

शस्त्र बाँधै दरसनी, यह कलियुग के रंग।। २।।
कबीर, भांग तमाखू छोतरा, आफू और शराब।
कबीर कौन करेगा बंदगी, यह तो भये खराब।। ३।।
कबीर, अमल मांहि ओगुण कहा, कहो मोहि समुझाय।
उत्तर प्रश्न में सुनो, मन को संशय जाय।। ४।।
कबीर, भांग भखै बल बुद्धि को, आफू अहमक सोय।
दोय अमल औगुण कहा, ज्ञानवंत सुनि लोय।। ५।।
कबीर, औगुण कहूँ शराब का, ज्ञानवंत सुनि लेय।
मानुष सौं पशुवा करै, द्रव्य गांठि का देय।। ६।।
कबीर, काम हरकत बल घटै, तृष्णा नाहीं ठौर।
ढिग होय बैठे दीन के, एक चिलम भरि और।। ७।।
कबीर, अमल अहारी आत्मा, कबहुँ ना पावै पार।
कहै कबीर पुकार के, त्यागो तांहि विचार।। ८।।

अथ बिनती का अंग

कबीर, बिनवत हूँ कर जोरि कै, सुन गुरू कृपानिधान।
संगत में सुख दीजिये, दया गरीबी दान।। १।।
कबीर, करत हूँ बिनती, सुनों संत चित लाय।
मारग सिरजनहार का, दीजे मोहि बताय।। २।।
कबीर, क्या मुख ले बिनती करूं, लाज आवत है मोहि।
तुम देखत औगुण किये, कैसे भाऊँ तोहि।। ३।।
कबीर, साहिब तुम न बिसारियो, लाख लोग मिल जांहि।
हम से तुम कूँ बहुत है, तुम से हम कूँ नांहि।। ४।।
कबीर, औगुण किये तो बहु किये, करत न मानी हार।
भावै बंदा बख्सियौ, भावै गरदन मार।। ५।।
कबीर, औगुण मेरे बाप जी, बख्सो गरीब निवाज।
जे मैं पूत कपूत हूँ, तो बौहर पिता कूँ लाज।। ६।।
कबीर, मैं अपराधी जनम का, नख शिख भरा विकार।
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो संभार।। ७।।
कबीर, सुरत करो मम सांईयां, मैं हूँ भौजल मांहि।
आपे ही बहि जाऊँगा, जो नहीं पकड़ो बांहि।। ८।।
कबीर, अबके जो सांई मिलै, सब दुःख आखूं रोय।
चरणौं उपरि सिर धरूं, कहूँ जो कहना होय।। ६।।
कबीर, साईं मिलहिंगे, पूछेंगे कुसलात।
आदि अन्त की सब कहूँ, उर अन्तर की बात।। १०।।

कबीर, मुझ में इतनी शक्ति कहाँ, गाऊँ गला पसार।
बंदे को इतनी घनी, पड़ा रहूँ तोहि द्वार।। ११।।
कबीर, अंतरयामी एक तूं, आतम के आधार।
जो तुम छाडौ हाथ से, कौन निबाहंन हार।। १२।।
कबीर, भवसागर भारा भया, गहरा थाह अथाह।
तुम दयाल दया करौ, तब कुछ पाऊँ थाह।। १३।।
कबीर, सतगुरू बड़े दयाल हैं, संतन के आधार।
भौसागर अथाह से, खेव उतारै पार।। १४।।
कबीर, मुझ में गुण एको नहीं, जानराय सिरमौर।
तेरे नाम प्रताप से, पाऊँ आदर ठौर।। १५।।
कबीर, सांईं केरे बहुत गुन, औगुन कोऊ नांहि।
जे दिल खोजौं अपना, तो सब औगुन मुझ मांहि।। १६।।

अथ शब्द

हम अविगत से चलि आये। मेरा कोई भेद मर्म नहीं पाये।। टेक।।
ना मेरा जन्म न गर्भ बसेरा, बालक होय दिखलाये।
काशी नगर जंगल में डेरा, तहाँ जुलहे कूँ पाये।। १।।
माता पिता मेरे कोई नाहीं, ना मेरे गृह दासी।
जुलहा का सुत आन कहाया, जगत कराई हाँसी।। २।।
धरनी गगन नहीं कुछ मेरे, सूझे अगम अपारा।
सत सरूपी नाम साहिब का, सो है नाम हमारा।। ३।।
अधर द्वीप नहीं गगन गुफा में, तहां निज बास हमारा।
जोत सरूपी अलख निरंजन, जपते नाम हमारा।। ४।।
हाड चाम लोहू नहीं मेरे, हूँ सतनाम उपासी।
तारन तरन अभै पद दाता, कहै कबीर अविनाशी।। ५।।
मो कूँ कहां ढूंढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।। टेक।।
ना तीरथ में ना मूरति में, ना एकान्त निवास में।
ना मन्दिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में।। १।।
ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रिया कर्म में रहता, ना मै योग सन्यास में।। २।।
नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में, ना ब्रह्मण्ड आकाश में।
ना मैं त्रिकुटि भँवर गुफा में, सब श्वासन के श्वास में।। ३।।
खोजी होय तुरत मिल जाऊँ, एक पल ही की तलाश में।
कहै कबीर सुनो भई साधो, मैं तो हूँ विश्वास में।। ४।।
मस्तक लाग रही म्हारे, गुरु चरणन की धूर।। टेक।।

जब यह धूल चढ़ी मस्तक पै, दुविधा हो गई दूर।
इड़ा पिंगला ध्यान धरत है, सुरती पहुँची दूर।। १।।
यह संसार विघन की घाटी, निकसत बिरला शूर।
प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द ल्याये, करी कबीरा भरपूर।। २।।

अथ राग धनासरी

तुहीं मेरे वेदं, तुही मेरे नादं।
तुहीं मेरे अंत राम, तुही मेरे आदं।। १।।
तुहीं मेरे तिलकं, तुहीं मेरे माला।
तुहीं मेरे ठाकुर राम, रूप विशाला।। २।।
तुहीं मेरे बागं, तुहीं मेरे बेला।
तुहीं मेरे पुष्प राम, रूप नवेला।। ३।।
तुहीं मेरे तरुवर, तुहीं मेरे साखा।
तुहीं मेरे बानी राम, तुहीं मेरे भाषा।। ४।।
तुहीं मेरे पूजा, तुहीं मेरे पाती।
तुहीं मेरे देवल राम, मैं तेरा जाती।। ५।।
तुहीं मेरे पाती, तुहीं मेरे पूजा।
तुहीं मेरे तीरथ राम, और नहीं दूजा।। ६।।
तुहीं मेरे कल्पबिरछ, और कामधैंना।
तुहीं मेरे राजा राम, तुहीं मेरे सैंना।। ७।।
तुहीं मेरे मालिक, तुहीं मेरे मीरां।
तुहीं मेरे सुलतान राम, तुहीं है उजीरा।। ८।।
तुहीं मेरे मुंदरा, तुहीं मेरे सेली।
तुहीं मेरे मुतंगा राम, तुहीं मेरा बेली।। ९।।
तुहीं मेरे चीपी, तुहीं मेरे फरूवा।
मैं तेरा चेला राम, तुहीं मेरा गुरुवा।। १०।।
तुहीं मेरे कौसति, तुहीं मेरे लालं।
तुहीं मेरे पारस राम, तुहीं मेरे मालं।। ११।।
तुहीं मेरे हीरा, तुही मेरे मोती।
तुहीं बैरागर राम, जगमग जोती।। १२।।
तुहीं मेरे पौहमी, धरनि अकाशा।
तुहीं मेरे कूरंभ राम, तुहीं है कैलाशा।। १३।।
तुहीं मेरे सूरजि, तुहीं मेरे चंदा।
तुहीं तारायन राम, परमानंदा।। १४।।
तुहीं मेरे पौंना, तुहीं मेरे पानी।
तेरी लीला राम, किनहूँ न जानी।। १५।।

तुहीं मेरे कारतग, स्वामी गणेशा।
तेरा ही ध्यान राम, धारौं हमेशा।। १६।।
तुहीं मेरे लछमी, तुहीं मेरे गौरा।
तुहीं मेरे सावित्री राम, ॐ अंग तोरा।। १७।।
तुहीं मेरे ब्रह्मा, शेष महेशा।
तुहीं मेरे विष्णु राम, जै जै आदेशा।। १८।।
तुहीं मेरे इन्द्र, तुहीं है कुबेरा।
तुहीं मेरे बरूण राम, तुहीं धर्म धीरा।। १९।।
तुहीं मेरे सरबंग, सकल बियापी।
तैंहीं आपनी राम, थापनि थापी।। २०।।
तुहीं मेरे पिण्डा, तुहीं मेरे श्वासा।
तेरा हीं ध्यान राम, धरै गरीबदासा।। २१।।

अथ राग धुन

आज हमारै आये संत सुजान। तन मन धन वारौंगी प्रान।। टेक।।
चरण कमल रज डारौं शीश। मानौं आप मिले अगदीश।। १।।
संतों की महिमा कही न जाय। अठसठि तीरथ चरणौं पाय।। २।।
संतौं की महिमा अपरंपार। पूर्ण ब्रह्म मिले करतार।। ३।।
संतौं की महिमा अगम अगाध। नारद से उधरे प्रह्लाद।। ४।।
ध्रू भेटे नारद निरबान। अमरापुरी परि रचे विमान।। ५।।
संतौं की महिमा अगम अगाह। बूडंते राखे गज गिराह।। ६।।
संतौं की महिमा निश्चल थीर। द्रोपद सुता के बढ़ि गये चीर।। ७।।
संतौं की महिमा अधिक सुमेर। भीलनी के जूठे खाये बेर।। ८।।
संतौं की महिमा निश्चल अंक। बालनीक का बाज्या संख।। ९।।
संतौं की महिमा अमन अमान। देखौ गनिका चढ़ी विमान।। १०।।
संतौं की महिमा पद गरगाप। त्रिलोचन कै पिरतिया आप।। ११।।
पुंडरपुर नामा प्रवानि। देवल फेरि छिवाय दई छानि।। १२।।
काशी पुरी कबीर कमाल। गैबी बालदि आई रसाल।। १३।।
दिया भंडारा जन रैदास। कनक जनेऊ पद प्रकाश।। १४।।
संतौं की महिमा कही न जाय। पीपा कूदि परे दरियाय।। १५।।
दास गरीब संतन कूँ सेव। चौरासी मिटि गई शुकदेव।। १६।।

ॐश्री सत् कबीर साहिब तथा
सतगुरू गरीब दास जी साहिब की दया से
ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ।

।। सत् साहिब।।